पुस्तक प्राप्ति स्यान —

- मंत्री भी दिगम्बर सैन ष० चंत्र भी महाबीरनी महाचौर भवन, सनाई मानतिह हानि, बयदुर (राज्यनान)
 - मैंनेबर दिगम्बर बैन च चेत्र भी महातीन्त्री
 नौ महावीर्त्री (राजस्थाय)

SS.

प्रयम् सस्करण् भाषीर बपन्ति ४ प्रति वि त० २०१९ यामेखा १८९०

£5

蛎

मैंतरसास न्यायतीर्थं *घी बीर मेस, कमपुर १*

⊁ विषय-सूची ४

8	प्रकाशकीय
२	भृमिका
	प्रस्तावना
	प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों का परिचय
¥	,, ,, विवरण
5	विषय
	१ सिद्वान्त एव चर्चा
	२ धर्म एवं स्त्राचार शास्त्र
	³ श्रध्यात्म एव चोगगाम्त्र
	४ न्याय एव दर्शन
	४ पुराण साहित्य
	६ काञ्य एव चरित्र
	७ ऋया साहित्य
	८ व्याकरण साहित्य
	६ नोश
	१० ब्योतिप एव निमित्तज्ञान
	११ श्रापुर्वेद
	१२ चन्द्र एव श्रलकार
	१३ सगीत एवं नाटक
	१४ लोक विद्यान
	१५ सुभापित एव नीति शास्त्र
	१६ मत्र शास्त्र
	१७ काम शास्त्र
	१२ शिल्प शास्त्र

3-8
४ –२३
२४-४=
ક્રદ્-ક્રફ
पत्र संख्या
\$—\$e
४ न६न
६६-१२८
१२६-१४१

पत्र सस्या १-२

१४२-१<u>४६</u> १६०-२१२

> -३४६ -३४२ ३४३

्रेड्रप्ट

पत्र संस्था

5 8-5-K

CC2-135

181-18

427-636

180-181

A CONTRACTOR OF THE PARTY OF TH		ቪሂ ሂ-ቪሂቲ
१६ शक्य एवं समीका		350-364
२० चारा रासा एवं देखि साहित्य	-	14=-141
२१ गयित ग्रास्त	-	\$40-\$40
१२ इतिहास		\$ ቀ٤-ሄሂ₹
२३ स्टोब साहित्य २४ पूबा प्रतिद्वा एवं विचान साहित्व	_	823-KX5
इंद्र पूजा प्रावधा येव विवास जार	the state of the s	224-46 E
२४ गुरुषा संगर		44. ₹-==0

११ शुक्रमादि पत्र

२६ व्यवशिष्ट खहित्व

७ इबलुक्रमविका

⊏ स्वएवं स्वकार

६ शासकों 🕏 नामावति

१ प्राम एवं नगरों की नामलास्त्र

ക്ക

🖈 प्रकाशकीय 🗡

यथ सूची के चतुर्थ भाग को पाठकों के हाथों में देते हुये मुक्ते प्रसन्नता होती है। यथ सूची का यह भाग श्रव तक प्रकाशित प्रथ सूचियों में सबसे वड़ा है श्रीर इसमें १० हजार से श्राधिक प्रंथों का विवरण दिया हुश्रा है। इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भड़ारों के प्रंथों की सूची दी गई है। इस प्रकार सूची के चतुर्थ भाग सिहत श्रव तक जयपुर के १० तथा श्री महावीरजी का एक, इस तरह १८ महारों के श्रतुमानत २० हज़ार प्रथों का विवरण प्रकाशित किया जा चुका है।

प्रथा के सकलन को देखने से पता चलता है कि जयपुर प्रारम्भ से ही जैन साहित्य एव सरकृति का केन्द्र रहा है और दिगम्बर शास्त्र भड़ारों की दृष्टि से सारे राजस्थान में इसका प्रथम स्थान है। जयपुर वहें वहें विद्वानों का जन्म स्थान भी रहा है तथा इस नगर में होने वाले टोडरमल जी, जयचन्द जी, मगामुम्बजी जैसे महान विद्वानों ने सारे भारत के जैन समाज का साहित्यिक एवं धार्मिक दृष्टि से पय-प्रश्ति किया है। जयपुर के इन भड़ारों में विभिन्न विद्वानों के हाथों से लिसी हुई पार्ह्यलिपिया प्राप्त हुई जो राष्ट्र एव ममाज की अमृल्य निधियों में से हैं। जयपुर के पाटोदी के मन्टिर के शास्त्र मंहार में पंठ दोहरमल जी द्वारा लिखे हुये गोम्मह्सार जीवकाड़ की मूल पार्ग्ड्यलिपिया प्राप्त हुई है जिसका एक चित्र हमने इस भाग में दिया है। इसी तरह ब्रह्म रायमल्ल, जोधराज गोवीका, खुशालचद ध्यादि श्रन्य विद्वानों के द्वारा लिखी हुई प्रतिया है।

इस म य सूची के मनाशन से भारतीय साहित्य एव विशेषत जैन साहित्य को कितना लाभ पहुँचेगा इसना सही अनुमान तो विद्वान ही कर सकेंगे किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इम भाग के प्रकाशन से सरकृत, अपन्न श एव हिन्दी की सैकड़ों प्राचीन एवं खज्ञात रचनायें प्रकाश में आयी हैं। हिन्दी की अभी १३ वीं शताब्दी की एक रचना जिनदत्त चौपई जयपुर के पाटोदी के मन्दिर में अपलब्ध हुई है जिसको सभवत हिन्दी भाषा की सर्वाधिक प्राचीन रचनाओं में स्थान मिल सकेगा तथा हिन्दी साहिन्य के इतिहास में वह उल्लेखनीय रचना कहलायी जा सकेगी। इसके प्रकाशन की व्यवस्था शीम ही की जा रही है। इससे पूर्व प्रद्युष्ठ चरित की रचना प्राप्त हुई थी जिसको सभी विद्वानों ने हिन्दी की अपूर्व रचना स्वीकार किया है।

उक्त सूची प्रकाशन के अतिरिक्ष चेत्र के साहित्य शोध सस्थान की श्रोर से अब तक प्रथ सूची के तीन माग, प्रशन्ति सप्रह, सर्वार्थिसिद्धिसार, तामिल भाषा का जैन साहित्य, Jamism a key to true happiness तथा प्रद्युम्नचरित आठ प्रयों का प्रकाशन हो चुका है। सूची प्रकाशन के अतिरिक्त राजस्थान के विभिन्न नगर, करने एव गानों में स्थित ७० से भी अधिक भड़ारों की प्रथ सूचिया वनायी जा

क् भी ह्यारे सरकान में हैं, तथा किनसे विद्यान पूर्व साहित्य शोध में नात हुये विद्यार्थी लाम क्यते रहते हैं। म स सुचिनों के साथ २ करीत ४ से भी कांधिक महत्वपूर्व एएं मचीन म वो की मरास्तियों एवं परिचय क्षित्रे वा चुके हैं किएं भी पुस्तक के एवं में मक्यरित करने की बोकज है। बेन विद्यानों प्राप्त क्षित्र हुये हिम्मी पद भी इन मंत्रीत करने की बोकज है तथा संनद है। एसे करीत २ ० पतें का समने समझ कर सिचा है किएं भी मक्यरित करने की बोकज है तथा संनद है सब पद हम इससा प्रवम माग मम्मीराज ए सकें। इस तरह काल पूर्व स्वारित करने की कालज है तक करें रव से बेच में साहित्य साथ संस्तान की स्वारना की सी इस्तार चह करें रव बीरे बीरे पूरा हो रहा है।

आरत के विभिन्न विधाननों के भारतीय मायाओं सुक्ता आहर संकृत कायश्रा दिश्ती एकं राज्याचारी आध्यमों पर लोज करने याके सभी विद्यानों से निवेदन हैं कि वे आचीन स्वाहित एवं विद्यादा जैन शाहित पर लोज वरते वा अरास वर्षे । इस भी कहें साहित्य वस्तास्थ करने में दवाराधि स्वयोग में में

मंत्र सूची के इस माग में वस्तुर के दिन दिन स्वार की सूची ही गई है मैं बन भंडारों के समी स्वारत्यकों का तथा विशेषक भी नाष्ट्रास्त्र विश्व कायूर्यक्षी शीवान में अंबरहासजी स्थानतीं कीरावसलकी गोगा समीरस्वत्री बादवा कपूर्यक्षी रोक्स व्यव में मुख्यतंत्रीस्त्र वी कैन का सामारी है विज्तान हमारे शाव संस्थान क दिवारों के साल अंबरों की सुच्यां बनामे तथा समय समय पर वहां के मंत्री को बन्त में पूर्ण सद्याग दिया है। सारवा है सविषय में भी बनका साहित्य संवार कपूरीत इसने में स्वारता मिक्सा होता।

हरू की या शामुदेव राज्यजी कमवाल दिन् विश्वविद्यालय राज्यजी के हरूप से धानारी हैं जिन्होंने पालाल हात हुवे भी हमारी प्राप्तना लीका करक म व सूची की जूनिका विकास की इना की है। भविका में उनका माचीन साहित्य के शोध कात्र में निर्देशन निकता रहेगा पेसा हमें पूर्व विश्वास है।

इस मंत्र के विद्याल सम्पादक की वा कान्यु कहती काम्यतीवाल पर्व उतक सहवागी की यं अनुवर्ष दक्षी स्थावनीचे स्थावी सुगत्य वेदारी जैन ना भी में बामारी हूं किसीन विस्तार प्रत्य मंदारीं बा इनकर सन्तर वर्ष बंदासा से इसा स को मैं पार किसा है। में जानुर के मुनायन विद्यार भी यं भीन सुम्यामानी न्यावनीच का भी हरूप से बामारी हूं कि जिनका इनका साहित साब सन्तान के बार्जों में कह प्रशास न सक्तांग मिनुना एका है।

केंग्र(सास बन्धी

भूमिका

श्री दिगम्बर जैन श्रितशय चेत्र श्री महाबीर जी, जयपुर के कार्यकर्ताश्रों ने कुत्र ही वर्णों के भीतर श्रपनी सस्था को भारत के साहित्यक मानचित्र पर उमरे हुए रूप मे टाक दिया है। इस संस्था द्वारा सचालित जैन साहित्य शोध सस्थान का महत्वपूर्ण कार्य सभी विद्वानों का ध्यान हठात् श्रपनी श्रोर खींच लेने के लिए पर्याप्त है। इस सस्था को श्री कस्तूरचद जी कासलीवाल के रूप मे एक मौन साहित्य साधक प्राप्त हो गए। उन्होंने श्रपने सकल्प वल श्रीर श्रद्भुत कार्यशिक द्वारा जयपुर एव राजस्थान के श्रन्य नगरों मे जो शास्त्र भडार पुराने समय से चले श्राते हैं उनकी हान बीन का महत्वपूर्ण कार्य श्रपने ऊपर का लिया। शास्त्र भडारों की जाच पड़ताल कर के उनमे सस्कृत, प्राकृत श्रपन्न श्र, राजस्थानी श्रीर हिन्दी के जो श्रनेकानेक प्रथ सुरिच्ति हैं उनकी क्रमबद्ध वर्गीकृत श्रीर परिचयात्मक सूची बनाने का कार्य विना रुके हुए कितने ही वर्षों तक कासलीवाल जी ने किया है। सौभाग्य से उन्हें श्रतिशय चेत्र के सचालक श्रीर प्रवधकों के रूप में ऐसे सहयोगी मिले जिन्होंने इस कार्य के राष्ट्रीय महत्व को पहचान लिया श्रीर सूची पत्रों के विधिवत् प्रकाशन के लिए श्राधिक प्रवध भी कर दिया। इस प्रकार का मणिकाचन सयोग वहुत ही फ्लप्रद हुत्रा। परिचयात्मक सूची प्र थों के तीन भाग पहले मुद्रित हो चुके हैं। जिनमे लगभग दस सहस्त्र प्र थों का नाम श्रीर परिचय श्रा चुका है। हिन्दी जगत में इन प्रथों का व्यापक स्वागत हुश्रा श्रीर विश्वविद्यालयों मे शोध करने वाले विद्वानों को इन प्रथों के द्वारा बहुत सी श्रह्वात नई सामग्री वा परिचय प्राप्त हुश्रा।

उससे प्रोत्साहित होकर इस शोध सस्थान ने श्रपने कार्य को श्रौर श्रधिक वेगयुक्त करने का निरचय किया। उसका प्रत्यच्च फल प्रथ सूची के इस चतुर्थ भाग के रूप में इमारे सामने है। इसमें एक साथ ही लगभग १० सहस्त्र नए हस्तिलिखित प्रथों का परिचय दिया गया है। परिचय यद्यपि सिन्ति हैं किन्तु उसके लिखने में विवेक से काम लिया गया है जिससे महत्वपूर्ण या नई सामग्री की श्रोर शोध कर्ता विद्वानों का ध्यान श्रवश्य श्राकुष्ट हो सकेगा। प्रथ का नाम, प्रथक्तों का नाम, प्रथ की भाषा, लेवन की तिथि, प्रथ पूर्ण है या श्रपूर्ण इत्यादि तथ्यों का यथा सभव परिचय देते हुए महत्वपूर्ण सामग्री के उद्धरण या श्रवत्या भी दिये गये है। प्रम्तुत सूची पत्र में तीन सौ से ऊपर गुटकों का परिचय भी सिम्मिलित है। इन गुटकों में विविध प्रकार की साहित्यिक श्रोर जीवनोपयोगी सामग्री का समह किया जाता था। शोध कर्त्ता विद्वान यथावकाश जव इन गुटकों की व्योरेवार परीचा करेंगे तो उनमें से साहित्य भी बहुत सी नई सामग्री प्राप्त होने की श्राशा है। प्रथ सख्या ४४०६ गुटका सख्या १२४ मे भारतवर्ष के भौगोलिक विस्तार का परिचय देते हुए १२४ देशों के नामों की सूची श्रत्यन्त उपयोगी है। प्रथ्वीच व परित्र श्रादि वर्णक प्रथों मे इस प्रकार की श्रीर भी भौगोलिक सूचिया मिलती है। उनके साथ इस सूची

का तुक्तसारक क्षम्पनत वपयोगी होगा। किसी समन इस सुनी में ध्य देशों की संस्था रूप हो गई थी। ग्राठ होगा है क्षाकास्त में क्यू संस्था १२४ तक पूँच गई। गुरुवा संस्था २२ (शव संस्था ४२ २) में नगरों की वसायत का संवत्तार कीरा भी कालंतनीय है। बसे संवत् १६१२ कारूप पातसार कारतो बजायो : संस्तृ १०१४ कीर तसाइ पातसाइ कीर गायाद वसायों संबन् १२४८ विसन्त मंत्री सर हुना विसन्न बसाई।

राज्यान में हुआ राज्य मंत्रार सामरा वो सी है और कार्य संस्थित म वो की संज्य जानता है। ताज के सांचित्र को सांच की सांच है। वर्ष की वात है कि साथ संस्थान के कार्य करी हम मार्ग शिक्य के प्रतिक सामरा की सांच क

बायी विद्यालय ३—१ == १६५१

मस्ताबना

राज्यधान शताहित्या से मारित्यिक चेत्र रहा है। राज्यधान की रियासतें यद्यपि विभिन्न राज्यों के प्रधीन थी जो प्रापम में भी लड़ा परती थीं फिर भी इन राज्यों पर देहली पा सीधा सम्पर्क नहीं रहने के प्रारण यहा प्रधिक राजनीतिक उथल पुधल नहीं हुई प्रौर मामान्यत यहां शान्ति एव व्यवस्था वनी रही। यहा राजा महाराजा भी प्रपनी प्रजा के मभी धर्मा का समादर करते रहे इसलिये उनके शासन में सभी धर्मों को म्यतन्त्रता प्राप्त थी।

जैन धर्मानुयाची नर्टन शान्तिप्रिय रहे हैं। इनका राजम्यान के सभी राज्यों में तथा विशेषतः जयपुर, जोधपुर, तीकानेर, जैसलमेर, उदयपुर, तूटी, कोटा, प्रलबर, भरतपुर प्राद्धि राज्यों में पूर्ण प्रमुत्व रहा। शताब्दियों तक वहा के शासन पर उनमा प्रधिकार रहा थ्यार वे श्रपनी स्वामिभिक्त, शासनवज्ञता पन सेना के कारण सर्वेव ही शासन के सर्वोच्च स्थाना पर कार्य करते रहे।

प्राचीन माहित्य की तुर ज्ञा एव निर्मात के निर्माण के लिये भी राजस्थान का याता वरण जैनों के लिये बहुत ही उपयुक्त मिद्ध हुआ। यहा के शामकों ने एप ममाज के सभी वर्गों ने उस धोर बहुत ही रुचि दिखलायी इसलिये संकड़ों की मस्या में नये नये प्रथ तैयार किये गये तथा हजारों भाचीन प्रथों की प्रतिलिपिया तैयार करता कर उन्हें नष्ट होने में बचाया गया। ध्याज भी हस्तलिखित प्रधों का जितना मुन्दर सप्रह नागीर, बीकानेंग, जैसलमेर, श्राजमेर, ध्यामेर, जयपुर, उदयपुर, श्रह्मभदेव के प्रध भहारों में मिलता है उतना महत्वपूर्ण सप्रह भारत के बहुत कम भटारों में मिलेगा। ताडपत्र एवं कागज वोनो पर लिगी हुई मबसे प्राचीन प्रतिया इन्हों भन्डारों में उपलब्ध होती है। यही नहीं श्रपश्च हा, हिन्दी निया राजन्यानी भाषा का श्रिधिकार साहित्य इन्हों भन्डारों में संप्रहीत किया हुश्रा है। श्रपश्च श साहित्य के संप्रह की दिए में नागौर एवं जयपुर के भन्डार उल्लेग्नीय है।

श्रजमेर, नागौर, श्रामेर, उदयपुर, द्व गरपुर एव ऋपभदेव के महार मद्दारकों की साहित्यिक गतिविवियों के वेन्द्र रहे हैं। ये भट्टारक केंग्रल घार्मिक नेता ही नहीं थे किन्तु इनकी साहित्य रचना एवं रनकी सुरज्ञा में भी पूरा हाथ था। ये स्थान स्थान पर श्रेमण करते थे श्रीर वहा से प्रन्थों की बटोर कर इनमें श्रपने मुख्य मुख्य स्थानों पर समह किया करते थे।

शास्त्र भड़ार सभी त्राकार के हैं कोई छोटा है तो कोई वड़ा। किसी में केवल स्वाध्याय में काम त्राने वाले प्रथ ही सग्रहीत किये हुये होते हैं तो किसी किसी में सब तरह का साहित्य मिलता है। साधारणत हम इस प्रथ भड़ारों को ४ थ्रे णियों में वाट सकते हैं।

- १ पाच हजार प्रथों के समह वाले शास्त्र महार
- २ पाच हजार से कम एव एक हजार से ऋधिक प्रथ वाले शास्त्र भडार

- 1. यह इसार से कम एवं यांचसी से कविक म व बाल शास्त्र मंत्रार
 - र पांचसी प्रची से कम बात साल्य मंद्रार

इन साहत मंदारों में देवत सामिक सहित्य ही वस्त्रक्ष्म मही होता किन्तु कास्त्र, पुराण कोतिय, साहुर्वेद, संक्त्य कादि विश्वों साम स्वात हैं। अपोक सामक की विश्व के दिवद, क्या कादिय, साहुर्वेद, संक्त्य कादि विश्वों से स्वात हैं। अपो तहीं सामिकिक राजनीतिक पर्व अवेदार पर भी मंत्री का संक्र्य सिंदरा में उच्च मंद्रारों में बीनेदर विद्यानों हार सिंदर्व हैं व ब्राव्य मंत्रे से संत्रक्ष कि हैं। है सादक मंद्रार लोक करने वाह विद्यानों के दिवेद तोच संव्यान हैं हैंकिन अदारों में स्वीत की इतनी कामूब्य स्वयों हुने मी क्ष्य वर्षों पूर्व कर वे विद्यानों के मूर्विक के बादर रहे। काद कुर समय बदला है और संदर्श के क्यावसाय को विद्यानों में स्वर्ती मान्य कार्यों के विद्यानों में स्वर्ती मान्य कार्यों को स्वर्ती मान्य कार्यों के स्वर्ती मान्य कार्यों के स्वर्ती मान्य के स्वर्ती के स्वर्ती के स्वर्ती के स्वर्ती के स्वर्ती के स्वर्ती मान्य के स्वर्ती के स्

थे प्रंय प्रवार प्राचीन पुर में पुरस्थासकों का काम भी देते थे। इसमें देठ कर स्वाध्माय प्रेमी सुरायों का कामकान किया करते थे। प्रवासमय दन मंत्री की सुर्यक्षों भी क्षाक्रम हुआ करती नी दका ये मंत्र कहती के दुन्नों के भीन में स्वक्रम सुर मानवा सिलक क भीतों से बांके थे। फिर इन्हें करते के बेहनों में बीच दिया जाता था। इसा प्रकार वंदी के बैहानिक रीति चारले जात के कारण इन भंदातों में ११ वी स्वाध्मी तक के जिले हुये स्व पार्य जाते हैं।

बैसा कि पहिले बहा जा शुक्ष है कि वे भंब मेंबार नगर वर्ष पांची तक में पाने काते हैं इस्स्कृति राजस्थान में उनकी बास्यविक संस्था कितनी है इसका पता बाराना विकास है। फिर भी बड़ी अञ्चानता होटे बहु र अंदार होंगे जिनमें १।, र काल से व्यक्ति इस्तिविध्य शबी का संस्कृ है।

सक्तुर मारभ्य से ही सैन संबद्धित पर पादित्य का केन्द्र सा है। यहां १४ से भी पाविक किन मंदिर पर्य चैत्यक्षत्र हैं। इस नार की स्वाधना संवन् १७८४ में महाराजा सवाई अपस्टिक्षी हार्ग की गई भी तथा भरी राजप सामेर के नजार कच्छा का राजधानी नवाया गया था। महाराजा ने हरे साहित्य एपं कता का भी केन्द्र नवाच जाया कर राजकीय गीनीलानं की त्यापता की जिससे मारत के विश्वक स्वानी से नार्य गये सैन्डों महत्वपूर्ण इस्तिकित मंग सम्हीत किये हुये हैं। वहां के महाराजा प्रताहस्तिकी भी विद्यान्त थे। इसीन जिमने ही मंत्र किया है। इसम सिन्य हुमा एक मंत्र संगीतस्वर जप्तुर के बड़े मन्दिर के राज्य अंशार में संगतित है। १८ वीं एवं १६ वीं शताब्दी में जयपुर में अनेक उच्च कोटि के विद्वान हुये जिन्होंने साहित्य की अपार सेवा की। इनमें दौलतराम कासत्तीवाल (१८ वीं शताब्दी) टोडरमल (१८ वीं शताब्दी) पुमानीराम (१८, १६ वीं शताब्दी) टेकचन्ट (१८ वी शताब्दी) टीपचन्द कासलीवाल (१८ वीं शताब्दी) जयचन्द्र छावड़ा (१६ वीं शताब्दी) केशरीसिंह (१६ वीं शताब्दी) नेमिचन्द पाटनी (१६ वीं शताब्दी) नन्दलाल छावडा (१६ वीं शताब्दी) स्वरूपचन्द विलाला (१६ वीं शताब्दी) सवासुख कासलीवाल (१६ वीं शताब्दी) मञ्जालाल खिन्दूका (१६ वीं शताब्दी) पारसदास निगोत्या (१६ वीं शताब्दी) जैतराम (१६ वीं शताब्दी) पत्रालाल चौधरी (१६ वीं शताब्दी) दुलीचन्द (१६ वीं शताब्दी) श्रादि विद्वानों के नाम उल्लेखनीय हैं। इनमें अधिकाश हिन्दी के विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी के प्रचार के लिये सैकड़ों प्राफ्ठत एवं सस्कृत प्रथों पर मापा टीका िखी थी। इन विद्वानों ने जयपुर में प्रथ भन्डारों की स्थापना की तथा उनमें प्राचीन प्रथों की लिपिया करके विराजमान की। इन विद्वानों के अतिरिक्त यहा सैकड़ों लिपिकार हुये जिन्होंने श्रावकों के अनुरोध पर सैकड़ों प्रन्थों की लिपिया की तथा नगर के विभिन्न भन्डारों में रखी गई।

प्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भड़ारों के प्रथों का विवरण दिया गया है ये सभी शास्त्र भड़ार यहा के प्रमुख शास्त्र भड़ार है छौर इनमें दस हजार से भी ऋधिक प्रथों का संप्रह है। महत्वपूर्ण प्रंथों के सप्रह की दृष्टि से छ, ज तथा का भन्डार प्रमुख है। प्रथ सूची में छाये हुये इन भहारों का सिक्तित विवरण निम्न प्रकार है।

१. शास्त्र भडार दि० जैन मन्दिर पाटोदी (श्र भडार)

यह भहार दि॰ जैन पाटोदी के मदिर में स्थित है जो जयपुर की चौकड़ी मोदीखाना में है। यह मिन्दर जयपुर का प्रसिद्ध जैन पचायती मिन्दर है। इसका प्रारम्भ में श्रादिनाथ चैत्यालय भी नाम या। लेकिन वाद में यह पाटोदी का मिन्दर के नाम से ही कहलाया जाने लगा। इस मिन्दर का निर्माण जीधराज पाटोदी द्वारा नराया गया था। लेकिन मिन्दर के निर्माण की निरिचत तिथि का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। फिर भी यह श्रवश्य कहा जा सकता है कि इसका निर्माण जयपुर नगर की स्थापना के साथ साथ हुश्रा था। मिन्दर निर्माण के परचात यहा शास्त्र भड़ार की स्थापना हुई। इसलिये यह शास्त्र भड़ार २०० वर्ष से भी श्राधक पुराना है।

मन्दिर प्रारम्भ से ही भट्टारकों का केन्द्र बना रहा तथा श्रामेर के भट्टारक भी यहीं श्राकर रहने लगे। भट्टारक स्त्रेमेन्द्रकीर्त्त सुरेन्द्रकीर्त्त, सुखेन्द्रकीर्त्त एव नरेन्ट्रकीर्त्त का कमरा सवत् १८१४,

१. देखिये ग्रथ सूची पृष्ठ सख्या १६६, व ४६०

हंदर-, हिन्दरे, तथा हेटको में वहीं प्राप्तिपको हुमा था। इस प्रश्नेत इंतरत इस मन्दिरं से केरीच १०० केर्प यक सीचा सम्पर्क रहा।

प्राप्तम में बहाँ का साहज मंद्रार महारहों की देख देख में रहा इसंजिय साहजों के संगद में दिन प्रतिदिन इसि होती रही। क्हों धानजों की जिलना जिलवान की भी अच्छी स्प्यस्था भी इस्पेंडिये बावकों के ब्युताब पर बही मंत्रों की प्रतिक्रियियों भी होती रहती की । महारहों का जब समाव बीज होने बता तवा कव में स्पादित्य की जोर वर्षका हिल्लाम बाने वा कही के मंद्रार की स्थ्यका आवसों में संभाव की। वर्षका स्थार मंद्रार में शंगदीत मंत्रों को देखने के परवान वह जल बतता है कि बावकों में साम के सहार के को की मन्त्र पृद्धि में विश्वय धामकांच बढ़ी विजवाई और कहोंने में सहार को स्था स्थावा में स्थावता ना।

इस्तक्तिवित व वी धी संख्या

संवार में सारकों की इस संबच्ध २०१० वना गुरुकों की सबका २०० है। संक्रिन पंच एक गुरुके में बहुद सा अने वा संबद्ध होता है इसकिय गुरुकों में १००० से भी स्वविक संबी का संबद्ध है। इस प्रकार एस संवार में आर बचार भी का समझ है। माकामर, स्वीव पर्य स्ववार्त्य की एक एक प्रवारकीय प्रति को बोह कर रोग सभी में बागान पर सिन्ते हुने हैं। इसी संवार में बगड़े पर क्रिके हुने इस बनाइीय पर्य कार्याक्रीय के निर्मे एये बन्ता, गंत्र कार्यि का बन्तवनीय संवार में

प्रेशार में महावादि पुरावरण कुल काहर वादि व एगोवन परि) की ग्रांद छवा मानित है को संदत्त १४०० में वन्त्रपुर पूर्ण में मिली गाँ की । इनके धांतिरिक व्यां ११ थीं । १६ की, १० मी पूर्व १६ ग्री ग्रांताकी में किके हुए कवी की संक्या आविक है। माणील ग्रांतियों में गोन्मरासा वीवकांत्र, तत्त्राव सुत्र (स. १४४८) प्रत्यवक्ताव होंच (स्वादेवन्त है। १९६९), क्याराध्यवाद शेषा (से १४४४), वर्ष संग्रद बाल्वाचार (संवर १४४९) मावकाचार (शुम्धर), क्याराध्यवाद १९६९), क्यानामार ११४४, में संग्रद बाल्वाचार (संवर १४४९) मावकाचार (शुम्धर), क्याराध्यवाद १९६९), ग्रांतियाच प्रताव (भारतकांत्रि सं १४४९) में गिराव प्रांतिय (क्यान वेच सं १९६९) मावकांत्राया स्वादेव संवर्ष संवर्धन में स्वादेव संवर्धन स

विभिन्न विवर्ती से सम्बद्धिक एक

रास्त्र मंत्रार में प्राय सभी विषयों के सभी का श्लोक है। किर भी पुराय, वरिल, काव्य, क्या स्थापरा, साववेंद के वर्ती का अध्यक्ष संख्य है। पृक्षा एवं स्त्रीय के सभी की संक्या भी पर्यंत्र

१ अहारक बहुत्तवी सामेर बाहन वैजार विकार देशक में १७९४

जयपुर के प्रसिद्ध साहित्य सेवी



पेंद्रतको नम् नम् नमितनि विश्व में भी है यूयल म् परस्ता मार्थ में होने विश्व हुत है जो के या मह समिती सर्व मिरिय में बीने मार्ग है जो के या मह समिती सर्व मिर्य में सीने मा अपी हिम्मी है समित में प्रति में सीने माने सामिति के स्वास्त्र में सम्बद्धिया राज कि समिति में सिम्मी माने सामित में सम्बद्धिया जिन के मार्ग है सिम्मी में सिमी में सिम्मी में सिम्मी में सिम्मी में सिम्मी में सिम्मी में सिम्

वस्ट्रसेन्द्रवेशस्य विक्रमानायायः ने वर्षः । वरिवक्षप्रकल न सुन्याते ती निवस्र सुरुष्ट्रम् । सुन्य श्राह्मा अभिनयमंत्रमा वस्तर्भ ने ती ने देशिर प्रोह्मा ही नी सुन्य स्ट्राह्मा । स्रोह्मा वस्त्र के स्ट्राह्मा ही नी सुन्य सुरुष्ट्र । स्ट्राह्मा स्ट्राहमा स्ट्राह्मा स्ट्राह्मा स्ट्राह्मा स्ट्राह्मा स्ट्राह्मा स्ट्राहमा स्

> र्थ चौत्रतरामकी कासकीशाब कर बीयन्कर चरित्र की मूख पायकृतिप कं यो पत्र

है। गुटकों मे स्तोत्रों एक कथा यों ना अच्छा समह है। आयुर्वेट के मैकडों नुमखें इन्हों गुटनों में लिखें हुने हैं जिनका आयुर्वेटिक विद्वानों द्वारा अध्ययन किया जाना आपण्येक है। इसी तरह विभिन्न जैन विद्वानों द्वारा लिखें हुने हिन्दी पटों का भी इन गुटकों में एक स्वतन्त्र रूप से बहुत अच्छा समह मिलता है। हिन्दी के प्राय सभी जैन कवियों ने हिन्दी में पट लिखे हैं जिनका अभी तक हमें कोई परिचय नहीं मिलता है। इसलिये इस दृष्टि में भी गुटकों का समह महत्वपूर्ण है। जैन विद्वानों के पट आध्यात्मिक एव स्तुति परक दोनों ही है और उनकी तुलना हिन्दी के अच्छे से अच्छे किये के पटों से की जा सकती है। जैन विद्वानों के अतिरिक्त कर्जीर, स्रदास, मल्कराम, आदि कवियों के पटों का समह भी इस भड़ार में मिलता है।

र्थज्ञात एव महत्वपूर्ण ग्रथ

शास्त्र भड़ार में सन्कृत, श्रपश्र श, हिन्दी एव राजस्थानी भाषा में लिखे हुये सैंपडों श्रज्ञात मध प्राप्त हुये हैं जिनमे से कुछ प्रथों का सिच्ति परिचय चारी दिया गया है। सरकृत भाषा के प्रथों मे व्रतकथा कीप (सक्तकीर्त्ति एवा देवेन्द्रकीर्त्ति) त्र्याशाधर कृत मृपाल चतुर्विगति स्तोत्र की संस्कृत टीका एष रत्नत्रय विधि भट्टारक सकलकी।त्तं का परमात्मराज स्तोत्र, भट्टारक प्रभाचद् का मुनिधुत्रत छद, स्त्राशा-घर के शिष्य विनयचढ की भूपालचतुर्विणति स्तोत्र की टीना के नाम उल्लेखनीय है। श्रपश्रश भाषा के मयों में लत्तमण देव कृत खेमिखाह चरिउ, नरसेन की जिनरात्रितिधान कथा, मुनिगुण्भद्र का रोहिखी विधान एव टशलक्त तथा, विमल सेन ती सुगबदशमीवथा श्रहात रचनार्ये है। हिन्दी भाषा की रचनात्रों मे रल्ह कविकृत जिनवत्त चौपई (स १३५४) मुनिसकलकीर्ति की वर्मचूरिवेलि (१७ वीं शताब्दी) ब्रह्म गुलाल का समोशरणवर्णन, (१७ वीं शताब्दी) विश्वभूरण कृत पार्र्वनाय चिरित्र, छपाराम का ज्योतिप सार, पृथ्वीराज कृत कृष्णकिक्मणीवेलि की हिन्दी गर्य टीका, यूचराज का सुननकीर्त्ति गीत, (१७ वीं शताब्दी) विहारी सतसई पर हरिचरणवास की हिन्दी गद्य टीका, तथा डनका ही कविवल्लम प्रथ, पद्मभगत का कृष्णरुक्तिमणीमगल, हीरकवि का सागरदत्त चरित (१७ वीं राताव्टी) कल्याणकीर्ति का चारुटत्त चरित, हरिवश पुराण की हिन्टी गद्य टीका आदि ऐसी रचनाए है जिनके सम्बन्य मे हम पहिले अन्धकार मे थे। जिनद्त्त चौपई १३ वीं शताब्दी की हिन्दी पद्य रचना है श्रीर श्रव तक उपलब्ध सभी रचनाश्रों से प्राचीन है। इसी प्रकार श्रन्य सभी रचनायें महत्वपूर्ण है। ^{प्रंथ} भड़ार की दशा संतोषप्रद है। श्रधिकाश प्रंथ वेप्टनों में रखे हुये हैं।

२. त्रामा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार (क भंडार)

वावा दुलीचन्द का शास्त्र भडार दि॰ जैन बड़ा तेरहपथी मन्दिर मे स्थित है। इस मन्दिर मे दो शास्त्र भडार है जिनमे एक शास्त्र भडार की अथ सूची एव उसका परिचय अधसूची द्वितीय भाग में है दिया नाम है। दूसरा शास्त्र मंत्रार इसी सर्थित में बाबा दुसीवर्थ इसरा स्वापित किया नाम बा इस किय इस मंत्रार का करी के नाम से पुष्पा बाता है। दुसीवर्थकी बच्छा के मूस निवासी नहीं से किया है नाएएड़ के पूना विका के फरून मानाइ स्वान के एएंगे वाले से। वे बच्छा इस्तक्षित स्वरूपों के साथ यात्र करते हुँदे भाग और कर्यों ने सर्थों की सुखा के छिट्ट से बच्छा को स्वरूप को स्वरूप साथ बातकर पर्यो पर स्वरूप संध्यातवा स्वापित करने का तिस्वय का विजा।

यह राज्य मंद्रार पूर्वेश व्यवस्थित है तथा सभी मण प्रकार करना बंग्यों में रहे हूँ हैं।
यह एक मंग्र सीम तीन एवं कोई बाई को बार बार बेयनों में बचा हुआ है। राज्यों की पेसी सुरवा बस्सुर के किसी संबार में पार्दी मिलेगी। राज्य मंद्रार में सुकला संबद्धा वर्ष दिस्ती कार्य हैं। दिस्ती के मंत्र कार्यराज संबद्धा मणी की माना टीकार्य हैं। वैस्त तो मान सभी विश्वों पर पहाँ मार्यों की मंत्रक मिलारी हैं स्वीकन मुक्का पुराय, कहा बारित वर्ष क्य विद्वालय विश्व से संबंधित मंत्री ही का वहां व्यवस्था संस्त है।

१६ वी राजानी के प्रसिद्ध दिन्ती निवान में नमाजाजनी संबी व्याधिकरी साहित्य क्यों संस्थान है। इसी सरह संबाद के संस्थापक दुक्षीचन की मी क्यों साही एकामा दिखती हैं। इन्होक सीव वर्ष सहस्यूर्ध में को में बाहु वर्षि का प्राहत्यहरूकोण, विश्वववन्द की हरियान काम्यी वारित्यन्त्र सुर्दि का पवन्त्रुत काम्य, जानावेच पर स्थापित्यार की संस्थान दीका गोस्मय साह पर संक्षासूचन वर्ष वर्षन्यन की संस्थान टीका गोस्पा स्थापित एकामा में उपदेशरत्नमाला भाषा (म० १७६६) हरिकिशन का भद्रबाहु चरित (मं० १७८७) इत्तपित जैसवाल की मन-मोदन पचित्राति भाषा (स० १६१६) के नाम उल्लेग्ननीय हैं। इस भटार में हिन्दी पदोंका भी प्रच्छा सब्रह है। इन कवियों में माण्कचन्द, हीराचद, दौलतराम, भागचन्द, मगलचन्द, एव जयचन्द छावडा के हिन्दी पद उल्लेखनीय हैं।

३. शास्त्र भंडार दि॰ जैन मन्दिर जीवनेर (स भंडार)

यह शास्त्र भडार दि॰ जैन मन्दिर जीवनेर में स्थापित है जो खेजडे का रास्ता, चाटपोल वाजार में स्थित है। यह मन्दिर कब बना था तथा किसने बनवाया था इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है लेकिन एक प्रथ प्रशस्ति के अनुसार मन्दिर की मूल नायक प्रतिमा प॰ पन्नालाल जी के समय में स्थापित हुई थी। पिंदतजी जोबनेर के रहने वाले थे तथा इनके लिखे हुये जलहोमविधान, धर्मचक पूजा आदि मथ भी इस भढार में मिलते हैं। इनके द्वारा लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रति सवत् १६२२ की है।

शास्त्र भड़ार में प्रथ समह करने में पहिले प० पन्नालाल जी का तथा फिर उन्हों के शिष्य प० बख्तावरलाल जी का विशेष सहयोग रहा था। दोनों ही विद्वान ज्योतिष, त्र्ययुर्वेद, मन्नगास्त्र, पूजा साहित्य के समह में विशेष त्र्यमिक्चि रगते थे इसलिये यहा इन विषयों के प्रयों का त्राच्छा सकलन है। मड़ार में ३४० प्रय हैं जिनमें २३ गुटके भी हैं। हिन्दी भाषा के प्रथों से भी भड़ार में सस्कृत के प्रथों की सख्या श्रिधक है जिससे पता चलता है कि प्रय समह करने वाले विद्वाना का सस्कृत से श्रिधक प्रेम था।

भहार में १७ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी के प्रथों की ख्रिधिक प्रतिया हैं। सबसे प्राचीन प्रति पद्मनिन्द्पचिंदाित की है जिसकी सबन् १५७ में प्रतिलिपि की गई थी। महार के उल्लेखनीय प्रथों में प॰ आशाधर की आराधनासार टीका एवं नागौर के भट्टारक चेंमेन्द्रकीित कृत गजपथामहलपूजन उल्लेखनीय प्रथ हैं। आशाधर ने आराधनासार की यह वृत्ति अपने शिष्य मुनि विनयचंद्र के लिये की थी। प्रेमी जी ने इस टीका को जैन साहित्य एवं इतिहास में अप्राप्य लिखा है। रचुवश काव्य की भहार में सं १६८० की अच्छी प्रति है।

हिन्दी प्रंथों में शातिकुशल का अजनाराम एव पृथ्वीराज का रूक्मिणी विवाहलो उल्लेखनीय प्रथ हैं। यहा विहारी सतसई की एक ऐसी प्रति है जिसके सभी पग्र वर्ण कमानुसार लिखे हुये हैं। मानसिंह का मानविनोद भी आयुर्वेद विषय का अच्छा प्रथ है।

शास्त्र भडार दि. जैन मन्दिर चौधिरयों का जयपुर (ग मंडार)

यह मन्दिर बोंली के कुछा के पास चौकड़ी मोदीखाना में स्थित है पहिले यह 'नेमिनाथ के मिटर' के नाम से भी प्रसिद्ध था लेकिन वर्तमान में यह चौधरियों के चैत्यालय के नाम से प्रसिद्ध है। यहा छोटा समयग्रातीन विश्वानों में से नवशराम, गुमानीराम, अववन्द टापड़ा टाक्सम ! मन्नावास विश्वा स्वक्रपचन्द्र विश्वाका के नाम उत्सालनीय है और संभवत इन्हीं विद्वानों क सहयोग से वे मंधीं का इन्त्य समा कर सके बीचे । प्रतिमासीवनतुत्रशीजवाचापन सं १८००, गाम्नटसार स १८८६, पंचतन्त्र सं १८८५

चत्र चुद्रमण्डि सं १८६१ चार्वि श्रेयों की प्रतिक्षिप्यों करना कर श्वाम संबार में विराजमान की भी।	
मंद्रार में व्यक्तियांश संबद्ध है भी र भी शताब्दी का व किन्तु क्षक्र संब १६ की एवं १७ की	
शताब्दी के भी हैं। इतमें दिस्त मंथीं के नाम बस्स्रकनीय हैं।	

र भार्ष+ १४४३

ef 98 a

संस्कृत

बपसर्गेदरस्तोत्र

सम्बद्धानस्था

पुष्प चन्द्राचार्यं

गीत पर्व चाहिनाथ स्तवन

र्पः साम्रहेद

धमरकीर्ति पद्वर्गीपवेशसम्बद्धाः		70	! \$ \ ?	च्यपश्च रा
पुरुष्याप् सर्वार्थसिद्धि		र्स	99×2	मंसहद
<u>भुष्पद्रस्य</u>	क्सोधर चरित्र	ŧi	FFR	च्यपन श
मधनेनिर्ध	नेमिनाय पुराण	सं	£464	ভল্ক ৰ
बोमराज	अवचनसार मापा	स	ful.	हिम्दी

द्धाति जैन मन्दिर गोधी का वपपुर (अ मीहार)

गोची का सन्दिर वी शक्तों का रास्ता, बागोरियों का चौक औदरी वाजार में रिकन है। इस सरितर का निर्माण हैय की शताक्त्री के बास में हुन्या था और सरिश्र किर्माण के परचात ही बर्बा शास्त्रों

हा संमद किया बाना प्रारम्भ हो गया था। बहुत स्थ संब पही स्वीमनेत्र के प्रीम्हार गरे हे। बदायन में पही एक सुम्बारिका प्रारम संबार है विस्तर्भ देश इस्ताविकार संब एवं १ श्राहरक है। मंद्रार में पुरास करित कथा पूर्व स्थाहित का वस्त्रण संबंद है। ब्राह्मिय में पर की प्रारामी से हेकर १६ वी रहात्राक्षी तक के किये हुए है। सहस्त्र संबार में अवस्थानमंत्र की संदन् १२८५ में विक्री हुई मेरित सहस्त्रा महिता है। यहाँ दिश्ती स्वामार्थी वा भी व्यवस्त्र संबद्ध है। दिश्ती की निम्म स्वामत्र महत्वपूर्व है को अन्य मंत्रारों में सहस्त्र की में नहीं मिलती हैं।					
विन्तामधिजयगात	ठस्पुर फवि	ब्रिएरी	११ को राज्यकी		
शीसम्बर स्तवन		10	7 ×		

पश्च ऋषि _

नेनीश्वर चौमामा	र्गात सिह्तिनित	हिन्दी	१७ वीं शताब्दी
चेतनगीत	1	79	33 23
नेमीग्वर रास	ुनि रननभीर्ति	17	17 17
नेमीम्बर हिंडोन ना	11	11	37 77
दृब्यसम्रह मापा	देमगज	,	उरध्ये वाक वर्
चतुर्वशीक्था	टाल्राम	33	१७६४

चक रचनात्रों के श्रांतिनिक जैन हिन्दी किपयों के पर्वों का भी अच्छा ममह है। इनमें वृच-राज, श्रीहल, कनक्कीति, प्रभाचन्द्र, मृनि शुभचन्द्र, मनराम एव श्रज्ञयराम के पद विशेषत उल्लेखनीय है। सबत् १६२६ में रचित ह नएक्व की होलिका चौपई भी ऐसी रचना है जिसका परिचय प्रथम बार मिला है। सक्त १८३० में रिवत हत्च्य गुगवाल कुत पचकन्याणक पाठ भी ऐसी ही सुन्दर एचना है।

सरहत प्रथों में स्मार्गाम विरचित पचपरमेण्डी म्तोत्र महत्वपूर्ण है। सूची में उनरा पाठ दृद्धृत निया नया है। भहार में मप्रहीत प्राचीन प्रतियों में विमलनाथ पुराण म० १६६६, गुणभद्राचार्य छत धन्यकुमार चिरत म० १६४२, विद्ययमुक्तमडन म० १६४३, मारस्वत दीपिया म० १६४७, नाममाला (बनजय) म १६४३, धर्म परीक्ता (इमितगित) म १६४३, मनयसार नाटक (बनारसीयान) म० १७०४ धादि के नाम उन्हें वनीय है।

६ शास्त्र भंडार दि॰ जैन मन्दिर यशोद।नन्दजी जयपुर (ज मडार)

यह मन्दिर जैन यित यशोदानन्दजी द्वारा स० १८४६ में वनवाया गया था और निर्माण के उद्ध ममत्र पण्चात ही यहा शाम्त्र भहार भी स्थापना कर दी गई। यशोदानन्दजी स्वय माहित्यक व्यक्ति थे स्मिलित उन्होंने थीडे समय में ही अपने यहा शास्त्रों का अच्छा सक्तन कर ित्या। वर्तनान में शास्त्र भहार में ३५३ प्रथ एत १३ गुटफे हैं। अधिकाश प्रथ १८ वीं शताब्दी एव उसके याद भी शताब्दियों में लिंग्वे हुते हैं। ममह मामान्य है। उन्लेखनीय प्रथों में चम्द्रप्रभाव्य पित्रा म० १५६८, प० नित्री चन्द्र छत हितोपदेश की हिन्दी गय टीना, है। प्राचीन प्रतियों में आ० छन्दकुन्द उत समयसार म० १६९८, आशाधर छत सागारधर्मामृत म० १६२८, फेशविमाश्रकृत तर्कभाषा स० १६६६ के नाम उन्लेखनीय है। यह मन्दिर चौडा रास्ते में थियन है।

१० शास्त्र सङ्गर दि० जैन मन्दिर विजयराम पाड्या जयपुर (स. +डार)

विजाराम पाड्या ने यह मन्टिर ६व वनवाया इमना कोई उल्लेप नहीं मिलता लेकिन मन्टिर की दशा को देखते हुये ग्ह जदपुर दमने के समय का ही वना हुआ जान पढता है। यह मन्टिर सा राज्य मंद्रार है किएमें केवल है म इस्तिक्षित म न हैं। इतमें कहे दिन्मी के तथा गए संस्कृत में में प्रकृत मंद्रार के बपनोग में बाने वाले म व हैं। राज्य मंद्रार की स्वा है। सम्बन्ध है निवान में दिन्मी के स्वा है। सम्बन्ध है कि स्वा ने कि स्व में है कि से ने हैं। स्व इसमा कि स्व इसमा है। स्व इसमा है। स्व इसमा है। इसम

शास्त्र महार दि भैन नया मन्दिर वैराठियों की अवर्पुर (व मंडार)

६ शास्त्र महार दि बैन मन्दिर संपीत्री बयपुर (क महार)

संपीजी का बन मन्दिर कब्दुर का मनिक एवं विश्वस्त मन्दिर है। बह चौड़ाी मोदीलाना में महादीर पार्ड के रास दिवत है। मन्दिर का निर्माण दीवान स्तु बारामबी संपी झारा कराजा गया बा। ये महादात कर्यास्त्री के शासम काल में जनपुर के मयान मंत्री से। मन्दिर की मुक्त चंदी में साने एवं बाच का बाद दा रहा है। वह बन्द ही मुन्दर एक बसा पूरा है। काच का देसा व्यव्हा कर्य बहुत ही कम मनिस्ते में मिलता है।

सनिहर के साल मंबार में ६०६ इस्तविवित म वो स्व इंतर हैं। सभी य य संगत्र पर किले हुये हैं। सरिवारा सब रूप वी वर्ष १६ वी शताव्यी के किले हुये हैं। तससे नशीन सब कर्नोबारसम्ब हूं जो संबन् १६६६ में किया ज्या था। इससे क्या क्वाय है कि समात्र में काप भी प्रचों की मरि तिपिया करवा कर भड़ारों मे विराजमान करने की परम्परा है। इसी तरह त्र्याचार्य कुन्दकुन्द कृत पचा-स्तिकाय की सबसे प्राचीन प्रति है जो सबत् १४८७ की लिखी हुई है।

प्रंथ भडार में प्राचीन प्रतियों से स हर्पकीर्ति का श्रानेकार्यशत संवत् १६६७, घर्मकीर्ति की कौमुटीक्या सवत् १६६३, पद्मानिन्द श्रावकाचार सवत् १६१३, स शुभचद्र कृत पाएडवपुराण स १६१३, वनारसी विलास स० १७१४, मुनि श्रीचन्ट कृत पुराणसार स० १४४३, के नाम उल्लेखनीय हैं। भडार में सवत् १४३० की किरातार्जु नीय की भी एक सुन्दर प्रति है। दशरथ निगोत्या ने धर्म परीचा की भाषा सनत् १७१६ में पूर्ण की थी। इसके एक वर्ष बाद स० १७१६ की ही लिखी हुई भडार में एक प्रति संप्रहीत है। इसी भडार में महेश कि कृत हम्मीररासों की भी एक प्रति है जो हिन्दी की एक सुन्दर रचना है। किशनलाल कृत कृष्णवालविलास की प्रति भी उल्लेखनीय है।

शास्त्र भडार मे ६६ गुटके हैं। जिनमें भी हिन्दी एवं संस्कृत पाठों का ख्रच्छा संब्रह है। इनमें हर्पकिव कृत चद्रहसकथा स० १७०८, हरिटास की ज्ञानोपदेश वत्तीसी (हिन्दी) सुनिभद्र कृत शातिनाथ स्तोत्र (संस्कृत) आदि महत्वपूर्ण रचनायें हैं।

७. शास्त्र भड़ार दि॰ जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर (च मंडार)

(श्रीचन्द्रप्रभ दि॰ जैन सरस्वती भवन)

यह सरस्वती भवन छोटे टीवानजी के मन्दिर में स्थित है जो अमरचदजी दीवान के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। ये जयपुर के एक लवे समय तक टीवान रहे थे। इनके पिता शिवजीलालजी भी महाराजा जगतिसहजी के समय में टीवान थे। इन्होंने भी जयपुर में ही एक मन्दिर का निर्माण कराया था। इसिलये जो मन्दिर इन्होंने वनाया था वह बढ़े टीवानजी का मन्दिर कहलाता है और दीवान अमरचटजी द्वारा वनाया हुआ है वह छोटे दीवानजी के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। दोनों ही विशाल एव कला पूर्ण मन्दिर हैं तथा दोनों ही गुमान पथ आम्राप के मन्दिर हैं।

भंडार में ५३० हस्तिलिखित प्रय हैं। सभी प्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। यहा सस्कृत प्रथों का विशेषत पूजा एव सिद्धान्त प्रयों का ऋधिक संप्रह है। प्रथों को भाषा के अनुसार निम्न प्रकार विभाजित किया जा सकता है।

सस्कृत ४१८, प्राकृत ६८, श्रपभ्र श ४, हिन्दी ३४० इसी तरह विपयानुसार जो प्रथ हैं वे

धर्म एव सिद्धान्त १४७, श्रध्यात्म ६२, पुराण ३०, कथा ३८, पूजा साहित्य १४२, स्तोत्र ८१

इन प्रयों के समह करने में स्वय अमरचद्जी दीवान ने वहुत रूचि ली थी क्योंकि उनके

समयकाश्वीन विद्यानों में से नवश्वरास शुमानीराम, जयवन्त कावड़ा बाल्एस । सन्ताहाख विस्तूका लक्ष्मचन्त्र विकासा के नाम करक्षकरीय हैं और संभवता हन्दी विकानों के सहबोग से वे प्रेमी का प्रतास संमद् कर सके बोंगे । प्रतिन्यसांतवत्ववात्रात्रीक्षतोत्रापम सं १८००, गोन्मस्तार सं १८८६, पंचतन्त्र सं १८८०, क्षत्र पुद्धमित सं० १८६१ जावि वर्षों की प्रविक्षिपियां करना कर इन्होंने संकार में विराजसान की भी ।

मंद्रार में व्यक्तियां संग्रह १६ वी २ वी रातान्त्री का है किन्तु कुछ शंब १६ वी एवं १७ वी

श्वाच्यी के भी हैं। इनमें निग्न मंदों के नाम क्लोकनीय है।

के कार्च १४४३

पण्यभव्य	खारुवाय या न ्या	£	\$ £ou	#
चमरकीर्वि	प रकर्गीप देशरलमान्ता	₹	6425	चपन्न र
पूरुवपाद	सर्वार्वेसिक	ęf	84 X	संस्कृत
शुम्पर् ग्व	क्सोबर चरित्र	형	१ ६६	चरभ र
महानेमिक्च	नेमिनाम पुराण	र्स	1484	धता न
कोवराज	प्रवचनधार भाषा	4	fwit	मिल्मी
	इतियों में तेमपास कविशत क्षमस्त्रीण			इर्त्वं स्रवास
अस्य स्वयस्यास्य भारति ह	बन्दर्गार करा १३३ ≿ोके बन्दर्शकरीय	ल क्यांबरी	ਕ ਵੈ ।	

इ. ह. चैन मन्दिर गोघों का बपपुर (क मदार)

गोबी का भन्ति की वासी का रास्ता जागोरियों का कीक कीवरी वाजार में रिक्त है। इस

सानिए का निमाण रेस भी श्रामान्त्र के प्यत्य श्री हुमा ना क्षेत्र सानेश्तर के एक्साद ही नहीं प्रशन्ते का चंद्रम किया नानत मारान्य हो गना ना । बहुत से मंत्र नहीं तरीवरेत के शिक्टों से से भी नाते ने से श्री कर के से हो है । वर्तमान से नहीं एक शुक्रमणिका स्थान सेवार है निमाण संग्री है । स्थान में पूर्व रे १ सुटके हैं। संग्री में प्रशास कि के विकेश हुन हैं। शास्त्र मंत्रा से मानक्ष्याच्या भी संन्त्र १ स्वत्र में से में प्रशास के स्वत्र में एक से विकेश हुन हैं। शास्त्र मंत्रा से मानक्ष्याच्या भी संन्त्र १ स्वत्र में स्वत्र हों में प्रशास के स्वत्र में स्वत्र से हैं। शास्त्र मंत्र में भाष्य सेवार सेवार है। हिम्मी की निम्म रूपार्य में सर्व्य हैं को समन संग्री में सहस्त्र हो में मही सिन्नती हैं।					
विन्दासमि वयपाक	তদপুৰ কৰি	विस्ती	१६ वी शतामी		
सीमन्बर स्तवन	n	29			
0d ==0-===					

नेमीश्वर चौमामा	मृति सिंहतन्दि	हिन्दी	१७ वी शताब्दी
चेतनगीत	•	2)	17 71
नेमीम्बर रास	ुनि रतननीर्ति	17	N3 73
नेमीरवर हिंडोल ना	1)	35	33 53
इव्यसमह भाषा	हेमराज	1	उ९य१ वाक वर्
चतुर्दशीक्या	हाल् राम	33	१७६४

उक्त रचनात्रों के प्रतिरिक्त जैन हिन्दी कवियों के पहों का भी श्रच्छा सप्रह है। इनमे यूच-राज, दीहल, कतककीति, प्रभाचन्द्र, मृनि शुभचन्द्र, मनराम एव श्रजयराम के पद विशेषत उल्लेखनीय है। सबत् १६२६ में रचित हू गरावि भी होलिका चौपई भी ऐसी रचना है जिसका परिचय प्रथम बार मिला है। सबत् १८३० में रचित हरचट गगवाल कृत पचकल्याएक पाठ भी ऐसी ही सुन्दर रचना है।

सरकृत शंशों में टमारवामि विरचित पचपरमेण्ठी स्तोत्र महत्वपूर्ण है। सूची से उसका पाठ रख्न निया गया है। भड़ार में सप्रदीत प्राचीन प्रतियों में विमलनाथ पुराण स० १६६६, गुणभद्राचार्य रुत घन्यकुमार चरित स० १६४२, विदम्धमुखमड़न स० १६४३, सारस्वत दीपिका स० १६४७, नाममाला (वनजय) स १६४३, धर्म परीका (श्रमितगित) स १६४३, समयसार नाटक (वनारसीदास) स० १७०४ श्रादि के नाम उल्लेखनीय है।

६ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर यशोदानन्दशी जयपुर (ज मडार)

यह मन्दिर जैन यित यशोदानन्दजी द्वारा स० १८४८ में वनवाया गया था श्रीर निर्भाण के इस समय परचात ही यहा शास्त्र भटार की स्थापना कर दी गई। यशोदानन्दजी स्वय साहित्यक व्यक्ति थे इसिलये उन्होंने थोडे समय में ही श्रपने यहा शास्त्रों का श्रच्या सकलन कर लिया। वर्तमान में शास्त्र भटार में ३५३ प्रथ एव १३ गुटके हैं। श्राधिकाण प्रथ १८ वीं शताब्दी एव उसके बाद की शताब्दियों के लिखे हुये हैं। सम्रह सामान्य है। उत्लेखनीय प्रथों में चम्द्रप्रभक्ताव्य पितका स० १५६४, प० देवी-चन्द कृत हितोपदेश की हिन्दी गद्य टीका, है। प्राचीन प्रतियों में श्रा० कुन्दकुन्ड कृत समयसार स० १६१४, श्राशाधर कृत सागारधर्माकृत सं० १६२८, केशविमश्रकृत तर्कभाषा स० १६६६ के नाम उल्लेखनीय हैं। यह मन्दिर चौडा रास्ते में शियत है।

१० शास्त्र मंडार दि० जैन मन्दिर विजयराम पाड्या जयपुर (स भंडार)

विजयराम पाड्या ने यह मन्दिर क्व वनवाया इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन मन्दिर की दशा को देखते हुये रह जयपुर दमने के समय का ही वना हुआ जान पहता है। यह मन्दिर पार्टी का बरीना था। रायनपूर्वी में स्थित है। बड़ों का शास्त्र में शर भी कोई प्रवेशी दशा में नहीं है। पतन से म ब बीस हो लुक है तथा वहुत सों के पूरे पत्र भी नहीं है । वर्तमान में यहां २७१ म ब एवं पर राटके हैं । शास्त्र भक्का को देखते हुये यहां गुरुकों का बाब्द्धा संग्रह है । इसमें विश्वभयण की अमीरवर की शहरी परवासन की नेमिनाथ पत्रा स्थाम कवि की तीन चौतीशी चौवाई (र. वा. १७४६) स्वोत्री-रात साराठी की व्यनविषय भाग के नाम क्लोलनीय है। इन कोटी बांटी एमनाओं के व्यविधि तालकार परित्य, संतराम अपनीति अमराचार काहि कवियों के यह भी श्रीमधीत है साथ सोक्ट करें क्षरवादेशि वर्ष कहरान का राजनीतिसास्त्र मापा भी हिन्दी की क्रमेलनीय रचनायें हैं।

श्रास्त्र मंद्रार दि चीन गन्धिर पश्चनाय अवपर (क्ष भद्रार)

दि जैन समित पार्थनाथ अवसर का प्रसिद्ध कम अभिदर है। यह जमासकी में? शास्त्री

 रामबाधकी में रिवर है। मन्दिर का निर्माण संबत १८ ४ में साथी गोड़ वास दिसी बावक ने कराबा था इराविये वह छोनियों के सन्दिर के बाम से भी प्रसिद्ध है। क्हां एक शास्त्र मंद्रार है जिसमें au मर्च १८ शहक हैं। इतमें सबसे कांबक संक्या संस्कृत शादा के मर्बी की है। मारिक्य सूरि कृत सञ्चादम क्यूबर अवार की सबसे प्राचीन यदि है जो सं १४४५ की विस्ती हुई है। यदापि मंद्रार में हुआ की कहता कविक सही है किसा बातात कई सहत्वपूर्ण हुआ तथा जानीत प्रतियों का पूर्व काया संबद्ध है।

"न चड़ान मंत्रों में चपभ रा माणा का विकय तम् कह चाकितनाव प्राप्त कवि रामीहर कत बोमिणाइ चरिए गुणनानि कत बीरनानि के जन्मप्रमकाव्यकी पश्चिका (संस्तुत) महापंडित बगलाब राज तेमितरस्य स्तोत्र (संरक्ष्य) शनि क्यामन्त्रि शय वदा गान काम्य, शशक्तम् इत्य दलक्याँत (संस्कृत) क्लामित इत ५६जसार (६.६३०) इन्ह्रणीत इत असिस्त्रत ५राण (हि.) चाहि के बास बस्सेलनीय है।

यह	मची की प्राचीन प्रविवासी पर	चित्र ६९या में संप्रदीर	है। इस्में	से हुछ प्रतिवों व	ŧ
नास वि श्त प्रकार	R 1				
स्चीशीक वं	भव साम	र्मवशर नाम	हे. धाम	मापा	

साम विश्व प्रका	π≹1			
सुची शीक सं	ध्रम साम	भंग शर नाम	हे. धास	मापा
2886	पटपाहुड ़	था कुर्यकुरम्	4444	жr»

स्वीशीक वं	भव सम	शंब शर नाम	हे. धास	मापा	
१४६८	ध्दपाहुड्	था सम्पन्	9295	प्रा•	
२३४	इक्ट मानकाट्य	पद्यमन्दि	9295	संस्कृत	

4844	पटपाहुङ्	था कुल्यकुल्य	45.73	Ma
43 %	वयः मानवास्य	पद्मनन्दि	4x4=	संस्कृत
tett	स्थाक्षाकृर्गव्यरी	वस्त्रियण सुरि	22.45	**

धनिवनायपुराण विजयस्ति 1-11 1250 संपद्ध हा

देशियाद्वारिय दामीदर PERR

٦ Ł-

क्योपरचरित्र हिस्त्रण 2121 प्रशासम्ब l Yest तरस्य बागार पर्सापन षाशायर exak ** 4

सूची की क्र सं	प्रंथ नाम	प्र थ कार नाम	ले काल	भापा
२५४१	कथाकोश	हरियेणाचार्य	१५६७	सस्कृत
३८७६	जिनशतकटीका	नरसिंह भट्ट	१४६४	33
२२४	तत्त्चार्थरत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द	१६३३	33
२०२६	त्तत्रचूडामिए।	वादीमसिंह	१६०४	73
२११३	धन्यकुमारचरित्र	श्रा॰ गुणभद्र	१६०३	33
२११४	नागकुमार चरित्र	धर्मधर	१६१६	"

इस भहार में कपडे पर सवत् १४१६ का जिला हुआ प्रतिष्ठा पाठ है। जयपुर के भहारों में उपलब्ध कपड़े पर लिखे हुये प्रंथों में यह प्रथ सबसे प्राचीन है। यहा यशोधर चिरत की एक सुन्दर एवं कला पूर्ण सचित्र प्रति है। इसके दो चित्र प्रथ सूची में देखे जा सकते हैं। चित्र कला पर मुगल कालीन प्रभाव है। यह प्रति करीब २०० वर्ष पुरानी है।

१२ श्रामेर शास्त्र भंडार जयपुर (ट भंडार)

श्रामेर शास्त्र भहार राजस्थान के प्राचीन मथ भहारों में से है। इस भंहार की एक मंथ सूची सन् १६४८ में चेत्र के शोध सस्थान की श्रोर से प्रकाशित की जा चुकी है। उस मंथ सूची में १४०० मथों का विनरण दिया गया था। गत १३ वर्षों में भंहार में जिन मथों का श्रोर संप्रह हुआ है उनकी सूची इस भाग में दी गई है। इन मंथों में मुख्यत जयपुर के छावड़ों के मन्दिर के तथा वाबू झानचदजी खिन्दूका द्वारा भेट किये हुये गथ हैं। इसके श्रातिरिक्त भहार के कुछ मथ जो पिहले वाली मंथ सूची में श्राने से रह गये थे उनका विवरण इस भाग में दे दिया गया है।

इन प्रंथों मे पुष्पटत कृत उत्तरपुराण भी है जो संवत् १३६६ का लिखा हुआ है। यह प्रति इस सूची में आये हुये प्रथों मे सबसे प्राचीन प्रति है। इसके अतिरिक्त १६ वीं १७ वीं एव १८ वीं शताब्दी में लिखे हुये प्रथों का अच्छा सप्रह है। भहार के इन प्रथों मे भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति विरचित आदसीय कवित्त (हिन्दी), ब० जिनदास कृत चौरासी न्यातिमाला (हिन्दी), लाभवर्द्ध न कृत पान्डव-चित (सस्कृत), लाखो कविकृत पार्श्वनाथ चौपाई (हिन्दी) आदि प्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं। गुटकों में मनोहर मिश्र कृत मनोहरमजरी, उदयभानु कृत मोजरासो, अग्रदास के कवित्ता, तिपरदास कृत रिक्मणी कृष्णजी का रासो, जनमोहन कृत रनेहलीला, श्यामिश्र कृत रागमाला, विनयकीर्ति कृत अष्टाहिका रासो तथा वसीदास कृत रोहिणीविधिकथा उल्लेखनीय रचनायें हैं। इस प्रकार आमेर शास्त्र भंभार में पाचीन प्रथों का अच्छा सकलन है।

प्रभौ का विषयाभुसार वर्गीकरण

प्र स सूची को कारिक वर्षमुँगी नजाने के क्षियं म वो का विषयानुमार वर्गीक्रय करके करूँ

१४ किरायों में किमांकित क्रिया नजा है। विविध निषयों से भ्रा में के कार्यना से पता चलता है कि बैन

काषायों ने प्राप्त स्मिर्त विषयों पर ग्रंब क्षित्र हैं। साहित्य का संश्रप्त एक भी ऐसा विषय नहीं होग्र

क्षित्र पर हन विद्यानों ने अपनी क्ष्मा नहीं चलता है। हो एक खार कहाँ हुनोंने वार्मास्य काम्यादिव विज्ञ कर संवारों को भ्रा है वहाँ वुसरी भ्रार काम्य चारिक, पुराय क्ष्मा कोशा चारि विज्ञ कर

क्ष्मदिव विज्ञ कर संवारों को भ्राप है वहाँ वुसरी भ्रार काम्य चारिक, पुराय क्ष्मा कोशा चारि विज्ञ कर

क्ष्मदिव विज्ञ कर संवारों को भ्राप है। व्यक्त वुसर व्यव्य का विरक्षण क्षित्र है। स्वापनों पर्व विद्याने

निक्षाचा वर्ष ब्याचार शासत्र के सुक्स के सुक्स के सुक्स विश्व कि विज्ञाने

निक्षाचा वर्ष ब्याचार शासत्र के सुक्स व्यक्त विश्व कि विज्ञाने

क्षित्र विच्य विज्ञान है। क्ष्मा क्ष्मी क्ष्मी क्ष्मी के किस्त के अपने क्ष्मी कर विज्ञान के स्वाप्त क्ष्मा क्ष्मी क्ष्मी क्ष्मी क्ष्मी क्षमी क्ष्मी क्षमी क्ष्मी क्षमी क्ष्मी क्षमी क्षमी क्षमी क्षमी क्षमी क्षमी क्षमी क्षमी क्षमी क्षमा क्षमी क्षमा क्षमी क्षमा क्षमी क्

वार्मिक साहित्य के कार्तिरिक सौकिक साहित्य पर भी इन काषाओं में क्षत्र क्रिता है । तीर्ब-करों एवं शकाकाओं के शहापुरुगें के पापन जीवन पर इनके हारा किसे हुने वहें नहे पराख एवं काव्य भींब जिब्रते हैं । मेंबे सुनी में मार्ग सभी गहत्वपूर्व पुरास सामित्व के मेंब बातन हैं । बेन सिमान्त पर्न कांचार शांक के शिवांनों को कवाओं के रूप में क्यान करने में बैशावारों से करने वादिक्य का सब्सा मदराने किया है। इस संवारों में इन विधानों बारा विका हुया। कवा स्ववित्य अबूर मान्य में निकास है। में कवार्य रोजक होते के धाय धार्म निकार्यन भी हैं। इंसी मकार स्थाकरना, क्योरिय पूर्व बार्नुर्वेद पर भी इस बंबारी में अच्छा संब्रिय संब्रीत है। गुरुकों में बायुर्वेद के गुरुकों का बावका संबर्ध है। सैक्जों ही प्रकार के मुसरों दियें इन हैं जिसे पर बीज होंने की धारपंत्रिक धावरतकता है ।। इस बार हमेरी फेरा, रासी वर्ग निक्र साहित्व के मैची का चिटिएक नर्सन दिया है। बैन चाचारों से हिन्दी में ब्रोटे ब्रोटे कुकों एसी प्रेंच किया है भी इस में वारों संग्रहीत हैं। अनेसे नहा जिनवास के ४ से भी अविक रासी प्रेंच सिंबते हैं। बीन मंदारों में १४ वी रावाण्डी के पूर्व से रास्ते अंब निवान वागते हैं। इसके करिस्टिक कंप्य-क्षम करने की होते से संप्रधीत किये क्षेत्र कन गंडारों में बीनंतर विद्वानों के नाव्य आहक, कथा क्योंनिय भाववेंद्र, कोप जीतिहास्त्र, ज्याकरण बादि विपनों के गंधों का भी चच्चा संकत्रन मिसता है। जैन विश्वांकों में काविद्यास, साथ मारवि कावि मसिक विवेशों के कावकों का संक्रवान ही जेही किया किया को पर दिल्ह दीकार्ने भी किसी हैं। मन सूची के इसी माग में पसे दिलने ही कार्नों का केर्चन चामा है। मंत्रारों में पेरिवासिक रणवाने भी पर्वांग संक्या में क्षित्रती हैं। वनमें महारक पहानक्षित्र महारकों के कन्द, पीत जोमांसा नयोन वंशीरपति वर्षाम देवती के बादरात्री एवं सामा प्रान्धे के राजाओं के वर्धन एवं कारों की बसायत का बयान मिकता है।

निनिध भाषात्रों में रचित साहित्य

राजस्थान के शास्त्र भंटारों में उत्तरी भारत की प्राय' सभी भाषात्रों के मंथ मिलते हैं। इनमें संस्कृत, प्राफ़्त, प्राप्त्र श, हिन्दी, राजस्थानी एउ गुजराती भाषा के मंथ मिलते हैं। सरकृत भाषा में जैन विद्वानों ने यहर साहित्य लिया है। प्रा० समन्तभद्र, प्रकलक, विद्यानन्दि, जिनसेन, गुण्भद्र, वर्द्ध मान भट्टारक, सोमदेन, वीरनन्दि, हेमचन्द्र, प्राशाधर, मकलकीर्ति प्रावि संकड़ों व्याचार्य एवं विद्वान् हुये हैं जिन्होंने सम्मृत भाषा में विविध त्रिपत्रों पर सैकड़ों मंथ लिखे हैं जो इन भड़ारों में मिलते हैं। यही नहीं इन्होंने प्रजेन विद्वानों द्वारा लिखे हुये काञ्च एवं नाटकों की टीकार्ये भी लिखी हैं। संस्कृत भाषा में लिखे हुये यशिरतलक चम्पू, वीरनन्दि का चन्द्रप्रभक्ताव्य, वर्ष्ट मानदेव का वरागचरित्र व्यादि ऐसे काव्य है जिन्हें किसी भी महाकाव्य के समक्त विठाया जा सकता है। इसी तरह संस्कृत भाषा में लिखा हुया जैनाचार्यों का दर्शन एवं न्याय साहित्य भी उच्च कोटि का है।

प्राप्तत एव श्रवश्च श भाषा के चेत्र में तो केवल जैनावार्यों का ही श्रधिकारात योगदान है। इन भाषाश्चों के श्रधिकारा प्रथ जैन विद्वानों द्वारा लिसे हुये ही मिलते हैं। प्रथ सूची में श्रवश्च रा में एन प्राकृत भाषा में लिसे हुये पर्याप्त प्रथ श्राये हैं। महाकवि स्वयभू, पुष्पद्त, श्रमरकीर्ति, नयनन्दि जैसे महाकवियों का श्रवश्च शाषा में उच्च कोटि का साहित्य मिलता है। श्रव तक इस भाषा के १०० से भी श्रिष्ठिक प्रथ मिल चुके हैं और वे मभी जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हैं।

इसी तरह हिन्दी एव राजस्थानी भाषा के अयों के सबध में भी हमारा यही मंत है कि इन भाषा श्रों की जैन विद्वानों ने खूब सेवा की हैं। हिन्दी के प्रारंभिक युग में जब कि इस भाषा में साहित्य निर्माण करना प्रारंभ किया था। जयपुर के इन भदारों में हमें १३ वीं राताब्दी तक की रचनाए मिल चुकी हैं। इनमें जिनदत्त चौपई सब प्रमुप हैं जो सबत् १३५४ (१२६७ हैं) में रची गयी थी। इसी प्रकार भ० सकलकीर्ति, ब्रह्म जिनहास, भद्दारक मुपनिर्मित, ज्ञानभूषण, शुभचन्द्र, छीहल, बूचराज, ठक्करसी, पल्ह ध्यादि विद्वानों का बहुतसा प्राचीन साहित्य इन भदारों में प्राप्त हुष्या है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी एव राजस्थानी साहित्य के श्रतिरिक्त जैनेतर विद्वानों द्वारा लिखे हुये प्रथों का भी यहा श्रच्छा सकलन है। पृथ्वीराज छत कृष्णक्विमणी वेलि, बिद्वारी सतसई, केशवदास की रसिकप्रिया, सूर एवं कवीर श्रादि कवियों के हिन्दीपद, जयपुर के इन भढारों में प्राप्त हुये हैं। जैन विद्वान कभी कभी एक ही रचना में एक से श्रविक भाषाश्रों का प्रयोग भी करते थे। धमचन्द्र प्रयन्ध इस दृष्टि से श्रन्ञा उदाहरण कहा जा सकता है।

१ देखिये कासलीवॉलजी द्वारा लिखे हुये Jam Granth Bhandars in Rajsthan का चतुर्च परिशिष्ट ।

-स्वयं प्रयक्तरों दारा किसे दुवे प्रची की शृक्त प्रतियां

केन विद्यान मैंक रचना के कांशिरिक स्वयं भ्रवों की महितिविधियों भी किया करते थे। इन विद्यानों द्याप किसे गयं मेंचों की पास्तुक्षियमं राष्ट्र की बरोहर पर्य समृद्ध सम्पत्ति है। देसी प्रस्तु विपियों का मान्य दोना सहक बाव नहीं है हिकिन कम्पुर के इन अंबारों में हमें स्वयं विद्वानों द्वारा दिक्की दूर्व निम्म पास्तुक्षियिको मान्य हो जुकी हैं।

titati Be imai	and an an an all 3 and 1		
स्वीकी कर्स	म भकार	म थ माम	ब्रिपि संवद
म∦न	कनक्कीर्वि के शिष्य संशास	पुरुषाच सिद्धमुपाय	Free
₹ ¥R	रत्नकरमाभवकाचार भाषा	स्त्रामुक कासकीवाक	१६२
1.0	गोन्मटसार चीचकांत्र माध्य	पं टोबरमज	रेम भी राठाम्पी
RERK	ग्र ममा णा	र्षं मारामा ना	1488
RUR	पंचर्मगळपाठ	सुराक्षणम् स्वका	१ =४४
2523	ग्रीक् यमा	चोक्सच गोदीका	two
₹ \$42	मिण्यात्व संवन	पश्चाम साह	FERE
X 4 ₹≒	गुरका	टेकर्णन	_
KEKO	परमाञः वन्त्रातः पर्नं वस्त्रसार	वाष्ट्रम	_
€ 88	बीचाबीस ठाणा	मधुर्।यसम्ब	2424

गुरकों का महत्व

ही मिलते हैं। प्रत्येक शास्त्र भड़ार के व्यवस्थापकों की कर्राव्य है कि वे श्रापने यहां के गुटकों की वहुत ही सम्होल कर रखिं जिसमें वे नष्ट नहीं होने पार्वे क्योंकि हमने देखा है कि बहुत से भड़ारों के गुटके विना बेप्टनों में वबे हुये ही रखे रहते हैं श्रीर इस तरह धीरे धीरे उन्हें नष्ट होने की मानों श्राहा देदी जिती है।

शास्त्र भंडारों की सुरचा के संबंध में !

राजस्थान के शास्त्र महार श्रांत्यधिक महत्वपूर्ण हैं इसलिये उनकी सुरत्ता के प्रश्न पर सबसे पहिले विचार किया जाना चाहिये। छोटे छोटे गावों मे जहा जैनों के एक-एक दो-दो घर रह गये हैं वहा उनकी सुरत्ता होना श्रात्यधिक कठिन है। इसके श्रांतिरिक्त कर्स्वों की भी यही दशा है। वहा भी जैन समाज का शास्त्र भंडारों की श्रोर कोई ध्यान नहीं है। एक तो श्राजकल छपे हुये मथ मिलने के कारण हस्तिलिखत ग्रंथों की कोई स्वाध्याय नहीं करते हैं, दूसरे वे लोग इनके महत्व को भी नहीं समम्ति हैं। इसलिये समाज को हस्तिलिखत प्रयों की सुरत्ता के लिये ऐसा कोई उपाय ढ़ंढना चाहिये जिससे उनका उपयोग भी होता रहे तथा वे सुरत्तित भी रह सकें। यह तो निश्चित ही है कि छपे हुए प्रथ मिलमें पर इन्हें कोई पढ़ना नहीं चाहता। इसके श्रांतिरिक्त इस श्रोर रुचि न होने के कारण श्रांगे श्राने वाली सन्तित तो इन्हें पढ़ना ही भूल जावेगी। इसिक्तिये यह निश्चित सा है कि भविष्य मे ये ग्रंथ केवल विद्यानों के लिये ही उपयोगी रहेंगे श्रीर वे ही इन्हें पढ़ना तथा देखना श्रीक पसन्द करेंगे।

प्रथ भडोरों की सुर्क्त के लिये हमारा यह सुमाव है कि राजस्थान के श्रमी सभी जिलों के कार्यालयों पर इनका एक एक समहालय स्थापित हो तथा उप प्रान्त के सभी शास्त्र भडारों के मध इन संमहालय में समहीत कर लिये जानें, किन्तु यदि किसी किसी उपजिलों एव कस्त्रों मे भी जैनों की श्रन्ती है तो उन्हीं स्थानों पर भडारों को रहने दिया जाने। जिलेवार यदि समहालय स्थापित हो जानें तो वहा रिसर्च स्थालर्स श्रासानी से पहुच कर उनका उपयोग कर सकते हैं तथा उनकी सुरक्ता का भी पूर्णत प्रवन्ध हो सकता है। इसके श्रातिरक्त राजस्थान में जयपुर, श्रलवर, भरतपुर, नागौर, कीटा, यू दी, जोधपुर, वीकानेर, जैसलमेर, ह्रांगरपुर, प्रतापगढ़, वासवाडा ध्यादि स्थानों पर इमके घढे वहे संमहालय खोल दिये जानें तथा श्रनुसन्धान ग्रेमियों को उन्हें देखने एव पढ़ने की पूरी सुविधाए ही जानें तो ये हस्तिलिखत के प्रथ फिर भी सुरक्तित रह सकते हैं श्रन्यथा उनका सुरक्तित रहना वहीं कठिन होगा।

जयपुर के भी कुंछ शास्त्र भड़िंगों को छोड़कर श्रम्य भड़ार कोई विशेष श्रच्छी स्थिति में नहीं हैं। जयपुर के श्रव तक हमने १६ भंडारों की सूची तैयार की है लेकिन किसी मड़ार में वेष्टन नहीं हैं की कहीं विना पुटों के ही शास्त्र रखे हुये हैं। हमारी इस श्रमावधानी के कारण ही सैकड़ों प्रथ श्रपूर्ण हो गये हैं। यदि जयपुर के शास्त्र भंडारों के प्रथों का सर्ग्रह एक केन्द्रीय सग्रहालय में कर लिया जावे तो उस

समय इत्याप बह संग्राहरून कपपुर के दर्शनीय स्वानों में से गिना बावेगा । प्रति वर्ष सैक्झों की संक्यों में रोध विद्यार्थ आर्थेंगे कीर बैन स्विद्य के विदिश्व विच्वों पर काल कर सकेंगे। इस संग्राहरू में स्वान्य की पूर्व सुरक्ष का ज्यान रक्ता बावे बीर इतका पूर्व प्रकल्प एक संत्या के अपीन हो। क्यासा है कपपुर का बैन स्वान्य क्याने देश निवेदन पर प्यान देशा और सारमें की सुरक्षा पर्व बनके क्योग के सिवे कोई निरिक्त रोजमा बना सकेंगा।

प्रंय सभी के सम्बन्ध में

प्रंच सूची के इस माग को इसने शर्बांग सुन्दर बन्धमे का पूर्व प्रदास किया है । आचीत परं भारत प्रांची की प्रंच प्रसन्ति पर्च लेकक प्रशस्तियां नी गई हैं जिनसे विद्यानों को वनके कर्ता पर्च कैसर कात के सम्बन्ध में पूर्व कानकारी विश्व शक । गुरुकों में महत्वपूर्व सामग्री करतका होती है इसकिये बहत से गुरुकों के पूरे पाठ पर्व सेय गुरुकों के क्ल्फ्रेकवीय पाठ दिय है। अंब सुधी के काल में अंबाह कमिणका मंत्र पूर्व मंत्रकार, माम नगर एवं धनके शासकों का उसकेत ये चार परिमेश दिन हैं। मंत्रानुकर्माणका को देशका सूची में जाये हुये किसी भी भव का परिचय शीध साञ्चन किया जा सकता है क्योंकि बहुत से पंजी के नाम सं कनके विषय के सम्बन्ध में रुख बाजदारी अहीं मिलदी। प्रवाहकम पिका में ४२ म में का अन्तेल भाषा है किससे वह लाए हो जाता है कि या व सूची में निर्देश र सभी मंथ सक्त म व हैं तका रोग ककी की प्रतियां हैं। इसी मकार म व वर्ष म बकार परिशिक्त से पर दी प्र क्वार के इस सूची में कियने म व चाने हैं इसकी पूर्व चानकारी सिल सकती है। माम पर्व नगरी के मारिक्ट में इन मंदारों में किस किस माम एवं मगरों में रचे दूरों एवं क्रिके दूरों म वा संमद्दीत हैं. 🔫 बाना बा सकता है। इसके मांतरिक ये नगर कितने प्राचीन से यूर्व कार्ये साहित्यक गरिविधियां फिस प्रकार जलती की इसका भी हमें जामास मिल सकता है । शासकों के परिशिष्ट में राजस्थान पर्व भारत के विभिन्न राजा महाराजा पर्व शावशाही के समय पर्व बनके राज्य के सम्बन्ध में उन्ह २ परिचय प्राप्त ही बाता है। ऐतिहासिक तथ्यों के संकत्तन में इस प्रकार के क्लोब बहुत प्राथाधिक एवं महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। मस्तानमा में म य भैदारों के श्रीकृत्व परिचय के जातिरक्त करना में ४६ जावाद म मी का शरिचम भी दिवा राजा है को इत म को की कानकारी प्राप्त करने में सहातक सिद्ध होगा। मत्तावता के साब में ही एक बाह्यत वर्ष महत्वपृक्ष म वों की सुची भी दी गई है इस बकार अंग सुची के इस माग में बान सचियों से ।समी ठाइ की व्यक्ति जानकारी देने का पूरा प्रवास किया है जिसके पाठक जनिक से कांचिक बाम करा सकें। शंबी के माम अंगकत्तां का नाम, बनके रचनावाक, माना जाति के स्वय-साव बजके बाहि बान्त भाग पूर्वतः ठीक र देने का प्रवास किया गया है फिर भी वसियां रहना स्वामानिक है । इसकिय विद्यामों से इत्याप बदार रहि भारतानं का चनुरीय है तथा वहि बड़ी कोई कमी हो ती हैं सचित करमे का कह कर जिससे मंदिय में इस कमियों को दूर किया का सके।

धन्यवाद समर्पण

हम सर्व प्रथम चेत्र की प्रबन्ध कारिणी कमेटी एवं विशेषत' उसके मंत्री महोद्य श्री केशरलालजी वख्शी को धन्याद देते हैं जिन्होंने प्रथ सूची के चतुर्थ भाग को प्रकाशित करना कर समाज एवं जैन साहित्य की सोज करने वाले विद्यार्थियों का महान् उपकार किया है। चेत्र कमेटी द्वारा जो साहित्य शोध संस्थान संचालित हो रहा है वह सम्पूर्ण जैन समाज के लिये श्रानुकरणीय है एव उसे नई दिशा की श्रोर ले जाने वाला है। भविष्य मे शोध सस्थान के कार्य का श्रोर भी विस्तार किया जावेगा ऐसी हमें श्राशा है। प्रथ सूची में उल्लिखित सभी शास्त्र मंडार के व्यवस्थापक महोदयों को एवं विशेषत' श्री नथमलजी वज, समीरमलजी झावड़ा, पूनमचदजी सोगाणी, इन्दरलालजी पापड़ीवाल एव सोहनलालजी सोगाणी, श्रनूपचदजी दीवाण, मंवरलालजी न्यायतीर्थ, राजमलजी गोधा, प्रोध झुल्तानिसहजी, कपूरचढजी रावका, श्रादि सज्जनों के हम पूर्ण श्राभारी हैं जिन्होंने हमे प्रथ भडार की स्विया बनाने में श्रपना पूर्ण सहयोग दिया एव श्रव भी समय समय पर भडार के प्रथ दिखलाने में सहयोग देते रहते हैं। श्रद्धेय प० चैनसुबदासजी न्यायतीर्थ के प्रति हम कृतहाजलियां -र्श्वापत करते हैं जिनकी सतत प्ररणा एव मार्ग-दर्शन से साहित्योद्धार का यह कार्य दिया जा रहा है। हमारे सहयोगी मा० सुगनचदजी को भी हम धन्यवाद दिये विना नहीं रह सकते जिनका प्रथ सूची को तैयार करने में हमें पूर्ण सहयोग मिला है। जैन साहित्य सदन देहली के व्यवस्थापक प परमानन्दजी शास्त्री के भी हम हदय से श्रामारी हैं। जिन्होंने सूची के एक भाग को देगकर श्रावश्यक सुमाव देने का कष्ट किया है।

श्रन्त में श्रादरणीय डा वासुदेवशरणजी सा श्रम्रवाल, श्रध्यत्त हिन्दी विभाग काशी विश्व-विद्यालय, वाराणसी के हम पूर्ण श्राभारी हैं जिन्होंने मंथ सूची की भूमिका लिखने की छपा की है। डाक्टर सा का हमें सदैव मार्ग-दर्शन मिलता रहता है जिसके लिये उनके हम पूर्ण छतक्र हैं।

महावीर भवन, जयपुर दिनांक १०-११-६१

कस्तूरचद कासलीवाल श्रनूपचद न्यायतीर्थ

प्राचीन एव श्रद्धात रचनाओं का परिचय

१ चमुतपर्मसः द्यस्य

जानंद करों पर का यह प्रमुख पर्व सस्स धीनद्वय कारन है। काव्य में २४ प्रकार हैं सहारक शुख्यमंद्र इसके रचिता हैं किसीने को कोहर के पुत्र सामकास के पठमार्थ किसा था। त्यसं म क्यार में कपनी प्रार्थित निम्न प्रकार किसी हैं →

पट्टे मीक एक पाचार्य वराष्ट्रे भीसाहासधीर्थ कराष्ट्रे भीकिमुबनधीर्विष ठराष्ट्र श्री गुर रासाधीर्थ ठराष्ट्रे की श्रामानाष्ट्रियाधिसाग्राम व धर्मकृपार्य कोहर छउ पंडिय की सामसाग्रास पठायाँ ।। सामस की एक प्रीवे अ पंडार में हैं। प्रांत चाहर है तथा कराम र प्रांत प्रश्नी हैं।

२ बाष्यारियंक मामा

इस रकता का दूसरा नाम पन् पर करवा है। यह महारक करमी वान की रचना है जो संस्थारा महारक सफलकीर्वि की परमारा में दूब थे। रचना कराय मा भाषा में निवह है तथा करवायोटि की है। इसमें संसार की जरमरात का बढ़ा ही सुन्यर वार्षन किया गया है। इसमें ३८ पर है। एक पर नीचे देखिने—

बिरका बार्यित पुर्वो विरक्ता क्षेत्रीय करणणो स्त्रीम विरक्ता सरस्त्रावरणा परक्रम परमुद्धा विरक्ता। ते विरक्ता क्षेत्र प्रतिक निर्विधि परक्षमु स्व इडाई, ते विरक्ता सस्त्राव कराई वर्ष स्वस्त्रीय विरक्षी। विरक्ता सेवर्षि स्त्रामि विर्णु प्रित्व वैद्य वर्षत्रक, विरक्ता कार्योद करणु सुद्ध वैद्यस्त गुप्यतंत्रत्र। सन्तु परस्तु दुक्तद् कहिन स्वस्य कुलु क्यमु विषय, विरह्म स्माप्तवेद विद्यासि सुद्ध गाउँ प्रतिक क्षण्य विरक्तः।

इसकी एक प्रति संस्थार में सुरक्षित है। यह प्रति आवार्य नेशियण्य के पहले के सिवे जिल्ही गई थी।

३ धाराधनसार महत्व

शासन्तासार प्रकृत में हुनि प्रसार्चन्न विश्वन संस्कृत कमानों का संख्य है। हुनि प्रमा बान् देनेन्द्रशीर्त के रिल्म थे। किन्तु प्रयाकन्त्र के रिल्म क्ष हुनि स्वासीक् जिनके बारा विश्वित स्व ज्ञाब द्वाल का परिवक सानी दिवा गया है। प्रयाकन्त्र ने प्रत्येक क्या क काल में स्वयंत्र स्वरंचन दिस्स है। एक परिक्य पेनिये—

> श्रीमृत्यमंथे परभारतीय गण्डे पक्षांत्वारमयाति रस्ये । श्रीकृषकुरवाययमुनीन्त्रपंशे आर्थं प्रथापन्त्रमहाकरीन्त्रः ॥

3

देवेन्द्रचन्द्रार्कसम्माचितेन तेन प्रभाचन्द्रमुनीश्वरेण । श्रमुप्रहार्थं रचितः सुवाक्ये श्राराधनासारकथाप्रवन्धः ॥ तेनक्रमेर्गोव मयास्वशक्त्या श्लोकै प्रसिद्धे श्चिनगद्यते च । मार्गण कि भानुकरप्रकाशे स्वलीलया गच्छति सर्वलोके ॥

श्राराधनासार वहुत सुन्दर कथा प्रंथ है। यह श्रभीतक श्रप्रकाशित है।

४ कवि वल्लभ

क भड़ार में हरिचरणदास कृत दो रचनायें उपलब्ध हुई है। एक विहारी सतसई पर हिन्दी गढ़ा टीका है तथा दूसरी रचना किन वल्लभ है। हरिचरणदास ने कृष्णोपासक प्राणनाथ के पास विहारी सतसई का अध्ययन किया था। ये श्रीनन्द पुरोहित की जाति के ये तथा 'मोहन' उनके आश्रयदाता थे जो वहुत ही उदार प्रकृति के थे। विहारी सतसई पर टीका इन्होंने सवत् १८३४ में समाप्त की थी। इसके एक वर्ष परचात् इन्होंने किनवल्लभ की रचना की। इसमें काव्य के लक्त्णों का न्यान किया गया है। पूरे काव्य में २८४ पद्य हैं। संवत् १८४२ में लिखी हुई एक प्रति क भंडार में सुरिक्त है।

४ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भापा

देवीसिंह छावडा १८ वीं शताब्दी के हिन्दी भाषा के विद्वान थे। ये जिनदास के पुत्र थे। सवत् १७६६ में इन्होंने श्रावक माधोदास गोलालारे के श्रायह वश उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला की छ्न्दो-वद्ध रचना की थी। मूल प्रथ प्राकृत भाषा का है श्रीर वह नेमिचन्द्र। भंडारी द्वारा रचित है। किव नरवर निवासी थे जहा कूर्म वश के राजा छत्रसिंह का राज्य था।

जपदेश, सिद्धान्तरत्नमाला भाषा हिन्दी का एक सुन्दर मंध है जो पूर्णत प्रकाशन योग्य है। पूरे मंथ मे १६८ पद्य हैं जो दोहा, चौपई, चौबोला, गीताळंद, नाराच, सोरठा आदि छन्दों मे नियह है। कवि ने मध समाप्ति पर जो अपना परिचय दिया है वह निस्न प्रकार है—

> बातसल गोती सूचरो, सचई सकल वखान। गोलालारे सुभमती, माधोदास सुजान॥१६०॥

चौपई

महाकठिन प्राकृत की वानी, जगत माहि प्रगटे सुखदानी। या विधि चिंता मनि सुमापी, मापा छंद माहि श्रमिलापी॥ श्री जिनदास तनुज लघु भापा, खडेलवाल सावरा साखा। देवीस्यंघ नाम सब भाषे, कवित माहि चिंता मनि रासे॥ गीर्वा इदि

ı

भी सिमान क्योरामोस्त राज्याय विश्व करी। सम्बद्धिक क्या क्या स्ट्रीय (सम्बद्धीन क्या क्या स्ट्रीय विश्व सुर्वे के प्रकास सेवी वस विवास क्या है।

होत पर्वे परमागम छुवाँनी विवृत कृषि कावदात है।। बीहा

सुवर्षियाने भारतारती, बाक्स्येय व्यवदेश । क्रेरिके वेद प्राचीन गरिंत, एक्ट क्ट्रस्त बेठा ॥१९४॥ विके एक सुचैन श्री, विका देवि वाद श्रीत । व्यक्ते वेद विकास सुस्ति, क्ट्र रूपार स्वतित ॥१९४॥ व्यक्ति वेदक बारतारे, वेदल विकासका

धन्त्रस्य व्यक् ब्र्युन्तः, श्रवतः, त्रकारायः। प्राप्तं श्रीद्रियस्यस्यो, राजिदंव श्रीवीय स्थायः।।१६६। प्रायं कियो गूर्व श्रुपियं सरवर् कारः पीकारं।

से समये बाको व्याप ते क्षत्रे समयर १११६०। चीनोका

कर्मने वर्षि की श्रीक बांधि की कार को व्याप मान भारत वर्षि क्याचीए एक वें विक्यान के वेच। एक मेरिको जाठ दिन्न के विकी क्याक्ट कार्षि। वर्षे सुने कन्ने विकासी कोच कर्मा हुन क्यांगा।

र्वीत क्रिकेशीयोगीयरनेमांना गाँच।।

६ गोम्मटसार टीका

गीतमादसार की कह संस्कृत दीका का॰ समझामूच्या हारा विरावित है। टीका के प्रारम्य में क्रिकियर में बीकाकार के विकास में विकास है वह निर्माणकार है:—

भाव गोल्यवस्ति में व गाँवी वैव दीका करवीतक भाषा में है वसके कानुसार सक्तापुरव

में संस्कृत बीक पत्राई की क्षित्रियें हैं । क्षेत्रत का जान सम्बग्धों कि विस्तार बीकाम्बर में संग्रह्माचरक में ही कालेज किया है'— मुर्ति सिद्धं प्रणम्याह् नेमिचन्द्रजिनेशवरं। टीका गुम्मटसारस्य कुर्वे मंदप्रवोधिका॥१॥

लेकिन श्रमयचन्द्राचार्य ने जो गोन्मटंसार पर संस्कृत टीकी लिखी थी उसका नाम भी मन्द-प्रवोधिका ही है। 'मुख्तार साहव ने उसको गाँथा नं० ३८३ तक ही पाया जाना लिखा है, लेकिन जयपुर के 'क' मण्डार में संप्रहीत इस प्रति में श्राठ सकर्ल मूषण दिया है। इसकी विद्वानों द्वारा विस्तृत खोज होनी चाहिये। टीका के श्रन्त मे जो टीकाकाल लिखा है वह संवर्त १४०६ का है।

> विक्रमीदित्यभूपेस्य विख्यातो च मनोहरे । वृंशपंचिशते धर्पे पड़िभः सेयुत्तसप्तती (१५७६)

टीका का श्रादि भाग निम्न प्रकार है --

श्रीमद्मतिह्तप्रभावस्याद्वादशांसन-मुहाश्रतरिनवांसि प्रवादिमद्दांधसिधुरसिहायमानसिह्नदि सुनीद्राभिनंदित गंगवशललामंगज सर्वेद्वाद्यनेक्गुणनामधेय-श्रीमद्रांमल्लवेव महावल्लभ—महामात्य पदिवराजमान रण्रंगमल्लसहाय पराक्रमगुण्रंत्तम्भूषणं सम्यक्त्वरत्निर्लयादिविविधगुण्नाम समा-सादितकीर्तिकातश्रीमच्चामु द्वरार्य मव्यपु दिशकं द्रव्यानुयोगर्भश्तानुह्रपह्रपं महाकम्भभामृतसिद्धान्त जीवस्थानाज्यप्रथमखडार्थसमहं गोम्मदंसारनामधेय- प्रविक्तिकातश्रीमच्चामु समस्तसैद्धान्तिकचूडामण् श्रीमन्नेमिचद्रसेद्धान्तचक्रवर्ति तद् गोमदसारप्रयमावयवभूत जीवकाड विरचयस्तत्रादौमलगालनपुण्यावादित शिष्टाचारपरिपालननास्तिकतापरिहाराविफलर्जननसंमर्थ विशिष्टेष्टदेवतानमस्कारहप्रय मंगलपूर्वक मकतशास्त्रकथनप्रतिह्नासूचकं गाया सूचकं कथ्यति ।

अन्तिम भाग

नत्वा श्रीयद्व मानातान् वृपंमादि जिनेश्वरान् ।

धर्ममार्गोपदेशत्वात् - सेर्व्वकल्याणदायिकान् ॥ १॥
श्रीचन्द्रादिप्रभातः च नत्वा स्याद्वादेदेशके ।

श्रीमद्गुन्मटसार्स्य कुट्वे शस्ता प्रशस्तिकी ॥ १॥
श्रीमत् शकराजस्य शांके वर्त्ति सुन्दरे ।

चतुर्दशशते चैक-चत्वारिशत्-समन्वते ॥ १॥

विक्रमादित्यमूपस्य विख्याते च मनोहरे ।

दशपचशते धर्षे पह्मि संयुतसप्तती ॥ ४॥

१ देखिये पुरातन जैन बैंपिये सूची प्रस्तावना पत्र ६६

शके च इस्तनकात्रे योगो च मीवि मामनि ॥ ३ ॥ शीमध्यीमुक्तरंत्रे व र्ययाच्यये क्रमहुनये। क्षारकारे काण्यमे अच्छे शार्वतामिथे ॥ ६॥ श्रीमक्ष्यक्ष शक्य स्टेरम्बबक्रे भवत्। पद्मादिनेदि दिखाक्यो सङ्गारकविषक्या ॥ ± ॥ तत्पत्रोतीसमार्च^वर चंड्रांदरच शमादिक। क्रवरबोसवर्ष्णीमात्रः विनर्षशसिषोसनी ॥ ८ ॥ क्रमहे सन्गुर्योनुको महारकपरेरमः। पंचाचाररवी मिर्च त्रयाचन्त्री वितिशिक्षः ॥ ६॥ तत्तरिच्योः यमेषन्त्ररच तत्क्रमांवर्षि चंद्रमाः। रहारनाथे मचत मरूबस्ते वदर्वते वदावमं ॥१ ॥ पुरे भागपुरे रम्बे राजी सद्यवसावके। पातजीगोत्रके धुर्वे संबद्धेश्वनाकान्यसम्बद्धे ॥११॥ बाजादिमितः सेन् छः शूपानामदिचसयः । क्ष्म मानौ नवत् शस्य ब्यामी जामिनारिका ॥१९॥ हवी का समानवात वर्गताच्यो विचारकः ! राज्यमान्त्रो बनै सेज्यः संवयारकुरंबर ॥१३॥ क्रम सामानित स्वस्ताच्यी वर्षेत्रसीतिः सावित्रसः। शीकाविद्युजर्शपन्यः पुत्रज्ञवसमन्बद्धाः ॥१४॥ विमयासम्बो पूर्वगरपुर्वगरः। क्तम मार्गी अपल्याच्या बीचानेपविचवच्या ।।१४।१ वाजावित्राचर्यमध्य क्रियीमा च छ्यागिची। प्रथमाचालु पुत्रः स्थात् तेवपासो ग्रामानियो ॥१६॥ हितीयो देशवचारको गुरुमकः ससन्तवी । पठिज्ञा रासीबु का नापविचाहिरीति व ॥१५०। पितर्मको गुर्योद् को दोसानामान्तीयकः। होतारेका च सरमार्थ होक्सनी हितीबिका ।।१८३। किकायि वस निकियी समक्रियः।

विकालकारणीर

दि शुक्सर॥

कार्तिके चारिते पक्षे अमोदरकां ग्राम दिने।

धर्मादिचद्राय स्त्रकर्महानते । हितोक्तये श्री सुग्तिने नियुक्तये ॥१६॥

७ चन्दनमलेयागिरि कथा

चन्द्रनमलयागिरि की क्या हिन्दी की प्रेम कथाओं मे प्रसिद्ध कथा है। यह रचना मुनि भट्ट-सेन की है जिसका वर्णन उन्होंने निम्न प्रकार किया है—

मम उपकारी परमगुरु, गुण श्रद्धर दातार, वंदे ताके चरण जुग, भद्रसेन मुनि सार ॥३॥ रचना की भाषा पर राजस्थानी का पूर्ण प्रभाव है । कुछ पद्य पाठकों के श्रवलोकनार्थ नीचे दिये जा रहें हैं —

सीतल जल सरवर भरे, कमल मधुप मणकार । पणघट पांगी भरण की, लार बहुत पणिहार ॥

× × × × ×

चद्ने वितु मलयागरी, दिन विन सूकत जात । ज्यौँ पावस जलधार वितु, वनवेली कुमिलात ।।

X X X X X X

श्रगनि मामि जरिवौ मलौ, मलौ ज विष कौ पान । शील खडियौ निर्ह भलौ, किह कह शील समान ॥

× × × ×

चद्न श्रावत देखि करि, ऊठि दियो सनमान । उतरी श्रापणी धाम है, हम तुम होई पिछान ।।

रचना में कहीं कहीं गाथायें भी छह़ त की हुई हैं। पद्य सरया १८८ है। रचनाकाल एव लेखन काल दोनों ही नहीं दिये हुये हैं लेकिन प्रति की प्राचीनता की दृष्टि से रचना १० वीं शताब्दी की होनी चाहिये। भाषा एव शैली की दृष्टि से रचना सुन्दर है। श्री मोतीलाल मेनारियां ने इसका रचना काल स् १६७४ माना है। इसका दूसरा नाम कलिकापचमी कथा भी मिलता है। छभीतक भद्रसेन की एक ही रचना उपलब्ध हुई है। इस रचना की एक सचित्र प्रति अभी हाल मे ही हमे भट्टारकीय शास्त्र भहार ह गरपुर मे प्राप्त हुई है।

८ चारुदत्त चरित्र

यह कल्याणकीर्ति की रचना है। ये भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में होने वाले मुनि देव-फीर्ति के शिष्य थे। कल्याणकीर्ति ने चारुद्त्त चरित्र को सवत् १६६२ में समाप्त किया था। रचना में

र राजस्यानी भाषा भौर साहित्य पृष्ठ सं । १६१

२ राजस्यान के जैन शास्य भढारो की ग्रंथ सुची भाग २ पृ० स० २३६

सेठ पारुर के बीबन पर प्रमाग बाला गया है। रचना चौपई पर्व बूदा खुम्ह में है क्षेत्रिन प्रगः मिन्न मिन्न है। इसका बूसप जाम चारुरचपस भी है।

क्रम्ययाकीर्ति १० वी शहाजनी के निवान थे। यान तक इनकी परवजाव रहाती: $(it \ \) = 1000 \, \mathrm{m}^{-1}$ चीरावित पास्कताच स्तवन (it) निवास स्तवन (it) वीर्ववर विजती (it) १०२३) चारी रहर विजास स्तवनि (it) कारी रहर विजास स्ताम स्वापि रचनों निक्ष सुकी है।

३ प्रांतिस सातिस्यमास

स्था जिल्हास १४ की सल्यान्धी के मस्या निवान से । थं संस्था नव दिन्दी होतों के दी प्राप्त निवान से तथा इन दोनों दी मायाओं में इनकी ६० से भी व्यक्ति एनतामें करतान होती है। बस्तुर के इन अंदारों में भी इनकी काशी कियनी ही एचनामें मिली हैं जिनमें से चौरासी जातिज्ञकाल का स्थान करी तिला का ता है।

चौराधी बादिजकमाब में माजा की मोजी के करान में सम्मितित होने नाकी मार्थ जैन चादियों का म्यमोहस्त्र किया है। माजा की मोजी बनामें में एक बाति से दूसरी जादि नाहे स्वक्रियों में नहीं कसुकरा रहती ही। इस कमाब में समस्य पिद्धा गोजावार क्ष्म में चतुन मेन स्वत्र कादि का स्वत्रेज किया गया है। एकमा गोजासिक है पार्च सकी मार्थ दिस्त्री (राजस्वाती) है। इसमें कुछ ४१ पर्य है। मार्थ दिनस्या में कप्पाल के क्ष्मण में कप्पता मार्थोस्ट्रेक दिनमा सकार किया है

> ते सम्बन्धित बंदर बहु ग्राम जुण्याँ, भाषा शुण्ये त्यस्य एकावि । ज्या विकासस सास विदुष मकारी, पत्रई ग्राप्टे के बस्स पति ।१४२॥ इसी चौरासी साति बन्सामा समाप्त ।

हिर बनगरक के बागे चौरासी बाति की बूछरी बनगरक है जिसमें २६ पश्च है सीर वह संगदन किसी सम्बद्धि की है।

১ জিনত ক্ৰীণঃ

विजनस चौरई हिन्दी का कारिकासिक काव्य है जिसको रख कवि में संबन्ध १३४४ (स्वर् १२६७) जाइना हुदी पंचानी के दिन समाध्य किया था।

1	राजस्त्राम बैन	बारू वंशायी की स व	पुरी यात्र १	All an	
₹.	-			wit	

भिक्षा विश्वास्त्र स्थानित स्थ अविकार मालिए के ताल प्रतर्शिव होता है वायपमार्डात्रावरक्य विभिन्दाङ्ग्रह भते इंग्रग्न इर त्रेमाग्रद्धमरीरहिंद्रातासुन्। जाजाजन्त्रयोगमना नक्षाद्यां आयुक्तमाल भव श्वाद मुक्त लायुक्त मात्राहि सब्द्र अभिन्सीयग्रक्तीयकार कार् लानिक्रवणन् दिया। आपयमारिक सामानित्र अक्षाताहिनिणवरावया अती ग्रामनामियंग किस्सान के किस र राजा साथ किसार निर्देश भूजम्बि अन्य इस्तिमालकः । जनाम्बानामानि । इत्वनतार्गित्व विकासीया ग्रीत्य है। हिन्द विणरमनित्री-द्रणातायोधनन देशाणित्यी क्षण्यात्म तरम्यः नेस्तिमासद्याः न्यायाद्यात्मात् भारतान्त्रीयात्त्रः वाण्यात्रः वान्यायात्त्रः व्यक्तित् । भारतान्त्रस्तातात्राद्धः वाल्यात्रात्त्रः व्यक्तित् अपालकार्याः । १९५० स्थानिक स्वास्त्रां स्थानिक स्वास्त्रां । अपने स्वास्त्रां स्थानिक स्वास्त्रां स्थानिक स्वास उन्गणना । स्थानिक स्था गर वर्गा श्रमार उत्तरमञ्जूष्य विशेषात्र विशेषात्र विशेषात्र । स्थापति । जातेवसान्त्र स्थापति । स्थापति अंतरित विवास्त्र विवास में विवास के वित क्रियाक्षरत्वनुतिहर्कार्वे वार्षाकृति विश्व तापावाणकाधाटनी भेगाने के निर्णाणके हें से रंबडलेडाम निर्णाण यान मेडाभि केलाया पट भेगाभाना निर्णाण यान मेडाभि केलाया पट विश्वास्त्र के अस्तित्त क्षिण विश्वस्त्र के स्टार्ट प् त्य १० व्या १५ मा विस्तान स्थापता स्यापता स्थापता स्थापता स्थापता स्थापता स्थापता स्थापता स्थापता स्य

रिलह कषि द्वारा मंत्रन १३५५ मे रचित हिन्दी की प्रति प्राचीन कृति जिनदत्त चौपई का एक चित्र —
पान्दुर्लिप जयपुर के दि॰ जैन मन्द्रिर पाटोदी के शास्त्र भएटार मे समहीत है।
(इसका तिस्तृत परिचय प्रग्तावना की पृष्ठ सम्बा ३० पर देतिये)

9.E



The state of the s

्र धी राजाक्यी के प्रसिद्ध साक्षित्व सेवी कहा पंक्षित होकरमककी कार रचित एवं क्रियेवर गोम्मस्टस्पर की मूक पाक्ष्युक्तियां का एक चित्र । क्य मन्य सक्ष्यु के हि बीन मेहिएसोटी के साहत मरकार में संभागित है। (सची कार्स ७०३ से १०३)



संवत् तेरहसे चउवरणे, भाव्य सुदिषंचमगुरु दिख्णे । स्वाति नावत्त चदु तुलहती, क्वइ रल्हु पणवह सुरसती ॥२८॥

कवि जैन धर्मावलम्बी थे तथा जाति से जैसवाल थे। उनकी माता का नाम सिरीया तथा पिता का नाम स्राते था।

> जइसवाल कुलि उत्तम जाति, वाईसड पाढल उतपाति। पचऊलीया श्रातेकउपूतु, क्वइ रल्हु जिणवन्तु चरिन्तु।।

जिनदत्त चौपई कथा प्रधान काट्य है इसमें कविने श्रपनी काट्यत्व शक्ति का श्रधिक प्रदर्शन न करते हुये कथा का ही सुन्दर रीति से प्रतिपादन किया है। प्रंथ का श्राधार पं लाखू द्वारा विरचित जिल्यत्तचरित (सं १२०५) है जिसका उल्लेख स्वय प्रंथकार ने किया है।

मह जीयर जिनदत्तपुरागु, लाखू विरयर श्रहसू पमाण ॥

प्रथ निर्माण के समय भारत पर श्रावाडदीन खिलजी का राज्य था। रचना प्रधानत चौपई छन्द में निवद्ध है किन्तु वस्तुवध, दोहा, नाराच, श्रधनाराच श्रादि छन्दों का भी कहीं २ प्रयोग हुआ है। इसमें हुल पद्य ४४४ हैं। रचना की भाषा हिन्दी है जिस पर श्रपश्रंश का श्रधिक प्रभाव है। वैसे भाषा सरल एव सरस है। श्रधिकाश शब्दों को उकारान्त बनाकर प्रयोग किया गया है जो उस समय की परम्परा सी मालूम होती है। काव्य कथा प्रधान होने पर भी उसमें रोमाचकता है तथा काव्य में पाठकों की उत्सुकता बनी रहती है।

कान्य में जिनदत्त मगध देशान्तर्गत वसन्तपुर नगर सेठ के पुत्र जीवदेव का पुत्र था। जिनेन्द्र मगवान की पूजा श्र्यांना करने से प्राप्त होने के कारण उसका नाम जिनदत्त रखा गया था। जिनदत्त न्यापार के लिये सिंघल आदि द्वीपों में गया था। उसे न्यापार में श्रतुल लाभ के अतिरिक्त वहा से उसे श्रनेक अलौकिक विद्यार्थे एव राजकुमारिया भी प्राप्त हुई थीं। इस प्रकार पूरी कथा जिनदत्त के जीवन की सुन्दर कहानियों से पूर्ण है।

११ ज्योतिपसार

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है ज्योतिपसार ज्योतिप शास्त्र का मथ है। इसके रचयिता हैं श्री छुपाराम जिन्होंने ज्योतिप के विभिन्न भयों के श्राधार से संवत् १७४२ में इसकी रचना की थी। कि के पिता का नाम तुलाराम था श्रीर वे शाहजहापुर के रहने वाले थे। पाठकों की जानकारी के लिये मथ में से दो उद्धरण दिये जा रहे हैं —

केटरियों चौथो भवन, सपतमदसमीं जान। पंचम श्ररु नोमौ भवन, येह त्रिकोण बखान।।६॥ तीजो पसटम ग्यारमों, घर टसमों कर लेखि। इनकौ उपत्रै कहत है, सर्वप्रथ में देखि।।०॥ करण करने का फंस में, सीह पिन पित बारि। वा दिन करने गत्री, जु पल पीते कारिकारि ।१४०। सराम सिले से निष्क की, जा पर पैठा काथ। ता पर के मूख मुख्य की की जे सिंद बनाव ।१४१। १ न बानार्केट टीका

काचार्च श्रामकड़ विशिष्त शानार्थेच संस्कृत माधा का प्रसिद्ध शब्द है। स्वाच्याय करने बात का प्रित्न होने के कारण स्वकी व्यान प्रस्कक शास्त्र नंबार में इस्तकिकित महिनां कपत्रक्त होती हैं। इस एक श्रीका विधाननित्र के प्रित्न कुतिमारी झारा क्रिली गई भी झानार्थ्य की एक काच संस्कृत की बन्दार के या मंदार में कावस्त्रक हुई है। दीनाकार है में नार्थकास उन्होंने हस श्रीका के शुरूत सम् स्वकृत कात्रहीन के शास्त्रक कावस्त्रक के सुत्त रिव्हास के क्षत्रकार प्रस्ता परनार्थ किती थी। इस कावस्त्र बाह्यहीन के शास्त्रक कावस्त्रक के सुत्त रिव्हास श्रीका की ने

इटि श्रामकामाधारियकि हानार्युक्तुक्षक्षे बोग्राहीयधिकारे पं नव्यविकासिकसाह गार हारुम साह रहेज्य साह रिक्तिसेम लवकपार्य पेडित विकासोधार्यन स्रायसितन हारसमान

टीका के प्राप्त में भी टीकाकर में सिम्ब प्रसमित क्रिकी है—

श्रास्त्रम् साहि व्यवस्थानिम्हरतः प्राप्त प्रतिक्राहरः । सीमान् सुग्वस्थारत-पारिः-चित्तोपस्योगस्य । वान्ता इन्य इति प्रतिक्रियसम्बर्ग स्वदान्तमानितः । स्वीयस्थितः वोदये शुक्रदुतः स्वर्धान्त्रस्यानितः । । । सीमान् दोक्सस्य पुत्र निमुद्धाः स्वराजीयतामीणः । सीमान् सीमान्यस्य स्वराजन्यस्य स्वराजन्यस्य । सीमान् सीमान्यस्य स्वराजन्यस्य स्वराजन्यस्य स्वराजन्यस्य । । । । सोतः प्रतिकृता परं स्विषणा स्वान्यस्य स्वराजन्यस्य स्वराजन्यस्य । । । ।

क्ट प्रदृष्टित से बहु बाता का सकता है कि भागत बाकर के राजस्व मंत्री टोक्सम संगयन बैत में। इतके पिया का नाम साह पासा बा। स्थ्य मंत्री बाक्सम भी बाद प और हमका एक अवा 'क्स हैरी इस देख बितंसा बीच मंत्रारों में कियते हैं। गुटको में स्मिताह है।

क्विक्सास की संस्कृत दीका का कांग्रेस पीठारेंग में भी किया है। इंडिज क्योंने न्यानेस्त्रे के स्रांतिरक और कीई परिचन नहीं दिया है। वें नवविकास का विशेष परिचय कसी कोच का विशेष हैं १३ क्रेमिकास व्यक्ति —महाकृषि वामोरेर

सहावित बानोहर कुन बेसियांद करिए धापम रा भागा का पढ़ शुन्दर बावन है। इस बाम से बांच संवित्तों हैं किसी सम्बद्धन नेशियान के बीचम का बर्धन है। स्वरूपि ने इसे संवत् १९८० में स्वापन दिना वा बैसा निम्म इनई बन्द (एड मकार का बीच) में दिया हुमा हैं--- वारहसयाइं सत्तासियाइं, विक्कमरायहो कालह । पमारहं पट्ट समुद्धरगु, ग्रारवर देवापालह ॥१४४॥

दामोदर मुनि स्र्सेन के प्रशिष्य एव महामुनि कमलभद्र के शिष्य थे। इन्होंने इस प्रय की पिटत रामचन्द्र के खादेश से रचना की थी। प्रथ की भाषा सुन्दर एव लितत है। इसमें घत्ता, दुवई, वस्तु छद का प्रयोग किया गया है। कुल पद्यों की सस्या १४५ है। इस काव्य से अपभंश भाषा का शनै शनै हिन्दी भाषा में किस प्रकार परिवर्तन हुआ यह जाना जा सकता है।

इसकी एक प्रति ज भडार में चपलच्य हुई है। प्रति श्रपृर्ण है तथा प्रथम ७ पत्र नहीं हैं। प्रति सं० १४=२ की लिसी हुई है।

१४ तन्त्रवर्णन

यह मुनि शुभचन्द्र की संस्कृत रचना है जिसमें सिंहाप्त रूप से जीवादि द्रव्यों का तक्त्य विश्वत है। रचना छोटी है और उसमें फेवल ४१ पद्य हैं। प्रारम्भ में प्रथकर्त्ता ने निम्न प्रकार विषय वर्णन करने का उल्लेख किया है —

तत्त्वातत्वस्वरूपज्ञ सार्व्यं सर्व्यगुणाकर । वीर नत्या प्रवच्येऽह जीयद्रव्यादिलज्ञ्या ॥१॥ जीवाजीयमिद् द्रव्य युग्ममाहु जिनेश्वरा । जीवद्रव्य द्विधातत्र शुद्धाशुद्धविकल्पत ॥२॥

रचना की भाषा सरल है। ग्रंथकार ने रचना के अन्त मे अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है —

श्री कजकीत्तिसह वे शुभेंदु मुनितेरिते । जिनागमानुसारेण सम्यक्त्वव्यक्ति-हेतवे ॥४०॥

सुनि शुभचन्द्र भट्टारक शुभचन्द्र से भिन्न विद्वान हैं। ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान थे। इनके द्वारा लिखी हुई अभी हिन्दी भाषा की भी रचनार्थे मिली हैं। यह रचना न भडार में संप्रहीत हैं। यह श्राचार्य नेभिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी।

१५ तन्त्रार्थस्त्र भाषा

प्रसिद्ध जैनाचार्य उमास्वामि के तत्त्वार्थसूत्र का हिन्दी पद्यमे अनुवाद वहुत कम विद्वानों ने किया है। अभी क भहार मे इस प्रथ का हिन्दीपद्यानुवाद मिला है जिसके कर्त्ता हैं श्री छोटेलाल, जो अलीगढ प्रान्त के मेहूगाव के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम मोतीलाल था। ये जैसवाल जैन थे तथा काशी नगर में आकर रहने लगे थे। इन्होंने इस प्रथ का पद्यानुवाद संवत् १६३२ में समाप्त किया था।

शोटेलाल हिन्दी के श्रच्छे विद्वान थे। इनकी श्रव तक तत्त्वार्थसूत्र भाषा के श्रतिरिक्त श्रीर रचनायें भी उपलब्ध हुई हैं। ये रचनायें चौवीस तीर्थंकर पूजा, पंचपरमेशी पूजा एव नित्यनियमपूजा है। उत्तार्थ सूत्र का श्रादि भाग निम्न प्रकार है।

भोज की राह बनावत के। घर कर्म पहाड करें पड्यूरा, विरुद्धानर के प्रापक है ताही, सम्य च हेत मनी परिपूरा। सम्यवरोंन चरित कान कहे, वाहि ग्रारम मोज के सुरा, तत्व को वार्ष करो सरवान सो सम्यवरोंन सक्कूरा॥१॥

कवि में किन पर्यों में कपना परिचय दिना है वे निम्न प्रकार हैं---

जिसो स्वतीगत चानियों मेहराम धुमान । सोतीसाल सुपुत्र है सोनेबाल धुमान ॥१॥ सैस्टाल इस चानि है ले सी मीला बान । यंत्र इच्चाक सहान में बना बम्प मू सान ॥१॥ स्वती नतर धुमान कै सेनी संग्रित पान । व्यवस्थान मार्च सानो शिक्ष स्वती नतर धुमान कै सेनी संग्रित पान । व्यवस्थान मार्च हाने शिक्ष सुप्तान सी पान सान सिंद ॥ व्यवस्थान सिंद धुमान सी सी प्रति धुमान सी सी प्रति धुमान सी सी प्रति धुमान सी प्रति धुमान सी प्रति ॥ व्यवस्थान सी प्रति ॥ व्यवस्थान सी प्रति धुमान सी प्रति ॥ व्यवस्थान सी प्रति ॥ वित्र सी प्रति ॥ वित्र सी प्रति ॥ व्यवस्थान सी प्रति ॥ वित्र सी प्रति ॥ वित्र सी प्रति ॥ वित्र सी वित्र सी

इति अदेशसम् संपूर्णः। संबत्त १६४३ चीत्र अञ्चा १३ लुके।

१६ इर्गनसार माना

सथनक नाम के क्यें विद्यान है। गते हैं। इनमें एक्षी मध्यद्ध (य. वी. राजाव्दी) के सबनक विश्वांकों में जी मुंखक आगरे के जिलाधी में किम्द बाद में हीएपुर (विश्वीन) आकर रहने बागे के । क्या विद्यान के व्यक्तिक १६ की शायानी में दूसरे नक्यक हुवे विश्वोंने कियने ही मंत्रों की आग बीच्य विश्वी। दर्शनक्यर मार्थ भी इन्हीं का विकाश दुंचा है जिसे क्योंने संबद् १८२० में समान्य किया जा। इस्ता क्स्मेंक सर्थ की में मिन्स मसर किया है।

> बीस श्रायिक बगणीस सै शाद जावण प्रथम चौबि श्रातिकार । कृष्यहणका में वर्शनसार भाषा भवमका खिली सुवार ॥१६॥

दर्शनसार मुख्या देवसेन का प्रेय है जिसे बन्दोंने संवन् ८६ में समाप्त किया था। नवमक भ दसी का परायुकांद किया है।

सबसक द्वारा क्रिके हुव चण्य शंकी में सदीपाकचरितमाण (संबन् १६१≒), बोतस्तर मार्च (संबन् १६१६), परमासमयस्य साया (संबन् १६१६), एकस्परकमण्डाच्यर आपा (संबन् १६३०), बोस्स कारणभावना भाषा (सवत् १६२१) श्राष्ट्राह्मिकाम्था (सवत् १६२२), रत्नत्रय जयमाल (संवत् १६२४) उल्लेखनीय हैं।

१७ दर्शनसार भापा

१८ वीं एव १६ वीं शताब्दी में जयपुर में हिन्दी के वहुत विद्वान होगये हैं। इन विद्वानों ने हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए सैकडों प्राफ़त एवं संस्कृत के अथों का हिन्दी गद्य एवं पद्य में श्रमुवाद किया था। इन्हों विद्वानों में में प० शिवजीलालजी का नाम भी उल्लेग्ननीय हैं। ये १८ वीं शताब्दी के विद्वान थे और इन्होंने दर्शनसार की हिन्दी गद्य टीका सवत् १८२३ में समान्त की थी। गद्य में राजस्थानी शैली का उपयोग किया गया है। इसका एक उदाहरण देखिये —

साच कहता जीव के उपिरलोक दूखों वा तूपों। साच कहने वाला तो कहें ही कहा जग का भय किर राजदढ छोडि देता है वा जूवा का भय किर राजमनुष्य कपडा पटिक देय हैं ? तैसे निंदने वाले निंदा, स्तुति करने वाले स्तुति करों, साच वोला तो साच कहें।

१८ धर्मचन्द्र प्रयन्ध

धर्मचन्द्र प्रवन्य में मुनि धर्मचन्द्र का सिच्तित परिचय दिया गया है। मुनि, भट्टारकों एव विद्यानों के सम्बन्ध में ऐसे प्रवन्ध बहुत कम उपलब्ध होते हैं इस टिप्ट से यह प्रवन्ध एक महत्वपूर्ण एव ऐतिहासिक रचना है। रचना प्राफ़त मापा मे है विभिन्न छन्दों की २० गाथायें हैं।

प्रवन्ध से पता चलता है कि मुनि धर्मचन्द्र भ० प्रभाचन्द्र के शिष्य थे। ये सकल कला में प्रवीण एव आगम शास्त्र के पारगामी बिद्धान थे। भारत के सभी प्रान्तों के श्रावकों में उनका पूर्ण प्रमुत्व था और समय २ पर वे श्राकर उनकी पूजा किया करते थे।

भवन्य की पूरी प्रंति प्रथ सूची के पृष्ठ ३६६ पर दी हुई है।

१६ धर्मविलास

धर्मविलास ब्रह्म जिनदास की रचना है। किन ने श्रपने श्रापको सिद्धान्तचक्रवर्ति श्रा० नेिम-चन्द्र का शिष्य लिखा है। इसलिये ये भट्टारक सकनकीर्ति के श्रनुज एव उनके शिष्य प्रसिद्ध विद्वान व्र० जिनदान से भिन्न विद्वान हैं। इन्होंने प्रथम सगलाचरण में भी श्रा० नेिमचन्द्र की नमस्कार किया है।

भव्वकमलमायह सिद्धजिण तिहुपर्निद् सद्पुज्ज । नेमिशर्सि गुरुवीर पण्मीय तियशुद्धभोवमह्ण ॥१॥

मथ का नाम धर्मपचर्विशतिका भी है। यह प्राकृत भाषा में निवृद्ध है तथा इसमे केवल २६ गाथायें है। प्रयक्ती श्रन्तिम पुष्पिका निस्न प्रकार है। कृति त्रिविवरीक्षास्यक्षक्रकर्याचार्वजीनेतिचन्द्रस्य विश्वशिष्कण्डस्थितद्यस्थितं धर्मपंच विश्वतिका साम व्यवसम्बन्धाना

२ नित्रामि

बहाँ प्रस्तिय विद्यान क्षय किन्तास की कृषि है को बजुर के 'के' प्रकार में करना हुई है। एक्स होती है भी, क्यों केवस 11 पत है। ह्यमें भीतीय तीर्फरी की सुदि को स्थान स्थान प्रसुद्धियं का नार्मक्षेत्र किस गया है। एक सुदि पत्त होते हुवे भी साम्बासिक है। एक साम्बास्त्र काल पात किन क्षया है'—

क्षा किराया वेतरसर वेद, हूं तक पांच कर सेव।
हेदे निकार्यां कह सार, जिम क्षाफ तरे संसर।। १।।
हो क्षाफ सुदे किरायांच संसर क्षाफ, तर संसर।। १।।
हो क्षाफ सुदे किरायांच संसर क्षाफ, तर से सार।।
हा प्राच किरायां किरायांच से सार कर करें दिवा भीर।। २।।
हा आवित किरोयार के सुस्तांच करें दिवा में मंग।। ३।।
हा अध्यक्ष मत्र हर क्यायें, हे किराया झंक हिए पानी।
हा अधिनवंदन कार्येंट, किरो मोक्सो करने केंद्र।। १।।
हा सुमीव सुमीव शायार, किरो मोक्सो करने तरस ।। १।।
हा सुमीव सुमीव शायार, कर्यु पाय व प्रीहम मार।
हा सुमीवर्ग किरायांच सुमीव क्षायांच सार।
हा सुमीवर्ग क्षायांच हुनीव क्षायांच प्राच मार।
हा सुमीवर्ग क्षायांच हुनीव क्षायांचा सार।
हा सुमीवर्ग क्षायांचा से व्रिक्त क्षायांचा सार।
हा सुमीवर्ग क्षायांचा है।

क क्षण्य सुर्या य चर्च त साक्य वाय कार्यगा। १३। की सफकदीर्ति गुरु व्याड, मुनि मुक्तमीर्ति गुरुप्यड। क्षम्य किलास सर्योगस्य, य निवासील सक्तार।। १४।।

२१ अधिनरेन्ड स्टोड

दह स्तोत्र वाहिएक कालाव कृत है । य सहरक वरल्युकीर्ध के हिस्स थे. तथा हाडाएकीर्स (क्रमर) के रहने वाहे व । यह तक हमडी रवेतावर पणवव (क्रमित मुक्ति निराहरण), तुम्र निराहर

(बस्पूर) के रहने बाले व । सम्ब तक इसकी रवेतान्त्रर पराजव (कवित मुक्ति निराहरण)), पुत्र निमान, बागुरिसानि संचान ल्यांच्य शीका वर्ष शिव साधव काम के बार यज बाजकव्य दूर्य थे । नेमिनरेग्द्र स्वार्य ष्निकी पाचवी कृति है जिसमें टोडारायसिंह के प्रसिद्ध नेमिनाथ मन्दिर की मूलनायक प्रांतमा नेमिनाथ का स्तवन किया गया है । ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे । रचना मे ४१ छन्द है तथा श्रन्सिम पद्य निम्न प्रकार है —

> श्रीमन्नेमिनरेन्द्रकीर्त्तिरतुल चित्तोत्सव च छतात्। पूर्व्वानेकभवार्जितं च कलुपं भक्तस्य वे जर्हतात्।। उद्घृत्या पद एव शर्मदपदे, स्तोतृनहो । शाश्वत् छीजगदीशनिर्मलहृदि प्राय सदा वर्ततात्।।४१॥

उक्त स्तोत्र की एक प्रति अ भएडार में समहीत है जो संवत् १७०४ की लिखी हुई है।

२२ परमात्मराज स्तोत्र

भट्टारक सकलकी ति द्वारा विरचित यह दूसरी रचना है जो जयपुर के शास्त्र भडारों में उप-जव्ध हुई है। यह सुन्दर एव भावपूर्ण स्तोत्र है। कवि ने इसे महास्तवन लिखा है। स्तोत्र की भापा सरल एव सुन्दर है। इसकी एक प्रति जयपुर के क भडार में सप्रहीत है। इसमे १६ पद्य हैं। स्तोत्र की पूरी प्रति प्रथ सूची के प्रष्ठ ४०३ पर दे दी गयी है।

२३ पासचरिए

पासचिरए श्रपभ्र श भाषा की रचना है जिसे किव तेजपाल ने सिववास के पुत्र घूचित के िलये निवद्ध की थी। इसकी एक श्रपूर्ण प्रति म भग्डार में समहीत है। इस प्रति में म से ७७ तक पत्र हैं जिन में श्राठ सिवयों का विवरण है। श्राठवीं सिध की श्रान्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इयसिरि पास चरित्त रहय कड् तेजपाल साग्णद ऋगुप्तणियसुहह घूघिल सिवदास पुत्तेग सग्गग्गवाल द्रीजा सुपसाएण लव्मए गुण् अर्रावेद दिक्खा ऋट्टमसधी परिसमत्तो ।।

तेजपाल ने प्रथ मे दुवई, चत्ता एव कडवक इन तीन छन्दों का उपयोग किया है। पहिले घत्ता फिर दुवई तथा सबके अन्त मे कडवक इस क्रम से इन छन्दों का प्रयोग हुआ है। रचना अभी अप्रकाशित है।

तेजपाल १४ वीं शताब्दी के विद्वान थे । इनकी दो रचनाए सभवनाथ चरित एव वराग चरित पहिले प्राप्त हो चुकी हैं ।

२४ पार्श्वनाथ चौपई

पार्व्वनाथ चौपई कवि लालो की रचना है जिसे उन्होंने सवत् १७३४ मे समाप्त किया था।

कृषि राजस्यानी विद्यान ये तथा वयहरूका माग के खते वासे थे। क्या समय मुगल थासराह चौरंगलेत बा रामसन या। पारवानाव चौपई में १६८ पया हैं वो सभी चौपई में हैं। रचना सरक मागा में निवड है।

२४ पिंगस बन्द गास्त्र

द्वभ्द राज्य पर माधन कवि हा। किली हैं वह बहुत मुल्दर पना है। एवन का दूम्य स्था माजन देंद्र विवास भी है। माजन कवि के पिता वित्तम नाम गोपाक का रूपने भी वर्षन है। एवस में दोहा पीरोखा एत्य सोध्या महस्मादन सरिमाकिका संत्यारी, भावती विकास कर्षण समामिक मुर्वाप्तवार मंत्रुमापिसी सारमिका वर्रमिका समापनिक माजिनी सादि किनते ही सम्बो के बच्च

माजन करि में हों संबत् १८६१ में समाज दिया था । इसकी एक अपूर्ध प्रति 'क' मरगर क संबद्ध में हैं । इसका व्यक्ति मांग सुची के ११ प्रयुत्त पर विवाहका है ।

२६ प्रवससम्बद्धा कोश

टेक पन्य १० वी राज्याची के प्रमुख दिन्सी कवि हो गये हैं। करतक इसकी २ से भी अविक एक्सपें प्राप्य हो चुकी हैं। जिस में से कुछ के साम सिच्च प्रसर हैं—

्वपरानेकी पूजा कर्मबहन पूजा तीनजोड पूजा (सं १८९०) सुद्रिक्त तर्राग्यी (छं१८९५) शोकह्मारत पूजा क्यानपज वयान (सं १८९०) पक्चकरायान पूजा पक्चमेन, पूजा
१८०माम पूचा गर्म टीचा व्यव्यान वायालकी जारि। इनक पद वी गिलत है जो व्यव्यान कर्मकार एउं हे
सोताने हैं।

हेड जंद के निर्धामक का गाम ही पंचांद पर्य निर्धा का याम ग्रासकृत्या था। दी पर्यंद रार्य मी सम्बंदिताल थे। क्रिने करके कराव की ये। वे मुक्त सक्तुर निर्धानी ये स्विक्त किर सारिधुराने बाइर याने सार्य थे। प्रत्यसक्त कर्माकृति करकी पढ़ और त्यार है भी सार्य स्वप्तुर के 'कू' मरदार में प्रार्थ हुँ है। इर्ड के दूस एक्सा में को सम्प्रार्थित्य दिखा है यह मिलन प्रसार हैं ——

ж

शीपकल धावमी मध्य है किनवमी विशे यह घर। वित्र से पुरत बहु शीलावक, कमें बोल्य सही प्रमे हुएवा। देश। शीपकल वृत्त ने वृत्त मध्ये साके मध्य हुती होरी ही राज्य हुती होरी है। राज्यक्य हैं को तत बाद, होर्डियं सा साम क्या हो देश। सा चिर्द कमें कहें हैं बाद, साबिएट्ट विश्व की सोता बाद। वहां भी जुदद कमा किन सान, कोनों सेह कहें हैं बाति। साहिपुरा सुभथान में, भलो सहारो पाप।
धर्म लियों जिन देव को, नरमव सफल कराय।।
नृप उमेट ता पुर विषे, करें राज वलवान।
तिन श्रपने मुजवलथकी, श्रारे शिर कीहनी श्रानि।।
ताके राज सुराज में ईतिमीति नहीं जान।
श्रयल पुर में सुरायकी तिष्ठे हरप जु श्रानि॥
करी कथा इस प्रथ की, छद वध पुर मांहि।
प्रथ करन कछू वीचि में, श्राकुल उपजी नाहि॥ ४३॥
साहि नगर साह्यें भयो, पायो सुभ श्रयकास।
पूरण प्रथ सुल तैं कीयों, पुरुवाश्रव पुरुववास॥ ४४॥

चौपई एव दोहा छन्दों मे लिखा हुन्ना एक सुन्दर प्रथ है। इसमे ७६ क्थाओं की सप्रह है। किन ने इसे सवत् १८२२ में समात किया था जिसका रचना के न्नन्त मे निम्न प्रकार उल्लेख है —

सवत् श्रष्टादश सत जानि, उपिर वीस दोय फिरि श्रांनि । फागुण सुटि ग्यारिस निसमाहि, कियो समापत उर हुल साहि ॥ ४४ ॥

प्रारम्भ में किन ने लिखा है कि पुरयास्त्रन कथा कोश पिहने प्राष्ट्रत भाषा में निनद्ध था लेकिन जन उसे जन साधारण नहीं समम्मने लगा तो सकल की ति खादि विद्वानों ने संस्कृत में उसकी रचना की। जन संस्कृत समम्मना भी प्रत्येक के लिए क्लिप्ट होगया तो फिर खागरे में धनराम ने उसकी नचिनका की। देकचद ने समनत इसी नचिनका के आधार पर इसकी छन्दोनद्ध रचना की होगी। किने इसका निन्न प्रशर उल्लेख किया है —

साधर्मी धनराम जु भए, ससकृत परवीन जु थए।
तों यह प्रथ श्रागरे थान, कीयो वचिनका सरल वसान।।
जिन धुनि तो विन श्रन्तर होय, गणधर सममें श्रोर न कोय।
तो प्राकृत में करें वसान, तव सब ही सु नि है गुर्ण्लानि॥३॥
तथ फिरि बुवि हीनता लई, सस्कृत वानी श्रुति ठई।
फेरि श्रन्तप वुध ज्ञान की होय, सकन कीर्त्त श्राटिक जोय॥
तिन यह महा सुगम निर लीए, संस्कृत श्राति संग्ल जु कीए॥

२७ गारहभावना

प० रङ्यू श्रपश्र श भाषा के प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं। इनकी प्राय सभी रचनायें श्रपश्च श

माना में ही निकारी है किनकी सक्या र से भी व्यक्ति है। व्यक्ति ११ वी सक्याच्यी के विद्यान से चौर सम्प्रमादेश-च्यातिकर के राहने वाले थे। बारह भावता कांचे की एक मात्र एचना है वो दिल्यों में दिवती हुई सिक्ती है केकिन इसकी आया पर भी व्यवक्षता का प्रमान है। एचना में १६ पर हैं। रचना के सन्त में कींचे ने हान की व्यवक्षता के बारे में बहुत सुन्दर राज्यों में बहुत हैं—

क्यन कहायी कान की कहन शुनन की नांदि। भाषनहीं मैं पाइए, अब देखें कट मांदि।।

रचना के चुझ सुम्पर पदा निम्न प्रकार है'---

र्सख्या रूप कोई बलु प्रोही, मेहमाब ब्यागा । हाज द्रष्टि वर्षि देतिय सब ही स्थिद स्मान ।। × × × × × × वर्षे ब्रामी ब्राम करि विशिक्ष द्रास्त व होय । वरम जु बाक्य बलु हैं, को पहचार्य कोव ।

करन करावन न्यान कर्मी, पढि कार्व बकानव और । न्यान दिग्नि दिन करवी आहा देशी हु कीर ॥

्षत्र में रह्यू का नाम कही नहीं दिया है केवल म व समाच्या पर "हाँवा भी रहयू कुठ हारह मायन्त्र संपूर्व" बिचा हुमा है विससे हसके रहयू कुठ किसा गया है।

२= पुरनकीर्चि गीव

गुनन्तर्भीत महारक अध्यक्षकीर्त के शिल्म ये और उसकी सुन्त के परचान, ये ही महारक भी गती पर पेंठे। पानस्थान के शास्त्र मन्नार्धी में भहारकों के सम्बन्ध में फिनते ही गीत मिले हैं इनमें बूचपान वर्ष में हामजन्द हाए किसे हुने गीत महन्त है। इस गीत में बूचपान में अहारक मुनन्तर्भीत भी उपन्या पर्य उसकी मृत्युक्ता के सम्बन्ध में गुण्युत्वाश किया गया है। गीत येत्रिवासिक है तथ इससे मुच्य कीर्ति के स्वाधिक के सम्बन्ध में बानस्थारी मिलती है। बूचरान १६ वी स्वास्त्रों के मिल्य विकास के दक्तके हाए एची हुई सम्बन्ध योच चीर श्वासं मिल पुनी हैं। यूप गीद समित्र कर से सूची के हुए देवन-चेक पर विवाहका है।

२१ मूपासच्छविग्रदिस्तोत्रटीका

स्वा पं भारतमार रेव वी शताब्दी के संश्वत गांपा के प्रशास विक्रान् के। इसके इसा विके सर्वे फितमें ही में न मिकते हैं जो बीन समान में नहें ही चाहर की दृष्टि से पढ़े चाते हैं। भारती मूपार नकुर्विस्तित्तोत्र की संस्थत बीका कुछ समय पूर्व तक कामाप्य नी क्रेकिन क्षम इसकी र प्रविद्धां बच्छा के इस संद्रार में कम्बन्य से मुकी हैं। बाशान्य में इसकी टीका चपने प्रिय सिन्ध विस्वचनम् के निये

१ निरसूत परिचय के लिए देखिये वा कामानिश्य हारा विकित कुपराज एवं कामा साहित्व-वीन समेदा सीमांच-११

की थी। टीका बहुत सुन्दर है। टीकाकार ने विनयचन्द्र का टीका के श्रन्त में निम्न प्रशार उल्लेख दिया है —

उपराम इव मूर्त्ति पृतकीत्ति स तस्माद् । श्रजनि विनयचन्द्र सच्चकोरेषाचन्द्र ॥ जगदमृतसगर्भा शास्त्रसन्दर्भगर्भा । श्रुचिचरित सिह्णोर्यस्य धिन्वन्ति वाच ॥

विनयचन्द्र ने कुछ समय परचात् श्राणाधर द्वारा लिखित टीका पर भी टीका लिग्नी थी जिसकी एक प्रति 'श्रा' भएडार में उपलब्ध हुई है। टीका के श्रान्त में ''इति विनयचन्द्रनरेन्द्रविरचितभूपाल-स्तोत्रसमाप्तम्" लिखा है। इस टीका की भाषा एव शैली श्राशाधर के समान है।

३० मनमोदनपचशती

कवि छत्त श्रथा छत्रपति हिन्टी के प्रसिद्ध कवि होगये हैं। इनकी सुरूय रचनाश्रों में 'कृपण-जगान चरित्र' पहिले ही प्रकाश में श्राचुका है जिसमें तुलसीवास के समकालीन कवि ब्रह्म गुलाल के जीवन चरित्र का श्रात सुन्दरता से वर्णन किया गया है। इनके द्वारा विरचित १०० से भी श्रिधिक पद इमारे समह में हैं। ये श्रवागढ के निवासी थे। प० वनवारीलालजी के शब्दों में छत्रपति एक श्रादर्शवादी लेकि ये जिनका धन सचय की श्रोर कुछ भी ध्यान न था। ये पाच श्राने से श्रिधिक श्रपने पास नहीं रखते ये तथा एक घन्टे से श्रिधिक के लिये वह श्रपनी दूकान नहीं खोलते थे।

इत्रपति जैसनाल थे। श्रभी इनकी 'मनमोदनपचशित' एक श्रीर रचना उपलब्ध हुई है। इस पचशिती को किंव ने सबत १६१६ में समाप्त किया था। किंव ने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है —

वीर भये श्रसरीर गई पट सत पन वरसि । प्रघटो विक्रम देते तनौ सवत सर सरसि ।।

उनिसद्दसत पोडशिह पोप प्रतिपदा उजारी । पूर्वापाड नछत्र प्रके दिन सय सुखकारी ।।

वर वृद्धि जोग मिछत इह्म थ समापित करिलियो । श्रमुपम श्रसेप श्रानद घन भोगत निवसत थिर थयो ।।

इसमें ४१३ पद्य हैं जिसमें सबैया, दोहा श्रादि छन्दों का प्रयोग किया गया है। किव के शब्दों में पचराती में सभी स्फुट किवत्त है जिनमें भिन्न २ रसों का वर्णन है—

सक्जिसिद्धियम सिद्धि कर पच परमगुर जेह। तिन पद पकज कौ सदा प्रनमौं धिर मन नेह।। निह श्रधिकार प्रवध निह फुटकर कवित्त समस्त। जुदा जुदा रस वरनऊ स्वादो चतुर प्रशस्त॥

मित्र की प्रशसा में जो पद्य लिखे हैं उनमें से दो पद्य देखिये।

मित्र होय जो न करें चारि वात कौं । उछेद तन धन धर्म मत्र श्रनेक प्रकार के ॥ दोप देखि दावे पीठ पीछे होय जस गावे । कारज करत रहे सदा उपकार के ॥ साबारन रिति नहीं ल्यारब की मीदि बाके। जब तथ वचन मंत्रासंत पदार के II रिक को बदार मिलाई जो में दे कारा। मित्र को सुदार शुन्तीवरों या धार के II१११मा भंतरंग बादिबा मजुर जैसी किससिम। धननरपन को कुमेरवीन कर है।! शुन्न के बधान कु जैसे जब्द स्वस्त कु। तुक्र तथ सुरिवे कु दिन दुपर है।! कराज के सारिवे कु दक्ष बा विकास है। त्रीक के दिकानके कु मानों सुरगुर है। ऐसे सार मित्र को न क्षीनियर सुवाई कमी। बन सब तन तब बारि देखा बर है। परिकार

इस तरह मनमादन पंचराती दिन्ही की श्रृत ही सुन्दर रचन्छ है जा ग्रीप्र ही असरमन नेतन है।

तिश्रविकास एक संस्ता संब है। विसरों श्रवि वासी हारा विश्ववित विश्वित रचनायों का संबद्ध

११ मित्रनिसास

है। पासी के पिरा का नाम बहाबारिय का । किन ने भागने निया पक अपने सित्र मारामक के भागवा है सित्र विकास की रचना की भी । ने मारामक संगयन के ही विकास है जिन्होंने स्टॉन्क्या शीकरण सामक्या आदि कमार्थे सित्री हैं। किन ने हसे संस्तु १००० में समाप्त किया का बिस्का कार्सन मंत्र के स्थान में नियम प्रस्तर हक्ता हैं—

> कम (पु छो हो नारों गरि में क्दीस कियों, तादी के मसल होती वासी त्यम पानी है। मापलक सिन वा क्यावरित (पदा मेपे, दिलकीच्याव ऐसी प्रव ये बमारी है। क मैं मूक कृत को हो हुकि सो हुवार सी को सो ये कमा होते की ब्लो माव वे बनायी है।

> दिराजिय सरावान हरि को चहुने ठान, परमुख छुनि चीच सान निकार्य गाँची है।। स्वीत में प्र व के प्रारम्प में वर्धनीय विचय का निकार प्रशास करवेल किया है'—

मित्र विकास सहामुत्त्रपूरेन, वरस वस्तु स्वासाविक पेत । मगट वैक्रिये क्रोक मेम्बर, संग्र मसाव क्रातेक प्रकार ।।

सगर देकिने कोक सेमाएं, संग प्रसाद कानेक प्रकार है। द्वास काग्रुप सम की प्रापति होन, सग कुर्सन तको क्या सोध । पुरुगक काग्रु की सिरयान ठीक, इस कू करनी है तक्कीक ॥

सित्र विकास की साथा वर्ण रोजी वोगों की शुल्दर है तथा पाठकों के सन को श्रुमावने वाकी है। संग प्रकारम कोग्य है।

बासी वर्षि के पर भी मिक्से हैं।

३२ रागमासा-स्यामिश

राग रागनिकों पर निषद रागनासा स्थान मिल की एक सुम्पर कृति है। इसका कुसरा ^{हान}

कासम रिसक विलास भी है। ज्यामिश आगरे के रहने वाले थे लेकिन उन्होंने कासिमखा के संरत्त-एता में जाकर लाहौर में इसकी रचना की थी। कामिनखा उस समय वहां का उदार एवं रिसक शासक भा। कवि ने निम्न शब्दों में उसकी प्रशसा की है।

> कासमखान सुजान ऋषा कवि पर करी। रार्गान की माला करिचे को चित घरी।।

दोहा

सेत्र गान के बंश में उपज्यो कासमखांन। निस दीपग ज्यो चन्द्रमा, दिन दीपक ज्यो मान॥ किव घरने छवि खान की, सी वरनी नहीं जाय। कासमखान सुजान की स्रग रही छवि छाय॥

रागमाला मे भैरांराग, मालकोशराग, हिंडोलनाराग, दीपकराग, गुणकरीराग, रामकली, लिलतरागिनी विलावलरागिनी, कामोद, नट, केटारो, श्रासावरी, मल्हार श्रादि रागरागिनयों का वर्णन किया गया है।

श्यामिश्र के पिना का नाम चतुर्मुज मिश्र था। कवि ने रचना के अन्त मे निम्न प्रकार वर्णन किया है—

> सवत् सौरहसे वरप, उपर वीते दोइ। फागुन बुदी सनोदसी, सुनौ गुनी जन कोइ।।

सोरठा

पोथी रची लाहौर, स्याम श्रागरे नगर के। राजघाट है ठौर, पुत्र चतुरमुज मिश्र कें॥

इति रागमाला प्रथ स्थाममिश्र कृत सपूर्ण ।

३३ रुक्मणिकुष्णजी को रासो

यह तिपरदास की रचना है। रासो के प्रारम्भ में महाराजा भीमक की पुन्नी रुक्मिणी के सौन्दय का वर्णन है। इसके परचात् रुक्मिणि के विवाह का प्रस्ताव, भीमक के पुत्र रुक्मि द्वारा शिशु-पाल के साथ विवाह करने का प्रस्ताव, शिशुपाल को निमन्नण तथा उनके सदलवल विवाह के लिये। प्रम्ताव, रुक्मिणी का कृष्ण, को पत्र लिख सन्देश भिजवाना, कृष्णजी द्वारा प्रस्ताव स्वीकृत करना तथा सर्वरक के खाद मीमनगरी भी भोर प्रत्यान पूजा के बहाने रहिमाणी वा मिन्स की भोर बाता, इतिमयी का मीन्स वेर्टेन, बीहरण हारा कीमच्छी का स्व में बैदाना कृष्ण रिम्मुणक बुद क्येन, करिमाणी हारा इन्य की एका एवं कनस हारिका माती का प्रत्यान व्यक्ति का बर्शन किया गया है।

एसी में दूरा, क्यरा, बोटक, नाराच वाति संद वादि का प्रधाय किया गया है। एसी की भाग राजकारी है।

नाराच बातिसंद

३५ सम्बन्धिक

बह ब्योतिय का अब है किसकी माथा स्थेतीहास औत्याची से की बी। वहि व्यासेट कें विकासी से। इनके रिवा का साम कंपरायक देशा मुक का साम ये व्यावस्थी बा। कारने मुक्क कंपरें करके कियाँ के ब्यायह से ही कवि में इसकी माथा प्रेमन् १८४४ में बसाय की बी। कारन्यमिन्द्रा स्थोतिय का संस्कृत में बस्पात से हैं। साथा शीका में ४२१ पत्र हैं। इसकी यक मति स्व मंत्रास में सर्वित हैं।

इसके सिवो हमें हिम्सी पर एवं कविन्छ भी स्थिते हैं:---

३५ स्रांत्य विद्यान चीर्षा

हमिन विचान चीरई एक क्यालक हर्यत है इसमें बम्बियान कर हे सम्बन्धित क्या है। हुँ हैं। यह कर चैत्र पर्य माहब मास के हम्बन्ध की प्रतिवता दिवा पूर्व तृतीया के दिन किया बाया है। इस कर के करने से क्यों की सामित होती हैं।

शीपह के रचविता है कार्य भीभम जिल्ह्या नाम जवनवार सुन्ना वा रहा है। कार्य स्तंगगोर (बच्छुर) के रहने वाले में ! वे बच्छेबच्या चैन ये तवा गोजा इनका !)त वा। शांचनेर में वस समय जानवार एएं पूत्रा का बहुर मणा या। हचीने इस संबद १६१७ (सब् १२६) में समाप्त किया वा। दोहा श्रौर चौपई मिला कर पद्यों की संख्या २०१ है। कवि ने जो श्रपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है —

सवत् सोलहसै सतरी, फागुण मास जवे ऊतरी।

उजल पाखि तेरिस तिथि जाण, ता दिन कथा गढी परवाणि।।६६।।

वरते निवाली मांहि विख्यात, जैनधर्म तसु गोधा जाति।

यह कथा भीषम किन कही, जिनपुराण माहि जैसी लही।।६७।।

सागानेरी वसे सुभ गाव, मान नृपति तस चहु खढ नाम।

जिह कै राजि सुखी सव लोग, सकल वस्तु को कीजे भीग।।६८।।

जैनधमें की महिमा वणी, सितक पूजा होई तिह्घणी।

श्रावक लोक वसे सुजाण, साम संवारा सुखें पुराण।।६६।।

श्राव विधि पूजा जिणेश्वर करें, रागदोप नहीं मन में धरें।

दान चारि सुपात्रा देय, मिनप जन्म कौ लाहौ लेय।।२००।।

कहा वध चौपई जाणि, पूरा हूवा दोइसे प्रमाण।

जिनवाणी का श्रन्त न जास, भिव जीव जे लहें सुखवास।।२०१॥

इति श्री लिब्ध विधान की चौपई संपूर्ण।

३६ वद्धं मानपुराण

इसका दूसरा नाम जिनरात्रित्रत महात्म्य भी है। मुनि पद्मनिन्द इस पुराण के रचिवता हैं। यह प्रथ दो परिच्छेदों में विभक्त है। प्रथम सर्ग में ३४६ तथा दूसरे परिच्छेद में २०४ पद्य हैं। मुनि पद्मनिन्द प्रभाचन्द्र मुनि के पट्ट के थे। रचना संवत् इसमें नहीं दिया गया है लेकिन लेखन काल के आधार से यह रचना १४ वीं शताब्दी से पूर्व होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त ये प्रभाचन्द्र मुनि संभवत वेही हैं जिन्होंने आराधनासार प्रवन्ध की रचना की थी और जो भ० देवेन्द्रकीर्ति के प्रमुख शिष्य थे।

३७ विपहरन विधि

यह एक आयुर्वेदिक रचना है जिसमें विभिन्न प्रकार के विष एवं उनके मुक्ति का उपाय वित्ताया गया है। विषहरन विधि सतोष वैद्य की कृति है। ये मुनिहरप के शिष्य थे। इन्होंने इसे कुछ प्राचीन प्रथों के आधार पर तथा अपने गुरु (जो स्वय भी वैद्य थे) के वताये हुए ज्ञान के आधार पर हिन्दी पद्य में तिल्लकर इसे सवत् १७४१ में पूर्ण किया था। ये चन्द्रपुरी के रहने वाले थे। ग्रंथ में १२७ दोहा चौपई छन्द हैं। रचना का प्रारन्भ निम्न प्रकार से हुआ है:—

श्रथ विपहरन लिख्यते-

रोहरा—मी मनेस झरलदी सुगरि गुर च्यन्तु चितलाय । पेश्रपक हत्वहरन की सुगरि सुपुषि वताय ॥

चीवई

भी जिन्नचंद्र सुवाच बर्णानि, रूच्यी सोमान्य तं यह इरप मुनिवान । इस भ्रोत दीती जीव दश्य चार्चि संवोध वैंच वह तिरहर्मान ॥२॥

३= जवक्याक्रोश

हसमें तर क्याचों का संबद्ध है किनकी संक्या देन से भी कांग्रेक हैं। कमाध्यर पं ग्रामें इर दर्ग देनेमकीर्ति हैं। होतों ही वर्षणम् सूर्र के रियन्त कांग्रेस मान्यस पहता है कि देनेमकीर्ति का पूर्व ताम सारोदर जा स्वतिका जो कमार्थ ज्योंने प्रपत्ती पूरत्याक्या में कितने की कर्मने सम्मोदर कर्म सिक्ष दिया है तथा शालु बनने के परवान् को क्यार्थ क्रिक्टी कर्मों देनेमुकीर्ति क्रिक्ट दिना माना। सम्मोदर का क्रान्तिन नक्या प्या प्रवास्त्र का शालु कर्मने के परवान् की

क्रवा क्रेस्य संसद्ध नया में है वृक्षा माणा माथ पूर्व होंडी की द्राई से समी क्रवार्स करवारा की है। इसकी पक कर्नुदों मारे का श्रीकर में सुरुषित् हैं। इसकी बुस्टी कर्नुदों मार्च संकता १,४४९ पर के में। इससे ४४ क्याओं एक पाठ है।

३० वसक्याकोश

स्ट्रास्ट इस्टबर्फीई १४ वी सवाब्दी के स्वयंत्र विद्यान ने । दर्बोंने संस्कृत आपा में बहुव मंत्र किले हैं निवास आधिपूर्ताय वरम्बुकार वरित्त पुरस्कार इंग्यून प्यांत्र करित के आधिपूर्त परित्त करित के साव इस्टबर्स आदि के बाद वरस्तानीय है। वसने वत्रदल स्थाव के बाद करों ने एक मूर्त महाद प्रस्थाय के इस्म दिख्यों सबस्ये सक्ष कितावा शुक्रमभैति बायमूचण, हासचण बोने क्यक्तोर्टि के विद्यान हुए।

ब्रद्धका बोरा भंती काडी एमाओं में से एक एमता है । इसमें स्विकांश कहा है क्यों के इस विरोधित हैं । कुछ कमार्थ भाग पीवत क्या स्टब्सीर्ट माहि विद्यानों की भी है । कमार्थ संस्कृत पर्य में हैं । अन सक्कामीर्टि में सुराम्बर्गशरी कमा के स्था में स्थाना जासेल्डेस दिनन समूर्त किया है'—

> भसमगुष्य समुशय स्वर्ग मोत्ताम हेत्स् । मन्द्रीय रिलमार्गान्, सन्द्राक्ष्य् पंचपून्यम् ॥

त्रिमुवनपतिभव्वेस्तीर्थनाथादिमुख्यान् । जगति सकलकीत्यी संस्तुवे तद् गुणाप्त्ये ॥

प्रति में २ पत्र (१४२ से १४४) बाद में लिखे गये हैं। प्रति प्राचीन तथा संभवत १७ वीं राताब्दी की लिखी हुई है। कथा कोश में कुल कथाओं की सख्या ४० है। ४० समोसरण

१७ घी शताब्दी में ब्रह्म गुलाल हिन्दी के एक प्रांसद्ध कृति हो गये हैं। इनके जीवन पर किंव खत्रपित ने एक सुन्दर काव्य लिखा है। इनके पिता का नाम हल्ल या जो चन्द्वार के राजा कीर्त्त के आश्रित थे। ब्रह्म गुलाल स्थाग भरना जानते थे और इस कला में पूर्ण प्रवीण थे। एक बार इन्होंने सुनि का स्थाग भरा और ये सुनि भी बन गये। इनके द्वारा विरचित अब तक म रचनाए उपलब्ध हो सुकी हैं। जिसमें ब्रेपन किया (सवत् १६६४) गुलाल पच्चीसी, जलगालन किया, विवेक चौपई, कृषण जगावन चरित्र (१६७१), रसविधान चौपई एव धर्मस्वरूप के नाम उल्लेखनीय हैं।

'समोसरण' एक स्तोत्र के रूप में रचना है जिसे इन्होंने संवत् १६६८ में समाप्त किया था। इसमें भगवात महाधीर के समयसरण का वर्णन किया गया है जो ६७ पद्यों में पूर्ण होता है। इन्होंने इसमें अपना परिचय देते हुये लिखा है कि वे जयनिंद के शिष्य थे।

> सोरहर्ते श्रदसिठसमै, माघ दसै सित् पत्त । गुलाल ब्रह्म भिन् गीत गति, जयोनिन्द पद सित्त ॥६६॥

४१ सोनागिर पच्चीसी

यह एक ऐतिहासिक रचना है जिसमे सोनागिर सिद्ध होत्र का सिंह्यत वर्णन दिया हुआ है। दिगम्बर विद्वानों ने इस तरह के होत्रों के वर्णन वहुत कम लिख़े हैं इसिलिये भी इस रचना का पर्याप्त महत्व है। सोनागिर पहिले वितया स्टेट मे था अब वह मध्यप्रदेश मे है। किव भागीरथ ने इसे संवत् १८६१ ज्येष्ठ सुदी १४ को पूर्ण किया था। रचना मे होत्र के मुख्य मन्दिर, परिक्रमा एव अन्य मन्दिरों का भी सिह्नदत वर्णन दिया हुआ है। रचना का अन्तिम पाठ निन्न प्रकार है

मेला है जहा को कातिक सुद पृती को,
हाट हू बजार नाना भाति जुरि श्राए हैं।
भावधर बदन को पूजत जिनेंद्र काज,
पाप मूल निकटन को दूर हू से धाए है।।
गोठें जेंड नारे पुनि दान देह नाना विधि,
सुर्ग पथ जाइवे को पूरन पद पाए है।

कीबियं सहार पात्र भाग है आगीरण, गुक्त के प्रवाप श्रीय गिरी के गुण गांप हैं ॥

दोहा

केठ सुरी चौदस मझी ब्यादिय रची बनाइ। सबन् व्यास्त्रस्य इक्सिट संबन् हेड निकाइ। पड सुने का साव घर, चोरे देव सुनाइ। सनवंदिय च्या के सिके सो पूरन पद की पाइ॥

प्रश्रहम्मीरासी

हम्पीरपसे एक पेरेक्शांकक काम्य है जिसमें गहेरा काँच ने शहिमासाह का बादगाह सका-करित के साथ समाधा सहिमासाह का सामकर एक्कमीर के सहाराजा हम्मीर की शरूप में काम, बारपाह सजावरित का हम्मीर की गहिमासाह को लोकने के किए बार एकमान्याय पर्ण जाने में कहा करित को हम्मीर का सर्वकर पुत्र का बकान किया गया है। कवि की स्पीन राखी हम्मर पर्ण काल है।

क्यात दस इत्यार का त्रकर पुरा का न्यान क्या गया इंगा का चान पान एका हुन्य पर उठक इंगा रासो क्या और क्या क्षित क्या क्षिता गया मा दसका कवि ने कोई गरिवय नहीं दिया है। बसने केन्स्र क्यान्स्र त्रामोक्षेत्र क्रिक्स हैं कह निष्य प्रस्तार हैं।

> मिल राजपंद साही और ज्यो और समादी। ज्यों पारिस की परिस बकर बंजन दोय बाई।। जानापित दमीर से हुआ न दीखी दोवसे। कवि महेस कम जन्दी समास्त्री हम परवसी।।

अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों की सूची भाषा प्रंथभंडार रचना काल

प्रथमार

	प्रथमार	41141 -1 -1	- ' '		
क्रमाक मं, सूक प्रथ का नाम	प्रा॰ गुरानद्र	स०	म ः	६३०	
१ ४३८१ अनंतव्रतिधापनपूजा	ज्ञातिदास -	स०	प	×	
२ ४३६२ ग्रनंतचतुर्दशीपूजा	धर्मचद्रगिग	の野	द्म	×	
३ २८६५ श्रमिधान स्ताकर	संहमीरोन	e pa	জ	×	_
८ ४३६१ ग्यमियेक विधि	सुरमच् र	स०	স	१६ यी शता	दी
४ ५६६ ध्रमृतधर्मरसकाव्य	गुरायम मुरे द्वरीति	स०	\$	१८५१	
६ ४४०१ अष्टाहिकापृजाकया	मुर द्रसारा प्रभावद	सं०	ट	×	
७ २५३५ श्राराधनासारप्रजन्ध	प्रभावक प्रभागाधर	स०	ख	१३ वी शत	न्दी
५ ६ १६ श्राराधनासारवृत्ति		祝。	ख	×	
६ ४४३५ ऋषिमग्डलपूजा	ज्ञानभूषण संसितवीर्ति	स०	घ	×	
१० ४४८० कजिकाव्रतोद्यापनपूजा	सासत्य गरा देशेन्द्रवीत्ति	स०	म	×	
११ २५४३ कयाकोश	द्रग्द्रवासि सलिसकोति	स०	घ	×	
१२ ५४५६ कथासम्रह	ल्ह्मीसेन	स•	ঘ	×	
१३. ४४४६ कर्मचूरस्रतोद्यापन		स०	u	×	
१४ ३८२८ कल्यागमदिरस्तोत्रटीका	देवतिलक	स०	Ħ	१३ वी	73
१५ ३८२७ कल्याण्मदिरस्तोत्रटीका	प॰ माशाघर	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	Ħ	१५ वो	17
१६ ४४६७ कलिकुरुडपारवेनाथपूजा	प्रमावद्र चारित्रसिंह	स०	म	१६ वी	77
रे १७ २७४ कातन्त्रविभ्रमस्त्रावचृरि		स॰	भ	×	
१६ ४४७३ कुत्रहलगिरिपूजा	भ० विदवभूपरा	स०	_	×	
१६ २०२३ कुमारसंभवटीका	कनकसागर भ० क्षेमेन्द्रकोति	o FF	स्र	×	
 २० ४४८४ गजपथामण्डलपूजनविधान 	य व क्षमन्द्रपातः विनयचन्द्रसूरि	初中	, इ	×	
२१ २०२८ गजसिंहकुमारचरित्र	वनवयम्ब्रह्मार प्राधिनव चारुकी	र्गित स	, प	×	
२२ ३८३६ गीतवीतराग	कानगर गार	 स	o 46	×	
२३. ११७ गोम्मटसारकम्कारव्हटीका		₹	(০ ধ	×	
२४ ११= गोम्मटसारकर्मकाण्डटीका	सकलभूपरा	₹	क क	5 ×	
२४. ६१ गोम्मटसारटीका	छुत्रसेन	į	स॰ '	я ×	
े २६ ५४३६ चदनपण्ठीव्रतकथा	ग्रुगानंदि		स०	ब X	
२७ २०४६ चर्प्रमकाव्यपंजिका	<u> </u>				

गुनतिच्या

वनवर्धात

দ দুটেরকীর্নি

अस्त्रोक में सुक्र.

र्मं का नाम

१व. ४१११ चारिक्युद्धिविधान

२८. ४६१४ हाज्यंचर्विसविकात्रतोचापन

उपस्थार

44

YE Y ER

R.

2 22 22

XQ. COL

23 4141

۲¥

XX.

245

मानगा नौबीसी

सुनिसु**ञ्चार्थ**ण

मुखाचारटीका

(स्वक्रयमिक

क्य मानकाव्य

बरोघरचरित्रक्षिणस

क्रमण्डरीनागमासा

मृप्यस्य पतुर्विशाविटीका

भू**राज्य पतुर्विर**श्रीतशीका

मोगीतु गीगिरिमंडकपूरा

४६२१ समोद्यारपैतीसीव्रतविधान

शापा श्रीवर्मदार एचना काड

* Y

×

×

१६ वॉ बराम्पी

१३ मी

×

×

×

1484

१३ मी

er ny

य X

ĦΙ

11	284	तत्ववर्यं न	युवर्वह	₹		×
4.6	trrt	वे पवक्रियोगम	विकारी सिं	₩.	朝	×
**	Ye X	र्रात्रव्यामसपूर्वा	विवयग्रमुद्	€	Æ	×
14	Yu (एएक प ण्यातपुत्रा	नक्तिसमूचरा	4	q	×
12.	Y0 3	रराज्ञकप्रवर्श	नुविश्वावर	€	Ŧ	×
14.	15eV	द्यदराज्योधापनपुषा	वेकेनागीति	e	ब	Fee 5
tu.	Ange	ग्राह राज्योगापनपूजा	पचन"व	4	•	×
1=.	899X		व्यवस्य सि	•	•	×
11	***	वर्ममरनोचर	विमणगीति	ď	a.	×
٧	7229	च ालुमारपरित्रदीका	श्रमस्थान	•	ε	×
44	¥48	नि बस्यृ ति	×	of .	E	×
48	YATE	नेमिनायपूजा	नुरैकामीर्ता	4	· ·	×
¥ŧ	४व११	पंचकत्वायकपूजा		4	-	×
¥¥	ttet	परमात्मस्य बस्तोत्र	वक्तकीर्धि	•	q	×
¥7.	272	मरास्वि	वानीवर	4	q	×

बीचरमुनि

वाचावर

विनमर्चय

निस्त<u>पू</u>ष्ण

श्रमार्गस

पतुनदि

हमाचार

वादनर

रमध्य

<u>पृत्रिपयमंति</u>

~ 1	ı			t			
कमांक प्र	ां सु∙क	प्रेथ का नाम	ग थकार	भाषा ग्रथ	भंदार	रचना कार	त
لاه.	३२६४	वाग्महालकारटीका	वादिराज	स०	भ	१७२६	
χα	ሂሄሄሪ	बीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनिद	स०	भ	×	
५६.	५२२५	शरदुत्सवदीपिका	सिहनदि	स०	म	×	
Ę٥	४८२६	शातिनायस्तोत्र	गुग्गभद्रस्वामी	₹0	ख	×	
₹ १	8200	शातिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	सँ०	म	×	
43	४१६६	पणवतिचेत्रपालपूजा	विश्वसेन	स०	ध	×	
६३.	38%	•	राजहसोपाघ्याय	सं०	घ	×	
ĘY	१६२३		मुनिनेत्रसिंह	सं०		×	
ξ¥	५४६७	सरस्वतीस्तुति	भाशाषर	せ。	झ	१३ वीं	17
EE	3838	सिद्धचकपूजा -	प्रभाचद्	の野	£	×	
६७	२७३१	सिंहासनद्वात्रिशिका	क्षेमकरमुनि	स०	ख	×	
६=	वैष १ ष		समन्तभद्र	oTR	E	×	
37	3€3€	धर्मचन्द्र प्रवन्ध	धर्मचन्द्र	प्रा०	भ	×	
00	१००५	यत्याचार	ग्रा ० वसुनदि	সা৹	म	×	
69	१८३६	श्रजितनाथपुराण	विजयसिह	भप०	ञ	१५०५	
90	EXXX	कल्याणकविधि	विनयचद	भप०	म	×	
७३	700	चूनही	"	17	म	×	
98	1440	1. 1. Yall 3/ 4/14 41 114141	ग्रमरकोत्ति	द्मप०	म	×	
७५		जिन्दात्रिविधानकथा	नरसेन	भपo	प	१७ वीं	
७६	1.00	C	लक्ष्मगादेव	प ्र	म	×	
99	1 11 200		दामोदर	श प०	भ	१२८७	
in the second		100000000000000000000000000000000000000	महर्णासह	भप्०	म	×	
૭૭	*73	the court !	गुग्गमद	मप०	म	×	
£ 0.		@	विनयचंद	भ्रप०	ष	×	
८ १ ८३			कनककीर्ति	भ्रप०	व	×	
ر 13 خ	2, 50		विनयचद	भ्रप०	भ	×	
5			ते मपाल	भप०	ट	×	
5	, ,,,	* 3	गुराभद्र	भप०	भ	×	
	४. २६	र रोहिणी चरित	देवनदि	भप०	भ	१५ वी	
			Jane .				

Ę.	43.50	सम्मद्रविद्यागाम् वरिष	वेशपाल	वा	•	×
4.0	RYKY	सन्यनस्वक्रीगुवी	सङ्ख्यान	61	q	×
4	₹1 =	सुक्रसंपश्चित्रभा नक्रमा	वियत्तवीर्ति	44	ब	×
ŧ	TAFE	सुगन्धद्शमीकवा		सार	q	×
t	1575	पद्मारा स	वर्ग कुपस्	8 € 1	-	×
et	Y179	व्यक्रमनिविष्या	भागपुषश्	हिंद	*	×
4%	२६	मदारह्मातेकीकमा	म ्चित्रालयम्	िह्र व	4	×
	1.1	अवन्तर्वा ष्ट्रप्	वर्षकार	1€ 4	₩.	×
£¥	71 F	वक्तवस्तास	त्र निवदान	क्षिय	et.	१६ वी
t*	¥88%	चर्चनक्षीशक्षियागीत	विगवनीति	ींद् प	व	14 1
46	2010	व्यक्तिस्ववारकमा	राधनस्य	दि व		×
Ęw,	XX 5 X	कावित्सवार क्ष ण	पारिका	दि प	47	×
₹4,	2867	व्यक्तीरवरकारमञ्ज्ञ	×	धिय	¥	1460
33	204	माहित्यवारकमा	दुरेक्सीवि	ीह् व	ж	£ ¥₹
ŧ	2882		च्य	RĘ⊲	₩,	१६ मी
1.1	E A#A	च्यारामनाप्रति गोषसा र	विक्लेट्सर्वर्शित	हिंद	q	×
₹ ₹.	\$ 62	चारतीर्थम्ब	व निम्मवास	fε σ	9	१५ की स्थानकी
1.1	44	दपदेशक् चीसी	चिन <u>श</u> ूर्य	हिंद	•	×
1 Y	YYR	श्चित्रंडसपूचां	मा» इस् नदि	भिष	4	×
12	88A	कठियारकालवरिकीपई	×	द्विष	ब	\$ 20
1.5	4 88	क्रविच	बगरराज	हि प	ε	१ मी स्थानमी
1 *	1 15	क्रिक	वनारबीदाव	मित	₹	१७ मी बतानी
t	2250	•	दुनिवरसभव	Mg et	4	१७ वी स्वाली
į t	24	कविवासा म	इरिक्रयक्रमस	क्षि प	•	× .
7.5	1 (1	क्रमण्ड्	नगानीरिं	ीह् प	4	१६ मी सर्वाणी
111	XX48		कृष्गीराम —	भिष	•	443
115	ézza	कृष्यक् षिमधीर्मगळ	परवादक	R T	•	11
\$ \$ \$	REFR	गीर		R T	4	१६ मी करात्मी
\$\$*	1 4A	गुरुषेर	युक्तरंद	द्विप	4	१५ वेर स्थानी

		•				
क्रमाक प्रसूक प्रथ का	नाम्	प्रथकार	भाषा प्रथमह	ार	रचना काल	
११५ ५६३२ चतुर्दशीकथा		द ालूराम	हि॰ प॰	छ .	१७६५	
११६ ४४१७ चतुर्विशातिङ्ग	पय	गु राकीर्ति	हि० प०	भ	१७७७ १	
११७ ४५२१ चतुर्विशतिती	र्थंकरपूजा	नेमिचदपाटनी	हि० प०	क	१८८०	
११६ ४५३५ चतुर्विशनिती	र्थेक्ररपृजा	सुगनचद	हि० प०	च्	१६२६	
११६ २५६२ चन्द्रकुमारकी	•	प्रतापसिंह	हि॰ प॰	জ	१५४१	
१२०, २५६४ चन्द्नमलया		चत्तर	हि० प०	भ	१७०१	
१२१. २५६३ चन्द्रनम्लया		भद्रसेन	हि॰ प॰	स्	×	
१२२ १८७६ चन्द्रप्रमपुराः	Ų	होरालाल	हि॰ प॰	क	1813	
१२३ १४७ चर्चासागर		चम्पालाल	हि० ग०	भ	×	
१२४ १४४ चर्चासार		प ० शिवजीलाल	हि० ग०	ঙ্গ	×	
१२६ २०५६ चारुदत्तचि	বৈ	कल्यागुकीत्ति	हि० प०	भ	१ ६६२	
१२६ ५६१५ चितामणिज	यमाल	हक्कुरसी	हि० प०	ন্ত্	१६ वी शताब्दी	
१२७ ४९१४ चेतनगीत		मुनिसिहनदि	हि० प०	छ	१७ वी शताब्दी	
१२६ ५४०१ जिनचौवीस	तीभवान्तररास	विमलेन्द्रकीति	हि॰ प॰	म	×	
१२६ ५५०२ जिनद्सचौ		रल्हकवि	हि॰ प॰	भ	१३५४	
१३० ४४१४ ज्योतिपसा	τ	कृपाराम	हि० प०	ग्र	१७६२	
१३१ ६०६१ झानवावनी	ì	मतिषीसर	हि॰ प॰	ट	१५७४	
१३२ ४६२६ ट डागागी		बूचराज	हि॰ प॰	छ	१६ वी शतान्नी	
१३३. ३६६ तत्वायसूत्र	टीका	कनककीत्ति	हि० ग०	£	१८ वी "	
१३४ ३६८ तत्त्वार्थसूत्र	टीका	पंडिजयवन्त	हि० ग०	घ	१८ वी "	
र १५ ३७४ तत्त्वार्थसूत्र	दिका	राजमल्ल	हि० ग०	¥	१७ वीं "	
रिवे६ ३७८ तत्त्वार्थसूर	त्रभाषा	शिखरचद	हि॰ प॰	क	१६ वी "	
१२७ ४६२७ तीनचौवी	सीपूजा	नेमीचदपाटग्री	हि० प०	क	१५६४	
11.	सिचौपई	ध्याम	हि० प०	म	१७४६	
११६. ४८८९ तेईसवोल		×	हि॰ प॰	छ	१६ वी शतान्दी	
रजन्द दशनसार		नथमल	हि० प०	क	१६२०	
१५० ५रानसार		दावजीलाल	हि० ग०	ፋ	१ ६२३	
1/3		चूराकरराकासली -	_	भ	×	
(४३ ४६६ द्रव्यसम	ह्माषा	वाबा दुसीषद	हि० ग०	क	१६६६	

धवकार माचा वैषर्मकार स्वाता का**व**

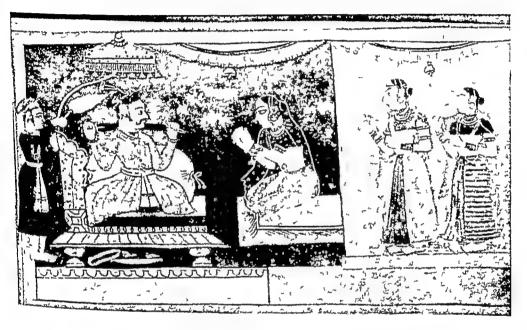
क्रमोद्र में सुक्त. संस्काशास

			4461	-11 44 -1	4444	CAIR AND
•	2740	सम्भवविखणाइचरित	बैजपाल	वर	=	×
₹¥,	RYXY	सम्बद्धाः	नहस्तरान	धाः	띡	×
	99	सुनर्संपर्श्विमान कथा	विवजगीति	844	q	×
ŧ	2416	सुगन्धरहामीकवा	10	धा	Ħ	×
	1381	चंत्र गणस	धर्म कूपरम	¶द्रप	•	×
2.2	AfAe	श्रवनिविपूजा	নালমুখ ত	ध् र	¥	×
5.3	PR 4	मदाख्तातेश्रीक्या	মূ বিশালবৰ	R 4	ध	×
10	1.7	बनम्बद्धेड् प्प	वर्षपत्र	lg Ψ	₩.	×
ŧ٧	¥1.1	चन्त्रवरा स	ৰ বিশ্বাল	क्षित	**	१६ वी
47.	**	चर्मनक्कीरासियागीत	रि व्यक् षित	विद् प	4	11.1
64.	201	चार्र्यस्यारकमा	रागगरम	दि प	¥	×
13	2712	भा दित्यकारकथा	शहरियान	Üęτ	er er	×
ŧx.	*1124	व्यादीरवरकासम्बद्धाः न	×	हि प	백	4175
ŧŁ.	tel	चादित्स्वार क् य	বুলৈখীবি	हिं व	-	1 Yt
ŧ	2882		च्च	Rt≪	-	25 W
1.1	XYES	बाराय-ग्रमिते कोषम्गर	विक्षेत्रकारित	Eg −q	₩.	×
१ २	1.44	चारतीर्सम्ब	व निकास	Bę q	er .	१६ वी बराज्यी
1.1	44	इन्द्राम् चीसी	निम र्श्य	हिंद	=	×
1.1	485 48		मा∙ द्वल्मरि	Q v	-	×
12	414	क्रिकारकानवरीचीर्च्य	ж	हि य	W	ture
1.1	7.8		वपरकात	हि व		१ की बचानमें
2 *	177	क्रिंच	बनारतीचान	हि च		१७ वी घरान्ये
2 4	£\$£#	धर्म चूरत्रत नेसि	बु नितरणथर	हि व	थ	१७ वी बताको
16	25	कविवर सम	हरिकरत्तरल	fξ Ψ	RE .	×
11	1 (1		क्यरीति	ींट् प	च	१६ वी धवल्ये
111	#Axa	कृञ्या क्षिमणी गर्सि	पृथ्यीराज	Ø ₹	4	1410
112	4220		वडनभवत	R T	Q.	t=t
111	xeex		कर्म	दि प	*	१६ वीं बडामी
***	1 (1	गुक्लेंच	बु वर्गर	द्विष	q	१६ वॉ स्वतंत्री

क्मिक प्र	स्क	प्रंथ का नाम	व्रथकार	भाषा	प्रथमंडार	रचना का	ल
101. F		मगलकलशमहामुनिचतुप्पदी	रगविनयगरिए	हि० प०	भ	\$10	
		मनमोदनपचगती	द्यनपति	हि० प०	क	१६१६	
		मनोहरमन्जरी	मनोहरमिश्र	हि० प०	3	×	
		महावीरछद	शुभन्रद	हि० प०	श	१६ वी	11
	२६३८	मानतु गमानर्गतचौपई	ञ मोहनविजय	हि० प०	প্ত	×	
	३१८५	मानिवनोद	यान सिंह	हि॰ प॰	स	×	
	\$3XE	मानापना <u>द</u> मित्रविलाम	घासी	हि० प०	靳	3205	
	168c		इन्द्रजीत	हि० प०	ঙ্গ	まななな	
	२३१३	र्मानसुत्रतपुराण यशोधरचरित्र	गारवदास	हि॰ प॰		१५८१	
_	-	यगोधरचरित्र	पन्नालाल	हि॰ ग॰	₩.	१९३२	
	4883		य्र० कृप्रसदास	हि० प०	भ	१६ वी '	
tsy,			जयकीति	हि० प०	軒	१७ वीं	73
	₹ 0₹⊏	रागमाला	इयाममिश्र	हि० प०	ट	१६०२	
१९६	3888		जसुराम	हि० प०	ऋ	×	
150	४३६६		गगादास	हि० प०	श	×	
155	EOAX	राजसमार जन रुक्मणिकृष्णजीकोराम	तिपरदास	हि० प०	3	×	
1=6	२६८६	रेवत्रतक्या	क्र० जिनदास	हि० प०	3 6	१५ वी	77
! {e,	६०१७		बसीदास -	हि० प०	ε	१६६४	
195	प्रहद्	411 of 10 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	स्योजीरामसोगा		ज	×	
931	40 = €	4 4 4 5 14 18 18	भीपमक्षि	हि० प०	ε	१६१७	
रेह३	4646	Att and all all all ton	विश्वभूषण	हि० प•	ਣ	×	
168	६१०५		भजयराज	हि॰ ९०	2	१८ वी	77
₹₹X	५५१६	A	वाजिद	हि० प०	भ	×	
\$64	२३५६		भ्रभयसोम	हि० प०	স	१७२४	
180	३८६७		शुभचद	हि० प		१६ वी	77
164	116		सत्तोषकवि	हि० प०		१७४१	
335	110.		पेमराज	हि॰ प॰	¥	×	
₹• 0	400	४ पटलेश्यावेलि	साहलोहट	हि० प०	भ	१७३०	
२०१	५४०	रे शहरमारोठ की पत्री		हि० ग०	म	×	

कर्मीक	मंस्क.	र्मण का साम	मणकार	भाषा	ब्रम्भ हार्	रचना श्रम
ţvv	t t	इस्क्लंग्रह् भाषा	हेगराज	ीह व	=	1505
(YL	ty t	नगरी की बन्धफाका विवरण	×	धिंद	-	×
124	46.0	न्यगर्मवा	x	क्षिप	¤	17.3
£ ww	YYYY	न्यगमीसम्बद्ध	विक्यर्वव	Πr τ	ब	×
₹¥#	**	निवार्गाव	ন্ত বিস্থাস	हि प	4	१६ वॉ बदान्ये
tvt.	tyyt	नमिश्चिनं बुक्याइको	बैवर्वी	मि[य	E.	१७ मी
ξX	777	नमीबीराषर्वि	ঘাড়ৰ	ΠĘΨ	म	t y
trt	2987	नेमिजीकोर्गगळ	विस्तकृपश	ीह द	q	373
£22.	£ 4x	नमिना वर्ष र	बुक्पंद	दि प	q	१६ वी
2 % P	***	नेमिएबम्पिवगीव	हीराबंद	हिं प	4	×
t KY	१११४	मेमिरा ञ्च म्या रको	वोगी क ृष्या	दिव	氧	1 45
122	2256	नेमिराजुक्षिणाद	≇ ≇लवलर	fk σ	ч	१७ थी 🐷
52.5	2132	नेमीरसरम्बनीमासा	युनिविङ्गीर	हिं व	•	१ मी 🖁
120	1 PE	मेमिर परकार्द्धवालना	যুবি য়েলখ ীনি	धि द	•	×
12	29.28	नेमीर पर णस	দুণি দেব শ্ৰ মি	मि ए प	•	×
116	162	पंचक्रपायकपाठ	हरचंद	हिंद	•	१ रव
\$4	?tu ₹	र्पादक्षणित्र	साथवड्ड थ	मेर् प	ε	2 4
111	ASS	पद्	कृषिविश्वास	ीक् प	я	×
115	\$4£E	परमारमञ्जूषाचीचा	THE	fiξ	*	4 44
545	2. 8	ਸਤੁਜ਼ਹਰ	24-5/U-I	ीह् प	•	×
\$48	*16	पार्स्न ताम वरित्र	विस्तकृत्व	₽Ę.	q	१७ मी
14%	298	पारर्व नाधनौ पर्द	१ धार्मी	ीह व		fafA
111	£ 4x	धरमञ्	व नेक्साम	क्षित्र	4	१६ मी
140	1500		मध्यमस्य	क्षिय -	*	\$ 44
14	2444	3	रे क् पर	धिव	*	7.55
146	272	वंबरव्यस्यकाचीपई	थीनस्य	ीह प		रूकर
t*	1 16		इम्प्रसम	β q	*	×
t t	*4	विद्यारीसवसईटीका	(terrora)	Re e	•	1 14
1 1	LYE	मुक् नकोर्चि गीव	बु षसम	ीह प	q	१६मी ⊭

भट्टारक सकलकीर्ति कृत यशोधर चरित्र की सचित्र प्रति के धी सुन्दर चित्र



यह सिचत्र प्रित जयपुर के दि० जैन मिद्र पार्श्वनाथ के शास्त्र में सम्रहीत है। राजा यशोधर दु स्थान की शाति के लिये श्रन्य जीवों की विल न चढा कर स्वय की विल देने को तैयार होता है। रानी हाहाकार करती है।

[दूसरा चित्र मगले पृष्ठ पर देखिये]



राजस्थान के जैन शास्त्र मराहारी

की

यन्थसूची

विषय-सिद्धान्त एवं चर्चा

१ ऋषेदीपिका--जिनसद्रगिता। पत्र म० ५७ में ६८ तक । भ्राकार १०×४० इक्के । भाषा-प्राकृत । विषय जन मिद्धान्त । रचना कात 🗴 । नेव्बन काल 🗴 । अपूर्ता । वेप्टन सम्या २ । प्राप्ति स्थान घ भण्डार ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

श्रथप्रंकाशिका—सदामुख कासलीवाल । पत्र त० ३०३। ग्रा० ११५ँ×८ इ च । भा० राजस्थानी
 (ढूँ बारी गद्य) विषय—सिद्धान्त । र० काल स० १६१४ । ने० काल × । पूर्गा । वै० मै० ३ । प्राप्ति स्थान क मण्डार ।

विदोष---उमास्वामी कृत तत्वार्थ सूत्र की यह विदाद व्याच्या है।

३ प्रति स् २ २ । पत्र स०११०। ले० काल 🗙 । वे० स०४८ । प्राप्ति स्थान सः सण्डार ।

४ प्रति सब्दि । पत्र सब्दिशः सेव नाल सब्दिशः झासोज बुदी ६ । वैकस्व १८१६ । प्राप्तिः स्यान ट भण्डार ।

विशेष-प्रित मुन्दर एव ग्राकर्षक है।

४ ऋष्टकर्म प्रकृतिवर्षान । पत्र स०४६ । ग्रा०६×६६ च । भा० हिन्दी (गद्य) । विषयम= भाठ नर्मों का वर्गान । र० काल ४ । से० कॉल ४ । झपुर्शा । प्राप्ति स्थान ग्व मण्डार ।

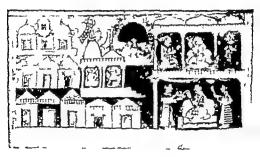
विशेष--- भानावरएगार्दि ग्राठ कर्मों का विस्तृत वर्गान है। माथ ही गुरएम्थानो ना भी ग्रच्छा विदेवि किया गया है। ग्रन्त में व्रतों एवं प्रतिमाग्नों को भी वर्रान दिया हुग्ना है।

रिः मप्टेंकर्मप्रकृतिवर्णानः । पत्र स०७। ग्रा०८×५ इ.चं। सा० हिन्दी। विषय-श्राठ केर्नों का वर्णन । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण। वे० स०२५६ । प्राप्ति स्थान स्व भण्डार ।

अर्थ्यहर्तप्रवचन । पत्र म०२। मा०१२×५१ डच। भा० सम्बृतः । विषय=सिद्धान्तः ।
 र०नात ×। त० कात ×। पूर्णः । वै० म०१८८२ । प्राप्ति स्थान म्या भण्डारः ।

れんりゅうしゅう かりょうしょうしゅうりゅう

विदर्भ २



वित्र चरचक्कम एवं राजमहम्म का एड दर्श (र्जन सूची का सं एक ६४ वेपन संस्था ११४)

राजस्थान के जैन शास्त्र भराहारी

की

यन्थसूची

विषय-सिद्धान्त एव चर्ची

१ श्रधेदीपिकां--जिनभन्नगणि । पत्र स० ५७ मे ६८ तव । झाकार १०×४ई दश्च । भाषा-प्राकृत । विषय जन सिद्धान्त । रचना काल × । तंग्वन काल × । झपूर्ण । वेप्टन सम्या २ । प्राप्ति स्थान घ भण्डार ।

विभेष-गुजराती मिश्रित हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

२. अधप्रकाशिका — सदामुख कासलीवाल । पत्र स० ३०३। मा० ११५ँ×= इ व । मा० राजस्याती (इ इारी गद्य) विषय–सिद्धान्त । र० कान स• १६१४। ने० कान ×। पूर्ण । वे० मै० ३। प्राप्ति म्यान क मण्डार ।

विशेष-उमान्यामी कृत तत्वार्थ सूत्र की यह विशद व्याख्या है।

र्वे प्रति स्टर्। पत्र संट ११०। लेट काल 🔀 । वैट सट ४८। प्राप्ति स्थान मा अण्डार ।

४ प्रति सब ३ । पत्र सब ४२७ । सेव नात सब १६३५ झासोज बुदी ६ । वेब सब १८१६ । प्राप्ति स्पान ट मण्डार ।

विशेष--प्रति मुन्दर एव ग्राकर्षक है।

४ व्यष्टकर्मप्रकृतिवर्णन । पत्र स०४६ । झा०६४६ इ.च । भा० हिन्दी (गद्य) । विषय= भाठनर्मों का वर्णन । र० काल ४ । से० कोल ४ । झपूर्ण । प्राप्ति स्थान स्व मण्डार ।

विशेष—क्षानाप्रराणादि माठ कर्मों मा विस्तृत वर्गान है। साथ ही गुराम्यानो ना भी मन्छा विशेषम निमा गया है। भात मे ब्रतो एवं प्रतिमाधा को भी वर्रान दिया हुआ है।

६. मष्टकर्मप्रकृतिवर्णन । पत्र स०७। झा०ं द×५ इ.च.। भा० हिन्दी । विषय-आठ फेर्मों का वर्णन । र० काल × । ने० काल × । पूर्ण । वे० स० २५ द्र। प्राप्ति क्यान स्व भण्डार ।

अर्घेट्रप्रवाचन । पत्र स०२। म्रा०१२×५६ डच। मा० सम्बन्तः । विषय=सिद्धान्तः ।
 रंग्नासः × । त० नातः × । पूर्णः । वे० स०१६६२ । प्राप्ति स्थानं ऋ मण्डारः ।

```
िमिताल पर पर्या
۹ 1
           विजेर — नव नाव द्वी। पद जैल्या ५ है। बाद बध्याय है।
           ⊏. चहश्चच्यनसम्बद्धानस्थानमा । प्रसं ११। सः १ ×५ देव । सः नैन्नन । र चन्त ×ा
के कमन × । पूर्णा ने नं १७६१ । माति स्थान क वण्यार ।
           निकेश--क्रम ना प्रतथा नाम नन्दिय नुस भी है।
```

६ भराचार्शसम्बर्णान्यान्यान्यान्य विश्वतं १३ । या १ अवस्य । मा ब्रह्मा विश्व-वास्त्राः इ. सम्बद्धाने राज्य ने १.२. । बयुर्ला । वे वं ६.५ । प्राप्ति स्वान व्यवस्थातः

विभेश-स्कारण नगे है : क्रिकी में रच्ना टीका वी क्र⁴ है ।

१ मातुरश्राचाच्यानप्रकीश्रक्षणणण्याः । यदने २ । वा १०४ इयः मा प्राप्तः । विवस-समयार कान ४।वे केन ४।वे वे २ ⊝ प्राप्ति स्वान च वचना।

११ साजवक्रिमती—नेसिक्सवाकार्व। कार्त ३१। या ११७ × १५ ४ व वा प्राप्तः विक्य-विद्याला।र प्रकाशः । में काल सं १ ३ ९ वैक्सक सुदी (पूर्णा वे सं १ १। प्राप्ति स्थान व क्षकार ।

रेप. प्रतिका । प्रश्ने १३ । से अल्ला×ाई वं १०४६ प्रक्री स्वास द लगार । १३ प्रतिहारे ३ । पत्र सं २६ । तो काल ⋉ । वे सं २६६ । प्राप्ति स्वान स सम्बार ।

१४ ज्यालनक्रियोगी^{.........}। तम श्रे ६ । सा १२×६ई ६ व । सा क्लियो । निवस-निवस्ता र सम्ब≺। ने जना×। ने नं २ १६। प्रसि स्वान का नव्यार।

१४ च्यालक्वर्डीय" ''''''' पत्र सं १४ । शा ११६४९∉ इ.च.(बा हिन्दी। विकशिदार्थ। र रल ×। ने कल ×। इसी। वे वे १६ ी अभिस्थल छ नकार।

विमेच-वित बीर्ल बीर्ल है । १६ प्रति सं २ । पाश्चं १९ । से प्राप्त × । वे शं १६६ । शाक्ति स्थान के सम्बार ।

^रण प्रकासिकासामार्था—सिक्सांन सुरि। वन तं ४ । या १९०८३ दण । वा प्राप्त ।

स्थित-विकास । एं कार्य × । वे नात × । पूर्व ंवे वे १७४४ । प्रति स्वान शायाद ।

निकेर --क्रम का कुक्य बाग एक्सिकरित्याय-प्रकरक की है। रेम्प बक्तराध्ययम् प्राप्ता रेप सं ११ आ र∮×१ इया मा प्रकृता निर्मा

अभ्यम ६९ कल्म ×१ के कल्प ×। प्रपूर्ण १वे वं ६ ्। प्राप्तिक्याय च्या कल्यार।

विकेश-क्रिकी सम्बद्ध सीका सर्वित्त है ।

सिद्धान्त एव चर्चा |

१६ उत्तराध्ययनभाषाटीका " । प० स० ३। ग्रा० १०×८६च । भा० हिन्दी।

विषय-मागम । र० ताल 🗙 । ले० ताल 🗙 । अपूर्ण । वे० स० २२४४ । प्राप्ति स्थात श्रा भण्यार ।

ं निर्णय---ग्रन्थ का प्रारम्भ निम्न प्रनार है।

परम दयान दया नरू, भागा पूरण काज।

पद्मति जिस्तुवर नम् , चर्चाम गर्मधार ॥ १ ॥

भरम ग्यान दाना मुगुरु, बहुनिस प्यान धरेम ।

वाणी वर दसी सरम, विधन हार विधनेम ॥ २ ॥

उत्तराध्ययन न उदमः, मिन द्वत् प्रधिनार ।

श्रसप शक्त गुगा छड घणा, रह बात मति धनुसार ॥ ३ ॥

चतुर चाह वर साभला, ऐ अधिकार श्रनुप ।

निष विकास परिहरी, मुग्ग ज्या भातम मूद ॥ ४ ॥

्रमागे मानेत नगरी का वर्गान है । वर्ड झाल दी हुई है ।

रै० उद्यसत्तावधप्रकृति वर्षान । पत्र ५०४ । मा०११×४ ई टच । भा० सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । रे० काल × । ले० काल × । स्रपूर्ण । वे० म०१ द ४० । प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।

२१ कर्मप्रन्थमत्तरी "। पत्र स०२०। ग्रा०६४४ टच। भा० प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । ^{र०काल} X। ने०वाल स०१७०६ माहबुदी १०। पूर्ण। त्रे०म०१२२ । प्राप्तिस्थान वा भण्डार ।

विशेष-कर्म सिदान्त पर विवेचन किया गया है।

२२ कर्मप्रकृति—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र स०१२। ग्रा०१०३८४६ उत्तराभा• प्राकृता विषय— रिद्धान्तार० कार ४। ते० काल स०१६६१ सगमिर सुदी १०। पूर्णावे० स० २६७। प्राप्तिस्थान स्त्र भण्डार।

निशेष-पांडे डालू के पठनार्थ नागपुर मे प्रतिलिपि की गई थी । सम्कृत मे सक्षित टीका दी हुई है।

प्रगस्ति—सवत् १६८१ वरपे मिति मागसिर विद १० शुभ विने श्रीमन्नागपुरे पूर्णीकृता पादे डालु पठनार्य लिसित मुरजन मुनि सा० धर्मदामेन प्रदत्ता ।

२३ प्रति म०२। पत्र स०१७। ले॰ काल ×। वे० स० ८४। प्राप्ति स्थान स्त्र भण्डार।

विशेष-सस्कृत में सामा य टीका दी हुई है।

२४ प्रतिस०३ । पत्र स०१७ । ले० काल × । वे० स०१४० । प्राप्ति स्थान ऋप भण्डार ।

विशेष-सम्कृत में सामान्य टीका दी हुई है।

```
िश्विद्यामा पथ चर्चा
* 1
           २४, प्रतिस् ४ । पथ में १२ । से काल से १७६४ । कपूर्णा में वे १६६३ । इस सम्बर्णा
           निर्मेत--क्टुरस्य क्षश्रानीयि के ब्रिटन कुनायन ने जीतीनीय नरवार्व थी ।
           ≄६ प्रतिस ⊁ । पत्र संदेश । में नक्तर्ग १ २ फाम्युन यूदी का में ने ने प्राप्त
werd I
           विभैन---इनकी प्रवितिति विद्यालन्ति के विद्या धार्मराम बच्चनक्त्र ने एडक्स के निवे की वी। प्रवि के
रोजो भीर तथा उत्तर बीच संस्कृत में चेकित दीवा है।
           २.३ प्रतिस ६ । पथनं ७७ । से वास सं १६७१ बालक्ष सूर्व २ । में र६ । सः सम्बार ।
           विकर—बाँव क्रेम्प्रत डीका सहित है। याकपुरा में भी पार्श्वराम चैत्वामद के अधिनिर्देश हुई तका ने
15 वक में पनि नन्तवीर्फि के प्रति का लंबीयन विका ।
           रेस, प्रतिसः ७। पत्र ने १६। ते पाल सं १८२६ व्यक्त बुदी १८। वे ने १ ५ इ.। समार।
            २६. प्रतिष्ठ ≖। पत्र में ३३ तो काल ने ११६ क्लाह लूटी ६ ते स्टाण
 बचार ।
            ३ व्यक्ति सं ६। पत्र मं ११। ने पाम ≭ाने सं ११। का बच्चारा
            विकेश-मेरहर में तमित दिने हुने हैं।
            ¥र प्रतिसः र । पन नं ११। मैं प्रसा×। वे संश्व⊀। का क्रमारा
            विमेच---१६६ पामान है।
            ३२. प्रतिस्तं ११ । कार्यश्चाति । के भन्त सं १७६६ वैद्याला युद्धे १६ । वे तं १६२ । व
 क्यार ।
            वि<del>र्वत अभ्यान</del>ती में पंचा शहरना ने पं कोपारान 🖹 किन्न श्रीशनताल के फानार्व प्रतिनिर्ति
 की की 1
             केंके प्रतिका है?। यथ में १७ । में माल ×ावे में १३३ । मा लखार ।
             के× प्रविक्य हैके। पवर्ते १ । के यह वर्षे दुवप× वर्णिल बुदौ १ । के देश्व । म
  बचार ।
             ३४ प्रतिसः १४ । पन्थं १४ । ते व्यवस्थं १६२१ । वे त्रुष्टाच्यास्त्रासः
             निवीय---क्रुपानम में राग तुर्वतिश के राज्य ने प्रविधीनित हर्द थी।
```

३६. प्रति सट १४ । पत्र म० १६ । ले० काल 🗙 । वे० स० ४०५ । व्य भवसार ।

३७ प्रतिस०१६। पत्रस०३ से १८। ले० नाल ४। भ्रपूर्ण। वे० स०२८०। च्रा नण्हार।

३८ प्रतिसद १७। पत्र स० १७। ले० काल 🗙 । वै० स० ४०५ । व्य भण्डार ।

३६ प्रति स०१ ≈ । पत्र म०१४ । ले० काल ४ । वे० म०१ दे० । ज भण्डार ।

४८ प्रति स०१६। पत्र म०५ मे १७। ने० काल म०१७६०। प्रपूर्ण। ये० म० २०००। ट भटार।

विशेष---वृत्दावती नगरी में पार्वनाय चैत्यालय में श्रीमान बुर्धामह के विजय राज्य मे श्राचार्य उदयभूषण ने प्रशिष्य प० तुलसीदाम के शिष्य त्रिलोनभूषमा ने सशोधन करने प्रतिलिपि की । प्रारम्भ के तथा बीच ने कुछ पत्र नहीं है। प्रति संस्कृत टीका सहित है।

> ४१ प्रति सट २०। पत्र स० १३ से ४३। ले० काल 🔀 प्रपूर्ण । वे० स० १६८६। ट भण्डार । विषेप-प्रित प्राचीन है। गुजराती टीका महित है।

४२ कर्मप्रकृतिटीका—टीकाकार सुमतिकीित । पत्र स० २ से २२ । मा० १२×५३ इ.च । मा० सम्मृत । विषय-सिद्धान्त । र∙ काल × । ने० काल स० १८२२ । वे० स० १२४२ । अपूर्ण । श्र्म भण्डार ।

विशेष-टीकानार ने यह टीका भ० ज्ञानभूषमा के सहाय्य से लिखी थी।

४३ कर्मप्रकृति । पत्र स० १०। आ० दर्र ४४ टेडच। भा• हिन्दी। र० काल ४। पूर्ण । वे० म० ३६४ । अ भण्डार ।

४४ कर्मप्रकृतिविधान—बनारमीदास । पत्र स० १६ । मा॰ ५३ ×४३ इच । भा० हिन्दी पर । निषय-सिद्धान्त । र∙ काल × । मे० काल × । प्रपूर्स | वे स० ३७ । इत् भण्डाण ।

४४ कर्मविपाकटीका-टीकाकार सकलकीर्ति । पत्र सं १४ । आ० १२×५ इ च । भा० सम्कृत । निषय—सिद्धान्तः । र० काल 🗴 । स० काल∡स० १७६८ श्रापाद बुर्दी ७ । पूर्ग्यः । व० स० १५६ । इप्र भण्डारः ।

विशेष कर्मविषाक हे भूलकर्त्ता गा० नेमियन्द्र हैं। ४६ प्रति सद २ । पत्र सं० १७ । ले॰ काल × । वे स० १२ । च भण्डार ।

विशोष--प्रति प्राचीन है।

४७ फर्न्सरनवसूत्र-देवेन्द्रसूरि। पत्र स० १२। मा० ११×६ इच । भा० प्राइतः । विषय-सिद्धातः । २० नाल 🗴 । ले∙ काल 🗴 । वे० स० १०४ । छः भण्डार |

विशाप--गाथामों पर हिन्दी में मर्थ दिया हमा है।

र्श- कन्यमिद्धास्त्रसम्बन्धाः वस्त्रं दश्शका १ ८४४ व । मा प्रशास मध्यः । कत्रम १ तन्त×।के सक्त×।कुर्वाने वै दश्शास्त्रसम्

विमेल---पी जिनकायर कृति की माधा से प्रविकिति हुई की । बुजराती करना ने दीवा निर्मित हैं।

वन्तित मान--पुण:-रैएरं वालेलं नेता सनवर्धः------विशार्ण पति बुद्धा ।

सर्थ—-िताशर जनाह वर्षावहर कामर हिन्दार हानव वर्षावहर पर्य रही प्रदिश्ण प्रथम कर्मा में महानीर हिन्द होगार विद्वार है जिल्ला है क्या है कि स्थाप के हरिने बात परिमाणकर । हा पर्य ने मा प्रमाणित है नह में मा प्रथम है कि स्थाप के हरिने बात परिमाणकर । हा पर्य ने मा प्रमाणित है नह में मा प्रथम है कि स्थाप के हरिने होगे है कि स्थाप है से स्याप है से स्थाप है से स्य

५८. सम्प्रतुष्(शिलक्षुम्बरुक्षक्षे) ""ावत्तृष्ठ ४१। तर १ ४४६ दवामा सप्तरा दिश्य-मन्तरार योज ४ के केल ४।वै वं ६६ पूर्णाकाल्यारः

विकेल-नीहनी रच्या दीवा समित है।

४८. कम्पसूच-सम्बद्धाः पर सं ११६। बा १ ×४ ६ था वा शाह्यः। देनर-वानः। र गमा ४ । में कमार्च १ १ । ब्युर्साः में सं १६ । श्राक्ताः कमारः।

मिलेव—२ राधवा ३ शा वय गरी है। वावाओं वै शोधे हिन्दी ने कर्व दिवा हुना है।

. इ. महिस २ । पार्च हरू १ । के नल × । ब्यूर्ल । वे ते १६८० । द्वापमार ।

पिनेप-चरित सरहय गया दूरराणी माना सहित है। नहीं २ डम्पा टीवा जी वी हु² है। बीप के ^{सर्व}

१ कल्पसूत्र—भद्रबाहु। पत्र सर्६। झा०११×४ दे इच। आ० प्राकृत। निषय–म्रागम। र०का×। न०कास०१६६० म्रासोज सुदी ६। पूर्ण। वे०म०१६४६। ट भण्डार।

४२ प्रति संट२ । पत्र स० ≡ मे २७४ । ले० काल × । म्रपूर्शा । वे० स० १ ≒६८ । ट भण्डार ।

विशेष---सम्कृत टीका सहित है। गांबाम्रों के ऊपर मर्थ दिया हुमा है।

४३ कल्पत्तूत्र टीका—समयमुन्दरोपध्याय । पत्र स० २५ । झा० ६×४ डन्त्र । भाषा-सम्बृत । विषय-प्रागम । र० काल × । ले० काल स० १७२५ कार्तिक । पूर्ण । वै० स० २८ । स भण्डार ।

विशेष—ञूराकर्णसर ग्राम मे ग्रय की रचना हुई थीं। टीका का नाम करालता है। सारक ग्राम मे प० भाग विशाल ने प्रतिलिधि की थी।

ें ४४ कल्पसूत्रवृत्ति । पत्र स० १२६ । मा• ११×४२ इत्र । भा• प्राकृत । विषय—
मागम । र• काल × । ले॰ भाल × । म्रपूर्ण । वै० स० १८१८ । ट भण्डार ।

४४ कल्पसूत्र । पत्र स० १० से ४४। झा० १०६ै×४६ै इ.च । भाषा–प्राकृत । विदय⊷ भागम । र० काल × । के काल × । क्रपूर्ण । वे० स० २००२ । क्रप्र भण्डार ।

विशेष-सस्कृत मे टिप्पण भी दिया हुम्रा है।

प्र त्तपणाम्नारष्ट्रति — साधवचन्द्र त्रैबिश्चदेव । पत्र स॰ ६७ । म्रा॰ १२×७२ इच । भा॰ सस्कृत । विषय—सिद्धान्त । र० काल शक स॰ ११२५ वि० स० १२६० । ले॰ काल स॰ १८१६ वैशाख बुदी ११ । पूर्ण । वे॰ स ११७ । क भण्डार ।

विशेष--- यथ वे मूलकर्ता नेमिचन्द्राचार्य हैं।

४७ प्रति स००। पत्र स०१४४। ले० काल स०१६५५। वे० स०१२०। क भण्डार।

४८ प्रति स**०** ३ । पत्र स० १०२ । ले० काल स० १८४७ ग्रापाढ बुदी २ । ट भण्डार ।

विशेष-भट्टारक सुरेन्द्रकींसि के पठनार्थ जयपुर मे प्रतिलिपि की गयी थी।

४६ त्तपणासार—टीका । पत्र म०६१। ग्रा० १२५४५५ डचा भा० सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । ग्र० नाल 🗙 । ले० काल 🗙 । ग्रपूर्ण । वे० स०**११८ । क**्र मण्डार ।

६० सपर्गासारभाषा—प० टोडरमल । पत्र म० २७३ । आ० १३४८ इ च । आ० हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । र०काल म० १८१८ माघ सुदी ४ । ले०काल १९४९ । पूर्ण । वे० स० ११९ । क भण्डार ।

विशेष—क्षप्णासार के मूलकर्ता ग्राचार्य नेमिचन्द्र हैं। जैन सिद्धान्त का यह प्रपूर्व ग्रन्थ है। महां प॰
टोडरमलजी की गोमट्टमार (जीव-काण्ड भीर कर्मकाण्ड) लिब्बसार ग्रीर क्षप्णासार की टीका का नाम सम्यग्जान चित्रका है। इन तीना की भाषा टीका एक ग्रन्थ मे भी मिलता है। प्रति उत्तम है।

The same of the sa

```
िमिज्ञामा एव पर्यो
= 1
        ६१ शुक्तरकानवर्षा<sup>च्याच्या</sup> पर से प्रदाबा १९४१ इ.च. जा शहर। स्पर
निश्चार नम X। नै नम X। दूस । वै नै ३ ३। स्थवार।
        ६२ प्रौनस २। ते प्रत×। ये नं ६४। समध्यरा
         ६६ गुरु-धानकमारीप्रसूच—रत्नरामर् । यत्र तं २ । या १ ४४६ रचा या नीपूरः।
निचर-निवाना हिर बार 🗴 । वे व्यव 🗡 । पूर्व । वे वे १३१ । ब्रू बलार
         ६४ प्रतिस्त∙ः) यसम् २११ने यस्तर्वं १७३१ यामात्र दुरो १४।वे न १४८। क्रामगर।
         विगैद---मेस्बूस होका नहिल ।
         ६४ गुरुरकानवर्षाः ~ "।यदनं ३।या १×८<sub>९</sub> ४वः वा विस्⊩
सिद्धाना र<sup>ं</sup> बाल ×ाने बाल ×ावे ने १३६ ते बहुर्में। का मण्डार ।
         इद्र प्रति सः वयानं २ में १८। देनं १३७। प्रभवतः।
         ६८ व्यक्तिसः ३ । वर्णने ११ ने ३१ । वह्ना । ने नम्ह ४,। वे ने १६६ छ सम्बर्धः।
         ६६ प्रतिको ≽) वसमें १६। माना । केर्न २६६ ⊈ वण्यार ।
             प्रतिसं ६ । तम में २६ । न नानः । ये नं १४६ । स्टब्ल्यरः ।
         ३१ शुक्काशालक्षां~कार्यमीर्था (त्रवात ३ वा ३४ इ.स.) शा हिसी। विवर-विदार्थ।
         अम्बद्धानक्वीनक्वीनोस्द्रामा कर्वा "" ""। पत्र सं । सा १ द्वारा सी
 नेम्द्रतादिक्त-निहालाः का ≍ानं का । जूमारे सं १९। ह बच्छारा
         अरे गुक्तस्थानमध्यक्ष<sup>ा रा</sup>णा वर्ग है। यो ११६८ इ.स. ता तंत्रतः विषय-निर्दार्ण
   ना । ने ना x । तूला । देव देवे । 'व' मन्दरर ।
          अप्र गुज्ञुरुशासमञ्चलका वयन ३। वा ११×३ ४ व । वा संतुरः। वितरनागार्थः।
 र शाप । ने रामः जनूर्मे । वे ने १६३ । व्याचनार ।
          राम ६। में बात । पूर्णा देन १३ । चामचार।
```

६ तुश्रामानमानुहरूपनी'''''''''''। उत्तर्थ १ । का १ ८ इथ । भा नेप्रदेश

विका-निद्रान कार (ने नास X । बहुर्ने । वे ने कका चालपार ।

×

उठ गुग्स्थानवर्णन १ पत्र मं० २० म्रा० १०×५ इच । मा० सस्वृत । निषय—सिदान्त । र० मान × । मे० मान ×ा म्रपूर्ण । वे० म० ७८ । च मण्डार ।

विशेष-१४ गुणस्याना नत वर्णन है।

७८८ गुरास्थानवर्शन । पत्र म०१५ म ६१ । स्रा०१२ ८५ ३ च । भा० स्टिंदा । विषय-निद्यात । र०काल ४ । मे० नाप भाषपूर्ण । ये० म०१३६ । स्ट भण्डार ।

७६ प्रति सः २ । पत्र म० दावित वाल मत १७६३ । वेत मंत ८६६ । व्य सण्डार ।

=० गोम्मटमार (जीवकाषड —-श्रा० ने।मचन्द्र। पत्र म०१३। धाः १३४४ इचा भा•--भावतः। विषय-सिद्धान्त। २० वाल ० । ते नात्र म० १४४५ श्रापाद मुदी ६। पूर्णा ये० स०११६। श्रापनार।

प्रशस्ति—सवत् १५४७ गर्गे द्यापात शुवन नवस्या धीमूलसचे नंद्यास्ताय बलात्वारगर्णे नरस्वनागन्छ धा कुदबु दावार्यान्वय महारम धा पद्मनन्द देवास्तरपट्टे महारम था मुभचद्रदवास्तरपट्टे महारम था जिनचद्रदवास्तरपट्टे महारम था जिल्हा भाषां देल्हा साम्यां सहलवालवसे सार देल्हा साम्यां स्वतं तस्य प्राप्त वाच्या प्रवत्या प्या प्रवत्या प्रवत्या

न प्रति सर २। पत्र ग० ७। त० काल ४। य० ग० ११६८। ऋ भण्डार।

प्रति स्व ३ । पत्र स० १४६ । ले० काल स० १७ - ६ । ये० स० १११ । ऋ भण्डा ।

53. प्रति स्रट ४ । पत्र संब ४ स ४८ । लब्बाल सब्द १६२४ ॥ चीत्र सुदी २ । अपूर्ण । हे• राष्ट्राक भण्डार ।

विमेप-हरिभाद्र के पुत्र मुनवधी ने प्रतिलिपि की भी।

प्रिंति स्ट ४ । पत्र मत १२ । लंब नाल 🗶 । अपूर्ण । वेब मत १३६ । क भण्डार ।

प्रति स० ६। पत्र सं० १=। म० माल ×। वे० स• १३६। ख भण्डार।

प्रित मिट ७ । पत्र मि० ३७५ । नि० काल मि० १७३८ धावरा सुदी ४ । वे० में • १८ । घ

विमेप--प्रति टीका महित है। श्री वीग्दास ने श्रमबराबाद मे प्रतिनिपि की थी।

मा प्रतिस्कर । एवं में ७८१ स्वर्ष माल में १८६१ झावाड सुदी ७। वे० संक ११८। का भण्डार । स्य प्रतिस्थ ६ । पण सं क्षण को नाम कं १ ६६ में बुदी ६ (वे स्टाम नगर। स्थ, प्रतिस्थ १ । पण सं १०६–१४१ । से पाम ४ । सम्बद्धा सं

स्ति प्राप्त स्तु । पण्ड १०१–१४ राज पल ×ाजपूर्वाय का । चन्न ३० प्रतिस्त ११ । पण्ड १ । संयक्त ४ । स्त्र स्वर्थां क्रियारा

६१ सीस्प्रक्ष्यारणिका—सक्क्ष्यानुषक्का नवार्त्त १४१८। या ११है≫ ६व । व्या तत्त्वर। विवय-निवारण । र काम वं १४७६ कर्मिक नुवी १६। सं नररार्त्त १४४६ । दुर्सा वे नं १४ । क

स्थार (

निमेर--वामा पुणीचन्य ने कमामामा चौथरी के अतिनिधी कराई । शति । शेस्टनी मार्थर्था है ।

. ६२ प्रतिसं २ तक्त सं १३१ । सं क्ला×। वे वं १३७ । का सम्बार ।

. ६३ कोलसहस्तरक्रिक्य—सम्बन्धः पत्र शं १६० सा १ ८० दृष्य । मा सम्बन्धः विशेषः विकास १९ कमा ४० के कमा ४० दुर्का वे दे १६० क प्रवारः

निमेर---वर ११९ रर कामार्थ करिया हुए टीला की स्वारित कर साथ है। तारपुर नवर (नागेर) में महनरता के बासनकाम में वानाहां वालि चांचाज नीत वाले जारपी में स्कृतरक वर्तकार तो सह तरि निमार प्रचारका भी।

६४ सीन्स्बरकारकुषि∽-कालकार्यी प्यादंदर (मा १ xvई दय) या संस्टा र कल x । गामा x । दूर्ल । वै वं ३०१) व्याप्तकार ।

निवेद---कृत वाना उदिए वीनराज्य वृत्रं वर्गवृत्यः की डीन्स है । इक्षि वाक्स्वन्तः हारा नविन्ति है। "' विरुद्ध की गैली हैं देशा निवा है ।

Ex स्पेनसङ्ख्याण्या —ावस्यं ३ के ६६६ वा ०३८४ ६४ । मा वस्त्रणा विका-सिक्षणार राज्य । में राज्य x । अपूर्णाणे १६६ । आरथन्तर।

६६ प्रदिशे १। पर वं ११४। ते शक्त ×ावे तं ६। इस्कार १

६७ सोस्पदक्तार (वीक्कारङ) सावा⊸र्ष टोबरक्रका वय सं १११ ने १८४। वा इ.,६इ.चामा क्रियो विवय–विकासार राज्य ×ाने राज्य राज्यूना वे ॥ ४ ३।मा णवारी

> विभेद —वीक्स डोजरमानी के समर्थ के हाल का विक्रा हुया व व है । जबह २ क्या हुया है ! डोपा का नाम नामाजामपरिकार है । कार्यक-बोम्स ।

६८. प्रतिसः । स्वयं १७ तं सम्बद्धाः व्यूक्तीः विवेद १। प्राप्तास्थारा

हर प्रति स्व २ । पव मः अहा तल भाग में १६४८ भादवा गुर्दी १४ । वेश स० १४१ । क भणार ।

१०६ प्रति स८ ३ । पत्र स० ११ । सेट ताल 🙏 प्रपूर्ण । नट सट १२६/ । ह्य भण्टार ।

१०१ प्रति स्ट ४। पत्र न० ४७६। तक नाल मक १८८४ माथ मुटी १४। वै० स० १८। ग भग्नर।

निनय-राष्ट्रराम साह तथा मरनासाल नागसीवास न प्रतिलिपि नरपार्गा भी

१६२ प्रति सः ४। पथ स० ३२८। त० काल 🗸 । सपूर्ण । वै० स० १४६ । 🗷 भण्डार ।

विरोध---२७४ म सामे ५४ पत्रो पर गृत्यम्यान सादि पर संध रचना है .

१८३ प्रति सर ६। पत्र में० ४३। म० साम × । वे० में० १४०। इ. भग्नार ।

निगय-सदत यह रसना ही है।

१०८ गोम्मटमार-भाषा-पट टोहरमल । पत्र मं० २१३ । मा० १४८१० इ.च.। भा० हिन्दी । विषय-मिदान्त । र० काल ग० १८१६ माप गुदी ४ । ल० नाल ग० १६४२ भाषवा गुदी १ । पूर्ण । वे० म० १४१ । संभारा ।

विशेष---विश्वमार नचा क्षप्रमासार की टीना है। गरोपप्रताल सु दरलास पांठमा ने अ व की प्रतिलिपि करनायी।

१८४ प्रति सार २। गत्र मार १११०। मेर काल गर १८५७ सालमा मुदी ४। वैरु सर ४३८। च मन्दार।

१०६ प्रति स्नद ३। पत्र स. ६७१ में ७६४। ले० नाल 🗡। प्रपूर्ण । प० स० १२६। ज मण्डार ।

१८७ प्रति स्ट १ । पत्र सं० ८१६ । से० कास सर्० १८८७ वैधाल सुदी ३ । प्रपूर्ण । वे० स•

विरोध-प्रति बडे धाकार एव मुन्दर सिम्बार्ट की है तथा दर्शनीय है। कुछ पत्री पर बीच मे कलापूर्ण धोनाकार दिये हैं। बीच के कुछ पत्र नहीं है।

रै०८. गोम्मटमारपीठिको-भाषा—प० टोडरमल । पत्र स० ६२ । मा० १४४७ ड च । भा• हिन्दी (निषय-सिदान्त । र० कान ४ । ने० काल ४ । अपूर्ण । दे० स० २३२ । म्ह भण्यार । १७६. साम्भ≥सारटीका (वीवकासक) **** "। यद सं २३१ । का १३४ । इ.स. वा अस्तितः । विदय-विदानदः र नक्ता×ातं नक्ता×। स्थलं (वे सं १२३ । का स्थलर

नियंत—टोरा का बाव शरववरीरिका है ।

. ११ प्रतिसः २ (पन वं १२ । से कास ⊁ । धपूर्श । वे; न १३१ । क मण्यार ।

१११ सोम्मटसास्स्टहि⊷्य टाइस्सक्तापथर्व १। धा ११८० ६ था प्राप्तिकारी रियक-फिस्टकार पक्त ×ात कला । सर्वापै सं २ । गणकार।

्रहरू, प्रतिस्त २ । तम संप्राप्त अपने पान ने सपूर्णा के संप्रदर्शण पैकार।

े ११६ गोम्मटलार (क्ष्मीक्षम्यः) — लिस्किन्द्राचार्वी पत्र व ११६। ब्रा ११८० ६ वः सन् प्रमुखः विक्य-निर्देशकार रुक्तिल्या । के कलाने १००६ पैत सुवीशः पूर्वावे वे १ । या वक्षारः।

११५ प्रतिसः । प्रवन ४३ के सम्बद्धाः वे सं । वासरागः ।

्रेर्थ् प्रतिसः ३ : पवणः १६ । ले जल्ब > । बदुर्सा वे तं ३ । व अन्या" ।

१९०६ प्रति संधायन छ १६। वे कलाई १ ४४ वैष बुद्धी १४। स्टूर्मी वे दं १ ^{२ १} टबमार।

१९० गान्धरमहर (क्रमेकाव्य) बीका—क्रमकाहि। पश्च १६० घा ११० घा ४१० घा स्थाप क्रमका । विवक-क्रिमण । र गल ८ । में गल ⋉ । पूर्व । (क्रमेव व्यवसार वय) । वे थं ११ । क मचार ।

हेरेंद्र म्हेम्बरमार (समझाब्द्र) शीका—सहारक झानगुरुखा राज्यं रश्चा ११६ र पा भ्रा संस्कृत । विपन-विदाला । याना प्र में याता में १६० मात्र मुर्चा । पूर्वा हु के वो ११८० व्य सम्बद्धा

विकेश-मुम्बिशीति की नहत्त्व ने रीपा निकी बढी थी।

रहें६ प्रतिसंदेश पत्र संदेश क्षेत्र क्ष

१२ मदिस ३। पार्न ने शता । अपूर्ण के इं ८७। अर्थपाराः।

१२१ प्रति स०३। पत्र म० ५१। मे० यान 🔀 । वे० ५० २५ । स्व भण्डार ।

१२२. प्रति स् २ १ । पत्र स० २१ । त० यान म० १७५ । वे० स० ४६० । व्य अण्डार ।

१२३ गोम्मटमार (कर्मकाण्ड) भाषा—पव्टोडरमल। पत्र मः ६६४। ग्रा०१३४६ उचा भावित्वो गद्य (दूढारो)। विषय-सिद्धो त। रव्यात १६ वी शता दी। लक्षात मव्याद उच्छ सुदी । पूर्णावेक सव्यवस्थार।

विशेष-प्रति उत्तम है।

१२४. प्रति संट २ | पत्र म० २४० । में नान 🗙 । ने० म० १४८ । इ. भण्टार]

विशेष-मदृष्टि महित है।

१२४ गोम्मटम्पार (कर्मकायड) भाषा—देसराज । पत्र म० ४२ । ग्रा० ६४४ इच । भा० हिन्दी । विषय-मिद्धान्त । र० काल म० २०१७। ते० वाल मं० १७८६ पीप मुदी १० । पूर्ण । वे० म १०४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रश्न साह भानन्दरामजी पण्डेलवान ने पूछ्या तिम ऊपर हेमराज ने गाम्मटमार को देख के क्षेत्रीराम माफिक पत्री मे जवाव लिखने रूप चर्चा की वामना निकी है।

१२६ प्रति स०२ । पत्र म० ६५ ।। ते० नात स० १७१७ घासीज बूदी ११ । वे स १२६ ।

विशेष—स्वपटनार्थे रामपुर में कत्याण पहाडिया ने प्रतिलिप करवायी थी। प्रति जीर्गा है। हेमराज रन वी राता दो के प्रथमराद के हिन्दी गढ़ के भ्रन्थे विद्वान हुये हैं। इन्होंने १० में मधिक प्राप्टन व सम्युत रचनामों की ट्रिदी गढ़ा में रूपातर किया है।

१२७ गोम्मटसार (फर्म काग्रह) टीका । पत्र स०१६। ग्रा०११५ै \times / इ.च । भा० सम्कृत । विषय-सिद्धान्त । र० काल \times । ले० काल \times । ग्रपूर्ण । वे० स० = ३। च भण्डार ।

विशेष---प्रति प्राचीन है।

१५८ प्रति स० २। पत्र स० ६८। ने० काल स० ४। ने० के० ६६। इ मण्डार।

^{१२}६ प्रति स०३ । पत्र स० ४६ । ले० काल 🗙 । वे० स० ६१ । छ भण्डार ।

विशेष-प्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है -

इति प्राय श्रीग्रुमट्टसारमूलान्टीकाच्च निवाध्यक्रमेग्णएकीकृत्य लिखिता । श्री निमचन्द्रसैद्धाती विरिचितकर्मप्रकृतित्र थस्य टीका समाप्ता । १६ गीतमञ्ज्यक—गीतम स्वामी ।पत्र र्य २ ।मा १ ×४६ इ.स. माध्यः। स्विम निकासारः नाम ∡ाले पास × ।ञुर्लावे संदेश ६६ । इ.स.स्वारः।

रिनेर-वर्ति प्रशासी श्रीरा बहित है १ रख है।

१६१ सीतमञ्ज्ञका । पर तं १। वा १ x४ इ.व.। बा बाहुत। विवय-दिद्याय । इ. कम्प-४ । सामा-४ । दुर्गा के सं १९४२ । काम्प्यार ।

विका-नंतरूव टीश व्यक्ति है।

१६० चपुरेसम्बद्धाः । यस सं १ थ्या १ २८४ दवः वा सदस्यः विश्वन्धिनन्नः। र यस्त्र≿।ने रस्त्र×।दुर्तः।वे संदश्दान्यकारः।

१३३ चहुर्देशस्त्र—स्विधवस्य शुनि। यम नं २८१ धा १ _४४४ हत्य। ब्रास-संस्टा। स्विध-सन्तर्भार राज्य ×ाणे राज्य नं १६६९ योष दुर्धर १। दुर्गाः के वर्षर १२। क्रमध्यार।

११५ चतुरसंगवकानिकासु --- । यह सं १ । सा ११४६ इ.स. बा संस्तः। रियम-मानगार नका ४ । न नेका ४ । सालो कि में ११४ । का क्यार ।

विमेर--क्षेत्र क्षेत्र ना पर प्रमाल दिशा हवा है ।

१६४ चर्चातमञ्ज्यानसम्बन्धः वस्त्रं १६।या ११हे× १०।यस-स्थि (१४)। दिवर-रिदान्दार वस्त्रा वीध्यान्त्रीः ने वस्त्रवं १११६ वसाइद्वरी ३।इर्ला ३ सं १४१। इत्यासा

रियेश-निन्दी वह दीवा भी दी है।

१३६ व्रक्तिस २ । प्यासं १६ । ते नामानं १६३७ वक्तुरा पुरी १६ । दे सं १६ । इदासनार

१३६ प्रतिस २ । पर वं १ । ते यहा । देशं ४६ (ब्यूर्ण) स्थलपार ।

रिवेष--श्या श्रीमा स्थित ।

रैंदेम प्रतिर्मे ४ । यम से चरश से बारत में १९६१ संवितर सुदी रू. वे सं १ १। इ. अपनार

714 अस्थि प्राप्तानं १ (ने नल ८) वे श्रे १७२। क्वासारा

प्रकृति में देशपाने देशको पारने हेद्देश व्यक्ति सुदेश । वे से हुआ।

विनेष—नीत कागतानर तियों हुई है। हिन्दों गय में टोमा भी दी हुई हैं। १४९ प्रतिस्थ का पत्र सं०२०। ते० यात्र सं०१६६ दा वे० सं०२ ⊏३। का भण्डार।

विरोध-निम्न रमाथि भीर है।

- १ पधा बावनी धानतराय दिन्दी
- २ गुर विनर्ता मूपरदास 11
- ३ बारुभाषता नवत 🔐
- भ ममाधि मरण् ,

१४२ प्रतिस० = । पत्र स० ४६ । ने० वात्र × । घर्राणी । ते० स० १४६३ । ट मण्डार ।

विरोग--गुटकाकार है।

१४३ चर्चावर्णस्— । पत्र मरु ⊏१ म ११४ । घारु १०५ ६ इद्या भाषा हिन्दी। विषय–सिद्धान्त । र॰ कार × । नेर नार र । घपूर्णा । वे सरु १७० । इसम्बार ।

१४४ चर्चासन्नह् । पर सं० ३६ । मा० १०% ४६ इ.च.। भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० वात 🗡 । ते० वात 🔀 । प्रपूर्ण । ते० स० १७६ । छ भण्डार ।

१४४ चर्चासमह । पन स० ३। मा० १२×५६ इम्र । भाषा संस्कृत-हिन्दी । विषय सिद्धात । र० गार ४ । ते० कान × । पूर्ण । वे० म० २०५१ । स्त्र भण्डार ।

१४६ प्रति स्ट २। पत्र ग० १३। ते० बान ४। व० त० व्हा ज भण्डार।

विनेष-विभिन्न प्रावार्या की सक्तित चर्चाग्री का वर्शन है।

१४७ चर्चासमाधान-भूधरद्याम । पत्र सं० १३०। मा० १०४५ इखा। भाषा हिन्दी। विषय-सिदात । र० नात म० १८०६ माप मुदी ५। ते० काल स० १८६७। पूर्ण। वे० स० ३८६। स्र भण्डार।

१४८ प्रति स०२ । पत्र स० ११०। ते० वान स० १६०८ झापाद बुदी ६। ते० स० ४४३। श्र भग्डार ।

१४६ प्रति स्न २ । पत्र स० ११७ । ते० काल स० १८२२ । वे० स० २६ । स्त्र भण्डार ।
१४८ प्रति स० ४ । पत्र स० ६६ । त० वाल स० १६४१ वैद्याल सुदी १ । वे० स० १० । स्व भडार ।
१४१ प्रति स० ४ । पत्र स० ८० । ते० वाल स० १६६४ चैत सुदी १४ । वे० स० १७४ । स भडार ।
१४० प्रति स० ६ । पत्र स० ३४ वे १६६ । ते० काल 🔀 । प्रपूर्ण । वे० स० ५३ । छ भण्डार ।

१३ सीतसकुसक—सीतस स्वसी। पत्र सं २ स्मा १ ४४ इ.च. साझा शहरा दिसर-विद्वालय । र∈माल ≻ स्केलाल × स्कूमी के सं १७६६ । टलक्सरा

विकेत-वर्ति क्रमराती टीवर सहित है २ वय है।

१६१ सीहसङ्करणः । वर्ष ते १। मा १ ४४ इ.व.। चा शास्त्र । विश्वस-विकास । र जन्म-४ । वे जन्म-४ । वर्षाने ने १२४२ । चामचार ।

विकेय--वेशकृत टीना वहित है।

१६७ चतुर्वेशस्त्रः — । यद शं १ । सा १ ८४ इ.व.। सा प्रश्नुदाः विका-विकारः । ए सक्त ×ाने नक्त ×। पूर्णाने सं २६१ । स्वयन्तारः

१२३. जनुर्वेदासूत्र—विनवसम्ब सुन्नि। पण सं २१। सा १ $_{\rm H}$ % रूपः। बाना-संस्तरः। विवय-समागार नाम \times । ने नाम सं १६ ९ पीव बुद्दो १६। बुद्धी। वै सं १ २ । क्र समारः।

विमेच-क्रमेक संग ना पर प्रवास दिया हमा है।

१३८ चर्चाराज्य-मानदराज्य। यस सं १ ६। सा ११६× १० । त्राचा-विल्टी (सक्) । विस्त-विकास । र सक्ता से कालको । से सक्ता पे १११६ मानात्र सहै ६। इस्तें । से से १९८ । स्वाचनारी

विकेष---विकी वस दीवा भी दी है।

१३६ प्रदिशः । पण्यं १२। ति कलासं १८१० कक्षण दुर्वा१२। वे सं १६ । इद्रमणार

१३ + प्रतिसः । यम् सं १ । संत्रका×। के संप्रशासन्तरा

रिकेर--टम्बर रीपा बरिय ।

रेड्स्-प्रतिस्त भाषपार्थं २२।वे बानर्तं १८६१ वंगीनर नुसी२।वे सं १.१। कालगरः।

े स्थापिता का प्राप्त है। में पाल-∠ादे से १७२। क्वास्तानकार ह

रेप प्रतिकृषि । यथले देश । के पाप के १८६४ वर्षतक बुद्दी । के ने देशी इटकारार मिद्रान्त एव चर्चा]

१७

विशेष-प्रति सम्कृत दोका सहित है। श्री मदनवन्द्र की शिष्या ग्रार्या वाई शीलश्री ने प्रतिलिषि कराई।

१६७ प्रति स ४। पत्र म० २२। ले० काल स० १७४० ज्येष्ठ बुदी १३। वै० स० ४२। स्त्र भण्डार।

विशेष-श्रेष्ठी मानमिंहर्जी ने ज्ञानावरसीय कर्म क्षयार्थ प० प्रेम मे प्रतिलिषि करवायी।

१६८ प्रति स० ६। पत्र म० १ मे ४३। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वै० म० ५३। स्त्र मण्डार।

विशेष-मंन्कृत द्व्या दीका महित है। १४३वी गाथा से ग्रन्थ प्रारम्भ है। ३७५ गाथा तक है।

१६६ प्रति स० ७। पत्र म० ५६। ले० काल ×। वे० म० ४४। स्त्र मण्डार।

विशेष-प्रति सम्कृत टब्बा टीवा सहित है। टीवा वा नाम 'मर्थमार टिप्पग' है। म्रानन्दराम के पठनार्थ रिकाम जिला गया।

१७० प्रति स० ६ । पत्र म० २५ । ने० का० स० १६४६ चैत सुदी २ । वे० स० १६६ । इ. भडार ।
१७१ प्रति स० ६ । पत्र स० ७ । ने० काल × । वे० स० १३५ । छ्यू भण्डार ।
१७२ प्रति स० ० । पत्र सं० ३२ । ने० काल × । वे० स० १३५ । छ्यू भण्डार ।
१७३ प्रति स० ११ । पत्र स० ५३ । ने० काल × । वे० स० १४५ । छ्यू भण्डार ।
विशेष-२ प्रतियो का मिश्रग् है ।

१७४ प्रति स०१८। पत्र स०७। ने० काल 🗙 । वे० स०२६१। ज भण्डार।

१७४ प्रति सट १३। पत्र म० २ मे २४। ले० काल म० १६६४। कार्तिक बुदी ४। श्रपूर्श । त्रे॰ न०१६१४। ट भण्डार।

विशेष-सस्कृत टीका सहित है। अन्तिम प्रशस्ति --सवत् १६६५ वर्षे कार्तिक बुदि ४ बुद्धवासरे श्रीचन्द्रापुरी महास्थाने श्री पार्क्वनाथ चैत्यानये चौबीम ठासो ग्रन्थ सपूर्स भवति ।

१७६ प्रति स० १४। पत्र स० ३३। ते० काल स० १८१४ चैत बुदि ६। वे० स० १८१६। द्व भण्डार। प्रशस्ति—सन्तर्भरे वेद समुद्र सिद्धि चद्रमिते १८४४ चैत्र कृष्णा नवस्या सोमवासरे हडुवती देणे क्रराह्वयपुरे महारक श्री सुरेन्द्रकोति नेदं बिद्धद् छात्र सर्व सुम्बह्वयाच्यापनर्थ लिपिकृतं स्वशयेना चन्द्र तारक स्थीयतामिद पुम्तक।

१८७ प्रतिस०१४। पत्र स०६६। लें० ना॰ मं० १८८० माथ मुदी १५। वे० म० १८१७। ट मण्डारः।

बिघेष-नैएवा नगर मे भट्टारक मुरेन्द्रकीर्ति तथा छात्र विद्वान् तेजपाल ने प्रतिलिपि की।

१७५ प्रति स० १६ । पत्र स० १२ । से० काल 🗶 । वे० स० १८८६ । ट भण्डार ।

१४३ प्रति सः कः। यथ नं ७४ । ने पान नं १० ३ पीप नुषी १२ । वे ४. ११७ । क्यू वण्यारः । विकेष----वक्तमर विकासी बहाव्या चंद्रालान ने समार्थ वयर ने प्रतिनियों थी थी ।

१४४ चर्चासार—थं शिलाबीकासः। वगर्गदशस्य गृहेश्वर इक्षाः भन्ना दिली। विदय— निवन्तार प्रमा∽≿ । गृहेश्वर । दुर्गार्थं ग्री १४० । क्षा सम्बद्धाः

देश्ह चर्चांसारणण्या पत्र शं १६२ । या अर्थ इक्ष । जास-क्रिये । विश्व-निवास । र नम्ब × । वर्षा । वे वे १४ । क्राच्यार ।

१४६ चर्चास्तरः ——। यद मं ६६। था १६८६_५ इक्का नाया क्रियो शियन-विकास । र सक्त 🗡 स्टूर्य मेरे मं ७०६। क्रा कलारः

हेरूके चर्चांसागर-चंदासाला । वर मं १ ४ । सा ११८५६ इंस (शता-दिन्धे पर्या विकत्-विकास हिंद सम्मासं १६६ । से पास सं १६६१ । सुर्या हो सं ४६६ । ध्रा सम्बद्ध

विषय—सारम्य ने १४ वर विषय सूची के बनाव दे रसे हैं।

्रेश्यः प्रतिस्तं २ । नव वं ४१ ३ ते का लं ११६ ३ वं १४ ३ व वचार।

रेश्चः चौरहापुल्यानयर्थाः—सम्बद्धाः (परः सं ४१ । थाः ११४६, रखः। याः हिमी गर्यः। (राज्ञसन्ती) निरद-विद्वान्तः। र प्रमारः से प्रमारः। पूर्वः। में वं ३६९ । स्रवन्ताः।

१६ प्रतिसं २ । यम सं १-४१ । में का ×ावे सं ६ । का व्यवस्थार । १६१ चीदस्मारीका™ा विषं १ । या १९×२ रक्षा धावा-सहत । विवय-निकान ≀

र कल्ल × | के कल्ल × । कुर्या वे सं १ ३६ । का लच्चार । १६६९ अस्ति सं २ | प्रमुलं १६ । के कल्ल × । वे सं १ १६ । इस्क्लार ।

र्द्द अदिश्व पाचन रदान अन्तरान व १ ११ हिच्चारा

१६६, वीवीवास्त्रावर्षा-निमित्रभाषार्थं। वर वं ६। वा १ क्षेत्रस्य इत्रा वरा-ज्ञावः। विवय-विदालाः एं कार्यः ॥ ते कार्यः । वे १२ वैवास कुरीः १ । पूर्तः । वे वं ११७ । वा प्रचारः।

ल्यार् कार्च×ाप्ते कला।वं १२ वैद्यास्त्रुपी१ ।पूर्तावे शं १२७ ।स्रथभार। १६४ प्रतिसं रीवप वं ६।वे कल ×ाधपुर्तावे वं ११६।स्रथमार।

१६८ मिरा से १ पर्व में भागे सम्म सं १ राजनीय सुद्दी रहाने सं १६ । इस समार।

विकेच-वं देश्वरदास्य के क्लिय क्याक्तवं के प्रशास नरामहा बान के क्ल्य को प्रतिकारित की। १६६ प्रति सं भागपार्थ ११। ने पाना सं १९४६ कार्यक सुवि साथ सं स्टास फाउटा १६० प्रति स० ३ । पत्र स० १ । ले० वाल × । श्रपूर्गा । वे० स० २०३६ । प्र भण्डार ।
१६८ प्रति स० ४ । पत्र स० ११ । ले० वाल ४ । वे० स० १५८ । क्र भण्डार ।
१६१ प्रति स ४ । पत्र स० ४० । ले० वान ४ । वे० स० १५८ । क्र भण्डार ।
विशेष-हिन्दी मे टीका दी हुई है ।
१६३ प्रति स० ६ । पत्र स० ४८ । ले० वाल × । वे० स० १६१ । क्र भण्डार ।
१६५ प्रति स० ६ । पत्र स० १८ । ले० वाल ४ । श्रपूर्गा । वे० स० १६२ । क्र भण्डार ।

विशेष-वेनीराम की पुस्तक से प्रतिलीपि की गई।

१६६ छिया**लीसठ।ए।चर्चा**। पत्र स०१०। ग्रा०६^१४५ इच। भाषा सम्कृत। विषय–सिद्धान्त । र० वाल– 🗙 । ले० कात्र स०१८२२ ग्रापाट बुदी १ । पूर्गा । वे०स०२६६ । स्व भण्डार ।

१६४ प्रति स० ६ । पत्र म० ३६ । न० कान स० १६७६ । ने० म० २३ । स्व भण्डार ।

१६७ जम्बृद्धीपफना । पत्र स० ३२। ग्रा० १२३८६ इच । भाषा सम्कृत । विषय→ सिद्धान्त । र० नाल × । ले० काल स० १८२८ चैत सुदी ४ । पूर्गा । वे० म० ११५ । श्र्म भण्डार ।

१६≒ जीवस्वरूप वर्श्यन । पत्र स०१४ । ग्रा०६×४ डच। भाषा प्राकृत । र० काल × । वि∘ वात × । श्रपूर्ण । वे० स०१२१ । व्याभण्डार ।

विशेष--- मन्तिम ६ पत्रों में तत्व वर्णन भी है। गोम्मटसार में ने निया गया है।

१६६ जीवाचारविचार । पत्र म० ५ । ग्रा० ६≻ ८ दे इच । भाषा प्राकृत । विषय— सिदान्त । र० नान × । ले० काल × । ग्रपूगा । वे० स० ⊏३ । श्र्य भण्डार ।

२०० प्रतिस् २०। पत्र स० ८। ले० काल स० १८१८ मगिसर बुद्दी १०। वे० स० २०५। के भण्यार।

- २०१ जीवसमासिटिष्पण् । पत्र स०१६। ग्रा०११×५ इ.च.। भाषा प्राकृतः। विषय— सिद्धान्तः। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्णः। वे०स०२३५। व्याभण्डारः।
- २८२ जीवसमासभाषा । पत्र स०२। घ्रा०४१४४६ च । भाषा प्राकृत । विषय⊸ तिदान्त । र० काल ४ । ले० काल स०४६६ । वे० स०१६७१ । ट भण्डार ।
- २०३ जीवाजीवविचार । पत्र स०६२। ग्रा० १२४५ इ.च.। भाषा सम्कृत । त्रिषय-निदात । २० काल 🗡 । ले० काल 🗴 । व० स० २००४ ॥ ट.भण्डार ।

िरसप् ४ पण तक क्वारि है इसने साथै निधा की बान तमा कुरू रूर स्नीक हैं। बीबीन नीककुछ वै निश्च साहि ना बर्नन हैं।

रैस्ट, चतुर्विद्यति स्थानक-स्थिचक्याचार । यस रंपरः । या ११४४ इका। प्रा बहुत्र । फिर-निदाल र कल ४ । ते बला≻ । दुर्वावें थे ११४ । इ. बचार ।

विकेद-मेरहत टीवा भी है :

१≒]

१मः चनुरिशति शुख्यसान पीठिकाः ^{सः स}ावक वं ः । सा १०४४ हश्च । समाने हत्। नियन-निवतना । र जक्त ×ाके जक्त ×ाक्तुकी वे से १९५६ । इसकार।

१८१ चौकीस ठाखाचर्चाः व्याप्त संदर्भाका १६४६६ इक्षा वा करण्य। रिस्स-गिक्रमा ।∷ नक्तार । से पक्तार । क्यारी । से ११९८ । क्याप्तमार ।

रूक्त प्रतिस्त काष्यां क्षित्रस्था हरू ×६ दश्चावलासंस्टाते नासस्य दे^{द्री} रीपन्तीर ।वेसे १६६६ । क्यूकी असलकार।

विकेर-र्य राजवश्यम् बार्कायग्रहणम्यं तिकितं ।

१८३ प्रक्रिया ३ । पत्र में ६३ | में मामा×ार्थस संदर्भ । का क्लास्टा

रेक्षप्र भौकीस हाया भर्मा बुखिलाल लाइवर्ष ११६। या ४१०४४ हवा। बार्गा संस्थान विपर-नियाला। सात ×ाल सक्ता > । वर्गा । वे सं ६२ । या कारार।

हेक्फ प्रतिस्य २ । परसं ११ । ले शत्सातः १ ४१ बैठ पूर्वा ६ । सपूर्णा है त ४० । "असम्बद्धाः

स्म प्रतिस के । पत्र सं क्षेत्र के समा**ं** । वे सं ११६ । क बकार ।

रम-७ प्रक्रिसः ४ ।पण्या ६ ।से नामार्थ १ १ नासित बुधि १ । बीर्ग-बीर्म-शि वें १६६ । का बंग्यार :

विश्रंयाम् द्रैस्वरवाल के बिक्क तथा बोधारास के बुदानार्ग रूपकाई पठनार्थ विश्र जिस्साचे न डॉप्प प्रतिनिधि करवामी गर्ड । प्रति संस्थात टीका बहित हैं ।

रकम् चौनोस ठाखाचर्चाच्याच्याच्या १९३वा १४ इकाम्बारिनी । पिषक-निर्मात । र सक्तः । के सक्तः ४ पूर्णावे सं४६ विकल्पार।

विकेश-समाप्ति के क्रम्य का नाम 'इक्जीस ठामा।' वधाराम भी सिका है ।

स्तः प्रक्षिसं । पत्रवादावादान्य इत्याचितं इत्रवाचितं इत्रवाच्यारः

सिद्धान्त एव चर्चा]

र्धः प्रति स्ट ३। पत्र स० ४। ते० वाल ×। ग्रपूर्गा। वे० स० २०३६। प्र भण्डार।

१६८ प्रति स०४। पत्र स०११। ले० नाल ४। वे० म०३८२। स्त्र भण्डार।

१६१ प्रति स ४ । पत्र म० ४० । ले० वाल 🔀 । वे० स० १५ म । क भण्डार ।

विशेष-हिन्दी मे टीका दी हुई है।

१६३ प्रति स०६। पत्र स० ४=। ले० काल ×। वे० स० १६१। क भण्डार।

१६४ प्रति सट ७ । पत्र स० १६ । ले० काल 🔀 । अपूर्ण । वे० स० १६२ । 🛨 भण्डार ।

१६४ प्रति सट = । पत्र मर ३६ । लर्फाल सर् १६७६ । वेर मर २३ । स्व भण्डार ।

विशेष-वेनीराम की पुस्तक से प्रतिलीपि की गई।

ः १६६ छियालीसठागाचर्चा । पत्र स०१०। ग्रा०६^९४४ देदत्र। भाषा सम्कृत। विषय–सिद्धात । र० काल– × । ले० कात्र स०१ द२२ ग्रापाढ बुदी १ । पूर्गा । वे० स०२६ द्रााव भण्डार ।

१६७ जम्बृद्धीपफन । पत्र स० ३२। ग्रा० १२ $\frac{2}{5}$ \times ६ इ.च.। भाषा सम्कृत । विषयसिद्धान्त । र० काल \times । ते० काल स० १=२= चैत सुदी ४। पूर्गा। वे० स० १८५। श्र्य भण्डार ।

१६८ जीवस्वस्य वर्णान । पत्र स०१४ । ग्रा०६×४ इच । भाषा प्राकृत । र०काल × । ^{न०काल} × । ग्रपूर्ण । वे०स०१२१ । व्याभण्डार ।

विशेष—म्मन्तिम ६ पत्रो मे तत्व वर्गान भी है। गोम्मटसार मे ने निया गया है।

१६६ जीवाचारविचार । पत्र स०५ । ग्रा०६∑४-६ँ इच । भाषा प्राकृत । विषय— सिद्धान्त । र० काल ⋉ । ले० काल ⋉ । ग्रपूग्ग । वे० स० ⊏३ । ऋग्र भण्डाग ।

२०० प्रति स००। पत्र स००। ले० काल स० ८०१० मगसिर बुदी १०। ते० स० २०५। विभागार।

२०१ जीवसमासिटण्या । पत्र म०१६। ग्रा०११×५ इ.च.। भाषा प्राकृत । विषय-सिद्वात । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३५ । व्य भण्डार ।

२०२ जीवमसासभाषा । पत्र स०२। ग्रा०११×५ इ.च.। भाषा प्राकृत । विषय--मिद्रान्त । र० काल 🗙 । ले० काल स० ४ = १६ , वे० स० १६७१। ट भण्डार ।

२०२ जीवाजीवविचार । पत्र स०६२। ग्रा० १२४५ इच। मापा सम्कृत। विषय⊸ निदात । र० क्वाल 🗴 । ले० काल 🗴 । वे स० २९०४। ट भण्डार । १. कन महाचार मार्गटक नामक पत्र का मानुकर—वाना दुवीचन्द्र। पर नं २१। सा १२ फ्रांच । योगा मिनी। विवय-चर्चा नामानः। र नाम नं ११४६। में नाम 🖈 । पूर्ण वै सं २ साव क्यारः।

२०४८ प्रतिका का पवर्ण १३ । में बाद ४। वे में २१७। का मध्यार १

२ ६ ठीम्पोसमूत्रामामा । पश्ची ४ ३ छाः १ पूँ×४ छन्य । जाराकोन्द्रतः । विश्वस-साग्य । र सान्र ४ कि नाम । बहुई हुनै सं ११२ । बाकनार ।

ः तरकप्रोतमुभ-च पताकाक समी।पवर्ग १ । या १९८७_९ रखः। कराहिसी। विक्य-निकाला।र गां≾ाने बनावं १६४४।पुर्वावं पं २ १० कपोसर।

विकेष-व्यक्त क्रम्य सर्वार्गराज्ञपातिक गाँ क्रियों वध दीवा है। यह १ यामानो में विकार है। इस प्रति से ४ सम्बन्ध कर है।

२००८ प्रतिका शांत्रम् अपूर्णने सम्बन्धं ११४१ (वे ५ १७२) क्रमणारः।

विजेप-१४ मध्यान ने १ व सभ्यान तक की कियी टीका है। क्या सम्बद्ध स्पूर्त है।

 प्रतिक्षः ३।वणाम ४२ । र मामानी १६१४ (ते कमन ४ । ३ मी २४ । इ.मी.गर विदेय-राज्यानिक के प्रवासन्यक्ष मी निमी डीका है।

क्ष्टे प्रति स्त्री प्रशासन पर ने कक्ष्या के नम्प ×ाव्यूकी के तो प्रशासनकार । विमेर-बीमधातमा जीना व्यापन है। बीमधे बस्तम के तेः तथ समय बीद हैं। ४७ समय पर्यो के मुत्रीस्क हैं।

प्रदृष्ट अस्तिस शापन में १ कते था । ने नाल ×ावे वे देश्हाक बच्चार।

विसेय-१ ६ ७ १ हे विश्वाय की भाषा दीका है।

२१० शर्माक्षेत्रिका-पण सं ११। बा ११_७४५ है जाया दिन्दी बद्धा नियस-सिकारणा इ.स.स.⊀।में नास ≿ायुर्लाचे सं २ १४ ध्यालकारा

. वर्त्व सर्प्यकक्तय— ह्यायणक्रा । यश्चे ४ । धी १ _२८४ दश्ची भारत लेख्य । विस्त-निवार र कल ≾ । के साल ≿ । कृति । वै ७६ । को लगारः ।

विकेश-प्रापार्थ मेनियान के परनार्थ रिकी वर्द थी।

कर्थ वस्त्रहार— वेक्क्रेश क्या में ६। या १९४६ हजा घरातस्य । विवय-निकास्य । र काम ×ाने कस्य तं ११६ तीय हुवी ८। हुक्ये । वे परेश । विका-रिकास के व्यक्तिया क्यामी वी । २१४ प्रति सट २। पत्र स० १३। ते० काल × । ब्रपूर्ण । वे० स० २६६ । क भण्डार । विरोप-हिन्दी व्यर्थ भी दिया हुझा है । अन्तिम पत्र नहीं है ।

२१६ प्रिमि स०३ । पत्र म० ४ । ले० काल ४ । वे० म० १८१२ । ट भण्डार ।

२१७ तत्त्वभारभाषा-पन्नालाल चौधरी। पत्र स० ४४। ग्रा० १२३४५ दश्च। नाषा हिन्दी। विषय-मिद्राला। र० काल स० १६३१ वैशास बुदी ७। ने० वाल ≺ा पूर्या वे॰ स० ४६७। क्र नण्डार।

विषोप-देवसेन कृत तत्त्वसार की हिन्दी टीवा है।

२१८ प्रतिस•२। पत्र स०३६। ले० वाल ×। वे० स०२६८। कः भण्हार।

े ९६ तत्त्वार्थदर्परा । पत्र स० ३६ । ग्रा० १३ ई ४५ ई इखा भाषा सस्यृत । विषय⊸सिद्धान । र पाप ४ । ने० काल ४ । श्रपूर्ण । वे० सं० १२६ । च भण्डार ।

निशेष-वेत्रत प्रथम प्रध्याय तक ही है।

९२० तत्त्वार्थवाध— पत्र स०१६ । म्रा०१२ $\frac{1}{2}$ \times ५ $\frac{1}{2}$ इख्र । भाषा सम्बृत । विषय—सिद्धान्त । र० । ते० स०१८० । ज भण्यार ।

विशेष-पत्र ६ म श्री देउसेन एन मालापपद्रति दी हुई है।

२२१ तत्त्वार्थवाध—बुधजन । पत्र स० १४४ । मा० ११४४ इझा भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-निदात । र० काल म० १८७६ । ने० वाल ४ । पूर्ण । वे० स० ३६७ । स्त्र भण्डार ।

२०२ तत्त्वार्थवोध । पत्र म० ३६ । मा० १०३ ×५ इक्ष । भाषा हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धान्त । २० काल \times । स्रपूर्गा । वे० म० ४६६ । च भण्डार ।

२२२ तत्त्वार्थदर्पेण । पत्र स०१०। म्रा०१३×५ दृष्टद्यः। भाषा सस्कृतः। विषय-सिद्धान्तः। र॰ काल ×। मपूर्णः। वे० स०३५। स भण्डारः।

विशेष-प्रथम भव्याय तक पूर्ण, टीका सहित । प्रत्य गोमतीलालजी भासा का भेंट किया हुमा है ।

२२४ तत्त्वार्थद्योधिनीटीका---। पत्र स०४२। श्रा०१३×५ दुखः। भाषा सस्कृतः। विषय-सिद्धान्तः। रि०काल ×। ले०काल स०१६५२ प्रथम वैशाख मुदि ३। पूर्गः। वे०क०३६। स भण्डारः।

विशेष-यह ग्रथ गोमतीलालजी भौंमा का है। क्लोब म० २२५।

२२४ तत्त्वार्थरङ्गप्रभाकर—प्रभाचन्द्र । पत्र स०१२६ । मा०१०३८४५ इस्र । भाषा सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । र०काल ४ । ले० वाल म०१६७३ म्रासोज युर्दी ४ । वे० स०७२ । व्य भण्यार ।

विशेष-प्रभाचन्द्र भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे। ग्र० हरदेव ने लिए ग्रथ बनाया था। सगही कॅवर ने पासी गंगाराम ने प्रतिलिधि करवायी थी।

२२६. प्रति सार २ । पत्र स॰ ११७ । न० काल स० १६३३ आपाद बुदी १० । वे० स० १३७ । भ भण्डार । २ ४ जन समापार सार्थनेट सामक पत्र का कर्युप्तर—बाबा हुक्कीचन्द्र । यर शंसा सा १९४७६ दण समाप्त क्यिं। विवर-चर्चाबनावनः । र कला सं ११४६ । ते कल ४० पूर्ण १ सं २ । का समारः

२ ४८ मितस २ । पद शंप्राण वान ×ावे वं २१७ । व्ह जवार ।

२.६ ठास्तोस्यूचाःःःः। प्यारं ४ । साः १ कु×४ कृष्टमः। जलासंस्युटः। नियस-यानयः। र कान ×ाने कान । स्टब्सं। देवं १९२ । का जलारः।

०० तस्वकोस्तुस⊶य पन्नासास संदीःयशं ०२०।या १२००० दस्रः। शसाहिनीः

विश्वन-निर्देशन । रंज्य 🗴 । में ज्यान वं १६४४ । दुर्जा के नं २ १ । क्रांप्रचार । विशेष-जह कमा लगार्गरावपक्षीतः को क्रियो वक्ष रोगा है । यह १ यन्यायो में विश्वय है । इस क्री वे राजप्रकार सक्ष है ।

२०८८ प्रतिका २ । वस नं ४४६) में काचार्च १९४६ (वे ६ २७२) क अन्यार।

विकेच-१म धन्याम ने २ वे सभ्याम तक मी हिन्दी दीला है। नवा बच्चाम समूर्त है।

्ट. प्रतिका के त्वन पर । र जला में दृद्धा ने कला ×ावे मंदर । इस्पेशर विकेप-प्रवाणिक के प्रवास्थ्यम नी लियो टीका है।

कर्र प्रदिश्च अं। यक्त दर्दके ७७६। में गम्प ×ा ब्यूर्ल । दे सं २४१। इत्स्यारा निर्वेद-बीलात ज्या पीया बप्पम है। बीलर्र बस्बम कें २ यद बलक्त बीर है। ४७ बलक्तारों में मुनीपर है।

म्देरै प्रदिस शाक्त्र ने र कने र काले वक्त ×ाते और एउट्डाइट अन्दार।

निचेप−१९७ ६१ में सभागनी बाला डीमा है।

६९० सम्बद्धिमिक्का—ाण्य सं ६१ । या ११_४×५६ ताला हिन्दो स्याः विश्व-निदाला । इ. सम्प्र≾ । में बन्द × । दूर्णा में सं २ १४ । या सम्बद्धाः

२१३ तंत्रवस्थान— द्वायणेषु ।येण ने ४० था १ _६×८ ४ था। शता शंस्त्रतः ।येश्वर-निवार र योज ×ाते काल ×ा पूर्णा ने से ६० मा लगारः

वियोध-साम्बाध वेशियम्य के यहनार्थ निभी गई गी।

२१४ तम्बसार— देवसंत्र । यर न ६ । था ११×२६ स्था प्रमाजनव । नियस-निकान्त । र माम ×ाने पर्माची १७११ मीच पूरी ऽाक्रमी वी प्रश् । स्थिस-र्माणियाम ने अधिमीय प्रथमी ची । सिद्धान्त एव चर्चा]

२१४ प्रति सट २ । पय स० १२ । से० काल 🔀 । अपूर्ण । वे० स० २६६ । क भण्डार । विगेप–हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है । अन्तिम पत्र नही है ।

२१६ प्रति स०३। पत्र स० ४। से० काल ×। ये० स० १८१२। ट भण्डार।

पेरैं७ नत्त्रमारभाषा-पन्नालाल चौधरी। पत्र प०४४। ग्रा०१२३ँ४५ इख्रः। नापा हिन्दी। विषय-मिद्रान्तः। र० नाल म०१६३१ वैद्रास्त बुदी ७। नि० नाल ४। पूर्णः। प० व०वर्षः। स्र भण्डारः।

विशेष-दवसन कृत तत्त्वसार की हिन्दी टीका है।

^{२९}८ प्रतिस•२ । पत्र स०३६ । ले० वाल × । वै० स०२६ ≈ । क भण्डार ।

२१६ तत्त्वार्थदर्पेस । पत्र म०३६। ग्रा०१३५/१५ इद्धा भाषा मस्यृत । विषय-सिद्धान । र याप ४। ल०कान 🗙 । ग्रपूर्स । ये० मं०१२६। च भण्डार ।

निशेष-यत्र प्रथम अध्याय तक ही है।

९२० तत्त्वार्थवाध-- पत्र म०१६। म्रा०१२६४४६ इख्र । भाषा सम्मृत । विषय-सिदान्त । र० षात्र ४। ने० नात्र ४ । व० म०१४७ । ज भण्डार ।

विशेष-पन्न १ म श्री देवसम पृत ग्रालावपद्वति दी हुई है।

२२१ तत्त्वार्थयो य-चुधजन । पत्र स० १४४ । प्रा० ११४४ इक्क । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-निदान । र० काल म० १८७६ । ने० काल 🔀 । पूर्ण । वे० म० ३६७ । ऋ भण्डार ।

२२२ तत्त्वार्थयोय । पत्र म०३६। भा०१०२/४५ इक्षः भाषा हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धान्तः । १० कान 🗴 । ले० काल 🗡 । भ्रपूर्ग्ग । ये० म० ४६६ । च भण्डारः ।

२२२ तत्त्वार्थटर्पेस । पप्र स०१०। ग्रा०१२४४ द्वेडळा। भाषा सस्कृत । विषय-सिद्धात । २० काल ४। ने० काल ४। ग्रपूर्स । वे० स०३४। सभण्डार ।

विशेष-प्रथम ग्रच्याय तक पूर्गा, टीका सहित । ग्राय गोमनीलालजी भाषा का भेट किया हुमा है।

२२४ तत्त्वार्ययोधिनीटीका---। पत्र स० ४२ । ग्रा०१३×५ दुख । मापा सम्कृत । विषय-सिद्धान्त । १० नान × । ने० काल स० १९४२ प्रयम वैधान्व मुदि ३ । पूर्ग । वे० न० ३६ । हा भण्डार ।

विशेष-यह ग्रन्थ गोमतीलालजी भौंसा का है। क्लोव म० २२५।

२२४ तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर-प्रभाचन्द्र । पत्र स० १०६ । ग्रा० १०६८४ । इक्ष । भाषा सस्कृत । विषय-मिद्धान्त । र० काल 🗴 । से० नाल म० ८६७३ ग्रामोज बुदी / । वै० न० ७२ । व्य भण्यार ।

विशेष-प्रभाषन्द्र भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे। प्र० हरदेव के लिए ग्रंथ बनाया था। मगही क्वर ने जोगी गगाराम में प्रतिलिपि करवायी थी।

२२६. प्रति सट २ । पत्र म॰ ११७ । ल० काल स० १६३३ प्रापाट नुर्दा १० । वे० स० १३७ ।

िक्रियान स्व पर्या

२ ४ जन सदाचम मार्चिट समय पत्र का मस्युत्तर—बाबा हुवीवन्त् । वन नं २१। मा १९४७ हेद चः शता हिन्दी। विक्य-कर्णतवादाल । र शता श्रे १६४६ । वै कार X1 हुर्नः वेतं २ । ब्रायक्टारा

२०६८ प्रतिस २ । पत्र चै २१ । ते कल्प ≾ावे से २१७ । कृतपारः।

६ ६ **ठाकोसमु**च^{ः । । । । पद वं ४ । सा १ दै×४- इन्द । त्रावार्तसूत्र । त्रिपव-सावन ।} र कान ≍ाने कानाधपुर्धाः वे तं १६२ । का कथार ।

०७. तरमञ्जेलुय—प पनाकास सची ! पण मं ७२७ । या १२×७० हम । अमा रिपी ! विश्वच–सिंद्रशत्तारं का ×ाके कलानं १९४४ | कूर्या देर्य र १ क वच्छार ।

विकेर-व्य क्रम्य तत्वार्वराज्यवर्तिक की हिन्दी वक्ष टीका है। वह १ सम्बन्धी में विज्ञात है। इस प्रति र्थ र प्राथमा कर है ।

२०म्म प्रतिसः । यत्र चं ६४६। वे काच चं १६४७ । वे ७ २७२ । का मध्यार ।

विकेश-१६ सभाव में १ वे सभाव तब की हिम्बी टीवर है। नवा सम्बास क्षतुर्य है।

£. प्रदिस दे। वन कंपने । र कला में १६६४। में कल ×ादे संदुर । सर्वारा विकेद-राजवार्तिक के ज्यानाध्यान की ज़िली टीका है।

प्टर प्रतिसाधायमधं ८९ नेकक्शाने नान×।व्यक्ति संन्द्रशाहणवार। मिवेद-तीनरा तका जीका बच्चान है। तीमरे बच्चान के २ - पत्र सनक बीर है। ४७ बनाग को में मुनीयम है ।

≽११ प्रदिस ≿।यानं १७वे८ । वे नल×। वे सं २४२। बाचनार। १ १ में सभाव नी जाता दीका है। finder-y &

दश्क्र तस्वरीक्तियः—) कार्य ११ । वा ११ ×६३ वाता हैन्सी यस । क्रिक्स विकास । र नस×। ने राज×। पूर्व। वे वे ११४। चालवार।

को के संस्थानकार--- श्रीमानाजू । पत्र सं ४ । बता १ ×८६ हता । जाना संस्था निवास निवास र मल≺ाने मल ⊀ादुर्लादै तं ७६ । धः यचला

क्रिके-सामार्थ वेशिकाह के व्हनार्थ मिली नहीं भी ।

एरेप्ट बस्बसाए-- देवसंत (यह में ६। वा ११×१६ देखा पाना मध्य । विवय-विदान्त । र मल×।से मल वं १७११ वीव दूरी ∂।पूर्व ।वे नंूरस्र।

विजेष-र्ग विहारीबाम ने प्रवितिधि परवासी

२१४ प्रति सट २। पत्र स० १३। ले० काल ×। श्रपूर्ण। वे० स० २६६। क अण्डार। विगेप−हिन्दी प्रर्भ भी दिया हुन्ना है। अन्तिम पत्र नहीं है।

२१६ प्रति सुट ३ । पत्र सु० ४ । ले० काल 🗶 । बै० सं० १८१२ । ट भण्डार ।

प्रिष्ठ तत्त्वसारभाषा-पन्नालाल चौधरी। पत्र स०४४। ग्रा०१२५ँ४५ इखः। नाषा हिन्दी। विषय-मिदाला।र०वाल स०१६३१ वैद्याख बुदी ७। वे०वाल ४।पूर्गा।वे०स०२६७। इ. भण्डार।

विराप-देवमन कृत तत्त्वसार की हिन्दी टीवा है।

^{२९}८ प्रति स•२ । पत्र यं०३६ । ले० काल 🔀 । वे० स०२६८ । क. भण्डार ।

२१६. तत्त्वार्थटर्पेसा । पत्र म० ३६ । ग्रा० १३ दे ४५ टे डब्र । भाषा सस्यत । विषय~सिष्टांत । ६० वाप ४ । मपूर्सा वे० स० १२६ । च भण्डार ।

विशेष-वत्र प्रथम अध्याय तक ही है।

१२० तत्त्वार्ययोष— पत्र स०१८। आ०१२६४५ इख्रा आपा सम्मृत । विषय-सिद्धात । र० भार ४। स० काल ४ । । ते० स०१४७ । ज अण्डार ।

विशेष-पत्र १ म श्री देवमेन इत माला तपहति दी हुई है।

२२१ तत्त्वार्थवाय — बुधजन । पत्र स०१४४ । म्रा०११४५ इख्र । भाषा – हिन्दी पद्य । विषय – निदात । र० काल मं०१८७६ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स०३६७ । स्त्र भण्डार ।

२२२ तत्त्वार्थवोच । पष म०३६। मा०१०३ \times ५ इख्रा भाषा हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त । रै०काल \times । क्रेपूर्ण। वे० म० ५६६। च भण्डार।

२२३ तत्त्वार्थदर्पणः । पत्र स०१०। द्या०१३×५ दृद्यः । भाषासस्कृतः। विषय-सिद्धातः। २० काल ×। क्रपूर्णः। वे०स०३५। गमण्डारः।

विशेष-प्रथम ग्रध्याय तक पूर्ण, टीका सहित । ग्रन्य गोमतीलालजी भीया का नेट किया हुआ है ।

२२४ तत्त्वार्थवोधिनीटीका---। पत्र स० ४२ । प्रा० १३×५ दुखा । भाषा सस्कृत । विषय-सिद्धान्त । १० काल ४ । ले० काल सं० १९४२ प्रथम वैकाम्ब सुदि ३ । पूर्गा । वे० म० ३६ । वा भण्डार ।

विशेष-यह ग्रंथ गोमतीलालजी मौंमा का है। क्लोक म० २२५।

२२४ तत्त्वार्थरस्रप्रभाकर-प्रभाचन्द्र। पथ स० १२६। या० १०६४४ इस्र । भावा सस्यत । विषय-सिद्धान्त । र० काल ४ । ले० काल म० ८६७३ श्रासोज बुदी १ । वै० म० ७२ । व्य भण्यार ।

विशेष-प्रभावन्द्र भट्टारक धर्मचन्द्र ने शिष्य थे। क्र० हरदेव के लिए ग्रथ बनाया था। सगही क्यर ने

२२६ प्रति सट २ । पत्र म• ११७ । न० काल म० १६३३ प्रापाद बुदी १० । वेर स० १३७ । ष भण्हार । . २. ७ प्रक्षिस ३ । पत्र तं ७९। । ते नल ४ । धपूर्ण (वे गं ६ । सामग्यार। ू

विकेय---मन्तिव पत्र गद्दी है।

र प्रति सा ४ । पत्र सं २ न ६१ । ते काल × । सपूर्वी । वे तं १६१६ । इ. तथार । विकेप-समित्र पृथ्यितः— एति तत्यार्थं राष्ट्रप्रतालग्यन्तै जुनि श्री धर्मावकृतिक्य स्था प्रवास्त्रक्रेय सिर्म विने सहस्तेन नाष्ट्रतालेन वेष प्रमाना निवित्ते नोक त्यार्थं कमन स्थम तुम्ब विभार सक्यक्त समझ्य ।।

इ. सन्वादेशकार्तिक—सहाक्क्ककोचायवर्थ ३६ । घा १६% कक्का जाना नेस्ता। रियम-सिवान्ता । राज्य ४ । के क्वाच डे स्थक (दुर्णी के वं १ ७) का घष्टार।

निर्मेश—इस प्रति भी अदिनिधि सं १६७ वाली प्रति ने वस्तुर वक्त में नी नई नी।

-२३ प्रसिक्त २ । नवर्ष १२२ । न शाल मं १६४१ बल्पराल्ली६।वे नं रहण्। कर्ममारा

विकेप—का कमा २ मैहनों में हैं। बचन मैहन में १ में ६ तथा दूशरे में ६ १ से १२६ तथा पाड़ी। प्रति कत्तन हैं। बचन के नीमें किसी सर्वेणी विचाहें।

क्केर मतिस ३ । पंत्र वं ३६ । ते प्रान्त प्राप्त वं ६४ । शास सम्बार ।

निनेप-नूसवाय ही है।

२३० प्रशिक्षे ४ । यस सं ६ । ते नाला सं १६७४ वीच कृषी १६। वे नं १४४*१* र मन्तर।

. विमेय—बक्दर वे महोरीलाल कायसा ने प्रतिसिध की ।

म्बेके सहित्स ४ । रूप में १ । के रास्त×ा सम्बर्गा के संदर्भ क्षा क्रमार ।

मदे¥ प्रतिस है। यम सं १७८ने ११ । ने ताल ≺। बचूर्ता है स ११७। व प्रणास

२२४ तस्त्रार्वेदाक्रवार्तिकमार्थाः । यत्र तं २.२। या १२४ दक्षः मत्तानीत्र्ये गर्थः। राजनिकासः। र तत्रः । ते कस्त्र ४ क्यूलं। वै सं २५६। इ क्ल्यारः

२६६ सम्बार्षेश्वसि—पः बागदेशः । यम सं १७ । ताः ११०,८७० वदः । सना—संस्तृतः । रिपर-निकल्पा । रचनसम्बर्धः ४ । से स्वस्त सं १७१ स्वर्ते । सुर्वा । वे सं १९१ । इत्र सम्बर्धाः ।

विभाग-वृक्तिया नामान भूगयोग कृति है। तथार्गमून पर आक्र बक्तम शीका है। वं नीनपेप पुत्रनवन^{र ने} निकानी थे। वस्त सबद विभाग जिसे में हैं

3- प्रतिका मात्रवर्गश्याले कला≾ावेल २४ । का अवसरा

१६८ तल्लाकीमार—कस्तृतकण्याका। पश्ची १ । धा १६८१ इक्षः भागानीशृतः विषय— निक्रमा र पान ४ । में नामा ४ । वर्षाः वै १६ । इ. क्ष्यार

दिन्ति इन अन्य में ६१ : प्रशास है जो १ अध्यानों में विकार है। इनमें ७ तानों ना याना विवा

२३६ प्रति स०२। पत्र स०४४। ले० काल ×। वै० स०२३६। क भण्डार।
२४ प्रति स०३। पत्र स०३६। ले० काल ×। वै० स०२४२। फ मण्डार।
२४१ प्रति स०४। पत्र स०२७। ले० काल ×। वै० स०६६। छ भण्डार।
२४२ प्रति स०४। पत्र स०४२। ले० काल ×। वै० स०६६। छ भण्डार।
विशेष-पुस्तक दीवान ज्ञानचन्द को है।

२४३ प्रति सट ६। पत्र स० ४८। ले० काल ४। वै० स० १३२। व्याभण्डार।

२४४ तत्त्वार्थसार दीपक—भ० सकलकीित । पत्र म० ६१ । मा० ११ \times ५ इञ्च । भाषा— $\frac{1}{4}$ । विषय-सिद्वान्त । र० काल \times । वि० काल \times । पूर्ण । वि० स० २५४ । श्र्य भण्डार ।

विशेष—भ० सकलकीर्ति ने 'तत्त्वार्थमारदीपक' मे जैन दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तो का वर्शन किया है। रवना /२ ग्रब्यायो मे विभक्त है। यह तत्त्वार्थम् की टीका नही है जैसा कि इसके नाम मे प्रकट होता है।

२४४ प्रति स०२ । पत्र स० ७४ । ले० काल स०१८२८ । वे० स०२४० । क मण्डार।

२५६ प्रति सद ३। पत्र स० ६६। ले० काल स० १६६४ ग्रासीन सुदी २। वे० स० २४१। क

विशेष--- महात्मा हीरानन्द ने प्रतिनिधि की ।

भेप तत्त्वार्यसारदीपकभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र स॰ २८६। म्रा॰ १२३४६ इख्र।
भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-सिद्धान्त। र० काल स० १६३७ ज्येष्ठ बुदी ७। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स० २६६।
विशेष-जिन २ ग्रन्थो की पन्नालाल ने भाषा लिखी है सब की सूचा दी हुई है।

२८८ प्रतिस् २ । पत्र स०२८७ । ले० काल ४ | वे० स०२४३ । क भण्डार ।

े४६ तत्त्वार्थं सूत्र—उमास्वाति । पत्र त० २६ । ग्रा० ७×३ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-मिद्रान्त । २० काल × । ले० काल स० १४५८ श्रावरण मुदी ६ । पूर्ण । वै० स० २१६६ (फ) श्र्म भण्डार ।

विशेष---लाल पत्र हैं जिन पर स्वेत (रजत) ग्रक्षर हैं। प्रति प्रदर्शनी में रखने योग्य है। तत्त्वार्य सूत्र ममाप्ति पर भक्तामर स्तोत्र प्रारम्भ होता है लेकिन यह ग्रपूर्श है।

प्रशस्ति—स० १४५८ श्रावरा मुदी ६ ।

२४० प्रति स०२। पत्र स०१६। ले० काल स०१६६६। वे० स०२२०० ऋ मण्डार। विशेष—प्रति स्वर्गाक्षरों में हैं। पत्रों के विनारों पर सुन्दर वेलें हैं। प्रति दर्शनीय एव प्रनर्शनी में रखने भोग्य है। नवान प्रति है। स०१६६६ में जोहरीलालजी नदलालजी घी वालों ने ब्रतीद्यापन में प्रति लिखा कर चढाई।

> २५१ प्रति स०३ । पत्र स०३७ । ले० काल 🗡 । त्रे० स०२२०२ । श्र्म भण्डार । विभेप—प्रति ताडपत्रीय एव प्रदर्शनी योग्य है ।

मिद्रान्त एव एवी

٦¥]

का जन्दार

रेश्चर प्रशिक्ष प्राण्य सं ११। वे कला X। वे सं १ ११। वा समारः

प्रश्ने प्रशिक्ष प्राण्य सं १ । वे कला सं १ त्या । वे सं २५६ (क्षा समारः)

रश्च प्रशिक्ष विश्व के । वे कला सं १ १। वे सं १६ । व्या समारः।

प्रश्ने प्रशिक्ष का प्रयाद १६। वे कला सं १६ । वे सं १६९। व्या समारः।

रिक्षेण-क्रियो वे कले रिवा इका है।

२.४० मिन से इ. । पन सं ११ । में मान × । में सं १ कर । या जगार ।
२.४०८ मिन से १ । पन सं २.४ । में मान × । में सं १ व । या प्यार ।
विभो— क्रिकी सम्मारिक सिंह है। ये स्पेत्रिम में मान र में मिनिनिन सी ।
२.४८८ मिन ११ । पन में १४ । में मान × । में से १४ । या प्रचार ।
विभो— मिन ११ । पन से १० । में मान × । प्यूर्ण । में सं ७०० या प्रचार ।
विकेर— मार १० में १ तक नकी हैं।

त्वयः—चर १० व र ०० महरू। १६६१ प्रतिष्ठ हैं १० वर्ष वे ६ वे ६६ । के जल्म ×ालपूर्ण | के वं १ । स्टब्सार | १६९८ प्रतिष्ठ १४ । पर घ ३६ । वे जल्म वे १ ६१ । वे दं ४७ (प्रच्यार । वियेष-चंत्रस्य दीनाविद्या

4 ६६ प्रक्षियों १४ । पन नं १ । ने करू ×ावें वं ४० । क्रायमार । ६६४ प्रक्षिय हें ६ । पत्र वं २२ । ने पान नं ११ पीच बुदी ६ | वें ४६ / विक्रेस—मंक्रिया द्वित्री सर्वे विवाहका है ।

६७१ प्रक्षिक्ष पृक्षाच्यालं १९।के नामा≾ावेलं २१६६६ आह्राक्रयालः । ७० अस्तिकः वृक्षाच्यालं ३ ।के नामालं १६४६ वर्गलकुनुवीयुः वे सं २ ६।

विकेत-मरहत टिप्पक वर्षेत्र है । पूनवर विवासका ने अनिनिति को ।

सिद्धान्त एव चर्चा ी

ग भण्हार।

२७३ प्रति स० २४ । पत्र स० १० । ले० काल स० १६ 1वे स० २००७ । श्र भण्डार । २७४ प्रति स० २६ । पत्र स० ६ । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० स० २०४१ । श्र भण्डार । विशेष स्कृत टिप्पण सहित है ।

२७४ प्रति स०२७। पत्र स० ६। ले० काल स०१८०४ ज्येष्ठ सुदी २। वे० स० २४६। क भण्डार। विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों मे है। शाहजहानाबाद वाले श्री बूलचन्द बाकलीवाल के पुत्र श्री ऋषभदास

दीलतराम ने जैसिंहपुरा में इसकी प्रतिलिपि कराई थीं। प्रति प्रदर्शनी में रखने योग्य है।

२७६. प्रति स०२८। पत्र स०२१। ले० काल म०१६३६ भादवा सुदी ४। वै० म०२४८। के भण्डार।

॰७७ प्रति स० २६। पत्र स० १०। से० बाल ४। वे० स० २५६। क भण्डार। ३७५ प्रति स० ३०। पत्र स० ४५। ते० काल स० १६४५ वैद्याखसुदी ७। वे०स० २५०। क भण्डार।

२७६. प्रति स० ३१ । पत्र स० २० । ले० काल 🔀 । वे० स० २५७ । क भण्डार ।

२८९ प्रति सं० ३३ । पत्र स० १२ । ले० काल × । वे० स० ३८ । या भण्डार । विशेष-सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी । पुस्तक चिम्मनलाल बाकलीवाल की है ।

२५२ प्रति स०३४ पत्र स०६। ले० काल 🗴 । वै० स०३६। ग्राभण्डार।

२-२ प्रतिसः २ ३४ । पत्र स० १० । ले० काल स० १८६१ माघबुदी ४ । वे० स० ४० ।

२५४ प्रति स० ३६। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० स० ३३। घ भण्डार। २५४ प्रति स० ३७। पत्र स० ४२। ले० काल ×। वे० स० ३४ घ भण्डार। विशेष—हिन्दी टब्वा टीका सहित है।

२८६ प्रति स० ३८। पत्र स० ७। ले० काल 🗙 । वे० स० ३४ । घ मण्डार । २८७ प्रति स० ३६ । पत्र स० ५८ । ले० वाल 🗙 । अपूर्ण । वे० व० २४६ । इट मण्डार ।

विशेष--प्रति सस्कृत टीका सहित है।

न्म प्रति स० ४०। पत्र स॰ १३। ले॰ काल ×। वे सं० २४७। स भण्डार।

२८६ प्रति स० ४१ । पत्र सं० म मे २२ । ले० काल 🗙 । स्रपूर्ण । वे० स० २४ म । इ मण्डार ।

२६०. प्रति स० ४२ । पत्र सं० ११ । ले० काल 🗙 । वे० स० २४६ । ह मण्डार ।

२६१ प्रति स० ४३। पत्र स० २६। ले० काल ×। वे० र्यं० २५०। स भण्डार।

विशेष-भक्तामर स्तीत्र भी है।

>6 T

मध्य प्रतिसाधका प्रशासन्त न्या के नालासँ शबद्धा के सामका प्रशासन्त सम्बद्धार । रेक्ष्में प्रतिसी क्षक्षा प्रवासी क्षांका कालां ×ावे सं २१२ । का सम्बार । विकेर-एपो के करार दिल्ही में अर्थ विका हवा है।

२३.४ प्रतिसंधक्षानवर्षक्षाते कल्ला×ाने संस्थातः जन्मारः

२.ध⊁ प्रतिस धकायदर्ध ३६। ले क्ला×ावे शं २३४। कालमारः

२६६ मदिसं• ४८ । यस सं १२ । से जल्ला सं १६९१ वर्गलक बुरी ४ । वे सं २१४ । इ. जीगर

श्रद मित्र सं प्रदायन सं १७। श्रे यान ×ावे सं २६६। अर सम्बद्धारः ६८. प्रति सं ४०। पण श्रे रूट। वे वाश ×। वे से १४७। क जयार।

२६६ प्रतिस ४१। पण सं ७ । के समा ४ । स्टूर्जा वे ६ ११६ : इ. बाह्यार । २० प्रतिस्तं ३०। यस चं १ ते १६। ते याला ≾ास्तुर्वा वं चं १११। इत्यापारा

२०१ प्रविस ४३ । वर्ष ६ । वे वल्त ४ । ब्यूकी । र्रे ३६ । ब बचारा

२०२. प्रदिस क्ष±ावन सं ६२ । ते नाल ×ादे सं २६१ । क्ष त्रपार ।

विकेय-अति विक्वी वर्ष समित है। **२०३ प्रतिस ४८ । यस क्षे १५ । ते काल ⋉ । अपूर्ति के ७ १६९ क क्यार ।** के ध्र प्रति सं ध्रक्षा वन श्रंदिक श्रेष्ट कार प्रदेश स्था क्षा कार । के प्रतिस केका पत्र से १०। ते पाल ×ार्थ में १६ दाक बचारी

विसंद---वेपल प्रयम् सम्बाद हो है । हिल्दी वर्ष बहिद है । दे•६ प्रक्रिस क्षेत्र) नवलं धात गल ×ावै वं १२० (च बन्तर)

विशेष—तींबप्य दिन्दी वर्षे थी दिया हुया है।

के अ. ब्रुटिस्ट के का प्रवास का का कि नाम × । बनार्गाने सं १९६ । च भयार । हें द्राप्रतिका है। पन सं १७। से काल सं १ २ कालूप कुरो १३। पीर्ला (के सं १३)

च भारतर ।

> ३ ६ प्रतिस्य ६१ । बन वं ११ । ते शावारी १८५१ व्येष्ठ मुदी १। वे वं १३१ । च वनार। उर्क प्रशिद्ध देश | बच से १६ | से बाल से १ कर बेंड लुती १२ ३ में १३२ । मार्थशार । देश्य प्रतिका केश प्रवास १८३म पान से १३४० में से १३४० मा अपनार। रियोग---बाङ्गाल केडी वे प्रतिसिधि शरपानी।

मेर्फ प्रतिसं ६४ । यस सं ६६ । गे माला ४ । मे से १६६ । या अन्यार । ३१६ प्रतिसंद्धानप्रधी २६ न २८ तमे वा ५ । बचूनी । वे १३२ । चनन्द्रारः ३१४ प्रतिस ६६ । यस्तं १४ । वे याला∨ । वे लं १३६ । चामण्डार । देश≱ प्रतिया है । यस ले ४९ । से पाल > । बार्ला (वे ले १६० च मध्यार ।

विशेष -- टब्वा टीवा सहित । १ ला पत्र नही है ।

रे१६ प्रति स॰ ६८। पत्र स० ६४। ले० काल स० १६६३। वे० स० १३८। च भण्डार। विशेष---हिन्दी टब्वा टीका सहित है।

२१७ प्रति स० ६६ । पत्र स० ६४ । ले० काल स० १६६३ | वे० स० ४७० । च भण्डार । विशेष—हिन्दी टब्वा टीका सहित है ।

३१८ प्रति स० ७०। पत्र स० १०। से० काल ४। वे० स० १३६। छ भण्डार। -विशेप--प्रथम ४ पत्रा में तत्त्वार्थ सूत्र के प्रथम, पचम तथा दशम प्रधिकार हैं। इसमे श्रागे भक्तामर म्तात्र है।

३१६. प्रति स० ७१। पत्र स० १७। ते० काल ×। वै० स० १३६। इर् भण्डार।
३२० प्रति स० ७२। पत्र स० १४। ते० काल ×। वै० स ३०। ज भण्डार।
६२१ प्रति स० ७३। पत्र स० ६। ते० काल स० १६२२ फाग्रुन सुदी १४। वे० स० ६०। ज भण्डार।
३२२ प्रति स० ७४। पत्र स० ६। ते० काल ×। वे० सं० १४२। मा भण्डार।
३२३ प्रति स० ७४। पत्र स० ३१। ते० काल ×। वे० स० ३०४। मा भण्डार।
३२४ प्रति स० ७६। पत्र स० २६। ते० काल ×। वे० सं० २७१। ज्य भण्डार।
विशेष—पन्नालान वे पठनार्थ लिखा गया था।

२२४. प्रति सट ७७ । यत्र स० २०। ले० काल स० १६२६ चैत सुदी १४ । वे० म० २७३ । ञा भडार विगेप—मण्डलाचार्य श्री चन्द्रकीर्ति के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी ।

३३६ प्रति स० ७६ । पत्र स० ११ । ले॰ काल ४ । वे० स० ४४६ । व्य भण्डार । ३३७ प्रति सं० ७६ । पत्र स० ३४ । ले० काल ४ । वे० म० ३४ । विशेष—प्रति टब्बाटीका सहित है ।

३३६ प्रति स० ८०। पत्र स० २७। ले० काल ४। वे० स० १६१५ ट भण्डार। ३३६ प्रति स० ८१। पत्र सँ० १६। ले० कान ४। वे० म० १६१६। ट भण्डार।

२४० प्रति स्मर्ट ६ पत्र स०२०। ले० काल 🔀 । वे० सं० ८६२१। ट भण्डार । विशेष—हीरालाल विदायक्ष्या ने गोस्लाल पाड्या से प्रतिलिधि करवायी। पुस्तक लिलमीचन्द छात्रहा सनाची की है।

३४१ प्रतिस्ट⊏ः । पत्रस० ४३ । से० वालस० १६२१ । ते०स० १६८२ । ट भण्डर ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्या टीका सहित है। ईसरदा वाले ठाकुर प्रतापसिंहजी के जयपुर ग्रागमन के समय सर्वार्ट ामसिंह जी के श्रासनकात्र में जीवरणलाल काला ने जयपुर में हजारीलाल के पर्टनार्थ प्रतिलिपि की। ३४२ प्रति स्पट ⊏४। पत्र स० ३ से १८। ते० काल ✓। ग्रपूर्ण। वे० स० २०६६। विक्त-चतुर्व सम्बान ने है। इसके बावे नविष्टुप्यपूता, वसर्वनालपुत्रा, सेवशस्तुत्रा, सेवशस्तुत्रा, सेवशस्त्रत्रो तना विकासम्बद्धा है।

२४२ तक्याने सुच क्षीका जुदासान्दर एक सं १६६ । सा १९४८ वक्षा मनन्त्रसार । विकन् निकन्त |र काल × । के शास में १७१३ म मानल क्षी ७ । वे सं १६ ी पूर्व । मानल कारा ।

दिश्य — भी जुल्हाकर तृति १६ वी खालों के तंत्रत के बच्ची विदान के हच्चीरे १० वे भी भावन इ.स.ची रूपमा की तिल्हें टीकार्य तथा कोशी २ कमार्य की है। भी जुल्हाकर के हुद का नाम विकासीर जा की जारफ क्योंकि अधिका वर्ष देवेनावीति के तिल्य के।

े. १४४४ मिटिनी १२।पन सं ११४०। के कम्म सं १७४० कामन सुनी १४। सर्जा। वे संपद्माक कमारा

निकेच--३१६ के धारी के वन नहीं हैं।

१४४ प्रतिश्ची है। यस सं १६६। में सम्ब−×ादे सं १६६। इस्थानगर।

केश्र इस्ति स अरावन वं देश्याणे काल-×ावे सं ६व । का बच्चार।

देशक करनार्वसम्बद्धाः इति —सिद्धानेत गरिकः। यत वं दशकः सा १ ई%४ई हवा सना-

रहर । रिश्तम-विकास्य १९ - रामा× । ने - प्रायम-× १ नहुष्टी । वै. पी. ११६ (क. प्रमार १ रिक्रोय---रीम कमान तक ही हैं । माने पन मही हैं । त्यापरि तुप की पिरतुस दीका है ।

३५०, तरकार्यमुद्द कृष्टिर्णणणणणणा । यस वं १९। था १९४२ वक्षा सन्तर—संस्कृतः नियस्त निकाला । रामस्त-×ावे सम्मन्तं १९३२ कम्पूरं कृषि संदुर्शन वे वं ४० । का सन्तरारः।

विकेश---वालपुरा वे यो कनक्नीति ने याने वस्नार्थ कु वेदा के प्रतितित करवासी।

प्रकारत —वंदर् १९६६ वर्ष काहुक वाणे प्रकार को पंचार तियाँ एक्सरे को नामपुरा कारे । ज मी १ भी भी जी बंद्रक्रीस विजय राज्ये व कमनवीति निकारियां आत्वाचे कानाव यु वेदा केन विकित्तं ।

३५६ महिल्लं कावन में ६२ । से नाम में १६८६ चन्द्राचनुती १८। द्वीन सम्बन्ध वर्ष दुर्मा के मं १९४१ क बन्दार।

विरोप---पाना) बक्त धर्मा ने प्रतिनिषि नी नी । श्रीपा निस्तृत है ।

. १६१ प्रतिस्थिति । . १६१ प्रतिस्थिति । स्थानं १६। ने नामानं १७०६। वे नं १ ४६। १६ प्रतास्थारः

१४२ प्रक्षितः क्षायमधे पक्षे रहे।के याल-×ाध्यूषी के शं दृश्का धारा ६४३ प्रक्रिका केशयम संदर्भने याल-×ाध्यूषी के संदर्भ द्वापारा

१४४ तत्त्वार्थसूत्र आया∸य सत्तासुल्य कासस्वीताका यम सं १६९१ वा १९१४ र स्वर्थ मन्त-दिन्दीनवा प्रियम-निवाला प्रयोग सं १६१ कानुसुन्दिर । ने यान-४०१ वृत्ती में राष्ट्रा

क सन्दर्भ ।

विशेष--- यह तत्त्वार्धसूत्र पर हिन्दी गद्य मे मुन्दर टीका ह ।

३४४ प्रति सट २ । पत्र स० १५१ । ले० काल स० १६४३ श्रावण सुदी १४ । वे० स० २४६ ।

क मण्डार ।

३५६ प्रति स० ३ । पत्र म० १०२ । ले० काल म० १६४० मगिसर बुदी १३ । वे० म० २४७ ।

क भण्डार्।

३४७ प्रति स०४। पत्र म० ६६। ले० काल स० १६१५ श्रावरण मुदी ६। वे० म० ६६। म्रपूर्ण। स्व भण्डार।

े ३४८ प्रति स०४ । पत्र स०१००। ले० काल ×ी मपूर्गा। वे० स०४२ ।

विशेष-पृष्ठ ६० तक प्रथम प्रध्याय की टीका है।

३४६ अति स०६। पत्र स० २८३। ले॰ काल स० १६३४ माह सुदी ८। वे० स॰ ३३। इ भण्डार

३६० प्रति स०७। पत्र स० ६३। ले० काल स० १६६६ । त्रे० स० २७०। ऋ भण्डार।

३६१ प्रति स० = । पत्र स० १०२ । ले० काल ४ । वे० स० २७१ । ऋ भण्डार ।

३६२ प्रति स्ट ६ । पत्र स० १२६ । ने० काल स० १६४० चैत्र बुदी ६ । वे० स० २७२ । ड भण्डार ।

विशेष-महोरीलानजी खिन्द्रका न प्रतिलिपि करवाई ।

३६३ प्रति स० १०। पत्र स० ६७। ले० काल म० १६३६। वे० म० ५७३। च मण्डार।

विशेष-मागीलाल श्रामाल ने यह ग्रन्य लिखवाया।

३६४ प्रति स०११ । पत्र स०४४ । ले० काल स०१६४४ । वे० स०१ ८५ । छ्नण्डार ।

विशेय—मानन्दचन्द के पठनार्घ प्रतिलिपि की गई।

३६४ प्रति स०१२। पत्र स० ७१। ले० काल १६१४ श्रापाढ मुदी ६ वे० सं• ६१। मा भण्डार। विशेष—मोतीलाल गंगवाल ने पुस्तक चढाई।

३६६ तत्त्वार्थ सूत्र टीका—प० जयचन्द छाबझा। पत्र स० ११८। ह्रा० १३४७ इक्ष । भाषा हि दी (गद्य)। र० काल स० १८६९। ले० काल 🗴 । पूर्ण। वे० सं० २५१। क भण्डार।

३६७ प्रति स०२। पत्र म० १६७। ले० काल स० १८४६। वे स० ५७२। च भण्डार।

१६८ तत्त्वार्थं सूत्र टीका—पाढे जयवत । पत्र स० ६६ । आ • १३×६ इख । भाषा-हिन्दी (गर्य) । विषय-सिदान्त । र० काल × । ने० काल स० १८४६ । वे० स० २४१ । छ भण्डार ।

केंद्रक जीव ग्रघोर तप करि सिद्ध छै केंद्रक जीव उर्द्ध सिद्ध छै इत्यादि।

इति श्री उमास्वामी विरचित सूत्र की वालाबोधि टीका पांडे जयवत कृत सपूर्ण समाप्ता । श्री सवाई के किहने में वैप्एाव रामप्रसाद ने प्रतिस्थि की ।

i

६६६ तस्याचेसूत्र टीका—चा० कनक्षीति त्या वं १४६ । सा १२_४४६६ हम । साना १८७ (वस्र) । दिवल-विद्याला । ए कम्प × । ते वात्र × । समूर्ण । वे वं १५६ । क्रमण्याः ।

पिलेर---सरवार्वपुत्र नी शुवतलारी बीका के बालार नर हिन्दी बीका शिक्षी नयी है। १४६ से बाले पर

मरी है। ६७ प्रति सः गापण सं १ दानि याल ≻ावे सं १६ । स्त्र वस्पारः। ६०१ प्रति स० देशपण सं १६१। ने नाम सं १००३। विकास मुद्दी हार्थ सं २०३। सामगरः। रिप्से—असमोऽ निकासी शिवालका सन्तेना में स्त्रीतिया गीची।

5-0- प्रति सं ४। पर वं ११२। में राज्य X। वे वं ४४६। स स्थार। १-०६ प्रति सं ४। पर वं ११। में राज्य वं १०१६। वे वं ११६। इ स्थार। विकेट-के प्रतिस्थान राज्य में वेदरार में विकासामक सोबी हे अधिनेति करवाई।

निक्षेत्—चत्रुराञ्चास ने स्रोतिनिये गो। कोटोलास के लिया पा दान मोतीसाल पा बड्ड ससीयर जिसा रे प्रदुष्ट प्राप्त के प्रदेश माले के शिका हिस्सी पण ने हैं यो समस्य उत्तर हैं।

३७६ प्रतिका २ । पत्र के २ । के तमा ४ । के वी २६७ । क जनगर।

३०० प्रतिसः देश पत्र वे १०।।वे सम्बद्धाः वे १६ । का प्रचारः।

्रक्त स्वार्थसूत्र माथा— रिकारणणाः परतं देशा मा हे-४० द्वा । समा—हिन्से परा क्रिक्ट स्वार्थसूत्र माथा—रिकारणणाः परतं देशा मा क्रिक्ट द्वा । समा—हिन्से परा क्रिक्ट—स्वारणाः र कक्तार्थं देशे निवार्थं दिश्शे । इति रिकास स्वारः

१६८, तस्वार्कसूत्र मापा विषये १४।वा १२०० हवा धरात-हिन्ती (विषय-दिवार) र कार र वि वास X १६६ वि ४६१।

र काल ≺ाद्वे ताल ×ाद्वकात छ प्रस्टा ६८० प्रतिसः २ ।पन सं देवेप्रसाले तलार्थ हेट जैवला बुद्दो हरू ।बदुर्मा हे वं

६७। सामभार। ६८१ मधिसं दे। परतं १६। ते पल ×। वे वं ६ । आह सम्बद्धारः

६<१ प्रतिश्रं ३ । पर र्गरीशों राज्य ×ावे वं ६ । आर वस्तरः विकेर---विकिय सम्बद्धाः स्व

दिन प्रतिस प्रापन व १९।ते नल वं १९४१ जन्न पुत्री १४। ते सं १६। स नवार स्वत्रे प्रतिसं ४। पन वं ५६। वे पन ×ाते वं ४१। वा क्यार।

सम्बद्धाः स्थितः इतिहास्य प्रदेशे देशे । ज्ञानास्य अप्रतिकारि । सम्बद्धाः । ज्ञानास्य इतिहास्य स्थानास्य । ज्ञानास्य स्थानास्य स्थानास्य स्थानास्य ।

3=४ प्रतिस०७। पत्र स०८७। र० काल—Х। ते० काल स०१६१७ । वे० स०५७९। चभण्डार।

विशेग-हिन्दी टिप्पण सहित ।

३८६ प्रति स० ८। पत्र स० ५३। स० काल ४। वे• स० ५७४। च भण्डार।

विशेष-- १० सदास्सजी की वचनिका के प्रनुसार भाषा की गई है।

३८७ प्रति स• ६ । पत्र स० ३२ । ते० काल × । वे० स० ५७५ । च भण्डार ।

3पन प्रति स० १०। पत्र स० २३। ने० काल ×। ने० स० १प८ । छ भण्डार।

3८६ तत्त्वार्थसूत्र भाषा ।। पत्र स० ३३। म्रा० १०४६ है इऋ। भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सिद्धान्त । र० काल ४। ले० काल ४। भपूर्ण । वे० स० ८८६ ।

विशेष-१ थवा तथा ३३ में मागे पत्र नहीं है।

रै६० तत्त्वार्थसूत्र भाषा | पत्र स० ६० से १०८ । म्रा०११×४-दे इख्र । भाषा–× । हिन्दी । र० काल ४। ले० काल स०१७१६ । म्रपूर्सी । वे० स०२०⊏१ । श्र्म भण्डार ।

प्रशस्ति—सवत् १७१६ मिति श्रावण सुदी १३ पातिसाह ग्रीरगसाहि राज्य प्रवर्त्तमाने इदं तत्त्वार्थ शास्त्र सुनानान्मेक भ्रत्य जन कीधाय विदुषा जयवता कृत साह जगन पठनार्थं बालावोध वचिनिका कृता। िकमर्थं सूत्राणा। भूतसूत्र प्रतीव गभीरतर प्रवर्त्तत तस्य गर्ध केनापि न भ्रवबुध्यते। इदं वचिनका दीपमालिका कृता कश्चित भव्य इमा पठित ज्ञानो=ग्रोत भविष्यति। लिखापित साह यिहारीदास खाजानची सावडावासी ग्रामेर का कर्म्मक्षय निमित्त लिखाई साह भोला, गोधा की सहाय से लिखी है राजश्री जैसिहपुरामध्ये लिखी जिहानाबाद।

देश् प्रति स०२। पत्र स०२६। ले० काल स०१८६०। वे० स०७०। स्व मण्डार। विशेष-हिन्दी मे टिप्पण रूप मे क्रर्थ दिया है।

३६२ प्रति स०३। पत्र स०४२। र० काल \times । ले० काल स०१६०२ प्राप्तोज बुदी १०। वे० स० १६५। मा भण्डार।

विशेष—टब्वा टीका सिहत है। हीरालाल कासलीवाल फागी नाले ने विजयरामजी पाड्या के मन्दिर के वाले प्रतिसिवि की थी।

दे६३ त्रिभगीसार्—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र स० ६६ । ग्रा० ६३ँ×४४ँ इख्र । भाषा–प्राकृत । विषय— ^{सिद्धात} । र० काल × । ले० काल स० १८५० सावन सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ७४ । स्व अण्डार ।

विशेष--लालचन्द टोग्या ने सवाई जयपूर मे प्रतिलिपि की।

३६४. प्रति स॰ २ । पत्र स० ५८ । ले० काल स० १६१६ । म्रपूर्ण । वे० स० १४६ । च भण्डार । विशेष—जीहरीलालजी गोषा ने प्रतिलिपि की ।

३६४ प्रति सट ३। पत्र स० ६६। ने० काल स० १८७६ कार्तिक मुदी ४। वे० स० २४। व्यामण्डार। विशेष—भ० क्षेमकीर्ति के शिष्य गोवर्द्धन ने प्रतिलिपि की गी।

```
िसिकास्त एव चर्चा
```

\$2] ३६६ क्रिमगीसार दीका-विवेद्यतन्त्र । वदनं ४०। या १२×६३ दश्च। नाग-नार्या । नियस-

मिब्रम्य । र काम × । ने काम नं १ ए४ । दुर्मा वे पं १ । कामकार ।

विकेप--- श्री नहाचना ने स्वयञ्जानी प्रशिक्षित की नी । ३१७ व्रतिस २। पन सं १११। वे काल X । वे वे १०१। कालकार ।

३६८, प्रतिस ३ । पश्चे १६ ते ६६ । में नान X । सपूर्ण । में नं १६३ । क्रू मन्तार ।

३६६ इरावेपाक्षिकसूत्रणा । पत्र मं १ १ था १ ४×४ इता क्या-सङ्गत । नियस-सन्नत ए शाम ×। ते काम ×। सपूर्ण। वे थे २२३१। का वच्छार।

४०० व्यक्तिक्षां दीका । पर नं १ वे ४२।या १ ईX४६ इस्र । नामा बेन्द्र । विका-सम्पर्धाः काल ×ाते काल ×ायपूर्वाचे वं १ ता आह जव्यारा

४ १ कुरूबर्समद्द—नेमिचन्द्राचार्ये। यव नं ६। बा ११×४३ दखः नशः–मद्दरः र नल <ा के क्यन्त में १६६६ नाम सूची १ः। पूर्णा वे नं १ द्राध्य नच्यार।

इसस्ति-वंदत् १६३६ वर्षके भाग मान कुरनारके १ विसी । प्र•र प्रतिसंद। यन संदर्श के कल × । वे वंदरश का क्यार ।

प्रकृष्ट प्रति स ३ । यह में ४ । से काल से १०४१ शालीय क्षी १६ । में १६१ । प्राचनार थु प्रति सं थु। यन सं ६ ते हाले जल ×। ब्यूर्णा ने सं १ २५। ब्यूज्यार । विकेट - इन्या सीका पश्चित ।

प्रथ× प्रतिस ≥ । यत्र सं ६३ ते राज × । वे सं २६२ त्या लखार ।

भ ६ प्रशिक्त ६। पंत्र ते ११। ते कला सं १ २ । वे सं ३१२ । काल्लारा रिक्टेन--विन्धे वर्ग सक्ति ।

प्रभद्र प्रति स क । यन सं १ । में माल सं १ १६ भारता सूची ६। में नं ११३। क लगार ⊻ म. ब्रति संमः पर वंद । के कला सं१ १० पीप लूपी १: (के सं ११८) क कमार । प्रकट प्रतिसार । पदर्व राति कान वं १००४ मानसादुवि १ वे नं ३१४ । इस्तारा विकेत-अधिका संस्कृत क्षेत्रा विका विका

धर प्रतिसी १ । पन से १६। में काल ते १ १० ल्पे**ड पूर्ण १**२। वे से ३११। का मनार। प्रशः प्रतिस ११।वन सं ६।ने नात्र ×। वे स ३११ क स्थार। प्रदेश, प्रतिसक् देश। पत्र संकाति तमा अर्थने संबद्धा का सम्बद्धाः

रिवेच-जानाओं के बीचे संस्कृत में कामा वी हुई है ।

प्रदेश, ब्रह्मियाँ देश। यस वं ६६। ने सामा सं १७०६ ल्लेख बुद्दी (वे वं ६) बा सम्बार । निर्मेश-मंत्रात के पर्याच्याची कम दिने हुने हैं। टॉफ के पहर्ववाद बैस्टालव के ये. पू बरवी के सिन्न रेनराव के प्रज्ञार्व प्रक्रिमिति 🚮 ।

अरुप्र मित्र संव र्षा वय मान रहे । वन मान हा विव में व इन रच मात्रार र विल्या मान्या मानवार्या कार दिए होते हैं व प्रदेश, प्रति सर १६ । वन १० व में सामे वान भागा । येट में १०० वा नामा । अर्थ प्रति संद १७ १ पत्र में ० १ १ रह कार । १ ३० में १४३ । य नामा । विकेत-ति ही र श दीसा सरित है। प्रदेश प्रति सर इस । प्रवासक र । वे नाप र । वेक मक ३१० । के मादार । निर्देश-मान्त्र ह पर्दादश्या राज्य निधे हैं ह श्रेष्ठ प्रति सद ६८ । यस मत ७ । भेर भाग । वे व भाग प्रति मा प्रति । र²र प्रति स्ठ २८। तक सं∗ १। मेंठ बार ्। ये० स्ट ^११८। ए प्रस्तार। प्रकृति मह प्रशासन मण हम । सन मान अरा मेन संत हरूर । क भाषार । रिनेष-साकृत कार हिन्दे वार्व शरित है। अन्न प्रति स्ट २२ । यन संत ७ । ए० सात अ । तेन संत १६७ । य मध्यार । विभाग-मार्ग म प्रयास्थाचा पाट दिन, है। रियः प्रति सद २३ । पप ग० ४। ने० साउ > । प० ग० १६१ । पा मण्डार । प्रदेश प्रति स्वरूप्तभाषा मेर १४ । मेरु यान सर्व १६६६ दिरु दानाइ सुदी २ । वे. मा १२२ । द्ध माम्मार ।

विभेष—हिंदी स बात्तानकाम दीना महित है। यं • मगुर्धु ज ने नात्त्र दान ने प्रतिनिति मी भी।

४२४. प्रति स० २४। वन मं० ८। म० नात्र मं० १०६२ भारता बुदो ६। यं० न० ११२। हर भण्या।

विभय—ित्र दो दस्या दीना महित है। क्रयभगा मारागरण त प्रतिनिति भी भी।

४२६ प्रति स० २६। यम म० १३। त० मान ८। ये० मं० १०६। ता भण्या।

विभेष—रम्बा दीना महित है।

४२० प्रति स० २६। यम म० ८। ये० मान ४। ये० म० १२६। त्र भण्या।

४२० प्रति स० २६। यम म० १०। ये० मान ४। ये० मं० २६६। त्र भण्या।

४२० प्रति स० २६। यम म० १०। ये० मान ४। ये० म० २६८। त्र भण्या।

४३० प्रति स० ३६। यम म० १०। ये० मान ४। ये० म० २७४। त्र भण्या।

४३१ प्रति स० ३१। यम म० ११। ये० मान ४। ये० म० ३७६। त्र भण्या।

विशेष—हिंदी प्रर्थ महित है।

४३२ प्रति सं० ३२। यम म० १०। ये० मान ४। ये० मं० ३७६। त्र भण्या।

३४] [सिद्धान व्यं वया

विनेद-अति उत्या डीला बहित है। वीतोर नगर में पत्नवैनाम गैलानव में मुनर्तन के संगमती मू में महारक वयतगीत तथा दसके पह में मा वेक्सपीति के सम्मास के किया गरीहर में प्रतिमिधि सी थी।

थ्रके प्रति सं० केके। यस सं १६। से नाल ×ावै सं ४६६। स्मायपार।

निमेर---१ पम तक प्रमा बंधह है जिसके जनन १ नको में टीना भी है। इसके बाद 'कन्नर्गनसन्समन' मन्त्रियोगायार्ज कुछ दिना हुमा है।

प्रदेश प्रतिसः देश। व्यक्तं १। वे नाम वं १६२२। वे सं १६४६। हा सम्बार।

दिमेर---संस्कृत में पर्याजनात्वी कम्म विकेष्ठ हैं हैं। प्रदेश- प्रति सः हे⊁ा त्वर संदेश के कम्म संदृष्ट पर्याजनात्वी के संदृष्ट कि

भगारः । विनेद----प्रति संस्तृत शैवा तर्तृत्व है । भूते हुरुस्टामुक्कि---प्रसासकहु । यव त्रं है १ । या ११_९/८५ हम्र । अप्रा--त्रस्तुत । विपन-

४३६ हरूमसंप्रदृष्टिच-प्रसाचन्त्र । पत्र वं ११ । सा ११_६×६_६ इक्षा।कसा-संस्कृतः विपन-स्थितन्त्र । र नाम × । ते नाम सं १०२२ नेपसिट नुर्वाशः प्रदृष्टि । दे दं १ १३। कालभारः ।

विदेय-नद्दाक्त ने बनपुर ने त्रविनिधि दो थी।

प्रके प्रशिक्ष २) पण में ११ कि समार्थ १११ तीन मुद्दी है। वे वे ११७ कि समार्थ प्रदेन, प्रशिक्ष है। पण में १ के १९ कि सम्मार्थ १७० मा समूर्य कि वे ११० कि समार्थ विकेद—समार्थ समार्थ में समार्थ के प्रविक्ति सी थी।

¥रे⊾ प्रतिस ४ । यन वं २२ । नं नामार्स १७१४ कि समस्वयुक्ती११ । वे ७ १६ ।

विद्यान । ए. नाम 🗴 १६ जान में १६६६ याक्षेत्र वृद्धि १ (पूर्ण) है में ६ । रिकेट-१६ मन वी प्रतिविधि सम्मित्तर वय-त्याम विस्वस्य सम्मिद्ध ने बातनसम्म है नामपुरी म ची वक्तप्रस वैद्याना में हुई थी।

स्प्रिमिय-ब्युलावियके नावादिन पुन्तावारी शोवपावारे शंदर् १६६१ वर्षे वायांच वाँच १ प्रवादि स्प्राविध्यत अपरेशास दिवस्तार वार्यावेत साल व्यर्शनामें नाकपुर वाराव्ये वो शंदर्वकाल देखालये वो पूर्वके संप्रातारी वह अपराने वारास्त्रीयको भीपु एक प्रायानियाँ वा वीत्रव्यविद्यालयम् व वो प्रवादनामें रेशास्त्रपूर्ण वा वीत्रवादन के वा व्यवसाय विद्यालयम् व विद्यालयिक्य वे वो वार्यालयम्बरातियम वे पी स्पित्यानिस्त्रवादनीयम् वं वी व्यवसाय विद्यालयम्बर्ग विद्यालयम्बरात्य वंद्यालयोगिय वा वार्यालय विद्यालयोगिय स्थान मान्यवाद वार्यालयम्बरात्य वा वारामा व्यवसाय विद्यालयम्बरात्य वंद्यालयम्बरात्य वा वार्यालयम्बरात्य वा वार्यालयम्बरात्यालयम्बरात्य ४४१ प्रति स्ट २ । पत्र सर् ४० । ले० साल 🗶 । बेर सर्व १२४ । ध्रा भण्डार ।

४४२ प्रति स० ३ । पत्र म० ७=। मै० काल स० १=१० मात्तिम बुदी १३ । वे० स ३२३ । क भग्डार्।

४४३ प्रति स०४। पत्र न० ६६। न० नाल स० १८००। वे० न० ४४। छ भण्डार।

४४४. प्रति स० ४ । पत्र स० १८६ । ते० काल स० १७६४ ग्रपाड बुदी ११ । वे० स० १११ । छ

भग्डार ।

स्वात्माये ।

५४४ द्रव्यमप्रहटीका । पत्र स० ४८ । घा० १०×८३ एका । भाषा–सम्मृत । र० काल ×। में दिनात संव १७३१ माथ बुदी १३ । वैव सव प्र१० । स्व भण्डार ।

विशेष—टीका के प्रारम्भ में लिखा है कि मारु नेमिचन्द्र ने मालबंदेश की धारा नगरी में भोजदेव के पासनकाल ने श्रीपाल मटलेब्बर के श्राथम नाम नगर में मोमा नामक श्रावक के लिए द्रव्य-सग्रह की रचना की थीं ।

४४६ प्रति सं०२ । पत्र म०२४ । ले० काल 🗸 । प्रपूर्ण । वे० स० ५५ न । प्रप्र भण्डार । विजेप--टीना ना नाम वृहद् द्रव्य सग्रह टीका है।

४४५ प्रति सब् ३ । पत्र सब् २६ । लेव काल सब् १७७= पौष सुदी ११ । वेवस्व २६५ । व्य भण्डार ।

४४८ प्रतिसञ्छ।पत्रसल्हरः। लेल्मानसल् १६७० भादवासुदी ४ | वेल्सल्हरः। स्व भडारः।

विशेष---नागपुर निवामी खढेलवाल जातीय मेठी गौत्र वाले सा ऊदा की भार्यी उदनदे ने पत्य ब्रतीद्या-पन म प्रतिलिपि कराकर चढाया ।

४४६ प्रति म८ ६६। ले० बा० स० १६०० चैत्र युदी १३। वे० स० ४५। घ भण्हार।

४४० द्रव्यमग्रह भाषा । पत्र स० ११ । ग्रा० १०१×८ इझ । भाषा-हिन्दी । विषय-सिदान्त। र० काल ×। ले० काल म० १७७१ मावरा बुदी १२ । पूर्गा वि० स० ⊏६ । ऋ भण्टार ।

विगेप--हिन्दी में निम्न प्रकार मर्थ दिया हुमा है।

गाथा--दब्ब-सगहमिरा मृशिणाहा दोस-सचयबुदा सुदपुण्णा। तल्युन्तघरेण गोमिषंद मुणिएगा भिएव ज।।

मर्थ- भो मुनि नाथ । भो पढित नैमे ही तुम्ह दोष सचय नुति दोषनि ने जु सचय नहिये समूह तिनतें चु रहित ही । मया नेमिचद्र मुनिना भिगत । यत् द्रव्य सग्रह इम प्रत्यक्षी भूतां मे जु ही नेमिचद मुनि तिन खु कह्यौ यहु द्रव्य सग्रह शास्त्र । ताहि सोधयसु । सी घौ हूं नि नि सौ हू । तनु मुत्त घरेगा तन् कहिये थोरो सौ सूत्र कहिये । सिडात तानी जुधारक हो। श्राल्प शास्त्र करि सर्युक्त ही जुनेमिचंद्र मुनि तेन कहाी जुद्रव्य सग्रह शास्त्र तानी भो पहित सोधा।

इति श्री नेमिचद्राचार्य घिरचितं द्रव्य सग्रह बालबोध सपूर्ण । सवत् १७७१ शाके १६३६ प्र० श्रावण मासे कृष्णादी तृयादस्या १३ बुधवासर लिप्यकृत विद्याघरेण

४४१ प्रति स० २ । पत्र स० १२ । ले० काल ⋉ । वे० स० २६३ । ऋ भण्डार ।

```
( Presidence of Comment of Commen
```

४५० प्रतिस दे। पर्वारते हते १६। के बक्त से हु इस क्येष्ठ भूकी । वे संकर्भ कथार।

विकेच--शियी सामान 🌡 ।

अध्ये प्रतिस्य अंशपन का अला कि प्रतास में १०१४ जीवनिय पुत्री ६ । वैश्ली ११६। का प्र विकेश-सर्वाणी प्रामकल भी शीवा के सामार पर करना रचना को नहीं है ।

४४२४ प्रतिसं०४ । पण सं २३ । ले राज्य सं १८६७ श्रामीत पुरी । वे सं ६० । साम

प्रेटर प्रति से ६।यम मं २ ।के फल्ट ×ादे मं ४४।श बच्चार। प्रदेश प्रति से कापम से २७०१ के बल्त से १७४६ सावस्त्र पूर्व १३। दे में १११ ।

वचार । प्रभाव-कलावासकाराव रावका क स्वाप्ता । इक्ट्रांडस्था व्यक्तिको विस्त्रको ॥१॥

र्थर के जुरूमधीमह माया—पर्यसमार्थी। पर थं १६ । बा १६×४६ इस । माया—पर्यसमार्थी। पर थं १६ । बा १६×४६ इस । माया—पर्यसमार्थी मिनि द्वित्री। पैयान—सहासभी वा गर्मन ा र कम्म ×ा के काल सं १ नाय द्विर १३ । वे थं ११/९६

श्च कथार । ४३००. क्रम्पसम्बद्ध आया—यक्रमक्काक वीकरी त्या वै १० त्या ११ % भी रख । धरा-विणे

क्षण्या मुख्याना वाच्या वाच्

४३६ दुक्तसम्ब आयो— बाज्यस्य क्रायक्षाः पण वं देशः सा १६५/४६ द्वायः। वारा-विर् तयः । विरस-सक्कृतस्यो नापर्शनार कलासं १ देशस्य दृष्टिश्याकै वस्त्र × । दुर्तादे सं १९९ सामकारः

४६ मिठिको २ : पण नं ६६ । ते राज्य नं १६६ सम्बद्धाः १४ । वे सं ६९१ । व कष्णरः

४६९ मधिका दे।यर वं दर्शने कल्म ≾ाने सं ६१० ।कः प्रध्यार । ४६६ मधिका क्षीपण वं ४३ ।में कल्म लं १ ६६ ।में लंदर ।हालपर।

निवेद—जन ४२ के वाने क्ष्मणीवह यह ने है तेपित यह व्यूक्त है। ४६७. बूक्सकारद वाणा—वापणपद खायवडा । यस सं २ । जा १९०८ इक्का आता हिन्दै (पर्य)

भिष्य-आद्राष्ट्रमधे का वर्तनार पास ×ामे पान ×ापूर्णा वे तै ३व्२ । का प्रकार। ४६३ ळकि से २ (पण वे कामे पान में १३३६ । वे वं ११ । का प्रकार।

भरतः प्रतिस्त धा पन सँ द। वे पल वं १०७१ वर्तस्व पूरी १४। वे सं दहर । व

वियोद-व्यं नवातुम पामशीयाल वे समझ में प्रतिविधि की है ।

क्यार ।

४६६ प्रति स० ४ । पत्र स० ४७ । ने० कान 🔀 । वै० स० १६४ । मा भण्डार । विशेष—हिन्दी गद्य मे भी मर्थ दिया गया है ।

४६७ प्रति स०६। पत्र म०३७। ले० काल ×। वे० म० २४०। भा भण्डार।

४६८ द्रव्यसम्बर्भाषा—बाबा दुलीचन्द्र। पत्र स०३८। म्रा०११×५ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-

विशेष--जयचन्द छावडा की हिन्दी टीका के श्रनुसार वावा दुलीचन्द ने इसकी दिल्ली मे भाषा निन्दी थी।

४६६ द्रज्यस्यरूप वर्णान । पत्र म०६ मे १६ तक । झा०१२×५ इख । भाषा—सम्कृत । विषय-छह

१७० थवल । पत्र स०२६। ग्रा०१३४६ इखा भाषा-प्राकृत । विषय-जैनागम। र० कल ४। ने० काल ४। ग्रपूर्ण । वे० स०३५०। क भण्डार।

> ४७१ प्रति स०२ । पत्र मं०१ मे १६ । ले० काल 🗴 । ब्रपूर्र्ण । वे० म० ३५१ । क मण्डार । विशेष सस्कृत मे सामान्य टीका भी दी हुई है ।

४७२. प्रति स०३। पत्र म०१२। ने० काल 🔀 । वे० म० ३५२। क भण्डार ।

'७२ नन्दीसूत्र । पत्र न० ८ । आ० १२×४ देव । भाषा-प्राकृत । विषय-ग्रागम । र० काल म० १५६० । वे० म० १८४८ । ट मण्डार ।

प्रशस्ति—स॰ १४६० वर्षे श्री खरतरगच्छे विजयराज्ये श्री जिनचन्द्र सूरि प० नयममुद्रगिए। नामा देश २ नम्मु शिष्ये वी ग्रुगालाम गिराभि लिलेखि ।

४७४ नयतत्त्वगाथा । पत्र स॰ ३। ग्रा० ११३×६ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-६ तत्त्वो का नर्गान । र० काल × । ले० काल स० १८१३ मगसिर बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेप--प॰ महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी।

४७४ प्रति स०२। पत्र म०१०। ले० काल स०१८२३। पूर्ण। वे० न०१०५०। ध्र भण्डार। विशेष—हिन्दी मे भर्थ दिया हुआ है।

४७६ प्रति स० ३। पत्र म० ३ से ४। ले० काल ×। श्रपूर्ण। ने० म० १७६। च नण्हार। विशेष—हिन्दी मे सर्थ दिया हुसा है।

४७७ नवतत्त्व प्रकर्गा—लच्मीवल्लभ । पत्र स०१४ । मा०६ई४८ई डब्र । भाषा-हिन्दी । विषय-६ सत्त्वो का वर्णन । र० काल स०१७४७ । ले० काल स०१८०६ । वे० स०। ट भण्डार ।

विदोप---दो प्रतियों का सम्मिश्रग् है । राघवचन्द शक्तायत ने शक्तिसिंह के शासनकाल मे प्रतिनिपि की ।

. १४० - वरवर्णवर्णीयः व्यास्त्री १। सा द्री×४६ इक्षः कालाहियोः विवय-पीर्ण समीत सारि शतकों नावर्णनार कला ×।के काला×।कुर्वानै से सं६१।क अध्यार।

निनेप -प्रीय सनीय पुज्य पार तथा साधव तरव का ही वर्त्तन है।

2-44. नवतत्त्व वायनिका—पत्ताकाक चौथरी । यव सं ११० या १२०१ रहा । मागारियों । पैपर-१ तत्त्वों का वर्षत्व । मृंचक्रा सं १९६४ मायतः मुखे ११। में कक्त × । दुर्सः वे सं १९४। मैं बन्दार ।

४८६ सदस्यविदार------। तथ मं ६ तं १४ । या १८४ इसा। बाया निर्या। विसन-१ तको स्थलनि । र कमा×ाने कमा×ाने व्यवस्थान

भ्यःरे निक्रस्युरी—कविद्याचा रच संदेशाचा १ ×४√ इक्का बन्सालेक्टारिनेन-विक्रमार्थः क्रमा ×ाके बन्स ४३ व्यापीर्धं संदेशा इत्यावसः।

विवेद--प्रन्तित पुनियम-

्यातिकारपार्वयोगस्वयोगस्याधेमार विकासको वास-स्वाधिकारपार्व अवस्थानेकारपार्व । संपूर्वीतर्व क्ष्णाः । स्थापन्य १५ प्रकारो । केस्सारस्य भी स्वीकारपार्वे परित्व स्थापन्य स्वीतः भी भी भी । भी भी सीकाम्य-विप्रकारिक सम्बद्ध हु विद्यविकालेल । वे स्थापनामा स्वाधनाम्य वी पुष्टक है।

प्रतः विकासार-का० कुलकुल् । पत्र वं १ । शा १ ४६६ वका समा-सक्ष्यः। विवय-विकास । र कल × । ते राज्य × । पूर्णः। वे तं प्रदेश व वकारः।

रिकेट - प्रति वंश्वरत रोगा चरित है।

५८३ विस्मसार टीया—स्याप्तममानारित्रेच । त्यार्त २५२ । या १२६४० इस । यतान् संस्कृत । रिपर-स्टिबल्या १९ कल्ल × । ने पतानं १०६ शत्य दुवी हा पूर्व | वे सं १४ । क क्यार ।

४८४ प्रतिसः २।यन्थं रकानै नालसं १६६।३ तं १७१।स्**यम्पा**रः

विकेश---वीको के अध्य केथ जावि प्रकारिकर्तका का वर्त्सन है।

¥प-स्तिस र। पर र्थक। के कल ×ावे तं प्रशास लक्षारा

प्रसम्म पञ्चममञ्चन सेमियन्त्र । त्य वं २६ वे ६४० । वा १२८६६ इस । वाला-माहर्ग संनात । पिराय-निकास । ए. पाल ४ । वे बाल ४ । स्पृत्ती (वे तं ४) इ बाबार । ४८६ प्रति सं०२ । पत्र सं०५२ । से० काल म०१८१२ नॉर्सिक बुदी = । वे० स० १३८ । वर भण्यार ।

विशेष--- उदयपुर नगर में रत्नरुचिगिंगा ने प्रतिलिपि की थी। वही कही हिन्दी पर्य भी दिया हुग्रा है। १६० प्रति स०३। पत्र स०२०७। ने० काल 🗴। वे० स० ५०६। ञ्र भण्डार।

४६१ पद्धसम्रहपृत्ति—स्यभयचन्द्र । पत्र स० १२०। म्रा० १२४६ इख्र । भाषा-सम्द्रत । विषय-तिद्धात । र० वाल × । ले० वाल × । म्रपूर्ण । वे० स० १० = । स्त्र भण्डार ।

विशेष--- नवम मधिकार तक पूर्ण । २४-२४वा पत्र नवीन लिखा हुआ है ।

८८२ प्रति स०२। पत्र स०१०६ मे २४०। ले० काल ४। म्रपूर्ण। वे० स०१०६ स्त्र भण्डार। विशेष—केयल जीव काण्ड है।

४६३ प्रति स० ३। पत्र न० ४४२ मे ६१४। ते० काल 🔀 । प्रपूर्ण । वे० स० ११०। स्त्र भण्डार । यिशेप-कर्मकाण्ड नवमा अधिकार तक । वृत्ति-रचना पार्व्वनाथ मन्दिर चित्रकूट मे साधु तांगा के सह-

४६४ प्रति स० ४। पत्र स० ५६६ से ७६३ तक। ले० काल स० १७२३ फाग्रुस सुदी २। श्रपूर्श। वे० ५० ७६१। আর মণ্টাर।

विशेष—बृन्द्रावती मे पार्क्नाध मन्दिर में ग्रीरंगशाह (ग्रीरंगजेव) के शासनकाल में हाडा वशोत्पत राव

४६५ प्रति स० ४। पत्र स० ४३०। ले० काल स० १८६८ माघ बुदी २। वे० स० १२७। क नण्डार
४६६ प्रति स० ६। पत्र स० ६२८। ले० काल स० १६५० वैद्यास मुदी ३। वे० स० १३१। क भण्डार
४६७ प्रति स० ७। पत्र स० २ से २०८। ले० काल ×। अपूर्ण वि० सं० १४७। उट भण्डार।
विशेष—धीच के व्हार पत्र भी नहीं है।

४६८ प्रति सं ० ८। पत्र म० ७४ से २१४। ले० काल 🔀 । अपूर्ण । वे० स० ८४ । च भण्डार ।

' ४६६ पचसंग्रह टीका — श्रमितगति । पत्र स० ११४ । आ० ११४५ दे दक्ष । भाषा सस्कृत ।

विषय-मिद्धान्त । र० वाल स० १०७३ (शक्ष) । ले० काल म० १८०७ । पूर्ण । वे० स० २१४ । आ भण्डार ।

विशेष—प्रयं सस्कृत गद्य भीर पद्य में लिखा हुआ है। ग्रन्थकार का परिचय निम्न प्रकार है।

श्रीमाषुरासामनघद्युतीना संघोऽभवद् यृत्त विमूपितानाम् । हारो मौसानाभवतापहारी सुत्रानुसारी क्षत्रिरिम सुश्र ॥ १ ॥ मानवर्गनयापीयस्त्रीकः पुढ्रवनोध्वर्षि एव वार्तिः ।
पूर्वति स्वयत्तिकः पर्वावर्षि (विषुद्रात्त्रमण्डिः ।। २ ।।
विकारत्त्वयः महत्त्वपर्वादीनवर्षितिस्त्रमण्डात्ताः ।।
वीराव्यः स्वरूपनार्वितिस्त्रमण्डात्ताः ।।
वीराव्यः विकारत्त्वः चास्त्रपुर्वव्याप्यात्ताः ।। ३ ।।
व्ययः विकारत्त्वः वास्त्रपित्रमण्डात्त्वः ।। ३ ।।
व्ययः विकारत्त्रः विर्मात्त्वः वास्त्रपित्रमण्डात्त्वः ।।
वृत्ताः विकारतः विर्मात्तवः वास्त्रपित्रमण्डात्त्वः ।।
वास्त्रप्तिः वास्त्रपित्रमण्डात्तिः वास्त्रपित्रमण्डातिः ।
वास्त्रप्तिः वास्त्रपत्तिः वास्त्रपत्तिः वास्त्रपत्तिः ।
वास्त्रपत्तिः वास्त्रपत्तिः वास्त्रपत्तिः ।
वास्त्रपत्तिः वास्त्रपत्तिः ।
वास्त्रपत्तिः वास्त्रपत्तिः ।।
वास्तिः वास्त्रपत्तिः ।।

अस्तिम् २ । यस सं २०६१ ते गक्ता गंदश्य स्थाय बुद्ध १ । वे गंदश सम्बद्ध १ । वे गक्ता गंदश्य स्थाप ।
 इ. अस्तिम् वे । यस सं १ । वे गक्ता गंदश्य १ वं २११ । व्यापन्यार ।
 विकार-विभेग प्रविदेश ।

१ २, पक्कमप्रदृष्टीका—। पर्या ११. १वा १९८६६ वक्षा सन्त-नंस्तरः विशेष-निवन्तः १. सम्बद्धाने कम्प्रसाम्प्रदेशने तं १११। व चच्चारः।

३ ३ पणालि सस्य चुन्यकुम्माणार्थै। पत्र सँ १३। सा १५१ इसः। त्रापात्रकृतः। विस्ति-गिन्नामा । र नाग ४। ने नाम नं १७०६। दुर्णः । दे तँ १ ३। स्र बच्चारः।

> ४ ८ प्रशिष्ठ दे। वसर्गे ४६। ने समार्गदेश र । वे सं ४ ४ । धामध्यार । ३ ४ प्रशिष्ठ दे। वसर्गे १४ । के समार ×। वे सं ४ ९। क्रामध्यार ।

१ इ. प्रतिक्षः ४ । तक में ११ । में नाव में १११ वि में ४ १। क्रमनारः। १ ८ प्रतिक्षः १ (तक में १२ में वस्त्रास्थी में ११। क्रमनारः।

षिगेत--पिगीम सम्य तर है । वाषामा पर डीशा भी है ।

हरू प्रति से ६ वर्ष है। के बाद ४ को है है। ब्राह्मण्यार | के के प्रति के कावत में ११ के बहुत है १००० व्यापन को का के स्वरूप

अ. इ. मिश्वा च । वन में १९ । में बाम में १७२४ बापान कुछे १ १ में में १६१ । सामेगर विरस्त-मंगलती में ब्रांगिनियि हों थी । ५१० प्रति स० म । पत्र स० २५ । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० स १६६ । उङ भण्डार ।

४११ पचास्तिकाय टीका —श्रमृतचन्द्र सूरि।पत्र स०१२४। आ०१२ई ४७ इख्रा भाषा सस्कृत विषय-सिद्धान्त। र० काल ४। ने० वाल म०१६३८ श्रावणा बुदी १४। पूर्णा वि० म०४०५। क मण्डार।

४१२ प्रति स्पञ्च। पत्र म०१०४। ले० काल स०१४५७ बैशाख सुदी १०। वे० स०४०२। इ. भण्डार।

> ४१३ प्रति स० ३ । पत्र स० ७६ । ने० काल × । वे० स० २०२ । च भण्डार । ४१४ प्रति स० ४ । पत्र स० ६० । ने० काल स० १६५६ । वे० स० २०३ । च भण्डार ।

४१४ प्रति म० ४। पत्र स० ७५। ले० काल स० १५४१ कार्तिक बुदी १४। वे० स०। व्य भण्डार।

प्रशस्ति—चन्द्रपुरी वास्तव्ये खण्डेलवालान्वये सा फहरी भार्या धमला तयो पुत्रधानु तस्य भार्या धनिर्मिर नाम्या पुत्र मा होलु भार्या सुनत्वत तस्य दामाद मा हमराज तस्य भ्राता देवपित एवे पुस्तक पचास्तिकायात्रिये लिखाया पुलभूपरास्य कर्मक्षयार्थ दत्त ।

४१६ पद्धास्तिकाय भाषा—प० हीरानन्द । पत्र स० ६३ । स्रा० ११४८ डख । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-मिद्धान्त । र० वाल म० १७०० ज्येष्ठ सुदी ७ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० म० ४०७ । क भण्डार ।

विशेष--जहानावाद मे बादशाह जहागीर के समय मे प्रतिलिपि हुई।

५१७ पद्धास्तिकाय भाषा—पाडे हेमराज । पत्र म० १७५ । भा० १३imes इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धात । र० काल imes । ले० काल imes । पूर्ण । वे० म० ४०६ । क मण्डार ।

४१८ प्रति स॰ २ । पत्र म० १३ ४ । ले० वाल स० १६४७ । वे० म० ४०८ । क भण्डार ।

४१६. प्रति स० ३। पत्र म० १४६। ने० काल 🔀 । वे० म० ८०३। ह भण्डार।

४२० प्रति स० ४। पत्र म० १५०। ने० काल स० १६५४। वै० स० ६२०। च भण्डार।

४२१ प्रति स० ४ । पत्र स० १४४ । ने० काल स० १६३६ प्रापाड मुदी ४ । वे० स० ६२१ । च भण्डा

४२२ प्रति म० ६ । पत्र म० १३६ । र० काल X । वै० म० ६२२ च मण्डार ।

४२३ पद्धास्तिकाय भाषा—युधजन । पत्र स० ६११ । मा० ११×५ है उख्र । माषा—हिन्दो गत्र । विषय-मिद्धात । २० काल स० १८६२ । ले० काल × । वे० सै० ७१ । भ भण्डार ।

४२४ पुरायतत्त्वचर्चा-- । पत्र स० ६ । म्रा० १०६ ४४६ डख । भाषा मम्कृत । विषय-मिद्धान्त । र० वाल म० १८८१ । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स० २०४१ । ट भण्डार ।

४२४ वघ उदय सन्ता चौपई--श्रीलाल । पत्र म० ६ । ग्रा० १२५४६ इख । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-मिद्धान्त । र० काल स० १८८१। ले० काल × । वे० म० १६०४। पूर्ग । ट भण्डार ।

विशेष--- प्रारम्भ।

विमल निनेज्यरप्रामु पाय, मुनिमुद्रत कू सीस नवाय । मतपुरु सारद हिरदे धर्म, बध उदय सता उचक ॥१॥

```
8र ]
                                                                              सिक्षमः एव वर्ग
  क्यन्तिस---वेष वर्ष सत्ता बकार्ली अन्य भिर्वनीकार सै बारिए ।
            नुद्ध संसुद्ध सुवा रेस् कारा, शक्य बृद्धि में नव बद्धाला । १२ ।।
            शाहित राज बुक्क बुक वर्षे शवर प्रवेतर गांही लग्नी ।
            मृत्य ब्रह्मका वशी के नाहि, आवक कुल वीपवाल ब्यहारि ।। १६ ।
            क्षा प्रस्त के वैभिन्न सभी मैशायन्य के बिक्स स वयो ।
            तनर वरेवर जावि क्यों आविनाव युद्ध वर्वेश विशे ।। १४ ।।
            पास्तर्मते विश्वनाच्यां सामा का कर पहली चये।
            धोतक जिमक करि परिकास स्थपर कारता वहे बसाए ।। १५ ।।
            संबन् यठराने का कहा। यहार प्रश्रासी उत्तर शक्षा ।
            रक्षत्र पूछल अस्य क्रम द्वीतः पुरुष सेवः पूर्णि बहु होने ॥ १६ छ
                                 ।। प्रति भी उर्देश्वंत सत्तानगराः ।।
            इससे चान श्रीबीस ठाका की श्रीपाई है-
   प्राथम्भ-तथ वर्ग दर प्रत्य एक लेकी भव तम नाग ।
            दलकावनि वाँद क्षम्य भी रचना मह बनान ॥
   क्रानितम--- द्वारित वस ब्रह्मस्थान की रचका करली यार ।
             एक पुरु को दीन ही युभिनत नेड तुवार
             mala नेपवित इप्ल की शाला क्या सम्बद्ध ।
            उपद्धीने यद शाम के क्षम जान मीलान ।।
```

।। इति बन्त्रक्षे ।। ४२६ सरावदीस्<u>य-</u>नवर्थ र । या ११४१६ १८। वाया-गानुसः विशव-मानन । र गान ×। । पर्तावे सं १२ ७ । का बण्यार ।

भावविर्मानी-नैनिवन्त्रवार्व। एव वं ११। था १५६ इस । आया प्राप्त । निगर

निजार। राम । में नास ×ानूनी। में ने दश्रा कु अम्बार। विमेप--- देवन वत्र दुवारा तिवा वशः है । ≱ हा अक्टिसा में | चंद भी ९४ । के नामानी १००० साथ सुर्वीत । के सुर्व । बह जनगर है

विकेत-- वं व्यक्तव ने बन्त की अविनिधि अकार न की बी

ीर बाल × । दुर्न और न ३६ । प्राचनार t 575 ±३ वरश्चकरीहेकारण्या पण से । था ६ ≻ ८^३ रखा सहा प्रमुत्त । विषय-निवार ।

। संगत्र । पूर्वी वे ते ६० ।

मिढान्त गर्य चर्ची]

विशेष--- म्राचार्य धिवकोटि की मारायना पर ममितिगनि वा टिप्पण है।

४३१ मार्गणा व गुण्स्थान वर्णन—। पय स० ३-५५। या० १८०५ इख्र । भाषा प्राकृत । विषय—
विदात । र० वान × । ने० काल × । अपूर्ण । वे० स० १७४२ । ट भण्डार ।

४३२ मार्गणा समास—। पत्र म०३ मे १८। ग्रा० ११३× पट्या भाष-ात्राकृत । विषय-सिद्धान्त राजान ४। ते० काल ४। ग्रपूर्ण । ते० म० २१४६। ट भण्डार ।

विशेष-सस्कृत टीवा तथा हिन्दी अर्थ सहित है।

४३३ रायपसेराी सूत्र—। पत्र स० १४३। ग्रा० १०×८ उञ्च । भाषा-प्रावृत्त । विषय-ग्रागम । र० वाल ४। ते० काल स० १७६७ ग्रासोज मुदी १०। वे० म० २०३२। ट भण्डार ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टीका सहित है। सेमसागर के दिष्य लालसागर उनके शिष्य सकलसागर ने स्वपठनार्थ टीका की। गापाओं के उत्तर छाया दी हुई है।

४२४ लिंघसार—नेभिचन्द्राचार्य । पत्र म० ५७। ग्रा० १२४७ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-

विगेप--- १७ मे ग्रागे पत्र नहीं है। सम्कृत टीका महित है।

४३४ प्रति स् • २ । पत्र स० ३६ । ले० वाल 🔊 । ग्रपूर्मा । वै० स० ३२२ । च भण्डार ।

५३६ प्रति सट ३ | पत्र स० ६५ । ते० वाल स० १८४६ । वे० स० १६०० । ट भण्डार ।

४०७ लिब्बसार टीका—। पत्र स० १४७ । भ्रा० १३imes इख्र । भाषा संस्कृत । विषय–सिद्धान्त । र० नाल imes । ने० नाल स० १६४६ । पूर्ण । ने० स० ६३८ । क भण्डार ।

र^{० वान} × । नं वन्त स० १६४६ । पूर्ण । वे० स० ६३८ । क मण्डार । ४३८ लिबसार भाषा—प० टोडरमल । पत्र न० १८० । मा० १३×८ डक्स । भाषा—हिन्दी ।

विषय−मिद्धात । र० काल 🗸 । ले० काल १६४६ । पूर्मा । वे० स० ६३६ । का भण्डार ।

४६६ प्रति स¢ २। पद्य स० १६३। ले० कात् ४। वे० स० ७४। ग भण्डार।

४४० लिखिमार त्रपणासार भाषा—प० टोडरमल । पत्र म० १०० । ह्रा० १५ \times ६ हे इञ्च । भाषा—हिंदी गर्य । विषय-सिद्धान्त । र० काल \times । न० काल \times । पूर्ण । वे० स० ७६ । ह्या भण्टार ।

४४१ लिब्स्सार स्पर्णासार मद्दष्टि—प० टोस्रमल । पत्र स० ४६। म्रा० १४४७ इञ्च । मापा— हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । र० काल स० १८८६ चैत बुदी ७ । वे० म० ७७ । ग मण्डार ।

विषेष-कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी।

४४२ विपाकसूच —। प० म० ३ से ३४ । ग्रा० १२ 👋 हुझा। भाषा प्राकृत । विषय – ग्रागम । र० केल 🗴 । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० म० २१३१ । ट भण्डार ।

४४३ विशेषसत्तात्रिभगी—श्रा० नेमिचन्द्र । पत्र म०६। आ० ११४४ई इझा भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धात । र० काल ४ । ने० वाल ४ । पूर्ण । वे० म० २४३ । श्र्प्र भण्डार । क्य मध्यार ।

दिचेष— १ ने ६४ तक पश्च शद्दी हैं। जयपूर में प्रतिनिधि हुई। इन्द्रोर, प्रति स्त्र प्रश्चिम संग्राप्त के वाल ×ा बहुर्याचे वं प्रशास क्याराः

. इद्रश्रेश्व अक्रिसीच हापभानं कहाने बाला प्राध्यूली | वे मं क्रा ३ च्या प्रकार।

वियेत--यो तीन प्रतियो या बनिवचन है।

क्षक्रेयः, कटकोरस्य क्रुबीस २०००म् पश्च है । बा १ ×४६ वळा। कारत-निर्मायक । विपस-निर्धाप १ काम । में काम × । धनमें ⊩ी में १६ । का क्यारारी

विश्वेय-पद नेम्मको पर वीहे हैं।

दरोर क्याच्याधिक रामक द्विका---रामानसमाध्याच । पत्र वं ११ । या १ ४८ १ स्व १४८ मैक्ट्रा क्यिक-मित्रात । र प्रमानं १२७५ मानदा । ने प्रमानं ११७५ स्वकृत दुरी ६। पूर्व । वे में ११६ । वा वर्षार ।

विश्लेष----प्रवस्थि विश्व प्रवार है। भोजन्त्रज्ञानकाविभागे वोणे वीणानतिष्ठे, कुमानवविद्यास्य देखालनी वजाकुतुरा ।। १ ।।

स्वक्रम-नमीवपानस्तात्तृत्वो विर्तेत्रो विषुषकृतृत्त्वन्ता वर्वीपतासपुरः । जन्नति अस्तितस्य जन्मपानमे बेतुरः वन्तं श्रीदशा दुरोग्यो राजपन्तो वर्तृतः ॥ २ ॥

ज्ञावित ज्ञानिकाः ज्ञानपाराणे बहुतः चन हरिकाः होन्याः प्रमम्ती वहीतः ।) २ ।। वर्षवक्रवादिकवेषका वर्षारकारच्यानेकाकः स्था स्थानगरिकाः सीव्यस्य हुप्रतिहरूतः ।। ३ ॥ व्यानक-स्थानकारीनः वर्षारकारच्यानेकारकः स्था स्थानिकः हृप्यस्यकः क्लूप्यूक्तक्रवानः ॥ ४ ॥

स्पेताल-कुरानकुत्रप्रियः नविभिन्नी स्वार पारतियः। गैकारचेत्र कुरतारवालः कर्णुनुस्तृत्रप्रवालः ।। ४ छ प्रस्तवेषकुत्रपैरानां परगार्वपिकातः, परानेषः कुरेत्रस्यः व्याप्तानावे विरानवे।। ३ ॥ कर्णुभागवर्षप्रतियः सम्मानकः स्वारःः निर्वते विरानवेत्रस्य विरानुर्ययः स्वारीतिः।

स्वयावर्षमध्य वदा विरिच्या वीरामध्य व्यक्तियोगालाको वारणीक्ष्य (रमणाकृतिः विकृता हिंगी । वर्षे तरं पृतिपूर्णतं व्यक्तिः वारास्त्रयस्य पुत्ते । नाते नातार्थः विश्वपर्त्तरः वैद्यक्तिनं कृते । ।। सम्बो अरामध्यो नीपार्व्यक्तपरम्पार्थियामे । विश्वतिसम्बारितुर्वः विका नीकृतिस्वरित्तर्थः ।। ।

क्षांच्यान कृतेयं चाक्यकुष्यंत्र रामाधुर्वेत्त क्यासीकृत्यात्रप्रप्रदाशिश श्रीधारितरं सङ्घा ११ है ॥ इति क्यासीक्यानकरण्यस्य देशा कृता भी चलाईकोरास्प्रातेः ॥ नृतस्तुक्षेत्रः हि ॥

नंबन् १४७२ नवमे सब्दान परि ६ एरियायरे नेका यो विकासीसमेव केन्द्रि :

३३ महोच्यासियः—च्या विचानविद्वाचनर्गदृश्यः। चा १२९७५ । बा शंक्ता। विधन-विद्यातात्र कला ४०० व्याप्य व्यापन कृष्टि । पूर्वति वे ७ ७३ क्षा क्यारात्रः विरोप—पर तत्त्वार्यमूत्र की पृहर् टीका है। प्रशालाल लीपरी ने इसकी प्रतिलिपि की थीं। ग्रना सीन विराम बया हुमा है। हिन्दी प्रार्थ सहित है।

४५१ प्रति स०२। पत्र म०१०। ने० वान २,। वे० सः ७६। न भण्डार। तत्त्वार्यमूत्र के प्रतम प्रध्याय की प्रथम मृत्र की टीका है।

४५२. प्रति सुट २ । पत्र सुरु ६० । तेरु मात्र 📐 । प्रपूर्ण । वेरु सुरु १६४ । व्य सण्डार ।

४४३ सप्रहृश्तीसूत्र । पत्र म०३ ने २=। घा०१०४४ दञ्जा भाषा प्राकृत । विषय-म्रागम । रिक्तन ≿। ले० यान ≿। प्रपृश्ती । वे० मं०२०२ । स्व मण्डार ।

विशेष---पत्र स० ६, ११, १६ ने २०, २३ से २५ नहीं है। प्रति निषत्र है। चित्र मुन्दर एवं दर्शनीय है। ५, २१ और २=नें पत्र को छोड़कर मभी पत्रों पर चित्र हैं।

४४४ प्रति स् २ । पत्र स० १० । ले० गान 🗡 । ये० न० २३३ । छ भण्डार । ३११ गायाय है ।

788 सप्तह्णी वालाववोध —शियनिधानगणि । पत्र स० ७ मे ५३ । मा० १०५ \times ४५ । भाषा — 988 निहन्ते । विषय-मागम । र० काल \times । ले० वाल \times । वे० स० १००१ । स्त्र भण्डार ।

विशेष---प्रति प्राचीन है।

५५६ सत्ताद्वार । पत्र म० ३ से ७ तन । मा० ५ $\frac{3}{7}$ \times ४ ईं इक्स । भाषा मन्यृत । विषय-मिद्धात 70 नीत \times । नि० नात \times । म्रपूर्ण । वे० म० ३६१ । च भण्डार ।

४४७ सत्तात्रिसगी—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र म०२ मे ४० । ग्रा०१२×६ इख्र । भाषा प्राकृत । विषय-निद्यान्त । र० कान 🗴 । ने० कान 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० म०१८४२ । ट भण्डार ।

४५८ सर्वार्थिनिद्धि--पूच्यपाद् । पत्र म०११८ । ग्रा०१२४६ इख । भाषा सस्कृत । विषय-सिद्धातः रि॰ वाल ४ । ले॰ याल स॰ १८७६ । पूर्णा । वे॰ स॰ ११२ । श्र भण्डार ।

४५६ प्रति स०२। पत्र स०३६६। ले० काल स०१६४४। ये० स० ७६८। स मण्डार।
४६० प्रति स०३। पत्र स० १। ले० काल ×ा मपूर्ण। ये० स० ८०७। ड मण्डार।
४६२ प्रति स०४। पत्र स० १२२। ले० काल ×। ये० स०३७७। च मण्डार।
४६२ प्रति स०४। पत्र स० ७२। ले० काल ×। ये० स०३७८। च भण्डार।
विशेष-चतुर्थ मध्याय तक हो है।

४६३ प्रति स०६। पत्र म०१-१३३, २००-२६३। ले० काल म०१६२४ माघ मुदी ४। वे० स०३७६। च भण्डार।

निम्नकाल भौर दिये गये हैं-

म० १६६३ माघ शुक्का ७-६ वालाडेरा मे श्रीनारायग् ने प्रतिलिपि की थी। म० १७१७ वार्त्तिक सुदी १३ अहा नायू ने भेंट में दिया था।

7

≱६४ प्रतिसे ७ | पन नं १०६ । न काल ×। वे तं ६ । च लचारा

¥६४, प्रतिस्⊫ः । पत्र सं १६ । के काल ⊠ावे सं ४ । इदक्यार।

≥६६ प्रतिस कावन सं १३४ । ऐ वाल सं १ व३ व्येष्ठ बूरी २ । वे सं प्राञ्च मन्तर। भीक प्रतिसः १ । पत्र वं २७४। ने नाम नं १७ ४ वैद्यास नृती है। वे सं २१६ १ म अध्यार ।

१६८. स्वीवेसिटि शापा--वक्षणम् सावशा । पत्र तं ६८३ । शा १६४७, इस । वापा विशे नियम-विकास । र जान से १ ६१ वेंत नुषो प्राप्ति पान्य से १६२६ वार्तिय मुदी हा दूर्व हूँ वे से ४६६ क क्यार ।

१६६. इतिसः २ । वस्तां ३१ । के कम्म ⋉ाये र्जाक प्रवारः

रेकः प्रतिसं ३। पवसं प्रत्काने काल सं १८१७। व सं ७ ४। च वचार।

२७१ प्रतिसं ४) पण सं २७०। ने प्रमानं १ ३ शालिक पुरी २।वे सं १६ । व बन्दार ।

१६२, शिकान्त्रमार्गुरार-माँ रह्यू (क्या थे ११ । या १६ अ वंद । वासा सरस्र छ । विवय-शिकान्तः र मान् ≾ाने मानाची १६६६ । पूर्वाचे सं ७६६ । का सप्रारः।

विवेद-यह मंद्रि सं ११३३ वाली वृद्धि है लिखी वर्ष है।

१७३ प्रक्रियों २ | पणत १६ | ने फ़ब्द क १६४ | वे लें । चूमप्रार।

पिकेच-व्य भारत जी ते. १९२३ नामी प्रति के ही विकास परि है।

१७४ सिमान्सस्यर मान्य--। पण हाँ ७१ । था १४७० रख । वादा हिन्दी । विस्त-निवाण । र नातराभ नात×।बनुर्खापै वं ७१६।चनवारा

१७८, सिकाम्बक्केससम्बन्धाः पथ वर्ष १४ । या ४×४) इत्र १ जारा क्रियो । दिवस निकर्त । से क्रान्त ≍ । बपूर्ण । वे वे देशश्य । का लगार ।

दिखेय--वेरिक बाहित्व है । वी त्ररियों का धरियक्त है ।

४७६. सिकाम्बसार वीपक—सक्त्रकारीति । पर वी १२४ । या॰ १५×१} रख । बारा वेनरवे । विवय-निजन्य हेर जान 🗙 । के जान 🗡 1 पूर्वी के वी १९१३

>ook, प्रतिसी भावप सं रूपे। वे काल सं १ १६ दीव नुदी छ । वे सं रहा सावशारा दिखेद-- व शासायन के किया वं विकास के बायमार्थ प्रतिस्थित ही पूर्व थी।

auc प्रतिसं का पण सं १४४। के नाम सं १७१२। के सं १३२। का अध्यारः इ. प्रतिस् क्षायम्बं १३६। में नामानं १३२। में सं २। इ. मध्यार।

विक्रेय-सन्तोबस्य सम्बंधि में प्रतिनिधि की थी।

क्रमः प्रतिर्मे शांपणचं रम्नाने गलावं १ १६। वैद्यालापूरी । ने सं १५६। म

विभेप—शाहजहानाबाद नगर मे लाता शीलापित ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई थी।

४८१ प्रति स०६ | पत्र म०१७३। ले० काल म०१८२७ वैशास बुदी १२। वे०स० २६२। व्य
भण्डार।

विशेष-कही कही कठिन घटदों के ग्रर्थ भी दिये हैं।

४८२ प्रति स० ७। पत्र स० ७८-१२४। ले० काल ४। ग्रपूर्ण। वे० म० २५२। छ् भण्टार।
४८३ सिद्धान्तसारतीपक । पत्र स० ६। ग्रा० १२४६ इख्र । भाषा सम्वृत । विषय-सिद्धात।
र० कात ४। ले० वाल ४। पूर्ण। वे० म० २२४। स्र भण्डार।

विशेष-नेवल ज्योतिलोक वर्णन वाला १४वा मधिवार है।

४६४ प्रति स०२। पत्र म०१६४। ले० नाल ४। वे० स० २०५। ख भण्डार।

४८५ सिद्धान्तसार भाषा—नथमल विलाला। पत्र स० ८७ । मा० १३३८५ डख । भाषा हिदी। विषय-निद्धान्त । र० काल स० १८८५ । ने० काल ४ । पूर्यो । वे० स० १२४ । य भण्डार ।

४८६ प्रति स०२। पत्र स०२४०। ले० नाल ×। वे० स०८४०। उ मण्डार । विशेप—रचनाकाल 'स्ट' भण्डार की प्रति में है।

४८० सिद्धान्तसारसग्रह—स्राट नरेन्द्रदेव । पत्र न० १४ । ग्रा० १०×५६ इख्र । भाषा मन्तृत । विषय-निद्धान्त । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ११६५ । स्र भण्डार ।

विशेष-नृतीय अधिवार तक पूर्ण तथा चतुर्थ अधिकार अपूर्ण है।

४८६ प्रति स०२। पत्र स०१००। ले० काल स०१८६। वे० स०१६४। स्त्र भण्डार। ४८६ प्रति स०३। पत्र स०५५। ले० काल स०१८३० मगमिर बुदी ४। वे० स०१५०। स्त्र भडार

विशेष-प० रामचन्द्र ने ग्रन्य की प्रतिलिपि की थी।

४६० सूत्रऋताग । पत्र स०१६ मे ५६। ग्रा० ८०४८३ डञ्च । भाषा प्रातृत । निषय-ग्रागम । र०काल ४ । ले०काल ४ । श्रपूर्ण । वे० स० २३३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १५ पत्र नहीं हैं । प्रति मस्कृत टीका सहित है । बहुत से पत्र दीमना ने खा लिये ह । बीच में मून गाथाये हैं तथा ऊपर नीचे टीका है । इति श्री सूत्रकृतागदीपिना पोडपमाव्याय ।

विपय-धर्म एवं श्राचार शास्त्र

प्रधारे सद्वाई समृत्रसुत्रपुत्रवर्षीस ***** । पार्क् २००० । पार्क् २००० । वारा-संग्रह । विषस-पृतिस्य सम्प्रतः । काम ×ो पूर्ण । वेष्ट्रस्य २००१ । स्वा सम्प्रतः ।

x २ क्रातगाशमबीसून—ए कारतायर|पत्र में ३ श वा ११५४६ क्रा शमानमनार। राज-कृतिकर्मसर्पत्।र शमानं १३ । वि कात्र वे १७७० नारमुधी १।द्वर्ण|के में १३११ क्र

लगा । | विमेद---दि ब्यास दीवा चहित है। यानी यकर वे धीवहाराजा पुस्तनिहती के सामकाण न नीवें | गायकता में में विजिति करवामी थी। सं १ २६ में यं नुष्याय के दिस्त यं देखन ने उत्पार संबीचन किया ना। १८ में १९१ तक प्रतिन कर्या

≱६३ प्रतिश्रं २ । यम मं १२३ तो सम्प×ावै सं १ । स्थलार |

≱६४ प्रतिक्षं ३ । पत्र सं १ । वे याना सं१९१६ वर्षतकपूरी १ । वे सं ग्रामकार।

्रहरूप्रतिस् ४ । पत्र वै ३०। ने कला×। वै श्रं ४६ । क्यावच्यार ।

निमेर—मिरि प्राचीन है। वे नावध ने स्त्य नी बिरिनिय जो वी। स्त्य ना दूनरा नाल 'वसीनृत्युक्ति लंदद' सो है।

୬६६ क्युस्थानस्या—वीत्रवान् कस्त्रक्षीयाकात्रवार्षभ । यास्तर १२४६ इक्रा ।सन्ति हिन्दी (पन्नवानी) सत्र विवय-वर्णारं नामानं १ १ वीय दुवी २ कि शामानं ११४ । व्यूर्णा १ वी १ । घा अस्तराः।

≱६७ मनिर्स कायनमें २ के थश के मन्त×। बयूर्यादे सं २१। द्वाधनार।

४६८. चतुरावानम् "" पर २ ६१ वा १६ χ ६ हव । जारा-हिन्से (नर)) दिस्स-वर्ग । क्ल χ । के कका पूर्ण । है से १६१ क सम्बद्ध

कामुन्तवर्धस्सकानम-गुष्यकानुषेषा वत्र संवेश हो या १ _प४८५ नारा-संस्का विपर-साचार कर्मार नाम × । ने कान कं १६ प्रणैय कुछै १। सपूर्वी वे संवेश १ स्व कमार।

विक्रीय-माध्यत्र के वो पण नहीं हैं। धनिवत पुरिन्ता-सीं। भी पुत्रमध्यवेत्रविधिवत्रवृत्ववर्धसम्बन्धि

स्मानांनं सारपार्थानकार्यः चपुनिवाधि जाण्या नोहाने । जानिय पित्रण जातर है.... पर्वः वो पूर्वपूर्वाचाने वास्त्रः ची महाचरीतिः कार्यः विद्वापत्रोतियेषहारकः कारः ची पत्रोतियेन जारकः कर्यः ची वाषानीतिये कार्यः ची मनिवाधीनियेव कारः ची इत्यापत्रीति कार्यः ची प्रकृतस्थित स्मार्गे िर्मित महाराज्य नर्मक्षया र । प्रक्षिणम्य परिष्ठा । सायप्रतास परमा है । यश्चिमीत्यपायपट्टमयाजन धर्मरप्रदेशकमा है । त्राप्तन ने बातम माप्त महत्त्वारों कृष्णारों वर्षयहि दित । १ तुष्ठपारें स्व १६०५ वर्षे सेराहरणामें बीधरी पार-मनित्रहार ने हुए नहुनु र रामित परमणनु एतसराठ स्थाता संय महाविष्टा । शुक्त भवतु ।

६०० आगमयिनाम—यानतरापः १४ म ७३ । सार् १०१८६ रक्षः । तापा-तिकी (४७) विषय-पमा रच्यात मर्ग १७०३ । उच्यात में १६०० । पूर्मा । यः पण्ड विषयणारः।

विमेष-राना सरम् सम्बन्धा पद्य-"पुना गम् नैस सि ।वा

पान प्रतिस्त के समुतार कृति स्थाप च पत्र ने उत्तर प्रस्त की मूल प्रति मा नामृत्य प्रणा तथा उपर पत्र विवेद मूत प्रति क्यानराय च गाय स साथों। या र र ता ताननताय । प्रारम्भ की सी ति तु यी स्था । सा र शाया विकास के नाम्या क्यानराय ने स्वयु १७८४ में स्वयुक्त स्थाप द्वापूर्ण तिथा। साथिय विकास संगति के विवेध निमास साथे हैं।

^{६८१} प्रतिस्थ च्यापनम् १२। सक्षान् । १६४४। येवस्य ४०। कामणाः

६-- श्राचारमार--ग्रीमान । त्र मक ४६ । पाठ ४२ ४१ रश्च । नापा-मन्द्र । तिपम-पापा-भित्र । ७० तार । ७० पान मन १८६४ । पूर्ण । त्रैक मक ४६० । श्र एएए ।

^{६८३} प्रतिसद्भाषत्र सर्व १०१। पर नाप ४ । पर संग्रही व भण्यार ।

६०८ अनि स्व ३ । पत्र सत् १०६ । नेव नान । स्रपूर्ण । येव नत् ४ । घ नण्या ।

६०५ प्रति स० ४। पत्र गे० ३२ १ ७२ । या गात 🔎 मपूर्ण । 🙃 ग० ४८८ । व्य भण्यार ।

६०६ । प्राचारमार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पन म० २०२ । घा० ११८८ एख । नापा-हिन्दी । विषय-प्राचारमास्त्र । २० गात म० १६३४ वैद्यास बुदी ६ । २० गात । पे० म० ४४ । क्र नटार ।

६८७. प्रतिस्टर्। यत्र पत्र २६२। तत्र बार् । या गैत्र ६। या महार्।

६० म्ह्रामा प्रनासार-देवसेन । पत्र मं० २ । ग्रा० १८/८ई । नापा-प्राप्तन । जिपय-धर्म । २० कात १०ता तानी । प० कात 🔎 ग्राप्ती । य० म० १७० । स्त्र मण्यार ।

^{६०६} प्रतिस्व २०१ पत्र स०६४। त० यात्र ४। दे० स॰ २२०**। स्त्र** सण्टार । विद्याप–प्रतिसम्बद्धारा स्वित्त है

^{६१}० प्रति स० ३ । पत्र म० १० । ले० माल 🔀 । ये० म० ३३७ । स्त्र भण्डार

६११ प्रति स०४। पत्र स०७। ने० माल ४। वे० स० २८८। स्व सण्डार।

६१२ प्रति सद्धापत्र सव्हाले बाल ४। वे सव २१४१। ट भण्डार।

६१३ स्त्राराप्रनासार भाषा-पन्नालाल चौधरी । पत्र म०१६ । द्या०१०४५ द्रञ्च । नापा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० मान न०१६३१ चैत्र पुदी ह । स० मात्र ४ । पूर्ण । वे० म०६७ । क नण्डार ।

```
ke 1
                                                                           धिर्म एवं चापार श
           विशेष--नेक्क प्रथमित का श्रीतिम पत्र नहीं है !
```

ক্স সংখ্যার।

६१४ प्रतिस १।९४ तं ४ । अन्यास×ावे सं ६४। कामध्यारा देश्यः प्रतिर्म∞ ३ । प्रत सं ६९ । सं कला∨ । ने तं ६६ । का प्रधार ।

६१६ प्रतिस प्रापन से २४ । में बान ×ावे से ७३ । ब्राबन्पार । विकेष---नावामें श्री है।

६१७ चारायमासार भाषा─ापद सं १६ त्या ११×६ दख । जला-हिनी । विस्त-वर्ग

र तल । ने तल ≻ । पूर्व। दे वं २१२१ । ड बच्छारा **११**मः चारावसासार स्वानिका—याथा तसीधन्त । रम शं २९३ वा ३१ ४० इत्र । यस

हिन्दैनचः विषय–नर्नः र तान २००३ व्यवस्थाः वे राज्यः । दुर्जावं १८ वं १८३। इतंत्रास्य ६१३ जारामनासार कृति—प० चासाबर । यह वं ४ । बा १ ८४३ ईव । बाला-नंगर

नियप-वर्ग हर्रे क्या इस्तो स्तामी । से जेल X हर्ष । पे. तं ह स्था स्थार । विमेप--नृति नवक्त के लिए क्वरचना को थी । डीका का नान बाराक्वाचार करेल है ।

माद्यार के विकासीस दोन वर्षक्र—भैदा मनदारीशास (वन वं २) वा∞ (१×७) छ नाग-हिन्ती। नियम-याचारताल्यः १ द वाल वं १७६ (ते वाल ≾। दुर्ने (वे व ५ ४) प्रश्रयार ।

६२१ कावेशरक्याका—वर्मशासम्बद्धः १ एव र्व. २ १ था. १ 🗴 ४४ । माना-वर्ष्ट । निपन-पर्नार राल ×ोगे वभ नं ३ दश रालि र नुसे ≉ादुर्ल | वे तं तहता छ। ब्राह्म रेश्वर प्रतिसः । पर वं १४ । से निल ×ारे वं ३८ । सर क्रमार।

विकेच---वरि जानीय गर्न संस्कृत क्षेत्र बहित है । ६२३ कावेदारम्बदाना—सन्तकसूच्या । वन वं १९१ । वा ११८४३ इश्च । जारा-संस्था रियय-वर्ष हर बार में १६ क बाबना पूरी ६ हरे बार सं १७६० बावस पूरी १४ । पूर्ण । में में ११।

हिर्देश---बन्दुर तथर ने थी गोधीरान विसन्ता ने अतिब्रिपि वरलाई वी ४ ६ प्र प्रति सं ३ । पत्र सं १३१ । ग नार×। वे नं २७ । व्यापनार । ser बनिल ३। पर सं १२१। ने राम अं १७२ मानन मुद्दापादे सं ६ । च

क्षार । इन्द्र प्रदिस्त ४ । पथले १६३ । ने सन्त ने १६ - वॉनिव पुरी ११ । बहुनी । दे से प्र AL MALIC !

रिरोप--नव में १ में १३ वया १ . मही है। बस्तिन में निम्मक्तार निमा है--निराह मी बस्त ्मान्ती इस रम्बल् निवित्त इन सम्बन्ध मो बी धार्यनाथ निवित्त अध्याद है रखशास ।

इन्छ प्रति सट प्र। पत्र स० २५ से १२३। ले० काल ८। ते० सं० ११७५। स्न मण्डार।

इन्ह प्रति सं० ६। पत्र म० १३६। ले० काल ८। वे० सं० ७७। क भण्डार।

इन्ह प्रति स० ७। पत्र स० १०६। ले० काल ८। वे० स० ६२। इ भण्डार।

इन्ह प्रति स० ६। पत्र सं० ३६ मे ६१। ले० काल ८। प्रपूर्ण। वे० स० ६३। इ भण्डार।

इन्ह प्रति स० ६। पत्र स० ६४ मे १४५। ले० वाल ८। प्रपूर्ण। वे० स० १०६। इद्र भण्डार।

इन्ह प्रति स० १०। पत्र सं० २२। ले० काल ८। प्रपूर्ण। वे० स० १४६। इद्र भण्डार।

इन्ह प्रति स० ११। पत्र स० १६७। ले० वात ४। प्रपूर्ण। वे० स० १४६। इन्ह भण्डार।

इन्ह प्रति स० ११। पत्र स० १६७। ले० वात ४। वे० स० २७०। व्य भण्डार।

इन्ह प्रति स० १३। पत्र स० १६५। ले० वात ४। वे० स० २७०। व्य भण्डार।

इन्ह प्रति स० १३। पत्र स० १६५। ले० काल सं० १७१८ फाग्रुण सुदी १२। वे० स० ४५२।

^{६3}६ उपटेशसिद्धातरत्रमाला—भडारी नेमिचन्द्। पत्र स० १६। ग्रा० १२×७५ इद्य। भाषा— भा_{रत । विषय–थर्म । र० काल × । ले० काल स० १६४३ ग्रापाढ सुर्दा ३। पूर्ण । वे० स० ७⊏ । क भण्डार ।}

विरोप-सस्कृत मे टीका भी दी हुई है।

६३७ प्रति स०२। पत्र स०६। ले० वाल ×। वे० स० ७६। क भण्डार। ६३८ प्रति स०३। पत्र स०१६। ले० काल सं०१६३४। वे० स०१२४। घ भण्डार। विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं।

हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल स० १८१२ झापाड बुदी २। ले० वाल ४। पूर्ण। वै० स० ७४६। स्त्र भण्डार। विशेष-- ग्रन्थ को स० १६६७ में वालूरान पोल्यावा ने खरीदा था। यह ग्रन्थ पट्कर्मोपदेशमाला वा हिन्दी मनुवाद है।

६११ प्रति स• २ | पत्र स० १७१ | ल० नाल स० १६२६ ज्येष्ठ सुदा १३ | ने० स० ६० | क भण्डार ६११ प्रति स० ३ | पत्र स० ४६ | ले० नाल × | ने० स० ६१ | क भण्डार । ६१२ प्रति स० ४ | पत्र स० ७३ | ले० नाल स० १६४३ सामग्र बुदी ३ | ने० स० ६२ | क भदार | ६४३ प्रति स० ४ | पत्र स० ७६ | ले० नाल × | ने० स० ६३ | क भण्डार । ६४४ प्रति स० ६ | पत्र स० १२ | ले० नाल × | ने० स० ६४ | क भण्डार । ६१४ प्रति स० ७ | पत्र स० ४५ | ल० नाल × | ने० स ६७ | ग्रपूर्ण | क भण्डार । ६१६ प्रति स० ६ | पत्र स० ५६ | ले० नाल × | ने० स० ६४ | इ भण्डार । ६४७ प्रति स० ६ | पत्र स० ५६ | ले० नाल × | ने० स० ६४ | इ भण्डार ।

६४८ **चपदेशरस्रमालाभाषा**—चाबा दुलीचन्द । पत्र सं०२०। ज्ञा०१०ई ८७ इख्र । भाषा–हिन्दी । ^{विषय–धर्म} । र० काल स०१९६४ फाग्रुसा मुदी २ । पूर्सा । वे० स० ८५ । क भण्डार । ६४६. उरदेश रअनेका मापा—देवीसिंह द्वावका । पत्र शंरा ११४ ०० इका वास-रिनो परार अन्तर्ग १०१६ बारवा कृषे १। ते वाल ×ापूर्णा के तं स्कृतका सम्पन्ता

विधेय--नरवर वयर में क्रम रचना नी धाँ थी।

इ.स. मितिस न। पत्र में १६। ले त्रास ६ । वे सं वया क्षा सम्मार।

\$ श्री में के। या वं १६। में याना रावे ने बा। का प्रनारा

६४२. इएसमाँचे विवरस्य—बुराचार्ये । यस नं १। सा. १ ५४४_६ इझ । भाग-नंभव । रिगर इस. र. कार > । वर्ग । वै. न. ३६ । इस कसार ।

६१६ प्रशासकामार होहा-मामान सहसीमन्त्र। पर नं का बा ११५६ स्थाः मार सरस्य मंदिरस-मारक वर्ष वर्णना १८ वन्तः । वे वन्त्र मंदरश्यकतिक मृति ११। पूर्णा देनं २ १। सः सरक्षरः

स्तिरु—ड व नागम अञ्चलकार की है। ये अध्यान के पटनार्थ प्रतिस्ति थी की बी। किन्य स्त्रीन निकास क्यार है —

स्पतिन सदर् १६१३ वय नामित हुत्ती १६ मोदे को दूसनंदे नरस्सीयओं बरम्पारको सः रिवासी दहुँ सः बोध्यद्वस्त्रा निष्यत्व वेदिन नकारा प्रकार्य दुवा थाष्ट्राचार यसमें स्वार्त । व व ः १३० । रीमे शै संस्था २४४ है।

£ भू प्रतिस के। यन में १४ । में मूल प्रार्थ में १४६। का साहर ।

अदश्च अभ्यास्य गांपणा रागा पराचान र रहेका आयो समाना ६४४ प्रतिस्य है। यत्र सं ११। में नामाप्राणी में १७। आयो समानार।

\$24 प्रतिस पृत्वसर्वे १६। ते शला पार्थ से २१८० का बणारा

. 5 इ. इतिस ३ । परने ० ते राप्∑ावे ने ६६६ । इ. घ्यारा

६५८. प्रतासका प्राप्त मान्य मान्य मान्य १६० । वा १६० १० १० । वापा-मिहन । रिवर-वार्गर वर्ष वर्गत । र पार्थ में पाना । पूर्ण (१६ परिच्छेर तर) वे सं ८६। वा घण्यार ।

वित्रक-याचार याज्या र[ू] वाला । ले याचा स्थापी । वे साथ द्वा क्षा क्षारा । ■ क्षार्टिकाल-स्वरूपकार विवासा । यत संस्था का १ उ. व. वाला-जिल्टी । विवस्

शा कांµहरतक—स्वकृष्यभद्रावस्था (परत्यस्था राष्ट्र राज्ञसा—स्वार्धाः वर्षस्थलं देशलेषु सुरोशाणं परलं १६ स्वेदाल युरी ऽ। शूर्णा से लंद स्वयस्थारा

सिन्ति---वीरानंपर की जेन्स्या ने नवार्ष अन्तुए में इस प्रस्त की रेचना था वर्षे ।

दृक्ष कुरतिसम्बद्धा— स्वयंत्रासंग्यं २१ । याः १२ ८३६ । त्राला–हिन्दी । विश्वस-पर्यः । कन्तरं १४३ । वे रूपः । वर्षा वे वं ४११ । या सम्बद्धः धर्म एव आचार शास्त्र]

६६२ प्रति **स०२। पत्र न० ५२। ले० कात ⋉। वे० स० १२७। इ**. मण्डार। ६६३ प्रति स०३। पत्र स०३ ≒। ले० काल X। वे० स०१७६। छ मण्डार।

६६४ केबलझान का ठ्यौरा" । पत्र मं०१ । ग्रा० १२६ै×५५ । मापा-हिदी। विषय-धर्म। ^र काल X । ने काल X । मनूर्ग । वे ० म ० २६७ । ख भण्डार ।

६६४ कियाकलाप टीका-प्रभाचन्द्र। पत्र म० १२२। ग्रा० ११३×५६। भाषा-सम्बत । विषय-थानक धर्म वर्णन । र० काल 🗡 । ले० काल 🗶 । पूर्ण । वे० म० ४३ । 🛪 मण्डार ।

६६६' प्रति स०२। पत्र स०११७। ले० काल स०१९५६ चैत्र मुदी १। वे० स०११५। क भदार। ६६७ प्रति स०३ । पत्र स०७४ । ले० काल स १७६४ भादवा मुदी ४ । वे० म०७४ । च भण्डार । विभेष—प्रति सवाई जयपुर मे महाराजा जयसिंहजी के शासनकाल मे च द्रप्रभ वैत्यालय मे लिखी गई थी।

६६८ प्रति सं० २। पत्र स० २०७। ले० काल म० १५७७ वैशाख बुदी ४। वे० स० १८८७। ट मण्डार ।

विशेप--- 'प्रशस्ति सग्रह' में ६७ पृष्ठ पर प्रशस्ति छप चुकी है।

६६६ कियाकलाप । पत्र स० ७। मा० ६३×४३ इच्छ । भाषा-सन्कृत । विषय-श्रावक धर्म भर्गन । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । अपपूर्ण। वै० स० २७७ । छः, भण्डार ।

६०० कियाकताप टीका । पत्र म० ६१ । ग्रा० १३×५ इয় । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रावक र्घमं वर्गान । र० काल 🔀 । त्ते० काल म० १५३६ भादवा युदी ५ । पूर्गी । वे० स० ११६ । क भण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

राजाभिराज माडौगढ़दुर्गे श्री सुलतानगयामुद्दीनराज्ये चन्देरीदेणेमहादीरखानस्यात्रीयमाने नेसरे प्रामे नास्तन्य कायस्य पदमसी तस्पुत्र श्री राघी लिग्वित ।

६७१ प्रति स०२ । पत्र स० ८ से ६३ । ले० काल 🗙 । झपूर्सा। बे० स० १०७ । झ भण्डार ।

६७२ ।क्रयाकलापवृत्ति । पत्र म० ६६ । आ० १०४४ इखा भाषा-प्राह्नत । विषय-श्रावक धर्म दर्शान । र० काल ⋉ | ले० काल स० १३६६ फाग्रुगासुदी ४ । पूर्गा | वे∙ स० १८७७ । ट मण्डार ।

विशेष-प्रगम्ति निम्न प्रकार है-

एष क्रिया फलाप बृत्ति समाप्ता । छ ।। छ ।। छ ।। सा० पूना पुत्रेग खाजूकेन लिखित व्लोकानामष्ट्रादयः-भतानि ।। पूरी प्रशस्ति 'प्रशस्ति सगह' मे पृष्ठ ६७ पर प्रकाशित हो चुकी है।

६७३ क्रियाकोष भाषा—किशनसिंह। पत्र स० =१। भा० ११×५ इस। भाषा-हिन्दी पद्य। निषय–श्रावम धर्म वर्गान । र∙ काल स० १७८४ भादना सुदी १५ । ले० काल × । पूर्गा । वे० स० ४०२ । श्र्म भण्डार ।

६७४ प्रति स० १। पत्र स० १२६। ते० नाल स० १८३३ मगसिर नुदी ६। वे• स० ४२६। स्र भण्डार ।



प्रारम्भ—सावज्ञजांगिवरइ उवित्तरा गुण्वउ ग्राहिन्ती ।

रवित भस्सम निद्यावरण तिनिच्छ गुण धारणा चैव ॥१॥

चारितस्स विसोही कीर्र्द सामाईयण विन्तरहम ।

सावज्जे अग्जोगाण वज्ज्यणा सेवणतराउ ॥२॥

दसण्यारितसोही चउवीसा रच्यण्या विज्ज्ञइय ।

ग्रम्चपन अगुण वित्तरण स्वेण जिल्ल्वरियाण ॥३॥

श्रन्तिम—मदणभावावद्या तिव्वरण भावाउ चुग्गई ताचेव ।

ग्रमुहाङ निरुण् वध्य कुराई निव्वाउ मदाउ ॥ ६०॥

ता एव वाय्य बुहेहि निक्विप सिक्तिसमि ।

होई तिक्काल सम्म अमिक्ते सिम मुगइपन ॥ ६१॥

चरगभवच्छेउ नक्य हादा हारिड जम्मो ॥ ६२॥

इ ग्रजीव पमीयमहारि वीरमह तमेव भ्रम्लमण ।

भाए मुति सभम वक्ष काररा निव्वुइ मुहारा ।। ६३ ।। इति चडसररा प्रकररा सपूर्य । लिखित गरिएवीर विजयेन मुनिहर्पविजय पठनार्थ ।

६६२ चारभावना । पत्र स०६। मा०१० ई४६६। भाषा-सस्कृत । विसय-धर्म । र० काल ४

विशेष-हिन्दी मे अर्थ भी दिया हुमा है।

६६२ चारित्रसार-श्रीमचामु उराय । पत्र स० ६६ । ग्रा• ६ है ४४ है इञ्च । भाषा-सम्बृत । विषय-भाषार धर्म । र• काल ४ । ले० काल स० १४४४ वैशाख बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० २४२ । व्य भण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रवार है-

इति सक्तागमसयममम्पन्न श्रीमिज्जनमेनभट्टारक श्रीपादपद्मप्रासादामारित चतुरनुयोगपारावार पारगधर्मविजयश्रीमच्चामुण्डमहाराजविरचिते भावनासारमग्रहे चरित्रसारे श्रनागारधर्मसमाप्त ॥ ग्राथ सल्या १८४० ॥

स० १५.८५ वर्षे वैद्याल वदी ५ भीमवासरे श्री मूलमधे नद्याम्नाये वलात्कारगरो सरम्वतीगच्छे श्रीनु दइ दाचार्यान्वये महारकशीपयनदिदेवा तत्महुँ भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे महारकश्रीजनचन्द्र देवा तत् शिष्य
भाषायं श्री मुनिरन्नवीति तदाप्राम्नाये मण्डेलवालान्वये मजमेरागोत्रे सह चान्त्रा भार्या मन्दोवरी तयो पुत्रा साह
वाषर मार्या तक्ष्मी साह प्रजुन भार्या दामातयो पुत्र साह पूत (१) साह ऊदा भार्या कम्मी तयो पुत्र साह दामा साह
याजा भार्या होली तथो पुत्री ररणमल क्षेमराजसा डाकुर भार्या क्षेत्र तयो- पुत्र हरराज । सा जालप साह तेजा भार्या
त्यजिमिरि पुत्रपौत्रादि प्रभृतीना एतेषा मध्ये सा श्रजुन इद चारित्रसार शास्त्र लिखाप्य सत्पात्राय धार्यसारगाय प्रदत्त
लिखिन ज्योतिगुर्णा ।

```
k६ ] धम त्य भाषार शास
```

६६४ सिंदिर्म मापन नं १४१। ने प्रतान १६६६ सलास लुदी ८। वे नं १११। स मनार।

विमेत—वः पुनीचनः ने निननाता ।

६६६. प्रतिसं ०३ । पथ नं ५००। के पात्र शंदर प्रथमित कुदी २ । वे तंदर । क्र

- ६६६ मति सै ४३ पवर्ग प्रशांक कला×ावे नं ३२ । व्यक्तवार।

निकेर-नदा बढ़ी गाँउन अर्थों के धर्म की दिने हने 🛙 🛭

६६७ असि सें ४ । यस में ६६१ से यानाओं १७४६ वर्शनक मुद्दीय । वे में १६६ से मन्तार ।

विनेत---हीरापुरी से शक्तिशिषि हुई। ६६८:- च्यारिकमार अभ्या-सकासाझ। यद ४ १७ | घा १९५/६ (जला-रिभी(दय)) निपन-दर्श

क नकार ।

क्ष करहार । ७७३ व्यारिकमारण्यः । यथ वं २२ में ७६ । ब्या ११८२ । जनग-नंस्कृत । विषय-वाचारमञ्ज

र कान ≾। ने बाल नं १६४३ मोक्क तुर्वे १ं। सनूर्ण । के सं २१६४ । क्र क्यार ।

निर्मेश—स्थानित विन्तं जनार है— में १६४६ वर्षे थांके १८ ७ जनर्गवाने स्पेक्षमान इच्चनक्षे श्वस्यः विश्वी नामपानरे परिचाद्यं भी मेन्ट

भरराज्येजसर्पने गोपी निर्मान नामी कपूर कोनी नीमा निर्मान नामुद्रा ।

७ १ वीवीस स्वाच्छमापा—दौबारास । पण नं ६। वा १५×२५ । कमा-दिग्धै । नियम-

७ विश्वास वृद्धकृष्ठमाणा—(मुख्ययास) वर्ग देशा दे, २८८६ । सरा∺पूर्णा । सर्गार पर (सर्गी क्राणिया) ने नार्ग ते (प्रथ०) मुर्मा वे ते ४८७० । सा स्पर्णा । सर्गार । सिर्मर—सर्गिराम ने एक्स्पुर्ण के वे शिक्षणण्या के प्रकार सिर्मिशिय वी पी ।

अक्ट प्रशिक्षं के क्या में दिश का अपनार ।

कर प्रश्चित है। कर ने ११ कि समानं ११३० अनुस्थ नुरोध । वे सं ११४ । कर्षातः।

अन्तर प्रतिसः प्रापदार्ग ६।सं नाग×।वै नं इट ।क्रमन्त्रार।

क्क प्रतिद्वा ।। प्रवर्ण के। से प्रत्न ×ावे नं १६१ वासप्पार। क्रक प्रतिद्वी के। प्रवर्ण ४। से प्रत्न ×ावे नं १६२ । कासप्पार।

७ ८८ प्रतिका क∣यम ने ६। में नाम ने ११ । में ने काश भामनार।

र्मि एव प्राचार शास्य]

F 1 7

७८६ प्रति स्व म। पत्र मत् १। मत् नात् । यव मत् अद्धा च भण्डार।

७१० प्रति सब्दायत्र सन्यासेन्यातः । वेश्यः १३६ । छ सन्यरः।

विनय-४७ पप्र ।

४१२ चौराभी प्यासादना । पत्र संरूष कार्या कार्यान्हिले । विषय्नधाः ।

^{१० पार}ानः कान हो पूर्णा स्थे० मरु = ८३ । श्रा भागार ।

रितेष-जैन महिरा म पहलाय = ८ किसाबा के नाम है।

७८२ प्रतिस्टर्भवयः १८१। से० पात्र । वे० प० ८४७। स्र भारणः।

अ१३ चौरामी श्रामादना । १९ ५० १। धार १० ८४३ "। भाषा-सरहत । विषय-सम

ात कान १ । पूर्मी। यत सत १२२१ । छा नण्डार ।

विरोप-प्रति हिन्दी द्वात दीका महित है।

७१४ चौरासीलाय उत्तर गुगा । पत्र २०४१ साः ११६४८६ रख । नापा-हिनी । निपप-धर्म । २० पत्र । प्रणास्थित १२६३ । श्रा ग्रहार ।

निमेप-१६००० भान ग भए ही दिय हुए ।

५१४ चौसठ ऋद्धि बणन । पत्र मर्गा प्रा० १०> ८६ ८६। नापा-प्रारूत । विषय-पम । रुवात > । नेव पात्र , । पूर्ण । वेव वंव २४१ । च नण्डार ।

७१६ व्यहदाला — दीलतराम । पत्र स० ६ । धा० १०, ६ हे हक्ष । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । ८० पान ४२वी शनान्दी । ने० यान > । पूर्ण । के० स० ७२२ । स्त्र मण्डार ।

७ ७ प्रति स्टब्रापव प १३। लेब नाप संव १६४७। वैश्यव १३२४। स्त्र भण्यार ।

७१८ प्रति स० ३ । पत्र गं० २८ । वे० याल स० १८६१ बैद्याख मुदी ३ । वे० स० ४७७ । क स्टार विशेष—प्रति हिन्दा द्यारा सहित है ।

७१६ प्रति सः ८। पत्र ७० १६। ने० कान ४। वे० म० १६६। स्व भण्डार।

निमेप—इसवे श्रतिन्ति २२ परीपह, पचमगनपाठ, महावीरस्तीय एव सपटहारणविनती श्रादि नी है है है ।

७२० छहटाला-चुत्रजन । पत्र म० ११ । धा १८४७ दक्ष । भाषा-हिन्दी पद्य । त्रिपय-धर्म ।

७२१ छेटपिएट—इन्ट्रनिट । पत्र स०३६ । ग्रा० ८/५ द्रश्च । भाषा-प्रापृत । विषय-प्रायभित षान्य । र० सात्र × । पूर्ण । ते० स०१६२ । क भण्डार ।

७२२ जैनागारप्रक्रियाभाषा---वा० दुलीचन्द । पत्र म० २४ । ग्रा० १२४७ टक्स । भाषा-हि दो विषय-भावक वर्म वर्णन । र० काल म० १६३६ । ने० काल ⋋ । ग्रपूर्ण । ने० म० २०८ । क भण्डार ।

```
श्यः ] [धर्मेष् भावार सस्त्र
भरदे महिसा० २ १ प्यत्तं ४ । वे कस्त्रातं १८६६ मालोज नुग्रेषः | वे सं १ ८ । क
भग्यार ।
```

७ ४ स्रोतानम्शावकाचार—सामसी आर्द्धरावसम्। पत्र वं २३१ । सा १३४ ४ स्था भरा-निर्दो। पिपव-पानार बस्तार राम १०वी सहास्त्री । ते नाल ४ । दूर्ण । वे सं २३३ । इ. भयार ।

•¤⊁ मनिस∙ २ । पत्र संदध्का के क्षम × । वे संदक्ष । स्क्रणकार ।

५ ६ मिठिसी २ । पत्र क्षं ३. । से क्ष्मच×्राबयूर्ण्य के देश्दर्शक वस्तार। ५२० मिठिसा है। पत्र वं २६२ । से काल स्टं १८६२ सम्बन्ध सुदीरु≽। वे वं २२२ ग

त भवार) थन्स, प्रतिसंधापण सं१२ में क्ल∀ कि बक्त ≿ावे व १९७ । च बच्चारा

७७६ प्रकृति स्व० ४ । गवानी १ । ते जल्मा ४ । जपूर्ती । वै इत् । जालस्यार) ७६ क्षानचितासम्बद्धासम्बद्धासम्बद्धाः । यव सं १ । मा ६६४४६ रक्षाः शला-हिन्दी । विरस-

भगार नाल ×ाके अस्ता×।सपूर्वाके र्टश्यकाच्यार। निमेप----के तकपत्र नहीं है।

३१ अधि संदेश में देश ते क्षण संदेश भारत है देश भारत वृक्ष दावे संदेश सम्बद्ध ७३२ अधि संदेश में तो ते तम अपने संदेश का प्रथमार ।

निकेन—१२ सम्बद्धीः

७११. एक्साम्बद्धी—अञ्चारक सामञ्जूष्यः। वर्षः २७। थाः ११४८ रखः। वर्षः–१९०० रियय–वर्षः। ए नम्म सं ११६ । ने यमा सं १९६४ याणस्य तुर्वाशः। दुर्गाशे सं ११। का वर्षारः। ७१४. मृद्धिः १९ वर्षः पे २६। में यमा सः १७६९ वेषः दुर्गाथः। वे १३३। स्वर्णनारः।

७३४ प्रति स्टेंदे। पर संदेश के कला संदृष्टक लोह तुरी १९। वे संदृष्ट । क वंत्रप्र ७३६ प्रति संदृष्ट । यस संदृष्ट । के अक्रम संदृष्ट । वे संदृष्ट क्यारार्ट

चरर शहास्त डानगर्य क्यांन क्यांच र १४१। का व्यवस्थार ७३७ प्रहिर्द्ध शांत्रम् संचारी

विमेर--- प्रति हिन्दी धर्व सहित्त है।

७२.स. प्रश्चित्तं विश्वास संदर्भको स्थान स्थान । विश्वास स्थान । विश्वास स्थान । विश्वास स्थान । विश्वास स्थान

७६६ क्रियशीचार—संसोससन्।पत्रतं १०।सा ११×२ रचा मना-चैतारा।विषय-साना-वर्गाःर नक्तासं १६६ ।से नार्गं १६२ मनवादुषी १ ।पूर्णाके सं २ ।सामग्रार≀

गिकेरा—प्राटक के २६ वश कुसरी निर्मिते है। अर्थ प्रदिक्त के ।पन संग्रीतिक क्षेत्र के प्रतिक क्षेत्र के प्रतिक क्षेत्र के प्रतिक क्षेत्र के प्रतिक क्षेत्र

 ७४१ प्रति स= ३ । पत्र स० १४३ । ले० काल × । वे० स० २८६ । व्य भण्डार ।

७४२ त्रिवर्णाचार । पत्र स०१६। ग्रा०१०५४४१ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्राचार। र०नाल ४ । ले० नाल ४ । पूर्ण । वे० .'० ७६ । स्व भण्डार ।

७४३ प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ले० काल × । वे० स० २८५ । ग्रपूर्ण । ड भण्डार ।

७८४ त्रेपनिक्रिया "'। पत्र स०३। ग्रा०१०४६ इख्रा भाषा-हिन्दी। विषय-श्रावक की क्रियाग्री का वर्णन। र० काल 🗴 । से० काल 🗶 । पूर्ण। वे० स० ५६४। च भण्डार।

७४४ त्रेपनिक्रयाकोश—टौलतराम । पत्र स० ६२ । ग्रा० १२×६ हे इझ । भाषा-हिन्दी । विषय-भाचार । र० कात स० १७६४ । ले० काल × । भ्रपूर्ण । वे० म० ५६४ । च भण्डार ।

७४६ दराडकपाठ । पत्र स० २३। ग्रा० ५ \times ३ इख्र । भाषा—सस्कृत । विषय—वैदिक माहित्य (ग्राचार) । र० नाल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० १६६० । स्त्र भण्डार !

७४७ दर्शनप्रतिमास्बरूप ापत्र स०१६। ग्रा०११६ँ×५५ इख्रा भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। र० वाल ×ा पूर्ण। वे० स०३६१। श्रा भण्डार।

विशेष-धावक की भ्यारह प्रतिमाग्रो में से प्रथम प्रतिमा का विस्तृत वर्णन है।

७४८ दशभिक्ति । पत्र स० ५६ । ग्रा० १२×४ इख । भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म । र० काल ×। र० वाल स० १६७३ ग्रासोज बुदी ३ । वे० सं० १०६ । व्या भण्डार ।

विशेष—दश प्रकार की भक्तियों का वर्णन है। भट्टारक पद्मनदि के ग्राम्नाय वाले खण्डेलवात्र ज्ञातीय सार विशेष विशेष वाले साह भीखा ने चन्द्रकीति के लिए मीजमावाद में प्रतिलिपि कराई।

७४६ दशलक्ष्णधर्मवर्णन-पट सद्। सुत्र कासलीवाल । पत्र स०४१। आ०१२×५ई इज्र । भाग-हिदो गद्य । विषय-पर्म । र०काल × । ते० काल स०१६३०। पूर्ण । वे० स०२६५। इ. भण्डार ।

विरोप-रत्नकरण्ड श्रावकाचार की गद्य टीका में में है।

५४० प्रति स०२। पत्र स०३१। ले० काल ×। वे० सं० २६६। ड मण्डार।

७५१ प्रति स० ३ । पत्र स० २४ । ले० नाल × । ने० स० २६७ । छ मण्डार ।

७४२ प्रति स० ४। पत्र त० ३२। ले• काल ×। वे० त० १८६। छ भण्डार।

७४३ प्रति स०४। पत्र स०२४। ले॰ नाल स० १६६३ नात्तिन सुदी ६। ने० स० १८६। र भण्डार।

विशेप-श्री गोविन्दराम जैन शास्य लेवक ने प्रतिलिपि की ।

५५४ प्रति स०६। पत्र स०३०। ले० काल स०१६८१। वे० स०१८६। छ भण्डार। विभेप—मन्तिम ७ पत्र बाद मे लिखे गये है।

Service Control of the Control of th

```
4c ]
                                                                    ियम एवं ब्याबार शहरत
          ७୬୬ अतिस को पद ने ६४। ने दान X । दे में १६३ <del>स बन्दार</del>।
          ७५६ प्रशिक्षं⊂≂। परगं६ । ते वल्ल 🗙 । अपूर्णा वै नं ११। ह्र अध्यार ।
           -५८७ प्रतिस ६।पत्रम ४२।के बाल ≾1वै से १७०६।हबनार।
          अर्थः वहारासकारामेवर्गासः । पण में २ । धाः १२७५७£ इकाः बाला-दिली । विराद-मार्गः
   रान × । में राज ∡े। पर्या वै सं प्रतका का भागार ।
          ७६६८ मितिस २ । पथर्ग १ । वे पान × । वे नं १६१७ । ज्याचार ।
          रिकेर-जनसरकाम ने प्रतिनिधि की बी।
          45 क्वानर्रका<del>शक-पद्मविद्व १४६ र्च</del> । या ११×४० रड । मरान्नीरत । विस-वर्ग ।
र समा≺ाते समा≾ादे ३२४ । कालन्सरा
          रिकेश--व-िश्वन प्रयापित निम्न अंशार है---
          भी पप्रमंति इतिराधिक कृति पुग्नकान र्वकायन नतितवर्ग्य कया प्रकरम्म अ इति वात र्ववामा नगति ॥
           45१ क्षालक्करणा १ पत्र संभाषा १ ४४३ इक्का बला-साक्ता रिक्स-वर्गे । र कर्त×
स सकत १ ६६ । बर्गावे में ३६ । बर पच्चार ।
          विगोर---पुजरानी भाग में वर्ष दिया हुया है । सिथि बावरी है । शारान स ४ वट तक र्वत्यवस्तर मान
दिया है।
```

५६२. काक्सीक्षतपमाचना---पर्मेसी (पव सं १३ था १_९४४ इ**व** १ मना--दिनी । विरस--वर्गाट कल ⊼ाणे अल ×ाद्रली श्रेत २१४३ । इ. मचार । ७६३ ताक्करीकटपमायना[™] । पत्र सं ६। या १ ×४ इक्कर वापा-संस्टर । विश्व-वर्गे । र सम्∀ान सम्≪।स्पूर्णा∛र वं १६६।स.वच्छर।

विकेत--४ १ पत्र नहीं है। प्रति लियी वर्ण सहित है। ७६४ क्षानशीकतपमायना^{च्या} । पत्र सं ११ या ६Ё४४ इक्षः। नामा-हिन्दै । विश्य-वर्गः। र रस्र ≻ामे नास ×। पूर्णा ने नं १९९६ । सामचार ।

विकेश-मीती चीर शाको ना नेवाब भी खूल मुखर क्य ने दिया बया है। अर्थाः शीवन्यविकानिर्वोत् ^{चन्या}। पत्र सं १२ । या १२×६ इक्कः वारा-शिसीः। विचय-वर्षः। र राख र । से राल र | पूर्वा वै वे वे देश का जवार।

निकेश-निधिशार बज्रामास व्यक्ति । ७६६ धति सैं≉ २ । पत्र सँा के बाल × । पूर्वा के सं ३ ≿ । ६६ मनार ।

विमेर-प्रस देवद रोहे हैं। दे में देश एक पथ नहीं है।

क्षक क्षेत्राच**सक्त -**रामसिंह । यह वं २ ो या० ११८४ इस । भारा-पश्च म । विपन-प्राचार तक्तकार नाम रेबीबशस्यानै नाम ×ाध्यार्था वे २६२१ धामधार।

पद्म धर्मचाह्ना । पत्र स० ८ । श्रा० ५२ ×७ । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल ×। नै॰ काल X | पूर्ण | वै॰ तः । ३२८ । हः भण्डार |

५६६ धर्मपर्चिशतिका-- ब्रह्मजिनदास । पत्र स०३ । मा० ११३×४३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म। र० काल १५वी शताब्दी। ले० काल स० १८२७ पौप बुदी ६। पूर्गा। वे० स० ११०। छ मण्डार। विशेष-- प्रनथ प्रशस्ति की पुष्पिका निम्न प्रकार है-

इति त्रिविधसैद्धान्तिकचक्रवरर्याचार्य श्रीनेमिचैन्द्रस्य शिष्य व । श्री जिनदाम विरचित धर्मपचिवश्तिका नामशास्त्र समाप्तम् । श्रीचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

७०० धर्मप्रदीप्रभाषा--पन्नातात सबी । पत्र स० ६४ । घा० १२×७३ । भाषा-हिन्दी । र० काल म० १६३४। ले० काल 🗙 । पूर्गा। ते० सं० ३३६ । इ. मण्डार ।

विशेष—सम्कृतमूल तथा उसके नीचे भाषा दी हुई है।

७७१ प्रति स० २ । पत्र स० ६४ । ले० काल स० १९६२ ब्रासीज मुदी १४ । वे० स० ३३७ । इ मण्डार ।

विशेष-- प्रत्य का दूभरा नाम दशावतार नाटक है। प० फनेहलान ने हिन्दी गद्य मे प्रर्थ लिखा है।

७७२ धर्मप्रश्तोत्तर-विमलकीर्ति । पत्र म० ५० । मा० १०ई×८ । भाषा-सम्ब्रुत । विषय-धर्म । ^{र० काल} × । ले० काल स० १८१६ फाग्रुन मुदी ४ । व्याभण्डार ।

विशेष---१११६ प्रक्तो का उत्तर है। ग्रन्थ में ६ परिच्छेद हैं। परिच्छेदों में निम्न विषय के प्रक्तों के उत्तर हैं - १ दशलाक्षाणिक धर्म प्रत्नोत्तर । २ श्रावकधर्म प्रश्नोत्तर वर्गान । ३ रत्नत्रय प्रश्नोत्तर । ४ तत्त्व ^{क्}छा वर्णन । ५ कर्म विपाक पृच्छा । ६ सज्जन वित्त वह्मभ पृच्छा ।

मङ्गलाचरण - तीथेंशान् श्रीमतो विश्वान् विश्वनाथान् जगदगुरून् ।

भनन्तमहिमारूढान् वदे विश्वहितकारकान् ॥ १॥

चोखचन्द के जिल्य रायमल ने जयपुर मे शातिनाय चैत्यालय मे प्रतिलिपि की धी।

। पत्र म० २७ । ग्रा० ८ XX । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल X । ७७३ धर्मप्रश्नोत्तर ने बाल मा १६३०। पूर्णा । वे० मा ४००। स्त्र भण्डार।

विशेष---ग्रन्थ का नाम हितोपदेश भी दिया है।

। पत्र म० ४ मे २४ । ग्रा० ८×६ इखा भाषा-हिन्दी। विषय- धर्म। ५७४ धर्मप्रश्नोत्तरी ^र० काल × । ले० काल स० १६३३ । धपूर्ण। वे० स० ४६⊏ । च मण्डार ।

विशेष--प० वेमराज ने प्रतिसिपि की ।

७.८४, धर्मप्रकोत्तर श्रावकाचारमापा--चम्पाराम । पत्र म० १७७ । ग्रा० १२४८ इझ । मापा-हिन्ते। विषय- श्रावको के श्रावार का वर्शन है। र० काल म० १८६८। लेश काल स० १८६०। पूर्ण। ने० स० ^{३३६}। इ भण्डार ।

७०% प्रसारकोत्तरभाषसम्बद्धाः ----गायत सं १६६३। सा ११ $_{+}$ \times ६६ इस् । अरा-नंतरण । विपर-मावन वर्ष कर्मनः । स्वास \times । सं कल्य \times । स्वपूर्णः । सं त्रे । स्वल्यारः ।

प्रतिसः १।पन्तं ११।ने नाल X।वे सं २६८।स्य स्थार)

पन्न वर्गस्य कर—समङ्कर्ताप मीखाशिय सं १६१।मा ०१८७ दश्च। प्रशःसीपुर । रिया-सर्ग।रोपाल सं १६८ | के काल ४ । पूर्ण । वे रंदु। । व्यालकार।

विकेश--- नेकड प्रयक्ति विस्त अवार है---

র্চ १६ বর্ণ পার্যাপর্ক পাঁকত তানি করাকে আঁকুবের জিলা গতির সন্তুম পুনর প্রমাণ বোদর সাল মান্য নামানি পাঁকে কলা है।

७७-८. प्रमेरसायन—पद्मतम्। एव सं २३। शा १३×२ द्वा (क्या-वाह्यः। विपर-वर्गः र गला×।ते क्वलः×।वर्गःके सं ६४२ व्याध्यक्तः।

थ≕ प्रतिस के | बच सं ११ । से काम सं १७१ वैद्यास दृशी ११ वें प्रश् स नवार।

थ्यरे वर्सरमावन — । पवर्षी । या ११_७×३. इष्टावान-देख्टावियस-वर्षी, र नक्त × । ने नक्त × । यपुर्वाके संस्थित । अस्तिवारः

भन्नी, वर्गककृष्ण ""।पन धं हाजा ह ४४ दक्षा जला-संस्कृष (वेस्स-सर्गः) र राज्य XI र्ग प्रसाद अवस्थित हो । इस्तर । इस्तरकारः।

्रम् वर्धसम्बद्धानासम्बद्धानास्य में भैजावी । यस र्था १२×६ इ.स. । धना-स्थितः। रियम-मानव वर्षसर्गन । र लार्च १४४१ । में नाम सं १४४९ वार्तिक कृते १ । दुर्जा हे सं १९६। इ.स. सम्बद्धारः

निर्देश—वित तम वे लेकोवित की हुई है। वेन्यानस्ता की कार कर कुछा संबक्तावरस्त तिस्तावन है। तमा परिता में दिश्य के स्वान में कीवाविता कमा बोटा क्या है। तेल्क बहुन्ति किल है—

ध्या । द्वितीय पुत्र पचाणुद्रतप्रतिपालको नेमिद्यास तस्य भार्या विहितानेकधर्मिकार्या ग्रुग्सिरि इति प्रसिद्धि तत्पुत्रौ विरंजीविनौ ससार चदराय चदाभिधानौ । श्रथ साधु केसाकस्य ज्येष्ठा जायाशीलादिग्रुग्गरत्नवानि साब्वी कमलश्री दिनीयप्रनेकप्रतिनयमानुष्ठानकारिका परमश्राविकासार्थ्वौ सूवरीनामा तत्तन्नज सम्यक्त्वालकृतद्वादशद्रतपालक । सध्यति द्वगराह । तत्त्रलश्च नानाशीलविनयादिग्रुग्ग्पात्र साधु लाढी नाम धेय । तयो सुतो देवपूजादिपट् क्रिया कमिलनीविकासनेवमार्तिण्डायमो जिनदास तन्महिलाधम्मकम्मठ कर्म श्रीरितनाम । एतेषां मध्येसघपित स्त्हास्य भार्या जही नाम्ना निजपुत्र शांतिदासनेमिदासयो न्योपाजितवित्तेन इद श्री धर्मसग्रह पुस्तकपचक पित्रक्षीमीहान्यस्योपदेशेन प्रथमतो लोके प्रवर्तनार्यं लिखापित भव्यानां पठनाय । निजज्ञानावरगुकम्मक्षयार्थं ग्राचन्द्राक्किदिनदतान् ।

७≒४ प्रतिस≎२ । पत्र स०६३ । ले० काल × । वै० स० ३४५ । क भण्डार ।

৬८४ प्रति सं ३ । पत्र स० ७० । ले० काल स० १७८६ । वे० स० ३४२ । ভ मण्डार ।

७८६ प्रति स०४ , पत्र स०६३ । ले० काल स०१८६६ चैत सुदी १२ । वे० स०१७२ । च भण्डार । ७८७ प्रति स०४ । पत्र स०४८ से ५४ । ले० काल स०१६४२ वैद्याख सुदी ३ । वे० स०१७३ ।

च भण्डार।

७८८ प्रति स०६ । पत्र स० ७८। ले० काल स० १८५६ माघ सुदी ३। वे० स० १०८। छ भडार। विशेष-भवतराम के शिष्य सपतिराम हरिवशदास ने प्रतिलिपि करवाई।

७८६ धर्मसग्रहश्रावकाचार । पत्र स० ६६। ग्रा० १९३४४३ इख्र । भापा-सस्कृत । विषय-भावन धर्म । र० काल × । ले० नाल × । वे० स० २०३४ । श्र्य भण्डार ।

विशेष-प्रति दीमक ने खा ली है।

प्रदेश धर्मसमहभावकाचार । पत्र स०२ से २७। घा०१२४५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-

७६९ धर्मशास्त्रप्रदीप । पत्र स० २३। म्रा० १४४ इख्र । भाषा-सस्वृत । विषय-वैदिक साहित्य । र० माल ४ । ले० काल ४ । म्रपूर्ण । वे० स० १४६६ । म्रा भण्डार ।

७६० धर्मसरोवर—जोधराज गोदीका। पत्र स० ३६। आ० ११३४७३ इख । भाषा-हिन्दी। विषय-धमापदेस । र० नाल स० १७२४ श्रापाद सुदी छ। ले० काल स० १६४७। पूर्ण । वै० स० ३३४। क भडार

विशेष--नागबद्ध, धनुषबद्ध तथा चक्रबद्ध निवसाम्रो के चित्र हैं। प्रति स० २ के माघार मे रचना सवत् है ७६३ प्रति स०२। ले० काल स० १७२७ कार्त्तिक सुदी १ । वे० स० ३४४। क भण्डार ।

विशेष--प्रतिलिपि सागानेर में हुई थी।

७६४ धर्मसार-पट शिरोमणिदास । पत्र स० ३१ । ग्रा० १३×७ डम्म । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । र० नाल से० १७३२ वैसास सुदी ३ । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० १०४० । ग्रा भण्डार ।

पध्य प्रति स०२। पत्र स०४७ । ले० नाल स०१८८५ फाग्रुए। बुदो ४। वे० स०४६। ग

विशेष—श्री शिवलालजी साह ने सवाई माबोपुर में सोनपाल मींसा में प्रतिलिपि करवाई ।



\$¥]

ियर्स एक सामार सार**व**

थ६६ पर्मासृतस्किसमइ—काशापर 1 पत्र वं ६१ । धा ११×४३ इच । पता—सन्त । विस्त-

माचाप्पदंबर्म। र[्]वला तं १२६६ । विकला सं १७४७ माबोज बुदी २ । पूर्ण । वे सं १६६ ।

विमेर—संबर् १७८७ वर्षे प्रातीय भूषी २ बुववासरे सर्व द्वितीय कावरवार्म स्कंदः वरा-वकारवाल— क्लिमि क्लिपिस्तामि 100% ।) क ।

धंवमङ्कासस्मित्री एत पुण्येन् विमानन्ता ।।

हृदि धार्केच्य योकामित्रीय सम्मारती ।। दुम्बा पाणा ।।

सोचर वङ्ग विश्वमुक्त्यत्येत्वमू सम्मार्थः ।

प्रवाद कर्म विश्वम सम्मारक्तियस्य ।। १ ।।

विकार यो यो प्रकृष्ण हुई चल्यां म सोवियो दिस्सा ।

सङ्गानि सम्पत्ती क्रुविन्त्र नोस्ताईय ॥२॥ इति विस्तानामा ॥थी ॥

विकेट - एवि अस्त्रीन है ।

रक्ताकानाव प्रवृत्ति है। यह यो वस्त्रों में विश्वक है। एक बलावर्षामृत क्ष्या हवास क्ष्यकार कर्मनृतः। थ्यः क वर्मीक्षेत्रसीवृत्यसम्बद्धमार—सिंह्यभीहः। यस सं ३६ । बा १ ३४४३ स्त्रः। वस्त्र-संस्कृतः। विश्वन-स्त्रपार करूपः। र वस्त्रः ४) के करूपः संस्कृतः। वस्त्रः सुन्तीः वस्त्रः असः। स

स्थार। अर्थः वर्गोरदेशस्थानसम्बद्धः—समोधवर्षः पद श्रं दशः द्वाः १ ४६ दशः। मता-संस्टाः

च्या- वनारपुरम्बन्धन्यर—वशायवर्थन्य रचन हत्। सार् Xर्इझा मना-नास्ट विदय-सावार यक्त्र । र फल Xाने कल में १७०४ साव नुती१६। दुर्लाहे सं ४४ । व वधार।

विकेद--- नोटा में प्रतिशिविष की गई थी : अर्थकः वर्मीपवेदानाचकाच्यार--- लक्का नेसिवचा । यन वं २५ | या १ ×४३ दका | वादा--नस्या ।

निषम- सापार समयो र पेला ×ाने काला×ा अपूर्वा वे ता २०४३ । हालाबार । सन्तिव पत्र नहीं है । सः प्रति संदेश पत्र नांदिश कि काला ता १९३ लोड लूपो ३ । के तांदिश संस्थार ।

मिक्क---वनमीकव ने लाज्जार्व प्रवितिर गी गी।

द⊌१ प्रतिसः ३ ।पत्र वं १ । ते कल्प×। वे तं २३ । स्र क्यार ≀

८ हे समीपहेशसमझ —सेवासम समझा वर्गत ११ । या १९४ दक्षा जरान-दिन्दी। विद्यक-वर्गार, करण संदूर के गम्ब ४ । वै संदर्भका

विकेर-जन्म प्रचानं १ ६ वे हुई निन्तु कुछ स्थ्येस र ११ ये मूर्ता हुमा। इ. ४ प्रति स २ । दस्यं १६ । वे नाल XI वे बंध्हा चुन्नमार।

स ४ प्रश्निस २ । पत्र वं १६ । वं पत्र राव वं दर । वं प्रमारः। सक्≭ प्रश्निसी ३ । पदसी २७६ । वे वक्त ×ावे से १ ११ । संक्रमणारः। मः६ नरकटुष्यसर्पन-सृगरदाम । पत्र स०२ । मा० १०८४३ द्वा । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-नरत में दुगा गा वर्णन । र० वात ४ । ने० मात्र ४ । पूर्ण । वे० स० ३६४ । ग्रा मण्डार ।

विभेय-मूधर कृत पार्धवृताग में से है।

==== प्रति स्ट २ । पत्र स० १० । से० शान × । ये० ५० ६६६ । श्र भण्डार ।

सःस स्टब्स्यांसः । पत्र स० द । ग्रा० १०क्ट्रै/८ दक्ष । भाषा—हिन्दी । विषय-सग्दा ना वर्णत । र• बान ४ । ने० पान स० १८७६ । पूर्णे । वे० स० ६०० । च भण्डार ।

तिरोप-सदानुस नामनी वास ने प्रतिनिधि की ।

६०६ नयकारश्रायकाचार । पत्र म० १४। घा० १०६ हवा । भाषा-प्राकृत । तिषय-धावना ना घानार वर्गन । र० मान ४ । ने० वान मं० १६१२ चैपास मुद्री ११ । पूर्ण । ने० मं० ६५ । श्र भण्डा-

विशेष-भी पार्चनाय चैत्यान्य में सक्षेतवान गोत्र यात्री बाई तीत्ह ने भी ग्रायिता विनय श्री को भेट विया। प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

मयत् १६१२ वर्षे वैद्याप सुदी १६ दिने श्री पार्चनाय चै वालये श्री मूलसपे सरम्बती गच्छे बलाव्यार-गसे श्रीषु दसु दाचार्यात्वये भट्टारम श्री पद्मनदि देवा तराष्ट्री भ० श्री शुभवाद्भयेवा तराष्ट्री भ० श्री श्रभावाद्भयेवा तत्-िएय मण्डलावार्ये श्री धर्मवाद्भयेवा तत्रिष्यमण्डलायार्थं श्री वितित्तरीतिदेवा तदास्ताये गर्डेसवालाव्यये भीनी गीत्रे बार् नीत्तृ दद शास्त्र नवकारे श्राववाचारं शानावरस्थी वर्षस्य निमिन प्रजिका विनैमिरीए दन ।

५१० नष्टोतिष्ट । पत्र स०३। झा० ५ \times / इद्म । भाषा—सम्बुत । विषय—धर्म । र० सान \times । पूर्ण । वे० स० ११३३ । झा मण्डार ।

प्तरे निजासिंश्— त्रश्र जिनदास । पत्र स० २ । म्राश्य द४४ इख्र । सापा—हिन्दी । विषय-धर्म । के काल × । पूर्ण । वेश्य स० ३६८ । फ अण्डार ।

पश्चितित्वकृत्यवर्शनः । पत्र स० १२ । मा० १२४४३ दक्षः भाषा-हिन्दी । विषय-धर्मः । र० वानः ४। ले० वानः ४। पूर्णः । ये० स० ३४६ । इ. भण्डारः ।

म् प्रति सद २ | पत्र म० ६ । ते० नाल × । वे० न० ३५६ । इ भण्डार |

६९४ निर्मालयदोपप्रर्णन—मा० दुलीचन्द्र । पत्र स० ६ । मा० १००००० मापा—हिदी । विषय—

प्रश्य निर्वाणप्रकरणः । पत्र स० ६२ । आ० ६५ ×६३ डब्रा । भाषा–हिन्दी गत्र । विषय–धर्म । कि कान स० १८६६ बैदााल बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २३१ । ज मण्डार ।

विरोप-गुटना साइज में है। यह जैनेतर ग्रन्थ है तथा इसमे २६ सर्ग है।

प्तरिक्षित्र निर्वाणमोदकिर्मिय निर्मियास । पत्र म० ११ । मा० ११३×७३ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-महायीर-निर्वाण के समय का निर्मय । र० काल × । वि० काल × पूर्म । वे० म० ६७ । ख भण्डार ।

```
4 1
                                                              ियमें वर्ष भाषार सार्थ
         मरें पचपरमेश्रीमुक्ताम्ममा पव सं ४ । था ७×१ई दब । बारा-दिशो। रिपर-मर्ग। र
रल×। वे रात×। पूर्णा वे सं १६२ । बाबपार।
```

यरेय पंचपरमेद्रीमुख्यर्कान-काक्साम्। पत्र सं ७३ । बा ४०×४३ । भाग-हिन्दी नव । नियम-परिशंत किंद्र काचार्य कराज्याय एएँ कर्म ताबु गंच नरमेहियों के प्रस्तों का नर्रात । र नाम कं रै पैर

पाइस बुरी १ । में कुल से १०१६ बायात बुरी हैशे पूर्ते । वे रेका बद्ध पातार । वियोग-- १ के वह के शायालकेका गाया है 1

प्रदेश पद्मनंदिर्गक्तिका—पद्मनंदि। पत्र वं १ के व । था १२३×१ हता । जाना-वंतरण। विषय-वर्गारं पत्त ×ामे बाल संदेश द वेत बुधी र । बेबूर्स (वे संदर्श । प्राचमार ।

विकेश--- केश्वर अवस्ति बयुर्ल है किया निम्न असार है---की वर्ष बनावतान्याये हैंस कोर्च क्षेत्रेनवानान्यवै रावतरिकातको राव क्षी बनाता राज्यसर्त्यने वर्ष

धीनाल -----भ्यः प्रशिष्ट २ । यस सं १२८ | ते पत्ता सं १२० व्येष्ठ सूटी प्रशिप्ता | वे सं २४४ | भी सन्दर्भ ।

विवेप--ब्रह्मित विम्मप्रवार है--संवद् १२७ वर्षे क्वेष्ठ तुरी १ एवी वेट बुतर्सने बनास्परकते बधनाई राष्ट्रे यो हु रह राषार्क्षको स. यो तरसक्तिकाण्यान स. पुरसक्तिकाण्यान स. थी बालहरात विश्वास स्ट

देशका रक्तार्व । रेपुनि काने बातराणी व्या० वयपालैन लिखिला । कृते कहा, (दिनय सूची पर "चै १६ १ वर्षे" विका है। हरी हरिश्ची के । पर वं के । के जाबा≺ । के वं क्षण कर करनार ।

> द्धरुष्ट प्रक्षित्र । धेर प्रमुखं १ । ने प्रमुखं १ वर्ष्टर । वे क्षेत्र । के प्रमुखं । द्रपृष्टे प्रति संक्रिक्ष के विषय है देश । में पाल X । में ब्रें प्रश् । के सम्बार ।

दर्श प्रति सः ६। यम सं दरा के नाम ×। वे सं ४११। क मन्तर्ग। शिवेप--असे शेखक ग्रीमा पश्चिक है।

क्षप्र प्रतिक्षे कायम के दशा ने मानके एक्टब्स मान सूरी पारे संदेश ^{हा}

STATE I विमेद---मा सक्षण ने धर्वर्ती के मरिनिति की थी । बहाजनीहरू तक दुर्ख ।

≤९६ प्रतिस ⊏ापम क्षं १३८। ते नाम सं १३७ माम क्यो ए। वे सं १३३ म क्षपार । प्रवर्तित विम्यवसार है— बंबर्ट ११७० मान बुधे २ युथे मीतुमतंत्रे तरस्तरीयन्त्रे बनस्तारमसे ^{की}

र्वर्द्रशामार्थान्यमे बहुररक की वयनीय वेदमत्तरहाँ अहुररक की यनक्षणीतिकेयास्तरहरू क्यारक की पुरवसीतिकेमान-त्मानु यात्रामं की जानशीतिवेशसम्पृथित्व प्रात्मार्थ की एनशीतिवेशस्त्रीकान यात्रामं की स्थानीति उपवेशस्त हुन्दर वर्ग एव श्राचार शास्त्र]

भारीय मागइदेरी सामवाड शुभस्याने श्री पादिनाय चैत्यालये हुयड शातीय गांधी श्री पीवट भावी धर्मादेस्तमी मुन गांधी रामा भार्या रामादे मुत हू गर भावी दाष्टिमदे तास्या स्वशानायम्भी कर्म क्षायार्थे लियाच्य दुवे पर्वावमतिका वता ।

परि प्रति संव ६ । पन सक् रवन । लेव मान मव १६३८ शापाइ मुदी ६ । बेव मव १४ । प्र भण्यार

विशेष-पैराठ नगर मे प्रतितिषि की गई थी ।

परप प्रति स० १० । पत्र स० ४ । ते० गाल 🔀 । प्रपूर्ण । वे० स० ४१० । हा भण्डार ।

मर्६ प्रति स० ११। पत्र स० ५१ मे १४६। ते० नाल 🗴 । प्रपूर्ण। वे० म० ४१६। इ. भण्डार।

=३०. प्रति सं० १२। पत्र ग० ७६। ने० गान ≿। प्रपूर्ण। वे० स० ४२०। इ. मण्डार।

^{≒3}रे. प्रति स० १३ । पत्र त० द१ । ते० वान ४ । प्रपूर्ण । वे० त० ४२१ । हा भण्डार ।

मरे॰ प्रति स० १४। पत्र स० १३१। ते० यात म १६८२ पौष बुदी १०। वे० स० २६०। ज मण्डार

विरोप-पही कही कठिन दाया में सर्व भी दिये हैं।

न्देर प्रति स०१४ । पत्र स०१६ माने० नात्र म०१७३२ सावता मुदी ६ । वे• स०४६ । व्य

मण्डार ।

विशेष-पटित मनोहरदास ने प्रतिनिधि वस्रई ।

नरेप्ट प्रति सद १६। पत्र तर १२७। रेर बार तर १७२४ वास्तिब मुदी ११। वेर तर १०८। ज

4931-1

मति स० १७ । पत्र स० ७६ । ले० नान ४ । वे० म० २६ ८ । व्य भण्डार ।

विदीप-प्रति सामान्य सस्कृत टीवा सहित है।

मरे६ प्रति स० १८। पत्र म० १८। ते० नात स० १८८४ बैराख सुदी १। बै० स० २१२०। ट

विशेष—१४६५ वर्षे वैद्यानं मुद्दी १४ मोमवारं श्री नाष्ट्रांसचे मात्रार्णके (भायुरान्ते) पृष्तरगरो भट्टारक श्री हमचन्द्रदेव । तत् ना

पद्मनिद्यानिदीका । पत्र स० २०० । आ० १३×५ इश्र । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । २० मात × । ते० मील स० १६५० भादवा धुदी १ । अपूर्ण । वे० स० ८२३ । क भण्डार ।

विशेष-प्रारम्भ के ४१ पृष्ठ नहीं है।

पद्मनिविपशीसीभाषा—जगतराय । पत्र स० १८० । मा० १९१ ×४ हे इझ । भाषा-हिन्दी पत्र १८० काल स० १७२२ फाग्रुए। मुदी १० । ले० माल 🗙 । पूर्ण । वे० स० ४१६ । क भण्डार ।

विशेष--ग्रथ रचना भौरङ्गजेव के शासनकाल मे भागरे में हुई थी।

पति स० २ । पत्र म० १७१ । र० वाल स० १७४ = । वै० स० २६२ । व्य भण्डार । विशेष---प्रति मन्दर है ।

रिवेर—एन क्या वी वयसिया सिका। सावकारी के पुत्र वोद्धरिताला में साम्य दी थीं। निर्म मूर्त ज्ञात सिकार क्या हम शार वी कुछ होत्र । पुत्र वहाताल वे क्या तुर्व विकार एकताल सीर वे 1 है

प्रमार न निवादमा≩। सपुरे प्रतिसः २ । पद वं प्रदेश के वाल ×ावे तं प्रदेश । के नमार।

म्पुरे प्रति सः २ । यम वं ४१७ । के वाल ×ावे नं ४१७ । के नमार । म्पुर-प्रति सः ३ । यम नं १९७ । के वाल नं १९४४ वैद दुरी १ । वे वं ४१७ । क

सहर प्रति स है। यम में १२७ । में पान में १२४४ चैंद हुयी है। । सन्दार।

स्पृष्ठ, पद्यत्तिहिष्यविद्यापाः व्यव दंशायः ११४% है इस । बास-दिल्याः विवर-यतः। र ल्ला×ाने जलं×ाल्युर्गाः देवं ४९० । क्राक्लवारः।

वतार प्राप्त ×ाण ×ाण्युणाःच च व्यवाद्ध क्यारः। स्थ¥ यद्यविदेशसकावार—यदासेद्वि।यव सं ४ के ३३।बा ११६×६६ दश्चः समा-संस्री

स्पृप्त पद्मनोत्रमानकामार्—पद्मनात्। पन तं ४ देशः सा ११३,४६३ स्व रियम-सारार शस्त्र । र नातं ४ । ते नातं ६ १९२ । स्वृत्ते । ते तं ४२ । सः सन्दार

स्प्रस्थ अधि सं• दे। यह सं १ के दहा के कला ×ा क्यूनां । वे सं ११० । झ पणारः। सपुद्दं परिवाहरोत------। यह संदे। या १ ×द दुखा बरस-- हिन्दे। विस्न--वर्तः र

सपुर पराव्यवस्ता — । प्यात का । मान ×। में कान × | पूर्ता वे वे ४४१ | का च्यार । विकेत — स्तोव साथे पा वेबद की है ।

स्ट्रेड, युव्यविद्याः वार्षे २ । या १ ४४ इंडावास-सहस्र (विश्व-वर्ग) र रङ्ग्राप्ता के कर ४ । वै से १९७ । दुर्खी का कसार।

म्हर- पुरुवाविक्रिक्ष युवाय- व्यक्षत्वभूग्रचार्थ । यत्र नं ११ । था १३ ×१६ रज्ञ । यत्रा-संस्

पियर-वर्ग । २ पास × । में नाम में १७०० नंगतिर युग्नी ६ । में तं १६ । का सम्पार । पियर-प्राथमं गणकीरिंग में किस संपारण ने क्यार्गुर से मांतिसिंद गी थी ।

सक्षाः अधि सक्षाः वान्य नं दाने काल अरावि संदश् । आहं सकार। सक्षः अधि संक्षा पण संदश् को काल संह दृश्के संदक्ष्या सम्बद्धाः ।

स्प्रद्र प्रश्निसक प्रश्नियम में २ श्री माल में ११६४ | में प्रश्ना के लगार ! विमेष-स्थानों के कार नीमें मेलाव श्रीमा की हैं।

स्त्र प्रतिस्त १ (पत्र सं) ने काम X । वे सं ४०२ । कृत्रकार । स्त्र १ , इति संब ६ । पत्र सं १४ । वे पत्र X । वे सं १७ । कृत्रकार । क्रिकेट-प्रति प्राचीय है। कल का कृत्रस्त मान वित्र स्थान स्तुत्व की हिस्स हुन्य है। प्रश्र प्रति स्रट ७। पत्र स० ३६ । ले० काल स० १८१७ भादना नुदी १३ । ने० स• ६८ । छ। भण्डार ।

विशेप-प्रति टव्वा टीका महित है तथा जयबुर में लिखी गई थी।

मध्य प्रति स० म । पत्र म० १० । ले० काल X | वै० स० ३३१ । जा भण्डार ।

प्तर्पार्थिसिद्ध गुपायभाषा—प० टोडरमल । पत्र स० ६७ । त्रा० ११६४ ६ इडा । भाषा—हिन्दी । विषय-घम । र० काल स० १८२७ । ते० काल स० १८७६ । पूर्ण । वे० स० ४०४ । स्त्र भण्डार ।

=¥७ प्रति स० २ | पत्र स० १०५ । ले० काल न० १९५२ । वे० स० ४७३ | ह भण्डार ।

प्राति स०३ | पत्र स०१४८ | ले० काल स०१८२७ मगसिर सुदी २ । वै० स०११८ । स्मा भण्डार ।

प्रस् पुरूषार्थसिद्ध शुपायभाषा—भूधरटास । पत्र स० ११६ । झा० ११५४८ इञ्च । भाषा— हिन्दो । विषय-धर्म । र० काल स० १८०१ भादवा सुदी १० । ले० काल स० १९५२ । पूर्ण । वे० स० ८७३ । क

पह पुरूपार्थसिद्ध युपाय वचिनका — भूधर मिश्र । पत्र स० १३६ । भा० १३४७ इख । भाषा-हिंदी । विषय-धर्म । र० काल म० १८७१ । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स० ४७२ । क भण्डार ।

प्रदेश पुरूपार्थातुशासन—श्री गोविन्ट भट्ट। पत्र स० ३८ से ६७। झा० १०४६ इख । भाषा— नस्कृत ! विषय–धर्म ४ र० काल ४ । ले० काल स० १८५३ भादवा बुदी ११ । झपूर्ण । वे० स० ४५ । ऋ भण्डार ।

विशेय-प्रशस्ति विस्तृत दी हुई है। श्योजीराम भावसा ने प्रतिलिपि की थी।

प्रित स०२।पत्र स०७६।ले० काल ×।वे० स०१७६। ऋ भण्डार।

=६३ प्रति स०३। पत्र स० ७१। ले० काल ⋉। वे० स० ४७०। क भण्डार।

च प्रतिक्रमण । पत्र स० १३ । आ० १२×५६ दख । भाषा–प्राकृत । विषय–िकये हुये दोषो की मालोचना । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २३१ । च भण्डार ।

प्रिं प्रति स०२। पत्र स०१३। ले० काल ×ा अपूर्ण। वे० स०२३२। च भण्डार।

द्ध प्रतिक्रमग् पाठ । पत्र स० २६। ग्रा० ६×६५ इख । मापा−प्राकृत । विषय किये हुये दोपो की मालोचना र० काल × । ले० काल स० १८६६ । पूर्ण । वे० स० ३२ । ज मण्डार ।

प्तिकमरासूत्र । पत्र म०६। ग्रा० ६४६ इखः । भाषा-प्राकृत । विषय-विये हुये दोषो भी भाषोचना । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० २२६८ । श्रा भण्डार ।

न्हम प्रतिक्रमरा । पत्र म०२ ने १८। म्रा०११४५ इख्रा भाषा—सस्कृत । विषय—िकये हुये दोषों की प्रालोचना। र० काल ४। ले० काल ४। ग्रपूर्ण। वे० स०२०६६। ट भण्डार।

म६६ प्रतिक्रमण्सूत्र—(वृत्ति सिंहत) । पत्र स० २२ । ग्रा० १२×४ दे इक्ष । भापा–प्राकृत सस्कृत । विषय किये हुए दोपों की ग्रालोचना । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ६० । घ भण्डार । म-० प्रतिपातसाथककु धपवेश---जनस्पायक सं ४७) सा १४४ इका वसा-रिर्णः। विचय--मर्गार कला ४ । ते वस्तार ३३० | प्रकार ।

वि रेट--बीरफ्राबाद म रचना की नवी वी s

म.≱र प्रत्याक्यात्रणणाः । यत्र तं है। यह ह XX इक्षा आराम-प्रतहरू । विद€-वर्षार काम X | म. काम. । इसी | वे. ही १० २ | च काहार |

स्क प्रशासकावकावार । यह धं २१ । बा ११% हुन्ना । जाया-संस्कृत । विचन्त्र वर्गा सार्थ र नाम ८ । सं वरू ८ । ध्रास्त्र । सं सं १९९ । हुन्यकार ।

निर्धर—प्रणि क्रिकी व्यवस्था पणित है। स. द. प्रस्ताप्रसमस्याच्याच्या — कुलाबीकालः। यस संहर । बा ११४६ रखः। धर्मार रिनी तवः विद्याल्याकार साववाद वाक्य संहत्य देशी स. १९। त्र मणारः।

विक्रंप—स्वोत्तासको ने पुत्र काश्करकको सङ्घं ब्राविकिय वर्षाः । इत दश्याः । वास क्रमान्त्र स्वा भारतं ∉ प्राप प्रतीपन के निमा क्या वा।

> रीय क्रिने वा क्षण को क्ये वहानावाद । बीबाई क्याच किये बीतराग गरमाई ।।

स्वत्य व्यवस्थाति । विश्व देश में बाल से १ शास्त्र मुद्दी १ । में स्वार स्वत्य । स्वत्य स्वत्य । स्वत्य स्वत्य स्वत्य । स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्य ।

म#प्र प्रति सं ३ । पत्र तः १६ । ग्रेप्त संग्रेष्ट के प्रदेश की स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन

सभ्याः । विरायः—६ १ २१ जन्नुक सुन्नी ११ को क्वतराय बोजा ने वर्तिस्ति जो वो सीर बंधी अठि ^{हे एठ} की नाम उठारी करि है । सङ्ख्या वीकाराय के तुक सम्बन्धक है एकडी अधिनिति थी ।

- वर¥5 प्रतिस ४ । पत्र तं २१ । नै नान × । वे नै १८० । बपूर्ण। च क्रांशार ।

मा मार्थिकः शांचन सं १ १। नि नाउतां १९६६ नाम सुवी १२। वे सं १६१। के बन्तर

्य-स्टब्रिक्स ६। तम मं १२ । ते जल्य सं १ व गोप द्वरी (४) रे ते १६। स

भगार। सन्दे प्रस्व संस्थानकाषार साथा-प्रमाशन चौचरी । पर सं १४ १ मा १२/४६ छ। मारा-प्रिची नक। विवय-भाषार शाल्यः। र तमा सं १८११ ची वृत्ती १४। ते नता सः १८६ प्र^{मी} । से सं १९ । क नवार।

दद प्रतिम राज्यतं ४ । ते तल इं १६३६ । वे इं इर्ट्राक् अपारे।

नन १ प्रति स० ३ । पत्र न० २३१ मे ४६० । ले० काल 🗶 । श्रतूर्ग । वे० स० ६४६ । च भण्डार । ==॰ प्रश्नोत्तरश्राप्रकाचार । पत्र स० ३३ । ग्रा० ११३×७ इञ्च । भाषा–हिन्दी गत्र । विषय-पाचार शास्त्र । र० वाल ⋉ । ले० वाल स० १⊏३२ । पूर्ण । वे० स० ११६ । स्म भण्डार ।

विशेष--- प्राचार्य राजिशीत ने प्रतिलिपि की थी ।

पन्छे प्रति स० २। पत्र स० १३०। लेश बाल X | प्रपूर्ण | वेश स० ६४७ | च भण्डार | ५६० प्रति स० ३ । पत्र त्त० ३०० । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ५८८ । स भण्डार । म्प्रित स० ४ । पत्र त० ३०० । लः काल × । मपूर्ण । वे० त० ५१६ । ड भण्डार ।

प्पः प्रश्नोत्तरोपासकाचार—भ० सक्लकीर्त्ति । पत्र स० १३१ । ग्राट ११×४ इख्र । भाषा– सग्इत । विषय–धर्म । र० काल ⋉ । ले० वान स० १६६५ फाग्रुए। सुदी (० । पूर्ण । वे० स० १४२ । ऋप्र भण्डार ।

निशेष--ग्राग्रय मह्या २६००।

प्रशस्ति—सवत् १६६४ वर्षे फाग्रुगा सुदो १० सोमे विराडनेगे पनवाडनगरे श्री चन्द्रप्रमचैत्यालये श्री ^{काष्ठासघे} नदीतटगच्छे विद्यागरो भट्टारक श्री रामसेनान्वये म० श्रोलध्मीनेनदेवास्तत्पट्टे भ० श्री भीमसेनदेवास्तत्पट्टे भ० श्री पामनोत्तिदेवास्तररहे भ० श्री विजयमेनदेवास्तत्पट्टे श्रीमदुदयमेनदेवा भ० श्री त्रिभुवननीत्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री रत्नभूषणुदवास्तत्वट्टाभरण् भ० जयमीतिस्तन्छिप्योपाच्याय श्री बीरचाद्र लिखित ।

च्च० प्रतिम**्२ ।** पत्र स० १७१ । ले०काल स० १६६६ पौप सुदी १ । वे०स० १७४ । इप मण्डार ।

प्याप्त प्रति सः ३ । पत्र म० ११७ । ले० काल म० १८८१ मगसिर सुदी ११ । वे० स० १९७ । स्प्र भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज सवाई जयसिंहजी के शामनकाल में जैतराम साह के पुत्र श्योजीलाल की भार्या न प्रतिनिषि बराई । ग्राय की प्रतिलिषि जयपुर में अवावती (श्रामेर) बानार में स्थित ब्रादिनाथ चैत्यालय के नीचे जती ननसागर के सिप्य मन्नालाल के यहा सवाईराम गोधा ने की थी। यह प्रति जैतरामजी के घड़ों में (१२वें दिन पर) र्याजीरामजी ने पाटोदी के मन्दिर में स० १८६३ में भेंट की !

च्च प्रतिम ४ पत्र म०१२४ | ले० काल स०१६०० | वे० स०२**१**७ **। ऋ** भण्डार ।

मध्य प्रतिस्थ । पत्र स∙२१६ । लेग्काल स०१६७६ झासोज बुदी ४ वेंग्स•२१**१ ।** श्र मण्डार ।

विशेस--नानू गोधा ने प्रतिलिपि कराई थी।

प्रशस्ति—सवत् १६७६ वर्षे म्रासोज वदि शनिवासरे रोहर्गी नक्षत्रै मोजाबादनगरे राज्यश्रीराजाभावसिंध ाग्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसघे नद्याम्नाये चलात्नारगसे सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक्श्रीपद्मनदिदेवातत्पट्टे भट्टा-कश्रीशुभवन्द्रदेवातत्त्रहु भट्टारकश्रीजिनच द्रदेवातत्त्रहु भट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवातत्त्रहु भट्टारकश्रीचन्द्रकोत्तितत्पहु भट्टारतश्रीदेवे द्रकात्तिस्तदाम्नाये गोघा गोघे जाचक जनसदोहकल्पवृक्ष श्रावकाचारचरण-निरत-चित साह श्री धनराज

चन्नार्मा चीनवोस-वर्धाङ्गस्त्रो निगय-शक्तेवरकै पनिनिरि क्षेत्रोः पुत्राः तदः प्रयमपुत्रपर्यवृत्तप्रस्थ ग्रीसम्ह की रूपा व्यक्ति रामतीलपुराहराराष्ट्रियानानामा सूर्वार तयो. पुत्र राजतमा श्रूपारहारस्वरतारितकरपुरुक्तिहत्त्वपुरुक्तुरूप भर स्वतः--- निरुष्णरमाञ्चावितः कुरलवशनकुणु यस्तीकृत्रचन्द्रशावरः स्वी पंचारनेक्षित्वतन सौरविरवित तरनकुरिन मनविचानस्थान माद्र भी नामूक्त्यनोरकः र्यच अवधवार्यको दिवीया हरसमहे नुगीया नुबानके व्यूची क्थाबरे रहर नार्ग नार्व । इरवनदेवनित्युनाः वदः स्वयुनभावत्रनाधनैवयनाः अनव वृत्र नात् भावपर्ने तदासां ध्येतरोपुर राषु । दुवीनार्यानामधरे पुत्र वेत्तवस्य यात्रां वयुरदे दिवीच पुत्र थि । नृत्युपत्तत्त भागों ह्रो प्रवयनकाले पुत्र । स्वर्ण डिटीय नाडमरे । तुर्गान पुत्र वि. चनित्रलं बार्या वानकरे । कर्नुवं पुत्र वि. बूर्यायस वार्या पुरवरे । सञ्च करणा क्रिये पुत्र सह मो थोगा बद्धार्या कोठाकेरयोः पुणसभयः प्रचनपुत्रशामिक सह करनकत सहस्र्य बोहार्या बेहार्मी क्यों पुत्र ^{हि} स्वास्त्रज्ञ नामां वाज्यये । विवीषुण नाम् वर्ययान् शत्यार्थार्थः । जनय नामां चाराये वितीय वार्या नाज्यये एको ९९ वस् प्र वरवी तद्भार्य वादिववे राष्ट्रवी हा ३ व्य कार्याच्या हिः युव किः युवसीवारा। बोबा तृतीन पुत्र विस्तवरसार्यकः मकुर सञ्च पद्मारण राद्धान्तां इत्योरवे । शञ्च धनागत पूर्वीम द्ववः वामग्रुगुध्येनांत्रसम्ब अवानान्यवारमस्वयवनानियासम बमर्वसर्वीरकारनबाद्त्रीरदनसी दङ्कार्जा 🕻 श्वय धार्य शनावे हितीन वार्मा शीकावे तथी पुत्रास्थ्यार अव 🏋 षुरास वक्रामां तुःनारवे वनोऽपुत्र वि । बोक्रयन शक्कामां भाषसदे । वीरतनती श्रेतीय पुत्र ब**ब्धे वेगरा**न वक्कामां नीपने समोपुत्रा परः सनन पुत्र वि. सामू न कि. पुत्र वि. निया तृतीन पुत्र वि. समक्**री । सत्र** राज्यी दुरीन 🏋 ^{सह} परका राष्ट्रामी मानसबे न्यूर्न कुन निः परका सङ्कामी शहनके । एतेची मध्ये शिक्ती भी बाह्य नामी इतन वारंगरे । म्हारतमीमप्रकेरित शिन्य हो। यो मुक्कल दर्व कारण कार्नियसं प्रदानित पर्वक्रपनिवर्त । जालका आपरी

स्पर्ट प्रसिद्ध है। पत वे पद ते १६४ । कि प्रस्त ×े ब्यूगी। वे १६ र । क्षा प्रस्तार । स्पर्पः प्रसिद्ध ७ । पत वे १३ । कि शक्त ते १६२ । ब्यूगी। वे वे ११६ । क्षा प्रसार। पित्रेर — प्रस्तित प्रपूर्ण है। वीप के क्षा पत नाई हैं। वे क्षेत्रशीव्य के क्षिप्त नास्त्रपत्र के स्वर्णना प्रमुख्य में क्यारी क्यूगी के प्रतिकृतिक क्यूगी।

स्पर्ध प्रतिर्धिका पण सं १६२ कि कमार्थ १६२ | के सं ११६ | कमकार | स्पर्ध प्रतिष्ठ के । पण सं १ कि कमार्थ ११५ | के सं ११ (क्राच्यार | स्पर्ध प्रतिर्ध १ | पण सं १२१ कि कमार्थ ११७० पीच पुर्ध | के सं ११ | क

व्द£ प्रतिक्ष ११।पन नं ११ । ने फलाई १ घमा दे तं १११।काममार।

क्यार ।

पिकेर—प क्षमण्य में प्रथमित की थी। प्राच्या प्रति से दिन प्रथम हरदे। में प्रणा × वि सं ६५ | का प्रयाद। प्राच्या प्रति सा देश | प्रथम पंत्री ते देश में मार्था | प्रमुक्ती वि सं दर्श | का प्रयाद। प्रदेश प्रति सा देश | प्रयाद के प्रश्ना के मार्था | प्रश्ना के स्वाचादा | चे के प्रति सा देश | प्रथम के मार्था वि से देश | कुला प्रयाद | धमे एव श्राचार शास्त्र]

६८१ प्रति स० १६। पत्र स० १४५। ले० काल 🗙 । वे० स० १०६। छ मण्डार। जिलेष—प्रति प्राचीन है। सन्तिम पत्र बाद मे लिखा हुआ है।

६०२ प्रति स० १७ । पथ स० ७३ । ले० वाल स० १८५६ माघ मुँदी ३ । वे० स० १०८ । छ

६०- प्रति स० १८ । पत्र म० १०४ । ले० काल स० १७७४ फागुरा बुदी ६ । वै० स० १०६ । विशेष—पाचोलास में चातुर्मास योग के समय प० सोभााविमल ने प्रतिलिपि की थी । स० १८२५ ज्येष्ठ वुदी १४ को महाराजा पृथ्वीसिंह के शासनकाल में घासीराम छावडा ने मागानेर में गोधों के मन्दिर में चढाई ।

६०४ प्रति स० १६। पत्र स० १६०। ने० नाल स० १८२६ मामिर बुदी १४ । मे० स० ७८। च मण्डार।

६०५ प्रति स० ०। पत्र म० १३२। ले० काल ४। वे० म० २२३। व्य भण्डार।

६०६ प्रति स०२१। पत्र न०१३१। ले० काल स०१७५६ मगसिर बुदी ६। वे० स०३०२। विशेष---महात्मा धनराज ने प्रतिलिपि की थी।

६०७ प्रति स० २२। पत्र म० १६४। ले० काल स० १६७४ ज्येष्ठ सुदी २ । ते० म० ३७४ । न्य भण्दार।

६०८ प्रति स० २३। वन म० १७१। ले० काल मं० १६८८ पीप मुदी ४ । वे० स० ३४३। व्य भण्डार।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति तदाम्माये खडेलवालान्वये पहाड्या साह थी कान्हा इद पुन्तक लिखापित ।

६०६ प्रति स० २४ । पत्र स० १३१ । ले० काल ४ । वे० स० १८७३ । ट भण्डार ।

६१० प्रश्नोत्तरोद्धार । पत्र मस्या ४०। भा०-१० रे×१ रे इन्व । भाषा-हिन्दी । विषय-भाचार शास्त्र । र० काल-४। ले० काल-स० १६०४ नावन बुदी ४। म्रपूर्ण । वे० स० १६६ । छ भण्डार । विशेष-चूरू नगर मे स्योजीराम कोठारी ने प्रतिलिष कराई ।

विशेष-वस्तराम के शिष्य शमु ने प्रतिलिपि की थी।

प्रारम्म—नत्या गर्गपित देव सर्व विध्न विनादान ।

गुरु च करुगानार्थं ग्रह्मानदाभिषानक ॥१॥

प्रशस्तिकाणिका दिव्या वालकृष्णेन रत्यते ।

सर्वेपामुपकाराय लेखनाय त्रिपाठिना ॥ २ ॥

पतुर्गामिप वर्गाना क्रमत वार्यवारिका ॥ ३ ॥

निय्यने सर्वेषिद्याधि प्रवोधाय प्रदास्तिका ॥ ३ ॥

वन्दार ।

वक्कार्य वीनवीय-वर्षाहरणी विनय-वाक्षेत्रवरी बननिर्दि तयो। पुत्राः वयः प्रदयपुत्रवयबुरावरम् वीरवास् यौ वरा व्य⊅र्य वानमीलपुरुतुरस्यवृतिकवाणांनाम्ना हुवरि तवो पुत्र रावकता गृह्यारहारश्याराश्विकरकुरुधिकृतवपुरुनुहुरा-कर स्वयाप्पापः निमान्तरभाक्षावितः चुवनध्यत्त्वकृत्यु अस्तीहत्त्वप्यात्यः श्री पंचारशेष्ट्रिष्टितः पविश्वितिसः वस्तानि वनविद्यासम्बानं तक्ष् यीः नामुकनमोरबाः र्थंत्र प्रवनगार्थंत्रे दिवीया इरुवनते भूतीया सुदानदे कपूर्व बनावदे वेदर मार्ग नारी । इरननरेमितपुत्राः त्रवः स्पट्टनमानअसामनेकक्ताः अवन वृत्र साह् साध्यस्तं धन्नुर्मा स्पृरास्त्रेष नामु । दुर्गीमामानावनवे दुव वेसववाद धार्या नपूरवे बिरोध पुत्र वि । भूगुन्दरम् वार्मा 🕻 प्रवनमक्तावे दुव राजवर्त दिवीन मात्रमदे । तृतीय पुत्र वि चलिवार्ग मार्ट्य वाममदे । करूर्व पुत्र वि पूर्वयम धार्म पुरवदे । सम् भारान स्ति पुत्र तह यो जोवा तहार्यों कील्लोतयों पुत्रक्षयः अवनपुत्रवाधिक शह करमध्य तहार्या सेहत्यरे उसी पुत्र ति स्वलंबन भागी रावमरे । विरोधन चळ् वर्धरान एक्कार्यक्षी । प्रथम वार्या बाराने विरोध क्षार्म नामको उन्हे दुर रहे ह बरवी दक्कार्य वाहिनदे संपूर्ण है। ह पु सब्दोबात क्षेत्र पुत्र वि युवाधीयात । जोवा सूर्वान पुत्र विस्वयरहरूमा मबुर साह क्यारण वद्भान्यं हुनीरवे । साह मनराव तृतीव पुर बालकुतु वैव्यवसंबद्धाः वक्तान्तरारस्वरक्ताकीयनाः सनर्वनवीरमारनवक्ष्मीरातनती राष्ट्रामां हे अवन वार्था राषाचे हितीय नार्मा नीताचे तवी पुत्राभाषां अवन प्रा चुपान तकार्या तुप्पारवे तवी पुत्र वि । जीवधाव तक्कार्या जावनवे । यीरतनवी वितीय पुत्र तक्क वेषधाव तक्कार्य गीरते तबोपुनाः चनाः स्वयं पुन वि तातु ल ति दुव वि लियाः दुवीश्रपुत वि लक्ष्यो । तत्व राजनती तुपीशपुत वि नारना राज्यामां बानलदे चतुर्व पुत्र वि । परवत राज्यामां पान्यवे । एरोपां तब्बे विक्वी भी बाह्य प्रामां अपन वारंत्ये । महुम्मधीचन्त्रतीति दिप्य या. यो भूतमात्र इतं सहय कानिवित्तं क्टापित कर्मसर्वनिर्मतं । सामसन् अल्पाने

स्मा प्रति संव की गया ग्री पद भी दश्भाने जाता ×ा ध्यूतां थे सं दश्काधा जाता. स्माप्त प्रति सं भागा ग्री देश के सम्ब सं १६२ । ब्यूतां के सं १६६ । ब्यूतां के सं १६६ । ब्यूतां के संदर्भ क्रिया विकेर—प्रति के प्रदूर्ण के ग्रीविधित क्रियों।

प्रदेश प्रतिसः मापण वे १६२ | ने नाम वं १६ २ | ने सं ४१० | कामणारी प्रदेश प्रतिसः को पण वं १ | ने नाम वं १६२ | ने वं १२ | कामणारी प्रदेश प्रतिसः हैं | नाम वं १९१ | ने प्रतान नं १९०० पीर पूर्णा | ने वं ११ | नि

ध्यः प्रतिक्षः ११ । वश्यः वश्यः । वश्यः वश्यः । वशः ।

त्यकः प्रतिसंदितं देशाचवतं १६६ विष्यम् ×ावे संदश्याक्षणस्यः । त्यादः प्रतिसः देशाचवतं देशे दश्यावे जला ×ास्त्रुत्वावे संदश्याकणस्यारः । त्यादः प्रतिसः देशाचवतं दश्योव जलारः । स्पूर्णावे संदश्याकणस्यारः । ६०० प्रतिसः दिशाचवतं १२६ विषयमः स्वेतं स्वाप्तः । देवनागरी) विषय-किये हुए दोषा की ग्रालोचना र० काल-🗙 । ले० काल-🗙 । श्रपूर्ण । वे० स० १९६८ । ट भण्डार ।

६२७ प्रायश्चित् समुचय टीका—निद्गुरु । पत्र स० ८। ग्रा० १२×६। भाषा-सस्कृत । विषयकिये हुए दोषो की भ्रालोचना । र० काल-४। ले० काल-स० १६३४ चैत्र बुदी ११। पूर्ण । वे० स० ११८। ख
भण्डार ।

६२८ प्रोपध दोप वर्णन । पत्र स०१। ग्रा०१०×५ इखः। भाषा—हिन्दी । विषय—ग्राचार शास्त्र । र०काल-×। ते० काल-×। वे० स०१४७ । पूर्ण। छ भण्डार।

६२६ वाईस श्रभद्य वर्णेन—यात्रा दुलीचन्द्र । पत्र स० ३२ । ग्रा० १०ई×६३ इख्र । भाषा— हिन्दी गद्य । विषय-श्रावको के न खाने योग्यपदार्थों का वर्णन । र० काल-स० १६४१ वैशाख सुदी ५ । ले० काल-х । पूर्ण । वे० स० ५३२ । क भण्डार ।

६३० वाईस स्रभत्त्य वर्णान ४। पत्र स०६। ग्रा०१०४७। भाषा-हिन्दी। विषय-श्रावको ने न लाने योग्य पदार्थो का वर्णन। र० नाल ४। ले० काल। पूर्ण। वे० स० ५३३। व्य भण्डार।

विशेष-प्रति सशोधित है।

६३१ वाईस परीपह वर्णन—भूबरदास । पत्र स०६। ग्रा०६ \times ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—पुनियो द्वारा सहन किये जाने योग्य परीपहो का वर्णन । र० काल १८ वी शताब्दी । ले० काल \times । पूर्ण । वे॰ स०६६७ । श्र भण्डार ।

६३२ वार्द्स परीपह \times । पत्र स०६। ग्रा०६ \times ४| भाषा-हिन्दी। विषय-मुनियो के सहने याम्य परीपहो ना वर्रान। र० कल \times । ले० काल \times । पूर्ण। वे० स०६६७। ड मण्डार।

६३३ वालाविवेघ (ग्रामाकार पाठ का स्त्रर्थ) \times । पत्र स०२। ग्रा० १० \times ४६ । भापा प्राकृत, हिन्दी । विषय-धर्म । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स०२८६ । छु भण्डार ।

विशेष---मुनि मास्मिक्यचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

६२४ तुद्धि विलास—वखतराम साह । पत्र स० ७५ । म्रा० ७×६ । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्राधार नाम्त्र । र० नाल स० १८२७ मगसिर सुदी २ । ले० नाल स० १८३२ । पूर्णी । वे० स० १८८१ । ट भण्डार ।

६३४ प्रति सः २। पत्र सः ७४। ले॰ काल सः १८६३। वे॰ सः १९५५। ट भण्डार। विभेप-वितराम साह के पुत्र जीवगाराम साह ने प्रतिलिपि की थी।

६२६ न्नह्मचर्यव्रत वर्णान ×। पत्र स०४। मा० ५×५। भाषा-हिन्दी। विषय-वर्म। ० वात ×। ते० काल ×। वे० पूर्ण। वे० स० २३१। मा भण्डार।

E३७ वोबसार ×। पत्र स०३७। ग्रा०१२×५३ भाषा-हिन्दी विषय-धर्म। र०नात ×। ताल स० ८६२६। काती सुदो ४। पूर्ण। वे० स०१२४। स्त्र भण्डार।

विनेष--ग्रय वीसपय की ग्राम्नाय की मान्यतानुसार है।

```
िवर्शन का बादार शक
أيوس
                  मस्या लेखन मात्रेण विद्यानीतिपयोपि पाः
```

प्रतिष्ठा सम्बन्धे सीध्यनसम्बन्धेन बीनता ॥ ४ ॥ मात् किया । पत्र से ४ । या १२५० दश । क्या-मस्ता । विश्व-मान्त ।

र नल-×।ने नल-×।नुर्याने वं १६१६।≥ भधारी ६१३ मावस्थितस्य व्याप्य वर्षके । या १६८६ रूपः। बला-अंस्तृतः। विवय-विवेदि

शारों पोलोपनाः ए कोल-×ाते केल-×ायपूर्णावे सं ३६२ । सामकारः

६१४ प्रायम्बिक विधि—सङ्ग्रहक देव वय व १ । या १०४४ हता। श्रारा—सात्र । विषय-विषे हर दोषो को कालोचना। र वाल-×ार्नवल-×ाबूर्ला वे सं ३१२। चाचण्डारा

६१४ ¤तिस २ | पचर्च २६ । में नाम X | के से ३६ ८ । का नगार ।

विकेच — १ पन से धाने सन्ध इ.मी के अधिरेचल नाठी पा संबद्ध है।

£१६ प्रतिसं ३ । पण सं प्रःसं चलानं १८६४ चैत दुरी १। वे सं १६ । साम्प्रसः विमेद--- पं क्यामाल ने बीववेर के अंदिर कक्पर प्राथमिति की भी।

≛रे⊎ प्रतिर्मशाके रस्त−×ावेत धरका क्राच्यार ।

६१८६ प्रतिस ≵ाने नाल-सं१७४८। देशं सं२४४। चन्नार।

विमेप-चाषार्व महेश्वसंगीत ने वृ बाबती (मंबापतीः) य अतिसिरि नी ।

६१६. प्रतिसं**३) में नाल−सं१६०। वे त**ास क्यारा निकेप--- नवक नवर में थें हीरानंद के किया वे चोखक्त ने प्रतिनिधि की थी।

मामरिचन विभि ~ापव सं ११। शा १८४ इच। सारा—संस्तृत । विपय-विने हर

रोपो मी सलोचना ∤रंजल~ × । से कल सं १ १ । स्पूर्ण वे सं०⊷१२ । द्वांत्रधार। विकेष--- २३ वां तका २३ वा पत्र नही है।

६२१ माम्मरेचाविकारमा। यन वंदे|साद_क≾४ इ**व**। अस्त⊢नंशावः। जिल्लाम इने दौरी नापरमञ्जर। र नान~८। से क्षम्र-४३ पूर्ण। वे सं १०१ का बच्चार।

६२० प्राविषक विभि—स प्रकाशि । पत्र तं । सा १४४ इसः) वासा-नंसार । विभा

निर्मे हुए रोनों की मलोजना। रंपाल− × । के बाल−× । पूर्व है वर्ष ११ ७ । का भवार।

श्रदे प्रतिश २ । पत्र सं २ । के शक्त-×ादे सं २४१ । चुलस्वार । विसेय-प्रतिकातार का बचन सम्बन्ध है ।

६२४ प्रतिस देशने कालाई १७६८। वे सं ३३। बर जनगर।

६४१ मायरियत शास्त्र—इन्यूनमित्। पन सं १४३ वा १ 🗴 इत्रा अला-सम्हा विद्य-निने ह्य दोनों नास्त्रकताल । ४ काल-४ । ते नाल-४ । पूर्णावे सं ११६ । धर समार ।

१२६ प्रायदिकत शास्त्र" [™]ापन थें थे। या १ ≻४_{१ देखा} नारा—बुनराती (शिरी

६५१ भावदीपक—सोधराज गोदीका। पत्र स०१ में २७७। मा० १०४५ ६ इजा। भाषा— हिन्दी। विषय–धर्म। र०काल ४। ते०काल ४। म्रपूर्ण। वे० स० ६५६। च भण्डार।

६५२ प्रति स० ₹ । पत्र स० ४६ । ले० काल-स० १८५७ पौप सुदी १४ । मपूर्गा । वे० स० ६५६ । च भण्डार ।

६५३ प्रति स०३ । पत्र म० १७३ । र० काल 🗴 । ले० वाल-स० १६०४ कार्तिक मुदी १० । वै० म० २५४ । ज मण्डार ।

६५४. भावनासारसग्रह—चामुग्डराय । पत्र म० ४१ । द्या० ११८४२ इख । भाषा-सम्बन्त । विषय-धर्म । र० काल-४ । ले० काल-२० १५१६ श्रावण बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० १८४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--- सवत् १५१६ वर्षे श्रावण बुदी मष्टमी मोमवामरे लिखित वाई धानी कर्मक्षयनिमित्त ।

६४४ प्रति स०२। पत्र स०६४। ले० काल म०१५३१ फाग्रुए। बुदी ८८। वे० म० २११६। ट भण्डार।

६४६ प्रति स०३। पत्र म० ७४। ले० काल-×। झपूर्ण। वे० स० २१३६। ट भण्डार। विभेप--७४ मे झागे के पत्र नहीं है।

६४७ भावसम्रह—देवसेन । पत्र सं० ४६। मा० ११४४ इ≝ । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । २० काल-४ । ले० काल-स० १६०७ फाग्रुए। बुदो ७ । पूर्ण । वे० स० २३ । ऋ भण्डार ।

विशेष--- प्र व कर्ता थी देवमेन श्री विमलसेन के जिप्य थे। प्रशस्ति निम्नप्रकार है ---

सवत् १६०७ वर्षे फाग्रुए। विद ७ दिने बुधवासरे विशालानक्षत्रे थी प्रादिनायचैत्यालये तक्षकगढ महादुर्गे महाराउ श्री रामचद्रराज्यप्रवर्तमाने श्री पूलक्ष्ये वलान्कारगरो तरस्वतीगच्छे श्री कु दकु दाचार्यान्वये मट्टारक श्री पद्मनदिदेवा तत्पट्टे मट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा

६४८ प्रति स०२। पत्र म०४४। ले० काल-स०१६०४ मादवा सुदी १४। वे० स०३२६। इप मण्डार।

विशेष-प्रशस्ति निम्नप्रकार है -

संवत् १६०४ वर्षे भाद्रपद सुदी पूर्णिमातिथौ भौमदिने शतिभिषा नाम नक्षत्रे धृतनाम्नियोगे सुरित्राण् भनेमसाहिराज्यप्रवर्त्तमाने सिकदरावादशुभस्थाने श्रीमत्नाष्ठासघे मायुरान्यये पुष्करगणे भट्टारक श्रीमलयकीत्ति देवा तत्बट्टे भट्टारक श्रीग्रुणभद्भदेवा तत्बट्टे भट्टारक श्रीभानुकीत्ति तस्य शिक्षरणी वा० मोमा योग्य भावसग्रहास्य शास्य प्रदत्त ।

६.५६ प्रतिस् ०३।पत्रस०२६।ले०काल–×।वे०स०३२७।स्रमण्डार।

६६० प्रति स०४। पत्र स०४६। ले० काल-स० १८६४ पौप सुदी १। वे० स० ५५८। क भण्डार।

विशेष--महात्मा राघाकृत्या ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

. ६१८. सरावष्ट्मीता (इच्छाञ्च संस्त्र)'''' × । यह नं २६ के ४६ | झा. ६५० र हा । व्यान क्रियो । विषय-तैरिक सर्गत्य । १. सान ≻ | के. साम × । ध्यान कें नं १११० । इ. क्यार ।

६६१ सरस्ती भाषाचना—शिवाचारी । वन नं १२११ था ११ ×६१ इस । यया-स्परः । विदस-वृति वर्ष नगरः र नन्न × । के नन्न × । दुर्ल के नं ४४१ । क क्यारः

६४१ प्रतिस ३।पार्न१३। में नल×। वेर्न२६६ चनमारा

विसेद----शारण एवं यन्तिम वध कार में निकार शवामे वये है। १५२० असि संधारिका के काल Xावे संबंद का अच्छार।

विकेच-लेल्ड में पर्वोक्शलो सन्द विके हुने हैं।

६४६ अक्षिक्ष ३। पत्र वं ३१ वे वक्त × त्यपूर्व (वे वं १३। अन्यार (क्षिक - सनी १ संस्था ने दोना को बीडी।

६४४ अगलवी चारावमा तीव्य-चयराजिकपृरि वीतिरिक्या वत्र वं ४१४ । वा १६४६ इस । मारा-नाल्य । विक्ल-कृति वर्ष वर्णत) एं तक्त ४। के तक्त वं १७१३ बाव कृति ७ कृतें । वे वं २ ६ । का क्यारी

६४४ प्रतिसी २। पत्र सं ११४। में ताल सं ११६७ वैदाल पुरो ६। दे सं १६६।

च्छ मन्त्रार **।**

६४६ अरावती कारावता आया—य लगाञ्चक कारक्षीकाका यथ र्य ६ ७ । वा १२ ४६२ इस । नमा—रिप्री । विशव-वर्ष । र शक्त य ११ । वे कार अ १५०१ वे १४० । व क्ष्मारा । ६५० । प्रति स्त २ । यथ र्य ६६ । वे कार संदर्शनास्त दुवी १६ । वे दंदी । ४

क्यार ।

हार। ६४म. प्रतिसंदेश पणार्थ ७२२ । में कालार्थ १०११ केच्य सुरी १३ वर्ष ६६८ | प

निकेर-व्या जन्म हीएलालानी वचना गा है। विती १९४९ गल गुरी १ मी बालाई वी के नर्यरण इस के न्यास्थ में चुनी ।

६४ प्रतिस ४ । पन वं १६ । ने नल ×। बहुर्ल ⊨के ६ ६ १ र आ अण्यतः

६४१ प्रविस ३। कार्च ३२१ ही तथा X । धपूर्ण (केर्स १३९७ । इ.सम्बार ।

६७४ प्रति स० २ । पत्र स० १७० । ने० नान-X । ने० न० ६७ । ना भण्डार ।

१७४ प्रति सु० ३ । पत्र सु० ६१ । ते० काल-मु० १८२४। वे० मु० ६६४ । च भण्डार ।

१७६. प्रति सं० ४ । यत्र स० ३७ ने १०७ । ले० माल 🙏 । प्रपूर्ण । प्रे० स० २०३१ । ट भण्डार ।

विशेष--प्रारम्भ वे ३७ पत्र उहीं हैं। पत्र फर्ट हुये है।

६७७ सित्थात्यायटन । पत्र म० १७। मा० ११४७ दक्ष । भाषा-हिदी । विषय-धर्म । रे० नाल-४ । ने० नाल-४ । म्रपूर्ण | ने० म० १४६ । स्व भण्डार ।

विशेष--१७ ने भागे पत्र नहीं है।

६७≒ प्रतिस् ०२ । पत्रम०११० । ने० वाल-× । अपूर्णा । पे० त० ५६४ । हा भण्डार ।

६७६ मूलाचार टीका--श्राचार्य वसुनन्दि। पत्र म०३६६। ग्रा०१२४५६ दञ्ज। भाषा-भाइत सस्त्रत । विषय-ग्राचार ग्रास्त्र । र० काल-४ । ले० पाल-स० १८२६ मगिसर बुदी ११ । पूर्ण। वे स०२७५ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-जयपुर मे प्रतिनिषि की थी।

६८० प्रति स् ०२। पत्र स० ३७३। ले० काल-×। वे० स० ५८०। क भण्डार।

६८५१ प्रति स०३ । पत्र स०१ ५१ । ले० वाल---> । ग्रपूर्ण । वे० म० ५६८ । इ. भण्डार ।

विशेष-५१ मे मागे पत्र नहीं है।

६८२ मृलाचारप्रदीप—सक्लफीर्ति । पत्र स० १२६ । ग्रा० १२६४६ इख्र । भाषा–सस्कृत । विषय–माचारसास्त्र । र० माल-४ । ले० वाल-सं० १८२८ । पूर्ण । वे० म० १६२ ।

विशेष-प्रतितिषि जयपुर मे हुई थी।

६८३ प्रतिसः २ । पत्र स० ६५ । से० काल-× । बै० स० ६४६ । इत्र भण्डार ।

६८४ प्रतिसं०३ । पत्र स० ८१ । ले० काल-🗙 । वे० स० २७७ । च भण्डार ।

ध्पप्र प्रति स० ४ । पत्र स० १५४ । ते० वाल-× । वे० स० ६८ । छ भण्डार ।

ं ६८६ प्रतिसद्धापत्र सरु६३। ले० काल-स० १८३० पीप सुदी२। वे० स० ६३। जिमण्डारा

विशेष-- प० चोखचंव के दिाव्य पं० रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

६८५ प्रति स०६। पत्र स०१८०। ले० माल-स०१८५६ वार्तिक बुदी ३। वे० स०१०१। व मण्डार।

विशेष--महास्मा सर्वसुख ने जयपुर मे प्रतिलिपि की था।

धनमः प्रसि स० ७। पत्र स० १३७। ले० काल-स० १८२६ चैत बुदी १२। व० स० ४५५। व मण्डार।

६८६ मुलाचारभाषा--ऋषभदाम । पत्र स० ३० मे ६३ । ग्रा० १०४८ इक्क । भाषा-हिन्दी । तिषय-प्राचार शास्त्र । र० काल--स० १८८८ । ते० काल--स० १८६१ । पूर्ण । वे० स० ६६१ । च भण्डार । ध्य] ् वर्स श्रामारशय

. अ.व.र. महिना शायत सं ७ ते ४२। ते क्ला-सं १२६४ वसूल दुरी रावर्षी ने नं ११९२। टाक्सारा

. ३६० प्रशिक्ष के 6 | यह संघ | ते नाम-तः १४०१ समाप्त बुधो ११ । वे सं १९९९ ट मध्यार

विमेद-अवस्ति विकासकार है:--

विमेर-- विकासे का नहीं है। १६४ - मावसंसद--कुमुस्ति। यह संदर्शना १९८६ हक्का वास--वस्त्री मिर्स-वर्गा कमा-- ४ के काल-- संस्था करती है से ११६ । स्वाक्यार ।

विकेष--वीक्षा पत्र नहीं है !

- ६६४ - प्रतिस्थि २ । पत्र सं १ । ते कास->r । सपूर्ण । वे सं १३३) ता प्राप्त ।

३३६ अलिस १ । यर यं १६ । ते काला-र्थ १७०६ । वे तं १६१ । कं पणार । विभेय--विर्वासन्य औपा नवित है ।

६६० प्रतिसंश्कापन है । ते कम्≪->। हे संदरशाहरणणार।

विमेश-नदी २ लेखा में की की हिंदे हैं। १६८- सामार्शमहर्-म शास्त्रीका एक वे २०१ मा १२४६ ह इझा मामार्-लेखण । रिपर-वर्ग १९ नाम-४ १ में कार्ज में १०१० (प्रती है वे ११) कर सम्प्रदा

4.66 मति स्वी को गायक में १४ कि मास-× क्यूबी के तो १६४ कि सम्बद्ध । विसेश-भी वामके को पूर्व स्वाचित की हुई है । २ जीक्यों का निम्मल है। यान के इस्त नहीं वे की इस्त है। विदे सम्बद्ध है।

६०० सामसन्द्राच्याच्याचे १४१ वर ११४३६ रहा वाना-संस्ता स्टब्स्टार्थ र राजा-४ में राजा-४ के १११ वर सम्बद्धाः

निर्मय-नार्थि प्राचीम है । १४ में बाले वस सही है ?

६०१ सकोरवंशाका^{मा-म}ाप्य वं १। सा XV इक्षा समा-हिनो । रिपन-प^{र्}। र नक-X। न नक-X।पूर्ण। वे वं १७ । का मजार।

६७९ प्रश्वतिकास- नवाकाकः वय ते ६१। धा १९८६ इतः वता-स्थि। विनर-भागक पर्व गर्नत्व । ९ प्राथ-४। के कार-४। कार्या | के इद्दा कार्याः

. ६७३. मिप्सासम्बद्धत~च्चलाहासा प्रतासं १ त्या १४८६ तथा स्था—चिर्ण (पर्व) मिपस~पर्वार गल-संदुरशुरुरीयाचे प्रतासंदर्भाष्ट्रीय दंशा क्वासारी धर्म एव श्राचार शास्त्र]

१७४ प्रति स०२। पत्र स०१७०। ले० मान-४। वे० म०६७। स भण्डार। १७४ प्रति ६०३। पत्र स०६१। ले० मान-स०१८२४। वे० म०६६४। च भण्डार। १७६. प्रति स०४। पत्र स०३७ मे १०४। ले० माल ४। मपूर्ण। वे० स०२०३६। ट भण्डार।

विशेष--- प्रारम्भ में ३७ पत्र नहीं है। पत्र फट हुये हैं।

६७७ मित्थात्वस्यटन । पत्र म०१७। म्रा०११४४ इतः। भाषा-हिन्दी। विषय-धर्म। राजात-४। ने० नात-४। म्रपूर्ण ¦ वे० म०१४६। स्त्र भण्डार।

विशेष-१७ मे आगे पत्र नहीं है।

६७≒ प्रतिस०२ । पय म०११० । ले० काल−× । ग्रपूर्ण । ये० सं०५६४ । स्व भण्टार ।

६७६ मूलाचार टीका—श्चाचार्य वसुनन्दि। पत्र म०३६८। म्रा०१२४५ टेडा भाषा— भाइत सम्प्रत । विषय-माचार शास्त्र। र० काल-४। ले० पाल-म० १८२६ मगत्तिर बुदी ११। पूर्ण। वर्षक २७४। स्म भण्डार।

विशेष--जयपुर मे प्रतिलिपि भी थी।

६८० प्रति स० २ । पत्र स० ३७३ । ले० नाल-× । वे० न० ४८० । क भण्डार ।

६८९ प्रति स० ३ । पत्र स० १७१ । से० बाल-४ । ग्रपूर्ण । वे० म० ४६८ । ह भण्डार ।

विणेय--- ५१ मे मागे पत्र नहीहै।

६८२ मृ्लाचारप्रदीप—सक्लकीर्ति । पत्र स० १२६ । आ० १२ई×६ दख । भाषा–सस्कृत । विषय–माचारसास्त्र । र० माल–× । ले० माल–स० १८२८ । पूर्ण । वे० स० १६२ ।

विशेष---प्रतिनिधि जयपुर मे हुई थी।

६८३ प्रति स०२। पत्र सं० ८४। ले० काल-४। वे० स० ८४६। स्त्र भण्डार।

६८४ प्रति संट ३ । पत्र स० ८१ । ले० काल-🗙 । वै० म० २७७ । च भण्डार ।

६५४ प्रति स० ४। पत्र स० १५४। ले० काल-४। वे० स० ६८। छ भण्डार।

६८६ प्रति सद्भाषत्र मकहरा लेक काल-सक १८२० पीप सुदी २। वेक सकहर। ने भण्डार।

विशेष-प० चोलचव ने शिष्य पं० रामचन्द ने प्रतिलिपि की थो।

६८५ प्रति स०६। पत्र स०१८०। ले० माल-म०१८५६ वार्तिक बुदी ३। वे० स०१०१। न भण्डार।

विशेष---महारमा सर्वमुख ने जयपुर मे प्रतिलिपि नी था ।

६८८ प्रतिस०७। पत्र स०१३७। ले० काल-स०१८२६ चैत बुदी १२। वे० स०४५५। व्यामण्डारा

६८६ मृताचारभाषा--ऋषभदाम । पत्र म० ३० मे ६३ । घा० १०८८ दञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-भाचार शास्त्र । र० काल-स० १८८८ । ते० काल-स० १८६१ । पूर्गा । वे० सं० ६६१ । च भण्डार ।] भिर्म पन सामार राज्य

६६० मूखालार माया------। इक र्ष १ ने ६६। आः १ _५× ६ छ। करा-दिसी। किस-मातार सस्त । र कल---×। के शक---×। क्यूमी। वे ११७।

. ३.६१ प्रक्षिस २ । पत्र शंदेशे १ १४९ के १६ । बा १३× इक्ष । बला-विगी।

पित्रम-पापार प्रसन् । र काल-×ाने काल-×। प्यूनी वै वे १६६। क तपार। ६६२ प्रति सं ३ । पथ वं रचे ४१ १ के द । के बल-×। प्यूमी । वे दें रें

. ६६२ आश्र श्री क्षेत्री — बतारसी दासा १०० वर्ष ११ वा १९२० ६ इझा। वारा-श्रीकी । विस् वर्ष ११ कल्ला × के बाल-× । इक्षा के वे थे ११ वा क्यारा ।

३६४ प्रक्तिसं याववर्षपाने व्यव—×ावे संदृत्तक व्यवस्थ

३६४ मोकसर्गमकाशुक्त—प टोकरणका वक्त में ३२१ वा १२३४ इस स्थान्तानुसर्ग (पालनानी) प्रवाकिपय-वर्षा र कल-×ावे क्यम-सं१११४ पालका नुगी१४ । पूर्वा वे तं १ गा क कक्तरा

पिनेव --- इ डाटी कर्मी के स्वास पर चुढ़ हिन्दी के बच्च भी लिखे हुने हैं र

a.६६ प्रक्रिया की पण सं देश से काल सं sasy i के सं प्रत्या का समार्थ

ELO प्रशिव्यक्ति के रायत संदर्शनी करणा—संदर्शनी व दर्शक चचारा ELE. प्रशिव्य क्षापन संदर्शनी करणा—संदर्शनी व्यक्ति हुनी हो वे संदर्श

रा क्यार) विकेश—शास्त्रकाल सक्त के अधिकिय कराई वी ।

EEL प्रदिश्चे शांपण से २२ । ते काल−×ाते सं ६ ३ । कालचार ।

रै प्रतिस के। क्यार्चर ७६। के सम्बद्धाः स्थापकार। १ १ प्रतिस ७। पण सं ११ के २१६। क्षं क्यल्-×। ब्रह्मकी के सं ६६८।

च नचार।

१ ६ प्रतिस्य सायवर्ष १११ वे २११।वे कल-Xाबदुर्गावे सं ६६ । व स्वार

. १. १ प्रतिसं ६।पन मं ३६१।में काल-४।के सं ११६।मालनार।

१००४ विविश्वचर्णा—हेवसूरि।यश्वं २१।था १.३८४३ रणा।सथा-वसरा। विवय-समार बस्पार-राम-×ामे काल-सं १६६ चैत तुरी १.१ वृत्ता । सुरु। सं १९९६ र समार।

विवेद--वन्तिव पुण्तिक निम्न क्रकार है---

इति भी नुनिक्षिणीवरोगीयनीवेवनृरिविर्णयताः सीतिवनवर्गा संपूर्वतः।

प्रमासिक:---कंक्यु १६६ वर्षे वैभवाने कुल्लाको शवनोधीनवासदे श्रीनारायकाक्ष्मीवराम वहार्यः सो सी इ.विकस्तेन सुरीवराज निर्धाणं क्योतिको कवन श्री श्रामाककपुरे ।

१ ०३८ वरणायार—या बसुनेष् । तम मं १ । या १२३/x१३ इता । वारा-मान्तर । विवय-

Γ

मुनि धर्मवर्गान । र० क्वाल-× । ते० कात-× । पूर्गा। ये० स० १२० । छा भण्डार ।

रत्नकरएडश्रावकाचार—श्राचार्य समन्तभद्र। पत्र स॰ ७। मा॰ १०३×५६ इछ। नापा-मस्तृत | विषय-प्राचार गाम्य | र० काल-× । ले० काल-× । वे० स० २००६ । श्र्य नण्डार | विशेष-प्रथम परिच्छेद तक पूर्ग है। ग्रं य का नाम उपानकाध्याय तथा उपामकाचार भी है। प्रति स० २ । पत्र स० १५ । ने० कान--> । ने० स० २६४ । स्त्र मण्डार । विमेप-- कही कही सस्वत में टिप्पिशाया दी हुई है। १६३ ब्लोक हैं।

प्रति स० ३ । पत्र म० १६ । ले० काल-× । वे० म० ६१२ । क भण्डार ।

प्रति सट ४। पत्र म० २२ । ते० काल-म० १६३८ माह सुदी १०। त्रे० म० 3008 १५६। स्व मण्डार ।

विशेष- क्ही २ सस्कृत ये टिप्पण दिया है।

प्रति स० ४ । पत्र स० ७७ । ते० वाल-४ । ते० म० ६३० । हः मण्डार । प्रति स०६। पत्र म०१४। ले० माल–×। प्रपूर्ण। वे० म०६३१। इ. मण्डार। विशेष--हिन्दी धर्च भी दिया हुमा है।

१०१२ प्रति स० ७ । पत्र स० ८८ । ले० काल-× । प्रपूर्ण । वे० स० ६३३ । ड भण्डार । १०१३ प्रति स० = । पत्र स० ३६--५६ । ले॰ काल--× । प्रपूर्ण । वे॰ स॰ ६३२ । 'ड अण्डार । विजेप--हिन्दी ग्रंथ सहित है।

प्रति स०६। पत्र स०१२। ले० काल-×। वे० स०६३४। इ भण्डार। विशेष--- ब्रह्मचारी सूरजमल ने प्रतिलिपि की थी।

प्रति स० १०। पत्र स० ४०। ले० काल-×। वे० स० ६३५। स भण्डार।

विशेष--हिन्दी मे पन्नानाल सघी कृत टीका भी है। टीका स = १९३१ मे की गयी थी। १०१६ प्रति स० ११ । पत्र स० २६ । ले० काल-× । वे० स० ६३७ । छ भण्डार । विशेप-हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

१०१७ प्रति स० १२ । पत्र सं० ८२ । ले० काल-स० १९५० । वे० स० ६३८ । इस् भण्डार । विषोप--हिन्दी टीका सहित है।

१०१८ प्रति स० १३ । पत्र म• १७ । ले० काल-× । वे० स० ६३६ । इ भण्डार । 3909 प्रति स० १४ । पत्र म० ३८ । ले० काल-🗙 । अपूर्ण । वे० स० २६१ । च भण्डार । विशेष---केवल श्रन्तिम पत्र नही है। सस्कृत मे सामान्य टीका दी हुई है।

प्रति स० १४ । पत्र स० २० । ले० काल-× । मपूर्ण । वे० स० २६२ । च भण्डार । १०२० १०२१ प्रति स० १६ । पत्र सं० ११ । ले० काल-x । वे० स० २६३ । च मण्डार । १०२२ प्रति स० १७। पत्र स० ६। ले० काल-×। वे० स० २६४। च भण्डार। ,

```
) , 1
                                                                 िवर्स यस भाषार साम्य
```

\$ Fe\$ प्रतिस+ रे⊏। पन सं १३। ते तत्त-×१३ सं २३४। व प्रतार।

3 20 प्रतिम १६ । पत्र में ११ । ते शाय-८ । वे ते छ४ । व्यापकार । प्रतिसं २ । पण सं १३ । ते नात ⋉ । वे सं ३८२ । च जन्मार । . .

9 DE प्रतिस २१।यन से १३।वे नार-४।वे से ७४३। च नगार।

⁹ ने≗ प्रतिस मुश्रापत्र ते १ । ते पल-≾। वे र्व ११ । द्वाभण्यार।

प्रतिसं ३६। पर सं १ । वे नाच~ × । वे सं १४४ । अप नम्बार ।

यविस २४ । एव में १६ । ने कल-× । स्पूर्ण । के सं १२ । सामचार । 7 3 मिति सं≉ मे≳। पत्र सं १२ । धि राज्य-सं १७२१ और नुद्री ३ । वै सं १३ । क्ष प्रवद्वार ।

१ हेरे रज्ञकरवद्रमावकाचार श्रीका-समाचन्द्र । यह सं ४६ । यह १ ३४३ इतः नारा-नेस्ता । विद्या-सामार शास्त्र । र काल-×ा में काल-से १.६ आवस्त वृद्धी । पूर्णी के से ३१६३ भा मञ्डार ।

१ ३० मित सं २ । बचर्न २२ । ते पालन-४ । वे र्न१ ६६ । स्र बचार ।

१ वे प्रतिसंदे।परतंद१–४६१वे रक्त×।ब्यूर्मशीनंदे।बायमारा

१ देश मित्रेस श्रापन से द्र4—६२ । में कम्त-×ाबपून । दे से दर्दास क्लार। विकेर-अन्तर नाम ज्ञानशालका ठीका की है।

१ वेट प्रतिस्त ≽ापन सं ११ | वे तत्त्व−×ावै सं ६६६ । इस्तमार |

१ रेड मिटिको ६। यस नै प्रसास नामा-नं १७०२ फाइमा नुरो दा में से १७८। क्ष्य संस्थात ।

विकेश-क्ट्राएक मुरेपलीर्गित की धारमाय है कीमवर्गन आसीय जीता वीवोरस्त सक् बरममार्ग र्ग र्वेपन गत्र क्लाबन्दा नो भागों स्टीमी ने ६ व नो त्रतिबिधि नरात्तर आचार्व चन्त्रतीर्क्ष ने क्रिया हुएसीर्ति ने विधे क्रमंजव विक्ति केंद्र की ।

१.६० रक्तकारकानार—र्थ सहाधन कासतीनाकः । पत्र व १४२ । मा १ 🗡 🖼 । जारा-हिन्दी (श्वा) । विश्व-याचार बारत | १ शास 😭 १६२ वीव दुर्दी १४।

म तल सं १६४१। पूर्णा के मं ६१६। क क्यार। विमेर — व न नेवानो में हैं हरे से अदर तथा अदर से १ अन् तर है। प्रति तुम्बर है।

१ वेदः, प्रतिर्ह्म १।परनं र६६।के कल−-४ । बहुर्नं है ई ६२ । इस्पनारा रे देश सर्वित है। यम सं ११ ते १७६ । ते लात−४ । सपूर्णा में प्रदेशक समारा

रेप्रे प्रतिस प्राप्य संप्रदेश के जलने मानोज बुवि संर्दरी के संस्का

च बद्धार ।

मिटिस ३ । पवर्ष ११ । से सम्त−≺ । बधुर्श । वे सं ६०० । चावचार। निर्मय--वेबीचेह राजस कारे वे विका और स्वानुकारी हैशराने विकास--वह सन्त में निकाहण है। १८४२ प्रति स०६। पत्र स० ३४६। ले० काल-४। वे० स०१८२। छ भण्डार।

विशेष—''इस प्रकार मूलग्र थ के प्रमाद ते सदामुखदास देडाका का ग्राने हस्त ते लिलि ग्र थ समाप्त किया ।''
ग्रन्तिम पृष्ठ पर ऐसा लिखा है ।

१०४३ प्रति स०७। पत्र स०२२१। ले० काल-स०१६६३ कार्तिक बुदी ऽऽ। वे० स०१६८। इद भण्डार।

१८४४ प्रति स० द्वापत्र म० ५३६। ले० काल—म० १६५० वैशाख सुदी ६। वे० स० । भूभण्डार।

विशेष—इस ग्रथ की प्रतिलिपि स्वय मदामुखर्जी के हाथ में लिखे हुये सब १६१६ के ग्रथ से सामोद में प्रतिलिपि की गई है। महामुख सेठी ने इसकी प्रतिलिपि की थी।

१०४४ रत्नकरग्रहश्रायकाचार भाषा—सथमला । पत्र स० २६ । भ्रा० ११४४ इख । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय-म्राचार क्षास्त्र । र० काल-स० १६२० माघ सुदी ६ । ले० काल-४ । वे० स० ६२२ । पूर्ग । क भण्डार ।

१८४६ प्रति स०२। पत्र स०१०। ले० काल-×। वे० स०६२३। क भण्डार।

१०४७ प्रति स० ३ | पत्र स० १५ । ले० काल- 🗙 । वे० स• ६२१ । क भण्डार ।

१०४६ स्त्रकरग्रहश्रानकाचार—सघी पन्नालाल । पत्र स० ४४ । आ० १०३८७ इख । भाषा— हिंदी गद्य । विषय-प्राचार शास्त्र । र० काल-स० १६३१ पौप बुदी ७ । ले० काल-स० १६५३ मंगसिर मुदी १० । पूर्ण । वे० स० ६१४ । क भण्डार ।

१०४६ प्रतिस०२ । पत्र स०४० । ले० काल– ⋉ । वे०स ६१४ । क भण्डार ।

१८५० प्रति स०३। पत्र स०२६। ले० काल-×। वे० स०१८६। छ भण्डार।

१०४१ प्रतिस०४। पत्रस०२७। ले० काल-×। वे०स०१८६। छ भण्डार।

१०४२ रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषाः । पत्र स०१०१ । मा०१२×५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-म्राचार शास्त्र । र० काल-स०१६५७ । ले० काल-× । पूर्ण । वे० स० ६१७ । क भण्डार ।

१०४३ प्रति स०२ । पत्र स० ७० । ले० काल-स० १६५३ । वे० स० ६१६ । क भण्डार ।

८८४८ प्रति स०३। पत्र स०३४। ले० काल-×। वे० स०६१३। क भण्डार।

८०४४ प्रति स० ४। पत्र स० २८ मे ८५६। ले० वाल-४। प्रपूर्श। वे० स० ६४०। इ भण्डार।

१८५६ रत्नमाला — श्राचार्य शिवकोटि । पत्र स० ४ । ग्रा० ११५×४५ रञ्च । भाषा-सस्कृत ।

विषय–माचार घास्त्र । र० काल–⋉ । ले० काल–⋉ । पूर्गा । वे० स० ७४ । छ, भण्डार ।

विरोप-- प्रारम्भ --

सर्वज्ञ सर्ववागीका वीर मारमदायह।

प्रणमामि महामोहशात्तये मुक्तिप्राप्तये ॥१॥

नारं सम्पर्वनारेषु पंच यद्वाविकेषपि।

मनेपालमा वेद त्याति वयन भवा ॥२॥

बन्तिय-भो निष्यं पठित बीनल एलनासानियांपरा ।

समुद्रणरको पूर्व सिवकोदिक्यमञ्जाल ।।

इति भी शमन्त्रक स्थापी किया विषयोज्याकर्त विश्वविद्या राजवाना क्रवाच्या !

र्र°४० प्रशिष्ठ २ । पर संदाने कल्ल-×। ब्यूक्सँ। के १९१६ । इ. लखरा। १०४८- एक्यकार—कुल्कुल्याचार्व। पत्र संदान १३४४- दक्क। धरा-शल्दा

नियन-प्राचार महत्र । रंेकाल-×ा में काल-ख १००३ । पूर्ण | में चं १४६ । का सम्बार ।

१०३६ व्यविशं कापवर्ष १ । में कम्म−×। वे सं १ । टबरवार।

१०६ राजि मोजल स्वास वर्षीय व्यक्ता पर्या है १६ | बा १९४४ इस | मास-हिसी । विषय-मानार करूप । र करू-४ के रुक्त-४ | दुर्स| वे र्थ ४० | का सम्बार ।

र ६१ राखाक्रमासम्बग्नान्याचीयम् वं ११ व्या १२४६ देखाः सरस-वर्षस्तः । विषय-वर्षः र मान-×ाने वर्णस-×ाप्रणीते वं ११६१ कालकारः।

रै ६२ सिक्तमियागस्य स्थार्काणाणाय वं १६। वा ११८७ इक्षा वाना-संस्टा पियन-सामारकस्थार रुक्त-राणे कर्म-राप्तांके वं १७। कामच्यार ।

१६६ **क्षपु**स्तश्वकिष्यातः ⁻⁻⁻⁻⁻⁻। यम शंशासः १९८७ दश्चानमा--नेस्टर। विस्य--वर्ग। र सम्ब---×। विकास--वं ११४) पूर्वावे शंश २११ श्राचनमार।

निवेच—व्यवस्य ---

१ १४ संप्रकृत सुरी १२ तमें कुमी गर्ध नेवनाल भेजालें निवित्त थीं वेलेन्डर्शांत सामारव गीरोज के गृह तब बेहती !

.. १६४४ प्रक्रिया २)पथास १ ।से बदल–>८)ने से १२४६ ।कालमार।

१६८ स्थितं ३।पवसं १।के सम-×ावे वं १६२ ।कामण्यार।

१६६ असुसाम्बानिका । । यह तं ६। सा ११ ×६३ एकः साया-सरहत-हिन्दी । निवस-करी र सन्त-× ति वसा-× । यात्री वै वै ६४ । कः सम्बद्धाः

१ ६०. सामीक्षिता—एकसमा। यत्र वं ७। वः ११८० दशा । समा-संस्ता । विषय-सम्प्र सम्बद्धाः कमा-सं १९४१ कि कमा-संस्ति । वे वं वव ।

१६८ प्रतिर्श्च २। तम तं ७६। ते काल-सं १६० वैवाल पुरी----परिशाः कर्णकश्चाकलकारः

र ६६ असिसा ३।पण सं २६।के कस्त—क १९७ श्रीवस्टियुक्ति। के में ६६६। अक्रमणार्थ विगेष-महात्मा अभूगम ने प्रतिसिवि गी थी।

१८७० ध्यानाभि चक्तपत्ति की भावना-भूपरदास । पत्र गं० २ । सा० १०८७ इद्य । भाग-

वियोग-पार्थपुराण् में मे है।

१८७१. प्रति स०२ । पत्र मं०४ । ने० गान-न० १८८८ पीप मुदी २ । चे० म० ६७२ । च भण्डार ।

१८७२. यसस्पतिमत्तरी—शुनिचन्द्रसूरि। पत्र ग० ४। मा० १०४४ दृ दश्च । भाषा-प्रातृत । विषय-भर्म । र० वास-४ । ने० गात-४ । पूर्ण । वे० स० ६४१ । स्त्र भण्हार ।

१०७३ यसुनैदिधावशाचार---च्या० वसुनिद् । पत्र गै० ४६। मा० १०३/४ दञ्च । भाषा--भारत । विषय-धारक धर्म । र० गाल--/ । नै० माल--ग० १८६२ पीय गुदी ३ । पूर्ण । वे० ग० २०६ । ग्रा भण्डार ।

विशेष—प्रथ का नाम उपामनाष्यया भी है। जयपुर में श्री विरागदाम बातनीवान ने प्रतिनिधि करायी। गैस्ट्रन में भाषान्तर दिया हुमा है।

१०७४. प्रति स०२। पत्र मं०४ मे २३। न० माल-मं० १६११ पौप मुदी ६। प्रपूर्ता।

विमेप-मारगपुर नगर मे पाण दागु ने प्रतिसिधि भी भी ।

१०७४ प्रति म०३। पत्र स०६३। ले॰ माल-मं०१८७७ भारवा बुदी ११। ये० म०६५२। क मण्डार।

विशेष--- महातमा धनूनाथ ने मवाई जयपुरमें प्रतिनिषि भी थी । गाधामों के नीचे सस्यत टीना भी दी है । १०७६. प्रति सद ४ । पत्र स० ४४ । ने० गाल-× । ये० स० द७ । कु भण्डार ।

विरोप-प्रारम्भ के ३३ पत्र प्राचीन प्रति के हैं तथा दीप फिर लिले गये हैं।

१०७७, प्रति स० ४ । पत्र मैं० ५१ । मै० माल-🗙 । ये० स० ४५ । च भण्डार ।

१०७८ प्रति सं० ६। पत्र म० २२। ले० पाल-म० १४६८ भादवा बुदी १२। ये० म० २६६। स्म मण्डार।

विशेष--- प्रशस्ति--- सवत् १५६ वर्षे भादवा बुदी १२ ग्रुग दिने पुष्पनत्रत्रेममृतिमिद्धिनामअपयोगे श्रीपपस्याने मूलसपे सरस्वतीगच्छे वलात्नारगणे श्री युन्दकु दाषार्यान्वये भट्टारक श्री प्रभावन्द्रदेवा तस्य शिष्य मङलाचार्य धर्मनीति द्वितीय मङलाचार्य श्री धर्मचीति द्वितीय मङलाचार्य श्री धर्मचीति तत् शिष्य मुनि थीरनदिने दद शास्त्र सिखापित। प० रामच द्र ने प्रतिलिपि बरके स० १८६७ मे पार्श्वनाध (सोनियो) के मदिर मे चढाया।

१०७६ वसुनिदिश्रायकाचार भाषा—पञ्चालाल । पत्र सं० २१८ । ग्रा॰ १२३४७ इश्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय-प्राचार शास्त्र । र० वाल-मं० १६३० वार्तिक बुदी ७ । ने० काल-स० १६३८ माह बुदी ७ । पूर्ण । वे० म० ६४० । क भण्डार ।

१.८ प्रतिसं•ए। के नाल शं १६६ १ वे सं ६६१। ६८ जण्डार।

१ पर्दे बार्क्स सम्बद्धाः '''' । पत्र कंदिर के १७ । धेर स्टर्नुदेश का जला-स्थित । पित्रस्थर्म । र नाला×ावे नाला≻ । पर्वती वे वे ११७ । का प्रस्ताः ।

१ प> विद्वासन्त्रोत्रक्षणण्याच्याच २७ । या १२३४०ई इवा सन्या-प्रेत्स्तः विक्य-वर्गः र गत्र×ाने कस्तरः । यहर्षाचे सं ६७६ । क्रमण्यारः

रिकेन-- हिन्दी वर्ग सहित है। ४ बच्चान सक है।

रेश्मदे प्रति संदायन संदर्शने कमा×ायपूर्ण । वे संदेश । द्वाचार ।

विसेय—स्ति हिम्मो धर्म बक्ति है। यब बक्त के नहीं है धीर दिवने ही बीम के यह नहीं है। दी गठिनों का विभाव है।

१०६४ विक्रमानोकक भाषा—संबी पत्ताकृत्वः । यद रं ६ । यद १४८० हत्वः । स्ता-संस्कृतः क्रियोः विषय-वर्षः । यस्त्रः रं १६१६ साय मुद्दिः । ते क्रम्तः \times । स्र्युति । दे वं १००। क्राकृतः

१ मार प्रतिकार २ | पण वं १४६ | से नाम सं १९४२ सकोण कृती ४ | दे वं ६७७) चालनारः

१ म**े विद्वालकोका**र्यालकोकार्यालक स्थापना १९२० हता । याना-हिली शिवस-वर्षी र कार । के कार ४ प्रार्थी के से ६६ । कालपार ।

विमेद--जनवान्त्र के राज्यें करतास तर है।

रै ⇒≜ विवेकविक्कासः ''''। पर वं १ । या १ है>२ इक्षा जनस-दिन्दी। नियन-सम्पार सन्तरार बनावं १७७० ककुक दुवीः ने पल सं १ - पैठ दुवी ३ । वे सं २ । व्यवस्थार।

१ स्म. शृहस्प्रतिकस्प्रह्माच्या वय सं १६। सा १ ×४६ वक्षः त्रारा-प्राहत । विषय-वर्षे । र सन्तर्भावे सन्तर । पुर्वाचे वे वे ११४० । इ. प्रकार ।

रेक्ट प्रक्रिस काले क्ला 🗡 | वे वे दशकाह मनार।

रें ६ प्रतिसा ३ । में नाल ×। वे वं २१ ६ । क भणार ३

१ ६१ कुरमिनिसम्बद्धाः व्यानं १६ । वा∻ ११×४ई स्त्र । वास्य-संस्कृत प्राप्त । स्वित-वतः र पातः ∧ नि वाल × । पूर्णः । वे वै १ ३ । चालपारः ।

ह ६ प्रतिसंधानपतं १४ । ने नल ४ । वे सं १६६ । चनप्रारः

धर्म एव श्राचार शाम्य]

१८६३. पृहत्प्रतिकासस्सा । पत्र स० ३१ । भाग १०६८८६ इ.च. । भारा-सन्ता । प्रिय-पर्से । र० पात १ । स० बात ४ ॥ पूर्ण । वे० स० २१२२ । ट.भण्डार ।

१०६४ व्रतों के नामा । पत्र म०११ । व्या० ६६ ८ इ.च.। त्रापा हिन्दी । विषय-पर्म । र यात्र । ते० नान 🗶 । व्यवूर्ण । वि० प०११६ । व्याचण्यार ।

१८६५ झननामायली "।पत्र मं० १२। मा० हर्षे ४ इच्छ । नापा-मन्यून । रियस-धम । र नान स० १६०४ |पूर्ण । ये० ग० २६५ । स भण्डार ।

१८६६. झनसंरया १ पत्र सुरुष । चार ११८४ इखा भारत-हिर्दा । विषय-१४म । १८ पात > तिरुषान ४ । पूर्ण । वेरु सुरुष । ख्रा सण्डार ।

विरोप--१४१ बना एवं ८१ महल विधाना में नाम दिय हुये हैं।

१८८७, प्रतमार । पत्र म०१। घा०१०८८ दश्च । भाषा-सरकृत । विषय-धर्म । ए० नार । विषय-धर्म । ए० नार । विषय-धर्म । ए० नार ।

विनेष--वेवत २२ वदा है।

१०६= व्रतोषायनश्रायकाचार । यत्र स० ११६। मा० १६४७ इख । भाषा-सन्यत् । विषय-प्राचार शास्त्र । र० नात × । ते० मात >ा पूर्ण । वे० स० ६३ । प्र भण्डार ।

१०६६ स्रतोपवासयर्शन । पत्र स० ५७ । भा० १०८५ उच्च । भाषा-हिन्दी । त्रिषय-प्रापार भाग्य । र० कात 🗸 । लेक काल 🖊 । चपूर्ण । वेक स० ३३८ । स्त्र भण्डार ।

विनेप-- ४७ में बाग के पत्र नहीं है।

११०० प्रतोपवास्त्रर्ग्त । पत्र स०४। ग्रा०१२×४ इश्च। भागा सन्तृत । निगय-प्राचार सान्त्र । र० बाल 🗴 । से० बाल 🔀 । ग्रापूर्ण । पे० स० ४०८ । व्या भण्डार ।

११०१ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० वाल ८ । मपूर्ण । वे० स० ४७६ । व्य भण्डार ।

११८२ पट्ट्यायश्यक (लघुमामायिक)—महाचन्द्र। पत्र म०३ । तिपय-मानार साम्य। र० भार 📐 । ले० साल म० १६४० । पूर्ण । व० स० ३०३ । स्व भण्डार ।

११८ पट्चायज्यक्तिचान—पन्नालाल । पत्र ग० १४ । मार ४४ ७३ ६झ । भाषा—हिन्दी । विषय-माचार बास्त्र । र० मात्र म० १६३२ । ले० बाल ग० १६३४ वैज्ञास बुटी ६ । पूर्ण । वेर सर ७४४ । स्व भण्डार ।

> ११०४ प्रति स० २ | पत्र स० १७ | ते० बाल स० १६३२ | ते० वर ७४५ । इ भण्डार । ११०५ प्रति स० ३ | पत्र स० २३ | ते० बाल ८ | बे० वर ४७६ । इ भण्डार । विशेष—विद्वज्जन बाधव के तृतीय प्राथम उल्लास वा हिन्दी अनुपाद है ।

११ ६. पदक्रमीयरेशसम्बद्धाः (क्ष्यमीयस्य)—बहुष्क्रियं स्वस्यीति । यस्य १ वे वरः या १ दे×ाई प्रकाणमान्यस्य व वियव-सम्बद्धाः वस्त्य । १ वस्त्य ई १२४० । वे नाम ई १६११ वेग पूर्व १६१ वे ११६। व स्वस्याः

पुरा १६ (व. स. ११६) च वस्थार । विकेत-नामपुर नदर्गे सम्प्रेतमालात्मव पाटवीनीयवाले श्रीनतीहरुवसरे ने सम्बर्ग प्रदिक्षित रूपमानी गी ।

११०० प्रकृष्णिनेहारसमासामासा — पीढेकासक्यू। यर बंब्या ११६ । या १९४६ एक। पारा-दिन्दी। विकल-पारार पारचा र कमा वं ११ जाव बुदी १। से जमा वं १०४६ सके १० ६ भारता नहीं १ । पूर्वा के संप्रदेश का कारता

निमेर-अद्यापारी देवरारत ने महत्त्रमा पूरा के बस्तूर में प्रीतिनिर्देश राजानी :

देरे स्प्राप्तिस २ । पत्र में १२४ । वे काम सं १ ६३ ताव मुदी ६ । वे में १० । व सम्प्रार ।

चिमेल-पुरुष्क वं तवानुस्न दिल्लीयानी वी है। ११ ६ क्ट्रसंहननक्कील-सकरम्ब पद्यावति पुरवाक्ष । यद वं । धा १ के×११ ध्रम ।

पारा-दिन्दी हिस्स-वर्षा १९ नज्ज है १६ के स्थारण पुरस्का ४ वर्ष १ के कारण १ वर्ष १ के स्थारण पुरस्का वर्ष १ १ के स्थारण पुरस्का वर्ष १ १ के स्थारण पुरस्का वर्ष १ के स्थारण पुरस्का वर्ण १ के स्था वर्ण १ के स्थारण पुरस्का वर्ण १ के स्था वर १ के स्था वर्ण १ के स्था व्या वर्ण १ के स्था व्या वर्ण १ के स्था वर १ के स्था वर्ण

वर्षार शम ×ामे नाल ×ायपूर्णामे नं १९६१का क्यार। १९११ वीक्शकारस्थावनावर्णनवृत्ति यं दिलकिदक्या | यर ६ ४६ । सा. ११×६ ६म

१११६ चाकरकारकाशकाशकाशकाम् अस्यात्रहरूषा । परंच वर्गाणा ११०० परः अस्याप्रकृतं निषके-पर्नी र येण ×ावै येला ×ावूर्ली देर्तर प्राप्त गणारी

१९९२ योजस्थारस्यागणना—पः सद्यन्त्रस्य । पत्रः १९४० रखः। माना दिनी पडः। दिन्द--वर्गः पोत्रस्य ४ वित्रस्य ४ वित्रस्य स्वयः ।

विभेद---यनपरण्डमायपाचार भारत में ने हैं।

१११६ पादशकस्यामानमा व्यवसाय— जयसका त्या तं १ ४ था ११ ४% इवा मार्गा-हिन्दी (विवय-वर्षा रंपाल तं १६९६ तारन मुद्दी ४) में काल ४० मुद्दी है वं ७१६३ स सम्पर।

१११५ प्रतिसंद्रायण में १४ । के सम्मार्टी के क्षप्रदाय प्रवास १११५ प्रतिस्थ के। पण में १४ । के सम्मार्टी के अपना क्रमणारी

(((2 mid do ())) a to 12 mix | 4 m mil man()

१११६ प्रति स• ॥। वर्ष १ । ने पान ×ायार्गा वे लंकर । क्षापार। १११७ कोकास्त्रातालकाः पान वं ६४। सा ११३%औ इस । वास-विनो । विवय-

रेहर्र% योबहरकारणायनगाःः पत्र व ६४। गाँ १६)४६२ इस । नाग-दल्याः वर्द। र नान ⊀ाने नाम नी १६६२ नागित नुसी१४। दुर्गा । हे नी ७६१। बायपार ।

विजेर--रामझ्ला व्यान ने प्रतिनिधि वी वी ।

१११६, ब्रिक्षे व | पर में ६१ । ने पाल ≻ावे में अरशाच प्रचारी

११४६ प्रति स०३। पत्र म०६३। ले० काल 🗙 । वे० स० ७५५ । द भण्डार ।

११२० प्रति स० ४ । पत्र म० ३० । ले० वाल 🔀 । प्रपूर्ण । वे० स० ६६ ।

विशेष---३० मे आगे पत्र नही है।

११२१ पोडपकारणभावना । पत्र स०१७ । ग्रा०१२३ \times ७ $^{\circ}_{2}$ डख्र । भाषा-प्राकृत । विषय- धर्म । र० नाल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० सं० ७२१ (क) । क मण्डार ।

विशेष---मंस्कृत में सकेत भी दिये हैं।

११२२ शीलनववाड् । पत्र स० १। घा० १० \times ४ $\frac{1}{2}$ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । न्वना-काल \times । ने० काल \times । पूर्ण । वे० स० १२२६ । श्र्य भण्डार ।

११२३ श्राद्धपिंडकस्मण्सूत्र । पत्र स०६। मा०१०×४५ इखः। भाषा-प्राकृतः। विषय-धर्मः। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्णा । वे० स०१०१। घ भण्डारः।

विशेप—प॰ जसवन्त के पौत्र तथा मार्नासह के पुत्र दीनानाथ के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी। गुजराती टब्बा टीका सहित है।

११२४ श्रावकप्रतिक्रमण्भाषा—पन्नालाल चौघरी। पत्र स० ५०। ग्रा० ११५४७ इद्ध । भाषा— - हिन्दी। विषय-धर्म। र० काल स० १६३० माघ बुदी २। ले० काल 🗙 । पूर्ण। वे० स० ६६८ । क भण्डार।

विशेष—वादा दुलीचन्दजी की प्रेरणा से मापा की गयी थी।

१९२४ प्रति स०२। पत्र स० ७४। ले० काल 🗙 । वे० स० ६६७। क भण्डार।

११२६ श्रावकधर्मवर्शन । पत्र स० १०। झा० १० ई×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-श्रावकः धर्म। र० काल ×। ले० काल ×। झपूर्श । वे० स० ३४६। च भण्डार ।

११२७ प्रति स०२। पत्र स०७। ले० काल 🔀 । पूर्ण। वे० स०३४७। च भण्डार।

११२८ श्रावकप्रतिक्रमण् "। पत्र स० २४ । द्या० १०६ ४४ इखा । भाषा-प्राकृत । विषय-धर्म । र० काल ४ । ले० काल स० १६२३ झासोज बुदी ११ । वे० स० १११ । छु भण्डार ।

विशेप—प्रति हिन्दी टब्वा टीका सहित है। हुक्मीजीवर्ग ने ग्रहिपुर मे प्रतिलिपि की थी।

११२६ श्रावकप्रतिक्रमण् । पत्र स०१५। मा०१२×६ इख्र । भाषा-सम्कृत । विषय-धर्म । रंकाल ×। लेक नाल ×। पूर्ण। वेक स०१८६। ख भण्डार।

११२० श्रायकप्रायश्चित-चीरसेन । पत्र स० ७ । मा० १२×६ इख्र । भाषा-मस्कृत । विषय-धर्म । र० काल × । ले० काल स० १६३४ । पूर्ण । वे० स० १६० ।

विशेष---प० पन्नालाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

🖘] विसे पर्व भावार सस्य

११ ६ पट्ट ऑपोर्डशरणस्पक्षा (स्वस्मावस्थ)—यहास्त्रीय ध्रमस्क्रीस्थ । यन शं ३ के था। मा १ $\sqrt{2}$ द्वा समय-स्वस्थ स्थाप-सम्बाद सारुपार नाम सं १९४७ कि साम सं १९२२ वैष मुरी १९ कि ने १२६ । च कथार ।

विकेर--- मानपुर नक्रमे क्रम्थेनवलात्म्य पहरतीनीमवाले श्रीनतीहरपक्षे वे क्रमकी प्रतिकिपि करवानी नी i

११० क. सट्क्योवहेसरक्षमकासाथा — पढि क्षावस्त्रयू १ पत्र संस्ता १९६ । सा १९४६ रझ । सरा-दिसी । पिरक-साथार शांवा ों र जल सं ११ साय पूरी १ । के जल सं १ वर्ग काले १० ४ सरता पूरी १ । दुर्ज । वे सं ४६६ । का सम्बार ।

विभेर-सहामारी देवकरस में स्वहत्वा कुरा से खबबुर के अतिसिधि करवासी ।

११ ८ प्रतिस २ । यस वं १२० । के सक्तार्थ १०५६ कार लुदी ६ । वे सं १७ । व स्थारी

क्षिये--पुस्तक वं तरामुक विस्थीयकों दो है।

११ ८. प्रदुर्धन्तनवर्षेण—सकरण् लग्नावति पुरसका । पर र्व व । या १ के४५ ध्या। काम-केलो (विष्य-वर्ष) रोजनार्व १७ ६) वे कास ४ । इस्ते (वे सं८ ७१६) व कपार।

१११ पह्मकिकवीयः । पार्च ६२ से २६ । या १२×६ - इ.स.। सरा- संस्तृतः । तैयः -वर्तार यक्त × । के शस × । स्तृति । वे १६६ । स्र वस्तरः ।

११११ चोडराक्यराक्यभवनावर्णनाहीच-पं-हिलडियक्या । पन ७ ४६ । या ११४८ हवा । क्या क्रमत स्वस्त्र (विक-वर्ग) र पन ४ । वे स्वस्त्र ४ (दुर्स) वे सं १ ४ । या नगर ।

१११२ पाडककार#समायना—पै० सश्क्षका।यगर्व । धा १७४० रखः। जना दिनी धर्मः। पित्रक-पर्वः र जन्म ४० ने जन्म ४१ वे ६६ । धा तम्मारः।

विरोध---यानरप्तकात्रवाचार वाता में से हैं।

१११६ पोदरास्यस्यभागता कसमासः— सदस्यकः । पत्र तं २० ३ सा ११८×०ई इस । वार्षाः क्रियो । विवय-सर्व १८ पान सं १६२२ सापण मुद्दी ४ । ते भान ४ । पूर्व । ते सं ७११ । क मण्डार ।

्रदेरश्च प्रशिक्षं का नगर्ने २४। के नाम 🖂 कि वे कप्रकृत का नगर ।

्रर्र× प्रक्ति सं ३ । वर्ष र∀ । वे वरू 🔀 । वे वं ७४६ । ४८ वजार ।

्रर्द्र ब्रिटिस प्रायनमं १ । ने नक्त ×ा बपूर्वाः ने संस्था क क्यार

१११७ पादरकारणभाषाः स्थापं १४ थं १४। या १६३८६६ इस । यापा-देखी। विवय-वर्ष । र पल × । ने पाप ने १६१६ गानिक गुणै १४ १५१मी है में ७१६। अन्तरार ।

विनेष---रामक्तार ध्वान ने प्रतिनिधि पी पी।

१११८, श्रीतश्⇔ायप में ६१ कि याल ×ार्थ में अर्था प्रथणार ।

धर्म एव श्राचार शास्त्र]

११४१. प्रति स० २ । पत्र म० ५ । से० काल स० १८८४ प्रापाट बुदी २ । वे० म० ८३ । च भण्डार ११४२ प्रति स८ ४ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १८०४ । भादवा मुदी ६ । वे० म० १०२ । छ भण्डार ।

११४३ प्रति सद्धा पर्य स० ७। ले० बात्र । वे० स० २१५१। ट भण्डार।

११४४. प्रति स≎ ६ । पत्र स० ६ । ले० माल 🗙 । ने० स० २१४० । ट भण्डार ।

११४४ श्रावकाचार—सकलकीत्ति । पत्र स० ६६ । ग्रा० ५ ६६ रख । भाषा-मन्दत । विषय-ग्राचार शास्त्र । र० वाल × । से० काल × । ग्रपूर्ण । वै० स० २०८८ । श्रा भण्डार ।

११४६ प्रति स० २ । पत्र स० १२३ । ले० काल स० १८४४ । वै० स० ६६३ । क भण्डार ।

११४७ श्रायकाचारभाषा—प० भागचन्द्र । पत्र स० १८६ । ग्रा० १२४८ इश्च । भागा-हिन्दी गरा। विषय-प्राचार शास्त्र । र० काल सं० १६२२ ग्रापाढ़ मुदी ८ । ले० माल 🗙 । पूर्ण । वै० स० २८ ।

विगेप-प्रमितिगति श्राववाचार का भाषा टीका है । प्रन्तिम पत्र पर महावीराष्ट्रक है ।

१९४८ श्रावकाचार । पत्र सन्या १ से २१। ग्रा॰ ११४५ डब्र । भाषा-सस्यत । विषय-ग्राचार शास्त्र । र० नाल × । ते० नाल × । ग्रपूर्ण । वे० स० २१८२ । ट भण्डार ।

विशेष-इसमे मागे के पत्र नहीं है।

११४६ श्रावकाचार । पत्र स० ७ । ग्रा० र० दें ४४ दे इख । भाषा-प्रावृत । विषय-ग्रानारकास्त्र । र० नाल ४ । ते० काल ४ । पूर्णा वे० न० १० मा न्यू भण्डार ।

विशेष---६० गायायें हैं।

(१४० श्रावकाचारभाषा । पत्र स० ५२ मे १३१। मा० ६ र्४ ५ इख । भाषा—हि दी । तिपा— माचार जास्त्र । र० वाल × । ले० वाल × । मपूर्ण । वे० स० २०६४। श्रा भण्डार ।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

११४१ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० माल 🗴 । अपूर्ण । वे० म० ६६६ । क भण्डार ।

१९५२ प्रति सo ३। पत्र स० १११ से १७४। ले० काल 🗴 । घपूर्ण । वे० स० ७०६ । इ. भण्डार ।

११४३ प्रति म०४ । पत्र स०११६ । ले० काल म०१६६४ भादवा बुदी १४ पूर्गा । वे स०७८० । इ. भण्डार ।

विनेप-- गुराभूपरा कृत श्रावकाचार की भाषा टीका है। सबत् १५२६ चैत सुदी ५ रिववार को यह प्रतिकाद जैसिंहपुरा में लिखा गया था। उस प्रति में यह प्रतिलिशि की गयी थी।

१९४४ प्रति स० ४। पत्र स० १०८। ले॰ बाल 🗙 । म्रपूर्ण । वे० स० ६८२। च भण्डार ।

११११ व्यवकाषार—व्यक्तितिनति। यत्र वं १०।सा १९४४ इताः काना-नंसरः।विषय-सावार सकतार यक्त × | वे कस्त × ।पूर्णाने सं ६६४ | काल्यारः।

विनेत-नदी नदी संस्कृत में टीना भी है । तन्त्र ना नाम उपासराचार की है ।

११६० मतिस १ । पार्थ १६ । से फाल × । स्थली वे सं ४४ । पार्थण क्यार ।

११३६ प्रतिसं ३ । पन सं ३ । से कमा× । सपूर्ण ३ वं १ व । आर अध्यक्त ३

११२४ मानकाचार—कारवास्त्रामि । पर्यं में २६ । या ११४२ इख । वारा-कंस्ट्रा विवस-सावार समय :र नात ×ाने कस्य ×ा पूर्णं ।ने सं २ १ । व्यापकार ।

११३५ प्रतिसः ≺ायवर्तं रेकाले कमार्थं १९२६ बलाइड जुसै २०वे सं १६० मा भगारः

१११६ कावकावार—गुहासूरकावाक। पत्र तं ११। वर १ १४४३ इकः कना-चीत्रतः। विज्ञ-समारकाका ∂रंकमा ≻ावे पत्रकं १६६२ वैदाख वदी ४। वर्षा दे ११ । दर्गक्यारः

विकेच-- प्रशस्ति

हं नत् १६६२ वर्षे वैद्यास वृद्धे ४ जी हमार्थने कमारापान् व परस्तांत्राच्ये भी दु स्ट्रू सामार्थनाने व भी प्रधानि देसराजन्त्र भ भी बुक्तमा देशराज्याह भ भी विकायन देशराज्याह भ सो प्रधाननेत्रा ज्यानाने विकारसाम्पर्य हा भीने से परायत सम्बाधित प्रदेशन्त्र नीता स्थाप भागी नार्यपर्य । स्ट्रूप मोस्पास त्यन मार्ग सारी दुवीन पुत्र नमी सामार्थना मार्ग मोशी सामार्थन प्रदेश मीला सा पर्यवह बहुस्तास प्रदेशनान्त्रे रावसामें निकासने कर्मव्यापितां सामार्थनाः। व्यविता समार्थनितिस्त्रीय स्थाप सामार्थना स्थापना

११३७८ प्रति सार्प्याचन की ११। में याला की १४९८ जनका बुधी १ । में वं ॥ १। स्म जनकार।

श्रहरित—संबद् १६२६ वर्षे जातपर १ क्यो भी हमस्वित भी विषयन्त्र त वर्धीयम संवेदन साम्पर्य व कामप सार्वा संत्री पुण हम्य विकासकरु ।

११६८. सालकामार—च्यातिम् । पन वं २ ते २६ । या ११६/४२ इक्षः मता—करागः। मैपर-द्रापार बक्तमः र कक्त × । ते कर्तर × । वर्षः । वै र ११ ७ ।

विश्वेष--- ३१ के बाने भी पण नहीं हैं ?

११६६ आवकाचार—पुरस्ताव । पण से ६। सा ६ ×६ दक्ष । आया- संस्था । तैपन-मानार सात्र । र पण ×१७ फुक्स वे १ पर सेवाल सुधी ३। दुर्सा वे से १२। स पण्यार।

रिकेर---मन्त्र का नाम करासकाचार तथा प्रपाशासकाच्या भी है।

११४० मधिस २ । चयर्त ११ के यस्त बंद तीयकूती १२ । वेर्च स्थ्यार ।

धर्म एव श्राचार शास्त्र]

११४१ प्रति स॰ ३। पत्र स० ४। ले० काल स० १८८४ ग्रापाढ बुदी २। वे० स० ४३। च भण्डार ११४२ प्रति स० ४। पत्र स० ७। ले० काल स० १८०४। भादवा सुदी ६। वे० स० १०२।

झ भण्डार।

११४३ प्रति स० । पत्र स० ७। ते० वाल 🗴 । वे० स० २१५१ । ट मण्डार ।

११४४. प्रति स०६। पत्र स०६। ले० काल 🗙 । वे० स० २१५०। ट भण्डार।

११४४ श्रावकाचार—सकलकीत्ति । पत्र स० ६६ । आ० ६ ४६ इख । भाषा-मन्द्रत । विषय-ग्राचार शास्त्र । र० काल × । ते० काल × । प्रपूर्ण । वै० स० २०८८ । स्त्र भण्डार ।

११४६ प्रति स०२। पत्र स०१२३। ले० काल स०१८५५। वे० स०६६३। क भण्डार। ११४७ श्रावकाचारभाषा—प०भागचन्द। पत्र स०१८६। म्रा०१२४८ दक्ष। भाषा-हिन्दी गद्य।

विषय-प्राचार शास्त्र । र० काल सं० १६२२ मापाढ सुदी = । ले० काल × । पूर्श । वे० स० २= ।

विशेष--- प्रमितिगति श्रावकाचार की भाषा टीका है। श्रन्तिम पत्र पर महावीराष्ट्रक है।

११४८ श्रावकाचार । पत्र सन्या १ मे २१। मा० ११×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-धाचार शास्त्र । र० वाल × । ले० वाल × । मपूर्ण । वे० त० २१=२ । ट भण्डार ।

विशेष-इससे भागे के पत्र नहीं हैं।

११४६ श्रावकाचार । पत्र स०७ । द्या० १०३ ४४३ इख्रा । भाषा—प्रापृतः विषय-भाचारगास्त्रः। र०नाल × । ले०काल × । पूर्णा । वे० स० १० । छ भण्डारः।

विशेष-६० गाथायें हैं।

रिश्रे० श्रासकाचारभाषा । पत्र स० १२ मे १३१ । आ० ६ र्थ्×५ इख्र । भाषा—हिन्दी । विष्य-भाषार शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २०६४ । श्रा भण्डार ।

विशेप-प्रति प्राचीन है।

११४१ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० काल 🗙 । प्रपूर्ण । वै० स० ६६६ । ऋ भण्डार ।

११४२ प्रति स० ३ । पत्र स० १११ से १७४ । ले० काल 🗵 । स्रपूर्ण । वे० स० ७०६ । इ भण्डार । ११४३ प्रति स० ४ । पत्र स० ११६ । ले० काल स० १६६४ मादवा बुदी १ । पूर्ण । वे स० ७८० ।

ड भण्डार ।

विशेष — गुण्मूपण् कृत धावकाचार की भाषा टीका है। सबत् १५२६ चैत सुदी ५ रिववार की यह प्रन्य जिहानावाद जैमिहपुरा में लिखा गया था। उस प्रति में यह प्रतिलिपि की गयी थी।

११४४ प्रति स० ४। पत्र स० १०८। ले० बाल 🗴। अपूर्ण । वे० स० ६८२। च भण्डार ।

६] [यर्म पर्व भाषार ग्रस्त

११४८ मुख्यासम्बर्णनः । पत्र नं या या ११ ×७६ इझा। भाग-ई्ल्फी । विवय-वर्गार नार ×ानं नन्न ×ा पूर्णा वे सं ७ १ । फूलप्यार ।

१६४६ प्रतिस्रं १। पन वं ≼ाने बला ×ाने नं ७०९। का स्थार ।

११४० सहस्क्रांकीर्यस्त्राम् वन सं २ । बा १×४ इक्का मला-बेस्क्रुयः। दिवर-वर्गे । र वाच×ाने वाच×। पुरुषे । वे वं १७४ । हालकारः।

११४८- समितवास—धासकरम् । यत्र सं १। मा १_४४४ रणः । नासा-मृत्यो । शियन-वर्तः ।

नाम ४ मि कमा सं १०१६ । पूर्वा वे सं २९१६ । का प्रवार । ११४६ समुद्रायमेव ""। पत्र सं ४ । बा १९४६ वस्त्र । बापा-संस्कृत । विपय-विकास । र

रक्षा×। निरुक्त ×। प्यूर्ती वे सः ७ ॥ । इन्हण्यार १ ११६ सम्मेकप्रिकर सद्धारम्य — निक्रित वेयवस्ता विवर्त १ । या १९४६ इक्षा । वारी-

. ११६ सम्मद्रश्लास्याद्वासम्ब⊸नाम्बर्ग्याच्याच्याच्याच्याः ११०० व्यास्थादः मध्यमार यामाच १६४४ तो सम्बर्धः १ पूर्णीवै वं २०२ व्यास्थादः

११६१ प्रति सं यापवाचे १४७ कि काम ×ावे सं ७१६ । अ अवदार ।

११६९ प्रतिस्य है। तम वं ४ । वे साम ×। बहुआई। वे सं १७६। कृतवार।

११६३ क्ष्मेदिशकरमङ्ग्य-काक्ष्यम् । वन वं १६। वा ११×६। ज्ञान-दिन्दी (नव)।

दिसम-सर्थ । एः कल संदेश प्रमुख पुष्टे १ । वे शाल ५० । पूर्व । वे संदर्भ एक सम्प्रार । विकेद—स्कृतक सी वकारोति के क्षित्र साम्रक्कण ने देवाई ने ब्यू अन्य दक्ता की वी ।

. ११६४ सम्बेदशिकारमहारूक-सम्भुक्तकाका। पत्र तं १ ६। या ११४१६ हका। नगा-रूको। स्वर-करी र कम-×ानै नगा सं १६४१ सकोत हुवी १ । पूर्व र वे १ १६। स्व प्रवार ।

> रितेय---रचना श्रेष्य सम्बन्धे ग्रेहा---यान वेद श्रीयचवे विकास दुव श्राप्त ।

सन्ति निर्व बदकी तुन्द क्रम सभावत अन्त ।।

सोहापार्व विचित्रत क्ष्म की जावा टीका है।

११६८ प्रतिक्षः स्थापनसं १ २ शाने बालानं १००४ नीय नुसी १ । वे सं ७ । सामान्यार । ११६६ प्रतिकः ३ । पत्र सं ६२) ने कालानं १ नीय नुसी १४ । वे सं ७८६ । व

भगारः। विभेश---वर्गेशीरावनी भावता ने क्षत्रुरः वे प्रतिनिधि की ।

११६७ महिन्स भी पत्र में १४९। में साम में १६११ पीत्र सुधी १६ वर्ष में १९। म

रहरू*क सह*द शहर वस्त्र हराण नाम ण इद्दृह पण्य युवाः क्लोरा

११६६. सम्बेद्दिल्याविकास—करारीसिंदः पत्र वं ६३ था ११६०० दश्चा स्परा—रिपी। विश्वक-वर्तार वाल्याच्या स्पर्धाः वाल्याच्या स्वाप्तिकारः ११६६ सम्मेटशिषर विलास—देवाब्रह्म । पत्र स० ४ । ग्रा० ११३×७३ डञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-वर्म । र० काल १=वीं व्यतान्दी । ने० कान 🗴 । पूर्ण । ये० स० १६१ । ज भण्डार ।

(१७० ससारस्वरूप वर्णीन | पत्र मं० ५ । श्रा० १ ग४५० इख्र । भाषा—सस्तृत । विषय⊸धर्म । राकात र । ले० काल × | पूर्ण । वे० स० ३२६ । व्य भण्डार ।

१९७१ सात्तारधर्मामृत--प० श्राणाधर । पत्र स० १८३ । ग्रा० १२५ ४७५ टश्च । भाषा-सस्कृत । विषय-श्रावको के ग्राचार धर्म ता वर्णन । र० काच स० १२६६ । त० काल स० १७६८ भादवा बुदी ५०। पूर्ण । वै० स० २२८ । श्र भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ मस्त्रत टीका महित है। टीका का नाम अत्यकुमुदचन्द्रिका है। महाराजा सवाई जयमिंहजी के शासनकाल में मानेर में महात्मा मानजी ने प्रतिनिधि शी थी।

११७२ प्रति सट २। पत्र न० २०६। ने० नात न० १८८१ फाग्रुण मुदी १। ने० न० ७७५। क भण्डार।

विशेष—महातमा राधाकृष्णा किञानगढ वाल ने सवार्ड जयपुर में प्रतिलिपि की । १९७३ प्रति स०३। पत्र स० ४६। ले॰ काल ×। ने॰ न॰ ७७४। के भण्डार। १९७४ प्रति स०४। पत्र स०४७। ले॰ काल ×। वे॰ स॰ ११७। घ भण्डार। विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

११७५ प्रति स०५। पत्र म० ५७। ने० काल 🔀 । ने० म० ११=। घ भण्डार।

विशेष—४ से ४० तक के पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं वाकी पत्र दुवारा लिखाकर प्रन्थ पूरा किया । ।

११७६ प्रति स० ६। पत्र म० १५६। ने० काल म० १८६१ भारवा बुदी । वे० म० ७८। জ্

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ टीना महित है । मागानेर में नोनदराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में स्वपठनार्थ प्रति-निषि की थी।

११७७ प्रति स०७। पत्र म०६१। ले० काल म० १६२८ फागुरा सुदी १०। वै० स० १४६। ज

निरोप—प्रति टब्या टीका सहित है। रचियता एव लेखक दोनो की प्रशस्ति है। ११७≒ प्रति स० म। पत्र स० १८०। ले० कान ×। वे० स० १। व्याभण्डार। विषेप—प्रति प्राचीन एव शुद्ध है।

११७६ प्रतिस०६। पत्र स०६६। ले०काल स० १५६५ फाग्रुगा मुदी२। वे० प०१८। च्य मण्डार।

विशेष-प्रशस्ति-सण्डेलवालान्वये ग्रजमेरागोत्रे पाडे छीडा तेन इद वर्मामृतनामोपाध्ययन ग्राचार्य नेमिचन्द्राय दत्त । भ० प्रभाचाद्र देवस्तत् शिष्य म० धर्मचन्द्राम्नाधे ।

```
£V 7
                                                            विमे पर्व भावार शास्त्र
1 15
         न्द्रम्थं अति संदेश राम संभागा । साम संग्रह के स्वास मधार ।
         रेस्टर प्रतिर्सं रेरी पन वं रेप्रशावे बाल ×ावे वं प्रशर्श सामकार।
         निमेन-स्रोधक्ष टीना बहित है।
```

११८२ प्रतिसः १२। पत्र सं १६। ज नाल ×। वे सं ४४ । व्यापनकार। विकेश-जुननाथ प्रति प्रत्यीत है।

रेरेमध्य मित्रे स्टेश्य वं १६६१ में यान वं १११४ काकून मुद्रो १२१ में सं ५० १ श्च प्रचार ।

विकेश-स्वतिक- तंत्रण् १९६४ वर्षे कान्युम वृद्धी १ए श्रीकालरे पूर्वायुक्तकर्षे नीतुकाली सन्तितंत्रे नमारकारको सरस्वक्रीयको औ पुन्यकुन्यायार्थकार्य स औ प्रकारित सन्दर्ध की प्रवक्तिसारमञ्जी स औ विश्वया देशकार्ष्ट्रे व भी प्रयासन्तरेमकदेविन्यत्रयामार्थानं भी धर्मपन्तरेशप्रकत्वकृतविष्यारार्थे भी देनियन्तरेसारतीरितं

रेरेच्द्र मंदिस रे¥ायत कं प्राप्त फला×ाव्यूकी वे द राम मचार!

११म⊅. महिर्स १३ । पत्र संपर्शने कम्ब× क्यूली (के संह€६ । टक्न्यार । ११म६ मिट सं- १६। पत्र वं १ के ०५। ते नम्ब वं १११४ मारवा पूरी १ । सपूर्ण (वे

र्वजा २११ । इ. क्ष्मार ।

विश्रेय-स्वयं पन नहीं है । तेकर अवस्ति पूर्व है ।

११मकः साराग्यस्थानम्बद्धाः ""। पत्र तं १) या १ ५० इक्ष) चारा-निर्मा । विश्वस-पर्ग) र राग×। से बलावे १७० 1 पूर्वा ने वे १९०६। निवेप-- रूपमारी वी मैं हुई है जिबके बाट रख है।

११मा **सावदिनवर्ग**ः । यत्र तं ६। शा ६३/१४३ इक्षः वस्ता-असूत् । विचय-वाचार यसमार नान ×ाने कान ×ाकूनी के वे ३ ४ ।

विशेष---भीतार्योगको भी विकास लहारै विकास को वापि हमा क्रिकितं ।

११८६ **स्टब्स्विक्ताठ-स्ट**स्सिय। वर्ष १२ । यस 🗡 ६४ । आया-अस्यत् वीस्तर । विवय-क्ष्मी: र राम x । में कला x । इसी वे वे २१ १ । का नकार }

> विकेश-वर्गितन पृथिका निरूप तकार है-धीर नौध्यपनिर्विश्योगरी शामनित्यक संपूर्ण ।

११६ स्प्रमानिकगाठ^{०००} । तम से २६ । था व 🔀 इवा नाग-प्राप्ता । विश्वस-गर्ने ।

र क्ला∧। ते क्ला×ावप्रती वे से २ ६६। फायमार।

११६१ प्रति स०२ । पत्र स०४६ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स०१६३ । 🔊 भण्डार । विक्षेष---संस्कृत मे टीका भी दी हुई है ।

१९६२ प्रति सः ३ । पत्र सः २ । ते० काल 🗴 । वे० नः ७७६ । क भण्डार ।

११६३ सामायिकपाठ । पत्र म० ५०। ग्रा० ११५ ४७% इञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-धर्म । र० नाल ४ । ने० काल स० १९५६ कॉत्तिक बुदी २ । पूर्ग । वे० स० ७७६ । ऋ भण्डार ।

११६४ प्रति सद २ । पत्र स० ६८ । ते० काल स० १८६१ । ते० स० ७७७ । स्र भण्डार ।

विशेष-उदयचन्द न प्रतिलिपि की थी।

११६४. प्रति सट ३ । पष स० ५ । लेव बाल 🗙 । अपूर्ण । वेव सव २०१७ । अ भण्डार ।

११६६. प्रति स० ४। पत्र स० २६। ले० काल ४। वे० स० १०११। स्र मण्डार।

११६७ प्रति स० ४ । पत्र स० ६ । त० काल 🗴 । वै० स० ७७८ । क भण्डार ।

११६८ प्रति सं०६। पत्र स० ४४ । ले० नाल स० ४५२० कार्तिक बुदी २। वे० स० ६५। व्य

भण्डार ।

विशेष--प्रग्वार्य विजयकोत्ति ने प्रतिलिपि की यो।

१९६६ सामायिक पाठ । पत्र स०२४। भ्रा०१०४४ इद्यः। भाषा-प्राकृत, सस्कृत । विषय-धर्म । र० काल ४ । ते० काल स०१७३३ । पूर्ण । वे स० ६१४ । इ. भण्डार ।

१२०० प्रति स०२ । पत्र स०६। ते० काल म०१७६० ज्येष्ठ मुदी ११। वे० स०६१६। इस् भण्डारः

> १२०६ प्रति म०३ । पत्र स०१० । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० स०३ ६० । च भण्डार । विशेष—पत्रो नाचूहो ने स्नालिया है ।

१२०२ प्रतिस्व०४ । पत्रसर्दाले बात्र 🗙 । अपूर्णावे वर्षे २६१ । च मण्डार । १४०३ प्रतिस्व ४ । पत्रसर्दि । संक्षाले असले 🗙 । अपूर्णावे वर्षे ५१३ । उपाण्डार ।

५००४ सामायिकपाठ (लघु)। पत्र स०१। ग्रा०१०३४८ इखा भाषा—सस्कृत । विषय—धर्म। र० काल ४। ते० काल ४। पूर्या। वे० म० ३८८। च भण्डार।

१२०४ प्रति स० २ । पत्र स० १ । ले० नाल × । वै० स० ३८६ । च भण्डार । १२०६ प्रति स० ३ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० ७१३ क । च मण्डार ।

१२०७ सामायिकपाठभाषा— शुध महाचन्द्।पत्र स०६। मा०११×५५ डआर। भाषालहिन्दी। विषय- मर्भ। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण। वे० स०७०८। च भण्डार।

विशेष-जौहरीलाल कृत भालोचना पाठ भी है।

१०८८ प्रति सद २ । पत्र स० ७ । ले० काल स० १६५४ सात्रन बुदी २ । वे० स० १६४१ । ट

```
६६ ] [ वर्षे एवं स्थवार शास्त्र
```

रैं?०६८ सामाविकारमाया—जनवण्य कावका। पण में २ केवा १२ ×९ इवा वापा⊷ क्रियो क्वा विकर-चन (रंजल ×ाने कर्स सं ११६७ | दुर्स । वे सं ७ | इस स्थार ।

रेशः प्रतिस २ । पत्र नं ४०। ने कम्म नं १९३६ । ते नं ७८१ । का प्रमार ।

१२११ प्रतिस ३।'पचर्च४६। ने नक्ष×। वे तं ७ र∫ प्रभाषार।

रेप्टर-प्रदिम शांचवर्तप्रशाने कल्र×।वे ते ७ शास्त्रक्तरः;

रैरेरेडे प्रति सः । वयसं २२। में कामार्ग १८७१। के संबद्धा का सम्बद्धार । विकेत-भी केमरमान वोता ने कम्पूर ने प्रतिक्षित हो थी।

१२१४ अधिक ६ । पत्र सं १९। में कल्य मं १८७४ कक्कुछ पुत्री ६। के मं १ १। ख सम्बद्धाः

१२१८ प्रति सं ७ । वस स ४६ । में फल मं १६९१ सलोब कुरी । वे सं ६६ । स

मच्चार ।

१२१६ सामाविकमाठमापा— या जी विकासकार | पर्वर्ष ६४ । या ११४४ इका जाना— हिनो । विपर–सर्वारः सक्त जै १ ६२ | के कक्त × | पूर्णा देशं करें। व्यवस्थारः

रिर्क प्रतिस् २ । पत्र वं कराने कलानं १ ८१ सन्त कुणै १३ । वै वं करिः।

च जनार। १९१८ सामाविकायाः आंचा ‴ायत् सं ४० । शा १९८५ स्तः । बसरा-हिमी वसः । वियस-सर्गारं कला ≿ार्थं तका स्टेडक्ट लोडकुषी २ । छुन्। हे सं १९८ । छुन्। समार।

विकेश-स्वयुर ने महाराजा वर्षमञ्जूनों के बायनकाल ने बड़ी नैएकालर उरानण्ड वर्ते वे प्रतिनिधि भी थी।

सरबाद)

्रश्**ट म**दिस २ | पदर्व १ । ने का**वर्त १४४ वैदाल पूरी** ३। ने वं ७०८ । प

विमेद----महाला छानतवात कार बाते ने अतिबिधि की नी। तंत्रत प्रवण अवत क्षाचा ना भवें दिया

हुमाहै। १२२ सम्मानिकशास्त्रमाणार्थान्यस्यं २ से काशा ११⁹४२ समा नापानीर्याः नियम-वर्गारं समा×ान्यस्यान्यस्यान्यस्य

१६५१ प्रतिसं २ । वस्तं ६ । से वस्त ८ । वे नं १६ । वास्त्रवार ।

१९६९, प्रति सः है। कर वं ११। वं वक्त ×ा स्वृत्ति (वे सं ४०१। के बचार । १९६६, सामाविकतारुमाया -----। पत्र वं ६७। साः १८८६ स्ताः। मरान-विकी (हुवारी)

विका-पर्न । रमभाराम × 1 ने माल के १७६३ मेनतिर भूगी । वे ते ११ । मा प्रचार ।

धर्म एव पाचार शास्त्र

१२२५ सारमत्था - नुसुभद्र । पण गर १५ । धा 📣 🖒 🖼 । भएम-गम्बर । विषय-पर्मे । रक मात्र । १४० मात्र मुरू १६०७ गोष यूनी ४ । गः मठ ४४६ । झ नाह्मर ।

रिरोप-मन्त्रामार्प धर्मम द में निष्य बहाभाक मोतम न याथ मी प्रतिनिधि सम्यापी भी ।

रम्बप्र साथपथ्यम होहा—सुनि शर्मासह । पत्र म० ६ । मा० १०३ ८८३ इ**छ** । भागा-प्रप्रथ छ । रियय-मामार नाम्य । २० मानः । ने० नानः । य० ग० १०१ । प्रयो । पर गानाः ।

विभेष-प्रति यति प्रापान है।

१२२६, सिद्धों का स्वरूप । पत्र मार्था । धार्थ हे इहा । नाता-हिन्दा । तिपय-पर्ध । "० नान । तल बान (। पूर्ण । वे० मे० ६४४ । र भरतार ।

१२२७. मुत्रष्टि नर्शिणीभाषा--देवचन्द्र । एव न० ४०४ । या० १४०५ दे इद्र । नापा-ति री । शिगय-धर्म । राज्यात सक्ष्रदर्भ सारामा सूदी ११ । सेव नात संग्रेट्ट शालास सूरी । पूर्ण । रेग्स १ ठ० ०००। प्र भण्या ।

विभेष-पा तम पत्र पटा ह्या है।

१२२६ प्रति सद २ । पण स० ६० । स० मान १ । नेत सत ६६४ । प्रा स्पर ।

१००६ प्रति स्व ३ । पत्र ग० ६०१ । स. मान ग० १६४४ । य० ग० =११ । स राजार । १०३० प्रति स्०४। पत्र मत ३६१। स- मात्र मः १८६३। येः मः ६०। मा भण्या।

पिणेप-पानान मार न प्रतिनिधि की भी।

रच्देर प्रति संट ४ । पत्र सर १०४ स १२३ । तेर बातः । सपूर्ण । येर सर १२७ । त्र सप्तार !

४२३२. प्रति सर ६। पत्र ग० १८६। मे० गाप्त , । पे० ग० १२६। घ नण्या।

नागर।

निर्मेष-- प्रतिया गा मिश्रम है।

१२-२४ प्रति स० म । पत्र सं० ४०० । स० सास सः १६६० गानिय सुदी ४ । ते० स = ६६ । ह भवद्या ।

१२३५ प्रति मट ६। पत्र मा २०० । तक बान ा प्रपूर्ण । वेक सक ७२२ । च भण्डा ।

१२३३ प्रति सद छ । या ग० १८१ । त० राम ग० १८६८ प्रामीत मुनी ६ । वै० मः ६६८ । र

१२३६ प्रति स० १०। पत्र स० ८०। में गाल स० १६४६ चैन बुदी मा ये गा ११। ज भण्डार ।

१२३७ प्रति म० ११ । पत्र म० १३४ । ते० नात्र म० १८३६ फागुए। बुदी ८ । ते० न० ८६ । स् भण्डार ।

१२३८ सुदृष्टितर्गिग्गीभाषा "। पत्र ग० ११ त ४७ । प्रा० १२३८७३ इन्न । नाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । २० काल 🗡 । ले० वान 🗸 । प्रपूर्ण । वै० स० ८६७ । 🕏 भण्डार ।

ि पर्य व्यव प्राचार गरून

£=]

१२३६, मोर्जातरपद्मीसी--मागीरम् । पत्र सं या वा ४,×४३ रम् । वाला-स्टिनी । विषय-थर्म। र प्रतासं १ ६१ अपैक सदी १४ । ते चन्त ×ावे सं १४० । का बच्चार ।

१०४० साम्बद्धारयामाचनावर्यम-पं सदासम्ब । पत्र नं ४६। या १९८४ इक्ष । नता-हिनी! विका-वर्गार्थशास ×ावे वाल ापूर्णावी सं ७२६ व्यालमार।

१९४१ प्रक्रियों । तम के द्रशानि कमा ८। वे ते १ । क्राभण्यार। १२४२, प्रतिसक्दे। बचनं १७ (के मूलनं १६१० सलस्य बुधि ११) वे न १ । हि

BEST I

रिमेप---सबाई श्रम्पुर में बलेबीलाम पांच्या ने कार्या हैं अधिर में प्रतिनिधि की वी ।

१२४३ सित्सा अर्थानम नं ६१ ने ६६ । में नरू सं १६६० नाम सूमी २ । नरूसी ∤ में १३ । इंट लगार ।

विमेप--- बारुव के ३ पन नहीं है। कुचरनाल पंच्या ने चारनु में जीतिलिपि नी थी।

१२४४ सोबद्धारक्याचना व्य दृश्यकृत् वर्षे वर्षेत्र-पः नशुमुखः। पत्र नः ११४। वास्य १. दे र इस बारा-निनो हिस्स-पर्ने । एं जान 🔀 के बान ने १६४१ नेपनि नुग्ने १३ (पूर्व । व सं १८। । सन्दर्भ

१९४७ स्थापनानिर्देश ""। पत्र सं ६ । सा १९४६ रजः धारा-नरहतः नियस-मर्गः र

रात । ने यल ⋉ । दूर्ती। वे बेट । क्ष अच्छार ।

विमेश-विकारतनवीधर के अवन बांड का ब्यान क्यान है। क्रियो धीका विका है।

१२५६ स्टाब्स्यवाट----। वन में १ । या ४×६६ इस । भारा-नाइत संस्था। विवय-धर्म ।

र गला । में नात्र × । बर्खाने ने ६६ । का भणार । १९४४ स्वाप्र्यास्ताहमार्गाणाणाः । तत्र मं ७ । या ११२८ - इत्र । मारा-हिनी । शित्र-

नर्रः तान 🗡 । ने वाल 🗙 । तुर्गा । है वं वप्टरे । का भनार ।

१२४६, शिक्कान्तवर्धीरवैरासाचा। वन सं १६। वा ११ । इस । नावा-वाहन । स्वित-रात्र ⊁ाने राम ≾ापूर्ण । वे ते २२१ । वा कसार । कर्ज ।

१२४६. दुवहायसरिवीयायवाय-मान्यक्ष्यम् । यत्र नं ६ । धारा-देखी । विरय-यत्र । र ाने राजनं tele । पूर्णा वे नं बहर । का भगार ।

विकेत-व्यासा पूर्णाचन्द्र में अतिनिधि की की ।

विषय--अध्यात्म एवं योगशास्त्र

१२४८ स्त्रध्यास्मतर्गिणी—सोमदेय । पत्र स०१०। स्ना०११४४३ दञ्च । भाषा—सस्तृत । विषय— प्रध्याम । र० तल 🗴 । स० वाल 🔀 । पूर्ण । ये० ग० २० । क भण्डार ।

> १२४१ प्रति स० २। पन म • ६। ते० काल सं० १६३७ भादवा बुदी ६। ते० स० ४। क भण्डार। विशेष-- ऊपर नीचे तथा पत्र वे दोना ब्रोर मस्यत में टीना लिपी हुई है।

१२४२ प्रति २०३ । पत्र म० ६ । मेर नाल मर १६३ मापाढ युरी १० । वे• सर ५२ । ज नण्णार ।

निभेष-पति संस्कृत दोता महित है। वियुध पत्तेलाल ने प्रतिनिधि की थी।

१२४३. ध्रभ्यात्मपत्र---जयचन्द ख्रावडा । पत्र मः ७ । मा० १४४ दख्र । भाषा-हिन्दी (गद्य) । ह बात १४वी शताब्दी । ले० काल ४ । पूर्मा । वे० स० १७ । क्र भण्डार ।

१२४४ अध्यात्मवत्तीसी—वनारसीटास । पत्र म०२। आ० ६×४ दआ । भाषा—हिन्दी (पष्य)। विषय–प्रध्यात्म । र० कान १७नी बताजी । ले० नाल ४ । पूर्ण । वे० म० ४३६६ । स्त्र भण्डार ।

१२४४ अध्यातम वारहस्र इी—किय मृरत । पत्र मा १५ । आ० ५६ ४४ उखा । भाषा-हिन्दी (पदा) । विषय-प्राप्तात । राज्ञात १७वी शताली । त्र कात ४ । पूर्णा । वे० मा० ६ । छ भण्डार ।

१२४६ श्रष्टपाहुड् —कुन्द्कुन्दाचार्य। पत्र स०१० मे २७। धा०१०×७ डचा। भाषा-प्रापृत । विषय—अध्यातम । र०वाल ४ । ले०काल ४ । अपूर्ण । व० ग०१०२३ । श्र भण्डार ।

विशेष--प्रति जीर्ग है। १ ग ६ तथा २४-२५वा पत्र नही है।

१२४७ प्रति स० २ । पत्र ग० ४८ । ले० काल म० १६४३ । वे० म० ७ । क भण्डार ।

१२४८ म्बप्रशाहुहभाषा—जयचन्द्र छ।यड़ा । पत्र म० ४३० । या० १२४७ है उझ । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—मध्यारम । र० काल स० १८६७ भादवा मुदी १३ । वे० वाच ४ । पूर्ण । ये० स० १३ । क भण्डार ।

विशेष---मूल ग्रन्थकार भ्रानार्य कुन्दकुद ह ।

१२४६ प्रतिसं≎ २ । पत्र स०१७ मे २४६ । ले० काल 🗴 । क्रपूर्गा । वे० म०१४ । क भण्डार ।

१२६० प्रति स० ३ । पत्र स० १२६ । ले० नाय > । । ने० स० १५ । क भण्डार ।

१२६१ प्रति स० ४। पन स० १८७। ल० गाल 🔀 । वे० स० १६। क भण्डार।

१२६२ प्रति स० ४ । पत्र म० ३३४ । त० नाल स० १६२६ । ये० स० १ । क भण्डार ।

१२६३ प्रति स०६। पत्र स०४४१। ल०काल स०१६४३। वे०स०२। क भण्डार।

भ्रम्यास्य एव यागरप्रश्च

१२६४ प्रतिस छ।परनं १६१।में फल×ा वे नं ३।स अस्तर।

१०६४ प्रतिस सायान १९६१ व कासने १९६६ सालोग सुरी १४ । इ

बन्दार ।

`1 T

निक्केच कर पन प्राचीन प्रति है। में १२६ पन किर निमाने की डै लघा १२४ न १८६ ठक के पन निवीक्षण प्रति के डैं।

१०६६ प्रक्तिस ६। पदनं २४६। शंथाननं १६५१ सामास पुरी १४। वे नं ६६। प्र

असार ।

रैन्बिक प्रदिक्त है। यस में १८७ जिंगल ४ | वे वं १ | चामनार | १न्बेस-प्रदिक्त १९। यस मंदर्श विकास संह नामन बुद्धी १ । वे संहर | प्रकार |

१०६६. कासम्बन्धन-भनारक्षेत्रासः। यदं गं १। सः $-e^{-i \pi}$ प्रश्नः । भना-निर्णा (ग्यः) । दिक्क-सम्बन्धितः हिर्माश्रम् । ते नामः \times । ते नामः \times । ते ने १२७६ । धः क्वारः।

१८०० आस्मारवीय-कुमारवर्षि वर्ष १६।वा०१ १८४_६ रम् । त्राना-संस्टा तिपर-क्रमारव : वर्ष कर्म / १९वै | के ते २१ | क्रा सवार |

१३७ । प्रतिसः २ । पत्र नं १४ । ने नक्त X । दे नं ६ (६) स्ट्रक्त सरा

१ ७२. बाह्यसञ्जीयनकारण ""।पत्र गं २७ । धा १ X४^५ तब । बाहा-बाह्य सः ।विपर-सम्बद्धाः । र कल X | के काल X | पूर्ण । वे र्ष १ ४४ । बहु सम्बद्धाः ।

१२७६ प्रतिस्त । पण्नै ३१। से तल ×। व्यूनी वे वं १९।४ भनार।

१०६४ ज्यासमेदाणनकान्य जात्रमुग्लानम् नं २ने ६ । या १ ४८_{५ वस} । गण-संस्तुत । पिपस-सम्बन्धारं कर्मा । वे तमा ४ । ज्याने । वे नं १६ ७ । का स्थार ।

१२०८ साम्बरकारम-पीपणण कम्मतीयात । या ने ११। या १ १/४६ इस्र । महा-किसी (स्त्र) | निरम-सभ्याप्य । र राज ८ । वे राज ने १ ४ समूब दुर्शे । वे सं (स्वाप्तार ।

विभेर-पुण्यास्य से वदाराम समग्रीराण ने अन्त्रज्ञन चैत्रातमः में प्रतिनिधि गी बी (

सम्बन्धः । निवित्तं उद्योगः (वी) थीः वीदा चन्युष अनेमः निवित्ती ।

१०७६ भ्रास्तानुसासन—शुक्कमत्राचार्थः। पत्र तः ४२ । थाः १४६ इकः । भारा-नेतरणः । पत्रद-मानान्यः र वात्र ४ । तः कम्प ४ । ते नं २२६९ । पूर्णः। जीर्लाः का नच्यारः।

भण्डार ।

१२७० प्रति स० २ । पत्र स० ७४ । ने० काल स० १५६४ ग्रापाट बुदी = । वे० स० २६६ । स्र भण्डार । १२७८ प्रति सट ३ । पत्र स० २७ । ने० कान स० १८६० सावगा नुदी ४ । वे० स० ३१५ । स्र भण्डार । १२७६ प्रति सद ४ | पत्र मं० ३१ । ले० काल 🗙 । वे० स० १२६६ । श्रु भण्डार । विशेष--प्रति जीर्ग एव प्राचीन है। ४२८० प्रति सट ४ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स७ २७० । व्य भण्डार । १२५१ प्रति स्८६ । पत्र ना ३६ । ले० काल 🗸 । ने० स० ७६२ । प्र भण्डार । १२६२ प्रति स० ७। पत्र स० २५। ने० काल 🗙 । ते० स० ७६३। स्त्र भण्डार । १२८३ प्रति स० ८ । पत्र न० २७ । ले० काल 🔀 । प्रपूर्ग । वे० न० २०८६ । ऋ मण्डार १२८४ प्रति स०६। पत्र म० १०७। ने० कान म० १६४०। बे० म० ४७। क भण्डार। १२८५ प्रति सद १८। पत्र स० ४१। ले० काल स० १८८८। वे० स० ४६। क नण्डार। १२८६ प्रति स० ११ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । ने० स० १५ । क अण्डार । १२८७ प्रतिस्ट १२ । पत्र स० ५३ । ले० काल स० १८७२ चैत सुदी ८ । वै० स० ५३ । छ भण्डार । विशेष--हिन्दी ग्रर्थ सहित है। पहिले सस्कृत काहिन्दी प्रर्थ तथा फिर उसका भावार्थ भी दिया हुग्रा है। १२८८ प्रति स० १३। पत्र स० २३। ले० काल स० १७३० भादवा मुदी १२। वे० स० ५८। इ मण्डार | विषोप--पन्नालाल बाकलीयान ने प्रतिलिपि की थी। १२८६ प्रतिस्०१४ । पत्र म०५६ । ले० काल स० १६७० फाग्रुन मुदी २ । वे० स० २६ । च भण्डार । विशेष--रिहतगपुर निवासी चीघरी सोहल न प्रतिलिपि करवायी थी। १२६० प्रति स० १४ । पत्र स० ५६ । ले० काल स० १६६५ मगसिर मुदी ५ । वे० स० २२० । इर 40512 1 विशेष--मडलाचार्य धर्मचद्भ ने शासनवाल मे प्रतिलिपि की गयी थी। ८२६१ आत्मानुशासनटीका—प्रभाचन्द्राचार्य। पत्र स० ५७। घा० ११×५ उद्ध । भाषा-सम्बन्। विषय-ग्रज्यात्म । र० काल 🗙 । ने० काल म० १८८२ फाग्रुग्ग मुदी १० । पूर्ग्ग । वे० स० २७ । च भण्डार । १२६२ प्रतिस०२ । पप्रस०१०३ । ले० काल स०१६०१ । वे० स्०४ ६ । क भण्डार । १२६३ प्रति सः ३ । पत्र सः ८८। ले० कार मः० १६८८ मगमिर सुदी १४। ने० सः० ६३। छ विमय---कुन्यावती नगर में अविधिति 🚮 ।

१२२४ प्रतिस्रक्षावणसंध्ये। ते तलानं १२२ वैयल्प बुरी ६। ४ सं १ । भ ज्यारा

निभय-सवाई वनपुर नै प्रतिविधि 💤 🛊

रे-६४ प्रति स 🖈 । यस वी ११ । ते वस्तार्ग १६९६ पायात मूर्या १ : वे मं ७१ । स्पिन्-मात्र शिक्षक प्रकास वर्ष वीभीय ने सन्य वी प्रतिविधि वरवार्थ ।

१९८६ चारसायुरासमयापा—पैकडोडरसका। पर्वर्षक। । या १४४० इका बरमा-हिर्ण (प्रच) निपर-स्थानम् । र तुकार । में तुकार से १६ । प्रणी १ वे १७१) व्याचनार।

्रिक् प्रति सक् २ । पत्र सं १ ६ । भी नाम सं १६ । १३ माँ १६६ । आर सम्बन्धाः । विभेद—स्थि सुमार है

१२६ म्हानि में १ । जब में १४० । से जम्म ≻ा दें में १६ । का कपार । १२६६ महिन्दें भू । कार्य रे १२६ । से जब्द से १९६१ । दें से १४६ । का सम्बार । १३ महिन्द का अपना से १३६ । संजन्म में १२६ । वे से १ । का सम्बार । सिन्द —सम्बन्धनम्म में इस सेवार नीता मो है ।

१६१ स्रिप्त के प्रणासंदेश प्रशास करते हुए । वे संदर्शक लखार। १३ स्रिप्त के प्रणासंदर्शने जलावंद शरू वर्गिक लुग्ने स्राप्त

क्यार ।

MARKET L

१६ ६ प्रति कें दापप्र ये कालंबलाप्रालपूर्वार्थलं १ वं १६ । बाज्यस्रा १६ ४ प्रति संदायणां १ वे १९ १। लाला×ायपूर्वार्थलं १ वं १६ (इ.सम्बर्गः १९७४ प्रति क्षः १ । प्रयानं १ । केंबला×ायपूर्वार्थलं १९०० व्यापस्रा १६ प्रतिका ११। यस्त्र वं १६९। लालानं १६६६ व्यक्ति पूर्वार्थनं राक

नगरार । विदेश—सर्वि संबोधिक है ।

हर थ. प्रतिसा देश वज सं देश ति जला ४ । शहली ते सं देश हा लगार।
१३ थ. प्रतिसा देश वज सं देश ने देश ते जला × । शहली ते सं ६ । इन लगार।
१३ इ. प्रतिसा देश । जल सं देश देश तो जाप ४ । शहली ते सं ६६३ वा समार।
१३६ प्रतिसाँ देश । जल संदर्शना ने जला संदर्शना ति साहली । सहसी ।

१ वर्षः प्रक्रियः १६ । पर्याः क्षेत्रं पार्ञानपूर्धः वे संदेशः व्यवस्थारः १३६६ः स्ट्रियः १० । पर्यास्थाने पर्यास्थानक वृद्धारः विस्ति रहा ज

```
विशेष---रायचन्द साहवाढ ने म्त्राठनार्थ प्रतिलिपि की थी।
```

१३१३ प्रति स०१८ । पत्र स०१४ । ले० काल 🔀 । श्रपूर्ण । वै० स०२१२४ । ट भण्डार ।

विशेष---१४ से मागे पत्र नही है।

१३१४ स्त्राध्यात्मिकनाथा--भ०लद्मीचन्द्र । पत्र स०६। स्रा०१०४४ इझा । भाषा-स्रपन्न श । विषय-प्रभ्यातम । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वै० स०१२४ । स्त्र भण्डार ।

१३१४ कार्त्तिकेयानुप्रेद्धा—स्वामी कार्त्तिकेय। पत्र म०२४। ग्रा०१२×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-प्रध्यातम । र० काल × । ले० काल म० ४६०४। पूर्ण । वे० म०२६१। स्र भण्डार ।

१३१६ प्रति स०२। पत्र स०३६। ने० काल ४। वै० म०६२८। ऋ भण्डार।

विगेप---मस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये ह । १८६ गाथायें हैं ।

१३१७ प्रति स० ३ । पत्र म० ३३ । ले॰ काल × । वे० स० ६१४ । ऋ मण्डार । व

विशेष--- २८३ गायायें है।

१३१८ प्रति स० ४। पत्र स० ६०। ले० काल ४। वे० स० ८४४। क भण्डार।

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हैं।

१३१६ प्रति स० ४ । पत्र स० ४८ । ने० काल म० १८८८ । वे० स० ८४४ । क भण्डार ।

विशेष---मस्कृत मे पर्यायवाची शब्द है ।

१३२८ प्रति स०६। पत्र म०२०। ले० काल 🔀 । भपूर्ण। वे० म०३१। त भण्डार।

१३२१ प्रति स० ७। पत्र स० ३४। ले० काल 🔀 । प्रपूर्ण। वै० स० ११८। रू भण्डार ।

१३२२ प्रति सट = । पत्र म० ३७। ले० नाल म० १६४३ सावरा मुदी ४। वै० म० ११६ । इ

भैग्डार ।

१-२३ प्रति सट ६ । पत्र स० २६ ने ७४ । ने० नान स० १६६६ }। ग्रपूर्ग । ने० स० ११७ । ङ

भग्डार ।

१३२४ प्रिनि स०१०। पत्र म०४०। मै० काल स०१८२४ पौप बुदी १०। वे० मं० ११६। इ

भग्डा- ।

बिधय-हिन्दी श्रर्थ भी है। मुनि रूपचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

रंच्य प्रति म० १₹ । पत्र म० २६ । ले० काल म० १६३६ । वे० स० ४३७ । च भण्डार ।

१३२६. प्रति सट १२ । पत्र स० २३ । ले० काल ४ । प्रपूर्णी । ते० स० ४३६ । च भण्डार ।

१८२७ प्रति स०१२ । पत्र स०३६ । ले० काल स०१८६६ सावरण सुदी ६ । वे० स० ४३६ । च

भग्डार ।

१ ५२० प्रति स० १३ । पत्र स० १६ । ले० बाल स० १६२० मात्रसा मुदी ८ । बे० स० ८४० । च

भग्दार ।

```
t ¥ ]
                                                               व्यवस्थान्य व्यवस्थान्त्र
         १६६६. प्रति स १४ । यह में दहा के अन्त में १६६६ । के से ८/२ । व्याचनाता ।
         विकेश-जंस्तुत में वर्शवराची वाज दिये हुने है ।
         १६३ प्रतिम १४ । पन ने प्रदान नाम ने १ वर मारबायुरी १ । वे सं । इद
अस्टार ।
         १३२१ प्रति में १६। वर्ष ६३। व वाल 🗙 । वे वं रू ७। अस्तरारः।
         वियेष---नेन्द्रुत ने दिवाल दिया हुआ है।
         १३३३ प्रतिस १७ | वथ में १९ | ने पाल ४ । ध्युल । वे ने १६ | कुल्लार ।
         १३३३ प्रतिसं रेक। यस नं ६। के शास्त्र । के सं ६२६। का जमार ।
         १३३४ प्रतिस १६। प्रते १ । में कल । ब्युव्ये । में २ ६१। ट व्यक्ता ।
         रियोज---११ ने का स्थार ने साथे के पण नहीं हैं।
         १६६≻ प्रतिक् ः प्रथम ३ ने ६८। ने मान् ८। सपूर्वा ६ नं ९ ६। इ. समार।
         वियेत-अर्थि नेस्तृत दीका नवित्त है ।
         १६६६ कार्विकेकाल्पेकारीका """ पर मं १४१ था १ ६८ वक्षा भाषा नंतरत । विवद-
ग्रज्ञण्यार कार∡ाने राग∡ावपर्याते ते ३६) वायभारा
         १६६७, प्रतिसः । पत्र ने ६१ में ११ । के पत्र × । धन्यों । दे ते ११ । प्राप्तार ।
         १३१८. व्यक्तिकमानुमेकाटीका—ग्रुमकानु (तम व १ १ वर ११३×१ इक् । क्रमा-मेन्द्रग ।
विका-स्थानकार नाम संदेश भागवधीर । में नाम नं १ १४ (वर्गा के नं ४३) स्थानकार।
          १६३६ इति सं २ । दरने ४६ । के नाल ४ । वे नं ११५ । कार्लाप्ट कमार ।
          शोधः प्रतिसः के। कार्तशेशः न पना≾। क्वलः । देनं ४४१। चथकार ।
          रुप्रश्र प्रतिस्रो ४ । यद सं ११ ते १७२ । से यल्प नं १ ६ । सपूर्ता (वे इं ४४६ । प
क्कार ।
          १३६५ प्रतिसः ४ । यत्र सं २१ । वे यस्त पं १ २२ वल्लोब तूरी १२ । वे सं ७६ । वि
APRIX I
          विकेर---नवाई बसपुर ने मानोर्देनह के धाननवाल ने पत्रप्राप्त चेत्रवालय के वे चोजवाय के निज
राजक्य ने प्रतिसिक्त की वी ।
          १३४३ प्रतिस ६ । यम सं २४६। वे ताल सं १ ६६ बायान पूर्व । वे सं ६ ६। म
```

१९४४: कार्षिकेचानुकंकासायाः—स्थयनम् धावकः । पत्र ते १३ । या ११४ प्रता नागान् क्रियो (क्रा) (विषक-सम्पाद) र याजा तः १९६ सम्बद्धः कृषि १। ते याजा तं १९८ । दुर्गः । ते त

सन्दार ।

र्था क समार ।

१३४४ प्रतिस०२ । पत्र स०२ ५१ । ले० काल 🗙 । वे० स०२४६ । स्व भण्डार ।

१३४६ प्रति स०३ । पत्र म०१७६ । ले० काल स०१८८३ । वे० म०६५ । ग मण्डार ।

विशेप--कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी।

१३४७ प्रति सं०४। पत्र स०१०६। ले० काल 🗙 । अपूर्ण। वे० स०१२०। व्ह भण्डार।

१२४८ प्रति स० ४। पत्र स० १२६। ले० काल स० १८८४। वै० स० १२१। ह भण्डार।

१२४६ कुशलाणुवधिश्रवसुत्रयण । पत्र स० ८ । म्रा० १०×४ इख । भाषा–प्राकृत । विषय– श्रम्यात्म | र० काल 🔀 । ले० काल 🔀 । वै० स० १६५३ | ट भण्डार |

विशेष-प्रति हिन्दी टक्वा टीका सहित है ।

इति कुशलागुविधग्रञ्मुयण समत्त । इति श्री चतुशरण टवार्थ ।

इमके मितिरिक्त राजसुन्दर तथा विजयदान सूरि विरचित ऋषमदेव स्तुतिया भौर हैं।

१३४०. चक्रवर्त्तिकीबारहभावना । पत्र स०४ । ग्रा०१०६ 🖂 । भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-म्रव्यातम । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं० ५४० । च मण्डार ।

१३५१ प्रति म०२ । पत्र म०३ । ले० काल 🗙 । वे० स०५४१ । च भण्डार ।

१३४२. चतुर्विघष्यान । पत्र स० २। मा० १०×४६ इखा। भाषा-सम्बत्त । विषय-योग।

र० काल × । ले० काल × । पूर्ता । वे० स० १५१ । मा मण्डार ।

१३५३ चिद्विलास—दीपचन्द्र कासलीवाल । पत्र स०४३ । झा० १२×६ डञ्च । भाषा-हिन्दी (गद्य) विषय-मध्यातम । र० काल 🗙 । ले० काल स० १७७६ । पूर्सा । वे० स० २१ । घ सण्डार ।

१३४४ जोगीरासो—जिनदास । पत्र स०२। झा०१०५ैं,४४९ डऋा। भाषा–हिन्दी (पद्य) । विषय– भ्रघ्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६१ । च भण्डार ।

१३४४ ज्ञानदर्पण-साह दीपचन्द् । पत्र स० ४० । म्रा० १२६×४६ इख । भाषा-हिन्दी (पद्य) ।

विषय-प्रघ्यातम् । र० काल 🗙 । वे० काल 🗙 । वे० म० २२६ । क भण्डार ।

१३४६ प्रतिस०२।पत्र म०२५। ले० काल स०१८६४ सायरण सुदी ११ । वे० स० ३०। घ भण्डार ।

विसेष—-महात्मा उम्मेद ने प्रतिलिपि की थी । प्रति दीवान भ्रमरचन्दजी के मन्दिर में विराजमान की गई।

१३४७.झानबावनी—चनारसीदास । पत्र म० १० । झा० ११≻५३ ँ दख । भाषा–हिन्दी । विषय– भव्याम । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्यो । वे० स० ५३१ । उट मण्डार ।

१३४⊏ ज्ञानमार—मुनि पद्मसिंह । पत्र स० १२ । ग्रा० १०३ै×१३ डऋ । ¦मापा–प्राकृत । विषय– मध्यात्म । र० काल स० १०=६ सावरा सुदी १ । ले॰ काल ४ । पूर्या । वे॰ स० २१= । ङ भण्डार ।

```
₹0६ ]
                                                                           िमस पर्व भाषार शास्त्र
           विकेश--- एक्यामाला काली काला जिल्ला क्यार है----
                 तिरि विश्वनस्तामाने स्वक्षमध्यती क्ष व्यव श्वत्रमारोह
                 बारएक्टिय सम्बीए धंगक्तनप्रेन्नपूर्य नेर्य ।।
           १३४६ ब्रामार्लय-ब्रामचन्द्राचान । पत्र वं १ ६ । आ १२ ×६ ६म । मना-बल्दर ।
```

रियर-नोनार राज×ाने राजार्थ १९७६ नेयानदी १४ । पूर्णाके वं र७४ । का कस्तार । विकेश-विराट नवर में थी। चपुरवास ने क्या की प्रतिनिधि करवानी थी।

१३६ प्रतिसं २ । पंतरं १ ६ । ते सक्तानं १६६६ मारमा कृति १६ । वे ४२ । व्य तकार ।

१६६१ प्रतिका ३ । पत्र सं २ ७ । के राजा सं १६४९ बीच लूगी ६ । के सं २२ । क मनार ।

१३६६ प्रतिस ४ । वन सं २६ । के बाल × । सपुर्ली के सं २२१ | का स्वयार । १३६३ असिसं क्षापण सं १ । में काल ×ाके का २०२ । का क्यारा

१२६४ अधिस ६। यम के २६४। में याना का १ ३६ शायान बुदों ६। में से २२४। क बन्धार । विकेच-अधिक विकार को रोका बारी है।

> १३६৮ ब्रतिस ७ । प्रवर्ध १ ते १। ते तस्य × । ब्रनुर्या वे सं ६२ । सामन्यार । विशेष-आएम के ३ पत्र सदी है।

१३६६ ब्रक्तिको सः।पन्ते १३१।के नला×।वे सं ३२।चथच्यारः। विकेष---अदि आयोग है ।

१६६७ ब्रह्मिस ६,|वस सं १७६ के २ १। ने पास × । सपूर्वा के सं २२६ | कंपनार। १३६८, ब्रिट स १०।यम सं १६०। में मान ×ामे सं ९२४ | अपूर्ण | क्र बच्चार | विकेश-अधिक पन गढ़ी है । दिन्दी कीमा सक्ति है ।

रहरू ब्रक्तिस रहायमधी ए देशी पाल ×ांने वी श्रहाबा क्याए। रहेका प्रतिर्श्त रेश । पर श्री अपनी काथ × । मध्यों । वे थे १२४ । का क्यार । १३७१ अस्तिरी० १३ । पद सं १६ । से साम × । यत्रजी । वे स्वर । जा बन्दार ।

विकेश-सामाधाय सर्विकार एक है। रक्कि अधि सं रेक्स पण सं १४२। में समार्थ १ १। वे सं २२७। का अध्यार। रक्षके प्रतिसं १४ । यम क्षं १४ । के नाम मं १६४० सालोग कृती । के सं १९४ ।

≝ मन्द्रार । क्रिकेट----सामीयामा वीक्ष ने स्रतिसिक्षि की की । १३७४ प्रति स०१६ । पत्र स०१३५ । ले० काल × । वे० स०६५ । छ भण्डार । विशेष—प्रति प्राचीन है तथा सस्कृत मे सकेत भी दिये हैं ।

१২৩৮ प्रतिस०१७ । पत्रस० १२ । ले० नाल स०१८८८ माघसुदी ५ । वे०स०२८२ । হ্র্ भण्डार।

विशेष-बारहं भविना मात्र है।

१३७६ प्रतिस०१८ । पत्र म०६७ । ले० काल स० १४८१ फाग्रुए। सुदी १ । वैठ'स० २४ । ज मण्डार ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवत् १५८१ वर्षे फाग्रुग् सुदी १ बुधवार दिने । ग्रथ श्रीमूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुर्त्व-कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनिन्दिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीग्रुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे जितेन्द्रिय भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे सकलिव्यानिधानयमस्वाध्यायध्यानतत्परसकलमुनिजनमध्यलब्धप्रतिष्ठाभट्टारकश्रीप्रभावन्द्रदेवा । ग्रावैर गण् स्थानत् । कूरमवर्णे महाराजाधिराजपृथ्वीराजराज्ये खण्डेलवालान्वये समस्तगोठि पचायत शास्त्र ज्ञानार्णव लिखापित त्रैपनिक्रिया-वर्तनिवतबाइ धनाइयोग्र घटापित कर्मक्षयनिमित ।

१२७७ प्रति स०१६। पत्र स०११५। ले० काल ×।। वे० स०६०। मा भण्डार। १२७६ प्रति सं०२०। पत्र स०१०४। ले० काल ×। वे० स०१००। व्याभण्डार। १२७६ प्रति स०२१। पत्र स०३ से ७३। ले० काल स०१५०१ माघ बुदी ३। प्रपूर्ण। वे० स०१५३। व्याभण्डार।

विशेष--- ब्रह्मजिनदास ने श्री ग्रमरकीत्ति के लिए प्रतिलिपि की थी।

१३८० प्रति स०२०। पत्र स०१३८। ले० काल स०१७८८। वे० स०३७०। व्याभण्डार। १३८१ प्रति स०२३। पत्र स०२१। ले० काल स०१६४१। वे० स०१६६२। ट भण्डार। विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है.।

१३८२ प्रति स॰ २४। पत्र स॰ ६। ले॰ काल स॰ १६०१। अपूर्ण। वे॰ स॰ १६६३। ट भण्डार। विशेष—प्रति सस्कृत गद्य टीका सहित है।

१३⊏३ झानार्र्णयगद्यटीका—श्रुतसागर । पत्र स०१५ । ग्रा० ११×५ इश्रा । भाषा-सस्कृत । विषय-योग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६१६ । अप्र भण्डार ।

१३८४ प्रतिस०२ । पत्र म०१७ । ले० काल ४ । वे० स∙ २२४ । क भण्डार ।

^{१३}⊏४ प्रतिस**०३ । पत्र स०६ । ले० काल स० १**८२३ माघसुदी१० । वे०स० २२६ । क

१३≒६ प्रतिस∙ ४ । पत्र स०२ से ६ । ते० काल 🗙 । म्रपूर्सा वे० स०३१ । घमण्डार ।

```
रिवर्ग ] [ श्रून एवं स्थापार साथ
```

निमन—रवमानका बागी वामा निम्म प्रवार है— निर्दि विकासमध्यति वस्तवस्तानी बु वॉन बहुसलेह सामगतिब सामगीए संवक्तररीम्बर्ग नेर्स ॥

१९४६. क्वास्तर्वेष — सुरुषणुत्राभाग नेपत्र वं १ र । भा १२ ×६३ ६% । माना-नीपुट । स्पिर-नीप १९ कमा × । में पण्य से १६७६ वेष वृद्ध १४ । पूर्व । वे १ ४ । पूर्व समार ।

वियेश-वैशक नवर में भी चतुरवाल में धन्त की प्रतिनिधि करवानी भी।

१३६ प्रतिस्र्धे २ । पथलं १ ६ । के यक्तन ले १६६८ मारवानूमी १६ । वै में ४९ । अन्यारा अन्यारा

१६६६ प्रतिस ३।यम सं २ काले नाम सं १६४९ पीच नुर्मा १।वे वं २२ ।क मन्तर।

१६६६ प्रतिस धारण मं २६ कि नान×ाब्यूर्ण के तं २११। काम्पारः १६६६ प्रतिस्तर ≿ाण्याचे १ कि नान×ावे चं २११। काव्यपारः

्रवर आद्र छन्दारण हा व राम शाय च ररराक बरारा १३६४ प्रति छ दै। या वे २१४। के सम्बद्ध व देश के वर्ग १३४। क

मण्डार । विमेष-सन्तित्र सविकार की ग्रीका वहीं है ।

> १३६७ क्रमिस ७। याणे १ में ११ते याच्या । यहर्षः (वे इं ६२) सामस्याः । रिस्ति—जास्त्र वे ३ पत्र नही है।

१३६६ प्रतिनी सामाने १३१। ने मानामा वे ३२। व समारा

रिपेर-व्यक्ति जातील है। १९६७ अपिता ६। यस सं १०६ में १९६७ यात्र × स्थापनी हें सं १९६ । साम्प्रार । १९६८: अप्रितं १ त्यस सं १६० १० यात्र ४१० सं १९८ । स्थापनी सामगार ।

विभेग—सन्तिम पम नहीं है। हिन्दी हीमां सदित है। १३६६ अधिक सा विशेषण में १९१ में बाग ×३ में १२६। का सम्बन्ध।

देवेदे अपनेल हो। परंग र ६४० गण ×ाण्यूनी वे सं ११४। क्षणारी १६७ अदिना १० परंग प्रशास सम्बद्धी वे सं ११४। क्षणारी १६ र अदिना १६। परंग १३। से साम ×ाण्यूनी वे सं १९४। क्षणारी

दरेक्ट अभियोक देशा पत्र में प्रदेश में परवर्ग है हाते में दरवा बाममारा इस से अभियों देशा पत्र में में पाप में इस सम्मोस बुधे । हे में देशी

A state :

रिरोप-- प्रश्नामान वर्षिकार शक है।

श्रध्यातम एव योगशास्त्र]

१४८१ त्रयोधिशतिका । पत्र म०१३। झा० १०३४८६ इख्र । भाषा—सस्यृत । विषय—प्रध्यात्म । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्ण । वे० म०१४०। च भण्डार ।

१४०२ दर्शनपाहुडभाषा । पत्र स० २६। म्रा० १०३४ ८ ई इख । भाषा-हिदी (गद्य) । निषय-

विशेष--- प्रष्टपाहुड का एक भाग है।

१४०३ द्वाटशभावना राष्ट्रान्त । पत्र स०१। मा०१०४८६ इझा भाषा-गुजराती। त्रिषय-मध्यात्म । र० नात ४। ते० नात स०१७०७ वैद्यास बुदी १। वे० स०२२१७। स्त्र भण्डार।

विशेष--जालोर में श्री हसकुराल ने प्रतापकुराल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१४०४ द्वादशभावनाटीका । पत्र स० ६। मा० ११४८ इखा भाषा-हिदी । विषय-म्रध्यात्म । र० काल ४। नै० काल ४। म्रपूर्ण । वे० म० १६५५ । ट भण्डार ।

विणेय---कुन्दकुन्दाच।र्य कृत मूल गाथायें भी दी है !

१८०५ द्वादशानुप्रेत्ता । पत्र न०२०१ मा०१०३×४ इख्रा भाषा-प्राकृत । विषय-प्रध्यात्म । र०वाल × । न०काल × । मपूर्ण । वे० न०१६८५ । ट भण्डार ।

१४०६ द्वादशानुप्रेत्ता—सकलकीर्ति। पत्र स०४। ग्रा०१०३४५ इखा भाषा-सस्कृत। विषय-भष्यात्म। र०नाल ×। ले० काल ×। पूर्णा वि० स० द४। स्त्र भण्डार।

१४०७ द्वादणानुप्रेत्ता । पत्र ५० १। भा० १०×४५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रध्यात्म । र०काल ४। वे० काल ४। पूर्ण । वे० सण् ५४ । ऋ भण्डार ।

१४- प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ने० काल 🗙 । ने० म० १६१ । मा भण्डार ।

१४०६ द्वादशानुप्रेन्ता—कविछ्ता। पत्र स० ६३। मा० १२३/४४ इख्र । भाषा-हिन्दी (प्रय)। विषय-मध्यात्म। र० काल स० १६०७ भादवा बुदी १३। नै० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० ३६। क भण्डार।

१४१० द्वावशानुप्रेत्ता-साह आल् । पत्र मं० ८ । म्रा० ६६ ४४ ई डब्र । भाषा-हिन्दी । विषय-

१४११ द्वादशानुप्रेत्ता । पत्र स० १३ । म्रा० १०×५ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-मध्यात्म । र० काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे० स० ५२८ । स्व भण्डार ।

१४१२. प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल 🗙 । वे० स० ६३ । 👫 भण्डार ।

१४१३ पद्धतत्त्वधारणा । पत्र स० ७ । आ० ६३ \times ४ $\frac{2}{3}$ इक्क । भाषा—सम्मृत । विषय—योग) र० कान \times । ले० कान \times । पूर्ण । वे० स० २२३२ । क्रा भण्डार ।

किंद्र] [व्यथ्यान्य ग्रह थागरातात

१३८०, प्रति सः ४ । पत्र सं १ । ने कल्पल १०४६। बीटों । वे १९) क्र बचार । स्टिप---मोक्सलार में बार्यार्थ करवरीति के प्रियम पंत्रपारम में बीर्ततिक को थी ।

१३वस-प्रतिस ६। पत्र नं २ वे १२। न नल ×। बपूर्ण । वे ४ १२८। क जबार ।

१३८६ प्रति शुक्रकां प्रति में कल्प में १७०३ जारता। में सं २६ । इस्तारा निष्टेच—पै सम्बद्ध में प्रतिनिधि ती थी।

१३६० प्रतिसंद। पन नं १। ने पल 🗴 । वे नं १२१ । स्व बच्चार (

१३६१ क्रान्तरस्वरीका—र्यं श्रव विकास । पत्र नं २ ॥ । या १६४६ इस । यस्त-नैस्तर । विका-तीन । र सम्प्र । ने कल्य ४ । कृषि । वे ४२ । क्रान्यार ।

व—तीयः र नाग×।ने नाम×।नृत्वीने धं २२ । इस्त्राताः । विनेत—सन्तित्र पुन्तियां नित्य अध्ययः है ।

क्षेत्र पुरस्काशसमितिराज्यनेस्वरीशांत्रवारे एँ वर्णात्मस्य बाह्य रामा छतुत्र बाह्य देशर छत्तुनवस्य-रिरमरणक्षद्रविकास्य व्यक्तर्मे वं विकासमा वर्षाकारार्णामा बीकावरस्य वसार्थः ।

१३६७ प्रतिसं १। वन नं ११६। ने नान X । । वे वं २६८ । व्याच्यार ।

१६६६ क्षानस्थित्रीकासम्या—समित्रीस्त्रमासिः। पत्र शंहर । बा. ११४९ प्रकाणमा— दिन्दी (पत्र) । रिपक्-मीप । राज्यमानं १७६ क्षानीय पुरी १ । ते जलानं १७६ वेदाल मुरी १ । दुर्ण । वे.सं. १९४ । क्षानपार ।

११६५ कानाकोवधारा—जनवन्त्र कावदा । यन नं ५६६ । बा १६८७ एवा । धारा-स्निः (बच) दिरव-नोव । र नाम नं १ ६६ मान नुरी र । ने यान 🗸 । दुर्मा । वे भू १९६। क्र समार ।

११६४८ प्रतिक कायनम् ४६ । ने नाम x । ने नं १२४ (कामगार ।

१३६६ प्रतिसँ ३।वयमं ४२१। ने वसनं १ इनावस्युद्धीकः वे तं ४४।स समारः

विरोप-प्याद् विहानामार में गीनुमान की सेराता १४ माना १४मा वी वर्ष । बानुरानजी नाम में गीनपण भारता में प्रीतिविधि कराने चीचरियों के गीनपर में बहुत्या ।

्रदेशच्यानिर्माधः। स्वर्गधः ते नलः ∺ाते संदर्शक्यासार।

१६६६ अधि को का पर नं १ व से ११८ को नगर प्रायक्ति है वं ६६६ व्यवस्थाने १६६६ अधि सः 6 । पर नं १६१ तो परन नं १८११ वालोज सुधी । बहुनों को संदर्भ अस्त्र मन्त्ररा

विकेच-प्राप्तक के एक वन नहीं हैं।

१५० सम्बन्ध — । यम में १। या १८११ १४। साम-मंजून । रियम-समान्त । र बाम ४। ने बान में १ १ १९९० वे से ११ इस नगार । १४८१ त्रयोर्बिशतिका । पत्र म०१३। म्रा० १०३/४४३ डखा । शापा-संस्कृत । विषय-म्रध्यात्म । र०काल ४ । मे०काल ४ । पूर्श । वे० न०१४० । च भण्डार ।

१४०२ दर्शनपाहुद्वभाषा । पत्र स० २६। ग्रा० १०६४ ८ हु इख । भाषा–हिन्दी (गद्य) । विषय– श्रन्यात्म । र० काल \times । ते० काल \times । पूर्ण । वे० म० १८३ । छु भण्डार ।

विशेष--- ध्रष्टपाहुड का एक भाग है ।

१४०३ द्वादशभावना स्थानत । पत्र स०१। मा०१०×८६ छञ्च। नापा-गुजराती। विषय-मध्यातम । र० कृति ×। ने० काल म०१७०७ वैद्याप बुदी १। वे॰ सं० २२१७। स्र भण्डार।

विशेष--जालोर में श्री हसकुराल ने प्रतापकुराल के पुठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१४०४ द्वादशभावनाटीका । पत्र स० १। मा० ११४८ इखा भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रध्याम । र० काल ४ । ने० काल ४ । मपूर्गा । वै० न० १६४५ । ट भण्डार ।

विणेय-नुन्दकु दाचार्य इत मूल गाथायें भी दी हैं।

१८०५ द्वादशानुप्रेत्ता " । पत्र न० २० । मा० १०३×४ इद्य । भाषा-प्राकृत । विषय-ग्रध्यात्म । २० नान × । ने० कान × । मपूर्ण । वे० न० १६८४ । ट मण्डार ।

१४०६ द्वादशानुप्रेत्ता—सकलकीर्ति । पत्र स० ४ । म्रा० १०३×५ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-ष्राच्यातम । र० नाल × । ले० नाल × । पूर्णा । वे० न० ८४ । स्त्र भण्डार ।

१४०७ द्वाद्गानुप्रेत्ता । पत्र ५०१। म्रा०१०×४५ दक्कः। भाषा-सम्कृतः। विषय-मध्यात्मः। र०काल ×। ने०काल ×। पूर्णः। वे० स० ८४। स्र भण्डारः।

१४- प्रति सट २ । पत्र स० ७ । ले० काल 🔀 । वे० स० १६१ । मृत मण्डार ।

१४०६ द्वादशानुप्रेचा—कविछ्त्त । पत्र स० ८३ । मा० १२३×५ इख । भाषा-हिन्दा (पद्य) । विषय-प्रध्यातम । र० काल स० १६०७ भादवा बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६ । क भण्डार ।

१४१० द्वादशानुप्रेत्ता साह आलू । पत्र मं० ४ । आ० ६५ ४४६ डब्र । भाषा-हिदी । विषय-भव्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६०४ । ट्र भण्डार ।

१४११ द्वादशानुप्रेत्ता । पत्र स०१३। ग्रा०१०×५ इखा। भाषा-हिन्दी। विषय-ग्रस्यात्म। र०काल ×। ले∙ काल ×। पूर्ण। वे० स०५२८। स्टभण्डार।

१४१२ प्रति स०२ । पत्र म०७ । ले० काल 🗙 । वे० स० ६३ । म्न भण्डार ।

१४१३ पद्धतत्त्वधारस्मा । पत्र स० ७ । आ० ६३ ४४३ दक्का । भाषा–सस्कृत । विषय–योग) र० कान ४ । ले० कान ४ । पूर्स । वे० स० २२३२ । स्त्र मण्डार ।

चण्डातम एव वागरास्त्र

tt] [=

१४१५ पन्नुवृतिवी """। वर्ष ४ । वा १ ५४६ (बाः शता-हिन्छै । पियस-सम्मेनः । र राज्य ४ कि वाल ४ । वृत्ती विवे ४६१ । व जनगरः ।

विकेच--कृषरवान इस एडीजाशस्तीन बाला जी है।

रेप्टरेट परमासमपुरास्— दीवचन्दा पवर्त रेप । या १९८६ इक्षामसा–क्रियो (वव) । दिवस–सम्मन्दार गल ×ावे कलानं १०६४ सम्बन्धुरो ११ दुर्लो क्रमणार ।

रिलेय---नहरूमा यूनेप में व्यविधित की थी।

१४१६ प्रतिसं०० । यथ सं २ में २२ | ते काल सं १८४३ ब्रामीय बुधीर | ब्रपूर्ण | दे वं ६२४ | कासार |

१४) ७ परमास्त्रक्रमारः—वोतीम्ब्रेचा पर नं १६ ने १४४। या १ ४६१ इस । सरक्रमा विस्त-सम्बद्धार नात १०वीं स्वतनी । ने नात सं १७६६ सालीर नृती १: स्नूमं । १ सं २ । इस क्यारः

दिनेप-मधालयम्ब विवरणान ने प्रतिविधि की की ।

१४१६. प्रति सक्ष ३ । प्रवर्ष ७६ । ते नक्ष पं १६ ४ यालाला दुर्ध १६ । दे रं २० । व भन्यार । तैसूच टीवा तरिष्ठ हैं।

विमेद-जन्द से ४ स्त्रोत । त्रविध १, पुन्तों ने बहुत वारीक स्तिर है ।

१४२ असिसं०४ । पत्र वं १३ । के सम्ब×ासपूर्धा दे तं ४१४ । का बनार ।

रेपुरर प्रक्षि संक्ष्मानम सं १ के १६। से नाम ≍ा संकृत्। के संप्रदा अन्तारा

१४२० प्रसिक्त ६ विषयं २० वि वाल ८ । लहुर्साः वे वं १ ६ । च प्रधार विकेद —संस्कृत ने प्रयोक्ताची कमा दिवे हैं ।

र्धरुक् प्रविद्य का गर्द रेशा ने नल ×ा ब्यूर्चाने वे ११ । च बचार।

रैप्रदेश प्रतिसामाच्याचे देश से बलाई १६ वैदाल बुधी ३। ये सं २० सा अभ्यारः

क्षित-प्रतपुर वे पुत्रकारणों के विश्व गीवकर तथा उनके विश्व गं ध्यमपत्र में प्रतिविधि हो । वेदक्षत में सर्वानमां वक्ष मी पिने हुए हैं ।

१४ ४ परमानमकारमीका—प्यत्यावणायार्थं पत्र तं ६६ ते ४४६ । था १ ४४ एखा १ द्यास—संदाठ । विषय-सम्पन्न । र कमा ४ । वे नाम ४ । कर्यों । वे चे ४६६ । करमार । १४०६ व्यक्ति स्थापन संदेशको नाम ४ । वे तं ४४६ । स्थापनकार । १४२७ प्रति सः ३। पत्र म०१४१। ले० काल स०१७६७ पीप सुदी ४। वे स०४४४। व्य भण्डार।

विशेष--मायाराम ने प्रतिलिपि की थी।

१४२= परमात्मप्रकाशटीका—ब्रह्मदेव । पत्र स० १६४ । प्रा० ११×७ डझ । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रध्यातम । र० काल 🗙 । ने० काल 🗙 । पूर्ण । वे० म० १७६ । स्त्र भण्डार ।

> १४२६ प्रति स०२। पत्र स० द मे १४६। ले० नाल 🔀 । म्रपूर्ण । वै० स० द र । झ्र् भण्डार। विशेष—प्रति सचित्र है ४४ नित्र है।

१४३० परमात्मप्रकाशटीया । पत्र म० १६३। घा० १९५४७ इख । भाषा-सम्कृत । विषय-मध्यात्म । र० काल ४। ले० काल म० १६४८ द्वि० श्रावशा सुदी १२ ो पूर्ण । वे० स० ४४७ । क भण्डार ।

१४३१ परमात्मप्रकाशटीका । पत्र स०६७। द्या०११×५६ इख । भाषा–सस्कृत । विषय– मघ्यात्म । र०काल × । ले०काल स०१८६० कार्त्तिक सुदो ३ । पूर्ण । वे० स०२०७ । च भण्डार ।

१४३२ प्रति स०२। पत्र स०२६ से १०१। ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० स०२०० । च भण्डार । १४३३ परमात्मप्रकाशाटीका । पत्र मं०१७०। मा०११ई ४५ है इख्र । भाषा-मस्कृत । विषयमध्यातम । र० काल × । ले० काल स०१६६६ मगसिर सुदी १३। पूर्ण । वे० म०४४६। क भण्डार ।

विशेप—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है। विजयराम ने प्रतिलिपि की थी।

१४३४ परमात्मप्रकाशभाषा—दौलतराम । पत्र स० ४४४ । द्या• ११×६ । भाषा-हिन्दी । विषय-भव्यात्म । र० काल १≒वी शताब्दी । ले० काल म० १६३≒ी पूर्ण । वे० स० ४८६ । क भण्डार ।

विशेष-- मूल तथा ब्रह्मदेव मृत मस्मृत टीका भी दी हुई है।

१४३४ प्रति स०२। पत्र म०२३० म २४२। ते० काल ×। प्रपूर्ण। वे० स०४३६। इट भण्डार। १४३६ प्रति स०३। पत्र स०२४७। ते० काल स०१६५०। वे० स०४३७। इट भण्डार। १४३७ प्रति स०४। पत्र म०६० म १६६। ते० काल ×। प्रपूर्ण। वे० स०६३८। च भण्डार। १४३८ प्रति स०४। पत्र स०३२८। ते० काल ×। वे० स०१६२। छ भण्डार।

१४२६ परमात्मप्रकाशवाला नयो बिनीटीका — खानचन्द्। पत्र स० २४१। मा० १२५४४ डख्र । भाषा-हिन्दो । विषय-श्रम्यात्म । र० काल स० १६३६ । पूर्गा । वे० स० ४४८ । क्ष भण्डार ।

विशेष---यह टीका मुल्तान मे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय मे लिखी गई थी इसका उल्लेख स्वय टीकाकार ने किया है।

१४४० परमात्मप्रकाशभाषा—नथमल । पत्र स० २१। प्रा० ११५ ४७ इख । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—प्रध्यातम । र० नाल स० १६१६ चैत्र बुदी (१। ले० नाल × । पूर्ण । वे० स० ४४० । क भण्डार । १४४० प्रति स० २ । पत्र म० १८ । ले० नाल स० १६४८ । वे० स० ४४१ । क भण्डार । १४४२ प्रति स० २ । पत्र स० ३८ । ले० काल × । वे० स० ४४२ । क भण्डार ।

संस्थित ।

प्रेश्वरे पविस् ४ । यस से १वे ११ । वे साम में १६३० । वे ब्रे ४४३ । क स्थार । १४४४ पर-सिस्कान्यासाय-सुरक्षमात कावशस्त प्रवर्त ११४ । वा १२६ ४ छ। व वास-दिनों (पर) । विश्व-स्थानस्य । र काम से १४६ वासक बुधे ७। वे स्वस्त से १६११ नंतिर दुनी १ । व्यक्ती वे में ४४४ । क स्थार ।

१४४६ १९सास्यक्तश्रायाचा न्या नव में १६ । या ११× १वा। वाला-तेहनी। विवन-बन्दान | रंजन्म × । के कमा × । इसी ने सं १२० व कसार ।

१४४७ परमासम्बद्धारमाचाः । वन वं दश्चे हु । था १ ४४३ एम । वास-हिन्ते । विषय-बच्चारम । १ कल ८ । वे कल ४ । व्यूचि । वे चं ४३२ । कुच्चार।

र्मः १४४६ प्रवयमधार—भाषार्वं कृत्युक्तर् । पर्वं ४७ । या १९८५६ इसः | वारा-वाहरः । विश्व-कामार-३२ कान जनकत्वान्यो । ते वाहर्तं १६४ वादशुदी ७ (१९७) वे तं ३ । का क्यारः |

- विकेश---मेरहरा में क्वॉक्सरती क्रम्म क्रिके हुके हैं।

१५५८ क्षतिस के। यार्थ के 1 से कला×। के वं दर ।

इप्तरं प्रतिस ने। पन वं १ । ने भ्रमन र्व १ ६६ भारता हुती है। वे रहे। पर

रध्रेश्र ब्रिटिस् धानम् वं ९ ।से कल ≍ासपूर्णा।वे तं रश्राम् कन्तरः।

निमेन — महि मेन्द्र दीका प्रमित्त है। १४४२०, महिदा हा दव वर्ष १२। ने कम्म र्स १ ६७ वैद्यालय कुटी ६। दे सं २५ । वर्ष

कारणः । निर्मेष---पराचराम्य मोह्या वालं वे अधिनैतरि भी गी ।

द्धार प्रतिका कृत्याची देश में पान अपने में देशक का प्रचार।

१४८५ प्रवयनसारहीका—स्वत्रवाष्ट्राचार्वी वर्षते १७। सा १८८६ दक्षः जाना—संस्तृतः। विवय-सम्बद्धारः र साम १ वी सहस्त्रीः। वे कम् 🗡 । पूर्वः। वे नं १९। व्याचन्यरः।

विगेष-न्दीका वय वाज शरववीषिका है।

्रेप्रदेश अधिका कायसर्थ हर ।से समां रावे वे थर । व्याचन्यार।

tu ६ प्रतिस्ति ३।वन सं ९ वेट । ने वक्त × (ब्यूक्तें वे वे वदाक्ष मधार)

१४२० प्रतिस ४ । वयर्त १ १ । के नास×ावे वं १ । का भन्यार ।

१४४८-प्रक्रिसं क्ष्मपणं १ कियालाणं १६ वर्षकं क्ष्मपणः विकार-स्कृतस्य वेदन्तंके स्वतनस्य में अधिनिति पीर्षा श्रध्यातम एव योगशास्त्र]

१८४६ प्रति सट ६। पत्र स० २३६। ने० तात स० १६३६। ये० त० ४०६। क भण्डार। १८६० प्रति सट ७। पत्र स० ६०। ते० याल ८। य० स० २६४। क भण्डार। विशेष-प्रति प्राचीत है।

१४६१ प्रति सद = । पण स० २०२ । से० काल स० ४७४७ पाग्रुण बुदी ११ । ये० स० ४११ । छ नण्डार ।

१४६७ प्रतिस्पष्ट। पत्र म०१६२। लेव नाल ग०१६४० भाषना पुर्वी २। पेव स०६१। ज भण्डार।

विशेष--पं ० फ्नेह्नाल ने प्रतिनिधि थी थी।

१५६३ प्रवचनमारटीका । पत्र म० ४१ | घा० ११७६ इच । भाषा-हिटा । विषय-ग्रध्याम । २० सान 🗶 | स० काप 🗶 | प्रपूर्ण । वे० स० ५१० । इ. भण्डार ।

विधि-प्रार्ति म मूल नस्रत म छाया तसा हिन्दी म ग्रंथे दिया हुमा है।

१४६८ प्रवचनसारटीका "। पत्र स० १२१। घा० १२४४ डघा। भाषा-सस्तुत । विषय-भष्यात्म । र० वाल 📈 । ले० कात्र स० १८५७ घाषाद बुदो ११ । पूर्ण । वे० स० ५०६ । क मण्डार ।

१४२४ प्रयचनसारप्राभृतपृत्ति । पत्र स० ४१ स /३१। घा० १२८५ है इख्र । भाषा-सस्तृत । विषय-मध्यात्म । र० राज 🗶 । ले० बान स० १७६५ । ध्रुर्ग्ण । वै० ग० ७६३ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ वे ४० पत्र नहीं हैं। महाराजा जयमिंह वे जामनशाल में नेवटा में महात्मा हरिष्टपण न प्रतिनिधि की थीं।

१४६६ प्रवचनमारमाषा—पाँड हेमराज । पत्र मन ६३ मे २०४ । घा० १२८४ है इझ । भाषा— हिन्दी (गद्य) । विषय—मध्यातम । र० राल म० १७०६ माघ मुदी ८ । म० माल म० १७२४ है प्रपूर्ण । वे० म० ४३२ । प्रभण्डार ।

विशेष—सागानर म मोसवाल गूजरमल ने प्रतिनिधि वी थी।

१४६७ प्रति स०२। पत्र स०२६७। ने० माल स० १६४३। त्रे० स० ४१३। क भण्डार।

१४६⊏ प्रतिस≎३।पत्रस०१७३।स०बान ४।वे०स०५१२।क भण्डार।

१४६६ प्रति स० ४। पत्र म० १०१। ले० काल म० १६२७ फाग्रुए। बुदी ११। वे० म० ६३। घ नण्डार।

विशेष-- प० परमानन्द ने दिल्ली मे प्रतिलिपि की थी।

१५७० प्रति स० ४। पत्र म० ४७६। ले० काल म० १७४३ पौप मुदी २। वै० म० ५१३। स्र भण्डार।

१४७१ प्रति स०६। पत्र स०२४१। ले० काल म०१८६३। ये० म०६४१। च भण्डार।

etv]

रेप्र- प्रतिसः भागतसं १०४ । ते काल सं १ ५३ व्यक्तिक पुरी १। दे सं ११३ । इत समार ।

विवेद---सदम्पु निदाली समस्याच के पूत्र महारमा वरोध ने प्रतितिर्देश थी थी।

रें ४० दे प्रवचनमारमाया—कामराक गाहीका । यन है १ तमा ११८ द रखा आया-हिन्दै (सम्) । दिवय-सम्बद्धाः प्रवचनं १७२६ । वे प्रवच है १७६६ भावत्व गुर्ध ११ दुस्य । ने सं ९४४) प्रवचनः

रेपेन्द्रे प्रवचनसारमायां - कृत्वाननहास । पत्र लं २१७ । जा १२६४ १ इस । जास-किसी । रियन-सम्बद्धार । र राज × १ के याज सं १२३३ व्यक्त कुछै १ । कुछै । वे व १११ के बच्चार ।

१९५४ प्रवचनेश्वरसायाः—।पव श्रं ।।सा ११८६१ हवा।वला-हिमी।पिय-सम्बन्धः र नल प्रविकास ।।शुर्वावे वे सर्वाक्षण्याः।

रेंध-के प्रक्तिस क्षाचन से का निकला×। स्पूर्णी के सं ६४०। व कसार।

पिसेर---मिनम पद नहीं है। रेप्रे≎- प्रमुचनसारसायाः ---। यथ श १९। मा ११×४ इस । बाया--विक्ते (पत्र) । निपन

यमानां | राज्या × । में नानां × । यहुर्या । ने तां १६२२ । इ. मध्यार । १४० सः अवयन्तहारमायां च्या नाव तां १४३ ते १ सः । याः ११∄×०ई रखः । नाना-हिन्छे (वयः) । विरय-सम्प्रमा । रोजाला सः । तो नामा तां १ हः । अपूर्वा । ने तां १४६ । या नम्यार ।

१४-६ प्रवचनसारमायाः । वत्र वं २६९। या ११/६ दळा। भावा-विन्धे (वच) । विवक-

प्रमानमः । राज्यस्य । त्रे प्रभावः ११२६। त्रे ४४१। चायपारः । १४म०ः प्राव्यापाप्रसाम्बरणानाः पणःसं ६। मा १५४४ सम्र। मारा-मीक्काः । विवर-मोनकस्यः।

र नाम × | ने कमा× | गूर्णः ने सं ६१६। क्रावस्थार | १४८२ - वास्त स्थानमा—रह्यू । पत्र सं २ । सा _१४६ रखः । वासा–हिन्दी | विश्वस्थानस्था र नामः । ने नाम × । गुर्की ने सं १४६। क्षानस्यरः ।

विकेश--- शिवनार ने रहणू क्षत बारक् आधना होना निका है 1

प्रारम्भ-प्रानमस्य विश्वन क्या शश्रुवान वरमान ।
स्वयम् वो देकिनै कृतमस्य सन्तो विकास ।

क्रमिस--क्षण बहुम्ली क्षात्र की पहन नुगम की नार्रीत ।

सानकारी में शाहके क्रम वेशे महानाहि इति भी रहतु हुत बारह माधमा तंपूर्ण ।

१४८२ वारहभावना । पत्र स०१४ । ग्रा०६५ै४४ इखा भाषा–हिन्दी । विषय–चिन्तन । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । मपूर्ण । वे० स० ५२६ । द्व भण्डार ।

१४८ ३ प्रतिस० २ । पत्र स०१ । ले० काल ४ । वे० स०६८ । म⊤भण्डार ।

१४८४ वारहभावना--भूधरदास । पत्र स० १ । ग्रा० ६५ै४४ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-वितन ।

र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । वे० स० १२४७ । 🗃 मण्डार ।

विशेष-पार्वपुरास से उद्धृत है।

१४८८ प्रतिस०२ । पत्र स०३ । ले० काल ⋉ । वे० स० २५२ । स्वभण्डार ।

विशेष--इसका नाम चक्रवित्त की वारह भावना है ।

१४⊏६ बारहभावना—नवलकवि । पत्र स०२ । ग्रा० ५×६ इक्क । भाषा−हिन्दी । विषय–वितन । र० काल 🗙 । ले० काल 🗴 । पूर्गा । वे० स० ४३० । 🖝 भण्डार ।

१४≍७ वोधप्रासृत—श्राच।र्य कुद्कुढ । पत्र स० ७ । मा० ११×४० इख्न । भाषा–प्राकृत । विषय– म्रब्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्गा । वे० स० ५३५ ।

विशेष-सस्कृत टीका भी दी हुई है।

१४८८ भववैराग्यशतक । पत्र स० १५ । मा० १०×६ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-मध्यातम । र० काल 🗙 । ले० काल स० १८२४ फाग्रुसा सुदी १३ | पूर्मा । वे० स० ४५५ । 🗪 भण्डार ।

विशेष — हिन्दी अर्थ भी दिया है।

१४८६ भावनाद्वातिशिका । पत्र स० २६। ग्रा० १०×४६ इख्र । भाषा–सस्कृत । विषय– मध्यातम । र० काल × । ले० काल × । पूर्गा । वे० स० ५५७ । क भण्डार ।

विशेष—-निम्न पाठो का मग्रह ग्रीर है । यतिभावनाष्ट्रक, पद्मनिन्दिपचिवशतिका ग्रीर तत्त्वार्धसूत्र। प्रति स्वर्णाक्षरों में है।

॰ काल 🔀 । पूर्गा । देे ० स० ५६८ । ष्ट भण्डार ।

१४६१ भावपाहुड कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र स०६। घा०१४×५१ इख्रा भाषा-प्राकृत । त्रिषय-मध्यातम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३० । ज भण्डार ।

विशेष---प्राकृत गायाम्रो पर सस्कृत श्लोक भी हैं।

१४६२ मृत्युमहोत्सव । पत्र स०१। मा०११-४४ इखः। भाषा-सस्कृतः। विषय-ग्रध्यात्मः। र० वाल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण | वे० स० ३४१ । इस भण्डार ।

१४६३ मृत्युमहोत्मबभाषा—सदासुख । पत्र स० २२ । ग्रा० ६३×५ इख्न । भाषा–हिन्दी । विषय– म्रष्यात्म । र० काल स० १६१⊏ म्रायाढ सुदी ४ । ले० काल Ⅹ । पूर्ण । वे० स० ८० । घ भण्डार !

१४६४ प्रति स०२। पत्र स०१३। ले० काल 🗙 । ये० म० ६०४ । रू भण्डार ।

√ 224

ष्मध्यसम् एव व्यवसारतास्त्रः]

१४६४ वित्स दे। या वं १ कि बाल X को वं १व४ । अह सम्बार। १४४६ मितिस ४ । प्रथम ११ । में प्रला≯ । में से १०४ । स्टूमण्यार । १४२७ प्रति में० शापन सं १ । में काम × । वे सं १६४ । भू कचार ।

१९६८. याग्रजिहमकरया-न्या इरिअन्नसृति। यथ मं १ । या १ XV4 इक्ष । माना-संस्त्रा।

नियन-बीमा∜र पाल ×ामे काल ×ापूर्ण हंगे से १६१ । क्षा बधार।

१४६६ योगामकि ----। पत्र वं ६। या १९५३, इ.स. वाया-शक्त । विषय-वीत्र । र बात पाने पान प्राप्त्रकी है है है। के बन्तर। १४ योग्यास्य-वेजवन्यसूर्यः । पत्र वं १४ । वा १ ४४, वंव । वला-नंतरः । निवन-

बीग ! ए: माल 🗴 ! में नाल 🗴 ! पुर्सा वे सं वहहै ! धा नचार ! १४ १ बाहरतस्त्र """ वर्ष पे १४ वर्ष १ अह १ अहा अहा अहा वर्ष शेवा १

प्रमा×ाने प्रमासे १७०३ मानक वृद्धी १ । कुर्ण । वे नं २६ । सा वर्ण्यार । विश्वेच-कियी में सर्व दिवा ह्या है। १५२ योगशार—योगीन्त्रवेतः स्वतं १२। या ८८४ इषः । जारा-याप्रवः । विषय-

ग्राम्बरमा (प्रोप्ता ×ामे नास से १ ४) श्राप्त (वे से २) स्राच्यार । विकेश-अकराज कालवा ने प्रतिविधि की नी ।

१५ ३ व्यक्तिस २ । पत्र वं १७ । ने कल्लानं १९३४ । वे सं ६ ६ । व्यक्तपरार ।

३४ प्रतिस्थे के। वश्व के १६। ते नान ×। वे त ६ ७। का बचार । रिकेट--विकी धर्व की दिना है। १५ ५ प्रस्तिस ४ । यम सं १२ । ने नाल नं १ १६ । वे नं ६१६ । छ सम्बार । tr ६ इतिस्रों क्षा वार्त १६। ने प्रताप × 1 वे वे ३१ क्ष प्रवारत

trev प्रतिस्ति ६। प्रमानं ११। ने कला में १५ २ वीव मुद्दी ४। वे ने २ ने स् THE R रहत्य, प्रतिसं का कार्य १ । वे पात वं १ ४ मानोप बुरी ६। वे नं ३३६ । स

HTIC:

१४ ॥ मृति स्रंद्धापत्र संदेश काल ×। शहूर्णा वे संदृष्टाध्य क्यारा

क्रमाम र नामनं इट ४१के नाम अर्थपूर्ण हर्ने नं ६१६१ का मनार। रिचेप—पानरे में शावस्थ में बागा रोवा निसी नई वी ।

१४१ क्षेत्रसारभाषा-चन्त्राम । वय सं ६० । वा ११३०४४ वसा । जारा-निनी) विषय-

१≥११ *चारा*मारमाचा—नत्रासास चौधरी । चन मं ३३ । मा १२४ ४४ । माा—िन्दी (थम) रिपम-प्रपासन् । ए सम्मानं ११३२ असनं सूरी ११४ ने नात्र × । पूर्णं । वे नं ६ ३ । क समारः। अध्यातम एव योगशास्त्र]

१५१२ प्रति स०२। पत्र स०३६। ले० माल 🔀 । ये० स०६१०। क भण्डार।

१५१३ प्रति सद ३। पत्र स० २८। ले० कान ४। वे० स० ६१७। इ भण्डार।

१४१४ योगसारभाषा-प० वुधजन । पत्र म० १० । मा० ११४७३ इख्न । भाषा-हिन्दी (पत्र) ।

विषय-ग्रम्यातम । र० काल म० १८६५ सावरण मुदी २ । ले० माल 🗴 । पूर्ण । वे० म० ६०८ । क मण्डार ।

१४१४ प्रति स०२। पत्र स० ६। ले० वाल ४। वे० व० ७४१। च भण्डार।

१५१६ योगसारभाषा । पत्र स॰ ६। मा॰ २१×६६ छन्न। भाषा-हिन्दी (पद्य)। विषय- भन्यात्म। र॰ काल ×। के० काल ×। मनूर्या। वै० म॰ ६१६। ड भण्डार।

१४१७ योगसारसग्रह । पत्र स० १८ । भा० १०×४६ इख । भाषा-सम्कृत । विषय-योग । र० काल × । ले० काल स० १७५० कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० स० ७१ । ज भण्डार ।

१४१८ स्पस्थध्यानवर्णन । पत्र स०२। मा०१० $\frac{1}{4}$ ४५ $\frac{1}{4}$ इक्र । भाषा-सस्कृत । विषय-योग। र० काल \times । पूर्ण । वे० स० ६५६ । ङ भण्डार ।

'धर्मनायस्त्वे धर्ममय सद्वर्मसिद्धये ।

धीमता धर्मदातारं धर्मचक्रप्रवर्त्तक ॥

विशेप-शील पाहुड तथा गुरावली भी है।

१४२० प्रति स०२। पत्र स०२। ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० म० १६६। भ भण्डार ।

१४२१ वैराग्यशतक—भक्तृंहरि । पत्र स॰ ७ । मा० १२ \times ५ इद्य । भाषा—सस्कृत । विषय— मन्यारम । र० नाल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० ३३६ । च भण्डार ।

१४२२ प्रति स०२। पत्र स० ३६। ले० काल मं० १८८५ सावरण युदी ६। वे० स० ३३७। च मण्डार।

वियोप-वीच में कुछ पत्र कटे हुये हैं।

१४२३ प्रति स० ३ । पत्र स० २१ । ले० काल 🗴 । वे० स० १४३ । ब्र भण्डार ।

१४२४ पटपाहुड (प्राभृत)—श्राचार्य कुन्दकुन्द् । पत्र स०२ से २४। मा० १०४४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-मध्यात्म । र० काल ४ । से० काल ४ । स्रपूर्ण । वे० स०७ । स्त्र भण्डार ।

१२२४ प्रति स०२। पत्र स० ४२। ले० काल स० १८५४ मगसिर सुदी १४। वे० स० १८८ अ

१४२६. प्रति स० ३। पत्र स० २४। ले० काल स० १८१७ माघ बुदी ६ । वे० सं० ७१४। क

विशेष--नरायगा (जयपुर) में प । रूपचन्दजी ने प्रतिलिपि की थी।

" mining

```
हरूर | स्थापन स्थापन संप्राप्त स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्था
```

१६२४ प्रति छ० ११। पत्र वं ६३: वे कस्म X । वे यं ११७। च वेप्यार विकेष-स्थाप्त संस्थाप्त स्थापन स्थ

हेर्देश प्रति सं- हेर। यम सं २ । ते नाम सं हरहर नैन बुदी हेर। हे सं १ । सं १४३६ प्रति सः १३ । यम सं २६ | सं नाम × । है सं हमार्थ हमारार।

१४१० प्रति छ १४। तम वं १२। ते कम्बर्च १०१२। वे सं १०४०। हममार।

विदेश — सम्बद्धा में पार्म्यनाम वैद्यालय में व सुक्तिय के प्रत्यार्थन में ब्रह्मदाल के प्रतिमिद्धि की वी। १४६८ मिन्न के १२ । पत्र में १ के १ । के कला×ायपूर्ण वे सं १ १ (ह समार।

विक्तेर—निश्न प्राकृत है– वर्षत तुथ नागिष ! नागिष प्राकृत मी ४२ माना है साथे गई। है। प्रीट प्राचीन पूर्व ऐसाद ग्रीमा लीहत है।

११६६ मस्पाद्वस्टीका^{मा मा} पत्र सं ११। सा १९४६ द्वाः त्राया-संस्तृतः विश्वस्थानमाः र कृतः ४ । के पत्रः ४ पूर्णः विशेषः देशः सामकारः।

रह्म प्रतिस १। त्याचे ४२। ने कमा×। वे सं ७१३। कावसार।

रश्च आवश्च राज्य वरान कर्यात्र च वर्ताकृत्यार। रश्चर प्रविसी देशकार्थ देश ने सलार्थ है क्यूकुतुरी ।दे वं ११६। स

विसेव--- वं स्वयस्थान्य के वस्त्रान्तें जानगत्तर में अधिनिति हुईं।

ास्तर—च स्वरूपण्यकपश्चान वारापारच्यालालाहरू। ११४ण प्रतिस ४ । पण्यसं १४ । ते तलासं १ १६ लोह सुदीर्ाके छ १६ । स

बचार १

क्यार ।

भण्डार ।

गई थी।

१५४३ पटपाहुन्दरीका--श्रुतसागर। पत्र स० २६४। मा० १०६८५ इख्र । भाषा-५स्वृत । विषय-मध्यात्म । र० काल 🗶 । ले० काल 🗶 । पूर्ण । वे० स० ७१२ । क भण्डार ।

१४४४ प्रति स०२। पत्र स०२६६। ले॰ काल स०१८६३ माह बुदी ६। वे॰ स॰ ७४१। उ भण्डार।

१४४४ प्रति स० ३। पत्र स० १५२। ले० काल स० १७६५ माह बुदी १०। वे० स० ६२। छ

विशेष-नरसिंह भग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी।

४४६ प्रति स० ४ । पत्र स० १११ । ले॰ काल स० १७३६ द्वि॰ चैत्र सुदी १४ । वै॰ स॰ ६ । न विशेष-अीलालचन्द के पठनार्थ मामेर नगर में प्रतिलिपि की गई थी ।

१४४७ प्रति स० ४ । पत्र म० १७१ । ले० काल स० १७६७ श्रावरा सुदी ७ । वै० स० ६८ । व्य भण्डार ।

विशेष—विजयराम तोतूका की धर्मपत्नी विजय शुभदे ने प० गोरधनदास के लिए ग्रन्य की प्रतिलिपि करायी थी।

१४४८ समोधस्त्रज्ञरवाधनी—धानतराय । पत्र स० ५ । मा॰ ११×५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-मध्यातम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६० । च भण्डार ।

१४४६ सवोधपचासिका—गौतमस्वामी। पत्र स ४। मा० ५४४३ इख । भाषा-प्राकृत । विषय-भव्यातम । र॰ काल ४। ले० काल स० १५४० बैशाख सुदी ४। पूर्ण । वै० सं० ३६४। च भण्डार ।

विशेष--बारापुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

१४५० समयसार--कुन्दकुन्दाचार्य। पत्र स० २३। आ० १०४५ इख्र । भाषा-प्राकृत । विषय-भव्यात्म । र० काल ४ । ले० काल स० १५६४ फागुए। सुदी १२ । पूर्ण । बृत स० २६३ सव भवति । वे० सं० १८१ । श्र भण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति—सवत् १५६४ वर्षे काल्गुनमासे शुक्लंग्रक्षे १२ द्वादशीतिथौ न्वौवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे श्री मूलसघे निदसघे बलात्कारगरो सरस्वेतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारवश्रीपदानन्दिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र-देवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तिच्छिप्यमङलाचार्यश्रीधर्मचन्द्रदेवास्तत्मुख्यिकाष्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रदेवास्तैरिमानि नाटकसमयसारवृतानि लिखापितानि स्वपठनार्थं।

> १४५१ प्रति स०२। पत्र सं०४०। ले० काल ×। वे० स० १८६। आप मण्डार। १४४२ प्रति स०३। पत्र स०२६। ले० काल ×। वे० स०२७३। आप मण्डार। विशेष---संस्कृत में पर्योगान्तर दिया हुआ है। दीवान नवनिधिराम के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की

१४५३ प्रति सब् ४ । पत्र स० १६ । ले॰ काल स० १६४२ । वे० २० ७३४ । क भण्डार ।

१४४४ प्रतिसः ३ । पथ सं १३ । के नाल × । वे सं ७६१ । क सम्बार । विशेष—मानार्थों पर ही संस्कृत में सर्व है ।

१×× प्रतिस ६।पनसं ७ ।से नल्ल×ावे सं १ वः घनमार]

१४१६ मितिस ७।पत्र सं ४६।ने कल सं १ ७७ वैदाल बुदी १।वे सं १६६।प

बसार)

विवेर--पंस्टूट में पर्याकाली बच्च विने हुने हैं।

१४१७ श्रीरेस स । पत्र सं १६। ने कल्ल × । सपूर्णी दे सं १९७ । च क्लार ।

विश्वेष-भी प्रतियो का विचल है। प्रति बंस्ट्रल टीका विहेत है।

रेश्ट्रद प्रतिसः ६ । पत्र सं १९) के काव 🗡 दे सं १९७ का च बचार।

विश्वेष---संस्कृत में पर्यायवाची श्रम्म विवे हुचे हैं ।

१४४६ प्रतिसः १ । वस्तं १ के १३१ । में प्रतः ×। बहुर्ण (वे वं १९ । च बच्चार ।

विसेच--चंतहरा दीका बहित है।

१४६ प्रतिसं ११ । पन सं ६ । वे नाल 🔀 । अपूर्ण (वे सं १६ क) च प्रचार।

विकेष---चेस्ट्रव दीरा विह्य है। १४६१ प्रति से० १२ । यम सं ७ । के काल 🗴 । वै वे ३७० । वा क्यार)

१४६२ प्रतिस रेक्षे पत्र तं प्रकाले काल ×ावे सं व्यक्त व्यक्त

विस्तेन—संस्तृत टीका समित है।

र्×६६ मधिस १४) वस वे ३६। ने नाम सं १६८६ गीप कुमी ६। वे सं ११४ । इं कमार ।

१४६४. स्यवसारककराा—कस्तरकरुप्तार्थः। वत्र सं १२२। सा ११८४६ स्वा प्रत्या—कंतरणः निवर-समारणः र पाल ×ार्थे नामा व १७४३ साधीन वर्षः २ । वर्षः। वे १७६। सा समारः

प्रवर्शन —चंगर् १७४१ वर्षे वालीय गामे बुक्तले ग्रितिया २ विची दुवरतारे वीमलायस्परे मैसेन्या-सरराजार्थ बीम्डीयस्पयी बुट्टाक वी १ वी सम्मानकारपृथिती तक् तिव्य चारियांच वी समर्थवांनी वर्षे विव्य चुरि सामानेत प्रमास सिरीयक कुर्व मण्डु |

१४६८ प्रतिस २ ! वन व १८४। ने नाम सं १९१७ शतक बुरी ७। ने वं १३३। म

वन्तार । [त्येद-—सहाराजधीवराज वर्षांस्कृती के बालवनाल के बालेद ने प्रतिविद्धि हुई थी। त्रपस्ति विश्व तनार है-नंदन् १९६७ वर्षे पत्रम विश्व तत्राची जुल्लासी नहाराजधियाज भी वीस्त्रती त्रवारे चंत्ररतीच्यने निम्मार्स सेरी मी जीवनालभी पत्राची । निर्मित्य वीसी धारीपात । १५६६ प्रति सद २ | पत्र म० १६ | ते० काल × | वे० स० १६२ | द्र्य भण्डार |
१५६७ प्रति सद ४ | पत्र म० ४१ | ते० काल × | वे० स० २१५ | द्य भण्डार |
१५६८ प्रति स० ६ | पत्र स० ७६ | ते० काल स० १६४३ | वे० स० ७३६ | क भण्डार |
विशेष—सरल सम्कृत में टीका दी है तथा नीचे क्लोकों की टीका है |
१५६६ प्रति स० ६ | पत्र स० १२४ | ते० काल × | वे० म० ७३७ | क भण्डार |
१५७० प्रति स० ७ | पत्र स० ६४ | ते० काल म० १८६७ भादवा सुदी ११ | वे० स० ७३८ | क

मण्डार ।

विशेष—जयपुर में महातमा देवकरण ने प्रतिलिपि की थी।

१५७१ प्रति स० ६। पत्र स० २३। ते० काल ×। वे० स० ७३६। स्त्र भण्डार।

विशेष—सस्त्रत टीका भी दी हुई है।

१५७२ प्रति स० ६। पत्र स० ३६। ले० काल ×। वे० स० ७४४। स्त्र भण्डार।

विशेष—कलशो पर भी सस्त्रत में टिप्परण दिया है।

१५७३ प्रति स० १०। पत्र स० २४। ले० काल ×। वे० स० ११०। च भण्डार।

१६७४ प्रति सं० ११। पत्र स० ७६। ले० काल ×। धपूर्ण। वे० स० ३७१। च भण्डार।

विशेष—प्रति सस्त्रत टीका सहित है परन्तु पत्र ५६ में सस्त्रत टीका नहीं है केवल दलोक ही हैं।

१६७४ प्रति स० १२। पत्र स० २ से ४७। ले० काल ×। धपूर्ण। वे० स० ३७२। च भण्डार।

भण्डार ।

विशेष-उज्जैन मे प्रतिलिपि हुई थी।

१५७७ प्रति स० १४ । पत्र स० ५३ । ले० काल 🗙 । वे० स० ८७ । ज भण्डार ।

विशेप-प्रित टीका सहित है।

१४७८ प्रतिस०१४ । पत्र स०३८ । ले० काल म०१६१४ पौप बुदो ८ । वे०स∙ २०४ । ज

१४७६ प्रति स०१३ । पत्र स०२६ । ते० काल म०१७१६ वार्तिक सुदो २ । वे• म०६१ । छ

मण्डार ।

विशेष—वीच के ६ पत्र नवीन लिखे हुये हैं।

१५७६ प्रति स० १६। पत्र स० ५६। ले॰ काल ×। वे॰ स॰ १६१४। ट मण्डार।

१५५० प्रति स० १७। पत्र स० १७। ले॰ काल स० १६२२। वे॰ स॰ १६६२। ट मण्डार।
विशेष—व्र॰ नेतमीदास ने प्रतिलिपि की थी।

१४८१ समयसारटीका (श्रात्मस्याति)—श्रमृतचन्द्राचार्य। पत्र स० १३५। ग्रा० १०३×४५ इख्र भाषा-सस्कृत । विषय-मध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १८३३ माह बुदो १। पूर्ण। वे० स० २ । श्र भण्डार ।

```
to 2 1
                                                                         श्रद्ध सा एवं बारहास्त्र
           १≱द> प्रतिस ० प्राचन से ११६ । ने माल से १७ ३ । ने से १ ४ । का प्रथार ।
           विकेच--- सक्षरित-संगत १७ ३ जार्गीतर ब्रम्पायध्यां तिथी गुजवारे विक्लिका ।
           श्रद्ध ब्रोत से के। पर वें ११। के पला×ावे ते का धर अध्यार ।
           श्रद्धन प्रक्रिस प्रोपन के १ के प्रशास नास Xावे के २ शाका प्रपार।
           रेश्यार, प्रतिसार । प्रवास देश के पान स १७०३ जैवाल वृद्धे १ । वे स १९८। प्र
क्चार ।
           विश्वेष---व्यवस्ति :--सं १७ ३ वर्षे वैद्याश इच्छारप्यमां विश्वी लिक्किन्।
           श्रद्धक प्रतिस्त के । यह से ११६ | से काम वी ११६ । में वी अप । का स्थार।
           रेक्ष्मक प्रति संक्रका पचर्च १३ । वे नाग वं १११७ । वे नं नप्रशास्त्र सम्बद्धार ।
           १४ चन्द्र प्रतिकार । या वर्ष १२ । जे जलाई १७६ । वे संब∀१ । ब क्यार ।
           विकेश--- अवयंत कृषे ने तिरोज बाम में ब्रहिविधि की थी।
           शिक्ट प्रक्रिय का प्रभावे देश में माना≻ावे में करशाब्द बण्डार ।
                  प्रक्रियं रे । पत्र क १९११ ने कस ×ार्थ थं ४६ | व∉ अच्छार।
           विशेष---वित शाबीन है ।
           रेश्चर अधि सं ११। पन सं १७१। में नाम सं १९४४ वैशास बुदो १। वे १ ३। व
बनार ।
           विनेद---धक्यर नारवाङ् के कमानकाव में नालपुरा ने नेवार ग्रुटि रहेतास्वर दुनि वेदा ने प्रतिनिधि सी
थी ! नीचे दिव्यक्तिचित वेतिका धीर निश्ची है---
```

'पाडे केंद्र केंद्र राज पूज बाडे पारम् पांची केंद्ररे । वासी सं १६७३ तथ वह बीक्शवासक करतर ।

बीच में क्या पर विकास हो है। रेश्य-८ प्रविद्यः १२ । पत्र वर्षे १६ । में मालाकः १६१ नाम धूरी ११ वे च≭ास

क्ष्यार । विश्वीय--- र्यमही वभागामा ने स्वयस्थार्थ प्रतिनिधि भी भी । ११२ ते १७ - तथ गीते प्रश्न है ।

रेश्वर प्रति सा देश वर्ष प्रा में वाल सं १७३ अनंबिर सुधी रूप के सा र का क श्रवार । रेश्वर समयसार वृष्टि " १ वर्ष में ४ १ मा - ×१ इ.स.। वाला-बाहर । विषय-प्राम्यस्य ।

र कास ≾ावे काम ≍ाब्यूमी है क १ क∣ वामधार।

११६१८ समयसारतीका......। पण सं १ । या १ ई/८१ वस । शाला संस्कृत : विशव सम्मारण ।

r कमा≾ाने राज्य X । ज∏र्था वे वे ७६६ । ज बच्चार ।

श्रध्यातम एवं योगशाम्त्र ो

१४६६ समयमारनाटक-पनारसीदास । पत्र म० ६७ । भा० ६५४ इक्स । भाषा-हिन्दी । विषय-प्रध्यातम । र० मान सं० १६६३ म्रामीत मुदी १३ । से० मात्र म० १८३८ । पूर्ण । वे० स० ४०६ । अ

भण्डार। १४६७ प्रति सट २। पत्र स० ७२। मे० बान स० १८६७ फाग्रुरा गुदी ६। वे० स० ४०६। अ

भण्डार ।

विरोग—मागरे मे प्रतिलिपि हुई थी। १४६= प्रति संद ३।पत्र म०१४।ले० बाल ×। मपूर्णी ।वे० स०१०६६। स्त्र मण्डार ।

१४६६ प्रति स०४। पत्र स० ८२। से० नात 🗙 । सपूर्ण । वे० स० ६८४ । स्त्र भण्डार । १६०० प्रति संс ४ । पत्र स० ८ मे ११४ । वे० नात स० १७८६ फाग्रुस मुदी ४ । वे० स० ११२८

श्र मण्डार ।

मण्डार ।

१६०१ प्रति सट ६। पत्र स० १८४। ते० काल स० १६३० ज्येष्ठ बुदी १४। वे० स० ७४६। क

विशेष—पद्मों के बीच में सदागुन नासलीवाल कृत हिन्दी गद्म टीका भी दी हुई है। टीवा रचना स० १६१४ नातिक मुदी ७ है। १६०२ प्रति स० ७। गत्र ग० १११। ले० काल सै० १६४६। वे० स० ७४७। क भण्डार।

१६०३ प्रति स० = । पत्र म० ४ से ४६ | ले० नाल × | वे० स० २०८ । स्व भण्डार । यिरोप---प्रारम्भ के ३ पत्र नहीं हैं ।

१६०४ प्रति स० १। पत्र स० ८७। ते० माल स० १८८७ माघ मुदी ६ । वे० स० ८४। ग भण्डार।

१६०४ प्रति स० १। पत्र स० ८७। प० पाल स० १६८७ माघ मुदा ६। व० स० ६४। ग भण्डार। १६०४ प्रति स० १०। पत्र स० ३६६। ले० काल सं० १६२० चैदााल सुदी १। वे० स० ६५। ग

विशोप—प्रति गुटने के रूप में है। लिपि बहुत सुन्दर है। मक्षर मोटे है तथा एक पत्र में ४ लाइन मौर प्रति लाइन में १८ ग्रक्षर हैं। पद्यों के नीचे हिंदी ग्रर्थ भी है। विस्तृत सूचीपत्र २१ पत्रों में है। यह ग्रंथ तनसुख सानी मा है।

१६०६ प्रति स॰ ११। पत्र स० २० से १११। ले० माल स १७१४। अपूर्ण। वे० स० ७६७। स

भण्डार । विदोप—रामगोपाल वायम्य ने प्रतिलिपि की थी ।

१६०७. प्रति स० १२ । पत्र स० १२२ । ले० काल स० १६४१ चैत्र सुदी २ । ये० स• ७६८ । उस्

भण्डार । विशेष---म्होरीलाल ने प्रतिलिपि कराई थो ।

१६० प्रति स० १३। पत्र स० १०१। ले० काल स० १६४३ मगसिर मुदी १३। वे० स० ७६६।

ह भण्डार।

```
रवश्र ]

    भ्रष्टास्य एवं बीरामास्य

         विदेश-सदमीनारायस बजाल ने वयनगर वे प्रतिनिधि की वी ।
         १६.६. प्रतिसं १४ । पत्र सं १६ । ते तल तं १६७० प्रवन समस्य नृदी १६ । वे सं
पक• । क नपार ।
         विधेय-फिनी नव ने भी दीना है।
          १६१ मित सं १४ । पन ते १ । के नात X । ब्यूर्ली वे र्व ७७१ । क्र मध्यार ।
          १६११ इतिहा १६। यथ वं २ से २२ ३ ते नाल X | धपूर्ण ⊨ते वं ३६७ । क्र मध्यार ।
          १६१६ प्रतिस १७। यम सं ६७ | में यलार्स १७६६ सायाह मुदी १६ । में सं ७३२ ।
🗷 भव्यार ।
          १६१६ प्रति संद्यापवर्त हाने कलातं १ १४ वंपतिर बुरी शाने सं ६८१ । च
WESTE I
          क्षिक-भारे बानवरात है सवार्यपत बोबा है ब्रिकेटिय राउई ।
          १६१५ प्रतिसं १६।पन तं ६ । के शल X। पपूर्ण । वै वं ६१६। व प्रवार ।
          १६१≥ प्रक्तिसं २ । पत्र सं ४१ से १६२ । लॅक्सन × । सपूर्ता वे वं ६६४ (क) । वर
BERTE I
          १६१६ प्रतिसंदशायन संशास कल × १वे संदश्(स) । व्यापधार ।
```

१६१७ प्रतिस २१ । पत्र प १४ । ते स्टर्स्स) (च सम्बर्स) १६१७ प्रतिस २१ । पत्र प्रस्ति स्टर्स्स (व) । च सम्बर्स

१६१८८ प्रति छंत्रहायण संघ के दात्रि व्यवस्थं १७ ४ व्यवस्था हारि स्व संदर्(य) इत्र वच्चारा

१६१६ मनिसं २४ । यद वं १ १ । ने यान सं १७० यानक पुरी २ । ने वं १ । ज

प्रचार । विकेश—विका विवासी किसी शासन ने शीरिसिप की नी ।

१६२ प्रतिस २४। रवर्ष ४ ते १। ते नाव×। बपूर्ण । वे तं १४२१ । द्र बच्चार ।

१६२१ प्रतिस २६।पनसं १६।ते तल×।यपूर्णः वे सं १७०४ (इ.सम्बार)

१६२२ प्रतिसं २०। पर सं ११०। ते फान सं १०४६। दे सं १६६। ह मचार। निवेश - सीर राज्यसम्बद्ध नय तीना वहित है।

१६२६ प्रतिस मन। पन सं १ । के काव × । के वं १ १ । स कमार।

१६५४ समस्यारमामा—मायनम् झावका। पत्र तं ११६। मा १६४ रख । शता-हिन्दै (रह) । विका-मानास्य : र काल सं १ ६४ वार्तिक पुरी १ । में काल सं १६४६। पूर्त । वे संप्रत । इ. बचार ।

र्द्रप्र. प्रतिसः २ | पत्र वं ४६६ । के स्वयः X | वे सं ४४६ । कः क्यार | १६२६ अति सं ३ | पश्चे २१६ । के क्या X | वे सं ४६ । कः क्यार | प्रध्यातम एवं योगशास्त्र]

१६२७ प्रति स०४। पय न० ३२८। ले० बाल स० १८८३। वे० सं० ७५२। क भण्डार। विशेष—सदामुखनी के पुत्र क्योचन्द ने प्रतिनिधि की थी।

१६२८ प्रति स॰ ४। पत्र स० ३१७। ते० काल म० १८७७ प्रापाद बुदी १५। वे० म० १११। घ

ण्डार ।

विवेष—देनीराम ने सम्पनक में नवाब गजुदीह बहादुर के राज्य में प्रतिसिपि की ।

१६२६ प्रति स० ६। पत्र म० ३७५। ते० बात स० १६५२। वे० स० ७७३। स भण्डार। १६३० प्रति स्वट ७। पत्र स० १०१ ने ३१२। ते० कान ×। वे० म० ६६३। च भण्डार।

१६३१. प्रति स० = । पत्र स० ३०४ । स० गान × । ये० स० १४३ । ज भण्हार ।

१६३२ समयसारक्ताशाटीका । पत्र म० २०० से ३३२। मा० ११०४५ इख । भाषा-िन्दी।

विषय-मध्यातम । र० बाल 🗙 । से० बाल स० १७१४ ज्येष्ठ बुदी ७ । मपूर्ण । वे० स० ६२ । छ भण्टार ।

विशेष—वध मोक्ष सर्व विशुद्ध ज्ञान भीर स्याद्वाद चूलिया ये चार भिषयार पूर्ण हैं। शेष सिवकार नहीं हैं। पहिले बलशा दिये हैं फिर उनके नीचे हिन्दी में भर्ष है। समयमार टीना स्लोक स॰ ४४६५ हैं।

१६३३ समयसारक्लशाभाषा । पत्र ग०६२। मा० १२%६ इद्या मापा-हिपी (गर्रा)।

विषय-प्रध्यातम । र० वाल 🗙 । ले० वान 🗡 । प्रपूर्ण । ये० न० ६६१ । च भण्डार ।

१६३४ समयमारवचिनका "। पत्र स० २६। ले० काल ×। वे० न० ६६८। च भण्डार।

१६३४ प्रति स०२ | पत्र स० ३४ | ते० बाल × | वे० स० ६६४ (क) । च भण्टार ।

१६३६ प्रति स० ३ । पत्र स० ३८ । से॰ फाल × । वे॰ स॰ ३६६ । च भण्डार ।

१६२७ समाधितन्त्र—पूज्यपाद् । पत्र सं० ५१ । ह्या० १२३५ ४ इख । भाषा–सस्तृत । विषय–योग भास्त्र । र० वाल × । ले० वाल × । पूर्ण । वे० स० ७५६ । क भण्टार ।

१६३८ प्रति स॰ २ । पत्र स० २७ । ले० गाल × । ये० स० ७५८ । क भण्डार ।

१६२६ प्रति स० २ । पत्र स० १६ । ले० काल स० १६३० वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ७५६ । क भण्डार ।

१६४० समाधितन्त्र । पत्र स०१६। मा०१०×४ इख । भाषा-सस्मृत । विषय-योगशास्त्र । र० वाल × । त्रे० वाल × । पूर्ण । वे० व० ३६४ । व्य मण्डार ।

विरोप-हिन्दी मर्थ भी दिया है।

१६४१ समाधितन्त्रभाषा । पत्र स० १३० से १६२ । मा० १०×४६ दख । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-योगशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । मपूर्या / वे० स० १२६० । स्त्र भण्डार ।

विशेप--प्रति प्राचीन है। बीच के पत्र भी नहीं हैं।

१६४२ समाधितन्त्रभाषा—माण्कचन्द्र। पत्र सं०२६ । मा० ११४५ इख । भाषा-हिन्दो विषय-योगसास्त्र । र० माल ४१ ले० माल ४ । पूर्ण । वे० स० ४२२ । ऋ भण्डार ।

विशेष--मूल ग्रन्य पूज्यपाद का है।

```
,
128 ]
                                                           भिश्यातम एव करगरा।
          १६४३ प्रतिसंदरायवर्तकराते नलाई ११४२ । वे ४४१ । इस्यापारः
          ६६४४ प्रतिसंदे। पत्र वंदाने नशा×ावे सं ७३७ । अस्तरहार ।
          विभेच-हिन्दी वर्ष ऋषक्यास निमोत्ता द्वारा भूड दिया वया है ।
          १६४४ प्रतिस ४ । वर्ष र । में वल × । वे वं वर्षा क्रमार।
          १६४६ समाधितन्त्रमापा-नाबुराम शसी । पत्र वे ४१६ । था १२,४७ इस । जाना-दिले
वियम-जोगार पाल से १६२६ पेंग सुदी ६२। में पाल से १६६ । पूर्णा में सं ७६१। इस समार।
          १६५७ प्रतिस २ । पत्र स २१ । से मास × । वे सं ७६२ । इस बच्चार ।
          १६४८, प्रतिस दे। वस में १६ । में पान के १९६६ कि ज्येत वरी १ । में के क
# भवतर ≀
          १६४६, प्रतिसः प्रापनसं १७३ । में नम्र ×ाने सं १६७ । च भ्रष्टार ।
          १६४ समाजितम्बमाना—वर्षेत्वमाँची । वव वं १४७ । मा १२३×१ इक्क । भाना-ग्रामरा
निपि क्रियो : विक्थ-श्रीव १९ जान 🗙 । में जान 🗙 । पूर्ण । पे. ११६ ( वा बन्दार ।
          विकेश---वीम के कुछ पत्र बुवारा विने भने हैं । बार्रपपुर निवासी पं अवस्था ने प्रतिविदि सी वी ।
          १६४१ प्रतिम मानवर्ष १४माचे पालवं १७४१ वर्गतकसूरी शाचे तं ११४ ।
मचार ।
          १६≥ प्रतिस ३ । पन स ११ तो तल × । सपूर्णा वे सं ४ १। क बचार ।
          १६३६ प्रतिस ४ । पण सं २ १। ने मन्त×ावे संस्थरा इस्प्रचार।
          १६ अर्थ प्रतिसंदेश पत्र नं १७४ । से नाम सं १७ १ । से तं ६३ । सामधाराः
          विदेव-समीरपुर में यं बाविनशन के प्रतिनिधि नी नी ।
          १६⊭४८ प्रतिसंदितकार्थं १६२। ते नाल ×ाबदुसारे संदेश२। इस लखारा
          १६४६ प्रतिस्थं कायत्र सं रूपा ने नला सं १०६४ पीप नुरी ११। वे संप्राय
 बच्चार ।
          नामी भी । प्रति दृश्या शाहम है।
          रेक्टक, प्रति संदारण संदशाने पर । ते सम्बद्ध १७ ६ यलक सूरी १६ । वे संदर्भ
 भवतार ।
          १६५८. समावितरकः --- वय सं ४ । या ७ ४६) इस । बाला-असूर । विषय-समाज ।
 र गम×।वे नास×। पूर्वादे व १६२१।
          १९४८. समाधिमस्यासाया—साजवस्य । यह वं १ | या २×४ इत्र । जला-दिन्धे । विस्
बम्बरूदार नेख×ाने शल×ावर्जाने संप्रशराकानधार।
          १६६ प्रतिसंगायन संभावे नाम ×ावे संस्थात सम्बद्धाः
          रैं4.६१ सर्विस दे। पचर्च १। से दान ≾ावै सं ७ वे। धानमारा
```

I

मण्डार ।

१६६२ समाधिमरणभाषा—पन्नालाल चौधरी। पत्र स० १०१ । मा० १२×५ दख्छ । भाषा— हिन्दी। विषय-मध्यात्म । र० काल × । ले० काल स० १६३३ । पूर्ण । वे० स० ७६६ । क भण्डार ।

विशेप--वादा दुलीचन्द का सामान्य परिचय दिया हुगा है। टीका वादा दुलीचन्द की प्रेरगा से की गई थी।

१६६३. समाधिमरणभाषा—सूरचद् । पत्र स० ७ । मा० ७ 3_v \times ५ हक्क । भाषा-हिन्दी । विषय-

१६६४ समाधिमरणभाषा । पत्र स०१३ । झा०१३१×१ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-भन्यातम । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७८४ । ड भण्डार ।

१६६४ प्रति स०२। पत्र स०१४। ले० काल स०१८८३। वे० स०१७३७। ट मण्डार।

१६६६ समाधिमरणस्वरूपमापा । पत्र स० २५ । मा० १० $\frac{1}{2}$ \times ५ इख । भाषा–हिन्दो । विषय– भध्यात्म । र० काल \times । ले० काल स० १८७८ मगसिर बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ४३१ । श्र भण्डार ।

१६६७ प्रति स०२। पत्र स०२५। ले० काल स० १८८३ मगिमर बुदी ११। वे० स० ८६। ग भण्डार।

विशेष-कालूराम साह ने यह ग्रन्थ लिखवाकर चौधरियो के मन्दिर मे चढाया ।

१६६८ प्रति स० ३ । पत्र स० २४ । ले० काल स० १८२७ । वे० स० ६६६ । च भण्डार ।

१६६६. प्रति स० ४। पत्र स० १६। ते० काल स० १६३४ भादवा सुदी १। वे० स० ७००। च

१६७० प्रति स० ४। पत्र स० १७। ले० काल स० १८८४ भादवा बुदी ६। वे० स० २३६। छ भण्डार।

१६७१ प्रति स०६। पत्र स०२०। ले० काल स०१८५३ पीप बुदी ६। वे० स०१७५। ज भण्डार।

विशेष--हरवश खुहाङ्या ने प्रतिलिपि की थी।

१६७२ समाधिशतक—पूज्यपाट । पत्र स० १६ । भा० १२ \times ५ इख । नापा-सस्कृत । विषय-भध्यातम । र० काल \times । पूर्ण । वै० स० ७६४ । ऋ भण्डार ।

१६७३ प्रति स०२। पत्र स०१२। ले० काल 🗶 । वे० म० ७६। ज भण्डारं।

विशेष--प्रति सस्कृत टीका सहित है।

१६७४ प्रति स०३। पत्र स०७। ले० वाल स०१६२४ वैद्याख बुदी ६ । वे० स०७७ । ज

विशेप-सगही पन्नालाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१६७४ समाधिशतकटीका—प्रभाचन्द्राचार्य। पत्र स० ५२ । ग्रा० १२% ४५ इख्र । भाषा-स्तृत । विषय-मध्यातम । र० माल ४ । ले० काल स० १६३५ श्रावणा सुदी २ । पूर्ण । वे० स० ७६३ । क भण्डार ।

१६७६ प्रति स०२। पत्र स०२०। ले० काल 🗴 । वे० २००७६४ । क भण्डार ।

१६०० प्रतिस्य १ । पत्र संदर्भाने करतार्थ १४१ प्रमुख बुधी १३४ व संदर्भा प्र विकेष-प्रतिसंख्यानीकास्तित है। बस्तुर विजयिक्ति हर्षेती ।

ावकर—प्रतिस्त श्रीयण से काले काले ×ावे संवेक्षण स्वयारा १६०८ प्रतिस्त श्रीयण से काले ×ावे संवेक्षण स्वयारा

्रिक्ट प्रतिसंधायत्र वं १४ कि राष्ट्र । वे वं अवश्व क्रमणारः।

१६८ समाधितातकटीका \longrightarrow ावय वं १६) सा ११८८५ इझ । जासा-संस्कृत । विवय-सम्प्रद्र । एंकल \times । वे सन्द \times । पूर्ण । वे वं १६९ । सामध्य ।

१६८१ श्रंतीवर्षणासिकः—गीतसत्वासी । पर्वर्ष १६। सा १_५४४ इक्ष । भागा-प्रकृत । विदय-सम्प्रता । ए काक ×1वे काल ×1कुसी । वे ४ ७०६] कृतस्वार ।

विवेच-चंत्रक में, टीका वी है 1

१६६२ स्वावर्णमध्यिम-रह्यु । प्यर्थ देशसा ११४६ द्वा । सप्त-सप्त व ∤र क्षा × । के सम्बद्ध रेक्टर पीच सर्थे देश देश र क्यारा

विकेत--- विकारीयसायों ने प्रवर्ध अंतिविधि करवामी थीं । अवस्थि---

बेनर् १७१६ वर्ष निर्धा गीव गति » तुम विशे नहारमानियन यो बैस्टिक्सी विश्वसम्भे बाह्य मी हैस्टरन रुप्तुन बह्य को मेनरम बाहुन असः नवन पुत्र बाह्य रावतकारी । वैर्थित पुत्र बाह्य भी वरिष्ठकी सुर्धीन पुत्र बाह्य देवती । वर्षित बाह्य वो राज्यानवी का पुत्र योजन बाह्य भी निहारोगराच्यो निवारणे :

> वोहता-पूरव वायक सी पत्ने, इस स्करीय विस्ता । को परतकि रेकिने वीचे विहासीसक्त ॥

सिक्ट महत्त्वा हू वरतो पंत्रित परवर्ताची रा नेवा बराटर क्ये पाती पाँचे श्रीवासाम् मुकार क्यि गर्म ।

१६८६ समीपरायक—साज्यसम्। यत्र र्षः १४। या ११४० वसः | यसा–हिन्से | विवद-समास्त्र । र मास × । ते जल × । पूर्व । ते वं कन्द । त्र समार |

निधेप-- सम्बद २ पनी में चरणा सतक नी है। और वीली सीर से नशी हुई है।

१६८४ छवाबछचरी '''''ा नव वं १वे ७। या ११×४६ दश (बास-बाह्य) विस्त-समाय (र समा×) ने नामा×(महर्च) वे र्ष (धानचार)

१६८२. लारोहणाः । पर वं १६। मा १ ×५२ इक्षः भाषा-चंदातः । पिय-मोतः । र सम्ब \times । में नाम चं १ १६ नंतरिर दुरी १२ । दुर्गी वे चं १४१। क्षा मध्यारः ।

विशेष-प्रति हिनो शिला सहित है। वेकेक्सोर्ति के विषय स्थापन ने शिला सिसी थी।

१६८६ स्वातुमवद्ययः—जाबुद्ध्यः । वर वं २१ । या १२४ ३ ध्या । धवादिन्धे (रद)। विदय-सम्प्रातः । रंजानं वं १९६६ वेद पूरी ११ । ते जास ४ । द्वर्ता वे वं १५० । झामन्यार।

१९८० इठकोल्लीविका === । नगर्व हा। धा ११४६६ दक्षः नगरा-संस्त्व । रियक-सीकः । र सन्त्र ४ के गर्व ४ । कार्यों । वे वे ४४४ । व सम्बर्धः

विषय-न्याय एवं दर्शन

१६८८ अध्यात्मकमलमार्चाण्ड—कवि राजमल्ला। पत्र स० २ से १२। मार्व १०×४३ इख। गपा–सस्कृत | विषय–जैन दर्शन । र० काल ४ | ले० काल ४ | भपूर्गा | वे० स० १६७५ | स्त्र भण्डार |

१६८६ श्रष्टशती-श्रकलकदेव। पत्र स० १७। ग्रा० १२×५३ इख । भाषा-संस्कृत। विषय-जैन दर्शन । र० काल 🗙 । ले० काल स० १७६४ मगसिर बुदी ⊏ी पूर्ण । वे० स० २२२ । ऋप मण्डार ।

विशेष-देवागम स्तोत्र टीका है। प० सुखराम ने प्रतिलिपि की थी।

१६६० प्रतिस०२ । पत्र स०२२ । ले० काल स०१८७५ फाग्रुन सुदी३ । वे० स० '१५६ । ज मण्डार ।

१६६१ श्रष्टसहस्री—श्राचार्य विद्यानिन्दि । पत्र स० १६७ । मा० १०४४३ इख । भाषा-सस्कृत । विषय—जैनदर्शन । र $oldsymbol{\circ}$ काल imes । ले $oldsymbol{\circ}$ काल स $oldsymbol{\circ}$ १७६१ मगिसर सुदी ५ । पूर्ण । वे $oldsymbol{\circ}$ स $oldsymbol{\circ}$ २४४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--देवागम स्तोत्र टीका है। लिपि सुन्दर है। मन्तिम पत्र पीछे लिखा गया है। पं॰ चोखचन्द ने भपने पठनार्थं प्रतिलिपि कराई । प्रशस्ति-

श्री भूरामल सघ महनमिए , श्री कुन्दकुन्दान्वये श्रीदेशीगएगच्छपुस्तविश्वा, श्री देवसघाग्रएगि सवत्सरे चद्र रघ्र मुनोदुमिते (१७६१) मार्गशीर्षमासे शुक्कपक्षे पचम्या तिथौ चोखचंदेग् विदुपा शुभ पुस्तकमष्टसहस्त्र्याससप्रमा-गोन स्वकीय रठनार्थमायतीकृत ।

> पुस्तकमष्ट्रसहस्त्र्या वं चोखचद्रेश धीमता। प्रहीत शुद्धभावेन स्वकर्मक्षयहेतवे ॥१॥

१६६२ प्रति स०२ । पत्र स०३६ । ले० काल 🗵 । श्रपूर्ण । वे० स०४० । इङ भण्डार ।

जैन न्याय । र० काल ⋉ । ले० काल स० १६३६ कार्त्तिक सुदी ६ । पूर्स । वे० स० ४८ । क मण्डार ।

विशेष —िलिपिकार पन्नालाल चौधरी । भीगने से पत्र चिपक गये हैं ।

१६६४ प्रतिस०२ । पत्रस०१४ । ले०काल ४ । वे०स०५६ । काभण्डार ।

विशेप-कारिका मात्र है।

१६६४ प्रतिस०३ । पत्र स०७ । ले०काल 🗙 । वे०स०३३ । ग्रपूर्गी । च भण्डार ।

```
१३० ] [ स्वाय पव दर्शन
```

१६६६ म्याससीसीसां समस्यसङ्ख्यार्थं। पत्र सं ४ । या १२_५×६ इञ्च । वसा-संस्तृतः। विवय-मेव स्थयः। र कश्यः ×ावे तकासं १८१२ सस्यक्तः सूत्री ७ । पूर्णः। वे सं ५ । कृत्यधारः।

विदेय—इत प्रत्य का दूतरा शाम 'वेनावनस्तीव ततीक सहस्रती' दिना हुया है ! १६६० प्रति सः २ (पन सं ११) वे कल्ल ×ावे सं ११। कृष्यस्थार !

िरधर---प्रति ६ सात दीमा बहित है। १६६८--- प्रति संदेश पर वर्ष के कल ×ावे संदश कालार।

रेडेस्ट प्रति स्ता श्री पर चं १ | ने नाव ×ावे सं ६२। ६ जवार | १४०० व्याप्रतीमोता**र्वाहरि विद्या**यन्ति । पर सं २२१। या १८४७ इसः वास-संस्ता

विश्व-न्यास । र. कस्त × । ते. जाता वं. १७६६ यत्तरप कुरी १४ । ते. चं. १४ । त्रिकेस—१६० गा ताथ व्यक्तवी थान्य वन्ता. व्यवस्था ते हैं । यत्तपुरा बाव ने बहाराजाविरान्य राजनिर्द

को के सावपराल में च्युकुण ने राज्य को प्रतिक्षिति करणायी थी। प्रति काफी वही चाइव भी है। १००१ क्रिकार २ । यस सं २२४। के कस्त्र ×ा के संबद्ध किल्लार।

विकेत—स्थि नहीं साहज की तथा सुन्दर विकी हुई है। प्रति प्रदर्शन नीव्य है।

१७०२ प्रतिस्त ने राम से १७२ । सा १९८६_८ इक्षा में शत्म के १०४ समाग्र हुँ^ह र । समी ने से ७३। क जमार।

१७०३ च्यासमीमांसामाना—स्वयनम् इत्यक्ता।ययथं ३२।या १९८६ एकः । नारा दिल्ये। विका-न्यादः र समार्थः १६६। के कालः १३ । दुर्का। वे थः ६८६। या सम्बारः।

स्वय-न्यानार पत्तक १९६१ ल पत्ति १ । १६६४ व व व १९६१ व्यास्थारा १७४४ व्यासायपञ्चिर—चेत्रकोतायमधी १ । था १ ×१ व्यास्था—चेत्रका। विवर-

वर्धयार याल ×ाने याल ×ापूर्वाये वं १ । का सम्बारः विदेव—१ कार्षे ४ का तक प्रावचनार ४ वे १ तक स्वतंत्र कमा सीर हैं।

प्राञ्चनसार-प्रोञ्च विधिर वालीव रिवनमन्त्रियोच व्यक्तिनवेगेमेवं पविते ।

र्भ+ ४. प्रविद्यं २ । पत्र वं ाने याल यं २ १ चळळ बुद्यो ४ । वे वं २२० । व्य

प्रकार । विमेच—साराम में बाबुधवार तथा कशर्मनी है। संबद्ध से बाबुचल कर ने प्रशिविधि में भी।

> १७६ प्रतिसं ३ । पत्र सः १६ । ने नल × । ने सः ७६ । क्रायकारः १७७७ प्रतिसः ४ । पत्र सं ११ । ने नल × । स्पूर्णः । ने क्रा३६ १० वसारः ।

(1868), प्रतिस्य शायम त १९।वे नास ×ावे ने वास्त्रकार। १९७६: असिस्य के स्थापन से १९।वे नाम ×ावे ने भावत्रकार।

क्षित - मुख्यम के बाकार्य विभिन्न के पटनार्व प्रतितिहि की बनी जी ।

न्याय एव दर्शन]

१७१० प्रतिस० ७ । पत्र स० ७ से १५ । ले० काल स० १७८६ । भ्रपूर्ण । वे० स० ५१५ । त्र भण्डार ।

१७११ प्रति स० = । पत्र स० १० ले० काल 🗙 । वे० स० १८२१ । ट भण्डार ।

विशेप--प्रति प्राचीन है।

१७१२ ईश्वरवादः । पत्र स०३ । म्रा० १०४४ दे दख । भाषा—सस्कृत । विषय-दर्शन । र०

विशेष -- विसी न्याय के ग्रन्थ से उद्घृत है।

१७१३ गर्भपडारचक—देवनिद्। पत्र स०३। मा०११ \times ४६ इख्र। भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन। र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण। वे० स०२२७। मा भण्डार।

१७१४ ज्ञानदीपक । पत्र स०२४। भा०१२×५ इख्न । भाषा—हिन्दी । विषय—न्याय। र० काल ×। ते० काल ×ं पूर्ण। वे० स०६१। स्त्र भण्डार।

विशेष-स्वाध्याय करने योग्य ग्रन्य हैं।

१७१४ प्रति स॰ २ । पत्र स० ३२ । ले॰ काल 🗡 । वे॰ स॰ २३ । म्ह भण्डार ।

१७१६ प्रति स०३ । पत्र स०२७ से ६४ । ले० काल स०१८५६ चैत बुदी ७ । झपूर्ण । वे० स०१५६२ । ट भण्डार ।

विशेष-श्रितम पृष्पिका निम्न प्रकार है।

इसो ज्ञान दीपक श्रुत पढ़ो सुगो चितधार।

सब विद्या को मूल ये या विन सक्ल प्रसार ॥

इति ज्ञानदीपक नामा न्यायश्रुत सपूर्णं ।

१७१७ ज्ञानदीपकर्नुत्तः पत्र स० ⊏ । झा० ६३ूँ ४४ इञ्च । भाषा-सस्कृतः । विषय—न्याय । र० काल ४ । ले० वाल ४ । पूर्णा । वे० स० २७६ । छ्यु भण्डार ।

विशेष--प्रारम्भ-

नमामि पूर्णचिद्र प नित्योदितमनावृत ।

सर्वाकाराभाषिभा शक्त्या लिगितमीश्वर ॥१॥

ज्ञानदीपकमादाय युत्ति कृत्वासदासरै ।

स्वरस्नेहन सयोज्य ज्वालयेदुत्तराघरै ॥२॥

१७१८ तर्कप्रकर्मा ो पत्र स० ४०। मा० १०×४३ इख्राः भाषा-संस्कृत । विषय-न्याय । रऽ पाल ४ ले० काल ×ी मनूर्मा । वे० स० १३५८ । ऋ भण्डार ।

१७१६ तर्कदीपिका । पत्र स०१५। ग्रा०१४×४६ इख्र । भाषा—सरवृत । विषय—स्याय । र० भाल × । त० माल म०१८३२ माह सुदा १३ । वे० स०२२४ । ज भण्डार ।

```
ि स्वाय एवं स्टीय
111
          १∔२ तर्वध्यमास्य ***** पत्र सं वैद्राधा १ ४४ - दश्रा बाला-संस्ट्रा विवय-भागः।
र नाम ×। मेर नास ×। धपूर्ण एवं वीर्याः वे दे १६४६ । बा बच्छारः
          १४२१ तथेंग्रापा-चेताव मित्र | पन वे ४४। मा १ xx. इस । वापा-चेतार । निम-
न्यान । र नाल ≍ाने कमा ≍ाने वं ७१। कामधार।
          १७२२, प्रति सं २ । पत्र सं २ के २६ । के नाम सं १७४६ बारवा बुधी १ । वे सं १०१।
क नव्दार ।
          १८२३, प्रतिस ३। पर र्व ६। या १ XV इताके राजवं १६६१ लोह पुरी १। वे
र्थ २२४। अस्मिनार ।
          १७२५ तकसामामकारिका—मासम्बन्द्र । यद वं ३६३ सा १ ×३ दक्क । मारा-वंसर ।
रिवर-माप । र्वलर × ) के बाल × । वे स दहेर । भा मध्यार ।
          १७२४, सर्कदास्वरीयिका-गुव्यस्तस्यि। यत्र सं १३४ । वा १२४१ इतः वाला-वंसरः।
विवय–सासः। र नसः ×। ने नसः ×। ब्यूर्लं | वे सं २२६४ | बर वयार ।
          विक्रेय---व्यः क्षरिकाः के वहवर्षेत्र समुक्यं नी हीरा 🖁 ।
           १७२६. तर्कसमञ् —कम्प्रेसह। पत्र वं ७ । था ११<sub>८</sub>×१३ इव । मता-धंस्त्त । विदर-गर।
र बा<del>र्ड</del>×ोने नल ×ोडूर्छ। नै डंद २ ] भाजमार [
           १७२७ प्रतिस २ । तत्र सं४ । ते तत्त सं१ २४ व्यवसाद्वरी ३ | वे सं ४७ | व
 REET !
           विकेद--- रात्रण जुलाधन के बालन में लच्छीयान के बेबलपुर के स्वाटनार्थ प्रशितिति की भी ।
           १७२८. प्रतिस्त ३। पत्र तं ६। ते नाम तं १ १९ सक्त सूरी ११। वे र्त प्राप्त
 क्कार ।
```

निरोप--गोबी नाएकपन्त श्रहाच्या की है। जिसक विजयान गीव मुद्री १२ ईवत् १ १६ व्य की ^(सर्व)

१७२६ प्रति सं शायम न । वे नाम सं १७६६ येन मुद्री १२ । वे सं १७४६ । ह

विशेष-म्यानेर के वैतिनाथ गैलावद में अनुरस्क जनवरीति के विश्व (साम) दोपराज ने स्वपनार्ण

१७२ मितिसं० ह। यस वं ४ । ते याला वं १ ४१ वंगबिर पूरी ४ । वे दंश । वे

१७६१ प्रति स् ६ । पर क टाने यक्ता वं १ ६६ । वे लं १७११ । ट मण्या^{र ।} विदेश—स्वार्थ वारोम्स वे मणास्य मुस्यानीति ने समने द्वार के प्रतिनिधि नी ।

हवा है।

REST 1

बच्चार ।

इतिनिधि की की ।

रिक्टेक-केला बतराशसर प्रशासे ।

नोट-उक्त ६ प्रतियों के श्रतिरिक्त तर्नसग्रह को श्र भण्डार मे तीन प्रतिया (वे० स० ६१३, १८३६, २०४६) ड भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २७४) च भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १३६) ज भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ४६, ४६, ३४०) ट भण्डार मे २ प्रतियां (वे० स० १७६६, १८३२) और हैं।

१७३२. तर्कसमहटीका । पत्र स॰ ८ । ग्रा॰ १२५×५ इद्य । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । र॰ काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे॰ म॰ २४२ । व्य भण्डार ।

१७३३ तार्किकशिरोमिणि—रघुनाथ । पत्र स० = । ग्रा॰ = ४४ इख । भाषा-सस्द्रत । विषय-न्याय । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे॰ म॰ १४=० । श्र भण्डार ।

१७३४ दर्शनसार—देवसेन । पत्र सब् १ । ग्राव १०५×४६ इख । भाषा-प्राकृत । विषय-दर्शन । रव काल सव १६० माध मुदी १० । लेव काल 🗙 । पूर्ण । वेव सव १८४८ । ख्र भण्डार ।

विशेष--ग्रन्य रचना घारानगर मे श्री पार्खनाय चैत्यालय मे हुई थी।

१७३५ प्रति सः २। पत्र स॰ २। ले॰ काल स० १८७१ मार्च सुदी ४। वे॰ स॰ ११६। छ् भण्डार।

विशेष—प० वस्तराम के शिष्य हरवश ने नेमिनाथ चैत्यालय (गोधो के मन्दिर) जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

> १७३६ प्रति स०३। पत्र म०७। ले० काल ×। वे० स• २५२। ज भण्डार। विशेप---प्रति सस्कृत टब्बाटीका सहित है।

१७३७ प्रति स०४ । पत्र स०३ । ले० काल 🗴 । वे० स०३ । व्याभण्डार ।

१७३८ प्रति स० ४ । पत्र स० ३ । ले० काल स० १८५० भादवा बुदी ८ । वे० सं० ५ । व्य भण्डार ।

विशेष-जयपुर में प० सुखरामजी के शिष्य केसरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

१७२६ दर्शनसारभाषा—नथमता। पत्र सं० ८। झा० ११४५ इख्र। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-दर्शन। र० काल स० १६२० प्र० श्रावरण बुदी ४। के० काल ४। पूर्णा वै० स० २६५। क भण्डार।

१७४० दर्शनसारभाषा—प० शिवजीलाल । पत्र स० २८१ । मा० ११४८ इख । भाषा-हिन्दी (गदा) । विषय-दर्शन । र० काल स० १६२३ माघ सुदी १० । ले० काल स० १६३६ । पूर्ण । वे० स० २६४ । क भण्डार ।

१७४१ प्रति स०२। पत्र म०१२०। ले० काल 🗙 । वे० स० २५६। हः भण्डार ।

१७४२ दर्शनसारभाषा । पत्र स० ७२। मा० ११३×५ देख । भाषा-हिन्दी । विषय-दर्शन। र० काल ×। ले० काल ×। मपूर्ण । वे० स० ८० । स्व भण्डार ।

१७४३ द्विजवचनचपेटा । पत्र स० ६ । ग्रा० ११४५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । र० काल ४ । ने० स० ३८२ । का भण्डार ।

१७४४ मितिस २ । पचर्च ४ । के नल × । वे वे १७६ । इ. लग्नार ।

विदेश—मधि प्राचीन है :

१०४४ जरूपका—देवसेल । पन सं ४४ । सा १ ३४० इक्ष । भारत शाहर । विषय-सार नसे ना गर्लन । रंपान ४ । के काम सं १६४६ पीय सुरो १६ । पूर्ण । वे सं १६९ । क समार ।

निर्मेत—अपन का हवरा गाम शुक्रवीकार्य माना प्रवृति की है। जक्ष त्रति के प्रतिहास कृतवार में तीर प्रतिहास के वेदन के प्रतिहास के त्रवार में तीर

१७४६ जल्ककाराण-हिसास । यह संदेशा वा १२_५४४, इम्रा । अवा-हिर्य (का)। विवय-कार गर्य रावर्तव । एकार संदेशकारूल पुत्री र । ने राज्य संदेशका । कुरी ने वे

न्यय-स्थानस्थानस्य राज्यस्थारं कलाचं १०१६ काञ्चल द्वारा । मं नलाचं १६४ । द्वाराण १९७ । क्वानकारः १७५७ अस्तिस्थ २ । पणावं ३ । में नलाचं १७१९ । में चंदास्थारः।

काया चौर है। रेक्ट्रेस्ट सम्बद्धमाना —। वज्र सं १६। सा १ X४ इक्ट। जन्म-हिन्दी : र वज्र X । नै कल सं १६४० चन्नाद कुरी ६। पूर्व । ने सं १६८। क जन्मार।

१४४६ सम्बद्धमानकाशिबीठीका—सिङ्गाखनम् सम्बद्धाः १४४ (१६०) सा १२८% । इत्र । मना-निर्मे (पर) । विषय-नार । र राज्य सं १६७४ । दुर्व । वे ४१ । सः नगरः ।

विचेत्र—या द्रीका कलपुर विंद्र से भी नहीं थी ।

रेक्ट प्रतिबा सायण वे स्थाने काला प्राप्त वे कदशाब्द मध्यारा

रध्येर प्रतिसंदे।पण सं२२४।के जलातं ११६ कहान सूरी ६।वे संदेशीक समार

विश्वेष-व्यवपुर मैं महिलिकि की वर्षी थी।

१५४२ स्वास्कृत्युवयात्रीयक-सङ्घ्यवर्षकीय । एवं वं ११। या १ ३×४ई रसः। यत्री-बस्तुतः (रिवर-वर्षपः)रः कृत्रः । ते कृत्रः × । पूर्णः । वे वं २७। या प्रधारः।

विकेप—188 १ के शतक व्यामनुबुवणकोदय १ परिचीत तथा वेप पूर्वों में महत्त्वतंत्रकारमुप्ति नव-यन वर्षक हैं।

प्राप्ताच्या १७४२ मधिसं ?ाल्य वंदेश के शलावं १६४ प्रील स्थीक हुने सं र ार्थ

रिकोय—समार्थ राग में प्रतिसिधि की की ।

क्यार ।

१७५८. न्यायतुमुत्चिन्द्रिया-प्रभाचन्द्रदेय । पत्र स० ४८८ । मा० १८ई×४ इझ । भाषा-सर्वत । विषय-स्थाय । र० पात्र × । से० पात सं० १६३७ । पूर्ण । वे० ग० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष-अट्टानत्वम पृत्त न्यायनुमुद्रचन्द्रोदय गी टीमा है।

१७५४ च्यायदीपिका—धर्मभृष्ण्यति । पत्र स० ३ से ६ । मा० १०३×४६ इझ । भाषा-सस्त्रत । विषय-स्थाय । र० कान × । ने० कान × । पूर्ण । वे० म० १२०७ । स्त्र भण्डार ।

नोट--उक्त प्रति के प्रतिरिक्त क भण्डार में २ प्रतिया (य० स० ३-७, ३६८) घ एउ च भण्डार म एव २ प्रति (वै० स० ३८७, १८०) च भण्डार में २ प्रतिया (वै० स० १८०, १८१) स्वया ज भण्डार में एक प्रति (वै० स० १४) मौर है।

१७४६ न्यायदीपिकाभाषा—सदामुख कासलीवाल । पत्र म० ७१ । मा० १४×७६ इझ । भाषा— हिन्दी । विषय-दर्शन । र० काल स० १६३० । ले० नाल म० १६३८ वैशाय मुदी ६ ॥ पूर्ण । वे० स० २४६ । स भण्डार ।

१७४७ न्यायदीपिताभाषा—सघी पन्नालाल । पत्र म० १६० । घा० १२१×७६ एख । भाषा-हिन्दी । विषय-न्याय । र० काल म० १६३५ । ने० नान न० १६४१ । पूर्ण । वे० म० ३६६ । क भण्डार ।

१७४६ न्यायमाला—परमहस परिव्राजकाचार्ये श्री भारती तीर्धमुनि । पत्र स० ६६ रे १२७ । मा० १०३×४३ टब्र । भाषा-सस्युत । विषय-याय । २० माल × । ले० माल स० १६०० सारण् बुदी ४ । मपूर्ण । वै० म० २०६३ । आ भण्डार ।

१८४६ न्यायशास्त्र । पत्र स० २ मे ५२ । मा० १०३/४ टव । भाषा-सस्युत्त । विषय-स्याय । र० कात 🗙 । ते० कात 🗙 । मपूर्ण । वे० स० १६७६ । ऋ भण्डार ।

> १७६० प्रति स०२। पत्र स• ८। ते० काल 🔀 प्रभूगी। वै० न०१६८६। स्त्र भण्डार। विशेष—किसी न्याय ग्राच से उद्धृत है।

१७६१ प्रतिस०३ । पत्र स०३ । ले० काल 🗴 । पूगा । वे० न० ४ ४ । जभण्डार ।

१७६२ प्रति स०४। पत्र म०३। स० काल 🗴 । अपूर्ण। ये० स०१ ८६८। ट भण्डार।

१७६३ न्यायसार—माधवदेव (लद्मग्रादेव का पुत्र) पत्र स० २८ मे ८७ । मा० १० १/४ १ इन । भाषा सस्तृत । विषय-न्याय । र० बार स० १७४६ । मपूर्ण । वे० स० १३४३ । श्र भण्डार ।

१७६४ न्यायसार । पत्र म०२४। चा०१०×८६ दश्चः। आषा-सस्युतः। विषय-'यायः। र० भालः ×। ले० मालः ×। पूर्णः। वे० म०६१६ । स्त्र भण्डारः।

निरोप--भागम परिच्छेद तर्भपूर्ग है।

१७६४ न्यायसिद्धातमञ्जरी--जानकीनाय । पत्र स० १४ ते ४६ । झा० ६१८२१ इख्र । भाषा--सस्कृत । विषय-न्याय । र० वाल 🗶 । ते० काल स० १७७४ । धपूर्ण । वे० स० १४७८ । स्त्र भण्डार । १२६] श्वास कर हरीन

१७६६ व्यविधिक्रांतसक्करी—अष्टाशार्थे जुडासिया। यत्र सं २ । या ११४६ इक्षा प्रता-वस्तुतः।वैषय-न्यारार कला×ाने कला×ानुर्यास्थे सं १६१ क्षा वस्तुरः।

विकेत-सरीक प्राचीन प्रति है।

१७६७ स्थासमुक्तः पान सं४। सा १०४६ इ.स. । वाला-संस्टुतः विवय-स्था। १ रुक्तः ४। ते स्थलः ४। इर्षः वं १९६। सामकारः।

रिकेर—हैप म्याकरात में हैं न्यास कामणी मुनों रायबह किया पता है । शाकालमा ने प्रतिनिधि तो ही । १७६८ - स्टूरीति—मिष्णुसह । तव सं २ के ६ । या १ पु×१३ दक्षा असा-संस्तृत । तिस्स-मासार नार ×। ने नाल ×। स्टूर्णी ने सं १२६० । का स्वसार ।

विक्रेय -- व्यक्तिय पुरिनश- इति शावार्थ वैकार्य वैकार्य विकासि विच्युक्टू व्यक्तिया सत्त्वपुरत्ते । क्टा । प्रति प्राचीन है }

१७६६ पञ्चलीका—विवासमि । यस सं ११३ था १९३×६ इस । अल्य-संस्था । निरंत-समा र कम × । के नमा ×) समुधी वे सं ७०६ । का समार ।

१००० प्रतिसं २।यमसं १६। ते कलासं १६०० सलोन बुधी ६। में सं १६४९। ह भवार।

विदेश—बेरपुरा में की जिन जैलासन के सिक्क्षनीचन्त्र ने प्रतिसिद्धि की वी ।

१७ १ वक्षप्रीका—पात्र केसारी । पत्र वं १७ । बा १९६×६ इस । वर्षमा-संस्तृत रे विका-सम्बद्धार करू × कि वास वं १६६४ सम्बोन नही ११ । वर्ष १३ व १९६० । क क्ष्यार रे

१८६२ व्रक्षित २ | पन वे २ | के नमा x | के ते प्रा | क बयार |

क्रिकेस—संस्थत शिका **व**ित्य है ।

१४७६ परीक्षमुक्त-माद्विक्यक्षक्षिः पत्र वं १ । या १ ४६ इख । अला-संस्तृतः विदर्गन्तात् । र स्त्र ४ । के या ४ । पूर्णः वे सं ४ १६ । क लखारः ।

्रभ×प्रतिसं २ । पाक ६ । ने नलार्च १६६ चलका पूरी १ । वे दरहा प

अध्वार 1

१००४ प्रतिसः ६ । पर नं १० वे १६६ । ते नाप ×) बहुर्ला हे वं ११४ । च बगरः। विदेश-चंदरुष डीमा वरित है।

१७०६ प्रश्चिर्स ४ । यम सं६ । ने नाल × । वे सं११ छ भण्यार ।

१७०० प्रतिस शायत्र वं १४।ते यालावं १६ व | वे सं १४६। श्रामणार |

सक्य पान राधे और बिधि निषे पूर्वि वे नारनावते)

१७३८, प्रति से ६। पत्र में ६। के नाल ४। वे तं १७३ । ट बन्तार)

१७९६ परीत्तामुखभाषा—जयचन्द छावडा । पत्र स० ३०६ । मा० १२×७५ इख्र । भाषा-हिन्दी (गद्य)। विषय—न्याय। र० काल स०१८६३ भाषाउ सुदी ४। ले० काल स०१६४०। पूर्ण। वै० स०४५१। क भण्डार ।

१७२० प्रति सः २ । पत्र स० ३० । ले० काल 🔀 । वे० स० ४५० । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर प्रक्षरों में है। एव पत्र पर हाशिया पर सुन्दर वेलें हैं। प्रन्य पत्रो पर हाशिया में केवल रेवायें ही दी हुई हैं। लिपिकार ने ग्रन्थ श्रपूरा छोड दिया प्रतीत होता है।

१७८२ प्रतिस०३ । पत्र स०१२४ । ले० काल स०१६३० मगितर सुदी२ । वे० म०५६ । घ मण्डार |

१७८२ प्रति स०४ । पत्र स०१२०। भा०१०ई×५६ इख । ले० काल स०१८७८ श्रावरा बुदी १ । पूर्ण । वै० स० ५०५ । क भण्डार ।

१७=३ प्रतिस० ४ । पत्र स० २१८ । ले० काल ४ । वे० स० ६३६ । च भण्डार ।

१७५४ प्रतिस् ०६।पत्रस०१६४। ले०कालस०१६१६कात्तिक बुदी१४।वे०स०६४०। च मण्डार।

१७=४ पूर्वमीमासार्थप्रकरण-सन्नह—लोगाचिभास्कर । पत्र स० ६ । म्रा० १२ $rac{1}{2} imes rac{1}{2}$ इद्य । भाषा--मस्कृत । विषय--दर्शन । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्गा । वे० स० १६ । ज भण्डार ।

१७=६ प्रमाणनयतत्त्वालोकालकारटीका—रत्नप्रभसृरि । पत्र स० २५८ । मा० १२×४३ इख । भाषा-सम्कृत । विषय-दर्शन । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वै० स० ४६६ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम 'रत्नाकरायतारिका' है । मूलकर्त्ता वादिदेव सूरि हैं ।

१७८७ प्रमास्तिर्साय । पत्र स० ६४ । मा० १२३४४ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-दर्शन । र॰ काल ×। ले॰ काल ×। पूर्गा। वै० स० ४६७। कः भण्डार।

१७८८ प्रमाण्परीत्ता-श्रा० विद्यानदि । पत्र स० ६६ । मा० १२×५ इद्ध । मापा-सस्कृत । विषय-न्याय । र० काल 🗙 । ले० काल म० १६३४ मासोज सुदी ४ । पूर्ग । वे० स० ४६८ । क भण्डार ।

१७८६ प्रतिस०२ । पत्रस०४८ । ले०काल 🗡 । वे०स०१७६ । जभण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है। इति प्रमाण परीक्षा समाप्ता । मितिरापाढमासस्यपक्षेप्यामलके तिथौ तृतीयाया प्रमासाम्य परीक्षा लिखिता खेलु ॥१॥

१७.० प्रमाण्परीत्ताभाषा—भागचन्द । पत्र स० २०२ । मा० १२३×७ इथ । भाषा-हिन्दी (गद्य) ! विषय्म-न्याय । र० काल स० १९१३ । ले० काल म० १९३५ । पूर्ण । वे॰ म० ४९९ । क मण्डार ।

१७६१ प्रतिस०२।पत्रस०२१६।से०काल ४।वे०स०५००। काण्डार।

१७६२ प्रसास्प्रसेयकलिका—नरेन्द्रसेन। पत्र स० ६७ । मा० १२×४३ इख । मापा-संस्कृत। विषय⊸न्याय । र० काल × । ले० काल स० १९३ ⊏ । पूर्गावे० स० ५०१ । क मण्डार ।

रेक्ट३ प्रमास्त्रमीमांसा—विद्यामण्डि । यत्र तं ४ । या ११३/४०३ रख । वारा—बेन्डब ।

दिस्त-भागभृतं पाल Xामे पात Xामुर्तामे सं १९। का स्थापार। १७६२ प्रसादसीमोसा****--। पणाचं ६९। सा ११ X दक्षा वाला-संस्तृत । तिस्य-भागा

र वस्त्र ×। के माल सं १६२० धानान तुरी १६। पूर्णी वे लंद २० सा अन्तार। १७४४ स्थायतस्थामानीयस्थानार्थे स्थानस्य । वस तं १७४१ सा १९४६ स्था । वस-

नंत्रुतः (दयद-पर्यव। र वान ×। ने वान ×) शतूर्यः । वे वं वेश्वयः कष्यारः । विरोप—का १३४ नवा २७३ ते सामे नहीं है ।

१७६६ प्रतिस्त्रं कापपानं इत्। में बालानं तरप्रत्येक्षपुरीय । वे संग्रहाय सम्बद्धाः

१८६७ प्रतिस दे|यम संद्राते प्रसन्धायपूर्णांचे संद्रभाक्त सम्बद्धाः १७६६, प्रतिसंधायन संद्रा कियास ≻ादे संदर्भाष्ट वस्तार |

रिदेप—६ नको कर संपट्टन दौताणी है। नर्गक सिक्षि ने परेद्दरिवरियो के बच्चन तक है। १८६६ प्रति संक्षाचण ने अने दथा सार्दरियद दक्षाने वात ≻ास्पूर्ण । ^{है}

२१४०।ट ज्यार । १सः अनेयरतमाका—अनग्यकीर्व। यस वं ११६। या १२४६ रखाः यसा–यस्त्रण। ^{(राप}न

रम् प्रस्थात्मश्रामा—सम्मयनावाचापरस्य १६६१मा १८८६ इक्षां सरा-यस्त्रास्थाः सम्मारं यस्त्र×३मे यस्त्र नं १६१४ बारमा सूरी ७।वे में ४६९। इत्र समारः

१८ के असिकों के।यरने के। में नामाओं १७१७ शासबुधी १ ।के में १ रे। फें कमार।

रिमेर---मक्कपपुर ने स्तान्ति। ने प्रतिक्रिति गी गी ।

१८ ४ आवशीरिका—कृष्य सर्मा। पर्यक्षे ११। आ ११×६_५ १७३ मना—संसर। विशेष्ट स्टास् पानः स्थापना स्थापना । वे वे १९६० ह समार।

विदेश--विदानमञ्जरी भी ध्वान्या से दूर्व है ।

ांक ४. स्त्राविद्याविद्यालामा । त्रवार्था १६ के १६ १ था १ है ४४४ है इस । जाना-संतर्थ । विद्य-स्वार्थ । हो संतर्थ थे १६६६ बस्तुल सुदी ११ । ब्यूगो । के सी ११ १ । ब्यूगोगी

निमेश--नंबय १९६६ वर्षे काहुता नुरी ११ बोधे क्रमीड बीरालयनाथे सुदार प्राथिन निर्मनार्थ

क्ष्मुलाधि ।

१८०६ युक्त्यनुशासन्—आचार्य समन्तभद्ग । पत्र स० ६ । प्रा० १२३×७३ डख । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । कि० काल × । पूर्ण । वे० स० ६०४ । क भण्डार ।

१८०७ प्रति स०२। पत्र स०५। ले॰ काल ×। ६०५। क मण्डार।

१ूप्तर्य युक्तयनुशासनटीका—ियानिन्द । पत्र स० १८५ । मा० १२५ ४५ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-न्याय । र० काल × । ते० काल स० १६३४ पोप सुरी ३ । पूर्ण । वे० स० ६०१ । क भण्डार ।

विशेय-वावा दुलीचन्द ने प्रतिलिपि वराई थी।

१८०६ प्रति स० २। पत्र स० ५६। ले० वाल ×। वे० स० ६०२। क मण्डार।

। म१० प्रति स०३। पत्र स०१४२। ले० काल स०१६४७। वे० स०६०३। क मण्डार।

१८१६ चीतरागस्तोत्र—न्या० हेमचन्द्र । पत्र स० ७ । भा० ११६४४३ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल ४ । ले० काल स० १५१२ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० २५२ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—वित्रकूट दुर्ग मे प्रतिलिपि की गई थी। सवत् १५१२ वर्षे मासोज सुदी १२ दिने श्री वित्रकूट दुर्गे अनिस्तर ।

१८१२ वीरद्वान्त्रिंशतिका—हेमचन्द्रसृरि।पत्र म०३३। मा०१२४५ छ्ख्र।भाषा—संस्कृत।विषय-दर्शन। र० नाल 🗴 । ले० काल 🗴 । म्रपूर्यो । वे० स०३७७ । स्त्र भण्डार। 💉 👙

1 4 1 1 1

विशेष---३३ से भागे पत्र नहीं हैं।

१८९६ पहुर्द्शीन्यात्ती । पत्र स० २८ । म्रा०८४६ इख्रा भाषा-सम्भृत । विषय-दर्शन । र०काल × । ले॰ काल × । म्रपूर्णी । वै० स'॰ १९५१ । ट मण्डार ।

१६९४ पहुंदर्शनिवचार "। पत्र स० १०। मा० १०५×४६ इ.च.। भाषा-सस्कृत । विषय-दर्शन। र० काल ×। ले० काल स० १७२४ माह बुदी १०। पूर्ण। वे० स० ७४२। स भण्डार।

विशेष—सागानेर मे जोधराज गोदीका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी। क्लोको का हिन्दी धर्थ भी दिया हुमा है।

१८१४ पड्वर्शनसमुद्यय—हरिभद्रसृरि । पत्र स० ७ । मा० १२३ \times ५ इ च । विषय–दर्शन । र० काल \times । के० काल \times । पूर्ण । वे० स० ७०६ । क भण्डार ।

१५१६ प्रति स०२। पत्र स०४। ले० काल ×। वे० स० ६८। घ मण्डार।

विशेप—प्रति प्राचीन शुद्ध एवं संस्कृत टीमा सहित है। १⊏१७ प्रति स०३।पत्र स०६।ले० काल ×।वे० स०७४३। ङ मण्डार।

१८९८ प्रति स०४ । पत्र स०६। ले॰ काल स॰ १५७० भादवा सुदी २। वे० म० ३६६। ल्य

१६९६ प्रति स० ४ । पत्र स० ७ । ले० काल 🗙 । वै० स० १८६४ । ट भण्डार ।

१८२० यह्दर्शनसमुख्यप्रिः नगण्यतनसूरि । पत्र स०१८५ । मा०१३×८ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-दर्शन । र० काल × । ले॰ वाल स०१६४७ द्वि० मादवा सुदी १३ । पूर्ण । वे० स०७११ । क मण्डार । १८०१ पडदरीनसमुक्पटीका----। पन सं १ । या १९३×४ इन । बाया-संस्था निमन-

रर्थेगारः शता×ाने जन×ापूर्धाने सं ७१ ।% वचार।

१८२२, समिद्रस्वेद्यास्त्राह्यामिद्रस्य **** । या १२४६ दव । याना-संस्था। विदय-पर्यक्त । र फाल ४ । के फाल वं १७२७ । वे से १६७ । का वस्त्रार्थ

रम्परेश समनवावयोध—सुवि नेबसिंहापव संदेशसा १ ४४ इ.व.(वला-संस्कृतः।विषय-दर्बन (वत नवो कावर्सन है)। र असन ४) के काव संदक्षण राष्ट्रकी वे संदश्या सम्बद्धार

प्रारम्म -- विषय-पृथि-नव्यक्ष्याः धर्मवाणा चुनिस्या ।

विषयतकृतिकामा नेतरियां सुरानाः ॥

जन्मसङ्करात्रात्तेष्णमाना स्वा मे । विश्वक स्कृति स्वत सरस्यमाने ॥१॥

भागवेते प्रसादाको कालवानवीक्क

में भूत्वा क्य वार्वेश श्यक्ति वृत्तिको बना' ।।१।।

इसके पद्माद तीवा प्राप्तव होती है । बीक्टे प्राप्तवे वर्षीजैपेटि वया सीव प्राप्तवे वटि वयनस्या ।

व्यक्तिस---

तरपुष्णं तुमि-वर्गकर्मेथिवर्गः योषां कर्णः निर्मेषाः । कम्मे वेन जनेन निरमकत्त्रस्य वी नेन्दियोदिसः ॥

स्पद्धारमार्थाणिको बन्धः वै पोत्पति वासर्ग कुनमानोर्थ । गोर्णित वैरातमर्थ लुदेले वीस्र्य पनिव्यति स्वेत प्रमारः ॥

गाण्यात वरावसत मुख्य सम्ब सामध्यः इति भी स्वत्यवाच्योगं कास्य सुनिनेत्रशिक्षेत्र विराधितं क्षां नैसं ॥

करा न्या न्यान्यसम्बद्धाः वसन् पुणनत्।शब्दाः वस्य द्वाः न्याः । १म२४ सप्तरदार्थीं वस्याः वस्य व १६१थाः ११४६६ व । बायर—वस्तरयः । निवय—वीर स्टानुवार

बार क्यानों का नर्जन है। ते जाना ×ार नामा ×ानपूर्वा | ते तं राज्य क्यारा । १०९८: स्वरपहार्थी—शिमानिका । पत्र वं ×ाज्या १ ५×५ दण । वाना-मंत्रका । तैनर्जन देवीका त्यान के मनुवार कर पराणीं पा वर्गना । पाना ×ात्र नामा ×ाड़की । ते वं ११८६। द वर्गना ।

विषय---वनपुर में प्रक्रिमिय गी थी। १८२६ सम्मतिसकें---शूक्षकयों सिक्क्सन दिवाकर। नव क्षं ४०। या १ 💢 रूप । याना--

र्थस्य । पित्रव-म्पारं पंत्राण ×ात्रे जाल ×ा धपूर्ण | वे र्थं १ १ । श्रा वच्यार । १८२७. सारसंग्रह-स्वरद्यां राज्य थे २ वे ७३ । बा⇒ १ - ×४३ इ.च. | बाला-संकृत ! विस्ते-

स्पेन हेर नाम ×ाने नाम ×ानपूर्व हो थे. ११ । डायमार। १०२८ सिक्षास्त्रमुख्यमित्रीका—सहादेवसहा पत्र वं १ । वा ११×४३ १ न । समान् संस्तुत (देवर-स्पार पाम ×ावे पास वं १०६६ | वं ११०६। का स्वतार।

विकेश-विकेश कर है ।

१८२६ स्याद्वाद्वनृतिका । पत्र स०१४। घा०११३/४४ द च । भाषा-हिर्न्या (गद्य) । विषय-दर्शन । र० मात ४ । न० मात स०१६३० फार्तिक युदी ४ । वे० स• २१६ । व्य भण्डार ।

विमेप-नागवाउ। नगर में ब्रह्म तेजपाल में पठनार्घ लिखा गया था। गमयगार में मुख्य पाठो गा प्रधा है।

१८३० स्याह्मदमञ्जरी —मिल्लिपेसासूरि । पत्र म० ४ । मा० १२३×५ हया भाषा-मस्मत । विषय-दर्शन । र० वाल ४ । ले० वाल ४ । पूर्ण । वे० म० ८३४ । छा भण्डार ।

१८३१ प्रति स्टन्। पत्र सर्पर से १०६। सेर बाल सर् १४२१ माघ सुदी ४। झपूर्ण । वेरु सर वे६६। च भण्डार।

१म३२ प्रति स०३ । पन ग०३ । पा• १२४४० इ.ग. मे० कान ४ । पूर्ण । वे० ग० ६६१ । प्र मण्डार ।

विभेष-भेवल नारिकामात्र है।

١

१मदेवे प्रति स्पर्धा गण सर वेर । सेर बाल 🗶 । धपूर्ण । वेर सर १६० । स्म अण्डार ।



विषय- पुरारा साहित्य

्ष्यि प्रशिवपुराय — विश्ववायों वास्त्यमिका वर्ष कार्यामा १६४१ है का स्वा-रीत्य । विश्व-पुराय । र वाक वं १७१६ । वे वान वं १७०६ और पुरी है। दुर्ला है वे है ११ । व नवार ।

प्रसुद्धि—संबन् १७०६ वर विधी क्षेत्र धुवी १ । बहुत्यावास्त्रको तिश्वर्धको सन्तर्भ हुर्गर्शियो सन्तराम स्वयन्तर्भ ।

१८३४८ प्रतिस्तं र। यस वं १६। वे नाम ×। महसँ। वे सं १७। आह समार।

विक्रीय-१६में वर्ष के ६४वें स्तीय वर्ष है।

१८६६ व्यक्तित्रनावपुराशः—विकासिक् । पण सं १९८१ था ६६४४ इका प्रता—वाज वा रियम-पुरस्कार नाल सं १३ ३ नालिक पुरी १६। वे नाल सं १६ वेच सुरी ६१ पूर्छ। वे सं १९०। सर समार ।

निकेर— थे ११ में इस्त्रीन नोशी के वासनन्त्र ने विकास में स्त्रीतिनि हुई थे। १६६० आसम्बाबदुाय्य — गुरुस्त्राणां । त्य थे । या १ हेऽर ह्या। सन्तर्भनार । विक्य-दुरुष्यार त्रस्त ×। के नत्त्र चे १०२० मात्या नृती १ ो प्रशी वे थे थ⊻। या सन्तर। निकेर— नत्तरुपुरुष्ठ के किया नया है।

१८३८, काराग्योकसङ्ग्रहाकाकपुरस्यकान" ""। पत्र वं कदे रशासः १२ ×६ इड । कर्ष-किसो । विवस-पान्नका । राज्य × । में कसा × (वर्षणी । वे वं के । क्षा क्षाराः ।

निवेन-द्रश्यो बम्बतार पुण्य दुव्यो का भी गर्धन है। १०३६ - व्यक्तिपुरस्य — जिस्सोनामार्थे। तम श्रं १२० । सा १ ई×१ ६चा। प्रशा—संस्थि । नियम-द्रश्यक्रार स्वता×ावे नाम सं १ १४ । दुर्शा । १ वं १९ । स्व स्वसार।

हार जना×ावे नाम न रे पेश्विष्टाने के दश्च क्यानर।
स्थित—जागुर मेर्न मुझानपण में प्रतिकित्ति की थी।
स्मा प्रति सं दश्यक प्रदेश में मान में दश्यक में से दश्यक क्यारा।
स्पार प्रति सं दश्यक प्रदेश में मान के दश्यक में मान स्थान स्

१८४४ प्रतिस०४। पत्र स०४७१। ले० काल स०१६१४ वैशाख सुदी १०। वै० स०६। घ भण्डार।

विशेष--- हाथश्स नगर मे टीकाराम ने प्रतिलिपि की थी।

१८४४ प्रतिस् १६। पत्र स०४६१। ले०काल स०१८६४ चैत्र सुदी ४। वे०स०२५०। ज भण्डार।

विशेष—मेठ चन्नाराम ने न्नाह्मण श्यामलाल गौड से श्रपने पुत्र पौत्रादि के पठनार्य प्रतिलिनि करायी। प्रमस्ति काफी बड़ी है। भरतखण्ड का नक्शा भी है जिस पर स॰ १७८४ जेठ सुदी १० लिखा है। कही कही कठिन शब्दा का सस्कृत मे भ्रये भी दिया है।

१८४६ प्रति स० ७। पत्र स० ४१६। ले० काल 🗙 । जीर्गा। वे० स० १४६। ह्य भण्डार। १८४७ प्रति स० ८ । पत्र स० १२६। ले० काल स० १६०४ मर्गासर बुदी ६। वे० स० २५२। व्य मण्डार।

१८४८ प्रति स्ट १ पत्र स० ४१०। ले० काल स० १८०४ पौप बुदी ४। वे० स० ४५१। व्य मण्डार ।

विशेप-नैरासागर ने प्रतिलिपि की थी

१=४६ प्रति स० १०। पत्र म० २०६। ले० काल 🗴 । मपूर्ण । वे० स० १८८८ । ट मण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के म्रितिरिक्त स्त्र भण्डार में एक प्रति (वे० स॰ २०४२) के भण्डार में एक प्रति (वे० स० ५६) च भण्डार में ३ म्रपूर्ण प्रतिया (वे० स० ३०, ३१, ३२) ज भण्डार में एक प्रति (वे० स० ६६६) मीर है।

१८४० स्त्रादिपुराण टिप्पण्—प्रभाचेन्द्र । पत्र स० २७ । झा० ११३४५ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल ४ । ले० काल ४ । झपूर्ण । वे० स० ८०१ । स्त्र भण्डार ।

१८५१ प्रति स 👻 । पत्र स० ७६ । ले० काल 🔀 । मपूर्ण । वे० स० ८७० । स्त्र भण्डार ।

१८५२ स्नाटिपुरास्तिरिपस् — प्रभाचन्द्र । पत्र स० ५२ मे ६२ । मा० १०५४४३ इख । भाषा— सस्द्रत । विषय—पुरासः । र० वाल ४ । ले० काल ४ । मपूर्स्स । वै० स० २६ । च भण्डार ।

विशेष--पुष्पदन्त कृत भादिपुराए। का टिप्पए। है।

१८५३ स्त्रादिपुराण---महाकवि पुष्पदन्त । पत्र मं० ३२४ । ग्रा० १०५४६ इख । भाषा-ग्रपञ्र श । विषय-पुराण । र० काल 🗴 । ले० काल स० १६३० मादवा सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४३ । क मण्डार ।

रै≒४४ प्रति स०२। पत्र स०२६६। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० स०२। छुमण्डार। विशेष—चीच मे वर्ड पत्र नहीं हैं। प्रति प्राचीन है। माह् व्यहराज ने पृचमी व्रतोद्यापनार्घ कर्मक्षय निमित यह प्रत्य लिखाकर महात्मा खेमचन्द को भेंट किया।

१८४४ प्रतिस्कि है। प्रेज्ञं सै० १०३ । ले० काल 🗶 । अपूर्णाः । वें० स० ४४ । क मण्डार ।

```
188 J
                                                                        पराय साहित
          १८८६ भविस प्रापनमं रहत्राने बामार्थ १७१० / वे चं रहत्राच्याक्यारा
          विरोप-नहीं नहीं नक्षित्र सन्दों के सर्व की दिये हुने हैं।
          १८३० कारिपुराक्—म वीस्रतरास। रवर्ष ४ ोसा १४×६ रखः जला-दिन्धे स्वः
निपर-पुरस्तार प्रमार्थ १ ५४ । के प्रमानं १००६ माथ मुद्दी ७ । पूर्ण । वे वं १ ) राजधार १
         विधेय---क्ल्यूराम बळ नै प्रशिक्षिति कराई वी ।
          १=२८ प्रतिसं २ । पत्र सं ७४६ । से पान ×ावे सं १४३ । सामनारी
```

विशेष-- प्रारम्य के शीव पत्र वर्गीय जिसे वसे हैं।

रैक्टर प्रतिस ३। पर बंद ६ ६। में बाल मंह २४ वास्त्रेत्र बुदी ११। में सं १६२।

ह वधार ।

विमेक-जल मित्रों के प्रतिरिक्त न बच्चार में एक प्रति (के क्षे क्षे) क बच्चार में ४ प्रतिया (के मंद्र ६ ६८.) च अच्छार के ए सर्टियों (के सं ११ ११०) क्षा अच्छार में इक प्रति (के सं १६६) ल्या क्रा बच्चार के २ प्रतियों (के लं ६ १४६) और है। के बादी प्रतियों बच्ची है।

१म६ वसरपुराख--गुक्तमनामार्थे। पत्र वं ४२६। था १२×१ ईव । जला-संस्तृत । विरस-

क्तला । र कल ≻ाने कल ∠ाव्ली है वे देवे । का बच्चार । श्च ६१ प्रति स २ । पण के ६ ६ । के परमार्थ १६ ६ वालीज करी १६ । में वं । म

वंग्दार ।

विभेय---वीच में के क्रा नदे निकालर रखे वहें हैं । पातालंबी शास्त्रावधी अटररब भी बदारदेव मी बसी इसलित है। इंदूर है। बहुरमीर बाबकत के बाधनपान में बोहुरहाराज्यान्तर्गत सलाकपुर (समयर) के तिनारा मानर बार ये की सादिगान चाकानन ने की नीचा ने मरिकिश की की।

१ सम्बद्धाः प्रतिसः के। यस सं १४ । ने नामा वं १६६५ सक्ष मुद्धाः ह । वं ४६ । व

MARIE 1

विकेच---रोक्टर के व्यक्तिवर्ग दिया है।

रद६६ प्रतिम प्रायन्ति १ ६ । से नामार्ते १ २० । वे वे १ । व्याचनार ।

विकेश—कवार्ड करपुरके महारामा कुमीर्विष्ठ के वासनवाल के अतिकिष्ठ हुई । का क्षेत्रराम के बेगोपराम के दिल्ल बक्तराम को बेंट विश्वा । क्षतिन क्षणी के वंशकत में वर्ष भी दिसे हैं ।

रेमारे प्रतिस् क्षायन संप्रदेश के काम ने १०० सामस तुरी १६ वे रेश में

क्रमार । विकेश---कामानेर के बोलवरान के वैतिकाल चीलावाक में अतिहासिर को बी ।

रमध्य अधियाँ है। पर श्रा अवश्वी काम सं हुद्दक की वृत्वी है है से है। में STATE I

निर्देश-स्ट्राएक स्वयोधि के विस्थ सहास्त्रसम्बद्धालय में प्रतिक्रिति की की ।

१८६६. प्रति सः ७ । पत्र मृ० ३६६ । ते० यात म० १७०६ फागुर्य सुदी, १० । नै० स० ३२४ । च भण्डार ।

विशेष—पाडे गोर्डन ने प्रतिसिपि की सी। वहीं कहीं सिठन शब्दों के सूर्य भी दिये हुने हैं। १८६७ प्रति सट = । पत्र स० ३७२। ने० वाल स० १७१८ भादवा सुदी १२। वे० स० २७२। व्य भण्डार।

विशेष—उक्त प्रतियो ने प्रतिरिक्त छा, क भीर हा अण्टार मे एन-एन प्रृति (वे॰ स० ६२४, ६७३, ७७) भीर हैं। सभी प्रतिया प्रपूर्ण हैं।

१८६८ उत्तरपुराग्रिष्पग्-प्रभाचन्द्र। पत्र म० १७ । मा० १२४५३ दश्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराग्त । र० कात्र म० १०८० । ले० वाल म० १४७५ मादवा मुदी ४ । पूर्वी । वे० स० ५४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--पूप्पदन्त इत उत्तरपुरास का टिप्पस है। नेग्वक प्रशस्त-

श्री विक्रम।दित्य मवत्तरे धर्पागामधी यधिक सहस्रे महापुराग्राविषमगदविवरणनागरमेनमैद्धातान् परि-नाय मूलिटपाग्रावाचावलोवम मृत्तितद समुख्यिटप्पाग् । अञ्चपातभीतेन श्रीभद् झलात्कारगग्राश्रीसंघाचार्य सत्विवि शिष्येण श्रीज्ञान्त्रमुनिना निज दौरँडाभिभूतिरपुराज्यविजयिन श्रीभोजदेवस्य ॥ १०२ ॥

इति उत्तरपुराणिटिपाण्क प्रभाव ब्रावार्यविरिवितसमाप्त ।। धय सवत्तरेस्मिन् श्री नृपवित्रमादित्यगताव्य सवत् १४७५ वर्षे भादवा सुदी ५ बुधिदने बुध्जागलदेशे सुनितात प्रिकंदर पुत्र सुनित्तानप्राहिसुराज्यप्रवर्त्तमाने श्री काष्ठा-मधे मायुरान्वये सुद्धारागो भट्टारक श्रीग्रुग्णभद्रसूरिदेवा तदाम्नाये जैसवालु चौ० जगसी पुत्रु चौ० टोडरमल्लु ६६ उत्तरपुराण् दीका निखानित । गुभ भवतु । मागृल्य दथित लेखक माठकमो ।

१८६६ प्रति सः । पत्र स० ६१ । ते० माल 🗙 । वे० स० १४४ । छा भण्डार ।

विभेप—श्री जर्यामहदेवद्राज्ये श्रीमद्वारानियासिना परापरमेष्टिप्रणामोपार्जितामलपुष्यिनराष्ट्रताखिलमल कर्नकेन श्रीमत् प्रभावन्द्र पढितेन महापुराण टिप्पणक सतस्यधिक सहस्रश्रय प्रमाण कृतमिति ।

१८७० प्रति स०३। यत्र स० ५६। ले० वान 🗴 । वै० सं० १८७६। ट मण्डार ।

१८०१ उत्तरपुराणभाषा— खुशाल चन्द । पत्र स० ३१०। भा० ११४८ इख । भाषा-हिदी पुछ । विषय-पुराण । र० काल स० १७८६ मगसिर सुदी १०। ले० काल सं० १६२८ मंगसिर सुदी प्रा पूर्ण । वे० स० ७४। क भण्डार ।

निशेष—प्रशस्ति मे खुशाल्यन्द,का ४२,प्रद्यो,मे बिस्तुत यरिचय दिया हुमा है । बब्तावरलाल ने जयपुर में प्रतिनिधि की थी ।

१८७२ प्रति स०२। पत्र स०२२० ले० काल स०, १९६३ बुँझाबा, सुदी ३। वे० स०७। ग

विशेष कत्त्र्राम साह ने, प्रतिसिप करवायी थी।

- १४६] (पुण्यसामित्रे १८०३ अतिसः ३ । पर सं ४१६ । के समासं १ ६६ नेपस्टिस्सुर । के संशोध

प्रभारः। १८ ४ प्रतिसः ४ । पत्र संदेशभा के दल्ला के दृश्द्र-कार्तिक कृषी ११। वे सं । क

र्मिप्र प्रतिस्त शापनस्य केण्याच नामा व रेन्द्रन नात्तिक बुद्दी हैका ने से रेना मच्चारः

१८७४ प्रति संकापन संकापन १९७४ वं ११७४ प्रामणितः । विकेर—काच्चार में तीव बहुर्लम्बिका (वे संकापन ४२० ४२४) बीर है।

रैक ह करपुरावभागा—सवी कालाला वर्ष च कहा गा १२× इत । नमा-रिके क्या विवद-दुराव। ए कमा सं देश काला दुरी का वे कमा सः देशर वेवस्टर दुरी हो। दुर्श के

र्मक्षाक्ष सम्बद्धः १८०० प्रतिसंदेशकासंदर्शके कास्त्र । कन्नसंदर्शके वं । काममार।

निकेद--- ११४मा पत्र नहीं है। क्लिने ही पत्र नदीन किसे हुदे हैं।

१८८८ सिंह छ । पण वें ४१६ । के यहन ×ावें धं १। इन वच्चार । विदेव—तारण्य के १९७ पण मौने रेव के हैं। आह वीचोलिय तरि है। इन वच्चार वे एक सिंह (के

ह थर) च सम्प्राप्त में गै प्रतिका (के से प्रति, प्रति, श्री के का क्ष्य क्षाप्त में एक प्रति चीर है। १००६, चन्त्रप्रमध्यान:—शिराकाल। वच से क्षेत्र का १६४८ वस। बना-निर्मा का १ विवर-

पुष्पक्षा । प्रस्त सं १११६ जनमा पूर्व १११ के कल ४ । पूर्व १३ वं १०६३ क वचार। १००० क्रिमेश्वपुराक-अकृतक क्रिनेल्युमुक्का वस वं ६६ । वा १८४६ स्था प्रस्त-

रेट्या विश्वन्युरास्य—सङ्ग्रस्य विज्ञानुसूत्र्यः। तत्र व ६१ । वा रट्या च्या च्या तस्य | विवद-पुरस्य । र नस्य ४। ने नस्य तं १ ४१ त्रम्यस्य पुर्वे ७ (१ तं १४। स्र सम्पार ।

विकेस-विकेशकुरुक के प्रक्रिया अञ्चलकालर के व्यक्ति । १६६ व्यक्तिर हैं । पूर्णक के विका विकास

रमार द्विपक्षिम्बर्धि—स्वापंदित जासागरः। पर्वतं १४ । सा १६८२ रखः। मतान्तीसरः। निरम-पुरस्यारः नामार्थं १९१२ । ते नामार्थं ११ शकतं १६ (दुर्वादं सं २११) म

भवार ! विकेद----समत्रकारु में जी मेगिनिमर्गेश्यालय में वान ती एक्सा ती स्वी ! केसक स्वतित विरहन

है। १८२८ सिप्रिक्तिकारमञ्जूष्यस्य स^{ाम्मा}नाय में केशः सा १ _{XXप्}रक्षः। समान्येषयः। स्वित-पुरुष्टः। र समा X कि समा X सञ्जूष्टे। से वर्षे १९६१ । इ.समारः।

दिवैय---१० है बारे पर वहीं हैं।

१८८८ के मिलावायुक्तम् सायकक्ष्याक्षयः १६६। सा १९५४ इका वारा-दिनौतर्वा रियर-पुराल १६ जलावे १६ सम्बद्धारिक केम ४ दूर्लो के वे शक्क क्ष्यारः

3 ~

१८८४ नेमिनाधपुराण-निश्वितदास । पत्र स० २६२ । ग्रा० १४८५३ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वै० सं० ६ । छ भण्डार ।

१८८४ नेमिपुरास (हरिवशपुरास) - ब्रह्म नेमिटता । पत्र स०१६०। मा०११४४ इद्ध । भाषा-सस्कर । विषय-पुरास । र० काल × । ले० काल स०१६४७ ज्येष्ठ मुदी ११ । पूर्स । जीर्स । वे स०१४६ । श्र भण्डार ।

विशेष-लेखन प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

सनत् १६४७ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ११ बुधवासरे श्री मूलसधे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुल्दकुन्दावार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मतिन्द देशतराट्टी म० श्रीशुभचन्द्रदवा तत्पट्टी भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टी भ० श्रीप्रमाचन्द्रदेवा

ढितीय शिष्य महलावार्य श्री रत्नकीत्तिदेवा तत्शिष्य महलावार्य श्रीसुवनकीतिदेवा तत्श्रिप्य महलावार्य श्रीधमकीतिदेवा

ढितीयशिष्य महलावार्य श्री श्री श्री नेमचन्द तदाम्नाये ग्रगरवालान्वये मुणिलगोत्रे साह जीगा तस्य भार्या ठाकुरही तयो पुत्रा

पत्र । प्रथम पुत्र सा केता तस्य भार्या छानाही । सा जीगा द्वितीय पुत्र सा जेता तस्य भार्या वाधाही तयो पुत्रा त्रय

प्रथम पुत्र सा देइदास तस्य मार्या माताही तयो पुत्रात्रय प्रयमपुत्र वि० सिरवत द्वितीयपुत्र वि० मागा वृतीयपुत्र वि०

पत्र । द्वितीयपुत्र साह पूना तस्य भार्याग्रतरहो तृतायपुत्र सा चीमा तस्य मार्या मातु । सा जोगा तस्य वृत्रीयपुत्र सा

सातु तस्य मार्या नात्यगही तयो पुत्रौ दौ प्रथम पुत्र सा गोविंदा तस्य मार्या पदर्थही तयो पुत्र वि० धर्मदास द्वि० पुत्र

वि० मोहनदास । सा जोगातस्य चतुर्थपुत्र सा मल्लू तस्य भार्या नीवाही तयोपुत्र सा दमा तस्य मार्या मोरवगाही ।

सा जीगा तस्य पचमपुत्र सा साचू तस्यभार्या होलाही तयोपुत्र वि० सावलदाम तस्यभार्या पूराही एतेपा मध्ये सा

मन्दनेनद शास्त्र हरिवशपुरागास्य ज्ञानवरगीकर्मक्षयनिमित्त ।

१८८६ प्रति सः २। पत्र स० १२७। ले० काल स० १६६३ मानोज मुदी ३। वै० स० ३८७। क मण्डार।

विशेप-लेखक प्रशस्ति बाला पत्र विलकुल फटा हुमा है।

१८२७ प्रति स० ३ । पत्र स० १५७ । ले॰ काल स० १६४६ माघ बुदी १ । वे॰ स० १८६ । चें भेण्डार ।

विशेष—यह प्रति मम्बायतो (मामेर) मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल मे नेमिनाय चैत्यालय मे लिसी गई थी। प्रशस्ति मपूर्ण है।

१८८८ प्रति स०४। पत्र स०१८८। ले० काल स०१८३८ पौप बुदी १२। वे० स०३१। छ

विशेष — इसके ग्रांतिरिक्त का मण्डार में एक प्रति (वे॰ स॰ २३६) क्ष मण्डार में एक प्रति (वे॰ स॰ १२) नया व्य भण्डार में एक प्रति (वे॰ स॰ ११३) ग्रीर हैं।

```
sv= 1
                                                                             ्रमुपम्ब साहित्य
           १८८६ पश्चपराखा-रविषेशाकार्थं । यह शं सक्त । शा ११४४ द्राव । त्रापा-संस्तुत । विषय-
पुरस्तार काल × कि काथ सं १७ व लीव सुदी हा पूर्ता के इरे १६ । बा करवार !
           विकेय--रोवा बाव विवासी क्षक बोवसी है प्रतिविधि क्याबर में भी वर्ष क्षमान को घर विवा ।
           केटड स्तिस्त्री सार्वमाची ईरिशा के लालाची १०६२ सालीज क्यी हा में से देशी में
बस्तार १
           विकेच---वैदारात साथ के क्यास्तान योगा से प्रतिकिति शरवाई यो ।
           रेट्यर प्रतिसा के । येव से प्रत्या के बाल के रवाय कावता क्यी रा के से प्रति।
#INTELL
           रेक्कर, प्रशिक्त थे। पण सं क्षत्र को संस्थान सं १ वर सम्बद्ध स्थित । व मंद राज
बचार ।
           विक्रोप:......चीवरिकों के वेस्तासक के यें । औरकांक्यक के करिरीक्ति को को ।
           रेमध्ये प्रति छ। पण वं पृष्टाले यानाचं रूप्यरणानीय नुरी ×ावे वं र दें। व
WEEK I
           विकेद--प्रकाम बाहीय रिती बागक ने अतिमिरि की वी ।
           इसके सरिवरिक्त क सम्भार में तक प्रति (दे वं ४३६) तथा क नृष्टार में दो प्रतिका (दे तं ४३६
432 ) RES 1
           रेम्बर पहलुतम् (राम्पुराम्)-नहारक सीमधम । १५ ई १२ । वा १३×६ रव । वास-
 वेल्क्ट । निरम-पुरस्थ । ३ जान तम वी १६६६ माल्या होते १३ । के बाल सं १ ६ बादान पूर्व (४)
 दुर्खी दे इं रुपा का मध्यर ।
            रेप्पर प्रतिसंक्ष्यां का का वं का का कि नाम के ए प्रश्न कोड़ बुदी 25 । के से प्रवर्ण
 सम्बार ।
```

विकेष---वायो महेन्द्रभागित के असार्य के वह राजक को वर्ष देशा त्यार्थ विकास के लिया है । केवल प्रवर्तित

१ बद्द अक्षि की के । यह वा रूप के काल की १ वर में बाल्य बन्दी ११ वर्ष की 🚨

षिषेत—सामार्य राजनीति के जिल्ला नैमिनाच ने मानानेर ने प्रतिनिर्दाय को ती: रुव्यक स्वति का प्रथम को वैर्दर्श कि नार्या को १७०४/व्यक्तीय क्यो रथ। कि वे १९९१

रेक्ट्रेक - मोर्च कर भी बेरवी के ब्रोबर्ट में प्रतिकाश की ।

क्यो स्ट है।

WER I

१८६८ प्रति स० ४ । पत्र स० २५७ । ले० काल म० १७६४ म्रासीज बुदी १३ । वे• सं• ३१२ । च भण्डार ।

विशेष-सागानेर मे गोघो के मन्दिर मे महूराम ने प्रतिलिपि की थी।

इसके मितिरिक्त ह भण्डार में २ प्रतिया (वे० सं० ४२५, ४२६) च भण्डार में एक प्रति (वे० म० २०४) तथा छ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५६) भीर हैं।

१८६६ पद्मपुराण्—भ० वर्मकीत्ति । पत्र म० २०७ । घा० १३×६ई इख । भाषा—सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल म० १८३५ कात्तिक मुदी १३ । वे० म० ३ । छ भण्डार ।

विशेष-जीवनराम ने रामगढ नगर मे प्रतिलिपि की थी।

१६०० पद्मपुराग् (उत्तरत्वग्ड) । पत्र म० १७६ । ग्रा० ६×४६ इख । मापा-सस्कृत । विषय-पुराग् । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० म० १६२३ । ट भण्डार ।

विशेष—वैद्याव पद्मपुराण है। वीचके कुछ पत्र चूहोंने काट दिये हैं। प्रन्त में श्रीकृष्ण का वर्णन भी है।

१६०१ पद्मपुराग्।भाषा—प० दौलतराम । पत्र स॰ ४६६ । घा० १४×७ इख । भाषा-हिन्दी गद्य ।

र० काल स० १८२३ माघ सुदी ६। ले० काल स० १६१८। पूर्ण । वे० स० २२०४। श्रा भण्डार ।

विशेप—महाराजा रामिंसह के शासनकाल मे प • शिवदीनजी के समय में मोतीलाल गोदीका के पुत्र श्री भमरचन्द्र ने हीरालाल कासलीवाल मे प्रतिलिपि कराकर पाटौदी के मन्दिर मे चढ़ाया ।

१६०२ प्रति स०२। पत्र म० ५४१। ले॰ काल स० १८८२ झासोज सुदी ६ । वै० सँ॰ ५४। ग मण्डार।

विशेष-जैतराम साह ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिप करवायी थी ।

१६०३ प्रतिस०३ । पत्र स०४ ५१ । ले० काल स०१ ८६७ । वे० स०४ २७ । इङ भण्डार ।

विशेष—इन प्रतिया के मितिरिक्त आ भण्डार मे दो प्रतिया (वै० स० ४१०, २२०३) क भौर ग भण्डार में एक एक प्रति (वे० स० ४२४, ५३) घ भण्डार में २ प्रतिया (वे० स० ५५, ५६) च भौर ज भण्डार में दो तया एक प्रति (वे० स० ६२३, ६२४, व २५२) तथा भ भण्डार में २ प्रतिया (वे० स० १६, ५८) भौर हैं।

१६०४ पद्मपुराग्राभाषा - खुशालचन्द । पत्र स० २०६ । म्रा० १०८५ दश्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पुराग्रा । र० काल स० १७८३ । ले० काल 🗙 । म्रपूर्ग्रा । वे० स० १०८७ । श्च मण्डार ।

१६०५ प्रति स०२। पत्र म०२०६ से २६७। ले॰ काल सं०१८४५ सावण बुदी ८८। वे॰ स० ७८२। स्र मण्डार।

विशेष---ग्रन्थ की प्रतिलिपि महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल में हुई थी। इसी मण्डार में (वे० स० ३४१) पर एक प्रपूर्ण प्रति ग्रीर है।

रें ६०६ पावश्वपुराग् - संदूष्ट्य शुभवन्त्र । पंच सं १७३ । सा ११% इस । तापा-संस्टः। विश्व-पूरस्तार प्रकार्य १६ । से कान सं १७२१ फाइएस क्दी ३ । पूर्ण । वे नं ६२ । बाजपार ।

विकेश--अन्य की दुवना भी बाल्क्याहपुर से इही वी । पथ १३५ रुवा १३७ बाब में से १ बच्दे में इस-कियों की है।

रेड क प्रतिसंगायन वं ३ कि काल संगुरु । वे संप्रदास नकार । निकेच---क्रम बहुअरियान भी नेएका सं निका बना मा। बहुएवन्त्र में हसरा संयोगन निमा।

१६०८ प्रतिस दे। प्रवर्ष र रामे काल से १९१३ की बसी ह∷ा है से प्रत्राम बच्चार ।

विकेश--- एक प्रति श क्यार वे (वे वं २६) भीर है।

१६०६, कारक्षपुराख—म श्रीमृष्यः । एव चं २४६ । या १२८६३ इ**श** । घररा–वंसरः । विक्य-पूराखार**ं काल सं १६९ । ले काल सं १ - मैंगलिर बु**र्श ह। पूर्व । के सं १६७ । का क्यार ।

हे£१ श्रावस्त्रमुख्या-न्यस्त्र कीर्ति । यस वे १४ १ था १ ×४ ४ छ। माना-नयस व ।

विश्वस-दुराखार काल ×ादे काल ×ाब्युक्षावे संदेशीका बच्चार। रेदरेर बावस्वपुरायमाना—शुक्राकीवासा । वन ६ १४६ । बा १६×६ । वाया-केरी

पद्धानियक-पुरस्कार कम्बार्ध १७६४ । के समार्थ १ १२ । पूर्वा∳ सं ४६२ । धारमार।

विकेश--- अधिका ४, वर्गों में बाईश प्रधीवड़ वर्शाव माना ने है।

बर मन्बार में सबको एक बहुबों बति (ने सं १११) और है।

रेश्टर प्रति सा दे। यन से १६६३ में काल ते १ ६३६ में ६६३ हा सम्बार ।

निवेच-कारराज बात वे प्रशिक्षिप करवानी वी ।

रेटरेड ब्रिटिस डे 1 पन से १ | में मान × | में से प्रथर | क्राच्यार |

रेश्रध प्रतिस भागम सं १४३। में मान ४। ने वं ४४० (क क्यार)

देहरेश प्रविश्वे शायाचा ११७। में माल वे १ ६ मध्यार मुद्दी र । में वा ६९६। क तकार ह

१६१६ वारक्षकपुराया-पंत्राखांका भीगरी । यत्र वं २२२ । धर १७× इक्षा वासा-दिनी क्षा । विषय-पुरास्त्र ।ेर काल सं १६२६ वैवाल पुरी १ । ते काल सं १६६ वाल वृदी १२ । दूर्त । वै र्श्व ४६३ । क्ष सम्बार ।

रेक्ट्रिक प्रतिसा कायम से क्या की नामाची रहभट नातिक मुद्दा है। वे वे व्यव

क बच्चार । विकेश-रामराज पाराबार ने अविकिश की वी ।

क्रमच्चार में एक्सी एक मरि (वे क्षेत्र अथन) सीर है।

पराण साहित्य]

१६१८ पुरासामार-श्रीचन्द्रमृति। पत्र स० १००। ग्रा० १०५ 💢 १ इख । भाषा-सस्वृत । विषय-पुराए। र० काल स० १०७७ । ले० काल स० १६०६ मापाइ सुदी १३ । पूर्छ । वे० स० २३६ । श्र भण्डार ।

विशेष--प्रामेर (प्राम्रगद) के नाजा भारामल के शासनकाल मे प्रतिलिपि हुई थी।

१६१६ प्रति सु २ । पत्र सु ६६ । ले० काल मु १५८३ फालुए। वृदी १० । वे० सं० ४७१ । ह भण्डार ।

१६२०. पुरागुसारसप्रह-भ० सम्लकीत्ति । पत्र म० १४६। प्रा० १२×५३ इच्च। मापा-मस्तृत ! विषय-पुराण । र० काल 🗙 , ले० काल स० १८५६ मंगमिर बुदो ६ । पूर्ण । वे० स० ४६६ । क भण्डार ।

१६२१ वालपद्मपुराग्य—प० पन्नालाल घाकलीवाल । पत्र स० २०३ । घा० =×५५ इख । भापा-हिर्न्दापद्यः । विषय-पुरालः । र०कालः 🗙 । ले०काल स० १६०६ चैत्र सुदी १४ । पूर्णः । वे० स० ११३ = । स्त्र मण्डार ।

विशेष--लिपि बहुत मुन्दर है। कनकते मे राममधीन (रामादीन) ने प्रतिलिपि की यो।

१६२२ भागपत द्वारणम् स्कथ टीका । पत्र स० ३१ । मा० १४×७३ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराग्। र॰ काल 🗴 । ले० काल 🔏 । प्रपूर्ण । वे० म० २१७६ । ट भण्डार ।

विशेष--पश्रो में बीच में मूल तथा ऊपर नीचे टीका दी हुई है।

१६२३ भागवतमहापुराण (सप्तमस्कथ) । पत्र स० ६७ । मा० १४३×७ इख । माषा-सस्कृत । विषय-पुरागा । र० काल ⋉ । ले∙ काल ⋉ । पूर्मा । वे० स० २०८८ । ट भण्डार ।

१६२४ प्रति स०२ (पष्टम स्कथ)। पत्र स०६२ । ले० काल 🗵 । झपूर्ण । वे० स०२०२६ । न् भण्डार ।

विशेष-बीच के कई पत्र नही हैं।

१६२४ प्रतिस०३ । (पद्रद्वम स्कध)। पत्र स० ८३ । ले० काल म०१८३० चैत्र सुदी१२ । वै० स० २०१०। द भण्डार।

विशेष-चौवे सरूपराम ने प्रतिलिपि की थी।

१६२६ प्रति स०४ (श्रष्टम स्कथ) । पत्र सं०११ से ४७ । ले० काल 🗙 । मपूर्गा । वै० स० २०६१। ट मण्डार।

१६२७ प्रति सं०५ (तृतीय स्कघ) । पत्र स॰ ६७ । ले० काल 🗵 । मपूर्ण । ते० स० २०६२ ।

ट मण्डार।

विशेष—६७ में भागे पत्र नहीं हैं।

वे० स० २८८ से २०६२ सक ये सभी स्कंध श्रीधर स्वामी कृत सस्कृत टीका सहित हैं।

१६२८ भागवतपुरासा । पत्र सं० १४ मे ६३ । ग्रा० १०३×६ इस्र । मापा-सस्कृत । विषय-पुराण । र० काल 🗙 । क्षे० काल 🗙 । क्रपूर्ण | वै० सं० २१०६ | टंभण्डार |

विशेष---६०वा पत्र नहीं है।

```
txx 1
                                                                       ि पराज सामित
          १६२६ प्रति सं०२ । यद सं १६। व नाल 🗵 । व सं २११६। ह जम्मार ।
          विकेप--दिवीय स्त्रंच के क्वीय घण्याय तक की टीका कर्न है।
          १६३० प्रतिस्र • ३ । पन सं ४ ते १ १ । मैं नाल × । बयुर्ल | में २१ ७२ । ह क्यार |
          निसेच-एटीय स्वीव 🖁 ३
          रैंदेरै प्रति सं ४ । पत्र सं६ । में कल × । बदर्स । वे वे २१७६ । ट अच्छार ।
          नियेत- बचन स्तंत्र के हितीय बच्चाय शक है।
          १६३२, महिनावपराय-सक्क्रकीचि । पर वं ४२ । वा १२४१ इक् । क्या-संपन्त । विस-
चरित्र हेर राज्य ×ाने बाल १ । वे से २ । का बच्चार ।
          विशेष-प्रश्री कथार में एक अधि (वे स ३१) सौर है।
          १६३३ प्रक्रियों २ । बन सं १० | ने मात सं १७२ सह सूरी १४ । वे सं १ । व
BEAUT !
          १६६४ प्रतिस ३। यत सं ४७ । ने राज सं १८६६ संपक्षित सुरी ६। वे स १७२।
          विरोध--- उपन्यन सहादिया ने प्रतिनिधि करके दीवाल समस्यन्यती के समित हैं। रखी ।
          १६३४. प्रतिसा ४ । पत्र सं ४२ । के नाम सं ११ चत्रका समीत के सं १९६ । स
नचार 1
          १६६६ प्रतिसं ३। वय से ४३। वे स्कातः १ १ सल्याल सूत्री १३ वं १६६! में
सचार ।
          १६३७. प्रति सं ६ । वर्ष ४ ४१ | ने कला सं १ ६१ कारस नहीं । वे सं १४७ | न
BOOK I
          विकेच---वक्ट्र के विकास योगा ने प्रविधित करवाई की।
           रेश्येद्यानिस् कावमधं २१। में कमार्च १४६। में वं १२। इह बच्चारः
           १६३६ प्रतिसंकदायर संदर्शने क्या तं १० इ. जैन वृक्षी हाने सं २१ । 🥸
 वचार ।
           हरू प्रतिस दायन वे ४ । में कमार्थ हरू मानवानुदी ४। वे वे हरहा में
 RWIK 1
          निवेद--विदलान बाहु ने इब बन्द नी श्रीतिनिधि करनाई वी ।
           १६४१ सक्रियाक्यवराक्यमाना -सेवाराम पासकी । पत्र वं ३६ । या १९×०} रख । वालां
 िनो नव । निवर–परिष । र कास × । ने कास × । पर्यां | ने वं ६ । का नकार ।
```

द्रम्यः स्वापुराशः (विकार)[™]ापव वं देश । वा ११४४३ तबा समा-संस्था । दिस्स-सुरुषः । र क्ता×ाने प्रकार । व्यवस्था । विवास । विकास । विवास । पुराण साहित्य

१६४३, महापुराण्—जिनसेनाचार्य । पत्र स० ७०४ । प्रा० १४४८ इख्र । भाषा-संस्कृत । विषय-पुराण् । २० काल × । ने० काल × । पूर्ण । वै० म० ७७ ।

कान X । न० काल X । पूरा । व० न० ७७ । विशेष---लितकीत्ति कृत टीका सहित है ।

घ भण्डार मे एक प्रपूर्ण प्रति (वे० स० ७८) भौर है।

१६५४ महापुराण्-महाकवि पुष्पदन्त । पत्र म० ५१४ । मा० ६२ ४५ इख । भाषा-घपन्न वा । विषय-पुराण् । र० काल × । ले० काल × । प्रमूर्णं । वे० म० १०१ । स्र मण्डार ।

विशेष-बीच के कुछ पत्र जीर्ग होगये हैं।

१६४४. मार्करहेयपुराण । पत्र स॰ ३२। म्रा॰ ६×३ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण । र॰ काल × । ले॰ काल स॰ १६२६ कार्तिक बुदी ३। पूर्ण । वे॰ म॰ २७३। छ भण्डार ।

विशेष--- ज भण्डार मे इसकी दो प्रतिया (वे० स० २३३, २४६,) भीर हैं।

१६४६ मुनिमुत्रतपुराण-न्नद्वाचारी कृष्णदास । पत्र स० १०४ । मा० १२४६ हञ्च । भाषा-सस्कृत । विषय-गुराण । र० काल स० १६८१ कालिक सुदी १३ । ले० काल स० १८६९ । पूर्ण । वे० म० ५७८ । क भण्डार ।

१६५७ प्रति स०२। पत्र स०१२७। ले॰ काल 🗙 । वे॰ सं०७। छ भण्डार।

विशेष-कि का पूर्ण परिचय दिया हुमा है।

१६४८ मुनिसुझतपुराग्य—इन्द्रजीत । पत्र स० ३२ । झा० १२४६ इख । भाषा-हिन्दी पद्य) विषय-पुराग्य । र० काल स० १८४५ पौप बुदी २ । ले० काल स० १८४७ झायाढ बुदी १२ । वे० स० ४७५ । वा भण्डार ।

विशेष--रतनलाल ने वटेरपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

१६४६ किंगपुराणः । पत्र स० १३। भा० ९×४६ इखः। भाषा-संस्कृतः। विषय-जैनेतर पुराणः। र॰ काल ×। ते॰ काल ×। पूर्णः। वे॰ स॰ २४७। ज भण्डारः।

१६४० वर्द्धमानपुराण् सकलकीति । पत्र स० १४१ । भा० १०३ ४४ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण् । र० काल ४ । ते० काल स० १८७७ भासीज सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ६० । स्व भण्डार ।

विशेष-जयपुर में महात्मा शमुराम ने प्रतिलिपि की थी।

१६४१ प्रति स०२। पत्र स०१३०। ले० काल १८७१। वे० स० ६४६। क भण्डार। १६४२ प्रति स०३। पत्र स०६२। ले० काल स०१८६६ सावन सुदी ३। वे० स० ३२८। च

भण्डार ।

१६४६ प्रति सं० ४। पत्र स० ११३। ते० काल स० १८६२। वे० स० ४। छ मण्डार। विशेष-सागानेर मे पं० नोनदराम ने प्रतिलिपि की थी।

१६५४ प्रति सं ० ४ । पत्र स॰ १४३ । से॰ काल स॰ १८४६ । वे॰ स॰ ४ । छ भण्डार ।

```
(XX ]
                                                                        पराम सागित्व
          १६> प्र. प्रतिसंद्वापण थं १४ राजे नाम संदुध प्रतालिक पुरी ४ । के तं १४ । स
मध्यार ।
          १६३६ प्रतिस ७ । पत्र सं ११६ । ते पान ×ावे सं ४६३ । वः स्वयार ।
         विकेश-मा समयकारी पोकारकारी राज्यकारी थी पुस्तक है। ऐसा निका है।
          १६१० प्रतिस यापप्रचं १ ७१वि पालचं १८६८ वि सं १ ११ । इ.स्पार।
          विकेश-समार्थे वाणोपुर वे भ न्येन्द्रशीति वे शादिनान चीत्यालय के निकासायी थी।
          १६१६. प्रतिसा ६ । वस सं १२६ । में शक्त सं १६६ जलका सूत्री १३ है से इब्देश ।
≥ कातार ।
         निकेर---वालक नहारेच के बानपत्तन बनर में व चण्याचन के करवेच में इचकानीन बर्जिसाला गोर
```

बाले बाह्य बारा जानी बार्ड नायके ने प्रतिनिविधि करवानी थी । इस क्रम की संसीर भा कप्तार से एक एक अधि (वे शं ६ ६९६) सा समार वे १ अस्मि (वे सं दर ४३) योर है।

१४१६ वर्जमानपुरादा--य अंशरीसिंह। यत्र वे ११० । या ११× इक्का बाला-नियोग्य ।

विवय-पुरस्तार नाम के देवको नाइएए सुरी १९। ने पान 🗵 । दूर्व (वे घं ६४०) विकेश--- वालकायनी कावडा वीनाल वावपूर के बीन कालकाय के आवर्ष पर इस परास्त हो। वाला रक्ता

की वर्ष ।

क प्रचार वे तीन बपूर्व प्रतिमा (वे थं ६७४ ६७३, ६७६) का बन्दार में एक प्रति (वे व १६६) चीर है।

१६६ प्रतिस्य २ । पत्र सं । ने नाम सं १७७३ | वे चं ६७० । का सम्बार / १६६१ वासुनुसम्पुरायाः । यस सं १ । वा ११६× ६८ । वारा-दिली नव । विस्त-पुरस्ता

र कमा×। में कमा×। पूर्ण। में से १६ । का क्यार।

१६६२. विसक्षतावपुराख-नक्कान्यवास । १४ वं ७१ । वा १२४३ दक्ष । बाला-संस्था । विवय-पुरासार काम से १६७४ । से काम से १ ६१ वैद्योख सुदी था। पूर्ण । वे १६१ । का बच्चारी

१६६६ मितिस का प्राप्त के हुई । में सामानं हुई की बूबी । के के दहां में WAR I

रहर्म प्रशिक्षं देशक वर्ष १ ७३ के काम सं १९१६ व्यक्त बुदी ६३ के रे 🎏 अकार ।

विक्रेय- क्रम्पकार का बाध वं - इस्कृष्टिमा भी विमा है । अवस्ति निक्य प्रकार है---बंदर् १६८९ वर्षे क्षेष्ठवाने इच्छानी की वेगवामा स्थानको की ब्राविकाल वेश्वासके कीवर् रक्ता^{नी}

र्म**ें(उ**दरम्बे विश्वासके स्ट्रारंक भी राजकेशन्त्रने शतकपुत्रनेता अ औ राजकुरता तनक अ∞ को बस्पीति व औ

मगलावज स्थितराचार्य श्री केशवमेन तत् शिष्यो राध्याय श्री विश्वकीत्ति तत्युरु भा० ग्र० श्री दीपजी ग्रह्म श्री राजसागर पुक्तै लिखित स्वज्ञानावर्गा कर्मक्षयार्थं। भ० श्री ४ विश्यमेन तत् शिष्य मडलाचार्य श्री १ जयकीत्ति प० दीपचन्द प० मयाचद ग्रुक्तै शारम पठनार्थे।

१६६४ शान्तिननाथपुराण्-महाकवि स्प्रशा। पत्र न०१८३। मा०११४५ इख्न । भाषा-सस्कृत । विषय-पुराण्। र० काल शक सवत् ६१०। ने० कांल स० १५४३ भादवा युदी १२। पूर्णे। वे० सं० ६६। स्प्रमण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति—सवत् १५५३ वर्षं भादवा विद वारीस रवी मद्योह श्री गघारमध्ये लिखित पुस्तक लेखक पाठकपो विरजीयात् । श्री मूलमधे श्री कृदकुन्दाचार्य्यान्वये सरस्वती गच्छे बलात्कारगरे भट्टारक श्री पद्मनिदिवांस्तत्वर्ट्ट भट्टारक श्री पद्मनिदिवांस्तत्वर्ट्ट भट्टारक श्री मुभवन्द्रदेवान्तत्त्वट्टे भट्टारक जिनचन्द्रदेवािख्य्य मटलाचार्य्य श्री रत्नकीित्तदेवान्तिच्छ्य्य ग्र० लाला पठनार्थ हुंवड न्यातीम श्रे० हापा भार्य्या सपूरित श्रुत श्रीष्ट धना स० थावर स० सोमा श्रेष्टि धना तस्य पुत्र वीरसाल भा० वनादे नयी पुत्र विद्याधर द्वितीय पुत्र धर्मधर एतै सर्वे द्वान्तिपुरास लखान्य पात्राय दत्त ।

ज्ञानवान ज्ञानदानेन निर्भयोऽभयदानत । पन्नदानान् मुखी निन्य निर्धाधी भेषजाद्भवेत ॥१॥

१६६६ प्रति स०२। पत्र स०१४४ । ल० काल स०१८६१ । वे० स०६८७ । क मण्डार ।

विशेष---इस ग्रन्थ की छ, ञ भीर द्व भण्डार मे एक एक प्रति (वै० स० ७०४, १६, १६३५) भीर है।

१६६७ शान्तिनाथपुराग् — खुशालचन्द् । पत्र स० ४१ । मा० १२५ै×= इश्च । भाषा –हिन्दी पद्य । विषय–पुराग्ग । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४७ । ह्यू भण्डार ।

विशेष-उत्तरपुराण में से है।

ट भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० १८६१) और है।

१६६८ हरिवशपुरागा—जिनसेनाचार्य। पत्र स० ३१४। मा० १२४४ ६ द्या । मापा-सस्कृत। विषय-पुरागा। र० काल घक स० ७०५। मे० काल स० १८३० माघ सुदी १। पूर्गा। वै० स० २१६। आ मण्डार।

विशेष--- २ प्रतियों का सिम्मधरण है। जयपुर नगर में प० हूं गरमों के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिसिपि की गर्द की।

इसी भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ८६८) ग्रीर है।

१६६६ प्रतिसञ्चापत्रसञ्बर्धासे० कालसञ्चर्दावै० सञ्चराकः सण्डारा

१६७० प्रतिस्ट ३। पन्न स० २८७ । ले० काल स० १८६० ज्येष्ठ सुदी १ । वे० स० १३२ । च भण्डारः

विशेष--गोपाचल नगर मे ब्रह्मगभीरसागर ने प्रतिलिप की थी।

124] ं प्राप्त सावित

१६७१ प्रतिस प्रापन सं २४२ वै ११७। ने नाम सं १६२१ नातिक नही १। कपूर्व। रे में १४७। च बचार ।

विसेश-यी प्रशासन ने प्रतिनिधि की नी ।

इडी क्लडार में एक प्रति (वे सं ४४६) और है।

३३. अ. प्रति सः ४ । पद वं २७४ से ३१३ ३४१ से ३४३ । में बाल सः १९६३ वार्तिक दुर्ग स्काद्यार्थाः विच्याद्यारः।

१६७६ प्रतिस ६। यत्र सं २४३। वे कला सं १६६६ चैच बुदी २। वे सं २६ । स

क्यतः ।

विकेश-महाराज्यविराम नार्लावह के बालनगरन ने सांचानेर में बादिनाम चैत्यात्व ने प्रविविधि हो बी । नेबक प्रथस्ति प्रपूर्त है ।

जरुर प्रतिकों के सर्तिरिक्त का अस्तार के एक प्रति (वे वं ४४६) इस सम्बार में यो प्रतिका (वे वं

चर के) सौर है। १६७४ इरिक्श्यराख—ऋजिमनासः। पत्र वं १२ । या ११३×६ इक्र. नता-लेखर । विदव–पूरस्तार प्रस्त×ाने कलाव १ ।पूर्वादे सं २१६।इस्थमार।

विकेश-कृष कोकराज राज्योवी के बकाने हुने जन्तिर वे अधिकित करकाकर विरामप्राम विवा कर्ता।

प्राचीन प्रमुखें प्रति को नीके पूर्ण किया नवा ।

१६७४, प्रतिसः २ । पन सं २६ । ने कल्लावं १६६१ यत्वीय नुवी ६ । वे मं १६१ । व

1 70 m

निर्देश-देवपूरी बुक्तवाने पार्वजान कैपालचे कहार्सचे नदीनश्यको विकासने रावदेवान्यने बार्चामं व्यवासरीतिना प्रविनिधि पर्य ।

१६७६ प्रतिसं ३। परनं १४६। ने काम सं १ ४। वे सं १६६। व सम्बार।

विकेश---वेक्सी में अतिनिधि की नई वी । विकित्तर वे वहानववाह का बालवकल होगा तिका है।

रेक्ष्णक, प्रति सं प्राप्त वं २१७ । से बाब्द र १ । से बं ४४० । का क्यारा रेड क्या प्रति स्रो के । यम स्रो नेप्रति से राज्य से राज्य स्थापिक स्थी का से से स्रो में

WHENT !

विकेष- कञ्च नासुक्रमन्त्रकी के प्रत्यार्थ गीली वाग वे अदिलिति क्ष्र्ई थी । वः विनयत्व ४० वयसर्थीत के किन्तु है।

१६-४६.मधिस ६ । जन ये २६ । ने जान वे १६६ और वृत्ती ११ने वे ३६३ । म क्यार ।

विवेच स्वतित—र्ग ११३७ वर्षे गीव बुदी १ बोवे यो नुसर्ववे बनास्त्रारवाने नरान्तीना<mark>णे भी</mark>

कुन्दकुदावार्या वये भर सक्तर्वात्तिया भर भुगत्वीतिया भर भी श्वनभूषस्थे विष्यमुनि जयवदि पठनार्ये । ह्रवह जातीय ।

१६८० प्रति स० ७। पद सः ४१३। ते० ताल म० १६३७ माह बुदी १३। वे० म० ४६१। हा

वशेष--ग्राच प्राप्ति विन्तृत है।

उक्त प्रतिया ये व्यतिग्कित स्, स् गान का भण्डारों मा गान एक प्रति (ये० ग० ८५१, ६०६, ६७) मार है।

१६८१ १रियमपुरासा—भी भूपसा । पत्र स० ३८५ । या० ११४५ इख । भाषा-सम्पृत । विषय-पुरासा । र० रात 🗙 । ते० रात ८ । यहुर्स । या ५० ४६१ । व्य भण्यार ।

१६८२ हर्पिशपुरामा—स्ट सक्त्रशित्ति । पत्र सत् २७१ । पात् ११६ /४ उद्य । नागा-सन्तत । विषय-पुरामा । रव बात ४ । नेव नाव त्र १६५७ चैत्र मुटी १० । पूर्ण । वेव सव ६५० । क्र भण्डार ।

निरोप-नियक प्रशस्ति पटी हुई है।

१६=३ हरिवशपुराग्य-- वयत्त । पत्र २० ५०२ मे ४२३ । मा० १०४४ ई इख । भाषा-प्रयम् छ । विषय-पुराग्य । २० वात ४ । ते० वात ४ । सूर्या । य० ग० १६६६ । छा भण्डार ।

१६८४ हिरिद्शपुरामा—यश नीति । पत्र न० १६६ । आ० १०३×४३ एक । भाषा-प्रयक्त श । विषय-पुरामा । र० कान ८ । म० नान म० १४७३ । पागुमा गुदी ६ । पूर्मा । वै० न० ६८ ।

रिशेष—तिजारा ग्राम में प्रतिनिधि भी गई थी।

मय सबस्तरेक्तिसम् राज्ये सवत् १४०३ वर्षे काल्युगि शुदि ह रविवासरे श्री तिजारा स्थाने । मलाव-लिया राज्ये श्री गाष्ट्र । प्रदर्भा ।

१६=४ हरित्रशपुराण्—सहाप्तवि स्वयभ् । पथ म०२०। द्या० ६×४ ै। भाषा—घणझ श । विषय— पुरासा । र० गान × । ते० गान × । भपूर्ण । पे० मं० ४५०। च भण्डार ।

१६८६ हरिपश्चिराणभाषा—दीलतराम । पत्र मे० १०० मे २०० । घा० १०४६ दश्च । माषा— हिन्दी गद्य । प्रिषय-पुरास । २० वान म० १८२६ चैत्र मुदी १४ । ने० काल ×ा मपूर्ण । ये० स० ६८ । म भण्डार ।

१६८६ प्रति स०२। पत्र स०५६६। ने० कान स०१९२६ भारवा सुदी ७। वे० स०६०६ (क) र भण्डार।

१६८८ प्रति स० ३। पत्र म० ४२५। लें० काल स० १६०८। ये० म० ७२८। च भण्डार। १६८६ प्रति स० ४। पत्र म० ७०६। लें० बाल स० १६०३ झासोज मुदी ७। वे० स० २३७। हा भण्डार।

ा विशेष--- उक्तः प्रतियों के प्रतिरिक्त छ भण्डार में सीन श्रतिया (वे० स० १३४, १५१) स, तथा स भण्डार ने एक एक प्रति (व० स० ६०६, १४४) ग्रीर है। १४८] [पुराय साहित

रैं ६६ हरियारपुरायमाया — भूत्रास्थायत् । यन तं २ कांमा १४८० ४ मा । याना-हिर्द तथा विजय-पुरस्तुः १८ काल सं १७०० वैद्याचानुसी ३ । ते नतस्य तं १ ६ पूर्णाः ३ सं १७२। स्र जन्मार ।

. विदेव—दी अठियों का दम्मियल है।

१८६१ प्रतिस्त २ । पम सं २ २ । के जल्ल सं १ १ पोज कुदी ≈ । सपूर्णा नि वं १६४ इन्हरूपार ।

निसेव---१ से १७२ तक पव नदी हैं । बस्पूर में ब्रतिकिरि हुंहैं वी ।

्रेड्ड प्रतिसा है। यह सं १३४ । में काल ×। में सं ४६६ । सामग्राही

विकेश—सारून के ४ पर्नी में नवीक्ष्यत्व कुछ नरक पुत्र वर्मन है पर जपूर्त है।

है६६३ हरिवरसुराखकायाः पत्र वं १६ । सा १२×६० इस । बास-दिन्या । विस्त-इराहा । र कस्त × । के अपन × । क्यूकी । वे वे ६ ७ । क नवार ।

निकेच-एक सपूर्ण मणि। (वे वं १) सीर है।

१६६५ इरिकेशयुरासभाकाः । यत्र धं ११ वा $2xx_{c}$ इत्र । जना-निर्देश (राज्यानी) । विश्व-पुरास्त्र । मृं काल x । में काल सं १९७१ सकाव कृषी । पूर्ण i में सं १९११ प्रत्याला ।

ि निकेर—स्वर तथा पन्तित पत्र करा ह्या है।

दक मान्य वशास्त्राम् पत्र १६

िन्द्री संशोधना नव हेमरण राजा राज्य गर्मे बार्च । ठेव् राजा गर पारखी राज्यों हा । ठेव् पर नाम वर्णे कर्मार स्वयन बार्च । क्षेत्री ब्रॉप्टि सुम्यर पद्धाद जानी । ठेव् । तत नाम पुरुष्टिक पत्रविक्तम । ठे पुत्र पुत्र र जानी विक नामा बार्च । राम कर्मा ठे पुनिष्य जीवान भीवान । जिलापार्म विकास देवा पर राज्य बार पुरुष्ट । दिवार्य के प्रसार मुख्य प्रीवरणा नामा परिकारण वार्च । वार्ची रिद्या नाम कर्म करत वार्च । वार्च

पत्र सख्या ३७१

नागश्री जे नरक गई थी | तेह नी कथा साभलउ । तिग्णी नरक माहि थी । ते जीवनीकिलयउ । पछइ मरी रोइ सर्प्य थयउ | सयम्भू रमिण द्वीपा माहि । पछइ ते तिहा पाप करिवा लागउ । पछई वली तिहा थको मरग्र पाम्पा । बीजै नरक गई तिहा तिन सागर भागु भोगवी | छेदन भेदन तापन दुख भोगवी | वली तिहा थकी ते निकलियउ । ते जीव पछइ चपा नगरी माहि चांडाल उद्द धरि पुत्री उपनी तेहा निचकुल भवतार पाम्यउ । पछइ ते एक बार वन माहि तिहा उवर वीग्णीवा लागी ।

श्रन्तिम पाठ-पत्र स्स्या ३८०-८१

श्री नेमनाथ तिन त्रिभवण तारणहार तिणी सागी विहार क्रम कीयउ । पछड देस विदेस नगर पाटणाना भवीन लोक प्रवोधीया । वलित्रिणो सामी समिकत ज्ञान चारित्र तप सपनीयउ दान दीयउ । पछइ गिरनार प्राव्या । तिहा समोसर्या । पछइ घणा लोक सबोध्या । पछइ सहस वरस ग्राउपउ भोगवीनइ दस धनुप प्रमाण देह जाणवी । ईणी परइ घणा दीन गया । पछइ एक मासउ गरयउ । पछइ जगनाथ जोग घरी नइ । समो सरण त्याग कीयउ । तिवारइ ते घातिया कर्म पय करी चउदमइ ग्रुग्गठाणाइ रह्या । तिहा धका मोप सिद्धि थया । तिहा माठ ग्रुग्ग सिहत जाणवा । वली पाच सई छत्रीस साघ सायइ मूकति गया । तिणी सामी भचल ठाम लाघउ । तेहना मुखनीउपमा दीधी न जाई । ईसा सूखनासवी मागी थया । हिवइ रोक था मुगमार्थ लिखी छइ । जे काई विरुद्ध वात लिखाणी होई ते मोघ तिरती कीज्यो । वली सामनी साखि । जे काई मई ग्रापणी ब्रुघ थकी । हरवस कथा माहि ग्रंघ कीउ छइ लीखीयउ होंड । ते मिछामि दुकड था ज्यो ।

सबत् १६७१ वर्षे मासोज मासे कृष्णुपक्षे मप्टमी तिथी। लिम्बित मुनि कान्हजी पाडलीपुर मध्ये। विज शिष्यणी मार्या सहजा पठनार्थं।



काध्य एव चरित्र

१६६६ म्यस्थाङ्कपिक-नायुग्तः । त्यः थं १२। वाः १२८ इकः । मता-क्षिणे । निसन-नेनावार्मे स्वयनकुः भी बीदन वचा । १ कक्ता × । के कता × । दुर्गी । वे १७६। का बच्चार ।

१६६६ का-स्वाह्मवरिक™ापन सं १९। या १२६ँ× दक्ष। करा-हिन्दीनक। निपर-परितार नस्र ×ाने नस्त ×ापूर्णावे सं ९। कपच्यार।

१६६७ समस्यातकाण्याम् वयस्य १ शासः १ $\frac{1}{2}$ $\frac{1}{2}$ स्वा $\frac{1}{2}$ स्व $\frac{1}{$

१६६६, सुद्भवरिशासकायसम्मानाः । यथः थं । साः ११ ×र इक्षः याना-संस्युतः । पर्स-सन्द्राः र नालः × । ते नालः थं १७ ६ । पूर्णः । वै वै ११६ । वा समारः।

१६६६ अपन्नत्रायणारिक—सः सम्बद्धानिक्षित्रानगर्भे ११६। या १२४८६ इता प्रसानभेतरः। भेचन स्वयं तीर्मकृतं स्वतिनानं का बीवन वरिषारं क्ष्मत् ×ाने कस्तार्थं १६६१ रीप वृत्ये ४ । पूर्वार्थं संदर्भागाः

विकेद---शन्त का काम बावियुराल तका क्षमानाम कुसल जी है।

प्रवृत्ति — १४९१ वर्षे बीच वृद्धी प्राप्ती । यी तुष्यपि वप्तवर्गीत्स्वी बस्तवराणको औदुन्युन्यपार्णे स्त्वे च ची ६ प्रवास्त्रप्रेशा न ची ६ पत्त्रपर्शियाः च ची ६ प्रवासीतिस्थाः च ची ६ पुरवर्गतिस्थाः च सी ६ प्रवास्त्रपरियाः च ची ६ पित्रपर्शितिस्थाः न ची ६ पुरवस्त्रपरियाः च ची ६ पुरविक्रीतिस्थाः स्परियाणमं ची ६ पंतरपर्शित्सस्त्रपर्शिवाः ची ६ वीच व्रे वित्य च्या ची नाक्ष्यपेचे पुरवर्षः स्वरूपः च

> २ प्रतिसं । यत्र नं २ ६। में तुम्न सं १००० । वे सं १० (का मध्यार) इस क्षमार के एक प्रति (वे सं १३६) और है।

र १ प्रश्चिसी है। पवार्थ १६ । ने कल बक्क वे १९२७ । ने से १२ । क्रायमार । एक प्रति वे वे ६६६ पी और है।

 म प्रश्तिसं ४ । पर्यातं ११४ । से नामार्थं १ १७ प्रश्नुस्त युगे१ न वे वं ९४ । स् वन्ताः।

र के प्रतिसंधायपणे १२। ने नलाबं १ कलोड बुदी६। देते ६६। ₹

२००४ प्रति सद ६। पत्र सर १७१। नेरु गान गण १८४४ प्ररु थान्य गुरी द। देश सर ३०। इ. भण्डार।

विशेष-चिमनराम ने प्रतितिषि गी थी।

२००४ प्रति स०७। पत्र २०१८ । में व्यान गव १७७४ । येव सव १८७ । स्त्र भण्डार । इसके प्रतिरिक्त स्त्र भण्डार में एक प्रति (येव सव १७६) तथा द भण्डार में एक प्रति (येव सव

२१६३) घोर है।

२००६ ऋतुमहार—कालिष्टाम । पत्र म० १३ । मा० १०×३३ इन । भाषा-संस्कृत । निषय-पाष्य । र० यान 🗡 । ने० मान ग० १६०४ मात्राज पुरी १० । वे० म० ४७१ । ना भण्डार ।

विरोप- प्रतिम्ति-सेपप् १६२४ वर्ष ग्रस्थनि गृदि १० दिन श्री मलधारगरपे भट्टारत श्री श्री श्री मानवेप सृरि नप्रशिष्यभापत्रवेन निश्चिता स्वहत्तर ।

२००७ करकराज्यस्त्रि—मुनिकनकासर । पत्र ग०६१ । भाव १०३×४ इक्ष । भावा-मवस्त्र । । विषय-चरित्र । र० तात्र × । मे० गात्र ग० १४६४ फागुगा बुदी १२ । पूर्ण । वे० ग०१०२ । यः भण्यर ।

विरोप-नेपा प्रमस्ति याता भित्रम पत्र नहीं है।

२००८ करवरायुचरित्र-भट शुभचन्द्र । पत्र पत ८४ । मा० १०४५३ इस । भाषा-मस्मृत । विषय-चित्र । र० यान स० १६११ । मे० गाप स० १९४६ मगसिर मुदी ६ । पूर्या । वे० म० २७७ । स्त्र भण्डार ।

विशेष- प्रशस्ति---गवन् १९५६ वर्षे मागिसर गुदि ६ भीमे सोर्भत्रा (गीजत) प्रामं नेमनाय चैत्यालये यामलाष्ठायथे भ० थी विश्वमेन तत्त्वहुँ भ० थी विश्वाभूषमा नत्तिष्य भट्टारम थी थीभूषस् विजिरामेस्तत्शिष्य ग्र० नमसागर स्वस्मेन विशिव्ह ।

माचायावराचार्य श्री श्री च द्रवीतिजा मत्शिष्य माचार्य श्री हर्पवीतिजी की पुरतक ।

२००६ प्रति स०२। पत्र म० ४६। ते० यात्र 📈 । ये० स० २०४। व्य भण्डार !

२०१० कविष्रिया—केशवदेव । पत्र म०२१ । ग्रा० ६×६ दश्च । भाषा-हिन्दो । विषय-कान्य (शृह्मार) । र० पाल 🗡 । पे० गान 🗙 । ग्रानुर्गा । वे० स० ११३ | स्ट मण्डार ।

२०११ कादम्यरीटीका ापत्र त० १४१ से १८३। ग्रा० १०३४४ई इख । भाषा-संस्मृत । विषय-वाध्य । र० वाल ४ । वे० काल ४ । प्रपूर्ण । वे० त० १६७० । श्र्य भण्डार ।

२०१२ काञ्यप्रकाशसटीक । पञ्च स० ८३। ग्रा० १०५ँ×४५ँ इ.च.। भाषा–सम्पृत । विषय– मान्य । र० काल × । क्षे० याल × । भ्रवूर्ण । ये० स० १६७८ । ऋ भण्डार ।

ायशेप--टीकाकार का नाम नहीं दिया है।

२०१३ किरातार्जु नीय-महाकवि भारित । पत्र स० ४६ । झा ॰ १०५×४३ इ च । गापा-सस्युत । विषय-काव्य । र० काल × । क्षे० वाल × । प्रपूर्ण । वे० स० ६०२ । स्त्र भण्डार ।

```
कार्यक प्रश्
197
          २ १४ प्रतिस+ रायनसं वश्ते ६३ से नल × (सर्लामे संस्वरे। साम्पार।
          निकेप-वृति संस्कृत दीना सहित है।
           र १५ प्रक्रिया के प्रयूपी यक्षा के कर्मनार्थ १९६ जलकायुकी । वे धे १९२० <del>क</del>
रपार ।
          २ १६ प्रतिसंध । यन सं६६। से नाम सं१४२ बायवा बुधी । वे वं ११६। क
मचार ।
          विशेष---समितिक रीका भी है।
          व रेक प्रतिस् अनुवस्तै रैकाके पान से १ रकावे से १२४ । का बच्चार १
          विदेव---वद्यार नवर ये बाबोविक्रयों के राज्य में वं वर्षाबीराय में प्रतिनिधि करणायी ये :
          कार: तमिक्ट के। बच के वक्की वर्णन x । वे वर्ण प्रवास :
          P के प्रक्रियों का प्रवर्त १२ । के प्रल≪ा के सं क्षां क्राक्र अभ्यार ३
          विकेय-अति विक्रांग एत संख्या योगा शक्ति है ।
          इबके श्रातिरिता का अच्छार से एक प्रति (वे वा ६६ ) वा बच्छार ने एकी प्रति (वे ता ६६) प
भण्वार केएक प्रतिः (के सं ७) समाक्षा सम्बार केसीम असिक्षा (के सं १४ २६१ २६ए) और है।
          १२ क्रमारसम्बन्धनान्त्रस्थानार वास्तिकासः। यस सं ४१ । सात्र १९८६, इ.स. वासा-संसर्धः
विका-पाम्प १९ पान 🗡 हो पान श्रे १ वर्ष में विविध नेपविष भूती १ विश्व हो से सं १६६ कि सम्बर्ध ह
          विकेर---व्ह थिएक वाले से प्रकार खरान क्षेत्रने हैं (
          २ २३ प्रतिस्त-२ । पत्र वं २६१ ने जन्म वंग्रह्म । वं १०४६ । वीर्स । संस्थार ।
          २. २२. प्रति सः ३ । पत्र तं २७ । ते तल 🗙 । वे शुरु । 🕸 जन्यार । स्ट्रून वर्ष संग्रे।
          इनके व्यक्तिरक का एक क्र क्लार में क्ला एक वर्ष क्षेत्र (के व्यंत्र हुन ११४) वर मध्यार के से
महिना (वे र्च ७१ ७२) व्यानक्तार में यो महिकां (वे सं १३०:३१ ) तथा टाबकार ने तीन महिन
(व व २ १२ ३३३ २१ ४) और है।
          २ २३ क्रमारसंग्रकतीचा<del> काल</del>सागर। तम सं १२। सा १ xxx इ.स.। सला-संस्ताः
निमन-प्रमार क्षमा 🗙 । के अभा×ापूर्णी के सं २ के । कर अभागा।
          निर्देश-क्यीर चीर्टी है।
```

१४ कत-वृहासमि—वादीससिंहः वयंव ४१ व्या ११×४३ दवा प्रता-संदर्धः

पियन-कल्पारः कलासं १९५० कलासं पुरी १ । पूर्णाणे सं १३३ । इस्त्रमारः | विकेर---क्रमानाल कोशंबर परिवासी है।

र चेट प्रतिस्त नायसर्थ ४१। वे नाम सं १ श्रामाला सुद्री ६। ने न ४१। ^स

वितेर--वीपाल समरकदाती में पास्चाल केंद्र के देखें 'अदिवार्ष को तो ।

नग्डार ।

च भण्डार मे एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ७४) भीर है।

२०२६ प्रति स०३ । पत्र स०४३ । ले० काल स०१६०४ माघ सुदी ४ । वे० स०३३२ । व्य भण्डार ।

२०२७ खरहप्रशस्तिकाच्य (पंत्र स०३। ग्रा० ८ ° ४५ १ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य। २० काल ४ । ले० काल स०१८७१ प्रथम भादवा बुदी ४ । पूर्ण । वे० स०१३१४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—सर्वाईराम गोघा ने जयपुर में भवावती बाजार के भादिनाथ चैत्यालय (मन्दिर पाटीदी) में प्रतिलिपि की थी।

प्रत्य में कुल २१२ क्लोक हैं जिनमे रघुकुलमीं श्री रामचन्द्रजी की स्तुति की गई है। वैसे प्रारम्भ मे रघुकुल की प्रशसा फिर दशस्य राम व सीता भादि का वर्णन तथा रावण के भारने मे राम के पराक्रम का वर्णन है। प्रित्स पुष्पिका—इति श्री खंडप्रशस्ति काव्यानि सपूर्णा।

२०२८ गर्जासिहकुमारचरित्र—वित्तयचन्द्र सूरि । पत्र स० २३ । मा० १०३×४६ इख्र । मार्पो-मस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० म० १३५ । क्ष भण्डार ।

विशेष—२१ व २२वां पत्र नही है।

२०२६ गीतगोविन्द— जयदेव । पंत्र सं० २। भा० ११६ \times ७ ह च । भाषा—सस्कृत । विषयकाल्य । र० काल \times । भपूर्त । वेर्० संर्० १२२ । क भण्डोर ।

विशेय---भालरापाटन मे गौड ब्राह्मण पडा भैरवलाल ने प्रतिलिपि की थी।

२०३० प्रति स० २ । पत्र स० ३१ । लें० काल स० १८४४ । वे० स० १८२६ । ट मण्डार ।

विशेष--मट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि करवायी थी।

इसी भण्डार में एक मपूर्ण प्रति (वै० स० १७४६) भीर है।

रॅं०२१ गोतमस्यामीचरित्र—मर्डर्लाचार्यं श्री धर्मचन्द्र । पत्र सं० ४३ । मा० ६३४५ इख । भाषा~ः भस्कृत विषय-चरित्रं । रं० काल स० १७२६ ज्येष्ठं सुंदीं २ । ले० काल रं। पूर्णा । वे० स० २१ । ख्रा भण्डार ।

२०३२ प्रति स०२। पत्र स॰ ६०। ते० काल स० १८३६ कार्तिक मुदी १२। वै० स० १३२। क

२ देरे प्रति स० १ । पत्र स० ६० । ले० काल स० १८६४ । वे० स० ५२ । छ मण्डार । २०२४ प्रति स० ४ । पत्र स० ५३ । ले० काल स० १९०६ कार्तिक सुदी १२ । वे० स० २१ । मा मण्डार ।

२०३४ प्रति स० ४। पत्र स० ३०। ले॰ काल ×। वे॰ स॰ २५४। वा मण्डार्।

२०३६ गौतमस्वामीन्रिमापा पुत्रालाल नौधरी । पत्र मं० १०८ । मा० १३×४ इख । भोपा-हिन्ते । विषय-वरित्र । र० काल × । ले० वाल स० १९४० मगसिर बुदी ४ । पूर्ण । वेण स० १३३ । क भण्डार ।

विशेष-सूलग्रन्थकर्ता भावार्य धर्मचन्द्र हैं। रचना सबत् १४२६ दिया है जो ठीक प्रतीत नहीं होता।

```
[ स्वास्त एव परित्र

२ १० वटकपैरकाक्य-धटकपैर। पर सं ४। धा ११×६} इस : धना-धंतत | फिरन-
सम्मार कम × के पास सं १०६४। पूर्ण । वे सं ११ । घर सम्पार।
विकेश-बरापुर में धारिताय नेपास्त में सम्मारिया पता था।
स्वर्णार प्रमान में देशनी एक एक प्रति (के सं ११४० ७१) धीर है।
२ १८ कम्बनावरित-प्रत हासमानू । पर सं १९। धा १ ×१३ इस । वास-संस्त्र ।
```

वियम-विरिधार पालामं १६२४ । ते पालामा १ ३३ मध्यम कुछो ११ । यूर्या∫ वे सं १ ३ । व कब्बरः। ०३६ स्टिस्स २ । पत्तामं ३४ । ते पालामं १ २३ सक्का करो ३ । वे संस्थान

२ हैं। प्रतिस्थ २ | पर सं १४। ते पान सं १ ११ मझह दूरी है। वै सं १७२। है क्षमार |

व-धार। १४ प्रतिस ३३ पत्र सं ३३।के काल सं १०६३ कि धानराः नै नं १९७ । स

कम्बार। २ प्रदे प्रतिस्त ४ ३ पण कं ४ । में दाला थे १०६७ पण्या दुवी ७ | दे रं ४४ | व्र कम्बार।

प्रवारः। प्रवारः। प्रवारः।

क प्रदेशविद्ध की चल वंद । में जन्म वंद १९९ नंबर्गसर दुर्ग्य हैं] में वंट । में

क्ष्मारः । १<u>४४ वर्ण्यसम्परिक्तः संगत्तिः ।</u>पत्र गंदेशः । बा १५८६ दयः समा-चंत्रदानि^{द्यन} चरितारः सम्प्र≿ोने गलावं १८ ६ वीच वर्षीः १९ वर्षीः ने वं १० । बाक्सारः ।

विचेष—स्वास्ति समूर्यक्षे। १४४१ प्रतिसा २ । पत्र वं १६ । नै कल्लावं १६४१ वंदविर वृद्धे १ | वे वं १४४ |

र प्रदेश प्रतिकार । पण वंदर्शन जान संहर्ष्य संस्थित सुद्री है । वं संस्थ इस्तियार ।

२०४६ मिरिसी के । एक वें नक के काम में ११९४ पास्था मुद्दे हु । के के ११। वें भन्मार ।

विवेष—प्रतिव कारित तिम्न तकार **8**—

को मार्चकम श्रेष्ठ विदुषः पुनिः गर्गानश्यक्षेत्र प्रतिक्षं कारात्रविक्षं वातुः कृतवस्तितराकारात्रेक स्त्रीत गर कारात्रवृत्ते विवयर मणवारात्रको रामानारतीयाँ पांच्याको निव्यक्तविक्षां कारात्रवस्य कार्यः । १२ १४ वर्षे वार्षश वर्षीः ७ कम्प तिर्वित्तं कर्मेवस्थानियां। २०४७. प्रति स० ४ । पत्र स० ५७ से ७४ । ले० काल म० १७८५ । अपूर्णे । वे० सं• २१७७ । ट भण्डार ।

विशेप-प्रशस्ति निम्न प्रकार है---

सवत् १५६५ वर्षे फाग्रुगा बुदी ७ रिववासँरै श्रीमूलसघे बलात्कारगरो श्री कुन्दकृन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनिददेवा तत्वट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीत्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री त्रिभुवनकोत्तिदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री सहसकीत्ति देवातित्वाच्य व्र० सजैयति इद द्वास्त्र ज्ञानावरगो कर्मक्षया निमित्ते लिखायित्वो ठीकुरवारस्थानो साधु लिखते ।

इत प्रतियों के म्रितिरक्त म्म भण्डार में एंक प्रति (वै० स० ६४६) च मण्डार में दो प्रतिया (वे० स० ६०, प्रते) ज भण्डार में तीन प्रतिया (वे० स० १०३, १०४, १०५) व्या एवं ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० स० १६४, २१०) मौर हैं।

२०४८ चन्द्रप्रभकारुयंपजिका —टीकाकार गुण्निन्दि । पत्र स० ८६। मा० १०४४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल ४ । ले० काल ४ । वे० स० ११ । व्य भण्डार ।

विशेष-मूलकर्ता बाचार्य वीरनदि । सस्कृत में संक्षिप्त टीकां दी हुई है । १६ सर्गों मे है ।

२०४६ चद्रप्रभचरित्रपश्चिका" । पत्र स० २१। मा० १०० ४४० इख्रा भाषा—सस्कृत । विषय— चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १५६४ मासीज सुदी १३ । वै० म० ३२५ । ज भण्डार ।

२०४० चन्द्रप्रभचरित्र—यशक्तीरित । पंत्र सर्व १०६। मा॰ १०३×४३ इख । भाषा-मपम्न श । विषय-माठवें तीर्यक्कर चन्द्रप्रभ का जीवन चरित्र । र० काल × । लै० काल स० १६४१ पौप सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ६६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-मय सवत् १६४१ वर्षे पोह श्रुदि एकादशी बुधवासरे काष्टासचे मा (अपूर्ण)

२०५१ चन्द्रप्रभचरित्र—अट्टारक शुभचन्द्र । पत्र स० ६५ । ब्रा० ११×४५ छ्य । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्रः। र॰ काल \times । ले॰ काल सं॰ १८०४ कार्तिक बुदी १० । पूर्ण । वे॰ स॰ १। श्र भण्डार ।

विशेषं चर्मवा नगरे बन्द्रप्रभ चैत्यालय में भावार्येवर श्री मेरूकीर्ति के द्वाप्य पं० परशुरामजी के विष्य नदराम ने स्वपठनार्थं प्रतिलिपि की थी।

२०४२ प्रति स०२। पत्र स० ६६। ले॰ काल स० १८३० कार्तिक सुदी १०। वे० स० ७३। कः भण्डार।

२०४२ प्रति स० ३। पत्र स० ७३। ले० काल स० १८६५ जैठ सुदी ८। वे• स० १६६। रू मण्डार।

इस प्रति के ग्रतिरिक्तं का एवं ट भण्डार में एक एक प्रति (वै० सं० ४८, २१६६) ग्रीर हैं।
२०५४ चन्द्रप्रभचरित्र—कैवि दामोद्दर (शिष्य धर्मर्चन्द्र) । पत्र सं० १४६। ग्रा॰ १०६×४० इश्व।
भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्रं। र० काल स॰ १७२७ भादवा सुदी ६। लै० कार्ष स० १८६१ सावरा बुंदी ६। पूर्ण ।
नै॰ सं॰ १६। श्र भण्डार ।

```
331 ]
```

🌓 ब्राध्य एवं परित्र

```
विदेश—दहरेगाद- <sub>३४</sub>
```

₽ नवः । श्री वरशासने नवः । श्री नरस्तर्ये नवः ।

धियं चैत्रप्रयो निष्माचे**त रक्षण्य साध्**नः ।

मुद्यानगरमो पुरुषयस्यारस्मृतने । हेन स्वरायमुद्रोलीर्स वरोकः प्रवर्णक्रकः ॥२॥

दुवादी देन वीर्वेकायमधीय अवस्ति । सन्दर्भ पुरस् परि पूनर्य पुरसादक ॥६॥

चली वीर्वकरः वाको पुल्तियो बहारकी । सारिकाक कहा समित करोडू वर प्रसारित हुन् धारा

মন্তিৰ খল---

बूहलेकानम (१७३१) यदवर्गर उन्हें वर्षेत्रीडे वसीयविवयेकाचि वार्वे स्थीपे ।

हत्ये हाते विराधितामितं बीजवृत्तासूच्यांम्यः नामस्ययवद्यव्यये कृति बोजविद्याने शस्त्रशाः

नावस्त्यवद्यानम् कृतः वात्रावदासः (स्ट्या) रुद्धं वकुः वात्राद्धः वंत्रवद्युत्तानि वं

धपुत्रने वनाकाले क्वोनीर्यं प्रमाणकः ॥०६॥ इति को संस्कृतिकोत्रक्त् शरहणकेल जीवनीर्वाधिक गवि वालोक्स्पीक्षेणे कील्कामः वीके निर्माण

21

वत्तर वर्तने बात क्योंकारि बातः वर्षे ११७०। प्रेष्ठ को क्यूसकारियं बनायं । वेगर् १००१ - बातरा दितीय क्यूसके वक्यमं दिवो हामगरूरे बनायं क्यूसरे बातराय नामेस्रो इस मेरिर विवर्त वे - बोक्यास्य टिया कुएराम्ब्री स्था क्यूसरुरकायं वर्षे विव

क्युक्पचंत्रात स्वरूतेनपूर्वेदर्शः । १ द्वरः प्रति सः २ । पण्यं १६२ । वे चलतः ई. १२ पोष बुदी १४ । वे वं रेण्टे । वे

१ ४४ प्रतिस २। पार्व ११९१ वे कालबं १ १९ पीकपुरी १४ । वे वं रेक्टी। मधार।

२०६६ सहित् है १९४४ में १११ में नमार्थ ११४ मध्यार मचार। विका- में नोकानमधी दिव्य पे स्थापन के कल की व्यक्तियों की की।

(समा—व कुम्बरणका क्यान प्रत्यन्त व व्यवस्था प्रायक्षक स्वायक्ष स्वायक्ष स्वायक्ष स्वायक्ष स्वयक्ष स्वयक्ष्य स्वयक्षिक स्वयक्ष्य स्वयक्य स्वयक्य स्वयक्य स्वयक्य स्वयक्य स्वयक्य स्वयक्ष्य स्वयक्य स्वयक्य स्वयक्ष्य स्वयक्ष्य स्

विकेश-केमल दूधरे वर्ष में धारी हुने न्यान प्रकरण के स्लोशों की बाधा है। इसी क्यार में बीन प्रतियों (वे स. १९६, १९७, १६) मीर हैं।

1

VF

7 -5 -

२०४८ चारुदत्तचरित्र-कल्याग्यकीर्ति । पत्र स० १६ । द्या ॰ १०६ ४४% डब्र्य । भाषा-हिन्दी । विषय-मेठ चारुदत्त का चरित्र वर्गीन । २० काल स० १६६२ । ले० काल स० १७३३ कार्त्तिक वुदी ६ । प्रपूर्ण । वे० स० ८७४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—१६ से ग्रागे के पत्र नहीं हैं। ग्रन्तिम पत्र मौजूद है। बहादुरपुर ग्राम मे प० भ्रमीचन्द ने प्रति-लिपि की थी।

मादिभाग-- ॐ नम सिद्धे भ्य श्री सारदाई नम ॥

मादि जनमादिस्तवु मित श्री महावीर ।
श्री गीतम गणधर नमु विल भारति गुणगभीर ॥१॥
श्री मूलर्संधमिहिमा घणो सरस्वतिगछ ग्रु गार ।
श्री सकलकीर्ति गुरु मर्नुक्रीम नमुश्रीपर्यनिदं मवतार ॥२॥
तस गुरु श्राता गुभमित श्री देवकीर्ति मुनिराम ।
चारुदत् श्रेष्ठीत्तणो प्रयंघ रचु नभी पाम ॥३॥

नितम- र महारक सुख़कार ॥

7 7 7 1

सुखकर सोर्भाग भ्रोत विचक्षत् विद वारण केशरी।
भट्टारक श्री पद्मनदिचरणकंज सेवि हरि १।१०॥
एसहु रें गद्ध नायक प्रणिम वरि '
देवकीरित रे मुनि निज ग्रुरु मन्य भरी।
धरिवित्त चरणे निम कल्याणकीरित इम भणी।

चारुदत्तकुमर प्रबंध रचना रचिमि बादर घरिए ।।११।⊢

- / रायदेश मध्य रे जिलोक इंविस निज रचनायि रे हरियुर निहसि हिस ग्रमर कुमारनितिहा धनपति वित्त विलसए।

प्राज्ञाद प्रतिमा,जिन प्रति∗करि सुकृत संज्ञए ।।१३।। , मुकृत सिच रे व्रत बहु ग्राचरि

किर उद्दय गान ग्रम्य चन्द्र जिन प्रासादए † ﴿
 वावन सिसर सोहामग्र ब्वज वनक कलश विलासए ॥१३॥

मंडप मर्ष्यि समवसरसा सोहि श्री जिन विवरे मनोहर मन मोहि ।

दान महोद्दवरे जिन पूजा करि

नीर्येः जिनका निविधान नामस्त्रीयिकास्यः सिद्धे विश्वमात्रः विकास नुमार जिनसोसम् रक्षपानद् (१९४१) सर्वे चोनार्यः रे रचनो नरि

संस्थान् विरे धाली बनुसरि है सर्वेत्तरि बाधी कुम्त पंत्रती श्रीहरू पराहरूरव वरि ह सम्बद्धतीरित स्वीह बन्दम मेन्द्री सम्बर्ध सरि शहेश्व

हाह!—सारर बहा तंत्र बीठांश रिक्ष बहित कुकरार }
हे शैंख जाररक यो तर्पय रच्यो नगेहार ।११।
सीछ हुँछ सारर वरि याच्य त्रिकेश वान व हु श्री बक्त वरि सार्थ विकिश वान व हु श्री बक्त चर्च कि सह चर्च स्थीन ख्रावन ।२१।

निकेस-स्वत् १ ३३ वर्षे व्यक्तिक वर्षि वे प्रवेशीर निकेश बहाइएएरवाने को विधानमी बेमानवे बहुा-इस दो २ कर्माकुरक्ष उत्तर बहुाएक यो २ विधानीति उद्यक्ति परित्य प्रवेशिय स्वकृति निकित्तं ।

।। मी रस्तु स

२०४६. चावस्याप्ति — नारास्त्रक्षाः) यण्यं दृश्याः १९४४ रक्षाः समा-हिम्साः विश्व-चरिताः : समानं ११६ वसन पुरो राजे कस्त ४ । पूर्वाणे संदेशनास्त्र समारः

१ ६ चाप्रचारिक—व्यक्तिकाकः। पर्यः १६। वा १९३४ व्यः । पाना—दिनी मर्थः । विका-परित्र। र काल वं १६१६ वाम बुधी १। ते काल ४। वे वंश्रेष्ट । व्यक्तिकारः।

96६१ कस्यूल्प्रीयशिक्षं—अंश्वीतन्त्रेसारोपीवी १७ तेना १२८४६ स्वः याना-संस्तृतः । निका-निर्मा र ऋतः ४ ते तास सं १६३६। पूर्णीय वीश्रेष्ठरेश ता सन्सरः

र ६२, महिन्दी २ । पण वं ११६ । ते काल वैने १७३६ कंडाच पूरी ४ । वे सं १९६ | व्य क्लार |

र ६६ मतिसा दे। धन सं ११४ । तेश्वे केलाई वेश्वेर विश्वेर विश्वेर स्थापना सुधी १९ । ये वं १५४ । इर सम्बद्धाः

वियं एव चरित्र]

अ भण्डार ।

२८६६ प्रति सट ६ । पत्र स० १०४ । ले० माल म० १८६४ पीप बुदी १४ । वे० म० २०० । इ मण्डार ।

२ ६७ प्रति सट ७ । पत्र स० ८७ । ले० काल स० १८६३ चैत्र बुदी ४ । वे० म० १०१ । च मण्डार ।

विशेष---महात्मा दाम्भूराम ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

२८६८ प्रति सट ६ । पत्र स० १०१ । ले० काल म० १८२४ । वे० स० ३४ । छ भण्डार ।

२०६६ प्रति सर ६ । पत्र स० १२३ । ले० वाल ४ । वे० स० ११२ । व्य भण्डार ।

२०७० जम्बूग्वामीचरित्र-प० राजमञ्ज । पत्र म० १२६ । मा० १२३×५३ इञ्च । भाषा-सस्त्रत । विषय-चरित्र । र० काल स० १६३२ । ले० काल 🗶 । पूर्ण । वै० स० १८५ । क मण्डार ।

विशेष-१३ सर्गों मे विभक्त है तथा इसकी रचना 'टोडर' नाम के साधू के लिए की गई थी।

२०७१ जम्यूम्वामीचरित्र-- विजयकीर्ति । पत्र स० २० । मा० १३×८ इख । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० कान स० १८२७ फाग्रुन बुदी ७ । ले० वाल 🗙 । पूर्ग । वै० सं० ४० । ज भण्डार ।

२०७२ जम्बृग्वामीचरित्रभाषा—पञ्जालाल चौधरी । पत्र स०१८३ । मा० १४३×४५ इख । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र० काल सं० १९३४ फाग्रुग्। सुदी १४ । से० वाल सं० १९३६ । घे० स० ४२७ ।

२०७३ प्रति स०२। पत्र स०१६६। से० वाल 🗴 । वे० स०१८६। क भण्डार।

२८७४ जम्यूरवामीचरित्र—नाथूराम । पत्र स० २८ । मा० १२६४८ इख्र । भाषा-हिन्दी गरा । विषय-चरित्र । र० काल 🗴 । ले० कान 🗴 । ये० स० १६६ । छः, भण्डार ।

२०७४ जिनचरित्र । पत्र स० ६ से २०। ग्रा० १०४४ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र। र• नाल 🗙 । ने॰ काल 🗙 । झपूर्ण | वे॰ न॰ ११०५ । स्त्र मण्डार |

२०७६ जिनदत्तचरित्र—गुण्भद्राचार्य । पत्र स० ६५ । झा० ११४५ इख । मापा–सस्कृत । विषय्– चरित्र । र० काल ⋉ । ले० काल स० १५६५ ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्ण । ये० स० १४७ । ऋ मण्डार ।

२०७७ प्रतिस०२ । पत्र स०३२ । ने० काल स० १८१६ माघ सुदी ४ । वे० स० १८६ । क मण्हार ।

विशेष—सेखक प्रशस्ति फटी हुई है।

२०७८ प्रति स० ३ । पत्र स० ६६ । ने० कान म० १८६३ फाग्रुए। बुदी १ । वे० स० २०३ । ट मण्डार ।

२०७६ प्रति स॰ ४ । पत्र स॰ ५१ । से० काल स० १९०४ झासीज सुदी २ । ये० स० १०३ । च मण्डार ।

```
tue ]
                                                                        🗐 बद्धानम् एव चरित्र
           २०८० प्रतिस॰ ३१ पण से १४ (ते साल वे १ ७ मेपलिर मुद्दी १३ वे से १४ । प
नग्हार ।
          रिकेर-पद प्रति वं चीकान्द एवं राजवंद की भी ऐसा सलेख है।
          क्क जन्दार में एक सपूर्ण बंदि (वे र्थ ७१) बीर है।
          र मर्दे प्रति स॰ कें क्वर में १७ कि नाम में १९ ४ नार्तिक बदी १२ व वे ११ व
BARTE 1
          क्रिकेट---क्रेडियन क्ष्मा बाले ने कारी में प्रतिनिधि को वी ।
          २ बर- प्रतिस 🗢 । पर संदेशी में कल्प वं १७ ३ वंक्तिर वरी । वे वं २४३ । में
बचार ।
          दिरोच---किलास मैं वं थोळ न ने प्रतिसिधि की बी ।
          ६०८३ जित्तरचणरिवभाषा—पत्राकास चौधरी । वर र्व ७६ (सा. १९×१ रहा) त्रापा—रिली
बळ । विवद-वरित । र जान वं देहदे६ नाव पूरी ११ । ये जान ⋉ | पूर्ण । दे वं ११ । या वधार ।
          २ मा प्रतिस २ । पत्र वं ६ । ने कल 🗴 । वे स १६१ । 🕊 कमार ।
          २०८३, बीदबरणरिक-महारक शुभक्त्य । यह मं १२१ । बा ११४४ई इक्ष । माना-मीसूत ।
विका-वरितः। र तत्त्र वं १३६६ । के बात वं १०४ चाहुत दूर्गा १४ । दुर्गा के सं २१ । का
क्षकार ।
          इसी अध्यार वे र महर्त्त प्रतिकां (ने वे यक्ता ६१) शीर है।
          s act sिक्र दावन में क्या के बॉल क्षेट शासकार नहीं शिक्ष में के दाक
बरहार ।
         विरोप-नेबक प्रचलित नदी हुई है।
          १६५ प्रतिस⇒३) वर्षर्थः ने बलानं १६ वर्षणपूरी । देनं ४१। हा
```

लमार । दिनेक — बराई बक्तवर वें बहुताबा वंदानेंद्र के व्यवस्त्रक के नेविपार निव वैपासन (घोषों पर वन्दिर) में बबतापन इक्तायन ने बांडीडॉर को बी । क द्या प्रतिकों अ । यस से हैं राति वाल वें हर क्येंड यूरी १ । में अरु मुख

प्रचार १६६६ महिला≎ १| पण सं-११ । में बार वं १ श सेवार मुत्ती के । १ मं १ । म प्रचार।

ने ६० जीर्थस्यापिक-नवनेत्र शिक्षाता (पार्च ११४) व्या १० १६६ १४८ था भगा-शियो। पिरक-परिचार काम संदूष्ण । ने बाच संदूष्ण कृति है अंद्रिय प्रमासार स

२०६१ प्रति स०२। पंत्र स०१२३। ले० माल स०१६३७ चैत्र बुदी हा वे० सं० ४४६। च मण्डार ।

२०६२ प्रति स० ३। पत्र स० १०१ में १४१। ले॰ काल 🗙 । मपूर्ण । वै॰ स॰ १७४३। ट भण्डार ।

२०६३ जीवधरचरित्र--पन्नलाल घौधरी। पत्र स० १७० । मा० १३×५ इस । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । र० काल स० १६३५ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० २०७ । क मण्डार ।

२०६४ प्रति स०२ । पत्र ग०१३ ४ । ले॰ वाल 🗡 । वे॰ म०२१४ । इ. भण्डार ।

विशेष-अन्तिम ३५ पत्र चूहा द्वारा खाये हुये हैं।

२०१४ प्रति स्ट ३ । पत्र स० १३२ । ले॰ काल × । वै० स० १६२ । छ भण्टार ।

र०६६ जीवधर्चरित्र '। पत्र स० ४१। मा० ११३० ८ इख । भाषा-हिन्दी गरा । विषय-चरित्र । र० नाल × । ले० नाल × । मपूर्गा ! वे० स० २०२६ । स्त्र भण्डार ।

२०६७ गोमिगाहचरित्र--कविरत्न श्रवुध के पुत्र लद्मगादेव। पत्र सं० ४४। मा० ११×४ई इ**म**ा मापा-प्रपन्न श । विषय-चरित्र । र० काल 🗴 । ले० वाल ६० १५ ३६ गर्क १४०१ । पूर्ण । वै० स० ६६ । स्त्र मण्डीर ।

२०६८ ग्रेमिगाहचरिय—दामोदर । पत्र म० ४३ । मा० १२×५ इख । भाषा-मर्पन्न र्श । विषय-काव्य । र० काल स० १२८७ । ले० कान स० १५८२ भादवा सुदी ११४ । वे० स० १२५ । व्याभण्डार ।

विशेष--चदेरी में माचार्य जिनचन्द्र के शिष्य के निर्मित्त लिखा गया।

२०६६ त्रेसठरालाकापुरुपंचरित्र' । पत्र स∳ ३६ मे ६१। मा० १०३×४३ इच । भाषा–प्राकृत । विषय-चरित्र । र० वाल 🗙 । ले० काल 🗶 । झपूर्गा । वे० स० २०६० । स्त्र भण्डार ।

३००० दुर्घटकाच्य । पत्र सं०४। भा०१२×५३ डब्र। भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र• काल ×। ले० काल ×। वे० स० १८४१। ट भण्डार ।

३००१ द्वात्रयकाव्य-हिमचन्द्र।चार्य। पत्र स० ६। मा० १०×४६ इक्क । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्यः। र० काल ⋉ । ले० काल ⋉ । पूर्णः । वे० स० १८३२ । ट भण्डारः । (दो सर्गः हैं)

३००२ द्विसधानकाव्य-धनख्रय । पत्र म० ६२ । मा० १०३×५३ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-कान्य । र० काल 🗙 । ले॰ काल 💉 । मपूर्ण । वे० स० ८५३ । स्त्र मण्डार ।

विशेष — बीच के पत्र ट्रेंट गर्य हैं। ६२ से ग्रागे के पत्र नहीं हैं। इसका नाम राघव पाण्डवीय काग्य मो है।

२ वर्षे प्रति सं ०२। पर्त्र स० ३२ । ले काल × । प्रपूर्ण वि स व ३३१ । क मण्डार ।

२००४ प्रति संद रे। पत्र स० ४६ । ले० कार्लस० १४७७ मादवा बुदो ११। वे० स० १४८। क मण्डार ।

विशेष—मीर गोत्र वाले श्री खेऊ के पुत्र पदारथ न प्रतिलिपि की घी।

```
्रिकास्थ एवं परिष
tet 1
           ३ ४ द्विसवानकास्वरीका---विनयकस्व । यत्र सं २२ । सा १२३×१३ इचा अला-नंस्कर ।
विषय-प्रस्मार काल X | के शाल X । पूरा। (यंत्रत सर्वतक) वे तं ३३ । क बच्चार |
           ३ ६ हिस्सानकाक्यटीका--मेसिकाह। यत्र वं ३११। वि<del>वय कामा</del> । वारा-तोस्त । र
क्ता×। के क्ता से १६६२ कॉलिक युवी ४ । पूर्ती वे वे ६२६ । का समार।
           विकेष-स्थारा नाम पर नीमुधी भी है।
           ३ ००६ व्यतिस्री २ । पर संदेश । के नाम क्षी १ ७३ मान लूसी । वे संदर्भ । ⊈
क्यार १
           ३ ८८ प्रतिसं ३ । पर्यक्ष । वे यालाचं १४ ६ वर्डतक स्टी२ ३ वे ११३ । म
बचार ।
           विकेद—केन्द्रक प्रकृति प्रपूर्ण हैं । बोशायक (ज्याणिवर ) वे ज्ञाराचा हुपरेंद्र के बासगुरुक्त में प्रतिविधि
को वर्ष थी।
            ३ ६ हिस्सामकाव्यटीका<sup>… …</sup>। यद सं १९४० सा १ <sub>६</sub>× दश्च । त्राना<del>-संस्</del>त । विवस्
शक्तार कल ×ोने तल ×ापूर्ती के दे ३२ ।% स्वतः।
            ३ १ क्षमस्क्रमारचरित्र—या ग्रह्मसङ्ख्या व व द १३। सः १ ×१ इक्र। त्रामा-संस्तृ ।
विका-परितः। रः काल x । वे काव x । पूर्वः । वे वं ३३६ । कृ वचारः ।
            ३ ११ प्रतिस २ । पर वं २ ते ४२ । के कार वं १११७ सालोज वर्षा । स्पूर्त (के
 a । इत्था क्र क्लार ।
            वि<del>केर - इ</del>ट वांच के निवासी वर्णनायान भारतिन के अधिनिधि की वी । क्ष्म स्वयं इस ( क्ल्यूप ) <sup>स्</sup>र
```

- नामीपन का प्रस्त सिका है। इ. १६. प्रति सं है। पर सं १६। में कमा सं १६६२ हैं। क्लेड बुवी ११। में सं प्रदेश में

वचार। विकेस-सम्बन्धां स्टेड्रेड्ड्डे । धानेर वें व्यवसम्बन्धं स्टिशिट हुई। सेक्स स्वर्तिः

स्थान कर स्थापन के प्रति । समूर्त है।

. ११६ असिस धारवर्ष ११।वे सम्बद्ध १६४।वे वं १९ ।सम्बद्धाः ११५ अस्टिस धारवर्ष ११।ते सम्बद्धाः वं वंश्वरासम्बद्धाः

कृष्य अधिस्य शाननंत्र वेशानं सम्बद्धाः चर्चारः कृष्यः अधिक्षं वृत्तनंत्र प्रयाधि नामनं १६ वे सम्बद्धाः वृत्ति वृत्ते संपरः । स

भवार। विशेष-व्यक्तिता वीवानी वे जन् की अधितरि करके पुनि की नम्पनिति को वेट किया था। ११६ वस्त्वुत्पारवरिक-सः क्षण्यक्रविचि । यद वे १ ७ १ वा० १६४८५ ३ वस । नारा-संस्त्रत ।

विषय-परिवार तस्य × त्ये प्रसम्× त्रमूर्णः हेरे वं ६३। जानन्यरः।

विकेत---क्युर्व स्वीपकार वक् है

काठ्य एव चरित्र

३०१७ प्रति स० ३। पत्र म० ३६। ले० काल स० १८५० ग्रापाढ बुदी १३। वे० स० २५७। स्त्र

मण्डार ।

विदोप--- २६ से ३६ तक के पत्र बाद में लिखकर प्रति को पूर्ण किया गया है।

, ३०१८ प्रति स०३। पत्र स०३३। ते० काल स० १८२५ माघ सुदी १। वे० स० ३१४। श्र

मण्डार ।

३०१६ प्रति स०४। पत्र स० २७। ले० काल स० १७८० श्रावरा सुदी ४ । प्रपूर्ण । वे० न० ११०४। स्म भण्डार।

विशेष-१६वा पत्र नहीं है। प्र० मेवसागर ने प्रतिलिपि की थी।

२०२० प्रति स०, ४, । पत्र स० ४१ । ले० वाल स० १८१३ मादवा बुदी म । वै० स० ४४ । छ

मण्डार |

दिये हैं। कुल ७ मधिकार है। , ३०२१ प्रति स० ६ । पत्र म० ३१ । ले० काल 🗶 । वे० स० १७ । चा मण्डार ।

विशेष-देत्रगिरि (दोसा) में प० बख्तावर के पठनार्थ प्रतिसिषि हुई । कुठिन शब्दों के हिन्दी में प्रथं

२०२२ प्रति स० ७। पत्र सं० ७६। ले॰ काल स॰ १६६१ बैशास सुदी ७। वै० स० २१८७। ट भण्डार।

विशेष—सवत् १६६१ वर्षे वैशाख सुदी ७ पुष्यनक्षत्रे वृधिनाम जोगे ग्रुक्वासरे नद्याम्नाये बलात्कारगरो सरस्वती गच्छे ।

३०२३ धन्यकुमारचरित्र--- म० नेमिद्त्त । पत्र स० २४ । मा० ११×४३ इ च । भाषा-सस्कृत ।

विषय-चरित्र। र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्गी । वे० सं० ३३२ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

२०२४ प्रति स०२। पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १६०१ पीप बुदी ३। वे० स• ३२७। इन्
मण्डार।

विशेष-फीजुलाल टोग्या नै प्रतिलिपि की थी।

रेटरेश प्रति स० ३। पत्र स० १८। ले० काल स० १७६० श्रावण सुदी ४। वै० सं० ६६। इन

विशेष महारक देवेन्द्रकीित् ने भ्रपने शिष्य मनोहर के पठनार्थ ग्रन्य की प्रतिलिपि की थी। २०२६ प्रति सब् ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल स० १८१६ फाग्रुए बुदी ७ । ये० स० ८७ । स्व

nakis 1

विशेष-सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी। ३०२७ धन्यकमारचरित्र स्वयस्त्राहरू

३०२७ धन्यकुमारचरित्र-सुशालचंद । पत्र स॰ ३०। झा॰ १४×७ ६ च । भाषा-हिन्दी पछ । विषय-चरित्र । र० काल × । के० काल × । पूर्या । वे० स० ३७४ । झा मुख्हार ।

```
्रम्म सरहर
t=8 ]
          ३ २ म. प्रतिसः २ । पत्र सैक ३१ । ते काल 🗴 । वे ते ४१२ । का अभार ।
          1 २६. प्रतिसं ३ । पत्र सं६२ । ते कान X । वे सं६४ । वा सम्बार ।
          ३०३ प्रतिसंधानवर्षशः। में कान्य X 1 में व ३२६। क सम्बार |
          ३ ३१ प्रतिसं ४ । वर्ष ४४ । वे कल सं १९१४ शॉलक दूरी हा वे सं ११९ । व
चयार ।
          ३ ३२, प्रतिसं ६ । पद संहदाने कला संह ५३२ । देव द¥ । मृक्तार।
          3 35 प्रतिस को परंथ ६६। से कल ×ावै सं ४६६। या समार।
          विजेद-वंशीयराम कृषका बीजनावास शांते ने प्रतिविधि की थी । तन्त्र स्वस्ति वाची विस्तृत हैं।
          इसके व्यक्तिरिक च वस्थार में एक अवि (वे सं १९४) तथा क्यार स वस्थार में इक एक औ
(क सं १६ स १२) सीर है।
          ३ ३४ सम्बद्धमारचरिक्रण्यान्य वं १ । सः १ 🗙 इक्रः शरा-हिन्दी। निवर-नदीः
र नाम × 1 ने नाम × 1 ब्यूली 1 वे वे वेरवे । क बचार १
          3 3 ≱ प्रतिसं १ | पत्र तं १ । ते कान X ≀ सर्वादे वं ३२४ । अन्यादार ।
          ३ ३६ धर्मशर्माम्बुरय-अहाकवि इत्त्विन्द् । यद वं १४६ ध्या १ <sub>१</sub>४८ <sub>र</sub> रम्र । वर्गा-
संस्तः। दिवक–राम्रः।र नाल ×।ते नाल ×।पूर्णः।वै वं ११। घनवारः।
          ३ ३० प्रतिस २ । यन वं १ ० | ने नाप नं १८२ नातिक तुरी । वे वं १४० | व
बचार ।
          विक्रेय-मीचे क्षेत्रत में संनेत विने हुए हैं।
          3. ३८८ प्रतिस दे| पद वं थद । में पाच×। वे रं १३। स्वयन्तर।
          विद्येष-- इसके प्रतिरिक्त का तका का करतार में कुछ कुछ सदि (के वं १४८१ १४६) मी (है।
           ३ ३६. धर्मग्रमाम्युरवरीका-कारकोर्ति । वर वं ४ ने ६१ वा १९४६ रखा मान
 नंसन । विवय-नत्य । र. पल 🗙 । वे. रहत 🗴 । बहुर्ल । वे. वं. . १६ । व्यावधार ।
          रिमेच—दीरा रा नाव 'श्रीड् व्यक्त रीनिरा' है ।
           ३ ⊻० स्थि स० २ | यस वं ३ ४ । ते राल वं १६२१ वालास पूरी १ । पूर्ण | वे सं १४० ।
 क्ष प्रचार ।
           पिरोर—कम्बन्द वें एक प्रति (वे वं १४१) यो जीट है।
           १०४१ महात्वदाव्य—स्यारिक्यसृरिः वचर्व १९ते ११७। वा १ ८८} इक्षः। प्रता-संद्रवः।
 नियम-पालनार पल्लामे पालत १४४२ व वसूनपुरी । बहुनी|देलं १४२ । स्प्रपार।
           बक्की है के वह दक्ष, प्रश्तवाहित से अने नहीं हैं। दो पत्र बीच के बीट है जिन पर पत्र संन्ति हैं।
```

विभेर--- वना नाव 'ननावन बहारान्य' तना 'पुबेर पुरान' मी है। इसकी रचना स १४६४ के

पुर 🚅 बी । जिन रालकोर ने कल्पपार हा बाद महिलाकपूरि तथा नाहिलकोर योगों रिसा हूबा है ।

काव्य एव चरित्र]

Hacis 1

प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवत् १४४५ वर्षे प्रथम फान्गुन वदि ८ शुक्रे लिखितमिर्दं श्रीमदर्णहिलपत्तने ।

३०४२ नलोद्यकाव्य-चालिदास । पत्र स० ६ । मा० १२×६३ इ°च । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल स० १८३६ । पूर्ण । वे० स० ११४३ । । श्र्य भण्डार ।

३०४३ नवरत्नकाठ्य । पत्र स०२। आ०११×५३ इ.च. भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स०१०६२ । श्रा भण्डार ।

विशेष-विक्रमादित्य के नवरत्नों का परिचय दिया हुमा है।

३ ४४ प्रति स०२। पत्र स०१। ले॰ काल 🗙 । वे॰ स॰ ११४६। स्र भण्डार ।

३-४४ तागकुमारचरित्र—मिल्लिपेण सूरि । पत्र स० २२ । ग्रा० १०६४६ हुँ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल 🗙 । ले० काल स० १५६४ भादवा सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २३४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-लेखक प्रशस्ति विस्तृत है।

सवत् १५६४ वर्षे भादवा सुदी १५ सोमदिने श्री मूलसधे नद्याग्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदा-चार्यान्वये भ० श्री पद्मनिदिवा त० भ० श्री शुभचन्द्रदेवा त० भ० श्री जिनचन्द्रदेवा त० भ० श्री श्रमाचन्द्रदेवा तदाग्नावे खण्डेलवालान्वये साह जिण्णदास तद्भार्या जमणादे त० साह सागा द्वि० सहसा भृत चु हा सा० सागा भार्या सूहवदे द्वि० शृ गारदे तृ० सुरताण्दे त० सा० शामा, धण्णपाल धासा भार्या हकारदे, धण्णपाल भार्या धारादे । द्वि० सुहागदे । सहसा भार्या स्वरूपदे त० सा० पासा द्वि० महिपाल । पासा भार्या सुगुणादे द्वि० पाटमदे त० काल्हा महिपाल 'महिमादे । चु हा भार्या चादणदे तस्यपुत्र सा० दासा तद्भार्या दाहिमदे तस्यपुत्र नर्रासह एतेपा मध्ये धासा भार्या महकारदे इदशास्त्र लि॰मडलाचार्य श्री धर्म्भचद्राय ।

३०४६ प्रति सं०२। पत्र स०२५। ले० काल स० १८२६ पीप सुदी ४। वे० स० ३६५। क मण्डार।

३०४७ प्रति स०३। पत्र स०३४। ले० काल स०१८०६ चैत्र बुदी ४।वै० सं० ४०। घ भण्डार।

विशेष---प्रारम्भ के ६ पत्र नवीन लिखे हुये हैं। १० मे १६ तथा ३२वा पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं। भन्त मे निम्न प्रकार लिखा है। पाढे रामचन्द के माथे पधराई पोधी। सबत् १८०६ चैत्र वदी ५ मनिवासरे दिल्ली।

३०४८ प्रति स०४। पत्र स०१७। ले० काल स०१५८० । वे० स०३५३। रू मण्डार। १०४६ प्रति स०४। पत्र स०२५। ले० काल सँ०१६४१ माघ बुदी ७। वे० स० ४६६। स्व

विशेष—तक्षयगढ मे कल्याणराज के समय मे घा० भोपति ने प्रतिलिपि कराई थी। २०४० प्रति स०६ पत्र न०२१। ले० काल 🗙 । मपूर्ण । वे० स०१८०७ । ट मण्डार ।

```
रूप ] [ इत्तर म की
```

३ ४१ नाल्कुमारवरिक—२० धनस्य १ वर्ष ४१। घा १ ३४४ रवः। सना-नेपः विषय-वरिषः) र पालः सं १८११ सायका लुग्नी १४। ते कला सं १९११ बेबाला सुरी १ । द्विते १ व

१६ । स्राचनारः। १०४७ नासकुमार्वरित्रण्णाः पण्यं १९। सा ११८६ इच । वासा-संस्टः। विस्ट-वीरः

रण्या नावक्ष्मात्कार्त्रार्वे । वृद्धाः हर्षः वा ११८६ ह्यः नावा-कार्यः । स्प् र कास ≾ । के काल के १ ६१ सारता कृति ल । यूक्षाः के वि १ (ता क्ष्मारः)

के देवे नारकुमारणरिक्तनिका—सीकासर प्रमाणकर । पर्वतं के के का सार्थकर होता भ्रमा—संस्कृत । विषय—वरिका के वर्णा×ा के वर्णा×ा समुद्रांके वा कुक्ष । द्वाचनर ।

या---मॅस्ट्रचः विषय---परिचारं कला×ाके याला×। बदुर्वाहे व ११ व | द्रवस्तरी विवेष--- विकासीन है। सनिवस युनिवर विलय प्रवार है---

यो वर्ष्णिक्षेत्रराज्ये बीकाराध्येषसम्बद्धेयां परस्त्येष्ट्रियकानोशर्वश्रवकपुष्पनिताराश्चास्त्रकार्ययं सीमान्य कन्त्रविदेश भी सर्ववारी किप्पलकं देशविति । देशक्षेत्र स्थानसम्बद्धिक प्राप्तकाराव्यक्तिक प्राप्तकाराव्यक्ति । स्थान

३०४४ जास्कुमार्गरिम—पदयक्काका। पर वं १६। वा १३× प्रष्ठा वस्य-रिमी। ^{दिस्} वरिषार पस्त ×। ने नमा×। दुर्जाने वं १४४। क्रथमार।

देश्य प्रतिसंदेशकाचे दश्कितम् ×ादेशं दृश्य (कामारः उपक्रमानमञ्जीकामकाच्याक

३.४६ बागकुमार्विपनाथा^{™™}ाव वं ४६। सा १६८ इ**स**। ससा∺र्वेश वि^{द्} वरिषार कन Xाने नन Xायुर्ताने वं ६००।च व्यवस्थ

३ १०६ प्रतिस २ । यस वं ४ ३वे सम्र ४ वं ४ १६ वं १७३१ झामार।

३०३८ वेशियो का परिज्ञासम्बन्धः पत्र वं १ ते २ । वा० १८४३ रक्षः सामानीयो । नि^{र्म} वरिष ८९ काल में २४ ४ फन्नम दुरी २ श्रेनं जान में १ ११ श्रमूर्ति १ वं १९४ । वालमार्गः

पात भाग ने क्या पारं पारं पर देश व व व क्या हो।
वहरू वरवता वात है।
वहरू वरवता वात है। दिन्द वरवता वात ।
वहरू वरवता वात है। दिन्द वर्ग वीचा है।
वहरू वर्ग वीचा वरवूंग गीव नव नात वयान दूरा की।
वेश हैं। दिनीता क्यान वात वेशारी
कुद वेशी करोतर है गीयों व गा नक्सी ।
वीचा वात करा कराती हव वानी वात व्यवस्था।
वर्ग वेशाद दिनांचे व्यवस्था हव वानी वात व्यवस्था।
वर्ग वेशाद दिनांचे व्यवस्था वर्ग वेशा वर्ग हुए।
विभी वेशाद वर्ग वेशा वर्ग वेशा वर्ग वेशा हुई वो वेशादी भी

वं १ प्रदृष्टेमाने की भी भीत्रसार जी निस्तर्ग राज्यपत्र अध्ये १

बाने नेहिनती के बाद बाद दिये हुने हैं।

काव्य एव चरित्र

२१४६ नेमिनाथ के दशभव ापत्र म० ७। मा० ६×४५ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-चीर्य। र० कान ४। ते० काल स० १६१६। वे० स० ३४४। मा भण्डार ।

२१६० नेमिटूनकाठय—महायि विक्रम । पत्र स० २२ । भा० १३४४ दश्च । भाषा-सम्कृत । विषय-कार्य । र० काल ४ । से० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ३६१ । क भण्डार ।

विशेष -कालिदास कृत मेघदूत मे इलोवों के मन्तिम चरएा की समस्यापूर्ति है।

२१६१ प्रति स० २। पत्र स० ७। ते० मान ×। ते० स० ३७३। व्य नण्डार।

२१६२ तेमिनायचरित्र—हेमचन्द्राचार्य। पत्र स०२ मे ७८। मा० १२×४६ इञ्च। भाषा-सम्कृत ।

विषय-राध्य । र० काल 🗴 । ले० काल स० १४=१ पौप सुदी १ । प्रपूर्ण । वे० स० २१३२ । ट मण्डार ।

विशेष-प्रथम पत्र नही है।

२१६३ नेमिनिर्वाण-महाकवि याग्भट्टापप्र म० १०० । मा० १३४४ इखा भाषा-मस्कृत। विषय-निमाय का जीवन वर्णना र० काल ४। ले० काल ४। पूर्णा विषय स० ३६० । का भण्डार।

२१६४ प्रतिस्ट २ । पत्र स० ५५ । ले० काल स० १८२३ । वे० स० ३८८ । क भण्डार ।

विशेष-एव अपूर्ण प्रति क भण्डार में (वे॰ स॰ ३८६) भीर है।

२१६४ प्रति स०३। पत्र स०३४। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वै० स०३०२। ड भण्डार।

२१६६ नेमिनिर्वाग्यपितिका । पत्र स०६२ । ग्रा० ११६५ ४ इ.च.। भाषा—सस्कृत । विषय— कान्य । र०काल × । के० काल × । ग्रपुर्गा । वे०स २६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-- ६२ से मागे पत्र नहीं हैं।

प्रारम्भ-धत्वा नेमिश्वर चित्ते लब्ब्बानस चत्रुष्ट्य।

बुर्वेह नेमिनिर्वाणमहानाव्यस्य पजिका ॥

२१६७ नैपधचरित्र—हर्पकि वि। पत्र स०२ से ३०। ग्रा०१०३×४३ इ.च.। मापा-सस्कृत । विषय-काव्य । र० काल ×। ले० काल ×। मपूर्ण । ते० स०२६१। छुभण्डार ।

वियोप--पंचम सर्ग तक है। प्रति सटीक एवं प्राचीन है।

२१६८ पद्मचरित्रसार । पत्र स॰ ५। भा० १०×४ई इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र०

काल 🗴 । ने॰ काल 🗴 । भ्रपूर्ण । वै॰ म॰ १४७ । छ मण्डार ।

विशेष-पद्मपुराण का सक्षित माग है।

२१६६. पर्युपगाकल्प । पत्र स० १०० । ग्रा० ११३×४ इ च । भाषा-सम्मृतः । विषय-चरित्र ।

रत्वात / । नेव काल मव १६९६ । अपूर्ण । वेव सव १०% । खंभण्डार ।

विशेष—६३ वा तथा ६५ से ६६ तक पत्र नही हैं। श्रुतस्कथ का व्वा भ्रष्माय है।

प्रशस्ति—स॰ १६६६ वर्षे मूलताएमध्ये सुधायक सोनू तत् वधू हरमी तत् मुता मुजलाएी मेलूपु घडाएहे वबू तेन एपा प्रति प॰ श्री राजकीर्तिगिएना विहरेर्जीवता स्वपुन्याय ।

```
्यासम्बद्धाः
इ.स.म्बद्धाः
100 7
           २१७० परिशिष्टपर्वेच्यामा पत्र संद्र्य देव । या १ $xvच इत्र । सला-संदर। क्रिस-
परिवार पत्र ×ाने वाल सं १६७३ । सपूर्वी दे सं १६३ । धानधारां
           विगेष-- ११ व ६२वां पत्र नहीं है | बीरनपुर बगर में प्रतिनिधि हुई की !
            २१७१ पवनदूरकास्य—बाव्चिन्त्रसृदि। पन तं १३। या १२४१ इय। सना-वनः
नियम-तामा र पान ×। में पान सं हेहदशा पूर्ता ने सं ४९शा क प्रधार।
            नियोग—सं १८४१ में राम के प्रकार के बाई बुतीबल्ट के धरमोपकार्य समितपुर नवर में डॉडेमिमें हैं
            २१७२. प्रतिस दोपन क १२। में राज ×ावे तं प्रद्रायः बचारां
            २१७३ पायबवचरित्र—काकवर्द्धन । पत्र वं ३७ । सा १ ई४४४३ ६व । व<del>ता दिनो स</del>ः
विवय-वरित्र। रः नाम में १७६ । में काल में इ १७ (कुर्स) वे सं ११२६ (इ.स.स.स.
            २१७४ पारवेनायचरित्र—वादिछबस्रिः वय च १६ । या ११४२ इव । त्रता-वर्तः
दिवार-पार्श्ताय का बोक्त करिक ( र. काम वक वं ६४० । ने काम वं १६७० छाईन दुरी र । दूस । <sup>हर्मा</sup>
बोर्जा वे सं २२४ । का चण्यार ।
            विक्रेप--- पर क्रेड हुने तथा यह हुने हैं । इन्स का इसरा बाद कार्य रास्ता सी है है
            अवस्ति जिस्स अकार है---
             रण् १२७७ वर्षे कम्पुण वृद्धे ६ भी मूलवर्षे स्वत्रकारकते वक्तरतिसम्बे र्गवानंताने म्हारणं वी प्रामी
 क्रपट्ट क्युरात की नुमर्गक्रेनमस्तरम् क्युराक वीसिनन्तर्यस्तरसम्ह क्युराकमोलवानम्बरसरारम्गाने कार्<sup>त्</sup>री
 बाह्य करविन राज्य कार्यो नांशवादे राज्ये पुत्रः वर्तुविवादान रहरत्व्यः साह्य प्रदा स्टब्स वार्त्य प्रदान सर्वो. पुत्रः पंचादत हर्वे
बार्य बला स्टे धरीहुकः 'अञ्च हुन्छ व्ये निर्म अयुर्गीत )
              १८४ प्रतिस २ । पद वं २२ । दे कला X । बर्स्स सं र ७ । अस्माना सं
            क्षित्रेय-- २२ के माने पन नहीं हैं।
              १७६ प्रतिसं के। पन वं १ माने भाज तं १३१२ फल्फ्स सुरो २ । वे नं २१ । <sup>स</sup>
 MAKE I
            विकेश---नेकार प्रकारित बाला रूप लही है।
              रुक्त बहिस्सं छ। यह सं देश ने काम वं रूक्त वैत्र मुक्ति ह । के स देश व
```

महेच्या प्रति संस्थाप वंदर्शने कमार्थहरूर प्रत्यक्ष को प्रशास मध्यार । १९८६ प्रति सक्ष के क्षण वंदिक स्थाप वंदिक स्थाप के प्रशास सम्बद्धार । १९६६ - भूगारको वे बारियाम गैमामन से गोर्डन के महोस्ति भी भी ।

I Terr

२१८० पार्वनाथचरित्र—भट्टारक सकलंकीित । पत्र स० १२०। ग्रा० ११×५ इ च । भाषा— सस्कृत । विषय-पार्वनाय का जीवन वर्णान । र० काल १४वी शताब्दी । ले० काल म० १८८८ प्रथम वैशाख सुदी ६। पूर्ण । वे० स० १३ । श्र भण्डार ।

२१८१ प्रति स०२। पत्र स०११०। ले० काल स०१८२३ कार्त्तिक बुदी १०। वे० स०४६६। क भण्डार।

२१८२ प्रति सं० ३ । पत्र स० १६१ । ले० काल स० १७६१ । वे० स० ७० । घ मण्डार । २१८३. प्रति स० ४ । पत्र स० ७५ मे १३६ । ले० काल स० १८०२ फाग्रुरा बुदी ११ । मपूर्ण । वे० स० ४५६ । इ. मण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति-

सवत् १८०२ वर्षे काल्गुनमासे कृष्णापक्षे एकादशी बुधे लिखित श्रीउदयपुरनगरमध्येमुश्रावक-पुण्यप्रभावक-श्रीदेवगुरुभिक्तकारक श्रीसम्यक्त्वमूलद्वादशव्रतधारक मा० श्री दौलतरामजी पठनार्थं ।

२१८४ प्रति स० ४। पत्र स० ५२ से २२६। से० काल स० १८५४ मगसिर मुदी २। श्रपूर्श। वे० सं० २१६। च भण्डार।

विशेष-प्रति दीवान सगही ज्ञानचन्द की थी।

२८६४ प्रतिस०६। पत्र स०६६। ले० काल स० १७८५ प्र० वैद्यास्य मुदी ८। वे० स० २१७। च भण्डार।

विशेष-प्रति सेमकर्मा ने स्वपठनार्थ दुर्गादाम मे लिखवायी थी।

२१⊏६ प्रति सं०७। पत्र स०६१। ले० काल स०१८५२ श्रावरण मुदी ६। घे० स०१५। छ् भण्डार।

विशेष—प० श्योजीराम ने भ्रपते शिष्य नौनदराम के पठनार्थ गगाविष्णु से प्रतिलिपि कराई। २१८५ प्रति स० ६। पत्र स० १२३। के० कील 🔀। विशेष—प्रति प्राचीन है।

२१मम प्रति स०६ | पत्रं स०६१ में १४४ | ले० कील स०१७म७ ं। अपूर्ण | वे० स०१६४५ | ट भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त स्त्र मण्डार में ३ प्रतिया (वे० स० १०१३, ११७४, २३६) क तथा घ भण्डार में एक एक प्रति (वे० स० ४६६, ७०) तथा रू भण्डार में ४ प्रतिया (वे० स० ४५६, ४५६, ४५७, ४५८) व्य तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० स० २०४, २१८४) और है।

२१८६ पार्श्वनाथचरिंच—रइघू। पत्र स० ६ से ७६ । मा० १०३४ ४ इ च । मापा—म्राप्त्र श । मिपय-चरित्र । र० काल × । मे० काल × । मपूर्ण । वै० स० २१२७ । ट मण्डार ।

२१६० पार्श्वनाथपुराया--मूधरदास । पत्र स० ६२ । मा० १०६×५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-पार्श्वनाय का जीवन वर्णान । र०:काल स० १७६६ मापाढ मुदी ५ । ले० काल स० १८३३ । पूर्ण । वे० स० ३५६ । स्र भण्डार । tas] [श्रमलकी

रिश्रे प्रतिर्मेश्याचन संबद्धा काल संबद्धा के संप्रप्रशास सम्बद्धाः। निवेद-सीन प्रतिस्मेशीर है।

रहेर प्रति सं देश वर्ष हर । में बहुत से बहु बहु बहु हरी है। वे वे प्राप्त

बच्चार ।

रहेड के सबिसी श्रीपण संदश्योगे सम्बद्धी १ दहाने संश्रह उड़ क्यारा रहेडश्र सबिसी श्रीपण संहर्णने कमानी १ दहाने संश्रहाङ समारा

रायक नायस का रायक इत्यान प्रश्नाक हुन्या के अपूर्वा का प्रश्नाक स्थाप रहेश्य प्रति स्थापन संदर्श में प्रश्ना के इत्याद स्थाप के प्रश्ना के स्थापन सम्बद्धा

२१६६ प्रतिस्थे भाषत्र वं ४६ ते १६ । शे शब्द सं १८२१ समय दुर्ध हा वे सं

२१६७८ मिंदि काथवर्ण १ । के वालाचं १ १ । के ६ १ ४ | ग्राम्यक्ता ११६⊏. मिंदि का ६। पत्र वं ११ । के वालाचं १५१३ चामुल कुदी १४। के वं रें । व

भवार। रिकेर—चन्तुर ने त्रतिविधि हुईं वी। शंं १ ३२ वें कुछकरल बोबा से ऑक्टिविधि की।

२१६६. मधिस १ । यम वे ४६ से १८४। में कम्बर्ट १९ ७। स्पूर्ण हे वे १८४। स्पन्नार।

२२ प्रतिक ११। यन वं ६२। वे नक्त तं १ १६ सलक्क पुरी १२। वे तं इत। म कमार।

दिनेत-अक्टेसमा योगी धीनान ने योगियों के ननिया में है (१४ यानवा मुद्दी ४ मो पान्या। इसके वादिगितः का नामार ने तीन स्रीत्या (ने सं ४४१६, ४ य, ४४०) शास्त्राच नामार ने एक एक प्रति (ने सं १६ ४६) का नामार ने दीने प्रतिया (ने सं ४४६, ४२६, ४२५, ४४५) वा समार ने १ स्तिया (ने सं १६ ६३६) ६६६ १६५ १६५०) वा नामार में एक लगा का प्याप्त सं १ (ने भं ११६. ८ २) बना टा प्रमार ने से स्तिया (ने सं १९१६, ६ ४०४) वोड है।

२२ १ प्रमुक्तवरिक्र—प स्वासेवाचार्यापय वं २ । सा १६×४६ इक्र) धना-बंदारा विक—चरित्रार नक्र×ाते कक्र×। स्पूर्णाने वं २३६ व्यास्थ्यरा

२ प्रतिस २ । वस वं १ १ । मैं कम्म 🗵 वि वं ४४२ । स्यूक्तार | इस वृज्जिस हो सम्बद्ध ११ । मैं कम्म वं १४३१ व्यक्त सुती ४४ के वृज्जी स्थान

रचार । विकेश-संबद् १९१६ वर्षे ज्येत कृषे व्यूपीरिते पुरुषाति पुरुषाति वृत्तरक्षये श्रीकृतस्य संबास्तर्मे

वसहस्रापको सरस्योतन्त्रे बीहुंबहुंबानार्यान्त्रं च जीववनीविकास्त्रकार्ट्रे च कोडुनचन्त्रवस्त्रस्य व बीविनचा

ञ्च भण्डार ।

देवास्तत्वहें भ० श्री प्रमाचन्द्रदेवास्तिद्धिष्य महलाचार्य श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये रामसरंनगरे श्रीचद्रप्रभचैत्यालये खदेल-वालान्वये काटरावालगोत्रे सा० वीरमस्तद्रभार्या हरपयू । तत्पुत्र सा० वेला तद्भार्या वील्हा तत्पुत्रौ ही प्रथम साह दोमा हितीय साह पूना । सा० दामा तद्भाया गोगी तयो पुत्र सा० चोदिथ तद्भार्या हीरो । सा० पूना तद्भार्या कोइल तयो पुत्र सा० खरहय एतेया मच्ये जिनवृत्रापुरदरेश सा० चेलाल्येन इद श्री प्रद्युम्न शास्त्रतिखाप्य ज्ञानावरशोकम्म क्षयार्थं निमित्त सत्यात्रायम श्री धर्म । न्द्राय प्रदत्त ।

२२०४ प्रद्युम्नचरित्र—ग्राचार्य सोमकीत्ति। पत्र स० १६४ । मा० १२×५३ इख । मापा-सस्कृत । विषय-चरित्र। र० काल स० १८३० । ले० काल स० १७२१ । पूर्ण । वे० स० १४५ । ऋ भण्डार।

विशेष—रचना सवत् 'इ' प्रति मे से है। सवत् १७२१ वर्षे मासौज बदि ७ शुभ दिने लिखित मायर (मामेर) मध्ये लिवारि मावार्य थ्रो महोवद्दकोतिजो। लिखित जोसि श्रीधर।।

२२०४ प्रति स० २। पत्र स० २४४। ले० काल स० १८८५ मगसिर सुदी ४। वे० स० ११३। ख् भण्डार।

विशेष-लेखक प्रशस्ति मपूर्ण है।

भट्टारक रत्नमूपरा की माम्नाय में कासलीवाल गोत्रीय गोवटीपुरी निवासी श्री राजलालजी ने कर्मीदय में ऐलिचपुर माकर हीरालालजी से प्रतिलिपि कराई।

२ ९०६ प्रति स० ३ । पत्र स० १२६ । ले० काल 🗶 । मपूर्ण । वे० स० ६१ । वा मण्डार । २२०७ प्रति स० ४ । पत्र स० २२४ । ले० काल स० १८०२ । वे० स० ६१ । घ भण्डार ।

विशेष—हासी (भासी) वाले भैया श्री ढमल्ल मग्रवाल श्रावक ने ज्ञानावर्णी कर्मे क्षयार्थ प्रतिलिपि करवाई थी। प० जयरामदास के शिष्य रामचन्द्र की सम्प ण की गई।

२२० ⊏ प्रति स० ४ । पत्र स० ११६ से १६५ । ले० काल स० १८६६ सावन सुदी १२ । वे० सं० १०७ । इन् भुण्डार ।

विशेष—लिख्यत पंडित सगहीजी का मन्दिर का महाराजा श्री सवाई जगतिसहजी राजमध्ये लिखी पडित गोर्ड नदामेन प्रात्मार्थं।

२२८६ प्रति स०६। पत्र स०२२११ ले॰ काल स० १८३३ श्रावरण बुदी ३१३ स०१६। छ

विशेष--पिंदत सवाईराम ने सागानेत्र में प्रतितिषि की थी । ये झा० रत्नकी ति की किप्य थे । २२१० प्रति स० ७ । पत्र स० २०२ । से० काल स० १८१६ मार्गशीर्थ मुदी १० । वे० सं० निश्त

विशेष--वस्तराम ने स्वपठनार्थं प्रतिनिधि की या ।

१६९] (श्राम क परित

२०११ प्रतिसञ्ज्ञाचन सं २७४ । ते काल वं १०४ मारवाबुदी हा है नं ३७४ | स समारा

विकेश-समरकाच्या चांवदात ने प्रतिनिधि करवानी की ।

रणके प्रतिरिक्त का जन्मार में तीन प्रतियां (वे सं ४१६ १४० २ १ शता का जन्मार में यून प्रति (के सं १) कीर है।

२३१६ प्रयोग्नचरिक्र "ाचवर्ष ६ । या ११८८ ईवा बादा-शंख्य । विष्य-चरित्र। र कान x । ने नाम x । व्यूर्ण । के र्य १६६ । च बच्चार (

⁵⁵रदे प्रशुक्तपरिच—सिंहकवि । पर सं ४ वे बहाबा र द्वै×४६ इंगा सरा–यस्त्रतः। नियम–परिगारंकक ×ाके नक ×ाक्ष्मांकि सं र शास्त्रकारः।

२२१४ अयुक्तपरिजनामा---मजाबाखा । पर वं र १ । बा १३८८ १% । मता--दैन्दी (रप)। विरद--परित ११ कमा वं १११६ म्बेड दुवी र । में कमा वं ११६७ वेबास दुवी ४ । दुर्म । में सं ४१४। क समार ।

२२१४८ मितिसः २ । यत्र वं ३९२ । ते प्रस्तार्थं १८९६ वॅगनिय सूर्धः १ ३ वं प्र ८ । ह क्षमारः

२२१६ प्रति में ३। परवं १००। में पान ४। वे सं ६६०। प्रथमारः | पिनेट—पत्रीका ना पूर्ण परिचय किया ह्या है |

म्पर्कं स्थानविष्यायाः'''''। पर ते १७१। या ११३४०३ रखः। यारा-हिसी तडः। निर्मा प्रतिकार नाम ×ाने काम ने १६१६। दुर्वा वे वे ४९ । व्यानवारः।

२१८ मिर्तिकरपरिक्र—म मिन्नच्च। यत्र में २१। मा १९/८६ १४। भगा-संसर।

क्षिय-पर्मरार कला×। के कलाते १ २० वंगीयर तुर्धी । पूर्व वे सं ११६ । सामकार । २०१६ प्रक्रियों २ | एक सं १६ ने वलार्स १ १४ | वे १६ । सामकार ।

प्रद प्रविच देश के प्रकार अध्यान है से देश अध्यान ।

पित्रेर—प्रेत के दर पण गद्धे हैं। सर्वि प्राचीत है। यो तीम स्यद्व नी निश्चि है। मदरह प्रक्रि स्ट्रिंप पण विंपालि स्थान वंद है वैदाला। वे वंदरहा बाजमार।

०६ मृत्यिक्षं शांपन वैद्याने मन्यर्था १६७६ व मामन पुरी १ । वे वं १९९। आर. मन्यरः

१२१६ प्रतिश्रक ६। पर वे १४३ में काम वे १ ३१ पालग्रा पूरी ७। वे रेरा म क्लीरः

निरोप—रं पोलकर के किमार्थ प्रयक्तकों ने वस्तुर में ब्रोडिनिपि पी पी : इसकी पी प्रतिकां का कथार में (वे वं १९, २ १) और हैं। । २२२४ प्रीर्तिकरचरित्र—जोधराज गोदीका । पत्र स॰ १० । ग्रा० ११४८ इख्र । भाषा -हिन्दी । विषय-चरित्र । र० काल स० १७२१ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ६८२ । श्र्य भण्डार ।

२२२४ प्रति स०२। पत्र स०११। ले० काल 🗙 । वे० स०१५६। छु भण्डार ।

२०२६ । ति स० ३ : पत्र स० २ से ६३ । ले० माल 🗙 । धपूर्ण । वे० स० २३६ । छ भण्डार ।

२२२७ भद्रवाहुचरित्र—रत्ननिटि । पत्र स० २२ । आ० १२×५३ इच । भाषा-सम्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल स० १८२७ । पूर्ण । वे० स० १२८ । स्त्र भण्डार ।

२२२ प्रति स० २ । पत्र स० ३४ । ले० काल × । वे० स० ५५१ । क मण्डार ।

२२२६ प्रति स० ३ । पत्र स० ४७ । ले० काल स० १६७४ पौप सुदी ८ । ये० स० १३० । ख मण्डार ।

विशेय-प्रथम पत्र किसी दूसरी प्रति का है।

२२३ - प्रति स०४ । पत्र स०३४ । ले० काल स०१७=६ वैद्याल बुदी ६ । वे० स०४४ = । च मण्डार ।

विशेष---महात्मा राधाकृष्ण (कृष्णागढ) विश्वनगढ वालो ने सर्वाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। २२३१. प्रति स० ४। पत्र स० ३१। ले० काल स० १८१६। वे० स० ३७। छ भण्डार। विशेष---वलतराम ने प्रतिलिपि की थी।

। २०३२ प्रति स० १ । पत्र स० २१ । ले० काल स० १७६३ मासोज सुदी १० । वे॰ स० ५१७ । व भण्डार ।

विशेष-क्षेमकीर्ति ने बौली ग्राम में प्रतिलिपि की थी।

२२३३ प्रति स० ७। पत्र स० ३ से १५। ले० काल ×ा मपूर्गा। वे∙ स० २१३३। ट मण्डार।

२२३४. भद्रवाहुचरित्र—नवलकि । पत्र स॰ ४८ । मा॰ १२ $\frac{2}{5}$ \times ८ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-चित्र । र॰ काल \times । ते॰ काल स॰ १६४८ । पूर्ण । वे॰ स॰ ५५६ । सः भण्डार ।

२२३४ भद्रवाहुचरित्र—चपाराम । पत्र स॰ ३८ । मा• १२३×८ इछ । मापा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र० फाल स० श्रावरा सुदी १४ । ले० काल ×। वे० स॰ १६४ । छ भण्डार ।

२२३६ भद्रवाहुचरित्र । पत्र सं० २७। ग्रा० १३×८ दख । भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र। र० काल ×। मे० काल ×। पूर्णी वे० स० ६८५। ऋ भण्डार।

र्२३७ प्रति स०२। पत्र स०२८। मा०१३४८ इच्छा मापा-हिन्दी । विषय-चरित्र। र० काल ४। पे० काल ४। पूर्या। वे० स॰ १६५। छ मण्डार।

ा २ २२३८ भरतेशवैभव । पत्र स० ५ । मा० ११×४० इखा । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४६ । छु मण्डार ।

रम्भ } र्काण वर्ष परित्र }

२२३६. सविष्यक्तवरिक-र्यं कीयर। पर हं रैं। या १५४४३ इक्का जला-बंसक। विषय-वरिकारः नाम ×ा के कल ×ायुर्वा के थे १२। व्यानकार।

दिलोग— प्रतित्व पत्र कराहुमाहै। संस्कृत वें बंधियत टिप्पकाली विशाहकाहै। २०४४ प्रति सुंदे। पत्र कंदिशीले माला संदृद्ध साथ सुदी था वे संदृद्ध क

त्रस्थार । विकेष — सन्त यो प्रतिनिधि तसस्यत के हुई थी । शेखक प्रवृत्ति वाला स्थित पत्र नहीं है । २२४१ प्रतिक सः ३ । पत्र वं ६२ । से काल सं १०२४ वैकास वर्षी ३ । से स्टेश । से

सम्बार । दिनेत---नेताता निवासी नामु यो देनर सोवासी के वह वे से या पाववार वी सार्या एस्ट्रामें वे स्टी-सिटि कामानर शेरमावार्य सोवास्त्र के किया काव्या में क्षांब्वार्स निमित्त दिया ।

कक्शक स्रांत स्र प्र1 पण क्षं ७ । के काल क्षेट १९६२ केड लुदी ७ । वे क्षं ७४ । व

६२४६ प्रतिस्रं क्षायम् चे १६१० यक्तासं १०२७ कालीन्य कृष्टे ७। दूर्ली हे सं ६६६। इनक्यारः

िनिय-निकड वं योवळ नवात ।

श्रप्तारं । विकेय-चाल् शरमस् के नित् रचना वी नई नी ।

१९५७ मुनि हां है। वर्ष में ६०। ने बाग में १६६० क्यारेड मुद्देश । वे सं १९५४ । है असे क्यार । दिनेर--क्योर में नहारामा नामीनह के बानवाल में स्वितिहां हो थी। स्वतिस्त स्व स्वीत

नहीं है। • १९४८, प्रतिकल्लाचारिक्रमाचा—वक्रावेशक चौचरी । वच व १ । था १९२४ मई (व । स्राप्त-दिन्सी (वव) । विवय-स्रोचित । १ वाल वें १९१ । धूर्णा है व १९४४ | ६५४ | ६५४ | ६५४ | ६५४ | ६५४ | ६५४ | ६५४ | ६५४ | ६५४ |

काव्यं एवं चरित्र]

२२४६ प्रति सर्व २ । पत्र स० १३६ । ते० काल × । वे० स० ५५४ । क भण्डार ।
२२४० प्रति स० ३ । पत्र स० १३६ । ते० काल स० १६४० । वे० स० ५५६ । क भण्डार ।
२२४१ भोज प्रवन्ध-पिंडतप्रवर बङ्खाल । पत्र स० २६ । ग्रा० १२५×५ इच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-काव्य । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० ५७७ । इः भण्डार ।

२२४२. प्रति स्०२। पत्र स० ५२। ले० काल स० १७११ मासोज बुदी ६। वे० स० ४८। मपूर्ण । व्यामण्डार ।

२२५३ भौमचरित्र—भ० रह्मचन्द्र । पत्र स० ४३ । मा० १०४१ इझ । भाषा-सस्कृत । विषय-

२२४४. मगलकलशमहामुनिचतुष्पदी-रगिबनयगिया । पत्र स० २ मे २४ । मा० १०४४ इत्र । भाषा-हिन्दी (राजस्थानी) विषय-विरत्न । र० काल स० १७१४ श्रावरा सुदी ११ । ते० काल स० १७१७ । मपूर्ण । वै० म० २४४ । श्र भग्दार ।

विशेष—चीतोडा ग्राम में श्री रगविनयगिए। के शिय्य द्यामें ह मुनि के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी।

एह का मुनिवर निसदिन गाईयइ, मन सुधि ध्यान लगाइ। , पुष्प पुरूपणा गुण घुणता छता पातक दूरि पुलाइ ॥१॥ ए०।॥ ८ शातिचरित्र पकी ए चउपई कीषी निज मति सारि। 11 मंगलकलसमुनि सतरगा कह्या ग्रुएं। मातम हितकारि ।।२।। ए० री गछ करतर युग बर गुण भागलंड श्री जिमराज सुरिंद । तसु पट्टभारी सूरि विश्लोमणी श्री जिनरग मुण्डि ॥४॥ ए० ॥ तासु सीस मगल , भुनि रायनव चरित कहेउ स सनेह। " रगविनय वाचक मनरग सु जिन पूजा फल एह ।। पूग ए० 💵 नगर प्रभयपुर प्रवि रिल्झामराव जहां जिन गृहचवसाल। मोहन मूरति वीर जिखंदनी सेवक जन सु रसाल गाइ॥ ए० ॥ जिन भनइवर्लि सीवत घर्गी जूगा देवल ठाम । जिहा देवी हरि सिद्ध गेह गहइ पूरइ विद्युत काम ॥७॥ ए० ॥ निरमल नीर भरयं सीहर्स पर्धि कर्म महेस्वर नीम ! धाप विधाता जिंग भवतरी कींबर की मति कार्म । दिश ए ।। जिहा किएां श्राविक समुर्रेण विरोधियाँ धरमें मर्रम नेउ जारा । " मा श्री नारायणुदास सराहियइ मानइ जिल्लवर भाग ॥६॥ ए० ॥

г

मानु बलाइ भाराइ ए पाउपी हरियी गय जाहात । सम्बद्ध इन्द्रज के दहाँ वान्तिवर विका कुरू कृत तान् ।।१ ।। ए , ध द्वासाल नावक बीर प्रसाद वी वडरी वडीद प्रमाल । क्रीलस्बद्धं कृतिसम्बद्धं के बार भाषाम् बार्यद्धं वालु करवास्य शहरेशा ए अ य संबंध करक रक ग्रानु वस्त्रत अध्य नेति पनुवारि । भरमी पाछ प्रश्न नीवर्क मेन रसी देवविनय सुंखराद ।।१६ ।। ए० ।। सूद्र था नुनिवर निवि रिन वार्टेंबर तर्व बावा दूहा ।। १३२ ॥

इति भी मंदलवृत्तत्वसुविषयप्रकृति वंदुन्तिववृत्तत् विकिता की वंदन् १७१७ वर्षे श्री मत्नित् 🕏 दित्रव दलनी वालरे भी चौतोका तहावाचे स्थाप भी चलामाँकहरी। विजयभाग्ये वाचनाचार्यः भी रंबनिवर्कारण विषय र्शास्त्र दशांदेव बृति धारमधेनसे कुर्व त्रदतु । वस्तारायरमु मैतक पाठकतो ।।

२३७ है, सहीवासमरिय-मारिकस्वतः। पत्र वे ४१। वा ११\$×१4 हम । वसा-वेसरा रिक्य-वरित । एं प्रश्नार्थ १७३१ थानस पुत्री ११ (ब)। से पान्यर्थ १ १ प्रश्नान मुद्री १४ । पूर्ण । वै र्धः ११६ । सः सम्बार ।

विकेर-व्यक्तिमान गोधीया व प्रतिनिधि करवाई ।

इन्तर्भ प्रतिक्षे प्रावण के अधिने काल ×ावे ने दश्कक क्यार।

२ ३० प्रति साथ में । पण संश्व प्रश्व में ० वाला संश्व १६९० चालपुरः सुद्रो १९१ में १७१ । प बन्दार ।

विभेष-भोडूराथ वैद्य ने प्रदिनिधि को की।

इक्टर, होते संभावत नं देश के बान हा के नं प्रकाह बन्तार : प्रश्रद्ध अति संक्षा विकास प्रश्राची काल X देवी थी रिक्र । ब्राचनार ।

२१६ सहीराकंपरिप्र—मं≉ रक्षतन्ति । १२ वं÷ १४ । या १२४६६ इथः। माना-नंतरणः। प्रियद-नारिय । रं कार 🗙 । में योल में १०१६ मारता बुदी दे । पूर्ण । वे. मं. १०४ । का मध्यार ।

१७६१ महीपालवरित्रमात्रा-स्थापक । पत्र वं ६९। वा १९८६ रख । भाषा-नियो नव । ब्लिक-मरिकः कलानं १६१ । में कलानं १९१६ भारत नुरी ६। के ले २०१ । यू समारा

विमेर--बुनवर्ता वर्धित कुला।

बक्दम् प्रतिर्मी पुरायम् ३ (ते यानार्थं १६६१ (वे सं १६९) क सम्बार) रिरोश-प्राणय है १६ वने पत्र निमे हुने हैं।

सदि परिचय-नवृत्तम वहुमूज काश्तीवाम के जिल्ल में । दन्ते निप्तृत्व का शांच दूर्वाचन्द्र क्या (mi ना बाम स्विच्छन का ।

भण्डार ।

च्नण्डार।

प्रभण्डार। २२६४ मेघदूत-कालिटासं। पत्र सं० २१। मा० १२४५ई डख्र। भाषा-सम्कृत। विषय-नाव्य। र० काल ४। ले० कॉल ४। धपूर्ण। वै० स० ६०१। क भण्डार।

२०६४ प्रति स० र। पत्र स० रर लिं० काल ४ वे० स० १६१ । ज भण्डार।

विशेष-प्रति प्राचीन एव संस्कृत टीना सहित है। पत्र जीर्रा है।

। - २२६६ प्रति स९ ३ । पत्र-स० ३१ । ले० काल 🗴 । मपूर्ण । वे० स० १६८६ । ट भण्डार । विशेष—प्रति प्राचीन एव सस्कृत टीका सहित है ।

, २२६७ प्रति स०४। पत्र स०१८। ले० काल स०१८४४ वैक्षाल सुदी २। वै० स०२००४। ट भण्डार।

२२६८ मेधदूतटीका-परमहस परिव्राजनाचार । पत्र स० ४८ । मां० १०३×४ इक्क । भाषा-सस्कृत । विषय-काव्य । रु काल स० १५७१ मादवा सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । व्य मण्डार ।

२२६६ यशस्तिलक चम्पू-सौमदेव सूरि। पत्र स० २५४। मा० १२६४६ इख्र। भाषा-मस्कृत गद्य पद्य। विषय-राजा यशोधर का जीवन वर्णन । र० काल शक स० ८८१। ले० काल 🗶। स्रपूर्ण। वे० स०, ६५१। स्त्र भण्डार।

विशेष-कई प्रतियों का मिश्रण है तया बीच के कुछ पत्र नहीं हैं।

२२७० प्रति स० २ । पत्र सं॰ ४४ । ले॰ काल स॰ १६१७ । वे॰ स॰ १८२ । स्त्र मण्डार । २२७१ प्रति स० ३ । पत्र स॰ ३५ । ले॰ वाल सं॰ १५४० फाग्रुण सुदी १४ । वे॰ स॰ ३५६ । स्त्र

विशेष-करमी गोधा ने प्रतिलिपि करवाई थी। जिनदास करमी के पुत्र थे।

२२७२ प्रति स० ४ । पत्र स० ६३ । ले० काल × । वे० स० ५६१ । क मण्डार ।

२२७३ प्रति स० ४ । पत्र स० ४ १६ । ले० काल सँ० १७५२ मंगसिर बुदो ६ । वे० सं० ३५१ । व

भण्डार ।

- विशेष--- यो प्रतियों का विश्वरण है । प्रति प्राचीन हैं । कहीं कहीं कठिन 'शब्दों के प्रर्थ दिये हुये हैं ।

- प्रवावती में नेमिनाय चैत्यालय में भ० जगत्नीति के शिव्य पं० दोदराज के पठनार्य प्रतिलिपि हुई थीं ।

े २२७४ प्रति सर्व है। पंत्र सैं० १०२ से ११२ । ले० काल x ी मपूर्ण । वे० स० १८०८ । ट

२२७४- यरास्तिलकचम्पू टीका-अतसागर । पत्र सं ७ ४०० । घा० १२४६ एक । भाषा-सस्कृत । विषय-मान्य । रु० कृति ४ । से० कास स० १७६६ मासोज सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १३७ । अ अण्डार । विसेप-मूनकर्ता सोमदेव सूर्व ।

प्राप्त करहर प्रार्थ्य ए नजर्म होनी यन ब्रह्मण । यमिनन पृष्ट में सूर्व मोबियन मिन्ना दुरुष्ट राख (११ ।। ए ।। यानरा नाम्य भीर नार भाग भी नजी भागित प्राप्त । मोरियमों पुलिसमों ने नर भागमु सार्य्य राज्य स्वस्था ।।११। ए ।। ए स्वन सरस रख प्रस्त प्राप्त सम्बन्ध केति चनुसारि ।। सरसी करा प्रस्त संबंधित करनी रेपानियम बुंक्सर ।।११ ।। ए० ।। यह मा स्वीचर विकित सन मानिय सुर्व सामा सहा ।। ११९ ।।

इति भी बंद्यमुणवर्षमाध्रात्रिकारणाई र्जाइतिकारणा विश्विता भी त्रेवत् १७१७ वर्षे श्री मानीन इति दिवर इस्ती राज्ये श्री श्रीतीत गरुमाणे पति भी रक्षार्थिक्षी निवस्तान्त्रे वास्तान्त्रं भी रंपरिकार्वात् विन्त्र राज्यु रक्षारेत्र हृति याल्योको द्वार्थं कस्तु । जनसम्बन्धम् केवक पाठकारेतः ।

० ४४ सहीपासभिद्य—मारिजसृष्यः। पर वं ४१। वा १६६४ प्र_{म्} प्रसः) अता-वंतर³। विदय-वरिवार पत्रन वं १०६४ मन्त नुसे ११ (स)। वे कला वं ११ फद्मल नुसे १४। हुन । वे तं १३३। का सम्बर्धः)

विशेष---जीहरीमाम पोनीका ने जीवनियि करशाई ।

१९४६ प्रतिसंदितम्बद्धं ४६। में काल 🔀 । वे संदर्शक जनगर।

२ ४७६ अस्ति कार के । यस वॉर ४२ । ते याला वॉ १९२४ चल्लुक कुरी १२ । ते ते २७१ । य

निर्मार—हेम्सम वैद्य ने प्रतिनिधि की वी_{र्}।

६ ४८. प्रतिस क्षीचवर्तदेश के बला×ावे ते प्रदाब्द वर्णारः

१९४६ शक्ति स्रोत अ । यह बार भार । वेर सम्बद्ध में वे से एक । वेद सम्बद्ध ।

. १२६ सहीयस्त्रेणीय—संश्राह्मियायार्थि १४ । बा ११८६ इस। भागान्येसट । १९४६-मारिकार फार्म ८ में नेलांने १४३६ पास्तायुरी ६। हुती । वै लंद ६४४३ क मणारः।

२०६१ अद्वीपालपरिश्रमात्रा—जनसङ्गात्रमः । तथः है ६२। आः १३८८ रखः । जन्म-दैल्यी नणः। स्वित्र-वर्षरः । र् त्रान्तः १६९ । तिः त्रान्तः त्राह्यः स्वत्यात्र पुरोते । वैः त्रान्तः। सः सम्बर्धः।

विका-मूलवर्गा वादिव भूवण् है

१८६० इति हो मुक्तान १ । में नाम में १९६४ । वे में १९१ । क नामार ।

विरोक---प्रारम्भ के ११ को का निने हुने हैं।

कृति परिश्वक-सूर्यमा वराष्ट्रक करण्यीपाल के जिल्ला में ३ प्रमुक्ते रिराम्बद्ध पर नाम पुनीयान क्या निर्मा ना नाम निर्माण गाँ ३

२२८० प्रति स० २ । पत्र सं • ४६ । ले० नाल × । वे० स० ५६६ । क भण्डार ।

२२८८ प्रति स< :। पत्र सं० २ से ३७। ले० काल सं० १७६५ वार्तिक सुदी १३। प्रपूर्ण । वे•

म० २५४। च भण्डार।

भण्डार ।

२२८६. प्रति सः ३। पत्र स० ३८। ने० काल स० १८६२ मासीज सुदी ६। वे० स० २८५। च

विशेष-प० नोनिषराम नै स्वपठनार्य प्रतिनिधि की थी।

२२६० प्रति स०४। पत्र स०४६। ले॰ काल मं० १८५५ भासोज सुदी ११। वै० स० २२। छ

२२६१ प्रति स० ४। पत्र स० ३८। ले॰ काल स० १८६१ फाग्रुए। सुदी १२। वे० स० २३। च मण्डार।

> • २६२ प्रति सं०६। पत्र स०३५ कि॰ काल × । ये० स०२४। छ भण्डार। विशेष—प्रति प्राचीन है।

े २२६२ प्रतिस०७ । पत्र स० ४१ । से० काल स० १७७४ चैत्र चुदी ६ । वे० स० २४ । छ् भण्डार ।

विशेष-प्रशस्ति- सवत्सर १७७५ वर्षे मिती चैत्र बुदी ६ मैगलवार । महारक्ष-शिरोरत्न महारक श्री श्री रिवः । श्री देवेन्द्रकीर्तिजी तस्य धाजाविधामि धाचार्य श्री क्षेमकीर्ति । प० घोखचन्द ने बसई प्राप्त मे प्रतिलिपि नी पी-भन्त में यह भीर तिखा है-

सनत् १३५२ येली माँसे प्रतिष्ठा कराई लाडणा मे सदिस्यी स्होडसाजण उपजो ।

२२६४ प्रति स॰ मापत्र सं०२ से ३ माले० वाल स०१७ मापाढ बुदी २ | मपूर्ण । वे० सं७ २६ | ज मण्डार ।

२२६४ प्रति स०६। पत्र स० ११ । ते० काल ⋉। वे० स० ११४। व्य भण्डार ।

विशेष-प्रति मनित्र है। ३७ वित्र हैं, मुगनकालीन प्रेमांव है। पं॰ गोवर्ट नजी के शिष्य पं० टोडरमल के लिए प्रतिलिप करवाई थी। प्रति दर्शनीय है।

२२६६. प्रति स० १०। पत्र सँ० ४१। ले० वाल मं० १७६२ जेंड मुदी १४। प्रपूर्ण । वे० संह १

विशेष--प्राचार्य शुभवन्द्र ने टींक मे प्रतिसिर्ण की थी (

स्त्र मण्डार में एक प्रति (वे० स० ६०४) क मण्डार में दो प्रतिया (वे० स० ४६६, ४६७) भीर हैं। देर्गेहैं चिर्मोधरचरित्र—कायस्थ पद्मनार्भ। पेत्र स० ७०। श्री० ११×४ई इस्र । मापा-सस्क्रत । विर्माप-चरित्र । र० विलि × । ते० कार्ल स० १८३२ पीर्म बुदी १२ । वे० स० ४६२ । के भण्डार ।

```
िकार्जन देले परित्र
tes 1
          २२६६ वरान्तिकक्षकम्प्रीका<sup>™™</sup>। पत्र वं ६४६। वा १२३×७ दक्ष । बारा-संस्ट । <del>विदय</del>-
मान्तारे राज×ाते कार्यसे १०४१ । धर्माओं से १०० । कार्यसर ।
          २२००. प्रतिस २ | पण सं ६१ | के काल × | के सं प्रत£ । का बच्छार |
          २२ थर. प्रतिसं ३ । पत्र सं ३ थ१ । के राख × वे सं ४३ । का सधार ।
          रहे कर प्रति स्ंकिश्व | चया संप्रदेश के बाल संश्वर स्था समूर्त (ं के संदेश)
```

क्ष क्यार ।

१२६ क्योगरवरित-स्वाधने पुरवहन्त हंपक वं वर । या १ XV इल । वाना-दरसंब । विषय-विद्यार काल ≾ोवे काल संदेश ७ वासीय गुरी १ | पूर्णा (वे संदश, का कलार)

विकेश-संबक्तिमन १४ ७ वर्षे सम्मानमात्रे श्रुक्ताके १ वृष्णमात्रे श्रीयम् पन्तपृत्रेवृदेशीपृत्तीपार

वाने महाराजाविराज्यक्षकरात्रावधीनेत्ववास् किनवीर्वयं उच्चीतकं मुरिकास्त्रवद्वप्रसाहिराज्ये शहितनराज्ये भीतकः र्वि नामुरान्तवे पुष्परक्तो बहुएक यो वैतरेन वेनक्रकार्युं क्यूपरक यो विश्ववदेन वेनक्रकार्युं बहुएक मीवर्गहेन वेश-रकरर्ष्ट्रे न्हुरस्य भी मानकेन वेपास्तरस्य अञ्चारक भी स्कूलर्शात वेपास्तरस्य भीताराजीति वेपास्तरस्य स्कूरण मी संदानीति देवल्यान्त्री क्यारम नामकोति देवल्यान्त्रस्थ नहस्रश यो हरियक देवल्यासम्बद्धे प्रदोशनान्त्रमे नीयानीरे सार् जीन्यनती राष्ट्रासीपुरवा रुगैः पुश्तनकः बैकः वा नैरागाव विरोधः सः, प्रमा रुगीनः वा, मानसः । वातु मेस्पन् मार्वे 🗗 बाळ बुराब्री । बा. मानल पून बधवल नीमा प्रोत्तायको वर्षपुरत्यं जातावरहीकार्व क्रवार्व नार गयी रर्र क्योपरपरित्रं तिवान्य प्रवक्ता वरिषेक्ष्मेणा, वर्त प्रध्नार्गं । विशेष्यं पं विश्वविद्येशः।

२२ दर प्रतिसं∗ २ । यस सं १४२ । में नाम वं १६३६ । में सं १८८ । का समार।

रिवेद-नहीं नहीं बंदात में दीना की की हरें हैं। क्रमार, प्रक्रिया के क्षा में के के का कि कार के कार का का का कि की किया कि का क

च नचार । विवेद---प्रतिविधि यानेर के राजा बारनम के आवनकार के केबीबार केखालक में को वर्ष थी। अवस्ति

ध्यर्व है। क्त±क अस्ति संधापन संदर्भ में पास मंद्रक सालोज सुदी कृति संदेश दांच WER.

क्ष्रद्धा प्रतिक्षे क्षायम संबद्धी याला संदर्भप्रश्रीतर तुसी हावे संदर्भाणा I FIRMS

द¤स्टर, ब्रिटिसॉल द । पर सं १ । में नाम X । मेन सं ११३६ । इस्त्रास्थ

रुरेकरे यहाँगरवरिक-न्यव सक्कारीचि । यन वे ११४ वा १०३४र रखा। क्रांनी-संदर्ध

क्रियम-राज्य समीचर का बीवन वर्णन । या नहर X । में जान x । वेस्ट । में बार्ट रेक्ट ने वर्ड क्रियार ।

२२८७ प्रति स० २ । पत्र सं • ४६ । ले० काल 🗴 । वे० स० ५६६ । क भण्डार ।

२२८८ प्रति स० ३ । पत्र स० २ से ३७ । ले० काल सं० १७६५ कार्तिक सुदी १३ । प्रपूर्ण । वे०

सं० २५४। च भण्डार।

२२८६. प्रति सः ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल स० १८६२ भासोज सुदी ६ । वे० सं० २८५ । च

विशेष-पं नोनिधराम ने स्वपठनार्थ प्रतिसिपि की थी।

२२६० प्रति सं०४। पर्यं स० ५६। ले॰ काल स०१८५५ ग्रांसोज सुदी ११। वे॰ स० २२। छ

भण्डार ।

२२६१ प्रतिस० ४ । पत्र स० ३८ । से० काल स० १८६४ फाग्रुए। सुदी १२ । वे० स० २३ । च भण्डार ।

> र २६२ प्रति स०६। पत्र स०३४ (ति० काल ४ वि० स०२४। छ भेण्डार। विशेष—प्रति प्राचीन है।

२२६२ प्रति सं०७। पत्र स० ४१। से० काल स० १७७५ चैत्र बुदी ६। वे० स० २५। छ् भण्डार।

सनत् १३५२ येली मींसे प्रतिष्ठा कराई लाडगा मे तदिस्यी ल्हीडमाजग् उपजी ।

२२६४ प्रति स॰ म। पत्र सं० २ से ३ म। ले० काल स० १७५० प्रापाढ बुदी २ । प्रपूर्ण । वे० स७ २६ । ज मण्डार ।

२२६४ प्रति स०६। पत्र स० ४४ । ले० काल ⋉। वै० स० ११४। झ भण्डार ो

विशेष-प्रति समित्र है। ३७ चित्र हैं, मुगलकालीन प्रभाव है। पं० गोवर्द्ध नजी के शिष्य प० टोडरमल के लिए प्रतिलिपि करवाई थी। प्रति दर्शनीय है।

२२६६ प्रति सर्व १०। पेर्व सेंव ४४। लेव वाल संव १७६२ वेंड मुंदी १४ मूर्र्सा विव में वें ४६३। ज अध्यार ।

विशेष-मानार्य शुमनन्द्र ने टींक में प्रतिलिपि की थी ।

का मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६०४) क भण्डार में को प्रतिया (वे० स० ५६६, ५६७) और हैं। चेर्नेहर्फ यशोधरचरित्र कायस्थ पद्मनाभा। पत्र स० ७०। ब्रा० ११×४५ देखा। मापा-सस्कृत। विर्णय-चरित्र। रे० किल × सिंठ केल सं० १८३२ पीप बुंदी १२ वि० सं० ५६२। के भण्डार।

```
14.
                                                                         द्यास्य एवं परिव
           २२६६ प्रतिसं २ । वर्षि सं । वे प्रतासं १९६६ सम्बद्धा १६ । वे स् १६२ । स
बचार ।
          विजेद-स्त यन गीनसिरी के बाचार्य बुदम्दीति को किया वार्तिना शृतियी के निए स्वापुनर है
तिकरामा क्या वैकाद सरी १ वं १७ १ को नंबनावार्य थी घक्कारी लियों के निय नत्वापन्त्री में सर्वास्त्र विद्या।
          क्का प्रक्रियों के । कार्य प्रभावे क्या ×ावे में दशा काल्यार ।
          विलेश-अति वर्णाम है।
          93 o प्रतिसंधापत्र या है सम्बर्ग १९६७ । वे संस्थान करार ।
          विजेष---वानांभव नद्वाराजा के बालनकाल में याकेर में जीतरिवरि वर्षे ।
          मके र प्रतिस्थ अनुवास देश में कामार्च रेजक्ष पीच सुधी हरू। में से प्राास
REST.
          दिवेश-स्वादी सम्पूर में एं वक्तराय ने वेशिनान चेत्याक्षम में शरिविशि की सी।
          क्षक प्रतिसा ६ ) पत्र वं ७६ । के सम्बर्ध कल्या दूरी १ (के संद£ । साजस्यार ।
          विकेश-शोहरतकाची के पठनाने पांडे वीरकवरात ने महिलित कराई थी । महायाँन क्रमशीत के क्रारेड
है इन्द्रभूत है इन्द्र की रचना की थी।
          २३ ३ क्योंकरचरित्र--वादिराजसृति। पत्र रं २ वे १२। या ११×१ इस । जाना-संसर्ध।
विवस-मरिकार नाम ×ाने नाम वं १३६। बहुर्ला के वं वक्रश का क्यारा
          ३६ ⊻ प्रक्रिस २ | पर वं १२ | के जल १०२४ | वे द£द। क भवार |
          का ⊻. प्रतिका के। पण के पृथे देश कि पाल वं देश । बस्ती के के का प
क्यार ।
          रिकेश-नेक्क प्रवर्शित ब्युर्ल है ।
          प्रदेश शक्तिका भागमधी कराणि काम×ावै वी केश्व र कामस्तरा
          विकेश-अवश्व पत्र वशीय विका नवा है।
          को क. करोबरकरिक-परकरेग । पन सं के के का या १ ×४३ दक्षा वाला-अंतरण !
विका-परितार कार ×ात जाना×ा गार्का जीती है वे देवरा चा जनसरा
           १०८ कक्षेत्रस्वरिक-वासवसेन। यम वं वर्श वाव १९८४) वस । वला-संस्कृत । प्रिय-
वरिकार काम वं ११६१ शाव मुद्री १२) पूर्त (वे वे २ ४) व्या क्यार।
                                                                             1
          Color—melion—
          शंबत् १९८१ वर्षे बायनातः कृष्याच्ये शास्त्रीतिवये कृत्यतिवास्तरे शुवनवाते रात्र बीजास्तरे राज्यावर्त
नामें रास्त जो मेतवी मातारे बाजील नाम वर्षे भीवाधिमान विल्पेसालये मीजूनवरेक्सप्रशासको बालातीनकी,
```

1 : 1

नद्याम्नाये श्रीकुदकुदाचार्यान्त्रये भट्टारा श्रीपदानिह देशास्तराट्टी भ० श्री घुभचन्द्रदेशास्तरपट्टी भ० श्री जिंगाचन्द्रदेशास्तराम्माये खडनवानान्यये दोशीगोधी सा तिहुगा ताद्वार्या तोली तयोषुशास्त्रय प्रयम सा. ईसर द्वितीय टोहा तृतीय सा उन्हा ईसरभार्या प्रजिपणी तया पुत्रा चन्वार प्र० मा० लोहट द्वितीय सा भूगा तृतीय लाग कघर चचुर्य मा देवा सा लोहट भार्या लिलताने तयो पुत्रा पच प्रयम धर्मदास द्वितीय सा धीरा तृतीय लूगा चनुर्य होला पंचम राजा सा भूगा भार्या भ्रगमिरि तयोषुत्र नगराज साह उधर भार्या उधिमरी तयो पुत्री द्वी प्रयम लाला द्वितीय चरहप सा० देवा भार्या द्योगिरि तयो पुत्र धनिउ वि० धर्मदास भार्या धर्मश्री चिरजी धीरा भार्या रमायी सा टोहा भार्ये द्वे वृहद्भीला लघ्वी सुहागदे तत्पुत्रदान पुष्य धीलवान सा नान्हा तद्भार्या नयग्री सा० उन्हा भार्य वाली तयो पुत्र सा डालू तद्भार्या डलसिरि एतेपामध्ये चनुर्विधदान वितरणाद्यात्तेनित्रपचाद्यत्रावक्तर्या प्रतिपालग्र सावधानेन जिंगापूजापुरदरेग सद्गुरुपदेश निर्वाहवेन सध्यित साह श्री टोहानामधेयेन इद शास्त्र लिखाप्य उत्तमपात्राय घटावित ज्ञानवर्णी कमंक्षय निमित्त ।

२३०६ प्रति स०२। पत्र स०४ से ५४ । ले० काल ×ो प्रपूर्ण । वे० स०२०७३ । स्त्र भण्डार । २३१० प्रति स०३। पत्र स०३४ । ले० काल म०१६६० वैशास बुदी १३ । वे० स०५६३ । फ भण्डार ।

विशेष-मिश्र केशव ने प्रतिनिधि की थी।

२३११ यशोधरचरित्र । पत्र स० १७ मे ४५ । झा० ११×४ हुँ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ते० काल × । झपूर्ण । वे० स० १६६१ । आ भण्डार ।

२३१२ प्रतिस०२ । पत्र स०१४ । ले० काल ⋉ । वे० स०६१३ । इट भण्डार ।

२३१३ यशोधरचरित्र—गारबद्दास । पत्र स० ४३ । मा० ११×५ इख । भाषा-हिन्दी पछ । विषय-चरित्र । र० काल स० १५६१ भादवा मुदी १२ । ले० काल स० १६३० मगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ५६६ ।

विशेष—कवि कफोतपुर का रहने वाला था ऐसा लिखा है।

२३१४ यशोधरचरित्रभाषा—खुशालचद्। पत्र स० ३७ । मा० १२×५३ इख । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल स० १७६१ कार्तिक सुदी ६ । ले० काल स० १७६६ भासोज सुदी १ । पूर्ण । वे० स० १०४६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष---प्रशस्ति-

1 ,

मिती भासीज मासे शुक्कपक्षे तिथि पिटवा वार सिनवासरे स० १७६६ छिनवा । श्रे० कुशलोजी तत् भिष्येन निपिकृत पं० खुस्पालचद श्री मृतिधसोलजी के देहुरे पूर्ण कर्तव्य ।

दिवालो जिनराज को देखस दिवालो जाय ।, निसि दिवालो बलाइये कर्म दिवालो थाय ॥

थी रस्तु । कल्यासम्बद्ध । महाराष्ट्रपुर मध्ये परिपूर्सा ।

```
्रीर॰ ]
१०६⊏. प्रतिसी को प्रतिसी है । के नाम से १४१४ कलन पुरी १६ । के से १४२। स
घष्पार ।
```

विश्वेष-सङ्ग सन्त पीनसिरी से बायान युवनगीति की विष्या बर्वेस्ता मुलिधी के तिर् वतस्त्रपर है विश्वयाल क्या वैद्याल सुरी १ सं १७ ६ को नंबनायार्थ की सम्बद्धीतिकी के विस् वस्ताराज्यों से इसस्ति विद्या

सारण्यानयाम्ब भूता १ च १७ ६ का नवलायाव जा शक्त्यतास्यान के स्वयं अभूतावज्ञा है बतास्य प्रम १९६६: प्रति स्री दे । एवं वै १४ | ते चस्त्र ×ा वे वै प्रश्री च चस्त्रारः।

निकेर—सीत वर्णमाहै। प्रदेश मित्र संशोध वर्ष ११ के कम्बल १९६७ । वे वं ६ ६ । का क्यार।

म् प्रतिका भाषाच्ये शामे सम्बद्ध १९६७। ने सं ६ १। साम्बद्धारा

पिनेच---मन्तर्माइ महाराज के बाक्यकाम में सावेद में बर्शिकीप हुई। वेदेक्श प्रतिस्थ ≭ायव संप्रदाने काम संदुर्ग दिन पीच पूर्वी १६। वे सं २१। में

Margit 1

विकेष-स्थानी जनपुर में पं जनसरस्य ने केवियान्य वैकासमय में प्रतिनिधि की वी : अवे०२ प्रतिस्य के। यक्ष मं कदानी काम्याचे जनस्यानुकी र 1 के वॉ क्टाबर बच्चीर !

विकेर--काररमणी के परनाने पाँउ भोरमपत्रमा के प्रश्निपिए कराई थी । महापुत्ति हुत्स्रोत्ति के वर्षम वे कम्बनार ने कम्प के रचना की थी ।

२३ ३ क्योप्यस्परिक—शहिराजसूरिः विषयं २ ते १२ । या ११४६ दश्रः। शृता-वंसराः। विषय-वरिकारः कश्रः ×ाते कलावं १ १६ । स्वर्ताः वे वं व्यवस्थाः स्वयस्थाः

न के प्र⊾प्रति का देश पण वी देश के मस्तर देश को ये प्रकृत का क्षान्य । युक्त प्रप्रतिकृत के किया के देश दुक्त के युक्त वी दृश्क का कर्म की वी वी वी

क्लार । पिरेप—देवक अवस्थि शक्त है ।

रहे है प्रविद्ध प्राप्त व देश के कमा×ावे वे दशके । इत्याचार।

विदेश—सम्बाधन वर्षाण निकासमाहै। देवे कः कराकरणरिक—बरक्कोसः। यस संविध के १ । आ १ ×४३ प्रकाः सन्तर-संवर्षः

रम् कं वशापरवार≇—पूरवारवानचा त देव र । सा १.४४३ दशा मना-नावन विवय-वरिवार कस्त×ाते कसा×।वर्षात्वारों ।वे सं ११३ चाकसरा

न्यय-नारकार कमा Xान कमा Xानपूरा वासाता व सं ११ व्याचनकार। व्यक्तिक स्त्रोत्रकारिय—गासनदोस विषयं वर्शनाव ११×४४ १७३। जाना-नंत्रस । विषयः

वरितार करण सं ११६६ मान सुरी ११। पूर्वा । वे वं १ ४ । का वस्तार। निवेद—प्रकृतिकः

ायस-प्याध्यास्थ्यः संयद् १६६१ वर्षे माधमाने हुम्ब्बुच्छे इसस्योदियसे शुक्रपरियासरे तुस्यस्यते एक सीम्युटरे राज्यस्यते समे राज्य सौ केरती असाने संबद्धित मात्र स्वरं अस्तिस्थितस्य विद्युत्तेष्ठसम्य वीकुसस्यस्यासम्बद्धारस्ये, सरमसीपृष्टे विशेष---पुष्पदत कृत यशीघर चरित्र का सस्कृत टिप्पण है। वादशाह वावर के शासनकाल में प्रतिलिधि की गई थी।

२३२४ रघुवशमहाकाव्य—महाकवि कालिदास । पत्र स० १४४ । घा० १२ $\frac{1}{2}$ \times ५ $\frac{1}{2}$ इख्र । मापा– पस्कृत । विषय–काव्य । र० काल \times । ले० काल \times । प्रपूर्ण । वै० स० ६५४ । श्र भण्डार ।

विशेष-पत्र सण ६२ से १०५ तक नही है। पचम सर्ग तक कठिन शब्दों के प्रर्य संस्कृत में दिये हुये हैं।
२३२५ प्रति संट २। पत्र स० ७०। ले० काल स० १६२४ काती बुदी ३। वे० स० ६४३। स्त्र

विशेष-कडी ग्राम मे पाड्या देवराम के पठनार्य जैतसी ने प्रतिलिपि की थी।

२३२६ प्रति स०३। पत्र स०१२६। ले० काल स०१८४४। वे० स०२०६६। स्र भण्डार।

२३२७ प्रति स०४। पत्र स०१११। ले० काल स०१६८० भादवा सुदी ८। वे० स०१६४। ख

२३२ प्रति स० ४ । पत्र स० १३२ । ले॰ काल स० १७८६ मगसर सुदी ११ । वे॰ सं० १४४ । ख मण्डार ।

विशेष—हाशिये पर चारो भ्रोर शब्दार्थ दिये हुए हैं। प्रति मारोठ मे प० भनन्तकीर्ति के शिष्य उदयराम ने स्वपठनार्थ लिखी थी।

२३२६ प्रति स०६। पत्र स०६६ से १३४। ले० काल स० १६६६ कार्तिक बुदी ६। प्रपूर्ण। वै० म०२४२। छ भण्डार।

न्देरे॰ प्रति स॰ ७ । पत्र स॰ ७४ । ले॰ काल स॰ १८२८ पौप बुदी ४ । वे॰ स॰ २४४ । छ् भण्डार ।

२५३१ प्रति स० म। पत्र स० ६ से १७३। ले॰ काल सं॰ १७७३ मगमिर सुदी ४ । प्रपूर्ण। वे॰ ग॰ १६६४। ट भण्डार।

विशेय-प्रित सस्कृत टीका सिहत है तथा टीकाकार उदमहर्ष हैं।

इनके प्रतिरिक्त आप मण्डार में प्रप्रतिया (वे० स० १०२८, १२६४, १२६४, १८५४, २०६४) ख भण्डार में एक प्रति (वे० स० १४५ [क])। इट मण्डार में ७ प्रतिया (वे॰ स० ६१६, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२४)। च भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० २८६, २६०) इद्ध और ट मण्डार में एक एक प्रतिया (वे० स० २६३, १६६६) ग्रीर हैं।

२३२२ रघुवशटीका—मिक्सनाथस्रि । पत्र स०२३२ । मा० १२×५९ दश्च । भाषा—सस्कृत । विषय—मान्य । र० नाल × । ले० माल × । वे० स०२१२ । ज भण्डार ।

२. इ.च. प्रतिस्त २ । पत्रस० १० से १४१ । ने० माल ४ । प्रपूर्णी । वे० म० ३६० । स्नुभण्डार ।

्वास्य एवं परिष

२३१४ पर्यापत्यसिक-पसाक्षाक्षां वन सं १११ वा १९४४ इक्ष । नारा-क्षिये वर्ष विदय-परिचार कमा सं १६३२ सावन वृद्यो आ के कमा अध्यक्ष के सं ६ १ क वस्तार।

विवेश-पुरुगरेत इस बतीबर परित्र ना हिमी बबुबार है।

114]

बचार ।

- ३३१६ प्रतिसंक्ष्म। अपर्थकाति काल X । वे सः ६१३ । अस्वस्थार।

म्द्रेरक प्रतिसंव के । यस संबद्धा सम्बद्धा सम्बद्धा संबद्धा स्वयादा

हेश्ट, बसावरपरिवा****** । यद वे देवेददा या द ×४३ दक्ष शतका-विन्धी । रिकर्न वरिवार कल ×३वे वरू × । बहुर्गश्चे वे दुरु । क्ष बस्तरा

६३१६ वरावरणरिक-भुवसागर। वर वं ६१। वा १९८६ इक्षा क्या-नंतरवः। व्यक्ति। रंगलः 🖈 गला वं १६६४ काक्ष्य वृद्धे १९। पूर्णः। वे वं १९४१ काक्यारः।

्रे व्याप्यस्थितः सहस्य हातकीति । दशा मा १९८२ रहा । सता-वंशर । रियम-परित । र शाम में १९२३ । ले शाम से १९६ जानोत पूर्व । पूर्व । वे से १९६१ जानगर।

विकेद---वंदय १६६ वर्षे धार्माध्यमते वृद्यप्रको नवस्यावियो वीयसावदे वार्यसम्बद्धिकारमध्यमत्त्रे वेत्रवार्यस्य वार्यस्य व्याप्तिकारमध्यमत्त्रे वार्यस्य वार्यस्य व्याप्तिकारमध्यमत्त्रे वार्यस्य व्याप्तिकारमध्यमत्त्रे वार्यस्य व्याप्तिकारमध्यमत्त्रे व्याप्तिकारम् व्याप्तिकारम्त्रे व्याप्तिकारम्भावियाः व्याप्तिकारम्भावियाः व्याप्तिकारम्भावियाः व्याप्तिकारम्भावियाः व्याप्तिकारम्भावियाः विद्याप्तिकारम्भावियाः विद्यापतिकारम्भावित्याः विद्यापत्तिकारम्भावित्याः विद्यापत्तिकारम्भावित्याः विद्यापत्तिकारम्भावित्याः विद्यापत्तिकारम्भावित्याः विद्यापत्तिकारम्भावित्याः विद्यापतिकारम्भावित्याः विद्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्यायः विद्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्यापतिकारम्याः विद्यापतिकारम्यायाः विद्यापतिकारम्यायाः विद्

क्का प्रतिस्थ का प्रथम के प्रधाने काला को ११७० । के वो ६ ८ । क्रायमण्डी विकेश — सहामणिताना के प्रतिनिधि भी जी। २३६२ मनिस्स के प्रथम के प्रधाने काला को १९४१ व्यवस्थित सहस्के को दें रहें

विकेष- बाबू बीचराल के पर्वार्थ बीचा जनाव के भीवधान में जिल्लीय की वी । क जनार ने १ प्रतिकार कि पर्वार्थ बीचा जनाव के भीवधान में जोतिनारि की वी ।

१३९६ महोगरपरिवर्षिणकः विश्वार्थेत् । यो वे १६ वा १३४४ द्राह्या वना-वनारः। रियम-परितार्-परिवर्ण-अस्ति नाम वे १९ ए प्रीयपूरी १९ प्रकेशिय चे १३७६ वि क्योराः। मधे बलात्कारगरो सर्स्वतीगच्छे श्री कुदकुदाचार्यान्वये भ० श्रीपरानदि देवास्तत्पट्टे म० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री ज्ञाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नायेखण्डेलवालान्वये जाव्हागोपे सधाधि-पति साह श्री ररणमङ्ग तद्भार्या रैरणादे तयो पुत्रास्त्रय प्रथम स श्री खीवा तद्भार्ये हें प्रथमा स० खेमलदे दितीयो पुहागदे तत्पुत्रास्त्रय प्रथम चि० सधारण हि० श्रीकरण तृतीय धर्मदास । द्वितीय स० वेगा तद्भार्ये हे प्रथमा विमलादे हि० नौलादे । तृतीय सं ह गरमी तद्भार्यं दाङ्योदे एतेसा मध्ये सं विमलादे इद शास्त्र लिखाप्य उत्तमपात्राय दत्त जीनावर्णी कर्मक्षय निमित्तम् ।

२३४३ प्रति स०२। पत्र स०६५। ले॰ वाल स०१८६३ मादना नुदी १४। वे॰ स॰ ६६६। इस भण्डार।

२३४४ प्रंति स०३ । पत्र स० ७४ । २,० काल स० १८६४ मगसिर मुदी ६ । वै० मैं० २३० । च भण्डार ।

२३४४ प्रति स०४। पत्र स०५६। ले० काल से० १८३६ फाग्रुए। सुदी १। वे० स०४६। छ

विशेष-जयपुर के नेमिनाथ चैत्यालय में सतीपराम के शिष्य वस्तराम ने प्रतिलिपि की थी।

२३४६ प्रति स० ४। पत्र स० ७६। ले० काल स० १८४७ वैद्याख सुदी १। वे० स० ४७। ह्य भण्डार।

विशेष—सागावती (सागानेर) मे गोधो के चैत्यालय में प० सवाईराम के शिष्य नौनिधराम ने प्रति-लिपि की थी।

२२४७ प्रति स०६। पत्र स० ३८। ले० काल स०१८२१ घाषाढ सुदी ३। वे० स०४६। व्य मण्डार।

विशेष-जयपुर मे चद्रप्रम चैत्यालय में प० रामचद ने प्रतिलिपि की थी।

२३४८ प्रति स० ७ । पत्र सै० ३० मे ५६ । ने० काल × । घपूर्ण । वे० स० २०४७ । ट मण्डार । विशेष—दर्वे सर्ग से १३वें सर्ग तक है ।

२३४६ वरागचिरित्र—सर्नृहिरि । पत्र सं \circ ३ मे १० । आ॰ १२ $\frac{1}{4}$ ×५ इख्र । भाषा–संस्कृत । विषय–चिरत्र । र॰ काल × । के० काल × । अपूर्ण । वे० सं \circ १७१ । स्व भण्डार ।

विशेष-प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं।

२३४० वर्द्धमानकाञ्य—सुनि श्री पद्मनिद्द् । पत्र म० ५०। मा० १०४४ इआ। भाषा–सस्कृत । विषय–काञ्य । र० काल ४ । ले० काल स० १४१८ । पूर्यो । वे० स० ३६६ । स्न भण्डार ।

इति श्रो वर्द्ध मान कथावतारे जिनराश्रिव्यतमहात्म्पप्रदर्शके मुनि श्री पद्मनदि विरिचिते सुखनामा दिने श्रा वर्द्ध माननिर्वारागर्मन नाम द्वितीय परिच्छेद २३२४ र पुरसटीका—पै० सुमति विश्वसमीचि । यत्र सं वे १७६ सा १२×६) स्थान अस्य । विषय-नम्मा । राजसा×ा संजना×ा च्याली | वे सं ६५० ।

विदेश-दीवावान-

118]

विनिवहंदस स्थान संकल्प सम्मुन्तितीनायन्त्रां तिसी संकूलां सीवत्तु संगल स्वत नर्जुः द्रीयान्यः । विन्त् तर में दीना की नदी थी ।

२३२१ व्यक्तिस्य २ । पत्र सं १४०० । संस्थास्य स्थाप्त । व्यक्तिस्य विश्व सुरी का प्रमुखी । वे वे ६२ । क्राच्यारः ।

विधेय--द्रवामीराम के क्रिय वं क्राज्याय के क्राजीराम के फावार्व प्रतिकृति की वी ।

विधेय-क कामार में कुछ प्रति (के वं १२१) चीर है।

२३३६ रचुवरशिका—कस्पस्थान्दर) गर्य दे १) था १ _र×२ रखः। माना-वस्तर । विरस्-राज्या र राज्य वे १६६१) के ब्रब्ध ×ो अनुस्ते। वे देवकरी व्यापनारा

निर्मय---चमक्तुमार प्रय रहार्षक को डीवा इसार्वक है। एक वर्ष तो नही है और वस्य वा है देवा हुण्य कर्ष नैमानिकोस से हैं।

२६६० महिसं २ । वस सं ५ के ६७ । के कल्ट X । बसूर्ण (वे ६ ७२ । ट मकार । २६६८ रमुक्टाटीकर-नुषानिमकास्थि । यस सं १६७ । तर १२८४० रख । बाया-संस्था

विचय-पान्य । र पान्त ×ा ते पान्न ×ा ते वं यह | व्यापनार । विचेय---वरदारामधीय प्रारमायार्थे जनेवनाविकवारित के विच्या वंदवसमूच्या वीवन् वन्योज्यकि है

किया प्रशासिक करियो किया है अधिक पिता की थी। १९६८ असि साथ की १० वर्ष के १६१ के काल की १०१६ के की ११६ का कार्यारी

रवेदेश आरास प्राचन देशांग जलात स्वर्धांच स्राचनार्थः प्राके स्वितिक साम्यारं वेशे अस्ति (वे संदेश १ १) और हैं। केला संस्थारी असि ही क्रमिनकस्ति नी शेला है।

२६५ रासकुरसंघान—चैद्यार्थस्थै। पण थं ६। था ३ ×४ रखः। सारा—संस्थे। निरम—माना । रंपमा × । के पणा × । धरारी । देशे के ६३। का बच्चार ।

सियम-पाना | रीजमा × | के पाना × । वपूर्ण | वे तं तं तं व पाना पानार । २३४१ - राजवन्त्रिया—कंगवदास | वव तं १७६ । या ९८६३ रख । वारा-हिन्सै । विमन

कामां र करना×ाणे प्रमाणे १०६६ कामण् जूनी ११ (पूर्णाणे सं ६९६६ का व्यवस्तः) १९५८ वर्षाण्यस्थि—य वर्षास्त्रवेषा स्पर्धाप्त १४ (वा १०८६ क्या ध्यना–संस्था शिरण-रस्तावर्षयं वासीमन परिषारं बाला×ाणे वालासी १९६४ वर्षीयक क्यारी हार्युणी १० सी.

क् समार । विकेश-समील-

र्च १११४ वर्षे बार्क १४४१ वर्षीत्त्रपत्राचे युक्काके व्ययोगितते व्यरेष्टरस्त्रणे वरिष्ट्रस्त्राचे वंत्रप्रेणे प्रारत तृत्व बहुस्तरोर राज को पूर्वविद्य राज्यवर्ताताने कार भी यूरत्यक्कावारे यो वासित्वाम विनर्वविद्यानि सघे व्लात्कारगरों सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुदावार्यान्वये भ० श्रीपदानदि देवास्तरपट्टे म० श्रीशुभवन्द्रदेवास्तरपट्टे भ० श्री प्रभावन्द्रदेवास्तरपट्टे भ० श्री प्रभावन्द्रदेवास्तरिष्ट्टिया भ० श्रीधर्भचन्द्रदेवास्तदाम्नायेखण्डेलवालान्वये शावडागोत्रे संघाधि-पति साह श्री ररणमञ्ज तद्भार्या रैरणादे तयो पुत्रास्त्रय प्रथम स श्री खीवा तद्भार्ये हें प्रथमा स० वेमलदे हितीयो शुहालदे तत्पुत्रास्त्रय प्रथम वि० सधारण हि० श्रीकरण तृतीय धर्मदास । हितीय स० वेगा तद्भार्ये हे प्रथमा विमलादे हि० नीलादे । तृतीय स ह गरसी तद्भार्या दोड्यादे एतेसा मध्ये स विमलादे इद शास्त्र लिखाय्य उत्तमपात्राय दत्त जीनावर्णी कर्मक्षये निमित्तम् ।

२३४३ प्रति स०२। पत्र स०६४। ले॰ काल स॰ १८६३ मादवा बुदी १४। वै॰ स॰ ६६६। क

२३४४ प्रति स० ३। पत्र स० ७४। ले० काल स० १८६४ मगसिर सुदी ६ । वे० सँ० ३३०। स भण्डार।

२३४४ प्रति स०४। पत्र स० ५६। ते० काल स० १८३६ फार्गुर्ण सुदी १। वे० स० ४६। छ

विशेष-जयपुर के नेमिनाथ चैत्थालय में सतीपराम के शिष्य वस्तराम ने प्रतिलिपि की थी।

२३४६ प्रति स० ४ । पत्र से० ७६ । ले० काल स० १८४७ वैशास सुदी १ । वे० स० ४७ । ह्र भण्डार ।

विशेष—सागावती (सागानेर) में गोघो के चैत्यालय में प० सवाईराम के शिष्य नौनिघराम ने प्रति-लिप् की घी ।

२२४७ प्रति स०६। पत्र स० ३८। ले० काल स०१८२१ ब्रापाढ सुदी ३। वे० स०४६। च भण्डार।

विशेष-जयपुर मे चद्रप्रम चैत्यालय में प० रामचद ने प्रतिलिपि की थी।

२३४८ प्रति स० ७। पत्र र्स० ३० से ५१ । ने० काल 🗴 । अपूर्या । ने० स० २०५७ । ट मण्डार । विशेष—दर्वे सर्ग से १३वें सर्ग तक है ।

२३४६ वरागचरित्र--- अर्तृहिरि । पत्र सं० ३ से १० । घा० १२५४ इख । भाषा-सस्कृत । विषय--चरित्र । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । मपूर्ण । वे० सं० १७१ । स्व भण्डार ।

विशेष-प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं।

२३४० वर्द्धमानकाच्य-मुनि श्री पद्मनिद्दि। पत्र स० ५०। छा० १०४४ इअ। भाषा-सम्कृत । विषय-काञ्य। र० काल ४। ले० काल स० १४१८ । पूर्ण । वे० स० ३६६। छा भण्डार।

इति श्रो वर्द्ध मान कयावतारे जिनरात्रिव्रतमहात्म्यप्रदर्शके मुनि श्री पद्मनिद विरचिते सुखनामा दिने श्रा वर्द्ध माननिर्वाणागमेन नाम द्वितीय परिच्छेद

२३४१ वर्शमामक्या—अवधितहस्राधिव वं व्हीधा ह ×प्रीदश्राभाषा-धपत्र स्राधित-रेम्मार सात्र×ाते तमार्थ १६६६ शैक्षाच पूरी १। पूर्वाचे सं १४६। का शकार ।

विश्वेत--प्रवासित-

र्धे १६१३ वर्षे वैदाल गुरी ३ सुक्रमारे मुख्योरपवित्रे बुल्डवे बीसूंबईरावार्यान्ववे छराई बहारम से बुलमह तराई महारक बीमविवकुम्बा करहे भट्टारक बीजवार्जन कराई बहारक बीचंनसीति: निर्माय भी नैनरत धानार्थं संगलनीयत बहादुर्गीतः योवेधिनाम् चैत्यासये प्रश्नातार्थस्य वदाधानार्थस्य बहाधानां श्री यानार्यस्थान्ये धर-नैपनीने सा बीश राज्ञानांबाधने शसून चलार प्रवन पुन---- (बपूर्स)

२१६२ प्रतिका २ । पर सं ६२। के काल ८ । दे वं १८१३। ह क्यार ।

२३४३. वर्ष्ट्रगानवरिश्व----। स्व सं १६८ से २१२ । या १ ×४३ इसा सना-संसद। विषय-विरियार काल X । के काल X । बायुर्ण । वे वे के के का का कारा ।

२३४४ प्रतिसं २ । प्रसंद ६१ । के कल्ल × । बपूर्वाके सं ११७४ । का बच्चार । १९४४. वर्डमामचरित्र-कारोस्टि । एव वं १ ४ । या १६४६ रहा । मला-दिनी ^{एक} । निमन-मारियार मानार्व १९१ के नास से १९४ ब्रामन बुद्दी २। पूर्ति । वे ६४०। इस सम्बार।

रिधेन-परमुखनी बोचा ने प्रतिनिधि की नी।

२३४६. विकास वरिश्न---वाबानावाय कामवस्त्रेस । वथ वं ४ के ४ । या १ ×४६ स्व । वर्तान दिन्दी : निवन-निप्तनाकिम का नीवन । ए जान सं १७२४ । वे नाम सं १७८६ जानक हुदी ४ । महुर्या । है वे शेश कि व्यवस्थात

विकेश-करकार मगर वे किया शामना ने अधिविधि हो हो।

११४० विदम्मसङ्ग्रहम्-वीद्याचार्वे वर्ततास । पत्र वं २ । या १ ३×१ ६म । ^{सारा-} संस्था। विका-पाला। रंपला ×ावे पाला वं १०११ । पूर्ता वे वं ६२७ । व्यावस्थार ।

१३४८, प्रतिसंदानपातं शांक कार×ावे वंश्वास क्यारा

श्रद्ध प्रतिस के 1 कर वे २०१ के पाव से १ १९३ के ते ११७३ का प्रणार !

विदेश-समार ने महासम्ब ने प्रतिविधि की की ।

कार प्रति से भावताल प्राप्त कार्य के कार्या से से के का कार्यारा विसेप-संस्था में दीना भी वी है।

र84र प्रतिस ≽। पन वं र्६। में प्रत X। वे वे ११३। क्रा क्यार !

নিটান-অতি ভান্তত ভান্তা স্বাহিত है।

प्रकृत व करियन पण पर पोल जोड़र है दिया पर लिखा है 'भी निम नेवक क्षाड़ वारियान वर्गेट होपाणी

फाव्य एवं चरित्र]

. १२३६२ प्रति सं० ६ । पत्र स० ४७ । वि० कालास १९६१ चैत्र सुदी ७ । वे० स० ११४ । छ

विशेष—गोधो के मन्दिर मे प्रतिलिपि हुई थी।

ः ः , २३६३ मित स०,७। पत्र स्० ३३ । ले०, काल स० १८८१ पौष बुदी ३। वे० स० २७८। ज भण्डार।

- 111 विशेष-सस्कृत टिप्पण सहित है।

भण्डार।

विशेष-प्रति सस्कृत टीका सहित है।

ह ३३६४ प्रति स०६। पत्र स० ३६। ले० काल स०१७४३ कार्तिक बुदी २। वे० स० ४०७। व्य भण्डार।

विशेषं---प्रति सैस्कृत टीका सहित है। टीकांकार जिनकुशलसूरि के शिष्य कीमचन्द्र गरिए हैं।

इनके मितिरिक्त छ भण्डार में २ प्रतिया (वि॰ स॰ ११३, १४६) व्य भण्डार में एक प्रति (वि॰ सँ० ११३) भीर है।

२३६६ विद्ग्धमुखम् छनटीका — विनयरत्न । पत्त स० ३३ । मा० १०३४४ हे इख । भाषा-संस्कृत । विषय-काव्य । टीकाकाल स० १४३४ । ले० काल स० १६८३ मासोज सुदी १० । वे० स० ११३ । छ भण्डार ।

२३६७ विदारकाव्य—कालिदास । पत्र स०२ । ग्रा०१२×५३ इव । भाषा-सस्कृत । विप्रय-काव्य । र० काल ४ । ले० काल सं०१ ८४६ । वे० सं०१ ८४३ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-'जंयपुर में चेण्द्रप्रम चैरयालय मे मट्टारक र्सुरेन्द्रकीर्ति के समय'मे लिखी गई थी।

२३६८ श्वुप्रसुम्नप्रवध—समयसुन्दरगिए। पत्र म०२-मे २१। धा०१०३×४६। इत । भाषा—हिन्दी। विषय—श्रीकृष्ण, श्रवुकुमार ए६ प्रदुष्म का जीवन। द० काल ×। ले० काल स० १६५६। प्रपूर्ण। वे० म ७०१। इ भण्डार।

विशेष-- प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

सवन् १६५६ वर्षे विजयदशस्या श्रीस्तभतीर्थे श्रीवृहरूखरतरगच्छाधीश्वर श्री दिल्लीपित पातिमाह जलालद्दीन सक्तवरसाहिशदत्तयुगप्रधानपदयारक श्री ६ जिनचन्द्रसूरि सूरववराणां (सूरीश्वराणां) साहिसमक्षस्वहस्तस्यापिता पात्रायंश्रीजिनसिंहसूरिसुरिकराणां (सूरीश्वराणां) शिष्य मुन्य पंडित सक्तवन्द्रगणि तच्छित्य वाक समयसुन्दरगिणाना शोजैसलमेह प्रान्तव्ये नानात्रिय शांस्त्रविचाररसिक सींक सिनीर्शंत्र समस्यर्थनया कृतं श्री श्रीयप्रयम्नप्रवर्त्ये प्रथम सद्ध ।

२३४१ वर्द्धमानकम्—समित्रहरू।पर सं ७२।या ६३८६३ रहा । मान-सरस्य । स्विक् रुम्पः र राष् \times । ये रात सं १६६६ वैज्ञाव गुरी १३ पूर्वः। ये संस्था व्यक्तारः।

विकेश-जयस्ति-

वं १९२२ वरते वैवास तुरी १ पुकारी पुनवीत्त्रिको बुनवीं थोपुर्दाशकर्मान्ये वराष्ट्री महारू भी इत्तरत त्यार्ट्ड महारक भीमध्विकृत्या त्यार्ट्ड चहुरतक भीमवान्ये त्यार्ट्ड महारक शीक्षरतीत्ता विरोधक यो वेवता शासमें बेदत्यांचेत बहुत्यांचा भीमीताल भीनामा है कुबाहुलंड महारावर्तावरात बहुत्यात्र यो बामसंत्रपानी वार नेतानीत हा और तक्क्षरांचारके त्याच नामार क्या पुण्याम्माम्मा (बहुती)

२३४२ प्रतिस या वर्ष १२। में कार×ार्थ वं १९१६ द क्यार।

२३४३ सञ्चयानचरित्र------वस्ते १६० के २१२ । धा १ ×४३ द्वाः प्रता-चंदतः। विक्य-चरितः। रःगक्त× । ते तक्त× ४। स्पूर्णः। वै वं १०६। कावध्यारः।

१३४८ प्रति सं १ । पत्र सं ६१ । से नास 🔀 । शतुर्था के सं १८७४ । का पत्रार ।

२३२४. वर्डेस्प्रवचरित्र— केस्प्रीसिद्धातमधं १३। या ११४३ दक्षा प्रापा–देली स्त्री। विवय-नारिकार साम्त्रवं १९१वे सामा सं १७६४ द्वारत बुदी २ (पूर्ण) के सं ६४०। क क्ष्मार।

रिकेर--- एक्ट्रालकी बोचा में महिलियि की दी।

२३२६ किम्मवरिश—वाचनाचार्यं व्यावसोत्। वयः वं ४ ते १। वाः १ $\chi \chi_{1}^{2}$ एषः। $\frac{1}{2} \chi_{1}^{2}$ । रिपर--रिवनप्रित्य वा वीववः। र जन्म वं १७५४। ते वाल वं १७५१ वारव दुर्धः χ । $\frac{1}{2} \chi_{1}^{2}$ वं १३६। १२ वरागरः।

रिकंप---उद्देश्वर बनर में क्रिप्त रामचन्त्र ने ब्रहितिएँ वी वी ।

२२४० विष्यासुनमासन—वीद्यावार्थं वर्मश्चासः। वस्तं २ । या १३४६ दशः स्पर्यः शंसुतः। विषय—गन्दः। र यसः ४० का सं १३१ । वृत्यः। सं ५५० । सः समारः।

्यहरूच, प्रति सं २ । वर्ष सं १० । के साम 🗴 । वे सं १ ३६ । वर अस्वार ।

क्रम्बः प्रतिका देशवयाचे २०११ वालाचे १ १११वे से १२७१ क समार।

दिशेष- चमार में अद्वासन्द्र में अतिकिति की की s

. क्ष्मं प्रतिसुं धानमार्थं देशाचे वालासं १७६४ । वे शं ६८० । के संस्थारः। विकेश-संस्थातं वेदीयाचीकीके।

क्ष्म् क्षति सं । त्यानं १६। वे याल्यारा वे श्रं ११६। स्थानारा

दियोर --वर्गि मंद्रकृत दीवा मंद्रिष्ठ है । प्रदान व व्यन्तिम कर कर कोल मोहुर है जिस कर निवा है 'की जिस केवड साह व्यवस्थार प्राप्त वीवान्ते प्रारम्भ---

श्री सासरा नायक सुमरिये वर्द्ध मान जिनचंद। ग्रालीइ विघन दुरोहर ग्रापे प्रमानद ॥१॥

२३८० शिशुपालवध—सहाकिथ साघ । पत्र सं० ४६ । ग्रा० ११६४५ रखा । भाषा-सम्कृत । विषय—काव्य । र० काल × । के० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० १२६३ । श्रा भण्डार ।

> २३८१ प्रति स०२। पत्र स०६३। ते० काल ×। वे० स०६३४। स्त्र भण्डार। विशेष—प० लक्ष्मीचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

२३८२ शिशुपालवथ टीका—मिल्लिनाथसूरि । पत्र सं० १४४ । मा० ११६ \times १३ इख । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० ६३२ । स्र भण्डार ।

, । , विशेप-- ६ सर्ग हैं । प्रत्येक सर्ग की पत्र सख्या मलग मलग है ।

२३८३ प्रति स०२। पत्र स०१७। ले॰ काल ×। वे॰ स०२७६। ज मण्डार। विशेष-केवल प्रथम सर्ग तक है।

२२५४ प्रति सं०३। पत्र स० ५३। ले० काल 🔀 । वे० सं० ३३७। ज मण्डार।

२३ प्रति स०४ । पत्र स०६ से १४४ । ले•् काल स०१७६६ । भ्रपूर्ण । वे० न०१४४ । व्य भण्डार ।

२३-६ श्रवराभूपर्या—नरहरिभट्ट । पत्र स० २५ । मा० १२३×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-काल्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्या । वे० सं० ६४२ । आ भण्डार ।

विशेष-विदग्धमूलमहन की व्याख्या है।

प्रारम्भ-भों नमो पार्श्वनायाय ।

हेरवनव किमव किम तव कारता तस्य चाद्रीकला
कृत्य कि शरजन्मनोक्त मन पादंतारू रं स्यादिति तात ।
कृत्यित गृह्यतामिति विहायाहर्नु मन्या कला—
माकाशे जयित प्रसारित कर स्तवेरमयामणी ॥१॥
य' साहित्यसुर्घेदुर्नरहरि रल्लालनदन ।
कुक्ते सेशवण मूष्णव्या विदग्धमुखमङणुव्याख्या ॥२॥
प्रकारा संतु वहवो विदग्धमुखमङने ।
सथापि मत्कृत भवि मुख्य भुवण्—सूष्णा ॥३॥

भन्तिम पुरियका-इति श्री नरहरमट्टविरिषते श्रवरामुपरो चतुर्य परिच्छेद संपूर्ण।

न्देश्य प्रतिस रापण सं ६ ते इ.स. वे कामार्थ (७०१४ पीच पूरी १४) कपूर्ण । व स १३२ । इ.स.मारा

, १६०१ शास्त्रितावयरिक-महारकसकतीरितायय ई १६२ का १३८६३ का कर्म-स्टेस्ट । दिस्स-परिकट जल ४३ के समर्थ १७८६ वैयस्त्री र । स्ट्रुई। के उपनिकार

> २६७२ ब्रविस २ । पर सं १९० | वे कश्व × । वे क ७०२ । क्रणपार । विकेर—शिव जवार की निविध हैं।

रिकार प्रति सक राज्य सं दरशाने जीता सं देवताह बुदी दावे सं करते। व

समार । स्किद---सिक्टि प्रशोरमात्राल कार्ते वयनपरमण्ये शती नेपटा का द्वार वंपदी समामक्षी के पनिर सिक्टे । निवानको चंपारमणी कारका वयार्त वस्तर सणे ।

प्रकार । स्वाचन्या प्रशासन कारत चयुर चया । २३७४ प्रति संक ४ । यत के १००० । के नामा के १ ५४ कातुक दुर्श १२ । के सं १४६ । व सम्बार ।

नार : निकेट—स्ट प्रीठ धरोगोरानची शेलान के मन्दिर मी है ।

ण्यक्त प्रति सः शायम सं ११६ । वे साम सं १७६६ गरियक पूरी ११। वे संशास सम्बद्धाः

निरोत— वं १ विक पूर्ण ६ के दिन बन्तराज ने इस त्रति ना श्रेत्रीयर निराधा । १३७६ प्रति सः वं । पन यं १७ ते १९०। ते नामा सं १००० तैवाल पूर्ण २। व्यूर्ण । वे

निके-सहस्था प्रशासक वे स्वाई बस्पूर थे अतिविधि की हो ।

्र सके व्यक्तिराज क. व्यापा के कावार के क्या एक प्रिष्ट (के तो १६ ४००) हरिए) वर्गीर हैं। १३०० शासिनप्रचीरहें—व्यक्तिसागर। पण वं । वर्गा रु ई×रई रखा वस्ता-रिक्पीरियर्न-वर्गित होर कम्ब वं १९०० वालीय दुवी १३वें काम ×ाक्युकी ३ वं ११४ । वर वस्तार।

निवेद-अन्य रव सावा चटा हुमा है।

वं प्रदेश । या स्वयंत्र ।

रहेच्यः प्रति स्रं दानवर्तरमात्रै राजभावे तंत्रशास्त्र बण्यात्र। रहेच्यः शामित्रसूचीवर्दे*********** प्रति प्रश्चित प्रदृत्ताः वाला-दिल्पीः निलय-गीपः। रं सन्दर्भावे राजपूर्वावे तं रहे ।

विकेच-एका में. ६ जा है तथा प्रदूष विकी हुई है । व्यक्ति पाठ करी है ।

प्रारम्भ---

श्री सात्तरण नायक सुमरिये वर्द्ध मान जिनचंद। मलीइ विधन दुरोहर मापै प्रमानद ॥१॥

् २३८० शिशुपालवध-सहाकवि साघ । पत्र सं० ४६ । झा० ११५४ हत्र । भाषा-सम्बन्त । विषय-काव्य । र० काल 🗴 । के० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० स० १२६३ । आ मण्डार ।

३३=१ प्रति स० २। पत्र स० ६३। ले० काल ×। वे० स० ६३४। श्र भण्डार।

विशेष--प० लक्ष्मीचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

२३८२ शिशुपालचथ टीका—मिल्लिनाथसूरि । पत्र स० १४४ । मा० ११ई×५३ इख । नापा— सस्कृत ।,विषय-काव्य । र० काल × । ले० काल × । पूर्श । वे० स० ६३२ । श्र मण्डार ।

विशेप-- ह सर्ग हैं। प्रत्येक सर्ग की पत्र सख्या मलग मलग है।

२३८३ प्रति स०२। पत्र स०१७। ते बगल ×। वे० स०२७६। ज भण्डार। विशेष-केवल प्रथम सर्गतक है।

२३५४ प्रति सं०३ । पत्र स०५३ । ले० काल ४ । वे० सं०३३७ । जा भण्डार ।

२३८ प्रति स०४। पत्र स०६ से १४४। ते कृकाल स०१७६६। श्रपूर्ण। वै० न० ४४५। इय भण्डार।

२३-६. श्रवसाभूषसा— नरहरिभट्ट । पत्र स० २४ । घा० १२३×५ इয় । भाषा—सुस्कृत । विषय— काल्य । र० काल × । ते० काल × । पूर्स । वे० सं० ६४२ । ध्रा मण्डार ।

विशेष-विदम्धमुखमहन की व्याख्या है।

प्रारम्भ-भों नमो पार्वनायाय।

हेरवनव किमव किम तव कारता तस्य चाद्रीकला
कृत्य कि शरजन्मनोक्त मन पादंतारू र स्यादिति तात ।
कुप्पति गृह्यतामिति विहायाहर्जु मन्यां क्ला—
माकागे जयित प्रसारित कर स्तवेरमयामणी ॥१॥
य' साहित्यसुभेंदुर्नरहरि रस्लालनदन ।
कुस्ते सैशवण मूपणव्या विदग्धमुखमङ्गणव्याख्या ॥२॥
प्रकारा सतु बहवो विदग्धमुखमङ्गे ।
सथापि मत्कृत भावि मुख्यं भूवण्—सूपणौ ॥३॥

मन्तिम पुष्पिका-इति श्री नरहरभट्टिषरिक्ते श्रवसामूपसो चतुर्य परिच्छेद सपूर्सा।

```
२०० ] [ काम वर्ग परिर
```

रहेक अधिकामिक ना नेसिक्स । यन संदेश धार रूप्तर हंग । वासा-संस्तृतः। विस्स-मरिगार भक्तार्थ ११.१। के कृतार्थ १९४१ । पूर्ण । वेश संदेश के स्वार्थ ।

विकेत-केवन अवस्ति प्रवृत्ति है। अवस्ति---

हंपण् १६४६ वर्षं भागम पूर्वी १ बाँगवामीः बीह्नवर्षीः संवासमाने बाह्नवर्षाणे हारमधीनाने मौतीन हुंपामक्रम्यते बहुराव बीएवर्णिकेसमार्ष्ट्रं स्कृतिकः सी हुन्यमक्षेत्रकार्त्युः व 'बी वित्तमक्ष्मित करते हें 'अर्थान-रेवा अंकारमाने भी प्रवासिकता कार्याम्य क्ष्मित्रमान्त्त

रोप्प, प्रतिसः है। पर्व ६६। के क्लार्स १४४६। के सं १८८) का स्परिः।

रहेन्द्र, प्रति सं० है। पश्ची प्रशा में बंग्य संग्रें बंधर वर्ष्ट कुली है। वे हेरेरा स्व

तक्रकपुर (होडारामीहडू) में पाने पुत्र थि। देकपन्य के स्थाध्यमध्ये दक्षमें दीव दिन में प्रवितिति ही यो । सद्भ प्रति पं जुक्सान्त भी है । इतिहर्ष में बढ़ तथा विचा ऐसा क्लोब है ।

ि प्रदेश प्रतिस्थि भोगवर्थ स्थाने क्षेत्र वं १ स्थ्यानीच नुशिक्ष वं १८३ वि

STEEL !

शन्तरः । <u>स्थितः—नेत्रवर्धः में इतिस्थित</u> हुवै थी ।

२६६६ प्रतिसः देशकार्थं देश के काल के १०३१ प्रश्नेस्त हो १३% । प्रकारः

बकार । विकेश-सर्वार्ड वर्षेत्रुर में वस्तोवर्वर वीक्त बुत्तिसर्वियव में ग्रीटलियि वर वी ।

नंदर मधिला कांत्रह मंद्री हुए बस्ता सुद्द का न्यून मुद्दी देश है से प्रेरंश क्ष स्थार।

दिक्षेप-स्वारं वक्तुत्व में केंप्रिकेटिक के वर्षेक्यों की तीतियों को को। १९६५ प्रतिनेति सार्पा की प्रभागि कर्मा के उन्दर्भ मंद्र मुख्या । के नाहा सामाणा दिक्कि---रे राजकन्यों के विकंत नेपक्ता के वर्षेतुत के प्रतिक्रियों भी थी।

रह⊾प्र प्रति संव ६ । पत्र वं १ दो ते नाम वं १९४४ सलवा नुसे २ । वं व २१३६ । व

डाव्य एवं चरित्र

विरोप—इनके मितिरिक्त का मण्डार में २ प्रतिया (ये० में० २३३, २४६) का, ह्य तया ना भण्डार में एक एक प्रति (ये० स॰ ७२१, ३६ तया ८५) मीर हैं।

२३६६ श्रीपालचरित्र--भ० सक्लकीर्ति । पत्र स० ५६ । मा० ११×४६ इस्र । भाषा-मन्द्रत । विषय-चरित्र । र० गाल × । ले० गान शक स० १६५३ । पूर्ण । वे० स० १०१४ । अ भण्डार ।

विशेष--- प्रह्मचारी माएरचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

२३६७ प्रति स०२। पत्र म• ३२८। ले० पाल स० १७६५ फापुन बुदी १२। पे० स० ४०। छ्

मण्डार ।

विशेष--तारगुपुर मे मडनाचार्य रत्नवीति के प्रक्षिप्य विष्णुरूप ने प्रतिलिपि की यी।

२३६ =. प्रति स० ३ । पत्र स० २८ । ले० वाल ४ । वे० म० १९२ । ज भण्टार ।

विरोप--यह ग्राय चिरजोलाल मोठ्या ने सं० १६६३ की भादवा युदी व को चढाया था।

२३६६ प्रति स० ४। पत्र सं० २६ (६० मे ८८) से० काल ×। पूर्ण। दे० स० ६७। म

भण्डार ।

विशेष--प० हरलाल ने वाम मे प्रतिलिपि की थी।

२४०० श्रीपालचरित्र । पत्र स० १२ से २४ । प्रा० ११६×४३ इख । भाषा-मस्कृत । विषय-

२४०१ श्रीपालचरित्र । पत्र स०१७ । मा०११३४५ इख्र । भाषा-प्रपन्न श । विषय-चरित्र । रुक्ताल ४ । मे० वाल ४ । मपूर्ण । वे० स०१६६६ । त्रा भण्डार ।

२४०२ श्रीपालचरित्र—परिमञ्जापत्र स०१४४। मा०११४८ इच। भाषा-हिन्दी (पद्य) । विषय-वरित्र। र० काल स०१६४१। माषाउ बुदी ८। से० काल स०१६३३। पूर्ण। वे० स०४०७। स्म भग्डार।

२४०३ प्रति स०२ । पत्र सं०१६४ । से० वाल स०१८६ । वे० स०४२१ । स्र भण्डार ।

२४०४. प्रति स० ३। पत्र स० ५२ से १४४ । ले० काल स० १८४६ । वे० स० ४०४ । झपूर्गा । आ भण्डार ।

विशेष—महातमा झानीराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। दीवान शिवचन्दजी ने ग्रन्थ लिखवाथा था। रे४०४- प्रति स० ४। पद स० १६। ले० काल सं० १८८६ पीप बुदी १०। वे० स० ७६। ग्रामण्डार।

विशेष---ग्रन्य भागरे मे भालमगंज में लिखा था।

२४०६ प्रति स० ४ । पत्र स० १२४ । ले० माल स० १८६७ वैद्याम सुदी ३ । वे० स० ७१७ । क

विशेष--- महात्मा कालूराम ने सवाई जवपुर मे प्रतिलिपि की बी।

```
302 ]
                                                                      क्रम्युप्त वृहितुः ]
           २४०० मित् सुरु की पुरु में १ र शिन नाम वे हुनुष्ठ सासीन सुदी ७१ के स्र अस्त स
  नपार ।
           २४ म्यानि मृत्याचर् दृर् हे कुमून वे नदप्रतास बुदी स्वे हे दृष्ट्री
्रम्बार ।
्
           २५ ६८ ब्रिटिस मुख्याचे ४३ के कलाई १७६ योग दूरी २ (वे ई. १४४) इस
  र्बन्दार ।
           विकेश—ब्रह्मा ब्राइक है। हिसीन में प्रतिक्रित हुई थी। शन्तिम ३ पयो में वर्षप्रकृति वर्णन है निवस
 केवलकात वं १५६६ मालोज दुवी १३ हुँ। सांपानेर में प्रभागे नक्ष्यम ने कन्द्रनीयास के पतनार्न विदा ना L
           १५६ मृतिसुं ।। पण सं दृष्टाने माल संट २ सालव दुरी ६। ने सं २२०। स
  वच्चार ।
           विकेच---दे प्रतिकों का निकल है र
           नियोग—सम्मे सरिएक व्यावनार वे वृत्रतियां (वृष् वृष् १७००,४१) सामभार में पत्र मरि
  (वे सं १ y) ब मच्चार ने शीन प्रतियों (वे वं ७१६) चेर "७२ं) क्रुं क बोर श क्यार ने एक एर
  मरि (वे वे २२४, २२६ मीर १६१३) गीर है।
           १४११ मीपाक्रवरिक्रा****। वन वे २६ । या ११३/x+ इका वादा-मृत्यो क्या | विवन-वरित्र |
 र कान ×ाप्त कर्लाचे १ ३१।पूर्णी वे से १ १। घणनार।
           विकेष---वर्गीनम्बनी बीनाएी तरेवा वालॉको बहुने विकासकर विजेशकरी। शक्या 🖹 वन्तिर ने विधान-
  नाम किना ३
           २४१२ प्रतिस्रं २ । यस सं ४२ । के सम्बद्धाः
           २४१३ मदिस् ३। यत्र ४ ४२। के यान सं १६९६ रोप कुरी दावे वं
  क्यार ।
            १४१४ प्रतिका धायन के ६१। में काल वे १६३ अल्कुल मुक्ते ६३ वे वरा में
  वर्गहार ।
           मध्देशः प्रति स् अन्य वं अर्थके करूत वं १६३४ काशून बुदी ११। वे मं १११ व
  मन्दार ।
           निकेर--- महालाम नारडीवाल वे प्रतिनिधि करवानी थी ।
           र्मप्रदेव स्रति सं•६। पन सं २६। के समा×। वे सं ६७४ । का जनार ।
```

व्धर्फ. प्रक्रियों÷ कायन संवद्वाति करूत और १९३६ विशेष अध्यास करूता।

२४१८ श्रीपालचरित्र । पृत्र स्० २४ | आ० ११६ × दश्च । भाषा- हिन्दी | विषय-चरित्र । र० काल × । से० काल × । सपूर्ण । वे० स० ६७५ |

विशोप—२४ से भागे पत्र नहीं हैं। दो प्रतियो का मिश्रण हैं। २४१६ प्रति स०२। पत्र स०३६। ले० काल 🗴। वे० स० ८१। स भण्डार।

विशेष-कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

२४२० प्रति स०३। पत्र स०३४। ने० काल 🗙 । ग्रपूर्श । वे० स० ६८४। च भण्डार ।

२४२१ श्रेणिकचरित्र । पत्र स० २७ से ४८ । आ० १० ४६३ इख । भाषा-प्राकृत । विषय-चरित्र । र० काल 🗴 । ने० काल 🗴 । मपूर्ण । वे० स० ७३२ । क्टु भुण्डार ।

२४२२ श्रेशिकचरित्र — भू० सक्तकोित्ति । पत्र स० ४६ । मा० ११×४ इखा भाषा-सस्कृत । विषय-वरित्र । र० काल × । ले० काल × । मपूर्ण । वै० स०, ३४६ । च भण्डार ।

२४२३ प्रति स० २ । पत्र स० १०७ । ले० काल स० १८३७ कालिक सुदी ा मपूर्ण । वे० स० २७ । छ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है।

२४२४ प्रति स० ३। पत्र स० ७०। ले० काल ४। वे० स० २०। छ भण्डार।

विशेष--दो प्रतियों को मिलाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है।

२४२४ प्रति स० ४। पत्र स० ६१। ले० काल स० १६१६। वे॰ स० २६। छ भण्डार।

२४२६. श्रेणिक्चृरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ८४ । मा० १२४४ इच । माप्रा-सस्कत । विषय-चरित्र । र० काल ४ । ले० काल स० १८०१ ज्येष्ठ बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २४६ । स्रा स्पटार ।

विशेष- _ टोंकृ में प्रतितिपि हुई थी । इसका दूसरा नाम मृतिख्यत् परानाम्पुरास् भी है

२४२७ प्रति स०२ । पत्र सं० ११६ । ले० काल स्० १७०० चैत्र बुदी १४ । वे० स० १६४ । स

मण्डार ।

२४२८ प्रिति स० ३ । पृत्र स० १४८ । त्रे० काल स० १६२६ । त्रे० स० १०४ । घ भण्डार । २४२६ प्रित स० ४ । पृत्र सं० १३१ । त्रे० काल सं० १८०१ । त्रे० सं० ७३४ । इ भण्डार । विशेष—महात्मा फकीरदास ने लखगौती में प्रतिलिप की यी ।

२४२० प्रति स० ४ । पत्र स० १४६ नि० काल् स० १८६४ माप्राठ सुदी, १० । वे० स० ३४२ । च

२४३१. प्रति सं०६। पत्र सं०७५। ले० काल स० १८६१ धावरण बुदी १। वे० स० ३५३ फ भण्डार।

```
मन्द्राष्ट्र दक्षितः 🕽
   ₹•₹ ]
               मधक्यः प्रतिपृत्रक विष्युव पृष्ट हुई सुन्ति मानुन्ति हुनुष्ठ प्रत्योग द्वरी का निर्द्ध करशा ख्र
    मध्डार (
               क्षिक् - वाक्षराज भीमा ने समपुर में मुसिसिरि की की ।
               २४.० इ. मि. हो • प्राचन व देश है। है प्राचन देश नाव दूरी २ । "वं ६ व | इ
- मुखार ।
               रभ ६८ वृद्धि द्वापन में बधा में माम सं १७१ भीय मुद्दीप कि सं १७४। म
    मेकार ।
               निकेच-प्रद्रका लाइन है। हिन्दीर से प्रतिनिति हुई थी। सन्तिन २ वर्षों में पर्नप्रदृष्टि वर्सन है निकास
    नैवनपास सं - १५६९ मासीम पूरी १३ हूं। सुधिनेट में प्रस्ती बहुएस ने फन्दनीराथ के पासार्थ दिया गा ।
               २५१० प्रतिकृत् ।। यस वं दृष्टाणे काम वं १ २ वायम पुरी २। वे स २१ । स
    वच्छार ।
               निकेर-भी प्रविशे का निभाग है।
               विक्रेप—प्रकारिक का भागार में पुत्रहिमां (वृर्ष दृश्क ४१) य मण्यार ने दर्गमनि
    (दे इट १५) कुममार में तीप प्रतिमां (दे संकेश्युक्त कर ) ब्रुट्स भीर ब पधार ने एक एर्प
    मेरि (के वे २२६, २२६ सीट १९१६) और है।
               पुप्रदेश जीपासचरिकाण्याना वस सं २६ । शा. १६६× १सा । मामा-सिनी कर । विश्व-वरिक ।
    र कल ×ार्थ कल से दिशा पूर्णी के से १ का वालकार।
               विकेत---वर्गीकक्ती धोवादी तकेता वास्तिके बाुने सिक्ताकर विजेपानची शांक्य के नन्तिर में विधान
    मान क्लि।
               २५४२६ ब्रीटर्स २ | पन वं ४२ | वे कल्ट∠ | वे वं ५ । क वन्पर।
               % अरध्य अविद्याल का एक का अरहा के मनत वा १८२६ वीक पूरी हैं । वि
                                                                                            । ग
    WHIC!
               देश्रीम अशिक्षा प्राप्ताची प्राप्त काला वी रुक्त काम्बस्य पुरी देश के वी निर्मा
    WEST I
               के प्रदेशक सिंह सुंक्ष । यह और अपने के सम्बद्ध के देश के अपने के किए हैं के किए हैं के किए हैं के किए हैं के कि
     मच्चार ।
               विकेष--- बनामान् पारशीयाम् वे प्रतिकिपि ऋरमध्ये वी ।
               २४१६ मरिया ६।परथं २३।के बाल X | वे सं ५७४ | का नवार।
               २५१७. मिरियों का प्रार्थ देश कि साम वी १६३६ कि वी ४४ विकास समार्थ
```

काल्य एवं इरित्र

२४१८ श्रीपालचरित्र । पृत्र सुं० २४। आ० ११६×८ दश्च । भाषा-हिदी । विषय-चरित्र । ए० काल × । सपूर्ण । वे० स० ६७५ ।

विशेष-- २४ से भागे पत्र नहीं हैं । दो प्रतियो का मिश्रण हैं ।

२४१६ प्रति स० २ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० द१ । वा भण्डार ।

विशेय-कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

२४२०. प्रति स० ३ । पत्र स० ३४ । ने० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० स० ६८४ । च मण्डार ।

२४२१ श्रेगिकच्रित्रु । पत्र स० २७ से ४८। मा० १०×४३ इख । भाषा-प्राकृत । विषय-वरित्र । र० काल × । ते० काल × । मपूर्ण । वे० स० ७३२ । इ भुण्डार ।

२४२२ श्रेणिकच्रित्र— भृ० सक्तकोित्ति । पृत्र् स० ४६ । भा० ११×५ इखा भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल् × । प्रपूर्ण । वे० स० ३५६ । च भण्डार ।

२४२३ प्रति स०२। पत्र स०१०७। ले॰ काल स०१८३७ कार्त्तिक सुदी । मपूर्ण। वे० स०२७। छ भण्डार।

विशेष—दो प्रतियो का मिश्रण है।

२४२४ प्रतिस०३। पत्र स०७०। ले० काल ४। वे० स०२०। छ् भण्डार।

विशेष--दो प्रतियों को मिलाकर ग्रन्य पूरा किया गया है।

२४२४ प्रति स० ४ । पत्र स० ५१ । ले० काल स० १८१८ । वे० स० २६ । छ भण्डार ।

२४२६ अंगिकचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ८४ । मा० १२४ इन । मापा, सस्कत । विषय-चरित्र । र० काल ४ । ते० काल स० १८०१ ज्येष्ठ बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २४६ । व्य भण्डार ।

विशेष - टोंक में प्रतिलिप हुई थी। इसका दूसरा नाम मित्र प्रतामपुरुगण भी है

२४२७ प्रति स०२ | पत्र स० ११६ | कृ० काल स० १७०५ चैत्र बुदी १४ । वे० स० १६४ । स्व

मण्डार ।

२४२६ प्रति स० ३ । पत्र स० १४६ । ते० काल सं० १६२६ । ते० स० १०४ । घ मण्डार । २४२६ प्रति स० ४ । पत्र स० १३१ | ते० काल स० १८०१ । ते० सं० ७३५ । इ मण्डार ।

विशेष-मृहात्मा फर्नारदास, ने लुखस्पौती, में प्रतिलिप की थी।

२४३० प्रति सु ४। पत्र सु १४६ ले काल् स १६६४ माया ह सुदी, १०। वे० स० ३४२। च

२४३१. प्रति सं०६। पत्र सं०७५। ले० काल स०१८६१ धावरा बुदी १। वे० सं०३५३ 🔊

मण्डार ।

मण्डार ।

विकेश---वक्पूर में जवनचेर शुद्धाहिया ने प्रतिकिति की वी ।

१४२० लेकिक वरिक — सहारक विकासकीर्ति । यस वं १२६ । बा १ ×४६ दंग । कसा-विक्री विका-वरिकार काम वं १०२ कामुक्ते युक्ती था से काम वं १२ ३ योग गुरी १। पूर्व । दे वं ४२० । कामपार । '

विकेय-पानकार परिवर्त-

विचानीति क्यारक काल स्तु वाचा रोगी परवाल । वेषण वकारान गीव 'काइल पुरो वाले पु वर्गीय ।। पुरागा स्त्र पुराज कर्म, लागी जवल पुरा थे। गीव पारतों है पुरिग्य, विचानकीरि क्यारक वाल ।। वर्षु करायों में पुरिग्योंने पारवालकार होगो विचारित । विचारीले में पुरिग्योंने पारवालकार होगो विचारित । विचारीले में प्रतिकृतिक पुराल भी में पार वेचा वहु वाल । वर्षकार क्यारक मांच अंत्रमा चीर प्रपानी विचार ।

दभुदेदे प्रतिस्**रे देः यस सं ७६। के सम्म** तं देनम्य लोड पुरी ६ । वे सं ६। त

लकार । सिक्टेस—जहारामा को सर्वोत्त्वाची के बालनकाव में बकरूर में वयारिएन शीला में सामिनाद शैलालन में प्रतिकृति हो थी । अंक्षरान मोमणे सोक्या ने राज्य विकासन्त सीमियों के शैलालन में श्वरूपा ।

२५5५ प्रतिस्त के कृत्यार्थ के के बस्त ×ावे थे १६३। का वस्तरा

१४११ स्वीवकवरिक्रमाना निवर्ष १११ था ११४६६ १४। जल-निवरी विका-

वरित्र हर कार ×ा के कार ×ा बन्दी। में चंद्रशाक कथार। कश्चक स्ति संद्रुपार संदेश के दश के कथा×ास्त्रकी है संधाराध कथार।

१४१-६० संश्वक्षकामाचरित्र (संग्वनाम परित्र) तैवयामा । यत्र थं ६९३ मा १ ४४ (च । क्रम-चरम सं। दिवर-मीरिः (र कमा ४ । तै क्रम ४ । तै वं ६६४ । च नमारः।

१४६८: सम्प्रत्यादेश-दीरकविशय वं १ वे १ श्वा १ XV इया घरा-दियो। विका-तीरा ११ याचा वं १७१४ वातीय पुरी १ । विकाय वं १७१७ वर्धीय पुरी १। वसूर्य । वे व वर्षा अस्त्राता

विश्वेष-सारम्य के १७ वस नहीं हैं।

हाल पनता नीसमा गुरुवानी-

सवत् वेद युग जागोय पुनि यानि वर्ष उदार ॥ मुगुग् नर मौमनी० ॥ मेदपाड माहे लिख्यो विजय दशमि दिन सार ॥ ४ ॥ सुगुग्। गढ जालोरइ पुग तस्यु जिसीडए प्रधिकार । म्रमृत निधि योगइ सही अधोदमी दिनमार ॥ ६ ॥ मु० भाइय माम मिल्मा घणी पूरण वरया विचार। भविव नर सांभलो पचतालीस ढाले मही गाया सातसईसार ॥ ७ ॥ सु॰ सूबइ गच्छ सायक यनी बीर मीह जे गान। गुरु भाभगा थूत वेचली थिवर गुले चीमाल ।। = ।। गु॰ समरयिषवर महा मुनी मुदर रूप उदार । तत विष भाव धरी भएड सुपुर तराई माधार ।। ह ।। यु० उछी प्रधिवयो कछो यवि चातुरीय विलोल। मिय्या दु फूत ते होग्यो जिन सालइ चउमाल ॥ १० ॥ मु० सजन जन नर नारि जे नभली लहइ उल्हास। नरनारी धर्मातिमा पडित म करो का हास ।। ११ ।। सु० दुरजन नइ न मुहावई नहीं प्रावद कहे दाय। माली चदन नादरर ममुचितिहा चिन जाय ॥ १२ ॥ सु॰ प्यारो सागइ संतनइ पामर चित मतोष। ढाल अली २ समली चिते थी ढाल रोप ॥ १२ ॥ सु० श्री गच्छ नायक तेजसी जब लग प्रतपी भागा। हीर पुनि भासीस घड हो ज्यो कोडि क्ल्याल ॥ १४ ॥ मु० संग्स ढाल सरसी क्या सरसी सह अधिकार। होर मृनि गुरु नाम घी भारांद हरप उदार ॥ १५ ॥ सु॰

इति श्री ढाल सागरदत्त चरिष सपूर्यों। सर्व गाया ७१० सवत् १७२७ वर्षे कार्त्तिक बुदी १ दिने सोम-षासरे लिंखत श्री ध यजी ऋषि श्री केववजी तत् दिष्य प्रवर पडित पूज्य ऋषि श्री ५ मामाजातदतेवासी लिपिकृत पुनिसावलं ग्रात्मार्थे। जीषपुरमध्ये। गुभै भवतु ।

२४३६ मिरिपात्तचरिय—प० नरसेन। पत्र स० ४७। मा० ६३×४६ उचा भाषा-मपभ शा विषय-राजा श्रीपाल का जीवन वर्शान। र० माल ४। ले० काल स० १६१५ कार्त्तिक सुदी ६ । पूर्णा थे० स० ४१०। ज भण्डार।

विशेष---प्रन्तिम पत्र जीर्शा है। तक्षकगढ नगर के ग्रादिनाथ जैत्यालय मे प्रतिलिपि हुई थी।

208]

विनेश-अवपूर में उदमबंद बुद्दादिया ने प्रतिकिति गी थी ।

१४१२ मेबिकवरित—सहारक निजवकीर्ति। पण सं १२६। जा १ ×४६ रंप। वारा-सिर्वे। विवय-परित। र काल सं १४२ काहुक दुवी ७। ते काल सं १६ १ वीप बुधी ३। दुर्वा है से ४१०। सामकारा

विवेष-सम्बदार वरिवय-

विन्नमीति क्ट्रास्त साम इस समा दीयो परमाछ । एंस्ट क्याएम पीच काइक दुरी करे तु वर्गात ।। पुम्पार का पुरस्त पी साम इस तोत पुनर । वीच पारणी हे पुनियमित कामस्वापु दोश विद्यान ।। एतुं पारणी की पुनियमित कामस्वापु दोश विद्यान । विव्यवानि की पुनियमित कामस्वापु दोश विद्यान । विव्यवानि विद्यान । विव्यवानि विद्यान । विव्यवानि विद्यान । स्वर्णक क्ष्रास्त नाम क्रम्या पीर प्रस्ता पारणक ।।

रप्रदेश प्रतिस्थित है। पण से अद्देशिय कामा संहत्याहरू मोहानुसार (वे सं है। सं

भागर । दिवेश—जहारायां यो वर्षांक्त्री के बातासाल में सम्बुद में व्याहित्य बीचा के प्राहित्य केवान केवान हैं प्रतिकृति हो भी । बोह्यराज बीचाँ पास्त्र के रूप विकास वीचाँची के केवान में पहला !

१४३४ प्रतिस्त है। यह से वह । से काम X । में से १६६ । सा क्यार ।

१५५७, ब्रेसिक्यपित्रमानाःःः त्य वं ११। या ११४६६ इत् । सना-हिन्दी। विकासिक्तः । स्ट्रिकार स्वस्त्र । के कार्य \times । बहुर्त्त । वे चं चन्नार ।

रेश्चक मित्र सं राज्य सं वक्षेत्र । के काम 🗶 । बहुर्जी के सं क्षेत्र । अन्यार ।

१४१७. सम्प्रसिक्तास्थरित (संस्थानात्र परित्र) तैत्रपाक्षः। पर सं ६२ । सार १ ४४ (४। समा-सन्त्र सः। तिषत-परित्र । र कस ४। ते कात ४। ते सं ३६६। च थणारः।

१४१८: सामारक्षणीय-शिक्षिः । वर्षः १ वेतः । याः १ ४४ एवः। नामानीक्षीः विक्य-परिचार कार्यः (७१४ प्रमाण कृषीः १ विकासम् १७१७ कार्यः कृषीः १। व्यान्तः । वर्षः । व्याक्षणाः

रिक्रोब-साराम के १७ पत नहीं **हैं** 1

विशेष-महात्मा राधाकृष्णा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

२४४७ प्रति स० ४ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १८१६ । वे० स० ३२ । छ भण्डार ।

विशेष-कही कही सस्कृत मे कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं।

२४४८ प्रति स० ४। पत्र स० ३४। ले० काल स० १८४६ ज्येष्ठ बुदी ५। वे० स० ३४। छ भण्डार। विशेष-सागानेर में सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी।

२४४६ प्रति स०६। पत्र स०४४। ले० काल स० १६२६ पौप बुदी ऽऽ। वे० स० ६६। ह्य भण्डार।

विशेष--प० रामचन्द्रजी के शिष्य सेवकराम ने जयपूर मे प्रतिलिपि की थी।

इनके म्रतिरिक्त आ, इट, इट्, का तथा व्य भण्डार मे एक एक प्रति (वै० स० ८६५, ३३, २, ३३४) भीर हैं।

२४४० सुकुमालचरित्रभाषा—प० नाथूलाल दोसी। प्रत्र स० १४३ ३ मा० १२३×४३ इख । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र० काल स० १६१८ सावन सुदी ७ । ले० काल स० १६३७ चैत्र मुदी १४। पूर्ण । वे० स० ८०७ । क भण्डार ।

विशेप---प्रारम्भ में हिन्दी पद्य मे है इसके वाद वचिनका मे हैं।

२४४१ प्रति स० २ । पत्र स० ६५ । ले० काल स० १६६० । वे० स० ६६१ । ह भण्डार ।

२४४२ प्रति स०३। पत्र स०६२। ले० काल ×। वे० स० द६४। क मण्डार।

२४४२ सुकुमालचरित्र—हरचद गगवाल । पत्र स० १४३ । मा० ११×५ इख । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-चरित्र । र० काल स० १६१८ । ले० काल स० १६२६ कार्तिक सुदी १५ । पूर्ण । वे० स० ७२० । च भण्डार

२४४४ प्रति स० २ । पत्र स० १७४ । ले० काल स० १६३० । वे० स० ७२१ । च भण्डार । २४४४ सुकुमालचरित्र । पत्र स० ३६ । भा० ७४५ इखा । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । र०

काल 🗶 । ले॰ काल स॰ १९३३ । पूर्ण । वै॰ स॰ ६६२ । रू भण्हार ।

विशेष—फतेहलाल भावसा ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थो। प्रथम २१ पत्रो में तत्वार्थसूत्र है।

२४४६ प्रति स० २। पत्र सं० ६० से ७६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० स० ५६०। ड भण्डार।

२४४७ सुखनिधान—कवि जगन्नाथ। पत्र स० ५१। आ० ११३×५५ इख्र। भाषा—सस्कृत।

विषय-चरित्र। र० काल स० १७०० आसोज सुदी १०। ले० काल स० १७१४ । पूर्ण। वे० स० १६६। अ

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

भण्डार ।

२०६] [स्राम्य सर्व परिष

भेक्षे सीतापरिक—कविरासणस्य (बाक्कः)। यस्यं १ ादा १२८४ रख। वस्त-भिनो पर। नियम–परितार यज्ञासं १७१३ वंततिर तुरो ४। के वस्त ४। दुर्सा वे संस्था

विकेच---रावयम्य रुजि बालक के बाल ने विकास से ।

प्रथर मित स॰ २ । पत्र श्रंप । के प्रता×ावे सं शरास अच्छार ।

२४४० प्रतिसः ३ । पणसं १६६। से पालसं १००४ प्रतिक पुरी दा वे वं ७१८। य क्षमारः

निर्देश-अति समित्व है।

२४४३ सुक्रमकचरिक —सोपर। पर सं ६२ । सा १ ×४ है इस । बाय⊢सरस स । लिस-इफाल प्रति ना जीवन वर्तन । रूकल × । ते कला × । सुर्खाई । वे २ < (कल्पार।

वियेव—अति अल्बीव 🛊 ।

ैप्रेप्रेटं सुकृतसम्परिक—्य सम्बद्धार्थित। एव से प्रश्नाया १ $\times V_{\tau}^2$ रखा यहान-संस् $^{-1}$ विका-परिता $^{-1}$ राज्ञ \times 1 से पाज से १९७० कार्तिक पूरी । पूर्णी में से १४। बर कमारी

प्रेमत् १६० वाके १६२० जन्मजीय व्यान्तान्यक्यस्तातिकामे बुद्धांचे वहुन्त तियो वोस्तर्यः
वान्द्रदान्ये वीपंडावरीयमध्ये वीनुकार्य वस्त्रवारमध्ये प्रत्यावीयम् वीनुकार्यस्त्रवारमध्ये व्यान्तार्यस्त्रवारम् ।
वान्द्र्यं वीकुम्परीक्ष्मा व्याप्तृं व वीजिनार्यमध्ये वार्ष्युं व वीज्यस्त्रित्रेया व्याप्त्रवार्यमध्ये विक्रमार्यक्षांच्याः वार्ष्युं व वीज्यस्त्रवार्यक्षांच्याः वार्ष्युं व वीज्यस्त्रवार्यक्षांच्याः वार्ष्युं व वीजिनार्यक्षांच्याः वार्ष्युं विज्ञान्यक्षांच्याः वार्ष्यक्षांच्याः विक्रमार्यक्षांच्याः वार्ष्यक्षांच्याः विक्रमार्थकः वीक्षमार्थकः वीक्षमार्थकः व्याप्त्रवार्यक्षाः विक्रमार्थकः विक्रम्यकः वीक्षमार्थकः विक्रम्यकः विक्रम्यविक्रम्यविक्रम्यकः विक्रम्यकः वि

क्षप्रध्यः प्रशिक्षः द्वायवर्षे प्रवाणे कलावे देक्या विशेष्ट । स्वयंक्रारः । २५४६ प्रशिक्षः देवत्र वे ४६।के सम्बर्धाः ६४० व्यक्षः प्रधारः । वे वं ४१६। व सम्बर्गः २४६६ सुदर्शनचरित्र—सुमुत्त विद्यानंदि । पत्र स० २७ से ३६ । ग्रा० १२६४६ दक्ष । भाषा-संस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ८६३ । ड भण्डार ।

२४७० प्रति सं० २ । पत्र स० २१८ । ले० काल स० १८१८ । वे० स० ४१३ । च भण्डार । २४७१ प्रति स० ३ । पत्र स० ११ । ले० काल 🗴 । मपूर्ण । वे० स० ४१४ । च भण्डार ।

२४७२. प्रति स० ४। पत्र स० ७७। ले० काल स० १६६४ भादवा बुदी ११। वे० स० ४८। छ् भण्डार।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

भय सवत्सरेति श्रीपनृति (श्री नृपति) विक्रमादित्यराज्ये गतान्द सवत् १६६५ वर्षे भादौ वृदि ११ ग्रह-वासरे कृष्णासे भर्ष लापुरदुर्ष गुमस्याने भश्चरितगजपितनरपितराजश्य मुद्राधिपितश्रीमन्साहिसलेमराज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमत् काष्ठामघे माथुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भट्टारक श्रीमलयकीर्तिदेवास्तरपट्टे श्रीगुणभद्रदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री भानुकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री कुमारथेिणस्तदाम्नाये इक्ष्वाकवशे जैसवाला वये ठाकुरािणगोश्रे पालव मुभस्याने जिनवैत्यालये मावार्यगुणकीर्तिना पठनार्थ लिखित।

२४७३ प्रति स० ४। पत्र स० ७७ । ले० काल स० १८६३ वैशाल बुदो ४। वे० म० ३। म भण्डार।

विशेष—चित्रकूटगढ़ में राजाधिराज रागा श्री उदयसिंहजी के शासनकाल मे पार्श्वनाथ चैत्यालय मे भ० जिनचन्द्रदेव प्रमाचन्द्रदेव प्रादि शिष्यों ने प्रतिलिपि की । प्रशस्ति ग्रपूर्ण है।

२४७४ प्रति स०६। पत्र स० ४५। ले० काल ४। वे० स० २१३६। ट भण्डार।

२४७४ सुदर्शनचरित्र । पत्र स०४ से ४६। आ०११ई×४६ इख्रा भाषा-सस्कृत । विषय-विरित्र । र० काल × । ते० काल × । मपूर्शी । वे० स०१६६८ । आ भण्डार ।

> २४७६ प्रति स०२। पत्र स०३ मे ४०। ब्लेकाल 🗶 । म्रपूर्ण। वे० स० १६८५। स्त्र भण्डार। विशेष—पत्र स०१, २, ६ तथा ४० से म्रागे के पत्र नहीं हैं।

२४७७ प्रति स० ३। पत्र स० ३१। ले० काल ४। प्रपूर्ण । वे० म० ८४६। इट भण्डार।

२४७८ सुदर्शनचरित्र । पत्र स० ५४ । मा० १३४८ इक्का | भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र । र० काल ४ । ते० काल ४] पूर्ण । वे० स० १६० । छु भण्डार ।

२४७६. सुभौमचरित्र—भ० रतनचन्द्। पत्र स० ३७ । आ० ८३४४ इख्र। भाषा-सस्कृत। विषय-सुभौम चक्रवित का जीवन चरित्र। र० काल स० १६८३ भादवा सुदी ४। ले० काल स० १८४० । पूर्ण। वै० स० ४४। छ भण्डार।

विशेष—विवुध तेजपाल की सहायता से हैमराज पाटनी के लिये ग्रन्थ रचा गया । पं० सवाईराम के शिष्प नौनदराम के पठनार्थ गगाविष्णु ने प्रतिलिपि की थीं । हेमराज व भ० रतनच द्र का पूर्ण परिचय दिया हुग्ना है ।

```
् भारत वर्ग भीत
२०८ |
          वंदर् १७१४ प्रात्तुण गुरी १: गोजलार: (गोजनासरः) नाने भी धारीमार वेदनावने विकित्तं र
बामोदरेल ।
          २४४६. मृति सं० २ । यक्ष वं ६१ । के कम्ब वं १४६ कॉलिक वृत्ती १६ । वे १६६ । व
WEST !
          २४४६. सुवर्शनवरिश-भ सक्तकोति। वत वं ६ ! मा ११×४३ वता नना-संसदः।
दिवर-परिच। र्रजान ×। ने शास सं १७११ | धपूर्ता से सं । द्वा सम्प्रार ।
          विश्वेष---वृद्धं दः तक एव नहीं हैं।
          प्रधरित विभग प्रकार है---
          संबद्ध १७७३ वर्षे नाव कुल्बेकाममधंतीये पुरस्ताकारिक निवासकारिकोर सुदर्शनकीर्य क्षेत्रक नामको
तुन कुमल् ।
          २४६ मितिस २ । पत्र संदेशको काल × । बपुर्स (वे संप्रशास कनार।
          रेप्रेरी प्रतिसः ३।पत्र सं २ के ४१। में बास × । क्रस्ती। के सं ४१६। वा समार्थः
          1944 ६ प्रतिस धोषपर्वदाके कला×।वै वं ४६। द्वांकसार।
          २४६३ श्रद्धानचरित्र-मद्भानेमिद्दा (यह व ६६) वा ११×६ इस । प्राप्त-संस्ट्रा । विवस-
परिकार कला×। ने नला×। पूर्णा वे सं १९। का वस्तार।
          श्रप्रध्ये प्रतिसः व । पन सः ६६ । ते नामा ×ावे सं ४ । सर सम्बार ।
          विक्रीय - सम्रतिय बपूर्त है। यह ६६ वे १ वक ग्रांग निवे हर है।
          म्प्रदेश, प्रति संच दे । वस सं १ । वे नाम सं १६४२ ब्याप पूरी ११ । वे सं १९८ । व
प्रकार I
          रिकेर-साह बनोरक के वर्षपता के अवितिति शर्कों की ।
          होके- सं १६२० वे बनाइ नहीं दे भी नं दशकीरात के प्रधानों की लगा।
          क्प्रदर्शिक्ष प्राप्त से वे अपे क्ष्म से इ.व. वेच बुरो के से इ.व.स
क्रमार ।
```

दिकेट—प्रथम ने पनने किया नेवक्याय के कामणे निवारी | अपूर्व अस्ति सं हा पत्र सं देश कि पान अस्ति सं देश हो ब्याबनार | अप्रोटः असि सः का पत्र सं स्टोर ने पान सः देश प्रयोग मुखे हो के सं देशका हो

ि तेत —रिक्स प्रवर्शित विस्तृत है ।

बन्दार ।

२४६६ सुद्रशतचरित्र-सुसुद्ध विद्यानंदि । पत्र स० २७ मे ३६ । ग्रा० १२५४६ उद्घ । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ८६३ । छ भण्डार ।

> २४७० प्रति स० २। पत्र स० २१८। ते० काल स० १८१८। वे० स० ४१३। च भण्डार। २४७१ प्रति स० ३। पत्र स० ११। ते० काल 🔀 । म्रपूर्या। वे० स० ४१४। च भण्डार।

२४७२ प्रति स०४। पत्र स०७७। ले० काल स०१६६४ मादवा बुदी ११। वे० स० ४८। छ

विशेप-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

भ्रय सवत्सरेति श्रीपनृति (श्री नृपति) विक्रमादित्यराज्ये गताव्द सवत् १६६५ वर्षे भादौँ वृदि ११ ग्रह-वासरे कृष्णाक्षे ग्रग्र लापुरदुर्ग् गुभस्याने भ्रश्चातिगजपतिनरपतिराजयय मुद्राधिपतिश्रीमन्साहिसलेमराज्यप्रवर्त्तमाने श्रीमत् काष्ठामघे मायुरगच्छे पुष्करगग्री लोहाचार्यान्वये भट्टारक श्रीमलयकोत्तिदेवास्तत्पट्टे श्रीगुण्भद्रदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री भानुकोत्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री कुमारश्रेणिस्तदाम्नाये इस्वाकवशे जैसवालान्वये ठाकुराणिगोत्रे पालव सुभस्थाने जिनवैत्यालये भ्रावार्यग्रुणुकीत्तिना पठनार्थं लिखित ।

२४७३ प्रति स० ४। पत्र सं० ७७ । ले० काल स० १८६३ वैशाख बुदो ४। वे० स० ३। मा भण्डार।

विशेष—चित्रकूटगढ मे राजाधिराज राणा श्री उदयसिंहजी के शासनकाल मे पार्श्वनाथ चैत्यालम मे भ० जिनचन्द्रदेव प्रमाचन्द्रदेव प्रादि शिष्यो ने प्रतिलिपि की । प्रशस्ति मपूर्ण है ।

२४७४ प्रति स०६। पत्र स० ४५। ले० काल ×। वे० स० २१३६। ट भण्डार।

२४७४ सुद्रशतचरित्र । पत्र स०४ से ५६। मा०११३४५ दुख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-वरित्र । र० काल × । ने० काल × । मपूर्ण । वे० स०१६६८ । स्थ्र भण्डार ।

> २४७६ प्रति स०२ । पत्र स०३ से ४०। ०ले काल ४ । झपूर्ण। वे० स० १६ ८ ४ । इस भण्डार। विशेष—पत्र स०१, २,६ तथा ४० से झागे के पत्र नहीं हैं।

२४७७ प्रति स० ३। पत्र स० ३१। ले० काल 🗴। मपूर्ण। वे० स० ८५६। हा मण्डार।

२४८८ सुदर्शनचरित्र । पत्र स० ५४ । मा० १३४८ डक्क । मापा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । रि॰ काल ४ । ले॰ काल ४ । पूर्ण । वै॰ स० १६० । छ भण्डार ।

२४७६. धुमौमचरित्र—भ० रतनचन्द् । पत्र स० ३७ । आ० ८३×४ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभीम चक्रवित का जीवन चरित्र । र० काल स० १६८३ मादवा मुदी ४ । ते० काल स० १८४० । पूर्ण । वै० स० ५५ । इर मण्डार ।

विशेष—विबुध तेजपाल की सहायता से हेमराज पाटनी के लिये ग्रन्य रचा गया । पं॰ सवाईराम के शिष्प नौनदराम के पठनार्घ गगाविष्णु ने प्रतिलिपि की थाँ । हेमराज व भ॰ रतनच द्र का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।



काव्य एव चरित्र

२४६१ प्रति सं०११। पत्र स०१०१। से० काल स० १६२६ मगसिर सुदी ४। वे० स०३४७। व मण्डार।

विशेष---व बालू लोह्शल्या सेठी गोत्र वाले ने प्रतिलिपि कराई।

२४६२ प्रति स०१२। पत्र स०६२। ले० काल स०१६७४। वे० स०५१२। व्य भण्डार।

२४६३ प्रति स० १३ | पत्र स० २ से १०५ । ले० काल म० १६८८ माघ सुदी १२ । भपूर्ण । ने० म॰ २१४१ । ट मण्डार ।

विशेष — पत्र १, ७३, व १०३ नही हैं लेखक प्रशस्ति वडी है ।

इनके मतिरिक्त मा और व्य भण्डार में एक एक प्रति (वे० स० १७७ तथा ४७३) ग्रीर है।

२४६४ हनुमद्यरित्र—ब्रह्म रायमञ्ज । पत्र स० ३६ । आ० १२× ६ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-वरित्र । र० काल स० १६१६ बैशाख बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०१ । स्त्र मण्डार ।

२४६४ प्रति स०२। पत्र स० ५१। ले० काल स० १८२४। वे० सं० २४२। ख मण्डार।

२४६६ प्रति सः ३। पत्र सः ७५। ले॰ काल सः १८८३ सावरण बुदी १। वै॰ सः १७। रा

विशेष-साह कालूराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४६७ प्रति स०४। पत्र स० ५१। ले० काल स०१८८३ झासोज सुदी १०। वे० स० ६०२। ऋ मण्डार।

विशेप—स॰ १९५६ मगसिर बुदी १ शनिवार को सुवालालजी वर्की बालो के घंडी पर सँघीजी के मन्दिर मे यह ग्रन्थ मेंट किया गया।

२४६८ प्रति स० ४। पत्र स० ३०। ले० काल स० १७६१ कार्त्तिक सुदी ११। वे० स० ६०३। हा

विशेष-वनपुर ग्राम मे घासीराम ने प्रतिलिपि की थी।

२४६६ प्रति स०६। पत्र स०४०। ले० काल ×। वे० स०१६६। छ भण्डार। २४०० प्रति स०७। पत्र स०६४। ले० काल ×। मपूर्ण। वे० स०१४१। मा भण्डार। विशेष—मन्तिम पत्र नहीं है।

२५०१ हाराविलि — महामहोपाध्याय पुरुपोत्तमदेव । विषय स० १३। घा०११४५ इख्र । भाषा — संस्कृत । विषय – काव्य । र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० स० ८५३। क भण्डार ।

२४०२ होलीरेगुकाचरित्र—प० जिन्दास । पत्र स० ५६ । आ० ११×५ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-चरित्र । र० काल स० १६०८ । ले० काल स० १६०८ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १५ । स्त्र मण्डार ।

विशेष--रचनाकाल के समय की ही प्राचीन प्रति है ग्रत महत्वपूर्ण है। लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

स्मीरः भीनते वाधिवासाय । वेचन् १६ व वर्षे क्षेत्रपाते कुळाले व्यक्तीवित्ती कुळालो इस्तास्य से स्राप्ताय स्थापनार से स्राप्ताय स्थापनार से स्थापनार वेद्यानार्थिय वाधिवासाय विद्यालय से स्थापनार स्यापनार स्थापनार स्थापन स्थापनार स्थापन स्थ

२.६. १६ स. २ | वस संद | कि नक्त X | वे ६१ | का क्यार ; १.४. ४ प्रतिस १ | वस संद४ | के कमार्च १७२६ मान युक्त क | वे सं ४६९ | व्याप्त क्यार |

दिवेद-—ब्हू प्रति पं राजवाह के हारा कृष्णकारी (शुनी) वें स्याध्यार्थ पंत्रपद्ध सेनालय के लिखी एई मी। श्री विजयान राजुनेनीप्यक के समीच नवलबपुर का रहते वाला था। यसने केरपुर के सानिताल सेनालय के सं १६ व वें बाद कन की राजवा की ती।

> २.४ ४ प्रति संक्षेत्रक ते वसे ६२ । ते बाल ४ । अपूर्ण (वे दं २१७१ । ट बम्बार | विकेर ---वर्ति प्राचीन है ।



कथा-साहित्य

, २४८६ श्राकलकदेवकथा '। पत्र स०४। भा० १०४४३ इद्य । भाषा-मस्कृत । विषय-कथा । रे वाल ४। ने काल ४। भपूर्ण । वे० स० २०५६। ट भण्डार ।

२४०७ स्रज्ञ्यनितिमुष्टिकाविधानत्रतकथा । पत्र म०६। मा०२२४६ इञ्च । भाषा-मस्तृत । विषय-कथा । र० काल × । ते० काल × । मपूर्ण । वै० स०१८३४ । ट भण्डार ।

२४८८ छाठारहताते की कथा-ऋषि लालचन्छ । पत्र स०४२। मा०१०८५ इछ । भाषा-हिन्दी । विषय-पत्रा । र० काल स०१८०४ माह सुदी ४ । लै० काल स०१८८३ कार्तिक गुदी ६ । वे० स० ६८८ । प्रभण्डार ।

विशेष--प्रन्तिम भाग-

सबत महारह पचडोतर १८०५ जी हो माह सुदी पीचा गुरुवार। भग्गय मृहरत सुत्र जोग मैं जी हो कथग्। मह्यो सुवीचार ।। धन धन ।।४६६।। धी चीतोड सल्हटी राजियो, जी हो ऋषि जीनेश्वर स्याम। श्री सीध दोलती दो घागी जी हो मीघ की पूरी जे हाम ।। माहा मुनि० धन० ।। ८७०॥ सलहटी भी सीगराज तो, जी हो बहुलो छय परीवार । घेटा बेटी पोतरा जी हो मनधन मधीन प्रपार ।। माहा मुनि० धन० ॥४७१॥ श्री कोठारी काम का धर्गी, जी हो छाजड सो नगरा मेठ। था रावत मुराएग एगेन्वर दीवता जी हो भीर वाण्या हेठ ।। माहा मुनी० धन० ॥४७२॥ श्री पुन्य मग छगीडवो महा जी हो श्री विजयराज वासाए। 1 पाट घरणार मातर जी हो ग्रेण सागर ग्रेण खारा ॥ माहा मुनीव धनव ॥४७३॥ सामागी सीर सेहरो जी हो साग सुरी कत्याए। परवारा पूरो सही जी हो सकल वार्ता सु वीयाए।। माहा मुनी० धन० ॥४७४॥ श्री बीजयेगर्छे गीडवोघणी जी हो श्री भीम सागर सुरी पाट। धो तीलक सुरद वीर जीवज्यो जी हो सहसगुराो का थाटै ।। माहा मुनी धन ।।४७५॥ साम सकल में सोमतों जी हो ऋषि लालचन्द सुसीम । भठारा नता चोथी मधी जी हो ढाल भएति इगतीस ।। माहा मुनी० धन० ॥४७६॥ ईती भी धर्मउपदेस माठारा नाता चरीत्र सपूर्ण समाप्ता ॥

धिनपु नेशी नुष्पुत्र जी बारत्या थी भी १ ० भी थी थी. वायाजी वप् धनाजी वी भी भी इस्त्रमा भी समुद्रश्र जी। थी नेषपुत्रर भी थी. भीवगणाजी श्री कुल्हडी असतां कुणवां ग्रंपूर्ण ।

संबद् १० १ वर्षे सके वय विशो सात्रोत्र (वाली) वर्षों में दिन बार सोमरे। वान संवात्रप्रस्मे संपूर्ण चोत्रात्रों सीमो करता है। वी वो को वर्षा लगीद स्व वी । भी भी १ ० थी की जालवा वी क जबके नकीद सु मेक्सी।। भी भी जालवा भी सांचाले सरक। सारक्ष्य भी सांचालन सरक करता ।। ६ ।।

्ये.१ कामस्वजनुरीतीक्या-युनीमुकीचि । वर्ष र १ । या ११४८ रहा । जला-यत्तर । दिवस-चना १ र नाम × । के नाम ≭ । हुली । वे से १ व व वस्तर ।

२८११ कानस्वसुद्देशीक्या----।पत्र वं के।बा २८६६कः (सन्त-स्तः।स्वयस्प्यः। र कन्तरः।ने कन्तरः।वस्योके से २.६।कः क्यारः।

२४१२. कासम्बास्तिकानकथा—सङ्गकीर्षिः । पत्र थं ६। या १९४२ इक्षः । आया-संस्टाः विक-सन्ताः १ कलः ४। के गलः ४। दुर्खः । वे सं १.१ । इ. क्यारः ।

१४१३. कालस्वास्तकमा—कृतसम्मर्।यतः सः ५ । धाः १ ४४_४ वसः। वारा-संस्टतः।विक्त-कमा।रः भ्रम्त ४ । ते वक्त ≯ापूर्णः।वे सं ६ । सःकस्वारः।

विकेत---नंसरस पर्यों के सिन्दी धर्म जी दिये हमें हैं।

पूर्णक परिस्कित नालकार में १ सर्थ (वे सं २) कुलकार ने ४ अभियाँ (वे सं ११) कुलकार में १ अभियाँ (वे सं ११) कुलकार में १ अभियाँ (वे सं ४४) और हैं।

न्द्ररेश्चे कानपात्रकाश्चा—कः पद्मानिक्ष्यायस्य हो हाता ११×६ वर्षानाया नोप्रतः विवय-क्षाार कला×ाने कलार्थः १७०२ बालम तुरी १।३ वं ७४३ क्**ष**ण्यारः।

२.४१.८.घनलाश्रदक्ष्याः****। वृत्र श्रं ४ । ता ७३.४१.६वा वला-वेस्ट्टः । दिश्व-स्या। र सक्ता≺ । के सक्ता×ाष्ट्र्यं । वे श्रं ७ । इन्तवार ।

२≽१६ प्रतिस् २ । पन तं १ । के कल × । श्यूर्या वे चे २१ । ड कचार ।

२.४१७ कालकालक<u>का</u> —ापवर्ध १ । बा ५८९ क्यां वन्तर-तरहरावित्र-क्यां(दीनेटर) र काल ≍ामें कालतांह ३ कालवायुकी । वे र्वं १३७ क्यांच्यारः।

२४ है... क्षत्रस्तक्ष्यम् — सुराज्ञभ्यः। पत्र तं १। सा १ \times ४३ हत्रः। स्वा-श्वितः। विवन-क्षा%र क्षत्र \times । ते कलातं १ १ वालोव दुरी १। दुर्लं। वे सं १११। सन्तरः। कथा-साहित्य]

२४१६ स्रजनचोरकथा '। पत्र स०६। ग्रा० दर्दे×४ई इख्र । भाषा–हिन्दी । विषय-कथा। र० काल × । ने० काल ×ा ग्रपूर्ण । वे० स०१६१४ । ट नण्डार ।

२५२० द्यादाटकादशीमहात्म्य । पश्र स०२ । भा०१२×६ इख्र । भाषा—सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स०११४६ । द्या मण्डार ।

विशेप--यह जैनेतर ग्रन्थ है।

२४२१ द्यष्टागसम्यग्दर्शनकथा—सकलकीित । पत्र स० २ से ३६ । घा० ७५४६ इख । भाषा-नस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । धपूर्ण । वे० स० १६२१ । ट मण्डार ।

विशेष-फूछ बीच के पत्र नहीं हैं। भाठो भङ्गो की भलग २ कथायें हैं।

२४२२ श्रष्टागोपारूयान—प० मेधावी । पत्र स० २८ । मा० १२५४ ४६ इख । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३१८ । श्र भण्डार ।

२४२३ श्रष्टाहिकाकथा—भ० ग्रुभचद्र । पत्र स० द । ग्रा० १०४४ई इख्र । भाषा–सस्कृत । विषय– कथा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ३०० । श्रु मण्डार ।

विशेष—न्द्र मण्डार में ३ प्रतिया (वे० स० ४८५, १०७०, १०७२) गा मण्डार में १ प्रति (वे० स० ३) ड भण्डार में ४ प्रतिया (वे० स० ४१, ४२, ४३, ४४) च भण्डार में ६ प्रतिया (वे० स० १५, १६, १७, १८, १८, २०) तथा छ भण्डार में १ प्रति (वे० स० ७४) भीर हैं।

२४२४ अष्टाहिकाकथा—नथमल । पत्र स०१८। मा०१०३४ ६ इ. । भाषा-हिदी गद्य । विषय-कथा। र० काल स०१६२२ फागुरा सुदी ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स०४२४ । आ भण्डार ।

विशेष-पत्रों के चारो भ्रोर वेल वनी हुई है।

इसके मितिरिक्त क मण्डार में ४ प्रतिया (वे० स० २७, २८, ७६३) ग मण्डार में १ प्रति (वे० स० ४) इन भण्डार में ४ प्रतिया (वे० स० ४५, ४६, ४७, ४८) च भण्डार में ४ प्रतिया (वे० स० ५०६, ५१०, ५११, ५१२) तथा ह्य भण्डार में १ प्रति (वे० स० १७६) मीर है।

इसका दूसरा नाम सिद्धचक्र व्रतकथा भी है।

२४२४ स्त्रष्टाहिकाकौमुदी । पत्र स० ५ । ग्रा० १०४४-१ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वे० स० १७११ । ट भण्डार ।

२४२६ श्रष्टाहिकाञ्चतकथा । पत्र स०४३। मा०६×६३ इखा। भाषा-सस्कृत । विषय-कथा। र०कान ×। ते०काल ×। मपूर्ण । वे०स०७२। छ्यु मण्डार।

विशेष-छ भण्डार में एक प्रति (वे० स० १४५) की और है।

२१६] [क्या-साहित्य

२४२० माहाविकालणकर्मासंबद्-सुरुपकरम्पूरि । पर वं १४ । मा १५×६३ ४व । माना-वंतरुष । पिपक-नवार परम × । के काल × । पूर्ण । वे वं कर । व्यावसार ।

२,४२८ व्यक्तोकराहित्वीकवा—मुख्यासरी वर्षा ६ । या १ ४२ इत्र । बला-संस्थर । निरद-कदा। र कस ४ । ने वक्त र्थ १६४ । दुर्व । वे ११ । क्र बच्चार

*प्रदेशः कारोक्योविकोक्तवकाः'''''''''''' पत्र दं १ । बा १ है×्द्र इक्षः। कारा-दिन्दै क्षः। निषत-क्याः र यक्तं×ादे वक्तं×ादुर्वादे संदेशः क्षःक्यारः।

२४३ करताकरोदियोक्तकवा^{च्या} पत्र वं १ | बा ४३४९ इंच । वासा-हिन्सी प्रकार कक्त संस्थार पीच वरी ११ । प्रकारित २१ । स्थापनार ।

१४२१ कोक्सरपंत्रमीज्ञदक्यां—जुतमागर।पव थं ६।सा ११३/४६ इंच। धाना—संस्था। नियम-क्या।रंकक ≾।वे ककाचं १६ वालक द्वरी १३।पूर्वा वे वं ११।क जसार।

२८१२. क कारायकमीकवा-----।यत वे १ ते ११।या १ ×४६ वेष । बारा--संस्था । विवय-नवार कार × ति कम × । वस्ते । वे वे १ कि कमार ।

१८१६ कारायनाक्याकीय ""पार्व है है के शिक्ष हा १९८६ है हा असा-संस्ट । रियन-स्थार कार X के का X । बहुती के दृश्करी व क्यार

रिकेर — का लगार में १ प्रति (वे से १७) बनाट लग्नार में १ प्रति (वे सं ११७४) स्रोप्त है

त्या रोगो ही बहुई है। १८६४: आरवनाक्याकोरा''''''| यह ई.४४४ । बा १,०४६ इंचा कला-टेल्स्ट । दिल्ल-क्या । र क्षत्र X । के नक X । बहुई । के दे दर्गा क लक्यार ।

क्या) र कृत्य Xाल पान Xाम2्राचा च रण्याचारा विकेश — मुनीवना स्थापक पुर्वदेश । अञ्चलको ना विल्य परिचय किया है ।

> यो दुनवृष्टि वरपायोवे वन्त्रे वनारणाव्यक्तियः स्मे । भोदुवर्ष्ट्रमञ्जूनीवये यादे वनारणाव्यक्तीत्यः स्मि। वेदेनचेत्रमंत्राव्यक्तिये तेन स्वारणाञ्चलेत्यकः । बहुद्धाने सेव्ह कुमार्थे वास्त्रमञ्जूनीवयकः ।।१॥ वेद्याने स्वत्रमञ्जून स्वत्रमञ्जून स्वत्रियकः ।। सूर्वेष विकारणान्यने स्वत्रीवयां व्यक्षित वर्षेत्रमः ।।॥।

ज्ञपेक नवा के सत्ता के वरिषय किया नवा है। *११३४८ आरावस्यासारवर्षेय---प्रशुप्तन्त्रः । वन वं ११६। वा ११४४ इ.च.। बरगा-संस्कृत

क्षिप्र-जमार पत्रम ×ाके जला×।बयुर्णांके वं २ ६६। इ. कम्पार। क्षित्र---१६ के सामे समाधील के मी नई पत्र नहीं हैं। २४३६ श्रारामशोभाकथा 'ो्पत्र स०६। मा०१०×४६ इँच। भाषा-सस्कृत । विषय-वधा। र० काल × । ले० काल ×ा पूर्ण । वे० स० ५३६ । स्र भण्डार ।

विशेष-जिन पूजाफल कथायें हैं।

मारम्भ---

भन्यदा श्री महावीरम्वामी राजगृहेपुरे समवासरदुद्याने भूयो गुए शिलाभिषे ॥१॥

सद्धर्ममूलसम्यक्त्व नैर्मत्यकरणे सदा । यतम्बमिति तोर्थेशा वक्तिदेवादिपर्पदि ॥२॥

देवपूजादिश्रीराज्यमपद सुरसपद । निर्वाराकमलौचापि समते नियत जन ।।३।।

मन्तिम पाठ---

यावद्देवी सुते राज्य नाम्ना मलयसुदरे।

क्षिपामि सफल तावस्करिप्यामि निजं जनु ।।७५॥ सूर्रि नत्वा गृहे गरवा राज्य क्षिप्त्वा निजागजे ।

भारामशोभयायुक्ते राजावतमुपाददे ॥७६॥

प्रधीत सर्वसिद्धात् सविग्नग्रएसयुत ।

एव सस्यापयामास मुनिराजी निजे पदे ॥७७॥

गीतार्थायै तयारामशोभायै ग्रुएमूमये । प्रवर्तिनीपद प्रादात् ग्रुहस्तद्गुएएरजित ॥७५॥

सबोच्य मिवकान सूरि कृतवा तैरनशन तथा।

विषद्यहावि स्वर्गसपद प्रापतुर्वर ।।७६॥

ततरच्युत्वा क्रमादेती नरता सुदता वरान् ।

भयान् कतिपयान् प्राप्य शास्त्रती सिद्धिमेष्यत ॥६०॥

एवं भोस्तीर्थकृद्भक्ते फल्माकर्षे सुदर । कार्यस्तत्कररोपन्नो युज्मामि प्रमदात्सदा ॥ दशा

।। इति जिनपूजा विष्ये ग्रारामक्षीमानथा सपूर्ण ।।

सस्कृत पद्य सस्या २=१ है।

२,४३७ उपागल जितन्नतकथा । पत्र स० १४। ग्रा० ५३/४४ इ.च । भाषा-सस्दृत । विषय-केषा (जैनेतर) र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० स० २१२३ । श्र्य मण्डार ।

```
२१८ ी
                                                                                 ब्रमा-साहित्य
           २४३८ च्यासम्बद्धाः—धामयचन्तुतिशा पन सं ४ । सा १ ×४३ इन । मला-प्रकृत ।
विषय–रचा। रंजन ×। ने कल सं १६६१ व्येष्ठ वृत्ती १। पूर्ण । ने सं प्रश्न । का प्रचार ।
           विशेष---यासंस्थानक्ष्मा बीधेण अक्ष्मचंदनशिकाम नात्रुवाचनापुरुवालं सद्वापित्रं व्यारक्तरक्ष्म् ॥१२॥
                                                                            प्रति रिल संबंधे क ।।१।।
           यो भी वं यो यो पासंपरित्रय <u>न</u>विभिनेषित । यो रिहरोरनाने संबत् १९६२ वर्षे केठ नदि १ सिनै ।
           २४३६. चीपम्यानकमा-अ मेनिहत्त्व । पत्र सं ६ । या १५×६ इ.व । वाना-बंत्सन । विवय-
क्यां। र कल ×ाने यल ×ाक्यां। वे वे १ । टक्कारा
           विक्रेय--- २ से इ.सम्ब.पथ नहीं हैं।
           २४४० व्यक्तिगरकामकरीचौपई—पामसागर।पर ४ १४। सा १ ×४३ इ.स.। कला-दिन्ती।
विदय-नवार तलातं १७४७ । ने कमा×ापूर्तावे सं १ १। वर्गनशरा
           विकेप--पादि मान ।
                       भी पुरुगोननः शब्द बंदुदीय बन्दार स्तुती प्रयत---
                       ब्रिकर वार्वभूष्टितिरात एक व्यवस्य शब्द क्षेत्रक्षे वार्विचारे ।
                      चरक करन स्थान कुलबाँग सामर कह गरिवारे गरिवस्तार ॥१।।
                       नव वासी निकास नेह विद्यां रहा। दोए सुवि क्यर प्रधारिया ए ।
                       बानक नाक्श कार बहिन्दर नाग्डता कालह और धारिया ए ॥२॥
                       देखनी नहे तल विम्म तभे देखनाओं वाने पान्या उद्यों र ।
                      मार्जप्रतिवर्गः बीच धन्दै कां नानिका क्याने पूर वै रिवाद ।।१।।
           ≡ितन---
                      क्तर बैतान की व तिहां नीची जीमान ॥ में ॥
                       सरपूर ना परवार की न पूर्ण तम की बाल ।। न ।।
                       माननावर बुख संबंधा मा वति शावरवान्ति बीस ।। में ।।
                       काकुरामा पूर्वपानयों न पूनी नभद्र भयीश ॥
                       विश्व पट बचा होश्व मी व रचीती ए पविचार।
                       क्षक्रिको बढ़ी भारीमी ने निका दुरह नार ॥
                       नक्ती काल बोडामजी वं भीडी राज पूरंथ।
                       मानकार नहे तांचलो दिन दिन वच्छी र्रम ।। १ ।।
                          रहि सी क्षेत्र विकास वजीवार सामारी सीर्पा संपर्क ।
```

कथा-साहित्य]

२६४१ कथाकोश-स्रिपेणाचार्य। पत्र स० ४६१। मा० १०४४ दे इ.च । भाषा-सस्कृत। निषय-चया। र० काल स० ६८६। ले० माल स० १४६७ पीप मुदी १४। वे० म० ८४। व्य भण्डार।

विरोप-सभी पदार्थ ने प्रतितिपि करवायी भी ।

२४४२ प्रति स०२। पत्र स०३१८। मा०१०४४६ दच। मे० काल १८३३ भादवा बुदी ऽऽ। वे० म०६७१। क भण्डार।

२४४३ कथाकोश-धर्मचन्द्र । पत्र स० ३६ मे १०६ । मा० १२×५६ इ.च । भाषा-मस्कृत । विषय-नथा । र० काल × । ने० मान स० १७६७ भषात बुदी ६ । भपूर्ण । वे० स० १६६७ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-- १ मे ३८, ४३ से,७० एव ८७ से ८६ तक के पत्र नहीं हैं।

लेखक प्रशस्ति---

सवत् १७६७ का ग्रासाढमाने गृप्णपक्षे नयम्मा शनियारे ग्रजमेराग्ये नगरे पातिस्याहाजी ग्रहमदस्याहजी महाराजाधिराज राजराजेश्वरमहाराजा श्री उभैसिहजी राज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसपेसरस्वतीगच्छे वलात्वारगणे नद्याम्नाये फुदबुदाचार्यान्वये महलाचार्य श्रीरतनकीत्तिजी तत्पट्टे महलाचार्य श्रीश्रीमहेन्द्रकीत्तिजी तत्पट्टे महलाचार्य्यजी श्री श्री श्री १०८ श्री मनतकीत्तिजी तदाम्नाये ब्रह्मचारीजी किसनदासजी तत् शिष्य पहित मनसारामेण ब्रह्मकथाकोशास्य ब्राह्मलिखापित धम्मोपदेशदानार्थ ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं मगलमूयाच्चतुर्विधसधाना ।

२४४४ कथाकोश (श्राराधनाकथाकोश)—त्र० नेमिदत्त । पत्र स० ४६ से १६२ । म्रा० १२ई×६ ६च । भाषा-सस्तृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८०२ वर्गतिक बुदी ६ । म्रपूर्ण । वे० स० २२६६ । स्त्र मण्डार ।

२५४५ प्रति स०२।पत्र स०२०३। ते० गाल स० १६७५ सावन युदी ११। वे० स० ६ ६। क

विशेप-नेसक प्रशस्ति कटी हुई है।

इनके मितिरिक्त ह मण्डार मे १ प्रति (वे० स० ७४) च भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ३४) छ् भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६४, ६५) भीर है।

२४४६ कथाकोश । पत्र स० २५। धा० १२×५३ इच। भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ने० काल × । ध्रपूर्ण । वे० स० ५६ । घ भण्डार ।

सिशेप--- च भण्डार में २ प्रतिया (वे० स० ५७, ४८) ट भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० २११७ २११८) भीर हैं।

२४४७ कथाकोश । पत्र स०२ से ६८। भा०१२×५ है इच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। के० काल ×। भ्रपूर्ण। वे० स० ६६। इट भण्डार।

້¤₹•] ि द्वधा-साहित्व २४४८, कमाजनागर-मार्चस्य । वय मं १ | मा १ १४४८ इस । भागा-संस्ता । विवय-मना। र मान्∡। में नार×। पूर्णा के ने १२३४। अर्थायार। विधेश-बीच के १७ में दर पत्र है। केप्रथेट. कथासंबद--व्याह्मानसाग्रह । यत्र सं १६ । बा ११×६ इ.स. । बाता दिन्ही । विवद--नवा । र कान 🗴 । ने जान में १०१४ वैद्यान वृत्ती २ । पूर्ण । वे भे १६० । छा बण्डार । शास क्या पत्र ९च सस्या १ देनोच्च शीव दवा १ में ६ 22 [२] निबन्दाह्वी वचा Y 8 0 14 ि। जिस राजिकत क्या ७ से १२ 25 प्रशिक्षक क्षा 28 ft 2x 13 [१] रखबंबन स्था tx fr te. wit ि। रोहिनी बन बबा ११ में २३ 41 वर्षस्थवार वयः २३ के ६४ 34 दिवेद---१ २४ वा वैद्यालनाने हथागाँ तियो २. हरवावरे । निरुतंतं बहरवा श्वेदरामः सदार्द्र वक्तर बावे । नियार्थ विरंतीर बाहरी हरवंदनी कार्द जीना करायें । २१४ व्यक्तिम्बर्याः विषये १वेशः वा १ ×४० व्यक्ति भारा-मार्गित्यो। विषय-क्षा । र कार 📐 के बन्त 🙏 हे में ११६६। बहुर्ग । व्य क्यार । क्ष्ट्रहे खबासबद्र----। वर नं १४ । था १९×० ईन । जाता-मत्तुप द्वियो । दिवय-स्था ।

t क्षान् ≾ाने बान् ×ानूनी।केत देश कंपनार।

स्टिंग--- वन वनामें भी है। इनी बन्दार के वन वित (वे सं १) बीर है।

शहर, क्यामंतरण । वर्ष वे ७ । ता १ ४३ रवा। बारा-मंत्रुपा विस्थनका । र

भार । तं कान 🗴 । पूर्ण । वे तं देश । व्य क्ष्यार ।

ages प्रतिका का बच में करें। में बाद वे देश करें के देश का प्रशास :

रियोग--- ३४ वकाशी का नंबई है।

कारण अधिकां के क्या में काल प्रकारण कार्या के संवक्त अध्याप । रिक्टिक-स्थित बचाने ही है।

4. erentententententent

थे इश्वहारमान्या-नयस्त्रे ।

कथा-साहित्य]

ह भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६७) भीर है।

२४४४ कयवन्ताचौपई—जिनचद्रसृरि। पत्र सं० १४ । आ० ।१०५×४३० इत । भाषा-हिन्दो

(राजस्थानी)। विषय—कथा। र० काल स० १७२१। ले० काल स० १७१६। पूर्ण। वे० स० २४। स्त्र भण्डार।

विशेष—चयनविजय ने कृष्णागढ मे प्रतिसिषि की थी।

२५४६ कर्मविषाक । पत्र स०१८। ग्रा० १०४४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पथा। र॰
कान ४। ले० काल स०१८१६ मगसिर बुदी १४। वे० स०१०१। छ भण्डार।

विशेष—मन्तिम पृष्पिका निम्न प्रकार है।

इति श्री सूर्यारुणसवादरूपकर्मविपाक सपूर्ण ।

२४४७ कवलचन्द्रायगाञ्चतकथा । पत्र स०४। म्रा०१२×५ इच्च। भाषा-सस्कृत । विषय-निया १९० नाल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स०३०४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—क भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १०६) तथा व्य भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ८४२) भीर है।
२४४८ कृष्ण्यक्तिमणीमगल—पद्मभगत। पत्र स० ७३। झा० ११००४ हच्च । भाषा∽हिन्दी।

विषय–क्या। र∙ काल ×। ले० काल स० १८६०। वे० स० ११६० ∣ पूर्ण। इप्र भण्डार।

विशेष--श्री गरोवाय नम ा श्री गुरुम्यो नम । प्रथ रुक्मिए। मगल लिखते ।

यादि कीयो हरि पदमयोजी, दोयो विवास िलनाय ।
कीरतकरि श्रीकृष्स की जी, लीया हजुरी बुलाय ।।
पावा लाग्यो पदमयोजी, जहां बढ़ा रूकमसी जादुराय ।
कथा करी हरी भगत पै जी, पीतामर पहराय ।।

भाग्यादि हरि भगत नै जी, पुरी दुवारिका माहि । रुक्मिणि मगल सुरौ जी, ते भमराश्रुरि जाहि ।। नरनारियो मगल सुरौ जी, हरिचरण चितलाय।

ये नारी इंद्र की अपछरा जी, थे नर बेंकुठ जाय ।। व्याह वेल भागीरिय जी गीता सहसर नाव ।

गावतो ममरापुरी जी पाव(व)न होय सव गांव ।। वीलै राग्गी रुवमिंग जी, सुगुज्यो भगति सुजाग्।।

या किया रित केशो तिएों जी, येसडीर करोजी वस्ताए।। बो मगल परगट करो जी, सत को सबद विचारि।

चीडा दीयो हरी भगत ने जी, कथीयो कृष्ण मुरारि ॥

```
३२२ 7
                                                                                क्रमा-साविस्य
                         पुर गोर्निय में विनयाथी य सम्बन्धनी सी देव ।
                         रान बन तो याने बरा बी, कराजी बुरा की बी बेब छ
                         पुर नोर्विय कताहमा जी क्षरी कार्य बार्वार ।
                         पुर भोर्षिय के करने याने होची भूल की लाज इस देशी ।
                         क्ष्यपु इत्या है काम इमारी, मलवा परम को देशी ।।
          वय ४ - राम विद्रा
                           श्राप्तिक राजा बोलियों की बुद्धि के राज कवार 1
                           वी बाद बूब धामनी ही बीड बनाऊ हार ।।
                           के के शार कार कर वेरका कास्त नई धनार।
                           बोला नामि यनेक क्रूट धारका ए शार ।।
                           ब्रह्मकांत प्रोमी क्यी पर पाप तुरित्रओं राज्य के बार ।।
                           mins--
                           माशा करी में प्रकृती यो चारियो केब्रि कल क्य होता।
                           अवता बढ बर बालनी चेल न नामें शीव ।।
                           मीक्रमण भी न्याक्ष्मी, युद्धी शक्त विरासात ।
                           हरि पूर्व हव कावना, श्यदि कुबंदि भूमदाम ।।
                           हारानांत सामन्य हुना, जुनियम वेट बसीस ।
                           यव पिन कार्यक्रिया शीलावन्ति क्ष्मग्रेस ॥
                                   स्कारित थी मंत्रस संपूर्ण ।।
          संबंध १४७ का लागे १७११ का गारावरगांवे बुद्धानांवे वंचानां विभागीयगक्षये दिखीनवरले दुनामानेवे
स्वान्तोर्व ॥ शुर्व ॥
          १११६ कीमुदीकमा-न्याचाम सर्मेकीचि । पन र्स १ ते १४ । वा ११४४ रख । मार्गान
क्षेत्रका विकास-कार्या ए काल X । के काल वे १९६३ । प्रदुर्व । के १११ व वास्टार ।
          विकेश-महा ह गरही में विकास सीच के १६ ते १ अब के जी वय नहीं है।
          ३४६ क्याक गोरीवदका "" पन सं १६। मा ३×६३ हम । माना-हिन्दी एक । दिवर-
नना। र कल ×ाने नताश | दुर्वी वे सं २०३ । महत्त्रकार ।
          विक्रेप-चीत में सीए की राजितिएकों के क्य किये हुने हैं।
           र≽देर चपुरुशीकियासकथा<sup>……</sup>। यन वं १११ वा २० ६ व । वाला-लीहर । रिवर-नवा ।
र कम∷ाके याल ≾।धूली।वे ते वक्षाचायपार।
```

२४६२ चद्रकुवर की वार्ता-प्रतापसिंह। पत्र सं० ६। ग्रा० ११४४ है उ व । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा। रुकाल ४। ले० काल सं० १८४१ भादवा। पूर्ण। वे० सं० १७१। ज भण्डार।

विशेष—६६ पद्य हैं। पंडित मन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी।

ग्रन्तिम----

प्रारम्भ---

प्रतापसिंघ घर मन वसी, किषजन सदा सुहाइ। जुग जुग जीवो चंदकुवर, बात कही कविराय।। ६६।

२५६३ चन्द्रतमत्त्यागिरीकथा—भद्रसेत । पत्र स० ६ । मा० ११×५६ इ.च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ७४ । छ भण्डार । विशेष-प्रति प्राचीन है । मादि मत माग निम्न प्रकार है ।

स्वस्ति श्री विक्रमपुरे, प्रएमी 'श्री जगदीस ।
तन मन जीवन सुल करण, पूरत जगत जगीस ॥१॥
धरदाइक श्रुत देवता, मित विस्तारण मात ।
प्रएमी मन धरि मोद सी, हरै विधन सघात ॥२॥
मम उपवारी परमग्रुर, ग्रुण धक्षर दातार ।
बदे ताके चरण जुग, मद्रसेन मुनि सार ॥३॥
कहा चन्दन कहा मलयगिरि, कहा सायर कहां नीर ।
कहिंथे ताकी वारता, सुलो सबै वर वीर ॥४॥

भ्रान्तम— कुमर पिता पाइन छुवै, भीर लिये पुर सग ।

श्रासुन की घारा छुटी, मानी न्हावरण गंग ।। १८६॥
दुस जु मन मे सुस भयो, भागी विरह विजोग ।

श्रानन्द सीं ज्यारीं मिले, भयो भपूरव जोग ।। १८७॥

गाडा—

गाहा-- कच्छिन वदन राया, कच्छिय मलयागिरिनिते । कच्छ जोहि पुण्यवस होई, दिस्ता सजोगो हवइ एव ।।१८८।।

मुल १८८ पद्य हैं। ६ कलिका हैं।

२४६४ चन्द्नमलयागिरिकथा—चत्तर।पत्र स०१० । मा० १०५८४ इद्य । भाषा-हिन्दी। विषय-कथा।र० काल स०१७०१। ते० काल ४।पूर्ण।वे० म० २१७२। स्र भण्डार।

भन्तिम ढाल--ढाल एहवी साधनुमु ।

कठिन माहावरत राख हो व्रत राखीहि सोड चतर सुजाए।। भनुकरमइ सुख पामीयाजी, पाम्यो भ्रमर विमाए।। १।। गुरावता साधनम् ।।

इक राम श्रीन एए यानना, ब्या रे वरन प्रधान ॥ पुषक् विश्व के पालक की पाली गुक करवाए। से २ स दुवर 11 ष्टियाना पुरत मात्रका की कालक पाटिए कर H भनी भावता भावह वी बाद उपसरण हुर ॥ १ ॥ इन्ह ॥ र्पेनत सक्ताह हवीतारह की बीधी प्रयम सकता ।। वे पर नारी बोबबो की बंध नन होई कता व ।। ४ ।। पूला ।। छती नक्द हो शायली की वक्द तहां क्रायक नोक ।। देश इरा भारत कामा की सावद सकता बोफ ॥ १ ॥ प्रुष्ठ ॥ इत्राति वच्च कालीव्ह वी भी पून्य वी वक्रान ।। माचारह करो तोवदी वी र्च.......शैरव क्लस्व ॥ ६ ॥ क्रुन ॥ यक बक्र माहि कोनता वी कोना विकर स्वास्त ।। नेव्हमा भी वा कर पड़ा की कीव्या दुदि विकास 11 क 11 दुस्ता 15 बीर पचन महद बीरव ही बब वादे परवदात ।। मात्र विषर परमान्द्रीयद् जी पंत्रिक प्रश्नीह विवास ॥ ॥ प्रस्त ॥ देश केनक इस नीलपड़ थी पढ़ार शबार फिल्मान ।। इस्त्रक्राता प्रकृता वारसूची तस भग विश्वद बाद ।। १ ११ प्रश्न ।।

इति बीर्वदनस्तमप्रविरियन्तिसमान्तं (!

९८६८ वन्त्रसमित्रमः-मञ्जूतसमारः) पत्र सं ४) वा १२४५ इक्ष ३ कमा-संग्रतः। विपर-कमारि कमार्थे कस्त्र ४ के कस्त्र ४ (इस्टैं) वे १७ । को कमारः।

निर्मेय-च्या मध्यापि कृत प्रति वे शे १६६ की सीर है। प्रति च्यामुक्तिकिक्याण्याणाध्यक्ष देश वा ११८६ वेचा मस्या-बस्त्या (देयद-प्रया) र नस्त ४१ने नस्य ४१ पूर्णा वे व १ (बा क्यारा)

विकेद--माथ कवार्ते ती है।

प्रदेशक चाम्यविश्वितकामामाचा—कुरावार्षण वर्षाः वस्य देशवा ११४४४ होचा निवस-क्यापि कमा × कि चमा > व्यूकी के वो १९११ क क्याप्त ।

- २८६८: चेहर्सस्वी क्रमा--वीक्या पर त ७०१ वा १८६ ६ व । यथा-रिनी । विक्य-नवा । र काम ते १७० । ते काम से १७३६ । वृत्ती । वै ते १ । व सम्बार ।

रिकेन परके सर्वितिक विकासकारक व्यक्तिक स्त्रोप वार्थि और हैं।

ऋथा साहित्य ो

२५६६ चारमित्रों की कथा—श्यजयराज । पत्र स० ४ । झा० १०३८४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल स० १७२१ ज्येष्ठ सुदी १३ । ले० काल स० १७३३ । पूर्ण । वे० स० ४५३ । च भण्डार ।

२५७० चित्रसेनकथा । पत्र स०१८ । झा० १२×५ द्व । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा। र० काल × । ले० काल स०१८२१ पौप बुदी २ । पूर्ण । वे० स० २२। व्य भण्डार।

विशेष-जनोक सध्या ४६५ ।

२४७१ चौद्राराधनाउद्योतककथा-जोधराज । पत्र सं० ६२ । मा० १२३४७) इ च । मापा-हिरी । विषय-कथा । र० काल ४ । ल० वाल म० १६४६ मगिसर सुदी च । पूर्ण । वे० स० २२ । घ मण्डार ।

विदोप--- १६०१ की प्रति मे लिखी गई है। जमनालाल साह ने प्रतिलिपि की थी।

स० १८०१ चावस" इतना भीर लिखा है। मूल्य- ४) ≥)।।) इस तरह चुल ४।।≥ लिखा है।

२४७२ जयकुमारसुलोचनाकथा " । पत्र म० १६। प्रा० ७४८ इ.च । भाषा-हिन्दी । विषय-क्या। र० काल ४। के० काल ४। पूर्ण । वे० म० १७६। छ भण्डार ।

२४७३ जित्तगुरासपत्तिकथा । पत्र स०४ । मा०१०५×५ इक्का भाषा-सस्कृत । विषय-कथा। र० काल ×। ते० काल स० १७६५ चैत्र बुदी १३। पूर्ण । वे० स० ३११ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में (वे॰ स॰ १८८) की एक प्रति मौर है जिसकी जयपुर में मागीलाल बज ने प्रतिलिपि की थी।

२४७४ जीवजीतसद्वार—जैंतरास। पत्र स० ४। मा० १२८८ इ च । मापा-हिन्दी पद्य । त्रिपय-कया। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ता। वै० स० ७७६ । श्रा भण्डार।

विशेष---इसमे कवि ने मोह भीर चेतन के सम्राम का क्या ने रूप मे वर्र्णन किया है।

२४७४ च्येष्ठजिनवरकथा । पत्र स० ४। आ० १३×४ इ च । भाषा-सम्बृत । विषय-कथा। र० काल × । ले० वाल × । पूर्ण । वे० स० ४८३ । वा अण्डार ।

विशोप—इसी भण्डार में (वे० स० ४८४) वी एक प्रति और है।

२४७६ ज्येष्ठिजनवरकथा—जसकीर्ति। पत्र स० ११ से १८। मा० १२४४ है इच। मापा— हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ४। ले० काल स० १७३७ मासीज बुदी ४। म्रपूर्ण। वे० म० २०८०। स्र भण्डार।

विशेष--जसकीत्ति देवेन्द्रकीत्ति के शिष्य थे।

र्थण दोलामारुवणी चौपई —कुशललाभगणि। पत्र म० २८ । ग्रा० ८४ र इम्र । भाषा— हिन्दी (राजस्थानी)। विषय-नथा। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स० २३८। ह भण्डार।

पुत बान शील तथ जलना, न्या रे वरव ब्रयाय ॥ नुबद्ध विश्व वे पल्यद्र की पासी सुख ऋकाए। । २ ।) ग्रुए ।। बर्दियला पुरा मानदा नी बायह प्रतिप पर ॥ क्ती मापना बाबद वी बाद कपतरह हर ।। १ ।। इस ।। बैंबत तमाबद इक्टेलरड थी जीवो प्रचय स्टब्स ।। वै वर नाये संक्लो की तक मन होद इन्तास ॥ ४ ॥ द्वरा स राखी नवर सो पानको की नसद तर्रा सरावक कोच ।। देव द्वरा वारा काला की नाजद बच्चा लोक ॥ १ ॥ इसा ॥ **पुत्रराति रूथः वालीवरं वी वी पूज्यं वी वसराज**ा। मानारह करी सोवको नी सं....... बीरश कररान ॥ ६ ॥ प्रस्त ।। यब यह नाहि शोकता की कोवा विकर नुवास ॥ मीक्ना की वा क्य बन्हा की बीक्ता बुदि निवल्य (१ ७ ॥ बुन्हा १) बीर बचन बहुद बीरब हो तस गाउँ करकरास 11 माऊ विकर वरवालीयर की वंदित प्रसिद्ध निवास ।। । प्रस्त ।। वत वेनक इन बीजबह भी नदर बहुद चितवान ॥ इल्लाम्पना इक्का बावहुबी की क्या गेंधित बाग (। १ (। इसा ।)

li इति और्वदननसम्मदिगिरिनसमार्थः (i

२,६६८, चम्पलब्रिक्टमा—३० शुबसागर। गर्ग शं ४ । सा १२,४६ इस.) चला—रद्या। विस—नमा र; क्या र जल ×१वे कल ×१.वृर्ष । वै वै १७ । क्ष नमार।

विकेर—क समार ने एक प्रीत के सं १६६ मी मीर है। ६४६६ मन्तृत्रशिक्षमा^{™ा}ाय सं २४। मा ११४६ ६ व । माना–सन्द्रतः स्थिन–समा। र सन्त्र ×। से सन्तर ×। पूर्णः के सः १ । थ मणार।

रियेश-अन्य शवार्वे भी हैं।

क्षम् चन्द्रतक्षित्रकम्प्रमाणा—सुरक्षमध्यक्षात्राचर वं ६।वा ११×४६ ६४। नियम-वसार राम × कि बात × । कुर्षे । वे वे १६६ । क मध्यरः

२८६८, चेहहसमी कमा—डीकसः। यर थः। वा ८८६ देवः। माना-किमीः। (४४४–४४)। र साम मं १७ । में बान सं १७३३। पूर्णः वै ये २ । व सम्प्रारः।

विकेत--दसके अभिरित्त किनुरक्करण एशीयात स्वीप आदि और है।

२४६६ चार्रिमित्रों की ऋथा--श्रजयराज । पत्र स० ४ । मा० १०१ XX इ.च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल स० १७२१ ज्येष्ठ सुदी १३ । ते० काल स० १७३३ । पूर्ण । वे० स० ४५३ । च भण्डार ।

२५७०. चित्रसेतकथा । पत्र स०१६। ग्रा० १२×५ इव। भाषा-सस्कृत । विषय-क्या। र० साल ४। ते० दाल म०१६२१ पीप बुदो २ । पूर्ण । वे० स० २२। व्य भण्डार।

विशेष--श्लोक मध्या ४६५ ।

२५७१ चौश्राराधनाडियोत कथा—जोधराज । पत्र स० ६२ । मा० १२५४७३ इ व । मापा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल ४ । ले० काल स० १६८६ मगमिर सुदी च । पूर्ण । वे० स० २२ । घ मण्डार ।

विदीय-म० १८०१ की प्रति ने लिखी गई है। जमनालाल साह ने प्रतिलिपि की थी।

स० १८०१ चावसू" इतना भीर लिखा है। मूल्य- ४) ≥)।।) इस तरह कुल ४।।≥ लिखा है।

२५७२ जयकुमारमुलोचनाकथा ", पत्र स०१६। मा० ७×६ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० स०१७६। इह भण्डार।

२४७३ जिनगुग्सपत्तिकथा । पत्र स०४ । प्रा०१०३४४ इञ्च । मापा सस्क्त । विषय∽ सथा। र० काल ४ । ते० काल स० १७८५ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ३११ । ह्य भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में (वे॰ स॰ १८८) की एक प्रति भौर है जिसकी जयपुर में मांगीलाल चंज ने प्रतिलिपि की थी।

२४७४ जीवजीतसहार—जैंतराम। पत्र म०५। ग्रा० १२४८ इच। आया-हिन्दी पद्य। विषय-धना। र० काल ×। ते० काल ×। पूर्गी। वै० स० ७७६। श्र भण्डार।

विशेष--इसमे कवि ने मोह भीर चेतन के सग्राम का क्या के रूप में वर्णन किया है।

२४७४ व्येष्ठजिनवरकथा । पत्र स० ४। मा० १३×४ इ च। भाषा-सस्कृत । विषय-कथा। र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० ४८३ । ज मण्डार ।

विसेप--इसी मण्डार में (वे० स० ४८४) की एक प्रति भीर है।

२४.६६ च्येष्ठजिनवरकथा—जसकीति। पत्र सं० ११ से १४ । मा० १२×५२ हच । मापा— हिन्दी । विषय-क्या । २० काल × । ले० काल स० १७३७ मासौज वृदी ४ । मपूर्ण । वे० स० २०६० । स्र भण्डार ।

विशेष---जसकीति देवे द्रकीति के शिष्य थे।

२५७७ दोलामारुवर्गी चौपई -कुराललाभगिता। पत्र म० २८ । आ० ८४४ इझ । भाषा-हिन्दी (राजस्थानी)। विषय-भया। र० बाल ४। ते० काल ४। पूर्ण। वै० स० २३८। छ भण्डार। २२६] [क्या-ग्राहित्य

२४०८ बाबामाङ्गीकीवारः । पत्र वं ३ ते ७ । या० ६४८६ इ.च.। प्रापा-शिलो । पित्र-त्या । रंगल ४ । वे नाव वं १३ थाला पुरी । ध्युरों । वे ११९१ । ट स्थार ।

नि**रोप**—१ ४ ६ तमा ६ठा पत्र नहीं है।

हिन्दी राष्ट्र तथा जोड़े हैं। कुन ६ - वेधे हैं विनमें बोलायरू की बाद तथा राजा तल की क्विति साथि का वर्णन है। स्वितन कहा इस प्रकार है—

सलती चैदारी नारव विश्व मेरिट में डॉम रोगी। है बादि तरवस को राज नरे हैं। सलतो से हू स संदर निवदन्त त्यंत्र को हुना। मानवस्त्र की हू कि लेकर कीरवस्त्र की हुना। सेम लंकर होता की क हुना। होता जो सी नारवी को भी नारवेत की भी लिएता नु सबद कोड़ी हुई। निवदन्त स्पेत की लेकर हुँ बीनार हुवादा की नार्ती। होता मु एका एकरवेद की ठाउँ कीडी एक डॉम्ड हुई। सांवर्षक्ताव बाहाया। की नार्त्य हैन(सिंह)मी होती नीवी इन ही नार हुई।।

इन ता नार हुर ॥ इति बी होनानानची ना राज्य नंत्र ना निवा नी माद्या मंत्रुएक । यिवी नाम बुधी - दुवसार सं ११

ना तिञ्चयत्त्वय वांदराह नी योगी हु ज्वार विशिष्टी************** सब क्रक रर हुझ गू नार रह ने नविस्त तथा योहे हैं। कुमरान तथा रायमरल ने नशिस एवं निरसर

री पुंतियों नी हैं। २४४६, डोक्समंद्रमी की वाद^{ारणा}। पत्र तें . ह.। सा. ्र×६ दक्ष । नया-हिन्दी पद । पियत-

नवा: नल×।में नल×।मूर्लः।में टें रेस्स् ।≳चलारः

विमेच—१२ वज वक भव वना नस मिमित हैं। बीच बीच से दोई वी दिने वने हैं।

्रद्रः स्वयोक्तासम्बद्धाः = । यस्तं ४२ ते १। सा १२ ४६ इत्याभास-शिलो हिस्स-स्था र सम्बद्धाः ने सम्बद्धाः विद्योगित से ते २१ इत्यमधार।

विमेर—समोदार नन्त्र ने प्रमाण की नवाय हैं।

२८८१ क्षिम्रचवीद्योशिक्या (रोटसोजक्या)—पं∘स्थानेदायक नं २ । सा १९३८६३ इ.स. । सम्मन्तर । विषय-च्या । रंपल ४ । के प्राप्त नं १ २१ । पूर्वा के तं २११ । स्र समारा

्षिमेच—वृत्तीलमार वे १ शिंद (वे वं ६) यो और है।

२.४६२ त्रिकासभीपीयी (सटतीय) कथा—सुद्युतनिद्। पत्र नं १। बा १३४४ रव । प्रता-तंत्रव (पिरव-नवा)र परा×ाने पान नं १६६ । पूर्व। वे ४६२ । बास्थार। क्रया-साहित्य

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वै० स० १३३७) स्त भण्डार में एक प्रति (वै० स० २५४) ह भण्डार में तीन प्रतिया (वै० स० ६६२, ६६३, ६६४) ग्रीर हैं।

२४८३. त्रिलोकसारकथा । पत्र स० १२ । ग्रा० १०३×६ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल म० १६२७ । ते० काल स० १८५० ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ३८७ । श्र भण्डार ।

विशेष-लेखक प्रशस्ति-

स० १८५० शाके १७१५ मिती ज्येष्ठ शुक्का ७ रिविदने लिखायित प० जी श्री भागचन्दजी माल कोटै पधारया ब्रह्मचारोजी शिवसागरजो चेलान लेवा । दक्षण्याकैर उ माई कै रािंड हुई सूवादार तकूजी भाग्यो राजा जी की फने हुई। लिखित ग्रुक्जी मेघराज नगरमध्ये।

२४८४ दत्तात्रयः । पत्र स०३६। म्रा० १३३४६३ इखा। भाषा-सस्कृतः। विषय-कथा। र० र०काल ४। ले०काल स०१६१४। पूर्णा विष्य २४१। ज मण्डार ।

२४८४ दर्शनकथा—भारामञ्ज । पत्र स० २३ । ग्रा० १२४७ ३ इख । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ६८१ । द्वा भण्डार ।

विशेष—इसके मितिरिक्त आ भण्डार में एक प्रति (वै० स० ४१४) क मण्डार में १ प्रति (वै० स० २६३) क् भण्डार में १ प्रति (वै० स० ३६) च भण्डार में १ प्रति (वै० सै० ५०६) तथा ज भण्डार में ३ प्रतिया (वै० स० २६५, २६६, २६७) भौर हैं।

२४८६ दर्शनकथाकोश । पत्र स०२२ से ६०। मा०१०९४४३ इख । मापा-सस्कृत । विषय-कथा। र० काल ×। ते० काल ×। मपूर्ण । वे० स०६८ । छ भण्डार ।

२४२७ दशमूर्खीकी कथा । पत्र स० ३६। ग्रा० १२×५१ इख्र । मापा-हिन्दी । विपय-कथा । र० काल × । ते० काल स० १७४६ । पूर्ण । वे० स० २६० । क मण्डार ।

२४८६ दशलच्याकथा — लोकसेन । पत्र स० १२ । मा० ६३ ४४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८६० । पूर्ण । वे० स० ३५० । आ मण्डार ।

विशोप-ध भण्डार में दो प्रतिया (वे० स० ३७, ३८) भीर हैं।

२४८६ दशलेल्याकया । पत्र स० ४ । आ० ११४४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । २० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ३१३ । छा भण्डार ।

विशेष-इ भण्डार में १ प्रति (वे० स० ३०२) की छौर है।

२४६० दशलक्षात्रतकया-श्रुतसागर। पय स० ३। भा० ११४५ इ व । मापा-मस्कृत । विषय-कया। र० काल X। ले॰ काल X। पूर्ण। वे० स० ३०७। श्रु भण्डार। ण्प्रश्रे दामक्षत्रा—मासम्बद्धापण तं रे । सा ११ ४० दस्य । जला-दिक्तीपक्षः। पित्रस्य रवासर कस्य ४ । तं कस्त ४ । पूर्ण ∤रे सं ४१६ । इस सम्बद्धारः

पिनर—एक मिनिरेक का सम्बार में १ श्रीत (ते सं ६०६) का सम्बार में १ श्रीत (ते सं ६०६) का सम्बार में १ श्रीत (ते सं ६ ४) का सम्बार में १ श्रीत (ते सं ६ ४) का सम्बार में १ श्रीत (ते सं ६ ४) का सम्बार में १ श्रीत (ते सं ६६०) और है।

२४६२ वानसीवारपभाषनाच्या पातास्या \sim सस्यसुरुष्ट्रास्य । पत्र $t \in \{1, ar t \in X_{i, t} \in$

रिमेप—स्वीकच्यार वे एक प्रकेट (वे वं २१७६) वी और है। जिस पर केवल कन औरत तथ कालना द्वां निका है।

श्वन्ति वेदराजवस्तराज जीवई—स्वेतवेदस्टि विन सं १६१ वर्ष ११४८३ इक्च । प्राया— हिन्दी शीववर—स्मा १९ सम्म ४) ने सम्म ४ । पूर्व (चे सं १ ७ । क सम्बद्धार ।

९.११६४ वेगकाकमस्याम्म मानवार्गर मेशाचा १९०८६ देशा वस्ता-संस्कृत। विदय-रचा। रंकार ×) से मानवें १०११ वर्गतक कुछै ७। अपूर्णः से सं १६९९। का सरगरः।

% प्रदेशं हान्यक्रमण्यम्भं — पंचान्नेत्रायपंच ७ । या ६८६३ इत्रः। जाला-संस्थायः विकल् गणाः र गला८ । विकास ४ । पूर्णाः वे देवेदः इत्यासारः ।

विमेप—इद्भाष्यार ये वी प्रतियां (वे सं कद्दक ही केहल) सीट है।

म्प्रदे\$ ह्याद्राजनकथानंस्यू—ज्याधनम्सासर। पण र्थं ६२ । सा ११×६३ इझा। भारा-दिनी । र राज्य ×ाने साम संहर्षकथानुद्रापा पूर्वा श्रेष्ठं १६८ । स्टब्स्यार।

विकेश-निम्म क्यांकें भीर है।

मीन एक्त्रभीक्या-— तं ज्ञानवालर त्रालां---- दिल्ती ।

श्रुंतलंबकारवा— ॥ ॥ ॥ वीषिकार्यवर्गीवयां— ॥ हर्षाः ॥ हिन्दीः ए वक्तातं १७६६ निवद्रकारविकाना— ॥ सावतावार नायां— हिन्दीः।

र्शियोजनस्या--- ल ल

शिक्षा-नं सप्रदेश की रचना के सामार वर इसकी रचना नी नई है।

कथा साहित्य]

व्य भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० १७२, ४३६ तथा ४४०) ग्रीर हैं।

२४६८ धनदत्त सेठ की कथा । पत्र स० १४। मा० १२६ ४७५ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-

२४६६ धन्नाकथानकः । पत्र स॰ ६ । ग्रा० ११ ई-४५ इख्रा । भाषा—सम्कृत । विषय—कथा । र० काल 🗙 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० ४७ । घ भण्डार ।

२६०० धन्नासालिभद्रचौपई । पत्र स०२४। ग्रा० द×६ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा। र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स०१९७७ । ट मण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । मुगलकालीन क्ला के ३८ मुन्दर चित्र हैं। २४ से झागे के पत्र नहीं है । प्रति मधिक प्राचीन नहीं है ।

२६०१ धर्मबुद्धिचौपई — लालचन्द। पत्र स० ३७। मा० ११५ ×४३ इख्र। विषय-कथा। भाषा-हिन्दी पद्य। र० काव स० १७३६। ले० काल स० १८३० भादवा सुदी १। पूर्ण। वे० स० ६०। स्व भण्डार।

विशेष —खरतरगच्छंपति जिनचन्द्रसूरि के शिष्य विजैराजगिए। ने यह ढाल कही है। (पूर्ण परिचय दिया हुमा है।

२६०२ धर्मबुद्धिपापबुद्धिकथा । पत्र स०१२। ग्रा०११×५ इख्रः। भाषा–सस्कृत । विषय– कथा। र०काल ×। ले०काल स०१८५५। पूर्ण। वे०स०६१ । स्व भण्डार।

२६०३ धर्मवृद्धिमन्त्रीकथा—वृन्दावन । पत्र स० २४ । ग्रा० ११×५३ इख्र । भाषा–हिन्दी पद्य । विषय–कथा । र० काल स० १८०७ । ले० काल स० १६२७ सावरण बुदी २ । पूर्ण । वे० स० ३३६ । क भण्डार ।

नदीश्वरकथा—भ० शुभचन्द्र । पत्र र्स० ८ । ग्रा० १२×६ इद्य । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६२ ।

विशेष—सागानेर में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी।

छ भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ७४) स० १७८२ की लिखी हुई भीर है।

२६०४ नदीश्वरिवधानकथा—हिर्पेशा। पत्र स० १३। झा० ११६४५ इख्रा भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३६४। क भण्डार।

२६०६ नदीश्वरिविधानकथा । पत्र स०३। भ्रा०१० $\frac{2}{5}$ \times ४ $\frac{2}{5}$ इच। भाषा—संस्कृत । विषय— कथा। र० काल \times । पूर्ण। वे० स०१७७३। ट भण्डार।

२६०७ नागमता" । पत्र स० १० । आ० १२×५६ इ च । भाषा-हिन्दी (राजस्थानी) । विषय-कथा । र० काल × । ने० काल × । पूर्या । वे० स० ३६३ । ग्र्य भण्डार ।

विकेर—यद्वीर चीत भाग विम्न प्रकार 🛊 ।

भी भागपता तिकारो---

नयशि करद वर बान सेई नद 'करद गुन्हारी शेव ॥१॥ करह तम्बाधी क्षेत्रमह विश्वपाद तैवालीया । कार बेगीववड हिल्बविक बर, धवर वेच बोलाबीका : ३०। बार देश माराध विका, करद रामारी केंद्र । मनर हीरापुर बारानु अजीवा, बाह्य हुर वेखरवेव ॥१॥ राज वैज्ञारात्तर मध्यक वाले निरमत गीर । बंक नवड मापीरनी, बच्चाह पहलह शीर (I'm) बीर मेर्ड क्षेत्र बोक्सक सामी पछि प्रयापार । बार्ग बनारण पतीन को बहु, प्रमुद्ध पर्यन्तार ॥१॥ बक्क धरमानी मिहा वेवता. मार्र तिसम्बद्धि प्रधान । नेना तरहर मनाम् बु धानर पात चेवपा धरवद श्वर ॥५॥ राज योक्स्या के बाडोर्ग याचे बर ही बाह । हाले पुर्वापत कर**े काले गुर्वाणा भार**ात्सा धान्हे मुची नाद गर, बाले क्लीमी नावधै । बाब्द्रब क्षेत्रद रामणी । तरि क्ख बीर वरावडी शब्स जार देवस करलुट, देवदी राह मच चूंद स कारी । क्षा वर्रका वर्धना, मानो राहनो नानावाह वाही ।।४।।

बनर ही राष्ट्रर पाटका भगीवत, गाहि हर केवारवेव ह

7 64-

एक कावितिक क्यार नामी विश्वीद्धी भरतार । वक तकार विर मध्यामी रामाएं बानी बंधारे ।। रामाइक व्यापित क्यापीत कुछ विश्व नगर स्वूब्द । व्यापित कार्रीर विश्व पंत्रीतिक रामाइ वाच्य गर्थ केवर स्वत्र करर पुष्प वाद्य वृत्री द्वा कोव्यार नामी स्वाप्तीय नगरार एक कार्यभितिक कर बानी ।।।।। सम्मादीय नगरार एक कार्यभितिक कर बानी ।।।।। चद्र रोहिगी जिम मिलिङ, तिम घर्ण मिली भरतार नइ ॥
तित्य गिरांग्ण तूठङ बोलइ, ममीयविष गयङ छडी ।
इक तगाइ शिर बूठङ, उठिङ नाह हुई मन सती ॥
मू घ मगलक छाजइ, ।
बहु कासी भमकार डाक छडा कल वाजइ ॥
इति श्री नागमता सपूर्णम् । ग्रन्याग्रन्य ३००७

पोथी ग्रा॰ मेरकीति जी की ।। कया के रूप मे है। प्रति ग्रशुद्ध लिखी हुई है।

२६०८ नागश्रीकथा-- ब्रह्मनेसिटन्त । पत्र म० १६। मा० ११३×५ इच । भाषा-सम्कृत । विपर--पथा । र० काल × । ले० काल स० १८२३ चैत्र सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ३६७) तथा ज भण्डार में १ प्रति (वे० स० १०६) की भीर है।

ज भण्डार वाली प्रति की गरूढमलजी गोघा ने मालपुरा मे प्रतिलिपि की थी।

२६०६ नागश्रीकथा—िकरानसिंह। पत्र स०२ ७५। मा० ७३×६ इच। भाषा—िहन्दी। विषय-कथा। र० काल स०१७७३ सावरण सुदी ६। ले० काल स०१७८५ पौष बुदी ७ । पूर्ण। वे० स०३५६। ङ भण्डार।

विशेष—जोबनेर में सोनपाल ने प्रतिलिपि की थी। ३६ पत्र से भागे भद्रवाहु चरित्र हिन्दी में है किन्तु अपूर्ण है।

२६१० नि शल्याष्टमीकथा । पत्र स०१। ग्रा०१० \times ४ $\frac{2}{3}$ इक्क । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा। र० काल \times । ते० काल \times पूर्ण । वे० स० २११७ । श्र्य भण्डार ।

२६११ निशिभोजनकथा—ब्रह्मनेमिटन्त । पत्र स०४० से ५५ । मा० ८३×६३ छ । भाषा— सस्कृत । विषय—कथा । र० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० स० २०८७ । स्त्र भण्डार ।

विशेष—स्व मण्डार में १ प्रति (वे० स० ६८) की भीर है जिसकी कि स० १८०१ म महाराजा ईश्वर सिंहजी के शासनकाल मे जयपुर मे प्रतिलिपि हुई थी।

२६१२ निशिभोजनकथा । पथ स० २१ । घा० १२×५६ इखा भाषा-हिन्दी पद्य । निषय-कथा । र० काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वै० स० ३८३ । क नण्डार ।

२६१३ नेमिन्याह्लो । पत्र स॰ ३। मा० १०×४ इ.च.। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। र० माल ×। ले॰ काल ×। मपूर्णा। वे॰ स॰ २२५५ । आ भण्डार।

```
१५२ ] [ अभा-साहित्य
रिकेप-मार्तिक-
```

नक्षरिपूरी राजिनाह कम्यनिजन राज्य सारो । तत तरेज भी नेगती हू बोबल कराय तरीये ।। सम्बन्ध को अधी तेज राज्य राज्य तरीये ।। यास्य राज्यों भी मोनी सो बोरती हूं हुती ।। सम्बन्ध करों में स्वतियों के सार्थ को । हुती सम्बन्धी हूं भी री गर्व स्वताय युपनायों सो ।।

प्रति संबुद्ध एवं बीर्स है।

२६१४ नेसिराकशक्तमक्का—गोरीकृत्यका प्यार्थ ६ । या १ ४४ _१ रख । शरा-दिशी। विद⊷्षका १ राज वं १ ६३ संबादण दुरी ४ । से कस्त ×ाक्यूकी के उं २२६ । या सम्बद्धाः

> श्रीके कोठि पर नाहि रै नाहर बहुतर प्रमाण ।।२।। ग्रीन्यक— राजन नैज राजो ज्याचनों मी भागको मो नरतारी ।

प्रजन नन क्या न्याहमा वा वावका वा वरवाच । क्या द्वस दुस्ती क्या वी वावकी युक्त बयार ।।

क्रमण— अन्य शासक योग कुमयो नार मेम्बयार ए । इस्तु शासरा याद वरिक्ष बांच कुम कुम्मर ए । बी नेव राजन करन गोरी शास परंज बसावार । कुशर खोष्का शासि शासि पार्टी पार्टी पार्टी पार्टी पार्टी पार्टी पार्टी माना श्रीको श्रीको स्थापन विकास किस्तु स्थापन अस्ति ए ।।

्रतत बाने वर कर की बाल की है वह वपूर्ण है।

१६१४ प्रयाज्याल-विष्रुष्टमी।पत्र वं १। घा १२३४६५ इ.स.। पारा-वंतरुषः।निवद--क्या।र कन्न ×ात्रे कक्ष ×।तसूची।वे सं २ ६ थि क्यापा।

निक्रीय-केवल दश्यो पत्र है। क अच्चार में (सीर्व (वे वं ४१) सपूर्ण बीर है।

म्या-माहित्य]

२६१६ परमरासद्या ' । पत्र स०६। ग्रा०१०१८४३ दञ्ज। भाषा-मस्ट्रत। विषय-क्या। र०काल ∨। ले०कान ⋌।पूर्ण। ये० म०१०१७। स्त्र भण्डारा।

२६१७ पन्यियानकथा—सुरालियन्द्र । पय न० २१ । आ० १२×४ उद्य । भाषा-हिन्दी पप । विषय-क्षत्रा । र० काल न० १७८७ फागुन बुदा १० । पूर्ण । वे० स० २० । मा भण्डार ।

२६१= पत्यियानत्रतोषास्थानक्रया—ध्रुतसागर। पत्र स० ११७ । मा० ११५४ । ज्ञ । भाषा-सम्कृत । विषय-रक्षा । र० काल ४ । ले० गाल ४ । पूर्ण । वे० स० ४५४ । का भण्डार ।

विशेष —ाम भाष्टार में एवं प्रति (ने० न० १०६) तथा ज भण्डार में १ प्रति (वे० स० ६३) जिमरा ले॰ काम म० १६१७ दावि है भीर है।

३६१६ पात्रदानस्था—त्रह्म नेमिटत्त । पत्र म० १ । मा० ११×८३ उद्य । भाषा—मन्तृत । विषय— षया । र० गाल × । ले० गाल × । पूर्ण । वे० स० २७८ । स्त्र मण्डार ।

विरोप - ग्रामेर में प० मनोह लालजी पाटनी न लिसी थी।

२६२८ पुर्याश्रवप्रधाकोण-मुमुन्तु रामचन्द्र। पत्र स० २००। घा० ११६८ इन । भाषा-सस्तृत । विषय-करा। र० नान ४। ले० नान ४। पूर्ण । वे० न० ४६८। क भण्डार।

विशेष-- इ भण्डार में एक प्रति (वे० स० ४६७) तया छ भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ६६, ७०) स्रोर हैं किन्तु तीना ही श्रपूर्ण हैं।

२६२१. पुरयाश्रवप्रयाकोशा—दौलतराम । पत्र म० २४८ । धा० ११३४६ इख । भाषा-हिन्दी ग्रा । विषय-नया । र० काल स० १७७७ भादवा मुदी ४ । ले० काल स० १७८८ मगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ३७० । स्र भण्डार ।

विमेष--- महमदावाद में श्री समयनेन ने प्रतिलिपि की थी। इसी मण्डार में १ प्रतिया (वे० स० ४३३, ४०६, ६६४, ६६६, ६६७) तथा छ मण्डार में ६ प्रतिया (वे० स० ४६३, ४६४, ४६६, ४६६, ४६६, ४६६) तथा च मण्डार में १ प्रति (वे० न० ६३४) छ मण्डार में १ प्रति (वे० न० १७७) ज भण्डार में १ प्रति (वे० स० १३) में मण्डार में १ प्रति (वे० स० १६४६) स्वीर है।

२६२२ पुरुवाश्रवकथाकोश । पत्र स० ६४ । घा० १६×७ ई इख्र । मापा~हिन्दी । विषय-मया । र० काल ४ । ते० काल स० १८८४ ज्वेष्ठ मुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ५८ । ग्रा मण्डार ।

विशेष-कालूराम साह ने प्रन्य की प्रतिलिपि खुशालचन्द के पुत्र सोनपाल में कराकर चौधरियों के मंदिर में चढाई।

इसके मितिरिक्त ड भण्डार में एक प्रति (वे० स० ४६२) तथा ज मण्डार में एक प्रति (वे० स० २६०) [मपूर्यों] भीर है।

```
९९४ ]
[ क्यां-साहित्य
२६ ३. पुरवाधवकताकोशा—टेकचम्यु १वण सं १४१ । धा ११<sub>९</sub>× ३वा । माना-दिलो तम ।
```

२६ %, पुरवाधरक्योकीश—टक्चम्य १४४ था १११ था ११६४ इका। मास≔ी∤नीययः। नियन-भमा।र∷ननतर्त्तरस्य ११२ ।ति याव X1पूर्णावे सं ४६७ ।क नम्यारः।

६२४ पुरुषोक्षकसम्बद्धाः की सूची-----। पण सं ४ । सा १६५८६ इत्रः । प्रापा-दिली । विदय-क्यान्द कल ४ । से नास ४ । पूर्वाने सं १४६ । ऋष्यारः ।

६२४. पुरुषोकसीम्बरक्यार—सुबकीरि । पर शं १ । या ११४२ वस । बला-संस्ट्रा । दैपन-स्वा । र सक्त ४ । वे पाठ ४ | वर्ष वे देश | का स्वार ।

विरोप—नाचण्डार में एक प्रति (वे सं १६) ग्रीर है।

२६२६ पुष्पांबकीक्रणकमा—किनदास। पर वं ६१। या १ _४८०_० दक्षः चला⊸संखट। सियद-स्वाःर राज्ञ ×ात्रै राज्ञ वं १६७० कदक कुरी ११।पूर्णा वे सं ४७४।क सम्बार।

विमेर---व्ह प्रति वानव वेस विवत बाटकन नवर में भी वालुपूत्र्य वैत्वास्त्व में बहुर ठावरकी के लिएस

२६२७ पुष्पांतक्रीतनिषयानकथाः T । पत्र वं ६ वं १ त्याः १ $\times v_q$ इक्षः । प्राया-संस्त्यः । एपय-स्थाः एं कात्र \times । ले. यात्र \times । यपूर्णः । ते. वं २९१ । च त्यवारः ।

२६३८, पुर्णाबक्तोअध्यक्तमा—कुरासिकस्य । गर्वादेशीया १२८८, श्रष्टाशाया-दिस्पीयक । विक्य-स्थार कल ×। गंगमार्व १६४२ व्यक्तिक बुरो ४ । दुर्शा (वे वं ६ । अस्य स्थार ।

विक्षेत्र—क प्रध्यार ने एक गाँव (वें चं १६) की घीर है जिसे सहस्था थोबी पदासास्त ने वस्तुर में अविस्तिर नी थी।

२६२८ मैताकप्योतीर्मार्मापवर्षस्य १९।मा ×४४६व । क्या-कश्वतः। विशव-नदाः। र कर्माते सार्वास्य । स्पूर्णार्थस्य विश्वतः

र्वेद अक्षास्त्राक्षकचा—सम्बद्धाः पर चार्याः १,४८८ ६५ । साम्याः सम्बद्धाः वस्ताः वस्ताः वस्ताः वस्ताः वस्ताः व

विमेप—च्या जन्दार में एक बीट (वे सं ७३१) मीर है।

क्ष्म १ अध्ययस्तात्रकामा—विमोदीस्राका । यत्र नंं १९७ । सा १२ ८७ । सा । याना हिन्दी पट । दिवस–पदा । र जला सं १७४० सामय गुरी १ । वे जला ना ११४६ । स्यूर्ण । ये तं २२ १ । सा जनारा ।

क्षाराः । विदेश—नीक वा वेचन एव वच वन है। इन्हें बन्धिएक क्षान्य में २ प्रतिके (वे से ११६ ११४) सुनवार के १ प्रतिको (वे से

१ । २३) तथा मह बन्बार में हुन हैं में १९६) वी स्त्रीर है

म्या साहित्य]

२६३२ भक्तामरस्तोत्रकथा-पन्नालाल चौबरी । पत्र स० १२८ । ग्रा० १३४५ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल स० १६३१ फागुण सुदी ४ । ले० काल स० १६३८ । पूर्ण । वै० म० ५४० । क भण्डार ।

्६३३ भोजप्रबन्ध । पत्र स०१२ से २५। ग्रा०११ $\frac{3}{5}$ ×४ $\frac{3}{5}$ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय—कथा। र० काल \times । त्रे० काल \times । प्रपूर्ण । वे० स०१२५६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-इ भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५७६) की भीर है।

२६२४ मधुकेटभवध (सिहपासुरवध) । पत्र स० २३। मा० दर्×४६ इख । भाषा -सम्कृत । विषय-क्या । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३५३। छा भण्डार ।

=६३४ मधुमालती स्था—चतुर्भु जदाम । पत्र स० ४८ । म्रा० ६×६ दे इच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा। र० काल × । ले० काल स० १६२८ फागुए। बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ५८० । इ. भण्डार ।

विशेष—पद्य स० ६२६। सरदारमल गोधा ने सवाई जयपुर मे प्रतिलिपि की थी। अन्त के ५ पत्रों में स्तुति दी हुई है। इसी भण्डार में १ प्रति [अपूर्ण] (वे॰ म॰ ५६१) तथा १ प्रति (वे॰ स० ५६२) की [पूर्ण] भीर हैं।

२६३६ मृगापुत्रचढढाला । पत्र स० १। भा० ६५ ×४ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण । वे० स० ६३७ । आ भण्डार ।

विशेप-मृगारानी के पुत्र का चौढाला है।

२६३७ साधवानलकथा—आनन्द। पत्र स० २ से १०। भा०११ \times ४३ इख्र । भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल \times । ले० काल \times । प्रपूर्ण। वे० स०१ = प्रण्डार।

च्हरेद सानतुगसानवित्चौपई—सोहत्तिवज्ञय । पत्र स० २६ । ग्रा० १०४४ रे इख । भाषा हिन्दी पद्य । विषय-क्या । र० काल ४ । ले० काल स० १८४१ कॉत्तिक मुदी ६ । पूर्ण । वै० स० ५३ । छ भण्डार ।

विशेष-प्रादि म तमाग निम्न प्रकार है-

मादि---

ऋषभ जिएाद पदावुजै, मधुकर करी लीन । भागम ग्रुएा सोडसवर, श्रित शारद थी लीन ।।१।। यान पान सम जिनकन, तारएा भवनिधि तोय । भाप तर्या तारे श्रवर, नेहनै प्रस्ताति होइ ।।२।। मावै प्रसमु भारती, वरदाता सुविलास । चावन श्रस्थर वी भरयौ, श्रस्थ खजानो जास ॥३॥

```
235 ]
                                                                               इधा-सादित्य
                          युक्त करमा केई सनि बना, एह की वे हुनी सक्ति !
                          दिम सूकाइ तेइवा पद नीको निये भक्ति । ४ ।
                  पूर्ण नाव मुनीबह सुर वर्ष बुद्धि मास सुनि नसे हैं। (साले पत्र पट्टा हुमा है) ४७ हाल है।
            ६३६ सुकापक्षित्रसम्बद्धा-सुनसासर्।पत्र वं ४। या ११४३ इ.च.। प्रापा-समुद्रः। निमय-
चना।र राख्र ×ंवे राम सं१००३ पीप दुरी ६। पूर्ती दे सं४४। इस प्रचार।
           विश्वेय-कॉर स्वाचंद ने प्रतिनिधि की यो।
           २६३ <u>स</u>रू विकासकार्या—सामप्रसः। पदश्च ११ । सा १३×४३ ६४ । त्रापा-संस्कृतः।
विश्व-क्या। र नाल ×। के नाम सं १ ३३ सावन सुदी २। वे सं ७४। छ बच्छार।
           विकेय----जक्पुर ने नेमिनाक चैत्रालय में नानुचाल के चठनार्व अतिसिए हुई वी ।
           २६४१ <u>स</u>्कादकिमिशनक्या<sup>-----</sup>। य्यसं ६ से ११। या १ ×४<sub>६</sub> इ.च. ताता स्पन्न था।
विपर-नवा।र नल×।के कल वं १६४१ प्रज्युत बुदी १ । स्पूर्णा देश । सामकार।
           विकेप-स्वत् ११४१ वर्षे फान्युन युवी र शीतुन्तर्ववे वनस्त्रात्वत्ती सरस्त्रतेवच्चे सीहूंबाहुबावार्यात्वये
क्टुपरिक जीत्रधनरिकेदा ठराष्ट्री बहुपरिक बीधुवर्षप्रवेचा वरिकम्प युनि विजयन्त्रवेदा बर्वेम्बरालक्ष्यमे बालसाबीने स्थवी
सेता अभा क्षेत्री तरपुता बंबदी बञ्चय यासत नासु, याभाग सम्बग्न तेपानको संबदी राजु बार्य बीनविधि तरपुत्र।
हेक्स रियम्बान सेंबे से बाह हेक्सन नामी हिक्सिये एवं रिवे सेहिग्रीवृक्तकतीरवालकं सिकारतं ।
             ६४२ मेवसाबाजनीयाधनसमा" । रण सं ११। या १९४६३ ६४। माना-संस्था।
 विथ्यंत्रमार नल ≾ाके नाल ⊁ापूर्णावै तं १।य जन्दार।
           विश्वेय-व्यायकार में युक्त तरि (वे वे २०१) और है।
             ६५३ सेयमाकामरकमा । ११ र्व १ । या ११×१ द व । मारा-संस्कृत । विवय-नवा ।
 र नल×।के नल×।पूर्ताके तं १ ६। भ्राज्यार।
           विमेप—स् बच्चारमे एक प्रदि (वे सं ४४) की भीर हैं।
            ≉६४४ मेवमासामनक्या—सुराक्ष्यद्। पनस ६ । या १ ×४३ ६४ । नामा–रिगी ।
```

६४४ मौतिवतकमा—गुग्नमद्रापद तं १। मा १२४६३ दंव। वाया-संस्कृत । वियम

स्वित–नदा[रः नान x । में नान x । पूर्ण । वे चं ३ १ । % भणार ।

द्याार राम ≾ंके पाल Xापूर्वी वे प्र∀रे। घणधा

कथा साहित्य 🔒

२६४६ मौनिव्रतकेथा ' । पत्र स०१२ । भाग ११३×५ इ व । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । पूर्ण । वै० स० ६२ । घ भण्डार ।

२६४७ यमपालमातगकीकथा । पत्र स० २१। मा० १०४४ ६ च । भाषा-सस्कृत । विषय-क्या । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० १४१ । ख भण्डार ।

विशेष—इस कथा से पूर्व पत्र १ से ६ तक प्रारथ राजा दृष्टात कथा तथा पत्र १० से १६ तक पत्र नमस्कार कथा दी हुई है। कहीं २ हिन्दो अर्थ भी दिया हुआ है। कथायें कथाकोश में से ली गई हैं।

२६४८ रहाबधनकथा—साथूराम । पत्र स० १२ । मा० १२३४८ इ व । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६१ । छा भण्डार ।

२६४६ रत्ताबन्धनकथा । पत्र स०१। मा०१०३×५६ च। मापा-संस्कृत । विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स १८३५ सावन सुदी २। वे० स० ७३। छ मण्डार।

२६४० रत्नत्रयागुग्रकथा---प० शिवजीताता। पत्र स० १०। मा० ११६४६ ६ च। मापा सस्कृत। विषय-कथा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण। वै० स० २७२। स्र भण्डार।

विशेष--- स्व भण्डार मे एक प्रति (वै० स० १५७) भौर है।

२६४१ रत्नत्रयविधानकथा--श्रुतसागर। पत्र स० ४ । भा० ११३×६ इ.च.। भाषा-सस्क्रत । विषय-कथा। र० काल × । ले० काल स० १६०४ श्रावरा। बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ६५२ । इ. मण्डार ।

विशेष-इ मण्डार मे एक प्रति (वै० स० ७३) भीर है।

२६४२ रझावित्रज्ञतकथा—जोशी रामदासः। पत्र स०४। झा०११४४२ इ.च.। भाषा—सस्कृतः। विषय–कथा। र० काल ४। ले० काल स०१६६६ । पूर्ता। वै० स०६३४। कः भण्डारः।

२६४३ रिवेष्ठतकथा—श्रुतसागर। पत्र स०१८। भा०६० ४६ इच । भाषा–सस्कृत । विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०३६। ज भण्डार।

२६४४ रिविमतकथा—देवेन्द्रकीित्ता पत्र स० १८। मा० ६×३ इ च (भाषा-हिन्दी) विषय-कथा। र० काल स० १७८५ ज्येष्ठ सुदी ६) ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २४० । ह्यू भण्डार ।

२६४४ रिविमतकथा—भाऊकवि । पत्र स० १० । मा० ६३×६३ ६ च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-कथा । र० काल × । ते० काल स० १७६४ । पूर्श । वे० स० ६६० । अ भण्डार ।

विशेष—छ मण्डार में एक प्रति (वै० स० ७४), ज मण्डार में एक प्रति (वै० स० ४१), मा मण्डार में एक प्रति (वै० स० ११३) तथा ह भण्डार में एक प्रति (वै० स० १७५०) भीर हैं।

```
845 ]
                                                                             ि क्या-साहित्व
           २६४६ राठीवरतनमहेरादशोत्तरी ***! वन तं १ते । या १३४४ इन । मला-शिली
[रामस्त्राती] विषय-क्या । र नास सं १६१६ वैश्वास स्ट्रास्त है। से नास ≾ । सपूर्त ।े वे सं १७७ । स
क्ष्मार ।
           विकेष---प्रतित पाढ विका अधार है---
                                 सावित्रीकथना भीना सानै सामही दाई।
   रहा---
                                 नुंदर शोचनै इंदिर लड बबाइ ॥१॥
                                 हवा वदिश गेंदल इत्त्व वदीना मेह वदल ।
                                 तुर प्रवन क्वीयां एक्स विश्वीमा नाइ शक्ता ॥२॥
                                 धी बुरवर फुरवचरे, वैकुंड कीवालात ।
                                 रामा रक्तामकारी चुर श्रविकत बह वाद ॥३॥
                                 मच वैकासक विस्थि नवधी पवरीयर्थ बरस्थ ।
                                 बार कुक्त शेवप्रीस्ट्र, होनू धुरक वहस्य mei
                                सोति करी किरीनी वर्ष एको रहन रवाल ।
                                 त्तरा दूरा संक्लाड जड नोटा पूराल ॥३,॥
           क्ली राज बाला जनेकी राजा का ज्यार दुनर दिसी भनि बाद वैसी ॥ इति भी राभीवरदान महेस
 द्यतीलवरी वयनिका संपूर्ण I
           २६४७. राहिमोजनक्या—सारास्त्र : वन वं । या ११<sub>४</sub>४४ इ.च । त्राना-दिनी त्रा ।
 प्रियस–समा।र काल ×। में काल ×ापूर्ण स्मे वं ४१६३ का जवार ।
           २६४८, हिंदा राववर्ष १२। से यहा×ारे ए ६ राज अवहार।
           विश्वेष--- इसदा इसरा नाम निविजीयन क्या नी है।
           ६६४६. रात्रियोशक्तका—किशनसिंह। यत वं १४। ता १६४९ इंप। बाला-क्रियो स्व ।
 दिस्त-क्या । ए कार से १७७३ मानस युरी ६ । में नाम ते १६२ भारता पूरी १ । १मी । में ६३१ ।
```

विक्रेय-मा क्यार में १ और मीर है क्यान से जान में १८ ३ है। नापरान बाह ने मीर्तनिति

कररीयो। १६६ रात्रिभावनकथा⁻⁻⁻⁻⁻ापन तं ४ वा १३४८ दंप। जला-संबद्धारियम-प्या। र कल ४ वे कल ४ वसूत्वी। वे तं २६१। वास्प्यारी दिक्षे----प्रचलार वेदकार्था (वे वं १६१) सोर है।

क अच्छार ।

कथा-माहित्य]

२६६१ रात्रिभोजनचौपई । पत्र स०२। मा०१०×८३ दश्च। भाषा-हिन्दी। विषय-नथा। र० नान ×। ने० नान ×। पूर्ण। वे० सं० ५३१। स्त्र मण्डार।

२६६२ ह्रपसेनचरित्र । पत्र स०१७। मा०१०×४५ द व । भाषा-मस्रुत । विषय-कया । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६० । ह भण्डार ।

२६६३ रेंद्रव्यतकथा—देवेन्द्रकीर्ति। पत्र स०६। मा०१०४१ इव। भाषा-सस्त्रत। विषय-वया। र० वाल ४। ने० कान ४। पूर्ण। वे० म० ३१२। छा मण्डार।

२६६४ प्रति स०२। पत्र स०३। ले० काल स०१८३४ ज्येष्ठ बुदी १। वे० स० ७४। छ

विशेष--लएकर (जयपुर) के मन्दिर में केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी।

इसके प्रतिरिक्त आ मण्डार में एक प्रति (वे० स० १८४७) तथा स भण्डार में एक प्रति (वे० स० ६६१) भी भौर हैं।

२६६४. रेदब्रतकथा । पत्र स० ४ । आ० ११×४३ डच । मापा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । रे० काल × । पूर्ण । पे० स० ६३६ । क भण्डार ।

२६६६ रोहिग्रीझतवथा--श्राचार्य भानुकीर्ति। पत्र म०१। भा० ११३×५३ इ च । भाषा-मस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ने० काल स० १८८८ जेष्ठ सुदी ६ । वे० सं० ६०८ । श्र अण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ४६७) छ मण्डार में १ प्रति (वे० स० ७४) तथा ज भण्डार में १ प्रति (वे० स० १७२) मीर है।

२६६७ रोहिर्गी घ्रतकथा । पत्र सं०२। मा०११×८ इ.च । मापा-हिन्दी । विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वै० स०६६२। आ भण्डार ।

विशेष--ह भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ६६७) तथा मा भण्डार में १ प्रति (वे० स० ६५) जिसका ने• कान स० १६१७ वैशाख सुदी ३ मीर हैं।

न्द्दः त्तिव्यविधानकथा---पं० अभ्रदेशः पत्र स० ६। भा० ११×४३ इत्र । मापा-सस्कृतः। विषय-कथा। र० काल ×। से० काल स० १६०७ भादवा मुदी १४ । पूर्या। वे० स० ३१७ । च मण्डारः।

विशेष-प्रशस्ति का सक्षित निम्न प्रकार है-

सवत् १६०७ वर्षे मास्या सुदी १४ सोमवासरे धी भादिनायचैत्यालये तलकमढमहाहुगें महाराउ

€

থীংনেশ্বংয়েক্সবংশিনাই থী দুল্যাই কালকাংশেক্ট কালেকীকাই কুনিচুঁ বাংল্যালিকী স্পান্ধানাকৰ কৰিবলালোঁ কৰিবলালোঁই কাম্যালালোকৰ অন্যান্ধানী কা কথা চহুলাৰ্থ ইনাকই স্পান্ধান কৰিবলালোঁ কৰিবলালোঁ কৰিবলালোঁ কাম্যালালোকৰ অন্যান্ধানী কৰিবলালোঁ কৰিবলালোঁ কৰিবলালোঁ কৰিবলালোঁ কৰিবলালোঁ কৰিবলালোঁ কৰিবলালোঁ কৰিবলালোঁ কৰিবলালোঁ

दता। *६६६: रोदियोनिधालकमा-****। यत्र तं या १ ×४३ रखानला-तंतरतः। विदय-कमा। र नस्त ×ावे कस्त ×ापूर्णावे वं १ ३ । चुण्यार।

९६७ क्वोकप्रत्योकसानपंत्रिककमा"।यत्र थं । बा १ ४८६व / बस्स⊢संल्ड । हिस्स– क्यांक्रे नाम × ।र कक्त × ।प्रदीविं संदिश्य । कामकारः।

९६७१ वारियेयुक्तिकमा—सोबस्तकगोशीका। पण्यं २ । या १८९ ६४। वसा—हैन्सी । रियर-क्या । र कल ×ावे काव सं १७६६ । दुर्जी वे सं १७४। व नवार ।

वितेष---पद्भागमा विज्ञाना वै प्रतिनिधि की वर्ती थी ।

विशेष--स्लोक श्रे १४३ है। उठि उत्पीय है।

२६०२ विक्रमचीतीतीचीएई—स्वयचनस्ति। पार्च ११। या १८४५ १४। मा हिनो।तिक-ज्या∣र कल छ १०२४ मलक दुर्ध १ कि कल ४ । पूर्ण १ वं १६२१। ह क्या।

निवेश---नशिकुन्दर के शिह क्रम्य की रचना की थी।

र्म-०३ विष्णुकुमास्त्रनिक्या—सुदक्षाग्रं।पत्र वं द्वाया ११४२ वंपः सपा-संस्कृतः विषय-स्थात्रं सम्बर्भाने काल ४ ।पूर्वाये वं ११ । व्यवस्थारः।

१६५४ विच्युकुमास्यिकका^{™ा} वस्त्री १। सा १ ४४३ द व । यसान्धस्तर । क्यांस्ट कस्त ४ कि सन्त ४ कुर्जाके सी १७१ क्यांसन्धर ।

२६५६ वैद्रशीविवाह—येलएख । पर वं ६ । धा १ ४४३ द व । वाया-विव्यो । विवय-पता । र कल ४ । ते सल ४ । दुर्जा वे वं ११४४ । या व्यवस्था

रिवेप--धार्थि क्षण्याम मिला तकर है---

तिस्त बाद नाही दीच्या करी बाद पूर्व । स्तो रामा राजो साम जगह रेत ॥१। रूप विस्तुत्तत व समस्ती तिस्ता करी विभार । द्वारा स्ति पुन लेरने हुएस जाब हमद साम ॥ द्वारा साम तहे हो रंग सहस के लिए सार नीडी है समी। सीम समग्रा सकथा वालेन्यार विशोधक नेहनी ॥ ग्रन्तिम---

कवनाथ सुजारा छै वेदरभी वेस्तार ।
सुख धनता मोगिया वेते हुवा धरागार ।।
दान देई खारित लीयी होवा तो जय जयकार ।
ऐमराज गुरु इम भर्गी, मुक्त गया तत्काल ।।
मर्गी गुर्गी जे सामली वेदरभी तर्गो विवाह ।
भएगा तास वे सुख सपजे पहुत्या मुक्त मकार ।
इति वेदरभी विवाह सपूर्ग ।।

यन्य जीर्रा है। इसमे काफी ढालें लिखी हुई हैं।

२६०६ व्रतकथाकोश--श्रुतसागर । पत्र स० ७६ । मा० १२×५३ इ व । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ते० काल × । मपूर्ण । वे० स० ८७८ । आ मण्डार ।

२६७७ प्रति स०२। पत्र म० १०। ले० काल स० १६४७ कार्तिक सुदी ३। वे० स० ६७। छ

प्रशस्ति—सवत् १६४७ वर्षे कालिक सुदि ३ बुधवारे इद पुस्तक लिखायत श्रीमद्काष्ठासचे नदीतरगच्छे विद्यागरो भट्टारक श्रीरामसेनान्वये तदनुक्रमे मट्टारक श्रीसोमकीर्त्ति तत्पट्टे म० यश कीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीउदयसेन तत्प-ट्टाधाररण्पीर भ० श्रीतिभुवनकीर्ति तत्पिय प्रह्मचारि श्री नरवत इद पुस्तिका लिखापित खडेलवालकातीय कामलीवाल गोत्रे साह केशव सार्या लाडी तत्पुत्र ६ बृहद पुत्र जीनो मार्या जमनादे। द्वि० पुत्र खेमसी तस्य मार्या खेनलदे तृ० पुत्र इसर तस्य मार्या महकारदे, चतुर्ष पुत्र नातू तस्य मार्या नायकदे, पत्रम पुत्र साह वाला तस्य मार्या वालमदे, पष्ठ पुत्र लाला तस्य मार्या ललतादे, तेपामध्ये साह वालेन इद पुस्तक कथाकोशनामध्य ब्रह्म श्री नर्वदावै ज्ञानावर्णीकर्मक्षयार्थं तिखाप्प प्रदत्त । लेखक लपमन क्षेतांबर ।

सवत् १७४१ वर्षे माहा सुदि ४ सोमवासरै मट्टारक श्री ५ विष्वसेन तस्य शिष्य महलाचार्यं श्री ३ जय-कीर्ति प० दीवचद प० मयाचद युक्ते।

२६७८ प्रति सं०३। पत्र स० ७३ से १२६। ले० काल १५६६ कार्तिक सुदी २। प्रपूरा। वे० सं० ७४। छ भण्डार।

२६७६ प्रति स०४। पत्र स० ८०। ले॰ काल स० १७६५ फाग्रुग बुदी ६। वे० स० ६३। छ् मण्डार।

इनके भ्रतिरिक्त क भण्डार में २ प्रतिया (वै० स० ६७५, ६७६) इः भण्डार में १ प्रति (वे० स० ६८८) तथा द्र भण्डार में २ प्रतियों (वे० स० २० ७३, २१००) भौर हैं।

रद्दः व्यतकथाकोश--प० दामोद्र । पत्र स० ६ । मा० १२×६ द व । भाषा-सस्कृत । विषय-क्या । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० ६७३ । क भण्डार ।

```
२४२ ]
                                                                           ि अभा-साधिस्य
          २६८१ इतकावोश--सम्बद्धीति । वन सं १६४। मा ११४१ दश्च । नाया-संस्थत । दिवय-
नमा।र कल ≿। ने पल ≿ाब्बुर्ल [के सं ४७६ | का क्यार।
          विकेश-इस जम्बार से १ प्रति (के सं ७२) की धीर है जिवका के काल सं १ ६० समझ वरी
र है। लेवाम्बर पूर्णाराज ने बरवपुर में विश्वनी प्रविधिप को वी।
          २६८२, जनवाकोश-केनेम्ब्यीचि । वन वं १ । वा १२४३ इता । वादा-संस्ता विवत-
रमा∤र कार ×। ते काल ×। बधुर्गाः वे वक्का वा वचार।
          विक्रेष--शीच के श्रेष्ठ पत्र नहीं हैं। कुछ वचानें यं वानोवर वी मी हैं। क बच्छार में १ शपूर्व प्रति
(वे सं ६७४) और है।
          २६ ३ अनुस्थानकोश च्या वं १वे १ । या ११×१३ इव । जला-संस्टुत सरस्य सः।
नियम नगा। र नमा×। ने नमासं १६ ६ फतुस पूर्व ११ । बहुर्सा वे सं थ4 । धानवार।
          विकेत---रीक के २२ से २४ तथा हुए है हुई तक के भी पत्र नहीं हैं । बिग्न कवायों का संबंध है----
             प्रयोजनियान स्था ""।
                                                           र्धसक्त पण ३ ते ४
          र, स्वयद्वादरीकवा--वन्त्रभूपय के शिष्य पः व्यवदेव » १ ते ४
            भारतम--वंडक्ककियेस वर्षेत्र पाल्डमीरसी ।
                     बस्तता पंडितामें स इता बस्तव समयः ।।

    रत्नवर्गरिभागक्या—पं रत्नकीचि

                                                           वंसरत बच्च वस
                                                                           के ११
              पोडराकारकका-नं कक्षवेव
                                                            » पम <sub>म</sub> ११ ≝१४
                                                 _
              कित्र किविया स्थान
                                                                        tr & er
                                     २६३ वस है।
              सेयसमाज्ञानवस्था *** ।
                                                                        12 # 12
                                                 _
              रशाकरिकक्षा-कावसन।
                                                              . . 42 8 42
          и. क्षापर्शमीक्राक्या<sup>-----</sup>
                                                                        It It Y
              विकास वासीसीयमा-वामनेव।
                                                 ---
                                                                        Y BYS
                                                _
              रस्वत्रयविभि-चारावर
                                                                        et 8 22
                            धीवर्क मानवानस्य गीतवाधीरपटपृष्टम् ।
          बारम्म-
                            रमाध्यविधि वाचे क्यान्नामविधुत्रचे ।।१।।
          मस्तिम प्रशुस्ति--- नायो गॅडिक्टनलबंधपुर्यनं सर्वेनपुत्रामनेः ।
                            बालास्करणाः अनेत्रवरिया योजानदेशेऽवरण् ॥१॥
```

य शुक्कादिपदेषु मालवपते न्नात्रातियुक्त शिव । श्रीसल्लक्षण्यास्वमाश्रितवस का प्रापयन्न श्रिय ॥२॥ श्रीमत्केशवमेनार्यवर्धवात्रयादुपेयुपा । पाक्षिकथावकीभाव तेन मालवमडले ।। सम्रक्षराप्रे तिप्तन गृहस्याचार्यकृजर । पडिताशाधरो भक्त्या विज्ञप्त सम्यगेकदा ॥३॥ प्रायेगा राजकार्येऽवरुद्धम्माश्रितस्य मे । भाद्र निचिदनुष्टेय व्रतमादिश्यतामिति ॥४॥ ततस्तेन समीक्षो वै परमागमविस्तर। उपविष्टसतामिष्टम्तस्याय विधिसत्तम तेनान्यंश्च ययाशक्तिर्भवभीतैरनुष्टित । ग्र थो बुधाशाधारेगा सदम्मधिमयो कृत ॥६॥ ८३ १२ विक्रमार्कव्यशीत्यप्रद्वादशान्दगतात्यये । दशम्यापिक्षमे कृप्णे प्रयता कथा ॥७॥ पत्नी श्रीनागदेवस्य नद्याद्धम्मेरा नायिका । यासीद्रत्नत्रयर्विघि चरतीनां पुरस्मरी ॥५॥ इत्याशाधरविरचिता रत्नश्रयविधि

११	पुरदरवियानकथा ।	सस्कृत पद्य	प्रश्मे प्र
१२	रज्ञातियानकथा ।	गद्य	प्रश्वे ५६
१३	दशलक्त्याजयमाल—रइघू।	ध्रपञ्ज श	४६ से ५८
१४	पल्यविचानकथा "।	सस्कृत पद्य	४८ से ६३
१४	श्चनथमोत्रतकथा—प० हरिचद्र ।	धपञ्च श	६३ से ६६

मगरवाल वरवसि उप्पणाइ हरियदेण । भक्तिए जिरापुराणपावैवि पर्याद्वउ पद्वदियाखदेण ॥१६॥

१६	चदनपष्ठीकथा—	***	n	६९ से ७१
१७	मुखावलोकनकथा		सस्कृत	७१ से ७४
	रोहिसीचरित्र—	देवनटि	भपभ्र श	७६ से ८१
38	रोहिर्गावियानकथा—	11	33	८१ से ८५

ر ّ			
२४४]			[कमा-सादित्य
	२ व्यक्तनिधिविधान	S	संस्था वहते द
	२१ सङ्ख्यसमीकना-		बब से दह
	२२ सीलक्षविधान-		र्टस्ट्रत क्या इ. से १४
	२३ इत्यादिविधानक		र्तसक्तपच १ [सपूर्श]
			व्यवस्थात्वरो वरस्वतीयच्ये कृशकृशकर्मा-
Hardway		वाद १ सामनासर मानुबदन	antertran geregnam Beleinitt.
		~ापवर्ष १६२ । बा १२०	X३. इता । सरस⊷र्यस्ट्रुट } विषय-क्याः । र
	के काल ×। पूर्णी दे वं	१९१ क्र अमार 1	
701741			धा १२१्×९ इ व । शामा-हिन्दो । विदय-
		हुः।सं कार×। दुर्ख। व	•
ममा। ४∷		film mivifal	ं रहकाक्ष्र जन्मक(री
	विकेश—१व क्याने हैं।		
			क्ष्मच्चारणे १ प्रति (के सं६) ठवा
ह्य बच्चार	मेर बंदि (वे वं रेक्ट)		
			८-३ बळा) थला हिन्दी। विषय—नवा। र
कल X I	क्षेत्रस×। शतूर्थ। वे र	(४६६ टक्कार	
	বি ইৰ —বিদা কৰানী কা	वंद्य है	
	দান	क्तां	विभेष
	क्येप्रहिन वरत्त्वका —	क् राडणर्	र पलार्च १७५२
	व्यक्तिकरारकमा	माह्य द्वि	×
	सपुरविज्ञासमा-	त्र ज्ञानसगर	_
	सप्तपरमन्यामम्बद्धाः—	- कुरावयन्	_
	गुकुर सप्तमीकथा	22	र यालासं १७५३
	व्यक्षविविश्ववक्षा	27	
	बोडराक्सरक्करणा—		_
	मेचनाकाश्रदक्यां —	*	
	चन्द्रवच्छी अवस्था		_
	इत्विविशासक्याः—		<u>-</u> -
	विक्त्वापुरव्स्वा-		_
	46-46-4	•	

गिगेप

र० रात मं० १७६५

मर्सा नाम

पुष्पाजलिमनस्था— स्तुगालयस्य

व्याक्तारापंचमीकथा-मुहावलीयतक्या-

पृष्ठ ३६ में ४० तक दीमक लगी हुई है।

| पत्र सर ६ स ६० । मार ११३ XXई हस । भागा-सरस्त । सिमम-२६८७. अतक्यासमह त्या। र० मान ४ । से० मान ४ । सपूर्ण । दे० स० २०३६ । ट भण्डार ।

विदोप-६० ने माने भी पत्र नहीं हैं।

२६८८ ब्रतकथानमह । पर म० १२३ । सा० १०४८३ इखा । भाषा-नरपृत्व संपर स । विषय-माल 🗸 । लेंद्र वाल पर १५१६ सामण ग्रही १५ । पर्ण । पेर सर ११० । व्य भण्हार ।

रः गात 🗡 । ने॰ गात ने॰ १४१६ साराग	। युद्धा १४ । प्रगा । य० म० ११	०। व्य भण्डार।	
विमेष—निम्न पंचामी पा मंग्रह रै।			
नाम वर्त्ता	भागा	विमेष	
सुगन्यत्यामीत्रतस्था ।	मपन्न न	Malabaja	
श्रन तब्रतकथा ।	53	Reference	
राहिणीञ्चतकथा— ×	Ħ	Refluence	
निर्दोपसप्तमीकथा— ×	31		
दुधारसविधानकथा—मुनिविनय		spreamo	
सुम्बसपत्तिविधानकथा—पिमलर्क	•	time.	
निर्फरपद्र्वमीतिधानकथा—विनय		bristo	
पुष्पाजितविधानम्या-पं० हरिः	•	protection (
श्रमणद्वादशीकथाप० श्रम्भदेन	1 11	Arthrope	
पोडशकारणविधानकथा- "	51	4000Ap	
श्रुतस्कधविधानकथा— "	11	- Contractor	
रुक्मिणीविधानकथा— छ्त्रहे	ोन। "	-	
प्रारम्म जिन प्रणा	म्य नेमीक ससारार्णवतारक ।		

श्रन्तिम पुष्पिका— इति खत्रसेन विरचिता नरदेव कारापिता रुविमिशः विधानकथा समाप्ते ।

रूविमणिचरित वध्ये भन्याना योधकारण ॥

२४४]			1	क्या-मादिः
पहचित्राजकमा-	×		चंस्कृत	_
द्राज्ञसूक्ष्यामकमा	बोक् सेन		*	_
पम्ययम् डीविधान् य थाः	- x		धपम ध	_
बिमराविदिवानकथा-	×	~	•	-
क्रिनपूजापुर वरविधा नव	वा-चयग्दी(d	73	
त्रिचतुर्विश्वविधान	×		र्थसर	_
विषयुगायकोष्टमक्या-	- x			-
शीवविधानस्था	×		77	_
भाष्यविद्यानसम्ब	×		#	_
सुनसपत्तिवानकमा—	- ×	_		_
निरित्ता तरहरें व भीकुक्पनंदित तरहरें व भीकिक्यनंदित । स्टारक भीरक्पनित विजय श्रुपित कर्याति क्रिय व नर्यस्त निर्मात विजय स्वित कर्यात्म क्षिति । विकास क्षाप्त कर्यात्म वर्षित व व नर्या व स्वित कर्यात्म क्षाप्त कर्या कर्या व स्वत स				
विरोद—निम्य ववायो क				
हार्याच्या —	र्व अध्यक्ति	ı	र्वस्तुत	-
क्ष्य चन्त्र क्यानवक्या-			39	
चन्द् तपन्ठी <i>त्रतक्</i> या—	सुराक्षचन्द् ।		ि र् गी	~
वदीरवरमधक्या—			बीस्त्रस	-
विन्युयसपरिक्रमा—			19	~-
***	आदिया ठाकिया		ફિલ્લો	-
रेंबुजरक्या	म क्रिनशास		20	
रहनावविज्ञतकथा	গুক্মগণ্ডি		19	
र्वे अनक्ष्यासंबद्रअ सद्विसागर। १व नं २७। स०१ ×४६। वाला-विकी। विका-				
नना।ऐनन्×।के कर×।क्र	∯1 रे सं र ज	७ । व्ह भग्डार् ।		

/

कथा-माहित्य]

२६६१ व्रतस्थासम्रह । पत्र स०४। म्रा० म×४ इख । भाषी-हिन्दी । विषय-कथा। र० काल ×ा पूर्ण । वे० स० ६७२ । क भण्डार ।

विशेष—रिवयत कथा, श्रष्टाह्मिकावत । पोडशकारणव्रतकथा, दशलक्षणव्रतकथा उनका सग्रह है पोडश-कारणव्रतस्था गुजराती में है।

विशेष-प्रारम्भ के २१ पत्र नहीं हैं।

२६६३ पोडशकारणविधानकथा-प० श्रास्रदेव । पत्र न० २६ । श्रा॰ १०१×४६ इख । भाषा-सस्त्रत । विषय-नथा । र० काल 🗴 । ले० काल स० १६६० भादवा सुदी १ । वे० स० ७२२ । क भण्डार ।

विशेष--- इसके प्रतिरिक्त प्राकाश पंचमी, रुविमग्गोकया एव प्रनतप्रतक्या के कर्ता का नाम प० मदनकीति है। ट मण्डार में एक प्रति (वि० स० २०२६) भीर है।

२६६४ शिवरात्रिच्यापनविधिकथा— शकर्महु। पत्र स० २२। ग्रा० १४४ इख्र । मापा-सस्कृत । विषय-कथा (जैनेतर) । र० काल × । ने० काल × । ग्रपूर्ण । त्रे० स० १४७२। श्रा मण्डार ।

विमेप---३२ ने भागे पत्र नहीं हैं। स्कथपुरासा में ने हैं।

२६८४ शीलकथा—भारामञ्जा पत्र स०२०। मा०१२×७६ इखा भाषा-हिन्दी पद्य। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । व० स०४१३। स्त्र भण्डार।

विलेप—इसी मण्डार में २ प्रतिया (वे० म० ६६६, १११६) क्र मण्डार में एक प्रति (वे० स० ६६२) घ मण्डार म एक प्रति (वे० स० १००), इर भण्डार म एक प्रति (वे० स० ७००), इर भण्डार म एक प्रति (वे० स० १८६०) प्रौर हैं।

२६६६ शीकोपदेशमाला-मेरुमुन्दरगित्। पत्र स० १३१। मा० ६×४ इ च । भाषा-गुजराती लिपि हिन्दा । विषय-क्या । र० माल × । ले० काल × । मपूर्ण । वै० स० २६७ । छ भण्डार ।

विशेष-४३वी कया (धनथी तक प्रति पूर्ण है)।

२६६७ शुकसप्तति '। पत्र म०६४। मा०६ई ४४ई इच। भाषा∸सस्कृत ! विषय—कथा। र० काल ४। ते० काल ४। श्रपूर्ण । वे० स०३४५। च भण्डार।

विशेष-प्रति प्राचीन है।

२६६६ श्रावराष्ट्राटशीष्टपास्यान । पत्र स०३। झा० १०३४५१ इच । भाषा-सस्कृत । विपल-कथा (जैनेतर)। र० काल ४। ते० काल ४। पूर्ण । वे० स० ६६०। ध्र भण्डार।

```
२४३ ी
                                                                              ि च्या-सादिस
           २६६६, व्यवसाद्वावशीकका ***** पत्र वं ६० । धाः १२×६ ६ न । धाला-सरस्य करा । विषय
क्या।र कार्र×(के बार्र×)धपूर्णीवे से क्रेश्।अरजन्मार।
           २००० बीपासकार्राप्य पर सं २७ । बा ११×७, इ.चा नाया-हिन्दी । विका-रवा । र
कार × । ते कार से १६२६ वैद्याध वृत्ती ७ । पूर्व । वे सं ७१६ । अन्यवाद ।
           विकेष---वसी वच्चार ये एक प्रति (वै वं ७१४) शीर है।
           २७०३ झेसिक्चीपर्द—इतावैदायवर्ष १४।या र्दX४ दवाधान≔हिनी। विपत-
दया। र कार सं १६२६। क्यों। वे व ७६४। का क्यार।
           विधेय-वर्षि भागपुरा के रहवे शते थे।
           धन वेरिका चीपाँ नीक्टे---
                         सप्रीकाल बंदी सवदील । बहेंद्र वर्तित ने द्वीर्य वर्तीत ।।
                         पूचा बोद्ये पुर निर्लंद । पूचा कथ दीवायन पेंच ॥१॥
                         शीका सत्त्व सबै का पात । चीचा सरस्यकी करी सहस्य ।
                         कृषि केया के क्षत्र बुधि होय । करी जीवर्ष कर गुनि बोर्ड ११२०
                         माशा अपने करो छहाई । क्लार होए बचाये माई।
                         मैरिक चरित बाद ने मही । बीची बाची चीपर पडी संस्थ
                         राज्यों क्षती चेलना बारित । नर्म बैरिन केने नीन धारित ।
                         राजा कर्ज पतार्थ होता । और अर्थ की गाउँ कीश (190)
```

राव यम् ७ वर-नोडा---

वानकी बारी बारवी पूरा । वर्षी वार्षी बारित सरव ।११ ३।। वरू दिश्व बावक दिवारि । रास्त्री नेदा बारती नारि । वानक बानक वैस्त्री स्त्रारी वर्षा स्वर्ण वस्त्री बारी ।१४ २०।

बेटी परि राज्यो निरवाह । वृषेत्र पाप एक वे आह ।

श्रन्तिम---

भेद भलो जाएगे इक सार । जे सुरिएसी ते उत्तरे पार । हीन पद प्रक्षर जो होय। जको सवारो गुणियर लोग ॥२८६॥ में म्हारी बुधि सार कही । ग्रुणियर लोग सवारो सही। जे ता त्रांगे कहै निरताय। सुग्रता सगला पातिग जाइ।।२६०।। लिखिवा चाल्यो सुख नित लही, जै साधा का गुएा यो कही। यामे भोलो कोइ नही, हुगै वैद चौपद कही ॥६१॥ वास भलो मालपूरी जािण । टीक मही सो कियो वसाए। जठै बसै माहाजन लोग। पान फूल का कीजै भोग।।६२।। पौरिंग छतीसों लीला करै। दुख ये पेट न कोइ भरै। राइस्यव जो राजा बखाणि । चौर चवाहन राखै प्राणि ॥६३॥ जीव दया को मधिक सुभाव । सबै भनाई साधै डाव । पतिसाहा वदि दीन्ही छोडि । बुरी कही भिव सुर्ग वहोडि ॥६४॥ धनि हिंदवाएं। राज वसािए। । जह मैं सीसोद्यो नो जािए। जीव दया को सदा वीचार। रैति तरगौ राखै भाषार ॥६४॥ कीरति कही कहा लिंग जाएं। जीव दया सह पालै मारिए। इह विधि सगला करै जगीस । राजा जीज्यौ सौ भरु बीस ।।६६।। एता बरस मै भोलो नही | बेटा पोता फल ज्यो सही। दुखिया का दुख टालै भाय। परमेस्वर जी करै सहाय ॥६७॥ इ पुन्य तर्णी कोइ नही पार । वैदि खलास करै ते सार । वाकी बुरी कहै नर कोइ । जन्म भाषणी चालै खोइ ॥६८॥ सवत् सौलह से प्रमाण । उपर सही इतासी जाण । निन्याएवे कहा। निरदोप । जीव सबै पार्व पोप ॥६६॥ भादव सुदी तेरस सनिवार । कहा तीन सै पट श्रिषकाय । इ सुराता सुख पासी देह । धाप समाही करे सनेह ।।३००॥

इति श्री श्रेरिएक भीपइ सपूरए। मीती कार्त्तिक सुदि १३ सनीसरबार क्लें स० १८२६ काढी ग्रामे सीखत क्खतसागर वाचे जहने निम्सकार नमोस्त वाच ज्यो जी।

२७०२ सप्तपरमस्थानकथा—द्याचार्य चन्द्रकीत्ति। पत्र स०११ । मा० ६३×४ इन । भाषा— सस्कृत । विषय-कथा। र०काल × । ले० काल स० १६८६ मासोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ३५०। व्य भण्डार ।

```
े १८१० ] [ कवा-साहित्व

१८०६ सहस्रवस्त्रकथा—बाजार्थे सोमकीर्त्ति । यत्र सं ४१ । या १ ३००५ संस् । भता-
संस्त् । विषय-क्षा । र कृत सं ११२६ तस्त्र तुर्यो १ ते काल ४ । पूर्णा वे सं ६ । या भवार ।

विषय—पति प्रतीय है।

न्व०४ प्रति स्व०९ । यत्र सं ६४ । के कृत सं १४०२ साम्यत तुर्यो १३ । वे तं १ । स्व

मनार ।
```

त्रवार । प्रयस्ति— वं १७७२ वर्षे जलालुवाने हुन्युश्ये नवीत्रव्यं निर्म सर्वेशवर्यः निर्मेणेल विशेषणः सम्प्रतास्य जनीत्रेन नेप्तानको ।

सम्बन्धपुर तमीलेनु नेप्याताले । रेक- स्टेन्सिक से | प्यार्थ ११ । ने कम्बार्च १५४ मालवा कृते १ | ने से १९३ । मा

मधारे।

विमेद--नेवस्त निवसी सहस्याहीरा वे वस्तुर मे प्रतिनिधि की वी । वीवस्त संदर्श प्रवरणंदवी किन्दूना मे प्रतिनिधि योगाम स्वीतीराज के मंदिर के लिए करनाई |

म्बर्क्स मिति संक्षेत्र वंदश्वाले प्रमाण वंदश्वाद कुरी १ । वे संदर्शक सम्बद्धाः

विदेश—र्ग वर्णसङ् वे धावक वोशिक्सक के स्क्रमर्ग हिप्पील में प्रतितिर सो सो

म्बद्ध प्रतिसा संविष्यं दशाने कला तं १६४ समोन दुरो का वे १११ । स

प्रभार) १७०८, प्रतिस ६। पर खंडकाले बात वं १०८६ कालिक सुरी हा दे सं १३६। स

अभार। विनेद---वे वयुर्वाचे के वास्त्रामें अहिनिया की वयी थी।

इनके मंतिरिक्त य जम्मार के एक जीत (वे सं १९) क्र्यूचनार के एक जीत (वे सं ७३) मोर हैं।

२० १. सहस्रकासक्ष्या—आग्रस्याः । पत्र वं वर्षः वा ११३/८१. ६ वः प्रत्य-शिलीयः । विद्य-प्रताः र वन्त्र तं १ १४ कार्यकानुषी १ । दुर्वाः वे तं ६ । वः व्यवस्यः

रियोग-नम बिरके हुदै हैं। वंद में गिर का परिवर भी दिना हुया है !

्रवर्षः सप्तरमानवाचाणाः पत्र वं १६। मा १९४० ६ष । असा-तियी । विषय-ाणा । र नस्र ४। वे राग ४। प्री विषे दे १३। क लगार ।

विधेर-नोनर्शीत इत नत्म्यन्त्रवया था हिन्सी धनुरत्र है।

च बचार के एक प्रति (के संदृत्क) और है।

कथा साहित्य]

२७११. सम्मेदशिवरमहात्स्य--लालचन्द् । पत्र स० २६ । ग्रा० १२×५६ द व । मापा-हिन्दी । विषय-नया । र० काल स० १८४२ । ले० काल स० १८८७ ग्रापाढ बुदी ा वे० स० ८८ । ग्रा मण्डार ।

विदोप---लालचन्द भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य थे। रेवाडी (पद्माय) के रहने घाले थे भीर वही लेखक ने इसे पूर्ण किया।

२७१२ सम्यक्त्वकीमुदीकथा-गुणाकरसूरि । पत्र स॰ ४८ । म्रा॰ १०४४ इ च । भाषा-सस्तृत । विषय-कथा । र० काल स० १५०४ । ले० वाल ४ । पूर्ण । वै० स॰ ३७६ । च भण्डार ।

२७१३ सम्यक्त्यकौमुदीकथा—खिता। पत्र स० ७६। मा० १२४४३ इ'व। भाषा-सस्वत। विषय-क्या। र० गाल ४। ने० काल स० १८३३ माघ मुदी ३। पूर्ण । वे० स० १३६। स्त्र भण्डार।

विशेष—मा मण्डार में एक प्रति (वे॰ म॰ ६१) तथा व्य मण्डार में एक प्रति (वे॰ म॰ ३०) भीर है।

२७'४ सम्यक्त्रकोमुदीकथा ' । पत्र स० १३ से ३३। घा० १२×४६ इ.च.। भाषा-मस्यूत । विषय-कथा। र० काल ×। ले० काल स० १६२५ माच सुदी ६। मपूर्ण । वे० सं० १६१०। ट. मण्डार।

प्रशस्ति—सनत् १६२५ वर्षे वाके १४६० प्रवर्त्तमाने दक्षिणायने मार्गकीर्प चुक्तपक्षे पष्ठम्या घनो श्रीकुंभलमेरूदुर्गे रा० श्री चदर्यासहराज्ये शी सरतरगच्छे श्री गुण्लाल महोपाघ्याये स्वयाचनार्थं लिखापिता सीवाच्यमाना विर नदनात्।

२७१४ सम्यक्त्वकोमुटीकथा " । पत्र स० मह। मा० १०३×४ इ.च.। भाषा-सस्कृत । यिषय-क्या। र० काल ×। ले० काल स० १६०० चैत मुदी १२ । पूर्ण । वै० स० ४१। च भण्डार ।

विशेष-सवत् १६०० में खेटक स्थान मे शाह धालम के राज्य में प्रतिलिपि हुई। य० धर्मदास भग्नवाल गोयल गोत्रीय महलाणापुर निवासी के बश में उत्पन्न होने वाले साधु धीदास के पुत्र धादि ने प्रतिलिपि कराई। लेखक प्रणस्ति ७ पृष्ठ लम्बी है।

२७१६ प्रति स०२। पत्र स०१२ से ६०। ले० काल स०१६२८ बैशाल मुदी ४। प्रपूर्ण। वे० स• ६४। श्र भण्डार।

श्री हू गर ने इस प्रथ को ग्र॰ रायमल को मेंट किया था।

भय सवत्सरेस्मिन श्रीनृपतिविक्रमादित्यराज्ये सवत् १६२८ वर्षे पोपमासे कृष्णुपक्षपचमीदिने भट्टारक श्रीमानुकीतितदाम्नाये शगरवालान्वये मितलगोत्रे साह दास् तस्य मार्या भोली तयोपुत्र सा गोपी सा दीपा। सा गोपी तस्य मार्या वीवो तयो पुत्र सा भावन साह उवा सा भावन भार्या श्रूरदा घाही तस्य पुत्र तिपरदाश।, माह उवा तस्य भार्या मेघनही तस्यपुत्र ह गरसी साम्त्र सम्यक्त कौमदो प्रथ ब्रह्मचार रायमञ्जदयात् पठनार्यं ज्ञानायर्शी कर्मक्षयहेतु। शुभ भवतु। लिखित जीवात्मज गोपालदाश। श्रीवन्द्रप्रभु चैत्यालये श्रहिषुरमध्ये।

भवा-सादित्व १४२]

२०१७ प्रति सुरु २ | वस संद । में काल सं १७१६ पीप बुधी १४ | पूर्ण । वे सं ७६६ । क प्रकार । फoरेस, प्रति सं⊪ ३ | एवं संबर्ध के कांचर्च १८३१ वाच सूरी दा वे संबर्धक

मधार ।

विकेन-अप्रयुक्तम कात् के सक्तूर नगर ये प्रतिनिधि की जी ।

'इसके प्रतिरिक्त का अप्याद में २ अविकां (वे वं २ ६६ ८६४) या बच्चाद में एक प्रति (वे वं ११२) क्रायमार मे एक ब्रीत (वे संब) भाजभार में एक प्रति (वे संबक्ध) स्वाधनार में एक प्रति (दे र्टर्१) व्यवस्थार में एक प्रति (वे वं १) तमा ह मच्चार में २ प्रतियों (वे वं २१२६, २१३) [बोनो क्यूर्ड] धीर है।

१८१६. सम्बद्धानीप्रवीकनाकाया—विनोदीकाक । पन सं १६ । बा ११×३ देप । बाना-किसी एक । विका-करा रेंग काम से १७४६ | ते काल में १.६. बानन बसी १.१ वर्त । में ते तक । स West 4

२७२ सम्बन्धकोसरीकवामापा—सगवराक । पत्र चं १११ । या ११×६३ इ.प.। चापा-किनो प्रका विषय-क्या । प्राप्त ने संबंध का क्या । प्रकार नाम संबंध का क्या । प्रकार के संबंध का क्या । प्रकार क Marie L

१७६१ सम्बद्धकोद्धवीकवामाया—जोपराज शोबीका। यथ सं ५७ । वा. १ -२७५ इ.स.) पत्ना-कियो हिपम-क्या । ए जल वं १७९४ प्यक्त तुर्थे १९३ वे अस्त वं १५९१ महोत्र दुर्थे ७ । दुर्स ह t of AND WORD

निवेद---वेक्सानर वे श्री कुरावर्णस्थी बोसीना के बायतार्थ वसर्थ बक्तुर में प्रदिक्षित की हो। वे १ ६ में रोमी में निकास्तित विवाद में कुमालनी में निकासकारी धोगीला सु इस्ते बहुतना करायुं प्राई ४० १) दिखा।

रक्रक अति संदेश वर्ष प्रदेश से समानं १०६६ बाव बुद्धे कृति संदर्श आ मधार ।

र-परंप्रतिसंह। प्रवर्णस्थाने समानंह था। वे वं वह । क्रांच्यारा २७९४ प्रक्तिसंक्ष्रानवर्षद्काणे नामाचे १६४।वे सं ७०३।चालसार। रथ्यक्र प्रतिस्थे का पण वं दशा में नामा वं १ वस बीच सुवी १३ के से १ । अद

क्लार । इनके प्रतिरिक्त का नवार में एक प्रति (ने में ७ ४) व क्यार में एक प्रति (ने स. १४४१)

eire E i

२७२६ सम्यक्त्त्वकीमुदीभाषा । पत्र स० १७४ । आ० १०३×७३ इ च । भाषा-हिन्दी । विपन-कथा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०२ । च भण्डार ।

२७२७ सयोगपचमीकथा—धर्मचन्द्र । पत्र स० ३ । आ० ११३ ×५३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल स० १८४० । पूर्ण । वे० स० ३०६ । स्त्र मण्डार ।

विशेष-इ मण्डार में एक प्रति (वे॰ स॰ ८०१) और है।

२७२८ शालिभद्रधन्नानीचौपई—जिनसिंहसूरि। पत्र स०४६। आ० ६४४ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-म्या। र० काल स०१६७८ शासोज बुदी ६। ले० काल स०१८०० चैत्र सुदी १४ ा अपूर्ण। वे० स० ५४२। इ भण्डार।

विशेष — किशनगढ में प्रतिलिपि की गई थी।

२७२६ सिद्धचक्रकथा । पत्र स० २ से ११। मा० १० \times ४६ इ.च.। मापा-हिन्दी । विषय-कथा। र० काल \times । ले० काल \times । मपूर्ण। वे० स० ५४३। छ भण्डार।

२७३० सिंहासनबत्तीसी । पत्र स०११ से ६१। ग्रा०७ \times ४ 3_8 ह च । मापा-हिन्दी । विषय-क्या । र० काल \times । ले० काल \times । मपूर्ण । वे० स०१५६७। ट भण्डार ।

विशेष-- ५वें मध्याय से १२वें श्रध्याय तक है।

२७२१ सिंहासनद्वार्तिशिका—स्तेमकरमुनि । पत्र स० २७ । मा० १० \times ४ $\frac{2}{5}$ इ च । भाषा—सस्कृत । विषय–राजा विक्रमदित्य की कथा । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० २२७ । स्र भण्डार ।

विशेष-प्रति प्राचीन है। मन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

श्रीविक्रमादित्यनरेव्वरस्य चरित्रमेतत् किविभिनिवदः ।
पुरा महाराष्ट्रपरिष्ट्रभाषा मय महाक्चर्यकरनराणा ।।
क्षेमकरेण मुनिना वरपद्यगद्यवधेनमुक्तिकृतसस्कृतवपुरेण ।
विक्वोपकार विलसत् ग्रुणकीर्तिनायमक्षे विरादमरपद्वितहर्पहेतु ।।

२७३२ सिंहासनद्वार्त्रिशिका । पत्र स०६३। ग्रा०६×४ इच । मापा-सस्कृत । विषय-कथा। र०काल × । ले०काल स०१७६८ पौप सुदी ५ । पूर्ण । वे०स०४११ । च मण्डार ।

विशेप--लिपि विकृत है।

र७३३ सुकुमालमुनिकथा । पत्र स० २७ । ग्रा० ११३ ४७३ इ च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा । र० काल × । ले ० काल स० १८७१ माह वृदी ६ । पूर्ण । वे० स० १०५२ । ग्रु मण्डार ।

विशेष--जयपुर मे सदासुखजी गोघा के पुत्र सवाईराम गोघा ने प्रतिलिपि की थी।

```
क्या-साहित्व
```

२०३४ सुरम्पदरातीकवा \cdots िवस र १। या ११ $_{q}$ $\times v_{q}^{2}$ द व । चला-संस्कृत । विवय-वया । τ कल \times । ते कल \times । \times कल \times । ते कल \times ।

विनेत---वक रचा के स्रतिरिक्त एक ग्रीर नचा है को यनूर्स है।

म्बर्धः सुरान्धव्यसीक्रवक्रवा—द्वेसरावः। यत्र सं ॥ सा वर्/२८७ इ.च.। माना-दिन्ती । विषक-

्या । र त्राम × । ते त्राम सं ११४ प्रमाण जुती १ । पूर्व | व ११४ । वा व्यापार ।

विकेश--विच्य नवर के राजसमान के प्रतिकिति की की ।

वारम--धव पुनम्बदश्वती शतकार। शिरको--

aý 1

पीरार्रे— शडीयाम गंदी तुक्ताहै, पुर गीतम गंदी विद्यमान | शुनन्दरदामीमदा शुपि क्या वर्ड नाल परमानी स्था।

जुनन्दरक्तोक्य ग्रुपि कमा वर्जनान परमानी क्या ।११। पूर्वदेश राजवह गाँव सेरिक राज करें स्थितरान । शाव केतना कुद्वरस्थानी अंकरीवित्ती कर समाव । शुव विद्वालय बेटी कमा वक्तवानी कम स्वामी स्था ।

सन्वियः— सद्भार नहे लीड विज वाल जीववर्ध की क्टॅस्प्यत ।। सब मामक सर वीवन घरे, बात पूचा सी वर्धाण हरे । हैपराम मनियल मी वही (स्वास्त्रूपण परस्पती वही । सी मार स्वयं सवपारी होया, गण वण माम पूर्व भी सोव ।। । ।। की मार सेपराय

मेहा-- मासल कुछ पेपनी भंदनार बुन पान । भीतिम कुछ बहागों दिहरे किया गरि भान ॥ प्रेम्यू मिकन कुम भी, इस मन पान तुनम । छात्रे अपर यात्र सर्वित स्वीत स्वरूप स्वरूप।

सही में हम पहल हैं प्रमान है नाम ।। स्थार हुदक्तमाहास्थालियाकी भौगई-- हुदि क्राया (पन में २० । सा १८४३ इ.स.) प्रमान क्रिकी (विदय--क्या) र प्रमार्थ देशकों के सार्थ है के | वे देशकों सामस्यार ।

वेश करानर के किने विश्व नवर गुन्न हान ।

मिचेच-नटफ में शिका वधा ।

२०३७ हुन्दरैनसेठळीडम्स (कमा) '''।यध्यं १।या १_५४४] इत्र। जला–हिन्दो। विक-नना।र नम्म ४।के कस ४।दुर्काके वं ११।वाक्त्यार। कथा-साहित्य]

२७३८ सोमशर्मानारिपेणुकथा ' । पत्र सं० ७। मा० १०×३३ इन । भाषा-सस्कृत । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५२३ । व्य भण्डार ।

२७३६ सौभाग्यपचमीकथा — मुन्टरविजयगिए। पत्र स० ६। मा० १०×४ इ व । भाषा-सस्कृत। विषय-कथा। र० काल स० १६६६। ले० काल स० १८११। पूर्ण। वे० सं० २६६। अप्र मण्डार।

विशेय-हिन्दी में धर्य भी दिया हुमा है।

२०४०, हरिवश्वर्गान । पत्र स० २० । झा० १०६ ×४३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६३६ । ऋ मण्डार ।

२७४१ होतिकाक्या '। पत्र स०२। मा०१०३×५ इ च। भाषा-संस्कृत । विषय-क्या। र० काल ×। ले० काल स०१६२१। पूर्ण। वे० स०२६३। आ भण्डार।

२७४२ होलिकाचौपई—ह गरकि । पत्र स० ४। मा० ६×४ इच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-कथा। र० काल स० १६२६ चैत्र बुदी २। ले० काल स० १७१८। मपूर्ण। वे० स० १५७। छ मण्डार।

विशेष -- केवल अस्तिम पत्र है वह भी एक मोर से फटा हुमा है। अस्तिम पाठ निम्न प्रकार है---

सोलहसइ गुणतीसइ सार चैत्रहि वदि दुतिया वुधिवार।

नगर सिकदराबाद ' ग्रुगुकरि मागाध, वाचक भडता श्री विमा साध ॥ ८४॥

तासु सीस हू गर मति रली, भण्यु चरित्र ग्रुए साभली।

जे नर नारी सुणस्यइ सदा तिह घरि वहुली हुई सर्पदा ॥५५॥

इति श्री होलिका चउपई । मुनि हरचद तिस्तित । स्वत् १७१८ वर्षे "" " मागरामध्ये लिपिकृत ।। रचना मे कुल ८५ पद्य हैं। चौषे पत्र में केवल ८ पद्य हैं वे भी पूरे नहीं हैं।

२७४३ होलीकीकथा-छीतर ठोलिया। पत्रं स०२। म्रा०११३×५३ इंब। नापा-हिन्दी। विषय-कथा। र० काल स०१६६० फाग्रुण मुदी १४। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०४५८। स्त्र मण्डार।

२७४४. प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १७४० । वे० स० ६५६ । क भण्डार । विशेष-लेखक मौजमाबाद [जयपुर] का निवासी था इसी गाव में उसने प्रथ रचना की थी ।

२८४४ प्रति स० ३। पत्र सँ० ६। ले० काल स० १८८३। वे० स० ६१। ग मण्डार। विशेष-कालूराम साह ने ग्रथ लिखवाकर चौधरियों के मन्दिर में चढाया।

२०४६ प्रति स०४। पत्र स०४। ले० काल सं० १८३० फाग्रुए। बुदी १२। वे० सं० १६४२। ट

विशेष - प० रामचन्द्र ने प्रतिनिषि की थी।

HOSIE 1

°×६] [कथा-साहित्य

न्थ⊀ं दोवीक्या—किस्नुम्यस्त्रि।यव सं १४।या १ ३४४३ १व । वासा-संस्तृत । विवय-वया X । र रामा X । वे क्ला X | पूर्णावे संस्था अथारा ।

विशेष--- वर्ती अकार में वसके महिरित्त के महियों के सं अब में द्वी सीट हैं।

२०४८ होत्रीपर्यक्रमा च्या र्वह । इ.४४३ दव । बागा-संस्कृत । विषय-स्वार कर्मा×ध्ये तक्ष × | पूर्वध वे र्वभर। क्ष्मणाः।

क्ला×ान रमा×ायुद्धाव द ४४०। घरणणार। २०४८: प्रतिश्च दे। पर वं २। वं रमार्च १ ४ नाव पूर्वाकृति हो ते १००२। मा सन्दार।

निवेप-प्रकार महिल्लिक क जन्मार ने ए महिन्स (वे वे देर ६११) वीर है।



च्याकरगा-साहित्य

२७४० अनिटकारिका - । पत्र स०१। मा० १०३ ×५ दे इ न । मापा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र॰ काल × । ते॰ काल × । पूर्ण । वे॰ स॰ २०३५ । आ मण्डार ।

२७५१ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ति० काल 🗙 । वे० स० २१४६ । ट मण्डार ।

२७४२ अनिटकारिकावचूरि '। पत्र स० ३। ग्रा० ११३×४ इ व । भाषा-सस्कृत । विषय-

२७५३ ऋडययप्रकर्गा । पत्र स० १। मा० ११६ ×५६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०१८ । स्त्र भण्डार ।

२७४४ स्त्रवयार्थे । पत्र स० ६ । भा० ६×१६ ६ व । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ते० काल स० १६८६ । पूर्ण । वे० स० १२२ । म्ह भण्डार ।

रण्यस प्रति स० २ । पत्र स० २ । ले० काल 🗶 । मपूर्ण । वे० स० २०२१ । ट मण्डार ।

विशेष-प्रति दीमक ने खा रखी है।

२७४६ उणादिसूत्रमग्रह—सग्रहकत्ती-उउउवलदत्तः। पत्र स० ३८। ग्रा० १०४५ इच । मापा-सन्द्वतः विषय-व्याकरणः । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्णः । वै० स० १०२७ । आ भण्डारः ।

विशेष--प्रति टीका सहित है।

२७४७ उपाधित्याकर्ण । पत्र स० ७। मा० १०४४ इ.च.। आपा-सस्कृत । विषय-व्याकर्ण। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स० १८७२। आ मण्डार।

२७४८ कातन्त्रविश्रमसूत्रावचूरि-चारित्रसिंह। पत्र स० १३। ग्रा० १०३×४३ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-व्याकरण। २० काल ×। से० काल स० १६६६ कात्तिक सुदी ५ पूर्ण। वे० स० २४७। श्र भण्डार।

विशेष-भादि भन्त भाग निम्न प्रकार है-

नत्वा जिनेंद्र स्वगुरु च भक्त्या तत्सत्त्रसादाप्तसुसिद्धिणक्त्या । सत्संप्रदापादकचूर्णिमेता लिस्नामि सारस्वतसूत्रगुक्त्या ॥१॥ 3×4] क्या-साहित्य १७४० होबीक्या-विन्युन्दरसूरि । यत सं १४। या १ ३४४_६ ६ व । ताना-संस्कृत । निवय-

क्वा×ार्रः प्रता×ाने कता×ादुर्वावे सं ७४ । इत्तकारा

विश्वेष---इसी क्यार में इसके महिरितः व प्रतिवर्ग वे सं ४४ में ही ग्रीर हैं।

१४४८ होबोपर्वेक्या पन वं १। वा १ ४४३ इथ । जारा-इंस्टुट : विपर-स्वा । र नाल ×ाने कल ×ाप्रतंती संध्यारा व्यवसारा

२ अप्रदेश प्रतिसंघ। यत्र संदाने काल संदु प्रवास सूधी हा से संदर्श अप

बंबार । विकेर—व्दर्भ सहिरितः व क्यार में २ प्रतिका (वे वं ६१ ६११) सीर ⊈ा



प्रशस्ति—सवत् १५२४ वर्षे कार्तिक सुदी ५ दिने श्री टॉकपत्तने सुरश्राणभ्रलावदीनराज्यप्रवर्त्तमाने श्री पूलसधे बलान्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीषदानिददेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचद्रदेवातत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पिष्ण्य ब्रह्मतीश्म निमित्त । खडेलवालान्वये पाटणोगोत्रे स० धन्ना भार्या धनश्री पुत्र स दिवराजा, दोदा, मूलाप्रमृतय एतेपामध्ये सा दोदा इद पुस्तक ज्ञानावरणीनम्मक्षयनिमित्त लिखाप्य ज्ञानपात्राय दत्तं ।

२७६४ कातन्त्रज्याकरग्र--शिववर्मा। पत्र स० ३५। मा० १०४४ है इच। भाषा-सस्कृत। विषय-ध्याकरग्रा। र० काल ×। ले० काल ×। मपूर्ण। वे० स० ६६। च भण्डार।

२८६४ कारकप्रक्रिया । पत्र स०३। भा० १०३×५ इ.च.। भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० कान ×। ते० काल ×। पूर्ण । वे० स० ६५५ । श्रा मण्डार ।

२७६६ कारकविवेचन । पत्र स० = । ग्रा० ११×५३ इ.च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल ×। ते० काल ×) पूर्ण । वै० स० २०७ । ज भण्डार ।

२७६७ कारकसमासप्रकरण । पत्र स० ४ । मा० ११×४३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३३ । आ भण्डार ।

२७६८ कृदन्तपाठ । पत्र स०६। आ०६३ ४५ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-व्याकरण् । र० काल ४। ते० वाल ४। अपूर्ण। वे० स०१२६६। आ भण्डार।

विशेष-- एतीय पत्र नहीं है। सारस्वत प्रक्रिया में से है।

२७६६ गरापाठ-चादिराज जगन्नाथ। पत्र म० ३४। ग्रा० १०३×४३ इ.च.। मापा-सस्कृत। विषय-व्याकररा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १७८०। ट मण्डार।

२००० चद्रोन्मीलन । पत्र स० ३०। बा० १२×४३ इच । मापा-संस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १८३५ फाग्रुन बुदी है। पूर्ण । वे० स० ६१। ज मण्डार ।

विश्रीय—सेवाराम ब्राह्मसा ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की भी।

२७७१ जैनेन्द्रज्याकरण्--देवनन्टि । पत्र स० १२६ । ग्रा० १२४४३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण् । र० काल ४ । ते० काल स० १७१० फागुरण् सुदी ६ । पूर्णे । वे० सं० ३१ ।

विशेष---ग्रथ का नाम पद्माध्यामी भी है। देवनन्दि का दूसरा नाम पूज्यपाद भी है। पचनस्तु तक। सीलपुर नगर में श्री भगवान जोशी ने प० श्री हर्प तथा श्रीकल्याए। के सिये प्रतिलिपि की थी।

संबद् १७२० भासोज सुदी १० को पुन श्रीकल्याए। व हर्प को साह श्री लूएा। बधेरवाल द्वारा भेंट की गयी थी।

```
व्याक्तक्ष-सादित्य
श्रद्धः ]
                               द्यानः प्रवेतसमुद्धे बाः निवसतित विश्रापी ।
                               बेबू मी युक्को खेहः धामिकीऽपि क्या बद्धः ॥२॥
                            बार्यमपुष्पविताः चतु पापर्ये ।
                                     कारि श्रीक रह वारि वरीवरीवल ॥
                            स्वरचेतराने व नृदोनविश्वर्क्ष नार्थी ।
                                     इतिसाने भवत्व चच्ची विचन प्रवास ।।
           इस्तिम गठ—
                         बहतुर्वकारिनुमिते संस्थति वयसस्यपुरवरे दशी ।
                         भोक्फारम्हरून सुरिशकुट्रशरास्त्रां
                         शीविणमारिक्यानिस्यु ऐसां सक्तसर्ववीवाना ।
                         क्ट्रे करे विज्ञानित् सीयन्त्रियचंत्रमूरिरावेषु ॥२॥
                         वाचर विशेषक्रमणे विष्यसंदुरातस्थवाहं परवार्थः ।
           नीवि
                         शारिपाँगहराकुर्वययस्यकृतियम् कुमर्ग ।।१॥
                         व्यक्तिवित्ते प्रतिमायासमूतं अस्पोत्तरेण निविद्यपि ।
                         क्रक्रम्बर प्रवादी घोष्ट्री सपरोगराज । १४०।
                         र्रात नामेश्रीवस्त्रकामपूरि संपूर्ण विकास ।
           मानार्व भोरालहुरात्तराध्यान रहित नेवन । देवेर्न निपि हथा महनकानार्व । कुन सरतु । संदत् १६६३
क्य रात्तिक सूरी ३ दिवी ।
           १७४६ कातुन्बरीका ---- पन थं १। मा १ ३×४३ इ.च । वाता-बंग्रत । विवय-ब्वाकरण ।
र गल×।ने पल×। ब्यूर्न |वे सं १६ १। ड वचार।
           श्रिकेच--जीव संस्कृत रोगा नदिव है।
            क्षत्र क्षात्रत्रहरूमालाटीका--दीर्गसिद्ध । तत्र सं ३६४ । वा १२<sub>४</sub>×४० इ.स. प्राप्त-
 सस्य । विषय-मालरहार याल ×ामे वास वं १६६७ । दूर्णा वे मं १११ । क्रायार )
            विभेष-महीका का काश्र कमान व्याकरण भी है।
            २७६१ प्रदिस्ते २ । यत्र नं १४ | ने सन्द×। ब्यूर्मी वे नं ११३ । कथनार ।
            क्र4क इति से कृतकां कशाते तल × (जहुनी वे वं ६०) च बचार।
            एक्टरे कातम्बद्धपराकाषुत्रिण्णणान्यस्यं १४ ते ह। या १८४ दया यागा-लेखना
 क्तिक-मानरसः। र वल्त×ाने वल्तनं ११९४ वॉलिक नृती १। स्यूल । वे वे ११४४ ∤ इ. सन्तारः।
```

प्रशस्ति—सवत् १५२४ वर्षे कार्तिक मुदी ५ दिने श्री टींकपत्तने सुरत्राणमलावदीनराज्यप्रवर्त्तमाने श्री
मूलसथे बलात्कारगर्गे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनिद्देवास्तरपट्टे भट्टारक श्रीशुमचद्रदेवास्तरपट्टे
भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्किष्य बह्यतीवम निमित्त । खडेलवालान्वये पाटग्रीगोत्रे स० धन्ना भार्या धनश्री पुत्र स
दिवराजा, दोदा, मूलाप्रमृतय एतेपामध्ये सा दोदा इद पुस्तक ज्ञानावरग्रीवर्म्भक्षयनिमित्त लिखाच्य ज्ञानपान्नाय दत्ते ।

२७३४ कातन्त्रध्याकरग्।—शिववर्मा । पत्र स० ३५ । ग्रा० १०४४ई इच । भाषा-सस्कृत । विषय-ध्याकरग्। र० काल × । ते० काल × । भपूर्ण । वै० स० ६६ । च मण्डार ।

२७६४ कारकशिक्रया । पत्र स०३। मा०१०३×५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६५५ । स्त्र भण्डार ।

२७६६ कारकविचेचन । पत्र स० ८। ग्रा० ११×५३ इ.व । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० स० ३०७ । ज भण्डार ।

२७६७ कारकसमासप्रकरण । पत्र स० १ । प्रा० ११×४३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३३ । इस मण्डार ।

२७६६ भृत्न्तपाठ । पत्र स० ६। मा० ६३×५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० नाल × । ने० काल × । मपूर्ण । वै० स० १२६६ । आ भण्डार ।

विशेष-- नृतीय पत्र नहीं है। सारस्वत प्रक्रिया में से है।

२७६६ गण्पाठ—वादिराज जगन्नाथ। पत्र म० ३४। म्रा० १०३ \times ४ $\frac{1}{2}$ ६ व । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्याकरण । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० १७६० । ट भण्डार)

२०००. चद्रोन्मीलन । पत्र स० ३०। मा० १२×४६ इच । मापा-संस्कृत । विषय-व्याकरसा । र० काल × । ले० काल स० १८३५ फाग्रुन बुदी ६। पूर्ण । वे० स० ६१। ज भण्डार ।

विशेष-सेवाराम ब्राह्मण ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

२७७१ जैनेन्द्रब्याकरश्-देवनन्दि । पत्र स० १२६ । ग्रा० १२×५३ इ च । मापा-सस्कृत । विषय-व्याकरशा । र० काल × । ते० काल स० १७१० फागुरा सुदी ६ । पूर्या । वे० सं० ३१ ।

विशेष----ग्रथ का नाम पचाच्याची भी है। देवनन्दि का दूसरा नाम पूज्यपाद भी है। पचवस्तु तक। सीलपुर नगर में श्री भगवान जोशी ने प० श्री हुई तथा श्रीकल्याण के लिये प्रतिलिपि की थी।

सवत् १७२० मासीज सुदी १० को पुन श्रीकल्यारण व हर्प को साह श्री लूगा वधेरवाल द्वारा मेंट की गयी थी। प्रक] [क्याकरण-साहित्य क्राकरण प्रतिस्त स्थापनार्थं देश के स्थल सं १९६६ कडाल सुरी टा वे सं २१२। क

शयार।

म्ब्बरे, प्रति सः दे। यस सं ६४ ते रहें ४। के काल सं १९६४ शतकृतुरी २। सपूर्ण। वै सं २१६। कंपनार।

२००४ । प्रतिसंब्धायम संदानि प्रशास स्थापन प्रतिस्था । सम्बद्धाः

रिचेप--चंस्कृत में संस्थित श्रीवार्ण विये हुने हैं 1 पशलाब्द नीसा ने अविविधि की नी i

२,००२, प्रतिस्रं हायम संदेशके कल्पसंदेश यो वे वे दुन्य कामगर । २,००६ प्रतिसंदायम संदर्शके कल्पसंदे वसास मुदीदरावे संदेशिय

चंक्छा[परमा-माकारण] एँ नाम ×1 के कान ×1 बसुर्थी दे थे १ ४२ । आर कथार । २००८ प्रदेश संदेश संदेश कान संदेश । के कान संदेश सामा कुर्ण १ । के संदेश । स्व

क्पार।

विकेश--- प्रशासाम्य चीचरी ने इक्की प्रतिसिधि की भी ।

२००६, दक्षिद्वर्शक्याणण्याययः ११। सा. १८८ दसः। मसा-संस्कृतः // रिश्न-स्थान्तः । इ. सम्बद्धाः । स्वतः १९८५ । स्व

२०४० शाहुपाउ-हेमचन्त्राचार्वः। पत्र र्वः १३। वा १ ४४६ इवः। वानां-संस्कृतः। निरस-स्थारस्थार अस्य ४ । वे अस्य र्वः १००० शास्य पुरोशः। वे वं १६१। क्षाच्यारः।

दश्यहं बाह्यवाठामाना व से देश व ११%६ ध्याः बावा-संस्थाः विचय-अपनायः । ए

शास ≍ाले काल ≍ालपूर्वाते वं ६६ । का वच्चार। विकेष- अक्टर्सीके वस्तरहें।

विवेद---वानुसी के पाठ है। २००२, प्रति सुर्ववर्ष १७ । वे नाम सं १२९४ कानुसानुसी १९१ वे सं १९ । स

पंचार। विकेश--- कामाने नेनिकास ने प्रवित्तियि करवानी की |

विकेश--- साम्याने नेतिनकान प्राधानाय करवाना था। इनके प्रतिरिक्त का सम्बार में एक प्रति (वे वं १६ वे) तथा का सम्बार में एक प्रति (वे वं

३६) और हैं।

व्याकरण-साहित्य]

```
, २४=३ घातुरुप्तावलि " , 1 पत्र गु० -२२<sub>३</sub>। मा०-१२×५३ इख । भागा-सस्तृत । विषय-व्याकरण ।
रः कात्, X । ते व काल X । प्रपूर्ण । वेश्,सं ६ । व भण्डार ।
          विरोप-- शब्द एव धातुक्षी वे रूप हैं।
          २७८४ धातुप्रत्यय " " । पत्र स० ३ । धाः १०×४३ इञ्च । भाषा-र्मसृतः । विषय-व्याकरणः ।
र० फाल-४ । ते० माल ४-। पूर्ण । वे० स० १२०२६ । उ मण्डार । १७०० ह
           वियोप-हेमरान्दानुसासन की सन्द साधनिका दी है। हा। व
           २७८४ पचस्य । पत्र स० २ मे ७। मा० १०८४ इद्याः भाषा-सस्यतः । विषय-व्याकरसा ।
 र० माल 🗙 । लेव. माल स० १७३२ । मयूर्म । वेव स० १२६२ । प्र भण्डार । -- , --- ; --
            २. परिकरणवात्तिक-मुरेश्वरानार्थ । पत्र त० २ ले।४ । प्रा० १२×४ दश्च-। भाषा-सस्क्रत ।
 विप्रय-व्याकरण । र०, बाल 🗴 । ते० काल 🗴 । सपूर्ण । चे० स० १७४४ न स-भण्टारत 🔭 ..... ११
            २७२७ परिभाषासूत्र । पत्र स० ४ । मा० १०३×४३ इझ ! भाषा-सस्तत । विषय-न्याकरण ।
  र० काल 🗴 । ले० काल स० १५३० १ पूर्ण । वे० सं० १६४४ । ट भण्डार । 🔑 👢
            वियोध-ध्यतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है--
                                    इति परिभाषा सूत्र सम्पूर्ण ॥ - च ग - च ा - च
           ु प्रशस्ति निम्न प्रकार है—
             भणास्त । तम्न भकार हन्त्रः
स॰ १५३० वर्षे श्रीक्षरतरगच्छेश्रीजयसागरमहोषाच्यायदिष्यश्रीरत्नचन्द्रीपाध्यायदिष्यमिक्तिलाभगणािन्
                    to be the many to an adjust of
   लिखिता वाचिता च ।
            ः २४८८, परिस्राप्रेन्द्वरोत्वर-नागोजीमट् । ,१७ स० ६७ । मान् ६×३५ दब । मापा-सस्कृत । विषय-
   व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५  । झ भण्डारः। . -
             २७८६ प्रति स०२। पत्र स० ५६। ले० काल 🗶 । वे० स० १०० । ज मण्डार ।
             रेर्ष्ट० प्रति स० ३ । पत्र स० १११ । ले बाल 🗙 । वै॰ सैं॰ १०२ । जी मण्डार ।
              विशेष—दी लिपिन तीमो ने प्रतिलिपि की थी। प्रति सटीक है । टीका की नाम भैरवी टीका है।
             च्छे १ प्रक्रियाकौ मुदी । पत्र स० १४३। भा० १२×५ इख । भाषा—संस्कृत । विषय-व्याव रण ।
    र० माल 🗙 । ले० काल 🗙 । मपूर्ता । वे० स० ६५० १ ज्ञानमण्डार ।
              विशेष--१४३ से भागे पत्र नहीं हैं।
              २७६२ पाणिनीयद्याकरण—पाणिनि । पत्र स् , ३६ । भाः ५ ६ 💢 ३, इत्र । माण्-महकृत । विषय-
    व्याकरूण । र० कृत्व X,। ले० कृत्व X । अपूर्ण । वै० सं० १९०२,। ट भण्डार ।
              विशेष—प्रति प्राचीन है तथा पृत्र के एक भीर ही जिस्रा गया है। 🗸 🕌
```

```
२६२ ]
                                                                        इयाष्ट्रब-साहित्य
          १७६३ महत्त्रक्षमाला-भीरायसङ्ग्रह वरव्यातः। पत्र वै ४७ । घा १३×४ इतः। मारा-
प्रतम् । दिवक-स्वाकरस्य । र कस्य 🗙 । के कस्य से १७२४ मानस्य वृधी ६ । पूर्वा वै वे ६९२ । स
WHITE I
          विकेष--भाषामें वरक्कीर्ता नं बच्चपुर (बालपुरा) में अविकिधि की वी 1
          २७६४ माक्रवसप्राचारणारणा पन वे ३१ रे४६। वाला-सक्तत । विवय-स्वारका । र काल 🗙 ।
```

के बाल ×। बहुती है वे १४६। अन्तवार। विश्वेय---वंशक्ट में पर्वावयाची सन्त दिये हैं।

२७३४, प्रा<u>कत</u>क्याकरण- चडकवि । पत्र वं ६ । वा ११३×१३ इल । बला-संस्त्य । विशव-शास्त्रकार कात ×ावे काव ×ावूर्तःवे वं १६४ । का बचार।

धारि जनमाँ पर प्रकार काता गया है। २.८६ प्रतिसः २ । तत्र वं ७ । ने कल्यसं १०६६ । के संदर्शक क्यार ।

२७६७, प्रतिस ३ । त्वतं १६। ने कल तं १ २३। वे सं १९४। कृतपार। विसेश—पद्धी बन्धार में युक्त प्रति (वे सं १९२) और है।

9aas इ. इतिस्य प्राप्तवानं प्राप्ति कम्बार्ध श्वप्तप्र यंत्रक्ति स्ट्रीशा वे श्रे । ध WEEK!

विकेच---ववपुर के बीधों के मान्यर वैनिवाल जैत्वालय ने शतिविधि 🚮 जी । १५६६ प्राष्ट्रतस्यत्वरिया-चौमान्यति । एव तं २२४ । वा १९३×६३ इस पाना-

थंत्रता। विदय-मान्यतः । र काल × । के शलार्थ १६६ यालीय पुर्व । पूर्व । दे श्रे प्रश्चाद क्षवार ।

१८ साम्बदादीप-बैधवट । पत्र वे ११ । या १२३×६ इत्र । वाना-बेस्य । नियम-मानरहार कल ×ाने कल ×ायपूर्तीये वं १११ क कथार।

पद १ करमाकारण्यानवर्त ४ के १ । या दे×४ देखा गाया-तील्या विश्वस-स्थारका र कान × । ने कान × । सहसो । वे वं ६ ६ । चार्यमार ।

क्षिय-मारामी के बंध स्थि हैं। रक्षके प्रतिरिक्त इक्षी क्लार के र प्रतिका (के सं ३ ७ ३ 🕥 गीर 🖁 ।

रूपकर, ब्रह्ममासङ्खिल्लाचन सं १९७। मा १ X४) इत। बारा-बीसूत। विकर-

शासरखार नास×ाने नास×। बहुर्खी है वे १७७६ इ.चण्डार ।

२८०३ त्तघुरूपसर्गेरृत्ति । पत्र स०४। मा० १०३४५ इख । मापा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण । वे० स० १६४८। ट भण्डार ।

२८०४ लघुशब्देन्दुशेग्यर । पत्र म० २१४ । मा० ११३ \times ५३ इख । भाषा-सस्वत । विषय-व्याकरण । र० काल \times । ते० काल \times । पूर्ण । वे० स० २११ । ज भण्डार ।

विषेप--प्रारम्भ के १० पत्र सटीक हैं।

२८०४ लघुमारम्यत-अनुभूति स्वरूपाचार्य । पत्र स० २३ । मा० ११४५ इख । भाषा-सस्वृत । विषय-व्यावरण । र० काल ४ । ते० वाल ४ । पूर्ण । वे० स० ६२६ । ध्र भण्डार ।

विदीप-इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० म० ३११ ३१२, ३१३, ३१४) भीर हैं।

२८०६ प्रति स०२। । पत्र स०२०। घा०११है×५० द्या नि० काल ४। पूर्ण। वे० स० ३११। च भण्डार।

२८०७ प्रति स० ३। पत्र स० १४। ले॰ काल स॰ १८६२ भाद्रपद शुक्का ८। वै० स॰ ३८३। च भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार में दो प्रतिया (वै० स० ३१३, ३१४) भीर हैं।

२८०८ लघुसिद्धान्तको मुदी-वरदराज । पत्र स० १०४ । मा० १०४४ ई इख । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६७ । ख भण्डार ।

२८८६ प्रति स०२। पत्र स० ३१। ले० काल स०१७८६ ज्येष्ठ बुदी ४। वे० स०१७३। ज भण्डार।

विशेप-प्राठ भ्रघ्याय तक है।

च मण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३१५, ३१६) मीर हैं।

२८१० लघुसिद्धान्तकौस्तुम । पत्र स० ५१। मा० १२×५६ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० स० २०१२ । ट भण्डार ।

विशेप--पाणिनी व्याकरण की टीका है।

२८११ वैश्याकरणभूपण कौहनभट्ट । पत्र स० ३३ । मा० १०४४ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल ४ । से० काल स० १७७४ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वे० स० ६८३ । स भण्डार ।

२८१२ प्रति स०२। पत्र स०१०४। ले० काल स०१६०५ कार्त्तिक बुदी २। वे० स०२८१। ड भण्डार।

२८१३ वेंग्याकरणभूपण । पत्र स०७। मा०१०३×५ इख। भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण। र०काल ×। ले०काल स०१८६९ पौष सुदी ८। पूर्ण। वे०स०६८२। इ. भण्डार।

1

२६४] [क्याक्ट्रय सम्बद्ध

रमप्रेप्र प्रविस०२ । पत्र संभाते पालसं १०६१ वेष हुवी ४३ वे संस्थाप सम्बारः

विकेन—मास्क्रिनकता के पठमार्व ग्रन्थ की प्रतिक्रिपि हुई भी ।

अपरेक्षः स्वाकरसूपः । पत्र वै ४२। सा १ ई.४१ स्था। जाता-संसदा। पिएस-स्थाकरसः।

र काम X। में काम X। पूर्ण । में वं ११। झ नव्यार। । । । अपने ६ क्याच्यरवृत्तीका """"। पव वं ७ । या १६ प्रश्निक । वार्ण-वंतरेत । विवस-व्याक्यप्रः ।

र कत्र ×। के कस्त ×। दुर्खा वे घंदशः इत्यादशः ⊳ः । १०१७ क्याकरख्याणाटीकाः ः । प्याचंद्र ृंखा १ ×१ वडा स्थान्तंत्र द्विती ।

विषय-मान्नरका । र कल × १ के॰ नमा × । ब्यूर्ज । वै वं १६० । छः नम्बार । २०१० - सम्बद्धीया —कवि नीखर्केठ । वन सं भवं । धो० १ है×६ वश्चे । योगा—संस्तृत । विषय—

स्पोकरत् । रः कमार्थ १६६१ । ते कमार्थ १ ७६ । पूर्वादे र्च ७ । कमामार | निर्देष—सहस्रोत जर्मनम्य ने शीरीविधि की थी ।

्यारे शुक्रमुख्यासक्की**** । यह है हैं | यह १८४८ मात्र । त्रास-चंतरूत । विचन-चानरहरू । र कात X । में राज X । पूर्व । के से ११६ | यह जाकार ।

दयर **इस्वद्**रिक्को — सामार्थयरहिका दण वं २७। सा १_{/९}×६३ इझ । सन्<u>तिस्त्रयः।</u> विस्त-मान्यकः। र रक्ता ≫ावे रक्ता ≫ावे स्वा

रत्तरी राज्यानुसाधन —हेमचनाचारी वर्ष देशी या १ ४४ दक्षः जना-चेन्द्र J विक्र-चारुरक्षः र कस ४ । के कस ४ । बहुई। वे ४४ । वर्षक्यार-।

कत्रके प्रतिष्ठ को। प्रवर्ष के स्था के दे×र्थ कि काल ×ाव्यू की के से कि काल ×ाव्यू की के से कि काल व्याप्त

१८२६ शासानुशासनकृति-देशवनुशायार्थं । वर थे अर । बा, १३४४३ वस । असा-तम्हर ।

निरम-बान्यस्तार कथ्य ×ा क्षेत्र भाव ×ा वर्षस्त्री कृत ३९१३ ज्ञानवार । भारत-बान्यस्त्रार कथ्य ×ा कृत्र भाव ×ा वर्षस्त्र विकार ।

विदेश- रूप का काम इस्तर व्यान एश् मी है।

्रम्मपुर्धमित संदेश वाह । के नाम वं १६६ वेंग पुरी हो दे वं ६९१ | क

लकार । विकेश--बानेर निवासी पिरावराख नहुमा नामे ने व्यक्तियि नी वी । व्याकरण-साहित्य

२८२४ प्रति स०३। पत्र स०१६। मे० बाल सं० १८६६ चैत्र पुदी १। ये० स० २/३। च

विशेष-इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ३३६) भीर है।

२=२६ प्रतिस०४। पत्र स०८। ले० बाल स०१५२७ चैत्र बुदो ८। वे० स०१६४०। ट भण्डार।

प्रशस्ति—सवत् १५२७ वर्षे चैत्र वदि द भौमे गोपाचलदुर्गे महाराजाधिराजशीवीत्तिसिंहदेवराज-प्रवर्त्तमानसमये श्री वालिदास पुत्र श्री हरि महा

२८२७ शाक्त्रायन व्याकरण-शाक्त्यायन । २ मे २० । मा० १४४५ है इख । नापा-सम्दूत । विषय-व्याकरण । र० काल ४ । ले० काल ४ । प्रपूर्ण । वे० म० ३४० । च भण्डार ।

२८८६ शिशुवोध—पाशीनाथ। पत्र स०६। मा०१०×४३ दखा। भाषा—सस्तृत। विषय—व्याकरण। र० काल ×। ले० काल स०१७३६ माघ सुदी २। वे० स० २८७। छ भण्डार।

प्रारम्भ-भूदेवदेवगोपाल, नत्वागोपालमीपवर ।

क्रियते काशीनायेन, शिशुबोधविशेपत ॥

२=२६. सङ्गाप्रक्रिया । प्रियं स० ४। मा० १०३×४३ इख्र । भाषा—सस्दृत । विषय~व्याकरत् । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० म० २०५ । छ् मण्टार ।

२८३० सम्बन्धविषद्मा । पत्र स०२४ । घा० ६५ \times ४३ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरस्य । र० काल \times । ते० काल \times । वे० स०२२७ । ज भण्डार ।

२८३१ संस्कृतमञ्जरी । पत्र स० ४ । मा० ११×५३ डख्र । भाषा—सम्कृत । विषय—व्याकरण । र० काल × । ले० काल स० १८२२ । पूर्ण । वे० स० ११९७ । स्त्र भण्डार ।

२५३२ सारस्वतीधातुपाठ । पत्र स० ५। मा० १०३ \times ४६ दश्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ब्याकरण । र० काल \times । ने० काल \times । पूर्ण । वे० स० १३७ । छ् भण्डार ।

विशेष-कठिन शब्दों के मर्थ भी दिये हुये हैं।

२८३३ सारस्वतपचसिघ । पत्र स०,१३। म्रा० १०×४ इख । भाषा-सस्वृत । विषय-व्यावररण । र० काल × । ले० काल स० १८५५ माघ सुदी ४,। पूर्ण । वे० स० १३७ । छ् भण्डार ।

न्द ३४ सारस्वतप्रक्रिया— श्रातुभृतिस्वरूपाचार्य । पत्र स० १२१ मे १४४ । ग्रा० ५२ ४४ इख । भाषा-सस्वत । विषय-स्थाकरण । र० काल ४ । ले० काल स० १५४६ । श्रपूर्ण । वे० स० १३६४ । श्र्य भण्डार । २५३४ प्रति स० २ । पत्र स० ६७ । ले० काल स० १७६१ । वे० स० ६०१ । श्र्य भण्डार ।

```
रस ] [ ब्यारवन्त्रीत
```

स्तरेई प्रतिसा रेश्वन वे देशहाने काल ते हृद्दाने से दरहा आर नागर। स्तरेक प्रतिसा शायन वे देशके काल तुरुहाने से दशहा सामगर। विदेव---भोजापेय के सिन्द शुस्तुकार ने प्रतिनिधि सो सी।

स्तरेस्त प्रतिस स्वापन में ६ के १०४। के काल में १०३० (स्वपूर्व में १०१) में

44677 1

बचर्र (यसको) नवर ने अतिनिधि हुई की ह

रत्रे. प्रति सः ६। पण तं प्रशा ने सक्ता तं १७१६। हे तु १२४८। इस प्रचार। विदेश---कप्रतायरणीत ने प्रतिनिधि तो थी।

प्ता प्रति संश्र्भागव वं प्रश्नाव वाला सं १७ ११ वं १७ १ का मध्यारी प्रतपृष्ट ग्राति सश्या प्रवास सं १९ के स्टार्टि काला सं १०१२ (स्थूपर्स) वे सं १९०१ में

भण्डार ह

घतपुर प्रति सः १ । वय वं १६४ । ते वात वं १ २१ । ते तं कर । व्यवस्थार । विकास-विवयस्य के प्रमाने प्रतिनित्त संबी ।

रात्प्रश्न प्रतिस्थ ११ विषयं १९६ के वाला वं १९०१ वं वर्टी क्षां स्थार। स्थार प्रतिस्थ १२ विषयं ११ के वाला वं १९६ वार पूरी १४ वं १६ । स

भण्डार ।

(दर्शकरूर्व जनकरणान ने दुनीयण्य ने पत्रमार्थ नगर दरिपूर्व के आंशिमित दी थी । केदमा दिवर्ष संदिक्त के हैं ।

ा ः इद्धा⊈्रह्मीकस्त हर्देशकाले देशाले यालाचं ६०६४ चलला बुदीप्राकेल प्रदर्शना

मन्दार ।

 १०३४, १३१३, ६५३, १२६६, १२७२, १२३२, १६५०, १२४०, १६६०, १२६१, १२६६, १२६४, १३०१, १३०२) ख भण्डार में ७ प्रतिया (वे स० २१५, २१६ [म], २१६, २१७, २१६, २१६, २६६) घ भण्डार में ३ प्रतिया (वे० स० ११६, १२०, १२१) क भण्डार में १५ प्रतिया (वे० स० ६२१, ६२२, ६२३, ६२५, ६२६, ६२७, ६२६, ६२६, ६३१, से ६३६, ६३६) च भण्डार में ५ प्रतिया (वे० स० ३६६, ४००, ४०१, ४०२, ४०३) छ भण्डार में ६ प्रतिया (वे० स० १३६, १३७, १४०, २४७, २५४, ६७) मा भण्डार में ३ प्रतिया (वे स० १२१, १४०, २२२) हम भण्डार में १ प्रतिया (वे० स० १६६०, १६६०, २००, २०७२, २१०५) भीर हैं।

उक्त प्रतियो में बहुत सी भपूर्ण प्रतिया भी हैं।

२८४० सारस्वतप्रक्रियाटीका-सहीभट्टी। पत्र स० ६७ । मा० ११४५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरता । र० काल ४ । ले० काल स० १८७६ । पूर्ण । वे० स० ८२४ । इस मण्डार । •

विशेय-महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

२८४१' सङ्गाप्रक्रिया । पत्र स०६। मा०१०३×५६च। मापा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र०काल ×। ले०काल ×। पूर्ण । वे० स०३००। व्यापदार।

२-५२ सिद्धहेमतन्त्रवृत्ति — जिनप्रभसूरि । पत्र स० ३। भा० ११×४३ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्याकरण । र० काल । ते० काल स० १७२४ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वे स० । ज मण्डार ।

विशेष-सवत् १४६४ की प्रति से प्रतिलिपि की गई थी।

२८८२ सिद्धान्तकौ मुद्दी — भट्टोजी दी चित । पत्र स० ६ । श्रा० ११×५३ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० काल × । ले० काल × । श्रपूर्ण । वे० स० ६४ । ज मण्डार ।

२ - ६४४ प्रति स०२ । पत्र स०२४० । ले० काल 🗴 । वे० स० ६६ । ज मण्डार ।

विशेष-पूर्वाद है।

ì

२ ५ ४ प्रति स० ३ । पत्र सं० १७६ । ले० काल 🗴 । वे० सं० १०१ । ज मण्डार । विशेष— उत्तरार्द्ध पूर्ण है ।

इसके मितिरिक्त ज मण्डार में २ प्रतिया (वे॰ सं॰ ६५, ६६) तथा ट मण्डार मे २ प्रतिया (वे॰ स॰ १६३४, १६६६) मीर हैं।

२=४६ सिद्धान्तकौमुदी "'पत्र स० ४३ । झा॰ १२ई×६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्याकरण । र० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५४७ । इन् भण्डार ।

```
944 ]
                                                                       व्याष्ट्रया-साहित
          २८३६ मृतिसः है। यत्र वे १८११ में कावार्त १८६६ में वे ६२१ वर्ष मणार।
          म्दर्भ प्रतिस छ। यत्र संदर्शने नालस १ दर्शने संदर्शका अस्थारः
          विदेश---नोक्षणंद के किया कुयसमार में अतिसिधि को बी ह
          रमहरू, प्रति सक्षा प्रवर्ध ६ के १२४ | ने काल संहब है । सपूर्ण | वे इंदर | का
करहार ।
          वबर्ड ( बस्सी ) नवर में प्रतिविधि इसे वी ।
          स्यमेश्च प्रतिसः के) पंत्र सं ४९ । ते काल सं १७१३ । ते ते १९४३ । सामाणारः।
          विवेष--क्ष्मकामरमाँख वे प्रविविधि की की है।
          स्त्रा मदिसं कापन वं ४काम कस्तर्व १७ इ.स. वं १७० । आह सम्बारा
          रुप्परे प्रतिस सामप्रसं १२ के ७२ कि कम्प वं १ १२ । बपूर्मा के सं १००० का
MERCINE |
          स्ब¥े प्रति सं के । व्यानं स्काले कला × (ब्लूबॉ (के वं १ ४६ (ब्राज्य क्यार)
          विश्वेष---- धन्त्रकीर्ति हुठ ईस्कृत टोना सक्रित 🖁 ३
          क्याप्टर प्रशिक्ष है । एक वे १६४। वे काल में १०९१। वे व्यक्त स्थाप
```

रम्ब्यप्र मित्र स हेरे । पत्र से १४६ । में कमार्थ १ १०। में व वहरे। कुमकार । सम्बद्ध प्रतिसः १९। वर्षं १। वे क्या वं १ ४६ साम पुनी१४। वे सः १६ । सः WHERT ! विश्वेद--- व व्यवस्थाता ने हुवोक्तर के पठनार्थ नवर इंग्डिव में प्रवितिषि की वी । केमच विश्वर्य

विवेच-विमनदाय के पठनार्व अविविधि हाई वी !

सीव तक है। रबार्थ प्रक्रिया १३। वन वे १६। से समार्थ १०६४ समाग्र बुरी ११३ वं २६६। स

TWIT!

उद्यक्त प्रतिका रेमा वच से १६। हे कार से १ मा ने से रेश। अ प्रवाद। विश्वेष-पुर्वाराज बर्जा के पत्न्यार्थ प्रतिविधि हुई थी । रक्षप्रदाप्तिसी १४ । यस क्षेत्र क्षाणि कलाती १२१७ | वे से प्रदास क्षाला। विवेत--परोक्षणल पाञ्चा के पञ्चलें अधिनिधि की वह वो । दो तिवये का वरित्रक्ष है । क्याद्र अस्ति स हक्षाचय वं १ हा के नाम वं १००६ | के ते १९४१ अर वसार।

विक्रोद---इनके स्रोतिशक्त कर जन्मार ने १७ प्रतिकों (वे व्हें ६ ७, १३९) द द है है ह

व्याकरण-साहित्य २८६४ सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका—लोकेशकर । पत्र स० ६७ । ग्रा० ११३×४३ इच । मापा-सस्कृत ।

विषय-व्याकरण । र॰ काल 🗶 । ले॰ काल 🗶 । पूर्ण । वे॰ स॰ ८०१ । क भण्डार ।

२८६६ प्रतिस≎२ । पत्र स० ⊏ से ११ । ले० काल 🗴 । प्रपूर्श । वे० स० ३४७ । ज भण्डार ।

विशेष--रीका का नाम तत्त्रदीपिका है ।

मण्डार ।

विशेप-प्रति प्राचीन है ।

२८६७ भिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति-सदानन्दगिए। पत्र स० १७३। मा० ११×४३ इख । भाषा-संस्कृत | विषय-व्याकरण | र काल X । ले॰ काल X । वे॰ स॰ दश । छ भण्डार ।

विशेष-टीका का नाम स्वोधिनीवृत्ति भी है।

२८६८ प्रति स०२। पत्र स०१७८। ले० काल सँ०१८५६ ज्येष्ठ बुदी ७। वै० स०३५१। ज

विशेष--पं महाचाद्र ने चन्द्रप्रभ चैश्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

२=६६ सारम्बतदीपिका-चन्द्रकीत्तिसूरि । पत्र स० १६० । ग्रा० १०×४ इच । भाषा-सस्कृत ।

विषय-व्याकररा। र० कल स० १६५६ । ले० काल 🗶 । पूर्गा । वै० सै० ७६५ । 🖼 भण्डार । च्चउ० प्रति स्ट २। पत्र स०६ से ११६। ले० काल स०१६५७ | वे० स० २६४। छ भण्डार |

विशेय---चन्द्रकीत्ति के शिष्य हर्षकीति ने प्रतिलिपि की थी।

२८७१ प्रति स० ३ । पत्र स० ७२ । ले॰ काल स० १८२८ । वे॰ स० २८३ । छ भण्डार ।

विशेष-मुनि चन्द्रभारा खेतसी ने प्रतिलिपि की थी। पत्र जीर्रा हैं।

२८७२ प्रति स०४ पत्र स०३। ले० काल स०१६६१। वे० स०१६४३। ट भण्डार!

विशेष--इनके मतिरिक्त श्रम च मौर ट भण्डार में एक एक प्रति (वै॰ स॰ १०५५, ३६६ तचा २०६४)

भीर है। **२८७३ सारस्वतद्**शाध्यायी । पत्र स० १० । मा० १०५×४५ इच्छ । भाषा-सस्कृत । विषव-

। रणकाल X | ले० काल स० १७६८ वैशाख बुदी ११ | वे० स० १३७ | छू भण्डार ।

क्लीय —प्रति सस्कृत टीका सहित है। कृष्णवास ने प्रतिनिपि की बी ।

५ सिद्धान्त'चन्द्रिकाटीका । पत्र स० १६। ग्रा० १०×४६ इत्र । भाषा–सस्कृत । विषय–

ैले कात X । प्रपूर्ण । वे० स० ८४६ । इन् मण्डार ।

निर्मय---प्रतिरिक्त क्षा के तथा व क्षणार में कुरू एक प्रति (वै धी कश्य ४ ७ १७२) धीर है। १८८० सिद्धान्त्रशीकुरीवीका ^ "" क्षत्र से ६१ । बा० ११६८९ देव । नामा बाहत । विश्वस--सामारुह १४ क्षणा × । वे काल × । तुर्ति । वे से १३ । क्षा क्षणार ।

विश्वेप-पर्शे के नुष्क ग्रंथ पानी में नम नमें हैं।

क्ष्ट्रंट, सिद्धास्त्रचित्रक्षा--रासचेत्रक्षाः त्यः वं ४४ । वा ६६/८१, दशः। वारा--र्तस्त्रः ; रिक्त--राकरक्षः र कलः × । वे कलः × । हर्ति । वै वं १६६१ । वा वच्चारः ।

क्याई प्रतिक्ष है। यस संदर्श के सम्बद्ध है एक दि संहरदर प्रक्रमार । सिकेट-पूर्वी सम्बद्ध है प्रतिकार्ध के संहर्दिश हेरदर हेरदर हेरदर हेरदर हेरदर हेरदर हेर्दर हेर्दर हैर्दर हेर्दर

्वत्र प्रति छ । पान र्यंत्राचा ११६ै×६३ देवा के नक्तात १७४४ प्रशस्त्र सुदी १४३ वे वं भनदाक ज्वार

> मृत्यक्ष्यः प्रश्निकः । स्वतः वं १७ । ते स्वतः वं १६ र । वे वं २२१ । वा स्थारः । विक्रेष-स्क्री वधारः ये १ प्रतिकारे (वे वं २२२ तवा ४) योर हैं।

रेस्स्ड, प्रति छ ६। पर वं रहा के कला वं रथपर वैष दुर्थ ह के वं ६ (क्षु प्रकार) विकेद-प्रती कृष में एक प्रति गीर है।

रूपहें प्रश्निस ७३ वर्ष बंद १६३ के कमार्थ १ ६४ प्रत्मक युक्त ६३वे सं ११२ हुई । क्षमार !

निर्कर---वन पुति कर है। संस्था ने नकी बन्धर्म मी है। वसे नन्यार ने एक उसेर (वे. वं. ६६६) और है।

सभी प्रतिक्षित या नवार ने ह प्रतिक्षी (वे से दृष्ण १६६४ १६६६, १८६६, १८३७, ६ ६१७ ६६) का नवार ने दृष्णिया (वे से १९६, ४) क्षायान समार वे स्वत्य समी (वे से ह १६६ प्रोर है। का व्यवहर ने दृष्णिया (ने वंश्वर १९६० १९६६) समूत्री। चा नवार ने दृष्णिया है। प्रतिक्ष (वे सं ४,६५६) का व्यवहर के एक प्रति (वे सं १९६) तवा जा प्रवार ने दृष्णियां (के संक्षित (वे सं ४,६५६) का व्यवहर के एक प्रति (वे सं १९६) तवा जा प्रवार ने दृष्णियां (के संक्षा १३ सं १९५, १९६) प्रतिकृति के स्वत्य स्वत्

ने बनी प्रतिया चपूर्व है।

२८६४ मिद्धान्तचन्द्रिकाटीका—लोकेशकर । पत्र स० ६७ । प्रा० ११३×४३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-व्याकरम् । र• काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ८०१ । क भण्डार ।

विशेष-टीका का नाम तत्त्रदीपिका है।

२८६६ प्रति स०२। पत्र स०८ मे ११। ले० काल ×ी श्रपूर्ण। वे० स०३४७। ज भण्डार। विशेष—प्रति प्राचीन है।

२८६७ भिद्धान्तचिन्द्रकावृत्ति—सटानन्टगिण् । पत्र स० १७३ । मा० ११ \times Y_{v}^{3} इद्य । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण् । र० काल \times । ते० काल \times । वे० स० ८१ । छ भण्डार ।

विशेष--टीका का नाम सुबोधिनीवृत्ति भी है।

२८६८ प्रति स०२। पत्र स०१७८। ले० काल सँ०१८५६ ज्येष्ठ बुदी ७। वे० स०३५१। ज मण्डार।

विशेष--प० महाचन्द्र ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

२८६६ सारम्बतदीपिका—चन्द्रकीर्त्तिसूरि । पत्र स० १६० । ग्रा० १०४४ इच । माषा—सस्कृत । विषय-व्याकरण । र० वाल सं० १६५६ । वे० काल ४ । पूर्ण । वे० सं० ७६५ । श्रा भण्डार ।

> २८८० प्रति स०२। पत्र स०६ से ११६। ले० काल स०१६५७। वे० स०२६४। इद् भण्डार। विशेष—चन्द्रकीर्ति के शिष्य हर्षकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी।

२८७१ प्रति स० ३ । पत्र स० ७२ । ले॰ काल स० १८२८ । वे॰ स० २८३ । छू मण्डार । विशेष--- मूनि चन्द्रभाए। खेतसी ने प्रतिलिपि की थी । पत्र जीर्ए हैं ।

२८७२ प्रति स०४ । पत्र स०३। ले० काल स०१६६१। वे० स०१६४३। ट भण्डार।

विशेष—इनके मतिरिक्त श्र च भौर ट भण्डार मे एक एक प्रति (वै॰ स॰ १०५५, ३६८ तवा २०६४) भौर है।

२८७२ सारस्यतदशाध्यायी । पत्र स० १०। मा० १०५ ४४६ दखा माथा—सल्कृत । विषय-ध्याकरण । र॰ काल ४ । ले० काल स० १७६८ वैशाख बुदी ११ । वे० स० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष -- प्रति सस्कृत टीका सहित है। कृष्णदास ने प्रतिलिपि की भी।

२८७४ सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका । पत्र स० १६ । आ० १०४४ दे इच्छ । भाषा—सस्कृत । विषय— व्याकरण । र० काल ४ । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० स० ८४६ । ड भण्डार ।

व्याक्त्य साधिय

: t= 1

STEPS 1

दिलीय-प्रतिरिक्त क का तथा ह क्यार में एक एक मति (वे सं वपक Y + २५१) मीर है। २८७७ मिद्यान्तकीमुदीबीका - ---। पन र्व ६४ । बा ११३×६ इंड । बाग शहत । विवन-

मानरहार सप्त X | ते वान X | पूर्ण | वै वै ६६ | अर नप्तर।

हिग्रैप-पर्शे के कुछ संख पानी से नम बने हैं।

रदादः, सिज्ञास्त्रचित्रका--रामर्चेत्राममः। यर र्षः ४४ । या स्रॄैXXॣरे इत्र । धारा-संस्तृतः। विश्व-सामरखार राज्ञ X कि राज X) पूर्णी वे र्व १६६१ । धा धन्यार ।

१८१६ प्रति सं । पात ते १६ वि शाय के १०४० | वे से ११६९ | का समार ।

निक्षेप--कृप्णुनंड में अहारक नुरेखवीर्ति ने अतिविधि की वी ।

amas हिंदां के | वस मंद देश के प्रसार्थ देशका में से १९१३ | ध्रासक्तार । feite-rett wurt ? t mfont (4 # test tetr tern tern tern ्राष्ट्र १ २३) ग्री**र** है। ٤

बह्नदर हति स प्राप्त संदेशाचा ११ई/X१ई वैचा के कार स १७४४ सदाह दशी १४। में बंध शास ल्यार।

इद्दर् प्रतिसं क्षानवर्तकाते वस्तर्ग १६ रावे वं २२१३ स सम्बारः

विशेष-पूर्वीमधार वे २ अतिमा (के सं २१२ तमा ४) भीर है।

ames mिसं ६) वय सं २६। में जान सं १७६९ देन दूरी दं में दं शक्त क्यार। निवेद—इती देशन ने एक प्रति धीर है।

रूप्तर्थ प्रतिस्थे का परसंद देश के कमार्थ १ १४ यामण दुरी दावे संदूरशास

विकेश-अन्य वर्ति दक्त है । वंश्वय ने नहीं कमार्ग मी हैं । इसी मन्तार ने एक प्रदि (वे. वं. ३१३) भीर है।

ent ufoffen ar wunt û e nited (û d' 17au, tery teru, teru, teru t ११७ ६१) क्रांच्यार में २ अतिया (वे वं २१२, ४) व्हंबना वा बच्चार ने एक एक मीट (वे ह दश्य और है। अन्य सम्बन्ध ने प्रतिक्यी (वे लंब १९०० १९६६, १९६०) धनूती हे च सम्बार ने प् प्रतिका (के र्च ४ के ४३) क्रामच्यार वे एक प्रति (के वं १९६) तमा का मण्यार में के प्रतिकां (के of the the the late | the E :

वे बच्चे प्रतिका सपूर्ण हैं।

२८६४ सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका—लोकेशकर । पत्र स० ६७ । ग्रा० ११३×४३ इच । मापा-पस्कृत ।

, विषय—घ्याकरसा । र० काल ⋉ । ले० काल ⋉ । पूर्मा । वै० स० ८०१ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्त्रदीपिका है।

२८६६ प्रतिस्०२ । पत्र स०८ से ११ । ले० काल ४ । प्रपूर्ण । वे० स०३४७ । ज मण्डार ।

विशेष--प्रति प्राचीन है।

२८६७ भिद्धान्तचन्द्रिकायृत्ति —सटानन्टगिषा । पत्र स० १७३ । मा० ११×४ इख । भाषा – संस्कृत । विषय – व्याकरण । र कान × । ले० कान × । वे० स० ८१ । छ भण्डार ।

विशेष-टीका का नाम सुबोधिनीवृत्ति भी है !

२८६८ प्रतिस०२ । पत्र स०१७८ । ते० काल सँ०१८५६ ज्येष्ठ बुदी ७ । वे० स०३५१ । ज

मण्डार ।

विशेष--पं० महाचाद्र ने चन्द्रप्रम चैर्यालय मे प्रतिलिपि की यी।

२८६६ सारम्बतदीपिका—चन्द्रकीर्त्तिसूरि । पत्र स० १६० । झा० १०×४ डच । भाषा–सस्कृत ।

विषय-स्याकरण । र० वःल सं० १६५६ । ते० काल 🗙 । पूर्ण । वे० सं० ७६५ । 🕏 भण्डार ।

च्च७० प्रति सट २। पत्र स०६ से ११६। ले० काल स०१६५७ । वे० स० २६४। ह्यू भण्डार ।

विशेष---चन्द्रशीति के शिष्य हर्षशीति ने प्रतिलिपि की थी ।

विशेष---मूनि च द्रभागु लेतसी ने प्रतिलिपि की थी। पत्र जीर्ग् हैं।

२८७२ प्रति स०४ पत्र स०३। ले० काल स०१६६१। वे० स०१६४३। ट मण्डार १

विशेष—इसके प्रतिरिक्त प्र च भौर ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे॰ स॰ १०४४, ३६८ तवा २०६४)

२८७१ प्रति स०३ । पत्र स०७२ । ले० काल स०१८२८ । वे० स०२८३ । छ भण्डार ।

भोर है।

व्याकरस्य । र॰ काल × । ले॰ काल स॰ १७६८ वैद्यास बुदी ११ । वे॰ स॰ १३७ । छ भण्डार ।

विकोप -- प्रति सस्कृत टीका महित है। कृष्णादास ने प्रतिलिपि की भी।

२८७४ सिद्धान्तचिन्द्रकाटीका । पत्र स० १६ । ग्रा० १०४४ दृ इत्त्र । भाषा-सस्कृत । विवय-व्याकरसा । र० काल ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० स० ८४६ । इ. भण्डार । २००४८ सिद्धान्त्रविष्यु—श्रीमयुस्युन् सरस्वती । त्रव वं २ । बा १ ४६ इ.च. जान-संस्त्र । स्वर–माररसार, त्राम ४ । वे काम सं १७४१ यासीय युरी १६। पूर्ण (वे वं ४१० । स चनार ।

निषेद—र्शिव भीकारतम्बंध परिवादणायां भीविवतेषदः कारक्यीः अन्यत्यः शिष्य बंध्यपुरन कारमधी निर्दापयः विकादविद्युम्पवादः ॥ बेचन् १७४२ वर्षे वार्यीयवनाके इप्युक्तो वर्षोक्ष्यां बुददावरे वयवनारीम्मन्तरे विक भी राममान्त दुवेश्य अन्यवक्षमा विकासविद्युपतिक्षे ॥ कृतवासः ॥

२८4६ सिद्धान्सर्वेबुविका—चनोत्सङ्गावक नं १३। बा १२ ४९ ईव । नगा—संस्तृतः | विवक—स्तरुट्धार्णकन × । के कन × । कुर्लुः वे सं १३४। बाज्यवार ।

२८०० सिद्धान्तपुत्रसम्बी—पथानस सङ्ख्याचे । त्यः चे ७० । सः १९४६ (यो सन्ता-वेस्त्यः । विस्व-स्वात्रस्त् । र तस्त्र ४ कि कस्त्रं १ ६६ सम्बद्धानुष्टी ३ । वे वं ३ । सः स्थारः ।

रम्बर,सिद्धान्तपुरूतवर्ष} राज्यस्य काला १९४२ हेदयासम्बद्धाः विषय-स्पानस्त्वार कल्य ४ | केथावर्षक्रिया हेता सुर्वार वे १ र शास सम्बद्धाः

२००६. हेमलोह्डब्रुहिंच----।वन वं ४४ । या १ ४२ ६व । याना-वंतना । दिवस-स्वासस्त्र | रंकस X | के वस X | बर्ज़िंग है वं १४६ । स्व तकार ।

२००० हेसम्बाक्त**कृषि -**हेमचन्द्राचार्वः पत्र व २४। या १९४६ व व । घरा–सङ्घः विदय–सम्बद्धाः स्थानः । शे सम्बद्धाः प्रति व १ घरा ठ सम्बदः ।

रुद्धर देसीव्याक्तरहा—देशयमदाश्यार्थी। यय वं दाया १ ४४३ इया वसा-संस्तृतः। विस्थ-सम्बद्धार कला ×ात्रे कला ×ा बहुती है वं देरः।

सिर्वेद - मीम में व्यक्तिक नव नहीं हैं। इंदि प्राचीन हैं।



कोश

२== अनेकार्थध्वनिमजरी-महीचपण कवि । पत्र स० ११ । मा० १२×५ हे इ व । भाषा-सस्कृत । त्रिपय-कोश । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । वे० स० १४ | इट भण्डार ।

२८८३ अनेकार्यध्वनिमखरी । पत्र स० १४। ग्रा० १०×४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोदा । र० काल × । ले० काल × । भपूर्ग । वे० स० १६१४ । ट भण्डार ।

विशेष- नृतीय प्रधिकार तक पूर्ण है।

२८८४ अनेकार्थमञ्जरी-नन्टदास । पत्र स० २१ । मा० ५१×४५ इच । भाषा-सरकृत । विषय-

कोश | र० काल 🗙 । ले० काल 🗶 । भ्रपूर्ण । वे० स० २१८ । भ्र भण्डार ।

२८८४ स्त्रनेकार्यशत-भट्टारक हर्पकीत्ति । पत्र स० २३ । मा० १०३×४३ इंच । मापा-सस्कृत ।

विषय-कोश । र० काल 🗙 । ले० काल स० १६९७ बैशाख बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० १४ । ड मण्डार ।

२८८६ स्त्रनेकार्थसप्रह्—हेमचन्द्राचार्य। पत्र स० ४। मा० १०×५ इ च। मापा-सस्कृत। विषय-

कोश । र० काल 🗙 । ले० काल स० १६६६ मपाढ बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ३,५ । क भण्डार ।

२८८७ स्रतेकार्थसमह । पत्र स० ४१। मा॰ १०×४३ इ.च.। भाषा-सस्कृत । विषय-कोस ।

र॰ काल × । ले॰ काल × । भ्रपूर्श | वे॰ स॰ ४ । च भण्डार | विशेप-इसका दूसरा नाम महीपकोश भी है।

२८८८ श्रमिधानकोप-पुरुपोत्तमृदेव। पत्र स० ३४। मा० ११३×६ इ च। भाषा-सस्कृत।

विषय-कोश । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स० ११७१ । स्त्र भण्डार ।

२८८ अभिधानर्चितामणिनाममाला-हेमचन्द्राचार्य । पत्र स. ६ । मा० ११×५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स० ६०५ । छा भण्डार ।

विशेप---भेवल प्रथमकाण्ड है।

मण्डार ।

२८० प्रति स०२। पत्र स०२३४ । ले० काल स० १७३० मावाढ सुदी १०। वे० स०३६। क

विशेष--स्वोपज्ञ सस्कृत टीका सहित है। महाराणा राजिंसह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी।

```
९२]
वस्परी प्रतिस्य देश पर्वते ६६। के काल साहब इच्चेक सुधीर | वे तं ा⊯। क
जन्मार।
विकेत—स्वोत्सकृति है।
```

स्पन्धः प्रतिसंधानम्बदं कवेदनपाने नामार्वं १७०० सकोनः पूरीदेदावपूर्णावे र्वदान चन्यारः।

२०८३ प्रतिसंदायपर्व ११९। से फान तं १८९६ बनास दुरी र | देर्च १। ब

क्माध्य प्रतिस्थं द्वायमधीरय±ोने कामस्यं र रश्चिमस्य पुरो रशावे सं १९१०।वा प्रचार।

विकेर—वं भीतपन नै प्रतिकिपि नी वी (

१८८६ व्यविधानसम्बद्धाः स्वर्गनसूत्रस्थि । यदंशः स्वः १६ । स्वः १ ४४३ इतः । वारा-संस्थः । स्वर्ग-संस्थः १९ राजः ४) के कलः ४। स्वर्णः । वे रंगः। स्व स्वर्णः ।

रूप्त, क्रिजिनाससर—पंशिवनीकाकः। पर तं १३ । का १९८६_{१ दंव} । वाल-संस्तुरः। विदय-नोकः। रंकल ×ोने कम्ब ×ादुर्कानै वं । काम्यदाः।

विकेद-वेपकाच एक है।

रम्मकः समरकोरा-च्यमप्रिक्षः (पगर्व २६। या १९८६ दर्गायास-चौक्यः) विषय-चौक्यः । र सम्प्रः । ते कमार्वे १ व्येकनुर्वि (४) दुर्वावे वे १ थरः | क्याच्यारः ।

निकेर-प्रकाशन विश्वपूर्ण को है। अस्तर, प्रति संश्वान दंश के तल दंश हो वे देश राज्य क्यार। केरदार, प्रति संश्वन दंश के तल दंश हो वे देश सम्बद्धाः

२६ महिस् धाक्त संदर्भके १२ वे कम्बर्ध १ २ वालोक्स पूरी १ । स्पूर्णा∳ दंदरों का कमारा

> २६ १ प्रतिसं शायन संश्कोत कलाते १ थाने वं प्रायक्तमणार। १६ २ प्रतिसः दायन वं रक्षेपरावे मस्तर्वे १ प्राये वं ररामपूर्वाहक

वक्तः।

कोश]

२६०३ प्रति स०७। पत्र स०१६। ले० काल स०१८६८ मासोज मुदी ६। वे० स०२४। ड

भण्डार।

विशेष-प्रथमकाण्ड तक है। भ्रन्तिम पत्र फटा हुआ है।

२६०४ प्रति सन् = । पत्र स० ७७ । ले० काल स० १८८३ ग्रामीज मुदी ३ । वे० स० २७ । इट

भण्डार ।

विशेष-जयपुर मे दीवाण ग्रमरचन्दजी के मन्दिर मे मालीराम माह ने प्रतिलिपि की थी।

२६०४ प्रति सं ६ । पत्र सं ० ८४। ले० काल सं १८१८ कार्तिक बुदी द । वे० सं ० १३६। छ

भण्डार ।

विशेष---ऋषि हेमराज के पठनार्थ ऋषि भारमझ ने जयदुर्ग मे प्रतिलिपि की थी। स० १८२२ आपाढ सुदी २ मे ३) ६० देकर पं० रेवतीसिंह के शिष्य रूपचन्द ने श्वेताम्बर जती से ली।

२६०६ प्रति स०१०। पत्र स०६१ से १३१। ले॰ काल सं०१६३० भाषाढ बुदी ११। भपूर्ण।

विशेष-मोतीराम ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

२६०७ प्रति स०११। पत्र म० ६४। ले० काल स०१६६१ बैशाख सुदी १४। वे० स० ३४४। ज भण्डार।

विशेष---कही २ टीवा भी दी हुई है।

रहः प्रति स०१२। पत्र स० ४६। ते० काल स०१७६६ सगिसर सुदी ४। वे० स०७। व्य भण्डार।

विशेष—श्नके श्रतिस्ति छा भण्डार मे २१ प्रतिया (कै० स० ६३८ ८०४, ७६१, ६२३, ११६६, ११६२, ८०६, ६१७, १२८६, १२८७, १२८६, १६६०, १६४६, १६६०, १३४२, १८३६, १४४८, १४६० १८६१, २०४) क मण्डार मे ५ प्रतिया (के० स० २१, २२, २३, २५, २६) ख मण्डार मे ५ प्रतिया (के० स ६, १०, ११, २६६ २६६) क मण्डार में ११ प्रतिया (के० सं० १६, १७, १८, १६, २०, २१, २२, २३, २४, २६) च भण्डार मे ७ प्रतिया (के० स० ६, १०, ११, १२, १३, १४) छ भण्डार मे ४ प्रतिया (के० स० १३६ १३६, १४१, २४ का) ज भण्डार में ४ प्रतिया (के० स० १३६ १३६, १४१, २४ का) ज भण्डार में ४ प्रतिया (के० स० १६, ३४०, ३४२, ६२) मा मण्डार १ प्रति (के० स० ६४), तथा ट भण्डार मे ४ प्रतिया (के० स० १८००, १८८५, २१०१ तथा २०७६) भीर है।

```
्थितः । प्रतिकः ३ । पत्र तं ६६ । सं नाला सः १० १ व्येष्ठ नुसी १ । दे तं ३० । सं
पत्थारः ।
पितेप---स्पोत्सकृति है।
प्रत्यस्य प्रतिकं ४ । पत्र वर्षकृते १४४ । सं नाला सं १७०० साम्रोज नुसी ११ । स्पूर्ण | रे
```

संध्। क्रमणारः । फ±3 प्रतिस⇔ शुक्रमणं ११२ । ते जन्न मं ११२६ सन्त्रसन्त्री २ | वे त रे | वं

क्यार। अब्दापु प्रशिक्षं ६। पण सँ र । ने कल वं १ रस्वीयान्य गुरी ११। दे वं १११। स क्यार।

विकेश—रं भीवराज ने ब्रतिनिधि गी वी ।

२०८४, योग्रयानसम्बद्ध-जर्मेश्वन्तस्याः। त्यत्तं १९।याः १८४३ इतः। बादा-संस्त्यः। दिस्त-मोताः र सल्याः) से जातः ४। बहुर्लाः हे वं १७। या क्यारः।

२८८६६ क्रमिवासकार—प⊁ शिवसीकाकांवव वं २६१ वा १२८४६ इंप | बाया—संख्या। विदय—केवा।र कक्ष ×ाशे पक्ष ×ाहुकी।वे वं | का कम्पार |

निर्वेत--देशराज्य तथ है।

दिनेद—इश्वस बाम सिनानुषातन की है।

अच्छा, अविशंदा वर्षक क्षेत्र के जान वं १९११ के १९११ का प्रचार। अच्चा, अविस् काषण वं १४ शो कम्बर्व हरावे वं १९२१ का ज्यार। एक्ष्म अविस् काषण वं १० के ६१३ के कमार्व १ २ मानोज कुसीरा कमार्वाह

र्द्धाश्चर।

दृहर् प्रतिस्रं शायम तं श्रदावे कलानं १ श्रापितं दशायाल्यार। वृह्य प्रतिस्रं हात्वसं १३ वे दशा ते नलानं १ दशाये वं १३ । म्यूनीस

eers I

२६१६. त्रिकारहशेपाभिधान-श्री पुरुपोत्तसदेव । पत्र स० ४३। श्रा० ११×५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २८० । स भण्डार ।

२६२० प्रति स० २। पत्र स० ४२। ले० काल Х। वे० स० १४४। च भण्डार।

२८२१ प्रति स० ३। पत्र स० ४४। ले० काल स० १६०३ धासीज बुदी ६। वै० स० १८६।

विशेष--जयपुर के महाराजा रामसिंह के शासनकाल में प० सदामुखजी के शिष्य फनेहलास ने प्रतिलिपि

की था।

२६२२. नाममाला—धनजय। पत्र स०१६। आ० ११४५ इ.च । मापा-सस्कृत । विषय-वोद्य। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० स० १४७ । स्त्र मण्डार।

२६२३ प्रति स०२। पत्र स०१३। ले॰ काल स० १८३७ फाग्रुस सुदी १। वे॰ स०२८२। ध्र भण्डार।

विशेष-पाटोदी के मन्दिर में खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी।

इसके मितिरिक्त क्रा मण्डार में ३ प्रतिया (वे० स० १४, १०७३, १०५६) मीर हैं।

२६२४ प्रति स०३। पत्र स०१४। ले॰ काल स०१३०६ कार्त्तिक बुदी ८। वे० स०६३। ह्व

मण्हार ।

विशेष-इ मण्डार में एक प्रति (वै० स० ३२२) भीर है।

२६२४ प्रति स०४। पत्र स०१६। ले० काल स० १६४३ ज्येष्ठ सुदी ११। वे० स०२४६। ह्य

विशेष--प॰ भारामझ ने प्रतिलिपि की थी।

इसके भृतिरिक्त इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ स॰ २६६) तथा ज़ भण्डार में (वे॰ स॰ २७६) की एक प्रति भौर है।

२६२६ प्रति स० ४। पथ स० २७। ते० काल स० १८१६। ते० सं० १८४। व्य मण्डार। २६२७ प्रति सं०६। पत्र स० १२। ते० काल स० १८०१ फाष्ट्रण मुदी ६। वे० स० ४२२। व्य मण्डार।

२६२८ प्रति स० ७ । पत्र स० १७ से १६ । ले० काल 🗙 । प्रपूर्ण । वे० स० १६०८ । ट भण्डार । विशेष—इसके प्रतिरिक्त आ भण्डार में व प्रतिया (वे० स० १०७३, १४, १०८६) स, इर् तथा ज भण्डार में १-१ प्रति (वे० स० ३२२, २६६, २७६) ग्रीर हैं। ^३३. क्षसरकेपदीका—सानुबीदीकिनावद हं ११४ मा १ ४६ रहः। मना-चंग्रद। विदर-मोदार वल ×ादे वल ×ादुर्लाहे हं ६ । क्ष बस्ताः

निर्देश---वनेत वंबोद्धाव थी कहीवर श्री वीतिविद्दवेव वी बाबा से टीवा निसी वर्ष ।

९६१ प्रतिसः २ । पत्र वं २४१ । ते नक्त × । बपूर्वा वे सः ७ । च कारार । २६११ प्रतिसं ३ । पत्र वं ३१ । वे काल × । वे सं १ ६ । ट कारार ।

रिकेर--- तरवस्था तक है।

२६१८ः प्रकाशकोरा—कृपकुरः । पत्र वं ४ | का १३×६३ इ.च.। बारा-संस्कृत । शेवव-सोध । र कल ×। के कल ×। पूर्ण । वे वं १२ | क क्यारः ।

२६१६ मधिसं दापवर्ष राक्षेत्रकार्यः द प्रास्तिकनूपीपः। ने न ४१। च वस्थारः।

९६१४ प्रतिसंदेश पर्यत् रामे काल वं १२ व पैन दुर्गदावे तं १११ जि. सम्बद्धाः

विकेद—में करामुक्तनी ने नामे किया ने प्रतिकीवार्व प्रतिनिधि की वी ।

१८१८ प्रमान्तीकोरा—बरहर्षि । यत्र तं २ । बा ११∄प्रप_र इत्र । बाला-संस्टा । विषय— सोधार-काल × । के काल × । पूर्वः के वं २ १ । बालवार (

म्हर्स् यद्राकृतिकेशा^{.....}ान्यर्थे १ । या ११८८ १तः वस्त-वंतर्थः | रियन् रोवः । र कन्त ≾ीते कन्त ≾ । यहुर्थः वे दे १३ । कात्रकारः ।

२६१७ एक्स कृष्यासमाचा ाणाणं टाया १२}×६ इ.चायला- संस्टावियस- रोखा र सम्ब×ाने सम्बर्ग १६ ६ चीत बुदी १। दुर्तावै वं ११३। ज लच्छार (

निकेर—चनार्ते वन्तुर में नहारामा धर्मतव्ह ने बात्तवक्रम में थ देश्यक्रीति के बनव है रं करमुक्ती में विष्य क्रीमान ने प्रतिकिरि की थी।

२६१८. प्रिकारक होपशुणी (धानरकोता)— धानरित्। पण तं १४ । सा ११ ×६३ ६ ४ । समा-चेन्द्रतः (मिन्न-चीकार पक्रा×ामें कल ×ादुर्लं। वे तं १४१ । च नव्यार ।

विवेच—धनरामेव के काचों में धारी वाले कमी की लगित बेक्स की हुई है। जलेक लगित वा जारानिक अब भी निवा हवा है।

इसके बाविरिक हमी बच्चार में ३ त्रक्तिमी (वे वं १४२, १४३ १४१) और 🛊 ।

२६४०. लिंगानुशासन—हैमचन्द्र । पत्र सं० १० । ग्रा० १०४४ देश । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६० । ज भण्डार ।

विशेष-कही २ शम्दार्थ तथा टीका भी सस्कृत मे धी हुई हैं।

२६४१ विश्वप्रकाश —वैद्यराज महेश्वर । पत्र स० १०१ । भा० १९४४ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र० काल ४ । ले० काल सं० १७६६ भासोज सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ६६३ । क भण्डार ।

२६४२ प्रति स०२। पत्र स०१६। ते० काल ४। वे० सं० ३३२। क भण्डार।

२६४३ विश्वतीचन-धरसेन। पत्र स० १८। मा० १०३×४३ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-काश । र० काल × । ले० काल स० १५६६ । पूर्ण । वे० स० २७५ । च भण्डार ।

विशेष---ग्रन्य का नाम मुक्तावली भी है।

२६४४ विश्वलोचनकोशकीशब्दानुक्रमणिका ' । पत्र स० २६। मा० १०×४६ इंच । भाषा-सम्भूत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५५७ । आ भण्डार ।

२६४४ शतक । पत्र स० ६। आ० ११×४३ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र० वाल × ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० स० ६६ ६। इस भण्डार ।

२६४६ शब्दप्रभेट व धातुप्रभेद-सकत वैद्य चूडामिए श्री महेश्वर । पत्र स० १६ । मा० १०×५३ इव । भाषा-संस्कृत । विषय-कोश । र० काल 🗴 । ले० काल 🗙 । मपूर्ण । वे० स० २७७ । ख भण्डार ।

२६४७ शब्द्रा । पत्र सं० १६६ । ग्रा० ११×५० इखा । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ३४६ । ज भण्डार ।

२६४८ शारदीनाममाला'''' । पत्र स० २४ से ४७ । आ० १०००४६ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र० काल ४ । ले० काल ४ । मपूर्ण । वे० सं० ६८३ । ऋ भण्डार ।

२६४६ शिलोब्द्यकोश-किष सारस्वत । पत्र स०१७। झा० १०३×४ इख्र । भाषा-सस्कृत । ।वषय-काश । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । (तृतीयलड तक) वे० स० ३४३। च भण्डार ।

विशेप--रचना ममरकोश के माधार पर की गई है जैसा कि कवि के निम्न पद्यों से प्रकट है।

कवेरमहर्सिहस्य कृतिरेपाति निर्मला। श्रीचन्द्रतारकं भूयात्रामिलगानुशासनम्। पद्मानिवोधयस्यक्कं शास्त्राणि कुरुते कवि तस्तौरभनभस्वत सतस्तन्वन्तितद्गुणा।। 246 1 २६२६ मासमाचा**** । एक वे ११ । मा १ ×१३ ईव । बाता-संस्कृत (विचव-नोच । र

नल ×। ने नल ×। भरूर्ण। वे वे १६२ । इट नग्दार।

^क६३ साममात्रा---वभारसीहास। दर नं १४। या व×१ ह**स**्ताना-द्वित्री। दिरह सम्र र नान ⋉ाने गल ⋉ापूर्जा वे सं ३४ । अन्यारा

२६११ बीजकाकाता)***** रव वं २६। बा ६_२×४१ इ.च । बाला-हिनी । रिनय-नीय । र नाम ×। ने नाम ×। पूर्ण । वे त १ ४। व्यापनार।

विक्री-रिवसहं नवशि वै ऋतिनिधि की थी।

१६६९ सामस**क्टरी**—सहदासः पण नं १२ । बा 🔀 इ.च । बाला-हिन्दी दिनस-रोहः । र नान ≍ाने नान वं १ ३३ चाइल नुदी ११ । पूर्ण ⊨ रे वं ३१३ । क्र चमार ।

विकेश-समामा बाव में प्रतिविधि की की है।

१६३६ मेदिबीकारा । यद वं ६४ । सा १ ई%४६ इ.स. मारा-संस्कृत (६४४ साह) र नल×।के नल×।दुर्साके ते ३ १। कवकार।

१८३४ प्रतिसं २ । यत्र वं ११६ । संनात × । दे तं २७ । या अस्टार ।

२६३४ हरमञ्दरिन्यममासा—गोपाकदास सुब इत्यक्त । यद व । शा १ ८६ हम । माना-बंतरूट। विश्व-बोधाः र नामार्थ १६४४। से सामार्ग १७ वीच बुधी १ । पूर्णाः वे सं रेक्कर । या सम्बार ।

विदेश-बारम्य वे नाववाना वी शरह स्तीक है ।

१६३६ समुनाममाना-हर्पकीश्विस्रि । दन व १३।या ६×६, इस । वारा-नास्य । विका-रोस । र मल × । वे मान ते १०२ लीत पूरी ३ । दूर्त । वे व ११२ । व पमार ।

विश्वेष-स्वार्डराम ने अविविधि भी भी ।

कृष्टक प्रतिस्थित सावताची स्थाप कामा अर्थ में ची प्रशास सम्बद्धाता श्चारू प्रतिस है। यस सं के हर, इंक के प्रदेश में मान X । ब्यूर्ण (के संहर Y) ह

क्रमार ।

बहरेह मिन्नासासम् । यह वं १। वा १ XX इवा याना संस्कृत । विवय-केंग्र र काद ×ाने कल ×ामपूर्वादे वे १६६। इट वचार।

मिक्केन-- १ से वाले पत्र तही हैं।

२६४०. लिगानुशासन—हैमचन्द्र । पत्र सँ० १० । आ० १०४४ है इस्र । भाषा—सस्कृत । विषय--कोश । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वै० स० ६० । ज भण्डार ।

विशेष-कही २ घट्टार्थ तथा टीका भी संस्कृत मे दी हुई हैं।

२६४१ विश्वप्रकाश —वैद्यराज महेरवर । पत्र स० १०१ । भा० ११×४६ दश्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोदा । र० काल × । ले० काल स० १७६६ भासोज सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ६६३ । क भण्डार ।

२६४२ प्रति स० २ । पत्र स० १६ । ले० काल 🗙 । वै० सै० ३३२ । क मण्डार ।

२६४३ विश्वलोचन-धरसेन। पत्र स० १६। मा० १०३ ४३ इखा भाषा-सस्कृत। विषय-काश। र० काल ×। ले० वाल स० १४६६। पूर्ण। वे० स० २७४। च भण्डार।

विशेष-पत्म का नाम मुक्तावली भी है।

२६४४ विश्वलोचनकोशकीशब्दानुक्रमिण्का " । पत्र स० २६। मा० १०×४६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कोदा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० मन्छ। स्त्र भण्डार ।

२६४४ शतक । पत्र स० ६। गा० ११×४३ इखा भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । ८० काल × ले० काल ×। मधूर्स | वे० स० ६६ ६। हा भण्डार ।

२६४६ शब्दप्रभेद व धातुप्रभेद-सकत वैद्य चूहामिए श्री महेश्वर। पत्र स० १६ । मा० १०×५३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र० काल 🗴 । ते० काल 🗴 । मपूर्ण । वे० स० २७७ । स्व भण्डार ।

२६४७ शब्दरत । पत्र स० १६६ । मा० ११×१ हु इख । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । ८० काल × । मपूर्ण । वे० स० ३४६ । जा मण्डार ।

न्दश्य शारदीनाममाला' ' । पत्र स० २४ से ४७ । मा० १०३×४३ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-कोश । र० काल × । ते० काल × । भपूर्ण । वे० सं० ६८३ । आ भण्डार ।

२६४६ शिलोञ्झकोश—किष सारस्वत । पत्र स० १७ । आ० १०३×६ दश्च । भाषा-सस्कृत । विषय-कोषा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । (सृतीयस्रह तक) वै० स० ३४३ । च मण्डार ।

विशेष—रचना भगरकोश के भाषार पर की गई है जैसा कि कवि के निम्न पद्यों से प्रकट है।

कवरमहर्सिहस्य कृतिरेपाति निर्मला। श्रीचन्द्रतारकं भूयान्नामिलगानुकासनम्। पद्मानिबोधयत्यक्कं शास्त्राणि कुक्ते कवि तक्षौरमनभस्यत सतस्तन्वित्ततस्युणा।। te⊏] [कोस

मुरेजनपरिक्षेत्र नागर्विषेतु व्यक्तिपु : एए नाजुष्पनपत्रेषु विवर्षेत्र क्रियो स्था ।)

२८१० समोबसायती—सङ्गरदिष । पथर्त १ से १४ । सा० १२×१ दश्च । जाना-संस्तुत ।

प्रियम-गाँध । र नाम धाँ १११७ वंगतिर तुरी । स्पृति । वे च १११ स अधार ।

मिकेर—मियार पिरोजनमेट में संस्कृतिकान्य के देवसुंदर के वह में बीर्टिववदेवसूरि में प्रतिक्षित की की ।



ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान

२६५१. श्ररिहत केवली पाशा '। पत्र स० १४ । श्रा० १२४१ इच । भाषा- सस्कृत । वषय-ज्योतिष । र० काल स० १७०७ सावन सुदी ५ । ते० काल 🗙 । पूर्ण । वे० म० ३५ । क मण्डार ।

विशेष---प्रत्य रचना सहिजानन्दपुर में हुई थी।

२६५२ म्त्ररिष्ट कर्ता । पत्र स०३। मा० ११४४ इच । मापा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष • काल ×। ति• काल ×। पूर्ण । वे• सं• २५६। ख भण्डार ।

विशेष-- ६० श्लोक हैं।

२६४३ श्रिरिष्टाध्याय '। पत्र स० ११। मा० ८४१। भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल ४। ले० काल स० १८९६ वैशास सुदी १०। पूर्ण । वे० सं० १३। ख भण्डार ।

विशेष—प॰ जीवगाराम ने शिष्य पन्नालाल के लिये प्रतिलिपि की । ६ पत्र से भागे भारतीस्तोत्र दिया हुमा है।

२६४४ व्यवजट केवली । पत्र स० १० । आ० ५×४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५६ । व्य भण्डार ।

२६४४ टचप्रह फल "। पत्र स० १। प्रा० १०३ ४७३ इंच । भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष र० काल ४। ने० काल ४। पूर्ण। वे० स० २६७। स्त्र भण्डार।

२६४६ करण कौत्हल । पत्र स० ११ । प्रा० १० $\frac{3}{7}$ × $\frac{3}{7}$ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिय। र० काल \times । ले॰ काल \times । पूर्ण । वे॰ स० २१५ । ज भण्डार ।

२६४७ करत्तक्ख्या | पत्र सं०११ | मा०१०र्देर ४ इंच। मापा-प्राकृत । विषय-ज्योतिष । र॰ फाल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण | वे० सं०१०६ | क भण्डार ।

विशेष--सस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं। माशिवयचन्द्र ने वृन्दावन में प्रतिलिपि की।

२६४८ कर्पूरचक--। पत्र सं०१। झा० १४३×११ इ.च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल X । ले० काल स० १८६३ कार्तिक बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० २१६४ । स्त्र मण्डार ।

विशेष—चक्र मवन्ती नगरी से प्रारम्भ होता है, इसके चारों मोर देश चक्र है तथा उनका फल है। प० खुशाल ने जयपुर में प्रतिलिपि भी थी।

*** }

२६३६ सनि स० ६ । यन सं १ । ते याना वं १०४ । वे सं १११६ का मण्यार । रिनेट—निम मरतीयर वे नालपुर में क्रीनिर्मात को वी ।

° ६६० वसराति कथ (वसे विशाद) ****** वस मंदिरा सा ब्है×रद्दश प्रसा-संस्कृत दिस्य-क्सोनियार कान × को कान ≻ाकुर्ण × को वे दिस्टाका प्रकार ।

३६६१ वर्मे विवाद क्लाण्यानावर्षे १। या १ ×४६ इ.च । वारा-दिवा) दिवस-क्योतिव १. बान × । ते वाल × । वर्ण १९ वं १६। का क्यार ।

विशेष--राशियों के बहुवार वर्णों का वस किया हुआ है।

ा १६२० कालाहारू — ने पार्च हैं। या फरप्र हेंपा मारा-मेला∉ र निपर-अमेरिया र बक्त ×ार्म बक्त ×ार्थी ने संदेश का समार्थ

१५५३ काम्रहात्र™ा)पव वं २। वा १ _४४८३ दथ । वापा-वंशाय । रिपर-क्यांतिर ।

र सम्प्राप्ते सम्प्राप्तमी वे श्रेश्वराज्यभगरः

२६६५ चौतुक बीजावतीर्याणा परवं ३ । या १ (४०६ दर्या सरा-वंतरातिरर असोटरार यात्र ४ के यात्र वं १०६२ । वैदास सुधी ११ पूर्व । वे ४ ९११ । व सम्पर।

२६% कृत स्थवहारण्याना वस्त्री १ । बा {४६ त्यायसम्बद्धात् । विस्त-व्यक्तितः । र दात्र ४। ते पात्र ४। अपूर्णः वे सं ६६६०। ट स्थारः । ३६६३ अर्थेस्थोरसाण्याना व्यार्थक ७ । बा क्रीऽद्रदेषा यसा-वीहतः । विस्त-व्यक्तितः ।

र शाम ×ात्र शाम सं १ व । पूर्वा वे सं २१२ । साववार ६

२६६० सर्गलिहिता—सर्गेखिश । पर र्लश्चा १९०८ई इच । सरा⊸र्वस्टर | विशव-न्योजिय र कल × | ते नलार्थ १००६ । लङ्की । वे दे ११६० । काल्यार ।

२६६०: सङ्ख्या बर्कत्र------) यस वं १ । का ६८४ ६ व । जारा-नीलायः) नियम-अमेरिय ∤ र यस्त्र ४ । के प्रकार्यः १६६ । दुर्लः । वै यं १७२७ । इत्यापारः

विसंत-न्यही की बच्चा तथा उत्तवसाधी के वन्तर पूर्व कम दिवे हुए हैं।

रहरूर सङ्ख्याच्याचार वंदाया १ है×१ देव । वस-वीरता विस्त-स्थेतिकार रक्ष ×ाते सका×ाध्युकी वंद देश देवस्थारः।

६३.६ महक्षावयः—सर्वसाहित्यक्षावयः वं ४० वा १५/४६६ वर्षामयः—वैदरुतः।विदरः— स्थानकारं सम्प्रकारं राज्यस्य । स्यूर्णादे वं ४४ । तावस्यारः। २६७८ चन्द्रनाडीसूर्यनाडीकवच" ""। पत्र स० ५-२३। मा० १०×४६ इंच। भाषा-सस्कृत। र० काल ×। ले० काल ×। म्रपूर्ण। वे० स० १६८। ड भण्डार।

विशेष-इसके भागे पचनत प्रमारा लक्षरा भी है।

२६७६ चमत्कार्चितामिष् "'। पत्र स० २-६। मा० १०×४३ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० ×। १⊏१८ फाग्रुण बुदी ४। पूर्ण। वे० स० ६३२। स्त्र भण्डार।

२६८० चमत्कारचिन्तामणि । पत्र स० २६। म्रा० १०४४ इ.च.। भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७३० । ट भण्डार ।

२६८१. छायापुरुपलच्या" । पत्र सं०२। मा० ११ \times ४ $_{g}^{3}$ इ.च । भाषा-सस्कृत । विषय-सामृद्रिक शास्त्र । र० काल \times । ते० काल \times । पूर्ण । वे० स० १४४ । छ भण्डार ।

विशेष--नौनिघराम ने प्रतिलिपि की थी।

२६=२. जन्मपत्रीप्रहिवचार "'।पत्र स०१। म्रा० १२×५ दे इ च । भाषा—सस्कृत । विषय— ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २२१३ । द्या भण्डार ।

२६८३ जन्मपत्रीविचार'' । पत्र स०३। मा० १२४५३ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० स० ६१० । स्त्र भण्डार ।

२६८४ जन्मप्रदीप--रोमकाचार्य। पत्र स० २-२०। ग्रा० १२४१३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १८३१ । ग्रपूर्ण । वे० स० १०४८ । ग्रा भण्डार ।

विशेप-शंकरभट्ट ने प्रतिलिपि की थी।

२६८४. जन्मफल " । पत्र म०१। म्रा०१११९४५ हृ च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वे० स०२०२४ । ऋ भण्डार ।

२६८६ जातककर्मपद्धति' श्रीपति । पत्र स०१४। ग्रा०११८४३ इ व । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल ४ । ले० काल स०१६३८ वैशाल मुदी १ । पूर्ण । वे० स०६०० । श्रु भण्डार ।

२६८७ जातकपद्धति—केशव। पत्र स०१०। ग्रा०११४५ दे द व। भाषा–संस्कृत । विषय–ज्योतिष र०काल ४। से०काल ४। पूर्ण। वे०स०२१७। ज भण्डार।

रध्म जातकपद्धति । पत्र सं० २६ । आ० ५×६३ । भाषा-सस्कृत । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४६ । ट मण्डार ।

विशेष-प्रति हिन्दी टीका सहित है।

संस्थः, आलकामस्त्— हैवस्तु विराजानक वे ४३। जा हे २०४४ दवा सत्ता-संस्था। विराद-सरोतियार नाम ×ाते वाम वे हेवाई सारवासूचे हेदा दुर्ला के वे दकादाना

विदेश—नामपुर्देशं मृत्रपूर्वमानिक ने अतिनिधि नी वी ।

२६६ प्रतिस्थं के प्रवर्ण १ । ने प्रज्ञानंदेश प्रतिकशुक्षेत्र। हे संदूरका अस्तरार।

दिरीय—चट्ट यंबाबर ने बावपुर वे डॉवनियि की वी I

प्टर्डर जानवासकार—ा या में देने देश था. देप्रद द पा बारा-नंदरत (दिया-कर्तिता र सम्प्राति सम्प्रा बार्टा वि में देशका ह समार :

३,६६२ ब्यादिपरसमाज्ञाः च्यानं देवै १४। या १ _६२४ १ वा६भा-नंतना । दिपर-क्ष्मीरचार तत्र ×ावे वक्त ×ाव्याची वे हर्देश स्वकारः

२६६३ प्रतिसं≉ २। यम में ३१। में यक्त ×ावे वं ११४। आ सरहर।

दिस्टेक-स्टिट संस्था दीपा वरित्त है ।

३६६५. व्यातिपत्रक्षिताला^{......} चंदाद । वर शंद के २० त्या १३,४४३ द व । बला-संस्कृत । विकस्-कोटिय । र जम्म × । वे जम्म × । पूर्ण । के संदुर (अस वस्थलः ।

२६६४. क्यांतिकक्यार्यस^{म्मामा} वस में १। सा १ है×भ्देद पा वारा-प्रश्ति । दिवस-स्वीतिक १ काम ×ा के काम ×ा पूर्व ंदे में ११४। का क्यारा

रह£६ क्यांतिपतारमाधा—कुमाराय । पत्र शंदे देशे । बा ६०,४६ ६७ । याना—हिम्सी (पद) | रिपन—मोरोज्य । र जाना ४ । ने कमा ने १०४१ पालिक बुद्धे १२ । स्यूर्भा दे नं १६१३ । कमारा

विनेद—स्टेसन रैंच ने नीनिन्धन वन नी कुस्यक के निका।

सहरे मान--(वत व वर)

क्ष्य बेंदरिया विशील वर वो केर---

वेंचरियों जोगी जबन शराय रखनी शाम । वंचन यह मोनों जनन केंद्र निकीश नवान ११९११ ब्रीजो बढटम भारती यर बंधनों वर देखि । इन की क्याँ नद्दम है तर्द ह व में देखि ११७१।

->>

मन्तिम---

घरप लग्यो जा ग्रंस में सोई दिन चित धारि । वा दिन उतनी घढी जु पल बीते लग्न विचारि ॥४०॥ सगन लिखे ते गिरह जो जा घर बैठो ग्राय । सा घर के फल सुफल को कीजे मिठ बनाय ॥४१॥

इति श्री कवि कृपाराम कृत मापा ज्योतिपसार सपूर्ण।

२६६७ ज्योतिपसारलग्नचन्द्रिका—काशीनाथ । पत्र स० ६३ । आ०६-३४४ इच । भाषा— सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल ४ । ले० काल स०१८६३ पौष सुदी २ । पूर्ण । वे० म०६३ । स्व भण्डार ।

२६६८ च्योतियसारसूत्रटिप्पण्—नारचन्द्र। पत्र स० १६। झा० १०४४ इञ्च। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिय। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० म० २८२। व्य भण्डार।

विशेष--- मूलग्रन्यकर्ता सागरचन्द्र है।

२६६६ ज्योतिपशास्त्र "। पत्र स० ११ । ग्रा० ५×४ इख्र । भाषा—सस्कृत । विषय—ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २०१ । क भण्डार ।

३००० प्रति स०२। पत्र स०३३। ले० काल 🗙 । वै० स० ५२१। व्य भण्डार।

३००१. ज्योतिपशास्त्र । पत्र स० ५ । घा० १०×५ है इद्य । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । के० काल × । मपूर्ण । वे० म० १६ द ४ । ट भण्डार ।

३००२. च्योतिपशास्त्र । पत्र स० ४८। आ० ६×६३ इखा। भाषा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष। र० काल ×। ले० काल स० १७६८ ज्येष्ठ सुदी १५। पूर्ण। वे० स० १११५। ऋ भण्डार।

विशेष--ज्योतिप विषय का सग्रह ग्रन्थ है।

प्रारम्भ में फुछ व्यक्तियों के जन्म टिप्पण दिये गये हैं इनकी सख्या २२ है। इनमें मुख्यरूप ने निम्न नाम तथा उनके जन्म समय उल्लेखनीय हैं—

महाराजा विश्वनिसिंह के पुत्र महाराजा जयसिंह जन्म स० १७४५ मगसिर
महाराजा विश्वनिसिंह के द्वितीय पुत्र विजयसिंह जन्म स० १७४७ चैत्र सुदी ६
महाराजा सवाई जयसिंह की राखो गींडि के पुत्र स० १७६६
रामचन्द्र (जन्म नाम कामूराम) स० १७१५ फागुरा सुदी २
दौलतरामजी (जन्म नाम बेगराज) स० १७४६ मापाढ बुदी १४

१० २ सामिकसमुख्याच्याच्याचपर्यं ११। या ११८४४, इंचा जाना-संस्कृतः विस्त-व्यक्तिकारः नला×ाने नलासं १.४६। दुर्लावे संस्थातसम्बद्धार

विदेश-वडा नरायने में भी पार्यनाय चैत्वालय में बीवलराम के प्रतिनिधि की वी ।

१ प्रतासिकवयसुमासुमयम्मानाय वं १।सा १ ×४१६म। कला-नंतरुठ। रियक-कोटियार यस ×1वे राज ×1इर्डावे वं १९२1क क्यार।

३ ०२ जिनुस्वयमुङ्ग्री-----।यस सं १० वा ११×२ दक्षः कान-संस्तृतः।स्वय-ज्योक्षितः) १ सम्बद्धाः स्वास-४ प्रणीति सं ११०० । सामग्यारः।

२००६ वैद्यानकावारा **** । पर गं १६ । या ११% इक्षः । जाना-संस्थाः विश्व-स्वोतिकः । इ. सहस्य । के साल ४ । पूर्णः । वे सं ६१२ । का वस्तारः ।

विभेत⊶ ६ वे ६ तम् युन्धी प्रति के पथ है। ए ले १४ तक वाली प्रति प्राचील है। दी प्रतिवींशा वन्तिपक्त है।

्रे १००० इस्तेत्रसङ्ग्रहें पाना वर्ष के १। शा क्रोट्रशाक्का वाचा—संदर्धः विचय-स्थितितः। इ.सम ≍ामे यस्त ≍ाकृषी वर्ष इंदर्गः सावस्थारः।

३ म. सङ्ग्रीरवार^{माम}ोयघर्षे ११। का ४२_६ रखः सम्या-हिम्मीः विश्व-स्थीतेतः | १ वास ≿।ते यस्त वे १९ । कृषि श्री १०८ । स्थान्यारः ।

क्रिक-सीट साहि विचार जी विने हुने हैं।

विमातिकित एकामें मीर है—

सञ्ज्ञातात्वाता वाता वर्ष वापूर हिन्सी [१ वर्षका] सिन्नविका के बादें — िरिप्त क्षेत्र के

रहानुष्ठाहरूप — हिन्दी मि बाग शं १८९०] विक्रोस-स्मात विवर्ती का नेवन बाल्य नहां है विक्रोस समित में ने क्या स्वयु होता है उसका हार्यक्र

६६ होटो में निमा नग है।

१ ६ सक्यवेषप्रीहाहासः रूपाय पर्वादः । वा १ ४४ वधा बादा-संपृतः । दिवस-स्टेलिस र बात ×ादुर्गादे दं १४ । अरचारः।

हर सम्बन्धः न्यायन संदेशे दशाला ट>३६ दशालारा-संदगादिपर-सरीक्षा इ.साम प्राप्ते सम्बन्धे १.१८रविष्ट से (बार्गोति संदेशिया सम्बाट च्योतिष एव निमित्तज्ञान]

३०११ नरपतिजयचर्या -- नरपति । पत्र स० १४८ । आ० १२३×६ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल स० १५२३ चैत्र सुदी १५ । ते० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६४६ । स्र भण्डार ।

विशेष--- ४ से १२ तक पथ नहीं हैं।

३०१२ नारचन्द्रज्योतिपशास्त्र-नारचन्द्र। पथ स० २६। झा० १०४४३ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल ४ । ले० काल स० १८९० मगिसर बुदी १४ । पूर्ण । वै० स० १७२ । श्र मण्डार ।

३०१३ प्रति स०२। पत्र स०१७। ने० काल ×। वे० स० ३४५। श्र मण्डार ।

३०१४ प्रति स० ३। पय स० ३७। ले० काल स० १८६४ फाग्रण सुदी ३। वे० स० ६४। ख

विशेष-प्रत्येक पक्ति के नीचे धर्थ लिखा हुमा है।

३०१४ निमित्तज्ञान (भद्रवाहु सिहता)—भद्रवाहु । पत्र स० ७७ । भा० १०३४४ इख । भाषा-सम्बत्त । विषय-ज्योतिष । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स० १७७ । व्य भण्डार ।

३०१६ तियेकाध्यायवृत्ति । पत्र स० १८ । घा० ५×६ ई इक्ष । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ते० कात ×ा भपूर्ण । वे० स० १७४८ । द भण्डार ।

विशेष-१८ से आगे पत्र नहीं हैं।

३०१७. नीलकठताजिक—नीलकठ । पत्र स० १४ । भा० १२×५ इच्च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० कान × । ले० कान × । भपूर्ण । वे० स० १०५० । स्त्र भण्डार ।

३०१८ पद्भागप्रयोध । पत्र स० १०। झा० ८४४ इ.स.। भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १७३४ । ट भण्डार ।

३०१६ पचाग-चएट्ट । छ भण्डार ।

विशेप-निम्न वर्षों के पचाग हैं।

संबत् १८२६, ४२, ४४, ४६, ४८, ६१, ६२, ६४, ७१, ७२, ७३, ७४, ७६, ७७, ७६, ७८, ४०, ६०, ६१, ६३, ६७, ६८।

३०२० पचारा । पत्र सं० १३। मा० ७६ ४५ इ.च.। भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल ४। ते० काल स० १६२७। पूर्ण । वे० सं० २४७ । स्व भण्डार ।

' ३०२१ पचागमाधन-नारोश (फेशबपुत्र)। पत्र स० १२। मा० ६×१ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिय । र० काल × । ले० काल स० १८६२ । वे० स० १७३१ । ट सब्हार ।

```
र-४ ] [स्याधिक एवं निश्चितान
```

रेक्टरे सामिकसमुख्याच्या चर्च है देश का ११५८४_५ इंचा जाता-मंतृतः। हिस्स-स्मेतिकार वाद ×ाने काल में १४३६। सूर्या के १४३१ स अस्तर

रिरोप-स्टा नरायने में भी पार्वनाय में यान्त में श्रीभगतान ने प्रतिनिधि की की ।

देष्ट्र न्नस्वानिकवरनुमानुसक्य^{ास्ता}ावरसंशासः १ ४४_६ स्वाधनाम-बंधनः स्विकस्पतिकार कला×ावे नाम ४ । दुर्गावे संश्वताहः

३ ०२ त्रिपुरवस्तुर्वे -----ायव में १० मा ११×३ रख मारा-मॅग्टर (दिश्व-स्थादित) १ रुग्न × । ने पान × १९८० में में ११ । धा स्थार ।

३ के क्रीजनसम्बद्धाः *****। पन नं १६० का ११४६ इका बाला-संस्तृतः । रिजय-स्मीतिरः । इ. सम्पर्कारे सम्बद्धाः । पूर्णाके संदर्भका सम्बद्धाः

रिकेर— १ ने ६ तम पुनरी केंद्र के पन दें। २ ने १४ तक बादी वर्ति झारोन है। दी झीनदी का सम्बद्धान है।

देश व होतेत्रसृत्रीं रूपा भाग विश्वा कौ ४४ रखः बाया-वाहतः। दिस्य-अवेटियः। र राज्य ४ के बाग ४ । कृषि वे वे १ २१ । व्यावसारः।

ferr-ite ufe feer al fet git & :

तिम्मर्गितीया १९४३मे और है*~*

शासनकारा प्राप्तः - विकास हिन्दी हिन्दी हिन्दी है। विकास है

स्युपादन - तिर्वाहित समार्थ १६१७]

हिर्देश-सम्पादित्वी का नेतर बम्मा बसादे हि के मांच वेते के श्वादनत्त्व गाहे हृदश्वादाने व कर होते हैं विशादनात्री ह

देश संकारेक्सीराज्ञात्र माणावण वे ११वर्ग है - ४ विश्व प्रमान्त्रीसूत्र । विश्व सम्बद्धाः स्टन्तर वस्त्र स्टूर्णको वे १४३ व्यवस्तरः

ज्योतिप एव निमित्तज्ञान]

3०११ नरपतिजयचर्या —नरपति । पत्र स० १४८ । म्रा० १२३×६ इच । भाषा—सस्कृत । विषय— ज्योतिष । र० काल स० १५२३ चैत्र सुदी १५ । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० स० ६४६ । स्त्र भण्डार ।

विशेप-४ से १२ तक पत्र नहीं हैं।

३०१२ नारचन्द्रज्योतिपशास्त्र—नारचन्द्र । पत्र स० २६ । मा० १०×४३ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल स० १८१० मगिसर बुदी १४ । पूर्ण । वे० स० १७२ । स्र भण्डार ।

३०१३ प्रति स०२। पत्र स०१७। ले॰ काल ×। वै॰ स० ३४४। श्र मण्डार।

३०१४ प्रति स०३। पय स०३०। ले० काल स०१८६५ फाग्रुण सुदी ३। वे० स०६५। ख

विशेप-प्रत्येक पंक्ति के नीचे प्रयं लिखा हुमा है।

३०१४ निमित्तज्ञान (भद्रवाहु सहिता)—भद्रवाहु । पत्र स० ७७ । मा० १०३४५ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिय । र० काल 🗴 । से० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० १७७ । स्त्र भण्डार ।

३०१६ निपेकाध्यायवृत्ति । पत्र स० १८ । मा० ८×६ । झा। भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ते० काल × । मपूर्ण । वे० स० १७४८ । ट भण्डार ।

विशेष—१ द से भागे पत्र नहीं है।

३०१७. तीलकठताजिक--नीलकठ । पत्र स० १४ । घा० १२×५ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० कान × । ते० नान × । मपूर्ण । वै० स० १०५६ । इय भण्डार ।

३०१८ पद्धागप्रवोध । पत्र स०१०। ग्रा० ८४४ इ.च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल ४। ले॰ काल ४। पूर्ण । वे॰ स०१७३५ । ट भण्डार ।

३०१६ पचाग-चरद्भ । छ मण्डार ।

विशेष--निम्न वर्षों के पचाग हैं।

सवत् १८२६, ४२, ४४, ४४, ४६, ४८, ६१, ६२, ६४, ७१, ७२, ७३, ७४, ७६, ७७, ७८, ७८, ५०, ६०, ६१, ६३, ६७, ६८।

३०२० पचार्गः । पत्र स० १३ । भा० ७६×५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-उयोतिष । र० काल × । ले० काल स० १६२७ । पूर्यो । वे० स० २४७ । स्न भण्डार ।

ं ३०२१ पचागसाधन-नागोश (केशवपुत्र)। पत्र स० ५२। घा० ६४५ इ.च.। भाषा-सस्कृतः। विषय-ज्योतिषः। र० काल ४। के० काल स० १८६२। वे० स० १७३१। ट मण्डार।

१०२६ पस्यविषार^{००००}। पश्च २ । आ १_४८४३ ६ व । जाना-संस्कृत । विषय-स्कृतस्थान । र काल × । ने काल × । पूर्ण (वे सं १६६५ । का कालार ।

१ २४ जारासरीपण्याना वस वं १ । धाः ११४८ई देव । जाना-वंस्तृत । देवक-क्योरिय । र क्षम ४ । ते कान ४ । वसी विं वे १११ । खंगकार ।

१०११. पारामीस्थानस्वनीतीका----। तद वं १३ । या १९४६ इझ । नामा-संस्तृतः । दिस्द--मोर्तिनः । र कमा ४ । ने कसा सं १५१६ यकोन कुटी २ । तुर्धने सं ६१९ । या स्थारः ।

३ २६ पासाचेत्रकी रूपाँगीता । पर र्व ७ । घा १ ३४८ इप । वासा--वस्तु । विस्त--विसित्त बाक्स । र सम्प्र ४ । के पास्त्र वी रक्का । इन्हें कि वी ६२४ । वा क्ष्मार ।

विवेश-स्थान काराम कहुरासकी थी है। १ एक स्थान से पारक में भागी सकतारे १६६ । श्रीर्था के संस्कृत कर स्थान

विकेश--व्याप मनोहर ने प्रतिनिधि नी की । श्रीकारकृषि रचित्र वैधिनाल स्वयम नी विवा हुआ है)

३, २२८, प्रतिसंदेशकार ११ किकल ×ादे वंदरशका कराराः

गोपी। ६७३ व्यक्तिसंह। प्रसंदर्शके कस्त≻ार्वे वं ११ (अहनप्रारः

. ३.६१ प्रतिसः दी।पारसं ११।के प्रमासं १.६६ वैमाणापुरः १२। वे सं ११४। क्र् कम्पारः।

विकेप--दमाचन वर्ग ने प्रतिक्रिपि की नी।

३ ३१ पाद्याचवाक्ती--प्राथमास्कर। त्या वं १। या ४४२३ छ्या। याना-पंत्रप्त) विषय-विनित्त सक्तर। र नाम ×। में नाम ×। दुवी वि वं ११ । च नामार।

हे हेई पाराकेक्सी*****। यह से ११) या १८०ई देखे। वारा-स्वयंत हिपक-विनाधास्त्र । र काम X कि नाम X | पूर्व | ये १९४६ | या वश्यार ।

वृत्तेश्च मित्र क्षा दाय वं हाने नग्य ते रेण्यरे प्रमुख कुरी हा वे यं २ १६ । धर सम्बद्धाः क्षिप्र---माने बनाराम क्षेत्री के सानेर वे समुक्ताय वैकासमा के श्रीतिस्थि नी थी ।

ज्योतिप एव निमित्तज्ञान

इसके ग्रतिरिक्त स्त्र भण्डार मे ३ प्रतिया (वे॰ स॰ १०७१, १०८८, ७६८) ख भण्डार मे १ प्रति (वे॰ स॰ १०८) छ भण्डार मे ३ प्रतिया (वे॰ स॰ ११६, ११४, ११४) ट भण्डार मे १ प्रति (वे॰ स॰ १८२४) स्रीर हैं।

२०३४ पाशाकेवली । पत्र स० ४ । ग्रा० ११३४४ इख्र । भाषा-हिन्दी विषय-निमित्तद्यास्त्र । र० काल ४ । ले० काल स० १८४१ । पूर्ण । वे० स० ३६४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--प॰ रतनचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

३०३६ प्रतिस०२ । पत्र स०५ । ले० काल ४ । वे० स०२५७ । ज भण्डार ।

३०३७ प्रतिस०३। पत्र स०२६। ले० काल Х। वे० स०११६। वामण्डार।

३०३८ पाशाकेवली । पत्र स० १। मा० ६×५ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्त शास्त्र । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वै० स० १८५६ । स्त्र भण्डार ।

३०३६ पाशाक्वेबली । पत्र स० १३। धा० ५३×५६ इख । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-निमित्त शास्त्र । र० काल × । ते० काल स० १५५० । प्रपूर्ण । वे० स० ११८ । छ भण्डार ।

विशेष--विशनलाल ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी । प्रयम पत्र नहीं हैं ।

३०४० पुरश्चरण्विधि । पत्र स० ४ । भा० १०×४३ इच । भाषा-सस्वृत । विषय-ज्योतिष । र० नान × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० ६३४ । आ भण्डार ।

विशेय-प्रति जीर्रा है। पत्र भीग गये हैं जिसमे कई जगह पढा नहीं जा सकता।

२०४१ प्रश्तचृहासिं । पत्र स० १३। ध्रा० ६×४२ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६६ । द्वा भण्डार ।

३०४२ प्रति स०२। पत्र स०१६। ले० काल स०१८०८ ग्रामोज सुदी १२ । ग्रपूर्ण। वे० स० १८५। छ भण्डार।

विगेप--तीसरा पत्र नहीं है विजैराम मजमेरा चाटसू वाले ने प्रतिलिपि की थी !

३०४३ प्रश्निष्या । पत्र स०२ से ५। ग्रा०१०४४ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल ४ । लै० काल ४ । श्रपूर्ण । वे० स०१३३ । छुभण्डार ।

३८४४ प्रश्निविनोद । पत्र स०१६। भ्रा०१०×४२ ईंच। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ×ा पूर्ण। वे० स० २८४। छ भण्डार।

३०४४ प्रश्नसनोरमा--गर्ग। पत्र स० ३। धा० १३४४ इख्न। भाषा-सस्कृत। विषय-ज्योतिष। र० काल ४। ते० काल स० १६२८ भादवा सुदी ७। वे० स० १७४१। ट भण्डार।

```
₹== ]

    व्यक्तिय एवं विभिक्ततान
```

३०४६ प्रस्तमास्तारम्याः पर सं १ । या १४१३ इ.स. जला क्रियाः विषय-ज्योतियः। र

मल ×। दे काल ×। कार्या वे से १०६1 वा प्रवार।

३ ४० प्रश्नासमानविहरमञ्जन्म । पत्र वे ४ । या ६,×१ ६ व । नारा-निन्दे । निपव-म्पोतियार कमा×ाने कला×ापूर्वा वे ४६। मा अचार।

३०४८- प्रत्नाविक्ष^{ाच्या} पत्र सं ७ । या ६४६- इ.स. असा-संस्ता विश्व स्वीतिकः र कल × । ते कल × । ब्युर्ण । वे रंगरेक । का क्यार ।

विकेच---यन्धिय यम धरी हैं।

के प्रध् प्रश्तक्तार करते व देश मा १२,×१ ईव | मामा-वीतात | निवय-कारन क्राम्य । र कल्र×। हे कमार्थ १८२६ जल्ल कुसी १४ । वे ३३६ । का जमार ।

३ ४ प्राचनार---क्षमीच। यन सं १२। मा ११X१३ द व । जला-कसरत । विवय स्टम

क्षप्रमार कुल्र ×ाके कश्वासे १६२६ । वे से ६६६ । काणचार । विकेद---वनो वर कोल्ल करे है जिब वर अवर सिचे हुने है क्ष्मके बहुबार कुनाकुन एस विक्सात है

३ ४१ प्रस्वाचरमाध्वा-संबद्धकर्यों वरु झानसागर। एवं सं १७। या १२४६. इ.च.| प्रभा–चैत्तुरा| विवत–ज्वोतिक । र कल ×ाके कलावे १०६ । दुर्का वे सं २६१ । सः मनार ।

३०१३ प्रतिसं २ । वस्तं ३७) से सम्बद्धं १ ६६ वैन बुद्धे १ । बदुर्श्व के सं ११ । विशेष-मास्तिन पुणिला निम्ब स्त्रास है ।

क्षी अलोतर वास्त्रकाला महाकर ब्याप्क की नरकार्यनव बबुक्ररीयवा व बामहानर बंधांते की श्चिमकाश्चित ज्ञानोजेकस्य: १) प्रकार यह नहीं है I

३०३३ प्रानाचरमा**का**ण्या वस्त्रं २ हे ११। का० क्र्रै×४१ इत्र । कारा क्रियो । सियम-स्रोतिय | र कल ×ाते कमार्थ १६८) श्रदुर्खी वे ते १६०। श्रामनार।

विवेष--वी वसदेव बालाहेशी वाले ने बादा दाखबुपुत्र के बस्तार्व प्रतिकिति की थे। ।

३. kg प्रतिसः २ । पन सं ६६। सः नमार्गश्यः सम्बोज कृती दाने सं १९४। स

क्कार । केन्द्रेष्ट्र भवोतीशास्त्र व्यापन व १। या १४६^९ ६व । असा-दिली | दिवय-न्योतिक ।

र गल ×।ते नान ×।⊊च।वे ई. १२.३ । जाननार।

निवेश—चं १६ ६ वे १६६६ तक के महिनाई का वरिष्य कर दिना हुआ है।

ज्योतिष एव निमित्तज्ञान

३०४६ भडली । पन स०११। ग्रा॰ ६४६ इ.च । भाषा-हिन्दी ! विषय-ज्योतिष । र० काल ४। ने० काल ४। पूर्ण । वे० स० २४०। छ भण्डार ।

िश्लेष—मेघ गर्जना, बरतना स्या बिजली मादि नमकने से वर्ष फल देखने सम्बन्धी विचार दिये हुये हैं।
३०४७ भाष्वती—पद्मताभ । पत्र म० ६। मा० ११×३३ इव । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष ।
र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६४ । च भण्डार ।

३०४६ प्रति स० २। पम स० ७। से० काल ४। वै० स० २६४ । च मण्डार।

३०४६ भुवनदीपिका । पत्र स० २२। मा० ७६ ४४३ इ.च.। भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० वाल ४। ते० काल स० १६१४। पूर्ण । वे० स० २४१। ज भण्डार।

२०६०. भुवनदीपक--पद्मप्रभसूरि। पत्र स० १८। भा० १०३×१ इच। भाषा-सस्कृत । निषय-उपोतिषः र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण । वे० स० ८६५ । श्र भण्डार ।

विशेष -प्रति सस्कृत टीका सहित है।

३०६१ प्रति सः २ । पत्र स० ७ । से० काल स० १८५६ फाग्रुण सुदी १० । वे० स० ६१२ । इस भण्डार ।

विशेय-खुशानचन्द ने प्रतिनिधि की थी।

३०६२ प्रति स०३। पत्र स०२०। ते० काल ×। वे० स० २६६। च मण्डार।

नियोप-पत्र १७ से मागे कोई भाय ग्रन्य है जी अपूर्ण है।

२०६३. भृगुमहिता । पत्र स० २० । मा० ११×७ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० कान × । वे० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६४ । इह भण्डार ।

विशेष--प्रति जीर्ग है।

३०६४ मुह्त्तीचन्तामणि । पत्र स०१६। ग्रा०११४५६ च। भाषा-सम्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल ४। ते० काल स०१८८६ । ग्रपूर्ण । वे० स०१४७ । स्व भण्डार ।

३०६४ मुदूर्त्तमुक्ताधली । पत्र स० ६। ग्रा० १०×४३ इ.च । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० कान ×। ले० वाल स० १८१६ कार्तिक बुदी ११ । पूर्णा । वे० सं० १३६४ । स्त्र भण्डार ।

३०६६ मुहूर्त्तमुक्तायली-परमहस परिव्राजकात्वार्थ। पम स०६। मा० ११४६ इव । भाषा-संस्कृत । विषय ज्योतिष । र०काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०१२। व्या भण्डार ।

विशेष-सव कार्यों के मुहर्त्त का विवरण है।

३०६७ प्रति स०२। पत्र सं०६। ले॰ काल स० १८७१ बैशाख बुदी १। वे० स०१४८। स

```
विदेशिय एवं निर्मित्तकान
```

ચ. 1 ३ ६८. प्रति सं ३ । पर सं ७ । वे कमा सं १७ २ मार्ववीर्ववरी ३ । सामध्यार ।

विवेद-सबाहा वयर में मुनि बोक्कबर ने प्रतिविधि की वी ।

दे ६६ <u>मृत्रचैम</u>काविका----। पन वं ११ से २६। या ॥ 🗙४ ६ व । बारा--विकी संस्टाः विषय-क्योतिकार कल ×ाने पल ×ावपूर्णा वे वं १४१। अरथपार ।

३०४०, मुद्र चैमुत्रस्वक्की — •••। यह वं ६। या १ ×४३ इ.च । भारा-संस्कृत । विदय-क्योरिय ।

र समा । में बाल से १०१६ कार्तिक दूरी ११। दुर्ग | वे सं १६१४ । वर समार । ३ ७१ महत्त्वेदीपठ-- महादेव । एक र्थ । वा १ 🗡 ६ व । वास-- वस्तुत । विस्त-- न्वोतिय ।

र राज्ञ × । के कार सं १७२७ नेपाल बुरो २ । पूर्ण । वे सं ६१४ । का क्यार । क्रिकेट--- व अपरक्षी के परुवार्ण अधितिक्षि की नई जी।

३ ७२ ह्युक्तेसब्द^{्रम}ादव सं २२ । या १ _६४३ इद । जाना-संस्टा | विषय-स्वीतित । र सभा×। ते कल ×। बपूरी। दे वं १६ । काच्यार।

३ ७३ सेमसाक्ता^{ल्ल}ापन तं रखे १ । सा १ _द×१ इचा जारा—संस्टा विवस— स्मेदिय। र प्रका× | ने प्रका× । अपूर्ता वे वं १६ । धामप्तार।

क्रिक--वर्षा बाने के सक्तानों एवं नारहों नर किन्द्रुव प्रकान हाना बना है। क्लोक वं १४६ है।

1 लक्ट प्रतिसः २ । यस सँ ३ ४ । के राज्य ट १२ । वे ट ११४ । व्यावस्थार ।

३,७४८ प्रश्चिस ३,।पदवंद । से समा×।शनूर्वादेश राज्य मचार।

३ थ4 कार्यक्रमा । यस सं १३ । या १ ×६० दयः। यासा-मंग्रायः। विपय-कोतियः ए र्गत×। के राल×। सपूर्ण। दे दे २ ६। च वचार।

3 करूक शुक्रद्वीरक--गुरुवर्षि । यत्र वं २३ । या १२४३ इथ । मारा-मंसून । रिवय क्योदिय । र नान×।मे नानर्सं १ २ । पूर्णः देशं १६ । स्वयपारः।

१४४६. राजरीयक --- । यथ सं १ । या ११×१ (व । मादा-मंग्रुत । विपय-जोतिक । ४ राम ×। में नान नं १ १ । दुर्ला के वं ६११ | का मण्डार।

रिकेर-जन्मानी विचार थी है।

३००६. रमसरास्त्र--पं• विशासित । पत्र वं ११ । सा ×६ इता सप्त-नंतृत । रिका-भौतिप it नाम x । वे प्रम x | ब्राप्त वे नं ६१४ । क बच्चार |

१ व रसम्रतास्त्र **** । वस्तु वं १६ । या १४६ रखः। वस्त-दिग्ये । विवय-विभिन्त साध्य र दल×।मे दलः×।दुर्लः३ वं द३र।स्त्रकारः।

३ पर् रसल्यान । वर म० ४। मा० ११ ४ इम् । भाषा-ित्ती ग्रेष्ठ । दिवन-विभिन्नानित्र । रक्षात्र ४। वेकस्तर प्रकृष्ट्र । वैकसंक ११८ । छ भ शहर ।

थिनेष-प्रादिताच चैटात्व म सातार्व रात्रशींत ने प्रीत्व्य मराईराम न क्लिय गीउदराम । प्रीतिनिधि

३०= प्रति स्व २ । पत्र सं ६ २ में ८८ । ले॰ बाल म० १८७६ सामाद्र पुरी ३ । मार्गो । के नं १८६४ । इ. वच्टार ।

३०=३ शतादिकत । पत स० ४ । पा० ६ दे ४ र दे । भाषा-मन्त्र । विषय-ज्ञातिय । र० पान ६ । य० पात स० १=२१ । पूर्ण । ते० सं- १६२ । स्य पात्रार ।

३०=४. राष्ट्रकल । पत्र मन ८। धान ६६४८ दश्च । भाषा-हिन्दा । शिषय-अमेशिए । एत नात ४ । नेन मान मन १८०३ ज्येष्ठ सुर्वा ८ । पूर्ण । पेन मन ६६६ । च भण्यार ।

२०=४ ह्रहास । ११व सं० १ । गा० ६३४८ इ.च । आगा-मध्या । निषय-पर्ना शास्त्र । २० चान ४ । २० रान म० १७४७ नैव । पूर्ण । ५० में० २११६ । प्रानण्डार ।

विशेष-देधसुरायाम में जानसागर रे प्रतिसिधि की भी ।

३०८६ लमचिन्द्रकाभाषा । पत्र सन् दः धा॰ ८४४ इ.स.। भाषा-िष्टी । विषय-व्योतिष । रन्तरत्र ४ । पन्नात्र ४ । मपूर्ण । ये० पन १४८ । मा भण्डार ।

३०८७. लग्नासत्र—वर्द्धमानम्हि। पत्र संत ३। घा० १०४४६ ६ प । नापा-सरहा । विषय-व्यातिया १० पात्र ४। स्व गात्र ४ । पूर्ण । यव मव २१६ । स्व अण्डार ।

३०८८ लघुजातर-सहोत्पल । पत्र गत १७ । घा० ११८४ ६ व । भाषा-सन्त्र । विषय-व्यातिम । र० मात्र ४ । वे० मात्र ४ । वे० म० १६३ । घ्य भण्डार ।

०-= धर्षेत्रोध । पत्र म० ४०। धा० १०३० ४ ६ न । नापा-सन्ततः । विषय—उदातिष र० कात्र ४। वि० काल ४ । धर्मा । वे• स० ६६३। श्रा कण्डार ।

विषय - मित्र पत्र नहीं है। वर्षपत्र नियानन भी विषि दा हुई है।

३ ६० त्रिवाहरोष्ट्रांच । पत्र म० २। म्रा० ११८१ इच । भाषा-नस्रतः । दिपय-ज्यातिष र० गात 🗙 । पे० नान 🗴 । पूर्ण । वे० से० २१६२ । स्त्र भण्डार ।

३८६१ बृह्जातक-भट्टोत्पल । पत्र स० ६। ष्रा० १०३×४५ इ.स.। भाषा-सस्यत । विषय-क्योतिय । र० पात्र × । से० माल × । पूर्णं । ये० मे० १६०२ । ट भण्डार ।

विरोप-भट्टारक महे द्रवीति के विषय भारमहा ने प्रतितिषि की थी।

```
w 1
                                                              ्यादिप पर्व समिक्तात
          ३ ६२. वटपंचानिका—बराइनिइर। पत्र सं १। बर ११×४३ इस। भागा-मंतरत | विवय-
अमेरिया रेक्स्न Xावे नानंस १७१६ । पूर्वी वे ७३६ । इन्यास ।
          ३ ६२ थट्पंचासिकाङ्चि -- सहोत्पद्धा वच वं २२ । या १९४२ इक्ष । वादा-संस्कृत । विदय-
म्बोडिप {र मन X | ते मान च १७वद | बपूर्ण | वे वे १४४ | बा वधार
         विक्रेप—हेमराज मित्र ने तका ध्रम् पुरल्जन ने प्रतिनिति की थी। इसमें १ २,०११
पत्र नहीं हैं।
          ३०६४ शहर विचार .....। वय सं १ । या ६३८४ १ इ व । बाला-हिनी वस । विवय-पहले
इत्तर !र कत ×। ने रश ×। पूर्ण | वे त (४६ | इत्याह ।
         १ ६४८ राष्ट्रनावज्ञी व्याप्त हो हो या ११४६ इ.स. नामा-५५इछ । विवत-स्केतित । र
नल ×। वे नल ×। इस्सें शे हें। पर क्यार।
         निवेद-- १२ सक्तर्धे ना मंत्र क्या ह्या है ।
          3 as प्रतिसंगायक के भाग सम्बद्ध है प्रश्चित संग्राह्म सम्बद्ध
          विदेप-पं चराल्यराम नै प्रक्रिनियि वी दी।
         १ ६७. राष्ट्रनाक्तको —गर्गे। पत्र सं २ से द ! सा १९४६ है इस । महा-संस्ट्र । विस्प-
क्योतिय। र: कम ×ामे नास ×ा सपूर्णामे से २ १४ । का ककार ।
         विकेय-इसरा गाम श्रमक्षेत्रणी की है है
          ३ ६८. प्रतिस २ । वथसं ६ । तै कल्य× । ते सं ११६ । का समार
          विकेश-स्वरका है प्रतिकिप की वी ।
          १०६६. प्रति सं १। पत्र त १ । ते शाल वं ११३ वर्गाटर तृशे ११ हे ह्यू में । हे ह
२७१ । या मन्दार
          ३१ - प्रतिसंधापदतं ६वे कातं नाल ×ानपूर्ताते तं १ र । द समार।
          ३१ १ राक्त्रावती—सदसदः पर र्वशाना ११×२ दर्वासमा-हिन्दीः। मिदन-सदस
शहर होर कार×ाने गणावं १ दश्तावर नुग्ने को पूर्णा के वे देश । आर जमार
          ३१ २ शक्तमानकी माध्यन सं १३ । सा द×४ ईव (बारा-पुरानी हिन्दी । विश्वन-संदर्भ
द्राप्त (र नल×) में नल ≠ | ब्यूर्ल श्रे वं ११४ । इ. नण्डार
         हर के ब्रिटि स् मित्र वर्ष हर । से पतार्थ देश्वर कालम पूरी १४। के से ११४। का
वचार ।
```

ज्योतिष एव निमित्तज्ञान]

विशेष—रामचन्द्र ने उदयपुर मे रागा सग्रामसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि की थी। २० वमलावार चक्र हैं जिनमें २० नाम दिये हुये हैं। पत्र ५ से ग्रागे प्रश्नो का फल दिया हुग्रा है।

३१०४ प्रति स०३ । पत्र स०१४ । ले० काल 🗴 । वे० स०३४० । मा भण्डार

३१८५ शकुनावली । पत्र स० ५ से म। मा० ११×५ इ च। मापा-हिन्दी। विषय-ज्योतिष।

र० काल 🗙 । ले० काल स० १८६० । अपूर्ण । वे० स० १२५८ । स्त्र मण्डार ।

३१०६ शक्कुनावली । पत्र स०२। मा० १२×५ इच। भाषा−हिन्दो पद्य । विषय–शकुनशास्त्र ।

र० काल 🗙 । ले० काल स० १८०८ मासोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० स० १६६६ । श्र भण्डार ।

विशेप—पातिशाह के नाम पर रमलशास्त्र है।

३१०७ शनश्चिरदृष्टिविचार । पत्र स०१। आ० १२×५ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-ज्योतिष । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० १८४६ । अ भण्डार

विशेप-दादश राशिचक मे से शनिश्वर दृष्टि विचार है।

३१०⊏ शीघनोध—काशीनाथापत्र स०११ से३७ । ग्रा० पर्-१×४२ इच। भाषा—सस्कृत।

विषय-ज्योतिष । र॰ काल 🗙 । ले॰ काल 🗙 । म्रपूर्ण । वे॰ स॰ १६४३ । ऋ भण्हार ।

३१०६ प्रति स० २ । पत्र स० ३१ । ले० काल स० १८३० । वे० स० १८६ । ख भण्डार ।

विशेप-प॰ माशिकचन्द्र ने चोढीग्राम मे प्रतिलिपि की थी।

भण्डार । विशेष—सपतिराम खिन्द्रका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३१११ प्रति स० ४। पत्र स० ७१। ले० काल स० १८६८ झापाढ बुदी १४। वे० स० २५५। छ

३११० प्रति स०३ । पत्र स०३८ । ले० काल स०१८४८ ग्रासोज सुदी ६ । वे० स०१३८ । छ

विशेष—आ॰ रत्नकीति के शिष्य प॰ सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी।

इनके मतिरिक्त स्था मण्डार में ४ प्रतिया (वे० स० ६०४, १०५६, १५५१, २२००) ख मण्डार में १

प्रति (वे० स० १८०) छ, मत्तवा ट भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० १३८, १६२ तथा २११६) ग्रीर हैं। ३११२ शुभाशुभयोग । पत्र स० ७। ग्रा० ६३८४ इच। भाषा–सस्कृत। विषय–ज्योतिष।

र० काल 🗙 । ले० काल स० १८७५ पौप सुदी १० । पूर्ण । वे० स० १८८ । ख मण्डार ।

विशेष--प० हीरालाल ने जोबनेर में प्रतिलिपि की थी।

३११३ सक्रातिफला'' । पत्र स०१। ग्रा०१०×४३च। भाषा−सस्कृत । विषय∽ज्योतिष । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० स०२०१। खभण्डार । हर्रथ्यं संस्थितियसः च्याना वर्षे रेटी या र_क×४ देव वा जला-संदर्शिवन-जीवित र नाम ×ानै बोलार्स हेट स्थारमा बुदी रहावें से दृष्टी अरक्तमार

३१°४. सक्तोतिसक्ते — । यस सं २ । या १८४२ इ.स. । जारा-संस्ता । विदय-स्टोतिय र प्रमा× के बाग ×ा पूर्व । के सं १६४२ । धानमार

३११६ सप्तरसार--रासवाक्षयेया प्रवर्ध १०। या ११८४ ६वा क्षान--अस्तुत्। सिर्य क्योतिक १८ तस्त्र ४३वे वाचर्त १७११ क्योतिक १८ तस्त्र ४४वे

विसेर--वोविनोपुर (वितो) वें जीविविधि हुई । स्वर बाल्य से निवा हुवा है ।

३११७ सबस्सरी क्षिपार^{ार्गा}ाच वं । या २८६३ दंग जना-हिमी नय। क्षिप्र स्त्रीरिय र नाम ×1के नाम ×1कुर्ण है वं रचके। स्त्रमध्यर

हिमेश-से ११६ के वे २ तक का वर्तकार है।

३११८८ साञ्चीप्रक्रमकृष्यः विषयं १ । या ६०८४ दव । वास-संस्कृत । विषय-सितं यान्य । स्पीपुरताके संयो ने युनापुन सम्बद्ध समित हैं। र जल ४३ के जान सं १८६४ पीर तुरी १२ यूना । देनं १०१। स्राचनार

३११६ सामुद्रिकीयार पाय है १४। वर है ४४३ इया जात-हिसी। दिवस-निर्मि सन्द | र नाम × | के बाल में १७११ सेच बुर्स ४ (दुर्स) के दे । अ कारतर।

4१२ साहितस्यास्त्र-वीनिवसहुदांग्यंदं ११। या १९४४३ इता बारा-वंसर विका-तिवसार यक्त ×ावे रक्त ×ाहुर्गावे वं ११६। स्व क्यारा

विमेश-सात में हिल्दी में १६ श्राह्मार एवं के बोहें हैं सवा हनी पुत्रमी के संबंधें के सक्तात दिये हैं।

३१ १ अञ्जिक्तिमाला "ादवर्वशास १४०८४ इत्राचनान्मस्या विस्मनितित र नाम ≺ोजनला ×ापूर्णशी संख्या स्मन्यतः

विदेश-- वन वत्त्वयं ने नव्यंत्रवाची घट्ट विदे 🖁 ।

३१०० साबुक्तिसास्त्राच्याच्याचे ४१ का ६८४ ६ चावस्तर-सिक्ता र कान्य ४ कि स्टबर्ट १ रेक न्येबर्टी र ।बहुर्लाके संदेश ।ध्याच्यार ।

दिरोय---न्यामी वैद्यापकत ने बुवाबीकाय के वठवार्च जितिकिय की वी ह रू. व ४ तम वहीं है ह

३१२३. प्रतिसः २। वर्षतं २३। वं राजार्थं १७६ चानुष्ण द्वर्षे १२। बरूपी। ३ ४ १४२। इ.सम्प्रारः।

दिनीय-मीच के नई वस वही हैं।

च्योतिष एवं निमित्तज्ञान]

३१२४ सामुद्रिकशास्त्र । पत्र मै० ६ । ग्रा० १२×५३ इ.च.। भाषा-मन्कृत । विषय-निमित्त । र० गाल × । ल० माल त० १६६० । पूर्ण । वै० म० ६६२ । स्त्र भण्डार ।

,१२४ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ने० नात ४ । प्रपूर्ण । ने० स० ११४७ । स्त्र मण्डार ।

३१२६. सामुद्रिकशास्त्र । पत्र न० १८। ग्रा० ८४६ इ.च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-निमित्त । ए. वात 📐 । ने० वान म० १६० = ग्रामाज बुदी ६ । पूर्ण । वे० न० २७७ । मा भण्डार ।

अश्व सार्गी । पत्र न० ४ मे १३४। ग्रा० १०४६ इ.च । भाषा-प्रयन्न दा । विषय-ज्यातिष र० नान ४ । दे० वाल न० १७१६ भादवा युदी द । श्रपूर्ण । वे० न० ३६३ । च भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डा में ४ अपूर्ण प्रतिया (वे० स० ३६४, ३६४, ३६६, ३६७) मीर हैं।

३१२८ सारावली । पप्त स० १। ग्रा० ११४३ है इ च । भाषा-सम्मृत । विषय—ज्योतिष । र० वान ४ । ले० वान ४ । पूर्ण । वे० स० २०२४ । श्रा भण्डार ।

३१२६ सूर्यगमनिषिध । पत्र न० ४। मा० १९३८४) इ च । भाषा-सन्द्रत । विषय-ज्योतिष । र ताल ४। त० काल ४। पूर्ण । वे० न० २०४६। स्त्र भण्डार।

निशेष — जैन प्रायानुमार सूर्यचन्द्रगमन विधि दी हुई है। वेवल गरिएत भाग दिया है।

३ (३ स्नोस उत्पत्ति । पण स०२। मा० ६ $\frac{3}{2}$ \times \forall द च । भाषा—सस्तृत । विषय—ज्योतिष । र० माल \times । न० नाल न०१ =०३ । पूर्ण । वे० स० १३ =६ । श्र्य भण्डार ।

३१३१ स्त्रप्तितिचार । पत्र स०१। ग्रा०१२×५१ इ.च.। भाषा-हिन्दी । विषय-निमित्तकास्त्र । २० नाल ×। ले० काल स०१ दश्या । वे० स०६०६ । स्त्र भण्डार।

२१३२ स्वप्नाध्याय । पप्र स० ४। आ० १०×८३ इ.च.। भाषा—सस्कृत । विषय—निमित्त शाम्प्र । र० नान ×। ल० कान × पूर्ण । वै० स० २१४७ । श्रा भण्डार ।

देश्वे स्वानावली — देवनन्दि । पत्र स० ३ । ग्रा० १२८७ दे ६ च । भाषा –सस्कृत । विषय –िनिमत्त पाम्त्र । र० काल ४ । ले० काल स० १९४६ भादवा सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ६३६ । क भण्डार ।

३१३४ प्रति स० २। पत्र स० ३। ले० काल ४। वे० स० ५३७। क भण्डार।

३१३४ स्वानावित्त । पत्र न०२। ग्रा०१०४७ इचे। भाषा-सस्कृत । विषय-निमित्तशास्त्र । र० वाल ४। ले० काल ४। ग्रपूर्ण । वै॰ स० ६३४ । क भण्डार ।

3१३६ होराज्ञान । पत्र स०१३। ग्रा०१०४५ इच । भाषा--मस्कृत । र० वाल ४। ले० काल ४। ग्रपूर्ण। वे० स०२०४५। श्रा भण्डार।

विषय-खागुर्वेद

है{र्क क्योर्किस्सम्बद्धी ----। पत्र वं १० का रेरे, ४२०) दश्य सारा-वेस्ता । (वच्छ-सस्यरार पान ४) वे पत्र वं रिकार पूर्णा वे वं १६१ क्या क्यार।

स्ट्राइट प्रतिस० २। रवर्षकार कार्यकार । वे वे १६६ । स्वयार ।

विवेष---वरि प्राचीन है।

हेर्देशः स्वतीकशक्कति -- न्याक्रीयकाश्यत्र देशा सार्देशर इकाश्यत्र - संस्था हिस्स-क्षत्र सार्वे स्थाप अनुस्ति के देशक स्थापः

११४ अञ्चलकात् ~ ावध ४ । वा ११कु८५ है एवा पता-हिन्दी । विश्व-वार्त्वर । ह शक्त × । वे कात × । वहर्त । वे वे ११४ । वा व्यवस्थ

३१४९ क्रमुसस्यार—अहाराजा सर्वाह ज्ञापश्चित् । पत्र वं ११० वे १९०१ था १२,०५ इ.च. जला—क्रियो हित्यक-समुदेर । प्राणा अस्ति याणा अस्ति वे वाला अस्ति वे वाला ११ क्रमुस्यार ।

श्रिकेर---बेरहरा क्रम के बाजार पर है।

३१५२, प्रति सक् को पन सं ६३। वे कार x) बहुर्ता वे वे ११ (स प्रधार)

मिक्न-अंद्राय दुन की दिया है।

क्ष मच्यार में २ अशियां (वे वं २ ११) ज्यूनों सीर है।

इर्थुइ प्रतिस देशनवर्ष १४ वे १६ । ने नल×ाब्युर्वा वे वं २ ३६। ४ थ्यार ।

हेर्पुप्त सर्वेपकारा—क्रोक्सलामा । यस वे ०० । जा १ हैप्रण क्ष चम्मा-क्ष्मुत । निरस-सम्बंदर) रुक्त रुक्त क्षेत्र क्षा वे ११ वर्ष वासक सुधी ४ हिल्ली के वे वर्षा आहमार }

विशेष---बागुर्वेद विषयत्र बन्ध है । अमेक विषय मी शराक मे विशेक दिया गार है ।

देह्दरः आवेत्रीयकः—आवेत्रविशिषाणं ४२।या १ %४३ इत्यापना-संस्तातिकः— साहरहर् कम्म ४ । से कमार्थ १ ० बारमा दुर्गि १४ । वे ४३ अह स्थापनः

२१४१. चापुर्वेदिक तुम्बी का समझ "" वण वं १८ का १ ४४ ४ ४ ४ । भारा-दिन्धे ∤ दिस्त-सापुर्वेद १८ शाम ≾ा के बाब ≾। बहुर्वा वे वं १६ । क्षा भारार ;

देशिक प्रतिक दावर वे पावे मन्त्रादे वे दशास मनार।

श्रायुर्घेट]

३१४८ प्रति स० ३ । पत्र सँ० ३३ से ६२ । ले० काल × । श्रपूर्ण । वे० स० २१८१ । ट मण्डार । विशेष—६२ से ग्रागे के भी पत्र नहीं हैं।

३१४६. ऋायुर्वेदिक नुस्ते । पत्र स० ४ से २०। आ० ८×१ इच। भाषा~सस्कृत । विषय∽ आयुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० ६५ । क भण्डार ।

विशेष-प्रायुर्वेद सम्बन्धी कई नुस्ते दिये हैं।

३१४० प्रति स०२। पत्र स०४१। ले० काल 🗙 । वे० स० २५६। स्व मण्डार।

विशेष-एक पत्र मे एक ही नुस्ला है।

इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे॰ स॰ २६०, २९६, २९६) ग्रीर हैं।

३१४१ आयुर्वेदिकप्रथ । पत्र स० १६। मा० १०३×५ इद्ध । भाषा-सस्कृत । विषय-भायुर्वेद । र० काल × । ने० काल × । मपूर्ण । वे० स० २०७६ । ट भण्डार ।

३१४२ प्रति स०२। पत्र स०१८ से ३०। ले० काल 🗴 । श्रपूर्ण। वै० सं०२०६६। ट भण्डार।

३१४३ अयुर्वेद्सहोद्धि — मुल्देव। पत्र स०२४। मा० ६३×४३ इख्रः। भाषा-सस्कृत। विषय-मायुर्वेद। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०३५४। व्य भण्डार।

३१४४ कच्चपुट--सिद्धनागार्जुन"। पत्र स०४२। मा० १४४५ इख्र । भाषा-सम्कृत । विषय-मायुर्वेद एव सन्त्रधास्त्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स०१३ । च भण्डार ।

विशेष-पन्य का कुछ भाग फटा हुमा है।

३१४४ कल्पस्थान (कल्पन्याख्या) । पत्र स०२१। झा०११३४६ द न । भाषा-सस्कृत । विषय-मापुर्वेद । र० काल × । ले० काल स०१७०२ । पूर्ण । वे० स०१८७। ट मण्डार ।

विशेष-सुश्रुतसंहिता का एक भाग है। मन्तिम पुष्पिका निन्न प्रकार है-

इति सुश्रुतीयाया सहिताया कल्पस्थान समाम्त ।।

३१४६. फालझान' । पत्र स० ३ से १६ । ग्रा० १०४४ है इ च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-भाषुर्वेद । र० काल × । के० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० २०७८ । आ भण्डार ।

३१४७ प्रति स०२ । पत्र स०५ । ले० काल × । वे० स० ३२ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-केवल मप्टम समुद्देश है।

३१४८ प्रति स०३। पत्र स० १०। ले० काल स० १८४१ मगसिर सुदी ७। वे० स० ३३। स्व मण्डार।

विशेष—भिरुद् ग्राम में लेमचन्द के लिए प्रतिलिपि की गई थी। कुछ पत्रों की टीका भी दी हुई है।

२६८] [कापुर्वेद

३१४६८ प्रतिस प्राप्तमसं ७ । वे पात×ावे सं ११८ । सम्बद्धार (

११६ प्रतिस्त+ क्षापन वे १ । ने पान ×ावे वे १६७४ । क्षाप्राप्ता

हेर्डड्ड विकिस्तांक्रस्यू-स्थाज्यायविद्यायदि । चर्च २ । या ४.४० इच । वाना-संस्तुत । विदय सामुच्छ । र जाल ४ । वे जाला वे १८३१ पूर्ण । वे वे १९९ । व्यवस्थार ।

११६२ विकित्सासार[™]ाय वं ११। मा १६८६२ इ.च । वाला-क्रियो । विवस-समुदेद । र नात ≿। ते कस्त ×। पहुले विके दः । क्राक्यार |

देशकेंदे प्रति सं २ । तम वं ध~न्दर । में नाम × । बहुर्ला के सं २ ७८ । इ. बन्दार ।

३१६४ चूर्वाधिकारमामापाठं १२।बा १६४६३ दक्षाकाम-चंत्रहरा। दिवर-समुर्वेद । र नाम ×ाप्तिकार अपुर्वोशी संदेश १६ विकासार।

. ११६६ व्यवस्थाप्राण्णापत्र वे ४। या ११८५६ तत्र । जला दिली ॥ विश्व-यापुर्वर । र शास्त्र । में समा ४। यहाँ । ने ये १ ११। ज वस्तर ।

११६६ व्यापिकित्सा⁻⁻⁻⁻⁻।पत्र वं १ ।सा १ ×४_व ६ व । याना-यंक्य ∤ नैतन-समूर्वेद । र रात्र × । ते कम × । दुर्काने वं ११३७ । व्यासन्तार ।

हेर्ड+ प्रति सं के । यस में देर से केट्रों से नाम ×ा ब्यूक्टा के गाँव पंपाड सम्बार। हेर्ड-स. व्यारिकिसिस्सारकर—मानुकराय। यस में प्रशासा के ×दे स्पास्तान-संस्तात । सिक-सन्दर्भर र काम ×ा ने कृत्स सं के प्रमास सुद्धे त्या कि ती देवे का का सम्बार।

विदेव—मध्योपुर में शिवनसम्बन्धि में प्रवितिषि गी थी।

. ११६६ किरासी —शाङ्क सराज्यारं १९ । साध् १३०८६ व । समा—सोहराः / सम्ब-साहर्षेत्रः र कल्रासंगलना ४ । के सं६११ का सम्बारः

. ३१७० प्रतिहाँ १।पण वं ६२।ते कला वं १६११।वे व १२३।का पण्यरः विवेष---पण वं १६३॥।

हरे-४ स्मृत्रमीशास्त्रीयिक्षाः गायणं हाता ११८८ ६ व । वास-वित्यो ∴विश्य-समुर्वेद । र कार×ावे काल ×ाद्रस्ती वे सं १० राज्य सम्बद्धाः

१९७२. साबीप्रीकार^{™ा}वस तंदीसा ११४८ दवा जाया-तील्या (विश्वसम्बद्धेतः) र नोसं×) ने नास×ाहर्स्त ने वंदि । अद्वयस्थारः। श्रायुर्वेद]

३१७० निघटुः । पत्र स० २ से ८८ । पत्र म० ११४४ । भाषा-सस्यत । विषय-मायुर्वेद । र० पति × । से० काल × । म्रपूर्ण । वे० न० २०७७ । ग्रा भण्डार ।

३१७४ प्रति स० २। पत्र स० २१ में ६६। ले० काल X । घपूर्ण । पे० मं० २०६४। स्त्र मण्डार।

३१७५ पचप्ररूपणा । पत्र स० ११। घा० १०४४ ई इखा। भाषा-सम्रत । विषय-मापुर्वेद । र० काल × । ते० काल स० १५५७ । भपूर्णी । वे० स० २०८० ट मण्डार ।

विद्याप-वियल ११वां पत्र ही है। ग्रन्य में युन्त १५८ दलीय हैं।

प्रशस्ति—स॰ १४५७ वर्षे ज्येष्ठ वुदी = । देवगिरिमगरे राजा सूर्यमह्न प्रवर्तमाने प्र॰ प्राहू लिखित कर्म-क्षायिनिमत्त । प्र॰ जालप जोगु पठनार्थं दत्त ।

३१७६. पथ्यापथ्यविचार । पत्र स० ३ से ४४ । मा० १२×५३ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-माप्रवेद । र० काल × । से० काल × । मपूर्ण । वे० स० १६७६ । ट मण्डार ।

त्रिशेय—इलोको के ऊपर हिन्दी मे धर्ष दिया हुमा है। विषरोग पथ्यापथ्य मधिकार तक है। १६ से भागे के पन्नो मे दीमक लग गई है।

३१७७ पाराविधि । पत्र स० १। मा० ६३×४६ डच । भाषा-हिन्दी । विषय-मायुर्वेद । र० काल × । पे० काल × । पूर्ण । वे० स० २६६ । स्व भण्डार ।

३१७८ भाषप्रकाश--मानसिश्र। पत्र त० २७५। भा० १० ९४६ इख्र। भाषा-सस्कृत । विषय--प्रायुर्वद। २० काल ×। के० काल स० १८६१ वैशाख सुदी ६ । पूर्ण। वे० त० ७३। ज भण्डार।

विशेष--भन्तिम पृथ्यिका निम्न प्रवार है।

इति श्रीमानमिथलटकनतनयथीमानमियभावविरित्तती भावप्रकाश सपूर्ण।

प्रमस्ति--सवत् १८५१ मिनी बैदाख गुक्का ६ गुक्के लिखितमृपिएगा फतेचन्द्रे ए। सवाई जयनगरमध्ये ।

३१७६ भाषप्रकाश '।पत्र स०१६। मा०१००० ४४०० इद्ध । मापा—सस्कृत । विषय-प्रायुर्वेद । र० नाल ×। ले॰ नाल ×।पूर्ण । वे० स०२०२२। श्र मण्डार।

विशेष--प्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है-

इति श्री जग्रु पंडित तनयदास पिंडतकृते त्रिसतिकाया रसायन वा जारण समाप्त ।

१९६० भावसमह । पत्र स०१०। ग्रा०१०३×६३ इखा भाषा-सस्कत । विषय-ग्रायुर्वेद। र०काल ×। ते०काल ×। ग्रपूर्ण। वे० स०२०५६। ट मण्डार। १९८९ सदसमिनोर—सदस्याचापण रंग्यं १२ में ६२ । या द्रश्राहे स्थापला-संस्ता निवक-समुदेशार कलाशांके अलासं १७६६ लोकपुती१२ । यहसं १ वर्ष १ औली स समार।

वि**वेप**--पण १६ पर निम्ब पुरितना है--

प्रति भी बरनपास निर्धाको सरनस्मिते बनादिवर्गः ।

नव १ पर-- वो राज्ञो दुर्वावकः श्वारक्कालेव जीववन्त्रील विविधेष ज्ञानीतिकः वदवविनीरे वटादि यंपनपर्यः । क्षेत्रकः स्वारीतः---

क्षेत्र कुद्धा १९ हरी तरिहे कि——व्यवनी विचयेन परीस्कारणी । संबद्ध १७६१ विसंचार तरिही—-बारकालविर्यासी वयरविष्योते विचारे कसील वर्षकारीया ।।

. ११वर. सक्ष व कौषधि का जुल्का^{च्यामा} पर शं १। या १ ४६ ६प । सस्य-हिन्छे । सिक्क-समर्थेर । रंकस्य ४ । वे कल ४ । वर्षा । वे शं १६० । का क्यार ।

दिवीय-विकारि पनवने का कमा की है ।

हरें करे स्वयंत्रियास—स्वयं । नवं १२४ । या ८८४ ईव । याना-संस्ता । विवर— सन्दर्भ । र कल × । ने कम × । पूर्वावे वं १२६६ । अ क्यार ।

> १९८८ प्रति सक्ष्यापन वं १२४ । वे सम्बर्धानपूर्वाचे तं २ ६ । इ. सम्बर्धाः विकेष-पंत्राणमेक क्षत्र विभी जैना प्रतिस्था

स्रोतिक ग्रीनास निःग तकार है—

इति वी वं अलगेद निर्विश्ति शक्तवीक्तवातीकारणी ववुरीय परनार्व ।

र्थ - बतालाल मानवस्थ राजकन्त की पुस्तक है ।

द्वके व्यविष्ठिक क क्वार के श्रविकों (के र्स व ११४६, १६४७) क्वा वच्यार में यो प्रक्रिय

(वे वं १४६) १६१) तमा व्याचनकार में कुछ अति (वे वं ४४) मीर हैं।

६१८८८ सामविजीयु—सहस्रहित् (कार्य ६७) वा ६६%। । विश्व-समुद्रिकार कार्य XII कसर XI समुद्री किर्दरभागा क

प्रति विनये दीका वर्ताल है । १७ हे आने पण नहीं हैं

श्वा स्टिमान-कोशिककर्त है।

विकासमूर्वेद स्थोतिक । र कार×ाति कार्या 🖫 🔞

श्रायुर्वेट]

्३१८० योगचिन्तामणि—मनूसिंह। पत्र स०१२ से ४८। मा० ११४५ इख्न। भाषा-सस्कृत। विषय-प्रायुर्वेद ! र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । अपूर्ण । वे० स० २१०२ 1 ट भण्डार)

विरोप-पत्र १ से ११ तथा ४८ मे श्रामे नहीं है।

दितीय ग्रधिकार की पृष्पिका निम्न प्रकार है-

इति श्रो वा रत्नरागगीए श्रतेवासि मनूर्सिहकृते योगींचतामिए। बालावबोधे चूणाधिकारी द्वितीय ।

३१८८ योगचिन्तासिण '। पत्र स० ४। गा० १३×६ इख्र। भाषा-संस्तृत । विषय-ग्रायुर्वेद । र० काल 🗶 । ले० काल 🗶 । मपूर्ण । वे० स० १८०३ । ट भण्डार ।

३१८६ योगचिन्तामणि । पत्र स० १२ से १०५। मा० १०३×४३ इख्र। भाषा-सस्त्र। विषय-प्रायुर्वेद । र० काल 🗙 । ते० काल स० १८५४ ज्येष्ठ बुदो ७ । प्रपूर्ण । वे० स० २०८३ । ट मण्डार ।

विजेष--प्रति जीर्ग है। जयनगर में फनेहचन्द के पठनार्य प्रतिलिपि हुई थी।

| पत्र स० २०० | मा० १०×४३ इख | भाषा-सम्ब्रत | विषय-३१६० योगचिन्तामिया भागुर्वद । र० काल 🗙 । ते० काल 🗙 । मपूर्ण । वे० स० १३४६ । स्र मण्डार ।

विशेप-दो प्रतियो का मिश्रण है।

३१६१ योगचिन्तामिणयीजक । पत्र स० ५ । मा० ६५×४५ द च । भाषा-सम्कृत । विषय-भापुर्वेद । र० कान X । ले० कान X । पूर्ण । वे० स० ३५६ । ज भण्डार ।

३४६२ योगचिन्तामणि--उपाध्याय हर्पकीत्ति । पत्र स० १४८ । मा० १०१×४३ इ व । भाषा-नस्कृत । विषय-मापुर्वेद । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ६०४ । स्त्र भण्डार ।

विशेप-हिन्दी में सक्षित मर्थ दिया हुमा है।

२१६२ प्रति सं०२ । पत्र स०१२० । ने० कान ⋉ । ने० स०२२०६ । व्या मण्डार ।

नियोप-हिन्दी दन्वा टीका सहित है।

३१६४ प्रति स०३। पत्र स०१८१। ले० काल स०१७५१। वे० स०१६७६। स्त्र भण्डार। ३१६५ प्रति स०४। पत्र स०१५६। ते० काल स०१८३४ द्यापाढ बुदी २। वे० सं० ८८। छ

भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है। सागानेर मे गोधो के चैत्यालय मे प० ईरवरदास के चेले की पुस्तक में प्रतिलिपि की थी।

उ१६६ प्रति स० ४ । पत्र स० १२४ । ले० काल स० १७७६ वैद्याल सुदी २ । वे० स० ६६ । ज मण्डार ।

विशेष-भालपुरा में जीवराज वैद्य ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

देशे के प्रतिसार की विकर्ष है के कि बाज में १०१९ उन्तेत्र बुद्धी का चतुर्ता है सं ६६। जनमार।

दिरोत---प्रति नटीर है। प्रवत दो पत्र नहीं है।

. १९४८ द्यागरान-च्यात्रिया वचर्न २९। सा १९४८ द्या । शास-मीराचा विश्व बागुन्छ । र रोज प्राप्ति सारचे १६९ पाल्ला पर्से १ प्राप्ति चे २ २ । टचलनार ।

रिकेट—स्मृत्य पर मेंबह कम है तथा उनकी दीका है। पंताबती (पाटनू) में पं िक्यर ने साल इस्तितन ने निरासना था।

३१६६ योगलानरीशा^{™™}ापण नं २१।धा ११६×१है ईप। बाल-मॅस्टन । नियस-बायुरण । व राजा × । से पाल × । पूर्णा वे भंद ७६। का बस्तररा

६२० आसस्तकः सम्मापन र्ग७। या १ _५४४६ दश्चा सारा-नंतरणः नियय-सार्द्रयः। र नद्या ४।न यान सं १९ ६।कृषीः वे ७६। जायकारः।

िरियेय-भी विषय समूह में हवरदमार्थ प्रतिनिधि थी थी। प्रति श्रीपर सहित है।

११०१ काराराजकारणाचन क्षं कताचा ११_६>८३ इ.चः नारा-दिलीः विषय-सामुर्देकः र राज≻। ने राज×। दुर्गः वे च १६३ । स्वयन्तरः

३२ व रसमञ्जयि—शाक्षितासः। यत्र वं ११। वा १ ४६३ रखः नातः—संस्टाः शियक-सारकः। राजन ×ामे नाल ×ास्त्राती । वे तं ११६। इत्यनगरः।

३० १. १८मम्बारी न्याक्त बद्धत्वम में १६। या १ ×४६ देव। बारा-बंदाय। विवस्-बादुररं। र कम ×ाने नाग से १६४६ बायन वृत्ती ऽत्रापुर्ति। वे से १६६३ का बच्चार ;

विश्वेय—वं प्रधानाम भीवनेर निवाली न जयपुर में विश्वानीए है के निवर में क्षिप्र जयबन्द्र के वड़ वार्ष प्रतिनिर्धि की थे।

३२ ४ रसमञ्ज्ञाला वर्गस्य ४० मा १ है×२, दशः। सरा-दिल्यैः विवय-पार्युवेदः र नाम × । नामा × । स्पूर्णः। वे.सं. १ ३४ । बोर्णः। इ.सप्टारः

३२ ४ रस्यतकरकुण्णाना वर्षे १२१ मा १८४५ दश्यः भाषा-वंदश्यः। दिवस-यापूर्वशः र कलः / ति सलः अध्यक्षिति वी १३११ वर्षायकारः।

३३ ६ रामसिनोद्—रामणन्द्र। यत्र वं २१८। सा १ x४३ इ.स.। सला-मिलीयसः। सियस-माद्यदार नामार्थ १६२ । के नामा×ाणपूर्णीते सं ११४४ । कालपार।

विशेष-- बाह्न पर इत वैश्वपतार तन्त्र का दिन्दी नवलुकार है ।

प्रायुर्वेद]

भण्डार ।

३००७ प्रति स० १ । पत्र स० १६२ । ले० काल स० १८५१ बैशाख सुदी ११ । वे० स० १६३ । ख

विशेष-जीवग्नालजी के पठनार्थ भैंसलाना ग्राम मे प्रतिनिधि हुई थी।

३००८ प्रति सं०३। पत्र स० ६३। ले० काल 🗶 । वे० स० २३०। छ सण्डार।

३२ ः ६ प्रति स०४ । पत्र स० ३१ । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० स०१८ ८२ । ट भण्डार ।

विजेष—इसी भण्डार मे ६ प्रतिया श्रपूर्ण (वै० स० १६९६, २०१८, २०६२) स्रीर हैं।

३२१० रासायितिकशास्त्र । पत्र स० ४२। धा० ५६८६ इस्रा भाषा-हिन्दी । विषय-प्राप्येद । र० काल ४ । के० काल ४ । प्रपूर्ण । वे० स० ६६८ । च भण्डार ।

३२११ लदमगोत्सव - त्रमर्सिहात्मज श्री लदमग् । पत्र सं० २ से ६६ । झा० १९१४ इश्व । भाषा-सस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० स० १०८४ । अपूर्ण ।

3२१२ लङ्कतपध्यनिर्ह्मेय । पत्र स०१२ । आ०१०३४४ इख्र । भाषा—सस्कृत । विषय— थायुर्वेद । र० काल × । ले० काल स०१८२२ पौप सुदी २ । पूर्ण । वे० स०१६६ । ख मण्डार ।

विशेष - प० जीवनलालजी पन्नालालजी के पठनार्थ लिखा गया था।

३२१३ विपहरनिषधि—सतोष कथि। पत्र स० १२। मा० ११×५ इखा। भाषा-हिन्दी। विशय-मापुर्वेद। र० काल स० १७४१। ले० काल स० १८६६ माच सुदी १०। पूर्ण। वे० स० १४४। ह्यू भण्डार।

सिस रिप वैद घर खडले जेष्ठ सुकल रूदाम (
चद्रापुरी समत् गिनी चद्रापुरी मुकाम ॥२७॥
समत यह सतोप कृत तादिन कविता कीन।
सिका मिन गिर विव विजय तादिन हम लिख लीन ॥२८॥

२०१४ वैद्यक्तमार । पण स० ४ से ५४) ग्रा० ६×४ हज । भाषा—सस्कृत । विषय—मायुर्वेद । र० काल × । पे० काल × । पूर्ण । वे० स० ३३४ । च भवहार ।

३२१४. वैश्वजीवन —लोलिम्बराज । पेत्र स० २१ । आ० १२×५३ इख । आपा-सम्बृत । विषय-माणुर्वेद । र० कान × । ले० कान × । पूर्ण । वे० स० २१५७ । स्त्र भण्डार ।

पिशेप - ५वो जिलास तक है।

३२१६ प्रति सब्दा पण स॰ २१ से ३२। लेव काल स॰ १८३८। वैव स० १५७१। इत्र

भापुर्वे र 4.4] ११६७ प्रतिस्⇔ ६ । पण से १ ६ । ते जल्प सं १७१६ ज्लेश दूरी ४ । बपूर्ता । रे सं ६६ ।

स मध्यार । विक्रेय-मार्च कडीक है । मबन की पन बड़ी है ।

३१६८ योगरात-वरस्थि । पत्र वं २१ । मा १६×० रख । वारा-संस्कृत । विषय-धान्येय । र नाम 🖊 । में पाल वे १६१ धानक नुती १ । पूर्व । में वं २ २ । ह बधार ।

विमेर--वामुबेंद ना संबद्ध व व है तुवा उत्तरी हीता है। चंपानती (चारत) व वं विद्युत्व के माल पुत्रीनात ने निवस्ता वा ।

३१६६, योगारानटीका^{.......}। पत्र सं २१ | वर्ग ११\$×१३ ईव । श्रापा-तंसूरा | विपय-वापुर्वेद । र नत×।न पल ×।वर्षा∮के वं २ ७६ । खथनार।

र नात्र ⊁। से कान सं१६ ६ | पूर्णा वे सं७२ | का बचार।

विसेय-नं विश्व समूत्र ने स्थयत्मार्थ प्रतिनिधि वी भी । प्रति शीवा बहित है ।

३० १ जोगरासकः करणा पर क्षेत्रकः । का ११०/८४३ ६ व । वाला-दिल्यी । विपद-मान्देव । र गत्त×। ने शत्त×। वर्ला वेत १४३। स क्यारा

२० २ रहमऋरी—शाखिनाय। वर वं १९। या० १ ×६३ दश्चः बारा-नंरहर । विवय-मार्थेर।र बला ≻ाने कला ≾ा बहुर्गी वे १३६(इ.वस्तर।

रे? १. रममध्री-राष्ट्रीयर । रण नं २६। या १ ४१, वंव । बारा-संस्कृत । विस्य-

पातुनर । ए. तल × । ते. बान वे. १६४६ बारव बुरी छ । पूर्न | वे. ते. १६६ | छ अध्यार ।

विशेष---वं व्यानान योगवेर निवानी ने नकपूर में विन्यानीए है के निवर वे फिया सम्बन्ध के पड नार्व प्रतिनीर वी वी ।

१२०४ रसम्बद्धाः व्यानं ४। वा १ _१०१ रवा नाम-दिली । निवय-बार्येर । र

रेल ४ व रम ×। ब्राूर्ण । देर्ग २ ३६। जीर्ण । द्वाबार । ११०३ रसपन्तरा—ायम १२। या ६४४३ दच। मारा-नंतरूप। विवस-यार्गेरी

र नामः । ने माना प्राच्यानी । वे १३६० । ध्रानासार ।

३२६६ रामविजात-रामचन्द्र। यह सं ११८। ब्रा १ 🖂 इ.च । मता-दिनी दर।

विषय-प्रापृद्ध र सक्त सं १६२ । से नाम 🗡 । प्रापृत्ती है में १६४४ । क्षा स्थार । विरोध-बाक्त कर इस वैयवनार बन्द का किसी वयनकार है ।

3२२६ वंद्यक्तसारोद्धार—मग्रहकर्ता श्री हर्पकीत्तिसूरि । पत्र म० १६७ । मा० १०४४ इत्र । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रायुर्वेद । र० काल × । ते० काल स० १७८६ ग्रामोज युदी = । पूर्ण । वे० स० १=२ । स्व भण्डार ।

विदोप—भानुमती नगर मे श्रीगजकुदालगिए के शिष्य गिशासुन्दरगुपल ने प्रतिलिपि की थी। प्रति हिन्दी श्रतुवाद सहित है।

३२३० प्रति स०२ । पत्र स० ४६ । ले॰ काल स० १७७३ माघ । ने॰ सं० १४६ । ल भण्डार।

विशेष-प्रति का जीएगिंद्वार हुमा है।

३२३१ वैद्यामृत-साणिक्य भट्ट। पत्र स० २०। मा० ६४८ द्व। मापा-नम्बृत । विषय-मायुर्वेद । र० काल ४। नै० काल स० १६१६। पूर्ण । वै० स० ३५८। च मण्डार।

विशेष--माणिनयभट्ट महमदावाद के रहने वाले थे।

३२३२ वैद्यवितोद । पत्र स०१८३। मा०१०३४८३ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-मायुर्वेद । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स०१३०६ । स्त्र भण्डार ।

३२३३ वैद्यविनोद्-भट्टशकर । पत्र स० २०७ । मा० ५३×४३ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-भ्रायुर्वेद । र० काल × । ते० काल × । मपूर्ण । वे० स० २७२ । स्व भण्डार ।

विशेय-पत्र १४० तक हिन्दी सवेत भी दिये हुये हैं।

३२३४ प्रति स० २ । पत्र स० ३५ । ले० काल × । मपूर्ण । वे० स० २३१ । छ भण्डार । ३२३४ प्रति स० ३ । पत्र स० ११२ । ले० काल स० १८७७ । वे० स० १७३३ । ट भण्डार । विशेष—लेखक प्रशस्त-

सवत् १७५६ बैमाल मुदी १ । बार चद्रवासरे वर्षे शाके १६२३ पातिसाहजी नौरगजीवजी महाराजाजी श्री जयसिंहराज्य हाकिम फौजदार खानग्रव्युक्ताखाजी के नामवरूप्लमम्बा स्याहीजी श्री प्याहमालमजी की तरफ मिया साहवजी मब्दुलफलेजी का राज्य श्रीमस्तु फल्याएक । स० १८७७ शाके १७४२ प्रवर्त्तमाने कार्तिक १२ गुरुवारिलिखल मिश्रलाजजी कस्य पुत्र रामनारायएी पठनार्थं ।

३२३६ प्रति स०४। पत्र स०२२ से ४८। ते० काल ×। मपूर्ण । वे० स०२०७०। ट भण्डार । ३२३७ शाझ वरसहिता-शाङ्केधर । पत्र स० ६८। मा० ११×५ इत । भाषा-सस्कृत । विषय-

विशोप-इसी मण्डार में ३ प्रतिया (वे० स० ८०३, ११४२, १५७७) और हैं।

```
१ भ ] [ मापुर्वेद
१२१० प्रति स०१। पत्र सं ११। ले काल सं १८०२ पत्रद्वा । वे सं १७४। छ
मनार।
```

निवेद— इती वच्चार में दी प्रतिस्थं (वे सं १००) स्रोट है।

१२१८. प्रतिसं ४ । क्याचं ६१। के कश्य ×ाधपूर्णा वे ६ १ । क्रामधार।

३२१≗. मदि संदान च १३। ने नमा×।३ वं २३ । इद नमार। ३२३ - नेपनीमनमम्ब‴ापन वं ६७१। सा १ _परश्र इचाममा—संस्टत। नियन

सपुर्वेद | र कल × | के नल × | सपूर्वा वे सः १३६ | च बच्चार |

विसेय---प्रतिव पन मी बडी है।

३२२१ वैद्यतीयन्तरीका— वृद्यस्थाप्य च २१ । या १ ४२ इस । यसा- शस्त । विदय-साहर्षर । र काव ४ | वे काव ४ | व्यूती । वे वे ११६६ । या सम्प्रार ।

विश्वेष—पूटी क्यार में वो प्रतिस्थ (वै सं २ १६, २ १७) सीर है।

११९२, वैधासनोस्वय — नवनश्चमा । यत् सं १२ । बा ११४६६ इसा । बाया-संस्टाहरूपी । प्रियम-बायुर्वस ('र काल सं १९४६ बायान युधि २ । से याल सं १०१६ व्येष्ठ सूरी १ । यूसी वे स १९४६ । इस नवार)

. ३२२६ ब्रविसं २ । यस वं १६ । में नाम वं १ ६ । में वं १ ७६ । भ्रा क्यार ।

विकेष— इसी वश्वार ने एक प्रति (वै सं ११६१) और है।

इंग्स्थ्र प्रतिस्थे है। यस संदेश के राज्य संवर्षिक राज्य संवर्षिक स्थापनार ।

् ६२२ इ.स. स्थितं है। में बज्ज वे १ ६३। में वे १६७। इड मध्यार। - १६२६ इ.स. स्थितं है। बचवं १८। वे स्थात १ ६८ तामछ पूरी १४। में सं २ ४। इ

मधार ।

स्थित-पान्स में दुविजुलत चैपतसम के बहुएक दुवेग्यतीय के क्रिया पं चारापन के स्वयं प्रतिनिधि भी थी।

१०२० नेसवासमाः पन वं १६१ मा १ हेश्य स्थानमा-संस्ताः। नियन-समुद्दरः। र नाम × ति नाम वं १६१ पुर्णा वे से १००१।

विदेश—कैवाराव ने श्ववाई जवपुर में प्रवितिति नी भी।

३२२८. प्रतिसं २ | पत्र वं १ | ते नाव × । वे सं २१७ । कालकार ।

३२४७ सित्रिपातकितिका " । पत्र सें० १ । मा० ११३४५३ इंच । भाषा-सस्कृत । विषय-भागुर्वेद । र० काल ४ । ले० काल सें० १८७३ । पूर्ण । वे० सें० २८३ । ख भण्डार ।

विशेष -- बौवनपुर मे पैं० जीवगादास ने प्रतिलिपि की थी।

३२४८ सप्तविधि । पत्र सं० ७। आ० दई X४ई इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ग्रापुर्वेद । ए० काल X । ले० काल X । ग्रपूर्ण । वे० स० १४९७ । आ भण्डार ।

३२४६ सर्घेज्वरसमुच्चयद्र्पेण । पत्र सँ०४२। श्रा० ६×३ ई व । भाषा-सस्कृत । विषय-धायुर्वेद । २० काल × । ले० काल स० १८८१ । पूर्ण । वे० स० २२६ । ज भण्डार ।

३२४६ सारमप्रह । पत्र स०२७ से २४७। आ०१२×५३ इ'च। भाषा-सस्कृत । विषय-प्रापुर्वेद। र० काल ×। ले० काल स०१७४० कार्तिक। अपूर्णी वे० स०११५६। आ मण्डार।

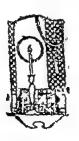
विशेष--हरिगोविंद ने प्रतिलिपि की थी।

३२४१ सालोत्तररास । पत्र सै० ७३। झा० ९४४ इ'च। भाषा-हिन्दी। विषय-झायुर्वेद। १० काल ४। ले० काल स० १८४३ झासोज बुदी ६ । पूर्ण। वे० सै० ७१४। स्त्र भण्डार।

३२४२ मिद्धियोग । पत्र स०७ मे ४६। मा० १०×४३ इ.च.। भाषा-संस्कृत । विषय-मायुर्वेद । र० काल × । ते० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३५७ । आ भण्डार ।

३२४३ हरहैकल्प । पत्र स० ४। ग्रा० ५३×४ ६ च। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। र• माल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स० १८१६। श्र भण्डार।

विशेष-मालवागडी प्रयोग भी है। (अपूर्ण)



३२२ = प्रति स २। वंश संव १७ । के काल × । वे सं १०४। का जम्मार। विकेट — स्वी मध्यार में २ प्रतिकों (वे सं २७ २७१) और हैं।

३२३६. प्रति शुं≎ ३।पद संप∽४ । के कल × । सपूर्वी वे सं २ वर । ट च्चार । ३०४ | शाक्ष प्रतिविद्यातीका —साइसक्का पद सं ४१३ । सा ११४५ हे पैच । समा-संस्का । विद्या-समर्थे । राजका × । के कल सं १ १२ योच सुरी १३ । इस्से । वे १९१६ । घाण्यार ।

विसेय-दोक्य का नाम कार्ज बरवीयिका है । शक्तिय वृत्त्रिका नियन प्रवार है--

वस्त्यमान्यक्रकात्र्वं के सीक्षणिकृत्ववेगस्थनलेगः विर्शेषतसागः साञ्च वरशीरवस्तुतरसमे नैवस्वस्त पर्वतिक स्तर्भवोत्स्यस्य । वित सम्बद्धः है ।

१९४२ - शामित्रोत्र (सम्बणिकित्स) —-जुल्हायविद्यापण वं शासा र ४४३ वर्षायान्तर संभूत हिल्दीः विवर–समुदेवार कास ×ाने काम तं १७६६ । पूर्णादे तं १९६६ । कामण्यार ।

निचेद---राम्बाबद्वरा मे शहरना कुलवर्तिङ् के बहसन हरिल्या ने बहिबियि की की ।

१२४२. राजिहास (कम्प्रिकिस्ता) —ाग्य थं १ । या च्≱प्रश्हे स्था। वसान्वस्त्रण । रियक-स्पर्तेष ांर काल प्राप्त काल सं १०१० साराक मुद्दी शाक्ती। वीर्का वे इं १२ ३ । क्र क्यारा

देश्वेश्व सम्माननिवि***** वच र्ष १ । या ११×४० दक्षा स्था-हिन्दी । विशव-समूर्वेद । र कान × । ने काम × । यहार्वि वे दे १ ७ । त सम्बार ।

विश्वेत-स्थान उत्तन होने के तन्त्रक में वह गुरु है ।

देश्करः छक्षियातिस्तृतान्यान्यवर्षे याचा १ ४४६ द्वाशया-यंद्यतः विकासमूर्ययः। १ नार×ाने कस्त्रपार्वादे ये २३ । क्राच्यारः।

रेश्वरं, स्कित्यसनिक्ताविक्तिस्ता—वाह्यदासायण वं १४ । सा १२×२५ १ व । व्यक्त संग्रात । विक्य-समुद्दरार याल ×ाने याल वं १०६६ योगपुर्ध १२ |पुर्का कं २३ । स् भगारा

विकेश—दिन्दी धर्च वहिला है ।

३२४७ सिल्पातकतिका " । पत्र सं० ४ । भा० ११३ ४५३ हेच । भाषा-सस्कृत । विषय-थापुर्वेद । र० काल ४ । ते० काल सं० १८७३ । पूर्ण । वे० सं० २८३ । ख भण्डार ।

विशेष -- यौवनपुर मे पँ० जीवसादास ने प्रतिलिपि की थी।

३२४८ सप्तिविधि । पत्र स० ७। शा० दर्भ ४४३ ई च । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । ए० काल ४ । ले० काल ४ । श्रपूर्ण । वे० स० १४१७ । व्य भण्डार ।

३२४६ सर्धेज्वरसमुख्यद्र्पेण । पत्र से०४२। ग्रा०६×३६ व । भाषा-सस्कृत । विषय-भायुर्वेद । र० काल × । ते० काल स०१८८१ । पूर्ण । वे० स० २२६ । ञ मण्डार ।

३२४६ सारमप्रह । पत्र स० २७ से २४७ । आ० १२×५६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-मायुर्वेद । र० काल × । ले० काल स० १७४७ कॉलिक । मपूर्ण । वे० स० ११४६ । ऋ भण्डार ।

विशेष-इरिगोविंद ने प्रतिलिपि की थी।

३२४१ सालोत्तररास । पत्र सं० ७३। मा० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दो । विषय-प्रायुर्वेद । ६० नाल × । ले० काल स० १८४३ मासोज बुदी ६ । पूर्या । वे० स० ७१४ । आ भण्डार ।

३२४२ सिद्धियोग । पन स० ७ से ४३। मा० १०×४३ इ.च.। मापा-सँस्कृत । विषय-आयुर्वेद । र० नान × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० १३५७। आ मण्डार ।

३२४३ हरडैकल्प । पत्र स० ४। आ० ४३४४ इ.च । भाषा-हिन्दी । विवय-शायुर्वेद । र० फाल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० स० १८१६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--मालवागढी प्रभोग भी है। (प्रपूर्ण)



विषय-छंद एव श्रलङ्कार

१२४४ क्रमरचेहिका----ापवर्षं ७२ । या ११४४ई इ.च. वला-दिन्धी रच।विपर-देर समञ्जूरा र नक्त ×ाके कल ×ाक्युर्वावै चं १६ । कल्कारा

निमेव---वदर्व यविकार एक है।

१०४५, बस्तेकारसङ्ख्य-चिक्रपेतराव वर्षीघर। यण तं ६१। सा १,४६_५ ६४ । जना~ किसी । विचर-चनकार । ए. कमा ४ । के व्यव ४ । पूर्वी के वे ६४ । व कश्वरा

१९४६ अक्क्सर्यकि—किल्ब्बैनस्ति। या रं २०। या १९४० इ.स. कला-चल्दा विक-रत्र सक्तरा (र कला×) वे कला×) पूर्णी दे सं १२। क बसारः।

१२१० **श्रहस्त्रीका****** पर टें १४ स्य ११८८ ६० । यासः चंतरः । स्वस्थानस्य । स्वस्थानस्य । स्वस्थानस्य । र सम्बर्भाने प्रमार । प्रमानिक संदेशिक स्थारः

३२,४०. स्रबङ्कारस्यात्र ^{चण्णा} पण वं कके १११ । सः ११३,४० ६ व ः जाना –र्तस्तनः । विपय-सन्दर्भर । र नाम ४ । ने कम्म ४ । स्तुर्णा । वे वं ३ १ । वर जपकार ।

विकेय-प्रति बोर्स सीर्थ है। बीच के वन की नहीं है।

३०.१६. कृतिकर्षेटी⁻⁻⁻⁻⁻ाय वं ६ । सा १९८५ ६ व । त्रका–इंस्तृत । विरत–रहसक्युर । र नात ≾ । के बक्त ≾ | क्यूर्ण । वे वं १ ६ । क स्थार ।

विकेप-अदि श्रीलात दीका नारित है।

३२६ कुनसम्बन्धः ⁻⁻⁻⁻। पर वं २ । सा ११४२ ६थ । जल्ला-संस्तृतः) पितस-समञ्जार । र गला×। ते शला×। पूर्णः वे १७ १। ह जनसार ।

३९६१ प्रक्षिस णांत्रप्त दाने शल Xावे सं १७ २ । द बचारा

१२६९ ब्रतिस दे। पर्यटे १ । ते नक्त X । धनुर्वाचे से १२१ । हमधार ।

१न्दरं कुम्सवातन् —वाणय दीवित । त्रतं रं । आः १४८६ ६॥ । जास-संस्तृत । पिरम-भनद्वार । र त्रतं ≾ोने प्रसन्तं १४४२ । पूर्णः त्रे सं ११३ । आवसार ।

विभेच-र्त १ १ माह दुवी ५ को मैल्लामर ने बनपुर ने प्रविधिति वी जी।

3२६४ प्रति स॰ २ | पत्र से० १३ | ले० काल स० १८६२ | वे० स० १२६ । हः भण्डार | विशेष-जयपुर मे महात्मा पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी |

३२६४ प्रति स०३। पत्र सँ० ८०। ले० काल स०१६०४ वैशाल सुदी १०। वे० स०३१४। ज

विशेष--प० सदासुस्र के शिष्य फरोहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

उन्दर प्रति स् ४। पत्र स० ६२। ले० काल स० १८०६। वे० स० ३०६। ज अण्डार।

३२६७ कुवलयानन्दकारिका । पत्र स०६। प्रा० १०×४३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-भलद्वार । र० काल × । ले० काल स० १८१६ प्रापाढ सुदी १३ । पूर्ण । वे० स० २८६ । छ भण्डार ।

विशेष-पं कृप्णदास ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । १७२ कारिकार्य है ।

3२६८ प्रति स०२। पत्र स०८। ले० काल ×। वे० स० ३०६। ज मण्डार !

विशेष-हरदास भट्ट की किताब है रामनारायन मिश्र ने प्रतिनिधि की थी।

३०६१. चन्द्रायलोक । पत्र स० ११। ग्रा० ११×५६ इ.च । भाषा-संस्कृत । विषय-भलङ्कार । र० काल × । पर्रा । वे० स० ६२४ । आ भण्डार ।

३२७० प्रति स०२। पत्र स०१३। ग्रा० १०ई८४ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-ग्रलद्भारतास्त्र। र०कान ४। ते० काल स०१६०६ कार्तिक बुदी ६। वे० स०६१। च भण्डार।

विशेष--रूपचन्द माह ने प्रतिलिपि की थी।

३२७१ प्रति स० ३। पत्र स० १३। ले० काल 🗴 । अपूर्शा वे० स० ६२। च मण्डार ।

३२७२ छटातुशासनपृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र स० ८ । प्रा० १२×४६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-छदशास्त्र । र० काल ४ । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० २२६० । स्म भण्डार ।

विशेष--- प्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है-

इत्याचार्य श्रीहेमचन्द्रविरिचते व्यावर्णनानाम प्रष्टमाऽध्याय समाप्त । समाप्तोयग्रन्थ । श्री भुवनकीर्त्ति गिप्य प्रमुख श्री ज्ञानभूषण योग्यस्य ग्रन्थ निस्थत । मृश्र विनयमेक्शा ।

३२ ३३ छदोशतक—हर्षकीत्ति (चद्रकीर्त्ति के शिष्य)। पत्र स० ७। मा० १०३×४२ इ च। भाषा-नम्कृत हिन्दी। विषय-छदशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० स० १८८१। स्त्र भण्डार।

३२.७४ छदकोश-रत्नशेखर सूरि। पत्र स० ३८। ग्रा० १०४४ इ.च.। भाषा-सस्कृत । विषय-छदगास्त्र । र० काल × । ले० काल × । ग्रपूर्श । वे० स० १६४ । इ. भण्डार ।

विषय-छंद एवं श्रलहार

१९४४ केसरपदिकाः व्याप्त १९४४ हैं इंदा करा-हिन्दी कार्रियस-क्रेर समञ्जूरार काल ×ावे वाल ×ाक्युर्वावे संहुता क्राच्यारा

मिच्चरार कास ×।ने पाल ×। ब्यूप्ये (वे ते १६) बाजचारा विदेश-च्यूची विवास तक हैं,}

३२,३४, स्रज्ञंकारकाकर—विकासस्य वसीयर । वर्षनं ३१। या ३,४२,६ इ.स.। जसा-कियो | मित्र-स्त्रक्कार । र.नसं×ार्ककक×ायुर्का के सं१४। क्राक्रमार ।

३१४६ साझहारमुणि — किनवर्जन सुरि।पव लंग्ना या १९४० इथा जला-संसरा। विदन-एक स्वयूक्तार कमा XIकेकल XIकुर्जी के सं १४। का बस्तार।

६६≵.**०. ब्यक्क्**रासीका^{मामा} । पत्र संदेश । सः ११८४ दव । वाला—संस्**ट** ∤दिपर-मनद्वार । र दक्त x । के तक x । पूर्ण । वे रेंदे दें । द्वाकस्यार ।

हर्म्स-व्यक्क्ष्ट्रस्तात्व ⁻⁻⁻⁻⁻। यस संकते ११६ । सा ११३/२८ ६व । श्राना---नेन्द्रत (निगम-स्रस्ट्रास । र काल × । के यसन × । ब्यूक्टी विसे २ १ । का व्यवस्था

र क्ला×ाने कॉल ×ाब्यूकी विदेश ११ का व्यवस्य विकेश--प्रतिनीर्स्त बीर्कहै। बीच के युक्त की नक्षी है।

हेस्ट. व्यविकरीती ^{च्या}ायत ती ६। सा १९८९ ६ व । बाला-वंदशुष्ठ | दिवस-रस समग्रुरि । र कास ≿ । ते नाम ≿ । व्युत्ती । वे र्ड १०३ | ख कवार ।

विकेप--प्रति संस्तृत दीना नहित 🕻 🏾

३०६ शुक्कमानस् ^{००}ायस्यं २ । का ११४२ इवा शतस-लेखना | विवस-सनदुरि । र सन्त ४ | के कस्त्र ४ | कुर्णावे सं १७०१ | हातमार |

३२६१ प्रतिस ³ोपवत शांके शल×।वे वं १७ २। टथचार।

३२.६२. प्रतिसः ३ । वन्तः १ । ते नाल x । जपूर्ण । वे २ २५ । ट बच्चार ।

१९६६ दुश्कमानस्य-च्यापा वीकित । पश्ची १ । या १९८६ इसः। समा-संस्कृत । पित्र-सद्वारा र समा≾ाले समार्थ १७४६ । दुर्गावे संबद्धा । क्यापारा

विकेश-सं १० वे नक्ष्युकी प्रको नैत्त्वालार ने सम्पूर ने सक्तिनिधि गी जी ।

होहा--

हे किव जन सरवज्ञ हो मित दोपन केछु देह।
भूल्पी भ्रम तै हो वहा जहा सोघि किन सेहु ॥६॥
सवत वसु रस लोक पर नसतह सा तिथि मास।
सित वाग्र श्रुति दिन रच्यो मासन छद विलास ॥६॥

पिगल छद मे दोहा, चीवोला, छप्पय, भ्रमर दोहा, सोरठा मादि कितने ही प्रकार के छदो का प्रयोग किया गया है । जिस छद का लक्षण लिम्बा गया है उसको उसी छद मे वर्णन किया गया है। मन्तिम पत्र भी नहीं है।

३२७८ पिंगलशास्त्र—नागराज । पत्र सं० १० । मा० १०×४३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-ग्रद्यशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ३२७ । व्य मण्डार ।

३२७६ पिंगलशास्त्र । पत्र स० ३ से २०। मा० १२×५ इच। भाषा-संस्कृत । विषय-छद जान्त्र । र० माल × । ले० काल × । भ्रपूर्ण । वे० स० ५६ । श्र भण्डार ।

३२८ पिंगत्तरास्त्र । पत्र स० ४। मा० १०६४४६ इद्य । मापा-सस्कृत । विषय-छदशास्त्र । र॰ काल ×। ले॰ काल ×। अपूर्ण । वै॰ स॰ १९६२ । स्त्र भण्डार ।

३२८१ पिंगलछद्शास्त्र (छन्द् रत्नावली)—हिर्रामदास । पत्र स० ७ । मा० १३×६ इव । मापा-हिन्दी । विषय-छन्द शास्त्र । र० काल स० १७६५ । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । वे० न० १८६६ । ट मण्डार ।

विशेष-- सवतशर नव मुनि धाशीनभ नवमी ग्रुरु मानि । डिइवाना हद कूप तिह ग्रन्थ जन्म-थल ज्यानि ॥

इति श्री हरिरामदास निरक्षनी कृत छव रत्नावनी सपूर्ण।

३०८२ पिंगतप्रदीप-भट्ट लद्मीनाथ । पत्र स०६८ । म्रा०६×४ इ च । मापा-सस्कृत । विषय-रम मनद्भार । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । चै० स० दर्श्व । स्त्र मण्डार ।

३०८३ प्राकृतछद्कोप-रत्नुगेखर । पत्र स० ४। मा० १३×४३ ६ च । भाषा-प्राकृत । विगय-घदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० म० ११६ । भ्रा भण्डार ।

३२८४ प्राष्ट्रतछद्कोष--श्रल्हू । पत्र म० १३ । आ० ८४५ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-छद शास्त्र । र० काल ४ । ले० काल स० १९३ पौप बुदो १ । पूर्ण । वे० म० ५२१ । क भण्डार ।

३२.८४ प्राकृतछ्दकोश "। पत्र स०३। मा० १०×५ इ.च । मापा-प्राकृत । विषय-छदशास्त्र । र० काल × । ते० काल स०१७६२ श्रावरा सुदी ११ । पूर्ग । वे० स०१८६२ । म्रा मण्डार ।

विशेष-प्रति जीर्रा एव फटी हुई है।

```
1t 1
                                                                                 व्यंत यत भग्नास
            ३२७४. क्रबकोरा<sup>.......</sup>। पत्र तै ९ के ए३ । सा १ 🗙 ४  द्रण । बादा तत्कृतः । विवय-संद
पप्तपार अस्त × । के राल × । पर्सा । वे त ३७ । च थचार ।
           ३२७६ जिल्लाम्बरम्य <sup>माराम</sup>। यस सं ७३ वा ६८४ इ.स. शता-अल्ला विका-र्श्वर नहरू।
र नल ×। में नल ×। कें∗ वे ४१७ । वा जबार।
           ३२७३ रिनक्कबन्तास्य--मासनकृषि । यद सं ४६ था ११×४) इ.स.। नाग-दिन्धे ।
नियन–श्रोददास्त्र । र फाल संं १ ६३ । के काल × । बहुर्गा के सं ६५४ । बहुक्यार ।
           विकेट--- ४६ में बाले पत्र नहीं हैं।
                  भी वजेकायनमः कथ शिवस । सर्वेशा ।
चारियारः—
                       नंबल भी प्रपंत क्लेक क्रियान प्रथम विधा वरकारी ।
                       बंदन के कर पंक्रम पत्तक माम्बद क्षेत्र जिलाम सकाती ।।
                       नोवित पूर पूर्वान की कारवाहुम का बच्च का पान निवासी ह
                       नारव हें हु नदूच निवीताव गुन्दर तेख सुवारत क्षेत्री ((१))
                             रिमय क्षापर संदर्गीत भरता बरण बहरका।
           $187-
                             रक्ष कामा कामेव हैं शुंबर बरब हरत शहा।
                             रातें रको निपारि के वर बांगी वर्धात ।
                             क्याप्रस्क वह स्तर के बरक सुमित स्त्रेत । वह
                             विसन करक दूवन रहिता वाली सनिक स्तासः ।
                             सदा नुरुषि गीराल की, थी पीराल क्रमल (100)
                             निव स्ता बाबन नाम है, उक्ति बुक्ति शासित है
                             बक्ष बारे बीराल गणि जानन होरेक्ट रोज सहस
                             स्थित नाथ विचारि नगः वादी वर्गिष्टि त्रपान १
```

बवा बुसाँठ ती मीनिये जानाम और निकास ॥६३१ सह मुप्ति तो भोरान नी तुम भई शाम है जन ।

न्द्र भूतनः नंदन शृतिके उद नुपति गोती है छदै । स्रति निम्म रिनन निपुत्रै जनवीन हैं पदि नीपरनी । स्रोंक काटि संद विस्तान नासन समित भी दिननी गरेगी ।:

राजराजीव-

दोहा-

हे किव जन सरवज्ञ हो मित दोपन कब्रु देह।
मूल्पी भ्रम ते ही वहा जहा सोधि किन लेहु ॥६॥
सवत वसु रस लोक पर नखतह सा तिथि मास।
सित वाएा श्रुति दिन रच्यो माखन छद विलास ॥६॥

पिगल छद मे दोहा, चौबोला, छप्पय, भ्रमर दोहा, सोरठा झादि कितने ही प्रकार के छदो का प्रयोग किया गया है । जिस छद का लक्षण लिखा गया है उसको उसी छद मे वर्णन किया गया है। झिन्तम पत्र भी नहीं है।

३२७८ पिंगलशास्त्र—नागराल । पत्र स० १०। आ० १०४४३ इ.च । आपा-सम्ब्रुत । विषय-छुदशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ३२७ । व्य मण्डार ।

३२७६ पिंगल्यास्त्र । पत्र स० ३ से २०। मा० १२×५ इच। मापा-सस्कृत । विषय-छद शास्त्र । र० काल × । के० काल × । मपूर्ण । वै० स० ५६ । श्र्य मण्डार ।

३२८ पिंगलशास्त्र । पत्र स० ४ । ग्रा० १०३ ४४३ इद्य । भाषा-सस्कृत । विषय-छदशास्त्र । र॰ काल 🗙 । श्रपूर्ण । वे० स० १९६२ । स्त्र भण्डार ।

३०८१ पिंगलळदशास्त्र (छन्द रत्नावली)—हिरामदास । पत्र स० ७ । भा० १३×६ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-छन्द शास्त्र । र० काल स० १७६५ । ले० काल स० १८२६ । पूर्ण । वे० म० १८६६ । ट मण्डार ।

विशेष-- सवतधार नव मुनि दाझीनभ नवमी ग्रुरु मानि । डिडवाना हुळ कूप तहि ग्रन्थ जन्म-यल ज्यानि ।।

इति श्री हरिरामदास निरञ्जनी कृत छद रत्नावली सपूर्ण।

३२८२ पिंगलप्रदीप--भट्ट लद्मीनाथ । पत्र स० ६८ । ग्रा० ६४४ इ च । भाषा--सस्कृत । विषय--रस ग्रनङ्कार । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ६१३ । स्त्र मण्डार ।

३० ≒३ प्राकृतछदकोप—रह्मशेखर। पत्र स० ४। ग्रा० १३ ×४ दे इ च। भाषा-प्राकृत। विषय— छदशास्त्र । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण (वे० म० ११६। श्रा मण्डार।

३२८४ प्राफृतछदकोष--- श्रलहू । पत्र म० १३ । आ० ८४५ इ.च । भाषा--प्राकृत । विषय-छ्रद शास्त्र । र० काल ४ । ले० काल स० १६३ पीप बुदो ६ । पूर्ण । वे० म० ५२१ । क भण्डार ।

३२८४ प्राक्षतछ्रदकोश । पत्र स० १। मा० १०×५ इ.च । मापा-प्राकृत । विषय-छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १७६२ श्रावण सुदी ११ । पूर्गा । वे० स० १८६२ । ऋ मण्डार । विषेप--प्रति जीर्णो एव फटी हई है ।

रेर] इंश्लेश्च **क्ष्महातुः**----गायवर्थं य केदर। बा १ %४३ ४व । बारा-नमून । विस्त-संद समस⊪र कल ×। के बाल ×। सूर्युति व १७ । वा कस्यार।

सप्तर।र कल ×ादे नाल ×ासपूर्व। वे न टकाव कस्तर। ३३७६ महिताहरसहरू व्यापन के कासा ८४४ इ.व. सम्बन्धन हरून स्वर्थन

र नाम ×। ने नाम ×। केन्द्री प्ररक्ष का का स्ट्राहरू स्थाननायुक्त । स्वत-वार्थ र

३२०० विशासक्त्रात्स—मालनकविः। पत्र शं प्रदेशका १४×४३ १४। सत्ता-पिर्धः। विश्व-चंदकरुरः र रूल सं १ ६३। वि वस्त्र ४। पहुर्तः। वे ६५४। का स्थारः।

विमेर---४६ ने धाने पर नहीं हैं।

चाडिभाग--

TIEF-

रोहरागीव--

नो नर्देबायम्य वर्षा स्वत्व । सर्वेषा) मेनल जो दुरोब पर्देश क्रियम दुशाम विशा वरवानी । वेश्य के यह पेत्रन स्वत्य साम्ब स्वत्र के स्वत्र है यह पेत्रन सम्बन्ध साम स्वत्र है यह प्रत्य के स्वत्र स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्य स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्

रियल हारद प्रेरमील वरेख वरक बहुदङ्ग ।
एम वरना वर्षन है सुंदर बदय वरक ।(३)।
हाई एक्स विचारि में पर बांधी वर्षाम ।
बहाइएक स्तु एमन में गरंश गुनात बनेग । ६।।
विभाग परंग पुरुष मंत्रीय मानी मानित एका ।
स्ता पुरुष मीमार मी मो गरिमा कुमार (१४)।
नित मुत मान्य वाम है, पांत मुक्ति से हैंव ।
बुव वर्ष मोमार मी मानित हुक्ति से हैंव ।
बुव वर्ष मोमार मानित हुक्ति सुंदर हैंव ।
स्व वर्ष मोमार मानित हुक्ति सुंदर हैंव ।

स्था पुत्रीत तो गोलिये जासन क्षेत्र विवास शर्थ। मह तुर्पार को गोराम की गुण नई श्रास्त्र है करें | पर बुपना जेपम नुनिये डर पुत्रीत क्यों है तथे | स्रोति नित्रम जिसमें हैं मानवीत हूँ करि वीयरती ? मधि नादि बंद विवास मासन परित्र की विवासी गरणी ! दोहा--

है किव ज़न सरवज्ञ हो मित दोपन कछ देह। भूल्यो भ्रम ते हो वहा जहा सोधि किन लेहु ॥६॥ सवत वसु रस लोक पर नखतह सा तिथि मास। सित वागा श्रुति दिन रच्यो मायन छद विनास ॥६॥

पिगल छद में दोहा, चौबोला, छप्पय, भ्रमर दोहा, सोरठा मादि कितने ही प्रकार के छदो का प्रयोग किया गया है । जिस छद का लक्षण लिखा गया है उसको उसी छद में वर्णन किया गया है। मन्तिम पत्र भी नहीं है।

३२७८ पिंगलशास्त्र—नागराज । पत्र स० १०। म्रा० १०४४ है इ व । मापा-सम्बृत । विषय-छदगास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२७ । व्य मण्डार ।

३२७६ पिंगलशास्त्र । पत्र स० ३ से २०। मा० १२×५ इच। मापा-सस्कृत । विषय-छद जास्त्र । र० काल × । ने० काल × । मपूर्ण । वे० स० ५६ । श्र भण्डार ।

३२८ पिंगलशास्त्र । पत्र स० ४। मा० १०६ ४४३ इद्धा भाषा-सस्कृत । विषय-छदशास्त्र । र॰ काल 🗴 । सपूर्ण । वै० स० १९६२ । स्त्र भण्डार ।

३०८१ पिंगलळदशास्त्र (छन्द रझावली)—हिरामदास । पत्र स० ७ । प्रा० १३४६ इस । भाषा-हिन्दी । विषय-छन्द शास्त्र । र० काल स० १७६५ । ने० काल स० १८२६ । पूर्गी । वे० स० १८६६ । ट भण्डार ।

विशेष-- सवतशर नव मुनि शशीन म नवमी ग्रुरु मानि । डिडवाना हढ कूप तहि ग्रंथ जन्म-थल ज्यानि ।।

इति श्री हरिरामदास निरक्षनी कृत छद रत्नावली सपूर्ण ।

३२८२ पिंगलप्रदीप-सट्ट लच्मीनाथ। पत्र स० ६८। मा० ६×८ इच । भाषा-संस्कृत । विषय-रस मलङ्कार। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वै० स० ८१३। मा मण्डार।

३२८३ प्राकुतछवकोप—रह्मशेखर। पत्र स० ४। मा० १३४५२ ६ व। भाषा-प्राकृत। विषय-छदशास्त्र। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० म० ११६। आ भण्डार।

३ व्यास्त्र प्रास्त्रतछदकोष-- आरुह् । पत्र स० १३ । आ० ८ ४१ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-छद भास्त्र । र० काल ४ । ले० काल स० १६३ पीप सुदी १ । पूर्ण । वे० स० ४२१ । क मण्डार ।

३२ न्य प्राक्षतद्यदकोश । पत्र स० ३। मा० १०×५ इ च । मापा-प्रावृत । विषय-छ्रदशास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १७६२ झावए। सुदी ११ (पूर्ण । वे० स० १८६२ । झा मण्डार । विशेष—प्रति जीर्रो एव फटी हुई है ।

```
ि कद एवं सबद्वार
489 ]
          ३२८६ शक्तरिंगक्तरास्त्र<sup>च्या</sup>ाप्य सं २ । या ११×४३ इ.च.। जारा-शक्त । विषय-
भ्रेपसम्म । र: नाम ×। में नास ×। पूर्त | वे वे ११४८ | व्या नप्तार ।
          ३२८० मापामृत्यम्—जसवर्तिक राठीव । पत्र वं १६। या ३४६ इ.व.। नावा-दिनी ।
विषय-प्रसद्भार । र काम X | ने कास X | पूर्ण | वीर्त्त | ने दंश है | क्र मधार |
           ३०६० रचुनाव विकास---रचुनाव । यथ वं ३१ । या १ ×४ ६व । वादा--हिन्से । विवय--
ग्रामद्वार । रंजस्य × । दे राव × । दुर्वादे सं ६६६ । च क्यार ।
          विदेय-भ्यकः दूधरा नाम राज्यज्ञिन्दी भी है।
          ३९ळ६ रह्मांश्या च्या वर्ष ६ । या ११६/४६) इ.च । बासा-संस्था विषय-संस्थानम् ।
र कास × |के नाथ × | नपूर्त |के चै ह१६ | का अप्यार |
           ३९६ रहसक्तिका<sup>----</sup>|यव सं २७। घा १ <sub>५</sub>४५ ६ थ । याना-वंतकः । विदय-शंतकारः ।
र नात×। ते नात×। पूर्णी दे ४४ । घनपार।
           विवेद--प्रनित्त पुलिका निम्म अधार है--
           र्शत राज्यस्थितम् सेवो निर्वित्योगम्बरीकृगोध्यानः ।
 १९६१ वास्त्रशासक्कार-वास्त्रहायन र्व १६। या १ ×४६६व । मना-संस्कृत । विवय-
 सत्तक्तार । र मन्त×। के कलासं १९४६ मॉर्लक सुती ६ (पूर्तकी कंदर (का बच्चार )
            विक्रेय---स्वरितः - तं १९४१ वर्षे कार्तिकनाते बुद्धमध्ये तृतीन्य तिथी बुध्वमसरे मिसर्ट पाने कुछा
                            राष्ट्रपेठमाने स्थापको प्रमाने ।
            ३९६९, प्रतिस २ । पण कं १९) के कल वं १९६४ क्यूक्त पुरी ७ । के रं १६३ । क
  क्यार ।
            रिक्ट --- नेक्ट प्रचीत नदी हुई है ) निम्न सम्में के धर्म जी विषे हुए हैं ।
```

मार्थ हे में देशक में मार्थ है। यह में स्थान में स्थान में स्थान में स्थान में

रिक्ट--प्रीव संस्कृत क्षेत्रा क्षेत्रिय है जा कि पार्टी और हातिने पर क्षित्री हुई है। इसके व्यक्तिक का सम्बार में एक ग्रीव (वे वं ११९) का सम्बार में एक प्रति (वे वं १०२) इ. क्ष्मार में एक ग्रीव (वे वं १९) का सम्बार में वो सहियों (वे वं हु १४९), प्रत्य स्थापत ने एक ग्रीव

(के सं ११७) व्याचनार में एक मीत (के सं १४१) मीर है।

भवार !

३२६४. प्रति स०४। पत्र स०६। ले० काल म० १७०० कार्तिक बुदी ३।वे० स०४४। हा भण्डार)

विशेष--ऋषि हसा ने सादडी मे प्रतिलिपि कराई थी। इसी मण्डार मे एक प्रति (वै॰ स॰ १४६) भीर है।

३२६४ वाग्भट्टालङ्कारटीका—वादिराज । पत्र स० ४० । ग्रा० ६३×५३ ड च । भाषा-सम्कृत । विषय-मलङ्कार । र० काल स० १७२६ कार्तिक बुदो ऽऽ (दीपावली) । ले० काल स० १८११ थावरण मुदो ६ । पूर्ण वै० स० १५२ । श्र भण्डार ।

विशेष-टीका का नाम कविचित्रका है। प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवस्तरे निधिद्दगम्बराशाक्युक्ते (१७२६) दीपोत्सवास्पदिवय सग्ररौ सिचने । लग्नेऽलि नाम्नि च समीपगिर प्रसादात् सद्वादिराजरिवताक्षविचन्द्रकेय ।। श्रीराजसिहनुपतिजयसिंह एव श्रीटाडाधकास्पनगरी भ्रपहित्य सुल्या । श्रीवादिराजविषुघोऽपर वाग्भटोय थीसूत्रवृतिरिह नदतु वाक्कवन्द्र ।।

श्रीमद्भीमनृपात्मजस्य बलिन श्रीराजसिंहस्य मे सेवायामवकाशमाप्य विहिता टीका शियूना हिता। हीनाधिकवचीयदत्र लिखित तद्वीबुधै क्षम्यतां गाईस्थ्यविनाय गेवनाधियासिक स्वष्ठतामाभूयात्।।

इति श्री नाम्मट्टालद्भारटीकाया पोमराजश्रेष्ठिमुत्तवादिराजिवरिविताया कविचंद्रिकाया पचम परिच्छेद समाप्त । स॰ १८११ श्रावण सुदी ६ ग्रुरधासरे लिखत महात्मीक्पनगरका हमराज सर्वाई जयपुरमध्ये । सुभ भ्रूयात् ॥ ३२६६ प्रति स० २ । पत्र स० ४८ । ले० काल सं० १८११ श्रावण सुदी ६ । वे० स० २५६ । ग्रूप्र भण्डार ।

> ३२६७ प्रति सं०३। पत्र स०११६। ले० काल मं०१६६०। वे० न०६४४। क भण्डार। ३२६८ प्रति स०४। पत्र स०६६। ले० काल स०१७३१। वे० स०६४४। क भण्डार।

विशेष—सक्षकगढ मे महाराजा मानसिंह के शासनकाल में संण्डेलवालान्वये साँगाणी गौत्र वाले मन्नाट गयामुद्दीन से सम्मानित साह महिंगा नाह पोमा सुन वादिराज की भार्या लौहदी न इस प्रन्य की प्रतिलिधि मरवायी थी।

३२६६ प्रति स० ४। पत्र म० २०। ने० नान म० १६६२। वे० स० ६५६। क मण्डार।
३३८० प्रति स० ६। पत्र स० ५३। ले० काल ×। त्र० स० ६७३। छ भण्डार।
३३०१ वाग्महालङ्कार टीका । पत्र स० १३। मा० १०×४ डन। भाषा-संस्कृत। विषयपतङ्कार। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण (पन्म परिच्छेद तक) ने० स० २०। भ्र भण्डार।
विशेष-प्रति संस्कृत टीका सहित है।

ि ऋष् एव भक्तकूत देरे ०२. ब्रुक्त स्वयु: -- सङ्केदार । पन वं ११ । या १ ४४ इ.च । अला-संस्थत । विवय-संप

३३ ६ प्रति छ । पण वं १९। के नाम मं १९०४। वे वं १५४। क्रांप्रसार।

प्रसद्भार नेल ×ाने कल ×ा प्रसी वे वं १८३२ (चात्रकार)

निवेद--वनके विशिष्ट का जन्वार में एक प्रति (वे वं ६१) का क्वार में एक प्रति (वे वं

२७१) स क्यार में तो अधिया (वे वे २७७ ३६) धीर है। रेरे ४ क्लाफाकर--काकियास । यस वं ६ । या १ ×१ इ.च । याला-संस्ता । विस्थ-संस् मनरार नल ×।ने चल × (दर्बादै र्वर्का व वनार।

देने हे कुल्राक्काल्या वाच में ७। या ११/३३ ईच | पाना-विका : विवय-विकास । र मन×। मे प्रत×। प्रतीदि वै २ दाऋ वयार।

१६ ६ ∉सरक्राकरशिका-पुरुद्द्य कवि। पद सं ४ । या ११५६ इका जाना–संनद्रा।

दिश्व-अदिकारकार काला×ाके पाला×ावर्ता वे वं ६६ । का क्यारा विकेद---मुख्यि प्रचय नायक डीका है।

३३०७. बसरहाकरहारतीका—समक्तुत्वरसम्बद्धाः तथ सं १। वर १ _१८२३ ६४। सना— मेल्स । निरम-मोरकस्प । र प्रमा× । में प्रमा× । पूर्ण । के वी २३१६ । का क्यार ।

३३०८. श्रदनोच—कातिरास । पन वं ६ | सा० न×४ ६ थ । बाला—(सहद) विश्य-श्रदक्षण । र शत≾। में शत≾। पूर्णे। वे दे १६६१ । का क्यार।

विकेद---वानाना विकार तक है।

३३ ८. मतिसः ३ । यथ वं ४ । ते जला सं श्रद्भाष क्रमुम्य नृतीहा के संदर्भ क्रम

निषेत---पं कलरान के परमार्थ शतिकिए हो बी ।

देश प्रतिस दे । पन ने ६ कि नाम X | के से स्वर्ध स्व क्यार ।

विशेष-जीवराज प्रश्न विश्वत वीत है।

मेर्दर प्रतिस्थित प्राप्त वं काले नाय सं १ दर जानान नृती है। वे सं कर्या क अस्ते स १६१९ प्रतिसक्त अपने गाने गाने राज्ये स्थाने स्थाने स्थाने अरुका

मन्दार ।

APRIL 1 विभेर-मं राजवर वे जिलती जबर वें प्रतिनिधि वी भी। ३३१३ प्रति स०६। पत्र स०६। ले• काल स०१७८१ घैत्र मुदी १। वे० स०१७८। व्य अण्डार।

विशेष-प० सुखानन्द के शिष्य नैनमुख ने प्रतिलिपि की यी। प्रति सस्कृत टीका सहित है।

३३१४ प्रति स० ७। पत्र स० ४। ले० काल ×। वे० स १८११। ट भण्डार।
विशेष-भावार्य विमलकीति ने प्रतिलिपि कराई थी।

इसके प्रतिरिक्त आ भण्डार में ३ प्रतिया (वे० सं० ६४८, ६०७, ११६१) क, ह, च घौर ज भण्डार मे एक एक प्रति (वे० स० ७०४, ७२६, ३४८, २८७) च भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १४६, १८७) ग्रीर हैं।

३३१४ श्रुतवोध—धररुचि । पत्र सं० ४ । ग्रा० ११३×५ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-छदशास्त्र । र० कान × । ने० कान स० १८५६ । वे० स० २८३ । छ भण्डार ।

३३१६ श्रुतवोधटीका-मनोहरश्याम । पत्र स० ६ । मा० ११६ ×५३ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-छदशास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६६१ मासीज सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६४७ । क भण्डार ।

२२१० श्रुतबोधटीका । पत्र स० ३। मा० ११६ ×१६ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-छदशास्त्र । र० नाल ×। ले० काल स० १६२६ मंगसर बुदी ३। पूर्ण । वे० स० ६४५ । आ भण्डार ।

३३१८ प्रति स०२। पत्र स० ८। ते० काल ४। वे० सं० ७०३। क मण्डार।

३३१६ श्रुतबोधयृत्ति— हर्पकीत्ति । पत्र स० ७। ग्रा॰ १०३×४२ इख । माषा-सस्कृत । विषय-दणास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १७१६ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वे० म० १६१ । स्त्र भण्डार ।

विशेष---श्री ५ सुन्दरदास कें प्रसाद से मुनिसुल ने प्रतिलिपि की भी ।

३३२० प्रति स०२। पत्र सं०२ से १६। ले० काल सं०१६०१ माघ सुदी ६। प्रपूर्ण। वे० स० २३३। छ भण्डार।



विषय-मगीत एवं नाटक

६३२१ चारबङ्गारकः—ची समातकावा का वं २१।याः १२८८ इत्रः। धारा-निर्माः रिक-नहरू । राम् ४.वि. चल्प ४.वट्टिंडी वं ११व क्यारः।

३२०२ लिन स्वापत्र प्रशंक कार वं १९८६ क्यांक मुक्ती ६१ रे वं १०२ श्रद्ध स्थार । ३३०२ क्यांस्थान शाकुस्था—व्यक्तियाचा विषये के ७ स्था १ ७००% होवा स्थाना-संस्तर ।

रित्य संस्कार अन्य ४ के कम्प ४ (सूर्ण किंग १९००) सार्वण्यातः । १६२४ कर्म सम्बद्धी—राज्यास्य १ वर्ष १३ (सा. १६,४४४) इ.स. १ सार्व-संस्का विवस-

३६२८ कर्मुस्सक्कीरे~शक्तांत्रराज्य में १६१मा १६५४८६ दवा मात-मंत्रना पितन-नारकार समा×ामेन समामा प्रकृति में संदरशास समासर।

ধিৰ্মণ—মতি রাখীন ই ৷ খুদি বাসকলি ন মতিদিনি বা বা ৷ কৰ কৈ বানা বাং । যদ চক নাদুত দ আন্দা বা হুট ই ৷

. ११४४ क्राज्यपूर्वेद्दश्याटक-वादिकलम्हिः। वस वं १६। वा १,३४४३ इस । वास-नंतृतः। विरक्ष-सारकः। १ कालानं १६६० ताव नृष्ठी कालानं १६६८। पूर्णः। वे १८। इस कमारः।

दिमार-वानेद में प्रतिविद्य हुई वी ।

् ३३०६ प्रति स**० के** इवस में ६६। में नाम में १००० माझ नुद्या ह**ं** सं २३१। इ

अन्तर । निमेन—कुण्युवह विवासी महत्त्वा राताहृत्व्यु वै कवनवर में प्रतिनिति सी सी क्षत्रा हमे सीमें प्रवरणम्य

रीपाप के मन्दिर में विशासनाम थी। ३६२८, प्रति मंत्र क्षेत्र कर्म में ६६३ में काम में १६३६ सारक्ष पूर्व द्रावे हे है । क

प्रभार।

र्था। इनके व्यक्तिरेक इनी चन्दार में स्त्रानियाँ (में १८० ३३%) और है।

ि ३१७ ३३३० हानसूर्योदयनाटक भाषा--पारसदास निगोत्या। पत्र स०४१। आ० १२४८ इच। मापा-हिन्दो । विषय-नाटक । र० काल स० १६१७ वैशाख बुदी ६ । ले० काल स० १६१७ पीप ११ । पूर्ण । वे० स० २१६। ह मण्डार।

३३३१. प्रति स०२। पत्र स० ७३। ते० काल स० १६३६। वे० स० ५६३। च भण्डार। ३३३२ प्रति स०३। पत्र स०४६ से ११४। ले० काल स०१६३६। भपूर्ण। वे० स०३४४। मा

मण्डार ।

३३३३. ज्ञानसूर्योदयनाटकं भाषा—भागचन्द । पत्र स० ८१ । आ० १३×७३ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-नाटक । र० काल 🗙 । ले० काल स० १६३४ । पूर्ण । वे० स० ५६२ । च भण्डार ।

३३३४. ज्ञातसूर्योदयनाटक भाषा-भगवतीटास। पत्र स० ४०। मा० ११३×७३ इत्र । भाषा-हिन्दी । विषय-नाटक । र० काल 🗙 । ले० काल स० १८७७ भादवा बुदी ७ ी पूर्सी । वे० स० २२० । इ

३३३४ ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा-वस्तावरताल । पत्र स० ८७। मा० ११×१६ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-नाटक । र० काल स० १८५४ क्येष्ठ सुदी २ । ले० काल सं० १६२८ वैशाख बुदी ८ । वे० स० ५६४ ।

विशेष---जींहरीलाल खिन्द्रका ने प्रतिलिपि की थी।

३३३६ धर्म द्शावतारनाटक" । पत्र स० ६६ । प्रा० ११३×५३ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-नाटक | र० कार्लस० १६३३ | ले० काल X | वे० स० ११० | ज भण्डार |

विशेष--प० फतेहलालजी की प्रेरणा से जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी। इसका हसरा नाम धर्मप्रदीप भी है।

३३३७, नलदमयती नाटक । पत्र स० ३ से २४। आ० ११×४२ इखा मापा-सस्कृत। विषय-नाटक । ले॰ काल 🗙 । मपूर्ण । वे॰ स॰ १९६८ । ट मण्डार ।

३३३८ प्रवोधचन्द्रिका चैजल भूपति । पत्र स० २६ । आ० ६×४३ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-नाटक । र० काल 🗶 । ले० काल स० १९०७ मादवा बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ८१४ । स्र मण्डार ।

३३३६ प्रति स०२। पत्र स०१३। ले॰ काल ×। वे॰ स० २१६। मा मण्डार।

३३४० भविष्यदन्त तिलकासुन्दरी नाटक-न्यामतसिंह। पत्र स० ४४। मा० १३×६३ ३३। मापा-हिन्दी । विषय-नाटक । र० काल × । ले०, काल × । पूर्ण । वे० स० १६७ । छ भण्डार ।

३३४१ मदनपराजय--जिनदेवसूरि। पत्र स० ३६। आ० १०१X४३ इख्र। मापा-सस्कृत। विषय-नाटक । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । अपूर्ण । वे० स० ८८४ । आ मण्डार ।

[महंदेक एक सहो ।

NF]

विवेद-- तम से २ र्ड ७ २० पॅथ नहीं है बना का है सिमें के नम की बहुत है। १९४२, प्रति सं०२ । तम से प्रदेश है नेमा से १ रेड । वे सं १९७१ क मधार।

देनेध्वे प्रति श्रुक्त है। पत्र सं ४१। ते कला×। वे सं १७०० । इस्त्रमार) पिकेप —बारूज के ११ पत्र भवीन भिक्षे वने हैं।

नैनेप्रेप्ट प्रतिसं प्रायण र्थं प्रश्तिकल्ल×ावै सं र । इत्यन्तरा नैनेप्टर प्रतिस्त प्रायण सं प्रश्तिकल्लास्त्र सं स्टास्ट क्लार।

देदेप्रदे प्रदिख दृ।यम के देर: वे सम्बाधी रवदेश सावश्रुवी दावे_र के प्रवास मध्यरा

विकेर—समझे बक्तवर में बनायन चैत्रवाद में यं चोक्क्य के छेत्तक यें राज्यवन्त ने बताईराव के पठनाचें ब्रोडिनियं को यो ।

> हैनेप्रक प्रति सं० को पन से प्राज्ञ केला X | रेस्क २ १ | विक्रम-प्रकास क्रांतीय क्रिक्त कील क्रिकेट के प्रतिकृति करती थी ।

२६८८. सङ्ग्यस्यक्षां व्यक्षं १ से २६। स्मः १ \times ४५ दश्चः। स्परान्यक्षरः। विश्वः सरकः। र. स्थलः \times । ते स्थलः \times । सङ्क्षीः वैः वं १६९६। स्राचन्यारः।

११४६ प्रतिसः २ । पत्र वं ७ । के कल × । ब्यूर्ण (के वं १९१६) का सम्बार ।

देशे सद्तपरासम्पर्य लक्ष्यकृत्यकृत्य । वयर्थ १२। या ११३४० इस्र । सत्ता-कृती । विराय-पासकार नामा सं १११ मंगविर सुवी ७ कि तता ४ | पूर्वी कि सं १७६ । कालसार

१६े×१ रागमाबाज्याच्याचे ६ । घा > २६ ६७० । सन्तर—वंशस्य । विषय—वङ्गीसः । र नाम ×ाने फल ×ावद्रकां । दे संदेशका सम्बद्धाः

देदेश्यास समित्रियों के सम्माण्याना पत्र संघासा _द×६ दक्ष | वरसा-हिन्दी | दियर-ताप्नेत संग्रमा ×ार्थ पाल ×ार्क्सी के के कास्त्र क्लास्ता



निषय-लोक-विज्ञान

३३४३ श्रद्धाईद्वीप वर्णन । पत्र स०१०। मा०१२४६ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-लोक विज्ञान-जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड, पुन्करार्द्ध द्वीप का वर्णन है। र० काल ४। ले० काल स०१८१५ । पूर्ण । वे० स० ३। ता भण्डार ।

३३४४ प्रहोंकी ऊचाई एव आयुवर्णन । पत्र स०१। भा० ८३४६३ इख्र। साया-हिन्दी गद्य। विषय-नक्षत्रों का वर्णन है। र० काल ४। ते० काल ४। पूर्ण। वें० सं० २११०। स्त्र मण्डार।

३३४४ चद्रप्रक्षति । यत्र सं० ६२ । मा० १०३×४ दे इद्य । मापा-प्राकृत । विषय-च द्रमा सम्बन्धी वर्रान है । र० काल × । ले० काल स० १६६४ भावना बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० १६७३ ।

विशेष-मन्तिम पुष्पिका-

इति श्री चन्द्रपण्णाससी (चन्द्रप्रज्ञित) संपूर्णो । लिखत परिप करमचेद ।

३३४६ जम्बृद्धीपप्रक्राप्ति—नेमिचन्द्रचार्थ। पत्र स० ६० । भा०१२×६ डखा भाषा-प्राकृत । विषय-जम्बृद्धीय सम्बन्धी वर्शन। र० काल ४। ले० काल स०१८६६ फाल्गुन सुदी २। पूर्श । वे० सं०१००। च भण्डार।

विशेष-मधुपुरी नगरी मे प्रतिलिपि की गधी थी।

देदेश्व तीनत्तोककथन । पत्र सं० ६६। प्रा० १०५० इखा भाषा-हिन्दी। विषय-लोक विज्ञान-तीनलोक वर्णन। र० काल ⋉। ते० काल ⋉। पूर्ण। वे० स० ३४०। फ मण्डार।

33% तीनकोक्तवर्णन । पत्र स०१४४ । मा० ६१×६ इख । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-लोक विज्ञान-तीन लोक का वर्णन है। र० काल 🗶 । ले० काल स० १८६१ सावरण मुदी २ । पूर्ण । वै० स०१०। ज भण्डार ।

विशेष-गोपाल व्यास उग्नियानास वाले ने प्रतिलिपि की थी। प्रारम्भ में मेमिनाथ के दश भव का वर्ण न है। प्रारम्भ में लिखा है- बूढार देश में सवाई जयपुर नगर स्थित माचार्य शिरोमिणि श्री यशोदानन्द स्वामी के शिष्य पं सदासुख़ के शिष्य श्री प • फतेहलाल की यह पुस्तक है। भाववा सुवी १० स ० १६११।

३३४६ तीनलोकचार "। पत्र स०१। मा० ५×६ इंद्र । भाषा-हिन्दी । विषय-लोकविज्ञान । र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण । वे० स०१३४ । ख्रु मण्डार ।

विरोत-विजीवमार के बाधार पर बनाया गया है । तीयभी र वी सामगारी के विरु कहा उत्तरारी है। ३३६ दिनोद्दिक्त---। या २ ×३ इंद । भागा-(त्यी । दिवद-अरेपरिशान । १ गार 🗡 । में नान सं १२७२ । बली । है में १३६ के व्यवस्थार है

वियम-नगरे पर हीमलीय था थिए है।

११६१ त्रिप्रादरीरय-नामदेव। पर वं ७२। मा १६×७ दखा माना-नंपुता स्निय-मोत्रिक्षम । र त्रान् ४ । ते त्रान्तर्व १ ६६ वालाः नृती ३ । पूर्ण । देन ३ । अर क्लार ।

विदेश-अन्य मन्त्रि है । जम्बुरेश तथा विदेह केव का किए मुख्य है तथा अन पर केर दूरे भी है ।

३३६० क्रियासमार-- समिवताचाय। तर ने १। धा १३८१ इ.स.) भागा जार । शिय-भोतिकाल । ए वात 🖈 के बात ने १ देश नेवितर बुधी देश पूर्ण । वे वे ४६। या माधार ।

श्रीत-पहित का कर ६ दिव है। पटिने वैधिनात की बूलि का किए है दिनते काई घोर महत्त्व तथा शाई बोर धीरुपत हान बोड़े नहे हैं । डीनश चित्र वेशिक्सावार्य वा दे वे नवड़ी के निश्नान पर बेंदे हैं बातने नचसी के रहेंड पर सम्ब है बादे निमही और वमन्त्रभू है। इसके आदे वी विष भीर है जिसमें एक बानुपन्नाम ना तथा दूनरा सीर दिनी जीता वा निव है। दीनो हुन्द ओहे वोडी वार्न देहे हैं। दिव व_{र्तन} मुक्तर है। इनके वर्तिटक दौर थी साम-विकास बाजायी विच है।

रूपानक्षः १९६२ मिन स•६। यस्तं प्राप्तं वर्णनं १ रहत्र वैदास्तृष्टे १९। देनं स्वा

🕊 बन्दार । WIRTE 1

३३६४ प्रतिसं के वायम ने दश के बाय वे १०२६ कारण युपी का के द का क

३३६४. प्रतिसा धायण सं ७९। ते याल ×ृष्टी सं १०३। कामधार। न्तियेत---प्रदि समित्र 🕏 ।

बहुद्द हरिता का नवर्ष ६ | के नाम × 1 के से १६ | क्रवायात। विनेद-- जीत समित है। वर्द पृत्वी वर हासिया ने कुचर विवास है।

इद्दूर्ण, प्रतिस द्वापप संदृश्यों काल वं १७६२ लाह नुरी १ । के ने २ ३ । अ

क्यार ।

विशेष-अहाराजा रामणिह के यानवनाम में बसवा ने शतकन नाता ने प्रतिनिधि नरवांके थी। होतंत्र प्रक्रियं जिल्ला मान्य होरावा व सरका ह समारा

इनके प्रतिरिक्त म्न भण्डार में २ प्रतियां (वै० स० २६२, २६३,) च भण्डार में २ प्रतिया (वे० म० १४७, १४८) तथा ज भण्डार में एक प्रति (वे० स० ४) ग्रीर है।

३३६६ त्रिलोकसारदर्पणकथा—खद्गसेन । पत्र स० ३२ से २२८ । आ० ११×४३ इ च । भाषा— हिन्दी पद्य । विषय-लोक विज्ञान । र० काल स० १७१३ चैत सुदी ४ । ले० काल स० १७५३ ज्येष्ठ सुदी ११ । अपूर्ण । वे० स० ३६० । द्य भण्डार ।

विशेष--- लेखक प्रशस्ति विस्तृत है । प्रारम्भ के ३१ पत्र नहीं हैं ।

३३७०. प्रति स०२। पत्र स०१३६। ले० काल स०१७३६ द्वि० चैत्र बुदी ४। वे० स०१८२। भा भण्डार।

विशेष —साह लोहट ने भात्म पठनार्थ प्रतिलिपि करवायी थी ।

३३७१ त्रिलोकसारभाषा--प० टोडरमल । पत्र स० २८६ । ग्रा० १४×७ इख्र । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-लोक विज्ञान । र० काल स० १८४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३७६ । ग्रा भण्डार ।

३३७२ प्रति स०२। पत्र स०४४। ले० काल ×। मपूर्गा। वे० सं० ३७३। स्त्र भण्डार। ३३७३ प्रति स०३। पत्र स०२१८। ले० काल स०१८८४। वे० स०४३। ग्रामण्डार।

विशेप—जैतराम साह के पुत्र कालूराम साह ने सोनपाल भौंसा से प्रतिलिपि कराकर चौधरियों के मन्दिर में चढाया ।

३३७४ प्रति स०४। पत्र स०१२५। ले० काल ×। वै० स०३६। च मण्डार।
३२७४ प्रति स०४। पत्र स०३६४। ले० काल स०१६६६। वै० स०२५४। ड मण्डार।
विशेष—सेठ जवाहरलाल सुगनचन्द सोनी मजमेर वालो ने प्रतिलिपि करवायी थी।

३३७६. त्रिलोकसारभाषा । पत्र स० ४५२। ग्रा० १२३× = इच । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल स० १६४७ । पूर्या । वे० सं० २६२ । क भण्डार ।

३३७७ त्रिलोकसारभाषा । पत्र स० १०८। मा० ११३४७ इ.च.। भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान। र० काल ×। ले० काल ×। मपूर्ण। वे० स० २६१। क भण्डार।

विशेप-भवनलोक वर्णन तक पूर्ण है।

३३ं७८ त्रिलोकसारभाषा " । पत्र स० १४० । मा० १२×६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । से० काल × । मपूर्ण । वे० स० ५८३ । च भण्डार ।

३३७६ त्रिलोकसारमापा (वचितका) । पत्र सं० ३१०। मा० १०२८७३ उच। मापा-हि दी गद्य । विषय-लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल स० १८६५ । वे० स० ८५ । मा मण्डार ।

```
[ इताद निमान
६६८ त्रिकारमागद्वीमा—सामयवगद्र प्रतिसदेव । यस नं देर । या १६४८ ६ व । मरा-
नंतरन | रियर-नाट रिकास । र याप ४ । ते यात वे १६४६ (पूर्ण) के संद २ । क वस्तार ।
उत्तर मनिस २ । यस नं १४२ । ते पार ४ । के संद शह्य प्रचार ।
```

११६० क्रियाकमारकृतिसम्माना पर सं १ थिया १.४११ द्वाशाया-बंदाना (स्वय-सीक रिक्रमा १ राज ४ क्षेत्र पाय ४ । स्मृती विर्माण क्षापार ।

११८३ क्रियाच्यारपृष्टिं च्याप्य १०।या १२_४८६२ दव (क्राप-नीपुन । स्टिस-नीक रिक्रम । १ सन्त ≻ । मे सन्त ≾) सर्प्य । वै थं ७ । क स्थार ।

३६८५ निहातकारपुरिकारणात्वाच हेराबा १४६६ दश्यासा-वीम्दातिवय-नोक विकास १९ सम्ब≪ोने जन्न ×ाब्यूणार्थे वे १९६३ व्यवसार।

३६८४ जिलाकसारवृत्तिम^{्लाम}ाथवर्गदरीया १६४६ इया ज्ञास-संभाग । स्थिप-नीर

पिक्षम ∤र नाम ≻ क्षेत्र नाप × क्ष्याच्या क्षेत्र चे देश्य क्ष्याच्या व्यवस्था । विदेश----त्रव क्षणीय देश

स्थार—प्रवासनगर्भ हो। ३३८६ विचासगर्भ रहि—लेमिचनताचार्व। यस सं ६९। सा ११३,४० इच। बराा-प्रस्तुः। विरय-मोन रिजलार सन्तर्भागे सन्दर्भाक्षी वे सं २ ४ (क व्यवस्था

१३८ विक्षाकमारम्यासमा—प्रदेशकाय गीनमात्राय । यथ वं १ । या ११४७३ १ य । भारा-दिनी यत्र प्रियक-नोप विद्यात्र । र यस्त वं ११४४ । मैं यस्त वं ११ ४ । पूर्वी | रे में १ । स

मध्यर । - दिरोर—कु पश्चमान चौरोमान एवं विनगदानात्री वी त्रेरहा हे छण रचवा हुई वी । - वेदेस्सः विज्ञास्वकारणाणा वय वं १६ । वा १२८६ इ.स.। वसा-संदर्श । नियर-नीवविद्यस

र राम र । ने भाग में ११ फॉनिक मुद्दी है। मुन्तें। ने से ००। इस स्वयाद। दिनेदा—नामार्थे मुद्दो है केवल सर्परामाण है। सोक के पित्र और है। सम्बुद्दीर बर्गाद सक बुर्स है इसप्रमादक के स्वयानी स्वयानी केवल के मार्थिकीय भी थी।

स्वयमास्त्र के कामार्थ साहुत में सर्वासिय हुई थी । केरिक विकारसमार्थ मार्थ केरिक विकारसमार्थ मार्थ केरिक के

देदेनः त्रिवाकस्यान^{ामा} । पण वं १२ वे २० । सार १ के.४४३ इ.च.१ वाला-बाह्य | दिसर-नीतः विक्रण (र. जन्म ×) ते जन्म × बहुनी । ते सं ७६ | क्षा बच्चार ।

विभाग-- मित्र विवास है। है कि इंग्डिंग से प्रति ने से इंग्ड तक वह मही है। वस के हर इंग्डिंग के प्रति मानि हैं। सामें व्यक्तियां तीन पर क्षिण वीर है किएके के एक में नायक प्रति से के

मुमयक कृष्यमहीय और रीतरे में जीरा नक्षणी ननकपूरा के निम हैं। पित्र तुम्बर पूर्व काशिक हैं।

३३६० त्रिलोक २र्णन । एक ही लम्बे पत्र पर । ले० काल 🗴 । वे० स० ७५ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--- तिद्धिता में स्वर्ग के विमल परल तक ६३ परलों का सचित्र वर्णन है। चित्र १४ फुट ६ इ न नम्बे तथा ४३ इ च चीडे पत्र पर दिये हैं। कहीं कहीं पीछे कपश भी चिनका हुमा है। मध्यलोक का चित्र १४१ फुट है। चित्र सभी चिन्दुमों में बने हैं। नरक वर्णन नहीं है।

३३६१ प्रति स० २ । पत्र स० २ मे १० । ते० काल × । मपूर्ण । वै० स० ५२७ । व्य भण्डार । ३३६२ जिलोक्चर्णस । पत्र स० ५ । मा० १७×१५ इंड । भाषा-प्राकृत, सस्तृत । विषय-लाक विज्ञान । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६ । ज भण्डार ।

33६3 त्रैलोक्यसारटीका—सहस्रकीर्ति । पत्र स० ७६। मा० १२४५३ इच । भाषा-प्राहृत, सम्दन । विषय-लोक विज्ञान । र० नाल ४ । ले० नाल ४ । पूर्ण । वे० स० २८६ । स भण्डार ।

३३६४ प्रति सं २ । पत्र म० ५४ । ते० काल × । वै० स० २०७ । ह मण्डार ।

३३६४ भूगोलनिर्माण् । पत्र स०३। भा०१०×४% इच। भाषा-हिन्दी । विषय-नीक विज्ञान। र० नान ×। ले० काल स०१४७१। पूर्ण। वे० स० ८६८। छ मण्डार।

विशेष-- प० हर्पागम गाँग वाचनार्थं लिखित कोरटा नगरे म० १५७१ वर्षे । जैनेतर भूगोल है जिसमें सतमूग, इापर एव वेता में होने वाले भवतारों का तथा जम्ब्रुहीय का वर्णान है।

३३६६ सघपराष्ट्रपत्र "। पत्र स० ६ मे ४१। धा० ६ है ४४ ६ च । मापा-प्राकृत । विषय∽लोक विज्ञान । र० काल × । के० काल × । धपूर्ण । वे० स० २०३ । ख भण्डार ।

विशेष—सस्कृत में दल्वा टीका दी हुई है। १ से ४, १४, १४। २० से २२, २६। २० मे ३०, ३२, ३४, ३६ तया ४१ में मागे ।त्र नहीं हैं।

३२६७ सिद्धात त्रिलोकटीपक-नामदेव। पत्र स० ६८। मा० १३×५ इ च । भाषा-मस्कृत। विषय-लोक विज्ञात। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ३११। व्य मण्डार।



विषय- सुमाषित एवं नीतिकास्त्र

३३६८. ब्राह्मसम्बद्धार्थी------। पण श्रं २ । ब्रा १२Xव $_{\pi}$ दथ । करा-दिन्दी । विषय-पुत्रार्थयः । र सम्ब \times । के करा \times । पूर्वे । वे र्षे १९ । क ककार ।

३३६६ प्रशि सं कापक वंका के बार XII वंदराक समार।

३५ ० क्येन्स्क्र्योसी--क्रियार्थे (यथ संदाता १४४ वण । जाग--हिकी । विकर-क्यांक्रियार सक्त ×ात्रे कामार्थे १०३६ । दुर्की वै ४वन क्यांक्यार ।

ह्याप्यतार पर्ला×्राण जलाच रूप्त्राहराष्ट्रधान च ०२० विश्वीर----

प्रार्टम्—यो सर्वेडेम्के १७०) यथ यो जिन्मुकेंछ बीर विस्तर्यसम्बद्ध खरीती व्ययहरेक लटको स्वान् (

बिमल्डुवि---

क्षमा कर नाने महुदा स्मृत क्षा पुत्र ख्रमा नाई है न क्षमीय हु । पुत्र हि न पार हे गीतद है न क्षम है, भार के महार नई अपन कविच्यु ॥

शाम नो संबय पूंज सुबर मुख के निर्द्रय सरिक्य पोतिक पुरीर वर्णन के रिक्यु १ वैके निवरम्भ निकार्य प्रकृति अपनेक

वर्ष व्यवस्था । नामहूच अकान प्रचयन वर्षे व्यक्तिनी मही समाद वृष्ट्यीकडू ।११।६

> नेरी १ पर रही क्यांच रति वाली है।। बाव की नीजीर कोला देखान नपी.

तु तो नहीं बेतता है बाले है चोबी इस

हैरी नीत् सार में असे वर्गाशी सतानी है 1 को बोधारों दब एवं कारीत गार.

काशव नी हुनी कीनू रहे भी हा काही ॥२॥

र्थान्तम— धर्म परीत्ता कथन सर्वेया—

धरम धरम महै मरम न की उलहे,

भरम में भूलि रहै नुल रूढ की जी में।

कुल रूढ छोरि के भरम फद तीरि के,

सुमित गित फीरि के सुज्ञान दृष्टि दो जी में।।

दया रूप सोइ धर्म धर्म से कटै है मर्म,

भेद जिन धरम पीयूप रस पी जी में।

किर के परी स्था जिनहरप धरम की जी में,

किस के कसो टी जैं में कच्छा क ली जी में।। ३ १।।

श्रय प्रथ समाप्त कथन सवैया इकतीसा

भई उपदेस की छनीभी परिपूर्ण चतुर नर

है जे याकौ मच्य रस पीजीयै।

मेरी है श्रलपमित तो भी में कीए किवत,

किवताह सौ हौ जिन ग्रन्थ मान लीजीपै।।

सरस है है वलाण जीऊ भवसर जाण,

दोइ तीन थाकै भैया सवैया कहीजीयौ।

कहै जिनहरप सवत्त ग्रुण सिसि भक्ष कीनी,

जु सुण कै सावास मीकु दीजीयौ।।३६॥

इति श्री उपदेश छतीसी सपूर्ण।

सवत् १८३६

गविं पुछेरे गविं भा, कवरण मले री देश।
सपत हुए तो घर भलो, नहीतर भलो विदेश।
सूरविल तो सूहामर्गी, कर मोहि गग प्रवाह।
माहल तगो प्रगरो पास्ती भ्रषग भ्रथाह।।२।।

३४०१ टपदेश शतक—द्यानतराय । पत्र स०१४ । मा०१२३×७३ इच । भाषा-हिदी । विषय-सुमापित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५२६ । च मण्डार ।

३४०२ कपूरप्रकर्या"" । पत्र स० २४। मा० १०×४ इन । भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित ।

```
िसमापित एप भौतिरासम्ब
```

134 1

٠.

विरोप--१७१ पर है। धन्तिन पर निम्न प्रशार है--

बी बनानेनस्य दुरीवित्रपृष्टि शार प्रबंधापुट श्वदवृत्ताय । पिप्येस वक इरिजेय मिए।

बुतारती देविवरित नर्ता ।१७६।। হুৱি বসু হানিব কুতাখিত বাঁথ। ভবালা ।।

३ प्रकार प्रतिस्था स्थापन के स्थापन की इंड प्रकार नेहां पूर्व स्थापन की स्थापन की स्थापन की स्थापन की स्थापन की चंग्डार १ ३ ४० ४ प्रति स• ३) यद र्घ १९ वे गाम सँ १७६६ भारत ४। वे वं २७६३ अर

बरहार ।

विकेप-- कुमरवात ने प्रतिनिधि की थी ।

१४०%, कासम्बीव जीतिमार साया वय व २ व १७१ वा १९४० इय । नामा-दिनी मधापिय-मीति । र पास ×। के नाव ×। मधुर्गी वे वं २ । मध्यमार।

क्ष ६ प्रति स⇔ का पन चे के के की की काम X (ब्यूची) के सं क्षा अध्यार (

३४ ७. प्रक्रिंस ३) प्रदर्व दे ते दं । ते प्रश्न×) चपुर्श्वः दे संद्रा सामन्त्रार) ३४०८. वारक्कानीति-वाक्क्य। पत्र वे ११। या १ XX} ४ थ। बला-रोस्टर। विपय-

नीतिवास्त्र । रंजन × । के नाम सं १ ६६ नेवीबर बुधी १४ । पूर्व । वे सं १६ (का नधार । स्त्री थच्चार में ६ अतिको (वे सं ६३ ६६१ ११ १६४४ १६४४) सीर 🕻 । १४०६. प्रतिस २ । पप सं १ । के नाम स १५४६ बीच नुसंदार्थ संचास

चमार १ इसी सम्बार में इ ब्रीत (के सं ७१) बीर है।

१४१ प्रतिस १ | वय वं १४ | में वाल 🗶 । सपूर्त । वे १७१ | स मध्यार ।

इसी मण्यार में न श्रतियों (वे से इक ६४७) धीर हैं।

३ ४११ प्रतिसंधायन वंश के १३ विकास तं १०३ अविधिर युगेळा प्रदूर्णा वे

र्व ३३ । च भवार ।

इसी बच्छार में १ अधि (वे वं ६४) धीर है !

१४१२ प्रतिस् 🗷 । वस् वं १६ । वैः नालायं १०७४ व्यक्ति बुदी ११ । वै कः १४१ । व्य

पनार ।

इसी मण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० १३८, २४८,,२४०) ग्रीर हैं।

३४१३ चाणक्यनीतिसार-मृलकर्ता-चाणक्य । सप्रहकर्ता-मथुरेश भट्टाचार्य । पत्र स० ७ । भा० १०४४३ इ व । भाषा-सस्कृत । विषय-नीतिशास्त्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ६१० । प्र भण्डार ।

३४१४ चाराक्यनीतिभाषा । पत्र स० २० । मा० १०×६ इम्र । मापा-हिन्दी । विषय-नीति शास्त्र । र० कात × । ते० काल × । मपूर्ण । वे० स० १५१६ । ट भण्डार ।

विशेष—६ ग्रम्याय तक पूर्ण है। ७वें भ्रम्याय के २ पद्य हैं। दोहा भीर कुण्डलियों का भ्रधिक प्रयोग हुमा है।

३४१४ छद्शतक मृन्दावनदास । पत्र स० २६। आ० ११×५ इ व । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सुमापित । र० काल स० १८६८ माघ सुदी २ । ले० काल सं० १६४० मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० स० १७८ । क भण्डार।

३४१६ प्रति स०२ । पत्र स०१२ । ले० काल सं०१६३७ फागुण सुदी ६ । वे० स०१ ५१ । क भण्डार ।

विशेप-इसी अण्डार मे २ प्रतिया (वै० स० १७६, १८०) भीर हैं।

दे४१७ जैनरातक-मूबरदास । पत्र स०१७। ग्रा०१४४६ व । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र०काल स०१७८१ पीप सुदी १२। ले०काल ४। पूर्ण । वै०स०१००५। श्रा भण्डार ।

३४१८ प्रति स॰ २। पत्र स० ११। ले० काल स० १६७७ फाग्रुन सुदी ४। वै० स० २१८। क

३४१६ प्रति स० ३ । पत्र स० ११ । ले० काल × । वे० स० २१७ । ह मण्डार ।
विशेष—प्रति नीले कागजो पर है। इसी मण्डार मे एक प्रति (वे० स० २९६) भीर है।
३४२० प्रति स० ४ । पत्र स० २२ । ले० काल × । वे० स० ५६० । च मण्डार ।
३४२१ प्रति स० ४ । पत्र स० २२ । ले० काल स० १८८६ । वे० सं० १५८ । स मण्डार ।
विशेष—इसी मण्डार मे एक प्रति (वे० स० २८४) भीर है जिसमे कर्म छतीसी पाठ भी है।
३४२२ प्रति स० ६ । पत्र स० २३ । ले० काल स० १८८१ । वे० सं० १६४० । ट मण्डार ।
विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० १६५१) भीर है।

३४२३ ढालगण् "'। पत्र स० ८। म्रा० १२×७३ इख्र । भाषा~हिन्दी । निषय~सुमापित । र० काल ×। पूर्ण । वे० स० २३५ । क भण्डार ।

१२८]

देशरेष्ठ क्षण्यमस्ति वास्ति । इस्ति विकास क्षा विकास वास्ति । विकास स्वासिक । र सम्तर्भाके कालार्थ १९६६ कोह सुनी १ । पूर्णी विर्थ ४६ । बर्ग स्वास्तारः ।

निवीप-- केवान प्रवासित--

याचात्रक्ष नेपारण दान मोगी तिक प्रथम मागी ताप्रमणेष शिक्षीचेच्याच्या स्पूर्ण | ३,५२४ प्रति स्रोट २,। यस वं १ | वे मान ४२। ब्यूफी | वे में ११४३ | ह सम्बार | | विकोप--- वे बाले पण माग्री सें |

शास्त्र-

बुडार्यक्रमाराणं डांगुरार्थं इसे दुवे । क्रक्यमार्ग्युर्वे शास कार्ये व्यवेश्वः ।। वर्मे सुवे पायपुर्वेति नार्थं कर्मे कुवे पुष्प पूर्वित वृद्धिः । स्वयंप्तर्म स्वयंग्वं वीतर्थं कर्मे कुवे पुष्प स्वर्णेतार्थेत् ।।२।।

३४२६ व्याक्षेक्षरारणाणन वं १० था १ ×६० ४व । भगगान्तिका । विषय-मुक्सितार राज्ञ × । में नाम × ! प्यूर्ण १वे वे १२४० । के सम्बार

हेर्परक इष्टोब्सलक्तामान्य वं देशाचा देवX४३ देशा बाला-चंत्रस्य दिवक-कृत्यांका । र काल ×ाव काल ×ायुक्ता वं देशाचा देवतारा

विकेच—हिन्दी वर्ष दिया है। गण १६ में साथे ६६ कुरकर स्तीर्थों ना संबद्द सीर है।

१४२८ धानविवास-धानवेशव । १व वं १ वे १६) था १२८४ इ.च । वाला-द्वियो । विजन-

३४२६. वर्षे विकास---वाक्तरीय । यथ वं २३४ । वा ११५%० ११४ । वास-हिन्दी) विवय--कुनामित । र नाम × । वे मान्त वं ११४० वास्तुत पूर्व १ । पूर्व । वे वं १४२ । वास्त्रपार ।

क्षेत्रे अधिका पृत्यम सं १९६१में यामाणं १०वरमानीयपुरी पृत्रे से ४४ । स मध्यर (

विभीय----विदायकी साह के पुत्र शिवसायकी में मैनियाय वीवायम (वीवारिके का मन्दिर) के निष विभागसम्म तैरार्थ में बीता से क्रिकिशि अरवामी थीं। ३४३१ प्रति स०३। पत्र स०२६१। ले० काल स०१६१६। वे० स०३३६। इ भण्डार। विशेष—तीन प्रकार की लिपि है।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३४०) ग्रीर है।

३४३२ प्रति स० ४। पत्र स० १६४। ले० काल ×। वे० स० ५१। मा भण्डार।

३४३३ प्रति स० ४ । पत्र स० ३७ । ले० काल स० १८८४ । वे० न० १४६३ । ट भण्डार ।

३४३४, नवरत्न (किन्ति। । पत्र स०२। झा॰ ८४४ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-गुमाषित । र॰ काल ४। ते॰ काल ४। पूर्ण । वे॰ स॰ १३८८ । स्त्र भण्डार ।

३४३४ प्रति स०२। पत्र स०१। ले० काल ×। वे० स०१७८। च भण्डार।
३४३६ प्रति स०३। पत्र स०५। ले० काल स०१६३४। वे० स०१७६। च भण्डार।
विशेष-प्रचरत्न भीर है। श्री विरधीचद पाटोदी ने प्रतिलिपि की थी।

३४३७ नीतिसार । पत्र स॰ ६। मा॰ १०३×४ इच । भाषा—सम्कृत । विषय-नीतिशास्त्र । र॰ काल × । ते॰ काल × । वे॰ स॰ १०१ । छ भण्डार ।

३४३ मीतिसार—इन्द्रनन्दि। पत्र स० ६। ग्रा० ११४५ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-नीति पास्त्र। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स० ६६। स्त्र भण्डार।

विशेष--पत्र ६ से भद्रवाहु कृत कियासार दिया हुआ है। सन्तिम ६वें पत्र पर दर्शनसार है किन्तु अपूर्ण है।

३४३६ प्रति स०२। पत्र स० १०। ले० काल स० १६३७ भादवा बुदी ४। वे० स० ३८६। क

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३८६, ४००) भीर हैं।

३४४० प्रति स०३। पत्र स०२ मे ८। ले० काल स० १८२२ भादवा सुदी १ । प्रपूर्ण । वे० म० ६८१। ह भण्डार।

३४४१ प्रति स० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० स० ३२६। ज भण्डार।
३४४२ प्रति स० ४। पत्र स० ५। ले० काल स० १७६४। वे० स० १७६। व्य भण्डार।
विशेष—मलायनगर में पार्वनाथ चैत्यालय में गोर्द्ध नदास ने प्रतिलिपि नी थी।

३४४३ नीतिशतक-भर्तृहरि। पत्र स० १। म्रा० १०३४५३ इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय--ुम पित । र० काल × । पूर्ण । वे० स० ३७६ । इन भण्डार ।

३४४४ प्रति स०२। पत्र स०१६। ले० काल ४। वे० स०१४२। व्य मण्डार।

िसमाधित वर्ष बीतितास्त्र

** 1 १४४१. नीविदाववाप्रत —सोमवेब सरि। पत्र सं ११। या ११×५ इ.व.। जावा-स्तातः।

विषय-नौतिकस्त्रार नाल ×ाणे नाल ×ापूर्णा वे सं वेवशा का बध्वारा

१४४६ मीतिकित्यहण्यामा पत्र सं ४ | सा ६×४३ इका आया-हिन्ही | विश्व -नीतिसम्ब । र राज×ाने राजधी १८१ । वे वी ३३६ । ३६ नध्यारी

१४४७ तीक्रसकः। पन धं ११। या श्री/४४ इक्ष । जल्ला-संस्कृतः । निवद-नुवादित । र नान ×। ने काच ×ा पूर्णा दे सं ददद । का स्थार ।

देशक्षरः जीरोरको बावसाह की बस साळ । पत्र सं १ । या ४३ ×६ ६ व । महा-क्रिये। विवेद-परवेष । र पात × । में पाल सं १६४३, वैकास पूरी १४ । पूर्व । वे थं ४ । यह वप्पार ।

विक्रेय-प्रातेककक प्रात्मक है अप्रैतिवर्धि की वी ।

रेप्रथः प्रमातन्त्र—र्थे विष्या सर्वो । यथ वंदे ६४ । वा १२८६३ दश्च । भारत-संस्थर । विस्त-मौदि। रं प्रव× । से नाल × । बपूर्ता । वे द्या वा वण्यार ।

इसी जम्बार में एक प्रति (ने वं ६६७) शीर है।

3¥≥ प्रमित्ने शायन से काले अल्ला×ावेस ११। सामनारा

विशेष-मधि जलीय है।

क्षेत्रदेश मित्र कृतियम संदर्भ देशका नियम संदर्भ मुद्दी देश महर्त्ता है में ११४। च नवार।

विकेत--- पर्छ क्ला सार हारा बंबोधित प्रदेशित बलोरन प्रतीवान ब्रह्मागु ने क्लाई संमननर (बन्दुर) में प्रजीतिहानों के बारवानमञ्जू में प्रतिविधि को जो । यह प्रति का जीखींहार शं् १ वर फाइल बुदी ६ वे हमा ना !

Bux के प्रतिका शांवर से १०० कि नाय ते १००० पीरवृती शांवे स ६११ । वा संस्थार ! विकेर-स्थित कियो वर्ष जीता है। प्राप्त्य में चेनही बीनान समरनंदनी के बाहर हैं नमनवन स्थात के क्रिक मार्किनमध्या ने बाह्यत्व की दिली डीका शिक्षी है

इप्टर्ड, प्रमातन्त्रभाषारारारा । वस से २२ से १४३ । शा ५×७३ ईव ३ शासा-क्रियी मधा विकास-नीति। र नाम ×। के काम ×। सपूर्ती वे सं १३७० (का कमार)

विसेय---विष्णु सर्वा के संस्कृत प्रकारम का दिल्यी प्रमुखा है।

इन्द्रभ्य योजकोक्तरण्या पत्र संदर्भ सा १ ×४ पत्र । भाषा-प्रवस्त्री (विषक-कार्येक) र कान ×। में कान ×। पर्छ। में वे १६६६ । साचकार (

सुभापित एव नीतिशास्त्र]

२४४४ पेंसठवोत्त । पत्र स०१ मा० १०४४ १ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-उपदेश । र० कात ४ । पूर्ण । वे० स० २१७६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष---ग्रय बोल ६५

[१] मरय लोमी [२] निरदर्ड मनख होसी [३] विसवासघाती मत्री [४] पुत्र सुता ग्ररना लोमा [४] नीचा पेपा भाई वंधव [६] ग्रसतीप प्रजा [७] विद्यावत दलद्री [६] पालण्डी शास्त्र बाच [६] जती क्रोषी होइ [१०] प्रजाहीए। नगमही [११] वेद रोगी होसी [१२] हीए। जाति कला होसी [१३] सुधारक छल छद्र होसी [१४] सुभट कायर होसी [१४] खिसा काया कलेस घागु करसी दुष्ट वलवत सुध सो [१६] जीवनवतजरा [१७] प्रकाल मृत्यु होसी [१८] पुदा जीव घला [१६] मगहील मनुब होसी [२०] मलप मेघ [२१] उस्त सात वीली ही ? [२२] वचन चूक [२६] रि७ो मनुष होसी [२३] विसवासघाती छत्री होसी [२४] सया ~ [२५] [२६] मराकिषा न कीषो कहसी [३०] मापको कीघो दोष पैला का लगावसी [३१] मसुद्ध साप मरासी [३२] कुटल दया पालसी [३२] भेप धारांवैरागी होसी [३४] बहकार द्वेप मुरख घएा [३४] सुरजादा लोग गऊ ब्राह्मण [३६] माता पिता ग्रुरुदेव मान नही [३७] दुरजन सु सनेह होसी [३८] सजन उपरा विरोध होसी [३६] पैला की निद्या घणी करेसी [४०] कुलवता नार लहोसी [४१] वेसा भगतण लज्या करसी [४२] प्रफल वर्षा होसी [४३] वाण्या की जात कुटिल होसी [४४] कवारी चपल होसी [४४] उत्तम घरकी स्त्री नीच सु होसी [४६] नीच घरका रूपवत होसी [४७] मुहमाया मेघ नही होसी [४८] धरती मे मेह बोडी होसी [४९] मनस्यां में नेह थोडी होसी [४०] विना देख्या चुगली करसी [४१] जाको सरखो लेसी तासू ही होप करी खोटी करसी [५२] गज हीखा बाजा होसासी [५३] न्याइ कहां हान क लेसी [५४] ग्रववंसा राजा ही [५५] रोग सोग प्राा होसी [५६] रतवा प्राप्त होसी [५७] नीच जात श्रद्धान होसी [५६] राडजीग घणा होसी [५६] प्रस्त्री कलेस गराघण [६० | प्रस्त्री सील हीए। घर्णो होसी [६१] सीलवती विरली होसी [६२] विष विकार घनो रगत होमी [६३] ससार चलावाता ते दुखी जाए। जोसी ।

।। इति श्री पचावए। बोल सपूरण ।।

३४४६ प्रवोधसार—यश कीर्त्ति । पत्र स० २३ । मा० ११४४३ इचे । भाषा—सस्कृत । विषय— सुमाषित । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० १७४ । श्र्य भण्डार ।

विशेष--सस्कृत मे मूल मपम्र श का उल्या है।

)

३४४७ प्रति स०२ । पत्र स०१६ । ले० काल सं०१६५७ । वे० स०४६५ । क भण्डार ।

```
389 ]
                                                               समापित पर्व तीविशास
          १४४८ प्रस्तोत्तर रक्तवाका —सुवासीवास । पव सं २। या ११×३३ इ व । भागा—स्थापनी ।
विवय-प्रवाधित । र मण्य × । में कल × । प्रकी । में देश । ट घण्यार ।
          १४४६ महनोत्तररसमाक्षिका-समावदर्ग। यत्र वं २। या ११८४३ व व । माया-संस्कृतः
विषय-गुरुपित । र: कल × । के काल × । पूर्ण । के रे का का कलार ।
          ३४६ असिस २। यस वं २। के कम्म वं १९७१ संबक्षित सुदी १। के सं ४१६। क
WESTE 1
          ३४5१ प्रतिसंदे । यद वंदा के पल XI वे ते हु। आर प्रमार ।
          ३४६६ प्रक्तिसं ४ । यह वं ६ । से काल × । वे सं १७६२ । ह कमार ।
          देश्वेद्दे, प्रस्तावित रहोन्ड----। यव सं १६। या ११×६६ ६ व । नारा-संस्टूत । वियव-
क्रम्पितः। र मान ⊠ाके नान ≾ापूर्णा के वे दश्यो का बच्दार ।
          विकेद---विक्ती धर्म बाहित है । विकिस प्रश्नों ये से उत्तम पक्षा का संबद्ध है ।
           १४६४ बासकडी म्या सरह । यत वं ७ । या €/६ १च । वारा-दियो । विपत-पत्रवित ।
इ. इस्ल ⋉ । हे कला ⋉ । बुर्खा में से देश है के जलार ।
          विश्वकः बारश्यक्ती ----। नव सं २ । या वध्य द न । भाषा--शिन्दी । नियम--नुवादित । र
कास × । ते काल × । पूर्वा । वे से २३६ । व्या कवार !
          १४६६ बारहक्को--पार्थवास । यत्र वं १ । या १८४४ इ.च । भागा-दिन्दी । नियद-नुवाधित ।
र नाम वं र आर पीप बुदो काले प्रशास प्रशास वं २४ ।
          देश्यकः सुभवतिकाल-पूर्वकतः। कालं ६८३ वा ११)८६ व । मारा-दिशी । विपत-
बंब्द्वार नाम सं १ ६६ वर्णलक्ष्मुची २० में नाम 🗴 । दुर्जा वे सं ६ । ३६ जन्मार ।
          १८६० पुत्रकात सरस्त्री—मुपत्रक । पर ४ ४८। या ×१३ (प । भारा-दिनी । विपक्त-
मुक्तमिकार माल वे १ ७१ ज्येष्ठ बुदी थाने नाम से १६० नाथ मुद्दी २ (मूर्य) वे वे ४४४ (का
 1 TIEFE
          वियेप-७ बोहो का संबद्ध है।
           देश्देक प्रति सं का बन वं दशाने वान 🗙 १ वे में क्षेत्रा का नवार ।
           इनी चल्यार के २ प्रतियों (में सं ११४ ६०४) बीए हैं।
           ३१४७० मतिस ३ । पर थाने नला×ो सपूर्णा पे ने १३४३ के बचार।
```

३४७१ प्रति स०४। पत्र स०१०। ले० काल ×। वे० स०७२९। च भण्डार। इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स०७४६) ग्रीर है।

३४७२ प्रति स० ४ । पत्र सं० ७३ । ले० काल स० १६५४ झापाढ मुदी १० । वे० स० १६४० । ट भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १६३२) श्रीर है।

३४७३. बुधजन सतसई - बुधजन । पत्र स० ३०३ । ले० काल × । वे० स० ५३५ । क भण्डार । विशेष-इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ५३६) और है । हिन्दी प्रर्थ सहित है ।

३४७४ ब्रह्मविजास—भैया भगवतीदास । पत्र स० २१३ । मा० १३४५ इ व । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल स० १७५५ वैशाख सुदी ३ । ले० काल ४ । पूर्ण । वै० स० ५३७ । क भण्डार ।

विशेप-कवि की ६७ रचनाओं का सग्रह है।

३४७४ प्रति स०२। पत्र स०२३२। ले० काल 🗴। वे० सं० ५३६। क भण्डार।

विशेष—प्रति सुन्दर है। चौकोर लाइनें सुनहरी रग की हैं। प्रति ग्रुटके के रूप मे है तथा प्रदर्शनी मे रखने योग्य है।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ स० ५३८) भीर है।

३४७६ प्रति स०३। पत्र स०१२०। ले० काल 🗶 । वे० स० ५३८। कु भण्डार ।

३४७७ प्रति स०४। पत्र स०१३७। ले० काल स०१८५७। वे० स०१२७। ख भण्डार।

विशेष—माधोराजपुरा मे महात्मा जयदेव जोवनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी। मिती माह सुदी ६ स० १८८६ में गोबिन्दराम साहवडा (छावडा) की मार्फत पचार के मन्दिर के वास्ते दिलाया। कुछ पत्र चूहे काट गये हैं।

३४७८ प्रति स० ४ । पत्र स० १११ । ले० काल स० १८८३ चैत्र सुदी १ । वे० स० ६५१ । च

विशेष---यह ग्रन्थ हुकमचन्दजी वज ने दीवान ग्रमरचन्दजी के मन्दिर मे चढाया था।

३४७६. प्रति स० ६। पत्र स० २०३। ले० काल × । वै० स० ७३। च मण्डार।

३४८० ब्रह्मचर्याष्टक । पत्र स० ४६। मा० ६ई×४३ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-सुमापित । र० काल × । ले० काल स० १७४८ । पूर्ण । वे० स० १२६ । ख मण्डार ।

३४८१ मत् हिरिशतक---भर्तृ हिरि। पत्र सं० २०। मा० ८ १४५ दे इखा भाषा-सस्कृत । विषय-सुमाषित । र० काल ×। से० काल ×। पूर्ण । वे० सं० १३३८ । स्त्र मण्डार ।

विशेष--ग्रत्य वा नाम शतकत्रय ग्रयवा त्रिशतक भी है।

```
११४ ] [ सुमाशित एवं मीरिशास
इनो बच्चार में व मीतम (वे वं ६११, ३०१ ६२ ६४६, ७६६ १ ७४, ११३९, ११७९)
पोर हैं।
```

३५ च्च प्रतिस्तृ घाष्य ते ११ ने १६ । के बाय ×ा धारूर्त । वे शं ४६९ । क करारा । इसी करार वें १ स्रीत्य (वे शं ४६९, ४६९) धार्य बीर है । ३५ स्टे प्रतिस्त ३ । पत्र ते ११ । के बाय ×ा वे ले १६६ । च्या करार । ३५ स्टुप्ट प्रतिस्तृ अर्था पत्र वे १६० । के बाय से १७६ चैंत सुरी का वे ते १३० । व्य

भागार । इसी भण्डार में तक प्रति (वे सं देवक) धोर हैं।

क्रमार १

१४८८८ प्रतिशं क्षा प्रवर्ति १२ । वे यानार्थि ११२४ (वे संपर्धा क्षाच्यार) पिनेत—स्थित नेपास दोगास्त्रिक है। नुकायण में यानार्यमाणीयान वे प्रतिनित्ति की थी। १४८६६ प्रतिश्चेत के । या संस्थापित स्थापित स्थाप स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित

हेश्रम्म, आवरतवरू—भी बागराज । यन वं १४ । या १८४४, रखा काम-संस्तृ | दिवर-नुवारेका । र नाम ≾ोने राम वं १ १ काका दुवी १९ । पूर्वी वे वं १७ । कृतवस्तर | १९म्म, सस्मादकपणातीआया-ब्रावरी केंग्रणाक । यण वं ४६। वा ११४६३ रखा वासा-क्रिको रखा | दिवर-मार्गरित । र काम वं १६१६ | के नाम वं १६१६ । पूर्वी वे वं १६६ । क्र

विकेश-सामी सामान्य निवयों पर छोड़ी का क्ष्यह है। इसी क्ष्यार में एक ग्रीत (के. वी. १६६.) और है।

देश्यः सान वावकी—सानद्वित्र विषयं २ । या ६३×६३ इक्षा बारा-देश्यो । दिस्स-तुर्वाच्या र नाम ×ाने नाम ×ानुर्वादे वंदश्या वर्षार।

देश्वर मिजनिकास-मासी। पण सं १४० था ११४०३ एवा शत्स-निस्तापन । शिवर-दुरापित। रः, नाम सं १७११ त्यास्त नृति ४। वे गाम सं ११४२ वेष नृती १। तृती। वे ४०५। इत् प्रधार।

सभाषित एव नीतिशास्त्र]

विशेष-विश्वसेन के शिष्य वलमद्र ने इसकी प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (नै० स० १०२१) तथा व्य भण्डार में एक प्रति (नै० स० ३४५ क)

भोर है।

३४६३ रहाकीष । पत्र सं०१४। आ०११४५ इख्र । मापा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल × । पूर्ण । वे० स० ६२४ । क भण्डार ।

विशेष—१०० प्रकार की विविध वातों का विवरण है जैसे ४ पुरुषार्थ, ६३ राजवश, ७ अगराज्य, राजाद्यों के ग्रुण, ४ प्रकार की राज्य विद्या, ६३ राज्यपाल, ६३ प्रकार के राजविनीद तथा ७२ प्रकार की कला मादि।

३४६४. राजनीतिशास्त्रभाषा—जसुरास । पत्र स०१८ । झा० ५६ ४४ इख्र । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-राजनीति । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वै० सं० २८ । मा मण्डार । '

विशेष-भी गरोशायनम भय राजनीत जस्राम कृत लीखत ।

दोहा---

मछर भगम भवार गति कितह पार न पाय। सो मोकु दीजे सकती जै जै जै जगराय॥

छ्प्पय--

वरनी उज्ज्वल वरन सरन जग प्रसरन सरनी ।

कर नरूनों करन तरन सब तारन तरनी ।।

शिर पर घरनी छत्र भरन सुख सपत मरनी !

भरनी प्रमृत भरन हरन दुख दारिद हरनी ।।

घरनी त्रिसुल खपर घरन भव मय हरनी ।

सकल भय जग वध प्रादि वरनी जसु जे जग घरनी ।। मात जें ॰ '

दोहा--

जे जग घरनी मात जे दीजे बुधि ग्रपार । करी प्रनाम प्रसन्न कर राजनीत वीसतार ॥३॥

प्रन्तिम-

लोक सीरकार राजी और सब राजी रहै।
चाकरी के कीये विम लालच न चाइये।।
किन हु की मली धुरी कहिये न काहु मागे।
सटका दे लखन कखु न माप साई है।।
राय के उजीर नमु राख राख लेत रग।
येक टेक हु की बात उमरनीवाहिये।।
रीभ सीम सिरंकु चढाय लीजे जसुराम।
येक परापत कु येते ग्रन चाहीये।।४।।

देश्यः रावधीति सास्त्रः—वैसीदासांगयः ५ १७। धा द्वेश्यः इतः प्रायः—दिल्यो यसः। विषय-स्थानीतार यस्य ×ाने यस्त्र वी १६७६। पूर्वा वै वे १४५। का सम्बद्धः

देश्यः वयुवास्त्रिक्व राजनीति-व्यक्तिकवा । यस्तरं ६ । या १२/८८३ वस्र । जारा-जंतरणः। विवय-राजनीति । र मण्डः 🗵 के वान 🗶 । पूर्णः वि वे १६१ । स्राचनारः

देश्राध्य कृत्यस्यस्य हिन्द्यावयातं प्राया १३/४६, ६ या सन्ता-तिनी तसावित-सन्तरिकार कृत्य के १७११ कि काम संदिग्ध प्रस्ति से संबंधित सम्बद्धाः

क्षेत्रकः, प्रति सं २ । यव वं ४१ । ते नाप × । वे सं ६०० (क सम्बार ।

म्पार प्रतिस्त के व्यव दे प्राप्त नाम वे स्तरका के सं स्ट्रांक क्यार

देश ० वृहत् चारिकवनीतिहासक भाषा—सिकारावराका पण में ६० । जा १०० ६० । वरण-निको विचय-पीरिकारण १ काम ४) में मेनल ४) पुर्व | वे संदर्श कुण्याना

विशेष--वारित्रसम्बंध ने अविविधि की नी ।

३४ १ प्रीत्र संदेशक के प्रवास राज्य × । व्यक्ती के वंद्रशाच्यापारा

११०२, सहिराहक किरमञ्चानिकालको पण वं १) का १ ४४ वंष । मारा-मीसाय । विषय-सुनामिका (र कान ४) के जान वं १४०२ । सुनी विर्व ११, । का वच्चार ।

विदेश-स्थित प्रमिता-

इति पट्टिसल्ड स्वान्तं । श्री प्रतिकायोगानाव दिन्य वं वास कर्य सर्वितः।

क्षमें दुस १६१ वालामें हैं। बंद की बामा में कम्मक्ती का बान दिया है। १६ वी बामा की स्तुद रीका बियन स्वार है—

द्धं पुरवा । वी नैनिक्कः प्रोडरीक पूर्वं इत् निर्दे कर्वाय सरावाह्न । वी निवनसम्हित् द्वाननूत्रा क्यूने दिव विमुद्धार्यदे परिवर्धन वर्गकरात्रो एक्सेय सर्वेतर्न पूर्वः व्यानस्य युद्धि श्रव्यान्त्रहृतः ॥ १६ ॥ वैद्धा नामा विरुद्धार्थं वर्षः द्वारं राज्यनः ।

> न्यास्थानम् पूर्वाअपृत्तिः रेपायुक्तीस्थानस्याः । भूवार्वे द्वारा प्रसाः विक्रणा विक्रणा विक्रणार्थः।

प्रचील — र्थ ११७२ वर्षे भी विकासनारे थी वन बानगीताच्यात किया यी एलपणीताच्यात किया यी माध्याची पास्त्रात इता स्वीक्या ना वादीकातार वं चाल वीमीतिवर्षाच्याता विर्देशवादा । श्री शब्दालां कानु भी पनान सकता ।

३६ ३ शुक्रकीकण्यान्यः वद्यं ३ । या प्र्हेश्यः इत्यः। जला-शिली नयः) नियय-नुपारियः। र नास्र ४ । ने नाल ≻ामुक्तावे संहप्रशाह्यच्चारः। भण्डार ।

३४०४ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल ४ । ने० स० १४६ । छ मण्डार । विशेष-१३६ सोखो का वर्णन है ।

३५८५ सज्जनिवस्त्रभ-मिह्नपेगा। पत्र म०३। मा०११३४५३ दश्च। मापा-सम्कृत। विषय-मुमापित। र० काल ४। ले० काल स०१६२२। पूर्या। वे० स०१०५७। स्त्र भण्डार।

३४०६ प्रति स०२ । पत्र म०४। ले० काल सं०१८९८ । वे० स० ७३१। क भण्डार। ३४८७ प्रति स०३। पत्र स०४। ले० वाल स०१९४४ पीप बुदो ३। वे० स० ७२८। क

३४८= प्रति स० ४। पत्र स० ४। ले० नाल ×। वे० सं० २६३। छ भण्डार।

३५०६ प्रति स० ४। पत्र स० ३। ले० काल स० १७४६ मासोज सुदी ६। वे० स० ३०४। व्य

विशेय-भद्रारक जगत्कीति के शिष्य दोदराज ने प्रतिलिपि की थी ।

३४१० सज्जनचित्तवल्लम-शुभचन्द। पत्र सं०४। ग्रा०११४८ इ व । भाषा-सस्कृत । विषय-मुभाषित। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० स०१६६ । ज्य भण्डार।

३४११ सज्जनचित्तवल्लभ '। पत्र स०४ । मा० १०६ ४४६ इख्र । भाषा-मस्कृत । विषय-मुमापित । र० काल ४ । ते० काल स० १७५६ । पूर्ण । वै० सं० २०४ । स्व मण्डार ।

> ३४१२ प्रति स०२। पत्र स०३। ले० माल ×। वे० सं०१५३। ज भण्डार। विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है।

३४१३ सज्जनचित्तवल्लम-हर्गू लाल । पत्र स० ६६ । मा० १२६४४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । र० काल स० १६०६ । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ७२७ । क भण्डार ।

विशेष—हर्ग लाल खतौली के रहने वाले थे । इनके पिता का नाम प्रीत्तमदास था । वाद मे सहारमपुर चले गये ये वहा मिश्रो की प्रेरिए। से प्रन्थ रचना की थी ।

इसी मण्डार में दो प्रतिया (वे॰ स॰ ७२६, ७३०) घीर हैं।

३४१४ सज्जनचित्तवह्मभ-भिहरचद्र। पत्र स० ३१। मा० ११×७ इख्र। भाषा-हिन्दी। विषय-मुमाषित। र० काल स० १६२१ कार्तिक सुदी १३। ने० काल ×। पूर्या। वे० सँ० ७२६। क मण्डार।

३४१४ प्रति स०२। पत्र स०२६। ले० काल 🔨 । ते० स० ७२४। क मण्डार। विशेष--हिन्दी पद्य में भी धनुवाद दिया है।

सिंगार्थिव पूर्व भी वरास्त्रा

\$ \$ C _ _ १४१६ सम्बन्धि - सक्कानीचि विवर्त १४१ वा १ दिश प्रवा नवा-नवना

विवर-दुराफिट । रः काल × । ते काल × । बापूर्वा वे व व्यक्ष देशी बाजकार ।

निक्केट—क्सीलय्यार में श्रमीत (वें से श्रम) बीर है।

३.१९७ अधिसं २ । पन्यं ११ । से कम्पर्धेर वर्णीय कुदीका देशं ४७**१ । या** रकार ।

विवेष-बंदीरीन गाँउ में नेविद में का अन्य मेशवा था।

रेश्रेट, प्रतिसंदे। यथ संदर्शीय काथ ×ावै वं १९४० । इट अच्छार ।

रेटरे⊾ संद्रावितावबीसाथा—पद्माना चौवेरी । एवं हं १३६ न का ११८६ रका सामान प्रियो : विवस-सुवासिय }ार काल ⊠ा के काल वे देश पर लोका-पूरों देवे | पूर्वाई वे ७३६ । क

बचार । विकेश—पृष्टी पर वर्गों की सूची निज़्**ती हुई है।** स्वास्त्र हुए स

ूरेप्ट्र प्रदिश्व नामगृत ११७।के मूल<u>ा</u>र्जू १९४८ | दूर्व वरका कामणार।

२४२१ सद्भावितास्त्रतीमा<u>स्त्रा</u>ात्त्र श्रे १४ | या १९<u>४</u>२३ हरू । श्रामानीन्यो पहा नियुक्तुनप्रदेश । रुक्तालु १६११ सन्दर्भाष् । दुर्शा वे रं १८० जन्मार्।

६४२२ सम्बेडस<u>स्त्व</u>त—कर्मेककरास्**रि**। यस वं १०। या १ ×ү स्वाः नापा-सं<u>र</u>हतः।

विवर-दुर्गाध्य । र क्लू ठू । तेर् कार्य 🗶 दुर्ल | है । वेर् २७१ । आह् सम्बर्ग । ६४०६ समासार बाटक~-एकुराम । वन वं १६ ते ४६ । या १_९%, हे हुण नुवान-हिल्यो ।

पुनद-बूल्योच्युर कल ×ामे कमार्थ १ १। ब्यूर्नरमे र्थ<u>े ३ ७</u>।

विकेष---कारण्य में पृष्मेश एवं क्लीस्वयद्विश पूजा है।

६५२४ समासरगण्या । यस सं ६०% मा १६×१६ द्रखा । वाया-चरक्रत । वियम-मुक्तपित । र लग सम ×1द रास दं १ ४४ लोस तुरी ६ (दुर्स) वे सं १ | १६ ललार। ३ कि लगला है। स्थाप स्थाप

विकेश---नीयों के नेनिनान जैत्यासय बायानेश ने इरियालयाक के दिव्य प्रयत्नवन्त ने प्रोटिनिन नी थीं।

वेश्तर समान्यकार ार्थ सं प्रदर्श का ११×१६ क्रिया क्रांस-संस्ट दिली । दिस्त-

बुमारित र सन्त ×िन नाम सं १७६१ कार्मिक पुग्ने शिनुमें । में में रेपका

fede-sixes-क्कबनरित वर्षेष्ट भी भी की बाब दिवसमित्रहेक्सोनकः। बना बनाग्रह्मार क्रम निस्तरे । सी भाग 1 1 1 3 - +

देशास्त्रमा । की रस्तु।।

110

सुभाषित एवं नीतिशास्त्र]

नाभि नदनु सकलमहीमहनु पर्वधात धर्मुष मानु तो ं तीर्ण सुवर्ण समानु हर गवल स्थामल कुनलावली विभूषित स्कबु केवलझान लक्ष्मी सनाष्ट्र भव्य लोकाह्नियुत्ति [िक्ति]मार्गनी देखाउँ । साथ ससार शधकूप (अधकूप) प्राण्यित्र पडता दइ हाय । युगला धर्म धर्म निवार वा समर्थ । भगवत श्री मादिनाथ श्री संघत्णो मिनीरथ पुरो ॥१॥ स्रोतराग वांग्णा समार ममुत्तारिग्णो । महामोह विष्यसनी । दिनंकरानुकारिग्णो । क्षोघाग्नि दावानलोपसामिनीयुक्तिमार्ग प्रकाशिनी । सर्व जन वित्त सम्मोहकारिग्णो । मागमोदगारिग्णो वीर्तराग वांग्णो ॥२॥

विशेष ग्रतीसय निधान सकलग्रुग्पप्रधान मोहांघकारिवछेदन भानु त्रिभुवन सकलसेंदेह छैदर्न । ग्रछेष्य ग्रभेय प्राग्निग्गा हृदय भेदक ग्रनतानत विज्ञान इसिंउ ग्रपनु केवलज्ञान ॥३॥ ग्रन्तिम पाठ—

मयस्त्री गुणा— १ कुलीना २ शीलवती ३ विवेनी ८ दानसीला ४ कीर्सवती ६ विद्यानवती ७ गुणागहणी ८ उपवारिणी ६ कृतज्ञा १० धर्मवती ११ सोत्साहा १२ सभवमत्रा १३ वलेससही १४ मनुपतापीनी १५ सूपात्र मधीर १६ जितेन्द्रिया १७ समूप्हा १८ मल्पाहारा १६ मल्डोला २० मल्पनिद्रा २१ मितभाषिणी २२ वित्रज्ञा २३ जीतरोपा २४ मलोगा २४ वित्रुपवती २६ मल्पा २७ सौमापवती २८ सूचिवेपा २६ भुषाश्रूषा ३० प्रमन्नमुखी ३१, सुप्रमाणकारीर ३२ सूचपणवती ३३ स्नेहवती । इतियोद्युणा ।

ु इति सभाश्वञ्जार सपूर्ण ॥

प्रभाग्रभ सम्या १००० सवत् १७३१ वर्षेमास कात्तिक सुदी १४ वार सोमृवारे लिखत रूपविजयेन ॥ स्त्री पुन्यों के विभिन्न लक्षण, कलाम्रों के लक्षण एव सुभाषित के रूप में विविन्न वार्ते दी हुई है।

३४२६ मभाश्वद्वार "। पत्र स० २६'। मा० १०×४३ इख्र । भाषा-सस्कृत ।' विषय -पुमापित । रं० फील ×ें । ते कितल स० १७३२ । पूर्ण । वे० स० ७६४ । क भण्डार ।

३४० सबोधसत्ताशा—वीरचद | पत्र स० ११ । ग्रा० १०४४ ६ व । भाषा-हिन्दी । विषय-सुमाषित । रं० काल ४ । लें० काल ४ । पूर्ण । वै० में० १७४६ । श्रा भण्डार ।

परम पुरुष पद मन घरी, समरी सार नोकार ।

परमारथ पणि पक्षान्धु, सबोधसतात् बीसार ॥१॥

प्रादि प्रनादि ते मात्मा, ग्रहवब्यु ऐहम्रनिवार ।

धर्म विहुणो जीवणो, वापष्ट पड्यो ये सेसार ॥२॥

पन्तिम—

स्री श्री विद्यानदी ज्यो श्रीमस्तिभूपण मुनिचद ।

तसपरि माहि मानिलो, ग्रह श्री लक्ष्मीचन्द ॥ ६६ ॥

```
18 1
                                                                                                                                                           समाधित एव नीतिशास्त्र
                                                             रेड कुने नन्त रीवकारी जयन्ती वर्ता गीरवंद।
                                                             मुक्ता कपता य बावना पीनीचे परमाक्त ।।१७।।
                         इति सी भोरणेद विश्वविदे बंगोधससाराष्ट्रया संपूर्ण ।
                         ३१.२८. सिन्द्रप्रकरक्-साध्यक्षाचार्ये । या वं ६ त्या र XY इ.स. वसा-संस्था । विका-
दुमारित । र: काल ×। में कात ×। पूर्व । मीर्था । वे २१७ । ड मन्पार्⊅
                         विकेश-प्रति प्राचीन है। केनसमर के किया फीरियावर ने कवा में प्रतिकिति नी ची।
                         देश्रद⊾ प्रतिर्श्व का प्रवर्ध क्षेत्रकाण जानाचं रह का चप्रतीर्श्व संद्रुका ह
चव्यार ।
                        विकेद---वर्वगीति तूरि इत वंश्वत व्यवस्थ बहिए हैं।
धीनाव-- प्रीत क्रिक्ट प्रकारकावन व्याध्यास्त्रा अर्थकीत्वरिक सीरीविविद्यालयः।
                         ३४३० प्रति हो ३ । यह वं १ के ३४ । में काम सं १०७० धामका बुदो १५ । यद्भरी । वे
र्श्तर १६। इस्त्रचार ।
                         निकेद--वर्षभीति पृरि प्रय नेस्कृत न्याच्या सहित 🛊 1
                         ३४३१ सिम्ब्रुरप्रकरक्तभाषा—कनाएसीकासः। यव र्व २५। घा १ ३४४३ । भावा क्रियी ।
मियक-स्थापित। र मानाची १६६१। में नामाची १ ६१। पूर्वा में चं चंदर्श
                         विकेद---स्राल्क जीवका ने जीतिकरि की वी ।
                         १४४ में प्रतिस्थ पात्र क्षेत्र के क्षेत्र प्रतिस्थ के प्रतिस्थ के
                         इसी क्यार ने १ प्रति (वे र्च ७१७ ) और है।
                         १४३३ सिन्दरप्रकरखभाषा--शुल्दरहास । पत्र ४ २ ७ । या १७८४ इस । वापा-दिन्दी ।
विवय-प्रवासिक । रंजना सं ११९६ । वे काल सं ११३१ । पूर्ण हते सं ७१७ । वह अवस्तर ह
                         वेशवेशः प्रतिका का व्यवसं करेका का व्यवसाय संदेशक सम्बद्ध सुरी का के वी वदका
 I STIPPE IN
                          विकेश---वारात्रार वजावर के रहने वाले में । जान में में नालवतेत के इ बारतिपूर ने रहने लने में ।
                         इसी बच्चार में के मिरिया (वे वं कदन नर्थ एक) शीर है।
                          १४१४. छन्छन्तक—विन्तास नोगा। १व वं ४ । घा १ ३×१ रख। करन-दिनी रख।
 विषय-मुनाविदार माल सं १०१२ चीन पुत्री था मि नाल सं १८१७ कॉर्सक मुद्री १३ । पूर्वा वे सं
```

बर्ग । क्रमधारा

३४३६ सुभाषित मुक्तावली । पत्र स० २६। ग्रा० ६४४% इद्धा भाषा-सस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० म० २२६७ । ऋ भण्डार ।

३४३७ सुभापितरत्नमन्टाह—श्रा० श्रमितिगति । पत्र स० ४४ । आ० १०४३ है इ व । भाषा-सस्कृत । विषय-मुभाषित । र० काल स० १०४० । ले० वाल 🗴 । पूर्गा । वे० स० १८६६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २६) भीर है।

अप्रदे⊏ प्रति स०२। पत्र स०१४। ले० काल स०१८२६ भादवा मुदी १।वे० स० ६२१।क

विशेष--- नग्रामपुर मे महाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

३५३६ प्रति स० ३। पत्र त० ६ से ४६। ले॰ काल म॰ १८६२ ग्रामोज बुदी १४। ग्रपूर्ण। वे॰ स॰ ८७६। इ मण्डार।

३४४० प्रति स०४ । पत्र स०७८। ने० काल स०१६१० कार्तिक बुदी १३। वे० स०४२०। च भण्डार।

विशेष—हाथीराम खिन्दूका के पुष्र मोतोलाल ने स्वपठनार्थ पाड्या नायूलाल ने पार्वनाय मदिर मे प्रतिलिपि करवाई थी।

३४४१ सुभाषितग्रन्न नन्टोहभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र स० १८८ मा० १२३४७ इस । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सुभाषित । र० काल स० १९३३ । ले० काल × । वे० स० ८१८ । क भण्डार ।

विशेष---पहले भोलीलाल ने १८ मधिकार की रचना की फिर पन्नालाल ने भाषा की । इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० ८१६, ८२०, ८१६, ८१६) भीर हैं।

३४४२ सुमापितार्णव — शुभचन्द्र । पत्र स० ३८ । मा० १२ \times ५३ इख्र । भाषा – सस्कृत । विषय – मुमापित । र० काल \times । ले० काल स० १७८७ माह सुदी १५ । पूर्ण । वै० स० २१ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र फटा हुमा है। क्षेमकीर्त्ति के शिष्य मीहन ने प्रतिलिपि की थी। ऋ भण्डार मे १ प्रति (वे॰ स॰ १९७२) मीर है।

३५४३ प्रति स०२। पत्र सं०१४। ले० काल ×। वै० स०२३१। ख मण्डार। इसी मण्डार मे २ प्रनिया (वे० स०२३०, २६८) ग्रीर हैं।

३४४४ सुभाषितसमह । पत्र स० ३१। भ्रा० ८४६ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-सुभाषित । र० काल ४ । ले० काल स० १८४३ वैद्यास बुदी ४ । पूर्ण । वे० स० २१०२ । श्र्य भण्डार । विद्येष---नैरावा नगर में भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य विद्वान रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी । ्र रो] [सुमापित एव सी.तरास्त्रा

रती जप्यार में १ प्रति पूर्ण (के स १२३१) तचा २ प्रतियो प्रपूर्ण (के सं १६६६ १६०) सीर है।

देश्धः प्रतिम देश्यव वे कालै नाम ×ावे लं शुक्र कराहर देश्धः प्रतिम देश्यव वे शालै नाम ×ावे लंदेश्याद्य कराहर देश्यः प्रतिम देश्यव वे देश के नाम ×ाव्युर्लश के न १९काव कराहर।

११९८८ सुमापियमंग्रहण्यान्य वै ४ । या १ ४४-६ इत्या जला-अस्तानम्यः । दिवक-इत्यस्ति । ८ कल ४ । के वेश ४ । पूर्णा वे वै १९ । व्याप्ताः ।

विदेश-दिल्ही में रामा दीका की हुई है । वहि कर्मकर ने प्रतिविद्धि की वी ।

देशक सुनाबितसम्बर्णाण वन मंदि । सा ७४६ इ.च.। बाला-वैत्तृत हिन्दी। तिरुन-नकांकित । र नाम ४) के पन ४ । स्टूर्णा वै संदेशक अस्तातः

. १४४ द्वामणियासकी-सरुक्यभौति (तथर्थ १२) था ११४१ इ.स. घला बल्ला। विषय-नुवर्गत्व । र.स.स. ४) ने सल्य १०४६ नेपनिर नुवी ६। वृद्ध । दे सं १४४ । घर बस्तार।

निकेर--निर्वित्तिर्वित्तं क्षेत्रे क्षात्रे क्षात्रों क्षात्रका कार्यात्र कार्यात्र कल्क्या कार्ये निकरितं प्राप्ताः क्षापंत्र । में १४४० कर्षे प्रस्तेवर्ति क्षात्रा ६ तीवकारी ।

देश्टरै प्रतिस्थ देशवर्ष ६६३ लेकानसं ह र पीप नुस्री टार्न १२४ । श्रा सम्बद्धाः

विगेद---पालपुरा बाल ने थं - नोतिय ने स्वरत्नाथ अविविधि यो थी ।

१८४८ प्रतिस ३।वस वं ३६।के कलार्ट १६२ पीर-पूर्ण १।वे वं २२७। स्र कमार।

निर्देश—नेकड प्रचरित निरम प्रकार 🖫

हंसर् १६ १ काने पीत हुये र बुक्तानरे बोजूनावे बतालावाले हारस्वीतको पुतर्भावस्थाने स्वाहतक वी प्रमाणिको कार्या कार्य कार्या कार्य कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्य कार्या कार्या

३४४३ प्रति स०४। पत्र स०२६। ने॰ काल स॰ १६४७ माध मुदी । वे॰ स०२३४। स्त्र भण्डार।

विशेष--लेखक प्रशस्ति-

भट्टारक श्रीसकलकोत्तिविरिचते मुभाषितरत्नावलीग्रन्थसमाप्त । श्रीमर्ख्येषयमागरसूरिविजयराज्ये सवत् १६४७ वर्ष माधमाने शुक्काले गुरुवासरे लीपोक्त श्रोग्रुनि शुभमस्तु । लम्बक पाठकमो ।

सवत्मरे पृथ्वीमुनीयतीन्द्रमिते (१७७७) माघाधितदशम्या मालपुरेमध्ये श्रीमादिनायचैत्या नये शुद्धी-कृतोऽय नुमावितरत्नाप्रलीग्रन्य पाढेश्रीतुलसीदासस्य क्षिप्येण त्रिलोकचद्रेण ।

म्ब्र मण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० २८१, ७८७, ७८८, १८६४) भीर है।

३४४४ प्रति स० ४ । पत्र स० ६६ । ले० फाल स० १६३६ । वे० म० ६१३ । क भण्डार ।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ८१४) मीर है।

३४४४ प्रति स०६। पत्र ०२६। ते० काल स०१८४६ ज्येष्ठ सुदी ६। वे० स०२३३। स्व भण्टार विशेप---प० माणकवन्द की प्रेरणा से पं० स्वरूपवन्द ने प० कपूरवन्द मे जवनपुर (जोबनेर) मे प्रतिनिपि कराई।

दं ४४६ प्रति स०७। पत्र स०४६। ते० कात स०१६०१ चैत्र मुदी १३। वे० स० ६७४। हः भण्डार।

विशेष--श्री पाल्हा वाकलीवाल ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी।

इसी मण्डार मे ५ प्रतिया (वे॰ स॰ ६७३, ६७५, ६७६, ६७७, ६७६) भीर हैं।

३४४७ प्रति स० = । पत्र म० १३ । ले० काल स० १७६५ ग्रासोज मुदी ८ । वे० स० २६५ । छ् भण्डार ।

३४४८ प्रति स०६। पण स०३०। ले० काल स०१६०४ माघ बुदी ४। वे० स०११४। ज भण्डार।

३४४६ प्रति स० १०। पत्र स० ३ से ३०। ले० काल स० १६३४ वैद्याल सुदी १४। धपूर्ण । वे० स० २१३४। ट मण्डार।

विशेष--प्रथम र पत्र नहीं हैं। लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है।

३४६० सुमापितावली । यत्र स० २१। मा० ११३ ×५२ इख । मापा-सस्कृत । विषय-सुमापित । र० काल × । ले० काल सं० १८१८ । पूर्ण । वै० स० ४१७ । च मण्डार ।

विशेष--- यह ग्रन्य दीवान सगही ज्ञानचन्दजी का है।

```
_______भू ] [ सुमापित पर्य नीतिशास्त्र
च चच्चार में १ प्रतिको (वे सं ४६० ४६०) का मध्यार में १ समूर्य प्रतिको (वे तं ६६६.
६२ ६) तमा द चच्चार १ (वे सं १ १) समूर्य प्रति सीत् है।
देश्वे सुमापिताचढीमाचा—पश्चासका चीचती। पत्र सं १ १ । सा १२३/४६ ६ सा स्वयान
दियो । विषय—पुत्रापित । र शत्र ४ | के कक्ता ४ । पुर्वे | वे स्वट । क्षा क्षात्रा ।
देश्वे १ सुमापिताचढीमाचा—पूर्वीच्याद वच सं १३१ । सा १३३/४६ ६ सा सामा-दियो ।
विवय—पुत्रापित । र शत्र सं १६२१ व्यक्त सुर्वे १ । के कस्य ४ । पूर्वे । वे सं व सा क्षात्रा ।
```

विवर-नुपारितः । र फला×ा के नाम वं १६६व सायम द्वारी २ । पूर्णः । के वं ११ । आर क्यारः । विकर—१ ६ यो हैं।

३३६४ सुक्तिजुक्तस्वती—कोसप्रमाणार्व। पत्र वं १०। या १२४३ (व । यास⊢संस्ट्य । नियम-मुसास्ति । र्ंकस्य ४ । के जल ४ । पूर्वा वे वं १६६ । का सम्बार । नियम-सुकार तथा पुत्रपरिवासको सो है।

हेर्स्स्ट प्रति स्त्री २ । वस स्त्री १७ । कि काम स्त्र १९ वर १ वर्ष ११० । वस सम्बार । विकेश — अवस्थि मिल्य प्रवार है— बंदत् १९०४ को बोकस्त्राको मेरीस्टरकको विकासको व सीरामवेदकको उटरट्टें व सी विकादुरस्य उन्हर्ने म भी स्त्रान्योंनि ब्रह्म सीवेदरस्य व्यक्तिसम्बद्धा सीवरसको स्वासीन इस्टीन विक्रांत्रस्य स्थानमं ।

का क्यार में ११ मिठयों (वे से १६६, १६५ ६५० १६ अप १ ६५० २ १ ५५० १६५० २ ६३ ११६६) और है।

२ देश ११८६) आरही। देशहर्द प्रतिष्ठा देशकानं देश । वे कस्पानं देशकानम् सूतीः । वे सं २२ । व्य कस्पारः। स्त्री सम्बार के एक प्रति (वे वे वर्ष) और देश

१४६० प्रविक्त प्राप्त कंशानि व्यक्त कंशकर वालोज पुत्र २१वे कंश्रभा कं निवेद-व्यवस्थारे बेटबी चटनार्व मालपुरा में अधिनिधि हुई थे।

११६८, प्रति श्वः १ । पत्र सं २४ । के नाम ४ । के सं २२६ । का नामार । विकेत-वीवान प्राप्ताय विकास के पत्र क्षार वर्णाया के योगार्थ प्रतिविद्य भी वर्ष की । बार मेर्ट

पूर्व कुषर है। इसी क्ष्मार के २ अपूर्ण प्रतिकों (के वी २३२, नदन) बीट हैं। ३४६६ प्रति स० ६। पत्र स० २ मे २२। ले० काल X। अपूर्ण । वे० स० १२६। घ मण्डार । विशेष-प्रति सस्कृत टीका सहिल है ।

द्व भण्डार मे वे अपूर्ण प्रतिया (वे० स० ६६३, ६६४, ६६४) श्रीर हैं।

३ प्र'७० प्रति स० ७ । पत्र सं० १४ । ते० काल स० १६०१ प्र० श्रावण् वुदी छ । वे० स० ४२१ । च भण्डार ।

इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० म० ४०२, ४२३) भीर हैं।

३५७१ प्रति स० द। पत्र स० १४। स० काल म० १७४६ मादवा बुदो १। वै० स० १०३। छ

मण्डार ।

विशेष—रैनवाल में ऋषमनाथ चैरमालम म माचार्य झानवीत्ति के शिष्य सेवल ने प्रतिलिपि की यी। इसी मण्डार में (वै० स० १०३) में ही ४ प्रतिया भीर हैं।

उथ्र७ प्रति स० ६ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १८६२ पौप मुदी २ । वे० स० १८३ । ल भण्डार ।

विशेष-हिन्दी टन्ना टीका सहित है।

इसी भण्डार मे १ प्रति (वे० स० ३६) भीर है।

३४७३ प्रति स०१०। पत्र स०१०। ते० काल स०१७६७ मासीन सुदी ६। वे० स०६०। व्य

विशेष-पाचार्य क्षेमकीति ने प्रतिलिशि की थी।

इसी भण्डार में ३ प्रतिया (वै० स० १६५ २८६ ३७७) तम ट भण्डार मे २ भपूर्ण प्रतिया (वै० स० १६६४, १६३१) भीर हैं।

३४७४ सुक्तावली । पत्र स० ६। मा० १०४४, इन । मापा-सस्कृत । विषय-सुमापित । र० नाल ४। ते० नाल स० १८६४। पूर्ण । वै० स० ३४७। अ भण्डार ।

३४७४ स्फुटकोकसमह । पत्र स०१० से २०। मा० १४८ हत्र । भाषा-सस्कृत । त्रिपय-सुमापित । र० काल ४ । ले० काल स०१८८३ । म्यूर्या । बै० म० २५७ । स मण्डार ।

३४७६ स्वरोदय-रनजीतवास (चरनवास) । पत्र त० २। मा० १३१×६३ ईच । मापा-हिन्दी । सुमापित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ८१४ । स्त्र भण्डार ।

३४७७ हितोपदेश-विष्णुशर्मा। पन म० ३६। ग्रा० १२३४५ इझ । नापा-सम्कृत । विषय-नीति । र० काल ४। ले० काल स० १८७३ सावन सुदी १२। पूर्ण । वे० स० ६५४। व भण्डार ।

विशेष--माणिक्यवन्द ने कुमार शानचद्र के पठनार्थ प्रतिनिषि की थी।

्र सुभाषिक पत्र नीविद्याला

इ.स.स. प्रति स०२ । पत्र वं २ । ते पत्तर ४ । वं २ ५७ । व्यानकार । इ.स.क. क्षित्रोपतेत्तामामा ----। पत्र वं २६ । वा ४६ वज्ञ । अता-क्षित्री । विषय-नुतासिकः ।

र नल ×।के कान×।कृती।वे सं १९११ । का जन्मार।

३१८८० प्रतिस्करायाचे बदावे कास×ावे वं १३२ । स्थलारा



विषय-मन्त्र-शास्त्र

अप्रदेश डन्द्रजाल । पत्र स० २ से ४२। घा० ८५ँ×४ द्य। भाषा-हिन्दी। विषय-तन्त्र। र० वाल ४। ले० काल स० १७७८ वैद्यास मुदी ६। घपूर्ण। वे० स० २०१०। ट भण्डार।

विवाय-पत्र १६ पर पृष्पिका-

इति श्री राजाधिराज गोस नाव यश केसरीसिंह समाहितेन मनि मडन मिश्र विरिचिन पुरदरमाया नाम या विह्नित स्वामिका का माया।

पत्र ४२ पर-इति इन्द्रजाल समाप्त ।

कई नुसन्द तथा वशीकरण प्रादि भी हैं। यई कौतूहल की सी वार्ते हैं। मत्र सस्वृत म है भजमेर मे प्रतिलिपे हुई थी।

३४८२ कर्सटहनवृतसन्त्र । पत्र स० १० । ग्रा० १०३ ४५३ इख । भाषा-सन्तृत । विषय-मत्र धाम्त्र । र० काल × । ते० काल म० १६३४ माटना मुदी ६ । पूर्गा । वे० स० १०४ । क्ष भण्डार ।

३४८३ च्रेत्रपालस्तोत्र । पत्र स० ८। भा० =३×६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र) र० काल ×। न० काल स० १६०६ मर्गासर सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ११३७ । छा भण्डार ।

विशेष-सरम्बती तथा चौसठ योगिनीस्तोत्र भी दिया हुमा है।

३४८४ प्रति स०२। पत्र म०३। ते० काल ८। वे० स० ३८। म मण्डार।

३४५४ प्रति स० ३। पत्र स० ६। ते० काल स० १९६६। वे० स० २८२। स्न भण्डार।

विशेष--- चक्र श्वरी स्तीत्र भी है।

नेश्रम् घटाकर्शकल्प । पत्र स० १। धा० १२ र्×६ इ. व.। भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १६२२ । ग्रपूर्श । वे० स० ४५ । स भण्डार ।

विशेष--प्रथम पत्र पर पृष्पाकार खड्गासन चित्र है। प्रयत्र तथा एक घटा चित्र भी है। जिसमे तीन घण्टे दिये हुये हैं।

३४८० घटाक धेमन्त्र । पत्र स० ४। भा० १२९४४ इ.च । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र । र० काल ४ । ले० काल स० १६२५ । पूर्ण । वे० स० ३०३ । ख भण्डार ।

```
िसन्त्र-साह्य
```

देश्यमः संबादकीवृद्धिकाराः । । । १९ इ.स. १ वर्षा स्थाहिसी । स्थित स्थल समग्री ए भाष 🗙 कि समस्ती १९१६ वैसक मुणे ३ । पूर्व । वे १६ । व सम्याः

१४८३ **वर्ग्याविद्याविद्यान**ा विषयं १ वा ११६/४६ १ व । वात स्वतः । विषय-

मन्त्रदक्षमा । र तमा ×। ते पक्षद ×। दूर्वी वै सं १ ६६ । ध्रमण्डार ।

३१६. चिम्सामस्थितोत्रण्यानां वस्त्रं २ । सा _१४६ इ.च.। शासान्वंसाठः । विद्यस्त्राण

कारण |र कार्य × | वे जाल × | बुक्तें | वै से देवक । स्त्र ज्ञाणार । जिक्रेश—ज्ञाने स्वरोत स्तोच की विक्रों क्रुया है ।

३१६१ प्रति के देशियां विश्व के प्रति के प्रति का अस्ति।

३१६२, विस्तालिक्ष्याच्याच्याचे हे। या १ ४१ इवः वया-संस्कृतः विषय व्या

र नात×। ते शक्त×। ब्रबूर्या । वे वे २६७ | इस् वंचार |

१८६६ चीलक्योगिश्रीकोत्र "" । यह ई १। वा ११८६३ इ.च. मना-सत्तव) विपय-मन्त्रवस्त्र । र मन्त्र ४) के इस्त्र ४) पूर्व) वे ई ११६) छ च्यार ।

विकेष-प्रती त्रकार में ३ प्रतियों (वे सं इक्ष्य १३६६ २ ६४) मीर हैं।

३८६५ प्रक्रियन २) वर वं १) के कला वं १ ११वे वं १६७) मायपार। ३८६५ क्रीताप्रपत्रीकलक्षिकालः —ावस व २। सा १६४६३ वर्षा मारा-संस्टा निकर-

सन्दर्भ प्रभा प्

१२६६ क्याकारकार पर शासा च प्रश्ति । सारा-कारण । वर्ष-कारण १ र नान पानि समार्थ हैश्वर । कुर्बा वै से २६ । ग्रह्मकार ।

६४६७ द्वतीकारकक्ष्य प्रभागवार्थ १। या ११३/४१ १वा वाराम्बस्तः) विषय-सन्य करुतार करूत्र ४ ने नासार्थ १६ । पूर्णी वे वे ११९। का वस्तार 1

१८६८. प्रतिसं २ | पक्ष दं २ | के कल × | स्पूर्ण । के रं १०४ | लाक्यार । १८६६. प्रतिसं से | कर्मर्स ६ | के वला दं १९९१ | के पेन्सर ।

विवेच--विनी में बन्धतानम् की विनि एवं जन विधा हुना है।

हेर्स स्वीकारवेंतिकी । पर्वर्थभावा १९८२ हवा वास-नारव र पूरणी हिन्छै। रियम-प्राचनकार वस्त्र स्थाने कला ४ । पूर्णी वै वै ११६ कलामा

३६ १ प्रशिक्षं की बाद स्वां के अध्यास्त्री वें क्ष्माचा अध्यारा

३६०२. तमस्कारमन्त्र कल्पविधिसिद्दिस-सिंह्निन्दि । पत्र स॰ ४५ । ग्रा० १११४६ इ व । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रवास्त्र । र० काल × । से० काल स० १६२१ । पूर्ण । वे० स० १६० । श्र्म भण्डार ।

३६०३ नवकारफल्प । पघ स०६। ग्रा०६×४३ इच। भाषा-सन्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० कान ×। ते० काल ×। पूर्ण। वे० स०१३४। छ भण्डार।

विशेष-पक्षरों की स्याही मिट जाने में पढ़ने में नहीं भाता है।

३६०४ पचद्श (१४) यन्त्र की विधि । पत्र स०२। द्या०११×१ है इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल ×। ले० काल स०१६७६ फाग्रुण वुदी १। पूर्ण । वे० स०२४। ज भण्डार ।

३६०४ पद्मावतीकल्प । पम २०२ मे १०। मा० ६×४३ इच। भाषा-सस्कृत । विषय- भन्न भारत । १० काल ×। ते० काल स० १६६२ । अपूर्ण । वे० स० १३३६ । अप्र भण्डार ।

विजेष-प्रशस्ति- समत् १६६२ भामाहेर्गलपुरे भी मूलसमसूरि देवेन्द्रकोर्तिस्तदतेवासिभिराचार्यश्री हर्पकोर्तिमिरिदमलेखि । चिर नदतु पुस्तकम् ।

३६०६ बाजकोश । पत्र स० ६। आ० १२×१ । नापा-सस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० फाल ×। ते० कात ×े। पूर्ण । वे० स० ६३५ । स्त्र मण्डार ।

विशेष-सप्रह ग्रन्थ है। दूसरा नाम मानृका निर्घट भी है।

३६०० भुवनेश्वरीस्तोत्र (सिद्ध महामन्त्र)—पृथ्वीधराचार्थ । पत्र स० ६ । प्रा० ६ रू४ इव । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रवास्त्र । रक्ष काल × । लक्ष्म नाल × । पूर्ण । वै० स० २६७ । च भण्डार ।

३६०= भूवता । पत्र स० ६। म्रा० ११३/२४२ इझा भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रज्ञास्त्र । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । अपूर्ण । वे० स० २६६ । च भण्डार ।

विशेष---ग्रन्थ का नाम प्रथम पद्य में 'मयात सप्रवश्यामि भूवलानि समासत ' भाये हुये भूवल के माधार पर ही लिखा गया है।

३६०६ भेरवपद्मावतीकल्प-मिल्लिपेशा सृरि । पत्र स० २४। म्रा० १२×५ इ न । भाषा-सस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २५० । स्त्र भण्डार ।

विशेप-३७ यंत्र एवं विधि महित हैं।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे॰ स॰ ३२२, १२७६) और हैं।

३६१० प्रति स०२। पत्र स०१४६। ले० काल म०१७६३ वैशास सुदी १३। वै० स० ५६५) क भण्डार। विभय---प्रति श्रविव है।

रशी बच्छार में १ संपूर्ण निवन श्रीत (वे वे १६३) सीर है।

६६९१ प्रतिसं ३ । यम संदर्भ के तल ⋌ावे संदर्भ का बन्दार।

६६१२. प्रतिस् छ।पणनं २ ।के याणवं १०६६ चेत बुद्धे — । वे वं १९८ ।च नकार।

विचय—दनी क्लार ने १ प्रति संस्कृत टीवा तक्ति (वे स्ट २०) शीर 🕏 ।

दे६१३ मतिया शायम वं १३।वे वाल ×।वे सं १६६६ (ह सम्बार)

पिनेद---वीवाझरों ने इस क्यों के पित हैं। द्यांपित त्या मंत्री वहिंद है। संझ्छ टोना ही है। पत्र पर बीवाझरों ने योगों सोर वो विश्लोश रूप तथा विश्व वी हुई है। एक दिनोश ने बाहुनश पीहरे साई हो तथा वहीं का पित्र है विश्लोश बनाइ ए समार नित्रे हैं। हुम्पी योग और ऐसा ही नक्य पित्र है। रूपांपित है। है से इस ह तथा पत्र तथा नहीं हैं। हुन्द वस पत्र सेंग संव सुपी सी है:

३६१८ प्रतिसः है।यम वै ४० से २०।ते प्रश्नासं १ १७ स्पेक्ष पुरी १ । सर्ह्यां। ने त १९१७ । टबम्बार ।

विकेत---त्रवर्धि कम्पूर में वं कोकक्त के किया मुखरामु है प्रतिसित्ति की वी ।

इसी मन्वार ने एक प्रति बच्चर्ग (वे. चं. १६६८) बीर 🗗

६६१४. सैरवपद्मानसीकार । एवं सं ४ (बा ६४४ ६व । वारा संस्कृष्ट | रिवस-सन्द्र द्वारत । रंफल × । के काल × । दुर्गा के संदर्भ । करवार ।

६६१६ सम्बद्धाला "।यव वं । मा ×६ इत्रः। बसा-विन्तीः। विषय-गण्यक्षस्य । र वस्त ≻ । से कल ≻ा पूर्वावे वं ६६१ । स्र गण्यारः।

विदेप--निम्म मन्त्रो का तंत्रह है।

र पीनी वाहार्यक्ष को २ नामरा निवि ६ मेंच ४ ह्यूनाम मंत्र ६, दिन्दी या जन्म ६ पत्रीता कुछ स प्रतिक सम ७ केम वेपता का क्षुत्राम का मन्त्र ६, वर्षाकार कन्य तथा गन्म १ वर्षकार दिक्ति कन्म (भारो कोमो पर बीएल्लोक का बाग विवा हुमा है) ११ कुट कार्यनों ना जन्म ।

१६१७८ अक्युशाल्याण्याणा पण सं १० ते १० । या १३४६१ रखः त्रसा-वीस्ट्टा विषय-सन्दे सम्प्राट कल ×ात्रे क्ला ×ात्रपूर्वावे । वे सं २ ४ । कल्यारः

निवेद--इसी मच्छार में दो प्रतिकार्ध (वे र्ख १३, १६) घीर है।

मन्त्र-शास्त्र 🚶

3६१८. सन्त्रमहोदधि—प० महीधर। पत्र स० १२०। आ० ११३८७ इच। भाषा-सम्कृत। विषय-मन्त्रशास्य।र० काल ४। ले० काल स० १८३८ माघ सुदी २।पूर्ण।वे० स० ६१६। स्त्र भण्डार।

३६१६ प्रति स०२। पत्र स०५। ले० काल ×। वे० स०५६३। ङ भण्डार। विशेष-- ग्रन्नपूर्णा नाम का मन्त्र है।

३६२० सन्त्रसम्रह् । पत्र स० फुटकर । भाग । भागा-सस्कृत । विषय-मन्त्र । र० व ।ल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५६८ । क भण्डार ।

विशेष — करीव ११५ यन्त्रों के चित्र हैं। प्रतिष्ठा ग्रादि विधानों मे काम ग्राने वाले चित्र हैं।

३६२१. महाविद्या (मन्त्रों का सम्रह्) "। पत्र स०२०। धा० ११३४ प्रद्भः । नापा-मस्कृत । त्रिपय-मन्त्रशास्त्र । र० काल × । ने० काल × । म्रपूर्ण । ने० स० ७६ । घ मण्डार ।

विशेष-रचना जैन कवि कृत है।

३६२२ यित्रग्रीकल्प । पत्र स०१। भ्रा० १२×५६ इ.च.। भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय-मन्त्र गास्त्र । र० काल × । ते॰ काल × । पूर्ण । वे॰ स० ६०५ । ट. भण्डार ।

३६२३ यत्र मत्रियिफल । पत्र स०१४ । आ०६३४८ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-मन्त्र गाम्त्र । र० काल × । ते० काल × । म्रपूर्ण । वे० स०१६६६ । ट भण्डार ।

विशेष—६२ यत्र मन्त्र सहित दिये हुये हैं। कुछ, यत्रों के खाली चित्र दिये हुये हैं। मन्त्र बीजाक्षरों में हैं।

३६२४ वर्द्धमानविद्याकलप—सिंहतिलक । पत्र स० ६ से २६ । मा० १०१४४ इ च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-मन्त्रज्ञास्त्र । र० काल × । ले० काल स० १४६५ । मपूर्ण । वे० स० १६६७ । ट भण्डार ।

विशेष-१ मे ४, ७, १०, १४, १६, १६ से २१ पत्र नहीं हैं। प्रति प्राचीन एव जोर्श है।

मर्वे पृष्ठ पर- श्री विदुधचन्द्रगरामृद्धिष्य श्रीसिहतिलक्सूरि रिमासाह्नाददेवतोन्दलविशदमना लिखत वान्करप ॥६६॥ इति श्रीसिहतिलक सूरिकृते वर्द्ध मानविद्याकरप ॥

हिन्दी गद्य उदाहररा- पत्र ८ पक्ति ५--

जाइ पुष्य सहस्र १२ जार । गूगल गउ बीस सहस्र ।।१२।। होम कीजइ विद्यालाभ हुई । पत्र = पक्ति ६— श्रो कुरु कुरु कामाख्यादेयी,कामहः श्रावीज २ । जग मन मोहनी सूती वड्ठी उटी

जरामरा हाथ जोडिकरि साम्ही भावइ । माहरी भक्ति गुरु को शक्ति वायदेवी कामास्था मण्हरी शक्ति ग्राकृषि ।

पृष्ठ २४ — मन्तिम पुष्पिका – इति वर्द्ध मानविद्याकल्यस्तृतीयाधिकार ।। ग्रायाप्रन्य १७५ मक्षर १६ स० १४६५ वर्षे सगरकूपकालाया अणिहह्मपाटकपरपर्याये श्रीयत्तनमहानगरेऽनेखि ।

म २१— दुविकालों के जनस्थार हैं। वी ब्लीन हैं। पत्र २६ पर गाविकेर नशा दिशा है।

६६९१ विकासम्बद्धिकान^{ाच्या} पत्र वं ⊌ाद्या १ ३००, ६ वाः नाता–शह्तः । विकासम्बद्धाः सारवार पत्रा ×ाते कस्तरः । वर्षी वे वं स्थापनकारः।

दिकीय-—पत्ती जण्डार में २ प्रशियां (वे सं प्रदेश प्रदेश) स्थालक वण्डार से हुआ सि (वे सं ६६१) मोर है।

३९२६ विद्यातुरुप्तसम्पर्मानकां ३० । या ११×४६ ६ घावस्य-संस्कृतार नान × । में कान तं १६ ६ प्रमानवानुकी २ । पूर्वावे वं ६६६ व्यावस्थार ।

দিন্দীয়া দুলা বাৰ্যানার ক্লম শী है। আই তথা আইলোমারা নিশিষা কৈ বছনাবঁ বা নার্যানালায়ী ক হাতে প্রতিকাল ক্ষমণাথাল ক বাঁচলিধি করেই। ব্যতিধানিক হথান) কবা ।

३६९७, प्रश्चित्तं क्षापण संस्थातं सम्बन्धः १८६२ श्रीविष्टपुरी दाने संस्थातः। मध्यरः।

विकेष---वङ्गालक बाह्यक नै मोरेबियि की की ।

३६३ द्र. सङ्ग्रह्माञ्चल्लाः) पण्डं ७ । सा १६३% ६३ इ.स. व्ययन्तिकः । विवय-गण्यस्य । इ.स.स. १ विवयः १ वृद्धं । वे वं १४२ । स्व क्ष्मारः ।

विवैद---नवाद ११ वर्गी का शंबह है।

३६२६ वटवर्गमम्।पार्यस्य । । शां १३४६ शस्त्र । वापा–र्वत्रटः) विषय-वन्त्रसस्य । र काल प्रासं कस्त्रप्रापुत्तः । वै र्वर् ११ क्षायन्यरः ।

विश्वेष-- मन्त्रवाला का प्रमा है।

. १६६ - सर्वाधिकायाः । पार्च १ । याः १११८ ६ यः। माना-वंदानः । विवय-नामधानः । र साम 🔀 ते मानाः ४ । पूर्वः । वै ४७० । स्व सम्बारः ।



विषय-कामशास्त्र

३६३१ कोकशास्त्र " । पत्र स० ६। मा० १०३×१६ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-कोक । र० कात × । ने० काल स० १८०३ । पूर्ण । वे० स० १९५६ । ट भण्डार ।

विशेष--निम्न विषयो का वर्णन है।

द्रावण्विधि, स्तम्भनविधि, बाजीकरण्, स्यूलीकरण्, गर्भाधान, गर्भस्तम्भन, सुखप्रसव, पुष्पधिनिवारण्, योनिसम्कारविधि ग्रादि ।

३६३२ कोकसार । पत्र स० ७ । आ० ६×६३ द व । भाषा-हिन्दी । विषय-कामकास्य । र० काल × । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० स० १२६ । क भण्डार ।

३६३३. कोकसार--आनन्द । पत्र स० ४ । आ० १३६४६६ इ च । मापा-हिन्दी । विषय-काम शास्त्र । र० काल × । ले० काल × । मपूर्ण । वे० सं० म१६ । आ भण्डार ।

३६३४ प्रति स०२। पत्र स०१७। ले० काल ×। अपूर्ण । वे० स०३६। स्व मण्डार।

इ६३४ प्रति स० ३। पत्र स० ३०। ते० काल ×। वे० स० २६४। मा भण्डार।

२६२६ प्रति स०४। पत्र स०१६। ते॰ काल स०१७३६ प्र० चैत्र सुदी ४। वे० स०१४५२। ट मण्डार।

विशेष---प्रांत जीर्गः है। जट्टू व्यास ने नरायरण में प्रतिलिपि की थी।

२६२५ कामसूत्र-किशिता। पत्र स० ३२। ग्रा० १०% ४४% इ.च.। भाषा-प्राकृत । विषय-काम शास्त्र । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्या । वे० स० २०५ । ख मण्डार ।

विशेष - इसमे काममूत्र की गाथावें दी हुई हैं। इसका दूसरा नाम सत्तसम्रसमत भी है।



3

विषय:- जिल्ल आस्त्र

३६६२४ विण्यतिर्माखिविधि^{०००००}। पत्र शंदाता १९२००३ ६ व । माना-हिन्दी । विषय-विशय सम्बद्धाः यस्त्र ×ाने कमा ×ाष्ट्रकी । वे ४६३ । क चच्चार ।

. २६३६. जिल्लानिर्धायनिर्धाः मान्य वं ६ । बा ११%कई इ.च.) वालानीक्यो । निषक्तीक्यां बारुव । र. कस्त × । ते. कस्त ×) कुर्ते (ते. वं. १९४) क नवार ।

१६५७ विव्यक्षिणीव्यक्षिपि-----ावश्च इं ६६। याः व्हे×६६ १४। पारा-वंदरा । विवस-विवरक्सा [जठिता] र कास ×। ते कास ×। पूर्वी । वे दे ९४०। च वस्तार ।

क्षिये --- नारी वाहम है। ये परशुक्तमानी बाह हारा निकित हिम्मी वर्ष वहित है। प्राप्त में ने नेप्र मी प्रीक्षण है। यह रे के एव एक प्रीवृद्धां कार के स्मोरों का हिम्मी क्ष्मणक दिया पता है। स्प्रोप है। वह दूर है देह तक दिवस निमोद्धानिक माना ही नहीं है। हवी के ताल १ प्राप्तिमानी के पित्र की दिवे पत्र हैं। (वे सं दूर) का कारण । क्रमणारोक्त निर्मित की है। वि सं पत्र माना अस्मार ।

३६४१ वास्तुविन्यास^{म्याभा}गयः वं १) थाः ६३४४३ वळः गण्या-संस्वयः पियन-स्मियस्थाः २० कारः अति कलः अत्रवीति सं १४४.(खुण्यारः)



विषय - लक्त्रगा एवं समीचा

३६४२ द्यारामपरीव्हाः । पत्र स०३। मा० ७×३३ ६व । भाषा-सस्कृत । विषय-समीजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १६४५ । ट भण्डार ।

३६४३ छद्शिरोमिण-शोमनाथ। पत्र स० ३१। मा० १४६ इ व । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-सक्षण । र० काल स० १८२६ ज्येष्ठ मुदी । ले० काल स० १८२६ फाग्रुण सुदी १० । पूर्ण । वै० स० १९३६ । स भण्डार ।

३६४४ छष्कीय कवित्त-भट्टारक सुरेन्द्रकीित । पत्र स० ६ । झा० १२४६ इंच । भाषा-सस्कृत । विवय-लक्षण ग्रन्थ । रे० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १५१४ । ट मण्डार । प्रन्तिम पुष्पिका- इति थ्री छदकीयकवित्वे कामधेन्वास्थे भट्टारकभी मुरेन्द्रकी तिविरिचित्ते समवृतप्रकरण समाप्त । प्रारम्भ मे कमलवध कृतित्त मे चित्र दिथे हैं।

३६४४. धर्मपरीज्ञाभाषा--दशर्थ निगोत्या । पत्र सं० १६१ । आ० १२×५३ इ च । भाषा-सस्तृत हिन्दी गद्य । विषय-समीक्षा । र० काल स० १७१८ । ते० काल स० १७५७ । पूर्ण । वे० स० ३६१ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-स्टित में मूल के साथ हिन्दी गद्य टीका है। ढोकाकार का परिचय-

साहु श्री हेमराज सुत मान हमीरदे जाणि।
कुल निगीत श्रावक धर्म दशरण सज्ञ वस्ताणि।।
सवत सतरासै सही श्रष्टादश श्रीधकाय।
फाग्रण तम एकादमी पूर्ण भई मुभाष।।
धर्म परीक्षा वचनिका मुदरदास सहाय।
साधर्मी जन समिक नै दशरण कृति चितलाय।।
टीका— विषया कै वसि पड्या किन्नण जीव पाप।
करै छै सह्यों न जाई तो थे दुखी होइ मरे।।

लेखक प्रशस्ति— सबते १७१७ वर्षे पीप शुक्का १२ भृगौवारे विवमा नगर्या (दौसा) जिन वैध्यालये लि० भट्टारक-भीनरेन्द्रकीति तत्विष्य प० (शिरधर) कटा हुआ। . 124] विषय एवं समीवा ३६४६ मतिसँ ⊃ापन नं ४ दाने नाम नं १७३१ नवधिर नदी ६। वे दे ३३ । ₹ बन्दार । निर्मेद---इति जी प्रमितिवृतिकृता वर्वपरीका कृत तिक्रणी बालकोबनायरीका तम क्रमांची द्यारवेन कृता: सम्बद्धाः । रेर्देश प्रतिसः २ । यम क १३१ । में मान वे १ १६ मानवा नुसी ११ । वे १३१ । क क्षकार । १६४८, वर्षपरीका—कमितिसित । वद वं १ । सा १२×४, इव । बादा संस्टा । विवय-तनीसा।र गल वं १ ७ । में गल वं १ व४ । पूर्वा वे वं २१२ । स्वयार । ३६४ प्रतिस २ । पत्र सं ७६ । के बाल सं १ द चैव लूपी १६ । वे व ६३६ । म मचार । विभेर--- तमी बचार में २ प्रतियों (वे वं ७०४ १४६) भीर है। १६८ प्रतिसः ३। पन सं १६१ । ने तत्त्र सं १९६९ भारता नुरी ४ १वे नं १६८ । स THE ! **३६४१ प्रतिस ४ ।** पन सं ६४ । वे नक्त तं १७६७ नाव **पूरी** १ । वे स**े १९८ । क भवार** । रेक्टर प्रतिका ≿ापन वंददाने नाम ×ावे वंदवराचामणार । विकेष---वित जानीत है 1 देहेंद्रदे प्रतिसंहि। या नंहरू। ते यान संहरू देशक बुसी है। वे वंद्रदेश क् बच्चार । नियेप—अन्तरशीन ने याचननाम ने निका नना है । नेबक प्रपतित यपूर्ण है है इसी बच्चार में २ प्रतियों (वे संद ११) शीर हैं। देशक्ष प्रतिसंक। यक्तं इष्टाते यावा 🗙 । वे ११६ । या वणारः। वियेश-इबी अध्याद में २ प्रतियां (वे से १४४ ४७४) गीए हैं। ३६४४. ¤शिस का पत्र के कदाने पान में १६१३ मादवा बुदी १३ वर्ष में १९४० i द्र बचार । विक्रीय--राजपुर वे की पश्चान पैत्यालय ने जबू है जिल्लालर व भी धर्मप्रल नी दिशा। पन्तिय पप चटा हुमा है।

```
३४७
```

३६५६ धर्मपरीलाभाषा-मनोहरदास सोती । पत्र तं० १०२। मा० १०१×८३ दच। नाषा-हिन्दी पद्य । विषय-ममीक्षा । र० कान १७०० । ले० काल ग० १८०१ काष्ट्रम् सुदी ४ । पूर्ण । पे० स० ७७३ । छ भण्डार । विरोप-इसी भण्डार में १ प्रति मपूर्ण (वे० स० ११६६) भीर हैं। ३६५७ प्रति स०२ । पत्र न० १११ । ले० काल म० १६५४ । वे० न० ३३६ । क भण्डार । ३६४८ प्रति स०३ । पत्र स०११४ । ले० काल स०१८२६ प्रापाढ युदी ६ । वे० स०४६४ । च भण्डार । विशेष—हमराज ने जयपुर में प्रतिलिपि नी थी। पत्र निपके हुये हैं। इसी भण्डार में १ प्रति (वे० स० ५६६) भीर है। ३६४६ प्रति सद ४। पत्र स० १६३। ले॰ काल सं॰ १८३०। वे॰ स॰ ३४५। क भण्डार। विशेष-ने शरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार मे १ प्रति (यै० स० १३६) मोर है। ३६६० प्रति स्०५। पत्र न०१०३। ले० वाल स०१८२४। वे० स०५२। व्य भण्डार। विशेष-विवतराम गोघा ने प्रतिनिधि भी थी। इसी मण्डार मे १ प्रति (वे० स० ३१४) धीर है। ३६६१ धर्मपरीसामापा—पन्नालाल चौधरी। पत्र त० ३८६ । पा० ११×४३ इ च । भाषा-हिन्दी गरा । विषय-ममीक्षा । र० वाल स० १९३२ । ले॰ काल स० १९४२ । पूर्ण । वे० स० ३३८ । क भण्डार । ३६६२ प्रति सद २। पत्र म० ३२२। न० काल मै० १६३८। वे० स० ३३७। क मण्डार। ३६६३ प्रति स० ३ । पत्र स० २५० । ते० काल स० १६३६ । वै० स० ३३४ । ह भण्डार । विद्योप-इसी भण्डार में २ प्रतिया (वे॰ स॰ ३३३, ३३५) ग्रीर हैं। ३६६४ प्रति स०४। पत्र स०१६२। ते० काल 🔀 । वे० स०१७०७। ट मण्डार। ३६६४ धर्मपरीस्तारास-त्र- जिनदास । पत्र स० १८ । मा० ११×४६ ६व । भाषा-हिसी । विषय-समीक्षा । र० काल 🗴 । ले० काल स० १६०२ फागुरा सुदी ११ । अपूर्ण । वे० स० ६७३ । स्र मण्डार । विशेष- १६ व १७था पत्र नहीं है। श्रन्तिम १६वें ग्राप्त जीराविस स्तोत्र हैं। धादिभाग---धर्म जिलीमर २ नमू ते सार, तीर्यंकर जे पनरमु वाछित फल बहु दान दातार.

सारदा स्वामिणि वली तब्र

नवरा एवं समीजां]

पुत्र वेदवादा थीपक्रवर लावी तपकरचंची वक्तरोत्ति करवार,
युवि करवर्ष्योति चार प्रकृति करित्रु राज्युं वार ॥१॥
इतः— चरव ररीजा रर्फ निरुपत्री करिक्य युव्यु वहाँ थार ।
वहा निरुपत्र वाहि विरुप्त अर्थ कांत्रु विरुप्त ।

ि सम्बद्ध एवं समीका

बद्धा निरुद्धात नहीं विराज्य जिन कोत् विवार ११९१ कनक रतन साधिक सावि गरीका करी बीजिशार १ तिस वरन गरीबीड करा बीजि कनतार ११६॥

> व्हा विज्ञास विश्वन पहु एक मेन विश्वार ॥६ ॥ मरपरिमारकवित्तम् चरनकर्युं विश्वल । यदि मुख्यि वे बोर्मानं देहिंग काथि यदि सन् ॥६६॥ वृद्धि करियोका एक समझा

र्वेदर् १६ १ वर्षे चक्कुत तुद्धे ११ वित्रे पूरतस्थाने भी बीतचवाच चैतावये धारार्थे भी निनर्गरीत्तः भीरतः नेपात्रकेत विकास समावितः ।

३६६६ वर्षरिक्वायायाः । पर तं ६ ते र । या. ११४० रणः। जला-हिणीः निषन-यर्गस्याः र्वतस्य ८ ते जस्य ४ । सङ्क्षीः वे ३६१ । अस्यस्य ।

१६६७ मुक्कि क्रक्या प्राप्ता । यत्र वं १। वा. ११४८ ६ न । यापा-संस्टातः निपन-सम्मान्तः। र नामा ४। ने कस्त्र ४। पूर्वः । वे. वयापाः।

१६६८ रक्षपरिका—राजकति । कार्य १७ । या ११% ४३ इ.च. माना-केली । निपन-सम्बद्ध कच्च हर सम्बद्ध र से सम्बद्ध । दुर्च । वे चं १३ । व्या सम्बद्ध ।

निकंप-सम्बद्धी में असिकिए हुई की ।

प्रारम्भ--- बुद मक्तारी बरावणि वानीरे गाँउ वन है हुनि ।
कारावृद्धि कोष्यु रणी राज्य गरीमा तुर्वि ।।१व राज्य ग्रीशमा क्रम में राज्य गरीम्मा ताल । कुद्ध वेष गरावार है जाना गरीम्मा ताल । व्याप राज्य होने राज्य गरीम्मा राज्य गरीम्मा राज्य गरीम्मा राज्य गरीम्मा राज्य गरीमा राज्य गरीमा ।।१६१० ३६६६ रसमस्तरीटीका-टीकाकार गोपालभट्ट। पत्र सं०१२ । मा० ११४४ इ'च । भाषा-सम्कृत । विषय-सक्षग्राय । र० काल × । ते० काल × । प्रपूर्ण । वे० स० २०४३ । ट भण्डार ।

विशेष-१२ से भागे पत्र मही ह।

३६७०. रसमञ्जरी-भानुदत्तिमिश्र । पत्र स० १७ । मा० १२×१३ ६ च । भाषा-संस्कृत । विषय-सक्षाग्रन्य । र० काल × । ते० काल म० १८२७ पीप मुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ६४१ । स्त्र भण्डार ।

३६७१. प्रति स०२। पत्र म०३७। मे० काल स० १६३५ झासोज सुदी १३। वे० स०२३६। ज भण्डार।

३६७२ वक्ताश्रोतालत्त्रण । पत्र स० १। ग्रा० १२६/४४ द्रश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लक्षरण ग्रन्थ । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६४२ । क मण्डार ।

३६७३ प्रति संट २। पत्र स० ४। ले॰ काल ×। वे॰ स॰ ६४३। क भण्डार।

३६७४ वक्ताश्रोतालन्त्रण । पत्र स० ८। म्रा० १२४४ इद्य । भाषा-सस्कृत । विषय-लक्षरण मन्य । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० ६४४ । क भण्डार ।

३६७४ प्रति स०२। पत्र स०४। ले॰ काल ×। वै० स० ६८५। क भण्डार।

३६७६ शृद्धारतिलक--- स्ट्रभट्ट । पत्र स० २४ । आ० १२६×५ इख्र । आपा-सस्तृत । विषय-सक्षण ग्रंथ । र० काल × । ले० काल × । मपूर्ण । वे० स० ६३६ । श्र भण्डार ।

३६७७ शृङ्गारतिनक-कार्किदाम। पम स०२। धा०१३×६ इख्र। भाषा-सस्कृत। विषय-सक्षणप्रन्य। र० नात ×। ते० कान स०१८३७। पूर्ण। वे० स०११४१। स्त्र भण्डार।

इति श्री कालिदास कृती मुङ्गारतिलक सपूर्णम्

प्रशस्ति— संवत्सरे सप्तित्रकवर्ष्येदु मिते ग्रसाढसुवी १६ त्रयोदस्यां पिहतजी श्री हीरानन्दजी तिस्छप्य पिहतजी श्री भोक्षमन्दजी तिन्छ्य पिहत विषयवताजिनदासेन लिपीकृत । भूरामलजी या ग्राका ।।

३६७८ स्त्रीलाम्स । पम म० ४। मा० ११३-४५६ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-लक्षसाग्रन्य । रे० काल ४। से० काल ४। मपूर्ण । वे० स० ११८१ । स्त्र भण्डार ।



विषय- कागु रासा एवं वेलि साहित्य

व्हरूपा प्रश्नासम्बद्धाः स्थापना स्यापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापन स्थाप

निमेच-मन्त्रिय प्रचरित निम्ब मन्त्रार है--

राय रुष्यु करीं कहारा यह इसी प्रकार नोर्दे हैं।
वितर् क्रांस्त कर कहा कुछ किया गोर्च्य होई है।
वेतर क्रेंसर कर केंद्र कहा कुछ किया गोर्च्य होई है।
वेतर क्रेंसर कर केंद्र कहा हो केंद्र रूप गायु है।
ठा नाम मानक हक निकार निकार केंद्र पूरी पर खानद है।
ठान प्रकार हक किया निकार केंद्र पूरी पर खानद है।
गाय प्रकार नेहिंग करों दिन केंद्र पूरी पर खानद है।
गाय प्रकार नेहिंग करों है कहा है कह प्रकार केंद्र है।
शाय प्रकार केंद्र करना है कह प्रकार क्रमण्य है।
शाय प्रकार केंद्र करना है कह प्रकार क्रमण्य है।
परक्ष प्रकार केंद्र करा है कह प्रकार के है।
प्राथमना हैने कही कहा निकार कर हिंद्र प्रकार है।
परक्ष प्रकार केंद्र कहा नहीं है है।

. १६८ - च्यादीयरफरा-च्यानपृत्यम् । पत्र र्थं ४ । सा. ११४८ र्रथः । भाग-मिली । निरद-च्या (क्यान स्राधनान कर नर्सन है) । एं कम्प ४ (ते ताल र्थं १४६२ वेदान तृष्टे १ ∫ यूर्त । ते वं ५१। क्र मच्यार ।

िस्थेय-ची द्वाविंग स्तृतिक भी बागदुम्स दुविया गर्म गणास्त्रती वर्णवयाने निर्माति । १६८९ प्रतिकार्ग म् । यम स १९ ति र । में नाम × । में सं ७ ए । स स्वयार । १६८९ क्रांतकृतिविवासराम - चनारसीक्षा । यम सं १ । यान १०४४ ए व । सम्मानिकी । विवय-स्ता । र काम सं १ । में नाम सं १ ४ । पूर्ण । में सं १६२७ । स समार ।

1

३६⊏३ चून्द्रस्वालारास पत्र स० २ । ग्रा० ६३,४४३ इ.च । भाषा–हिन्दी । प्रिपय–सती चन्दनवाला वी कथा है । र० काल ४ । पे० काल ४ । पूर्ण । वे० स० २१६५ । श्र्य भण्डार ।

३६८४ चन्द्रलेहारास— मित्रुशल । पत्र स० २६ । घा० १०४४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-रासा (चन्द्रलेखा की कथा है) र० काल स० १७२८ ग्रामोज बुदी १० । ले० काल स० १८२६ ग्रामोज नुदी । पूर्ण । वे० स० २१७१ । श्रा भण्डार ।

विशेष—धनवरावाद में प्रतिलिपि की गयी थी। दशा जीर्सा घीर्स तथा लिपि विकृत एव प्रशुद्ध है। प्रारम्भिक २ पद्य पत्र फटा हुमा होने के कारसा नहीं लिखे गये हैं।

सामाइक सुघा करो, त्रिकरण सुद्ध त्तिकाल !
सत्रु मित्र समतागिण, तिमतुटै जग जाल । ३।।
मस्देवि भरथादि मुनि, करो समाइक सार !
केवल वमला तिगा वरी, पाम्यो भवनो पार ।।४।।
सामाइक मन सुद्ध करी, पामी द्वाम पकता ।
तिथ ऊपरिन्दु साभलो, चद्रनेहा चरित्र ।।४।।
यचन कला तेह वनिछै, सरसध रसाल ।
तीणे जागु सक्त पडसो, सोभलता खुस्याल ।।६।।
सवत् सिद्धि वर मुनिससी जी वद मासू दसम विचार
धी पभीयाल मैं प्रेम स. एह रच्यी ग्राधिकार ।।१२।

मित्रम---

तीरो जागु सक्त पडसी, सोभलता खुस्याल ॥६॥
सवत् सिद्धि वर मुनिससी जी वद मासू दसम विचार ।
श्री पभीयाल मैं प्रेम सु, एह रच्यी ग्रिषकार ॥१२॥
स्वरतर गरापित मुसकरूजी, श्री जिन सूरिद ।
बढवती जिम साला खमनीजी, जो धू रजनीस दिराद ॥१३॥
सुगुरा श्री सुगुराकीरित गर्गाजी, वाचक पदवी घरत ।
ग्रतयवामी चिर गयो जी, मितवसम महत ॥१४॥
प्रथमत सुसी मति प्रेम स्यु जी, मितकुसल कहै एम ।
सामाइक मन सुद्ध करो जी, जीव वए भ्रद्ध लेहा जेम ॥१४॥
रतनवस्रम ग्रुरु सानिधम, ए कीयो प्रथम ग्रम्यास ।
स्वसय चौवीस गाहा मुखु जी, चग्रुगातीस ढाल उल्हास ॥१६॥
भरो गुरुगे सुरी भावस्यु जी, गरुमातरग ग्रुग जेह ।
मन सुघ जिनधम तैं करें जी, श्री भुवन पति हुवै तेह ॥१॥
सर्व गाया ६२४। इति चन्द्रलेहारास सप्रशं॥

```
€₹ ]
```

भाग रामा पर्व विक साहि

वेद्यारः अञ्चतासूच्यास-कानम्पर्या । पत्र श्रे २ । वा १ - XY) इ.च । भारा-दिनी पुत्रपत

दियय-राताः र: कस्त ×। वे कस्त ×। पूर्वि | वे १३७ | इ. वध्दार ।

विदेश---वन कारने भी विकि का वर्शन रात के वप में विमा बया है। १६८६ पद्माराजिमद्रशस—किनराजस्रि । वर्ष वे २६। या ७, ४४३ इस । मना-निर्द

वितर-राता। र नाम ने १६७२ धालोज बुधी ६। ते काल ×ापूर्ण । वे सं १६४० । वा नामार।

विकेश-वित प्रवाधिकव्यवासि ने विश्वोध नगर में प्राव्धिकरि की थी।

देद्र⊏≉ वर्मरासा—***। यव वं २ के २ । सा ११×६ इ.च । शासा-शिलो । विरय-वर्ग । र

बार X । ते कान X । बनुर्ता के घं १३४० । ≳ अप्तार ।

नियेत-निर्देश, ब्रह्म तथा २ ते बाये के पर वही हैं !

१६८८. जबकाररास^{्याच्या} १४ वं १ | या १ 💥 ३६ | धारा-दिग्या । दिवर-सुनीसार मन

बहाल्य वर्त्तव है। रं्याल ⋉ाते बाय वं १०६१ काहुत शूरी १२ । पूर्ण । वे वं ११ २ । मा सम्बार

३६८६ नेमिनावरास-विजयवेषस्ति । पत्र तं । वा १ ×४३ ६व । भारा-दिन्धे । विगय-

इला (भवदान नेनिनान कावर्तन है)। ए यक्त ×ा के यस्त वं १२६ पीप नुर्राद। नुर्गाने वं १ २६ । धा भगाएँ ।

रिमेर--वरपुर वे ब्राम्बियराम नै प्रक्रिनियि की की । ३३६ नेमिनाबरास-वारिशमकन्द्रः रव वं ३१ छ। १३८४, इ.व.। प्रापा-दिनी।

सिप्त-रामा।र गाउ×।के नास×।वर्ताके वे २१४ । था मनार। feite-urfenn-व्यक्तित विश्व वे बारधीया जरजाया बलपार ।

शंचार देश्यक सहीतर नी बार ॥१॥ बीक्सारी बीचु हुवा, शामनी रह नेप : चित्रेत्रहर सीवा वसी जावन वे घर हैय ॥१॥ बल जिलेगर वनिरामा ------नुबनारी तीरक देने राज नीवन देन वन मोटीवात ।

क्षाती वनधे पुत्रारकाय ॥१॥ बब्द दिने तिहांबुर नेवा देती राजी करेन ह बहारको बारी बहीए ॥२॥

भागु रामा एव वेलि साहित्य]

जाग जन(म)मीया प्रशिक्षत देव इह बोसट सारे।
ज्यारी वि में वाल प्रहाचारी वावा ममोए ॥३॥

मन्तिम--

मिल ऊपर पत्र ढालियो दीठो दोय सुत्रा में निचोडरे। तिसा मनुसार माकक है, रिषि रामच जी कीनी जोड रे ॥१३॥

इति लिखतु श्री श्री उमाजीरी तत् मीपणी छाटाजीरी चेलीह सतु सीखतु पाली मदे । पाली मे प्रतिलिपि

3६६१ नेमीश्वरफाग—न्नस्रारायमञ्जापन त० द मे ७०। ग्रा० ६४४ है इन । भाषा-हिन्दी । विषय-फाग्रु। र० काल ४। ले० काल ४। प्रपूर्ण । वे० म० ३८३। इन भण्डार।

३६६२ पचेन्द्रियरास । पत्र स॰ ३। मा॰ ६४४ ई इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-रासा (पाची इन्द्रियों के विषय का वर्णन है)। र० काल ४। सं० वाल ४ । पूर्णा । वे० स० १३५६ । स्त्र भण्डार ।

३६६३ पल्यविधानरास-भ० गुभचन्द्र । पत्र न० १। मा० ५१ ४४ इन । भाषा- हन्दी । विषय-रामा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० त० ४४३ । क भण्डार ।

विशेष-पत्यविधानयस का वर्णन है।

३३६४ वकचूलराम- जयकीति । पत्र स० ४ से १७ । पा० ६×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-रासा (क्या) । र० काल म० १६६५ । ते० काल स० १६६३ फागुण बुदी १३ । प्रपूर्ण । वे० स० २०६२ । अप्र भण्डार ।

विशेष-प्रारम्म के ३ पत्र मही है। ग्रन्थ प्रशस्त-

कया सुर्गी बनन्त्रतनी श्रेणिक धरी उल्लास । बोरिन वादी भावमु पुदुत राजग्रह वास ॥१॥ सवत सोल पन्धासीइ गूर्जिर देस मकार । कन्धविद्वीपुर सोभती इन्द्रपुरी धवतार ॥२॥ मरिसपपुरा वाणिक वसि दया धर्म सुस्तकद । चैरेगिति श्री धूपभवि भावि भवीयण वृद ॥३॥ काष्ट्रासघ विद्यागणे श्री सोमकीर्ति मही सोम । विजयसेन विजयाकर यहाकीर्ति यहास्तोम ॥४॥ उदयमेन महीमोदय विश्ववनकीर्ति विस्थात । रत्नभूपण गछपती हवा भुवनरयण जेहजात ॥४॥

```
[ प्रश्नु रासा पन पत्रि सादिश्व

पत्त पाँदु पूरीवरण्डु बनगीति चनकार ।

वै धरिकार गरि धांनारि दे पायी अपपार ।।६।।

वरणुगर रंगीया गणु वरणुन बीजु माम ।

वेद राम रणु वरणु व्यापीति पुनवाम ।।७।।

वीय कान निर्मेण हुई प्रवचनि रिर्दार ।

माम्कारी नेपूर्व में वै चलि जारिकार ।।॥।

वार कामर नाव महिन्देष पुर विवचाम ।

भवरोति कविद्वा पुनु वेद्याम ।
```

इति विक्रमण्ड स्वातः । रंडन् १९८९ वर स्टाप्टल पुत्ती १३ दिल्लाह हाने सवार्त स्कूरण भी समर्गीत स्थापना भी गोरचेड स्क्रा भी समर्थन माह स्कूरा वा नीम एक ब्रह्म भी समर्थन सवार्त ।

३६८४: अनिष्यकृत्तराख-न्य्यायसङ्ख्यानन सं ६६। या ११४: वक्षा स्ताना हिन्छी। विश्वस-एला-विश्वस्ता नी बना है। रंजन सं १६६३ कॉलिप युधि १४। के दल ×। हुन्ही। वे सं ६६। आ क्यार।

। १६६६ महिन्दं भित्रकृष्ट स्थापन के १६। ने पाल सं १७०४। वे वं १९६ । इ. जप्पार। विकेश-कारोप संक्षी जीवनाम पैलालम में थी अगुरूप के केवलीति के विकार स्थापन सोली ने प्रतिनिधि

की की 1

. १६८७ प्रति सं १ । पत्र सं १ । में नाम सं १ वर्ष । में सं १६६ अस्मानकार ।

विकेश-च - कामुरान ने कन्तुर में अविविद्यार की की।

at दें। ११२ फा दें साने सन्य पाठ दें।

क्तके प्रतिरिक्त का सम्बार में १ मधि (वे सं १६२) का मण्यार ने १ मधि (वे सं १६१) तमा स्क्र अम्बार में १ मधि (वे सं १६१) जीर कें।

१६६८ क्यारिशीविकादवेकि (क्रम्यक्यस्थितिक)--प्राणीताव राठीव । १४ व ११ वे १२१। वा १४९ इ.च. जशा-दिली : विषय-नीति । ए चला वं १६१ । ते कला वं १७११ वैच दुरी १। सपूर्त । ते वं १६४ । क्रमणारः

निकीय---वैत्तनियों में जाहतमा जनसम्ब ने करितियिंग की भी। ६६ क्या है। हिन्दी वस में डीका मी दी

फागु रामा एव वेलि साहित्य]

३६६६ शीलरामा—विजयदेव सूरि। पर स०४ मे ७। ग्रा॰ १०६४८ इच। नापा-हिन्दी। विषय-रामा। र० काल ४। ले० काल स०१६३७ फागुगा सुदी १३। वे० स०१६६६। ग्रा नण्डार।

विशेष-लेखन प्रशस्ति निम्न प्रनार है-

मवत् १६३७ वर्षे फागुण मुदी १३ गुरवारे श्रीसरतरगच्छे शाचार्य श्री राजरत्नमूरि शिष्य प व निवन्ग लिखत । उसवसेसघ वालेचा गोत्रे सा हीरा पुत्री रतन मु श्राविका नाली पठनार्यं लिखित दारमध्ये ।

भन्तिम पाठ निम्न प्रकार है-

थीपूज्यपासचद तगाद सुपमाय

सीस धरी निज निरमल भाइ।

नयर जालवरहि जागतु,

नेमि नमज नित वैकर जोडि ॥

बीनतो एह जि वीनवज,

इक लिए। यम्ह मन वीन विद्धोडि ।

सील सघातइ जी प्रीतही.

उत्तराध्ययन वाबीसम् जोइ ॥

वली भ्रने राय थवी भ्रश्य भ्राज्ञा विना जे बहसु होइ। विफल हा यो भुक्त पातन मोइ, जिम जिन भाष्यठ ते सही।। दुरित नद दुनस सहरइ दूरि, वेगि मनोरथ माहरा पूरि। भ्राग्तमुसयम भागिया, इम योनवड श्री विजयदेव सूरि।।

।। इति गील रामउ समाप्त ।।

३,७०० प्रति स०२ । पत्र स०२ सं७ । ले० काल म०१७०५ म्रामोज मुदी १८ । ने० स०२०६१ । स्त्र मण्डार ।

विशेष-मामेर मे प्रतिलिपि हुई थी।

३७०१ प्रति स० ३। पत्र म० १२। ल० काल 🗙 । वे० स० २५७। व्य भण्डार ।

३७०२ श्रीपालरास — जिनहर्षगिग्। पत्र १०१०। ग्रा०१०४४ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-रासा (श्रीपान रासा की कथा है)। र० काल म०१७४२ चैत्र बुदी १३। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स० ६३०। स्य भण्डार।

विशेष-मादि एव मन्त भाग निम्न प्रकार है-

_ (fi]

नीजिनाद नवा ।। इस्य निक्ती ॥

चार्योमें महादु किलास्य बान प्रशास वदानिर्द रात ।
सुरवेदा वरि रियव नकार्स, नहिन्दु नवरस्यत स्विकार ।।
नव वन बह सबर ववेद सिनि नवदरस सबत नहिन्दु रहा विश्वचित्र नवदर कुलाबर सुन्द नाम्यो औरान्त वरस्यत ।।
सर्विष्य कर्मा कुलाबर सुन्द नाम्यो औरान्त वरस्यत ।।
सर्विष्य कर सब पर क्षेत्रीय चनित्र करिर करो कीरोव ।
साम चरित्र वहं हिठ काली मुक्तिओ वस्तारे कुक वस्ती ।।

बन्तिम---

परित्म परित्र मिहानवर्षः, निवरण नवरण वर्षः । प्रित्म परित्म परित्र मिहानवर्षः, निवरण नवरण वर्षः । मार्थितः इत्य राहितः, वर्षाः वर्षः विश्वारः । अत्य नवस्य वर्षः मिहारः । अत्य नवस्य स्थानित । अत्य स्था

३,७८३ प्रतिसः २ । तस्यं १७। ते तालातं १००२ मारवायुपी १९। नै यं ७२२। सः सम्बारः

कमार। रु⊌ ४ वडकेस्थावेकि—साह कोहरः (तम वं १९।मा _२>√ई ईप। बारा-हम्बं (विवय-

निदात । र राज वं १७३ वाणीन कृती ६। में जाल ×। पूर्ल । में वं । ऋ क्यार ।

२००८ हुड्म्प्सलामीरास-न्या जिल्लासः । या व १४ । या १ १८८१ १व । मता-दिनी दुबरादी । रियन-प्रवा (बुद्धमान दुनि ना वर्तन)। यः कलः सं १६६६ । दुर्ण । ३ व १६६ । घः कथार ।

रूप हृ सुद्दालग्रास—मञ्ज्ञात्रकात्रः । पत्र तं १६। या १९४६ दक्षावसा—दिन्ते । नितर रासा (देकपूरर्पव नावर्णव है) । ए काला वं १९१६। वे वाला तं १७६६ । पूर्वा रे घं १ ४६। व्य कमारः

विकेच—काह बालक्य काल्तीयाम ने प्रतितिथि नी नी ह

३० कर. प्रतिसंदानका ११। के नाम वं १७२२ वालका नुसार । वे तं १६। गर्छ सामकार फागु रामा एवं चेलि माहित्य] 3 E. ३७८= सुभौमचक्रवत्तिरास—जातिननस्य । पत्र म० १३ । मा० १०३×४ इद्य । भाषा-हिन्दी ।

विषय-तथा। र० वात 🟏 । से० गाल 🔀 । पूर्ण । वे० म० १६२ । झ्न भण्यार ।

3७०६ हमीररासो—महेश विश्व पत्र म० ८८। मा० ६×६ इश्र । भागा-हिन्दी । विषय-रामा (ऐतिहासिर)! "० रात ४। ते० यात ग० १८८३ यासीज मुता ३ । अपूर्ण । ते० म० ६०४। उट भण्डार ।



विषय- गरिगत शास्त्र ----

देवरे समितनासमासा—हरत्यात्रय वं १४ । या ६२,४४ ईयः। कारा-वंदग्यात्रय-पनिस्तरस्य । र याच ४ । के याच ४ । सुरा । दे वं ४ । स्य सम्बर्धाः

रैन्द्री स्थितसाल्यः । यस नंदर्शाया ६ \times ६ \S दक्षः सल्य-संस्त्र । विस्त-सिंद्यः र यस \times । ते यस \times । दर्शा । नंबा । क्षायारा

१७१२ मध्यितसार—हेबराक) पत्र मं १। सः १२४ १व । मनरः हिनो । निपर्य-गीलन । र पात्र ४। में साल ४। मध्ये । के न २१२१ । चायपारः।

विवेद-हार्राये पर कुमर वेपकृते हैं । यह जीर्य है क्या बीच ने एए पर नहीं है है

३ १३ वही पहाड़ों की युक्तक ~~। पर से ४ । बा १४६ वह । पाता—हिनी । पिरस्-मिला। र पन्न ४ । से पण् ४ । बहुर्गा से सं १९९० । इंबल्यार (

निरोध-साइक्स में बता ने मैकों को बोटी मार्थ कल्पण वानने की विधि की है। दून राव है में ३ तक श्रीको वर्ण नमाम्बद्धः । मार्थि की वाचो मीमियी (वादिको) ना वर्णन है। यह ४ में १ तक वादिक्य मीटि के स्थोक है। यह १ से ३१ तक च्याने हैं। मिनी १ जबह यहांथा यह मुख्यम्य एवा है। ३१ में ३६ तक दोल ना। के कुद विशे हुए हैं। मिनन याठ भीर हैं।

१ इरिनासमात्रा-राष्ट्रशाचानं । बंत्सूय ९० १ ४७ ।

श्रीदुलगांवकी श्रीका - हिम्छी पर ४१ तक।

रिकेच- बाल उत्तर का वर्तन

६ साम्बाधीगीटा~ वन ८६ ह∓।

¥ रनेदबीका--- वत्र ४७ (अनूर्न)

३७१४ राज्यसम्बर्धाः — । पत्र सं २ । स्मा_र४४ दश्च । त्राया-स्लिपी । दिवस परितन्त्रस्य ; इ. सक्त ×ाने वक्त ×ाकुर्वाचे सं १४२० । स्य सम्बर्धाः

३०१४. श्रीकाण्यीमाणा—भोड्यमिकाः प्यर्था । या ११८६ दयः प्रसादिन्यीः प्रियन-प्रक्तिप्रस्यार राज्यक्षं १७१४ । जिल्लासं १६ प्रमुक्तं द्वर्षः १ अर्थासम्बरः।

निकंप--नेकर स्थाति पूर्व है

३७१६. लीलावतीभाषा-च्याम मशुरादास । पत्र म०३। या० ६४४३ इच । भाषा-हिदी । विषय-गणितशास्त्र । र० माल ४ । ले० माल ४ । प्रपूर्ण । वे० म० ६४१ । क भण्डार ।

३७१७ प्रति स०२ । पत्र म० ४४ । मे० काल 🕸 । वै० स० १४४ । व्य नण्डार ।

३७१८ लीलावतीभाषा । पत्र न०१३। मा०१३४८ दश्च । नापा-हिर्दा । विषय-गिरात । र०काल ४ । ले०काल ४ । मपूर्ण । वे० स०६७१ । च भण्डार ।

३७१६ प्रति स०२। पत्र म०२७। ते बगन ×। प्रपूर्ण। वै० स०१६८२। ट मण्डार।
३७२० लीलावती—भारकराचार्य। पत्र स०१७६। ग्रा०११३४४ इन। भागा-मस्तृत।
विषय-गण्ति। र० वात ×। ते० कात ×। पूर्ण। वे० म०१३६७। श्र भण्डार।

वियेण-प्रति सस्रुत टीका सहित सुन्दर एय नयीन है।

३७२१ प्रति स०२। पत्र स०४१। ने० बाल म०१८६२ भादवा बुदी २। वे० स० १७०। स्व भण्डार।

विशेष--महाराजा जगतिमह ने शासनवात में मागावचाद में पुत्र मनोरघराम सेठी ने हिण्डीन में प्रति-लिपि की थी।

> ३७२२ प्रति स० ३ । पत्र स० १४४ । ले० वाल × । ये० स० ३२६ । च भण्डार । विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिमा (वे० स० ३२४ मे ३२७ तक) मीर हैं। ३७२३ प्रति स० ४ । पत्र स० ४८ । ले० काल स० १७६५ । ये० स० २१६ । मा भण्डार । विशेष—इसी भण्डार मे २ मधूर्ण प्रतिया (वे० स० २२०, २२१) भीर हैं। ३७२४ प्रति स० ४ । पत्र स० ४१ । ले० काल × । मधूर्ण । वे० स० १६६३ । ट भण्डार ।



निषय~ गरिगत-शास्त्र

देश्री गरिवरनायमाला—हरत्या पत्र सं १४० वा १३४४४च । जला-संस्कृत । विचय-परिवरमञ्जार राज्य ×ाणे जान ×ापुरा । वे सं ४ । ज्या सम्बार ।

ने क्रेरै स्थित साला प्रकृत कर्म दराबा ६×६६ इक्षाबला- मॅलूद ∤ क्रिक्- मॉलूबार नाम ×। में मान ×। दुर्लो क्रिके क्रिका क्रिक्सार।

रेचरेण्यानिकसार—हसराकाण्यानं द्राया १२४ इकाण्याहिन्दीः पियरूपील्याः र राज×(से समा×ाध्युलीः के प्रदेश्हाचामण्यारः

विदेश-शामिने वर मुखर नेमबुरे हैं । यह बीर्ज है तका बीच में एक पन नहीं है ।

३०१३ पट्टी पदाक्षी की पुलबक रूर्णायक ते ८०। वा १४६ वर्ष । जाना-निर्णी । विषय-विच्या र तम ×ाने जन्म ≮) ब्रह्मणी के ते १६२ । ब क्यारा

िमेल — झारक ने पक्षा में नेतों पी बारी धार्वि बलपर बार्णियों है। पुत्र पर हो ३ वक श्रीमा वर्णव्यास्थाः। सार्वियो पापा मंत्रियो (पारियो) पायमंत्र है। पर ४ न १ तक पारित्ययं सीति के स्मोक है। पर १ में ११ तक बहुते हैं। निमी २ जयक पहार्शपर पुत्रापित पर है। ११ में १६ तक बोला नार के दूर विदेषुचे हैं। निम्म पाठ भीर हैं।

१ इरिनाममाह्या--राष्ट्रशाचाव । क्षत्रुत वर १० तर ।

% स**द्वारांवकी बीका**— हिम्सी पन ४६ तक इ

विकेष-इप्ल स्थार का वर्तन

प्रश्नेद्रवीका— **र**र ४७ (गार्न)

३,७१४ राज्यसमाहारूर्णाचयर्व २। सा X४६मा नापा-हिल्पी। विवय प्रतिनासका र सल्ल Xाके काल Xापूर्वावे दंशकाधा सम्पारा

६-०११८ क्रीकाश्यीमाधा—स्मेदलीयनापण रंग्ना ११४६ इ.च. । जलाहिन्दीः विचर्न-परिस्थमपराद कलालं १०१४ । वंपणार्थं इ.च. स्माप्तकानुर्वेद । दुर्लाके संदर्भ । सामन्यार ।

विवेप-निवार महस्ति पूर्व है

गणित-शास्त्र]

३७१६. लीलावतीभाषा—व्यास मथुरादास । पत्र स०३। श्रा० ६४४३ छच । भाषा-हिदी । विषय-गिएतशास्त्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । धपूर्ण । वै० म० ६४१ । क भण्डार ।

३७१७ प्रति स० २ । पत्र म० ५५ । ने० काल 🗙 । वे० स० १४४ । व्य भण्डार ।

३७१८ लीलावतीमापा । पत्र म०१३। मा०१३४८ इख्रा । भाषा-हिन्दी । विषय-गिग्ति । र० काल × । से० काल × । म्रपूर्ण । वे० म०६७१ । च भण्डार ।

३७१६ प्रति स०२। पत्र स०२७। ले॰ याल 🗙 । यपूर्ण । वे॰ स० १६४२। ट मण्डार ।

३७२० लीलावती—भास्कराचार्य। पत्र स० १७६ । मा० ११३×५ इव। भाषा-सस्तृत। विषय-गणित। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० म० १३६७। स्त्र भण्डार।

विशेष-प्रति सस्कृत टीमा सहित मुन्दर एव नवीन है।

३७२१ प्रति स० २ । पत्र स० ४१। ते० काल म० १८६२ भादवा बुदी २। वे० म० १७० । ख

विशेष---महाराजा जगतसिंह ये शासनवाल में माए। वच द वे पुत्र मनोग्धराम नेठी ने हिण्डीन में प्रति-लिपि की थी।

> ३७२२ प्रति स० ३ । पत्र स० १४४ । ले० काल × । ये० स० ३२६ । च भण्डार । विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिया (वे० स० ३२४ में ३२७ तक) ग्रीर हैं। ३७२३ प्रति स० ४ । पत्र स० ४८ । ले० काल स० १७६५ । वे० स० २१६ । म्ह भण्डार । विशेष—इसी भण्डार में २ ग्रपूर्ण प्रतिया (वे० स० २२०, २२१) ग्रीर हैं। ३७२४ प्रति स० ४ । पत्र म० ४१ । ले० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० १६६३ । ट भण्डार ।



विषय- इतिहास

रेक्टर, सामार्थे का क्सीरा⁻⁻⁻⁻⁻⁻। पत सं ६ । या १२३४१३ (४०। जाया-हिन्दी। विपर-रिक्टन । रंजन ४ । ते कल सं १७१६ । दुर्खा ने सं ११७ । का नवार ।

विकेर----मुखानक सीयाज़ी ने प्रतिविधि की वी । इसी केइन में १ प्रति और है !

रेश्वर्रे सर्वेकवाकोरपविषयःसः — ायत्रः थं । या ७४४ रखः। जारा-हिमीः। दियस-इत्यस्य १ रसम् ४ के राज्य ४ दुर्धा वै सं १६। स्त्रमध्यारः।

निषेद—दश बीची के बाम की विशे हुने हैं।

१७१७ शुर्वोत्रक्षीकार्येतः "ा पत्र संदाधाः १८४ इतः धारा-वित्यं विवय-रिवृहतः । र कतः × । से काल × । प्रदोशे वं १३ । धा समारः ।

३७२८ चौराचीक्रोतिक्रम् —ाप्य र्थ १ (धा १ X६ ६व । वस्त-हिन्दी । निष्य-स्तिहत्त १ कल X । के कल X) दुर्णा के र्थ १ १ इ. वष्यर ।

१७२८ चौराधीजातिकी जम्माल—विवादीकाचावण व राजा ११४८ इवा मरास्-दिनी । विकल-प्रिक्तमार कल ×ावे कमन वं १८७६ योग दुर्शर। दुर्लग । वे वं १४१। दुर्लगार। १ १० वहा च्यारा का विकास****************** व राजा १ ×४ इवा जरा-निनी । विकल-इविहास । १९ वस्त ×ावे कल ×ा पुर्णा वे वं ११ ६। वा क्यार।

२०६१ वाष्पुरकान्नाचीन पैतिकासिक नळन" । नगर्स १९७। या ४४६ इटः समा-क्रियो । विद्यच-प्रकार जला×। क्रियो । क्रियो । वे १६ ६। क्राक्यार।

निकेच---राजगढ तवार्रजाबीपुर धारि नवाले का पूर्व विवरण है।

२०४२ सैक्सप्री मुख्यक्षीकी स्वक्रा—स मुदेन्त्रकीसिः।यर वं ४ । सा १ ४६ दयः। सारा-दिन्दीःविषय प्रतिक्रक १६ स्टब्स्ट । वे कल ४ । दुर्छ । वे से । स्वरूपनार∤

३७३३ तीर्वहृत्यरिषक्रा***** । या १२८५३ इ.च. वालाहिन्छै । विपर-इस्तिहाः । १. कम् ×ाने वाल ×। बगुर्ली वे वे १४ । वालयाः ।

१७२४ टीर्बह्न्टीकाकसम्प्रक्षां***** पत्र क १। या ११८८५ इ.च.। मादान्हिनी।पित्र इतिहास इ.च.क्रम × ।के कमार्थ १७९४ वामोग नुषी १२।पूर्णाके सं ११४२ । सामध्यार । ३७३४ दादूपद्यावली पत्र म० १। आ० १०×३ इ च । नापा-हिन्दो । विषय-इतिहास । द० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६४ । आ भण्डार ।

दादूजी दयान पष्ट ारोव मसकीन ठाट। जुगलवाई निराट निराणे बिराज ही।।

बलनींस कर पाक जसी चानौ प्राय टाक । घडो हू गोपाल ताक गुरुद्वारे राजही ॥

सागानेर रजधम् देवल दयाल दास । घडमी कडाला बसै घरम कीया जही ।।

र्षेड वैह जनदास तेजानन्द जोधपुर । माहन मुभजनीक मासोपनि बाज ही ।।

यूलर मे माधोदास विदाध मे हरिसिंह । वतरदास सिंध्यावट कोयो तनकाज ही ।।

विहाली पिरागदाय कोहवाने है प्रसिद्ध । सुन्दरदास खू सरसू फतेहपुर छाजही ॥

बावो चनवारी हरकास दोऊ रतीय मैं। नाबु एक माडोडी मैं नीकै नित्य छाजही।।

सुदर प्रहलाद दास घाटढेेनु छीड माहि।

पूरव चतरमुज रामपुर छाजही ।। १।।

निराणवास माडात्यी सडांग माहि । इनलौद रणतभवर डाढ चरणदास जानियी।।

हाडौती गेगाइ जार्मे मासूजी मगन भये। जगाजी महींच मध्य प्रचाधारी मानियौ ॥

लालदास नायक सो पीरान पटण्दास।
फाफली मेवाह माहि टीलीजी प्रमानियो।।

सायु परमानद इदोवली में रहे जाय। जैमन चुहाए। अलो खालढ हरगानियो ॥

केमल जोगी बुछाहो वनमाली चोकन्यीस । साभर भजन सी वितान तानियी ॥]

नीक्ष्म बण्डिपनु नारोड विद्यार्थ सर्ने । बच्चाच मेडवैस बालकर व्यक्तियी ।।

वानीयहर्षे प्रशास शिक्षास वाचल में ।

श्रीरवाद्ये श्रीकृतांकु ततु वीपान वार्तियी ।। स्रीतस्ती जनताव राहीरी जनतोपान ।

बाराब्यरी बीचवात नावण्यतु जानियी ।।

धानी ये वर्धिवरास भावतक साराव के ।

थोह्य मेवाम्। भोच शामन सी एके 🎚 🛭

इड्टडै वें नामर विवास हू भवत वियो ।

दास कर वीषक चीतां हर नहें हैं।। बोहन सरिवासीचों तम बानरचान यान !

योजवाक संत कृषि बॉमानिर मर्ग हैं।।

मैंबराम गांखीला में भोषेर जरसमूचि ।

स्थानवात कलाशांतु वीव के मैं उसे हैं ॥ शील्या सामाः नराहर महारे जनभ कर ।

नदानम् बरिसपाल राष्ट्र पुरः पहे हैं।। पुरस्कान्न साराज्य मान्यम् मुन्तेर वाली ।

यांची में याग कर कान क्षेत्र शहे हैं।।

रानवाच राखीयार्थं संस्थाता उत्तर वर्षः ।

न्द्रायन विनादपत् साति गील धर्ने है () बावन ही नामा संस्थापय ही नहीत हान ।

वानुर्वेषी जनवात तुमै जीवे कई है।। ६।। भी नमी बार वाद वरमावान वास वन शंतन के विकास है।।

भी नमी श्रुर बालू परमादान वालू चन शक्त के व्हिक्यारी। मैं आसी बारनि गुम्हारी ।। देखें ।।

वै विराज्यं निरमाना हुए यंत्र ते चाना । संतरित को सरमा वीने धन मीहि सरमू कर वीने (११)। सबके सदारवानी अन करो क्या भीरे स्वानी

स्वयति स्वयत्ति देवा, दे परत प्रवत्त की तैया॥२॥ से बक्ष दीम स्थापन कामे भय वंशाया ।

सर्वापित आरोप में बाला भागे पण्डासध्याला ११६।।

स्केरह---

इतिहाम]

ţ

राग रामगरी-

भ्रेते पीव वयू पाइये, मन चचल भाई।

श्राल मीच मूनी भया मछी गढ काई।।टेकः।

छापा तिलक बनाय परि नाचे श्रष्ठ गावे।

श्रापण तो समके नहीं, भीरा समकावे।।१।।

गगित करे पायह की, करणी का काचा।

वहै कचीर हिर क्यू मिले, हिरदे नहीं साचा।।२।।

।। इति।

३७३६ देहली के बादणाहों का द्योंग । पत्र स० १६। मा० ५३/४४ ब्रञ्ज । भाषा-हिंदी । विषय-इतिहास । र० काल ४ । ले० वात ४ । पूर्ण । ने० सं० २६ । स्क भण्डार

३७३७ पद्धाधिकार । पत्र म० ५ । मा० ११×४३ इख । भाषा-सम्भृत । निषय-इतिहास । र० काल 🗡 । ले० काल 🗡 । म्रपूर्ण । ने० स० १६४७ । ट भण्डार ।

विशेष--जिनमेन कृत धवल टीना तक का प्रारम्भ मे भाचार्यो का ऐतिहासिक वर्गात है।

३७३८ पट्टावली '। पत्र म० १२। मा० ८×६ई इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० स० ३३०। मा भण्डार ।

विशेष—दिगम्बर पट्टाविल का नाम दिया हुआ है। १८७६ के सबत् की पट्टाविल है। अन्त मे खडेलवाल बशीत्पत्ति भी दी हुई है।

२७२६ पट्टावित । पत्र स० ४। म्रा० १०३ ८५ इख्रः । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल ४। ले० काल ४। मपूरा । वे० स० २३३ । छ भण्डार ।

विशेष-स॰ ६४० तक होने वाले भट्टारवो का नामोल्लेख है।

३७४० पट्टाविल ा पत्र स॰ २। आ० ११३ ×५६ इखा भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० माल ४। ले० माल ४। प्रपूर्णा वै० स० १५७। छ भण्डार।

विशेष—प्रथम चौरासी जासियों के नाम हैं । पीछे सबत् १७६६ में नागौर के गच्छ में प्रजमेर का गच्छ निकला उसके भट्टारकों के नाम दिये हुये हैं । स० १५७२ में नागौर में ध्रजमेर का गच्छ निकला । उसके स० १८५२ तक होने वाले भट्टारकों के नाम दिये हुये हैं ।

३७४१ प्रतिष्ठाकुकुमपत्रिका । पत्र स०१ । द्या० २५×६ इख । भाषा-सस्वृत । विषय-इतिहास । र० काल × । ले० काल × । पूर्ग । वे० सै० १४५ । छ भण्डार ।

```
शिक्षाध
```

योहन रफारीचु नारीड निवार्ट वर्त । वकाल मेवदेन मधकर प्राप्तियो ।। शाधीबहरी चयवाच टीक्टेमाम नायल में ! भोटबारै भोकुमाध्य सबु बोपान वर्गनयी ।। धानावधी अपनाव राष्ट्रीधी जनगोपाल । बारतावरी शंतकाच जानकाच जानिया। माधी वे वरीवश्रम शानवद नावर थे। बोह्य देवाडा जोच सामन सी पहें है।। **टडटरै में नायर निवान ह मबन दियो ।** बाह क्य कीचन क्रांता हर नहे 🕻 ।। बोज्ञन परिवामीचो तथ नावरचान वच्छ l बोक्डात तंत्र कृद्धि बोकविर भये 🖁 ॥ बैनराम कोलोडा में बोबैर कालडाँव । व्यायकाल प्रकारतीय और वे में उने हैं ।। शील्या माना नपार थक्ट यन्त कर। ग्रहानम् व्यक्तियानः या<u>त्रः प्र</u>र महे है।। पुरस्कात राधकन मान्य समेर दानी । धांनी में क्यम कर नाम और बडे हैं।। शायका राजीयाई बॉनस्या प्रयद वर्ष । म्हानम क्रिमाइपल् नावि गीत शहे हैं।। शायन ही बांबा धर नतन ही नांत बान । राष्ट्रपंत्री पापराच बूचे औत्रे पहे हैं 11 र 11 वी मभी कुर बालू परबायम बालू तक शंतम के दिवसारी : में बामो बानि सम्बारी ।। 🗺 ।। जै निरालंब निरनामा इय संव वै बामा। र्वति को बरना दीने यन नीति प्रपन्न कर लीने १११० काके संतरवानी। श्रम करी क्या और स्थानी क्रमाति अवताली देशा. हे परम वनक भी लेका ॥३॥

भै बार् तीय दशला पाती कर श्रीमता । सर्वाचित कार्यद में बाबा, धार्व वक्तापरवाला ।।३॥

1

सोरद---

३७४३ विज्ञप्तिपत्र—हमराज । पत्र म० १ । ग्रा० ८×६ इ व । भाषा-हिन्दो । विषय-इतिहास । र० नाल × । ले० नाल स० १८०७ फाग्रुन सुदी १३ । पूर्ण । वे० म० ४३ । भा भण्डार ।

विशेष—भोपाल निवासी हसराज म जमपुर वे जैन पत्ता के नाम ग्रपना विश्वतिषय व प्रतिज्ञा-पत्र लिखा है। प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री सर्वाई जयपुर वा सवन पच साधर्मी बडी पचायत तथा छोटी पंचायत का तथा दीवानजी चाह्य का मन्दिर सम्बन्धी पवायत का पत्र बादि समन्त नाधर्मी भाइयन को भोपाल का वासी हसराज की या विज्ञासि है सो नीका श्रवधारन की ज्यो । इसमें जयपुर के जैना का श्रच्या वर्गान है । श्रमरचन्द्रजी दीवान का भी नामीत्लेख है । इसमें प्रतिज्ञा पत्र (बालडी पत्र) भी है जियम हंसराज के त्यागमय जीवन पर प्रकाश पढ़ता है । यह एक जन्म-पत्र की तरह गील सिमटा हुमा लम्बा पत्र है । स० १८०० कागुन सुदी १३ गुरुवार का प्रतिज्ञा ली गई उसी का पत्र है ।

३७४४ शिलालेखसप्रह । पत्र स० ८ । ग्रा० ११४७ इ च । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास । र० काल ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० स० ६६१ । ऋ भण्डार ।

विशेष--निम्न लेखो ना सग्रह है।

- चालुक्य बकोराम पुलकेशी का शिलालेख ।
- २ भद्रवाहु प्रशस्ति
- व मिल्लियेग प्रशस्ति

२७४४. श्रावक उत्पत्तिवर्णन '। ५४ सं०१। ग्रा० ११×२८ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६०८। ट भण्डार।

विशेष-चौरासी गौत्र, वश तथा कुलदेवियों का वर्णन है।

३७४६ श्रावकों की चौरासी जातिया । पत्र स०१। भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल ×। त० काल ×। पूर्ण । वे० स० ७३१। श्रा भण्डार।

३७४७ श्रावकों की ७२ जातिया । पत्र स० २। ग्रा० १२×५३ इ च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-इतिहास । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २०२६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--जातिया के नाम निम्न प्रकार है।

१ गोलाराडे २ गोलसिंघाहे ३ गालापूर्व ४ लवेचु ४ जैसवाल ६ संदेलवाल ७ वर्षेलवाल ६ भगरवाल, ६ सहलवंख, १० ग्रसरवापोरवाह, ११ घोसखापोरवाह, १२ दुसरवापोरवाह, १३. जागडापोरवाह, १४ परवार, १५ वरहीमा, १६ भैसरपोरवाह, १७ सोरठीपोरवाह, १८ पद्मावतीपोरभा, १६ संपद, २० पुसर

इतिहास

निलेप⊶र्थ ११२७ कानुस यान का पूर्वुसारक रियमीन की प्रीराहा मा है। उन कार्सिक बुधी ११ का मिका है। इकके साथ सं ११३६ की बुक्कस्परिका स्था हुई क्षिकर कार्यक नी सीट है।

६०४६ प्रतिष्ठानामाविका***** पर्याष्ट्र । सा १८० इंच| भाषा—दिल्योः विषय–इतिहरू । र कल ४ | विकास ४ । पूर्णावे सं १४३ । इक्स प्रधारः।

रेण्डरे मतिस २ । पत्र सं १ । ते कल्च X । दे सं १४६ । खुबस्तार ।

स्प्रेप्ट वकात्कारमञ्जूष्विक्षाण्या पव र्ष २। या ११ $_{e}$ \times ४ व्राः वस्त्रान्तरस्य । विवन-रिव्हाय । र कस्त्र \times । वे कस्त्र \times । पूर्ण । वे र्ष २ ६। व्यायकार ।

दैश्वेष्ट्रस्य सङ्गारक पञ्चलक्षिः। यय धंराधा १६०८२ इक्षः । सल्या-हिन्छै। विषय-हिन्छार कार \times । वे क्षण्य \times । पूर्णी सं १ ४ १ ५ ६ ५। प्राजन्यार ।

निकेर—वं १४५० तक को बहारक पट्टापनि वो हर्द है।

- २.७८६ प्रतिसः २.१ पण सं ६ कि कला×ाने सं ११वास क्यारः

विसंद--र्यवर १ं । एक होने बाने च्हारकों के नाम विवे है ।

रेक्द्रं यात्रावर्षेण⁻⁻⁻⁻⁻⁻ावत र्वश्वे दश्या क्रद्रश्चे इया क्रया-हिन्दीः नियम-प्रविद्यासः। र कल्ला×। के रुक्ता×। कल्पी। वै सं ६१४। का कथार।

३७५१ र्वजनाप्रमाण-चस्त्रेझक्कव्यं।पण सं ३ ।सा १ ४१ इप । मधा-सस्त्रा। विपन-प्रतिकतः।र काल ४ । के कल ४ ।प्रश्नी के वं १३ ५ ।का वस्त्रार।

दिलेक---वनपुर की एकताला का वर्षांत्र है ।

११६ पण १- वन्तिम--

पूर्वभविकारिकारिकारिक वहालये जालकारकानी विनेतितः काल्युकाल भीगरिकालेक वर सूर्वरकान्याया वेपास्त्रां सक्तर प्रतये बहुच ॥११२॥

रवयानामधानोऽनं कवियो हारपूर्वकः

नाम्भा नीमिचनम्म स सञ्चलीपै वा शंबुदा । ११६॥

।। इति रचनानां मनान समाता ।। बुन्ने भूमात् ।।

३,४६२ राज्यसस्थितः'''''''। पत्र वं २ । सा १८४३ इ.च । मला-संस्थान । स्वय-प्रविद्वात । स्व नान ×ाने नाम ×ाध्यस्थि । वे ४ ११६ । का मणार ।

विकेच-नो प्रचरित (करूलें) 🕻 श्रविका सावक बनिता के विसेवल विवे 🛛 है ।

इतिहास]

३७४३ विझिपित्र—हसराज । पत्र स० १ । ग्रा० ८४६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । र० काल ४ । ले० काल म० १८०७ फाग्रुन सुदी १३ । पूर्ण । वे० म० ५३ । म्ह भण्डार ।

विशेष—भोपाल निवासी हसराज ने जयपुर के जैन पची के नाम ग्रपना विज्ञितिपत्र व प्रतिज्ञा-पत्र लिखा

स्वस्ति श्री सर्वाई जयपुर का सकल पच साधर्मी वडी पचायत तथा छोटी पंचायत का तथा दीवानजी भाहित का मन्दिर सम्बन्धी पंचायत का पत्र ग्रादि समन्त साधर्मी भाइयन को भोपाल का वासी हसराज की या विज्ञित है सो नीका ग्रवधारन की ज्यो । इसमे जयपुर के जैनो का ग्रन्छ। वर्शन है । ग्रमरचन्दजी दीवान का भी नामोल्लेख है । इसमे प्रतिज्ञा पत्र (ग्रावडी पत्र) भी है जिसमे हंसराज के त्यागमय जीवन पर प्रकाश पडता है । यह एक जन्म-पत्र की तरह गोल सिमटा हुगा लम्बा पत्र है । स० १८०० फाग्रुम सुदी १३ ग्रुक्वार की प्रतिज्ञा ली गई उसी का पत्र है ।

३७४४ शिलालेखसप्रह । पत्र म० ८ । ग्रा० ११४७ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-इतिहाम । र० काल ४ । ले० काल ४ । ग्रपूर्ण । वे० स० ६६१ । श्रा भण्डार ।

विशेष--निम्न लेम्बो का सग्रह है।

- १ बालुक्य वजाराम प्लकेशी का शिलालेख।
- २ मद्रवाह प्रशस्ति
- मित्रपण प्रशस्ति

३७४४ श्रावक उत्पत्तिवर्शार्न । ५ सं०१। ग्रा० ११×२६ इ च। भाषा −हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १६०६। ट भण्डार।

विशेष-चौरासी गौत्र, वश तथा कुलदेवियो का वर्णन है।

३७४६. श्रावकों की चौरासी जातिया । पत्र सं०१। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास । र० काल ×। ले• काल ×। पूर्ण। वे• स• ७३१। श्रा सण्डार।

२०५७ श्रावकों की ७२ जातिया । पत्र स०२। ग्रा०१२×५३ इ.च। भाषा~सस्कृत हिन्दी। विषयं–इतिहास। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० स०२०२६। स्त्र भण्डार।

विशेष-जातियों के नाम निम्न प्रकार हैं।

१ गोलाराडे २ गोलिंसघाड़े ३ गालापूर्व ८ लवेचु ४ जैसवाल ६ लडेलवाल ७ विष्तवाल ६ मगरवाल, ६ सहलवाल, १० मसरवापोरवाह, ११ वासम्वापोरवाह, १२ दुसरवापोरवाह, १३ जागहापोरवाह, १४ परवार, १५ वरहीया, १६ भैसरपोरवाह, १७ सोरठीपोरवाह, १८ पद्मावतीपोरमा, १६ खंबह, २० पुसर

२१ महायेन २२ वहार २१ वर्णमा नागी २४ सहस्त २१. वर्गमावाहार १२ नोरसाह २७ विद्याला, २ नक्तेस २२ मान १ प्रथमकृतिक ११ मीनवा १२ वामावाहा १३ मोरसाह १४ वाहेस्स १२. हर पूना, ११ नेवाहा १४ वाहेस्स १२ हर पूना, ११ नेवाहा १० विद्याला ४ वीलोडा ४१ नर्स्सन्तुर, ४२ मानवा ४१ वाहा ४१ वहाला ४१ वेषणमान ४१ विद्याला ११ क्यांसालह १ केतर ४१ वाहा ११ क्यांसालह ११ वहाला ११ व्याला ११ वहाला ११ व्याला ११ वहाला ११ व्याला ११ वहाला ११ व

तीर---तुमक वाधि की दी बार विकान स है संक्या वह पई है।

३.०४८. युवल्डम्—स इस्सम्प्र, ।पण्यं ७। या ११ ×८३ ६व । सला–प्रतरतः। विपन-इतिहासः। र काल ×।ते काल ×।पूर्णावे त ११।च्या सम्बारः।

२०१६ प्रतिस भागमसं १ । में नाम X । वे स अरह । क्या सम्बद्धार ।

३.६ प्रतिसं ३। पत्र सं ११। के कार×ावे सं ११६१। दालचार।

ं विसंप---रण ७ वे बावे चुंठावतार भीवर इत भी ई पर पत्रो वर वक्षर फिट वचे ई ।

३.६१ जुटाबदार—पंशीवर।पन संग्रःसा १.४४ इ.च।ससा-संस्थाः।पिस्स-इतिहासः(र दान×।में नल×।दुर्का।वे संग्रह्मि।वाबम्बार)

- २०४९ च प्रदिस्तं∘ २ । या सं १ । ते काला स १ ८१ पीप लुर्चशा वे सं २ १ का प्रकार।

विकेश — कररासाक रॉक्स ने अविकिधि की की ।

३-७६३, प्रक्रिसं ३ । पन संधानि कला ८ । वे संब राज्यारा

the about a send to be an extended a second

् ३७६४ प्रतिसं ४ । पन वं १ । ते काल ≍ामपूर्ण । वे सः ३११ । च अच्छार ।

१. चंचपणीती-शास्त्रराणा। यन वं ६ । या ×१. इ. प. शस्त्रा-हिन्दी । दिश्य इतिहस्ता। र कान × । ने नाल चं १ । पर्वतः वं चे ११६ । अस्त्रयारा

विकेद-विकांगुकाच्य भाषा वैशा भनवतीयस्य क्षय भी है ।

रेश्वर्षः सवस्थरवर्षेत्रः १ ६ ६ १७ । या १ 💢 दृष्ट् । जाना-दिल्पे । विषय-रिक्ताः । र पान्य ४ । वे. कस्त ४ । व्यक्तां । वे. वं. १९१ | स. वच्चार । ३७६७ स्यूलभद्र का चौमासा वर्णन । पत्र स०२। मा०१०४४ इ च। भाषा-िन्दी। विषय-इतिहास। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण। वे० स० २११८ । आ भण्डार।

ईहर आवा आवली रे ए देसी

सावरण मास सुहावरणो रे लाल जो पीउ होवे पास । ग्ररज कर घरे भावजो रे लाल हु छू ताहरी दास। चत्र नर ग्रावो हम चर छा रे सुगरा नर तू छ प्रारा प्राधार ।।१।। भादवहे पीठ वेगली रे लाल हु कीम करू तरागारे। झरज करूं घर मावजो रे लाल मोरा छछत सार ॥२॥ ग्रासोजा मासनी बादगी रै लाल फुलतगी वीछाइ सेज। रग रा मत कीजिय रे लाल भागी हीयडे तेज ॥३॥ कातीक महीने कामीनि रे लाल जो पीउ होने पास। सदेसा सयण भग रे लाल मलगायो केम ॥४॥ नजर निहालो बाल हो रे लाल झावो मीगसर मास। लोक कहावत कहा करो जी पीउडा परम निवास ॥५॥ पीस वालम वेगलो रे लाल मवडो मूज दोस। परीत पनोतर पालीये रे लाल मा्गी मन मे रोस ॥६॥ सीयाले मती घराो दोहलो रे लाल ते माहे बल माह। पोताने घर मावज्यो रे लाल ढीलन कीजे नाह। ७॥ नान ग्रुनान भवीरसू रे लान सेलगा लागा लोग। तुज विरा मुज नेइहा एक्ली रे लाल फागुरा जाये फोक ।। द।। सुदर पान सुहामगो रे लाल कुल तगो मही मास । चीतारया घरे भावज्यो रे लाल तो करसु गेह गाट ॥६॥ बीसारयो न बीसरे रे लाला जे तुम वोल्या बोल। बैसासे तुम नेम स्तु रे लाल तो वजउ ढोल ॥१०॥ केहता दीमे कामो रे लाल काइ करावी वेठ। ढीठ वर्णो हवे काहा करो लाल ग्रादी लागो जेठ ॥११॥

धवानी बरदुरस्तोरं साल बीच बीच बचुके बीनानी रे बाल 1 तुक बीना भुव वैहारे नाल बरन साचे बीक ॥१९॥ दे रे बची उदावती रे बाल धनी होता सक्तार। बेर बनी पेची कुपरारे नाल के बीती नार ॥१६॥ बार बनी पोच बुकी रे बाल धानी नाल करवान। स्वताय पत्नी बंठ बी रे नाल बनी या गामी यान ॥१५०२ के बाद कर परे रे बाल बाल बोरे धाक। कुमान कु पत्नेक बी रे नाल के सुकी पीयान ॥१५०३



विषय- स्तोत्र साहित्य

३७६६ अयसलकाष्ट्रक । पत्र स० १ । भा• ११ रे४ ६ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । पूर्ण । वे० स० १५० । ज भण्डार ।

३७७० प्रति स०२। पत्र स०२। ले० काल 🗴 । वे० स०२५ । व्य मण्डार।

३७०१ अकलकाष्टकभाषा—सदासुल कासलीवाल । पत्र सं० २२ । म्रा० ११६ ४५ इ च । भाषा— हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल स० १६१५ श्रावण सुदी २ । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स० ५ । क मण्डार ।

विशेष-इसी मण्डार में २ प्रतिया (वे० स० ६) भीर हैं।

३७५२. प्रति स० २ । पत्र स० २८ । ते० काल 🗶 । वे० स० ३ । स मण्डार ।

३७७३, प्रति स० ३। पत्र स० १०। ले० काल स० १९१५ श्रावरा सुदी र । वे० त० १८७ 🌣 मण्डार।

३७७४ श्राजितशातिस्तवन । पत्र सं०७। ग्रा० १०४४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४। ले० काल स० १६९१ ग्रासोज सुदी १ । पूर्ण । वे० स० ३५७ । व्य भण्डार ।

विशेप--- प्रारम्भ में भक्तामर स्तोव भी है।

३७७४ श्रजितशातिस्तवन—निद्पेगा। पत्र स० १५। मा० ८३८४ इच । भाषा-प्राकृत। विषय-स्तवन। र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वै० स० ६४२ । स्त्र भण्डार।

३७०६ स्थनाचीऋपिस्वाध्याय । पत्र सं०१। मा० ६३×४ इख्र। भाषा-हिन्दी गुजराती। विषय-स्तवन। र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण। वे० सं०१६०८। ट मण्डार।

३ऽ७७ म्ननादिनिधनस्तोत्र। पत्र स० २। मा० १०×४६ ६ च । मापा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६१ । वा मण्डार ।

३७७८ अरहन्तस्तवन । पत्र स० ६ से २४। मा० १०×४ है इ व । मापा-सस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० वाल सं० १६५२ कार्त्तिक सुदी १० । मपूर्ण । वे० स० १६८४ । स्र मण्डार ।

३७७६ अवितिपार्श्वजिनस्तवन—हर्षसूरि । पत्र सं०२। मा०१०४४ है इन । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्वा । वे० स० ३५६ । व्य भण्डार ।

विशेष--- ७५ पद्य हैं।

17

र्वे १८८० क्यास्पर्तिदास्त्रवन—स्क्राक्ट्र(यव संदृश्यः १०४४ इव । मना—संदृतः क्रियः– र रुन्न ४ । ने रुन्न ४ पूर्णी वे सं्कृति क्रमास्य

विदेश—२१ स्तोक हैं [कल सारस्य करने से पूर्व पं विश्वयर्थ परित नो नगरगर किया पया है। पं जब विज्ञयन्ति ने प्रतिकिति नो भी।

दे÷=दं काराचनाः "ापव ढंदाबा ४४ दवी मला-शिली । विद्य-स्टोद । र शस्त ४ | ने दास ४ | दुर्गावे दंदी । कथकार |

३७=२ द्रष्टाप्येक्ट—पृत्यपाद् । पव वं ६ । धा ११३/४४३ दय । मारा–संस्तृत | विवन-स्टोपा । र काल ४ । वे साथ ४ । दुर्गावे वे वे १ ६ । ब्हालक्षार |

विमेर-बंस्कृत में वंदित दीवा की क्ष्री है।

३५८३ प्रतिसं∗२। पत्र सः १२। से कला×ादे में ७१। कल्पारा

रिमेर—इनी बच्छार में एक सीत (वे सं ७६) बीर है।

्रेश्न्य प्रतिसः ३।याचं ६।के नक्त×ारे वं काय वचार।

विधेय—वेवीयात की क्षित्री हत्या दीवा तहित है।

्देशच्या प्रतिस्र∙ ४ । पत्र वं १६ । ने नाम चं १६४ । ने वं ६ ३ इत्र प्रपार।

विकेश-संबंधि प्रमाणाल पूर्णवाणे हुन हिल्ली सर्व सहित है। सं १८१६ में बारोर की थी ; १८८६ प्रति संक्ष्म को भाग काल सं १६७१ कीर वर्षी का वे संप्यास

भग्डार ।

विकेश—रेटीयास में सबक में प्रतितिति की भी ।

देश्यः द्वापिदेवतीका—कारतबर्दात्रव देशाया १९१×९ दंवाजारा-वंद्रव।स्विय श्लोकार पान ×1के पान ×1वर्गावे वं ७ । क कवार।

्रेड्ड्ड प्रतिश्च शतकार्थ १४।के बाव×ावे वे ११०३ वचार।

देश्याः द्वाप्यदेशमाया **** । वय सं २४ । या १९४०) इत्या प्राप्ता-दिनी वय । विषय-स्तोद । द वान × । वे वान × । पूर्ण । वे सं १६ । ख वयबार ।

रिगेच—इच वो निकाने व नामज में vi⊯}ii व्यव हुते हैं ।

देशके वरवेरासम्माय—मानि रामवण्या वर्षे हाया १ अर दक्षः अता-दिगीः निष्ये तीया र पार अधि वाष अधुर्या वै वे देशह । बा वरनारः

```
स्तीत्र साहित्य ]

प्राचीति हो। ३

उ६१ उपदेशसङ्माय र्गविज्ञ । प्राचिज्ञ । प्राचिज्ञ । मा० ११४४ हिन्द्र माण्डि हिल्ही । विषय-

रा हिन्द्र निर्मेन नाम । हिन्द्र निर्मेन नाम । हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र । विषय-

स्तीत्र । रे काल × । ते के काल × । पूर्ण । वे के से ० २१६३ । आ मण्डार । हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र हिन्द्र । कि । हिन्द्र हिन्द्र
```

विशेष— ३रा पत्र नहीं है। अपना का हिए का हा हर का हा । ह वस ही ए अवर्ध स्थापन हिन्दी। विषय— ३७६३ उपदेशसक्ताय— देवादिल । पत्र संदूर्श शांक ही का अपना हिन्दी। विषय— १९ १। ते काल ×। ते काल ×। पूर्ण । वे संव २१६२ । आ मण्डार । हा ही । व ववर्ष स्थापन हिन्दी। विषय— १९६२ । आ मण्डार । हा ही । व ववर्ष स्थापन हिन्दी। विषय— १९६२ । आ मण्डार । हा ही । व ववर्ष ही । व व

३७६४ उपसर्गहरस्तोत्र—पूर्णचन्द्राचार्यः। पत्र सुन ११४ । ग्रा॰ हिन्द्र १४ हे इखा। अपि।-सस्कृत प्राकृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० ११५३ म्रालोज सुदी १२० पूर्णः,। वै० सनः ४१ ।= मण्डार ।

विशेष—श्री बृहद्गच्छीय भट्टारक गुरादेवसूरि के शिष्य गुरातिधान ने इसकी प्रतिलिपि की, थो। प्रति सर्वि है। निम्नलिक्षित स्तीप्र है।

ा प्रान्स हो। इ. ए वर रागा का १ सह। ४ वह तीस दिल्ह नाम स्तात्र क्ता (००००६) साम्राह्म राज्य माराह्म विशेष

१ श्राजितशातिस्त्वन— प्राच्या प्राच्या प्राच्या प्राच्या । प्राच्या प्राच्या प्राच्या प्राच्या भावार्य गोविदकृत संस्कृत वृत्ति सहित है। ह ७ ०० हरा। ७ ०० हर

२ मयहरस्तोत्र— X ाणा । हर् ४ ाणा । हर् ४ वणा । वह हात्रकृत हात्रकृत हात्रकृत हात्रकृत हात्रकृत हात्रकृत हात्रकृत

विशेष—स्तोत्र ग्रक्षरार्थ मन्त्र गर्भित सहित् है। इस स्तोत्र की प्रतितिषिक्षण ।१४५२ आसींज सुदी पूर्व ने को मेदपाट देश मे राखा रायमझ के शासनकाल में बोठारिया नगर से भी ग्राखदेवसूरित के जिल्हारिया ने प्रति । प्रति ।

निगय-म्तान। र० राज ४। ते० वाल मः (४६१ व्यस्तुः । पूर्माः म० ३३६। या मण्डाः - हातग्रकाम इं विशेण-४५ हिरीधान महित है। धारनान च ६३।

स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४६ | व्यासाह का अव्यास के । त्राप्त काल × । वर्षा काल × । पूर्ण । वर्षा काल × । पूर्ण । वर्षा काल × । वर्षा काल × । वर्षा काल × । पूर्ण । वर्षा काल × । वर्षा काल

३७६६ ऋषभटेचस्तुति—पद्मतन्दि । पृष्टु सुक्ष ११ मा० १२ १६ दिस्चाए मीपार्श्याकृति विषय-स्तोत्र । र० काल १ । ते० काल १ पूर्व । ते० स० ४१६ । ह्या मुख्यार । ०० का १० हि २०३६ विषय—दर्व पृष्ठ से दर्शनस्तोत्र दिया हुसा है । चोलो ही स्तोहों के स्सस्कृत के प्रयोगवानो चिंद दिये

हुये हैं। । प्राथम अन्दा राज्य सामाज्य सामाज्

```
रिवोद साहित्य
           ३८६७ ऋषसस्तृति*****। पत्र सं १ । सा १ ३×१ इ.व.। नाया-संस्कृत ! विषय-स्त्रीय । ६
नल × । ने कार × । अपूर्ण व्येष देश । या घनगर ।
           ३७६८. ऋषिसंश्रवस्ती<del>त्र -</del>शैतसस्तासी । पत्र सः ३ १ धाः १३०४ ६व । धाना-बंश्यत । निपश-
स्तोत्र। रंजन 🗙 । के काब 🗙 । पूर्ण । के संबंध । या बच्चार ।
           के बहर प्रतिसात स्वायम की १६ व्ले काल ली १७६६ विसे १९२७ : का अध्यार !
          विलेप-इसी चच्चार में व प्रतिवां (वे के वव १४२६ १६ ) धीर है।
           ≹स∞ मतिस ३ । त्य संचाक्षेत्र नाल ×ावे सं ६१ । फायच्यार ।
          विश्वेष--क्षिम्पी वर्ष रुपा मन्य शायन विधि भी वी हाई है।
           रैं⊏ रै प्रतिसं ४ । पण सं ६ । ले पास ×। ने सं २१ ।
           विसेश—इप्लास के प्रकार्ज बांग किसी नई गाँ। सा बच्चार ये एक प्रति (वे सं १११) और है।
           रेम २० प्रतिसः ३ । धवसे ४ । के शक्य ४ । वै वे १३६ । काशमार !
           मिमेप--प्रतीलकार ने बच्च अति (ने सं २६ ) और ई.।
```

केय⊳के प्रतिका के । यह से का कि साथ से १७०० । के से १४ । वर मध्यार Ì 3 ⊑०४ अस्तिम ७ । यम से ७६ के ११ कि सम्बद्धानी स्ट १ ३६ । ह मध्यारा

रेमक्र व्यक्तिस**बस्तोल्लालाः वन स**्थासा ६३४४% इ.च । वातर–संसदा । विवन-स्तोतः । र कल ×। ते पास ×। पूर्वा वे सं ३ ४ । सावध्यार ।

रेम ६ प्रकाशितोत्र—(वकाराक्र)——ा पण हं १। या ११×६ इच । त्राग-संध्या निय-स्तोतः। र पला≍। ने पलासं १८६१ व्येष्ठ यूरी । यूर्ण | वे तं ६६६ | व्यापन्यार | विश्वेष---वंदर्श्य सीवा सहित है। प्रदर्शन बीव्य है।

वेद्यक्क वर्षीमावस्तीत्र—वादिराज्ञ । क्व तं ११ । या १ ×४ इव । धारा-संस्कृत । दिवन स्तोत्। र नार×ावे नानवं १० वे नागदण्या र । तुर्था वे सं २६४ । चा क्यार । विभेद--यशेसरचन्द्र नै स्वपदनार्थं प्रतिनिधि की बी ।

रनी बच्चार में क्या प्रति (में शे १३) बीर है।

रेक्ट- प्रतिस २ । वस वं २ ने ११ । से नाउ × । युक्त । से संदर्श लागगार ।

देम इ. प्रतिसं के । पण वं ६ । वे पण × । वे वं ८३ । अरं अपारः ।

विकेश-मधि संस्कृत होना शक्ति है ।

```
स्तोत्र साहित्य
```

[३=३

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६४) ग्रौर है।

३८१०. प्रति स० ४ । पत्र स० ४ । ले० काल ४ । वे० स० ५३ । च भण्डार ।

विशेष-महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी। प्रति सम्कृत टीका तहित है।

इसी मण्डार में एक अपूर्ण प्रति (ने० सं० ५२) छोर है।

३ म ११ प्रति स० ४ । पत्र स० २ । ले० काल × । वे० स० १२ । व्य मण्डार ।

उद्रश्र एकीभावस्तोत्रभाषा—भूधरदास । पत्र स०३। प्रा०१०३×४६ इष । भाषा-हि दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स०३०३६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-बारह भावना तथा शातिनाय मतीय श्रीर है।

३८९३ एकीभावस्तोत्रभाषा--पन्नालाल । पत्र स० २२ । आ० १२३४५ इ च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तोत्र । र० काल स० १६३० । ते० काल ४ । पूर्ण । वै० स० ६३ । क मण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६४) भौर है।

३८९४ एकी भावस्तोत्रभाषा । पत्र स०१०। मा० ७४४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल ४। ले० काल स०१६९८ । पूर्ण । वे० स०३५३। मा भण्डार ।

२८९४. श्रोंकारवचितिका । पत्र स०३। ग्रा०१२३४१ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। र०काल X । ले०काल X । पूर्ण। वे०स०६४ । क भण्डार।

३=१६ प्रतिस०२ । पत्र स०३ । ले० काल स० १९३६ झासोज बुदी ५ । वे० स० ६६ । क

भण्डार ।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ६७) श्रीर है।

३८९७ कल्पसूत्रमहिमा । पत्र स०४। ग्रा०६ है ४४ ई इच। भाषा-हिन्दी। विषय-महात्म्य। र०काल ४। ले०काल ४। पूर्ण। वे० स०१४७। छ भण्डार।

३५९८ कल्याण्क—समन्तभद्र। पत्र स० ५ । मा० १०३ \times ४५ इख्र । भापा-प्राकृत । विपय-स्तयन । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० १०६ । हः भण्डार ।

विशेप-- पर्णविवि चउवीसिव तिरयगर,

सुरएार विसहर थुव चलगा।

पुरापु भए।मि पच कल्यारा दिरग्,

भवियहु शिसुगुह इनकमगा।।

```
िलात्र साक्षित्व
                                   वरि वस्थालपुरुष विकासकी
                                        घणु चिंगु जित्त समित्रलं ह
                                   रहित समूच्य वर्त्त ते वेशिका
                                                                                 ~_P471
                                        शिक्यहें इसल्या नेव फर्य ।।
                              इति की मयन्त्रका वर्षे करवातक विकास ।।
           ३=१८ कश्वादामन्दिरता<del>त्र कृ</del>त्रवभन्नाथाय । वर्षे रं ४ । वा र<sup>म्</sup>र्र्पे ६ वं । जाना-संस्त्र ।
नियम-पार्श्वमूल स्त्रेन । दं काम × । के काल × । पुर्वा वे वि वे विशे कि कालते ।
           विमेय-प्रशी बालांगर में ६ प्रतियों (वे सं वेबार ईरवेश १९६२) और 🖁 र
           क्ष्मा प्रतिसः २ । पन सं १३ । के क्षेत्र के स्वि वं रहे। क्रीयकार ेि प्रति
           विवेद-एरो नेकार ने ६ प्रतिना सीर हैं ( वे के मिर्ग प्रति १ १)।
           १ स्पर मिरा सके है। पेया से १६। में कार्य से रिष्क साथ बुद्धा हु। में से देरे। मा
BERTE I
           इक्ष्यः प्रति स्व ४ ६ पण संगुद्धः में करण संगुरूपत्र मध्य कृती १५ ((स्वपूर्णः । पेरू-संगु
क्ष्मार ।
           विक्रेक-प्रवा यन नहीं है। वहीं नभार में पर्क गति (के ही (देप) बीर है)
            डेस्टरके प्रक्रियों के) पत्र संदेश के प्रमाण के के के प्रमाण क्यों के हैं।
           विमेश-नाम कोकरान वोधीनले जानंदरान में सामानंद में श्रीतिविध करवानी थी। वह पुस्तक जोमरान
                                                 II I IS FEL F BER ED
थोबीया मी है।
                                                                                              عدد ز ا
           ३ सम्भ प्रतिसः के। यस सं १०। में पाल के १७६६। के श्रंपा । वर अच्छार।
           विकेश---प्रति हर्पकीति हत संस्कृत दीना नहित है। हर्पकीति नांबवरीय दरावच्या प्रवास बन्द्रशीति के
रिस्टब में १
                                             अलाक काम मिन्न मार्थ का म
           इत्तरक्ष प्रति सं का पर लंका ने तुम्तु है । एतुन्ति सं तरपुर सक्ष सम्बद्धाः
           विभेद--मेर्ट वस्थासम्बद्धारी भाग-विनुकृतामर इ.व्.अस्तृत्व डीवर् अहित है.। विनास प्रयक्ति निध्य प्रशास
1-
           इति सहस्यक्ताकृत्रासंक्रवंश्ववंशिकाीकृर्वेश्ववृतिविद्याच्या चीत्रकात्रवाचारत्वाचार्यं स्टबालकृति
हीता मंत्रुर्ण । बदाराम भागि है स्वान्यतान हेनु प्रतिनिर्देश की हों।
                                                         1 Jt p-11
                                                                                  - 13 13
            क्ष्मार्क प्रति सं मा पण ग्रेन प्राप्तिन पण ग्रेन १ हक कि सं व तथा ह सम्बार ।
            भिगेद---चौरेनाल डोनिया नारोठ याते.वे प्रतिनिधि की भी ३ फ एफ्
                                                            h
                                       ( )
```

स्तोत्र साहित्य]

1

३=२७ कल्यासामिदिस्तोष्ठिका-पश्चाशाधर । पत स०४। मा० १०४४ द्व द व । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोष । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ५३१ । स्त्र भण्डार ।

३८२८. कल्यासामिटरस्तोन्नपृत्ति—देवितिलकः। पथ स० १४ । मा० ६३८४५ डखः। भाषा-सस्द्रतः। विषय-स्तोत्रः। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्सः। वै० स० १० । स्त्रः भण्डारः।

विशेष-टीवाकार परिचय--

श्रीत्रकेदागर्गाव्धिचन्द्रमहश्रा विद्वज्जनाह्नादयन्,
प्रवीण्याधनसारपाठनवरा राजित भास्वातर ।
सच्छित्य कुमुदापिदेवतिलकः सद्बुद्धिवृद्धिप्रदा,
ध्येयोमन्दिरसम्तवस्य मुदितो वृत्ति व्यधादद्भुत ॥१॥
कन्याग्।मदिरम्तोत्रवृत्ति सौभाग्यमञ्जरी ।
वाज्यमानाज्जनेनदाच्चद्वावकः मुदा ॥२॥

इति श्रेवोमदिरस्तोषस्य वृत्तिसमाप्ता ॥

३८२६ कल्याग्मिद्रस्तोत्रटीका । पष स० ४ से ११। मा० १०४४ दे इख । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० वाल ४ । मपूर्ण । ने० स० ११० । ह भण्डार ।

३८३० प्रति स०२। पत्र स०२ मे १२। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वै० स०२३३। व्य मण्डार। विशेष-रूपचन्द चौधरी कनेसु सुन्दरदास प्रजमेरी मोल लीनी। ऐसा प्रन्तिम पत्र पर लिम्बा है।

देम्३१ कल्याग्रमदिरस्तोत्रभाषा—पन्नाताता। पत्र स० ४७। घा० १२३,४५ इक्का भाषा–हिन्दी। विषय–स्तोत्र। र० कील स० १९३०। ले० काल ४। पूर्ण | वे० स० १०७। क भण्डार।

३-३२ प्रति स० २। पत्र सं० ३२। ले∙ नाल ×। वे० स० १०८। क भण्डार।

६८३३ कल्याग्मिद्रस्तोत्रभाषा—ऋषि रामचन्द्र। पत्र स० ५। ग्रा० १०४४ई इश्च । भाषा— हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० १८७१ । ट भण्डार ।

३८३४ कल्यासामिटरस्तोत्रभाषा—चनारसीदास । पत्र स० ६ । मा० ६×३३ उद्य । भाषा-हिन्दी । र० काल × । ते • काल × । पूर्सा । वे • स० २२४० । स्त्र भण्डार ।

३≒३४ प्रति स०२ । पत्र म०६ । ले० काल ४ । वे० स०१११ । इट भण्डार ।

३८३६ केवलज्ञानीसब्स्ताय—विनयचन्द्र । पत्र स०२। ग्रा०१०४४१ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० सं०२१८८ । ऋ भण्डार ।

र नम×। में मला⊬ ३ पूर्णामे वं मु४४ । सामस्यारः

इस्पेर्य गीतप्रकृत्वाच्या वन सं शाक्षा १ XV इ.च.। शाका-करहेत । नियत-स्तोष । प्र पता×। ने फल ×। पूर्णा वे वे १२४। क नमार।

विदेश-कियों में वसन्तराथ में एक समन है।

, **

३८३६. गीत बीतराग---पंडिताचार्ये समित्रवचाक्कीर्ति । पत्र सं २६ ३वा १ °८१ इत्र । माना तंत्रतः | निमय-स्तीतः । रः काना×ाथः कानाचं १ ६ और बुद्दो का दुर्जा वै तं २ २ । ध RESIDE 1

विकेष--- मक्यूर नवर ने भी पुत्रीमाल के प्रशिक्षिय की की ।

नीत नीतराय संस्कृत जावा की रचया है जिसमें ५४ प्रवंडों से विश्व किस राज्य राज्य विश्वों ने प्रवंडा पद्मिताल का गाँगालिक वालवान वॉनान है । क्रमानार मी गाँवतानार्व उत्तरिष से ऐवा जरुर होता है कि वे प्रमुसे समय के विश्विष्ट विद्वार के 1 क्रम्य का निर्माश कर हुआ। यह रचना के बाद बड़ी होता दिन्तु वह दमन विरुप्त ही मेंगा, १ वह से पूर्व है स्पोकि ज्येष्ठ बुदी समायस्था नं १ ह को जक्युरस्य सरकर के शर्मकर के शास रहने वाले भी प्रमीमालयी सब्द ने पर बाज की प्रतिनिधि नी है अवि सुंबर बकरों में लिखी हुई है तका बुद्ध है। क्रयब्यर ने व न को जिल राम्दे तमा दालों ने बीस्ट्राद गीतो में द वा है---

एवं एनमी-- नावन कुर्वारी नवेंत रामसभी कामारा कर्मारक वैद्यानिएम वैद्याराजी बाजररी मानवसीन पूर्वराय नेरवी निराही विवास कानरी।

दान- इतक, एक्टाल प्रतिनच्च चीरनच्च विद्याली सञ्जाल ।

नीयों में त्यानी अन्यरी बचाये क्या यानीन दे पांध ही परत है इत तबते बात होता है कि सम्बद्धर

ब्रांस्टर बाया के विद्राल होने के नान्द ही शान प्रच्ये संगीतक जी है ।

इत्य प्रतिस शाक्षतं दशांव कलातं १६६४ ओह ल्ह्या । वे तं १२६ । %

क्खार । विश्वेष--र्राम्पति ब्रमरक्त्य के श्वेषक्ष माञ्चिपयक्त्य ने सूर्ययक्तान की सामा के श्वेषकर वर प्रात्त्वप्रसार के मभवत्तुतार वं १ ०४ काली बिंद ते बेटिविधि को वी ।

> इबी बच्डार में एक प्रति (वे र्च १२६) और है। क्यारी प्रतिसंदे। पत्र संदेश के जान ×ावे संपर्श अनुवाद ।

स्तोत्र साहित्य ी

३८४२ गुग्रस्तपन । पत्र सं० १५। मा० १२४६ दश्च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तयन । र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० स० १८४८। ट मण्डार ।

3-४३ शुरुसहस्त्रनाम । पत्र म०११। ग्रा०१०४४ इच । भाषा-सम्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल स०१७४६ वैशास बुटी ह । पूर्गा । वे० स० २६८ । स्व मण्डार ।

३८४४ गोम्मटसारस्तोत्र । पत्र स० १। मा० ७४५ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तीत्र । र० नाल ४ । पूर्ण । वै० म० १७३ । व्य मण्डार ।

उद्धर्भ च्ह्चरित्साणी--जिनहपे। पत्र स० २। मा० १०४५ इ.च.। मापा-हिन्दी । विषय--

निर्शेष-पार्वनाय की स्तृति है।

ग्रादि--

भ्य मपति नुर नायक परनिप पास जिरादा है।

जानी अति काति घनोषम उपमा दीपत जात दिखदा है।

मन्तिम---

मिद्धा दावा सातहार हासा दे सेवक विलवदा है।

घग्धर नीमाणी पास बसाणी गुणी जिनहरप महदा है।

इति श्री घगघर निसासी सपूर्स ।।

३८४६ च मे श्वरीस्तीत्र । पत्र स०१। आ०१०३ ४५ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तीत्र । र०काल ४ । न०काल ४ । अपूर्णा वे० स०२६१ । स्व भण्डार ।

३८४७ चतुर्विशतिजिनस्तुति-जिनलाभसूरि । पत्र स० ६। मा० ८४५ इक्क । भाषा-सस्तृत । विषय-स्तवन । र० काल × । वे० काल × । पूर्ण । वे० स० २८५ । स्व मण्डार ।

३-४८ चतुर्विशतितीर्थद्भर जयमाल । पत्र स०१। मा० १०३ ×५ इव। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण। वे० स०२१४८। स्त्र भण्डार।

३८४६ चतुर्विशितिस्तवन । पत्र स० ५। धा॰ १० \times ४ इ च । भाषा-मस्कृत । विषय-स्तोत्र । र॰ काल \times । ते० काल \times । पूर्ण । वे० स० २२६ । व्य मण्डार ।

विद्येप---प्रथम ४ पत्रों में बसुधारा स्तोत्र है। प० विजयगिता ने पट्टनमध्ये स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी। ३-४० चतुर्विशतिस्तवन । पत्र स० ४। घा० ६३×४६ इ च। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ×। ते० काल ×। प्रपूर्ण । वे॰ स० ११७। छ भण्डार।

विशेष--१२वें तीर्थक्कर तक की स्तुति है। प्रत्येक तीर्यद्वर के स्तवन मे ४ पद्य है।

```
्र<sup>'</sup>
- रेस्ट ] [स्तोत्र सामित्र
```

प्रवन वद निम्द प्रकार है—

स्वयांचीयविषयांचरित्रात्वे विस्तारित्यांचार्ये एक्सासायवर्षाव्यंक्तमसूत्रात्वा प्रावस्तुरे । मत्त्वा मंदितप्रयापविषुत्तं संपादवानीतिन्यां । एक्सान वर्षाव्यंक्तमसूत्रात्वा व्यवस्तुतं ॥१॥

रेस्टरे व्यक्तिहरि वीर्यहरकोड—कालविजयपायि । पत्र वं ११ । घा १९ ४६ वर्षः महा-संस्तृतः विषय-स्तेषः । र काल ४ । वे काल ४ । दुर्गः वे वं १४६ । क नकारः ।

रिषेप—ग्रांद चंस्तृत दीका सहित है ।

६=३२ चकुर्विरातियोवोद्वरस्तुति—सावस्तित्। यस वं ३। ता १२×१३ इंग । याना-संसर्धः रियर-स्टरन । र कल ×ाके कल ×ायुर्वा के सं ११ वर्ष वस्तरः।

१८८३ व्यक्तिगति तीर्वेष्टरस्तुति*****। वस वं । या १२×४२ दव । वारा-बंग्रत । विरय-

स्त्रोत | रंगस्थ प्रकृतिकार विकास । बहुर्जा है ती १२६१ । या स्थ्यार । १-१८४ चहुर्विकारिकी सुरस्तुति ----। पत्र वी ११ वा १२४६ इ.स. । असा-सहात । विरस्न स्त्रोत । रंगस्थ ४ वि स्वतः ४ वि से १३७ । या स्थ्यार ।

रिकेर--वर्ति चंत्रक योग बहित है।

रेन्द्रश्रे चतुर्विशतिवीर्वेद्वरस्तोत्र*****। यस स ६ । या ११%४ इत्र । त्राया-संस्ट । रिपर-

स्तोष । र नाल × । वे नाल × । पूर्ण । वे थं १६ २ । ट वस्थार । पिलेर—स्तोन नटूर मीकरणी धान्यास ना है। सभी देशो देखाओं ना वर्तन स्तोष हैं है। १-स.६ चक्रुम्पहीस्तोधा——। यस वे ११ । ला व}× ६ इस । भागा–संस्टा । दिस्त-स्तोष ।

र सार X | के कम X | मूर्ज | के व १९७६ | का सम्बार | वेद्य-के जामुक्कलाज-मूर्जिकराचाव | यह १ | बा XX१ हवा | जन्म-संस्त्र | किस्ट-

स्तापार गल्य प्रति तल प्राप्ति व व १६ १ । व्यवस्थारः

३८८८ विश्वसिष्धियोगम् वस्यक्रस्त्रकार्णः । वस्य ४ । सः ४ १८। वस्यान्तरस्य । विश्वस्थानस्य । र नाम् ४। पूर्णः । वै वं ११३४। वस्य सम्बद्धः ।

दैष्टरः विश्वसिक्षस्वनाम लाध्ययस्यदिवः व्याप्त १९ । या ११४६ इसः। मार्गः वीरानः। विश्व-कीषः। १ यालः ४१ते वाणः ४। पूर्णः। वे वे १९ । या प्रधारः। स्तोत्र साहित्य 378

३ - ६० प्रति स०२ । पत्र म०६ ' ले० काल स०१ - ३० म्रामोज सुदी २ । वै० म०१ - १ । ड भण्डार ।

३८६१ चित्रवधस्तोत्र । पत्र स०३। श्रा० १२×३६ इखा भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ⋉ | ले० काल ⋉ । पूर्ण | वे० स० २४६ । व्यासण्डार |

विकोप--पत्र चिपके हुये है ।

३८६२ चैरयवदना । पत्र स० ३। मा० १२×३३ डखा भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०

काल 🗶 । ले० काल 🗶 । पूर्गा । वै० म० २१०३ । ऋ भण्डार ।

३८६३ चौबीसस्तवन ा पत्र स०१। मा०१०४४ इखा । भाषा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल 🗴 । ले० काल स०१६७७ फाग्रुन बुदी ७ । पूर्सा बै० स०२१२२ । इस मण्डार ।

विशेय-विस्त्रीराम ने भरतपुर में रगुधीरसिंह के राज्य में प्रतिलिपि की थी।

३८६४ छन्नसम्बद्ध । पत्र स०६। मा० ११२×४० इख्य । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्णावे० स० २०५२ । ऋ मण्डार ।

विशेष—निम्न छद हैं—

•	. 4		
नाम छद्	नाम कर्त्ता	पत्र	विरोप
महानीर छद	शुभचन्द		ાવવાવ
विजयकीति छद	युगमन्द	१ पर	×
ग्रह छद	27	₹ 11	×
पार्श्व छंद	33	₹ 27	×
ग्रुरु नामावलि छद	प्र० लेखराज	₹ n	×
मारती संग्रह	Υ	۶ 33	×
चन्द्रकीत्ति छद	त्र० जिनदास	Y n	×
कृपसा छद		Υ "	×
नेमिनाय छद	चन्द्रकोित	¥ "	×
	शुमचन्द्र	٤,,	
३८६४ जगनार	ग्रहराचार्थ । एक अर		×

३८६४ जगन्नाथाष्टक---शङ्कराचार्य । पत्र स० २ । मा० ७४३ इश्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तीत्र । (जैनेतर साहित्य)। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २३३ । छ। भण्डार ।

१८६६ जिल्लाहरतोजाः । पर्यं १ । या ११_५४६ इंग | जासा-संस्था | विवय-स्तोप । र स्थल ४ | ने कलावे १००१ । प्रशीप के १ १ । च स्थलार ।

विकेन--वीनीयाल ने प्रतिकिपि की भी।

્યા

देन्द्रंश्चित्रमृष्टुमाचा व्यवस्थात स्वास्त्रा प्रशासका व्यवस्थात । विश्वस्थात स्वास्त्रा स्वास्त्रा स्वास्त्र वास्त्र भन्ने काला प्राप्त । वे विश्वप्रकार स्वास्त्र स्वास्त्र

१.अ.६. जिल्लीसम्बद्धाः ापचर्च १।धा १.×६ इ.च। जला-संस्ट्रा।विक-स्टब्स् र कल ×।वे कल ×।वर्षी विस्टेरिक्स सम्बद्धाः

स्मरेक् जिल्ह्यौबाहकां व्याप्त संदर्भाषा १ % ४ देव । वसा-संस्कृत | विदर-स्तोप । र सम्ब ≾ । वे जान ≾ । पूर्ण । वे संदर्भ । व्याप्त ।

३८ॐ क्रिमप्करस्तोत्रण्णान्य सः २ । साः ६_५४६ इतः। आस<u>ा-सस्ताः। निम्म-स्तोरः।</u> र मन्त×। कंगला×। कुर्णाणे संदेशकारः

३८५१ जिलपकरस्ता≒—कम्बाधनाचाचै।यत्र तं ६।या १८४१ इता । जना-संस्टा। विदर-स्तोषार कल ×ाजे कस्य ×ावर्षाके तं १६।तः क्रमार।

दिवेच—यं नजनाता के पठवानी ग्रांदिविदि की राई की ।

- ३-८७३, प्रतिसः ३ । पत्र व ३ । शे. काल × । वे. वं. २ ६ । संप्रकार ।

केन्द्रभ प्रतिसंधी प्रशास के स्वाप्त के स्व

३८०८. जिल्हास्याने—पदार्तिहै। यह संश् | सा १६/४६ ६ | बारा-प्रताह | विदय-स्टोकार क्रमा ४ कि कमार्थ १ वर्षावर्षी है संश् । क्रमायार ३

३००६ विमानशीसमार—अगतसास । पर्यं १। वा ११×६ ६ पः समा-सुन्दी। विवय-स्तीय । रंगल ×१६ जल ×१६र्मा के यं ७३६। च क्यार।

६८०० क्रिस्तातकटीका—रॉनुसाबु। पर सं १९। का १ ३/४४, इस । सना-संस्ता । रिपय-स्तोपार नक्त ×ार्ट नक्त ×ार्ट । स्ता । स्ता । स्ता ।

केर•= प्रतिशं २ । यन वं ३४ । ने काव × । वं ४६ । वर क्रवार ।

न्त्रीय । एं नाल X । ते वांत X । तूर्ण । वं वं १६१ । कं जन्मार । विजेष-चन्द्रिन- इति संबु बाबुनियंच्य निनम्सरक पनिवृत्ती वान्सर्तन शत्व च्युर्वपरिच्येष समार । स्तोत्र साहित्य]

भण्डार ।

३८६ जिनशतकटीका—नरमिहभट्ट । पत्र स० ३३ । म्रा० ११४४ है इख । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ते० वाल स० १४६४ चैत्र सुदी १४ । वे० म० २६ । व्य भण्डार ।

विशेय—ठाकर ब्रह्मदास ने प्रतिलिपि की थी।

३८८० प्रतिस० २ । पत्र म० ५६ । से० काल स० १६५६ पीप बुदी १० । वे० स० २००। क

विशेष-इसी भण्डार में ४ प्रतिया (वे० स० २०१, २०२, २०३, २०४) भीर हैं।

३==१ प्रति स०३। पत्र स० ४३। ल० काल स० १६१४ भादवा बुदी १३।वे० स० १००। छ

३८=२ जिनशतकालक्कार-समतभद्र। पत्र स०१४। मा०१३४७६ इव । भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स०१३०। ज भण्डार।

३८८३ जिनस्तवनद्वात्रिशिका । पत्र स॰ ६। ग्रा॰ ६३×४६ इ न । भाषा-सस्कृत । निषय-स्तोत्र । र॰ काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वै॰ स॰ १८६६ । ट भण्डार ।

विशेष--- पुजराती भाषा सहित है।

३८८४ जिनस्तुति—शोमनमुनि। पत्र म० ६। धा० १०३४४३ इ.च.। भाषा-सस्कृत । निषय-स्तात्र। र० काल ४। ते० काल ४। वे० स० १८७। ज भण्डार।

विशेष---प्रति प्राचीन एव सस्कृत टीका सहित है।

३८८४ जिनसङ्स्रनामस्तोत्र--- श्राशाधर। पत्र स०१७। मा० ६४६ इ.च.। भाषा-सस्कृतः। विषय-स्तात्र। र०काल ×। ते०काल ×। पूर्ण। वे० स०१०७६। स्र भण्डारः

निशेय-इसी मण्डार में ३ प्रतिमा (वे० स० ५२१, ११२६, १०७६) भीर हैं।

३पन६ प्रति स०२। पत्र स० ६। ते० काल ×। वै० स० १७। स मण्डार।

विशेष-इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० ५७) भीर है।

३८८७ प्रति स० ३। पत्र स० १६। ले० काल सं० १८३३ कार्तिक बुदो ४। वे० स० ११४। च

विशेप-पत्र ६ से मागे हिन्दी मे तीर्थ हुरो की स्तुति भीर है।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वि० स० ११६, ११७) और हैं।

३८८८ प्रति स० ४। पत्र स० २०। ते० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३४। छ भण्डार।

विशेष--इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० २३३) भीर है।

्रितोत्र साम्रित 1117 **३८८६ प्रतिस ≿ापनले १४।० वक्तार्थश्यक्त सलोगपुरी४। के न** र 1 व मंग्रार । विरोत-दानके स्रोतित्क अनु लाववित्र, तानु स्वयंत्राणीय अनुसर्वन्तान एवं चेन्त्रदेवना थी है। मंहरा रोपरा मंद्रत का चित्र भी है।

3as प्रक्रियों ६ रेपय में प्रशासे पाप सं १६६३ । वे वे प्रशास मध्यार । विदेश-मंदन वीम १६१६ देशनावर्ष श्रीयुचनंदे थ वी विद्यान न करहे म भी महिन्द्रपण्डागर्हे

म भी सहयोचंड तरहाँ व जोबीरचंड समाई व जानकूमम समाई व भी प्रवासन्त तरहाँ व पारिसा दैपासम्ये भी प्रशास्त्र नेती बाद देशन्त्रो उन्हेमनार्वे बाद वशीतन्त्री नारास्त्रासावे दर्व सहस्ताम स्तीतं निवरर्वे

क्रवार्थ कि वर्त । इनी बच्चार ने एक प्रति (वे नं १०१) धीर है। रेक्टर जिलमक्कासम्भाव--जिलसमाचार्य। पर तं २ । या १२४६ रहा का-

में स्टूट । विवय-स्टोप ३ र जान × । में जान × । पूर्व । में ३६६ । का मध्यार । निमेच-भूनी जच्चार वे प्रश्नियों (वे अं १६२ १४६ १ ६४ १ ६) और है।

देव्ह २ प्रतिसंदे। या संदेशीय क्षेत्र । वे स्थाप विकास के वैस्थ्ये बतिस दे। बर से ६२ (से साल ४ (के से ११७ क) च बचार ! विमेर---वर्गी सम्बार के २ प्रतियां कि वं ११६ ११ | ब्रॉट है।

र्म्बर्थ- अति सं क्षांचव संस्थान वार वं १६ देवलोय पूरी १६। वे सं १६६। ≇

क्षप्रार । विगेष-- श्मी क्लार में कुछ प्रति (वे स १११) धीर है। रेन्द्रश्र प्रति को स्थापन में १६। में परंत्र । में से १६६ व्या समार (

विशेष-स्थापे वया है सवा बन्द में १३ वर्गाव दिने हैं।

विशेष-क्षणी मध्यार में यस प्रति । वे अं २६७) सार है । रेट्स बहस दे। यान १ । में राज ने १ ४। वे भी १ । या क्यार।

lette -reit werre fi me nice (& ef ben bute ba

१८६७ जिनमहस्रमाञ्चलात्र—सिद्धसेन दिवाक्टा वच म ४१वा १२ ×३ ६ च । बलान

संग्रा।शिव–नोपार बल ×ाने राम ४।पूर्णावे सं १ । प्रसमार। केटकट प्रतिकारण । या में काले पाला में कारक सालाक युद्धे हैं । पूर्णी के से की

स वनार ।

स्तोत्र साहित्य]

मन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है-

इति श्रीसिद्धसेनदिवाकरमहाक्षीश्वरिवरिचत श्रीसहस्रनामस्तोत्रसपूर्ण । दुवे ज्ञानचन्द से जोधराज गोदोका नै श्रात्मपठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी ।

3=६६ जिनसहस्रनामस्तोत्र । पत्र स० २६। ग्रा० ११६४५ ६ व । भाषा- मस्कृत । विषय--स्तोय । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे०० स० ६११ । ड भण्डार ।

३६०० जित्तसहस्रनामस्तोत्र । पत्र स०४। आ०१२×५३ ड च । भाषा-सम्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स०१३६ । घ भण्डार ।

विशेष — इसके अतिरिक्त निम्नपाठ और हैं – घटाकरण मत्र, जिनपजरस्तोत्र पत्रों के दोनो विनारो पर सुन्दर बेलबूटे हैं। प्रति दर्शनीय है।

३६०१ जिनसहस्रनामटीका । पत्र स० १२१। मा० १२४५ हे इ व । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० १६३। क भण्डार ।

विशेय-यह पुस्तक ईश्वरदास ठोलिया की थी।

३६०२. जिनसहस्रनामटीका — श्रुतसागर। पत्र स० १८०। श्रा० १२४७ इ.च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र। र० काल ४ । ले० काल म० १६४८ श्रापाढ सुदी १४ । पूर्ण । वै० स० १६२ । क मण्डार ।

३६०३ प्रति २००१ पत्र स० ४ से १६४। ले० काल 🗙 । प्रपूर्ता। वै० स० ८१०। हः भण्डार ।

३६०४ जिनसहस्त्रनामटीका —श्रमरकीर्ति। पत्र स० द१। मा० ११४५ इ च । भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ४। ते० काल स० १८८४ पीप सुदी ११। पूर्ण। वे० स० १६१। स्त्र भण्डार।

३६०४ प्रति स॰ २ । पत्र स० ४७ । ले० काल स० १७२५ । वे० स० २६ । घ मण्डार । विशेष--विष गोपालपुरा मे प्रतिसिपि हुई थी ।

३६०६ प्रति स० ३ । पत्र स० १८ । ले० काल 🗴 । वै० स० २०६ । इन भण्डार ।

३६०७ जिनसहस्रतामटीका । पत्र स०७। भा०१२×१ इ च । मापा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र र०काल ×। ले०काल स०१८२२ श्रावरा । पूर्ण । वे० स०३०६। व्य भण्डार ।

३६०८ जिनसहस्रनामस्तोत्रभाषा—नाधूराम । पत्र स० १६ । मा० ७×६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल स० १६५६ । ले० काल स० १६८४ चैत्र सुदी १० । पूर्वा । वे० स० २१० । स भण्डार ।

३६०६ जिनोपकारस्मर्सा । पत्र स० १३। मा० १२६×५ इ च । मापा-हिन्दी । विषय-स्तोप । र० काल × । ले० काल × । पूर्सा । वै० स० १८७ । क भण्डार । ३६१ प्रतिस० १ | पत्र से १७ | सेंड काल × | वे से २१२ | क लकार |

३६११ प्रतिर्स्∞ ३ । पथ सं । के काल ×ाने संदर्भ व्यवस्थार ।

विनेद-इसी जन्दार में ७ प्रक्तियों (वे सं १ ७ से ११६ स्टब्र) भीर है।

३६१० सामोन्याराविपात। पत्र सं व ४। मा ११×७३ व व । भाषा-धन्तर । विवर-

स्तोष । रंतान ×ावै वाना संदुष्टक विद्यालयो । पूर्णावै संदुष्टा अस्तर विद्यालयो ।

विकेच---११ च बार प्रावीकार नम्म शिका इया है। यन्त ने जावतराय कर समापि भएत राठ त्यां २१८ बार मीमश्वप्रभाषि वर्ज यानारोध्योनमः । वह पाठ निका ह्या है ।

वैश्वरिक, प्रति सं देश पर संदेशी के प्रशास अपवार।

वेश्वरेश्व खरोकारस्वयम्म ** । यत्र चं १ । या १\$×४६ द व । वारा क्रियो । विवय-स्टाव ।

र कास ×ाणे काल ×ा पूर्वाणे से ११६६। का चण्यार । देश्यः समाग्राकरीत्वोष्ट्राच्याः पत्र श्रं २ । धाः १२_०×१. इक्षः। बावा–सस्कृतः। विवय-स्तीतः।

र कम×।मै नार×।पूर्णी वे १३ । घ्राच्छार। निकेट—स्तोष की प्रीमुख के व्यास्था में हो हुई है। वाचा दावी वर्तेयां वर्तत तत्तव तता तार्वि वर्त्तीय

वतः इत्यदि । १६१६ तीसचीवीसीस्तव्य ⁻⁻⁻⁻⁻। पत्र तं ११ । या १९८२ ६ व । । बला संस्ट । विषस्-

स्तोत्र (र: पात ×) ने जाल में १७६० । दूसा । बीर्ला । ने मं १७६ । इस सम्बार ।

देश्रीक वक्ताक्रीती सम्बद्धान् "ायव र्ष १ (मा १८८४ इ.स.) मान्य दिली : दिवस-स्टांग र

र कला×। में नल ×। पूर्णं≀ थीर्जाने वं २१३७ । वर सम्बार । ३६१८ देववास्तुति—पद्मन्ति। पण सं ३ । था १ अप्र} द व । वस्ता-दिन्दी । विवय-स्तीम ।

र कस्त×ामे करत×ायुगी।वै से २१९७। ह बच्चार। १६१६. देवागमस्तीत्र-काचार्ने समस्तमञ्जाना वं ४ : वा १९% १, इ.च : वापा-बंस्ट !

विश्वस-स्तोभ । र जल्ल × । ते व्यथ सं १७२६ नाव नुसे ६ । पूर्ण । वे १७ । व्य बच्चार ।

विकेच-वर्ती बच्छार में एक प्रति (वे सं वे) घोर है।

देश प्रतिका शांत्रवर्ष २७। में नाम वं १६६ वैकाल क्यो ४ । वर्णा ने सं १६६ । W SHITE I

विकेप---मनवर्गय बाह्य में श्रमाई मनपुर में रमपठगार्थ प्रतिविधि की थी । इंडी बच्चार में २ अधिकों (में सं १६४ १६४) चीर है।

स्तोत्र साहित्य

३६२१ प्रति स्ट ३। पत्र स० म। ले० काल स० १८७१ ज्येष्ठ सुदी १३। वे० स० १२४। छ

३६२२ प्रति स०४। पत्र स०६। ते० काल स०१६२३ वैशाख धुदी ३। वे० स०७६। ज भण्डार।

विद्योप-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २७७) भीर है।

३६०३ प्रति स० ४। पत्र स० ६। ले० काल स० १७२५ फाग्रुन बुदी १०। वे० स० ६। म भण्डार।

विशेष—पाडे दीनाजी ने सागानेर में प्रतिलिपि की थीं, । साह जोघराज गोदीका के नाम पर स्याही पीत दी गई हैं। '

३६२४ प्रति स॰ ६ । पत्र स॰ ७ । ते॰ काल × । वे॰ स॰ १६१ । व्य मण्डार ।

३६२४ देवागमस्तोत्रहोका--आचार्य वसुनिद्। पत्र म०२४। आ० १३४४ इ.च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र (दर्शन)। र० काल ४। ले० काल स० १४५६ भादवा सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० १२३। स्र भण्डार।

विशेष-प्रशस्ति निम्न प्रकार है--

समत् १५५६ भाइपद सुदी २ श्री मूलसंघे नद्याम्नारे बलात्कारगरो सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकु दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनदि देवास्तत्वट्टे भट्टारक श्री पद्मनदि देवास्तत्वट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तिकाच्य मुनि श्रीरत्नकीर्ति-देवास्तिकाच्य मुनि हेमचद्र देवास्तदाम्नाये श्रीपयावास्तव्ये खण्डेलवालान्वये बीजुवागोत्रे सा मदन भार्यो हरिसिरारी पुत्र सा परिसराम भार्यो भपी एतैसास्त्रमिद लेखिरत्वा ज्ञानपात्राय मृनि हेमचन्द्राय भक्त्याविधिना प्रदत्त ।

३६२६ प्रति स०२। पत्र स०२५। ले॰ काल स०१६४४ भादवा बुदी १२। वे॰ स०१६०। ज भण्डार।

निशेष - कुछ पत्र पानी मे योडे गल गये हैं। यह पुस्तक प० फतेहलालजी की है ऐसा लिखा हुमा है।

३६२७ देवागमन्तोत्रभाषा - जयचढ छाबड़ा। पत्र स० १३४। मा० १२४७ इ च। भाषाहिन्दी। विषय - न्याय। र० काल स० १८६६ चैत्र बुदी १४। ले० काल स० १६३५ माह सुदी १०। पूर्ण। वे० स०
३०६। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स॰ ३१०) भीर है।

३६२८ प्रति स० २ । पत्र स० ५ मे ६ । ले० काल स० १८६८ । वे० स० ३०६ । ह मण्डार ।
विशेषं—इसी मण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३०८) और है।

314 T रकात्र साहित्य देशक देशसमस्त्रीक्रमापा *** । पत्र सः ४ । ता ११४७- इ.च । वाला-हिली प्रकः विषय-स्तोत्र दे कान ×ाने कान ×ापर्ता (क्रिप्रीय परिकार तर) के सँ के का का पच्चार ! विकेश-स्थाय प्रकारत दिया बचा है। देश देवायभस्तोत्रवृत्ति-विश्वयसेशस्ति कं शिष्टा कालुमा । पत्र वं ६ । मा १९× स्म । थामा संस्त्व । विवय-स्टोन । रं काल × । के काल ६ १ ६४ व्येष्ठ सुवी व । पूर्व ो वे दे ११६ । में WEST ! शिक्षेत्र--- एति सत्त्वत टीका नक्षित है। ३६३१ सम्बन्द्रस्थरम् —यमेषाम् । पत्र वं १ । सा ११×४६ इ.च.। काला-सहस्य । विश्व-लोकार कार≺क्षेत्र काल×(पूर्णाचे सं२ ७२ क्ष्म क्षमार) विकेच--पूरी प्रति निम्न प्रशाद है---श्रीतरश्रास्त्रामः । सद्या संब~~ क्षमनो अवर्ष विकास विश्वक सम्बद्ध परसूनही । विस्तवन्त्रकारी स या भनिकत को ईस बारू सबी । शामर्वतरुप्रसन्तर्वाध्ययोगीयो मुनीको थयो पदास्त च नक्ट्रब चनिमधी चित्रो वर्ध कुरुवसी ।।१।। विन्द्रवाला श्रंद---देशार्ग क्षेत्र) राज्येको दालीय श्रेत्राकादको । पुरुषोदी बार्स्सीताम विष्युमाना सोहीयानं ॥२॥ बुबंदप्रसार संद---वर्षः मुख्यतेने वचारप्रास्यक्ते बद्धस्यतियक्षे पर्वरास्त्रक्ते । वरी वस्त सिरसी बानेद बीधी दृष्टी पाक्चप्रदिश कुर्वपर्वीची (१३)। ERIS -स्त्रस वसारम्थीयौ शीरारे पदमानगरह इस्वरिन ।

तिहान धनवेश वाहैतरेण बारहेतुनकाल नगवर्गानाल । ॥१॥ विश्वास मानेज स्वत्यात्र गवेल व्यत्यात्रीक हुम्मादेक ११ । विश्वास्त्र मानेज स्वत्यात्र गवेल प्रत्यात्रील ॥१॥ विश्वास्त्र गवेल विश्वास्त्र विष्वास्त्र विष्वास्त

स्तोत्र साहित्य]

जताबदेजाण मध्याज्जणेभाण मताजईप्राण कतामुहभरा ॥६॥ धम्मदुकदेण सद्धम्मबदेण णम्मोत्युकारेण मत्तिव्यभारेण ॥ त्युउ प्रस्ट्रिण सोमीवि तित्येण दासेण बूहेण समुज्जमतेण ॥६॥

द्वात्रिशत्यत्र कमलबध ।।

भार्याद्धद---

कोही सोहोचत्ती अत्ती अजर्दण सासगै लीगों। मा अमोहवि खीगो मारत्यी कक्यो देसी ॥६॥

भुजगप्रयात्तछद—

मुचितो वितित्तो विभागी जईसी सुसीली सुसीली मुसीही विईसी।
सुधम्मी सुरम्मी सुकम्मी सुसीसी विरामी विभामी विचिट्ठी विमीसी ॥१०॥

मार्याधद --

सम्मद्द सराराण समारित तहे वसु सारा । सरइ बरावड धम्मो बदो भविपुण्स विवसामी ।।११॥

मीतिकदामछद--

तिलग हिमानल मालव मग वरव्वर केरल कण्णुष्ठ वग ।

तिलात पर्लिग कुरगढहाल कराडम्र गुज्जर इन्न तमाल ॥१२॥

मुपोट मनित निरात मनीर सुतुक्क तुरुक्क वराड मुनिर ।

मरूरमल दक्क्षण पूरवदेस सुग्रागवनाल सुकुम लमेस ॥१३॥

चऊड गऊड सुककण्रलाट, सुनेट सुभोट सुदिव्वड राट ।

मुदेस विदेसह माचन्न राम, विवेक विवक्क्षण पूजन्न पाम ॥१४॥

सुवक्कल पीरणपमोहरि एगरि, ररणज्मण गोजर पाद विधारि ।

मुविव्यम मंति महाउ विभाज, सुगावद गीज मग्गोहरसाज ॥१४॥

मुज्जल मुति महीर पवाल, सुपूरज गिग्मल रगिहि वाल ।

पानक विज्यरि धम्मविचद वधामज मक्किह वाह सुभद ॥१६॥

मार्याछद--

जइ जरादिसियर सिहमी, सम्मदिद्धि साव भाइ परि भारित । जिराधम्मभवराखभी विस भेल भकरी जमी जमइ ॥१०॥

```
11¢ ]
                                                                                 स्तित साहित्व
   समिली चंद---
                         यतः परित्र विवाद प्रजारकं दिल्प सरवाल दालावधे वालकं ।
                         बम्मली राज्यारा स्त्र बन्धानुई शुक्तस्य क्षत्र हार्यक्रभावर्व ॥१०॥
                         भाहा प्रत्यकी मायसाबावय, बस्तवस्था वटा कमाचा पातपः।
                         नाक नारिसर्वि वृतियो निम्बद्धो कमानेनो कयो जिस व्याप्ति।।(३।।
   पश्चिक्तर----
                         मुराहर बचनरक्षार काल परिन ध्रमम जिल्लार ।
                         परत कमकहि प्रकरत करत कोशन वह वहनर ।
                         नीश वनितर पान बोडि वन्त्रवचनतर ।
                         दशारी क्यानि समस्य प्रत्य प्रवार ।
                         बामाई सन्द बन्द इंद्रालवर समस्य सारश्र राज्य ।
                         मय कामकृरंबर कामबंद सक्तर्थंव बंदलकरम्ह ।१२ ।।
                                  इवि वर्वेचनाध्यंत स्वातः ॥
           १६६२ भिरवपाठसम्बद्धाः । पत्र सं ७ : सा ३×४३ इख । जाना-समूल हिन्दी । विवर
स्तौराःर कत×ाने कल×ायद्वर्ताः वे वे ३ । ब्राव्यक्यस्रा
           विकेच--निम्न गर्जी का संबद्ध है।
```

```
nan erfe-
```

```
र्वपर्यक्रमात्र--
                                  करचंद (१ नवब है)
प्रतियेख विवि---
                     क्षेत्रका
                                    ×
```

क्षक्र

×

there

शि**ण्ये**

१६३३ जिल्लांसामारकार्याच्या वस वे १ | धा ११/१६ १ व । वादा-प्राप्त । विवय-स्टबर ।

```
र क्रम ≾।मे क्रल ≾।पूर्वादे वं ३३६। बाकस्तरा
          निकेर—बहानीर् निर्धाता करपाएक पूजा जी है ।
```

१६३४ प्रतिर्दं १। प्रवर्ष १। के कस्व×ावे स ३ २। क्राथमार।

देश्देश, प्रतिका है। यस वे देशी कला वे १ वशी वे १ का पा सम्बार।

निवेद--इनी बच्चार वे एक प्रति (वे वं १) सीर है।

श्रोहा दर्घ५---

मृतका नीवीडी---

३६३६. प्रति स० ४ । पत्र स० २ । ले० काल × । वे० स० १३६ । छ भण्डार । विशेष—इसी भण्डार ३ प्रतिया (वे० स० १३६, २५६ २५६/२) भीर हैं । ३६३७. प्रति स० ४ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० ४०३ । व्य भण्डार । ३६३≂ प्रति स० ६ । पत्र स० ३ । ले० काल × । वे० स० १६६३ । ट भण्डार ।

३६३६ निर्वाणकारहटीका '। पत्र स॰ २४। मा० १०४५ इखा । मापा-प्राकृत सस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६ । स्व भण्डार ।

३६४० निर्वाणकायङभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र स० ३ । ग्रा० ६×६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल स० १७४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३७५ । ड भण्डार ।

विशेष - इसी मण्डार मे २ मपूर्ण प्रतिया (वे० स० ३७३, ३७४) भीर हैं।

३६४१ निर्वाणभक्ति । पत्र २०२४। ग्रा०११४७ हु च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स०३८२। क भण्डार।

३६४२ निर्वाणभिक्ति । पत्र स॰ ६। ग्रा॰ ६१ ४५३ इ च । भाषा सस्द्रत । विषय-स्तवन । र॰ काल × । ले॰ काल × । भपूर्ण । वे॰ स॰ २०७४ । ट भण्डार ।

विशेष-- १६ पद्य तक है।

३६४३ निर्वाणसप्तशतिस्तोत्र "।पत्र स०६। मा० =×४ दे इच । मापा-सस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल × । ते० काल स० १६२३ मासोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० । ज भण्डार ।

दे६४४. निर्वाण्स्तोत्र । पत्र स० ३ से ४ । मा० १०×४ इ च । भाषा-सस्वृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । के० काल × । मपूर्ण । वे० स० २१७४ । ट भण्डार ।

विशेष-हिन्दी टीका दी हुई है।

३६४४ नेमिनरेन्द्रस्तोत्र—जनस्राथ । पत्र स० ६ । झा० ६३४४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तीत्र । र० काल ४ । ले० काल स० १७०४ मादवा बुद २ । पूर्ण । वे० स० २३२ । व्य भण्हार ।

विशेव-प॰ दामोदर ने शेरपुर मे प्रतिलिपि की थी ।

३६४६. नेमिनाथस्तोत्र—प० शाली । पत्र स० १ । मा० ११×५३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स० १८८६ । पूर्ण । वे० सं० ३४० । स्त्र मण्डार ।

> विशेष—प्रति सस्कृत टीका सहित है। द्वययक्षरी स्तात्र है। प्रदर्शन योग्य है। ३६४७ प्रति स०२। पत्र स०१। ले० काल 📐 । वे० स०१ ५३०। ट मण्डार।

```
- - 1
                                                                                िस्तात्र माहित्य
           ३६४८. निवासन--श्रापि शिथा वत्र में १०वा १०×४३ ईवा । मारा-दिन्दी । विवय-
स्तरमा∹र वल्ल ≍ाने वासा। पर्गापे व १२ वाचाभण्यारा
           निजेन--- बीन शोर्च दूर स्तरम भी है।
           ३६४६ स्थितनवन---विवसानरम्बी। वचर्त १। धा १ X४ इ.च.। वाका-दिची। विवय-
स्तोत्र । रंजन्त× । वे नान × । दर्शी। वे नं १६१६ । का गणार ।
           निनेप-नुष्पा वैक्तियन धीर है।
           ३६५ प्रश्लद्वस्थात्यक्रपाठ—हरणहायव सं १३ वाला-स्थितः विशव-रहरतः। र यान
१ ३३ व्लेप्रनदी७ ∂ने नाल ⋉ । पूर्णी वे वे २३७ ३ के प्रकार ।
           विशेष---प्रार्थि सन्त बाद विश्व है---
                              राज्यान भागक नगी। यस्य कृत्य दूसर्थय ।
  TITES-
                               बन्मव कुर बस्कान चार, बुधि कुल समझ दिनंद ॥१॥
                               मेपन कारू वंदिये अंदल र्वेच प्रकार ।
                               बार मंत्रक श्रन्त ग्रीतिये अपना बच्चन सार ॥२॥
                              बढ मेंबल वाला बब बबरिवि है
   प्र-तिम चल संद----
                                          सिथ सामा क्या है अपनी ।
                               बला दर दस्त कर कर गी,
                                          तुम तुम्रह की है मध्यी ह
                               बन गय क्षत्र बयान वर्र प्रत
                                          विनके न्यूनिव पूर्व हरती ।।
                               शता सरिजन पढि करि समी
                                          र्वजन वृत्ति बाब्द्य वच्छी ॥११६॥
                                म्योज संबर्ध व नप्रतिवे वर्षिने वर्षण यार ।
   चेत--
                                क्रवदन क्रिय व गैंबल्पी त्यों क्रम परने सार 1182801
                                तीति तीर्थे वस् चंद्र, संपत्तर के यंद्र।
                                मेड करन तथन विषय, पूरत पत्नी निर्तय १११ ।।
                                     ।। पति पंचकत्वासम् बंदर्स ।।
```

३६४१ पद्मनमस्कारस्तोत्र-श्राचार्यं विलानदि । पत्र स० ८। मा० १०३४८ इ. ए । भाषा-सम्कृत । विषय-स्तोत्र) र० वाल × । ने० वाल स० १७६६ पायुण । पूर्ण । ये० व० ३४ । स्त्र भण्डार ।

३६४२ पद्ममगलपाठ-स्पन्नद्र। पत्र म०६। मा० १२३४४३ रन । भागा-हिनी । रिगय-स्तोत्र। र० गाल ४। ने० गान म०१६४४ वर्गतिय मुदी २। पूर्ण । वे० म० ४०२।

३६४३ प्रति सट २ । पत्र पत्र भेत नात ग० १६३७ । ये० ग० ८१४ । यह भण्टार । ३६४४ प्रति सट ३ । पत्र ग० २३ । ते० गात्र 📐 । ये० ग० १६४ । यु भण्टार ।

विशेष-इसी भणार से एवं प्रति भौर है।

३६४४ प्रति स० ४। पत्र म० १०। मे० नात्र म० १८८६ झासोज गुदी १४। उ० स॰ ६१८। च जण्टार।

विद्येष-पत्र ४ चीया नही है। इसा अण्डार में एक प्रति (वे० स० २३६) घोर है।

३६४६ प्रति सन् ४ । पत्र स० ७ । ले० बाल ८ । ये० स० १४४ । ह्यू अण्डार ।

विवेष--इसी अण्डार में एक प्रति (वे० स० २३६) घोर है।

३६४७ पचस्तोत्रमप्रह । पत्र सर ४३ । प्रा० १२४४ दक्ष । भाषा-सस्तृत । विगय-स्तीय । २० मान 🗙 । ने० कान 🗙 । पूर्ण । वे० म० ६१६ । श्र्य भण्डार ।

षिशेप-पाचा ही स्तोत्र टीका महित हैं।

स्तोत्र	टीकाकार	मापा
१ एगीमाव	नागचन्द्र सूरि	सस्यन
२ पत्पाणमन्दर	हर्षकीति	77
३ विषापहार	नागचन्द्रसृरि	33
 भूपालचतुिकाति 	श्रादाघर	17
प्र. सिद्धिप्रयस्तोत्र	Shings rever	73

३६४८ पचस्तीत्रमग्रह । पत्र म० २४ । ग्रा० ६ ८४ इ.च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तात्र । ७० ते० वात 🗴 । पूर्णा । वे० स० १४०० । स्त्र भण्डार ।

३६४६ पचस्तोत्रदीका । पत्र म० ४०। भा० १२४६ इ.च । भाषा-सस्यत । विषय स्ताय । र• कात × । ले० काल ×ा पूर्ण । वे० सं० २००३ । ट भण्डार ।

िलात्र सामित्र रिमेप-अन्यानर, विधानहार, एक्षीवाच कायान्यनंदिर, क्षप्रत्वचतुर्वितति दन पांच स्तोत्रों की दीना है।

रेश्ड पद्मावत्वप्रवृत्ति--पारवेशेव । पश्च रेश्य या ११×४, दळ । वागा-नंत्रत । विवय-न्तान ≓र कान × । ने नान से १ ६७ । पुला के से १४४ । आह जस्तार ।

विकेत---यन्तिम- यस्याया पलकेवेशविद्यविद्याना वचायरध्युवयुक्ती यन् विजयवर्वश्रवि राक्तर्व सर्वाचित्र शेतुच्ये देवनाभिरति । वर्षांन्यो इत्वरानिः सरीयेनेस्तुतारेरियं वृत्ति वैकाले सूर्वविवे नगरवाः मुक्करेवामां मस्ताक्षरपरमानायः र्ववयनानि जानाविद्वार्विद्यारकारान्ति वास्ववनुष्याधीदना प्राप्तः ।

द्वि पद्मानस्कृतकृतिस्वासा ।

३६६१ पश्चामनीस्तोत्र-----। यस सं १६ । या ११७×१३ ईव । भागा-नंत्रतः विवय-स्तोरः।

र राल ≺। ने राज्य × । प्रापी वि से १३२ । का कशारा विमेत---रचानती पूजा तमा बान्तिवायस्तीम वदीवायस्तीम बाँद विवादहारस्तीम भी है ?

३६१२ पद्मावतीकी बाल '''। पवर्ष २ । या हुँ×४३ इ.च.। वाला–हिन्दी। दिवर स्तान ! र राज्यानि काल प्रापूर्णाके संदर्शका बच्चारा

३६६६ पद्मावनीवरहरू^{.......}। पर सं १ । या ११३×१ इक्ष । वापा–बंस्टा | विका-स्तेष | र रान्त×। में रान्त×। दुर्गावे वे २६१ । स्व सम्बद्धार ।

३ ६४ पद्मावतीमहस्रशास^{™™}। वत्र वं १२ (था १ ×१३ दळ। जला—वेस्ट्रत । विवय-म्तीन । रं, कल ×ाले नाल वे १६ २ । दुर्जी∮के वे ८६६ । व्याचमार ।

विनेच--कानियायक्षक वर्षे प्रधानती शक्य (बंच) श्री विवेद्वये हैं !

३६६४ पद्मापतीन्नोज्ञ^{ारामा} वस्त ६। बा ६३%६ इ.स. मस्त वंशक्त । विवय-स्तीय । ^६ कल ×ाते नाल ×ायलें।चे सं २१३३ । का कसार स

विशेष-- इची जनगर ने २ गतियाँ (वे अं १ ३२, १ ६) धीर है।

3 66 प्रतिस व । यस वं । के काल वं १८३६ (वे सं १८४) का पनार *।*

31.5 o प्रतिसा के। पण सा पाने कामाराके से के का भागमधारा

316= प्रतिस ४ । पन वं १६ । में कल्ल × । वे वं ४२६ । अर वस्तर ।

३६६६ परमञ्जातिस्थात्र--वकारसोशसः। यद सं १। था १२३×६३ इव। यस-दिनी। रिच्य-स्तीन । र कल ×ासे कल ×ापूर्त। वे वे १९११ चामण्यार।

३६७० परमास्मराजस्तवन—पश्चानदिः । रतः वं २ । मा १×१३ इसः । माना-बंतकः । विवय-स्ताप् र कस्त×ाने कस्य×ापूर्णावे सं १९६।साम्बर्णारः

३६७१ परमात्मराजस्तोत्र—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र स० ३ । मा० १०४६ इच । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वै० म० ६६५ । श्र भण्डार ।

ग्रय परमात्गराज स्तात्र लिख्यते

यन्नामसस्तवफलात् महता महत्यप्यष्टी, विश्वस्य इहाश् भवति पूर्णा । सर्वार्यसिद्धजनका स्विनदेकपृत्ति, भन्त्यान्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥१॥ यद्रधानवष्यहननान्महतां प्रयाति, कम्मोद्रयोति विषमा शतचूर्शता च । भ्रतातिगावरगुणा प्रवटाभवेयुर्भवत्यास्तुवनमनिश परमात्मराज ॥२॥ धम्यावदोधनलनात्त्रिजगत्प्रदीप, श्रीकेवलोदयमनतमुखाव्धिमाशु । सत अयन्ति परम भूवनार्च्य वद्य , भक्त्यास्तुवेतमनिर्ग परमात्मराज ॥३॥ यहर्शनेनमूनयो मलयोगलीना, ध्याने निजात्मन इह त्रिजगत्यदार्थान् । प्रचित्त केवलह्वा स्वकराश्रितान्वा, भक्त्यास्त्वेतमनिश परमात्मराज ॥४॥ यद्भावनादिकरणाद्भवनाशनाच, प्रणश्यति कर्म्मरिपवोभवकोटि जाता । ग्रान्यन्तरेऽत्रविविधा सकलार्द्धय स्पूर्मन्त्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥।।। सन्नाममात्रजपनात् स्मरएगाच यस्य, दुःकर्मदुर्मलचयाद्विमला भवति दद्दा जिनेन्द्रगरामृत्यपद लभते, भक्त्यास्त्वेतमनिश परमात्मराज ॥६॥ य स्वान्तरेत् विमल विमलाविष्द्वय, श्रुक्लेन तत्वमसम परमार्थरूप । महत्यद त्रिजगता शरण श्रयन्ते, भक्त्यास्तुवैतमनिश परमात्मराज ॥७॥ यदयानशुक्कपविनाखिलकर्मधीलान्, हस्वा समाप्यधिवदा स्तववदनार्चाः। सिद्धासदष्टगुराभूपराभाजना स्यूर्भक्त्यास्त्रवेतमनिक परमात्मराज ॥ ।।।।। यस्याप्तये स्गणिनो विधिनाचरति, ह्याचारयति यमिनो वरपञ्चभेदान । माधारसारजनितान् परमार्थवुद्धचा, मक्स्यास्तुवेतमनिश परमात्मराज ॥६॥ य ज्ञात्मात्मस्विदो यातपाठकाश्च, सर्वागपूर्वजलघेर्लेघु यांति पार । भन्याभयतिक्षिवदं परतत्ववीज, भक्त्यास्तुवेतमनिशं पर्मात्मराज ॥१०॥ ये साधयति वरयोगयलेन नित्यमच्यात्ममार्गनिरतावनपर्वतादौ । श्रीसामव विावगते करम तिरस्यं, भक्त्यास्तुवेतमनिक परमात्मराज ॥११॥ रागदोपमलिनोऽपि निर्मलो, देहवानिय च देह विज्जतः। कर्मवानिष कुकर्मदूरगो, निश्चयेन मुविय स नन्दतु ॥१२॥

```
िम्लाप्र माहिस्य
```

```
स्ववत् वृत्तिका व्यक्ति वृत्त व इत् स्थापने व व । १ व ।
स्वतः व वर्षवते व (विद्या व स्थापन प्रकृतिकाय । १ व ।
स्वतः य स्थापना व स्थापन प्रकृतिकाय । १ व ।
स्वतं य स्थापे स्थापना व । वृत्ति व ।
स्वतं य स्थापे स्थापना व । वृत्ति वृत्ति ।
स्वतं व व्यक्ति व ।
स्वतं व ।
स्वतं व ।
स्वतं व व्यक्ति व ।
स्वतं व ।
स्वतं व व ।
स्वतं
```

३६७२ दासानंत्रंपरियोतः" । त्यानं १) मा दश्र ६ यः सन्तः-नेप्टुतः | निर्य-नामः। र नाम ८ । में नाम ४ । द्वार्णं वे श्रे ११६ । सामग्रारः |

१६६६ वरस्रोत्रहरनाथः ापय नं १। या ७०० र रखः। बारा संस्कृतः। विचर-स्तातः। र सक्तः \times । संस्कृतः संस्कृतः संस्कृतः संस्कृतः संस्कृतः स्वातः।

- १६४% प्रतिसः । परवं १। ने नल×ारे सं २६ । सामन्यरः।

देश्कर प्रति स्व ६ । यह वर्ष १ । वे जान ८ । वे व्हर्श व्यवसरः)

विदेश-कृतस्यव विन्यवस्य वे प्रतिनिद्ध यो यो । इसी यस्यतः वे वृक्ष प्रति (वे अं १११) स्रोर है।

देशक वृद्ध्यायस्यात्रामाः—। यह सं १ । का ११ ८०३ वर्ष । सम्यानसम्म । विदय-स्टोर ।

र नाम ≻ाने नाम वै १६६० भाइस वृदी १४ । पूर्ण रेवे सं ४३ । सः समारा

विकेश—हिन्दी वर्ष मी विशा हुआ है।

_ Y Y

हरू क्रमार्थस्यक्रणाणां नव नं ४ । सा ११३,४८-हेद व । ब्राया-संस्टुट । विश्व-स्तीय । र कान ४ | ने पाल ४ | पूर्ण | वे वे १ ४ । का सम्बार ।

पि**रोप--- मूर्य** की स्पृति की भूती हैं । तक्क पथ मैं पूक्त लिभने ने रह क्का है ।

३६.ऽ⊏ पाठसम्रह प्यन्त ३६ । म्रा० ४६ ४६ म । भागा-सँत्रः । विषय-न्तोष्र । रत् यान ४ । तुर्ग । येरु म० १६२८ । श्रा भण्टार ।

निस्त पाठ है — जैन गामभी जर्फ बच्चरक्षर, शान्तिस्तीय, एरीभावस्ताय, गुमोकारस्त्र, द्राय

३६७६ पाठममह । पत्र २०१०। मा० १२८७है इख । भाषा~हिन्दी मस्यून । विषय-स्नात्र । राज्यात > । ने० पात्र ४ । मनूर्ण । २० म० २०६० । भ्रा भण्डार ।

इ.=> पाठसम्रह—सम्रहत्रत्ती-र्जतराम ग्राफ्ता । पत्र त० ७० । मा० ११०८७३ इद्य । नापा-हिन्दी । विषय-स्ताप । र० मान ८ । ने० मात्र ४ । पूर्ण । वे० स० ४६१ । फ मण्डार ।

3६=१ पात्रनेश्रारीस्तोत्र । पत्र ७० १७ । मा० १०४१ इ.च । भाषा-सग्रतः । त्रिषय-स्तोत्र । र० नार ४ । स० नाल ४ । पूर्ण । वे० स० १३४ । छ मण्डार ।

विर्धाप--- ४० व्लोब हैं। प्रत प्राचीन एवं मस्युव टीका महित है।

३६८२ पाधिवेश्वरचिन्तामिता । पत्र म० ७ । मा० ८३४४३ इ.च.। भाषा-मन्तृत । रिषय-स्तीत्र । र० नात ४ । ते० नात म० १८६० भारता मुदी ८ । वै० स० २३४ । ज भण्डार ।

विशेष -- मुदावन ने प्रतिलिपि को थी।

३६८. पार्थियेडवर । पत्र म०३। ग्रा० ७१४४३ इ.च.। भाषा-सम्प्रतः । प्रिणय-प्रेडिव साहित्य । र० काल ४। ले० वात ४। वै० स० १४४४ । पूर्ण । श्रा भण्डारः ।

३६=४ पार्श्वनाथ पद्मावतीस्तोत्र । पत्र म०३। ग्रा० ११×५ ६च । भाषा-सस्तृत । विषय-स्तीत्र । र० नाल × । न० कान × । पूर्ण । वै० म० १३६ । छ भण्यार ।

३६=४ पार्षनाय लहमीस्ते। त्र-पद्मप्रभादेख । पत्र स० १ । मा० ६×४६ इझ । भाषा-सम्मृत । विषय-स्तोत्र । र० नाल × । ने० काल × । पूर्ण । वे० न० २६४ । स्त्र भण्डार ।

३६८ प्रति स० । पय म० ४। ने० काल ×। वै० स० ६२। सा भण्डार।

३६८७ पार्विताय गत्र वर्द्ध मानम्तवन । पत्र स॰ १। मा० १०४४३ इ च । मापा-सम्पृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ते० वाल ४ । पूर्ण । वे० म० १४८ । छ भण्डार)

् ३६८८ पार्श्वनाथस्तोत्र । पत्र स० ३। ग्रा० १० है ४६ छ । माया-सस्वत । विषय-ग्लोत । र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण । वे० स० ३४३ । श्र भण्डार ।

विशेप-लघु सामायिक भी है।

४०६] [स्तात्र माहित्व

१९८६, पार्वतावस्तोत्राच्चा पत्र सं १२। सा १ ४४ई इ.च.। शता-संग्रह । विषय-सीन । र नाम ४। में काल ४। पूर्वा । वे सं ११६। का बच्चार ।

रिनेद-भग्न सहित स्थोप 🖁 । यक्कर सुम्बर पूर्व नोटे 🖁 ।

३६६ पाल्येकावस्तोत्रः'''''।पचत्त १।धा १२००% ७ इत्याधानास्त्रातिकन-स्तीक। र नक्त×।मे कक्त×।प्रदीशै सं ७६६।काष्ट्राप्यार

३६६१ पार्वेदावायोच ⁻⁻⁻⁻।यव र्व१ । धा १ क्रै×र इ.चाचला-दिनौ । विषय-स्टोन । र नात×। ने कसा×। पूर्णा के ७.६६३ | खावस्थार।

१६६२ पास्त्रज्ञावस्तोक्षदीकाः '''। पत्र वं १ या ११,४६३ ६ था कला-तास्त्रः। विवय-स्त्रोत्त। र कला ×ाते कला ×ात्रुष्ठी। वे तुप्रश्चास प्रवारः

१६६६ पार्वज्ञावस्तोक्करीका----गण्य र्डराया १४४ इत्याधमा-कक्कराविषय-स्वोदार्ग्यक्तरावे स्वस्य ×ाष्ट्रवीवे वे स्वयाध्य

३६६४ पार्वजनस्वाक्सावा—स्थानतस्वाचापयाच्या पर सं १। शा १ ४६६ १ वः। यासा हिन्दीः विज-त्योव र कार्य ४। के काल ४ १ के काल ४ १ क्या हिन्दीः

३६६६८ प्रार्लमाम्बर्कक मानुष्य हे ४ श्रेषा १९४४६ इ.च. मला ६५४ स. विपर-स्तोर । र नात ×ाने गाल ×ापूर्ण के वे १९७ | स्व क्यार ।

निवेद—अठि क्य स्टीत है।

३६६६ पार्वमिद्रिक्षलोज—सहाप्तृति राकसिंडावण प्रावा ११५४६ द्वाधना—संस्कृत । विक⊷कोणार सम्बर्धक कालाई १६ कावर्की वे स्व ७० । बर क्यारा

. १६६७ प्रश्तास्त्रस्यात्र[™]ावप्रवं ७।सा ×६६४। माना—०ल्ह्यः स्पिर स्तापः।र सन्त×।ते सन्त×।प्रकावे वं १९।स्न सन्तारः।

मुद्देश्यः सम्ब्रासरविक्रिका^{रणा}ायनं । सा ११८८ इत्। जना श्रीरतः। नियन-साम्। र कना×ाने पानानं १ १।पूर्णावे संबद्धाः सामण्यारः।

दिसेय-भी होरामन्य में प्रभारूर में प्रविधिष गी थी।

स्तोत्र साहित्य]

४३०० भक्तामरस्तोत्र—मानतुगाचार्य । पत्र स० ६ । ग्रा० १०४५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्गा । वे० स० १२०३ । स्त्र भण्डार ।

४००२ प्रति स० २। पत्र स० १०। ले० काल स० १७२०। वे० स० २६। श्र भण्हार।
५००२ प्रति स० ३। पत्र स० २४। ले० काल स० १७४४। वे० स० १०१४। श्र भण्हार।
विवोप—हिन्दी भर्ष सहित है।

४००३ प्रति सरु ४। पत्र सरु १०। लेर काल 🗴 । वेरु सरु २२०१। 🐯 मण्डार।

विशेष---प्रति ताडपशीय है। ग्रा० ४×२ एच है। इसके मितिरिक्त २ पत्र पुट्ठों की जगह हैं। २×१३ इ.स.चीडे पत्र पर ग्रामोकार मन्त्र भी है। प्रति प्रदर्शन योग्य है।

४८०४ प्रति स० ४। पत्र स० २४। ले॰ काल स० १७४४। वे० स० १०१४। घ्य भण्डार।
विशेष---इसी भण्डार में ६ प्रतियां (वे॰ स० ४४१, ६४६, ६७३, ८६०, ६२०, ६४६, ११३४, ११८६, १३६६) भीर हैं।

४००४ प्रति स०६। पत्र स०६। नि० काल स० १८६७ पौप सुदी ८। वे० स० २४१। स्व भण्डार [

विशेष—सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हैं। मूल प्रति मधुरादास ने निमसपुर मे लिखी तथा उदैराम ने टिप्पमा किया। इसी भण्डार मे तीन प्रतिया (वै० स० १२८, २८८, १८६६) भीर हैं।

४००६ प्रति स० ७। पत्र स० २५। ले० काल 🗴 । ते० स० ७४। घ मण्डार ।

४००७ प्रति स० ६ । पत्र स० ६ मे ११ । ले० काल स० १८७८ ज्येष्ठ बुदी ७ । प्रपूर्गा । वे० स० १४६ । इस भण्डार ।

> विशेष — इसी भण्डार में १२ प्रतियां (वे० स० ५३६ से ५४५ तथा ५४७ से ५५०, ५५२) और हैं। ४००८ प्रति स० ६। पत्र स० २५। ले० काल 🗙 । वे० स० ७३८। च मण्डार ।

विशेष-सस्कृत टीका सहित है। इसी मण्डार में ७ प्रतिया (वै० स० २५३, २५४, २५४, २५६, २५७, ७३८, ७३८) मीर है।

४००६ प्रति स०१०। पत्र स०६। ले० काल सं० १६२२ चैत्र बुदी १। वे० स० १३४। छ

विशेष — इसी भण्डार में ६ प्रतियां (बे॰ स॰ १३४ (४) १३६, २२६) झीर हैं। ४०१० प्रति स० ११। पत्र स० ७। ले॰ काल ४। बे॰ स॰ १७०। मा मण्डार। विशेष— इसी भण्डार एक प्रति (वे॰ स॰ २१५) झीर है।

```
] [ स्टात्र साहित्य
```

प्रकरेर प्रतिसं १२ । पर वंदाने वाल × म्हिन्तं रेक्ष्य का सम्बाद । प्रदेश-प्रतिसः १३ । पर वंदशाने वाल नंदक प्रवेश मुद्दी है। के तंददशान्द्र विकेद-प्रतिकाशास्त्र वेश प्रतिका (के तंदर १००१ दश्) और है।

प्र १३ प्रतिस्य १४ । पत्र सं ३ ने ३६ । ले कमालं १६३२ । सपूर्धाः ने सं २ १३ । ट कस्तरा

विकेर—सब प्रति वे ६२ स्तोक हैं। पर १२ ४ ६ ४ ६ अह पत्र सही है। प्रति हिन्दी स्ता-क्यास्त्रीत है। प्रती नष्यार ने ४ प्रतिवा(ने सं १६६४ १७०४ १६६६.२ १४) धीर हैं।

४ १४ सकासरल्लाऋक्ति—अ राकस्त्वकाश्चन में १ । या ११_९×६ इ.चानसम्मन्तन । दिन्द—स्तोदार नाम में १९९६) में काम में १७९१ (पूलाणे दें १ वट) का नमार ।

दिस्य — प्रण्य को टीका बीकानुर से कन्द्रपत्र केलानचर्ने की नयी। प्रति क्या सहित है। प्रशेष्ट प्रति स्त्र २ । यस सं तका निकल्प सं १ २४ साको संहुरी १ । वे संदेशका स्म सम्प्रदार ।

निश्चर—पद्धीलच्यार से एन प्रति (वे र्ख १४३) और है।

ध १६ जिति सः ३ । पण लं र । ते पण्यातं ११११ वि वं १४४ । क बासार । ध १७ प्रति सः ४ । पण लं १४६ । ते पण्यातः ।

विक्षेत्र — कटेपण्य पणपाला के प्रशासना पासमीयाला के प्रतिक्रियं पराई ; भूदेल, प्रति संकः) पण संबद्धा के पासना मंद्रभाष पृथ्वे ।

ज्ञार ।

प्र•देश प्रतिस के। यथ में ४७। में यस्तानं देशदेवीय मुदीक्ष्य के स्टास्क्र सम्बद्धाः

्रिकेच— मानामेर में चार्याध्य में मैनियाय पैशालय में बिरदाका की पूरतक में अधिमिनिया में में। प्रश्न अधिक्या का प्रथाने अहा में जन्म वर्ष हुका में सुकत में स्थाप

भवार ।

विभैन—हरिजारायक ब्रह्मालु ने गंपणुराय ने प्रशासी स्मित्रशास में श्रीक सरि गोणी। ४११ अभि संस्थापम ने प्रयामित मानाम ने १६६ प्रमुख बुदी । वे न २ । स्म

बचार ।

रंतीत्र साहित्य]

४०२२, प्रति स० ६ । पत्र स० ३६ । ले० काल स० १७६१ फाग्रुए। वे० स० ३०३ । व्य भण्डार।
४०२३ भक्तामरस्तोत्रदीका—हर्पकीर्त्तिसूरि । पत्र स० १०। मा० १०४४ ई इख्र । भाषा-सस्कृत।
विषय-स्तोप । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । ३० स० २७६ । आ भण्डार ।

४८२४ प्रति स० २ । पत्र स० २६ । ले० काल स० १९४० । वे० स० १९२५ । द मण्डार । विशेष—इस टीका का नाम भक्तामर प्रदीपिका दिया हुया है ।

भ्रूप्ते भस्तासरस्तोत्रदीका । पत्र स० १२ । मा० १०×८१ इद्या भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । ए० काल २२ । संपूर्ण । व० य० १६६१ । ट नण्डार ।

> ४०२६ प्रति स० - । पत्र स० १६। ते० कान ×। वे० स० १८४४। श्र मण्डार। विशेष—पत्र चिनके हुये हैं।

४८२५ प्रति स० ३) पम स० १६। ते० काल ग० १८७२ पौप बुदी १ | वे० स० २१०६ | अ भण्डार।

विशेष—मञ्चालाल ने शीतलनाथ ये चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ स॰ ११६८) भीर है।

४०२८. प्रति स० ४ । पत्र स० ४८ । ते० काल 🗴 । वे० स० ४६६ । क भण्डार ।

४०२६ प्रति स० ४। पम स० ७। नि० काल 🗙 । प्रपूर्ण । वै० स० १४६ ।

विशेष-- ३६वें काव्य तक है।

४०३० भक्तामरस्तोत्रटीका । भव स०११। भ्रा०१२३४८ ६ व । भाषा-सस्वृत हिन्दी। विषय-स्तोत्र । ए० काल ४ । ले० काल सं०१६१८ चैत सुदी ८ । पूर्या । वे० स०१६१२ । ट मण्डार ।

विशेष--मध्यर माटे हैं । संस्कृत तथा हिन्दी में टीक्ना दी हुई है । नगरी वज्ञालाल ने प्रतिलिपि की थी । अप भण्डार में एक मपूर्ण प्रति (वे० स० २०६२) भीर है ।

४०३१ भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमत्र सहित । पर्म त० २७। मा० १०४४ इव । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । क्षे० काल त० १८४३ वैदास्त्र बुदी ११ । पूर्ण । वे० त० २८४ । स्त्र भण्डार । र्श] [स्वाद सामित्व विकेद---की व्यवसायर ने व्यवहर में श्रीतीर्वाद की की । स्वीवक २ क्का दर उक्कर्त हर स्वीत दिवा

प्रकार प्रतिसंक्ष्या पुण के देश किंदु काल वे स्टब्स वैद्याल पूर्वी का वे स्टास

्वनर-—सानुवन्तुन्दनं वक्तुद्वं शीर्ताकारको नी वाध्यक्त २ फ्रुटच्यः क्लार्वहास्तोत्र दिना हुमाहै । प्रतीनुव्यक्ति विकृति (वे छ १४१) और है |

क्ष्म्हार ।

विशेष---नोनियम्ब में पूक्तोत्तनकागर वे प्रक्रिविए की शी ।

प्रदेशे, ब्रिटिश्च देशपण करियों में काल देश में देश श्रास्त्राच्यार :

दिवेद--भगे के विष वी हैं।

भ ३५४ अदिसं ४ । यस में २६। ने याल वं १०२१ वैद्याल युद्धे १६ दें ही स्थ करता।

विश्वेष-पं सवाराव के क्रिय इचान ने प्रकिर्ति की बी (

पुरुष्ट, प्रक्रावरस्तोत्रसाका-ज्यवस्य क्रावदा । तथ वं १४ । सा १९३४ १ ६ व । स्तर-क्रिको लग्न । विकल-स्त्रोत । र कृत्य वं १ ७ प्रसीत कृती ११ । इसी वे वं ४४१ ।

किया च्या । सर्व-त्यादा र अने स्टूर र अलोग अध्य १६। देशी व

निर्देश—क नव्यार ने र अधिया (वें वें ४४६, ४४६) और है।

थ ३३ प्रदिसं १ । पन वं २१ । ते नाम सं १६६ । वे शं शहर्। का भवार ।

भू २० प्रति संदेश च्यान ११ कि तलास १६३ (६ संदृष्ट) चुन्नवार। भूक्त प्रति स०४ । युवा देश के बाल संदृष्ट अधिकास मुक्ती १९१३ संदृष्ट । स्र

बचार ।

ूर्व देश अधि संक्रिशे के स्थापन संक्रिय के स्थापन अधि के स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन

५७४ सक्तमसरशासमाचा-वेतराज । यर वं वाद्या दूर रखा जला-दिनी। विस्व-स्टोर र कस ≾ार्क कम ≾ार्को वे दृष्ट्या च कसार।

भ्रष्टकृष्टिस+ देश्यम में प्राक्षेत्र गता वं देशभ माम बुदी २१ वे मंप्री ग भगार।

रिकेट--वीकास समरक्तर के ग्रन्टिर के श्रतिसिध ही वर्धी थी।

प्र-प्रदासियों देशपाने देवेदे । वे नाम ×ृष्यूर्मा देनं दरहाक नागरः ४ ४ दे सक्तमारावाकमारा — नीमरामा रेपाने देवे देव । या १२८४ द स्थापना – नीमर किसी स्थित-कोदारं समा×्रे वे समाने देवें देवानुमा वे तंत्र काट समारः विशेष-प्रथम एव नहीं है। पहिले मूल फिर गगाराम कृत सुवैया, हेमचुन्द्र कृत पद्य, कहीं २ भाषा तथा। इसमें प्राणे ऋदि मृत्य सहित है।

अन्त में ज़िल्ला है— साहुजी ज्ञानजो रामजी उनके २ पुत्र शोलाल्जी, लुघु छाता चैन्पुवर्जी ने युः पु भागचन्दजी जती को यह पुस्तक पृण्णाय दिया सु॰ १८७२ का सालु में ककोड़ में रहे खें।

४८४४ भक्तामरस्तोत्रभाषा । पत्र स० ६ से १०। मा० १०४५ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । ७० काल ४ । ले० काल स० १७८७ । मधूर्या । वे० स० १२६४ । ख्र भण्डार ।

४८४४ प्रति स०२। पत्र स०३३। ले० काल स०१८२८ मगसिर बुदी ६। वे० स०२३६। হ্র

विशेष—मूधरदास के पुत्र के लिये समूराम ने प्रतिलिम्नि की थी |
४८४६ प्रति स्०३ । पृत्र स०२० । ले० काल × । वे० स०६५३ । चु मण्डार ।
४०४७ प्रति स०४ । पत्र स्०२१ । ले० काल स०१ म्हरी वे० स०१५७ । मून भण्डार ।
विशेषु—जसपुर में पृत्र लाल ने प्रतिलिपि की थी |

४०४८ प्रतस्० ४ । पत्रस० ३३ । ले० काल स० १८०१ चैत्र बुदी १३ । ले० स० २६० । व्य भण्डार ।

प्रदेश सकामरस्तोत्रभाषा । पत्र स० ३। मा० १०३४७ इ.च.। भाषा-हिन्दी । विषय-न्द्रीय । र० कान ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वै० म० ६४२ । च मण्डार ।

४०४० सूपाल्चनुर्विशातिकास्त्रोत्र-सूपाल कृषि । पृत्र स० ८ । भा० ६६४४३ इ च । भाषा-

विशेष—हिन्दी टब्बा टीबा सिह्त है। श्रा भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ३२३) और है। ४०४१ प्रति स्व० २। पत्र म० ३। ले० काल ×। वे० म० २६६। सा भण्डार। ४०४२ प्रति स० ३। पत्र स० ३। ले० काल ×। वे० सं० ५७२। स्व भण्डार। विशेष—इमी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५७३) है।

४८४३ भूपालचतुर्विशतिटीका - आशाघर । पत्र स० १४ । मा० ६३×४% इ म । भाषा-सम्मृत । विषय-स्तोत्र । र० वाल × । ले० काल सं० १७७० भावना बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० १ । आ भण्टार ।

विशेष-ध्यी विनयचन्द्र के पठनार्थ प० माशाधर ने टीका लिखी थी। प० हीराचन्द्र के शिय्य चोखचन्द्र के नठनार्थ मौजमाबाद मे प्रतिलिपि कराई गई।

प्रवस्ति निम्न प्रकार है- श्रेनसारै बसुपुनिवादीलु (१७७०) विते बारपाव कृष्णा हावची तिनौ मौप्रमाबारमधी भीतृत्रमंत्रे बंद्याप्ताने बतात्वारवाहे करस्वतीयाचे कुंदर्कुदावार्याच्ये नद्वारवीतान जी श्री १ ४ वेरेन्द्रसीतिजी सस्व धारमगारी बुक्को बीहीरामस्क्रीकृत दिल्लेक विवयवता बोक्कम् द्वारमध्येन स्वयम्भू विविद्धेत क्वान्य वर्त्ताविका द्रीमा विवयचन्त्रस्थार्वेदिस्यामाचरविर्विचतावृशासमञ्जिबके विकेशस्त्रकृतिका गरिसमाता ।

भावच्यार में एक बांध (वे सं ४) बांस्क्री।

४ ४४ प्रतिका २ । पण सं १६ । के साम सं १६३२ प्रेमिए सूरी १ । वे सं १६१ । म MISTE 1

विदेश-अधीरत-- १५३१ वर्षे वार्व पुरी १ प्रवरात्तरे सीवादमपुरक्षकाने सीवादमपुर्वाणान निकारी मीड्नदने बसाइकारमधे शुरस्वतीनकी दुवर्षुवाराधीनवे।

४ १६ मृत्यक्रवतर्विशतिकारवोद्धविद्या—विस्तवकृत् । एव वं ६ । या १९४६ इव । भारान मैश्वर । निषय स्टोप्ट १ पाल 🗶 । के बस्य 🗶 । वृद्धे । वै. वे. वे. व.

निमेश-भी निमक्तम मोल हारा भुगान नश्मिकारि स्थाप रचा बचा था ऐना दौरा नी गुरिएण में तिना ह्या है। इतका वतील २७वें पक्ष में निम्म प्रकार है।

कः विकार वाजानामान्यास्य । वाजाना । वाजाना । वाजाना । व्यवस्थान विकार वाजानामान्यास्य वाजानास्य वाजानामान्यास्य वाजानास्य वाजानामान्यास्य वाजानामान्यास्य वाज बाबबुत्तः तत्त्वकोरक्तः श्रेष्ठः वेदिवाः एव क्योराः वैश्रो समीत्ये प्रितीयक्ताः स्त्यपुणिः वरिदं परिवतीः सुबि व वस्तिते व श्रवारत मीलं होंच वरिष्ठ वरिष्ठकः स्तव वायो वान्यः वदस्तीपाकियांन्य वर्षकृतवायः प्रवृत्यकां वर्णनेय

बाना कारतबीक्नाः शास्त्रवंदर्वनमा सावशस्या वंदनीः विस्ताराः सारवर्गदर्वासीवर्षे शास्त्र वास्त्रायां ॥१७॥ इति रिमयक्त्रवरिष्ट विर्श्येष्ठ कृत्राल स्टीम स्वास्त्री ।

शास्त्र में डीवाबार का संबक्ताबरण नहीं है। बूत स्वीय की डीवा वारम्य करती की है।

Vekt प्रयासकीवीसीमाचा--वनामास चौधरी । यह वं २४ । वा १२६×६ रंग । वान-जिल्ही । विशव-न्तीय । र पूल्य सं १६६ वीच मुक्की ४ । के नाम मं १६६ । पूर्ण । वे संदर्श के MAZIC I

इनो अध्यार ने ब्रुक्त प्रति (ने वं १६९) घोट है। ४०३७ कृत्वमहोत्सव---। वय सं ११ मा ११×६ इ'य | बाता-हिन्दे । वितर-अभेत । र

बार ≾ामे बार ≲ा बूर्ती है सं दुर्दी मह बच्चार । प्रकृतः, महस्तिमानन----- । क्या में १३ के कर । या अत्या हता । वाला-दिन्दी । क्यि स्टाप ।

मे शन×। बाली | वे पे । क्ष प्रशास

४०४६ सर्हापस्तवन । पत्र स०२। ग्रा०११४५ इ.च.। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० वाल ४ । ले० वाल ४ । पूर्ण । वे० स०१०६३ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--- अन्त मे पूजा भी दी हुई है।

४०६० प्रति स०२।पत्र स०२। ले०काल स०१८३१ चैत्र बुदी १४।वे० स०६११।स्र भण्डार।

विरोप--- मस्कृत में टीवा भी दी हुई है।

४०६१ महामहिम्नस्तोत्र "। पत्र म० ४। मा० ५४४ इ च। भाषा-सस्कृतः विषय-स्तोत्रः। र० नाल ४। ने० काल म० १६०६ फाग्रुन पुदी १३। पूर्ण । वे० स० ३११। ज भण्डारः।

४०६२ प्रति स०२। पत्र स० ६। ले॰ काल ४। वे॰ स॰ ३१४। ज भण्डार।

विशेष-प्रति मस्कृत टीका महित है।

प्रट ३ महासहर्षिग्तयनटीका । पत्र सं०२। द्या० ११३,४४३ इत्र । भाषा-सस्तृत । विषय-स्तोत्र । र०काल 🗴 । ल०काल 🗴 । पूर्ण । वे० स०१८८ । छ्युभण्डार ।

४०६४ महालद्मीस्तोत्र । पत्र म०१०। मा० = ३×६३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल \times । ले० काल \times) पूर्ण । वे० स० २९५ । स्व भण्डार ।

४८६४ महालद्मीस्तोत्र । पत्र स० ६ मे ६ । ग्रा० ६×३३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-विदिव माहित्य स्तोत्र । र० काल 🗡 । ले० काल 🗶 । ग्रपूर्ण । वे० स० १७६२ ।

४०६६ महावीराष्ट्रक-भागचन्द। पत्र स०४। मा०११३४६ इच। भाषा-सस्वृत । विषय-स्तोत्र। रावात ×। ले० वाल ×। पूर्ण। वे० स०४७३। क भण्डार।

विभेप-इसी प्रति में जिनीपटेपोपकारम्मर स्तोत्र एव मादिनाय स्तोत्र भी है।

४०६७ महिम्रस्तोत्र । पत्र स० ७। मा० ६४६ इ.च । भाषा—सस्कृत । विषय—स्तात्र । र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० स० ४६। मा भण्डार ।

४०६= यमकाष्टमस्तोत्र—भ० श्रमरकीित्त । पत्र स०१। मा० १२×६ इ च । भाषा-सम्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल स०१ = २२२ पीप बुदी १ । पूर्ण । वे० स० ५ = ६ । क मण्डार ।

४०६६ युगादिदेवमहिम्नस्तोत्र । पत्र स० २ से १४ । म्रा० ११×७ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तात्र र० माल × । ले० काल × । म्रपूर्ण । वे० स० २०६४ । ट भण्डार ।

विशेष-प्रथम तीन पत्रों में पार्श्वनाथ स्तोत्र रघुनाथदास कृत ग्रपूर्ण हैं। इसमें ग्रागे महिम्नस्तोत्र हैं।

¥]

४००० द्राधिकाजासस्यकाः प्राप्त है १।या १,४४६ व । कामा-हिली । निवन-स्वन । र मल-४१ ने काम ४। दुर्का वे त १७६६ । कामगार ।

४ भी रामचन्त्रस्वना व र्यस्टा व वयर। ४ भी रामचन्त्रस्वना विवस्ति । १९। या १ ४६ दक्ष। वाता-संस्था । विवस्ति ।

द कर राजकारतका । पण्य ११ । आहं कस्तार।

निर्वेद-प्याचित्र- बोहतपुमारचीहवायां नारगोर्छ बोधनक्तरवनराव वेहरस्वयः। १ - रच है। ४७५२: रामववीयी-कारवक्ति । नवं सं १ । या १६४६ इ.स.। वाना-हिन्दी। विवय-स्वोत्रः।

ध ७६ रामस्ववन पत्र वं र ११ था १ है × द व व श्रवा—येन्क्रव । विषय-रतोष । द

पल ≾। पे काल ≾ी सहसे । के ची देशदेश के जनार ।

विकेष---१ रें से माने जब नहीं हैं। एन नीमें की घोर ने पर्व हुए हैं।

४ ४४ रामस्त्रोत्राण्णणायः सं १। सा १ ४४ इतः त्रासा-वीक्ट । विका-सीतः । र कार ४ कि कास सं १०१४ कामुक्त कुरी १०।पूर्वः। वे सं ६६०। क्षान्यारः।

विसेय---बोन्यरान नीबीका ने प्रतिनिधि करवायी थी।

४००८ समुद्राणिकालोस । पत्र वं ११ ता १ ४४३ व व । यामा-बोलाट) दिवन-तोत् । र गल × । वे मात्र × । गुर्छ । वे वे १९४६ । स्र समार ।

४७०६ व्यक्तिरवाण-पदाप्रमदेश । पत्र वर्ष १० ता ११×६ प्रश्न । वाला-बेल्डा । १९४४-स्तीप ९ काल × । १९ काल × । पूर्व । १ व १९१३ का मध्यार ।

पिकेर---वीत बीसाव दीपा पहिल्ला है। एवी मणार में दुन प्रति (वे श्रं १३६) प्रीर है। प्रकार मिक्किराक वा प्रवर्ण देशने प्रकार प्राचित है।

विवेद---वृती लकार में दूर्व शिव (वे. १४४) चीर है।

प्रध्याने भावित्ती श्री त्रवाचीन १३वे लागम ×३वे वी १≈२ ३४ कमारी

^b निकेर--प्रिति चैरहत व्याकाः सहित है ।

'प्रिमेच-व्ह मण्डार में एक अपूर्ण प्रतिः'(में . में . म. १७४) चीर है ।

४०८० त्तघुस्तीत्र १एव मं २। ग्रा० १२४५ इ च । भाषा-मस्कृत । विषय-स्तीय। र० स० काल ४। पूर्ण । वे० स० ३६६ । च भण्डार ।

४०=१. बज्रपजरस्तोत्र । पत्र स०१। ग्रा॰ ८०४६ इ.च । भाषा-सङ्क्त । विषय-स्तोत्र । र॰ काल × । ते॰ काल × । ते॰ स॰ ६६८ । स मण्डार ।

४०८२. प्रति स० २ | पत्र स० ८ | ले० काल ४ । वे० स० १६१ । व्य मण्डार ।

विदोप--प्रथम पत्र मे होम का मन्त्र है।

४०८३ धद्धं मानद्वान्त्रिशिका—सिद्धसेन दिवाकर। पत्र स० १२। मा० १२०४६ इ.च । भाषा— सस्कृत । विषय—स्तोत्र । राष्ट्र काल ४ । ले० काल ४ । मपूर्ण । वे० स० १०६७ । ट. मण्डार ।

४०८४ वर्द्धमानस्तोत्र—स्राचार्य गुगाभद्र । पत्र म० १२ । मा० ४३४७ इक्क । भाषा—सन्दत । विषय—स्तोत्र । र० काल × । ले० काल म० १६३३ मामोज मुदी = । पूर्ण । वे० स० १४ । ज मण्डार ।

विशेष-गुरामद्राचार्य कृत उत्तरपुरामा की राजा श्रीमा की स्तुति है सया ३३ श्लोक हैं। सग्रहक्तों श्री फ्रीहलाल शर्मा है।

४० च वद्ध मानस्तोत्र "। पत्र न० ४। मा० ७३×६६ इ.च । भाषा-सम्बन्धः । विषय-स्तोत्र । र० नाल × १ ने० नाल × । पूर्णः । वै० स० १३२ = । आ भण्डारः ।

विशेष-पद ३ से मागे निर्वाणकाएड गाया भी है।

४०८६ ,वसुधारापाठ ' , । पत्र म० १६। मा० ८४४, इ.च । मापा-सम्बन्त । विपय-स्तोत्र । र० काल ×। के० काल ×। पूर्ण । वे० म० ६०। छ भण्डार ।

४०८७, वसुधासस्तोत्र । पत्र स०१६। आ०१९४४ इ.च । आया-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र०काल ४। ले०काल ४। पूर्या । वै० स० २७६ । स्त्र भण्डार ।

४०म्म प्रति स० २ । पत्र स० २५ । ते० काल ×ा मपूर्ण । वे० स० ६७१ । इ. मृण्डार ।

४०८६ विद्यमानधीसतीर्थंकरस्तवन-मुनि द्वीप । वष स० १ । भा० ११८४ई इ.च । भाषा-हिदी । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ने० काल ४ । पूर्ण । वे० स० १६३३ ।

४०६० विपापहारस्तोत्र-धनजय। पत्र म० ४। झा० १२३ ×६। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तीत्र। र० काल ×। से० काल स० १८१२ फाग्रुसा बुदी ४। पूर्सा वे० स० ६६६।

विशेष—सस्कृत टीका भी वी हुई है। इसकी प्रतिलिपि प० मोहनदासजी ने प्रपने शिष्य गुमानीरामजी के पठनार्थ क्षेमकरराजी की पृस्तक मे बसई (बम्सी) नगर मे शान्तिनाथ चैत्यालय मे की थी।

```
*** |
                                                                          िस्तात्र साहित्य
           ¥क£ रै ग्रांत सः में (पण सं ४। से नाम X (वे सं ६७६) कृत्रमार।
           प्रकर-द्राप्तिसः के । वस सं १६ । ते काल × । वे वे १६२ । का प्रदार ।
           निरोप--विशिधनतीय की है।
           प्रथम, प्रतिस प्रायवर्ग १६ । ने नान ८। वे वं १६११ । स्थयारा
           रियोप--श्रवि शंखात टीपा बहित है।
           ४ ६४ विचारहारस्ताबटीका---नागचन्त्रसूरि । यद सं १४ । आः १ ×४८ इ.च । मस्त-
मेल्ला । विश्व-स्तोत्र । र नार्व × । न नार्व × । पूर्व । व दे ३ । फा वस्तर ।
           प्रकार प्रतिसं कायचनं दने हाके रूल सं १७०८ वास्ता दूरे हाके सा स्व€ा
क्र वन्तर ।
           विकेश-भीजनाबाद भवर में वीक्यपन ने इक्की प्रतिनिधि की वी ।
           ४०६६ विवायहारस्थात्रमाया--पत्रामात्र । यद वं ११। या १२३४६ इ.व.। भारा-विव्ये।
विषय-स्टोप रिकल ते १६३ अनुसानुसो १६। ते यान 🗵 । पूर्वी वे ६६४ । 🕿 स्थार |
           विमेप- सी अध्यार ने एक प्रति (वे सं ६६१) सीर 🕻 ।
          ४ ६७ विवारहारत्वात्रमाया—व्यवस्थिति। यव मं ६। सा ६६/८६) इ.च.। मारा-विर्याः
 मिनद-न्दोदार कान ×ात्र न्यान ×ापूर्णी के संदृद्दा करतार |
          प्रदेशः बीतरामस्तोत्र--वैभवन्त्राचार्व। यव त १। या १३×४६ व । यसा-संस्तृतः विवस-
सोदार राज≻। ने राज×। बगुरु । वे तं २६७। क्रांबायार।
           ४ ६६. कीरक्रचीकी<sup>.......</sup>। यह वं २ । या १ ×४६ १ य । जला-बंस्ट । विश्व-स्तीर । र
प्रशास माल X । पूर्ण | वे १११ । क्ष क्यार ।
          प्रदे व वीरस्तवस्थाना । यत्र वं ११ वर १०/८४ है होता आपा-समुद्य । विवय-स्तोत ( व
 यास 🗙 । में नाम की देशकी । यूर्ण । वे वे १२४० । वट स्थाप ।
           ४१०१ वैशामानीय—सहस्रवायव नं ११ का ४६३ इ.स. भाषा-विक्रे। विवय-स्तातः
 र नात x | में रात x | पुर्श | वे वे दृश्दर । या नव्यार |
```

प्रदेश परपाठ--कुलक्रम । यह वं ११ वा ६४१ इ.च । शाला-क्रियो | विशव-स्तरम । र

मिनंद--'क्रुची धवरा रे गाई वर्त' ११ लंबरे हैं।

बल्दराने सप्तर्भ १ इ. । पूर्णावे वं दश्दी व्याप्यार।

४१०३ षट्पाठ । पत्र स०६। आ०४×६इच। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तीत्र। र० काल ×। के काल ×। पूर्ण। वे० स०४७। मा भण्डार।

४१०४ शान्तिघोषस्मास्तुति । पत्र स०२। म्रा०१० \times ४ $१ ६ व । भाषा-सस्तृत । विषय-स्तोत्र । र० काल <math>\times$ । ते० काल स०१५६६ । पूर्ण । वे० स० ६३४ । स्त्र मण्डार ।

४१०४ शान्तिनाथस्तवन-ऋषि लालचन्द । पत्र स०१। मा० १०४४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल स०१ द५६ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वै० स०१२३५ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--- गातिनाथ का एक स्तवन भौर है।

४१०६. शान्तिनाथस्तवन । पत्र य० १। ग्रा० १०३ \times ४३ इ.च । भण्पा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० १९५६ । ट भण्डार ।

विशेप-- शान्तिनाथ तीर्यञ्कर के पूर्व भव की कथा भी है।

घन्तिमपद्य---

कुन्दकुन्दाचार्य विनती, शान्तिनाथ ग्रुग हिय मे घरै । रोग सोग सत्ताप दूरे जाय, दर्शन दीठा नवनिधि ठाया ॥

इति शान्तिनाथस्तोत्र सपूर्ण ।

४१०७ शान्तिनाथस्तोत्र—मुनिमद्र । पत्र स० १ । मा० ६५ \times ४ $\frac{3}{6}$ इख्र । मापा–सस्कृत । विपय–स्तोत्र । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स० २०७० । स्त्र मण्डार ।

विशेष--- अथ शान्तिनाथस्तोत्र लिन्यते---

কাথ্য-

नाना विचित्र भवदु खराशि, नाना प्रकार मोहाग्निपाश ।
पापानि दोपानि हरित देवा, इह जन्मशरण तब शान्तिनाथ ।।१।।
ससारमध्ये मिथ्यात्वचिन्ता, मिथ्यात्वमध्ये कर्माणिवध ।
ते वध छेदन्ति देवाधिदेव, इह जन्मशरण तब शान्तिनाथ !।२।।
काम च क्रोध मायाविलोभ, चतु कपार्थं इह जीव वध ।
ते वंध छेदन्ति देवाधिदेव, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथ ।।३।।
नोद्वाक्यहीने कठिनस्थिचित्ते, परजीविनिद्धा मनसा च वाचा ।
ते वध छेदित देवाधिदेव, इह जन्मशरण तव शान्तिनाथ ।।४।।
चारित्रहीने नरजन्ममध्ये, सम्यक्त्वरत्न परिपालनीयं ।
ते वध छेदित देवाधिदेव, इह जन्मशरण तव शान्तिनाथ ।।४।।

```
् न्तीय साहित
माराव तराने मुख्य बचने हो ग्रानिशीत बहुम्प्यपु में ।
```

ते बंध दोर्घाय देशांचिको हा प्रकारणां तथ व्याणनार्थ ॥६॥ चराव्यक्तारे परसार्थक, वार्ष्यक्ता वायुव्यको । ते वेव दोरांचि देशांचिको हुद्द क्यान्यानां तथ वार्णनार्थ ॥३॥ दुवर्धात विज्ञाति विज्ञानिको हुद्द क्यान्यके वायुव्यक्ता । ते वंक दोशांचिको देशांचिको व्यान्यकाली तथ वायान्यक्ता ॥॥

वर्णत पर्सत स्थितं थी पार्टनमधारियानि भारतवपुरवाद्यी परमारीगहारी । इनवृत्तिवरः वर्षपार्थेषु निष्णं

हरे कि सानियांबरवाज्ञाच्या वर वे १। या १०४ (४०। यसा-समृतः) विश्व-सीरी के बार ४। में वात्र ४। पूर्णः वे से देशकी । या प्रयादः ४१ के क्रान्तिकारण्यामा वय से १। सा ११४६३ व ४। वसा-समृतः (रियक-सीर। रे

नात ∧ानि एतः ×ानुर्ताने च ११६। इत्यादाः ४११ - समितविवान-----ाचव व । याः ११ ८८ई १च। नाता-नंशदः (विवन्तीप)

र शन्×। में गम्न ×। पूर्णी में ने देश घ्रवणार। प्रदेश सीवनिवास—पीत्रहुमसी। नगर्वशासः ×६६ इप । बता-देल्यों। स्वित-सोगः

र माना≯ाने नामा≾ पूर्णाचे वं करेद्र[क्षानवार] धरेहरू सील्डाप्र******।पण क नांचा ११८८ दक्षः चारा-संस्कृतः।विषयं स्तीमा र

प्रेरेरेण वीत्राज्ञात्राच्या सः २ । याः ११८४ तकः । वारा-संस्कृतः । विश्वयं स्तीयः । नाम × । यः नामानं १६ ४ चीत नुसी १ । वृत्ति वं १ ्र ≀ इ. ब्रीबारः ।

रिपेन—व्यक्त त्रेष्ट्रण वीका त्राहित है। ४११६. स्थानपविचारस्यकन^{——}। यह ते । या १२४६_० इ.व.३ मारा-संस्था । विरास

स्तीयार सम्प्र∤ने सक्त्रापूर्ताचे वे ६३६। विमेर—३७ प्रार्टी म्तोत्र साहित्य]

४११४ समवशरणस्तोत्र । पत्र स० ६। मा० १०८५३ डच। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तीत्र । र० काल ४। ले० काल म० १७६८ फाग्रुन सुदी १४। पूर्ण । व० स० २९६ । छ भण्डार ।

विशेष —हिन्दी टब्बा टीका सहित है।

प्रारम्भ--

भूपभाग्रानभिवणान् विदित्वा वीरपश्चिमजिनेंद्रान् ।

भवस्या नतीत्तमाग स्तोध्ये तत्ममवद्यरगाणि ॥२॥

४११४ समवशरणस्तोत्र—विष्णुसेन मुनि। पत्र म० २ मे ६। मा० ११ ४४ इ च। भाषा— सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ल० काल × । भपूर्ण । वै• स० ६७ । स्र भण्डार ।

४११६ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ल० काल × । वे , स० ७७८ । आ अण्डार !

४११७ प्रति स०३। पच स०४। ले॰ काल स० १७८५ माघ युदी ४। वे० स० ३०४। ञा मण्डार।

विजेप-प० देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य प० मनाहर न प्रतिलिपि की थी।

४१९८ सभवजिनस्तोत्र—मुनि गुगानिः । पत्र स०२। आ० ८६४४३ इख्रः। भाषा-सम्कृत। विषय-स्तोत्र। र० काल ×। ते० काल ×। पूर्या । वे० सं० ७६० । म्ह भण्डार।

४११६ समुदायस्तीत्र । पत्र स० ५३। घा० १३×६१ इ.च.। भाषा-हिन्दी । विषय-स्तीत्र । र० काल × । ले० काल स० १८८७ । पूर्ण । वै० स० ११५ । घ भण्डार ।

विशेष-स्तोत्रो का सग्रह है।

४१२० समवशरणस्तोत्र-विश्वसेन। पत्र स०११। मा० १०३×४ है इच । मापा-सस्कृत। विषय-स्तात्र। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स०१३४ । छ मण्डार।

विशेष-सस्फूत क्लोको पर हिन्दी में भर्य दिया हुमा है।

५१२१ सर्वतोभद्रमत्र । यत्र स०२। ग्रा०१×३१ इ च । भाषा-सत्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० कात्र स०१८१७ ग्रासोज सुदी ७ । पूर्ण । वे० स०१४२२ । स्त्र भण्डार ।

४१२२ सरस्वतीस्तवन-लघुकथि। पत्र स० ३ मे ४ । ग्रा० ११रे×५१ इ च । मापा-सस्कृत । विषय-म्तयन । र० काल × । ते० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० १२४७ । आ मण्डार ।

विशेष--प्रारम्भ के र पथ नहीं हैं।

र्गा तमपुष्पिका-- इति भारत्यालघुकवि कृत लघुस्तवन सम्पूर्णतामागतम् ।

४९२३ प्रति स०२ । पत्र स०३ । ले० काल ४ । वे० स० ११४४ । श्र भण्डार ।

ं ।

भ्रदेशे सरक्कीस्तीय—बृह्वादि । यस गंहाया | २००३ देव । बल्ता-संस्कृत । विवर-स्तोप (वैसेटर) । र काल × | ते वाला गंह रहा कुर्वाचे संहश्या । अस्य क्यार ।

४१९४ स्टब्स्वीतोष— मुतसासः । प्य वं २६। या १ है×४ है इयः भएत- संस्था । विषय स्टब्सा । रंगमा ×ा ने क्या × । स्टब्सा । वे सं १ ०४ । ४ क्या र ।

निवेद--शंभ में यह बड़ी हैं।

प्रदेशक बर्तिस् र।पनमं १।र्जनमार्च १ दरादेशं ४३६।सम्बद्धारा

विश्वेय —रामण्यः ने प्रतितिथि वर्षे थी । चारतीस्त्रीय भी नाय है । प्रश्नियः, सरस्वतीस्त्रोत्रमाञ्चा (सारक्-स्वयंन)*****। यस वर्षः २ । याः २,८४ इ.स. स्रान्स्

इंतरदा-स्तर्यन (र. काम ×) ने जन्म × । दुर्ली । नै व १२६ । व्याच्यार (४१६६ सहस्रतसम् (क्षु) — मानार्ये सम्बन्धाद (जन के ४) वा ११३०४ ४ ४। वास

संस्कृतः। विषय-स्तोतः। र स्वस्तं ४ । से नाम मं १ १४ माणिक पूर्वः १ । पूर्वः । से ६ । मा अवस्यः । विश्वेत--प्रस्ते मिरिटेक स्वत्रम् विप्येत्व समामुक्तः पाठः भो है। ४५ स्तोतः है। यानस्यानं ने सम्ब सोनस्यानं मोरीका के परुपानं गविनिति तो वी। 'पीवी सोनस्यतः गीतीका की सहिता की ही' एवं ४ द्रः शासीकाः।

४६६ सारचनुर्वित्रति """। क्यानं ११९। धा १२८८ ६ चावल्या-चंत्रता विषय स्टोपं। र फला×ोने रुमार्थं स्थर पीय सरी १३। प्रणी किने २ ∉ क्या क्यास्तरः।

विनेद-ज्यम ६१ कुठों ने सकतरीति क्ष्य जानराजार है :

प्रदेशे सार्वकल्यापाठः-----।यम र्गणाळा १.४५३ दला वाला--संस्कृतः।विषय-स्रोतः। १. पक्त ×ामे सम्बर्धः ११४ । दुर्वासे प्रदेशः स्वस्यक्ताः

४६६२ किन्नवहतार्र्णाचन ने । सा ११४६२ इ.च. अला-सन्तः (वयप-स्तीप) र नका≾ । के नाम ने १८ ६ कल्युन सुरी १९ पूर्वा के वे ६ । सामवार

दिश्चेत-भीजविक्कार्यक के प्रतिनिधि की की 1

प्रदेशे, शिद्धस्ववद्****** । वा १००६ क्षाः वाना-सेस्टटः विषय-स्तरगार रोग×ाने याला×। स्पूर्णाके वं १६४२ । स्थलारा

7

ţ

४१३४ सिद्धिप्रियस्तोत्र-देवनदि । पत्र स० ६ । ग्रा० ११×५ इस्र । भाषा-मस्कृत । विषय-स्तवन । र० काल 🗴 । ले० काल स० १८८६ माद्रपट नुदी ६ । पूर्ण । वे० स० २००८ । श्र भण्डार । ४१३४ प्रति स० । पत्र म० १६। ते० काल X। वे० स० ८०६। क मण्डार। विशेष--हिन्दी टीका भी दी हुई है। ४१३६ प्रति स०३। पत्र स०६। ले० काल 🗴 । वे० स० २६२ । स्व भण्डार । विशेष-हासिये में फिठन शब्दों के अर्थ दिये हैं। प्रति सुन्दर तथा प्राचीन है। अक्षा काफी मोटे हैं। मृति विशालकीति ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार में २ प्रतिया (नै० स० २६३, २६८) श्रीर ह। ४१३७ प्रति स०४ । पत्र म० ७ । ले० काल 🗶) वे० स० ८५३ । स्ड मण्डार । ४१३ प्रति स० ४ । पत्र स० १ । ले॰ काल स॰ १८६२ मासोज बुदी २ । मपूर्ग । वे॰ स॰ ४०६ । च भण्डार । पिनेप--प्रति संस्कृत टीका सहित है। जयपूर में भ्रमयचन्द साह ने प्रतिनिपि की थी। ४१३६ प्रति स० ६। पत्र म० ६। ले० काल ×। वे० स० १०२। ख भण्डार। विशेष--प्रति संस्कृत टीका सहित है। इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ३८, १०३) भीर है।

४१४० प्रति स० ७ । पत्र स० ५ । मे० काल म० १८६८ । वै० स० १०६ । ज मण्डार ।

४१४१ प्रति स॰ मापत्र म॰ माले॰ काल X । वै॰ म॰ १६मा मण्डार।

विशेष--प्रति प्राचीन है। धमरसी ने प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० २८७) शार है।

४१४२ प्रति सं ६। पत्र सं ३। ते काल ×। वे ० सं १८२५। ट मण्डार। । पत्र स० ५। मा० १३×५ इव। भाषा-सस्कृत । विषय-४१४३ सिद्धिप्रियस्तोत्रटीका म्तोत्र । र० काल 🗙 । ते० काल स० १७५६ बासोज वृदी २ । पूर्ण । वे० स० ३६ । व्य मण्डार ।

विवोय-- त्रिलोकदाम ने भपने हाथ मे स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

४१४४ सिद्वित्रियस्तोत्रमाषा-पन्नाताल चौधरी । पत्र स॰ ३६ । मा० १२५×१ ६ च । गएा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल स० १६३० । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स० ८०५ । कु मण्डार ।

४१४४ मिद्धित्रियस्तोत्रभाषा—नथमत्ता । पत्र स० ८ । भा० ११×६ दृख्य । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० कास X । ले० काल X | पूर्ण । वे० स० ८४७ । क अण्डार ।

```
िलाने धार्म
```

प्राप्त्रे विर्धिय। पेने तं ६। केन्स्त्रो×ार्वे संस्कृतिक कंगोर।

विलेश—१सी वेण्डार में एक प्रति (वे सं १२) सीर है!

४१४७ सिद्धिविकसोकः —ापन वं ३१मा ११६४×१ देवा आसा—हिनोः दिनम स्रोप

रात × ने नक्त ×ानुगी हे तं ४१ कृत्रस्थार। त्रहेश्च सुगुक्तकोक्षणण्या दव वं ११ था १ ×६६ थ। वादा-संस्तृतः विवर-सीतं । र

मेत्र /।त नाप ४।पूर्व /दे वं २ ३ । व्यवचार।

प्रदेशक्ष सञ्चलकालोजः "पायस्यं १ । सा ६२,४४ इच। कारा-संस्टाः विशव-सीर्यः। र रामा ४ । में कस्तर ×ो बर्ला हे संदर्शकालवारः।

विवेश-सन्त में शिक्षा है- यह चंटानर्शकार विकास ।

¥33 1

४१४ सींदर्शकाल-अहारक काल्युम्प्या पर व १ । या १९४६ हर व । सना-मन्दर विपय-स्तात । ऐ काल ४ । में काल से १ ४४ । इस्टें । वे १०१७ हर करनर ।

विकेट- इन्यमणी वर्षेट में पार्श्वनाथ चेलामच में स्टूराफ गुरेवचीति दायेर वालो ने करंतुम ने स्थार्थ प्रतिकृति को थी ।

प्रदेश सीहर्येक्क्सिसीलार्याणाना वर्ष थं था। का श्री×रहे इता शासा-थंनाय । स्थिती सीता । रूक्ता × । वे वस्ता है कि सोवा क्यों है। दुर्गा के से क्या क्रिकारा

न्तार । र कल्ल ×ाणे वालंबी दे देश बादवा बुद्धी दे। दूर्वा की वं देशका का स्थ्यार । ४१३०० ज्युति — —। यक्षी दे। या. १५४८ इ.व. | जारा–शीसूता विवस–स्थय । र कर्ण ≭।

तं नात्र 🗸 । पूर्व । वे वं १ ६७ । व्यं त्रव्यार ! विमेच—स्पनात नदानीर नी स्पृष्ठि है । अति शंसाव दीना सम्बन्ध ।

शास्त्र- गान्। न्यूनार ना पुरूष वृत्त वाद छन्द्र- वान् व्यूप वृत्त

नीतो वीदो महामीरोसलं वैद्यासि जलाशदुर्ति ॥१॥ ५१७६ अनुस्थितसङ्ग[™]ावय सं २ | सा १ ×४ द वं। सल्ये-दिल्यी ; विदय-स्तोत । र

४१३६ शुक्तिसम्ल[™]ावय ते रीता १४४ इत्येशस्त्र-कृतां वयस-स्ता। यस ाने पल ×ायूर्वावे संदर्शाधीकस्तरा

भरेतल स्कृतिसम्बद्धाः व्याच देशे के का ११०० द्वं क्रास-संदेश विदय-सोर्ग र राग ४ कि समा ४ किंद्रके कि से दुर्वक दिवस्था है

पान कल शास्त्राना व न १६०६। इ.सच्छारा पिनेव —पक्रारोग्रीलवन बीक्सीवीद्यास्त्रवर्थकावि है। ४१४४ स्तोत्रसग्रह । पत्र स० ६। ग्रा० ११३४४ इ.च.। मीपा-प्राकृत, सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० कान 🗙 । ले० काल 🗙 । ग्रपूर्ण । वे० स० २०४३ । स्त्र भण्डार ।

विशेष---निम्नलिखित स्तीत्र हैं।

नाम स्तोत्र	क्ता	भाषा
१ गान्तिकरस्तोत्र	सुन्दरसूर्य	সাকু त
२ भयहरस्तोत्रं	×	"
३ लघुशान्तिस्तोत्र	×	संस्कृत
४ बुहद्शान्तिस्तोत्र	×	19
५ भजितशा न्तिस्तोत्र	×	71

२रा पत्र नहीं है। सभी श्वेताम्बर स्तोत्र है।

४१४६ स्तोत्रसमह । पत्र स० १०। मा० १०४७ हु इझा भाषा-सस्कृत । विषय~स्तोत्र । र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वै० स० १३०४ । इस भण्डार ।

XΙ

विशेष---निम्न स्तोत्र हैं।

१ पद्मावतीस्तोत्र —

२ कलिकुण्डपूजा तथा स्तोत्र -- X।

३ चिन्तामिए। पार्श्वनायपूजा एव स्तोध - नक्ष्मीसेन

४ पार्श्वनायपूजा — XI

५ लक्ष्मोस्तोत्र — पद्मप्रमदेव

४८४७ स्तोत्रसमह । पत्र स० २३। ग्रा० ८ द्रुर इच । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० भान 🗶 । ले० नाल 🗶 । ग्रपूर्ण । वे० स० १३८४ । श्रम मण्डार ।

विजेप--निम्न सग्रह हैं- १ एकीमाव, २ विपापहार, ३ स्वयंमूस्तीत्र ।

४१४८ स्तोत्रसमह । पत्र स० ४६। मा० ८१४४ इख । भाषा-प्राकृत, सम्कृत । विषय-स्तोत्र । र॰ काल ८। ल० काल स० १७७६ कार्तिक सुदी ३। पूर्ण । वे० म० १३१२ । स्र मण्डार ।

विशेष-- २ प्रतियो का मिश्रण है। निम्न सग्रह हैं--

१ निर्वाग्रकाण्डभाषा— X हिली २ श्रीपालस्तुति X ग्रेस्कृत

१ पद्मावते।स्तंवन मत्र सहित 💢

77

```
हिमाइ स्पृटिख

४ गर्पातास्त्रीय १, ज्यारामानिती ६ दिनाव्यस्त्रीय ७ नार्योक्षीय

रमर्प्यास्त्रीय १, ज्यारामानिती ६ दिनाव्यस्त्रीय ७ नार्योक्षीय

१ रीतास्त्रत्रीय अर्थाद वर्षादि श्रेष्ट्रण

१ रद मान्त्रत्रीय ४ ८ मार्ग्य

११ रीतास्त्रत्रीय १६ मार्ग्यत्र्य १४ विरामानितीयात्री

११ रा १६ विर्मा (ब्रह्मीयस्त्रात्र) १० वारा ने सोन्यस्थ्य १ वस्त्रत्राध्यक्षि १९ मार्ग्यत्र १ वस्त्रत्राध्यक्ष १ मार्ग्यत्र १ वस्त्रत्राध्यक्ष १ मार्ग्यत्र १ वस्त्रत्राध्यक्ष १ मार्ग्यत्र १ वस्त्रत्राध्यक्ष १ स्त्रत्राध्यक्ष १ मार्ग्यत्र १ वस्त्र स्त्राध्यक्ष १ स्त्रत्र स्त्राध्यक्ष १ स्त्रत्र स्तर्भावस्त्र १ स्त्राध्यक्ष १ स्त्रिष्ट स्त्राध्यक्ष १ स्त्राध्यक्ष १ स्त्राध्यक्ष १ स्त्रिष्ट स्त्राध्यक्ष १ स्त्रिष्ट स्त्राध्यक्ष १ स्त्राध्यक्य १ स्त्राध्यक्ष १ स्त्र
```

१ जिनस्प्रीतम्पृति १ व्यक्तिकाम्पोत् (शीनक वरावर) ६ अवुसानत्रकार ४ जनसङ्ख्यान १, निरम्नकामीय ।

४१६ न्याब्राहरमध्यः "ायवन १२१०मा ११_५४८.६४।चारा—सन्दर्गशानः।स्थन स्थारः। साम ने राज्यः प्रायुक्तं ने ने १४ । स्थानगरः।

तिमेच-च्यान १७३ १६ नगे है। तिम्ब नैतिनिय स्तोच बर्ली या वंतर है।

प्रदेश स्ताप्रकृतहः । यस सं २००१ था १ प्रहेदयः मारा-सीप्रतः । विदय-सीपः इ. इतमः । ते साम् ८ । व्यापः वे सं २० । व्यापनारः ।

क्षिप्र- (क ने देशवा पत्र नहीं है। बाचारेश दुवागड तथा लुकि संबर है।

प्रशःक लायुस्यह ==।वयन १६३।वा ११ १६४। जान-वृह्ताः विवन्नतीय। ९

दान ४१ व वाच । व्यूपोत वे वे हे है । को मध्या । ४१६६ स्मान्यसम्बद्धाः १ । को १ । को ४ हवा आगा-संस्कृत हिस्स-स्तेत । व

सम्ब । संदोन प्राप्ति से हरहे । का बण्डार ।

प्रदेशक प्रतिक्ष कृष्यत्र संदेशक यात्र प्रति न व्यक्त स्वयंत्र स्थापनार । भर्देक स्टापनांत्र चार्च वृद्दी स्थापन क्षण वृद्धा स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना

ान पान पूर्णा के क ३६ । अर अपनार (

ferr-fere der ?-

ıŕ

117

भगवतीस्तोत्र, परमानादस्तोत्र, पादर्वनायस्तोत्र, घण्टातर्गमात्र ग्रादि स्तीत्रो का मग्रह है।

४१६६ स्तोत्रसम्रह । पत्र स० ६२। मा० ११६४६ दखा। भाषा-मग्रुत । विषय-स्तोत्र । द०

बाल ४ । से० काल ४ । पूर्या । वे० म० ६३२ । का भण्डार ।

विदोय—प्रत्तिम स्तीत्र भ्रमूर्ण है। कुछ स्तीर्त्रा की मन्मूत टीका भी साथ में दी गई है। ४१६७ प्रति सुरु २। पत्र सुरु २५७। सिरु साज ४। ध्रुर्ण । वेरु मुरु देवा सुरु भण्डार ।

४१६८ स्तोत्रपाठसम्रह । पत्र न० ५७। मा० १३×६ इ.च.। भाषा-मन्द्रुत, हिन्दो । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ते० काल × । मपूर्ण । वै० स० ८३१ । क. भण्डार ।

विशेष-पाठी का सग्रह है।

४१६६ स्तोत्रसमह । पत्र स० ८१। मा० ११×५ इच । भाषा-सस्कृत, प्राप्त । विषय-स्तात्र । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० ८२६ । क भण्डार ।

विशेष —निम्न मग्रह है।

नामस्ते।त्र	कर्त्ता	भाषा
प्रतिक्रमग्ग	×	प्रावृत, सस्वृत
सामायिक पाठ	×	सस्यृत
श्रुतमिक	×	प्राकृत
तत्त्वार्यभूत्र	उमास्वाति	सस्कृत
सिडमिक्त तथा शन्य भक्ति सग्रह	dissilation.	प्राकृत
स्वयभूस्तोत्र	समन्तमद्र	संस्कृत
देवागमस्तोत्र	**	संस्कृत
जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	23
मक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	"
कल्यासमन्दरस्तोत्र	कुमुदचनद	
एकीमावस्तीत्र	वादिराज	73
सिद्धिप्रयस्तोत्र	देवनन्दि	3)
वि पा 9हार् स्तोत्र	धनञ्जय	17
मू गलचतुर्विदातिका	मूपालकवि	17
महिम्नस्तवन	जयकीसि	>>
समवशरण स्तोच	विष्णुसेन	93
	_	33

¥74	}			(स्तात्र सा
		नाम स्वाप	क्या	भाषा
		मर्हाव तक्त	×	र्नसङ्ख
		बलांपु चर ोष	×	

विजयमस्योध × लक्ष्मीवरोज पद्माम वैव बेमिनाय एक्स्सरीस्तीय र पानि सबु सामादिक × **पर्याचारित्स्**यव х न वयररीति यनचळ्च 最初を開始 ×

पार्श्वावस्तोत × वर्ध वलस्तोष × विजीपकारस्य च्लास्ती व × मह बीराष्ट्रफ REPORT **सब्**माबादिक × प्रश्रे प्रतिसः २ । पत्र सं १९ । ने कल × । वे वी १८ । अस्त सम्बार ।

विभेष---पश्चिमाध बल पाठो रा ही ७वह है। रिवोच--- ज्ञार पार्टी के श्रीविशिक्त जिल्लाक और है

धीरमायसम्बय × चंरकृत **भी**पार्के विवेदगरस्तीय v प्ररेक्त स्त्रीप्रसंगद्य^{म्या २}। यस सं ११७ । मा १२ ३८७ ६ म । आया-अस्त्रा । विवय-स्तोत्र ।

कमाहाने बका×ाप्रतीके सं रु⊎ा-कथन्यार। विशेष—विश्व नीवह है ।

बाब स्तीप

भारत राजनीय ह

Pol प्रतिकास

×

वता ж क शक्त राजानिक

×

```
स्तोत्र साहित्य ]
                       नाम म्तोत्र
                                                                                             1 400
                                                       कत्ती
                                                                                 भागा
                       तत्वार्यमूत्र
                                                     उमास्याति
                       स्वयभूस्तोत्र
                                                                                सम्बन
                                                     समन्तभद्र
             ४१७३ स्तोत्रसम्बद्ध । पत्र स०१०। मा० ११३×७१ इख। मागा-संन्तुत । विषय-र्गात्र ।
  र० काल × । ले० काल × । पूर्गा | वे० स० ⊏३० । के भण्डार ।
             विशेष--निम्न क्षेत्रह है।
                   नेमिनायस्तोत्र सटीक
                                                        X
                   इनसरस्तवन
                                                                               सस्त
                                                        X
                   स्वयमुस्तोत्र
                                                                                 11
                                                        X
                   बन्द्रप्रम्भतात्र
                                                       X
            ४१७४ स्तोत्रसम्रह ' । पत्र म० = । मा० १२३×१६ इ'व । भाषा-सम्बन्धः । विषय-स्तोत । २०
 काल 🗶 । ते० काल 🗶 । पूर्या । वे० स० २३६ । स्व भण्डार ।
            विशेष--निम्न स्तोत्र हैं।
                  कल्याणमन्दिरस्तोध
                                                    कुमुदवन्द्र
                  विपापहारस्तोत्र
                                                                             सम्बत
                                                    धनक्षय
                  सिद्धिप्रयस्तीत
                                                                               77
           ४१७४ स्तोत्रसम्रह । पत्र स॰ २२ । भा० १२३४४ हे इ । मापा-मन्द्रत । विषय-गात ।
                                                   देवनदि
र० काल 🗶 । च० काल 🗶 । पूर्ग । वै० स० २३ व । ख भण्डार ।
           विशेष--निम्न स्तोन है।
                 एकी भाव
                                              बादिराज
                 सरस्वतीस्तोत्र मन्त्र सहित
                                                                            पुप्त
                                                 ×
                 ऋषिमण्डलस्तीत्र
                                                                             11
                                                 X
                 मक्तागरस्तोत्र ऋदिमत्र सहित
                                                 ×
                हनुमानस्तोत्र
                                                                             73
                                                 X
                ज्वालामालिनीस्तोत्र
                                                 X
                वक्र श्वरीस्तोत्र
                                                                             89
                                                 ×
                                                                            77
```

```
Y24 ]
                                                                                 िस्ताच साहित्व
           ४१.4६ स्टाप्रसप्रद्र<sup>.......</sup>। यत्र सं १४ । या अ८४३ इ.च । त्राया-संस्कृत । विवन-स्टोप । र
कास ×। ने कास संदेशभाष नुसी शृं पूर्वा वे संदेश क्रिक प्रस्तापार ।
           विश्वेष-विश्व स्तीमी ना क्रवह है।
           व्यक्तामहीत्वी, वशीरवरों की वयवान जाविजेंडलस्तीय एवं नवस्थास्स्तीय ।
           प्र"क्क, स्तोत्रसम्बद्ध """। यह वे १४। या ६०४ इ.व.। शादा-संस्था। विवय-स्तोत्र। र
क्ल×। में क्ल×। पूर्वी वे वे २३६। साथपार।
```

विधेय-विम्न श्तीयों का शंबह है।

द्यावतीलील × ×

वर्ष स्वरीस्तोष स्यर्जन्दस्रवियान नहीवर

श्रीभमः स्त्रोत्रसमह™ ""। यत्र वं वश् । या अहे×४ ६ व । बाला-हिली । विवय-स्त्रोत्र | र

क्ला × । पूर्णी। वे सं ३६ । कव्यकार । प्रदेशके. स्टोक्संबद्ध विषयं देशाया १ केश्वर देश। नापा-पंस्ट । विषय-स्टोत । र

बल × | से बल × १५ ईं। के थे ६ । अन्यवारा

विदेव-निगम स्तीत हैं। बत्तानर, एशेवल निवास्तार, एवं बुरालकुर्विचरिका ह

प्रश्य स्त्रोत्रसम्बद्धाः । पदार्थ १ वे ११ । या ६×६ इ.व.। भाषा-विमी संस्त्र । विवर-स्तोतः। र क्ला×ाने जला×ामप्रताने वं दशाक्षणस्थारः।

प्रस्तरं स्तोत्रसम्ब्रणाणाः वदावं १९ के १४१ । वा अर इ.च.। चला-संस्तृत हिन्दी । विसन-स्तोष¦र क्रान ×ाद्ये काल ×ा स्पूर्णावे ते वे ६६ क मन्त्रार।

वर्ता

करचंद

क्रिकेट---विश्वस कारी का श्रीवस है ।

सभा लोग derlow

কুলকু(ৰাখি

वैनक्षित्रपुरा

ки Онения × *विकेश* क्रिकाशीय ×

× इंस्ट्रेन ×

विल्हा

चारा

ũ**r**ũ

र्वस्कृत

श्वीश्वम

११ में २ वय

24

क्यर्ग

नाग स्तोत्र	दर्सा	भाषा
यत्याग्मन्दिरस्तात्रभाषा	गनारसीदाम	हिन्दी
जैनदात ा	गूपरदा स	11
निर्माणुराण्डभाषा	भगवतीदास	21
तकी नावस्ती श्रभाषा	भू धरदास	19
तेरहराठिया	यनारतीयान	n
चैत्यपंदना	×	71
मक्ताम रस्तोत्र मापा	हेमराज	*7
ग चय न्यारापूजा	×	91

४१८२, स्तोत्रसम्बद्धः । पत्र ग० ५१ । मा० ११४७३ इ.च । भाषा-गस्तुत-हिटी । विषय-स्तात्र । र० वात ४ । त० वात ४ । पूर्ण । पे० म० ८६५ । इ. मण्टार ।

विशेष--निम्न प्रगार मंग्रह है।

निर्वागक्षाक्षमाथा	भेया भगवतीदाम	हि दी	धपुरा
मामायिक्याढ	प ० महाचन्द्र	11	पूर्ग
मामाविकवाढ	×	71	मपूर्गा संपूर्गा
वं चगरमेष्टी गुरा	×	17	पूर्ग
लपुसामायिक	×	संस्थात	n
बार् हभावना	नवलकवि	हिन्दी	» »
द्रव्यसग्रहभाषा	×	77	मपूर्वा
निर्वाग्वकाण्डगाया	×	भारत	पूर्व
चतुर्विदातिस्तोत्रभाषा	भूमरदास	हिन्दी	<i>t</i> 1
चौवीसदरम	थौलतराम	33	"
परमानन्दस्तीत्र	×	77	मपूर्ण
मक्तामरस्तोत्र	मानतु ग	सस्कृत	पूर्गा
षत्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	यनारसोदास	हिन्दी	
स्वयभूस्तोत्रभाषा	घानतराय	37	11
एकीभावस्तोत्रभाषा	मूधरदास	n	भ सपूर्ण
मानोचनापा ठ	×		.,44
सिद्धिप्रियस्तीत्र	देवनदि	ग संस्कृत	27
			*

1	1				[स्तोत्र स्राधित
		बास स्तात	कर्चा	अत्या		
		विका रहा धारोजनाचा	봈	हिल्ही		1 6
		संबोधपं वाहिका	菜			
		४१८३ स्तात्रसंबद्धाः । वय सं	दर।या	१ ₃X७ इ.चा अध्य⊩नशर	त । दि	चव–दोष । र

नवबहुम्लोक को वनीस्तान पदावतीस्तोन तीर्वयुरस्तोद शावाधिकमारु धा.द है।

प्रेरेल ४ म्हाबसमञ्जूषाचन वंदेशाचा ३ ४४० दृष्या वाला--वस्त्रा विवय-मनीय। र रक्त ४ । में कक्त ४ । पूर्णावे वंदशीक विवारः

विमेप-- मतामर वादि स्तोची का संबद्ध है i

दत्रयः — त्रस्तामयः सम्रव स्ताराच्या कम्ब वृद्धः। ४१८८१ः स्तावस्थव्याः — "ायव सं १६१ सा ३५६ दर्यः सत्तरा–संस्कृतः हिन्सी। दिवस–सन्दरः।

र राज्ञ ×ाने कल ×ायहर्वाचै से स्टरीक नष्यारी प्रश्चिक स्ताध-स्माचार्यक सर्वतापत्र से १। सा ० ४३, इ.स.। प्रता-सन्दर। रिप्य-

श्रीक।र नक्त ×ाने कल्त ×ानुर्थान्दै वै वदश्य व जनगर। ४१८७ स्वाब्ध्वासम्बद्धमम्मायवर्षे शासा ११४८ दत्यामस-शिल्याः विरास स्तीवदृसः।

र पत्न ×ार्म पत्न ×ान्यूरी।केसँ ३ । कप्पार। ४१८८८ स्थानसम्बद्धाः पत्र वर्ष १९। या १२०८ १वः वसा-तिल्यीः।विद्य-स्तीपः।र

राप ×ाने पाल ×ान्तुर्वा वे पं १।क समार। ४१स£. स्वापसमङ्गण्या वेष वे ७ ते ४७। वा १८४६ इ.व.। वारा-नंतता [विस्त-स्वा

र सार ×ाने सम्र ×ा ब्यूची है वे । कंपनार ।

प्रदेश स्वात्रम्याव्याच्याच्या वे के प्रदेश वा प्रदेश हे व । प्रदेश स्वात्रम्य । विषय स्वात्र र सम्बद्धाने नाम अस्माना के वे प्रदेश वा प्रस्तात

विमेन-स्वत्व स्तीय है।

क्षत्रेवाकात्रीय वादिराज ०.०५. राज्यकार्वान्यराज्ये १५६०

वर्षि प्रार्थान है। अन्यूष दीका बहित है।

न्वीत्र साहित्य]

४१६१ स्तोत्रसमह । पत्र स०२ ने ४८। ग्रा०८ ४४३ इ व । भाषा-मंस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ग्रपूर्ण । वे० स० ४३०। च भण्डार ।

४१६२ स्तोत्रसम्बद्धः । पत्र म०१४। मा० ८३×५३ इ व । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र॰ फाल ४ । न० काल म०१८५७ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । ने० म० ४३१ । च भण्डार ।

विजेष---निम्न सग्रह है।

\$	सिद्धिप्रयस्तोत्र	देवनदि	मम्बुत
7	कल्यारामन्दिर	कुमुदवन्दाचार्य	**
Ą	मक्तामरस्तोय	मानतु गाचार्ष	11

५१६३ स्तोत्रसम्ब्रह । पत्र म०७ म १७। मा० ११×८३ इ व । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तात्र । र०काल × । ते० काल × । मपूर्ण । वे० म० ४३२ । च भण्डार ।

४१६४ स्तोत्रसम्रह । पत्र स०२४। भ्रा०१२४७६ इ.च. भाषा-हिन्दी, प्राकृत, सस्कृत। त्रियय-स्तात्र। र०काल ४। ले०काल ४। पूर्ण । वै० स०२१६३ । ट.नण्डारं।

प्रदेश स्तोत्रसप्रह । पत्र स० ४ से ३४ । म्रा० ६×४ हे इ च । मापा—सस्कृत । विषय—स्तोत्र । र० कार × । ल० काल स० १८७५ । म्रापूर्ण । वेठ स० १८७२ । ट भण्डार ।

४८६६ स्तोत्रसग्रह । पत्र स०१५ से ३४। ग्रा० १२×६ इ.च.। भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र। र॰ काल ×। ते॰ काल ×। ग्रपूर्ण । वे॰ म॰ ४३३। च मण्डार।

विशेष--निम्न संग्रह है।

मामायिक वडा	×	सस्कृत	मपूर्ग
मामायिक लघु	×	19	पूर्ख
महस्रनाम नघु	×	11	n
महस्रनाम बढा	×	n	
ऋिमडलस्तीत्र	×	19	>7
निविं एका ण्डेगावा	×	33	"
नवकारमन्थ	~	37	77
कृहद् नवकार	×	मपभ्र श	"
शीतरागस्तो त्र	पश्चनदि	संस्कृत	11
जिनपजरस्तोत्र	×	33	"
			11

144]

1		
	सार्थ स्थाप	

दक्षपंचरस्तीय

इन्मानस्तीय

कर्चा माम स्तात्र रवासतीयके स्वरीस्कोप

×

× × ×

बक्तर्वत × बारायमा

प्रदेशक स्वाजसम्बद्धाः पद सं ४ । सा १ ८४३ ६ व । वादा-संस्कृतः । विवय-स्वीतः । र

गान ⋉ावे कान ⋉ा प्रशंके ने १४० । वह व्यवहार है

विकेश--विकासिक रहोत् 🖁 ।

रकीताव प्रमानवीवीची विवादहार, वेर्धिनीत पुरस्तुत हिन्दी ने हैं।

४१६६. स्वीतसंगर्का का तं ७।या ४६×३३ ६ व । वासा-विश्वत ∤ विवर-त्योत । र

समा×। के फान×। प्रश्नी (के सं देश । श्राजनार।

निमाधिकार स्टोन है।

तम स्टोप

वार्धमानारोप

हीर्थांपक्षीरवीध

विकेर--व्योधिनी केही में स्थित विवर्गली सी लुटि है ।

🕶 स्वरीस्वीप

विनया स्टीय

तो स्थानीकरोता चच्छा देवत्रशाचारेपराम्पादेशः ।

देशिकोण **रपासता**स्वीच

वासीन्त्रपुरानीहरेव वैदो विचारको व्यक्तप्रवासकः ॥ प्रदेशक स्तीत्रसंग्रह व्याप वर्ष १४ | या प्रदूर १३ हंग | जाना-बंस्तुष | विश्व-स्तीत | र

संस्×ामे प्रस्∑ावे थे १३४ । व्याप्तासम्बद्धाः सम्बीस्तोप

शासित ×

कर्चा

×

×

विभक्तके व

×

बंद्यस्य

BIST

बीररच

करहें

िस्तोत्र साहित्य

भाषा

हिली

र्वतर व

इत्तुरु

स्तोत्र साहित्य ो

मण्डार ।

४२०० स्तोत्रसमह । पत्र स० १३। मा० १३४७३ इ.च । मापा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० द१ । ज भण्डार ।

विशेष---निम्नलिखित स्तोत्र हैं।

एकीभाव, सिद्धिप्रिय, बल्यागामि दर, भक्तामर तथा परमानन्दस्तीत्र।

४२०१ स्तोत्रपूजासग्रह "। पत्र स० १४२। मा० ६३×४ इ च । मापा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १४१ । ज मण्डार ।

विशेष-स्तीत्र एव पूजामीं का सम्रह है। प्रति ग्रुटका साइज एव सुन्दर है।

४२०२ स्तोत्रसम्रहः । पत्र स० ३२ । मा॰ ४३ ४६ ई इख्र । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० कालं × । ले॰ काल स॰ १६०२ । पूर्ण । वे॰ स० २६४ । मा भण्डार ।

विशेष-पद्मावती, ज्वालामालिनी, जिनपञ्जर भादि स्तोत्रो का संग्रह है।

४२०३ स्तोत्रसग्रह । पत्र सं०११ से २२७। ग्रा० ६ २४ इझ । भाषा-सस्कृत, प्राकृत । विषय-स्तात्र । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । ग्रपूर्ण । वै० सं०२७१ । स्कृ मण्डार ।

विशेष--गुटका के रूप में है तथा प्राचीन है।

४२०४ स्तोत्रसंब्रह "'। पत्र सं०१४। झा॰ ६×६ इख्र। भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० २७७ । व्य भण्डार ।

विशेष-भक्तामर, कल्याणुमन्दिर स्तोत्र मादि हैं।

४२०४ स्तोत्रत्रय "। पत्र स०२१। मा०१०४४ इक्का मापा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० सं० ५२४। व्यामण्डार।

विशेष-कल्यासमिदिर, भक्तामर एव एकीमाव स्तोत्र हैं।

४२०६. स्वयभूरतीत्र—समन्तभद्राचार्य । पत्र सं० ४१ । मा० १२२ ४४ ६ च । भाषा-सस्कृत । विषय-स्तोत्र । र० काल × । ले० काल × । मपूर्ण । वे० सं० ५४० । क मण्डार ।

विशेष-प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है। इसका दूसरा नाम जिनचतुविशति स्तोत्र भी है। ४२०७ प्रति स०२। पत्र स०१६। ले॰ काल स० १७५६ ज्येष्ठ युदी १३। वे॰ सं० ४३४। च

विशेष---कामराज ने प्रतिसिषि की थी। इसी मण्डार में दो प्रतियां (वे० स० ४३४, ४३६) श्रीर है। **४१९ ै** [स्वीत्र साहित्य

मः प्रतिस•३। पत्र सं २४। ते कान ×। वे सं २६। आर भण्डार । व्यवेप—संस्कृत दीवा समित है।

¥रे∘६. प्रति सं∘ प्रापत कं रशाने जाल ×। बपूर्ता के तं ११४ । स्र प्रधार। विदेव—संस्टर में विश्वार्थ कि वर्ष हैं।

४२१ स्वयम्सान्दीका--अधावन्त्राचार्ये । वच सं ४६ । बा ११×५ रह । वना-चंदर ।

४२१ स्वयम्रताप्रदेशिः---समाचण्याचार्यायन्त्राचार्यायन्त्रा ४३ । बा ११८५ वडा शमा--वस्त्री विषय---सोगार नज्य ≍ात्रे वक्ष्य संदेशकीयर पुरी १६। दुर्खावि सं ४१। वस्त्रप्रसार।

विकेश-ज्य का कुछता बाल क्षियारकार दौरा मी दिया हुया है।

स्ती प्रकार में वी ब्रीटर्स (के वे वर्ष, वर्ष) और हैं। प्रकार प्रति संघावत में देद की करवार्य दृश्दर रोज क्षी रहावे में वर्ग कि

श्रम्बार ।

रिकेर—उद्गुक्ताल प्रांच्य बोवचे नामनु के वार्केट प्रीवाल प्रानी से प्रतिनिधि कर्यों ।

प्रदेश- सर्वसूत्तोत्रद्रीक्या^{च्या} त्व सं ३२ । या १ ४४३ हंद । बारा-संस्कृत । स्वर-स्तोद । र कम × । वे कल × । ब्युक्ती वे संवय । क्य वस्त्रद ।



पद भजन गीत खादि

४२१३ अनाथानोचोढाल्या—खिम। पत्र स २। ग्रा० १०४४ इख्र। भाषा-हिन्दी । विषय-फीत। १० कोल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वै० स० २१२१। अ भण्डार।

विशेष—राजा श्रेरिएक ने भगवान महाचीर स्वामी से अपने आपको धनाय कहा या उसी पर नार ढालो मे प्रार्थना की गयी है।

४२१४. श्रमाथामुनि सक्ताय । पत्र स० ५। प्रा० १०×४२ इस्र । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० २१७३ । श्र भण्डार ।

हर्म श्रह्मिकचौदािलयागीत—विमल विनय (धिनयरग) । पत्र सं० ३। प्रा० १०४४ । इस । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल 🗙 । ते० काल १६८१ मासोज सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ६४५ । अप

विशेष--प्रादि झन्त भाग निम्म है--

भारमभ- वर्द्ध मान चेउवीसमंड जिनवदी जगदीस ।

घरहनक मुनिवर चरीय भिए सुघरीय जनीस ॥१॥

नीपर्द- धु जगीमधरी मनमाहे, कहिसि सधव टछाहे।

भरहनकि जिमवत लीघउ, जिम ते तारी वंसि कीघउ ।।२।।

निज मात णुइ उपदेसइ, विलक्षत भादरीय विसेसई।
पहुत्तव ते देव विमानि, सुश्चित्रयो भविषण तिम कानि ॥३॥

भौहा- भगरा नगरी जालीयइ मलकापुरि भवतार।

षसइ तिहां विवहारीयउ सुदत नाम सुविचार ॥४॥

भौपई--- पुविचार, सुभद्रा धरागी " " "

त्तसु नदन रूप निधान, अरहनक नाम प्रधान ॥१॥

पन्तिम- भ्यार सरग् चित चीतवर जी, परिहर्ति च्यारि कश्य।

क्षेप तजह वत उचरइ जी, सत्य रहित निरमाय ॥५४॥

```
िवह श्रञ्जन गीत पारि
```

यदनकार भारम वशी भी तारित नेवे निहार । र्फ्रीण ज्युष ए वर्ति परिदृष्टी भी अन तमरद नवनार 11250 विका नवारत धाररवा वी तूर विरक्ष स्त्रि सार । सहद वरीतह कारची भी देवद भवता वार ॥१७॥ बबतारब माहि भीनतंत्र थी। वनेवरतंत्र नूम ध्यान । राज करी किनी पानीयत की भूंबर देव विवास ॥१ ॥ नुरव तला नुब बोवबी बी परशानंद बनान । दिक्षों वी विके विके पायरवार थी। यपुर्वाय विकेशूर वाल (१९६१) श्राम्बद्ध विदेवरह की, र्यंत स्वत नृतन्त्रस्त । बदव बच्चन वरि वे सही वी पानह परव वश्यास ।।६ ॥ भी बरदर वच्छ रीपता वी थी विनर्वर पुलिस । वकरेता वय वासीयह भी शरसन्त गरवारांच ॥६१॥

ते पावड् बुक्त वंपरा भी दिन दिन बंद वस्कार ११६३।। হতি মন্ত্ৰীৰক প্ৰবাহিদৰালীতৰ জনজন ।। बंबत् १६ १ वर्षे याजु तुधी १४ विते बुववारे वंडिया जी इस्तिक्वविद्याल्यार्वशीतार्वास्त्रीयांचेल

क्यरवर्षेत्रवा नेकि । जी पुरस्कानरे । ४२१६ आदिकितदरस्<u>ति — कमक्कीर्ति। त</u>्य वंदे। बा १३४६ इव । यसा-प्रवस्ती ।

यो क्रुल तेवर ब्रुल विनय गी, नापर थी दवर्रद । हानु बीत जलह मन्द्रद वी विनमपिषद विदरप ।।६६।: इ क्ष्मंत मुद्रायत भी भी नामद बर वर्गर (

विवय-नीष: र नल ×। वे नल ×ः पूर्वावै वे १०७४ । इ. बच्चारः।

विश्वेष---वी बीच हैं बीनों ही के कर्ता वनसकीर्ति हैं।

1 759

४२१७८ स्त्राम्बानगीत—सुविध्यसिद्धः च्यातं १ । सा ३_५४४३ इच । मला–हिमी । विवय-नीत | र काल वं १९३६ | के काल 🗙 | वे वे १३६ का जन्मार।

विश्वेष---भागां वर प्रवराती का अवार है।

प्रकार, काविताब एक्काव^{ार्था} नव तं १।वा ६}xv स्वाः जला-विको । विवय-नीतः।

र नल×।वे नावानुर्वादे वे २१६ । वामणारा

४-१६ स्त्रादीश्वरिवदत्ति । पत्र मै० १ । मा० ६१ ४४३ दश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० नान स० १५६२ । ते० पान स० १७४१ वैद्याय सुदी ३ । मपूर्णे । वे० सं० १५७ । छ नण्टार ।

विषेप-- प्रारम्भ के ३१ पद्य नहीं है। मुत ४५ पद्य रचना में हैं।

मन्तिम पदा---

पनरवासिंह जिनमूर श्रविचल पद पाथी । वीनतढी गुलट पूर्णोवा धामुमस विद् दशम दिहार मिन धैरागे इम भर्णावा ॥४॥॥

४२२० कृष्ण्यालविलास-श्री निशानलाता। पत्र स० १४। मा० म्४५३ द्या। नापा-हिन्दो। विषय-पद। र० काल ४। ते० पान ४। पूर्ण। ४० स० १२८। इः भण्यार।

प्रवर गुरुम्तवन—भूधरदाम । पण ग०३। मा० ८३ ४६ई इ.च.। भाषा—हिन्दी । विषय गीत । रः कान × । त० काल ४ । पूर्ण । वे० स०१८८ । उ. भण्डार ।

१००२. चतुर्विशति तीर्थाद्वरस्तवन ~ हेमविमलसूरि शिष्य आर्शंट । पत्र मन २ । प्रा० ६३४४६ इस्र । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० माल २० १४६२ । ने० काल ×ा पूर्ण । वै० स० १८६३ । ट मण्डार । विशेष-प्रति प्राचीन है ।

४२२३ चम्पाशतक--चम्पाबाई । पत्र त० २४। मा० १२×५६ द प । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० ग० २२३ । छ् भण्डार ।

विशेष--एक प्रति भीर है। चपायाई न ६६ वर्ष की उम्र में रग्णावस्था में रचना की थी जिसके प्रभाव म रोग दूर होगया था। यह प्यारेजाल म रीगढ (उ० प्र०) की छोटी बहिन थी।

भः२४ चेलना सब्काय-समयसुन्दर । पत्र स० १ । प्रा० १ दूर्थ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल × । ते० काल स० १८६२ माह सुदी ४ । पूर्ण । वे० तं० २१७५ । आ मण्डार ।

४२२४ चैत्यपरिपाटी । पन स० १। मा० ११३४४३ - ऋ। भाषा-हिदी । विषय-गीत । र० काल ४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १२४४ । ऋ भण्डार ।

४२२६ चित्यवद्दना । पत्र स०३। मा० ६×८ दृष्ट्या भाषा-हिन्दी। विषय-पद। र० काल ×। त० काल ×। मपूर्या। वै० स० २९४। मा भण्डार।

४२२७ चौबीसी जिनस्तुति—खेमचद् । पत्र स० १ मा० १०×४५ दश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल × । ले० काल × । ले० काल सं० १७६४ चैत्र बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १८४ । इ. मण्डार ।

४२२८ चौवीसतीर्यष्ट्रातीर्थपरिचय । पत्र सं०१। था० १०४४ दे स्थ । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २१२० । व्य भण्डार ।

प्रस्तः चौनीसर्विष्ट्रस्तुवि-अक्रदेश। यत् वं १७। सः ११२ \times र $_{q}$ स्वः। जारा-नि $^{d_{1}}$ । विकास्तवसः र सम्र \times । से बात्र \times 1 प्रति है । १५१। ध्यू नव्यतः।

प्रदेश चौतीसदीयहरकातः चार्च र ११ वर्ग ६_०००३ इसा वला-दिनी । विराह सरकार राज्य × क्षेत्र का × १९६१ वर्ग वे १६ ३ वर कासर।

४०६२ चौत्रीसर्विद्वस्तरम—स्वाप्टस्य व्यवस्थाला । पर वं ासा ८८५५ हव । स्वी-क्रिको । विरय-स्वार । र तमा ×ा वे वसा ×ा दुर्व । वे वे १६०। च तथार ।

प्रदेश समझी—तामहरूका वर्षशाधा १ १४६ इ.चः सामा-हिन्दी । विस्त-नारः। र रुक्त × । ते वर्ष × । इर्ता वे वे ११ । क्रान्यार।

४१३½ कालुकुमारसम्बद्धः "ावत सं है या ३६४४ इस । वारा-दिसी। विच-स्तरकार कमा ४१वे काल ४१३०० । वे से ११३६। कालकार।

प्रमध्य जनपुर के मेहिरों की बहता—स्वकृत्यवह । यह है । यह १,४४३ हुछ । भाग-दिन्दी : विश्व-स्तरक । ए कक्त वे १११ कि कात वे ११४० (पूर्व | के वे १०) हर क्यारा

४०३६ जिल्लासील—पुर्वेतीचि । यर वं रामा १९८६६ इया वसा—देल्यी । दिश्वेस्थनसम्ब र यक्त ×ारे वक्त ×ापूर्वावे वं रैयक्टाच्य जन्मरा

४२२०, ब्रियमधीकी व काम क्षेत्रह[™]ा पत्र सं ४ । ता ०३×६ इ.स.। बास-हिमी। दिवस-स्तरतार सम्बद्धाः

४२६६६ क्षाव्यक्रमीस्त्रकन सम्बद्धम्बरीय वं १० वा १ ४४ ४'व। वस्त-हिनी। विवय-स्तरकार कार अने कला वं १००६ वास्त युरी १० पूर्वा वं १ १ । वस्तामार।

४९६. सक्कष्ठी सीमन्दिर-विकासना पत्र वं ४। या क्रिश रका गला-दिलो । विषय-स्वरुगार पश्र ×ाके काल ×ातुर्वा वे वे देशे । क गणारः

४९५० स्टॉस्ट्रियाचीशस्त्रा विषये १२६६ १ ४८६व ३ सत्र-दिनी ३तिस-तैतः र कर×ा ते सत्र×ा बहुरी के वे ११६६३ स्टब्स्टरा रिषोय---प्रारम्भ-

सीता ता मनि भेकर दाल-

रमती चरणे सीम नमावी, प्रस्तामी मतगुर पाया रे।
भांभरिया ऋषि ना गुस गाता, उल्लंड भाग सवाया रे।
भवियस वहां मुनि भांभरिया, ससार समुद्र जे तरियो रे।
सवल साह्या परिसा मन सुधे, तील रयस महि भारियो रे।
पर्ठतपुर मकरपुज राजा, मदनसेन सस रास्ती रे।
तस सुत मदन भरम बालुडो, निरत जास महास्सी र।

मोजी दाल भपूर्ण है। भांकरिया पुनि या वर्णन है।

प्रभिष्ठ ग्रामोकारपश्चीसी—ऋषि ठावुरसी । यम स० १। झा० १०४४ ६ व । भाषा-हिन्दा । विषय-स्तोत्र । र० काल स० १८२८ झागाउ सुदी ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वै० स० २१७८ । स्त्र भण्डार ।

४२४२ तमाख्रुकी जयमाल—आणदमुनि। पत्र स०१। ग्रा० १०३८४ इ.च.। भाषा-हिन्छ। विषय-मीत। र०काल ×। ने०काल ×। पूर्णा वे० स०२१७०। श्राभण्डार।

४२४३ दर्शनपाठ-- मुघजन । पत्र स० ७ । मा० १०४४ ६ च । भाषा-हिन्दी । विषय-मात्रन । १० काल > । ने० कान × । पूर्ण । वे० स० २८८ । द्व भण्टार ।

४२४४ दर्शनपाटरतुति "। पत्र स० ६। मा० ६×६३ ६व । माया-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० र० राल × । ले० काल × । मपूर्ण । वे० स० १६२७ । ट भण्डार ।

४२४४ देवकी की ढाल-ल्याकरण कासलीवाल । पत्र सं० ४। मा० १०३×४३ इ द । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । २० काल × । ले० काल स० १८८५ वैशास बुदी १४। पूर्ण । जीर्ण । वे० क० २२४६ । श्र भग्दार ।

विशेष-भारम्म दोहा-

11 3

; 1

4-

186

रढ नेमा नामे हुवा सलगा सरव संजोग । बाठ सहस ललगा घरो गोमकार गछ जोग ॥१॥ सहत ब्रठारा साथ जी ब्रजाया चालीस हजार । भौटार मुनिवर विचरज्या रो सार ॥२॥

भसुदेव राजा ढाकरा देवाकीसा भंगजात ॥३॥ भन्दन छ देव वा तसा सा राखां के उसहार । बासी सुस्र श्री नेम का लाघन सजसाद ॥४॥ ्या प्रकार की वार्थि सामको शुरु सामरी वेश मक्कानी गाय ।

केरवानस्य स्वामी वी करायो जीव धीव धारा

Simo-

बास्या बागूरी बेगरी रेखी गर क्या पूर व्यं सारत गीहला है। बक्तीमामाल काम बातावीर दूरी से दूर क्यार बार है। ११। तम्मय बात मोहावडी बक्तरों र कम में मुनी से विद्या स्पर्य । बकाम बाद्या दो बात पूरी है बेब को मीचन वीहरत व बातरे ।।।। धैनको के बातम के विद्या मार्ग का बाद्या मार्ग का बाद्या मार्ग को बोल किस्ट बैनरी हैं क्यार मोहावडी हु बादि ।।।।

बाता या ज्यान्य भा नवनार एका क्ष्म वाद्य वस्तर र बात्वा माझे बाबु वहरे वार्ता नी स्वारे ट्वरा बातरे शक्का बारवी वाप क्रोमी क्षमा वस्त्र वक्कारो

हुदुमाना दीने क्यारे निया कालक बंदार | महिल मालक बहु दीना बेदशी नगरा देवा शाद व राज्यी ।! इराइराल यु दाल क माना तीन चील दवही यु दाल्यी ए ।।६।। इति यो देवशी शी दाल व || ।। क्यारांगी ।।

रहर्म क्रीलान बाररा गैतरान ठाएरण नेदा स्पेदाना से गांच न्हें श्लाह तथा श्रीय वापन्यों ! निर्णे

रिक्रण पूर्ण १४ वं १ १। हेचकी की बाक — रयनपान क्रम भीर है। मध्य नल नई है। गई श्रंप नल होत्तर है। स्टर्भ में मध्ये बाहत है।

स्ताः ६ : स्रोतार--- क्षुश् वास्ता वी नार्वाट गमारे वर वीडि रेशनवाद वसी ॥१ ।

 $\chi \chi \chi \chi \xi$ द्वीत्राकनदास्य—पूर्ण्यागरसूरि । यथ वे १। सा १ ३८४५ दक्ष। वस्ता-निर्णा हर्गः स्था। । स्वस्थ-स्था १ दम्म χ । ते कम्म χ । पूर्ण । वे ते ११४४। द प्रवारः।

रियम-सामन । र कार ८०० ८०० । ४२४७ नेसिताब के मदसहस्रेन-विभागीकाका । पर वं १ । वा १६५≪६ इस । साम-हिप्ती ।

विषयं स्तुवि । एं कल्प में १७४४ । से भ्रम्म में १ २१ मनतिइ तुरी है । वे से २४ । घट मन्तार (

हिस्तेष--पीतु में प्रतिहिति हुई की । सम्पत्ती मी दाह कीम निवडा हुका है ।

१२४२ प्रति स० २ । पत्र स० २२ । ते० कांत × । वे० सं० २१४३ । ट भण्डार । विशेष—ितस्या माल फीजी दौलतरामजी की मुकाम पुन्या के मध्ये तोपपाना । १० पत्र से ग्रागे नेमिराजलपधीसी विनोदीलाल कृत भी है ।

४२४६ नागश्री सतमाय-विनयचद । पत्र सं०१। ग्रा०१०४४ई इच। भाषा-हिदी। तिषय-स्तवन। र० काल ४। ले॰ काल ४। ग्रपूर्ण। वे॰ स० २२४८। स्त्र भण्डार।

विशेष-मेयल ३रा पत्र है।

मतिम--

धापण वाधो भाष भोगवै कीण ग्रुठ कुरा चेला ।

सजम नेद गई स्वर्ग पाँचमे भजुही नादो न वेरारे ।।१४।। भा०।।

महा विदेह मुकते जानो भोटी गर्भ वसेरा रे ।

विनयचद जिनधर्म भराधो सब दुखं जान परेरारे ।।१६।।

इति नागशी सर्जनाय कुनामणे लिखिते।

४२४० निर्वाणिकाण्डभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र स० = । मा० = X४ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय-स्तुति । र० कान स० १७४१ । ते० कान X । पूर्ण । वे० स० ३७ । मा भण्डार ।

४२४१ नेमिसीत-पासचन्द्र। पत्र स० १। मा० १२३×४६ इ च । भाषा-हिदी । विषय-स्तवन । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० १८४७ । ज मण्डार ।

४२४२ नेमिराजमतीकी घोड़ी । पत्र स०१। मा० ६४४ इ च। मापा-हिदी। विषय-न्तीत्र । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० स० २१७७ । आ मण्डार ।

४२४३ नेमिराजमती गीत-व्हीतरमल । पथ स० १। मा० ६३४४ इख । मापा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० २१३४ । ध्रा भण्डार ।

४२४४ नेमिराजमतीगीत—हीरानन्द । पत्र स०१। ग्रा० = १४४६ व । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१७४ । अ भण्डार ।

> सूरतर ना पीर दोहिलोरे, पाम्यो नर भवसार । आलक्ष जन्म महारिष्ट भोरे, काक्ष करधारे मन माहि विचार ॥१॥ मित राचो रै रमणी ने रग क सेवोरे जीख वास्यो । सुम रमक्यो रै सजम न सगक चेतो रै चित प्राणी ॥२॥ भरिहत देव ग्रराधाइघोजी, रै ग्रुर गक्या श्री साध । धर्म केवलानो भाखीड, ए समक्ति ने रतन जिम लादक ॥३॥

पक्रिको समितित तैथीन रे वे के वर्षनी मूच। तमम समित बाडिरो किए। बाल्यो रे तुत्र चंडल तुनिक ११४।। शकत करीन धरवारो है. वे बाबी बलनाय है पाचेड बाक्स परिहरो, जिल मिलीड रै मिनपूरवी शायक ।।१।। बीय शहरी बीदेश शृक्षिरे, बरुल न शृक्षे शीर । धारत राजा शिवना, तक नावर रेड्स को यत तीड ॥६॥ बोरी नीके पर क्यों रे विश्व ही जाने पर। बन बंदक दिन योरीन किस बांबर रे का भवना र्स्तार क ११७।। क्षपत प्रकीरत सावन दे, येरे वन दुख धनेन । कुड नहुता पानीह, काह बाखी रै मन माहि निरेष II II महिता धेन भुद्द हर, नग नव्ह तय बुत । पुन्त नुष्ट कारक ए तना, निमा नामे रे हिस्सा गतिका ।।६।। कुम कुम कर हाट चटि, बनता काने पीक । बु गरिब**ह जान नहींह भी थे खा**बरे बया बहुमा लोफ ११९ ४१ मात विका बंबर शूबरे, पूत्र कवन परवार । क्षपार्वमा बहु की तथा। कोइ कर क्षय दे शही एउक्क्यूबार ११९१८ संयुक्त क्ला बीपरे हैं, किल रै तुटह मात । बाद दे का नही रे बहुदि बरा धाबरे ग्रीवन ने बाद 115 रत म्बारि वरा वर सम नहें दे दव सम वर्ष बंगाय । बास हर कल वरतये नीड समर्थन है मानैनोराल क ॥2३॥ स्वार दीवस की प्रक्रमा दे तत की इस बंधार । एक दिल करो बाहबर अमल बाह्य है मिल ही शबकारक ।।१६।। ब्रोब गाम नामा तसी है, बोन येवसम्बे बीपार } सम्वास्य वरपुरीन नवी वीक्षिको १ गर सनवारण १११९।। बार्ष बाबा प्रकार रे पीड पंत्रम स्वर्धि । हिट कई के बंदू की करी कर बोली सकत केवलुरक ॥१७०।

पर्भनन गीत आदि

5

बाल वृषचारही जिए। बाइसममा ॥

समदविजङ्जी रा नद हो, वैरागी माहरो मन लागो हा नेम जिसाद सू जादव कुल केरा चद हो ॥ वाल० ॥१॥

देव घणा छड् हो पुभ जीदोवता (देवता)

तेती न चढइ चेत हो, कैइक रे चेत म्हामत हो ॥ माल० ॥२॥

चैदक दोम करह नर नारनइ मामह तेनिसदूर हर हो। याके इक बन वासै वासे वास, या बनयासो करइ।

(कप्ट) क्सट सहद भरपुर हो ॥३॥

सु नर मोह्यों रे नर माया तर्गों, तु जग दीनदया हो।

नाजीवनवती ए मुदरी तजीउ राजुल नार हो ॥४॥ राजल के नारिश्णे उद्धरी पहुतीउ मुक्ति मकार।

शीरानद सवेग साहिबा, जी वी नय म्हारी बीनतेडा प्रयघारि हो ॥५॥

।। इति नेमि गीत ।।

४२४४ नेमिराजुलसङ्काय १०१ मा० १४४ इन । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोष रिकाल म०१६४१ चैत्र । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स०२१६४ । आ भण्डार ।

४२४६ पद्धपरमेण्ठीस्तवन-जिनवल्लभ सूरि। पत्र सं०२। मा०११×५६ व। भाषा-हिन्दी

विषय-स्तवत । र० काल × । ते० काल स० १८३६ | पूर्ण । वे० स० ३८८ । श्रा भण्डार ।
४२५७ पद--श्रुषि शिवलाल । पत्र स० १ । श्रा० १०×४३ ६व । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तार

र॰ काल × । ले॰ काल × । पूर्णं। वै॰ स॰ २१२ ८। छाभण्डार। विशेष-भूरापद निम्न है—

या जग म का तेरा श्रंधे ॥या०॥

जैसे पछी वीरछ वसेरा, बीजरै होय सवेरा ॥१॥ कोडी २ कर धन जोड्या, ले धरती मे गाडा ।

मंत समै चलण की वेला, ज्याँ गाष्टा राह्रो छाडारे ॥२॥

कना २ महल वरायि, जीव कह इहा रैगा। चल गया हस पढ़ी रही काया, लेय क्लेवर दणा।।३।।

मात पिता सु पतनी रे थारी, तीरए धन जीवन खाया। उड गया हुँस काया का महरए, काहा प्रेत पराया।।४।।

>

7

करी कवाद दश भो धाया, उत्तटी पूडी चोद । मेरी २ ५एक जनन बनाया चनता तंक न हो हा। १३।। पार की कीर कहीं किर लीवी है मुख्य बोरा । हवकी रॉट करी हू भाई, तो होन बुटुम्बर्ड म्हारा ।।६॥ बाद विंदा इब कामन मेरा मेरा वन परिचारी। देख १ पडा पुरुष्टे चनता नद्वी स्था नार्धे । Wil बो हेरा हैरे सेंद व क्लाहा, देव न वाला गओ ! मोह बंह रवास्थ बीराखी द्वीरा थनम बवाना ॥व॥ ग्राक्या देवत केटे क्ल पए वंदर्ग अन्यद ग्रापूरी पत्तका। बांबर बीता बढ़ पहलाने नाबी बुईान नत्तवसा शहार काम कर बंदन कास करें, कही व शीयत बंदी ! काम संबंधि बारी वेक्सी जब क्या कारत शारी ।। ए बोलवाद बाद बुदेशी केर न बाक बारी। हीका होन वो धील व कीचे पुत पत्रो विरक्षारी 11११।। होत् बुक्ते बीन नीरक्ती कामी केर नद खुटल हारी। इस धेवारी नगह दुवे बीव पत नग्रे दिखारी । १२॥ क्षार बुदेव गरव के देवी, तेवी जीव का दश्या : हैच बोवसाम रहे मी बस्डी यादन करूव करूवा ॥१३॥

រកសិល

६२,व्य. पर्वतंत्रह्मामान्यस्य वे ६६।याः १२८८६ दशः शासा-विव्योः । विश्वस्थानस्य । सम्राभः स्वास्त्राभः स्वर्ताः । वे अंपर्वाक सम्बारः । प्रस्तरः पर्वतंत्रहम्मानां पर्वते हैं। से सम्बन्धः (वे वे १९७६) च्याच्यारः)

प्रवस्त । पत्र म० १२। ले० काल ×। वे० स० ३३। मा भण्डार ।
विशेष—इसी भण्डार में २७ पदसग्रह (वे० स० ३४, ३४, १४८, २३७, २०६, ३१०, २६६, ३००, ३०१ मे ६ तक, ३११ मे ३२४) ग्रीर हैं।
नोट—वे० स० ३१८वें में जयपुर की राजवशाविल भी है।

४२६३ पदसम्रह । पत्र स०१४। ले० काल ×। वै० स०१७४६। ट भण्डार।
विशेष—इसी भण्डार मे ३ पदसग्रह (वै० स०१७४२, १७४३, १७४६) मीर है।
नोट—द्यानवराय, हीराचन्द, भूघरदास, दौलतराम मादि पवियो के पद हैं।

प्रवस्त्रह । पत्र न०३। मा०१०×४ है इ.च.। भाषा-हिन्दी । विषय-पर। र० काल ×। पूर्ण । वे० स०१४७। छ भण्डार।

विशेष-केवल ४ पद है--

- १ मोहि तारी सामि भव सिंधु तै।
- २ राजुल कहै तुम वेग सिधावे।
- ३ सिद्धचक वदो रे जयकारी।
- ४ चरम जिल्लोसर जिह्नो साहिबा चरम धरम उपगार वाल्हेसर ।।

प्रद्र पद्सप्रह" । पत्र स० १२ मे २४ । आ० १२४७ इ.च । आपा-हिदी । विषय-पद । र० काल × । अपूर्ण । वे० स० २००८ । ट मण्डार ।

विशेप--भागवन्द, नयनसुख, द्यानत, जगतराम, जादूराम, जोघा, बुधजन, साहिवराम, जगराम, लाल यसतराम, भूगभूराम, लेमराज, नवल, भूधर, चैनविजय, जीवरादास, विश्वभूपरा, मनोहर झादि कविया के पद है।

४२६६ पदसम्बन्द। पत्र स०१८। मा॰ ६×६३ इत्र। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। र० काल ×। ते० काल ×। मपूर्ण। वे० स०१४२८। ट भण्डार।

विशेष--उत्तम के छोटे २ पदोका सग्रह है। पदों के प्रारम्भ में रागरागनियों के नाम भी दिये हैं।

४२६७ पद्मग्रह--- च० कपूरचन्द् । पत्र म० १ । मा० ११३×४३ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल × । पे० काल × । पूर्ण । वे० स० २०४३ । स्व मण्डार ।

४२६८ पद-केशरगुलाध । पत्र स० १। आ० ७४४३ हेच । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । र० नाल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० २२४१ । स्त्र भण्डार ।

विकेश-सारम्ब-

नीवर सन्दर्भ ननवादन्यन श्रांतावेत हुआरो थी ।

रिसवासी जिसवर प्यारा वो

दिल दे दीच वसत है विस्तदित क्या व होनद न्यारा वी ।।

प्रश्नेक्षः यदसमञ्ज्ञ-विक्युक्षां प्रवर्षः हासा २४४८६ हता बाला--श्रीक्षां विकास-नदः। र सक्ता×। संस्थानः प्रवर्धः वैर्थे वेर्देश्यकः । स्वत्याक्षः

४०० प्रसमित्—चयमम् व्रावदा । पत्र थं १९। या ११×६३ द्वा | वस्ति-दिनी निस्त-पर। र नाम मं १००४ यानाव पुरी १ । ने पाम वं १८७४ यानाव पुरी १ । पूर्व | दे सं ४१०। ६ समारः |

> निकेर—मितान २ वर्गों में विश्वय मुची के रखी है। बक्तवर २ वर्धों का संबद्ध है। भुक्तकर प्रति संदेश कि को कि सम्बद्ध है क्षेत्र स्वाहक क्ष्मार।

प्रर २ प्रति स ३। यन वं १ ते ४ । के काल X (ध्यूर्त (३ वं १६६ । ह नवार)

प्रत्यक्षं प्रकृतसम् चौतानसः। पर वे ४४ । सः १८६६ इ.स. बल्या-हिल्दी। दिवस-पर सम्पर्ध इ.स.च. १ वे सम्पर्ध १ ६१। पूर्ण | वे संदेश क्षा समार।

विश्वेष---प्रति क्रम्मान्य है। विभिन्न एक एक्सिमों से १० विने हुने हैं। प्रपत यम पर निया है भी वैरक्षानरूपों हो १ ६६ का वैकास सुरी १२। कुम्पन नवर्ष बैक्संड ;

४९७४ पद्यस्य—्**रीका**रसम्बन्धः १ रामा १९८७ इत्याचला–हिन्दां स्थित-स्रा र कला×ाने कोच×।ध्यूरी स्थै प्रदेशक कथार।

प्रक्रमः बहुर्सस्—चुस्रकमः। परं सं १६% ६९। सः ११ × इ.चः। सरा—हिम्से। विषयं पर सम्प्राः र सम्प्राः के कर्मा×। स्टूबी। वे संस्थान्य सम्प्राः।

प्रदेश दहासह---सागणम् । वर्ष देशासा० ११८७ इया साम-हिन्दीः विषय पर ह सम्बद्धार कल्लास्य केल्लास । पूर्णा वे वे प्रदेश कल्लाहा

प्रदेशक प्रति स्विक्त की इंग वह दी है। के स्वाहत स्वाहत व

विचेत-नोते पदो ना वंद्य है।

प्रस्थः, पह—सक्केष्यंदापण वैश्रीमा ६×ग्रीदव । जानो-हिश्सी ∤र कल ×।दै नक्तर×।दुर्लासे से संदर्शन । वाज्यकार । विशेष -- प्रारम्भ-

पत्र सखी मिल मोहियो जीया,

काहा पावैगो तु धाम हो जीवा।

समभो स्युत राज ॥

४२७६ पदसग्रह—मगलचट । पत्र म० १० । ग्रा० १०३×४३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद व भजन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० म० ४३४ । क भण्डार ।

४२८० पदमग्रह—मािर्साकच्चद् । पत्र स०५४। मा०११४७ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पद व भजन । र०काल ४। ले०काल स०१६५४ मगिसर बुदी १३। पूर्ण । वै० स०४३०। क भण्डार ।

४२८१ प्रति स०२। पत्र म०६०। ते० काल X | वे० म० ४३८। क भण्डार ।

४२=२ प्रति स० ३ । पत्र स० ६ । ले० काल x । मपूर्ण । वे० स० १७५४ । ट भण्डार ।

४२=३ पदसम्रह—सेवक । पत्र न•१ । मा० ५२×४ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । र• चान × । ने० कान × । पूर्ण । वे० स० २१४० । ट भण्डार ।

विशेष -- केवल २ पद हैं।

४२-४ पटसग्रह्—हीराचन्द्र । पत्र स०१०। मा० ११×५ इम्र । भाषा-हिन्दी । दिषय-पद व भजन । र० वाल × । ले० वाल × । पूर्ण । वे० स० ४३३ । क भण्डार ।

विशेष-इसी मण्डार मे २ प्रतियां (वे० स० ४३५, ४३६) भीर हैं।

४२म४ प्रति स०२ । पत्र स०६१ । ले० बाल ४ । वे० स० ४१६ । क मण्डार ।

४२ = इ. पट व स्तोन्नमग्रह । पत्र स॰ ८८। ग्रा॰ १२३ × ४ इ.च । मापा – हिन्दी । विषय – सग्रह। द० काल 🗴 । पूर्ण । वे॰ स॰ ४३६ । क भण्डार ।

विशेप--निम्न रचनामा का सग्रह है।

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
पश्चम ङ्गल	रूपचन्द	हिन्दी	5
सुगुरुशतक	जिनदास	79	₹0
जिनयशमञ्जल जिनगुरापश्चीसी	सेवगराम	29	¥
गुरुमो की स्तुति	19	23	~
प्रथम मा त्युति	भूषरदास	17	-

n]			[44	शंक्रम कीत कानि	
	याय	कर्चा	यापा	पत्र	
	स्तीयसस्तीय	पुररशान	विश्वी	ĮΥ	
	দখনাধি বৰবৰ্ত্তি ক	गलना 🗩	*	-	
	परसंबद्	नारित्र भन्द		¥	
	ते ध्य रं चक्र वी सी	p	*	7.5	
	ं वायस्तिग्रीना वर ीय		*		
	चौडील वंदक	बीनटरान	77	१ ९	
	रहरोडक्वीची	₹লভ⊍ৰ		ţw	
	ধ্বন্ধ ব্যৱস্থিকটি	— आस्त्र (समयप्तम्बर के	हिल्प)ः पचन र ाष	स १×६वता	
वासा-विज्ञी । सैयय-जीव । रंुत्रक्त X । ने त्रक्त X । पूर्वा के घं १ १ । क्रायम्बार ।					
४२०००, पार्वमाण की निरं⊞नी—विवस्वै । पत्र रं ३ । या १ ×४ इ.व.) जसा-दे <mark>री</mark> ।					
विवय-स्तर्वार हर याल ×ाते काल ×ातूर्वाये स २२४७ (ध्यावध्यार)					
वि ष्टेप ११ पण छै					
प्रारम्ब —	नुष	डे पीत शासक मुश्नर नामक पर्रा	क्रेच पल विलया है≀		
	वार	ी खबि नांति समीपन सीपम वि	पनि बाल विर्माश है।।		

कारा कान गांत भनापन भागम (एपन काल निर्मादा है।) तिहा विवादानात तिहा रै नाता दै नेवक निवदया है। यन्तिन---

वबर विदाशी पाट श्वान्ध्रे इस निवहर्ष वार्थश है () ब्रारम्भ के का पर कोच नाम माना सोच की सरमध्य थी हैं। पुरुष्ट प्रतिस २ । वन में १ तो बनाई १ २२ । वे दं ११३६ । स बन्यार ।

४९६ शास्त्रीमाणचीपई—न साम्बो।नव सं १७।या १२_५×२६ इथ। माना-दि^{न्दी}। विश्वच-स्टब्स । र नाम सं १७६४ वर्तीच नुषी । वे जान वं १७६३ व्येक पूरी २ । पूर्ण (के सं १६६)

± क्षपार I

মি**থাৰ—কৰ** সম্বাধিত--तंत्रत् बतराने पीरीश पासिक बुद्ध पद बुध रीय।

शोर्डन कर दिली गुनियान वर्षे पुरति नहें निरि याच ॥१९६॥ बानर बाब देव नुष क्षत्र नवर बराइको उत्तव बाम।

क्षत्र सालक पूजा जिल्लार्ग कर यदिक सभी बहु सर्व १३६६ ।।

कर्मक्षय कारण शुभहेत, पार्श्वनाथ चौपई सचेत ! पहित लाखो लाख सभाव, मेवो घर्म लखो सुभयान ॥२६८॥ भावार्य श्री महेन्द्रकोत्ति पार्खनाय चौपई सपूर्ण ।

भट्टारक देवेन्द्रकीत्ति के शिष्य पाढे दयाराम सोनीने भट्टारक महेन्द्रकीत्ति के शासन में दिल्ली के जयसिंहपुरा के देऊर में प्रतिलिपि की थी।

४२६१ पार्श्वताथ जीरोछन्दसत्तरी । पत्र सं०२। घा० ६×४ इ व । भागा-हिन्दी पद्य । विषय-स्तवन । र० काल 🗙 । ले० काल स० १७८१ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । जीर्गा । वै० स० १८६५ । स्त्र भण्डार ।

४२६२ पारर्वनाथम्तवन । पत्र स० १। मा॰ १०×४३ इ च । भाषा-हिन्दी। विषय-स्तीत्र । र० काल 🗙 । ते० काल 🗙 । पूर्ण । वै० स० १४८ । छ मण्डार ।

विशेष — इसी वेष्ट्रन में एक पार्वनाथ स्तवन और है।

४२६३ पार्श्वनाथस्तोत्र । पत्र स०२। सा० ८ १४७ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तीत्र । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ता । वे० स० ७६६ । द्या मण्डार ।

४२६४ वन्दनाजावडी—विहारीदास । पत्र स० ४। मा० ८×७ ६ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल 🗙 । पूर्णा । वे० स० ६१३ । च मण्डार ।

४२६४. प्रति सठ २। पत्र स० ४। ले० काल ×। ने० सं० ६२। व्य भण्डार।

४२६६ बन्द्नाजलाड़ी--वुधजन। पत्र स० ४। ग्रा० १०×४ इ च। मापा-हिन्दी। विषय-स्तवन। र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्या । वे० स० २९७ । जा मण्डार ।

४२६७ प्रति स०२ । पत्र सं०३ । ले० काल × । ने० स० ५२४ । रू भण्डार ।

४२६८ वारहखड़ी एव पट । पत्र स० २२। झा० ५ हैं ×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्पुट । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स० ४५ । मः मण्डार ।

४^२६६ बाहुवली सन्माय-विमलकीत्ति । पत्र स०१। म्रा॰ ६३ ४४ इ च । भाषा- हिन्दी । विषय-स्तोत्र | र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । ने० सं० १२४५ |

विशोप---श्यामसुन्दर कृत पाटनपुर सब्साय भीर है !

४३०० भक्तिपाठ--पन्नालाल चौधरो । पत्र स० १७६। मा० १२×५ इ च । मापा-हिन्दी । विषय-स्तुति । र० काल 🗙 । ले० काल 🗴 । पूर्यो । वे० स० ५४५ । क भण्डार । विशेष--निम्न मक्तिया हैं।

स्ताम्पात्रतंत्र, विश्वर्णात्, बृद्धवर्णात्, वर्षारवर्णातः, भावर्थरातिः, वोत्रयतिः, वीर्यातः, विर्वालयोऽ ^{होर} वर्षारकार्यातः

प्रदेश प्रतिसार तपार्थ है। से नाम ×ावे संदशका कुलकारा

प्रदेश मिक्टियाठ \cdots ापक तं है। धा ११२X० हुन। बाता-हिन्दी। दिवस-स्तीत। ए
राग्X। में राज्य X। कुर्या के बंद प्रदेश के अपबार।

४६ हे सकल्पेयर—जयन कवि । वर्ष रहा था र×४६ इव । कल-विकासिक-पार र नार×। से राग×उपूर्ण (वर्ष) विकास पार

४१ ४ सक्वेचीकीसम्मान—क्यपिकालकम्बाः यव वं १३ सा _२xx इवः वाना-दि^{ती}। रियम-नवनः र रननंते १ कालव्यकृष्टि ४ । ते रक्त x । दुर्खाकृष्टि वं ११०० । स्र वस्तारः।

प्रदेश सहावीरकी का चौडास्था— सूचि काक्रचल्य् । यद $\xi_{\chi} \chi \chi_{\chi}^{i} \xi^{i} | ^{i}$ प्रति विद ϵ -स्तेष । र नाम X। के नाम X। कुर्य । वे ते हे ξ_{χ} । यह चयार।

४६ ६ ह्यनिह्युक्तविनती— देवाञ्चयः पत्र वं १। बा १ ×४५ दृक्षः बला—१० मीः पिण्य-स्तरनः र नत्र ×ात्रे नत्र ×ादुर्शावै वं १६७ । काच्यारः।

४९ + राजसानीसम्बाद ^{च्या}ावप वं देश्या ६ ४४३ इक्का बाला-मू**ल्ये** । विस्त-लोप । र गप ४ | ने रुन्न ४० इटी । वे वे १९६६ । का लखार ।

४६ ६. रोडपुरास्तवम ⁻⁻⁻।पव वं १।बा ध∞्द_र इ.चः बस्ताहिनो ।दिवस-स्तवन । र बान ∡ ।ते बस्त × । प्रणे ।^{के} वं १६ । का सम्बार ।

दिवेद—राज्युध वान ने धीयत बादिनाय सी स्तुति है s

ध्ये ६. विश्वयद्वमार सम्माय—व्यपिकास्त्रचन्द्रा पत्र तं ६ । बा १ ४४३ ६ व । हिन्दो । विश्वय-स्नरत । प्रशास वे १०६६ । के नाम वे १००२ । कृतिको तं १९६१ । क्या स्थार ।

क्षित्र---गोराके शतपुरा में बन्त रचना हुई। १४ ४ ने बावे स्कूननश्चनमध्य दिन्ती में सीर है। विभाग र शता ने १९४ कर्मान सुरी १९ है।

४३१ विदेशी माववर्ष धाने बलाधारे वे २१ १ वस बचारा

४६२१ दिवतीक्षमह्=च्यान्य वं देश्या १२४६ र इ.च.भगत-हिन्दी व्यवस्थाना ६ इ.स. ∧ामं राज्य तं १.परा पूर्णांके तं देशीच्याच्यारः।

रिजेर--जहात्वा धन्तुराव ने बचाई बक्युर के श्रीतिनित् की वी ।

. .

पद भजन गीत श्रादि]

४२१२ विनतीसप्रह---- ल्रहादेव । पत्र सं०३८ । ग्रा० ७३४५ इव । भाषा--हिन्दी । विषय-स्तवन । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स०११३१ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--मासू बह का ऋगडा भी है।

इसी मण्डार मे २ प्रतिया (वै० स । ६६३, १०४३) श्रीर हैं।

४३१३ प्रति सट २। पत्र स० २२। ते० काल X। वे० स० ९७३। ख भण्डार!

४३१४ प्रति स= ३। पत्र स० १६। ले० काल X। वै० स० ६७=। इन् मण्डार।

४३१४ प्रति स० ४ । पत्र स० १३ । ले० काल स० १८४८ । वे० स० १६३२ । ट मण्डार ।

४३१६ चीरमिक्ति तथा निर्वाणमिकि । पत्र स०६। मा० ११×१ ईच। माषा-हिन्दी। विषय-स्तवन । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६६७। क भण्डार।

४३१७ शीतलनाथस्तवन—ऋषि लालचन्द्। पत्र स०१। मा०६×४३ इव। भाषा∽हिन्दी। विषय-स्तवन । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वै० स० २१३४। ध्र भण्डार।

विशेष--मन्तिम-

पूज्य श्री श्री दोलतराय जी बहुगुए शगवाएी ।
रिपलाल जी करि जोडि वीनवे कर सिर वरणाएी ।
सहर माधोपुर सवत् पचावन कातीय सुदी जाएी ।
श्री सीतल जिन ग्रुए। गाया श्रीत उलास श्राएी ।। सीतल० ।।१२॥
।) इति सीतलनाथ स्तवन सपूर्ण ।।

४३१-. श्रेयासस्तवन-विजयमानसूरि । पत्र स० १। मा० ११६×५३ इ व । भाषा-हिन्दी । विषय-न्तवन । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १८४१ । अप्र मण्डार ।

४३१६ सतियोकी सन्माय-ऋषि सजमताःी। पत्र स०२। मा०१०४४३ इश्व। भाषा-हिन्दी गुजराती। विषय-स्तात्र। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। जीर्ण। वै० स० २२४५। भ्य मण्डार।

विशेष-प्रतिम भाग निम्न है-

इतीदक सतियारां गुए कह्या थे सुरए सीभली। उत्तम पराएी खजमल जी कहह । । १३४।।

चिन्तामिंग पार्श्वनाथ स्तवन भी विया है।

४३२८ सब्माय (चीव्ह बोल)-श्रिप रायचन्द् । पत्र स०१। मा० १०४४ ईश्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० २१६१ । श्च भण्डार । \$23 I

् दरबरदे^{दार} ४२२१ सर्वोधसिद्धसम्प्रावण ~ायवर्ष १ । वर १ X४द्वे दक्षा स्था-विके स्थि^{स्त}ा |के बक्त X | पूर्ण | दे बे उच्चा स्थान

र माप×।मे नास×।पूर्णाःमे सं १४०।इह काशारा

निवेष--- शब् वस्तु स्तुधि औ है। ४३२२ सारवतीबाहकरणाप्यस ३।वा ६×७३ ६व । बावा-रिको (१९१-<mark>वा</mark> ०

पल×ावे पल×ापूर्वादे वे शहराम्बनशार)

४९२६ सामुबद्धा-न्यासिक्यम्यः । वयः रं १। साः १ ५००% वसः । कार-विकेशिय स्थन । र नाम ×ाने कम ×ाक्षी वे वे २ ३४ । इस्कासार ।

विकेश-- स्वेदाम्बर साम्बाद की शाकुर्वका है। तुम २७ वस है।

७३२४ मानुवदया—पुरवसासर। पर में ६। सा १ X४ १८ । वाना-पुरानी निर्धे सि स्तरारःकान ≍ाने कान ≍ाबूसी के वं दाद्य श्वारा

प्रदेश्यः स्मरणीयीमीमाणा—गरस्त्रातः क्षित्रस्याः । त्यः वं ४७ । वा १११×७ रंप। वर्षः हिल्पी विश्वन-स्पृति । र नत्ता वं १६१० वर्गतिक मुद्दी २ | के वत्त्र तं १६६९ वैश्व मूर्ण र । हों ७ १। € तचार ।

प्रदेशक मिन संग्रह के का के का कि का क **श्रंपदार** ।

प्रदेशक सनिसंदेशकार्य १७१। में कल ×ार्थ संबद्ध का कार।

४३२६ सीवासक^{ार्यमा}) वय में १३या - १३४४ इक्ष**्र सरा-दिनी** हे विव-^{स्तर्य है} शास ×ामे पान ×ानूनी। वे ने २१६७। का नमार ।

विदेश-क्षीड्रवर प्रव नेपन वान की है।

४३३६. स्रोत्रहस्तीसञ्ज्यक्^{™ा}कानं १। शाः १ ×४० द्वा स्वानिक्कै । स्विक्^{नार्या} र सल×ामे बल×ापूर्ती दे वे १९१ । का क्यार।

प्रदेश रब्बेसम्बस्यकात्राज्ञाच्या वत्र व्य है। या है Xx इस । समान्त्रीका । हिरदन्तान्त्र र बाना×ांके बाना×ांतूनी।वे ये दृष्टि।च्यामन्तार।



पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य

४३३१ श्रद्धरोपण्विधि—इन्द्रनदि। पत्र स०१४। मा० ११४४ इख्र । भाषा-सन्कृत । विषय-प्रतिष्ठादि का विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७० । श्र भण्डार ।

विशेष--पत्र १४-१५ पर यत्र है।

४३३२ ऋकुरोपण्विधि—प० आशाधर । पत्र स० ३ । मा० ११×५ इख्र । भाषा-सम्कृत । विषय-प्रतिष्ठादि का विधान । र० काल १३वी सताब्दि । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स० २२१७ । स्त्र भण्डार ।

विज्ञेप--प्रतिष्ठापाठ में से लिया गया है।

४३३३ प्रति स०२। पत्र स०६। ले० काल ×। मपूर्गा। वे० स०१२२। छ भण्डार। विशेष—प्रति प्राचीन है। २रा पत्र नहीं है। सस्कृत में कठिन शब्दों का मर्य दिया हुमा है। ४३३४ प्रति स०३। पत्र स०४। ले० काल ×। वे० स०३१६। ज भण्डार।

४३३४ श्रकुरोपण्विधि । पत्र स०२ से २७। भा०११५४५३ इ व । भाषा-सस्कृत । विषय-प्रतिष्ठादि का विधान । र० काल × । ले० काल × । भपूर्ण । वे० स०१ । ख भण्डार ।

विशेष---प्रथम पत्र नहीं है।

४३२६. श्रकुत्रिमितिनचैत्यातय जयमाल । पत्र स०२६। भा० १२×७ इ. च। सापा--प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० स०१। च भण्डार ।

४३३७ श्रकुत्रिमिनिनचैत्यालयपूजा—जिनदास । पत्र सं० २६ । मा० १२×५ इ च । भाषा— संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १७६४ । पूर्ण । वे० स० १८५६ । ट भण्डार ।

४३३८ अक्रिमिजिनचैत्यात्तयपूजा—त्तात्तजीत । पत्र स० २१४ । म्रा० १४४८ इ च । भाषा— हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १८७० । ले० काल स० १८७२ । पूर्ण । वे० स० ५०१ । च भण्डार ।

विशेप--गोपाचलदुर्ग (ग्वालियर) में प्रतिलिपि हुई थी।

४३३६ अकुत्रिमिजनचैत्यालयपूजा—चैनसुस्र । पत्र स० ४८। मा० १३४८ इन । मापा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १६३० फाल्युन सुदी १३ । ले० काल ४ । पूर्या । वै० स० ७०४ । स्र मण्डार ।

४३४० प्रति स०२। पत्र स०७४। ले० काल ×। वे० सं०४१। क भण्डार। विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स०१) भीर है।

```
्रवृज्ञा प्रतिद्वा पर रियान म<sup>र्मा</sup>र्व
```

प्रोप्ती मिन्ना है। पार्च ००० के बाप वी हत्हों है से प्रशुक्ष बागार । स्मिर—पत्ती लगार वी लगान १६ से १२ हो बार है। प्रोप्त अति संस्था पर वी हत्ती पार्च प्रशोध स्वास बागार ।

रिरेप—पनी समार में दी प्रतिसंहित है । १९३८ विकास के प्रकार का मान्य के में १९३४ अस्तर ह

भारते वालासकार विवास स्थाप । वाला भारती में १६१ । आह स्थाप । विराय-स्थापात सुरी १ वर्ष ११६० वी सा स्थाप प्यूताय सीरवात से पहाला ।

१९४४ वर्ष्ट्रिजेशस्त्रावयह्ना-ध्याष्ट्रकाच । वर मं ३ ३ वा ११४ ईष । ध्या-रिपी । विद्यानुवार रोजार में १६३ जाव पुरि १३३म वाच ४० पूर्वे श्रेष्ट मं ४१ स्म समार (

रिगेन-ज्यकार परिचय-

नामें बनर्रन वर्षनिक भी बी प्रीत रार्थ होती है कौरेनी महाराम की श्रक्त रूपी दिन हीते हो वैरपना बीननाम की रुप्यों वाह मुख्योंन ह काम नक एकोरमा नाम प्ररक्ती नव

रचना बंदम् नंबंदीच्य---

1 צגא

वियति इत सन् सन्त है दिस्तन्त्रेयत् अपि । नाम सन्द्र भवन्त्रद्धी तुर्गा नाम बहान् ॥

५३४४ अनुवीरित्राण्यास्य वं १।वा १९४६६ ववः बाला-अन्तः। त्रिस-नृतः। र सार्थाने साम्प्रतार्थिये । प्रथमारः।

१२४६ फब्रुवर्तिवृद्याः । १० वं ११वा ११४६६च । सला-वंत्रुव । दिवस-दुरा । १ शक्त ४ । में बोच (वर्ग) है वं ६ १ । वा समार ।

स्थित संस्थान ग्रेगी में हैं।

प्रदेश मध्यमिनिय्या—साम्युक्तः। वर्षशासः ११३४२ १ व समान्युको। विका दुराद कल ४ कि बार्ल १००६ समय कुरी ११ कुरी कि ४ । क समार ।

क्रिक-यी देव वरेनास्वर वैव ने अनिविधि की नी j

विकेष—सीत गीर्ल है। एनी वन्सार के एक सन (के सं १६७२) बीर है।

पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य]

४३४६ श्रहाई (सार्छ द्वय) द्वीपपूजा-भ० शुभचन्द्र। पत्र स० ६१। ग्रा० ११४५ई इछ।
भाषा-सस्द्वस । विषय-पूजा । २० काल ४ । ने० का १४ । श्रपूर्ण । वे० स० ४५० । श्रा भण्डार ।
विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० १०४४) श्रीर है।

४३.४०. प्रति सं २ । पत्र स० १५१ । ले० काल स० १८२४ करेष्ठ बुदी १२ । वे० स० ७८७ । क

HOETT !

विशेष-इमी भण्डार मे एक प्रति (वै० स० ७८८) श्रीर है।

४३५१ प्रति स०३।पत्र स० ८५। ले० काल स०१८६२ माघ बुर्दा ३। वे० स० ८४०। ङ

भण्डार ।

विशेष—इसी अण्डार मे २ अपूर्ण प्रतियां (वे० स० ४, ४१) मीर हैं।

४३४२ प्रति स० ४। पप्र स० ६०। ले० काल स० १८८४ भादना सुदी १। वे० स० १३१। छ

४३५३ प्रति स० १। पत्र स० १२४। ते० काल स० १८६०। वै० स० ४२। ज भण्डार।

४३४४. प्रति स० ६ । पत्र स० ६३ । ले० काल 🗶 । वै० स० १२६ । स भण्हार ।

विशेष-विजयराम पाड्या ने प्रतिलिपि की थी।

४३४४ ऋढाईद्वीपपूजा—विश्वभूपण। पत्र स० ११३ । मा० १०३×७३ इत्र । भाषा-सस्कृत।

४३४६ श्रदाईद्वीपपूजा । पत्र स० १२३। मा० ११×५ इक्का मापा-सस्कृत । विषय-पूजा ।

विषय-पूजा। र० काल 🗙 । ले० काल सं० १६०२ बैशाल सुदी १। पूर्ण । वे० स० २। च मण्डार ।

र० काल X । ले० काल स० १८६२ पौप सुदी १३ । पूर्या । वै० स० ५०५ । अप मण्डार ।

विशेष--भंबावती निवासी पिरागदास बाकलीवाल महुमा वाले ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ५३४) श्रीर है।

४३५७ प्रति स०२ । पत्र स०१२१ । ले० काल स०१६८० । ने० स०२१४ । ख भण्डार ।

विशेष-महात्मा जोशी जीवरा ने जोबनेर मे प्रतिलिपि की थी।

४३४८ प्रति स०३। पत्र स०६७। ते० काल स०१८७० कॉलिक सुदी ४। वे० स०१२३। घ

वर्शेष-इसी भण्डार में एक प्रति [वे० स० १२२] ग्रीर है।

४३४६ अदाईद्वीपपूजा-डाल्राम। पत्र स०१६३। पा०१२३×१ इत्र। माया-हिन्दी पद्य।

विषय-पूजा। र० काल स० चैत सुदी १। ले० काल स० १९३६ देशाख सुदी ४। पूर्ण। वे० स० ८। क भण्डार।

विशेष---ममरचन्द दीयान के कहने से डालूराम म्रग्नवाल ने माधीराजपुरा मे पूजा रचेना की ।

. ४३६ प्रतिर्मेद का पार्व इंटरान जल में १९१७ । वे में १ ६ । च बचार ।

स्मित—इनी प्रवार में २ प्रतियों [वें संद ४ द द }ेबीर हैं।

भूगे इंदिस के विषय के देशका में मात्र अर्थ में के के कि समारा

१३६२ सम्मनपुरीहिमा-सोनिसमा । पर नं १६। सा ६ ४३ इन। सता नंतुन। दिस्क-त्रा। र राम ४३६ नाम ४। पूर्व। है नं ४। स्व स्वयतः

दिया-इरोगाय विवि सहित है। यह पुलार नामेश्री बनवान ने केल्यों ने सीना वे बार्र थी।

प्रदेशी प्रतिस० १। वर्ष रेशाने वाल ×ावे संदेश सम्बद्धारी

रियोग-पूरा विवि एवं बस्थान हिल्ती यस ने है ।

इती बच्छार ने एए गाँव नं १२ थी [वे नं ३८] धीर है।

४३६४ स्राज्यकत्तृत्रीक्षकपूत्रा ^{च्या}ायवर्ष १३। सा १२८६ इया शासा-संहात। ^{हिरस} जाार सन्द×ाने कन्त×ानूर्याचे संदेशसम्बद्धाः

हिमेर—प्राहिताय के बरन्तराम तक पूजा है।

४३६४ चानश्वत्रहरातृचा—मी मृत्या । यत्र वं १८० दा १ ३८७ दव । मारा-रिप्र । रिपर-पुरा । र राज × । में नान × । कुर्ण । वे वं १४० द सम्बद्धाः

४३६६. प्रतिस २ । वन नं ६ । ने नाल कं १ २७ । वे सं ४९१ । स्मामकार ।

वियोग---नवाई अयुर ने वं शतकन ने अतिविधि की की ।

 $\chi \chi \chi _{0}$ चानाधनतुर्शीपुत्रा $^{---}$ । या वं १ । या १ $_{\chi } \chi \chi$ इक्षा धाना-संस्तृत कियी। रिका-पुता १ वान χ । ने वान $\chi \chi _{0}$ गं। वे वं १। वा बाधार।

४९६८, चनम्बन्निवर्षा—हरेमकीचिं।यन शंदाबा १६४८६ दश्चः। बला-नेस्टः। निरक-दुवार नान्×ाने नाम ×ार्वनंदेशदेशसम्बद्धाः

४३६६ ध्यवस्तासद्द्या-शीभूष्या।वदतं १।सा ७८४६ इयः बला-बेस्टः।दियन-द्वा।द वल्र ×।वे पल् ×।दुर्लः।वे तं ११८६।च्यवस्थार।

४६७ काल्सवायपूर्वा***'। यद वं १। या स्∄रप्रतृद्वा । वास-वंस्ट्रा । दियन-पूरी । र नल ×। दे नल ×। पूर्णी देवं ११। या नवार ।

४६०१ कानन्ततावयुक्ता-स्तेतना ।पत्र वं ३। ताः है×६६ इक्षा जया-संस्तृत । विषय-पूर्णा र वक्त × । ते वक्त × । पूर्णावे सं ३ ३ । वा नष्यार । पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

विशेष-प्रथम पत्र नीचे से फटा हुमा है।

४३७२ श्रनन्तनाथपूजा । पत्र स०३। म्रा०११४५ इ.च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-पूजा । र० नाल ४। ते० नाल ४। पूर्ण । वे० स०१६४ । भा भण्डार ।

४३७३ श्रनन्तव्रतपूजा । पत्र स०२। मा०११×५ इख । भाषा-सन्पृत । विषय-पूरा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ५६४ । श्र भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार म २ प्रतिया (वै॰ स॰ ५२॰, ६६५) श्रीर हैं।

४३७४ प्रति स०२। पत्र स०११। ले० काल ४। वै० स०११७। छ भण्डार।

४३७४ प्रति स० ३ । पत्र म० २६ । ले॰ काल X । वे॰ म॰ २३० । ज भण्डार ।

४३७६ असन्तझतपूजा । पत्र स॰ २। ग्रा॰ १०४१ इ च । भाषा-सस्त्रत । विषय-पूत्रा । २० काल × । पूर्ण । वे॰ स॰ १३४२ । श्र भण्डार ।

विशेष-जैनेतर पूजा ग्राथ है।

४३७७ अनन्तव्रतपूजा—भ० विजयकीर्त्त । पत्र स० २। मा० १२४४३ इ च । मापा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ने० काल 🗴 । पूर्ण । ये० स० २४१ । ह्यू भण्डार ।

४३७८ अनन्तव्रतपूजा—साह सेवाराम । पत्र स० ३। मा० ८४४ ६ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वे॰ स० ४६६ । आ भण्डार ।

४३८६ अनन्तत्रतपूजािषधि । पत्र स०१८। आ०१०३×४३ इच । भाषा-सस्त्रन । विषय-पूजा। र० काल × । ते० काल स०१८५६ मादवा सुदी ६। पूर्ण । वे० स०१। ग भण्डार ।

४३८० अनन्तपूजान्नतमहात्म्य । पत्र स०६। मा०१०×४३ इ च । भाषा-सस्तृत । विषय्-पूजा। र० काल ×। ले० काल स०१८४९ | पूर्ण। वै० स०१३६३। स्र भण्डार।

४३८१ अनन्तव्रतोद्यापनपूजा--आ० गुगाचन्द्र । पत्र स० १८ । सा० १२×५३ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र॰ काल म० १६३० । ले० काल स० १८४५ आसीज सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० ४९७ । अ भण्डार ।

विशेष-अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है-

इत्याचार्याश्रीगुण्चन्द्रविरचिता श्रीमनन्तनायम्रतपूजा परिपूर्णा समाप्ता ॥

मवत् १८४५ का- शिवनीमामे शुक्रपक्षे तिथौ च चौथि लिखित पिरागदास मोहा का जाति बाकलीयान प्रतापितहराज्ये सुरे द्रकीत्तं भट्टारक विराजमाने सित पं कल्याग्यदासतत्सेवक शाक्षाकारी पंडित खुस्यालचन्द्रे गृह्ह प्रनन्तव्रतीचापनित्सापित ।।१।।

```
प्रदेश क्षेत्र क्षेत्
```

४६८६ प्रति झं० दे। पण संदेश के पान ×ादे संहुत्क सुर्वार। ४६८४ प्रति संक्षापण संदेश के प्रत्य भंदिर। स्वृत्यार। ४६८६ प्रति संक्षापण संदेश के प्राप्त के दशके संकृत्यार। ४६८६ प्रति सक्दि। प्राप्त देश से पान ×ाई संश्वास स्वत्यार। फिलेस— देशिय नगरत के हैं। यो सागुबन्द्रार क्षार्वस्थ के हुई सावपू बुर्व सन्ति सुंके स्व

कर्ता थी। ४१०० अभिनेक्शठःःःः। यव वं ४ : या १२४६३ र व | कृत्य-संस्कृत । विवत-सम्पर्ध र

स्वितिक के तस्य काराकार काल ×ाके अला ×ा हुए । हे से ६६३ । कुलारा प्रदेश-स्त्रीय स्वेत ने गण वे रहे देशा है जाला ×ा बुदुर्ग के कुंदर । के क्यारा

> विदेश—विधि विकास प्रदिष्ठ है ! प्रदेशक प्रति सारू है । कार्स रे । के सम्ला× । हे वं क्षर्} क्या कारा ।

> प्रस्ताः प्रतिस्व र । जन्म र । त सन्त्र ४ । वृद्ध स्वार । प्रद्रेश्च प्रतिस्वे प्रश्चिम प्रति के जन्म ४ । वृद्ध द्वार स्वार ।

४६६१ समिपेक्सियि—कामीसेश (त्रप्तं ११।सा १९०८६ इक्षाचला-स्वस्तः) स्पन् भपका के समित्र के समय वा परूप्त पिषे। र कमा×ातं वाल ×ापूर्वः(के इं.१८) ख न्यारी

विकेत—एवी कच्च र में एक गणि (वे वं ११) और हैं जिसे व्यक्षपण बच्च में बीनवरात केर्स में सम्पर्क प्रतिक्रित की सी। विदालीज सर्वकेत्रण स्त्रीण शास्त्रिक कुत सी है।

प्रदेश स्थानियेकविनि-----। यह वं ाक्षा ११८४३ सक्षाः वारा--संस्टृतः विषय कराने के सन्दिर्भ की विभिन्न पूर्व प्रकार कला ×ार्क वाला ×ार्का वे सं करास्त्र प्रकार ।

प्रदेशके प्रतिस्त के । वस वं का ने नाम हरू है वं के हैं है। कुम्पनूर । विक्रेस—स्त्री मन्त्रार ने पुरू प्रीवृत्ति के निक् × । ब्यूक्टी के वो क्ष्य क्ष्य प्रतास क्ष्यार । प्रदेशक प्रतिकेदियोग | प्रकृति हो तो देशक स्त्री के स्वर्थ | क्ष्य क्ष्यार | प्रदेशक प्रतिकेदियोग | प्रकृति हो तो देशक स्त्री क्ष्या-क्षिप्ती | विक्रम-क्ष्यार के सीर्थ

क्ष्यां विकास क्षां क्षां अवस्था है वर्ष देवदेश का समारा

पूजा शतिष्ठा एव विधान साहित्य 🤰

४३६६ ऋष्टिष्टाच्यायु । पत्र सं ० ६ । मा० ११×१ ६ व । भाषा-प्राकृत । विषय-सल्लेखना विभि । र० काल × । ल० काल × । पूर्ण । वे० स० १६७ । आ मण्डार ।

विशेष—२०३ कुल गायार्ये हैं- ग्रन्थका नाम रिद्धाइ है। जिसका स्स्कृत् रूपान्तर प्ररिष्टाच्याय है। मादि अन्त की गायार्थे निम्न प्रकार हैं-

पर्णमत सुरासुरमङ लिर्यण्वरिकरण्कतिवृद्धि । बीरजिराण्यायुग्न रामिङण् भरोमि दिव्हा ॥१॥ सुसारिम्म भमतो जीवो वहुभेय भिष्णु जोण्यिसु । पुरकेण् कहवि यावद सुहमरणु मत्त रा सदेहो ॥२॥

मन्त-

पुता विज्जवेज्जहिणारां वारत एज वीस सामिस्य ।
सुगीव सुमतेरा रहम मिल्य मुिरा ठौरे विर देहि ॥२०१॥
सूर्ष सूमील फलए समारे हाहि विराम परिहाणो ।
कहिजह सूमीण समारे हातय-वच्छा ॥२०२॥
अष्ठाहारह खिलो जे लखीह लच्छरेहात ।
पदमोहिरे मंक गविजए याहि सा तच्छा ॥२०३॥
इति मरिष्टाम्यायशास्त्र समासम् । अहावस्ता लेखित ।।श्री॥ छ ॥

इसी भण्डार में एक प्रति (मै० स० २४१) झीर है।

४३६७ श्रष्टाहिकाजयमाल । पत्र स० ४। मा० ६३×५ इश्च । भाषा-संस्कृते । विषय-प्रष्टा-हिका पर्व की पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १०३१ ।

विशेष-जयमाला प्राकृत मे है।

४३६८ ऋष्टाहिकाजयमाल । पत्र सं०४ । झा० १३४४३ इ.च । भाषा-प्राकृत । विषय-प्राष्ट्रा-ह्निका पर्व की पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३० । क भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ३१) ग्रीर हैं।

४३६६ ऋष्टाहिकापूजा । पम स० ४। मा०११×५ इख्रा । भाषा-सस्कृत । विषय-मृष्टाहितुका पर्वकी पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्या । वे० स० ५९६ । इस भण्डार ।

विशेष-इसी मण्डार में एक प्रति (वै० स० ६६०) श्रीर है।

४४०० श्रष्टाहिकापूजा: । पत्र स० ३१ । मा० १०६×४३ ह च । भाषा-सस्कृत । विषय-

४६०] [नूमा स

विनेत--- मैंदन् १६२६ के इन बन्द वी अस्ति-। ति दर्शी जाइट क्ष्ट्रारत की सन्दर्शन वी दें दर्शनी की । वनमाना सन्दर्भ के हैं।

४२७१ भक्तकिस्यूबस्था—सुनेन्द्रसीणि । पर वं ६ । सा १३४६ स्वापण-संपदः। स्वित कर्यस्यापर्वे पीपूरा स्वाप्याः। र प्रस्त वं १६१। वे प्रस्त वं १६८ सम्बद्धी १ । वे संस्ता स्वाप्यास

रियेर-- मुमानका ने कीवराव पारीसे के बनवाने हुए बन्दिर में बारे हुन के प्रतिनिधि में भी।

बनारमोन्त्राज्ञकारीयोति बोजुमन्ये वरधारराज्ञः ।
नाम्प्रीद तस्यपुराचित्राचि देवेन्योति सक्तृत्त्वस्य ॥११ वेशाः
राज्युदर्गेवसम्प्रस्य चीनुंदर्ग्यम्यसम्बद्धः ।
स्वेष्णवर्गितः प्रवृदयप्ट्रं वैकंत्रवर्गितः हरराज्येत्रम्य ॥११ वेशाः
स्वास्त्रवर्गितः वृदि बहुण्यस्थारचरित्रस्योते ।
वीनकृत्रार्गेते विमानक्ष्यक्यो च्यानेतं वर्ष्यति ।
स्वास्त्रवर्गेतिस्यायसम्बद्धिः चीनुंदर्शितः ।
स्वास्त्रवर्गितस्य वैक्षणायस्यविद्धाः ॥१ वेशाः

প্রিত ক্রমের বার কুরণটাবলকা হিবা নিবা (১৯) বা বার্য্য বাব্য ই বাছ্রকটার্কানান বিশ্ল বা ক্রমেরমানে বিশ্ল কুরলাকার ল বহুলীর নিবার্য বাহ্যার বার্যাই হয় বাব্যাক (১) মুখু মুরারু ।।

इत्रपं स्तिरिक वह वी निका है-

तिन नाहमुक्ती वे तं १ . ६ वृतियान वील याण । वात प्रवानेवर्ता यनु व्यक्तिती नामपुठनुं जन्मवें बारा । मांचामेर मुं बहुरावर्ता वी यांवर्ता में रिन वर्ता ज्यार वर्त्ता वस्तुर में दिन वता स्ट्र वर्त्त महिन्द सर्व संबंधि वा पर्मानी उत्तर (वर्त्ताक्ष) मंदिर १ पीमा पान्ने मीमप्तवार्त्त मंत्रामानी वी वोतिनांत्र मी सीमा नंपी रिप्तावेदमी बारती त्रेणी में पानि १ एका जीनवर्षार वार्त्रीवत्र प्रविचल बीमी क्षेत्रचीर वाधानपारता परमाने सीमी वी स्ट्रक्टेपणी नामण ।

इसी बन्दार में मुक्त प्रति में १ मी (वे सं १४२) सीर है।

१४५० च्याहिकामूता—याम्तरायां पर नं १। या ४८६२ स्त्राः वारा-देश्यो। विवर-इसा र वार ४१ने कम ४। पूर्णा देने के १। व्यंच्यार।

विसेच-नमें ना हुन बान बन परा है।

४४०३ प्रति स॰ २ । पत्र स॰ ४ । ले॰ काल स॰ १६३१ । वे॰ स॰ ३२ । क भण्डार ।

४४०४. आष्टाहिकायूजा । पत्र स० ४४ । मा० ११×५ है इख । माषा-हिन्दी । विषय-मष्टाहितका पर्व की यूजा । र० काल स० १८७६ कॉत्तिक बुदी ६ । ले० काल स० १६३० । पूर्ण । वे० स० १० । क मण्डार ।

४४०४ श्रष्टाहिकान्नतोद्यापनपूजा- भ० शुभचन्द्र । पत्र स० ३ । मा० ११४४ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-प्रष्टाहिका व्रत विधान एव पूजा । र० कालः ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ४२३ । व्य भण्डार ।

४४०६ अष्टाहिकाञ्रतोद्यापन । पत्र स० २२। मा० ११×५३ इख । भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-अष्टाहिका व्रत एव पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० सं० १८६ । क मण्डार।

४४०७ श्राचार्य शान्तिसागरपूजा-भगवानदास । पत्र स० ४। मा० ११३×६३ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १६८४ । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स० २२२ । छ भण्डार ।

४४०८ आठकोडिमुनिपूजा—विश्वभूषण्। पत्र स० ४। मा० १२×६ इख । भाषा—सस्कृत । पय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण।वे० स० ११६। छ भण्डार।

४४०६ स्रादित्यव्रतपूजा-केशवसेन । पत्र स० = । मा० १२×४६ इ व । माषा-सस्कृत । विषय-रविव्रतपूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५०० । स्र भण्डार ।

४४१० प्रति स०२। पत्र स०७। ले० काल सँ० १७६३ श्रावरण सुदी ६। वे० स०६२। इन् भण्डार।

४४११ प्रति स०३। पत्र स०६। ले० काल स० १६०६ शासीज सुदी २। वै० स० १८०। मा भण्डार।

४४१२ आदित्यत्रतपूजा '। पत्र स० ३४ से ४७ । मा० १३×४ इख । माषा-सस्कृत । विषय-रवित्रत पूजा । र० काल ×। ते० काल स० १७६१ | मपूर्ण । वे० स० २०६८ । ट भण्डार ।

४४१३ श्रादित्यवारपूजा । पत्र स० १४। मा० १०×४३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-रिव प्रतपूजा । र० काल × । के० काल × । मपूर्ण । वे० सं० ५२० । च भण्डार ।

४४१४ ऋादित्यवार्वतपूजा " । पत्र सं ० ६ । धा० ११×१ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-रिव व्रतपूजा । र० काल × । ते० काल × । वे० स० ११७ । छु भण्डार ।

४४१४ आदिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ४ । आ० १०३×४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ५४८ । स्त्र भण्डार ।

> ४४१६ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ते० काल × । वे० स० ५१६ । च मण्डार । विरोप—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० ५१७) ग्रीर हैं।

```
140 T
                                                             पुत्रा प्रतिष्ठा पद विधान साहित
           ४४१०. प्रतिस० दे। पत्र संदीते तल ×ावे संद्दरु जायध्यार ।
           विदेश-पाएंश्र में तीन चौबीती के नान तवां तब दर्धन पार भी है।
           प्रकृतः व्योतिमाधपुक्री प्रकृतः वद व ४ । या १२००८६ हेव । जाना-हिन्दी । विवय-दूरा
र राज x | में पाने x | र्युन | में से मेर्डिश का क्रांतर ह
           ४४१६ चार्दिमाक्ष्माप्रकाणाः । वस सं १ | धा १ ईx वर्त सम्राहितः । विवरं-स्था
र कम ×ाने कम ×ावे से १९२६ कि क्यारा
           विदेश-नैवियांय द्वालुक सी है।
           इप्टरें कोहीरवरपुत्राष्टंड ......... पव रं २ ! या १ ई.८१ इ.च ! वाला-हिन्ती ! दिस्त-वारें
नान तीर्वदूर की दूरा (रंजका 🗴 । मैं जान 🗴 (दूर्त) की ते हर्द्ध । छा बच्चोर ।
           विभेग--- नहासीर पुजाबुधं जी है थी। वीस्टूट में है।
           ४४२१ माराजनाविमान<sup>करका</sup>। वय हैं किए बा १ ×४६ इ.च.। जाना-अंतर्श । विदर्ग
वियव विवात । इ. बाल 🗴 । ले. बाले 🗴 । ईर्ली । वे. ब. ४१३ । बा बच्चार (
           विकेश-विकाल जीवीसी वीडएकरस्त धार्थि दिशाल रिके हुने हैं।
           ४४०२ इन्द्रभवन्त्रा---भे नित्वभूषकः। यद वं १ । या १२४१ ईव । बना-वस्त्यः।
विपर-पुनार याल ×ाने जल वं १०३६ विशव पूरी ११ (पूर्व | वे ४६१ । धा बचार ।
           विशेष-- विद्यासकीरवाँकान मा विश्वपूर्य विश्वपतार्थों देशा विश्वा है।
           ४४२३ प्रतिसंकरायन वं दराने मज्य वं १०६ कि वैद्याल क्यों दादे सं ४००।
 क्ष क्यार ।
           विशेष-अप का विशेष हुने हैं। कन वी प्रतिनिधि वालुद में बहारामा प्रतानिह में बातवरान में
 हर्द की ।
           प्रथम ब्रक्तिसः है। या वंदश्रीते काल ×ाते वं वा काल्यारा
           प्रध>≥. ब्रांति संधानम वं १ ६ । ते मन्त × । ते सं १३ । आर अन्यार ।
           विशेष--वा क्षमार में २ सपूर्ण मित्रों (वे वे ३४ ४३ ) सीर है।
           प्रधरके क्रमान्यक्रमध्याप्तारणा वर्ष सं १७। या ११ ×१६ वस्ता वस्ता वस्ता । स्थिर
केलो एवं अरहयो आदि के दिवान वे की काले गली पूरा । र नाल 🔀 । 🧎 काव वं ११६६ काइक सुरी है।
क्रमी के हैं है है कि लिखाएं।
          विकेद---वं पहालाम् बोववेर वाले वे स्वीजीयासावी के वनिश्द ने प्रतिविधि की । सम्बन्ध नी पूर्वा जी
```

edt:

वृजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

४४२७ उपवासम्रह्णविधि । पत्र सं १। मा० १०४५ इ च । भाषा-प्राकृत । विषय-उपवास विधि । र० काल ४ । ते० काल ४ । वे० स० १२२५ । पूर्ण । स्त्र मण्डार ।

४४२= ऋषिमडलपूजा-आचाय गुरामन्दि । पत्र स० ११ से ३० । मा० १०१×१ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-विभिन्न प्रकार के मुनियों की पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६१५ वैशाख बुदी १ । अपूर्ण । चै० स० ६६८ । अप्र भण्डार ।

विशेष-पत्र १ से १० तक मन्य पूजार्ये हैं। प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं।

सवत् १६१५ वर्षे वैद्यास वदि ५ गुरुवासरे श्री मूलसघे नद्याम्नाये वलात्कारगरो सरस्वतीगच्छे गुरानदि-पुनीन्द्रोग् रचितामक्तिभावत । शतमाधिकाशीतिक्लोकाना ग्रन्थ सस्यस्या ।।ग्रन्थाग्रन्य ३८०।।

इसी भण्डार भण्डार में एक प्रति (वे० स० ५७२) भीर हैं।

४४२६ प्रति स० २। पत्र स० ४। ले० काल ×। वे० स० १३६। छ भण्डार।

विशेय--- प्रष्टाह्निका जयमाल एव निर्वाणकाण्ड भीर हैं। ग्रन्थ के दोनो भीर सुन्दर बेल वू टे हैं। श्री भादिनाथ व महावीर स्वामी के चित्र उनके वर्णानुसार हैं।

४४३० प्रति स०३। पत्र स०७। ते० कात 🗴 । वे० स०१३७। घ भण्डार ।

विशेष--ग्रन्य के दोनों भोर स्वर्ण के वेल वू टे हैं। प्रति दर्शनीय है।

४४३१ प्रति स० ४ । पत्र स० ४ । ते० काल स० १७७५ । वे० स० १३७ (क) घ मण्डार ।

विशेप-प्रति स्वर्णाक्षरों में है प्रति सुन्दर एवं दर्शनीय है।

इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० १३८) ग्रीर है।

४४२२ प्रति स० ४ । पत्र स० १५ । ले॰ काल स० १८६२ । वे॰ स० ६५ । स मण्डार !

४४३३ प्रति स०६। पत्र स०१२। ले॰ काल 🗙 । ने॰ सं॰ ७६। मा मण्डार।

४४३४ प्रति स० ७ । पत्र स० १६ । ले० काल 🗙 । वे० स० २१० । व्य मण्डार ।

विशेष--इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ४३३) ग्रीर है जो कि मूलसंघ के भाजार्य नेमिचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी।

883४ ऋषिम डलपूजा — मुनि झानभूषण । पत्र स० १७ । मा० १०३ ४४ इच । मापा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २६२ । ख्र भण्डार ।

४४३७ प्रति स० २ । पत्र स० १४ । ते० काल × । वे० स० १२७ । छ मण्डार । ४४३७. प्रति स० ३ । पत्र स० १२ । ते० काल × । वे० स० २५६५।

```
पूर्व प्रतिकृति प्रवास विकास के स्वास के स्वस के स्वास क
```

४४५० स्टाप्स्टब्स्या—पासल भाषता गणत दा सा दशरपूर्व नियम-पूर्वा रिप्त ना × । के सक्त से १६३७ | पूर्वा वे पे १६ । स्ट ज्यारा ।

५५५१ वंशिकामनोष्यासनपृत्राः "ायवं तं ७ । सा ११४६३ दवः स्रापा–संस्टानिकर-पृथा एवं निर्वार कला × । ते कला × । दुर्लावे वं ६६ । व कलारः।

दिवेद---संजीवारस का का जावापुरी १२ में निया जाता है।

४४४९ विकासप्रेणापनः^{००००}। यद्यं ६। सा १६३८४ इव । याग-र्शस्य । विका-हुना। र नक्त X | के गात X । महर्गावे थं ६४) च ज्यार।

विश्वेष-अपनाम अपन स ने हैं।

४४४६ व्यक्तिक्रमतोषापनम्बाःःः । तम् वं १९।या १३४६६व । मता-संस्टिशी विश्व-द्वादरंतियः। र क्वं ४।वे कल ४।दुर्वः।वे यं ६७।आः वचार।

क्षित-पूर्वा ऐने 1915 । विशेष-पूर्वा बेल्क्ट वें है तथा विशेष हिल्ही में है ।

प्रथम क्ष्मेयूरणशासारम^{™™}। त्यार्थी । सा ११×२६ द्वा सला-संस्कृत । नियन-पूर्णा र सम्बद्धाने स्वस्तार्थे ११ प्रतासायुक्ते ११ पूर्णावे संदश्च सम्बद्धाः

x | ते काव संदर्भ कावार में एक प्रति (वे सं १) और है।

प्रश्नेष्ठ प्रति सः है। यह वं ही या १९८६ हव। यहां वेल्ला विषय-नूचा (र शव Xiके काम Xightila वं १ ४ | काल्यार।

X | संस्कर X 1 द्वारा प्रमुख्या — वस्त्रीचेत्र । त्या दे XV} इत्र । ब्रासा–वेलाः । १८४६ कर्मपुरमको प्राप्तपूत्रा — वस्त्रीचेत्र । त्या दे XV १९८म—पुत्र । र सम्ब X | के सम्ब X | पूर्ण । वे तं ११७ । व्याप्तप्ता

अप्रथण प्रतिसंद्र। वयसं । वे नास X । वे वं प्रदेश स्थलनार ।

४४४८ कर्मद्द्दनपूजा—स० शुभचद्र । पत्र स० ३० । ग्रा० १०३ ४४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-कर्मों के नष्ट करने के लिए पूजा । र० काल × । ले० काल स० १७६४ कार्तिक बुदी १ । पूर्ण । वे० स० १६ । ज भण्डार ।

विशेष-इसी मण्डार मे एक श्रपूर्ण प्रति (वे० स० ३०) श्रीर है।

४४४६ प्रति स०२। पत्र स०८। ले० काल स०१६७२ आसोज। वै० स०२१३। व्य भण्डार। ४४४० प्रति स०३। पत्र स०२४। ले० काल स०१६३५ मगसिर बुदी १०। वे० स०२२५। व्य

भण्डार |

विशेष--मा० नेमिचन्द के पठनार्थ लिखा गया था।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० २६७) भीर है।

४४४१ कर्मटहनपूजा" । पत्र स०११। आ०११ई 🗙 ६ च। भाषा-संस्कृत । विषय-कर्मों के नष्ट करने की पूजा। र० काल 🗙 । ले० काल स०१ ६३६ मगसिर बुदी १३। पूर्ण। वे० स० ५२५ । स्त्र भण्डार।

विशेष — इसी भण्डार एक प्रति (वे० स० ५१३) थौर है जिसका ले० काल स० १८२४ भादवा सुदी

१३ है।

४४४२ प्रतिस०२। पत्र स०१४। ले० काल स० १८८८ माघ शुक्रा ८। वे० स०१०। घ

मण्डार ।

विशेष--लेखक प्रशस्ति विस्तृत है।

४४४३ प्रति स०३। पत्र स०१८। ले० काल स० १७०८ श्रावण सुदी २। वे० स०१०१। इस् भण्डार।

विशेष-माइदास ने प्रतिलिपि करवायी थी।

इसी भण्डार में २ प्रतिया (वे॰ स० १००, १०१) झीर हैं।

४४४४ प्रति स० ४ । पत्र स० ४३ । ले० काल 🗙 । वे० स० ६३ । च मण्डार ।

४४४४ प्रति स० ४ । पत्र स० ३० । ले० काल ४ । वै० स० १२४ । छ मण्डार ।

विशेष---निर्वागिकाण्ड भाषा भी दिया हुआ है। इसी भण्डार में और इसी वेष्टन मे १ प्रति भीर है।

४४४६ कर्मद्हनपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० २२ । मा० ११×७ इ च । मापा-हिन्दो । विषय-कर्मो

को नष्ट करने के लिये पूजा। र० काल 🗙 । ले० काल 🗴 । पूर्या। वे० स ७०६ । स्त्र भण्डार ।

४४४७ प्रति सं०२। पत्र स०१५। ले० काल 🗴 । वे० स०११। घ मण्डार।

४४४ प्रति स०३। पत्र स०१६। ले० काल स० १८६८ फाग्रुसा बुदी ३। वे० स० ४३२। च

भण्डार ।

विशेष--इसी भण्डार मे २ अतियां (वे० स० ५३१, ५३३) और है।

प्रोधेश्वर प्रति सः धापन सं १६। ते काल सं १ ११। ने सं १ १। क समार।
प्रश्रीक प्रति सः धापन सं २४। ते नाल सं १११व। वे सं २११। स स्थार।
विकेष-सम्बद्धार संस्थिति स्थापन संस्थान स्थापन स्यापन स्थापन स्य

रबी बन्दार में एक प्रति (वे सं १३६) और है।

 $\frac{1}{2}$ प्रकारिकान— योहान । यन सं ६। या ११ \times द्रश्च । सला-संक्रा । नियन-स्था एवं योत्तरेक पार्ट की विभि । र का सं $_{\perp}$ १६७ । ने कला सं १९२२ । पूर्व । वे दंश । ने कला सं

निकेर-चेरपीय्व के बालनकरूत में विषयर (ग्रीकर) बचर में जर्टन नायक निम मन्तिर में स्वास्ति करते के लिए यह दिवान रेपा नया।

याँचय प्रवस्ति निम्न बनार 🖳

विश्वित वं पतालाक बननेर एपर वे व्हारकनी नहारवन थी १ व. वो रालाकुराजनी के गर व्हारक भी महाराज भी १ थी नविजकीतिमी नहाराज पात निराज्या वैद्यास पुरी १ वै व्यक्ति दिव्या में बाना बोननेपर्ट वं होरामानामी पतालाल बनवंद कराया वैकारागणी लीका वीजवाल की होली वें विद्यास बोचार्या का उठायां यक जरूरों ११ वर्षी पाता।

क्ष्मदेश कक्क्याविधान******। पर्व हैं ६। बा १ ई×१३ ईवा क्ष्मा संस्कृत । विवर-नगर्व एक प्रतिकेक प्रार्थिको विवि । १ जन्म × । ने जन्म × । तुर्वी | वै वं ७६ | बर क्यार (

४४६६ कक्कराविधि—विश्वसूच्या।वय र्ष १ । या ६३,४४६ द व । याला-दियो।विषय-विचि । एंककर ४१ ते वक्त ४० वृत्ती वे ४४ । व्यवस्थार ।

¥६६४ कबराग्येक्यासिकि—स्वाराग्यरः। यस्त्रं द्रांबा १२४ द्रव्यक्षास्य-संस्त्रः। विस्त-नन्तरके हिन्दरस्यनग्राध्यस्य वानिकिष्यस्य । र नन्तरः। ते नस्तरः। दूर्वः। वे इं १०। क सन्तरः।

4िक्रैप---प्रक्तिश पाठ वर व्येग है।

४५४३ वक्रसारोधक्रिविया^{.......}। यत्र वंदीया ११४९ इ.च.। मला–कस्त्रतः विवय–सन्तिः के क्रियर पर नसर्थ पाले या विवासार वाला ४ । से वाल ४ | पूर्णः वेतं दे १९१ । क्रूप्यापाः ।

क्षित-इसी भव्यार में एर प्रति (वे वं १९१) और है।

४४६६. कलशाभिषेक — आशाधरा पत्र स०६। ग्रा०१०५४५ इ.च.। भाषा—सस्कृत । विषय— अभिषेक विधि । र०काल × । ले०काल स०१८३८ भादवा बुदी १०। पूर्ण । त्रै० स०१०६। इ. भण्डार।

विशेष--प० धम्भूराम ने विमलनाथ स्वामी के चैत्यालय मे प्रातिलिपि की श्री।

४४६७ कलिकुएडपार्श्वनाथपूजा-भ० प्रभाचन्द्र । पत्र स० २४ । मा० १०३ (५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजान र० काल 🗙 । ले० काल स १६२६ चैत्र सुदी १३ | पूर्ण । वे० स० ५८१ । स्र भण्डार ।

विशेप-प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

सवत् १६२६ वर्षे चैत्र मुदी १३ बुधे श्रीमूत्रमधे नद्याम्माये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुंदाचार्या-न्वये भ० पद्मनिदिदेवास्तराष्ट्रे भ० श्रीकुभचन्द्रदेवास्तराष्ट्रे भ० श्रीजिण्चन्द्रदेवास्तरपट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा तिन्छ्ष्य श्रीमडचावार्यधर्मचद्रदेवा तिन्छ्रप्य मडलाचार्यश्रीलिततकीर्तिदेवा तदाम्नाये खडेलवालान्वये मडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्र तत्-शिष्यणि वार्ड नाली इद शास्त्र लिखापि मुनि हेमचन्द्रायदत्त ।

४४६= कतिकुरहपार्वनाथपूजा" । पत्र स० ७। मा० १०३×४६ इ च । मापा—सम्कृत । विषय-पूजा । र० कान × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४१६ । व्य भण्डार ।

४४६६ कतिकुरस्ट्रृजा । पत्र स०३। मा० १० है×५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ल०काल × । पूर्ण । वे० स० ११८३ । प्र भण्डार ।

४४७०. प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ते० काल 🗙 । वै० स० १०६ । इ. भण्डार ।

४४७१ प्रति स०३ । पत्र स०४७ । ले० काल 🗴 । वे० स०२५६ । ज भण्डार । मीर भी पूजायें हैं ।

४४७२ प्रति स० ४। पत्र स० ४। ले० काल 🗙 । वे० स० २२४। मा भण्डार ।

४४७३ कुण्डलगिरिपूजा—भ० विश्वभूषण्। पत्र स० ६। आ० ११४४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-कुण्डलगिनि क्षेत्र की पूजा। र० काल ४। ते० काल ४। पूर्ण । वे० स० ४०३। स्त्र भण्डार ।

विशेष-- हिनकरिगरि, मानुपोत्तरिगरि तथा पुष्कराद्धं की पूजार्थे भीर है।

४४७४ च्हेत्रपालपूजा-शी विश्वसेन । पत्र स० २ से २८ । झा० १०३×४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८७४ मादवा बुदी ह । अपूर्ण । वे० स० १३३ । (क) रू मण्डार ।

४४ ४ प्रति स०२ । पत्र स०२० । ले० काल स०१६३० ज्येष्ठ सुदी ४ । वे० स०१२४ । ह्य

विशेष—गरोशलाल पाड्या चौघरी घाटसू वाले के लिए प० मनसुसजी ने गोद्यों के मन्दिर में प्रतिलिपि भी थी।

```
४६= [ पूजा शिक्षण पर्व निपान समित
```

प्रशुच्छ मित से व दावव से प्राणि वाल से १९१६ वेसला बुधी १६ | वे सं ११ | व

विवेद- मंत्रदर्शीयी पोषामाध्यी टोम्प विकाशका ने ये स्वापनाम ब्रह्माए वे प्रतिनिधि नरवर्षणी। ४४४-८. प्रति सं ए। यद सं ४ । वे स्थल सं १ ६१ वैव तुसी ६ । वे सं ४४६। स

मिवेद-र्ता बम्बार में १ बीवयं (के सं वन्तर १९९) और है।

भूभुक्क प्रशिव से के। पण ग्रँ १६। के माण ×ावै तं १९४ । ६६ श्रम्थार । विक्रैय — २ प्रशिव्यों सीर हैं।

१९४८ कविकामकोषापनपूका—श्रीने कविष्यवीर्षि । एव थ १। या १९४१ इन । कर-वेस्ट्य | विरक्त-पूजा । ए, कल ४१के कल ४। युक्ती के वं ११११ का ल्लार ।

> प्रश्नाद् प्रति स दो प्रवर्ष देश के नाम ×ावे वं ११ (का प्रचार) प्रश्नाद, प्रति संदेश पर्वपंति को काम संदृष्टि । वे वे दश काम प्रचार)

इत्यन्तः अस्त स्राचानायाः व्याप्तः कार्यः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप प्रश्नदः कृतिक्षास्त्रोणस्याः व्याप्तः विष्णे दशः सार्वः दृश्यदे इत्याच्याः विष्णाः व्याप्तः । स्राच्याः विष्णाः व्याप्तः ।

भ्रम्भ गत्रप्रवासकप्रा—म क्षेत्रेग्यकीचि (सातीर प्रष्टु)। वर सं ावा १९४६ी स्था क्रमान्त्रप्रवासिक-पूर्णाण कमा×ा के कमा सं ११४ ा पूर्वा के सं ११ । सरम्पार।

हपार ।

बुकाने बनासारे वर्षे बारान्ये कार् । पुनवृत्तानाने बात्रः भूतवानरपारः ॥११॥ बात्रीरिकृति बर्पनरीति। ठारकृतारे बुन ब्रूपेसीतः । ठारकृतिबात्रेनुष्टकारः वारकृतानिकृतीतिकारः ॥१ । बेपनीतिकृते वर्षे बेरेन्याविकारकृ । ठारबाद्या विराधित वर्षेणपुरत्ने ॥११॥ विद्या विद्याविकाः मानवेषेण नोहरः । केर्या वार्ष्याविकाः मानवेषेण नोहरः । जीयादिद पूजन च विश्वमूषरावस्नुव । तस्यानुसारतो भ्रीय न च बुद्धिकृत त्विद ॥२३॥

इति नागौरपट्टविराजमान श्रीभट्टारमक्षेमेन्द्रकीत्तिविरिचत गजपयमडलपूजनविधान समाप्तम् ॥

४४८४ गण्धरचरण्।रविन्दपूजा । पत्र स०३। द्या० १०९४४६ इच। भाषा–सस्कृत। विषय–पूजा। र० काल ×ाले० काल ×ो पूर्ण। वे० स०१२१। क भण्डार।

विशेष-प्रति प्राचीन एव सस्कृत टीका सहित है।

४४८६ गण्धरज्ञयमाला । पत्र स०१। मा० ५४६ इ च । भाषा~प्रावृत । विषय~पूजा। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० स० २१००। छा भण्डार।

४४-७ गण्धरवलयपूजा । पत्र स०७। मा० १०६४४६ इच। भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र०काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स०१४२ । क भण्डार ।

४४८६ प्रति स०२। पत्र स०२ से ७। ले० काल ×। वे० स०१३४। इ. मण्डार।

विशेप—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० ११६, १२२) ग्रीर हैं।

४४६० गर्णधरवत्तयपूजा । पत्र स०२२। मा०११४४ इ च । भाषा-विषय-पूजा । र० काल ४ । ते० काल ४ । पूर्ण । वे० स०४२१ । स्म भण्डार ।

४४६१ गिरिनारचेत्रपूजा-भ० विश्वभूषरा। पत्र स० ११। मा० ११×५ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल स० १७५६। ले० काल स० १६०४ माघ बुदी ६। ूर्गा। वे० स० ६१२। स्त्र भण्डार।

४४६२. प्रति स० २ । पत्र स० ६ । ले० काल 🗙 । वे० स० ११६ । छ भण्डार । विशेष--- एक प्रति भीर है ।

४४६३ गिरनारचेत्रपूजा । पत्र स०४। ग्रा० द×६३ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ने० काल स०१६६० । पूर्ण । वे० स०१४० । स्मण्डार ।

४४६४ चतुर्दशीव्रतपूजाः । पत्र स०१३। द्या०११५×४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं०१४३। रू भण्डार।

४४६४ चतुर्विशतिजयमाल-यति माघनिद्। पत्र स०२। मा०१२४५ इच। मापा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६८। ख मण्डार।

```
¥**0 |
                                                           ्ष्या प्रतिद्वादर्वनिधान स्परित
          ४४६६ चतुर्विशतितीबेङ्करवृज्ञारूरा । यत्र सं ११ । सा ११×५ इ.व.। त्रता-संस्थ्य । दिस्स-
दुना।र कल ×।में काव ×। बहुर्री वै वै १३ । बालचार ।
           वित्रेय—केशन सन्तिव दन नहीं है।
          प्रथरच प्रतिसः २ । पत्र सं प्रदेश से नाम सं १६ २ संबाध बुधी १ । वे सं १३६ । व
बद्धार ।
          ४४६८ चतुर्विरातितीशकुरपुत्रा """। यय स ४६ । या ११×६३ इव । शता-कंतुर शिला-
          दुना। रंकल ×। वे कल ×। इर्ल । वे वं १। ऋ बचार ।
           विदेय--रत्तको नव नुपर्क ने पढाई वी ।
           ४४४६६ प्रतिसः ⊁। रवसः ४१। के कमार्थ १६६। वे सं ६६१ (सामन्तार)
           ४४. च<u>त्र</u>विंशतितीर्वेद्वरपृका<sup>च्या</sup> । यस वं ४४ । सा १३ ×१ इन । जारा–संस्कृत । विस्त-
प्रजार सल × । ते रश्व× । दुर्श । ≹ ते ३,६७ । घ्याच्यार ।
           निक्षेप--नहीं २ वयनामा दिन्दी ने जी है।
           ध± १ स्तिस+ २ । पन संध्याचे कला संशुक्त हो से संशुक्त कलार।
           विकेष-- इसी जन्मार ने एक बयूर्ल प्रति (वे सं १६६) और है।
           ४४ २, प्रति सः ३ । वर्षे २   ते नत्त्र ×ादे तं व€। चूचनार।
           ४४ ३ चतुर्विरावितीसङ्करपुटा-सेवारमा सञ्चापन श्रे ४६ । सा १२४७ इ.स. १ मार्गन
 हिन्दी। विषय-पूराः र अस्त ह १ २४ संबंधिर दुर्छ ६। ने तस्त सं १ ६४ कसीय बुर्छ १६। दुर्सा है
 बं ७१६ । स्मृत्यार ।
           विकेश-भारकुरान ने प्रतिकिथि भी भी । एनि के प्रयुक्ते थिया अक्कारान के बनाने हर निम्मारानंतर
 मीर बुद्रिविकास का सलेक किया है।
            इती त्रफार वे एन प्रति (वे सं ७१४) मीड है।
            ¥प्र प्रतिस दावन से ६ । में बाल ६ १६ २ मानस्तुरी । दे संबंधार की
  नकार ।
            ४४ × प्रतिस दे। पत्र सं १९। के नाम सं १६४ अस्तुल दुरो १६। दे संदास
 RTE T |
            uk ६ प्रतिस्त्री अपनुत्रं ४६। में राजवंद दाने संदर्श ग्रामधार)
            क्तिर—इशी बच्चार ने स्वतिकार्ष (वे वं २१ २२) धीर हैं।
```

१४८७ चतुर्विशतिपृताः "'। पत्र स० २०। मा० १२४५ इ.च.। भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। र० काल ×। ने० काल ×। म्रवृर्णा वे० स० १२०। छ भण्डार।

४४८ चतुर्विशतितीर्यद्वरपूजा-- गृन्दावन । पत्र स० ६६ । मा० ११×५ हे इ न । मापा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० नाल स० १८१६ नातिन बुदी ३ । ते० नात स० १६१४ मापाठ बुदी ४ । पूर्ण । वै० ग० ७१६ । स्त्र भण्डार ।

त्रियेप—इसी नण्टार में २ प्रतिया (वे० स० ७२०, ६२७) भीर हैं। ४४८६ प्रति स० २ । पत्र स० ४६ । ते० वाल 🗙 । वे० स० १४५ । क भण्डार ।

४४१० प्रति सट ३। पत्र स० ६५। ले॰ काल ×। वै॰ स॰ ४७। स्व भण्डार।

प्रप्रश प्रति स० ४। पत्र स० ४६। ले० कान स० १६५६ कार्तिक सुदी १०। वै० स० २६। ग

भण्डार् १

विशेष—वीन के बुछ पत्र नहीं हैं। ४४१३. प्रति सं ६ । पत्र सं ०७०। ते० काल सं०१६२७ सावन मुदी ३ | वे० सं०१६० | हर

४४१२ प्रति स०५। पत्र स० ४४। ते० काल 🗴 । मपूर्ण । वे० सं० २४ । घ भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० १६१, १६२, १६३, १६४) ग्रीर है।

४४१४ प्रतिसः ७। पत्र स०१०५। ले० काल 🗙 । वे० स०५४४। 🛱 भण्डार ।

विदोप--इसी भण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ५८२, ५४३, ५४५) भीर हैं।

४४१४ प्रति स० ८ । पत्र स० ४७ । ते० काल 🗴 । वै० स० २०२ । छ भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे० स० २०४ मे ३ प्रतिया, २०५) मीर हैं।

४४१६ प्रति स० ६। पत्र स० ६७। ते० काल स० १६४२ चैत्र सुदी १४ । वे० स० २६१। ज

मण्डार ।

४४९७ प्रति स०१०। पत्र स० ८१। से० वाल 🗙 । वे० सं०१८६। मा मण्डार।

विशेष-सर्वसुखजी गोधा ने स० १६०० भादवा सुदी ४ की चढाणा था।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ स॰ १४४) भीर है।

४४१८ प्रति स०११। पत्र स०११४। ले० काल स०१६४६ सावरा सुदी २। वै० स०४४४। च

मण्डार ।

४५१६ प्रति स० १२। पत्र स० १४७। ले० काल स० १६३७। वे० स० १७०६। ट भण्डार। विशेष—छोटेलाल भावसा ने स्वषठनार्य श्रीलाल से प्रतिलिपि कराई थी।

```
840 ]
                                                          ्रिशा प्रतिष्ठा एवं विभान माहित्य
          प्रक चतुर्विश्वतितीधकुरमुखा-शमचन्द्राचत्र व ६ | बा ११×१° ६ व । बाता दिनी
प्रकाशिय-मुजा। र मानुसँ १ १४। ने प्रान्त श्राप्तां वे सं १८१। या सम्बार।
          विरोप-पनी भण्डार में २ प्रतिश्वादिश वं २१५ २ ५ है और है।
          प्रश्रद प्रतिस के क्या के के कि नाम में १ अध्यानीय नुरो ६०६ में २४।म
 श्रार ।
          रियोग-नरापुन शाननीयान ने प्रतिनिधि वी वी ।
           इमी बनदार केश्य क्रिन (वे नं देश) बीर है।
           yya क्रमिस के। पर्वदश्यों क्षेत्र कार्या १९९६ | के वं रक्ष क्षेत्र क्षेत्र कार्या क्षेत्र कार्या क्षेत्र कार्य
           विरीप-इमी मण्डार में १ प्रतिमां (वे ले १६ २४) धीर है।
           yyaa ब्रतिसंध: वन संद्रका स्थाप नाप ×ावे न १६०। बालगार।
           शिक्षेत-पती अध्यार में दे प्रतियां (के सं १४ १६६ w w) चीर है।
           vssv इति सः ३ । यत्र मं ३६ । ने याल मं १६२६ । वे मं १४१ । वा मण्डार ।
           रियोप-स्थी मण्डार में ६ प्रतियों (के में दश्र १४० १४४) सीर है।
           ¥क्ष्म प्रतिसंद्या वस वंदर कि वस्त वंद दशा के वंदरश सामारा
           विदेश--इती क्यार में ६ प्रतिकों (के वे २१७ २१ - २२ /६) गीर है।
           पुरुष्द प्रतिश्चं ७ । यस संदेश के तक × । के संदुक्त अध्यार।
           [कोच--इनी लखार में इक प्रति (वे वं २ क) और हैं।
           ¥≽३७ इतिसंदापर गं१ शरी पान वं १०६१ पांपल पूरी ४ । वे तं १ । म
 भग्हार 1
           विकेश-वैद्यास रोववा ने प्रतिविधि कराई एवं नामुखन रोववा ने विवेशन शक्य हैं मन्दिर ने बाई
 मी। इसी मचार वें २ प्रतियों (वे नं २ ११) बीर है।
            प्रदर्म प्रतिस क्षांवय संच्या से क्षण संदुष्ट स्थापना मुक्ते हका के संपाम
 WHERE T
            विधेष--वहुतका सम्बेध में सवाई करपूर में प्रतिनिधि भी जो ।
            इसी बच्छार वे नुब्रतियाँ (वे नं ११६, १९१) सीर है।
            ४४२६ चतुर्विहारितीवहरपृत्रा—मेसीयम् पाटसी । थव नं ६ । या ११३×६३ इता। बाराः
  क्रियो । विवस-पूर्वा । र तत्त्व वं १ - जनवालुसी १ | ने कस्थ वं १११ वालीन पूरी ११ | वे व
```

१४४ । इ. बमार ।

विशेष—प्रन्त में कि का सिक्षास परिचय दिया हुआ है साग वतलाया गया है कि कि विवान प्रमरचद जो के मन्दिर में कुछ समय तक ठहरकर नागपुर चने गये तथा यहां से प्रमरावती गये।

४४३० चतुर्विशतितीर्थद्भरपूना—मनरगलात्त । पत्र स० ५१ । भा० ११४८ इ.च । भाषा-हिदी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७२१ । ग्रा मण्डार ।

४४३१ प्रति स०२। पत्र सं॰ ६६। ले० काल x । वे० स० १८३। क मण्डार। विशेष-पूजा के मन्त में निव का परिचय भी है।

४४३२ प्रति स० ३ । पत्र स० ६० । ले० काल × । वै० स० २०३ । छ भण्डार ।

४४३३. चतुर्विशतितीर्थक्करपूजा—बस्ताबरलाल । पत्र सब ४४। मा० ११२४ इ च । भाषा-हिती । विषय-पूजा । र० काल स० १८५४ मगसिर बुदी ६ । ले० काल स० १६०१ वर्गितक मुदी १० । पूर्ण । वे० म० ५४० । च भण्डार ।

विशेप--तनसुखराय ने प्रतिलिपि की थी।

४४३४ प्रति स० २ । पत्र स० ४ मे ६६ । ले० काल 🗶 । प्रपूर्ण । वे० स० २०४ । ह्य भण्डार । ४४३४ चतुर्विशतितीर्थङ्करपूजा—सुगनचन्द । पत्र स० ६७ । ग्रा० ११३४६ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल स० १६२६ चैत्र बुदी १ । पूर्ण । वे० स० ४४४ । च भण्डार ।

४४३६ प्रति स०२। पत्र स० ६४। ले० काल स० १६२८ वैदाख सुदी ४। वे० स० ४४६। च भण्डार।

४४२७ चतुर्विशतितीर्थङ्करपूजा '। पत्र स॰ ७७ । मा॰ ११×५ ई इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १६१६ चैत्र सुदी ३ । पूर्ण । वे० स० ६२६ । स्त्र मण्डार ।

४४३६ प्रति स०२। पत्र स०११। ले० काल ×। मपूर्गा। वे० स०१५४। हा मण्डार।
४४३६ चन्द्रनपष्टीव्रतपूजा-भ०शुभचन्द्र। पत्र स०१०। मा० १४६ इ च। भाषा-सस्कृत।
विषय-चन्द्रप्रभ तीर्थद्धर पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्गा। वे० स०६८। मृत भण्डार।

४४४० चन्द्रनपष्ठीव्रतपूजा-चोख्रचन्ड । पत्र स० ८ । प्रा० १०४४ इस । भाषा-सस्कृत । विषय-चन्द्रप्रम तीर्थद्भर पूजा । र० काल ४ । ले • काल ४ । पूर्ण । वे० स० ४१६ । वा मण्डार ।

विशेष--- 'वतुर्थ पूजा की जयमाल' यह नाम दिया हुमा है । जयमाल हिन्दी में है ।

४४४१ चन्द्रनपष्ठीत्रतपूजा-भ० देवेन्द्रकीर्ति । पत्र स० ६। मा० प्रदेशर इच । भाषा-सस्वृत । विषय-च द्रप्रभ की पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० १७१ । क भण्डार ।

```
प्रश्न ] [ पूजा प्रतिष्ठा यस विधान साहित्य
प्रश्न प्रमृत्याच्या विद्याल प्रतिष्ठ । देश्य प्रतिष्ठ । देश्य प्रतिष्य । देश्य प्रतिष्य । देश्य प्रतिष्ठ । देश्य प्रतिष्ठ । देश्य प्रतिष्ठ । देश्य प्र
```

चन्नान तीर्पदुर पूना । र नाल ×ा के नाल ×ा सपूर्णा के से ६१७ । का स्थार । विकेर—१८ पर नरी हैं। ४२४६ चन्द्रकाशितपूचा—रामचन्द्र । पर वे ७ । सा १ ३४२ इच । सारा-हैसी । विपर-

दूरा।र ग्रम्म × ने ग्राम वं १००६ सामोग दुधे ४। दुर्ल । दे र्ल ४२ । या व्यवार। विदेश—ब्यानुक वारणीयम महत्वापान ने गेशिनिये यो दी (

भ्रष्टभुक वस्त्रध्यस्थितपृत्रा—देवेन्द्रकीचिं।यप वं रावा ११४४४ इका।वसावंशरा विषय—पूर्वाार वस्त्र ×ाते वस्त्र वं १ दशापूर्णावे वं १०६ (व्यवस्थार। भ्रम्भय प्रतिस्थित्।यसर्वराते वस्त्र वे स्वत्र दिश्लावे ४३ (व्यवस्थार।

निष्टर—सावेरने वं १५७६ में राज्यक दी लिखी हुई ग्रंत ने प्रतिनिधि दी वर्ध में। ४२४८ - व्यवस्थारणविद्यवर्षकपूर्वां****। पत्र वं १ । या ७४१ १ व । तरा-दीकी। दिस्स

पूर्वा (व वाल अ) के पाल वी १९२० वैदाल कुछै १६ । पूर्व । वे श्री ६ १ । व्या वस्तार । ४३> वारिकारिकारा — की सुवस्ता । पव वी १० । वा ११,४६ १ व । वाल —कर्ता

हरर चासम्बद्धाः स्थापना चार्याः । या हर्द्रभूषः इत्राधाः स्थापना स्यापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्य

ारपर—स्वता दूनरा नान कार्युवा चावास्य पूना विद्यान की है।
भूप्रदेश सदि संशास्त्र वं दाने करण ×ावे संश्वदा कथ्यार।
विदेश—सेकक स्वतिक नरी हुँदै।

४४४२ चारित्रशुद्धिषिधान-सुमितिब्रह्म । पत्र स० ६४ । ग्रा० ११३ ४५ इ व । भाषा-सस्कृत । विषय-मुनि दीक्षा के समय होने याले विधान एवं पूजायें । र० काल ४ । ले० काल स० १६३७ वैशाव सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० १२३ । ख मण्डार ।

४४४३ चारित्रशुद्धिविधान—शुभचन्द्र। पत्र स० ६६। झा० ११३४४ इव। भाषा-सस्कृत। पुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एव पूजायें। र० वाल ४। ले० काल स० १७१४ फाल्गुए। सुदी ४। पूर्ण। वे० स० २०४। ज भण्डार।

विशेष-लेखक प्रशस्ति-

सवत् १७१४ वर्षे फाग्रुणमासे शुक्रपक्षे वरुष तिया शुक्रवासरे । घडमोलास्याने मु डलदेशे श्रीधर्ममाय चैत्यालये श्रीमूलसधे सरम्वतीगच्छे वलात्कारगरी श्रीकुंदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री १ रत्नचन्द्रा सत्यहे भ० हर्पचन्द्रा सदाम्नाये ब्रह्म श्री ठाकरमी तित्राच्य ब्रह्म श्री गण्दास तित्राच्य ब्रह्म श्री महीदासेन स्वज्ञानावर्गी कर्म क्षयार्थ उद्यापन बारमै चौत्रीमु स्वहस्तेन लिखिसा ।

४४४४ चिंतामिणियूजा (घृष्ट्त्)—विद्याभूषण सूरि । पत्र स० ११ । मा० ६३×४३ इव । भाषा-सस्कृत । विषम यूजा । १० काल × । ते॰ काल × । मपूर्ण । वे॰ स० ४४१ । आ भण्डार ।

विशेष-पत्र ३, ६, १० नही हैं।

४४४४ चितामणिपार्श्वनाथपूजा (पृहद्)—शुभचन्द्र । पत्र त० १० । मा० ११३४५ इश्च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० त० ५७४ । स्न भण्डार ।

४४४६ प्रति स- २। पथ स० ६२। ले० । ल स० १६६१ पौप बुदी ११। वे० सं० ४१७। व्य

४४४७ चिन्तामिण्यारंवैनाथपूजा । पत्र स० ३। मा० १०३४१ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। वे० स० ११८४ । अप्र मण्डार ।

> ४४४८ प्रति स०२। पत्र स० ६। से० काल ×। वे० स० २६। मा भण्डार। विशेष—निम्न पूजाय भीर हैं। चिन्तामिशास्तोत्र, कि कुण्डस्तोत्र, किलकुण्डपूजा एव पद्मावतीपूजा। ४४४६ प्रति स०३। पत्र स०१४। से० काल ×। वे० स०६६। च भण्डार।

४४६० चिन्तासिंगुपारवेनाअपूजा । पत्र स०११। सा० ११४४ इ.च । भाषा-सत्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्या । वे० स० ४६३ । च भण्डार ।

```
्रिका प्रतिष्ठा एव दिवास सम्प्रित
```

res] ४४६१ विम्सामधिपार्वेत्रावपूकाःच्यापत्र सं १। बा ११६×१६ इयः। असा–स्स्≇। विषय-पूत्रान र केल X की कल X | पूर्व | वे वं १२१४ | व्यावध्यार |

निकेद-व्यविधि एवं स्तोन मी विदा है।

इसी अच्छार मे एक अधि (वे वं १४) धीर है।

४४६२, चौष्ट्यूबा पर वं १६। या १ 🔀 इच। बारा-संस्कृत । दिवद-पूरा। र कात × । के राज × पूर्वा | वे सं २६१ । अस्त वचार |

विकेश--- मार्चक्रमान से नैकर धर्मतमान तक प्रवार्वे हैं।

% १३ चीस्टब्स्फिपुबा—स्वरूपचन्द्। पत्र तं ३१। धा ११ ×१ ६व! नारा-दिन्छै। विक्य-९४ प्रकार की ऋदि बादल करने वाले दुनिवोक्ती पूजा I. र कान वं १६१ सादन सूरी ७ Iमे नान में रहर । पूर्व 達 💰 १९४ । व्य अवार ।

विश्वेद---इसना इसरा बाव बृहदुर्जानीन प्रवा जी है !

स्मी प्रकार में प्रश्लिकों (वे वॉ करेंदे करेंक कर करेंक) योर हैं। ४१६६४ ब्रिटिसी २ । यद से शांके कमार्थ १८१ (के सं ६७ । का जन्दार! vztv. प्रतिसंदे। पत्र संदिशों के नाम संदृष्टर। के संदृश्य कमार।

प्रश्रद्भ प्रतिस्त प्रापण वं १६। में नाम वं १६२६ चन्नुता नुसी१२। वे सं

SECTE 1

y≱६७ प्रतिस ≵ायवर्त २०।वे नल×।वे र्व १६६। कथ्यार।

निदेव--इतो तथार वें इक प्रति (वे सं १६४) धीर है। uys⊑. प्रतिस ६ । पत्र सः । के तस्त × । के संकार । चानपार । ¥क्ष्य, प्रतिसंखायकां प्रयाने नाम मं १६२२ | वे से २१६ | हा सम्बार।

शिकेक हती सम्बार में ४ प्रतिया (वे वे १४२ २१६/१) बीर है। usu व्रतिस ⊏। पत्र वं ४६। ने यल ×। वे वं ६६। ज नधार।

विकेश-स्थी सम्बार ने १ प्रतिका (दे वे १६२/२ ११६) और है। अप्रकृतिस् शानवर्तप्रशाने नम्ब X । वे वंदश्रास्थनगर।

¥2.4९. प्रतिसं १ । यस वं ४३ । ले याल × । वे नं १६१३ | इ. मणार । भूटकरे. सावितिवादय्विति

पिक्तार नाम ×िन नाम ×।पूर्तीवे वं १०७ । सामध्यार।

४४७४ जम्बूद्वीपपृज्ञा—पाडे जिनदास । पत्र म०१६। मा०१०१४६ इ.च। भाषा सस्वृत । विषय-पूजा। र० काल १७वी शताब्दो। ले० काल स० १८२२ मगसिर बुदी १२। पूर्ण। वे० स० १८३। क भण्डार।

विशेष—प्रति प्रकृतिम जिनालय तथा भून, भविष्यत्, वर्त्तमान जिनपूजा सहित है। प • चोखन द ने माहचन्द से प्रतिलिपि करवाई थी।

पृथ्र प्रति स० २ । पत्र म० २८ । ले० काल स० १८८४ ज्येष्ठ सुदी १४ । वे० स० ६८ । च भण्डार ।

विशेष-भवानीच द भावासा भिनाय वाले ने प्रतिनिषि वी थी।

४४७६ जम्बूस्वामीपूजा । पत्र स॰ १०। प्रा० ८४५ इव । भाषा-हिन्दी । विषय-प्रित्तम वेवली जम्बूम्बामी की पूजा । र० काल 🗙 । ले० काल स० १६४८ । पूर्या । वे० स० ६०१ । स्र भण्डार ।

४४७७ जयमाल-रायचन्द् । पत्र स०१। मा० ६ ४४६ इ च । भाषा-हिन्दी । वि यय-पूजा । र० नाल स०१ ६४५ फाग्रुण सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० २१३२ । स्त्र भण्डार ।

विशेष--भोजराज जी ने क्शिनगढ मे प्रतिलिपि की थी।

४५७= जलहरतेलाविद्यान । पत्र स०४। मा० ११२०४७ दे द व । मापा-हिन्दी । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । वे॰ स० ३२३। ज भण्डार ।

विशेष-जलहर तेले (प्रत) की विधि है। इसका दूमरा नाम भरतेला वन भी है।

४४७६ प्रति स० २ । पत्र स० ३ । ले० माल स० १६२८ । वे० स० ३०२ । स्व भण्डार ।

४४८०. जलयात्रापृजाविधान (पत्र स०२। ग्रा०११४६ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स०२६३ । ज भण्डार)

विशेष-भगवान के भ्रमिषेक के लिए जल लाने का विधान ।

४४=१ जलयात्राविधान—महा प० आशाधर । पत्र त० ४। आ० ११३×१ इच । आपा-सत्वृत । विषय-जमाभिषेक के लिए जल लाने का विधान । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० त० १०६६। अर भण्डार ।

४४८२ जलयात्रा (तीर्थोदकादानिध्यान) । पत्र स०२। प्रा० ११४५५ इच । मापा-सस्कृत । विषय-विष्यान । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष-जलयात्रा के यत्र भी दिये हैं।

४४=३ जिनगुरासपित्तपूजा—भ० स्वचन्द्र । पत्र स० ६ । ग्रा० ११०४४ इत्र । भाषा भरवृत । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० २०२ । स भव्दार ।

7177

४३६४ प्रतिस्०२। पनर्थ६। ते नलाई १६३। वे तं∤ १७१। संघ्यार।

रिक्षेद — मौपति योजी में प्रतिविधिय थी थी | ४४.≂३. क्रिनसुद्यासपत्तिपृत्रा ——) यत्र वं ११ । धा १९८० इ.व.। प्रापा-संस्कृत । विवय

यूबा।र वार×ानै कल ×ायपूर्णावे वं १११७ । कायपार। क्षिते—रवायन नहीं है।

ह्नद प्रतिस २ । यम र्च ४ । से माम स्टेड्ट्रा देवे प्रकार ।

प्रश्चक जिल्ह्युक्षमंत्रिपुर्वारण्याचय वं ६ । या क्री×६३ इतः जला-संसद्ध स्तरणः। रिक्क-पुदारि नाम ×ाने कला×ापुर्वावे वं ६६३ । वाजम्यारः।

प्रश्चनः जिलपुरण्यस्वयम् त्राः''''। यथ्यं १४। या १९८६ त् स्त्रः। सस्य-संस्कृतः। स्वयं-सुन्ना १ सन्त \times । ते स्वयं \times । पूर्वः। वे सं १६। क्षणस्यारः।

भ्रष्टम=. बिल्मुबाण्ड्रज्ञासिक्ता ^{गा}ाषण्य द्यासा १ ×४२) इत्रक्षणा संस्कृत । विस्त-पूजा र कल्र × क्षिकल × । पूर्णाचे वं भवते । बाकस्यार ।

विकेप—पूजा के बाज रे क्या भी है।

४४६ क्रिज्यक्रमण्यं(प्रतिद्वासार)—सद्यार्थं कारप्रकराययं १२।धा १ ४४ इ.स. प्रता—संपद्धाः निषयं दृष्टि मेधे प्रतिद्वादि नियमनो मी विकार काल सं १९०३ सलील दुर्धे। ते इस्त तुर्थदंत्राय दुर्धे (सण्डे १६६) दुर्काने संदेशा कायस्थार।

विकेन—प्रकृतित निम्म अकार **है**—

संबद् १४६१ बाके ११६ वर नाय गरि हुक्तमारियामा मानामा (ब्यूर्स) ४४६१ प्रति स १। पर सं ४००१ने काल सं १६११। वे ४६६। सामगार।

विकेष —सपुरा से बीरक्षमेव के बाववकाश में प्रतिकिपि हुई।

देशक प्रशित---बीकुमहीदु सरस्वतीमी गण्डे मणात्मारसे प्रस्ति । शिकुमानी श्रीत्मासम्म सेटै पुरविक्तासा निवसे विश्वति । श्रीकृदकुदाखितयोगनाय पट्टानुगानेकमुनीन्द्रवर्गा । दुर्वादिवागुन्मयनेकसज्ज विद्यामुनदीदवरसूरिमुस्य ॥ तदन्वये योऽमरकोस्तिनाम्ना भट्टारको वादिगजेभदायु । तस्यानुदिष्व्यनुभचन्द्रसूरि श्रीमालके नर्मदयोपगाया ॥ पुर्या द्युमाया पट्टपदामुवत्या सुवर्शाकाए॥प्रत नीचकार ॥

४४६३ प्रति स० ४। पत्र स० १२४। ते० काल स० १६४६ मादवा सुदी १२। वे० स० २२३। म्ह भण्डार।

विशेष-विगाल में भक्षवरा नगर में राजा सवाई मानसिंह के पासनकाल में भाचार्य कु दकुन्द के बला-त्कारगण सरस्वतीगच्छ में भट्टारक पद्मनिंद के शिष्य में शुभवन्द में जिनवन्द्र में बन्द्रकीर्ति की माम्नाय में खडेल-बाल बंधोत्पन्न पाटनीगोत्र वाले साह थी पट्टिराज बल्न, फरना, क्पूरा, नायू धादि में से क्पूरा ने पोडशकारण बतीद्या-पन में पें श्री जयवत की यह प्रति भेंट की थी।

४५६४. प्रति स० ६। पत्र सं० ११६। ले० काल ×। वे० स० ४२। व्य मण्डार। विशेष-प्रति प्राचीन है।

नद्यान् सिंहज्ञवद्योत्य केल्ह्स्गोन्यासवित्तर । लेखितोयेन पाठार्यमस्य प्रस्मन पुस्तकं ॥२०॥

४४६५ प्रति स०६। पत्र स०६६। ले॰ काल स०१६६२ भारवा बुदी २। वे॰ स०४२५। ह्य भण्डार।

विशेष —सक्त् १६६२ वर्षे भाद्रपद विद २ भीमे मदोह राजपुरनगरवास्तव्य प्राम्यःसरनागरज्ञाती पचीली त्याशाभाद्रमुक्त नरसिहेन निखित ।

क अण्डार में एक मपूर्ण प्रति (वे० सं० २०७) च अण्डार में २ मपूर्ण प्रतिया (वे० स० १२०, १०५) स्या म्ह भण्डार में एक मपूर्ण प्रति (वे० स० २०७) भीर है।

४४६६ जिनयहाविधान । पत्र स० १। मा० १०×४३ ह व । भाषा-सस्कृत । विषय-विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १७८३ । ट मण्डार ।

४४६७ जिनस्नपन (अभिषेक पाठ) '। पत्र स०१४। मा० ६१४४ इ.स.) भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल x। ले० काल स०१८१ बैशास सुदी ७। पूर्ण। नै० स०१७७८। ट भण्डार।

४४६८ जिनसिंहता । पत्र स० ४६। मा० १३४८-१ इच । मापा-सस्कृत । विषय-पूजा प्रति-ष्ठादि एव माचार सम्बंधी विधान । र० काल ४ । ले० वाल ४ । पूर्ण । वै० स० ७७ । छ मण्डार । ४१६६. विनसंदिता—सङ्गाहु । पत्र तं १६ । या ११४६६ ६ ४) भाग-वस्तुत । विषर-दुवा प्रतिद्वादि एवं सामार सम्पन्नी विशव । र काल ४ । वे काल ४ । पूर्वी के वे १९६। क समार।

४६ जिनस्तिया—स एकस्वि । यस सं तथा सा ११८८ एकः । नाम-तंत्रत्य । निषम-द्वाप्रतिद्वारं एवं सामार सम्बन्धी निषमा । र काल ४ । ते काल सं ११६० चैन वृत्ती ११ । दूर्वी वै वं ११० । क सम्बन्धाः

िरिचेर— ६७ ६० १ र तथा वह पथ वाली हैं।

्रध्रद्देशिवसः राजवर्धः शाने करणार्वे १ दशाके सं १९०१ का प्रमारा

४६ २, प्रति सं है। वर वं १११ कि कका ×ाहे सं १६ । इस वकार। ४६०६ विसमस्तिका ""। वर सं १६ । सा १२×६ द व । सामा-वील्डा | नियम-पुना प्रति हादि दर्वसामार सम्मन्ती विषय । र कका ×ाहे सक्ता सं १ १६ सक्तरा कुरी ह। दुर्सा है सं १६६।

क्ष प्रधार । विकेत-- कम का दुष्टरा नाम पुत्रकार भी हैं । यह एक शंख्यु कम है शिवशा दिवस वीरतेन स्थितेन पुनस्तार तथा दुरुतसारि धानामी के कम्पो के बेवह निवा नवा है। १२ दुस्तों के स्थितित्व १ पन्नी में रूप है वर्ग

नित ४६ कन दे रखे हैं। ४६ ४ वितसहहस्रनायपूर्णा—समेसूमस्य । यन वं १९६ । या १ ×४६ इस । नाग-संसर्णः

प्रदेश क्रित्तहरूप्तानपूर्वा—वससूर्यका। या व ११६ । या १ ४५६ इस । समान्तराः। विश्य-पूर्वाः र नक्त ४३ के कर्मार्थ १६ ६ वैयाला दुर्शे टा पूर्णः वे ४६ । या लगारः।

নিষ্ঠ—বিশ্বস্থান্তবাদ বিঞ্জু যুৱহালখী ক কলাৰ্য ট্ৰানেলভী ইব্যয়ন বৰা প্ৰবাহ বালী ই বিশা ধ্যমাহ ব মাহিৰিয়ে কংলাই গ্ৰী 3

बान्तव प्रवास्ति— या पुस्तक निवार्ष विचा वाचारि के कीर्यावस्ताने सीमाननिक्ती वन् नंबर करिवेड्यो दुनामा रेत-वासन् देख्यो प्रितितः थीवहस्ताय वी जैन्सानी चैत्रमी जवक करानी । वी स्वयमेडच्यो का समेदर ये मान निर्दी स्टोगा वनदुवसी वार्टी वनक का कींग्र पांस्पी व ११) कहती करीप्साननी नाह क्वारी वहार मृहूनी ।

४६ ≵ प्रतिसंद।पत्र वंदश | ने कल ×। के नं ११४ | आह सम्बार |

प्रदेवं क्षित्रसहस्रात्तार्युक्षा—स्वरूपणण्डिकाका। परंक दराया ११४४ इका गर्या-हिन्दी। दिवस–पुत्राः र नाम वं १११६ कर्मान युप्तै राने नाम ⊁ायुर्त्ताने वं वक्र ३० इकायार ।

४६ ७. जिलसङ्कलासपूर्वा— चैक्सुक हार्राविमा। यत्र सं २६। सा १९४८ ६ छ। सारा-छन्तोः (देशक-पुतार सका×ाते सकाचे १८३६ मात्र दुरी र । पूर्णा वे सं ७७६ (क समार) ४६०८ जिनसहस्रनामर्जा '। पय स०१८। मा०१३४८ इ.च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा।
र० काल ×। वे० वाल ×। पूर्ण । वे० स०७२४। व्य भण्डार ।

४६०६ प्रति स०२। पत्र स०२१। ते० काल × । वे० स० ७२४। च भण्डार ।

४६१० निनासिये हिनार्णय । पत्र सं १०। झा० १२४६ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-मिनियेक विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं ० २११ । हा भण्डार ।

विशेष-विद्वज्जनवोधन के प्रथमकाण्ड में सातवें उल्लास की हिन्दी मापा है।

४६११ जैनप्रतिष्ठापाठ । पत्र स० २ से ३५ । आ० ११३×४३ इ च । भागा-सस्तृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० वाल × । अपूर्ण । वे० स० ११६ । च अण्डार ।

५६१२ जैस।ववाह्यद्विति । पत्र स०३४। मा०१२×५ इ.च । भाषा-सस्कृत । विषय-विवाह विषि । र० काल × । ते० वाल × । पूर्ण । वे० स०२१५ । का मण्डार ।

विशेष-- प्राचार्य जिनसेन स्वामी के मतानुसार सग्रह किया गया है। प्रति हिन्दो टीका सहित है। ४६१३ प्रति स०२। पत्र स०२७। के काल ×। वै० स०१७। ज मण्डार।

४६८४ झानपचर्षिशतिकात्रतोद्यापन-भ० मुरेन्द्रकीित । पत्र सं०१६। आ०१०३×५ इच। भाषा-मस्कृत । विषय-पूजा । र० काल छ०१६४७ चैत्र बुदी ह । ले० काल स०१६६३ झापाढ बुदी ५ । पूर्ण । वै० स०१२२। च मण्डार ।

विशेष-जयपुर में चन्द्रप्रमु चैत्यालय में रचना की गई थी। स्तेनजी पांस्था नै प्रतिलिपि की थी।

४६१४ वयेष्ठिजिनवरपूर्वा "१पत्र स०७। मा०११×४३ इ.च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० स०५०४। ध्रा भण्डार ।

विशेष- इसी मण्डार में एक प्रति (वे॰ स॰ ७२३) भीर हैं।

प्रदेश व्यष्ठितिनवरपूजा ै। पत्र स०१२। मा०११३४५ इ.च. भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र०काल ४ । ले०काल ४ । मपूर्ण । वे० स०२१६ । क भण्डार)

४६१७ प्रति स०२। पत्र स०६। ले० काल स०१६२१। वे० स०२६३। ख मण्डार।

४६१८. वयेष्ठिजनवर्षतपूजा "। पत्र स० १ । आ० ११६ ४५६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ते० काल सं० १८६० भाषाढ सुदी ४ । पूर्णी वि० स० २२१२ । अ भण्डार ।

विशेष--विद्वान खुकाल ने जोधराज के बनवाये हुए पाटोदी के मन्दिर में प्रतिलिपि की । खरडो मुरेन्द्र-

४८९] [पृका संतिद्धा रव निमान शाहित

४६१६. सुसोकार्पैतीक्षपुशा—काक्यस्तास । यद तं ३ । ला १२×१५ इस । सता बंताट ।

विवय-समीकार बन्त पूजा। रंजना 🗙 | वे. कार 🗙 । पूर्ण । वे. वं. ४११ । या वन्तार ।

रिकेप-महारामा वर्षोबह के बातनपात में उन्य रचना की नई नी ।

इडी क्यार केण्ड प्रति (वे सं १७) धीर है।

भूषक प्रति सं कृष्ण सं काले के क्षेत्र प्राचीन कृषी है। वे सं क्रमान

सम्बार ।

बचार ।

प्रदेश स्वयोक्तार्येवीसीम्बलियान—का स्वे कनक्कीलि । यह ६ १। वा १२४६ १४। ज्ञान-संस्कृत । विवस-नुता एवं विवास । द वाल ≾ । के स्वस्त सं १११ । पूर्व । के ११६। व

दिसंद-—यु नरवी कास्त्रवीयम्य वे अतिविधिर गी थी।

प्रदेश, प्रतिस्त २ । तम वर्ष २ । ते काम × । स्युर्ति । ने ४ १४४ । सामाणाः । प्रदेशहे तस्त्रातीलुकदरप्रमानस्यान् स्वाचनद्वा न्यस्त १ । सा ११×४ रण । समानीतरः ।

प्रियम-प्रशाः र कल X । ने भव्य X । पूर्व । वे वं १६ । क स्थार ।

विकेष---वृद्धी कवार में एक प्रति वै वं १६१। योर है। पुरुष्ठ वस्त्वार्वसुवदशाम्बानगुव्याम्माना पत्र वं १।०

प्रदेश्य वरणाचेश्चनदराज्ञालम्बाःःःः। यद व १। बा ११ ×६। जाना-वंश्वय । विश्व-दूसां≲ कल ×। के कल ×। पूर्णी वे वं १६२। क जन्मारः। विकेस-किकार वे बमान गी पूर्णी है।

४६२४. शीलपीरिशिष्ट्या^{च्या}ापण तं ६ । सा १५४६ दणः सप्तान्तकारः। निसन्तर् स्रोपलन् द्यापत्तनम् जलाके पोर्वको शीर्षकृति सी द्याः र कान X । ने पला X । दूर्ताः रे तं ९४ क प्रधारः।

प्रदर्द तीवचीवीसीसमुख्यपूर्वा पण व द १। मा ११३×१ १ व । बारा-१ स्ट।

तिवर-पूरा।(र कार्य×। वे प्रत्य×। पूर्व। वे वे १ ६। त वचार।

प्रदेश्क श्रीमचीरीधीयूथा—प्रियोचण्य पाटची । एवं दक्षा वा ११ $\chi \times \chi = \chi = 4\pi i$ शिक्षा-पूर्वा ए नाम तं १ ६४ कारिक प्रुपी १४ १ के काम सं १६९ वाहर पूरी का $\chi \hat{\pi}$ । $\hat{\pi}$

प्रदेश-दीतचीवीशीह्या⁻⁻⁻⁻⁻⁻ पार्व के ४०। या ११८६ एवं शासा-दिन्दीः स्टिन-पूरी ए समार्थ (चराने पान्य के १.२। दूर्मीके व २०३। कृषणारः ४६२६. तीनचौबीसीसमुद्ययपूजा । पत्र स० २०। श्रा० ११५४४६ इ च । मापा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल 🔀 । ते० वाल ४ । पूर्ण । वे० स० १२५ । छ भण्डार ।

४६३० तीनतोकपूजा—टेकचन्दापत्र स०४१०। भा०१२×८ इच। भाषा-हिन्दी। विषय-

विशेष-ग्रन्य लिखाने मे ३७॥-) लगे ये।

इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० स० ५७६, ५७७) भीर हैं।

४६३१ प्रति स० २ । पत्र स० ३५० । ले० काल 🗶 । वे० स॰ २४१ । छ मण्डार ।

४६३२ तीनलोकपूजा—नेमीचन्द । पत्र स० ५५१। मा० १३×५ है इव । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १६६३ ज्येष्ठ सुदी ४। पूर्ण । वै० स० २२०३। अप्र भण्डार।

विशेष-इसका नाम त्रिलोकसार पूजा एव त्रिलोक्यूजा भी है ।

४६३३ प्रति स०२ । पत्र स० १० मा ते काल 🗶 । वे ० सं० २७० । क भण्डार ।

४६३४ प्रति स० २ । पत्र सं० ६८७ । ते० कात स० १६६३ ज्येष्ठ मुदी ५ । वे० स० २२६ । छ

विशेप-दो वेष्टनों में है।

४६३४ तीसचौधीसीनाम"" । पत्र सं०६। मा०१०४४ इव । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल ४ । ते० काल ४ । वे० स० ५७८ । च भण्डार ।

४६३६ तीसचौवीसीपूजा-मृन्दाधन। पत्र म० ११६। मा० १०३×७३ इत्र। मापा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले॰ काल ×। पूर्ण। वे॰ स० ५००। च भण्डार।

विशेप-प्रतिलिपि बनारस में गङ्गातट पर हुई थी।

४६२७. प्रति स०२। पत्र सं०१२२। ले० काल स०१६०१ मापाउ सुदी २। वे० स०५७। मा

४६३ तीसचौबीसीसमुख्यपूजा । पत्र स० ६। मा० ८×६१ , च। मापा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १८०८ । ले० काल ×। पूर्ण । वे० स० २७८ । स भण्डार ।

> विशेष--- प्रढाईडीप प्रन्तर्गत ५ भरत ५ ऐरावत १० क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौचीसी पूजा है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७६) श्रीर है।

४६३६ तेरहद्वीपपूजा-शुभचन्द्र । पत्र स०१४४ । मा०१०३८४ इ च । भण्या-सस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ४ । ते० वाल स०१६२१ सावन सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ७३ । स्व भण्डार ।

```
1 k=1
                                                      ्रिया प्रतिद्वा एव विधान सारित्व
         १६४ सरहापिर्जा—श• विश्वमृष्णु । यत्र स १ वः बा ११×१ दश्र । अस्य-स्था ।
```

विषक—प्रेत वास्परानुसार १६ ही से वी दूसा श्रंद वाल ×ा ते. वाल तं. १००७ वारसा नृती २ । दे वं १९०१ म्ह बच्चार ।

रिकेश-दिनीशमधी पान्या ने बनश्च ह हाल ने दिलवाई वी :

धरेश्वरे तेरहद्वीरपूर्वाच्याच्या वय व रशास ११,४१,४१ व । बाता-संत्रतः। दिवर-देव नाम्बरमुनार १३ हीरों की कुगा। र काल ×ाने काल थ १ ८१। पूर्वा वे वे ४३। ज मधार।

दिलेल—इनी जप्पार वे एक धनुर्श वित (वे में १) धीर है।

प्रदेशक, तेरहद्वीवनुष्ठाच्या । यक व १ । या ११४६ व । बाला-बंगुछ । स्विक-पूर्वा र राज्ञ ×ाने राजन ११२४ । दुर्गी देन ४३६ । चावभार।

४६४३ तेरहद्वीरुप्रधा—साझळीट। पर व १३२। या १२०×० इ.च.। बारा-दिन्धे। विगर नुसा। र बान नं १ ३३ वर्गतर नुसै १२३ वे बान वं १६१२ बारवा नुसै ६१ वृत्ये। दे तं ९ ३१%

megit 1 विदेश-थोविग्वराम ने प्रतिनिधि की थी।

४६४४ तरहडीरमुलाच्याः वर मं १७६ । या ११४७ इ.च.। बच्छा-हिसी। स्विध्नीयाः

र कल ५ । ने बाल ४ । वे म ३३१ कि मेलार। ४६४४ नेरहहीयपूत्रा - " । वन में १६४ । या ११% की द व । बाला-लियो । रियम-प्रणा र क्षाच्याने बावन १६४६ वानिक नुर्ग ४३ पूर्ण १ वे १४६ । अ बच्छार ।

१६४६ तरहडीरहणाविभान " " । यर व १ १ वा ११४६, इ.स. आया-अगुन । स्पिन्

रतार कप×ाने शप×ान्तुर्गादे वे १६१। सथपार। प्रदेश द्विष्ठाचनौदीसीर्का-विमुध्ययात्र । वर में १६ श्वा ११६×६ दव । नामानगर ।

[स्पानीओ कम के हुके कोने निर्देशों की प्रशास कम × | के बार × | वर्गों के सं कर। व बनार ।

(बर्टेच--क्रिक्सल के बेक्स के प्रति नहिं की की)

viva दिशायथीवीशीरूप्रा पर वं देशवा १,३६३ दव । शास स्टार्श रूप दुशार का XIA बारXापूर्णें।देव दे । क्रथमार।

पूर्व समिलंक प्रत्य में कि शर्म पार में देश प्रयोग मुद्दी है। में ने ने ही कि

क्ष्यार । रिक्ट-अवन्त में बायार्थ दर्गक्य में बादे पार विकी में बाद में प्रतिर्वत की हो। ४६४० प्रति स०३। पत्र स०१०। ले० काल स० १६६१ भादना सुनी ३। वे० स०२२२। छ

विशेष-शीमती चतुरमती श्राजिका की पुस्तक है।

४६४१ प्रति स०४। पत्र स०१३। ले० काल स० १७४७ फाल्गुन बुदी १३। वे० स०४११। व्य

विशेष-विद्याविनोद ने प्रतिलिपि की थी।

इसी अण्डार में एक प्रति (वे० स० १७५) भीर है।

४६४२ प्रति स० ४। पत्र मं० ६। ले० काल ×। वे० स० २१६२। ट मण्डार।

४६४३. त्रिकालपूजा "। पत्र स० १६। मा० ११×४६ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ×। ने० काल ×। पूर्ण । वै० स० ५३० । श्र भण्डार ।

विशेष-भूत, भविष्यत्, वर्तमान के त्रेसठ शलाका पुरुषो की पूजा है।

४६४४ जिलोकचोत्रपूजा" । पत्र स० ५१। स्रा० ११×५ इ.च.। भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। र० काल स० १८४२। से० काल स० १८८६ चैत्र सुदी १४। पूर्ण। वे० स० ५८२। च भण्डार।

४६४४ त्रिलोकस्थिजिसालयपूजा । पत्र स० ६। मा० ११×७ ई इ.च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। र० नाल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० स० १२८। ज भण्डार।

४६४६ त्रिलोकसारपुका - अभयनिद्। पत्र सं० ३६। मा० १३३ ×७ इव। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ते० काल स० १८७८। पूर्ण। वे० सं० ५४४। आ मण्डार।

विशेष---१६वें पत्र से नवीन पत्र जोडे गये हैं।

४६४७ त्रिलोकसारपूजा । पत्र स० २६० । मा० ११४४ इ च । मावा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल स० १६३० भादवा मुदी २ । पूर्ण । वे० स० ४८६ । ऋ मण्डार ।

४६४८ त्रेपनिकियापूजा । पत्र स०६। ग्रा० १२×४६ इ.च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र०काल × । ते०काल स०१८२३। पूर्ण। वे०स० ५१६ । श्रा मण्डार।

४६४६ त्रेपनिकियाव्रतपूजाः '। पत्र स० ५। मा० ११३ ४४ देख । मापा-सस्कृत । विषय-पूजा। र० काल स० १६०४। ले० काल ×। पूर्ण । वे० स० २८७। क भण्डार।

विशेष-माचार्य पूर्णपन्द्र ने सागानेर में प्रतिलिपि की थी।

४६६० जैलोक्यसारपूजा-सुमितसागर। पत्र स० १७२। आ० ११५×५३ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १८२६ मादवा बुदी ४। पूर्ण। वे० स० १३२। ह्य भण्डार।

```
्या प्रतिप्रा एव विवास साहित
vet 1
```

४६६१ जैक्षांक्यसारमङ्ग्यान्ना---। यस सः १४६। सा १ XX ६४ । प्रता-संराप । विस-दुना।र नास×।ने नास वै १६१६। पूर्वादे सं ७६। सामचार।

प्रदेश, व्रावक्षां वायमाता—र्षे रह्यू । वा १ ×१ ६ व ३ वावा–सपत्र थ । विवस-वर्ग के स वैद्यों की प्रसा: रंपल ×ाते कल ×ाप्यां कि स वद । का मध्यारा

रिकेद---क्षेत्रक में पर्यायान्तर विवा हथा है।

प्रदेशके अति स**े २ । पथ का दाने पाल ले १७३** पाने के के १ । बा बचार । विवेच-शक्त वे सामान्य टीवर से इर्द है। इसी बच्चार वे एक प्रति (वे १२) बीर है। 25 देश प्रति से दे। यह सं ११। में बाल ×ादे स २६७ (का भवार) विदेश-अस्टुत ने क्वाँक्काकी श्रम्म विवेद्वार हैं। इसी कम्बार में एक ब्रति (वे स २८६) घीर हैं। प्र3६५. प्रतिस ४ । पर्वक् भाने क्या संह शाहिक वशासक्यार। निसेय-मीधी ब्रुवामीधन नै डोक ने प्रतिविधि भी थी। इसी बच्चार में १ जीवयों (वे वं २, ६/१) बीर है। ¥864. प्रतिसं ४ । पत्र सं ११ । वे कल × । वे व २१४ । क लकार । विश्वेष--- तस्तुत में बनित विने द्वाने हैं। इडीर जन्मार में एक प्रपूर्ण अति (वे स. २६२) मीर है। ±६६७ प्रतिसं•६ । वन वं १। वे कल ×। वे त ११६ । च त्रवार । मिलेर—इसी जम्बार में एक प्रति (वे सः १६) स्हीर ईं।

BARTE I

ystac प्रतिस कायम वे का से नाम सं रक्त्यर कारण स्थाप समी के १२६। में utics, प्रति हो या प्रवास का के नाम से १ हवा ने संबद्धा समार। सिक्केर---प्रशीयच्छार में २ प्रतियों (वें सं १६ २ २) सीर दे। 1944 मित सं ६। यस व ४। में प्रमान १७४६। में तं १७ । सामग्रार। श्राकेश - वरि क्ष्यूण हीका वरिष्ठ है ।इसी अच्छार के क्ष्यूलियों (के व्रांत्यू के क्षा कृष्य) बीर है। प्रदेश प्रतिस्ति है। यन वें है। के त्रोल ×ार्थ वे रेक्टराह करारा क्रिकेट-प्रती सरकार ने ३ प्रतियों (वे ते १७०७ का १०१४) सीर है। प्रदेशके ब्राह्मकुक्तकमाले-प मान समी। यथ र्ष । मा ११X१३ इ.व. भागा-मान्धा विष4-पूना । एं जाल × (वे काव वं १ ११ जानना दुसी ११ । तपूर्वा) वेश सं प्रश्न (का क्यार)

विकेच--वंशहत में शोका की हुएँ हैं। इसी अध्यार में एक मति (वे वो ४०१) शीर है।

भण्डार।

४६७३ प्रतिस०२। पत्र सं० प्रालेक काल स० १७३४ पौप बुदी १२। वे० स०३०२। क

विशेष--- प्रमरावती जिले में समरपुर नामक नगर मे प्राचार्य पूर्णचन्द्र के शिष्य गिरधर के पुत्र लक्ष्मण ने स्वय के पढने के लिए प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (दें सं दें १) भीर है।

४६७४ प्रति स० १। पत्र स० १०। ले० काल स० १६१२। वे॰ स० १८१। ख भण्डार ।

विशेष-जयपुर के जोवनेर के मन्दिर मे प्रतिलिपि की थी।

४६७४ प्रति स०४। पथ स०१२। ते० काल स०१८६२ भारवा सुदी ६। वे० सं०१५१। च भण्डार।

विशेष -सस्कृत मे पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं।

४६७६ प्रति सः ४। पत्र स॰ ११। ले॰ काल ४। वै॰ स॰ १२६। छ मण्डार।

१९६७७ प्रति स०६। पत्र स०५। ले० काल ४। वे० स०२०५। व्य भण्डार्ए।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स॰ ४६१) ग्रीर है।

४६७= प्रति स० ७। पत्र स० १८। ते० नाल X। ते० स० १७८४। ट मण्डार।

विशेष — इसी भण्डार मे ४ प्रतिया (वे॰ स॰ १७८६, १७६०, १७६२, १७६४) भीर हैं।

४६७६ दशलक्त्याजयमाल १ पत्र स० ६ । ग्रा० १०४६ इव । भाषा-प्राकृत । विषय-पूना । र० कान ४ । ले० कान सं० १७६४ फाग्रुस सुदी ४ । पूर्स । वे० स० २६३ । इट भण्डार ।

४६८० प्रति स०२। पत्र स०८। ले० काल ×। वे० स०२०६। म्ह भण्डार। ४६८१ प्रति स०३। पत्र स०१४। ले० काल ×। वे० स०७२६। स्त्र भण्डार। ४६८२ प्रति स०४। पत्र स०४। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० स०२६०। क भण्डार। विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० स०२६७, २६८) ग्रीर हैं।

४६=३ प्रतिस०४ । पत्र स०६ । ले० काल स०१ - ६६ भादवासुदी ३ । वे० स०१ ५३ । च

विशेष---महात्मा चौथमल नेवटा वाले ने प्रतिलिपि की थी । सस्कृत में यर्मायवीची शब्द दियें हुंचे हैं । इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० स० १४२, १४४) और हैं।

४६८४ दशलच्याजयमाल । पत्र स० ४। धा० ११३४४९ इ.च.। भाषा-प्राकृत, सःकृत। विषय-पूजा। र० काल ४। त० काल ४। पूर्या। वे० स० २११४। श्रु भण्डार।

```
¥== ]

    पूजा प्रतिक्वा पत्र विभाग साहै

         ४६८३. इरातकृष्णप्रवसास्यान्या पत्र न १ श्वा १ ३×४३ इत् । प्राप्ता-हिन्दै । रिग्य-ई
र मन×।से नानस १७३६ यलोऽ दुरी ॥ । पूर्वावे सः ४ । सामन्यारः
         विसेप-नाबीर ने प्रतिनिधि हुई नी ।
         र कल ×१के कल ×। पूर्ण। के संक⊿दः चक्रकार।
         ४६०० दराकक्ष्मपुत्रा—धाप्रदेव। पद र्ग १। का १६४१ई इ.स.। जाता-वीहत। विस्त
दुवा⊱र कल ×1ने कल ×1दूर्व⊦्दे वं १ दर। छ बखार।
         ४६८० दरासभृद्यपृथा—सम्यनम्मि । यत्र शं १४ । शा १९४६ इ व । मारा-नशरतः। विस्
द्वा।र कल × । ने कल × । दुर्वाः व दश्शः कथवार ।
         ४६८३. दशक्तभुरत्वाण्याणा वय मं २ । या ११×१३ दव । वाता-सस्यः। निवस-प्रा
र गल ×ाने क्या×ादुर्नादे वं ६६७ । दाकदार।
         मिकेच--- एती गण्यार ने एक प्रति (नै भ १२ ४) बीर हैं।
         प्रदेश प्रविसंदेशपार्थ हाके कलास १७४७ फाइल दुरी ४ कि. व. देशी
बन्दार 1
         विशेष---वांगानेर में विधानियोग ने पं विरंतर के वाचनार्व प्रशितिय की बी 1
         ब्ली सम्बार में एक प्रति (वे व २६०) सीर है।
         प्रदेश प्रतिस देश वर्ष को में कल × (वे वं १७०६ । ट मनार।
          विकेष---प्रती क्यार में एक प्रति (वे ते १७११) और है।
         प्रदेशके ब्रामक्ष्यपूर्वा ......। यह वं १० | या ११×४१ द व । वाया-संस्था । विवय-दुर्गा
र सल ≿ाद्र कल वं १ ६६। पूर्वादे ते १११। चननार।
          दिवेच--प्रति चंत्रुत होका सहित है।
          ४६६३, व्रावधायपूर्वा--वासवराव ( पत्र व १ । शा व×६ १ व १ वमा-विन्धे । विषय-
क्याहर कार×ाने राज×ावूर्णा दे वे ५२६ | दाजमार।
          विकेद--- सम वं ७ तक राजवस्त्रा ये दूर्व है।
          प्रदेश्य प्रतिस्थानम् विश्वास्य स्थापितः । विश्वास्य स्थापितः स्थापितः स्थापितः स्थापितः स्थापितः स्थापितः स्थापितः
दसार ।
```

प्रकार प्रतिसंदे। यस संदानिकाल ×1 के संदे । अस बस्तार ।

४६६६ दशलास्यापृता । पत्र म०३४। मा०१०३८७ई इच। भाषा-हिदी। विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल स०१६४४। पूर्ण। वै० स० ५८८। च भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे॰ म॰ ५८६) छीर है।

४६६७ प्रति स० २। पत्र स० २५। ले० काल स० १६३७। वे० म० ३१७। च भण्डार।

४६६८ दशलक्षापूजा । पत्र सं०३। म्रा०११४५६ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ने० काल × । म्रपूर्ण । वे० स०१६२०। ट मण्डार ।

विशेष-स्थापना चानतराय कृत पूजा की है मप्टक तथा जयमाला किसी घन्य कवि की है।

४६६६ दशक्तत्त्र्यमहत्त्रपूजा । पत्र म० ६३। मा० ११३×५३ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १८८० चैत्र सुदी १३। ले० काल × । पूर्ग । वे० म० ३०३ । क भण्डार ।

४७०० प्रति स० र। पत्र म० ५२। ले० काल 🗶 । वे० स० ३०१। ह मण्डार।

४७०१ प्रति स० ३। पत्र स० ३४। ले० कान स० १६३७ मादवा बुदो १०। वे० स० ३००। इ भण्डार।

४७०२ दुशल्चायाव्रतपूजा—सुमितिमागर। पत्र स०२२। मा०१०३×५ इ च । भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स०१८६६ मादवा सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० ७६६। प्र भण्डार।

४७०३ प्रति स०२। पत्र स०१४। ले० काल स०१८२६। वे० स०४६८। श्र भण्डार।
४७०४ प्रति स०३। पत्र म०१३। ले० काल स०१८७६ मासोज मुदी ४। वे० स०१४६। च

विशेष-सदासुस वाक्लीवाल ने प्रतिलिपि की थी।

४७०४ दशलस्राव्यतोद्यापन-जिनचन्द्र सूरि। पत्र म०१६ ~ २४ । झा० १०३×५ इच। भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। मपूर्ण । वे० मं० २६१। क भण्डार।

४७०६ दशलच्चणव्रतोद्यापन-सिंह्मभूपण् । पत्र म०१४। मा०१२३×६ इ च । मापा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल \times । ले० काल \times । पूर्ण । वे० स०१२६ । छ मण्डार ।

४७०७ प्रति स॰ २ । पत्र स॰ १६ । ते॰ काल 🗙 । वे॰ स॰ ७५ । मा अण्डार ।

४७- इरालच्याव्रतोद्यापन । पत्र स० ४३। ग्रा० १०४४ ६ च । मापा—सस्कृत । विषय— पूजा। र० काल ४ । ले० काल ४ । वे० स० ७० । का मण्डार ।

विशेष---मण्डलविधि भी दी हुई है।

```
81 1
                                                         ्रिका प्रतिद्वा एवं विवास पाहित
          ४७०६. द्रासक्यमिताक्युमाण्या पत्र वं १ ] मा १९३×० इ.व । जला-जून्से । विरत-
प्रचा।र केल ×ाके कल ×ापूर्णा वे स २ ७ । इह सम्बद्धार ।
          विश्वेद---इसी बच्चार ने २ प्रतियां इसी वेष्ट्रन में सौर है।
          ४०१ वैवपूका—इस्तृतस्ति योगीस्त्र । पव सं १। सा १ ४×१ ६ न । वाला-सरस्य । विसन-
पुता।र मन ×। में क्ल ×ानुर्या के वं १६ । कावकार।
          प्रकरेरे वेकप्रकारण पापम स ११।सा १२/४४३ व.च। माना-संस्कृतः निसर-पुना।र
नान ×। ने कान ×। पूर्णे। वे सं १ ३३। च्छा सम्बार ।
          ४-४१६. प्रतिसः २ । यद्यं ४ से १२ । के कल ×ासपूर्ताके सः ४६ । व प्रणाद
          प्रकॉर्ड प्रति संक्रेड । पन सं ३ । के कल × । वे सं ३ ३ । क बच्चार ।
          निवेद—स्तीनम्बार वेएक प्रति (वे च ३ ६) बीर है।
          ४०१४ प्रतिस०४। पत्र संदेशके कल्≪ावे संदृद्ध क्यारा
          विकेष-- इसी अच्छार में २ प्रतिकों (वे स: १६२ १६३) बीर है।
          प्रे-शेंध-प्रदिस ≭।पण च ६।से काचर्च १ १ गीप दूरी व∫वे सं १६३ (व
वचार ।
          निजेन-मधी वच्चार वें २ मीठवां (वे त १६६, १७०४) बीर हैं।
          ४७१६ प्रतिस ६। तथ सं६। के जलामं १६६ जलका दुवी १९। के स २१४२। क
थन्तार !
          निवेच--क्रीवरम्ब वक्क्स ने त्रविचिपि की की ।
         प्र रेक. देवपूजाबीकर<sup>ारामा</sup>) कार्थ । था १५०६३ ६ व । ला-तस्कट । विषय-पूजा । ए
कम्ब×ाने कलार्थ १. ६।५० ती व ११६। कावचार।
         ४७१८, देवपुत्रामाया—सम्बन्ध कावहा । दर यं १७ । सा० १९४१ : इत्र : त्रामान्धियो
नर्थ। विवय-पूजाः रंजमा×। के कमार्थ १०४६ कॉलिक सुती थ। पूर्ता के ते १११ । का समार।
         प्रकृति हैयारिकपूका व्यव से ११। शा १२/८ ईच। बादा-संस्कृत | विषय-स्वा। र
र सम्प्राप्त कल ×ापूर्वी दे देश शाच मणारा
         विश्वेप-- इसी बैडन में एक प्रति और है।
```

४५२ हाय्यालपूर्वा—पंश्यासदेव निष्यं ७ । बाल् ११८८ इ'च । सला-संस्था विषय-पूरा । र नल ४ । के नल ४ । हुनी वे ये ४४४ । स वसार । पूजा प्रतिष्ठा एव विधान माहि य

४७२१ द्वादराप्रतेश्वापनपूजा-देवेन्द्रकीत्ति । पत्र मं० १६ । पा० ११८४३ इ.व. । प्रापा-गण्या । विषय-पूजा । र० यान स० १७७२ माघ मुदी १ । से० वाम ४३ पूर्ण । वे० म० ४३३ । व्य भण्दार ।

१८२२ प्रति स० २ । पत्र स० १४ । ते० गाम र । वै॰ ग० ३२० । हा भण्डार ।

१५०३ प्रति स० ३। पत्र म० १४। मे० मान ४। व० म० ११७। द्व भागार।

५७२४ द्वादशद्यतिद्यापनपूजा-पद्मनन्दि। यत ग० ६। मा० ७३४४ दथ । भाषा-संदर्भ । विगय-यूजा । र०कान ४ । स० गान ४ । पूर्ण । वे० सं० ४६३ । छा भण्डार ।

४७२४ द्वादशप्रतोद्यापनपूजा-भ० जगतकीर्ति । पत्र ग० ६ । मार १०३४६ इध । मापा-सन्द्रत । विषय-पूजा । र० गात 🗙 । ते० नाम 🗡 । पूर्ण । वै० ग० १४६ । च भण्डार ।

४७२६ द्वादशञ्जतोशायन । यत्र ग०४ । या०११है/४३ द प । भाषा-सन्द्रा । विषय-पूजा । र. यान ४ । न० नाप गॅ०१८०४ । पूर्णे । य० ग०११४ । ज भण्डार ।

विरोध-भार्धनदाम ने प्रतिनिधि की की।

४७२७. द्वाटशास्त्रम् स्टाल्राम । पत्र स० १६। मा० ११४४६ ६ न । भाषा-हिन्दी । विषय-पूत्रा । र० मात्र स० १८७६ उपेष्ठ मुदी ६ । स० मान्य स० १६३० मायाः सुदी ११ । पूर्ण । ये० म० ३२४ । क भण्डार ।

विमेय-पन्नातान चौपरी ने प्रतिलिपि की घी।

४७२८ द्वादशागपूजा । पत्र सु० ६ । मा० ११३ ४५३ ६ च । भाषा-हिसी । विषय-पूजा । र० नान ४ । ते० पान मं० १६६६ माद्य गुर्दा १५ । पूर्ण । वे० म० ५६२ ।

पिशेप-इसी वेष्टन मे २ प्रतियां भीर हैं।

४७२६ द्वाहशासरूजा । पत्र सं०६। मा० १२४७ द्वेडचा आपा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल 🗴 । ते० काल 🗴 । पूर्ण । वे० म० ३२६ । का भण्डार ।

विशेष--इसी भण्डार में एक प्रति (वै॰ स॰ ३२७) ग्रीर है।

४८३० प्रति स०२ । पत्र सं०३ । से० बाल 🗙 । वे० स० ४४४ । छ। भण्डार ।

४७३१ धर्मचक्रपूजा-यशोनन्दि। पम स०१६। मा० १२×४३ इ.च । भाषा-सम्युत । विषय-पूजा। र०कान ×। स०कान ×। पूर्णा। ये० स० ४१८ । स्त्र भण्डार।

४७३२ प्रति स०२। पत्र स०१६। ले० काल स०१६४२ फापुरा सुदो १०। वे० स० ८६। ख

विरोप-पन्नालाल जोवनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी।

```
४४६६ वर्शचकपूत्रा—साधुरवासद्वाः पनर्नाः स्थाः ११≻४<sub>६</sub> इचः शासा नस्सः।सस
पुदा। रृपल्य ×ाने कात नं १ १ चैत्र नुदी ह | पूर्णा दे तं १२ । घा त्रघार।
          दिसेय-पे जुसालक्य ने बावरात पाटाची के मन्दिर ने प्रतितिषि की की ।
          ४७३४ मर्गणकपूत्रा----। पर नं १ । या॰ १९४३६ इ.च । शत्य-श्रेष्टत । शिवर-पूर्या
र थल XI के राज XI पूर्ण। वे तं ६ हा धानधार।
          ४.व.१८. भावारीपळ्णाच्या वत्र वं ११ । था ११×१३ ४ च । था।-मंत्रहत । विवय-पूरापित्त ।
र शक्त × । में राम × । पूर्ण । में में १२२ । श्रद्ध बच्चार ।
          ४०३६ व्यक्तारायकामञ्जालक वृष्ट ४। था १११४ ६ व १ वारा-वंसर । विवर-पूरा
शिक्तकार रुक्त×ामे शुक्त×ापूर्वामे वंदरशाच्य प्रधारा
          ४७३७ ज्यारोपस्विति—र काशायर। रवर्गर्थासा १ x४६ हथ। प्रारा-नेस्<sup>त</sup>।
विद्यम-वनिर में भ्यता तथले ना विवल । इ∴नक्त ×। वे. नान ×। बहुर्ल (च सम्बार)
          ४५३८. व्यवसोपस्पिति <sup>च्य</sup>ापत्र वं १६। या १ <sub>४</sub>४६<sub>४</sub> ६व । शहा-नंसरा । <sup>१</sup>९६न
                                                                        । श्रा श्रम्यार ।
विवय-मन्दिर मे भागा तथाने वा विभाग हर नाप ×ा ने वास ×ापूर्ता के सं
           विकेश-इंडी मन्दार ने २ प्रतियों (वे सं ४३४ ४०० ) दौर है।
           ४७६६ प्रतिसं ६) पत्र वं । ते शान सं १६१६। वे सं ११ । स अन्यार।
           ४७४ अजाराध्यविके ***** । यह त । मा १ $xo} ६ व । बारा-बंस्ट । विस्न-
 विकास । र साम 🖈 । में साम में ११९७ । पूर्ता वे सं २७६ । आर जम्मार ।
           प्रथ9 प्रतिसः की पण वं के – ४ । वे कशा × । बदुर्सी वे सं कृत्रा ह अपनार ।
           १५५१, सम्बीयरम्बनाहः । पत्र वं १) या १ XX दक्ष । शता-वरप्र या विवस-पूर्णा
 र सल ≾। से नल ≾। पूर्वी दें रेक्क्से । इत्तथार।
            ४७४२ जम्मीकास्यवाकः "। यत्र सं १। या ११८६ हत्रः) वारा-४स्ट। विशव-पूर्वा
 र नव×।ने नव×।पूर्व।वे रं १० ।४ नमार।
            ४५४४, कम्दीशस्त्रीपपूजा—रहनन्ति । पत्र वं १ । या ११,×१३ ४८। यहा-दल्ला
 विवर-पुरा|र नाल x | वे नाल x | पूर्ण | वे वे ११ | च नवार |
            क्येक-असि जाबीन है।
```

પ્રદર 1

[पूजा प्रतिष्ठा एवं विद्यान सर्वित

1

asl

४७४४. प्रति सं २१ पत्र म० १०। ते० काल स० १८६१ माषांढ बुदी ३। वे० स० १९१। च

विशेष-पत्र चूहों ने सा रखे हैं।

४७४६. नन्दीश्वरद्वीपपूजा । पत्र स०४। धा० म×६ इख्र। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ×। लै० काल ×। पूर्ण। वै० स० ६००। द्या भण्डार।

विशेष--जयमाल प्राकृत में है। इसी भण्डार में एक प्रपूर्ण प्रति (वे० स= ७६७) भीर है।

४४४७ नन्दीश्वरद्वीप रूजा-सङ्गल । पत्र स० ३१ । ग्रा० १२४७ ६ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ते० काल स० १८०७ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वे० स० ४६६ । च भण्डार ।

४७४८ नन्दीश्वरपिक्तिपूजा । पत्र स० ६। मा० ११×५६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १७४६ भादना बुदी ६ । पूर्ण । वे० स० ४२६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-इसी मण्डार मे एक प्रांत (वे० स० ४४७) भीर हैं।

४७४६ प्रति सं०२। पत्र स०१६। ले० काल 🔀 । वे० स० ३६३। क मण्डार।

४७५० तन्दीश्वरपक्तिपूजा । पत्र स०३। मा०१०३ ×५६ इ.व.। मापा-हिन्दी । विषय-पूजा। र०काल × । ने०काल × । मपूर्ण। वे० स०१ ६ द ३। आसण्डार।

४७४१ नन्दीश्वरपूजा । पत्र सं० ६। ग्रा० ११४४ इ.च । भाषा-सरवृत । विषय-पूजा । र० काल ४। के काल ४ । पूर्ण । वे व स० ४०० । व्य मण्डार ।

विकीप-इसी मण्डार मे ३ प्रतिया (वे० स० ४०६, २१२, २७४ ले० काल स० १८२४) भीर हैं।

४७४२ नन्दीश्वरपुता । पत्र मं० ४। ग्रा० ८३×६ इ च। भाषा प्राकृत । विषय-पूजा । २० काल ×। ने० काल ×। पूर्ण । वे० स० ११४२। इस नण्डार।

४७४३ प्रति स० २। पत्र स० ५। ले० काल 🗴 । वे० स० ३४८। इ. मण्डार ।

४७४४ नन्दीश्वरपूजा पत्र स० ४१ मा० ६४७ इ च १ मापा-ग्रपन्न श । तिपय-पूजा । र० माल × । ते० माल × । पूर्ण । वे० स० ११६ । छ मण्डार ।

विशेष--लक्ष्मीचन्द ने प्रतिलिपि मी थी । संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं।

४७४४ नन्दीश्वरपूजा । पत्र सं • ३१। प्रा० ६५×५६ इ न। भाषा-सस्कृत, प्राकृत। र० काल ×। ले • काल ×। पूर्ण। वे • स० ११६। ज भण्डार।

४७४६ नन्टीश्वरपूजा । पत्र स० ३०। मा० १२४८ इ च । मापा~हिन्दी । विषय-पूजा । र० मात ४ । ले० काल स० १६६१ । पूर्ण । वे० स० ३४६ । स्व मण्डार ।

```
    पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान समित्

RES ]
          ४७१७ सम्बद्धिरमिक्यापा-प्रशासास । पत्र वं २६। मा ११६X७ ६ व । भाग-वियो
विवर-पूजा।र्वास सं १८९१ । के काल सं १६४६ । पूर्वाये सं ३६४ । क मण्डार ।
          ४०४८. सन्दीश्वरविद्यान—जिलेश्वरदास । वत्र तं १९१ । थाः १९४०३ इत्य । शाः दिस्यै ।
विषय पुष्पा । ए काल सं १६६ । के नामा सं १६६२ । पूर्णा के सं ३६ । का अध्यार ।
          मिलेय--- निकाई एव काराव में वेचल १६) र कर्ष हुने थे।
          ४७१६ जन्तीनारक्योचापनपूचा--जन्दिभग्राहण्यसं २ । सा ११३/xx३ इत्र । बादा-चंत्रणी
पियर-पूरा। र∷कल ×ाणे काल ×ापूर्ण (में डं १६५) च थव्हार।
          ४०६ नम्बीचामयोक्तपनपूर्वा—सनन्तकीर्तिः वयं तं १६ । बा बर्द्धप्रदर्वा वर्गाः
र्वसम्पः विषय-पूरा । ए जन्त ×ाने जाप सं १०१० साराज दुरी ३ । क्यूसी । वे २ १७ । इ.चमारा
          विचेच---इसरा वस नहीं है। समस्पूर में प्रतिविधि हुई की।
          ४७६१ नम्बीन्धरमयोग्रापनपृत्राण्या पत्र सं ४ (या ११<sub>६</sub>×३ इ.च.) बाला-संस्था निस्त
प्रजा∣रंबन्त×ाते कन×ाप्रकीते ते ११७ (काच्यार)
           ४५६९. नम्बीयाणनोद्यापनपूत्रा<sup>च्या</sup> पत्र वं १ । या ४८६ इ'व । जारा-हिनो । विका-
द्रमा। र तल ×। ते कस्वते १ ६ जलका शुरी थ। पूर्छ । वे वं १११ । अस्कारा
           विश्वेच-स्योगीराम श्रांबसा ने प्रतिक्रिय को की ।
           ४५६६ जन्दीयरपूर्वाविकाय--देवचन्द्रायम् । यस् ४६। सा क्ष्रूप्रद्रश्च । वारा-विकी।
निवर पूर्ता:र नोल ×ाने जलक १ ६ चलन बुदी १ । पूर्वाचे सं १७४ । स्टब्सास
           विमेय-क्टोहमास पांसीवाल ने वनपुर वाले धानसाल बहादिका के अधिनिधि कराई वी ।
```

प्रकाश सम्बद्धानीमनोत्तापवयुका ^{०००}। वन व १ वाक ×४ ईच । कसा-संस्ट । विस्त-इसा १ वन्त × । ते काल वे १९४० । दुर्थ । वे १९६३ व्याक्तार ।

विमेच—इसी सकार में युव जीत (वें सं के के) और है।

प्रथ4 स्थानसम्बद्धानियाम—सङ्गाद्वापया या १ ईश्रद्भेत्रसास्थनासंस्थाः।विस्त-दुसार कला×ाने नान×ादुर्शावे पॅपेरासाम्बद्धाः।

४८६६ असि सः शायम र्लं ६ ते योग×ावे लंद्या आवलार। विकेश-स्थान कर पर समझ्याणि है समाणित कही साति के लिए लिस सोर्युट को दूरा करनी

विवेद— बाहिट, यह निवा है ।

भण्डार ।

४७६७ नवप्रहपूजा । पत्र स०७। ग्रा० ११३ ४६३ ६ श्रा । भाषा-सस्तृत । पिषय-पूजा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स• ७०६ । श्रा भण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार मे ५ प्रतियां (वे० स० ४७५, ४६०, ४७३, १२७१, २११२) मीर है। ४८६= प्रति स० २। पत्र स० ६। ते० काल स० १६२= ज्येष्ठ बुदी ३।वे० सं० १२७। छ

विशेष-इसी भण्डार में ८ प्रतियों (वे॰ म॰ १२७) भीर हैं।

४७६६ प्रति स० ३। एव स० १२। ले० माल स० १६८८ कार्तिक बुदी ७। वै० स•। २०३ ज भण्डार।

> विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतिया (वे॰ स॰ १८४, १६३, २८०) प्रीर हैं। ४७७० प्रति स० ४। पन स० ६। ते॰ काल ×। वे॰ स॰ २०१४। ट मण्डार।

१७७१ नवमहपूजा । पत्र स० २६। घा० ६×६३ ६ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० कान × । ते० कान × । प्रपूर्ण । वे० स० १११६ । ऋ भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० ७१३) घीर है।

४७८२ प्रति स०२ । पत्र स०१७ । ले॰ काल 🗴 । वे॰ स० २२१ । छ भण्डार ।

४७७३ नित्यक्रत्यवर्णन । पत्र सं० १०। मा॰ १०३४५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-नित्य करने योग्य पूजा पाठ हैं । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । मपूर्ण । वै० सं० ११६६ । स्त्र भण्डार ।

विशेष-- देश पृष्ठ नहीं है।

४७७४ नित्यिकिया । पत्र सं०६८ । मा० ८ ई×६६ च । भाषा सस्कृत । विषय~निर्द्य करने योग्य पूजा पाठ । र० काल ४ । ले० काल ४ । मपूर्ण । वै० स० ३६९ । क मण्डार ।

विशेष--प्रति सक्षित हिन्दी ग्रर्थ सहित है। ५४, ६७, तथा ६८ से भागे के पत्र नहीं हैं।

४७ ४ तित्यनियमपूजा "। पत्र स० २६। ग्रा० ६ × ५ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । सूर्ण । वे० स० ३७५ । क भण्डार ।

विदोप—इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे० स० ३७०, ३७१) झौर हैं।

४७७६ प्रति स०२ । पत्र स०१० । ले० काल ४ । वै० स० ३६७ । इन् भण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में ४ प्रतिया (वे॰ स० ३६० से १६३) भौर हैं।

४७७७ प्रति स० ३। पत्र सं० १०। ले० काल स० १८६३। वे० स० ४२६। वो मण्डार।

```
्रिका प्रतिष्ठा एव विवाद स्पर्वत
224
          ४७६८. जिल्लीवसम्पूका----। पत्र सं ११ | सा १ 🗙 ७ इ.च । आवा-बंस्टर हिन्तो । विरय-
पूरा। रंकल ×। के काव ×े पूर्ण | वै सं ७१२ । का वस्तार ।
          विशेष-- इती बन्दार में २ प्रतिनां (वे वं ७० १११४) शीर है।
          ¥कार मदिसं २। यम मं २१। में काल तं १३४ आर्तिक सुवी १२। वे तं १६०। क
सभार 1
          विक्रेय-इसी वस्तार ने एक प्रति (वे सं ६६६) भीर है।
          warro प्रतिका के । पर सं काले काल सं १६६८ । वे सं २२२ । अस्थार ।
          विदेश-श्रद्धी क्यार में अधिवां (वे र्स १२१/२ २२१/२) शीर है।
```

४४८१ जिलानिकायुका--पं+ सदाप्तक कास्त्रवीदाकः। यस तः ४१। याः १६×५२ हवः। वारा-हिन्दीनचं| विवय-पूर्वा) र: तस्त वं १८२१ नाव लुग्री २ । वे कल्प वं १८२१ (पूर्वावे ठं४ १। म

STATE 1 प्रश्नार प्रतिसं राज्य वं १६। ते काल वं ११९ वालय तुरी र वि वं १७०। व बस्बार । विकेश-प्रती जमार ने एक गति (ने वं १७६) ग्रीर है।

पुश्चम् प्रतिस दे। यन मं २६। में यक्तानं १६२१ बाद मुदीदादे संदर्भाण

a wate 1 विकेश-इसी कथार ने एक प्रति (नै वं ३७) भीर है। प्रभव्यक्ष प्रतिस्थे क्षापण से देश कि जान से १६६१ लेख नुवीका दे से २१४ कि

वचार i रिकेर-एव पढ़े हुने एवं नीर्या है।

> 9445 प्रतिस् द्रावनवे प्रशंते नल×। वे व शास्त्रभवारः। रिक्षेत्र-इतका पुट्टा बहुत कुच्यर एवं अवर्तनी ने रखने नोव्य है ।

प्रभव्यक्षे प्रतिसः कृष्याचे प्रशासि सम्बर्ध १९३६। वे ते १०१९ व्यापनारी क्ष्मक विस्त्रविवसपुत्रामात्रा कारण । वस व १६१ मा १ १८७ ४ व १ शता-क्रियो | विस्त

5 का र पान ×ांके पान वे १९३५ भारता पूर्वी ११ ३ पूर्णा के संक⇔ा का अच्छा रा

क्रिके-रिवरसास चांद्रशब ने ब्रविनिधि की वी !

प्रभारत प्रक्रिया का प्रकार व । में काम X (पूर्ण) में में Ye (सामग्रार) विकेश---वनपुर ने बुक्तार नी बहेनी (संपीव सहेती) वं १८५६ में स्वापित हुई नी । काली स्वापना

हे समय का बनाया हुआ जनन है ।

४७८६. प्रति स० ३। पत्र सं० १२। ले० काल स० १६६६ भादवा बुदी १३। वे० स० ४८। ग

४७६० प्रति स० ४। पत्र स० १७। ले० काल स० १६६७। वे० स० २६२। म भण्डार। ४७६१. प्रति स० ४। पत्र स० १३। ले० काल स० १६४६। वे० स० १२१। ज भण्डार। विशेष- प० मोतीलालजी सेठी ने यति यशोदानन्दजी के मन्दिर में चढाई।

४७६२. नित्यनैमित्तिकपूजापाठमग्रह । पत्र स० ५८ । ग्रा० ११×५ इच । भाषा-सस्कृत, हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । र० काल × । के० काल × । पूर्ण । वे० स० १२१ । छ भण्डार ।

प्रथ६३. नित्यपूजासमह । पत्र स० न । मा० १०×४३ दश्च । भाषा-सस्कृत, मगभ्र म । विषय-पूजा । र० काल × । ने० काल × । पूर्णै । वे० म० १७७७ । ट भण्डार ।

४७६४ नित्यपूजासप्रह । पत्र स० ४ । मा० ६६ ४४३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० १८५ । च भण्डार ।

४७६४ प्रति सट २। पत्र स० ३१। ले० काल स० १६१६ वैद्याल बुदी ११। वे० स० ११७। ज ्भण्डार।

४७६६ प्रति स०३। पत्र स०३१। ले० काल ×। वै० स०१८६८। ट भण्डार।
विशेप—प्रति श्रुतसागरी टीका सहित है। इसी भण्डार मे २ प्रतिया (ये० सं०१६६५, २०६३)
भीर हैं।

४७६७ नित्यपूजासमह । पत्र सं०२-३०। मा० ७३ ×२५ इ च । भाषा-सस्वत, प्राकृत । वपय-पूजा। र० काल × । ले० काल स० १९५६ चैत्र सुदी १ । म्रपूर्ण । वे० स० १८२ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिया (वे स० १८३, १८४) मौर है।

४७६८. नित्यपूजासग्रह ा पत्र सं० ३६। मा० १०३८७ इ च । भाषा-सस्कृत, हिन्दी। विषय-े पूजा। र० काल 🗙 । ले० काल सं० १६५७। मपूर्ण। वे० स० ७११। स्त्र मण्डार।

विशेष—पत्र स० २७, २८ तथा ३५ नहीं है कुछ पत्र भीग गये हैं। इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ सं॰ १३२२) भीर हैं।

४७६६. प्रति स०२। पत्र सं०२०। ले० काल ×। वे० स०६०२। च भण्डार।
४८०० प्रति स०३। पत्र स०१८। ले० काल ×। वे० स०१७४। ज भण्डार।
४८०१ प्रति स०४। पत्र स०२-३२। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वे० स०१६२६। ट मण्डार।
विदोप—नित्य व नैमित्तिक पाठों का भी संग्रह है।

```
र्धस ] [ पूजा मसिद्धा पर्यं विधान मार्थितः प्रश्ने प्रयाप स्थितः प्रयोग प्रयाप स्थाप स्था
```

४००६ मिर्टिस् रे। प्रवर्धारा के स्थल ×ावे संदर्भ क्राक्यारा निमेर—स्थालक्यार मेर प्रक्रिया (वे संदर्भ ६६१) और हैं। ४८६ मिर्टिस् रे। प्रवर्ध रेश के कल ×ावे संदर्भ क्यारा ४८६ मिर्टिस् भी प्रवर्ध रेशे रंगके कल ×ावपूर्ण के संदर्भ ट क्यारा निकेर—स्थित प्रक्रिकारिक क्यार्टि—

वप=१ निर्मायकनायकन्त्रा^{™™™}। यत्र तं २। था १९४६ ६ व । बारा--वेस्टर । ^{हिस्स} दृद्रार कल ≾ाने काल ≿ापूर्णी वे र्ष ४१० । का व्यवस्थ

प्रस्त ७ सिर्वासक्ष्यकृताः । पत्र व १ । वा ४७ दवा वापा-संस्त, प्रक्रपः निर्म-पूजा । रःकमः ×ाते कम्प वं १६६ समस्य सुर्वा । रे सं ११११ । बर वचार ।

विदेश—स्वारी प्रतिनिधि जैनानयन चेताची वै हैस्वचाला चारवाह से वर्धा दी ; प्रसम्बद्ध निर्माक्षकंत्रसक्षणुका—त्वसंच्यान्य । यदः सं: १६ | याः १६% इसः । मना-विद्धाः

प्रसन्य निर्मायक्ष्यमञ्ज्ञपुरा-न्यक्षप्रयम् । पर सं १६। या १६८७ इस । समा-दिसी दिस्स-पूरा। रं कल सं १११६ कानिक बुधै १६। में कल ×। पूर्व । से ४६ । राज्यमा ।

प्रसः ६. प्रश्चित्तं कृष्यान्तर्वद्ववर्षाने कालार्थः १६२० विषे वं १७६ । इत्र्यान्तरः । विकोर-स्पृत्तीयसमार में पेत्रवियों (वे वं १०० १०) धोर है। प्रसर्ग प्रतिसंग्वे प्रस्ताने राज्याकः १०१६ विष्युत्ते वृद्धिः वृद्धाः

क्षमारः। विकेश-स्वाहरणांत पानवी वे अधिनिर्दि वी वी । इन्हास्य बोहरा वे पुलक निवासरं मेवरान हरी रिका के समिरत में पदानी । हमी समार ने १ अधिन्यें (वे क ६ ४, ६ ७) धोर हैं।

१६६११ सनि सन् ४१ वण में १६ कि वाल है १६४० कि से १६१ । सूनपार। स्थिर - कुरालम नोवे चीवरी वाल कृपी वे स्थितियों से हो। १४६१९ सन्दिस्त हो १९६ के विकास स्थापन स्यापन स्थापन स्थापन

४८१३ निर्वाणाचेत्रपूजा ' । यत्र स०११। मा०११४७ इच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र॰ काल स०१८७१। ले॰ काल स०१६६६। पूर्ण । वे॰ स०१३०५। स्त्र भण्डार।

विशेष--इसी भण्डार मे ५ प्रतियां (वे० स० ७१०, ८२३, ८२४, १०६८, १०६६) मीर हैं।

४८१४ प्रति सट २। पत्र स० ७। ले० काल स० १८७१ भादवा बुदी ७। ते० स० २६६। ज भण्डार। [गुटका साहज]

४८१४ प्रति स०३। पत्र स०६। ले० काल स० १८८४ मगसिर बुदो २। वे० स०१८७। म

४८१६ प्रति स० ४। पत्र स० ६। से० काल ×। धपूर्ण। वे० स० ६०६। च भण्डार। विशेष— दूसरा पत्र नहीं है।

४८१७ निर्वाणपूजा ' "। पत्र स० १। भाग १२×४ ६ च । भागा-सम्द्रत । विषय-पूजा । र० काल × । पूर्ण । वे० स० १७१८ । ध्र भण्डार ।

४८१८ तिर्घाणपूजापाठ-सन्तरगलाल । पत्र स० ३३। ग्रा० १०% ४४३ इच । भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल स० १८४२ भादवा बुदी २। ते० काल स० १८८८ चैत्र बुदी ३। वे० स० ८२। स्त भण्डार।

४=१६ नेमिनाथपूजा—सुरेन्द्रकीत्ति । पत्र स॰ ५ । मा० ६×३३ इख । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स॰ ५६५ । स्त्र भण्डार ।

४८२० नेमिनाधपूजा । पत्र स०१। ग्रा०७४५३ दश्च । भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स०१३१४। ऋ भण्डार।

४८०१ नेमिनाथपूजाष्टक--शभूराम । पत्र सं०१। मा०११६४५३ इ.च । भाषा-सस्कृत । विषय--पूजा । र० काल × । ले० काल × १ पूर्ण । वे० स०१८४२ । इस भण्डार ।

४=२ / नेमिनाथपूजाष्टक । पत्र स०१। ग्रा० ६३ ×५ इ.च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्णा । वे०स०१२२४ । ऋ मण्डार ।

४=२३ पद्धकल्याग् कपूजा—सुरेन्द्रकीर्त्ति । पत्र स०१६। घ्रा०११३×५६ व । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र०काल × । ले०काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७६। क भण्डार ।

४८२४ प्रति स०२ . पंत्र स०२७ । ले० काल स०१८७६ । वे० स०१०३७ । स्त्र भण्डार । ४८२४ पद्धकत्याणकपूजा—शिवजीलाल । पत्र स०१२६ । स्रा० ८४४ इ व । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ४५६ । स्त्र मण्डार ।

```
    पूजा प्रतिद्वा एक विवास समित्य

≵●● ]
          ४८२६ पक्रकनसम्बद्धा—काङ्ख्यायाः।पत्र तं ३६१ मा ३२×० इत। क्षता-वंतरः।
नियम-पूजा। र कान तं १६२३ । ते भान 🗙 । पूर्ण । वे वे १२ । सामध्यार ।
         ४८२७ प्कारम्यायकमूबा—गुरुकीचि । पत्र तं २२ । सा १९४१ ६व । वाला-संसर।
दिशव-नृता∣र शल ×। ते कल १६११ । पूर्व (वे ∉ १४ । या वच्छार ।
          ४८९८, प्रमुक्तमास्मर्म्या —बादीमस्तिद्। यत्र शं१ । सा ११८६ इत्र । त्रादान्तरात्।
```

विचर-पूर्ता।र कल X। के नल X। पूर्वा वे रंदश व्याच्यार। ४८७६. प**क्रकर**गायुक्त्या—मुक्तानीति। यत्र वं ७-२८। था ११५×१ इव। बाता-स्तरः। विवय-पूजा। ए काल ×ाने नाव ×ायपूर्ण। वै वं ३ ३ । का वच्यः ए ।

४८६ प्रमुक्तना**यञ्**का—सुधासागर। यत्र ६ १६१ मा ११८४३ इ.स.) कारा—संस्त्री दिस-दूरा} एंदान ×ादे कल ×ादुर्छ (वे वं ४६) कृतकार ।

४८६१ रज्ञाध्यस्य सम्याणणणाः वत्र वं १६।या १३×४ रखः त्रारा-संस्तृतः निर्ण-पुदा। र⊱कल ≍ाकै बाव टंइट बावदा दुरी हो। दुर्दा दे १ ७ (का जमार।

⊁द\$ ९, प्रति सः दे। पत्र तं १ । के काम संदर्भ दि वि वे १ । अस्वासार । पूद्द§ प्रति संदेश पत्र कंका के त्रव×ादे वं ३व४ । क्रायमार ।

विकेष--वृत्ती प्रचार में एक गति (वे वं १०६) भीर है।

प्रसिध प्रतिसं धो पत्र वे २२ ते कला वं १८३९ सम्बन्ध बुदी ६ । स्टूर्स (वे सं १९६ क्ष मध्यार । विशेष-वदी लखार में २ प्रक्रिय (वे थे १२७,१) धीर 🛭 i

प्रदर्भ प्रति सक्ष क्षा व्यव है (४१वे काल से १०६१) वे से १६६। व बनार। प्रकार प्रति सं कृतिका हर कि कम्म सं १ २११ के सं २६११ स अनवार, विकेष-पूरी चच्चार ने स्थापि (वे वे १११) सीर है।

प्रदर्भ प्रमुख्यानाकपूरा-कोटेबाक नियक । पन वं १८। था ११/८ र म । मधा-रि^{र्}ी दिस्त-पूर्वा र चलावं १६१ बलगानुदी१२।वे चलावं १६१२।दुर्खावे दं ७२ ।धासवार।

विक्रीय--- ब्रोटेबाल वनारस के सूचे वाले के। इसी कन्धार में २ ग्रिटेबर्स (के सं ६७१ ६७१)

वीर 🕻 । प्रमरेषः प्रमुख्यस्थास्यस्याः—स्थणन्यः । पणः सं १ ४ । साः १९४१ । नाताः—विश्वी । विश्व-पूदा।र कला×।के कलावं १ ६९।पूर्व।दे वं १३७।साजनार।

४८३६. पद्धकल्याग् कपूजा — टेकचन्द । पत्र स० २२ । मा० १०३×५० इ व । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १८६७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६२ । स्त्र भण्डार । विशेष—इसी भण्डार मे २ प्रतिया (वे० स० १०६०, ११२०) ग्रीर हैं ।

४८४० प्रति स०२ । पत्र २०२६ । से० काल स०१६५४ चैत्र सुदी १। वे० सं० ५०। ग

४-४१ प्रति स० ३ । पत्र सं ० २६ । ले० काल स० १६५४ माह बुदी ११ । वे० स० ६७ । घ

भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष-- किशनलाल पापढीवाल ने प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ स॰ ६७)

श्रीर है।

भण्डार ।

४८८२ प्रतिस०४। पत्र स०२३। ले० काल स०१६६१ ज्येष्ठ सुदी१। वे० स०६१२। ख

४=४३ प्रति स० ४ । पत्र स० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २१४ । छ भण्डार । विशेष—इसी वेष्टन में एक प्रति भीर है ।

४८४४. प्रति स० ६। पत्र सं० १६। ले० काल ४। वे० स० २६८। ज मण्डार।

४५४. प्रति स० ७ । पत्र स० २५ । ले० काल ४ । वे० स० १२० । क भण्डार ।

४८४६ प्रति स० = । पत्र स० २७ । ले० काल स० १६२८ । वे० सं० ५३६ । व भण्डार ।

४८४७ पञ्चकल्याग्यकपूजा-पन्नालाल । पत्र सं० ७ । मा० १२×८ इन । भाषा-हिन्दी । विषय-दूजा । र० काल सं० १६२२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ३८८ । व्ह भण्डार ।

विशेष-नीले काग में पर है।

४८८८ प्रति स०२। पत्र सं• ४१। ले० काल × वे० स० २१५। छ भण्डार। विशेष—संघीजी के मन्दिर की पुस्तक है।

४८४६. पद्भकल्याण्कपूजा—भैरवदास । पत्र स० ३१ । आ० ११३४६ इ व । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल सं० १६१० भाववा सुदी १३ । ले० काल स० १६१६ । पूर्ण । वे० स० ६१५ । च मण्डार ।

प्रमध् पद्मकल्याग्कपूजा''' '। पत्र स० २५ । भा० १४६ इ.च । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा। र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स० ६१ । ख्र मण्डार ।

> ४८४१ प्रति स० २ | पत्र स० १४ | ले० काल स० १९३६ | बे० स० १०० | स्त्र मण्डार | ४८४२ प्रति स० ३ | पत्र सं० २० | ले० काल 🗴 | बे० स० ३८६ | रू भण्डार | विवोध — इसी भण्डार मे एक भपूर्ण प्रति (वे० स० ३८७) भीर हैं |

```
( पूजा वतिष्ठा एवं विधान शास्ति
```

४०२]

क्यार ।

४८८३ प्रतिसः क्षायत्र तं १९ | ते वश्र्य ×ावे तं ६१६। च नगार | विदेव—सो नगार में एक प्रति (वेश्र्यं ६१४) धीर हैं।

४०३४ राष्ट्रमात्वा वं चे चावा र'४० रखा शता हिनो किस-रूगा र राज ×ार्ग ना ×ार्था वे चे चे चारा क्यारा

४८३४ दशक्षत्राक्ष्यां मध्यासः । वस्य वस्य देशाचा १ ४६६ दया सना-निसरी विषय-द्वार राज्य ×) वे दल × । दुर्गावे चे १६४ । स्व स्थारः ।

इत्याद् प्रतिसंदि । वर्ष है । वे बाल संदृष्ट्रा हे संदृष्ट् । सामग्री । १८८७ वक्षणावकास्थालका—संदृष्टास्थाल । वर्ष १९८० १९८९ व । सामग्रीसार

क्ष्मा क्ष्यास्थ्यक्ष्यस्थान् मार्वस्थान् । पत्र संदेशका ११८६ व । यसान्तेसर्वः । पिरस-पुरागः राज्यान् वाला संदेशकार्यक्षितः सुर्वाक्षः संपर्वे । अस्य स्थापः

विकेश—सामर्थ नैतिकार के छिप्प वांडे हु वर के परमान प्रतिनित्त हुई वो । ४-४८:. क्ष्मपरसेग्रीहक्षापव------) वन सं ६१। या १९४८ हु व । बाल्--संस्तृत । विकर-पूर्वा

र कार हे देशके बक्त प्राकृतिक है पर क्षितार है एटर हवी बारा-वर्सिया एक प्र

४८६६ वासप्रतिष्ठीसमुख्यसूत्राच्याच्या वय ठ ४। शाः १८६६ इयः। जाता हिसी। विर्य-दुरा । र याल ४ । वे याल ४ । पूर्ण १४ वं १६६६। इयायार । १८८१ - सामप्रतिरोधिका — ४ सामध्यमः। वसलं १९८४ । १९८५ व ४ । प्रतास्ति विर्य

प्रमद् पक्कपरमेश्रीदृशा—म शुसममङ्गापन वं १४। बा ११,४६६ व । शता बंदट । दिपर-दुरा। र नाम ×। के रुख ×। १ई । वे रिक्क) स्व क्यार।

प्रस्कृति संदेश वर्षे ११ कि नक्द ×ावे शं ११६। ज्वासार। १ स्वरंग प्रति संदेश कि देश के नक्द ×ावे संदेश (ज्वासार।

ध=६६ प्रवासनेश्चिष्मा—क्योनिया पर वं ६६। या १९०६३ इव | सन्त-स्वय | नियम-पूर्वा | र सन्त × ते पान वं १०६१ पानिय पुर्वा ३ वं दश्या का स्थार।

पितेर—कम्प की प्रतिविधि बाइनहासामार ने वर्षावहुद्दा के वं नानेह्य त्या के क्कार्य हुई थी।
भूम्म् भू प्रति सः १। पण यं १६। ने कमा सं १ प्रश् । ने क ४११ | कमा स्वरूप विकेर—कुल बाव में जानपीयान ने प्रतिक्षित भी भी।
भूम्म् भूति सं १। पण ४ ४४। ने कमा सं १ ०६ मंत्रसिद सुरी १। वे सं ११। म

अन्तर्भ प्रति सं भावन सं भरे कि काम सं १ रहा के सं ११७ व्यासार । विकेर-स्त्री स्वार के स्वत्र विकित स्वत्र भीर है। पूजा प्रतिष्टा एव विधान साहित्य]

४=६७ प्रति स० ४। पत्र स० ३२। ते० काल X। वै० स० १६३। ज भण्डार।

४=६= पद्भपरमेष्ठीपूजा । पथ स०१४। गा०१२×४। भाषा-सस्मृत । विषय-पूंजा। र० काल ×। ले॰ काल ×। पूर्ण । वे॰ स॰ ४१२। क भण्डार ।

४८६६ प्रति स०२। पत्र स०१७। ले० काल स०१८६२ प्रापात बुदी ८। वे० सं० ३६२। इट मण्डारे।

४८, प्रति स० ३। पत्र म० ६। ले० काल X | वे० स० १७६७। ट भण्डार।

४८७१ पद्धपरमेप्ठीपूजा-टेकचन्द् । पत्र स० १५ । मा० १२×५६ इद्ध । भाषा-हिन्दी । विषय-

४८७२. पद्भवरमेष्ठीवृज्ञा — डाल्र्राम । पत्र स॰ ३४ । म्रा० १०३×१ इ च । मापा -हिन्दी । विषय-वृजा । र० काल स० १८६२ मंगसिर बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वै० स० ६७० । स्त्र भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० १०५६) भीर है।

४८०३ प्रति स॰ २। पम म० ४६। ते० काल स० १८६२ ज्येष्ठ सुदी ६। वे० स० ५१। ग भण्डार।

४८५४ प्रति संघ ३। पत्र संब ३४। तेव काल सव १६८७। वेव संव ३८६ । इं भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (के० स० ३६०) भीर है।

४८७४ प्रति स०४। पत्र स०४४। ले० काल 🗙। वै० स० ६१६। च भण्डार।

४८७६ प्रति स० ४। पत्र स० ५६। ले॰ काल स० १६२६। वै॰ स० ५१। व्य पण्डार।

विशेष-अन्नालाल सोनी ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी।

४८७७ प्रति स०६। पत्र स०३४। ले० काल स०१६१३। वे० स०१८७६। ट भण्डार। विशेष—ईसरदा मे प्रतिलिपि हुई थी।

४८७८ पद्भवरसेष्ठीपूचा । पत्र स० ३६ । मा० १३×४ १ इव । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । द० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० ३६१ । स भण्डार ।

४८७६ प्रति सण्य। पत्र स० ३०। ते० कॉल ४। वे० स० ६१७। च भण्डार।
४८८० प्रति स० ३। पत्र स० ३०। ते० काल ४। वे० स० ३२१। ज भण्डार।
४८८२ प्रति स० ४। पत्र स० २० । ते० काल ४। वे० स० ३१६। जे भण्डार।
४८८२ प्रति स० ४। पत्र स० ६। ते० काल स० १६८१। वे० स० १७१०। ट भण्डार।

विशेष-सानतराय कृत रातत्रय पूजा भी है।

```
    पूजा प्रतिया एव विवास स्प्रीत

X+¥ ]
            भ्रम्मारं पद्मकासम्विषुकाम्मम्भा पत्र सं ६ | सा १८० ६ व । जाना-हिन्छे । विशव-पुत्रा । र
```

रल X | के बाल X | पूर्ण विंत १२१ । आह मध्यार ।

४८८-४ प्रश्नमञ्ज्ञकपृत्राः व्यक्त १८। सः ४४ दश्च (थाना-हिन्दी) विदर-पृत्री ।

नल X । के नल X । पूर्वादे में २१४ । मा भणार । प्रयास पञ्चमासम्बद्धप्रतिमधोधापमपूजा—स ह्योग्द्रकीर्ति । रच में ४) वा ११४९ १४

मसा∸कस्त्वः दिवक–नुताः र कम्पतः १०२० जस्या युसे ठाने कम्प ४ । पूर्णावे वं वर्गाः वधार । प्रक्राई प्रतिसं २ । वर सं४ । वे वाल ४ । वे वं ३१७ । इन नवार ।

प्रकाश प्रति सः ६। पर वं ६। में काल सं १००३ सालक दुरी ७। वे सं १६ । मचार । विमेव---वहारणा धन्तुमाव वे तथाई बयपुर में श्रीतिविधि थी थी । इती बच्चार ने इक प्रीव (वे वं

१६६) मीर है ! थ्रक्रकः स्रति स० ४ । पत्र संदेशिक काल × । वे वं ११७ । ब्रू कलारा प्रकार मित्र स्थापन क्षा में काल क्ष १०६९ अलल दूरी द्रांदे विं (शर्म)

क्ष्मरार 1 विदेश---वरपुर नवर ने थी विवसनाथ वीलालय में पुत्र ही एकल के असितियि की की।

४वडः पञ्चनीत्रवर्षा—देवेग्यकीचि (चन तं ६। या १९८६६ ६ न। धरा-संसर। ^{हर} दुता। र सम्ब×। ने समा×। दुर्खावे वं दर्शकालकार।

४०८३ पद्मगीत्रदोषापन—नी इर्वेकीर्थिः। पत्र र्टक। बा ११४२ इतः वना-नर्पर विकम्पनार तल ×ाके क्यार्थ १० मलीव लुग्ने ४ । पूर्णा के वा ६६व । क समारी

विकेष---कानुरान ने जीतीयरि की वी ! प्रकार-प्रविद्य २ : पत्र र्वयः के काल्य १६१२ वालोल कृष्टेश के तेर ⁽¹

west L क्षमा६ मतिस् ३।वद वे ७।धा १३,४६३ ६व (घलस≔बल्ला) विव€-पूर्वा) ^र क्सन ≾ाने पाल से १८१२ वर्तीक दुरी का पूर्वा वे वे ११७ । जा जन्मार (

४८६४ पद्मतीक्वोसापनपृता^{.......}। यत्र वं १ । धा ब्यू×४ इ.च । वत्रा- इत्रुट । स्वि

1्या (र कल X (वे कल X र पूर्व (वे त रहे) स्वयंपार। **रिचेद--वानी वारावन सर्वा ने मंतिरित्रि की थी**।

पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य]

४८६४ प्रति स०२।पत्र स०७।ले०काल स०१६०५ घासोज बुदी १२।वे०स•६४। म भण्डार।

४८६६ प्रति स०२ । पत्र स०५। ले० नाल ४। वै० स०३८८। भण्डार।

४८६७ पद्धमेरुपूजा—टेकचन्द । पत्र स० ३३। मा० १२×८ इद्ध । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३२ । स्त्र भण्डार ।

४८६८ प्रति स०२। पत्र स०३३। ले० काल स०१८८३। वे० स०६१६। च मण्डार। ४८६६ प्रति स०३। पत्र स०२६। ले० काल स०१६७६। वे० स०२१३। छ भण्डार। विशेष-प्रजमेर वालों में चौबारे जयपूर में लिखा गया। कीमत ४॥॥)

४६००. पद्धमेरुपूजा-द्यानतराय । पत्र म०६। मा०१२×५३ इख । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स०१६६१ कार्तिक मुदी द । पूर्ण । वे० सं० ५४७ । स्त्र भण्डार।

४६०१ प्रति स०२। पत्र स०३। ते० काल ×। वे० स० ३६५। रू मण्डार।

४६०२. पश्चमेरुपूजा-भूघरदास । पत्र स० ८ । मा० ८३४४ इ च । भाषा-हिदी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४६ । श्च भण्डार ।

विशेष—भन्त में सस्मृत पूजा भी है जो मपूर्ण है। इसी अण्डार में एक प्रति (वे० स० ५६६) भीर है। ४६०३ प्रति स०२। पत्र स०१०। ले० काल ×। वे० स०१४६। छ भण्डार। विशेष—चीस विरहमान जयमाल तथा स्नपन विधि भी दी हुई है।

४६०४ पद्धमेरुपूजा-डाल्राम । पत्र स० ४४ । मा० ११×५ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १६३० । पूर्ण । वे० स० ४१५ । क मण्डार ।

४६०४ पद्धमेरुपूजा—सुम्वानन्द । पत्र स० २२ । ग्रा० ११×५ इन । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० म० ३६६ । क भण्डार ।

४६०६. पञ्चमेरुपूजा । पत्र स०२। मा० ११४४३ इ.च । मापा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । पूर्ण । वे० स० ६६६ । आ मण्डार ।

४६०७ प्रति स०२। पत्र स०५। ले० काल ×। मपूर्ण। वे० स०४५७। च्न मण्डार। विशेष—इसी भण्डार में एक मपूर्ण प्रति (वे० सं०४७६) मीर है।

४६०८ पश्चमेरुउद्यापनपूजा—भ०रल्लचन्द् । पत्र स० १ । ग्रा० १०१ ×५ इ च । मापा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स० १८६३ प्र० सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० २०१ । च मण्डार । ४६०६ प्रति स० २ । पत्र स० ७ । ले० काल × । वे० सं० ७४ । च मण्डार ।

र नाव ×। ने नमा ×। पूर्ण । वे व ११७६ । व्यावप्यार | - विस्त्र— स्रोतिनेत्रत क्या भी है |

विधेर—स्योगिनेशय दुवा मी है। ६६१६ पद्माविदेशानिक——। यथ वे १७ । सा १ द्वेश्वर इथा वाया-सीस्ट्ट। विस्न-पूर्ण। र मानं×ाने कम्ब ×ा दुर्खो में व २६६। क्षा सम्बाद ।

र काल X | त कम्ब X | 20 | व व प्रवास्त्र | रिकेट--प्रति वर्णव तरिव है | | प्रदेश-- प्रवासीक्युक्तामं व पृत्रां व्यास्त्र | १ | व व १४ | वा १ | ४७ इ.व | करा-संस्त्र |

विषय-पूजा र क्या × । वे कार × । पूर्व । वे थं ४३ | वा जवार | ४६१८ प्रस्तिवासपूजा-विविच शिक्षि (वेर वे ४) वा ११×६६ १४। वास-वेसव ।

विश्वस-द्वार कल ×ार्व कल ×ार्वी वे वं २११ । बागबार। विश्वस-बुबावरूव वे ब्रोजियि सी वी ।

प्रदृष्ट श्रव्यविकालपूर्वा—रमजलियावयं वं १४ । या ११८८ इ.च. । मना—संस्टट । स्पर-दुरा। र कम ४ । ते चना ४ । पूर्वावे संदेश का चन्तार । विकल्प-नर्शवद्वात के तरिसिधि की नी १

¥दर प्रक्रियं दापप संदेशिक कला×ावे संदृष्टाचाळ्यार। ४६२१ प्रक्रिय-को सम्बर्धीके यालातः १६ देशाचानुसीट (वे संदृष्टीस

प्रकर नात सम्प्रा वर्ग (हु वी प्रतंत) में बावार्य की अलगोति के उनके से प्रतिविधि हुई भी ।

क्ष्मार ह

पूजा प्रतिष्ठः एव विधान साहित्य]

४६-२ पत्यविधानपूजा--श्रमन्तकीर्ति। पत्र स० ६। मा०१२४४ इन । भाषा-सरकृत। विषय-पूजा। र० काल ४। ते० काल ४। पूर्ण। वे० स० ४४३। क भण्डार।

४६२३, प्रत्यविधानपूजा । मा० १०४४ दे देख । भाषा-सम्मृत । विषय-पूजा । र० कान ४ । विष काल ४ । पूर्ण । वै० स॰ १७४ । अ भण्डार ।

प्रध्निप्ठ प्रति स०२। पण म०२ मे ४। ते० कान स०१ दर्श। प्रपूर्ण। वे० स०१० ४४। ग्रा

विशेष-१० नैनसागर ने प्रतिसिप की थी।

४६२४ पत्यन्नतोत्रापन-भः शुभचन्द्र। पत्र स० ६। मा० १०६४८३ इच । नापा-सस्त्रन । विषय-पूजा । र० कान × । ते० कान × । पूर्ण । वे० स० ४४४ । स्त्र भण्डार ।

त्रिगेय-इसी भण्डार मे २ प्रतियां (वे॰ सं॰ ४=२, ६०७) भीर हैं।

प्रहर् पल्योपमोपनासविधि । पत्र स० ४ । मा० १०×४३ इ व । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा एव उपवास विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ४०४ । ध्र भण्डार ।

४६२७ पार्श्वजित्तपूजा—साह लोहट । पत्र स० २ । घा० १०३×१ ६ च । भाषा-हिदी । विषय-पूजा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वै० स० ५६० । स्त्र भण्डार ।

४६२८ पार्विताअपूरा १। पत्र स०४। द्या०७४५६ इच। मापा-हिन्दी। विषय-पूजा। रं•काल ४। ले॰ काल ४। पूर्ण। वे॰ स०११३२। व्या भण्डार।

४६३६ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० स० ४६१ । इ. भण्डार ।

४६३० पुरवाहवाचन । पत्र स० १। म्ना० ११x १ इन । भाषा-सस्कृत । विषय-शान्ति विषय-। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० स० ४७६ । स्त्र मण्डार ।

विशेष-इसी मण्डार मे ३ मितयां (वे० स० ४४६, १३६१, १८०३) मीर हैं।

४६३१ प्रति स०२। पप म० ४। ते॰ काल ×। वे॰ सं॰ १२२। ह्य मण्डार।

४६३२. प्रति स० ३। पत्र स० ४। ते० काल स० १६०६ ज्येष्ठ बुदी ६। वे० स० २७। ज

मवडार ।

۲

विशेष--प॰ देवीलालजी ने स्वपठनार्थ किशन से प्रतिलिपि कराई थी।

४६३३ प्रति स० ४ । पत्र स० १४ । ते० काल स० १६६४ चैत्र सुदी १० । वे० स० २००६ । ट

भण्डार ।

```
[ पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित
x = 1
           ४६९४ पुरंदरमतोद्यापमः व्यवतं रावा ११×१३ रचा नामा-संस्ता। मेनन-पूरा।
र नम×।ने मल गं ११११ यादाब तुरी ६ । पूर्वा ने सं ७२ । य प्रधारः।
           ४६६४. पुष्पाद्मक्षित्रवपृत्रा⊸स इतनंत्रन्त्। पत्र वं प्रश्ना १ ३×०३ ६ व । प्रशा—संस्त्र।
विवय-पूर्वा र काल से १६०१ । से काल × । पूर्वा वे संदर्श । च बच्छार ∤
           रि<del>गेय - थ</del>ई रचना बाववासपुर ने मावकों की नेरहा से ऋहारक रतनवस्त्र ने में १६८१ हैं विगी की
           ४६३६ प्रतिस० र श्यम सं १६ । में नाम सं १६२४ सालोब सूरी १ । में सं ११७ । में
मधार ।
           विशेष---इशी बच्चार में एक प्रति इशी देशन में वीर है।
           ¥4. श्रेटिस ३ । पथ नं ७ । ते कल × । वे र्ड १०७ । श्रापनार ।
           ४६६⊂. पुष्पाक्तकित्रचप्दा—संद्वायसम्राप्तः रं६। बा १ ×६६४। कता-संस्रो
दिश्य-पद्या । ए काल X । में काल X । पूर्व | वे दे दे दे । ब्रा क्यार (
           ४६३६. युष्पाञ्चक्तिमतपूत्रा<sup>च्या</sup> पथ वं व । या १ ×४ई इ.व । जाना-संस्त्र मतव। र
 राध ×। में राज्य सं १ ६३ कि भागल लुदी ३ । पूर्व । वे सं १९१ । च नग्दार ।
           ४६४० युष्पाञ्चक्रित्रयोगापन—य गतादासः। १व र्ष । या 💢 इव । बारा—वेत्र<sup>व ।</sup>
 विश्व-पूर्वारः काल X क्षेत्र वस्त है १६६ दुर्ला के संघट का प्रधान प्रदार है
           विकेष---नेपालक ज्हारक वर्तकर के किन्ध में ! इसी मण्डार ये एक श्रीद (के तां ३३६) होर हैं।
            ४६४१ प्रतिसः देशकासंदाने कामासंद्रद २ ब्राम्बोद पुरो १४ । वे संक्रमा स
 TOTAL S
           ४६५२ युवाकिमा<sup>........</sup>। पत्र श्रं २ । मा ११३/८६ इ'च । कला-दिली । निमन-पुना नर्पे से
 शिक्षिता विकास ईटः साल ×ा से जान ×1 दुर्जा वे वं १२६३ छ जन्मार ।
            ४६४३ युकाराजसमङ्ग्यामा वर्ष २ के ४ । वा ११×६ इ.च.। बला-संस्तृत । निवर-
 इसार सम X कि सम X । मर्जि कि वे १ प्राट मणारा
            विदेश-इसी मध्यार में एक स्पूर्ण प्रति ( वे भ २ ७० ) धीर है ।
            ४६४४ वृज्ञाराठसंग्रह<sup>्रमा</sup> वय मं १ । या ७४३३ हव । भा<del>रा संस्</del>ता विवय-पूर्णी
 र नस×।के बल ×।पूर्णावे वं १३१६ । धानकार।
```

निर्देश—मूत्रा पाठ के रूप प्रायः १९६ में है। व्यविपांत रूपों में में ही पुत्राथ विसती है, बिर सी जिन्हीं

विदेश १९ में उस्मेज गरना प्राप्तक है उन्हें को दिया जारहा है।

पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य]

४६४४. प्रति स० २। पत्र स० ३७। ले० काल स० १६३७। वे० स० ५६०। स्र भण्डार।

विशेष-निन्न पूजाओं का सग्रह है।

- १. पुष्पदन्त जिनपूजा -- सम्कृत
- २ चतुर्विशतिसमुख्यपूजा "
- ३ चन्द्रप्रमपूजा "
- ४ शान्तिनाथपूजा ॥
- प्र मुनिसुव्रतनायपूजा ,,
- ६ दर्भनस्तोत्र-पयनन्दि प्राकृत नै० काल स० १६३७
- ७ ऋषमदेवस्तोत्र ,,

४६४६ प्रति स॰ ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल स० १८६६ हि॰ चैत्र बुदी ४ । वे० सं० ४५३ । स्र

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार मे ४ प्रतिर्या (वे॰ स॰ ७२६, ७३३, १३७०, २०६७) ग्रीर हैं। ४६४७ प्रति स॰ ४। पत्र स॰ १२०। ले॰ काल स॰ १८२७ चैत्र सुदी ४। वे॰ स॰ ४८१। क

भण्डार |

विशेष---पूजाक्रो एवं स्तोत्रो का सग्रह है। ४६४ = प्रति स० ४ । पत्र सं० १८५ । ले० काल × । वे० स० ४८० । क भण्डार ।

विशेष-- निम्न पूजायें हैं।

पल्यविधानव्रतीद्यापनपूजा	रत्ननन्दि	सस्कृत
वृ हद्पोडशकारणपूजा		99
जेष्ठजिनवरउद्यापनपूजा))
त्रिकालचीबीसीपूजा	-	प्राकृत
च न्दनपश्चित्रतपू जा	विजयकीत्ति	सस्कृत
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	यक्षोनन्दि	**
जम्बूद्वीपपूजा	प० जिनदास	"
ग्रक्षयनिधिपूजा	-	
कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा		"
		33

```
kto ]

    पूजा प्रतिद्वा पर्व दिवान साहित

           प्रदेशक्त, प्रति स्व की पत्र की १ के ११६ । न मान × | बार्ग्त | वे वे पर्श कि मनार |
           विकेश-अनुस्य पूजान निष्य त्रपार है-
                    विवदासमान
                                                                संस्कृत
                    पीरप्रशास्त्र्या
                                                 यनगणर
                    जिनवारण संस्थित ।
                                                 व रनकर
                    शुक्कारपद्धवियतिकारूमा
                    शासन्तर्वनद्वा
                    सर्वेषकारा
                    বিত্তপদ্যুৱা
                                                  इ.स.चन्द
           इती मध्यार में २ प्रतियों (में के ४७६ ४७३) शीर है।
           प्रदेश प्रति स॰ को यन सं २७ के देका में जान × ( संदूर्त (में सं २९६ ( च मधार)
           विदेश—सानाय पुत्रा एर्च वाठों ना बंबह है :
           प्रध्रेट प्रतिसा कायक वे ३ थाने कल ×ावे वे १ था बाबायार्ड
           विभेग-इसी क्ष्मार में एक प्रति ( में सं १६६ ) बीए है।
           ¥८६२८ प्रतिसं ६ । वर्षा १२३ । में कल्ला १ ४ बल्लोब नुसे ४ । वे स ४३६ । में
with the
           विमेच--निरंध वैविशिक पुता पाठ संदद्व है ।
           ४६४६, पुक्राराटर्शमङ्****। पन सं २२। था १२४ ६ व | वासा-वंतरत क्रियो | विवस-दूरी
दाकार कल × (में नल × । पूर्ण । में वं करेवा वा नवार ।
           दियंत---वक्तानर, सरवर्णनुष वादि गार्टी ना सबह है। सामान्य पूजा पार्ट्सी इसी बन्दार में दे महिन्
( * #
           Satty ( ) effelt :
           प्रथम प्रति सं दे । यम सं है । ते याल सं दृश्य शालाब सूत्री दूध । वे सं प्रदेश व
बन्धार ।
           विकेष-इसी समार के के प्रतिमाँ (के माँ अग्नर अग्नर, अग्नर अग्नर, अग्नर, अग्नर, अग्नर, अग्नर, अग्नर, अग्नर, अग्नर,
थर२) और है।
          प्रध्यक्षः प्रति सं वे । यथ वं भए के ६६। के काल × । बहुर्सा वे । १६१४। ड वन्यार ।
```

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

ŗ

४६४६. पूजापाठसग्रह "। पत्र स॰ ४०। मा० १२४८ ६ च। भाशा-हिन्दी। विषय-पूजा। र॰ काल ४। ले० काल ४। पूर्ण। वे० सं॰ ७३४। व्य भण्डार।

विशेष--निम्न पूजापी मा समह है।

प्रादिनायपूत्रा मनहर्देव हिंदी
सम्मेदिविग्वरपूजा — »
विद्यमानबोसतीर्थदूरों भी पूजा — र० माल स० १६४१
प्रमुषव विलास ने० ॥ १६४६
[परसग्रह]

प्षष्टप्रश्न प्रति सर २। पत्र सं० ३०। से० वाल X। वे० स० ७४६। इन मण्डार। विशेष—इसी मण्डार मे ५ प्रतिया (वे० म० ४७७, ४७८, ४६६, ७६१/२) भीर है। प्रदेश प्रति स० ३। पत्र स० १६। ने० पास X। वे० स० २४१। ह्यू भण्डार।

विशेष--निम्न पूजा पाठ है--

भीवीसदण्डक — दौनतराम भितती ग्रुरमा की — भूधरदास भीस तीर्घदूर जयमाल — — सोलहकारराष्ट्रजा — सानतराय

४६४६ प्रति स० ४। पत्र स० २१। ले० पात स० १८६० पाष्ट्रण सुरी २। वे० स० २२०। ज

४६६०. प्रति स० ४। पत्र स० ६ से २२२। ले॰ कान ×। प्रपूर्ण । पे॰ सं॰ २७०। का मण्डार । विदोप--नित्य नैमिक्तिक पूजा पाठ सम्रह है।

४६६१ पूजापाठसमह—स्यरूपचद । पत्र स० । प्रा० ११४४ ६ व । भाषा-हिन्ती । विषय-

विशेष--निम्न प्रकार संबह है-

जवपुर नगर सम्बाधी चैत्यालयो की यदना	स्वरूपचन्द	हिन्दी
ऋदि सिदि सतक	99	33
महावीरस्तोत्र	n	77
जिनप झ रस्तोत्र	19	33
त्रिलोकसार चौपई	19	77
भमत्कारजिनेस्वरपूजा	99	13
सुगघीदशमीपूजा	"	1)

```
≭१२ ]
                                                          ्रिका प्रतिप्रा पत्र विभान शाहित्व
          ४६६२. पृत्राप्रकरणः — स्मास्त्रामी । पन सं २ । सा १ ४४३ ६ थ । मान-संश्रुष । दिस्क-
विवसः । र प्रानः 🗵 । वे शक्तः 🗵 । पूर्णी हे वं १२२ । 🙀 वश्चारः ।
          विदेश-पुनक धादि के सराश दिने हुई हैं । धन्तिय पुरित्ता विध्य क्रांपर है---
                             इति भीवदुनलवाबीविश्वितं प्रकारतं ॥
          ४६६६ पृष्ठामक्षरम्यविभिक्तामा १४व वं १। या ११३४४३ इ.च । वारा-बंशारा । निवस-पुत्रा
विवार कल ×ाने राज ×ा पूर्वा के छं २२४ । वा बच्चार ।
          ४६६४ पुण्यावस्थितिकाः । यद ६ । या ३८४ इ.व.। शास-वंतरूस । विश्व-पूर्वानिति ।
र पता×। ने नाम च १०२३। पूर्ता वे वे १४०७ । धा कदार।
          ४६६४ पुत्रापाठ<sup>्राच्या</sup>। वद सं १४ । था १ ३८४ इ.स.। तमा हिली देश। निवस-पूता।
र करा×। ते कात व १ १६ वैदास तुरी ११। प्रती । वे व १ १। सा स्थार।
          विवेद---वारतकवन्त्र वे प्रतिविधि गी भी । प्रतिवश्च पत्र बाद का निका हथा है ।
          ४६६६ स्वाविधि --- - । वय सं १ : या १ xx2 दख । वाया-नाहरा । विश्व-विदान ।
र रात×ोने करत×। बन्धी वे देशवदे। का अध्यार ।
          ४६६७. प्रकाशिपि भागा। पन से ४ । या १ ×४ई इ.च । वादा-हिन्दी । दिवस-दिवान । र
मल ≍ाते गल ≍ापूर्णी दे ते ११७ । साथकार।
          ४६६म, प्रकारक-न्यासायन्य । पत्र वे १ ( या. १ ax६ इक्ष ) वादा-कियो । तिरन प्रस्ता
र मन×ोते तन×ाक्तीवे व १९११।श्रापकार।
         प्रदर्भ, प्रशाहक—सोहद्व । पत्र वे १ । या १ और इ.च । जला-कियो । नियम पूर्वा । र
माना×। में मान × ! दुर्शा वें वं १९ है । का मध्यार ।
         प्रदेशक पुत्राप्तक-कारायकान् विकास देशिया १ देश्य ६ व । जावा-शिली । निवत-पूर्वा ।
र मत×।के शल×।दुर्ली वे थे १२१ । ध्रथमार।
         प्रदेश पुत्राहरू .....ा वर व १। वर १ त्रा १ त्रा १ वामा-दिनी । दिस्य-पूर्वा । र
पल × । में कार × । पूर्वा वे चं १९१३ । का जनगर ।
         धर-१९ प्रशासकारणा पत्र वे ११ शि व<sub>र</sub>≻पर्ने इछ । शास-विका-पूर्वा कि
क्त × | ने पत्त × । बहुर्या वे क क्षेत्रका हा वरशह ।
```

४६७३ पूजाप्टक-विश्वभूषण्। पत्र स० १। मा० १०३४५ इ च । मापा-सम्बत । दिस्ट-इन र० काल ४। ले० काल ४। पूर्ण । वे० स० १२१२। श्र भण्डार ।

४६७४ पूजासमह '। पत्र स० ३३१। मा० ११×५ इख । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । --काल 🗙 । ले॰ काल स॰ १८६३ । पूर्मा । वै॰ स॰ ४६० मे ४७४ । स्त्र भण्डार ।

विशेष---निम्न पूजायो का मग्रह है-

कर्ता	भाषा	पत्र सं०	वै० मं८
×	सस्तृ त	१०	¥3.¢
×	हिन्दी	२०	£28
महलाचार्य केशवसेन	सस्कृत	१ २	४७३
×	33	२७	¥0\$
×	97	१ २	840
×	22		¥9£
×	51	१ ३	४६८
भा॰ गुराचन्द्र	71	30	४६७
×	33	१ ६	¥
×	51	१२	४६५
भ॰ विश्वमूपरा	17	ą,	***
×	25	२२	४६३
×	"	ς,	४६२
	27	55	¥Ę{
	n	5 e	¥\$.
	X X मडलाचार्य केशवसेन X X X प्रा• गुराचन्द्र X प्र• विश्वसूषण X भ• विश्वसूषण X 1विधान सहित) X	X सस्तृत X हिन्दी मडलाचार्य केशवसेन सस्तृत X ग X ग X ग प्रा० गुराचन्द्र ग X ग भाे विश्वसूषणा ग X ग पाविधान सहित) ग	X सस्तृत १० X हिन्दी २० मडलाचार्य केशवसेन सस्तृत १२ X ११ २० X ११ १२ X ११ १२ X ११ १२ प्रा० गुराचनद ११ १२ X ११ १२ प्रा० गुराचनद ११ १२ प्रा० विषयप्तप्रप्रा ११ १२ प्राविधान सिहत) १६ १६ ११ १२ १० ११ १२ १० ११ १२ १० ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११

इसी मण्डार में २ प्रतियां (वे॰ स॰ ११२६, २२१६) ग्रीर है जिन्हें क्या है।

४६७४ प्रति स० २ । पत्र त० १४३ । ले० काल मं० १६/८ । १५० १६ १५० १६ स्थार विशोप-निम्न सग्रह हैं-

नाम कत्तर्ग त्रिपञ्चाशतप्रतोद्यापन

ete J			[पूजा प्रतिद्वा एव विधान साहित
	नाम	कर्चा	भाषा
	रह ारनेहीतूजा	_	WEET
	^र इंडस्थाल्डधूजा		
	चौमळ विवस्त्रादश नोंदी की दूजा	ननिवनीति	,
	ब्लुबर्दस्तवर् द्वा	-	rr .
	नुर्वेश्वरक्षणीतत्त्रा	थुनसम्बद	
	पन्दमद् षिद्वचाः	*	*
	गाइद्यारल् किवलक्षा	नरनकीति	#
	न न् रम्यस्थितानस्था	इरिषेण	
1	मे दवला स् रवन्त्र	थुनबादर	
	¥र•६ प्रतिस ३। वदन व	। वे नलक	१८६६ वे सं ४४३ क मधार।
1	रिमेचनिम्न प्रनार बड्ड् है		
	नाम	कुन्त	माच
	पर्नपतिहरीचारनपु वा	×	र्वसङ्ख
	र न्धे न्यरपॅनियुवा	*	
1	विजयभूगा	সমা খ স	

विद्यवस्त्रा प्रमाय प्र मीतननात्त्वपूर्वधी वनोधारनपूत्रा × ल निधेर---शरप्पम [नद्यीगर् के मन्त्री | ने मीतिनीय सी वी | सपुरस्थान × बेस्स्ट

चनपोपराखांबवान × छ स्त्री तथ्यार के १ प्रतियों (वें तो ४७० ४७००) और है तिनमें बादाव्य पूराने हैं ?

स्तानम्बारमस्मातवा(पंतं ४०० ४७०८) शास्त्रानमस्मातव्यक्षपुत्रात्रहः प्रदेशकातिसः प्रवित्रतः २ ते वस्प ४ ।वे संदर्शकायमार।

पियन-किन पुतालों था बीयह है--- तिकपण्डुमा पतिपुत्तकमन्त्रुमा, यानन्त स्ततन एर्प वराषरवर्तन सन्ताल । प्रति प्राचीन तथा करत विति नाहित है ।

भागता । स्थापतात बदानमा स्थापता है। प्रस्थ≂, प्रतिस्रं≵ । यद्वे १ए । तंत्रमा× । वै व प्रश्ने । द्वासमार ।

विवेष--वृत्ती संप्रदार के वृत्रतियाँ (वे सं ४६ ४६४) शीर है।

४६७६ प्रति सं २६। पत्र सं ०१२। ले० काल X। वे० सं० २२५। च भण्डार। विशेष--- मानुषोत्तर पूजा एव इक्ष्वाकार पूजा का सम्रह है।

४६८० प्रति स० ७। पत्र स० १४ मे ७३। ते॰ काल ४। अपूर्ण। वे॰ स० १२३। छ भण्डार।
४६८१ प्रति स० ८। पत्र स० ३८ से ३१४। ते॰ काल ४। अपूर्ण। वे॰ स० २५३। मा मण्डार।
४६८२ प्रति स० ६। पत्र स० ४४। ते॰ काल स० १८०० आगाढ सुदी १। वे॰ स० ६६। व्य

भण्डार ।

विशेष--निम्न पूजायों का सम्रह है-

नास	कत्ती	भाषा	पत्र
धर्मचसमूजा	यशोनन्दि	प्तस्कृत	39-9
न दोश्चरपूजा	Squirique	33	\$5-58
सक्लोकरण्विधि	quirmon	"	२४-२५
नचुस्त्रयंमूपाठ	समन्तभद	n	74-75
धनन्तव त्रूजा	भीमूपग्	11	75-33
भक्तामरम्तानपूजा	फेशवमेत	11	37-38

भाषार्य विश्वकीति की सहायता से रचना की गई थी।

पश्चमीद्रतपूजा

केशवसेन

.

X8-35

इसी भण्डार मे २ प्रतिमा (वे० स० ४६६, ४७०) भीर हैं जिनमे नैमिक्तिक पूजामें हैं। ४६८३ प्रति स० १०। पत्र स० ८। ते० काल 🔀 अपूर्ण। वे० स० १८३८। ट भण्डार।

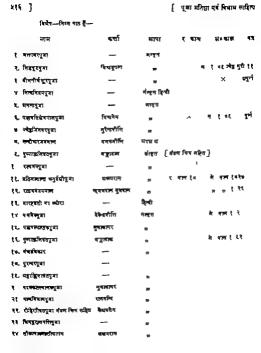
४६८४ पूजासमह । पत्र स॰ ३४। मा० १०३×१ इद्य । सस्क्रस, प्राकृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले॰ कान × । पूर्ण । वे॰ स॰ २२१५ । का मण्डार ।

विशेष--देवपूजा, मङ्जिमजैस्यालयपूजा, सिद्धपूजा, ग्रुविवलीपूजा, बीसतीर्घक्ट्रपूजा, क्षेत्रपालपूजा, पोडप पारणपूजा, क्षोरव्रतनिधिपूजा, सरस्वतीपूजा (ज्ञानभूपण) एव ग्रान्तिपाठ ग्रादि है।

४६ म्र पूजासमह । पत्र स० २ मे ४१। मा० ७३ ×५ दे व । भाषा-प्राकृत, सस्कृत, हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० २२७। च भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार मे एक प्रति (वे० स० २२६) और है।

४६८६ पूजासंग्रह । पत्र स० ४६७। ग्रा० १२×५ इख्र । भाषा-सस्कृत, ग्रपभ्र श, हिन्दी । विषय-सग्रह । र० माल × । ले० वाल स० १८२६ । पूर्ण । वे० स० ५४० । स्न भण्डार ।



x1=]		[प्र	। प्रतिश्वा एवं विचान साहित्य
११ नवप्रदूषा	-	काइट हिन्दी	
३२. एलपर्याता	_	•	ति पाता १५१७
१३ वक्तकल्पनगल	464	धरत ह	
रमा टीमा सहित	ţı		
११८० वृशस्य	ال ساطة في 2: السساطة في 2:	११। वा ११३×१३ ६ व	वापा-बंद्य दिची रिपर-
द्वना∦र नात×। ने कान	×ाक्ती । वै. ते.	१ । श क्यार ।	
नियेषनिम्ब पूरा	मों ना क्व ह है —		
वस्त् <u>व</u> स्तुव	ı x	ग िनी	र काम क १०६०
दमोद्यीवका	ा्वा ×	39	
गिर् गास्त्री पड्ड	¥1 ×		र काम वे १०१७
पक्रपरोप्छीन्	T X		र नलावं ६ ६०
विरवाधकेनपु	या X		
शास्त्रपुराणि	r x	बंस्कृत	
नांदीयंत्रचपुर	п х		
सुविश्या न	देश्यकोति	-	
शब्द, प्रति सं	क् । यस की अः । मै	रम×। रे ते १४६।	इस्कर ।
४१. न्स. प्रति स	३। पत्र वं १, । वे	परन×।वे ४ १६। व	अध्यार ।
विश्वेप-स्थित संब	(! —		
प ञ्चलकारक कर्म	म १५	ल्य दिली	पत्र †−1
रमासरा <i>ल</i> कृत	t x	. बस्कृड	p ¥ ₹₹
रक्षरत्वेच्छे पुत्रा	\$4	पम हिंची	* t 1-41
प क्षप्रतेषीपृ श	क्षेत्र का	দৰ্শিত প্ৰক্ৰেয়	10 -3.5
क्षेत्रपूत्रा	Św	त्त्र हिन्दी	,, t-tt
ক্ষর কে টেবন	τ,		39-53 w
४३६ व्यक्ति सं	४ । के काब × । को	(सी किंद्र सा≝ जम	πς Ι

पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य]

४६६१ पूजा एव कथा समह - सुशालचन्द् । पत्र सं० ५० । मा० = ४५ द व । भाषा-हिदी । विषय-पूजा । र० काल ४ । ते० वाल स० १८७३ पीप सुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ५६१ । स्र भण्डार ।

विदीय-निम्न पूजामी तथा क्यामी का सग्रह है।

सन्दनपद्मीपूजा, दशलक्षरापूजा, पोष्ठशकाररापूजा, रत्नश्रमपूजा, धनन्तचतुर्दशीव्रतस्या व पूजा । तप सक्षराक्या, मेरुपक्ति तप को कथा, सुगन्धदशमीवतक्या ।

४६६२. पूजासमह—हीराचन्द । यह स० ४१ । मा० ६ है ×५ है इ च । भाषा-हिदी । विषय-पूजा । र० काल × । पूर्ण । ये० स० ४६२ । क भण्डार ।

४६६३. पूजासम्रह । यत्र स०६। मा० दर्भे×७ ६ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ते० नात × । पूर्ण । वे० स० ७२७ । श्र भण्डार ।

विशेष-- वनमेर पूजा एव रत्नत्रय पूजा मा सग्रह है।

इसी मण्डार में ४ प्रतिया (वे० स॰ ७३४, ६७१, १३१६, १३७७) भीर हैं जिनमें सामान्य पूजायें हैं। ४६६४ प्रति स० २। पत्र स० १६। ते० काल ×।वे० सं० ६०। ग भण्डार। ४६६४ प्रति स० ३। पत्र स० ४३। ते० वाल ×।वे० स० ४७६। क मण्डार।

४६६६ प्रति सप् ४। पत्र स॰ २४। ले॰ काल सं॰ १६५४ मेगसिर बुदी २। मे॰ स॰ ७३। घ भण्डार।

विशेष-निम्न पूजामी का भग्रह है-

देवपूजा, सिद्धपूजा एव शान्तिपाठ, पश्चमेरु, नन्दीश्वर, सोसहकारण एव दशसक्षण पूजा धानतराम कृत । भनन्तव्रतपूजा, रत्नत्रयपूजा, सिद्धपूजा एव शास्त्रपूजा।

४६६७ प्रति स० ४। पत्र स० ७५। ले० काल ×। मपूर्ण। वै० स० ४८६ इन मण्डार।
विशेष—इसी मण्डार मे ५ प्रतिया (वै० स० ४८७, ४८८, ४८६, ४८५, ४६३) भीर हैं जो सभी मपूर्ण हैं।

४६६६ प्रति स०६। पत्र स० ६५। ले० काल ×। वे० स० ६३७। च भण्डार।
४६६६ प्रति स०७। पत्र स० ३२। ले० काल ×। वे० स० २२२। छ भण्डार।
४००० प्रति स० ६। पत्र स० १३८ ले० काल ×। वे० स० १२२। ज भण्डार।
विशेष-पत्रकल्याणकपूजा, पनपरमेष्ठीपूजा एव नित्य पूजाय है।

४००१ प्रति सं ६ । पत्र सं ० ३६ । ले० काल 🗙 । सपूर्या । वे० त० १६३४ । ट भण्डार ।

४ ९. पुत्रासमाह—स्मायन्त्रापयन् । पत्र ११३×१३ इच । मापा हैन्दी । निवय-पूत्रा । र नान्×।ने कान×।पूर्वावै सं ४६६। का बण्डार।

विमेय-सार्थिमान से चनापन तक नी नुवाने हैं।

१ रहे पुत्रासार्***** । थम त वहाया १ ×६ ईवा बाया-वीदात । वियम-पूरा एवं निर्मितियान ⊨र वान ×। वे नान ×ो पूर्ण । वे वे ४६४ । वा बन्हार ।

e¥ प्रतिसं∈ कापत्र वं ४७ । ने कल ×ावे सं २२८ । वायध्यार ।

विनेत-स्थी नकार में एक इति (वे सं सा) और है।

४० ४ प्रतिमासान्त<u>चत्रवैशीत्रताचापमपुत्रा</u>—अ**वस**राम । पत्र वं १४१ मा १ 🖂 ६४ । मना-चंदरुषः दिवर-पुत्राः रंतनन 🗶 । में ताल वं ११ - जादवानुसी १४३ पूर्णः । वे दं प्रत्यः । म मच्दार ।

विकेष---वीकान दाराक्य के बक्बूर में प्रतिस्थित की वी ।

¥ ६ मिति सं २ । पत्र सं १४ । के जान सं १ । भारता कुरी १ । वे सं ४४४ । क ' भव्दार । र∙ ७ प्रतिस दे। पण स १ । ते नाल क १ वील लगी दावे संदर्भ म

भग्रार । ४ मः मितमासाम्बन्द्रदेशीक्रेलोखायनप्रका—रामचम्ब । यह वं १२ । या १२ 🗶 १ व ।

वरगो−तीस्तर्यः विदय-पूर्वा)र जल्ब 🗙 । ते त्राल सः १ : वीत बुदी१४ (दुर्ली) ते सं ६ ६ । म मचार ।

निवेच- यो वर्षोद्ध बद्वाराज के रोगान दारायण भारक ने रचना करते थी ।

श्रद्धश्रतिभासान्तवन्तर्वदीक्रतोषायतपुर्वाःः। यत्र वं १६। वा १ ४० दव। भताः र्वसत्त्वः(विवर–पुता:र कल ≍ावे नलावं १ । पूर्वामे वं १ । क वस्परा

≱ है महिन्ने का पण से एक | के सम्बद्ध रूपकर शासीच बुदी दावे वे दशका च ननार ।

निवेद---स्वाबुक मानवीनाम मेहर का ने बक्दुर में प्रशिक्षित की भी। वीपान समस्यक े संस्कृति के प्रतिकृषि करवार्थं और

k ११ प्रतिकातको—स की राजवीरित । पण वं २१ । सा १२×१ इ.च.। वाला-संस्ता । विवय-प्रतिहा(विभान)। र काल ≿ाणे काल ≍ापूर्वाये वं १,१ क मध्यारः

४२४ ४०१२ प्रतिष्ठादीपक-पिंडताचार्य नरे-द्रसेन । पत्र न० १४ । मा० १२×५३ ६ प । भाषा-सस्तृत । विषय-विधान । र० मान 🗙 । ते० माल स० १८६१ चैत्र बुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ४०२ । सः भण्हार । विरोप-मट्टारन राजनीति ने प्रतिलिपि भी थी।

४०१३ प्रतिष्टापाठ-आ० वसुनन्दि (अपर नाम जयसेन)। पत्र मं० १३६। मा० ११३×६) इ.च.। भागा-मस्द्रुत । विषय विधान । र० काल × । ले काल ग० १६४६ वार्तिक मुदी ११ । पूर्मा वे० स०

वियोप-इसवा दूसरा नाम प्रतिष्ठामार भी है।

४०१४ प्रति स० २ | पत्र स॰ ११७ । में० नाल म॰ १६४६ । वे० सं० ४८७ । क भण्डार । विद्येप--३६ पत्रो पर प्रतिष्ठा सम्बंधी चित्र दिये हुँ है।

४०१४ प्रति स> ३। पत्र स० १५४ । ले० याम स० १६४६ । वे० स० ४८६ । क भण्डार ।

विशेष---यानावर्या व्यास ने जयपुर मे प्रतिनिधि की थी। झात मे एक प्रतिक्ति पत्र पर प्रदूरभावनार्थ सूर्ति का रेमाचित्र दिया हुमा है। उसमें मद्ध लिये हुये हैं।

४०१६. प्रति स०४ । पत्र सं०१०३ । ले० कान ४ । पूर्ण । वे० स० २७१ । ज मण्डार । विदोप-प्रन्तिम पुष्पिका निम्न प्रसार है-

इति श्रोमत्युदयुदाचार्यं पट्टोदयभूपरदिवामिंग श्रीयगुधि द्वाचार्येगः जयमेनापरनामकेन विरिवतः । प्रतिष्ठा-सार पूर्णभगमत ।

४०१७ प्रतिष्ठापाठ--आशाघर। पत्र सं० ११६। मा० ११×५३ द च। भाषा-सस्यतः। विषय-विधान। र० काल स० १२८४ मासीज सुदी १४। ले॰ वाल स० १८८४ भादया सुदी ४। पूर्ण । ये० स० १२। ज

४०१८. प्रतिष्ठापाठ "। पत्र स०१। भा० ३३ गज सवा १०६८ घोटा। भाषा–सस्तृत। विषय– विधान। र० काल 🗙 । ले० वाल स० १५१६ ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वे० म० ४० । व्य मण्डार ।

विशेष---यह पाठ कपडे पर लिखा हुमा है। कपडे पर लिखी हुई ऐसी प्राचीन चीजें कम ही मिलती है। यह कपढे की १० इ च चौडी पट्टी पर सिमटता हुमा है। लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है-

।।६०।। सिंद्ध ।। भीं नमी वीतरागाय ।। सबसु १५१६ वर्षे ज्येष्ठ भुदी १३ तेरिस सोमवासरे भिश्विनि नक्षत्रे श्रीरृष्ट्कापपे श्रीसर्वेशचैरंपालये श्रीमूलसधे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये बलात्कारगरो 'सरस्वतीगच्छे मट्टारक श्रीरत्नकीत्ति देवा तत्पट्टे श्रीप्रभाच द्रदेवा सत्पट्टे श्रीपदानन्तिदेवा तत्पट्टे श्रीशुभच द्रदेवा ॥ तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनच द्रदेवा ॥

```
>22 ]
                                                            ्रिया विद्या एवं विचान साहित्व
          १०१६. प्रतिसः २ । पत्र सं ११। में पास सं १०६१ वीप वृद्धी प्रश्नापूर्ण । वे १ ४।
🛎 भन्दार ।
          विशेष--हिन्दी ने प्रयम ६ वस ने प्रतिहा में काप वाने वाली बानवी कर विवरण दिशा हुआ है।
           ≥०२ प्रतिक्रापाठमाचा—चावा तकीचढा वन तं २६। सा ११३×६ दवा भागा-हिनी।
दिवय-दिवाद । एं कान 🗙 । में नान 🗙 । दर्शी वे वे प्रवश् कि वामार ।
          रिकेश---बुकरतो धारार्थे बसुविन्दु 🖁 । इतरः दूसरा नाम बन्धेन थी विद्या दूसा 🖟 । स्रीवन्त में कुकुरा
नावके देश बहुद्वापल के समीप एकपिटि पर सामाह बावफ शुजाला वनवामा हुया विश्वाल बेलालार है । उन्नती प्रतिक्रा
होने के विजिल सन्द रचा भवा ऐसा विचा है।
          इसी मन्त्रार में एक मंति (में ७ ४६ ) धीर है।
          2 रह प्रतिक्राविवि------- वस सं १७६ के १६६ । या ११×४३ इ.स.। नारा-संस्ट ।
विषय-विकिषित्राचार पाल ≍ोने काल ≍ायपुर्वाचे क र ३ कि अपनार।
          ४ २२. प्रविधासार-प् शिवजीकास । वय वं १६ । या १२×७ इया भागा-हिन्छे । विवय-
विवि विभाव । ए. याम 🖂 के पाल के १६६६ ओड़ सूबी व । पूर्ती वे स. ४६१ : स. मध्यार )
           × २३ प्रविद्वासार<sup>™</sup> । पत्र क शासा १२३×३ इ.च.। सन्त-विदि
 रियास ⊳रः कल ×ाने नास सः १६९७ सामास सरी १ । वे वे १ ६ । सा बचार ।
           निवेद-- प्रदेशमान ने प्रदेशियाँए की की । क्यों के बीचे के बाल पानी के की हुने हैं ।

    ३ श्रीतिष्टासारमञ्ज —का वसन्तिक । यथ वं २१ । वा १६८६ ६ थ । वासा-क्रिक ।

 विवय-विकि विकास । र काल अर । के कल्ल अ । पूर्ती । वे ते १९१ । का क्ष्मार ।
           १ १८ प्रतिसं २ । प्रसं १४ । से कला वं १६९ । ये सं ४६६ । का लच्चार ।
```

इ दृद्द प्रति सुं दे । यह से २७ । से बाल सं १२७७ । वे सं ४२९ । स समार ! द्र २७. प्रतिस्त श्रीवन सं १६। से अवस्थ १७३३ देशास पूरी १३। प्रदुर्श के सं ६०। का सम्बर्ध रिकेट-अधिक परिकेश से हैं।

श्र क्ष्यः प्रविद्यासारीक्षारः प्राप्तः वा वश्र कं ७६। या १ ३००% इ.च.। जला-बस्तवः विवय-

निर्मिनियान । र बशन ≿। में कास ≿ 1 पूर्ण । वे ए १४ । च नव्यार ।

× १६. व्रतिष्ठासुविक्रमण्ड्——व्याचे ११३मा ११× इ.च.। जला-बंदाव (विवय-विवास 1 ए: काक्ट 🔀 वे सामा वे १६५१ । पूर्ण । वे व ४६३ । व कमार ।

पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य]

४०३० प्राग्पप्रतिष्ठा '। पत्र सं० ३। झा० ६६ ४६६ ६ छ। भाषा सस्कृत । निषय-विधान । र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण । वे० स० ३७ । ज भण्डार ।

४०३१ बाल्यकालवर्णन । पत्र स० ४ से २३। मा० ६x४ इ च । मापा-हिन्दी । विषय-विचि विधान । र० काल × । ले० काल × अपूर्ण । वे० स० २६७ । स्व भण्डार ।

विशेष—यालक के गर्भमें धाने के प्रथम मास से लेकर दशवें वर्ष तक के हर प्रकार के सास्कृतिक विधान का वर्णन है।

४०३२ वीसतीर्थद्वरपूजा-थानजी अजमेरा। पत्र स० ५८। आ० १२३४८ ६ व । भाषा-हिन्दी। विषय-विदेह क्षेत्र के विद्यमान वीस तीर्थस्करों की पूजा। र० काल स० १६३४ धासीज सुदी ह। ते० काल ×। पूर्ण थे० स० २०६। ह्य भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार में इसी बेपून में एक प्रति भीर है।

४०३३ बीसतीर्थद्वरपूजा । पत्र स० ५३। ग्रा० १३४७३ इ.च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। ए० काल ४। ले० काल सं० १६४५ पौप सुदी ७। पूर्ण । वे० स० ३२२। ज भण्डार।

४०३४ प्रति स० २ । पथ स० २ । ले० काल 🗶 । प्रपूर्ण । वै० स० ७१ । मा भग्डार ।

४०३४ भक्तामरपूजा—श्री ज्ञानभूषण्। पत्र स०१०। भा०११४४ इच । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र०काल ४ ले०काल ४। पूर्ण। वे० स० ४३६। इ भण्डार।

१०३६ भक्तामरपूजाउद्यापन--श्री भूपण । पत्र स०१३। ग्रा० ११४५ ६ व । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । भपूर्ण । वे० स० २५२ । च भण्डार ।

विशेष- १०, ११, १२वां पत्र नहीं है।

४०३७ प्रति स०२। पत्र स०८। ते० काल स०१८५८ प्र० ज्येष्ठ सुदी ३। वे० स०१२२। छ् भण्डार।

विशेष-नैमिनाय चैत्यालय मे हरबंशलाल ने प्रतिलिपि की थी।

४०3८ प्रति स० ३। पम स० १३। ले० काल स० १८६३ श्रावण सुदी ४। वे० स० १२०। ज भण्डार।

४०३६. प्रति स०४। पत्र स०८। ते० काल स० १६११ बासोज बुदी १२। वे० सं०५० । मा मण्डार।

विवीप-जयमाला हिम्दी में है।

४०४० सकासरव्रतेश्वापनपूजा-विश्वकीित । पत्र स० ७ । ग्रा० १०२४६ इ व । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल स० १६६६ । से० काल × । पूर्ण । वे० स० ४३७ । इस् सण्डार ।

	red]		[पूचा मधि।	डा पव विकास साहित्व	
	Rids-	निषि निषि रक्ष चौडीसेक्य संगल			
		विवयनमधियाचे सत्तमी सवनार	1		
		मनगरवापुर्वे क्लानागरव गैसे			
		विर्यापतिगित कार्या वैवागार्गयवै			
		• मार्थेची याचे काम ≾ा			
		(स्त्रोक्पूचा*──। यत्र तः ६। ध		- धंस्कृतः । विकास्य द्वाराः।	
		हुर्छ। में संदर्भाक्षाच्यार।			
	प्रश्रदे संशिष्ठ के श्राप्तवर्ष १२ । के कम्म ×ावे से २११ । व्यवस्थार ।				
	र ४४ प्रति स∙ हात्रवर्ष १६।के राज Χावे वं ४४४।०।वस्तार (
	४.४८ मात्रपर्यूकासीम्ब्—चाकतराय। यत्र चै १६ से ६६ । या ११६×०३ ६ व । मता-				
		:Xोके कमाXामपूर्वाके ।			
ا لِر	े ४ ४६ साम्रास्पृक्तिर्वाणाणाणा वन वे १४ के १६ विस १११८४३ हव । नामानीत्यी ।				
	निपन-पूर्वा;र काव X । के भन्व X । सपूर्ण वै वं १९९ (व अभ्यार)				
	a प्रक. शास्त्रविक्षृत्राण्णाः। तमः सं १। शाः ११६×१३ ६ व । जानान्त्रसारा वि गरः ह् याः।				
	र मन्त×।पे कला×।युषी∣वै वं २ ७।डपम्बरेर।				
		वधीकीत्रदीचापच		इयः। अल्ला-संस्थितः	
	िरस-पुत्रा। ६ तमा ≿। ते समाई । पूर्वाने संव १००१ का मर्मार। १ ४६ - मंडली के भित्रपण्याना नगर्व १४ । आः ११८८ ६ व । धना दियो । निपन-पुता बामन्यी नमानी नर पित्र । वे तमा ८०० वे संव १९० । का मंगरार।				
	विवेचविव वं १२ है। निःन्तिबिक्त वण्यति के विश है				
	१ पुरस्कंप	(+%i +)	ভ প্রাধিনবিদ	(* **)	
	र. नेरमधिया	(क्या १३)	वसम्बंधियवस		
		(p tt)	१, सीमङ्गारल		
		(* t t)	ট প্রিয়ার্থনিয়ান্ যের		
	t. feage		११ वासियक	(* 44)	
	 বিভাসভিবনে 	नाम (» ३६)	१९. नत्सवरतीप	(34)	

```
प्जा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य ]
```

```
(कोष्ठ )
                                    ३२. भकुरारीपण
१३ बारहमासकी चौदस (कोष्ठ १६६)
                                                     ( ,, ४६ )
                                    ३३. गणघरवलय
१४ पाचमाह की चौदस ( " २५)
                                                     ( ,, E)
                                    ३४. नवग्रह
                 ( , १६६ )
१५. ग्रगतका महल
                                                      ( ,, 50)
                                    ३५. सुगन्धदशमी
                 ( ,, १४0 )
१६ मेघमालावत
                                    ३६ सारसुतयत्रमहरू
                                                      ( ,, २८ )
                  (कोष्ठ ६१)
१७. रोहिएोव्रत
                                     ३७. शास्त्रजी का महल ( , १२)
                  ( ,, = t )
 १८ लटिघविघान
                                     ३८. ग्रक्षयनिधिमहत
                                                      ( ,, १५०)
                  ( " २६ )
 १६ रतनत्रय
                                     ३६ भठाई का मडल
                                                      ( ,, १२० )
 २० पञ्चकत्यासम
                                     ४०, मकुरारोपए।
                                                      (n-)
 २१ पञ्चपरमेष्ठी ( ,, १६३ )
                                     ४१. कलिकुडपार्श्वनाय ( " = )
                   ( ,, = t )
  २२ रविवारव्रत
                                     ४२ विमानशुद्धिशांतिक (,, १०८)
  २३ मुक्तावली
                   ( ,, 5%)
                                     ४३ बासठकुमार
  २४. कर्मदहन
                   ( <sub>10</sub> १४५ )
                                                       ( ,, 42)
                                     ४४ धर्मचक्र
  २५ काजीबारस ( ,, ६४ )
                                                       ( ,, १५७ )
  २६ कर्मचूर
                   ( YF et )
                                     ४५. लघुशान्तिक
                                                       ( \cdot, \cdot - )
                                      ४६ विमानशुद्धिशात्तिक ( ,, ८१)
   २७ ज्येष्ठजिनवर
                    ( ,, ¥ \ )
   २= बारहमाहकी पद्ममी ( , ६५)
                                      ४७. छिनवै क्षेत्रपाल व
   २६. चारमाह की पञ्चमी ( ,, २५)
                                           चौबीस तीर्यङ्कर ( , २४)
   ३० फलफादल (पञ्चमेर) ( , २५)
                                      ४८ धृतज्ञान
                                                       ( 53 845)
    ३१ पांचवासो का महल ( , २५)
                                      ४६. दशलक्षरा
                                                       ( ,, 200)
```

४०४० प्रति स०२। पत्र स०१४ | ले० काल × | वे० स०१३८ क | स्त्र मण्डार |

४०४१. महपविधि " । पत्र स०४। मा० १८४ इ च । मापा-सस्कृत । विषय-विधि विधान । र०कात 🗙 । से०काल स०१८७८ । पूर्ण । वे० स०१२४० । म्रा भण्डार ।

४०४२ महपिविधि "। पत्र स०१। मा० ११रै४५३ इ.च.। मापा-हिन्दी। विषय-विधि विधान। र० काल ×। से० काल ×। पूर्ण। वे० स०१८८। मा भण्डार।

४०४३ मध्यलोकपूना । पत्र स० ४६। मा० ११६×४३ इच । भाषा सस्कृत । विषय-पूजा । र० नाम × । मे० नान × । भनूर्ण । वे० स० १२४ । स्र भण्डार । 2029 सहावीरनिर्वार्यामा मान्य वं देश या ११८८६ ह के | वाला-संस्तृत । क्लिन इसार नार ×ाने पान वे १०२१ । कृष्यों वे वं ६१) वालावार ।

स्पिक-दूरी। रंगाप ≻। में कान ≻। कृषि वं हर । क्राईस्ताह।

नियेत—इसी समार में एक प्रति (वे न १९१६) सीर है।

१०१६ सहावीरपुदा—बुन्दावय। पण र्व र्शाया चळद३ ईव। तास-मृत्यी। दिस्त-पूरा। र मार्ग्या में नेल ≾ार्जुरा के रं २१२। झाममार।

१ ४० मोनीतुमीमीरिवेर्डकपूजा-विश्वसूच्छ वर्ष छ १६। सा १२०६६ देव। मान-रंपुत। विषय-दूबा र बाल डे १७६६। के बाल डे १६४० वैदल्ब बुद्ध १४। दुन्हें। वे छ १४२। स्व बारत।

निर्मत---आरम्ब के १४ पर्छों ने विक्तबूचए इत सबचाय स्तीय है ।

খনিব মানির বিদ্যু সম্বাহ ই— (

क्षत्रभा क्षेत्रि स्वित् के प्राप्त के हैं। वेर जान की देवदेश कि से १९७८ के प्रमार है। विका-साथे सुनी की कामानार विवास वैत्यों कि है। पोरी का मुख्य सुन्ता सुन्ति वार रखा है। पुजा प्रतिष्टा एव विधान माहित्य]

प्रज्ञा । रं काल 🗴 । ते वाल सं १६२६ । पूर्ण । वे सं ३०२ । ख भण्डार ।

४०६० मुक्तावली व्रतपूजा । पत्र स०२। भा०१२×४५ इ.च। मापा-सस्कृत। विषय-पूजा।
र०नाल ×। ले० माल ×। पूर्ण। वे० स०२७४। च भण्डार।

४०६१ मुक्तायली छतोद्यापनपूजा । पत्र से०१६। मा०११३×६ इ व । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ते० काल स०१ ६६६ । पूर्णे । वै० स० २७६ । च मण्डार ।

विशेष-महात्मा जोशी पस्नालाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की यी।

र्थ०६२ मुक्तायली ब्रतियंधान । पत्र स० २४ । मा० ८३×६ इ न । भाँपी-सस्यत । निपय-पूजा एवं निधम । र० काल × । ले० काल स० १६२५ । पूर्ण । वे० स० २४८ । खं भण्डार ।

४०६३ मुक्तावलीपूजा—वर्णी मुन्नसागर। पत्र सं० ३। ग्रा० ११ × ४ इ च । भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र॰ काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वै॰ स॰ ५६५ । अस् भण्डार।

४०६४ प्रति म० २। पत्र स० ३। ते० काल X। वे० त० ४६६। इन भण्डार।

४०६४ सेघमालाविधि — १ पत्र स०६। मा० १०×४३ इ.च । भाषा सस्कृत । विषय-यत विधान । र० काल × । त० काल × । पूर्ण । वे० स० = ६६ । ऋ भण्डार ।

४०६६ मेघमालाव्रतीशापनपूजा । पत्र त०३। ग्रा० १०५×१ इ.च.। भाषा-सस्कृत । विषय-व्रत पूजा। र० काल × । ले० काल त० १०६२ । पूर्शा वि० त० ५००। व्या भण्डार।

४०६७ रत्नत्रयद्यापनपूजा । पत्र स० २६। मा० ११ दे ४ द व । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ४ । से० काल स० १६२६ । पूर्ण । वै० स० ११६ । ह्यू भण्डार ।

विशेष- । भपूर्ण प्रति भीर है।

४०६= प्रति स० २ । पत्र स० ३० । ते० काल X । वे० स० ६६ । क भण्डार ।

४०६६ रसेत्रयज्ञयमाल । पत्र स० ४। मा० '१०६ ×१ द व । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । ए० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वै० सं० २६७ । स्त्र भण्डार ।

विद्रोप--हिन्दी में भर्य दिया हुंचा है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० २७१) भीर है।

४०७० प्रति स०२। पत्र स०४। ते० काल स०१६१२ भादवा मुदी १। पूर्गा । वे॰ स० १५८।

विशेष --ईसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ११६) झौर है।

```
XR5
                                                        प्रमा प्रतिया एवं विवास भाष्टित्व
          प्रकर प्रतिसक दे। पत्र वं दे | के मध्य X कि सं दश्व | साम्यदार ।
          ×०७२. प्रतिस• ४) पर वै १| में जान वै १ ९२ घास्तः सुदी१२। वै वे ११७। च
क्यार (
          ×०७६ प्रतिस० ३ । पन संदाने मात्र ×ादे संदासकार ।
          विजेष--- प्रजी कचार में एक बर्ति (वे वं र १) सीर है।
          श्रेषक्ष रक्षत्रकारवास्वान्ताना वद वी १ । या १ %। इ.च.१ पाना-सरझ सः विवस-पुता १
र गल ×ामे जल वे १०६६ । वे १२६ । का बकार ।
         निर्मेश-संस्कृत में पर्यायकानी बन्ध दिने हुने हैं। यह १ ते वायकतत्त्वा शृहसामर इत देशा प्रमण
मान पूजा ही हुई है।
         2.04.2 अतिसं∍ देशपार्थ १ : के फाला थ १ १६ फाला गरी १३ । वे ४ १९ । वे
मंग्डार ।
         विकेच-अती कथार में २ प्रतिशं इसी नेहम ये शीर है।
         देशको रक्कावकाराका ""। एवं वी ११ वर्ग १ देशको १ वर्ग वारा-कराय । विवस-नुदा ।
र कल ×। ने कल था १ रेण शतक इसी १३ । इर्जादे वं € रे। धायधार ।
          विसेष-स्टी कथार में एक प्रति (वे वं evt) बीर है।
          ≵क्फक, ब्रतिसं २ । पत्र वं ३ । के पत्र स× । दे वं ४५४ । चयवार ।
          ≵e-बद, प्रतिक्षे के। पर वं के। के जल ×ार्र सं २ क। घर थपार।
         ३००८. रहतपश्चनवाद्यासामा — कदासा । यथ वं १ । ता १२×७३ ६ व । बारा-हिन्दी ।
नियम-पूथा। रेट भान वे १६२२ चन्द्रन सूरी । ते भन्न × (पूर्व) वे व ६६६ । धा बचार ।
          १०६ प्रक्रिप्त माथमधी का के माना सं १११का व स्वराक्त मण्यारा
          विकेश—इनी क्टार के द्र प्रशियों (के वं ६२८, ६३ ६२७ ६२ ६२६) गीर है l
          ≵ब्दर प्रतिका के। यम मंदा के प्रता×ाव वं मधाय प्रयार ।
          २०८९ प्रतिसूं धायन वं भावे तल वं ११९ वर्तसम्बुदी १ ।वे वं ९४४। <sup>इ.</sup>
THE !
  विकेर-इसी भवार के 9 अदियां (के वी ६५४ ६४६) और है।
          प्रथम् प्रतिक्षं प्राप्तवर्षे ७ कि पान × 1 वे ते ११० | सामन्यार ।
```

४०८४ रत्नत्रयज्ञयमाल '' विषय स० ३ । भा० १३३ ४४ इ च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । से० काल × । वे० स० ६३६ । क भण्डार ।

४०⊏४ प्रतिस०२ । पत्र सं०७ । ले० काल ४ । वे० स०६६७ । च भण्डार ।

४०८६ प्रति स० ३ । पत्र स० ४ । ने० काल स० १६०७ द्वि० ग्रासोज बुदी १ । वे० स० १८४ । म भण्डार । ४०८७, रस्नत्रयपूजा—प० ग्राशाधर । पत्र स० ४ । ग्रा० ८३ ४४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-

पूजा। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वै० स० १११० । 🕏 भण्डार ।

४०८८ रस्नन्नयपूजा—केशवसेन । पत्र स० १२। ग्रा० ११४५ इ च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ४ । ले॰ काल ४ । पूर्ण । वे॰ स॰ २६६ । च मण्डार ।

४० द प्रति स० २ । पत्र स० द । ले॰ काल × । वे॰ सं० ४७६ । स्न मण्डार ।

प्रट०. रत्नत्रयपूजा —पद्मानिन्द् । पत्र स०१३ । म्रा०१०३८४३ इ च । भाषा—सम्कृत । विषय— पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स०३०० । च भण्डार ।

४०६१ प्रति स०२। पत्र सं०१३। ले० काल स०१८६३ मंगसिर बुदी ६। वे० स०३०५। च भण्डार। ४०६२ रत्नत्रयपूजा । पत्र स०१४। घा०११४४ इ.च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र०काल ४। ले० काल ४ पूर्ण। वे० स०४७८। स्न भण्डार।

विशेष—इसी मण्डार मे ५ प्रतियां (वे० स० ६८३, ६६६, १२०५, २१६६) भीर हैं।

४०६३ प्रति स० २ । पत्र स० ४ । ले० काल स० १६८१ । वे० स० ३०१ । स्र भण्डार ।

४०६५ प्रति स० ३ । पत्र स० १४ । ले० काल स० १६१६ । स० वे० ६४७ । स्र भण्डार ।

४०६५ प्रति स० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६१६ । स० वे० ६४७ । स्र भण्डार ।

विशेष—छोद्रलाल भजमेरा ने विजयलाल कासलीवाल से प्रतिलिपि करवायी थी ।

४०६६ प्रति स० ४ । पत्र स० १८ । ले० काल स० १८५६ पोप सुदी ३ । वे० स० ३०१ । च्य

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतिया (वे० सं० ३०२, ३०३, ३०४) भीर हैं।

४०६७ प्रति स० ६ । पत्र स० ६ । ले० काल × । वे० सं० ६० । च्य भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार से २ प्रतिया (वे० स० ४६२, ५२६) भीर हैं।

४०६६ प्रति स० ७ । पत्र स० ७ । ले० काल × । भपूर्ण । वे० स० १६७४ । ट भण्डार ।

४०६६ रत्नत्रयपूजा—द्यानतराय । पत्र स० २ से ४ । भा० १०३ ×५३ ६व । भाषा-हिन्दी ।

विषय-पूजा । र० काल 🔀 । ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी ३ । झपूर्स । वे० स० ६३३ । क भण्डार ।

```
24 7
                                                           ्रिया मित्रहा एवं विवास साहित्य
                  प्रशिष्ट में । पर्वति के कार 🗶 । पे वे वे वे वे वे वे वे वे
           श्रे १ रहाप्रथम्बा--वाष्यम्बास । पत्र सं १७ । सा १२×६३ ६ व ३ वाषा-हिली (बुरह्नी )
विवय-पुराहर करा 🗷 के बात से १९४६ और नहीं 🗸 पूर्णा है से पादा सरकार ।
           ≭रे र प्रतिसं∗ २ । यथ थे १३ । या १९% ४९% ६ चाले कल्द x (पूर्णा वे वे ३०३ ।
स कारार ।
          विकेश---वरकृत प्राकृत तथा क्षत्रक क सीओं ही काश के राज्य हैं।
     with the second
                             থিছি তিৰিপিটা ছাৰুৱাই
                             रिवह बाव पुरुषाव चरावि ।
                             इब वेच्ह पनार नारिकड
                             व्यक्ति करिय क्यमिश्चर ॥
           ±१ १. रहत्रवपुत्राः विषयं १। मा १७८० १ व । थापा-हिन्दी । विषय-हुमा । र
नात × 1 ते कात × 1 वर्षा । वे वं चप्र २ । का नावार 1
           ≱१०४ प्रक्रियों के। वन से प्रकाण माना×ाणे में ६१२ । व्यासम्बार ।
          ≽र × श्रासा के | बन के देवा के बाल की १९६४ वीच बूरी का वे वे देवरा के
Mitter 1
          मिलेप-पूर्वी अच्छार ने एक मिंह (वे. वं. ५४५ ) बीर है।
           ≱र ६, प्रति हो प्राप्तव संदेश के पान ×ावै दे द द । स्टब्स्सरा
          विकेष-- एको लच्कार में युक्त प्रति ( वे क १ ६ ) और है।
          हर् क प्रतिहा शायम के हाने पान क देश । में में पर रक्त नगार ह
          श्री मः प्रति सः ६ । वाक ११ । ते पल × । ते से ११ । वा सम्बार ।
          £ १ ६. रमध्यसञ्ज्ञविद्यान्याच्या वय व १६ । या० १ ×६ ६ व । धाना-दियो । विवद-पूर्वा ।
र मन×।मे कार×।मे र्थ १७ । अर्थाना
          ≥११ रह्मचपविद्यानपुरा—य रहायीचित्रायश वे 1 शर १ ×८३ ईचा वाया-बेस्ट्रप ।
विषय-पूजा पूर्व विश्वि विकास । १ जान 🗙 । के काल 🗴 । पूर्व | वे वे ६२१ । क्र क्ष्मार ।
          हरेरेरे रक्कप्रविकात्र-----ावन वे १२१वा १ ३×४३ इ.च.१ वाला-वर्त्या विषय-द्वारी
```

न्य विकिथियान । रंपाल 🗶 । हे भाग औं १ वर प्रमुख बुरी के की १८६ । इस बच्चार ।

द्विगई---

४३१ ४१ व रत्नत्रयविधानपूजा—देकचन्द । पत्र स० ३६ । मा० १३८७३ द स । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा। र॰ काल 🗙 । ले॰ वाल स॰ १६७७ । पूर्ण । वे॰ स॰ ६६ । वा मण्डार ।

४११३ प्रति स० २। पत्र स० ३३। से० माल ४। वे० स० १६७। मा भण्डार।

४११४ रत्रत्रयमतोद्यापन । पत्र सं० ६। मा॰ ७X१ इ च। भाषा-सस्रत । विषय-पूजा।

र० कान × । ते० काल × । धनूर्ग । ये• स० ६४० । इ. भण्डार ।

निरोप--दमी भवडार में एक प्रति (वै० स० ६५३) मीर है।

४११४ रत्नावलीव्रतिष्धान-- विष्कृष्णादास । पय स० ७। मा० १०×४३ द व । भाषा-हिन्दी । विषय-विधि विधान एव पूजा। र० वाल ×। ले० काल स० १६८५ चैत बुदी २ । पूर्ण। वे० स० ३८३ । ध्र

विशेष-प्रारम्भ- श्री वृषभदेवसस्य श्रीसरस्यस्य नम ॥

जय जय नाभि नरे द्रमुत सुरमण सेनित पाद। तत्व सिंधु सागर लितत योजन एक निनाद ॥ सारद गुरु चरणे नमी नमु निरक्कत हस। रत्नावति तप विधि वहुं तिम वाधि सुख वश ॥२॥

जबूढीप भरत उदार, यदू बढी धरलीपर सार।

तेह मध्य एक मार्म युखंड, पञ्चम्तेसपर्माति प्रखट ॥

चंद्रपुरो नमरी उद्दाम, स्वर्गलोक सम वीसिषाम ।

उन्वेस्तर जिन्बर प्रासाद, ऋन्तर होत पटहरात नाद ॥

मन्तिम---भनुक्रमि सुतनि देईरान, दिद्या लेई करि मातम नाज। बुक्ति काम चुप हुउ प्रमाख, ए बहा पूरमञ्जह वाख ॥१८॥ इहा-

रत्नावित विधि झारर, मानि सु मरनारि। तिम भन विख्ति कल लहु, प्राप्त भव विस्तारि ॥१६॥

मनह मनारष सपिज होई, नारी वेद विश्वेद ।

पाप पक्क सथि कुमामि, रत्नावसि वहु भेर ।

जे कसिसुरासि सुविजि, त्रिभूवन होइ तस दास। हर्य सुत्त मकुल कमल रिव, कहि बृद्धा कृष्ण उद्घास ॥

र्शत भी रत्नावली ब्रत विश्वान निरुपण भी पास भवतिर सम्बन्ध समाप्त ॥

चं १९५३ वर्षे तैत्र नुदी ए मोते व इथ्यप्रस्थ पूरवयक्षत्री तासस्य व यक मन्त्र निधित्रो ।। ३१९वं रनिक्रदोधापन्युका—वैदैनकुकीर्तिः। तत्र वं ६ । सा १९८६} दणः। मन्दा–नैत्वयः।

१११६ रिमेश्रदोशायन्यूमा—देवैग्यूचीरिं। पण वं ६। या ११४८ई ४व । मला-नासदः। निरम-पूरा। राजण XIके काल XIके संदर्भ १। या मधारः।

प्र१९७- प्रदिसं दावपर्वदाने गाम संदर्भ । वे संदृष्टास्म मध्यारा

. ४११८ देवासहीपुत्रा—विश्वयुक्ता। या वं दावा १९३४ ६ ४ वा स्या—वक्षुतः विषय-प्रमाद समासं १७६६ के समासं १९४ । पूर्णी के वं देश सम्बद्धाः

নিবীৰ---মন্মিৰ--

वरण्डनेपेरविकायचनाँ चानुन्यसानै एक इच्छान्तो । अवरचहाने परिपूर्णकानुः क्षमा बनानां इचरानु विक्रिः।।

इति थी रेक्नकी पूजा समाप्ता ।

इसका इपरा नाम समूज कोति चूना भी है ।

ः १११६ देशुस्त्र — गोग्रस्तास्य । यस्य वं ४ । स्या १६८२ इत्य । सस्य-वंस्त्र । नियस-पूर्ण । र सम्बद्धाः से सम्बद्धाः से ४३६६ स्थानस्यारः

हरेरे० ऐहिंदीज्ञत्वेडवरियाल-केरावधेया । यस वे १४ । या स्टूप्टर्ट्र या प्रमा-वेस्टरः रियन-प्रा रियम । र कम ४ । के कम वे रिका देखी के त ७३ । व्यापकारः

विक्येय-स्थलमाना किसी में है। वही सम्बार में क्लिक्स में सं ७६६, १ ६४) बोर हैं। अरेटर असि सं २०१० में ११) में उनम सं १४६६ संस्थली १६३ में १३४) स

मम्बार। मिमेन—मुद्रीबच्छार में प्त्रतिकां(मैं सं प्रपृक्ष) शीरहें।

स्पर्याच्याक विश्वपार प्राप्त । च प्रप्राप्त । वा प्रमुख्या । प्रदेश प्रक्रिको के शब्द वे शांकि वाक्ष वे १९७० । वे श्री व्याच्यार। प्रदेश प्रक्रिकोत्रियाचललल्ला वर्षशाचा १८८५ इत्याचलक्क्का दिवस-मूचा। प्रकार अंकितकरा अध्योती वे वे देश । का सम्बारः

विकेर-स्त्री कथार ने एक सीर (वे सं ४४) और है। श्रीप्र प्रति सं वे ११ पर सं १ को कथा सं १६२१ के में १६२१ का क्यार । श्रीप्र, प्रति सं वे ११ पर सं १ को कथा × 1 वे सं १९४१ का कथार । विकेर-स्त्री कथार ने एक सीठ (वे सं ९६४) और है। श्रीप्र, प्रति सं १९ पर स्व का कि कसा × वे सं १९४१ का क्यार ।

j

४१२७ तेषु अभिषेकिषधान । पत्र स०३। भ्रा० १२६४६ है इन। भाषा संस्कृत। विषयं - भगवान के मिभषेक की पूजा व विधान। र० कार्ल X। ले० कार्ल स० १६६६ वैशाख सुदी १४। पूर्ण। वे० स० १७७। ज भण्डार।

४१२ = त्र त्रुकल्यासा '। पत्रं स० = । द्री० १२×६ इ व । भाषा-सस्कृत । विषय-झिमपेक विभान । र० काल × । ते० काल × । पूर्स । वे० स० ६३७ । क भण्डार ।

४१२६ प्रति स०२। पत्र स०४। ने० काल ×। ने० सँ० १६२६। ट भण्डार।

४१३० सघु अनन्त घेतपूजा । पत्र स०३। मा० १२×५३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । स० काल स० १८३६ मासीज बुदी १२। पूर्ण । वै० स० १८५७ । ट भण्डार ।

४१३१ त्रघुशातिकपूजाविधान । पत्र स०१५। घा० १०३×५ हे द व । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल स०१६०६ माध बुदी = । पूर्ण । वे० स०७३। आ मण्डार ।

४१३२ प्रति सं०२। पत्र स०७। ले॰ काल स० १८६०। मपूर्या । वे॰ स० ६८३। स्त्र भण्डार।
४१३३ प्रति स०३। पत्र स० ६। ले॰ काल स॰ १९७१। वे॰ स॰ ६६०। हर भण्डार।
विशेष—राजूलाल भौंसा ने जयपुर मे प्रतिलिपि की थी।

४१३४. प्रति स० ४। पत्र स० १०। ले० काल स० १८८६। वि० स० ११६। ह्य भण्डार। ४१३४ प्रति स० ४। पत्र स० १४। ले० काल ×। वे० स० १४२। ज भण्डार।

४१३६ त्तसुश्रेयविधि — श्रभयमन्दि । पत्र स० ६। मा० १०२ ४७ इ च । भाषा सस्कृत । विषय -विधि विधान । र० काल ४। ले० काल स० १६०६ फागुरा सुदी २। पूर्ण । वे० स० १५८। ल मण्डार ।

विशेष-इसका दूसरा नाम श्रेयोविधान भी है।

४१२७। तापुरनपनटीका—प० मावशर्मा । पत्र स० २२ । आ० १२×१६६ द व । मापा-सस्कृत । विषय-प्रित्रपेक विधि । रर्व काल स० १५६० । ले० काल स० १८१ कार्तिक बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २३२ । अ मण्डार ।

४१२८ त्तचुरनपन माप्य स०५ । मा० ८४४ इ.च । भाषा–सस्कृत । विषय-मिभिषेक विधि । र०काल ४ । ले०काल ४ । पूर्णा वे० स० ७३ । गामण्डार ।

४१३६ त्रविधविधानपूजा-इर्धभीति । पत्र स० २। मा० ११३ ४५ई इच । मापा-सरकृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० स० २२०६ । आ मण्डार ।

विशेष-इसी मण्डार में एक प्रति (वे॰ स॰ १६४६) भौर है।

```
232 ]
                                                         ियवा ग्रविद्वा पर विश्वाद साहित्र
          श्रेप्र÷ प्रतिस २ । पत्र ते ६ । के काल × । वे वे ६६४ । क ल्फार ।
          ¥रधरे मतिस+ के।यम क काली जलावे वं ७७। म⊾ बच्छार।
          श्रदेशके, इस्तरिविधानपुर्वार<sup>™</sup> । पंत्र सः ६ । या ११×१६ व । जल्ला–वेस्तरा । निषत दूरा ।
र नाल ×। में नाम ×। बपूर्ण। में वं ४७६। का नम्बार।
          नि<del>रोप-- इबी भण्यार ये १ प्रतियों (वे वं ४१४ २ २ ) बीर है।</del>
          ¥रे¥ दे प्रतिस्र∘ के। पण सं रहा के स्थल ×ावे सा देवा आर जम्मार ।
          ¥रेश प्रतिस के। पर सं १ कि काश ×ावे सं का का जनतर।
          रेर्देश्वर, प्रति सी था पन भी १ । में नाम से १६२ । में नी ६६३ | में नेपार !
          ≭रध्4े अक्तिस+ ≽ायश्चर काणि काल ×ावे से दर्भाचामधार।
          निरोप-नाक्षी क्षमार ने २ जीतको (के स ३१३, ६२ ) गीर है।
          ×रें ६७ मित सामा वाचा का के काल ×ावे वं ११ का खननारी
          २१४ महिन्छं कापनाचं १३ । ते कला वं १६ अलगा सुरी १। समुत्री। वे वं
११७ । क्र पंचार ।
          निकेर एतो अन्तार में एक अति (वे सं १६७) यदि है।
          श्रिक्षा प्रक्रियों या प्रवास रूप कि काम से १६१२ कि से ११४ कि मन्तर ।
          2१४ प्रतिस्थित। पण संभावे कलास्य ६ ७ मध्युकी १। वे व ६३। म
मधार ।
          निर्वेश-चंत्रल का विश्व की विद्या हुआ है।
          ≿१४१ सम्बद्धिमानमताचापनपुर्वाः "ापच वं १।वा ११×१ ६व। वला-रंतदाः।
रिपन–हुचा। ए. कल ⋉ाने कलात जलगादुरी १। दर्श (वे वं चर) शास्त्रार ।
          निवेच--- महाताल कावतीयाव ने अधिनिति करके श्रीवरियों के लोचर में चवर्त ।
          श्रदेश, प्रति ही का नमार्थ है। में जमा×ावे वी रूक्त स्थापनार ।
          ११४३ सस्त्रिमासपुता--बानचर्याचन्त्रं ११।का ११४ ६७।वासा-दिन्धी।विसर-
प्रमार्थर साम व १६६६ । वे समावं १६६२ । पूर्वी ने सं कार । या नामार ।
          रिवेच-इती अच्चार ने १ मीरियों (में वं ७४३ ७४४/१) मीर है।
```

क्षांत्रभ्र कविविविवासपूत्रा """। वय श्रः १६ । साः १९८६ द व । वालाः हिली । विवत-पूता ।

र नल ⋉ाने नल ⋉ाइलें(वे वं रंश !चलपार)

४१४ र तिधिविधानस्यापनपूजा "। पत्र स० ६। मा० ११३४४३ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ४। ले० काल स० १६१७ । पूर्ण। वे० स० ६६२। इट भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार में एक प्रपूर्ण प्रति (वे॰ स॰ ६६१) ग्रीर है।

४१४६ प्रति स० २। पत्र स० २४। ले० कास स० १६२६। वे० स० २२७। ज भण्डार।

४१४७ बाम्तुपूजा । पत्र स० ४ । ग्रा० ११६ ४ इ.च । भाषा-सस्कृत । विषय-गृह प्रवेश पूजा एव विधान । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० ५२४ । स्त्र भण्डार ।

४१४८ प्रति स०२। पत्र स०११। ले० काल स० १६३१ बैशाल सुदी ८। वे० स०११६। छ भण्डार।

विशेप-उद्यवनाल पाड्या ने प्रतिलिपि की थी।

४१४६ प्रात सं० ३। पत्र सं० १०। ते० काल सं० १९१६ धैशाल सुदी माने० सं० २०। ज भण्डार।

४१६० विद्यमानशीसतीर्थङ्करपूजा-नरेन्द्रकीर्ति । पत्र स०२। ग्रा० १०४४ ६ व । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ते० काल स० १०१० । पूर्ण । वे० स० ६७२ । श्र्य भण्डार ।

४१६१ विद्यमानवीसतीर्थद्वरपूजा—जौंहरीकाल विलाला । पत्र स० ४२ । मा० १२×७३ इ च । भाषा-हिन्दी , विषय-पूजा । र० काल स० १६४६ सावन सुदी १४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३६ । द्वर भण्डार ।

४१६२. प्रति स०२। पत्र स०६३। ले० काल ×। वै० स०६७५। ङ भण्डार।

४१६२ प्रति स० ३। पत्र स० १६। ले० काल स० १९५३ क्वि० ज्येष्ठ बुदो २। वै० स० ६७८। ज भण्डार।

> विशेष — इसी भण्डार में एक प्रिस (वे० स० ६७६) ग्रीर है। ४१६४ प्रति स०४। पत्र सं०४३। ले० काल ४। वे० स० २०६। छ्व भण्डार। विशेष — इसी भण्डार में इसी वेष्टन में एक प्रति ग्रीर है।

४१६४ विमानशुद्धि—चन्द्रकीित्। पत्र स० ६। मा० ११३ × १६ व । भापा-सस्कृत । विषय--

विशेष-भुछ पृष्ठ पानी मे भीग गये हैं।

£ _

४१६६ प्रति स०२। पत्र स०११। ले॰ काल ४। वे॰ स॰ १२२। छ भण्डार। विशेष—गोधो के मन्दिर मे लक्ष्मीचन्द ने प्रतिलिपि की धी। . १९६० दिवासम्बद्धियुद्धाः रूप्याचन में १२ का ११ ×०६ व । स्या-सम्बद्धाः इसार्कता × कि कम वे ११९ । दुर्शाने से अर्थान्य कमार्

निवेद--इसी बच्चार में एक ब्रवि (वे सं १६१) धीर है।

श्रद्भ प्रतिर्शे २ । पत्र सं १ । के कान × । के वं १६० । क्र कमार ।

विवेद--क्षान्तिवाड भी विवा है।

र्रेषक विद्याद्वितिया^{क करणा} पर धं वाचा र.स. ए जा वास्त-तास्त्र । विदय-नीर विदय् विति । र कमा ×ाने कार ×ा चतुर्वा के चं रेरवेश का कमार ।

±्चर, प्रतिस+ ३ । पत्र सं ३ । ने चम्प× | वे सं १४४ । क्ष्मणार)

. दर्भ में प्रति संपुर्व के शिक्षण में रुक्त कोल कुदी रुप्त के प्रत्य का कारण सर्व अस्ति संपुर्व के शिवक स्थापन का अस्ति के प्रश्चित कारण

नित्रेर—स्त्रो क्यार मे एक तर्थे (वे संदश्य) यौर है। १९८८: विच्लुकुमार सुनिय्वा—योक्काका । येव संयाग ११८७ वयः व्याननियो । विक्लुका । र कल ≿। से क्या ≿ा पूर्व। वे संबंधकार ।

श्रुव्यः विद्यार क्रम्यस्य "ापय र्गणाया व×र्षश्रुष्टयः व्यवान-वंश्वरः विवयः विवयः । र क्षमा×ाते कमा×ाप्रकृषि वं रिक्रमे (संवयः वर्षाः)

हर्म-अं सहस्त्रियोक्क-सहस्याचन नं देशाचा १६४६ इ.चा बाया-बंक्टा (क्यक-निर्वि क्रिकेटा र नान संहृद्धिका क्रमा के १६४६। पूर्ण कि संहृद्धा क्रमायाः)

रिचेप---वस्तुर्व में पृत्रे वाले विक्रम् ने वल वल्प वी एववा की वी । वजनेर में प्रतिनिधि हुईं ।

्ररेश्यः व्यवसास ∼ापन सं १ ।चा १३८६ १च। यसा-दिली। रियम-वर्टी केनार। इ.स.स. १३६ कमा ४।दुर्सा हे सं १ वशास चण्यार।

विक्रंस— इत्तरे सरितिक देवनी वर ज्यान, नामा स्वयं वादि के विक्र हैं। हुन देविज हैं। हे(क्ष्ट ज्यानूसाहासह्याच्याना । यस सं देवें था दिन्दें ४८३ देव : धारा— इत्या विवय— इता दिनाम ४ कि जला ४ । ब्युक्ती के सं १२ । ब्यूक्तारः

विशेष---निम्न पूजाम्रो का सग्रह है।

नाम पूजा	2		
	कर्त्ता	भाषा	विशेष
वारहमी चौतीसव्रतपूजा	श्रीमूपरा	संस्कृत	
विशेष—देवगिरि मे पार	र्वनाय चैत्यानय में तिसी	गर्ने ।	ने० कान म० १८००
नम्बूद्वीपपूजा		न्य ।	पीप बुदी 😮
रत्नत्रयपूजा	जिनदाम	71	ले॰ काल १८०० पौप बुदी
वीसतीर्थद्धः स्पूजा	_	17	n n ,, पौप बुदी इ
बुतपू मा	-	हिन्दी	,, 361
ग्रस्त्रजा	झानमूपरा	\ संस्कृत	
	जिनदास	n	
सिद्धपूजा	पद्मन िस्	,, ,,	
पोडगकारए।	-		
द्यतक्षरापूजाजयमाल	रहन्न	# अपञ्ज द्य	
तपुस्त्रय मूस्तोत्र -	~		
नन्दीस्वर उद्यापन		सस्वृत	
समवद्यरराष्ट्रजा	रत्नशेखर	1)	सै० काल स० १८००
ऋपिमडलपूजाविधान	ग्रुएनन्दि	33	
तत्वार्यसूत्र -	उपास्त्रा ति	77	
तीसचौबीसीपूजा	गुभवन्द गुभवन्द	1)	
धर्मचक्र यूजा	2.13.4	संस्कृत	
निनग्रुणसपत्तिपूजा	वैश्वमेन	n	
रत्नत्रयपूजा जयमाल	न्यपमदास न् <u>य</u> पमदास	22	र० काल १६६५
नवकार पैतीसीपूजा	न्ध्य भद्रास	भपश्र श	1468
कर्मदहनपूना	Manager	सस्कृत	
रविवारपूजा	शुनचन्द	n	
पश्चमत्याग् कपूजा		27	
	सुघासागर	3)	

. १६६ अस्तिवासः च्याप्य तं ४ । सा ११५४४ दृदया जायां-हिन्दी । विदस-विस् विकास । राज्य ४ । वे कल ४ । पूर्वी वे वे ६७६ । सामकार ।

विशेष--- इसी अव्याद में के प्रतिकों (वे सं ४२४ १६२, २ ३७) सीर हैं।

श्रीकर क्रिया ने । या वंदे । वे क्राबर X । ने सा प्रेम । क्राबर क्राया I

- देशेम२ः प्रति स∈ ३ । तम थं १६ | ते कल्ल × । ते तं ६७६ । वा भग्यार ।

ं ≭रेम्फे प्रति छ० ४ । पत्र वं १ । के वाल × । वे वं १७ । व्हमन्त्रारों

विकेष---पीरीश तीर्वश्वरी के वंबरत्यातक मी दिविद्यों की वी कई हैं।

हरू अविवादराखां—दीवजुरासस्यी।पर वं ६२।या ११८४ के दवानानानीत्रीः रियन-दिवारा-८ कलाव १७६७ प्राचीर कुसी १ ।से कलावं १ ६२ व समस्यकुरी ६।दुर्सापै वं ११८।वाचमार।

हरेस्ट व्यक्तिकारवारारारारारा वर्ष ४। या १ ३०४ दव स्वासा-हिस्से । नियन-वर्षांपि । र कमा×ाने प्रमा×। अञ्चली वे बंबवरा का व्यक्तिर।

विषेप-वर्श क्यार में एक ग्रीत (वे कं १९४६) बीट हैं।

. हरे⊏६ प्रक्रिस २ । पत्र वं ६ के १२ । के कम्ब ≾ (ब्यूर्ख के इं. १३) ड मण्यार ।

. होत्य श्र श्रविवादक्षमः । यस सं ११। साँ १ ४६ व च । यापा⊷ईस्ट्रव) विक्य-स्व पिषि । र कल × । से जल × । सबसी । से सं १६। ड सम्बाद ;

. ११८८८ अस्तरम्य—स्त्री शिवकादिः तम सं ६ । सा ११८४३ इ.च. र्मला—संस्कृतः विकर्ण-सन्त विकर्णाः कलास्याने सलास्यानुर्योगे सं १०६४ । इ.चल्यारः

हरू कार्यापनसम्बद्धान्यस्थानस्थानस्थानस्थानस्थानस्थानस्थानस्यानस्थानस्य । विश्वन

विकेश-विकार पार्टी की संबंध है.—

1444 14 14 14 14		
वास	ক্ষা	माना
ব্ৰ থমত কৰি আৰু	कुणनग	र्थसङ्ख
ब्रह्मसङ्गीरियल		19
শীলিকটায়াকৰ ্	_	
ब्रोतिकरीकराग		10

•		
पचमेरजयमाला	भूषरदास	_
ऋषिमडलपूजा	प्र ग् नन्दि	हिन्दी
पद्मावतीस्तोत्रपूजा	प्रसानान्द	संस्कृतं
पश्चमेरुवूजा	-	1)
भनन्तव्रतपूजा	-	11
मुक्तावतिपूजा	-	77
आस्त्रपूजा शास्त्रपूजा	-	"
	~	
पोडशकारसा द्रतीचापन	भे शवसेन	37
मेचमालावृतीद्यापन	-	79
चतुविदातिव्रतोद्यापन		11
दशलक्षरापूजा	•	17
पुष्पाञ्जलिवतपूजा [वृहद]	-	נד
पञ्चमीव्रतोद्यापन	कवि हर्षकत्याए	77
रत्नत्रयद्रतोद्यापन [बृहद्]	केशवसेन केशवसेन	77
रत्नत्रयद्रतीद्यापन	कथ ान्य	נד
भनन्तवतोद्यापन	_	77
द्रादशमासातचतुर्दशीव्रतोद्यापन	प्रणचन्द्रसूरि	73
पञ्चमासचतुर्दशीवतोद्यापन	~	19
भप्टाह्मिकाव्रतोद्यापन	-	
म क्षयनिषिपूजा		לל
सौस्यव्रतोद्यापन	-	77
भानपञ्चिवशतिव्रतोद्यापन	- Street	1)
णमोकारवैंतीसीपूजा	Name:	73
रत्नावलियतीर्थापन	_ ~	27
जर्नर्प्यसपत्तिपूजा जर्नर्प्यसपत्तिपूजा		73
		n
ततपरमस्यानवतोद्यापन -		7)
		n

13.		विकास विकास

		[पूजा प्रक्षिप्ता एवं विधान सामित
वै श्वविश्वतानी वारत	_	वै ल्या
वारिकारगीयास्य		,
रोदि स्टीक्टोसास्य	_	
पर्नपुरप्रतीया सन	_	
वस्तानसस्रोक्षुवा	খী পুন্নত্	,
विषयद्श्यमस्ययन	वाशवर	
हारमञ्जूषंग्नीयाल	-	
শক্ষিবিবাসমূব্য	_	
४१६ अठिसं०६। फिन पूरायों ना शंद्ध है	काश १३६। हे राज×ाहे ;—	र्वे १०४ (क्ष क्यार)
माम	વર્શ	थाण
विनिवनीयसन	_	१ स्ट्रुच
रोड्सीपवीयान	_	हिन्दी
শ্বন দ্ৰেৱীতালৰ	नेपार्थम	चं स्ट
रधवलकृत्योद्यापन	दुवतिशा गर	
रलपक्ततीयांच्य	~	
कक्तवद्यातमा	प्रकुर स्तृ रि	*
ु ष्णक्रतिषयीकारम	_	*

प्रति गान्धां तथपुर्व बी वशी तारा व नर्वस्तुना धारिकन्दरणयोगानन

य बुरेजरीति

श्रदेरी पुरुरतिविद्यात्र कार्या वर्ष है। या ३X४ इ.च.। यहां-ब्रेस्ट्रत । विश्व-विद्यात ।

कृत्रपद्धतीतस्त्रुवा पश्चमाद्यवर्षयीवृत्रा ४१६२ वृहद्गुरावलीशातिमडलपूजा (चौसठ ऋद्विपूजा)—स्वरूपचद । पत्र स० ५६ । म्रा० ११×५ इच । भाषा-हिन्दो । विषय-पूजा । र० काल स० १६१० । ले० काल × । पूर्ण । वे• म० ६७० । क भण्डार ।

४१६३. प्रति स० २ । पत्र स० २२ । ले० काल × । वे० स० ६४ । घ मण्डार ।

४१६४. प्रति स० ३ । पत्र स० ३६ । ले० काल × । वे० स० ६८० । घ मण्डार ।

५१६५ प्रति स० ४ । पत्र स० ६ । ले० काल × । प्रपूर्ण । वे० स० ६८६ । छ मण्डार ।

५१६६ पण्वतिच्लेत्रपूजा—विश्वसेन । पत्र स० १७ । घा० १०३ × १ इव । भाषा—सस्कृत । विषय—
पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । व० स० ७१ । घा भण्डार ।

विशेष---मन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार हैं।

श्रीमच्छ्रीकाष्ट्रासपे यतिपतितिलके रामसेनस्यवशे ।
गच्छे नदोतटास्ये यगदितिह मुने तु छकर्मामुनीन्द्र ।।
स्पातोसीविश्वसेनोविमलतरमित्र्येनयज्ञ चकार्यीत् ।
सोमसुग्रामवासे मविजनकितते क्षेत्रपालाना शिवाय ।।

भौबीस तीर्थक्करों के भौबीस क्षेत्रपालो की पूजा है ।

४१६७ प्रति स०२। पत्र स०१७। ले॰ काल ×। पूर्ण। वै॰ सं०२६२। ख भण्डार।
४१६८ षोडशकारणजयमाल । पत्र स०१८। ग्रा॰ ११३×५६ इ.च। भाषा-प्राकृत। विषयपूजा रि॰ काल ×। ले॰ काल स०१८६४ मादवा बुदी १३। वै॰ स० ३२८। श्र भण्डार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शन्द दिये हुये हैं। इसी अण्डार में ५ प्रतिया (वै० स० ६६७, २६६, ३०४, १०६३, २०४४) भीर हैं।

४१६६ प्रति स०२। पत्र स०१४। ले॰ काल स०१७६० भासोज सुदी १४। वे॰ स०३०३। स्त्र भण्डार।

विशेष-संस्कृत में भी मर्थ दिया हुमा है।

मण्डार ।

४२०० प्रति स० ३। पत्र स० १७। ले० काल ×। वे० स० ७२०। क मण्डार। विशेष—इसी मण्डार में १ प्रति (वे० स० ७२१) और है।

४२०१. प्रति स० ४। पत्र स० १६। ते॰ काल ×। वे० स० १६८। ख मण्डार। ४२०२. प्रति स० ४। पत्र स० १६। ते० काल स० १६०२ मगसिर सुदी १०। वे॰ स० ३६०। च

विशेष-इसी मण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० स० ३५६) भीर है।

```
्रिया गरिया एव निवान साहित्य
ક્ષ્યર ી
         ४०६६ प्रतिसं∘६। वस्तं देश ने नात्र ×ावेत २ वास्त्र बारा।
          ≥२. प्रतिसः ७। पत्र तं १६३ ते तत्र वर्ष १०. २ वर्षवर बुद्दी ११। वे व १.०। म
HUETE 1
          ४२ ६ वाडसकारस्यज्ञवसात—रह्यू केच्च तं २१ । था ११८६ ६व । त्रास⊢सरस्र व
नियम-नूता। रं्याल ×। ने याल ×। पूर्णा ने सं ७४७ । के लगार ।
          निचेप---ताइस टीना सहित है। इनी घण्डार में एक प्रति (वे वर्ष «६) भीर है।
          ±२०६ वाक्सकारमञ्जलमाता च्या व देवे हेवा १९४२ ई व १ वाला-धेरम स । विवन-
दुना। रंपल 🗴 । वे कल 🗴 । वर्ता । वे ते हेर्रात वर्षारा
          हर ७ प्रतिसं रायवर्त १६। के वार्ष×ोर्थ वे ११६। का वर्षीरः।
          निर्मेत--बोरहत में रिम्पल दिया हुवा है | देती कथार में एक प्रति ( है वं १९६ ) मीर है ।
           2२ थः वाडशाकारसावधानम ----। वयः वे १६ । बाः १९४६३ ६ व । वावा-वेस्टाः। रिपर-
 दुसा।र नला≾ाते नलासं १७३६ नातल दुसी १६ । दुर्गादे सं १४६ । व्याचनारः
           निर्देश-नीवों के मन्दिर में वं स्वतारात के बायनार्थ महिलिए हरें थी।
           20 1. वाहराकारण्डवसास विवास देवे | बार ११, X22 देव। बाहा-बाहर संस्तृत।
 निम-पूरा।रः कल x । ते लाख x । बहुर्ल ∮ते ते ६४९ । च वन्यर ।
           ⊁द्र अतिस २ । दव संदाने नान ×ाने वं धर्म । कामधार ।
           शरहरे चे बराकारकश्रकमासः । यथ श ६२ । या॰ ११८० ६ च । मारा-हियो सह)
```

निपर-पुता र जल x । व जल तं ११६६ वाला पुरो द । पूर्ण । वे च ६१६ वा वनार । १०१६ वास्त्राकास्त्रत्वा सम्बद्धा वक्ताव-राष्ट्र । वत्र वं १६। वा १ x७ इव । वान

सरक्षभ | निरम-नुसार राज्य × | के जान × | कुर्ता के वे ११६ । वा स्थापर । २२१३ वेडराकारस्युता—केरायस्य | पत्र वे ११। वा १९४६, इ.च.) वाला केर्स्यो

रेन्देर् क्रीक्राध्यास्त्र्याः—क्रियमानाया व दशासा १९८६ ६मा स्तारित्रे पित्र-पूर्वार समार्थ १६६४ नायपुर्विश्वो नामार्थ १०१६ अमोर शुर्वे १ हुर्ने १ व दश्री स्रारमारा पिर्वे नार्गासमार संस्कृति (वे संद्र्) औरहै।

रुरोष्ट ग्रीत सं १। पत्र वं ११। वं तमा X । वं १ । ता प्रधार। १९११: पोत्रतसम्बद्धमाः । पत्र वं १। ता ११/४६) १ पत्र । मत्त-बंतन । नित्र-

पूरा। एं कल Xाने नल Xायूडी दे वं ६६ (कालवार) निर्वेत—स्वी वचार्य ने दस्की (दे वं दर्दर) वीरे है। ४२१६ प्रति स० २ । पत्र सं० १३ । ले० कोल 🗴 । प्रेपूर्सो । वे० स० ७५१ । सः मण्डार । ४२१७ प्रति स० ३ । पत्र स० ३ मे २२ । ले० काल 🗴 । प्रतूर्सा । वे० स० ४२४ । च मण्डार । विशेष — प्राचार्य पूर्णचन्द्र ने मौजमःवाद मे प्रतिलिपि की थी । प्रति प्राचीन है ।

५२१८ प्रति स८ ४। पण स० १४ । ते० काल स० १८६३ सावरण बुदी ११ । वे० स० ४२४ । च भण्डार ।

विशेष-इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० ४२६) भीर है।

४२१६ प्रति स० ४ । पत्र स० १३ । ले॰ काल × । वे॰ स० ७२ । मे भण्डार ।

४२२० पोष्टशकारणपूजा (ष्ट्रह्सू)ः ापण स० २६। मा० ११३×४६ इच। मापा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७१८। क भण्डार।

४२६१ प्रति म० २ । पत्र स० २ से २२ । ते॰ काल Xा मपूर्ण । वे॰ स० ४२६ । ज भण्डार ।

४०२२ पोष्टशकारम् अतोद्यापनपूजा—राजकीन्ति । पत्र स० ६७ । मा० १२×४६ इ.म । भाषा— सस्कृत । विषय-पूजा । र० कात × । ते० काल स० १७६६ मासोज सुदी १० । पूर्म । वे० स० ४०७ । आ भण्डार ।

४२२३ पोष्ठशकारणव्रतोधापनपूजा—सुमतिसागर। पत्र स २१। भा० १२४४ई इच । भाषा— सस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ४। ते० काल ४। पूर्ण। वे० स० ५१४। इत्र मण्डार।

४२२४ शत्रुखयगिरियूना-भट्टारक विश्वभूषण । पर्य स० ६। मा० ११३×५३ इन । मापा-सस्तत । निषय-पूर्ण । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । नै० स० १०६७ । थ्र मण्डार ।

४२२४ शरदुत्सवशीपिका , संक्ष्म विधान पूजा)--सिंहनन्दि । पप सं० ७ मा० ६×४ इन । सांपा-संस्कृते । विषय-पूजा । १० काल × । ले॰ कान × । पूर्वी । वे० से० ४६४ । सा मण्डार ।

प्रव महप्रमाष च हट्द्वा लग्नास्तपा जना ।
कतु प्रभावनांग च ततोऽत्रेव प्रवर्त्ती ॥२३॥
तदाप्रमुखारम्येद प्रमिद्ध जगतीत्रले ।
हण्द्वा हट्द्वा बृहोत च वैद्यावादिकरीवकै ॥२४॥

```
[ पूजा प्रतिद्वा एव विभान माहित्व
```

MAS]

वातो नामपुरै युनिवरितरः बीयुवर्यनीयसः । पूर्वः भीवरपूरकातः यसमः बीवीर्यास्यः ।। विकासो गर्रासम्बद्धित्वत्येतेनमानिकृता । भीन्येत्रोयमहेत्ये युनिवरः कुर्वेतु वो बन्नवाः ॥२१।।

इति जी बर्दुरसम्बन्धा समझाः ॥१॥

इसके प्रभाव पूजा की हुई है ।

≱२२६ प्रतिष्ठ णायन थं १४ । ने कान त १६२२ । ने मं १ १ । आर सम्प्रार । ४२२० होतिकविकान (अतिकाराठ का एक भाग) ~ ~ — । वस सं ११ । मा १२१,४६०ँ

इंगा सत्ता–केन्द्रयः निषय–विश्वितियानः। र कालः ×ाने जालः वं १६६२ काल्यः बुदीः १ः वं १९७। काल्यारः

विशेष- प्रशिक्षा है। काम साथे वाली वालडी वा वर्तन किया हूं । है। प्रशिक्षा के लिये हुत्या व्यक्त पूर्ण है। सम्बन्धानमंत्री सीवालकीरिंग के वर्तका के इस कमा की अधिनिधि की वह थी। १४वें राम के समा सिन्दे हुने

है जिससी बच्चा ६ है। प्रवस्ति किया प्रस्तार है— स्मानों बीकरमानवणः। गरितिहित्रे यमः । भी हुम्मेनयाः। तं १६६२ वर्षे चाहुना हुस्सै १ हुस्सै वी इन्दर्शने च सीरफनरिदेशकराष्ट्री स बीकुनगण्येता कराहुँ च सीरिवरणकरेता कराहुँ च सीप्रधार्यप्रदेश कराहुँ

मेडमायसंबीयःर्मनप्रदेशः एत् वंश्वामार्थे वविवर्गतिरियः व्यव्यक्तवंदनायार्थे वीक्टव्यैति दर्गदेशाः ।

इसी बच्छार में २ प्रक्रियों (में सं १९२, ११४) और हैं।

१९२८, शांशिकविष्यम् (बृहय्)*******। वश वं थप । वा १९८६) हथा नामा-संख्या । विद्य-विधि विद्यान १४ कम्ब X । वे कम्ब वं १६१६ मानवा दृष्टी छ। दुर्फा १६ वं १४७। व्यापनाराः

विभेगानार्थः वतालालामी ने बिच्य वात्रक्ता के प्रश्नार्थ प्रतिसिधि की बी है

१९२६, प्रश्चिम पाचर्च १६। ले कल ×ाबपूर्णा वे ६६ । कालकार। १९६ द्वांतिकविधि —क्वांदेव । वर्ष ११ । वा ११३,४२३ दवा धला-कंतार।पिष≭

र्थस्त् । कियम विकिथन । ए जन्त×। के जन्त वं १३ नाव दुरी १। दुर्शको वे ६६। क कथार।

. १९३१ (सम्ब्रिमियां व्याप्त स्थाप क्षा का र ×४ इ.च.) कारा-वाश्या विकासिय विकास इ.चल ×३ के बाल ×१ कर्डी कि से ६ इ.स. कव्यार ६ पृजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य]

भर्देर शान्तिपाठ (बृहद्) '। पत्र स० ४०। मा० १० ×१। माथा-सस्कृत । विषय-विधि विद्यान । र० काल ×। ले० काल स० १६३७ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वै० स० १६५। ज भण्डार ।

विशेष--प॰ फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी।

५२३३ शान्तिचक्रपूजा । पत्र स०४ । ग्रा० १०३ X १३ इन । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल X । ले॰ काल स० १७६७ चैत्र सुदी ४ । पूर्ण । वे० स० १३६ । ज मण्डार ।

विशेष-इसी मण्डार में एक प्रति (वे० छ० १७६) और है।

४०३४ प्रति स०२। पत्र स०३। ले० काल ×। वे० स०१२२। छ भण्डार।

विशेष-इसी मण्डार मे एक प्रति (वे० स० १२२) भीर है।

५२३४ शान्तिनाथपूजा-रामचन्द्र । पत्र सं०२। म्रा०११×५ इ च । नापा-हिन्दी । विषय-पूजा। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०५ । इन भण्डार।

४२३६ प्रति स०२। पत्र स०४। ले॰ काल X। वै॰ स॰ ६८२। च अण्डार।

४२३७ शातिसहत्तपूजा । पत्र स० ३८ । ग्रा० १०२ ×५१ इ.च । भ्रापा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० ७०६ । इ. मण्डार ।

४२३ मातिपाठ । पत्र स०१। मा०१०३ × ६ च । भाषा - सस्कृत । विषय-पूजा के मन्त मे पढ़ा जाने वाला पाठ। र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । त्रे० स०१२२७। स्त्र भण्डार।

विशेष-इसी भण्डार में ३ प्रतिया (वे॰ स॰ १२३८, १३१८, १३२४) और हैं।

४२३६. शातिर त्रसूची "। पत्र स०३। मा० ०३ X४ इन। भाषा-सस्कृत । विषय-विधान। र०नाल X। ले० काल X। पूर्ण। वै० स० १६६४। ट मण्डार।

विशेष--प्रतिष्ठा पाठ से उद्भृत हैं।

४२४० शान्तिहोर्मावधान — आशाधर । पत्र स०५। ग्रा० ११२×६३ टच। मापा-सस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वै० स० ७४७ । ऋ मण्डार ।

विशेष--प्रतिष्ठापाठ में से सम्रहीत है।

४२४१ शास्त्रगुरुजयमात्तः "। पत्र स०२। घा०११४४ इ.च । भाषा-प्राकृतः । विषय-पूजा। र० काल ४। ते० काल ४। पूर्णः । जीर्णः । वे० स० ३४२। च मण्डारः ।

```
XX4 ]

    पूजा शिवधा एव विवास सामित्व

           रवेश्वरे श्राप्तत्रभवत्यम् आरम्भ करमे की विविच्यामा । पत्र सं १ । सा १ ३×४३ (व । धरा-
मेस्टतः विषय–विधार । र कल × । ते कल × । पूर्णः । वे देवव४ । धा क्यारः
           १९४४ शासनदेवतार्थनविवान***** । पत्र तं २१ में २१ | बा ११×१३ इ.व.। वाता-वीताः।
रियर-पूजाविधि निवान । र. तला×ाते काथ ×। दुर्ल । वे. स. ७०७ (का चण्यार)
           ररे ४ रिकरविकासपुका<sup>™ पर्</sup>ाप ते ७३। शा ११×१ इ.च.। प्रसा-दिशी । निर्मा
पूर्वार रात्र ≾। में नेसा×ापूर्ण। में संद्£ा इटच्यार।
           ४२४६ शीतकत्राकपृथा⊶वर्गमूच्यः। पण्यं काया १३×६६व । धना-संस्टानियर-
दुगा।र कान × : ते काल वं १६२१ । दुर्खा वे तं १६३ । का बच्चार ।
          ×९४०- प्रतिसी० र । पत्र का का वा १६३१ व समास पुरी १४ । वे सा १९६ ।
क् अच्छार ।
          ४२४८. द्वाक्रपञ्चनीक्रवपृश्चाण्याण्या पत्र वं ७ । या १२४६३ इत्त । वाला-वंसक्त । निस्त-
दुरा∣र कल वे १ ...। ते कल्य ⋉ | दुर्जी | वे वे दशर । पर अप्यार |
          विवेष---रचना श्रे विभावकार है--- सब्बे रीह यत्त्वी बहु चन्छ।
          श्रद्धाः ह्यक्रपञ्चनीत्रताचापनपृत्राण गण्याः कार्यद्रशास्त्र । सा ११४१ १व । प्राप्त-नेस्टरः
पिपन-पूर्वा(रः सम्ब×।के सम्ब×। दुर्ती वे वे द१७ । का बचार ।
          ४९४ मुख्याकपुर्वाण्याल्याः स्व सं १।का ११%६ ६४ | क्ला-संस्कृत | विस्त-पूर्वा |
र रात्र x । वे काम वे १ ६१ मानक सुनी १२ । पूर्व ३ वे व ७२३ ( क समारः
          ±२३१ प्रतिस्रं २ । पत्र सं ६ । है कस्त×। वे व ६०७ । चलकार ।
          श्र-प्रश्रिय स्थापन वं १६। ने कम्प×ाने थं ११७। का स्वरहार १
            ≱२४१ मृतक्कानकरपूर्वा<sup>------</sup>। पत्र सः १ । बा ११×३ ईच । क्रशा—क्षेत्रकः विसन-
दुना। सम्ब×्रीत सरू ×ानुसी। वे वे १६६। का स्थार।
          १९१४ मुख्यानमतोचापसपूर्वा """। वश् वं ११ (या. ११×१) इ.च.। वाग-बाग्रही
मिपन दूबा⊱र शब्द ⊠ोते पाल ⊠ापूर्णावे वं व्दश्राद शब्द रा
         ४१४८. <u>मृतकानमतोबापस<sup>्यास्त्रा</sup>। यत्र वं</u>। बा १३×१ इ.व.। मला—संस्य । रिपर-
```

द्वाार पल×ामे कल वे १६१९ (हर्स) वे वे १ । सामनार।

सार×।के कल के व्यक्त तुरी ३ । पूर्ती वें दें र ३० । स्रायमाहर ।

४२४७ श्रुतस्कधपूजा — श्रुतसागर। पत्र स०२ से १३। मा० ११३ ×५ इव। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। प्रपूर्ण। वै० स० ७०५। क भण्डार।

४२४८ प्रति स०२। पत्र स०५। ले० काल ×। वे० स०३४६। च मण्डार। विशेष—इसी मण्डार मे एक प्रति (वे० स०३५०) ग्रीर है।

४२४६ प्रति स० ५। पत्र स० ७। ले० काल ४। वै० स० १८४। ज भण्डार।

४२६० श्रुतस्कधपूजा (ज्ञानपद्धविशतिपूजा) — सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र स० ५ । मा० १२४४ ६ व । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल स० १८४७ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ५२२ । स्त्र भण्डार ।

विशेष - इस रचना को श्री सुरेन्द्रकीर्तिजी ने ५३ वर्ष की मवस्था में किया था।

४२६१ श्रुतस्कधपूजा । पत्र स०५। ग्रा० दर्रे×७ इ.च.। भाषा—संस्कृत । विषय-पूजा। र०काल ×। ले०काल ×। पूर्णा । वे० स० ७०२। ऋ भण्डार ।

४२६२ प्रति स० २ । पत्र स० ५ । ते० काल × । वे० स० २६२ । ख भण्डार । ४२६३ प्रति स० ३ । पत्र स० ७ । ते० काल × । वे० स० १८८ । ज भण्डार । ४२६४ प्रति । स० ४ । पत्र स० ६ । ते० काल × । वे० स० ४६० । च भण्डार ।

४२६४ श्रृतस्क्रघपूजाकथा । पत्र स० २८ । प्रा० १२३४७ इ च । भाषा—हिन्दी । विषय~ पूजा तथा कथा । र० काल × । ले० काल वीर स० २४३४ । पूर्ण । वै० स० ७२८ । इक मण्डार ।

विशेष—वावली (मागरा) निवासी श्री लालाराम ने लिखा फिर वीर स॰ २४५७ को प्रशालालजो गांधा ने तुकीगञ्ज इन्दौर में लिखवाया। जौहरीलाल फिरीजपुर जि॰ ग्रुडगांवां।

वनारसीदास कृत सरस्वती स्तोत्र भी है।

४२६६ सकलीकरणाविधि । पत्र स० ३। ग्रा० ११×५३ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले॰ काल × । पूर्ण । वै० स० ७५ । आ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतिया (वे० स० ८०, ४७१, ६६१) भीर हैं।

४२६७ प्रति स० २ । पत्र स० २ । ले० काल × । वे० स० ७२३ । क भण्डार ।

किशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७२४) भीर है ।

४२६८ प्रति स० ३ । पत्र स० ४ । ले० काल × । वे० स० ३६८ । ज भण्डार ।

विशेष—भाषार्थ हर्षकीति के वाचको के लिए प्रतिलिपि हुई थी ।

```
XXE ]
                                                         पुत्रा प्रतिष्ठा एवं विभाग शाहित्य
          ४२६६. सक्कवीकरस्™ामा । यदंत्र २१ । या ११×१ ६ च । वाला-संस्का । विश्व-विवि
विवासार कला×।ते कल्र×ापूर्णाके स ५७१ । व्यावकार।
          ≱रे• प्रतिस्• व । पत्र च व । वे काल × । वे सं धर्क । क मध्यार ।
          ¥२७१ प्रतिस ३।पवृत्तं ३।ते पान x।वे वं १२२। ह त्रमार।
          निवेर---इतो सन्दार वे एक प्रति (वे शं १११) और है।
          ≱म्थ्य-प्रतिसंधापवसंकाले काम × । वे सं११४ । का कस्तार ।
          ≭र+ देशिय संग्यात है। के काल ×ावे ते प्रदर्श वालावार ।
          निवेद---क्रांकिना पर क्रेस्क्रन टिप्पल दिना हुया है। इक्षो नच्चार में एक प्रति (वे स ४४३)
मीर है।
          देर्ज्यं स्वाराविकि<sup>™</sup> <sup>™™</sup> । पत्र वं १ । या १ xv३ ६व । जला–प्रतृष्ट संस्कृत । विरव
पिमन । र तक्त ×ाने तक्त ×। पूर्वा∄ वं १२१६ । स मधार ।
          विवेद-इसी जन्मार में एक प्रति (वे सं १९४१) धीर है।
          ≱क्क्य स्प्रवृत्ती-----) वत्र सं २ के १६। सा अई×६ इ.च.( शत्ता-कस्टुत । विकर-विकास ।
र सम⊼।के शता×।बपूर्तीके ते १९३६।वानमार।
          ४२७६ सप्तप्रसम्बानपुत्रा***** वन र्व १।या १,×१६९।याना-ताहत धनवर
पुता। र रान ×ाने कमा ≻ । पूर्ती वे वं ३६६ । व्यक्तकार ।
          ≵२००, प्रतिसः २ । पत्र सं १२ । के व्यक्त × । वे सं ७६९ । क वक्तार ।
          ४२०८. सप्तरिमुखा—विश्वदासः। पणः नं ७। चाः २०४३ इ.च.। वाला-संस्कृतः।विरम-पूर्णाः।
र राल × (से कान × । पूर्त (वे व २१२ । इस्कार )
          ११०६ स्प्रतिपृत्रा—बदगीसंत्र । पर तं ६ । था ११×१ इथ । जपा-बेलात । विदर-पूरा ।
र माम ≿ोने शाल ≿ा पूर्वो वे सं १२७ । आह मण्यार ।
          ≱रूम ब्रिटिस दे|पण के कि पाल नं १२ गॉलिक नुदो २।के सं४१|म
APRIT |
          प्रश्नाह प्रति सः दे। यथ वं का में अनव ×ावे तं देश । इ अध्यार।
          विमेप-अपूर्ण मुरेन्डमीति हारा रक्ति वॉटनपुर के नहाशीर की क्रप्टत पूका भी है !
          १०६६ सप्तरिपुत्रा--विसमृष्द्रः। वयः नं १६। सा १ ३४१ ६ व । भारा-मेलून । स्विम-
द्वा) र सम्ब×ारे बाल में १८१० । पूर्व विवे हें है । अस्वण्यार ।
```

पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य]

४२ = ३. प्रतिस०२ । पत्र स०६ । ले० काल स०१६३० ज्येष्ठ सुदी = । ले० स० १२७ । জ্ मण्डार।

प्रव=४ सप्तर्षिपूजा । पत्र स०१३। मा०११×५२ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा।
र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० स०१०६१। इस भण्डार ।

४२८४ समवशरणपूजा — जलितकीर्त्त । पत्र स०४७। आ० १०३×५ इ च । आपा-सस्कृत । विषय-पूजा । र॰ काल × । ले॰ काल स० १८७७ मगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वे॰ स०४५१। स्त्र भण्डार ।

विशेष--- खुस्यालजी ने जयपुर नगर में महात्मा शत्रुराम ने प्रतिलिपि करवायी थी।

४२८६ समवशरणपूजा (यृहद्)—रूपचन्द । पत्र स० ६४ । झा० ६३४१ इख । भाषा-सस्कृत । विषय पूजा । र० काल स० १४६२ । ले० काल स० १८७६ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वे० स० ४५५ । आ भण्डार ।

विशेष—रवनाकाल निम्न प्रकार है— अतीतेहगनन्दभद्रासकृत परिमिते कृष्णापक्षेत्र मासे ॥

४२८७ प्रति स०२। पज स०६२। ले॰ काल स०१६३७ चैत्र बुदी १५। वे० स०२०६। ख

विशेष---प० पन्नालालजी जीवनेर वालो ने प्रतिलिपि की थी।

४२८ प्रति स० ३ । पत्र स० १५१ । ले० काल स० १६४० । वे० स० १३३ । छ भण्डार ।

४२८६ समवशररापूजा—सोमकीति। पत्र स० २८ । आ॰ १२×५३ इच । भाषा—सस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ते॰ काल स० १८०७ वैशाल सुदी १। वे॰ स॰ ३८४। स भण्डार ।

विशेष--अन्तिम श्लोक-

व्याजस्तुत्याची ग्रुग्गनीतराग ज्ञानार्कसाम्राज्यविकासमान । श्रीसोमकोत्तिविकासमान रस्तेपरत्नाकरचार्ककीति ॥

जयपुर में सदानन्द सौगाएं। के पठनार्थ छाजूराम पाटनी की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० स० ४०५) भीर है।

४२६० समवशररापूजा । पत्र स०७। आ०११४७ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४। ते० काल ४। प्रपूर्ण । वे० स० ७७४ । इः भण्डार ।

४२६२ सम्मेदशिखरपूजा--गद्गादास । पत्र स०१०। मा०११३४७ इच । भाषा-संस्कृत । विषय--पूजा । र० काल ४ । ले० काल स०१८८६ माघ सुदो १ । पूर्ण । वे० स०२०११ । स्र मण्डार ।

विकोप---गगादास धर्मचन्द्र मट्टारक के शिष्य थे। इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ स॰ ५०६) भीर है। ४२६२ प्रति स०२। पत्र सं०१२। ले॰ काल स॰ १६२१ मगसिर बुदी ११। वे॰ सं०२१०। स्व

```
₹8≒ ]
                                                        पृक्षा प्रतिष्ठा एव विधान सम्बद्धिः
          ४२६६ सुक्क्वीकरक्<sup>रणाम्म</sup>ायत्र न ११।या ११×१६४। तसा–शंक्रत।स्वन-दिनि
मिमनार नाम ×ाने नाम ×। पूर्वा वेशः १७१ । चानवार।
          ≱२७ प्रतिस्∙२। पण वं ३। ते नाल ×। वे तं ७५७ । क बम्बार ।
          ⊁२-४१ प्रतिस ३ । पत्र श्रंदाके शास×। देनं १९२ । इद सम्बार ।
          विवेष---रमी बच्चार में एक प्रति (वे मं १११) सीर है।
          १९७२ प्रतिसंक्षापवर्षकाने काल ×ावे वं ११४। जा बन्धारा
          ≵रेश रे प्रतिसः ≵ापव तं देश के नाल ×ादे व ४२४ । सालध्यारः।
          विमेत—सौनिया वर बंस्क्ल टिप्पल दिया हुसा है। दशो बच्चार वे एक प्रति (वे स. ४४९)
बोर है।
         १९७४ सभाराविधि ..........) वस वं १। या १ ×४३ इच | बाला-प्रानुत नंपहत । निवन
विवास : र कस ×ाने वस × । प्रती वे वे १९१६ । का क्यार ।
          विकेश-इसी जलगर में एक अदि (वे वं १९६१) बीर है।
          १९७४ सप्तपदीरू । पत्र सं २ के १६। सा ७६४६ ६ र । जला–७ स्टूट । विस्त-विकास ।
र गुप्त ×ाप्ते सम्ब×ाबनुर्लावे∵वे १९८६ । कावभार ।
          ४२७६ सहयरमस्यानपृष्ठा<sup>------</sup>।यद द १।या १३×६६व।यला-संदार ⊍<sup>वर्तन</sup>
पुता। र राल ≾ाते कल ≾ा दुर्जी देव १९६१ व्यावस्थारा
          2844 प्रतिस २ | वयर्थ १२। से कल ×। वे वं क्र१२। क्र क्यारा
          १. अ.स. सम्प्रिया — विकासस्य । पत्र वं ७ । था ×४३ ६ व । बाला –संस्कृत । निवस–पूर्ण ।
र नलं≾।से बला≾।दूर्वादै सं १९३।इह थव्डार।
          १९७६ स्प्रतिवृक्षा-- बक्तीसन । यद वं ६। का ११×६ ६ व । जया- संस्ता । विस्य-पूर्वा
र कमा×ामे राज×ापूर्णांचे वं १९७। आह मन्यार।
          ≱रद प्रक्तिसंदायप संदाले याम क १२ नर्जीतक नुरी दाने संप्रामी
 4चार ।
          ≱रुक्तरे अक्टिक्स के । पत्र वं भागे पत्त ×ावे वं ११६ । इट सम्बार (
          विकेश-महारक गुरेखनीति हात्रा रचित चरिकपुर के नहालीर भी बंशहत पूजा जी है ।
          ४९८६ सप्तरिपुदा—विस्मृत्यः। वर वं १६। सा १ ३००६ व । तथा-संस्था रियक
 दशाद नल×ाने कल वे १६६ । पूर्ता वे वे १ । सामधार।
```

४३०६ प्रति स० ३। पत्र स० ८। ते० काल ×। वे० सं० २६१। मा भण्डार।

१३०७ सर्वतीभद्रपूचा । पत्र स० १ । श्रा॰ ६×३ दृ इ व । भाषा-मस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० १३६३ । श्रा भण्डार ।

४३०८ सरस्वतीयूजा-पद्मनिन्द्। पय स० १। मा० ६×६ इ न । भाषा-पम्कृत । विषय-पूजा । र० नाल ×। त० काल ×ा पूर्ण । वे० स० १३३४ । स्त्र भण्डार ।

१३०६. सरस्वतीपूजा-झानभूगण । पत्र स० ६ । मा० ८४४ ६ व । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ते० काल १६३० । पूर्ण । वै० स० १३६७ । ऋ भण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार में ४ प्रतिया (वे० स० ६ = ६, १३११, ११० =, १०१०) भीर हैं।

४३१० सरस्वतीयूजा । पत्र स०३। ग्रा० ११×४६ इच। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ६०३। इ भण्डार।

विशेष-इसी मण्डार में एक प्रति (वे॰ स॰ ६०२) मीर है।

४३११ सरम्बतीयूजा—स्घी पन्नालाल । पत्र स० १७। ग्रा० १२४८ इ.च । मापा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० काल स० १६२१ । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वे० स० २२१ । छ मण्डार ।

विशेष-इसी भण्डार में इसी बेप्टन में १ प्रति भीर है।

४२१२ सरस्वतीपूजा—नेमीचन्द बस्शी।पत्र स० ६ मे १७। मा० ११×५ इ च। भाषा— हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल स० १६२५ ज्येष्ठ सुदी ५। ले० काल स० १६३७। पूर्ण। वे० स० ७७१। क भण्डार।

४३१३ प्रति स०२। पत्र स०१४। ते० कात ×। वे० स० प्र०४। छ मण्डार।

४३(४ सरस्वतीपूजा-प० बुधननजी। पत्र स० ४। मा० ६×४३ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण। वे० म० १००६। स्त्र भण्डार।

४३१४ सरस्वतीपुजा । पत्र स०२१। मा० ११×५ इच। भाषा हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ७०६। च भण्डार।

विशेष--महाराजा माघोसिंह के शासनकाल मे प्रतिलिपि की गयी थी।

१३१६ सहस्रकृटजिनालयपूजा । पत्र स० १११। मा० ११६×४६ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ने० काल स० १६२६। पूर्ण। वे० स० २१३। स्त्र मण्डार।

विशेष-पं ० पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी।

```
** ]
                                                          पूजा प्रतिद्वादक विजान साहित्व
          ×९६६ मतिसः २ । पत्र सं ७ । ते काल सं १०६६ मीसाचा सुरी ३ । ते ४६६ । ल
बम्बार ।
          ४२६४ सन्मेदरिकरप्का—प वाबाहरकासः। पन व १२। सा १२× ४ व । जागानीन्ये।
विवय-पूजा। र काल X । के काल X । पूर्ण | वे से ७४व । का घल्यार ।
          ×२६४८ प्रतिश्च० र । प्यार्थ १६। र कम्बर्स १ हर । के कम्बर्स १६१२ । के सं ११६)
श्र मध्यार ।
          ×२२६ प्रतिस्थे के । पत्र ते १७ । के राज्य से १९६२ साक्षोज बुधी है । के से २४ । कि
क्यार ।
           देरे६७. सम्मेद्गिकरपुत्रा—राम्बन्द्र । यथ वं का धा ११३×१ इ.च । वामा-हिन्दी । विवन-
दुसारि कला×।के जलार्च १८४२ मानल सुदी ६ । पूर्णा के दे ६६६ । सामध्यार ।
          निकेच-- प्रती बच्चार के एक प्रति (के शं ११२३) और है।
          ३२६६६ प्रतिस्रं १। पत्र सं ७३ ते काल वं १६१ जान तुरी १४। वे व करी प
मच्डार ।
          ≱रेट्ट प्रतिका के। पण सं १६। के काल ×ावे सं ७१६। काणभार ।
          निषेप-- इसी चन्दार ने एक बांत ( के सं uay ) बीर है।
              ाप्रदिशः ४ । पत्र संक∣ते नल्द ×। दे त २११ । इह लच्चार /
          ८६ १ सन्मेदिमिकरपृक्षा—सागचन्द्र।पश्चां १ (सा १९ ×४ ६ च) भाग—दि<sup>©</sup>े
मिनमञ्जूना (र कल वे १६२६ । के कल वे १६३ । पूर्वा के व्यवहान सम्बद्धा
          दिसेय-- पुता के प्रवास पता की क्लि हुने हैं।
          ±देप. प्रतिका को प्रवर्ण । ते यस्त ×ावे सं १४० । इस सम्बार ।
          विकेश-- विकासनी की स्तरित की है।
          ≥६ ६ छन्मेवृतिकरपुका—संधुरैनद्रकीर्ति।पनतं २१।का ११×६ इ.व.। मधादि<sup>ती।</sup>
निवर क्या। र कल 🗙 | के शत्यं व १६१९ | पूर्व | के रे १६१ | प्राचनार ।
          विकेच-- १ में पत्र के वाले नमनेव पूजा नी हुई है।
          श्रदे प्र सम्बेदिशकरपूतां "ायम सं दे । मा ११×४ई दथा माना-दिन्छ। विवय-द्वाा
र मस×ामे राज×। इर्था । पे वे १२११ । व्याचनारा
          ≱६ ४ प्रति संदेशपवर्ष देशमा १ ×६ ६ चालपा-क्रिको (विचय-पूजा। र'नान ×।
```

में राज x । इसी । वे से स्वरूप । संज्ञार ।

सिक्टि—स्तीथच्यार में यक मधि (वे वं ७३२) शीर है।

```
प्ता प्रतिष्ठा एव विधान माहिस्य 1
            ४२०६ प्रति स०३। पत्र म० टाने० जात्र / 18 मंद २६३। स काहण 1
                                                                               1 205
            ४३०७ सर्वतेमहर्वा । एवं छ० ११ एक हुआई इ.व.१ एक न्याहरू १ दिल्लाहरू १
 र० काल × । ले० काल × । पूर्मा । वै० स० १३८३ । इर मान्या । ४
            ४३०८ सरस्यतीपूजा-पद्मनन्ति। पत्र स्व १ व्याव १/६ द व १ व्यापाः वृत्ताः वन्ताः
 र० काल × । ने० कान × । पूर्ता । वे० म० १३३ ( । श्र नग्टार ।
            ४३०६. सरम्वतीवृज्ञा—हानमृत्रम् । पत्र म० ६। याः ८८४ इ ६ ६ च्या-४१४ १ १८०६-८११
 र॰ काल 🗶 । ते॰ काल १६२० । पूर्ण । वै॰ स॰ १३६७ । स्त्र भागा।
            विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिया (वै० स० ६८१, १३११, ११०६, १८१६) ही है।
            ४३१० सरस्वतीपूजा । पत्र म॰ ३। मा॰ ११४४ देव। नाता-१ कृत । विपद-पूजा।
र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वै० स० ६०३ । इ. नक्टार ।
            विशेष--इसी मण्डार में एक प्रति (वे० स० ८०२) मार ै (
            ४३११ सरम्बतीवूजा—रुघी पन्नालाल । पत्र सक्ष्मा चाक १२/६ इस । मापानीहरी।
 विषय-पूजा । र० काल स० १६२१ । ने० कान 🗙 । पूर्ण । वै० गु० २२१ । छ मञ्जर ।
            विशेष-इसी भण्डार में इसी वेष्टन में १ प्रति और है।
            ४-१२ सरस्वतीवृज्ञा—नेमीचन्द वरुशी । पत्र म० द म १३ । प्रा० ११/४ १ द । नारा-
 हिन्दी | विषय-पूजा | र० काल स० १६२४ ज्येष्ठ सुदी ४ । ते० मान म० १६३७ | पूर्ण | वे० म० उ०१ । कृ
            ४६१३ प्रति स०२। पत्र स०१४। ले० वात ×। वे० स० द•४। र मण्यार।
           ४३(४ सरस्वतीपूजा--प० बुधननजी । पत्र स० ५ । मा० ६×४३ ६ च । मावा-हि दा । तिप्त-
 पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १००६। श्रा मण्डार।
                                     । पत्र स० २१। मा० १८% इ.च । मापा हिन्ता विषय-पृता।
            ४३१४ सरस्त्रतीपुजा
 र० काल × । ले० काल × । पूर्रा । वे० स० ७०६ । च मण्डार ।
           विशेष---महाराजा माघोसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी थी।
           ४३१६ सहस्रकृटजिनालयपूजा । पत्र स०१११। मा० ११६४४६ इ । भाषा-मस्यत ।
विषय-पूजा । र० काल 🗴 । ले० काल स० १६२६ । पूर्गा । ते० स० २१३ । स्त्र मण्डार ।
```

विशेष--प॰ पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी।

```
KKR I
                                                        📗 पूजा मोवेद्वा एव विचान सामित
          ४११७ सहस्राधितपुत्रा—म• धर्मेकीर्च । पत्र सं ६६ । सा १९३८६ इ.च । बला-संस्त्र ।
विनय-पूजा।र काल ⊠ाले अध्यासं १७६६ साला≛ तुसी २ । पूर्णा दे सं ४३६ । का जन्मार ।
          विचेच—इसी जम्मार में एक प्रति (वे सं ३१२) सीर है।
          ≱रेरि⊏ प्रक्रिया के बचार्त काल सं १६९२ | वे वा प्रश्राक्ष वच्चार ।
```

≱देश्थ. प्रतिसा के प्रपार्थ हरु। के काल सं १६६ । वे संस्था अन्यक्तार।

हेरेरे० प्रतिसा शायन संदश्लोक सम्बद्धा से संदश्च अपकार।

×१२१ प्रतिस ±ावत्र वं ६४ । के वस्ता×। के संदर्श सामग्रहा

िवेष---प्रश्नार्थं हर्पनीति वे विद्यापालन् में प्रवित्तिपि कराई थी ।

१९२२ सहस्रत्युद्धितपुत्राणणात्रवर्तश्योगा १.४१ इ.च। शरा–वस्तर। विस्त-पूरी र कल×ाने नल×।बदुर्ला∮ वं ११७। श्राचनारा

2,६२३ प्रतिस २ । यस वं वया ने सल ×। ब्यूर्ल । वे त्रांद्य प्रयार ।

४३२४ सहस्रकासपुत्रा—वर्धसूच्याः।पव वं ६६। या १ ⊈×१३ इवः वाना-वंतरः। विवन पूर्वा: र नाल 🗙 । के काल 🗙 । बपूर्त्ता । वै वे वे वे वे वारा

४६२४८ प्रति सः मात्रम सः १८ के ६६। ते तला सं १००४ ल्लेष्ट पूरी शांबपूर्ण । वै व but I w meeters

निर्देश-वर्ता क्रमार ने ए प्रपूर्ण मिन्दों (वे वे १४४ १४६) धीर है।

≵देर्द सहस्रमामपुर्वा चार्च तं १३६ वे १६ । मा १९४६३ इ.च । माला-संस्टा विचय-पूर्वारि पान ×ामे नाम ×ापूरतामे च मेवराच मधार।

मिक्री-- इसी भग्नार में एक प्रति (वे ते ३००) गीर है।

४३९७, स्टब्स्नासपता—पैनस्य । यत्र वं २२ । सा १२३×०३ इ व । जला-दिनो (विष्ण-प्रसार राम × । ने राम × । पूर्व । वे व २२१ । इं. नगार ।

११२८ सहस्रामपुत्रा व्याप १ । या ११४० हथ । शहरा-दिनी । विश्व-दूरा । र शत x । से राप x । पूर्ण | वे सं ७०७ । च नमार ।

१६९६. सारस्यत्वन्त्रपुत्रा विषय । प्राप्ता १ ३×४३ इ.च । मारा-मीत्रत । विषय-प्रसार नल×। में कल×। पूर्णा वे वे देवश व्यापनार।

⊻३३ प्रक्रियों देश पर वं १३ने पन X | वे सं ११२ | क्रान्यार |

पुजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य]

४३३१ निद्धत्तेत्रपृता-नान्तराय । पत्र म०२ । धा० ६३×५२ इस्र । भाषा-हिन्दी । विषय-

४३३२ सिद्धत्तेत्रपूजा (यृहद् —स्वरूपचन्द्। पथ म० ४३। मा० ११३×४ इ च । भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल स० १६१६ कार्तिक बुदी १३। चे० काल स० १६४१ फागुगा मुदी ⊏। पूर्गा। वे० स० ⊏६। म भण्डार।

विशेष—धन्त में मण्डल विधि भी दी हुई है। रामलाल की बज ने प्रतिलिपि भी भी। इसे मुगनबाद गगवान ने बीधरियों के मन्दिर में चढाया।

५३३ मिद्धत्तेत्रपूता । पत्र म० १३। धा० १३४८ इव । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । र० वाल × । ते० काल स० १६४४ । पूर्ण । वे० स० २०४ । छ भण्डार ।

४३३४ प्रति स०२। पत्र स०३१। ले० माल ×। वे० स० २६४। ज मण्डार।

४३३४ सिद्धत्तेत्रमहासम्पर्जा । पत्र स०१२६। मा० ११३×४६ इच । भाषा-सस्यत । विषय-पूजा । र० काल × । ते० काल स०१६४० माप सुदी १४ । पूर्ण । वै० स०२२० । व भण्डार ।

विशेष-प्रतिशयक्षेत्र पूजा भी है।

४३३६ सिद्धचनपूजा (गृहद्)—भ० भानुकीर्त्ति । पत्र स० १४३ । मा० १०५४६ इझ । भाषा— सस्कृत । विषय पूजा । र० काल ४ । ले० काल स० १६२२ । वे० स० १७८ । स्व भण्डार ।

४३३७ सिद्धचकपूजा 'बृहद्)—भ० शुभचन्द्र। पत्र स० ४१। मा० १२×८ इ च । भाषा~सस्वृत । विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल स० १६७२। पूर्ण । वे० स० ७५०। म् भण्डार।

विकाप-इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ य॰ ७५१) भीर है।

४३३ ⊏ प्रति स० २ । पत्र स० ३ ४ । ते० काल × । वे० स० ५४ ४ । उक्त मण्डार ।

४३३६ प्रति स० ३। पत्र म० १४। ते० कात × । वै० स० १२६ । छ भण्डार ।

विकोप-स॰ १२६६ फाग्रुण सुदी २ को पुष्पचन्द मजमेरा नै सशोधित की । ऐसा प्रन्तिम पत्र पर लिखा है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे॰ स॰ २१२) मीर ।

४३४० सिद्धचक्रपूत्रा-श्रुतसागर। पत्र स० ३० मे ६०। ग्रा० १२×६ इ.च.। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। ग्रपूर्ण। वे० स० ६४४। इ. मण्डार।

४३४१ सिद्धचक्रपूजा-प्रभाच्न्द् । पय स०६ । मा० १२४५६ च । मापा-सस्कृत । विषय-पूजा । र० काल ४ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० ७६२ । क मृण्डार ।

रुरेपरः सिद्धणकपूत्रा (बृहर्षः) -------। यतः वं ३४ । याः १३४६३ ६ व । त्रणा-संस्ता। विद्रमञ्ज्ञा (र नाग ×) वे नाग ४ । यहः। वे वे ५०० । क नण्याः ।

≯प्रेप्टे सिद्धवरुष्डाः विश्व हो स्वा ११४८३ देवः बास-नीतनः । विसन्ताः र सन्दर्भने सक्तरः । पूर्विवे वे २२६ । व्यवसारः ।

≿१४४ प्रतिसं ३। पत्र सं ३। ते पल Xावे सं ४ द । च समार।

हरेश्वर प्रतिस्थे है। यह वे १७। ने राज्य से १६ बायस दुर्श १८। दे वे ११। अरुपार

३१४६ सिडचकपूता (इरह्)—संतकाल । यस है । या १९४४ इथ । मात-हिन्दे । रियर-हृता । र ताम X । ते तत्र स्ट ११ १ । पूर्ण १ वे अपर । स्ट प्याप्त ।

दित्य-ईसरमाम बांदबाइ ने स्तितिति वी वी ।

४६५० सिद्धणकपूत्राः पण वं ११६। या १९४०) इयः वस्त-दिन्यै । स्तिर-दुना । र-तार × किनार × | दुर्गा किनी सम्बद्धाः क्ष्यार ।

४१५८. निञ्जूषा— आरमूच्छ । यर्गदे १। सा १३८४ ९ दर। यसा-वस्तः । दिस-दुसः। र राज्य ४ कि राज्य देश्यो । पूर्णके संदर्भकाराः

विसेच---पोरङ्गवेव के बालनकाल ने शंबायपुर में अधिकार हुई थी।

. २६४६ प्रति ही २ । पत्र ती १ । वा ्रिं×६ द व । जला बैल्टव (वयर-नृता। र वस्ति ८ । से वक्त × । पूर्ण । वे वे ७६६ । कालचार ।

. ११.४६ कि<u>टपूना</u>—सहाये कालावरा पंच वं २ । बा ११.४६ रजा मला–बाहरी विक्य-पुना र काल × । ते कल वं १.२१। पूर्णी वे व क्रश्न कलाया ।

रिकेप-- इसी सम्बार में कुछ मति (वे सं ७६६) और है।

±६८१ प्रशिष्ठ २ । पथ र्घ ६ । ने जला सं १ २३ व्यक्तित बुदी । वे वं २३६ । व्री मन्दार।

विर्देश-पूर्वा के बारान्य के स्वराणा नहीं है जिन्तु मारण्य ने ही बात पहाले का नन्य है। १९३९, सिद्धपूर्वा विकास के प्रशासा वर्देश्वर है वर्षा वाला-सन्दर । स्विस-पूर्वा

र नल ×ामें क्ला×ानुर्तावे वं १६६ । ड वचार। स्टिन्-इडी वचारवे एक बॉट (वें वं १६२४) घीरहै। पूजा प्रतिष्ठा एव विधान साहित्य]

१३१३ सिद्धपूजा । पत्र स० ४४ | छा० ६४१ इ छ । भाषा-हिन्दी | विषय-पूजा । र० काल ४ | ले० काल स० १६४६ | पूर्ण । वे० स० ७१५ । च भण्डार ।

४३४८ सीमधरस्वामीपूजा । पत्र स०७। मा० न×६३ इच। भाषा-सस्कत । विषय-पूजा। र० काल ×। ते० काल ×। पूर्ण । वै० स० नथन । क मण्डार ।

भ्रेथ्य. मुखसपत्तिव्रतोद्यापन-पुरेन्द्रकीित । पत्र स० ७ । मा० द४६३ दश्च । भागा-मस्मृत । विषय-पूजा । र० काल स० १८६६ । ले० काल ४ । पूर्ण । वे० स० १०४१ । श्र भण्डार ।

४३४६ मुत्वसपत्तिव्रतपूषा-व्यवयराम। पत्र स० ६। मा० १२४५३ इत। भाषा-सस्त। विषय पूजा। र० काल स० १८००। ते० काल X। पूर्ण। वे० स० ८०८। क भण्डार।

४३४७ सुगन्धदशमीच्रतोद्यापन । पत्र स०१३। मा० ८४६३ इतः। मापा-सस्कृतः। विषय-पूजा। र० काल 🗴 । ले० काल 🗴 । पूर्णः । वै० स० १११२ । ऋ भण्डारः।

विशेष—इसी मण्डार में ७ प्रतियां (वे० स० १११३, ११२४, ७४२, ७४२, ७४४, ७४४, ७४६)

४३४८ प्रति स० २ । पत्र म० ६ । ले० काल स० १६२८ । वे० स० ३०२ । छ भण्डार ।

४३४६ प्रति स०३। पत्र स० म। ले० काल ×। वे० स० म६६। स मण्डार।

१३६० प्रति सः ४। पत्र सः १३। ते० काल सः १६५६ मासोज बुदी ७। वै० स० २०३४। ट भण्डार।

४३६१ सुपार्श्वनाथपूरा-रामचन्द्र। पत्र स० ५। मा० १२×५३ ६ व। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। र० काल। ले० काल ×। पूर्ण। वै० स० ७२३। च भण्डार।

४३६२ सूतकतिर्णय । पत्र स० २१। पा० ८४४ इ च । भाषा-सस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० ४ । म्ह भण्डार ।

विशेप--सूतक के मितरिक्त जाप्य, इष्ट मिनष्ट विचार, माला फेरने की विधि मादि भी है।

४३६३ प्रति स०२। पत्र स०३२ | ले॰ काल ×। ने॰ स० २०६। भू मण्डार।

४३६४ स्तकवर्णन । पत्र स॰ १। झा० १०३×१ इन । भाषा-सस्तृत । विषय-विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्स । वे० ५० १४० । ऋ मण्डार ।

४३६४ प्रति स०२ । पत्र स०१ । ले० काल स०१८४५ । वे० स०१२१४ । ग्र्य मण्टार । विदोप---इसी भण्टार में एक प्रति (वे० स०२०३२) ग्रीर है।

४३६६ सोनागिरपूजा--श्राशा । पत्र स० ८ । ग्रा० ४३×४३ इ.च । मापा-सस्वृत । विषय-पूजा । र० कास × । ले० काल सं० १६३८ फाग्रुन बुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ३४६ । छ मण्डार ।

```
kk [ ]
```

पूजा प्रतिक्षा एवं विकास सादित्व

दियेप--र्ण वनावर दोनाविदि वाली नै प्रतिविदि की नी]

१३६७ सानाशित्यूकाण्यापा वद तं वृद्धा क्र्यू×४३ द वृ । क्या-हिल्ली । विस्त-दूरा।

र कल X | से फान X | पूर्व | के से समझ | क्रू तकार | १६६८ साम्राज्यसम्बद्धान्यान्यामसस्य | यथ स. १) वा : X१३ इथ) जन्म-दिन्से | वितर-

पूर्वार कल ×ामे कल ×ापूर्णा के सं १६२६ । ध्रामकार । ४६६६ मतिस २ । तम नं १३३० कल वं १८३७ । वे सं ११ । धानकार ।

≱३ao प्रतिस ३ । एवर्ड ६३ के बाल X३ के से ६३ । शासप्तार।

≱क्ष्री प्रतिस्त ⊈ार्याचे हाते कल्प×ावे क व राज्य करहारा

वियय---इसके व्यतिरिक्त प्रह्मकेव जावा तका सोकट्वारण संस्कृत पुथान और हैं।

इसी मध्यार ने लक्ष्माति (ने सं इ६४) और है।

ह३ वर सम्बद्धारस्थ्या । एवं से १४ । सा X१ (व) वारा-हिनी (विसन्दारा) र करत X | के राज X | दुक्ती के संकश्चित सम्बद्धाः

±१७३ साबद्दारसम्बद्धविद्याय—देखचनद्∤तमः वं ४०। सा ११८० इ.स.। बाना-दिनी≀

हरूपर शाहरूपारचणकणायामा चन्नाया । स्वतंत्र रहरूपर देशा नागाया । विद्यान्युवा। र काल × । ते तरेल × । कृति वे थ । क्रथकार ।

±६७४ प्रतिष्ठ २ । तम वं ३६ । ते नल ×। वे व चन्४। व वन्तार।

विकेष—इसी क्लार में एक मिर्स (वें सं **७११) और है।**

प्रहेशक प्रति है । पत्र व प्रदावे तस्त ×ावे वं र टाइह्मनगर।

≱१७६ प्रतिस ४ । पवर्ष ४३ । तै कला× । वै सं २६४ । कथणार ।

हे६७७ श्रीकम्बतासायसमूना—सङ्ख्यास । तत्र वं २२ । बा १९४४३ इ.स.। नना-वंत्त^{त ।} विकस दुनार नाम वं १.९ । वे नाम ४० । दुर्खाने नं १.६ । ध्रायकार ।

⊁रेश्वर प्रतिका २ । यस वं १२ । के नजन सं १ दह वैत्र दुवी दृश्वे सा प्ररेण । प

वसार। १६७६, स्वयर्थियान ************* । सा १ ४४ ईव | बत्तर-हिन्दी। दिवन-दिवतः। र तम ४ कि कन ४ किंगी वे वे ४१६ । साल्यार।

हरू व स्वरममिदि (सुरह्य) न्याना वद व देश वा १ ४४ हम । जारा-संस्तृ । विवर-प्यान्त का अभि का अभि वे देश । वा कमारा

दियेश-अस्थित २ इन्हों ने निर्मालकार पूजा है जो कि प्रपूर्व है।

गुटका-सँग्रह

(शास्त्र भएडार दि॰ जैन मन्दिर पाटों की, जयपुर)

४३८१ गुटका स० १। पत्र स० २८४। ग्रा० ६×६ इ च। भाषा-हिन्दो सम्द्रत । विषय-सग्रह । ने० काल स० १८१८ ज्येष्ठ सुदी १ । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेप-- निम्न पाठो का सग्रह है-

		4.166		
	विषय सूची	कर्त्ता का नाम	माषा	विशेष
*	मट्टाभिषेक	×	सस्कृत	
ą	रत्नत्रयपूजा	×		पूर्ण
Ą	पञ्चमेस्पूजा	×	n	22
¥	ग्रनन्तचतुर्दशीपूजा	×	"	73
x	पोडशकारसपूर्वा	सुमितिसागर	ग संस्कृत	93
	दशलक्षराउद्यापनपाट	; ×	17	97
	स्यंत्रतोद्यापनपूजा	व्रह्मजयसागर	99	n
5,	मुनिसुव्रतछन्द	भ॰ प्रमाधन्द्र	" सम्ऋत हिन्दी	33
	मुनिमुद्रत छन्द लि	स्यते—		9 7
		TURTUM - C =		₹ २० −१२४

पुण्यापुण्यनिरूपक गुरानिधि शुद्धवत सुवत

स्याद्वादामृततपिताखिलजनं दु लाग्निघाराघर ।

कोघारण्यधनेजयं धनकर प्रध्वस्तकर्मारिसा

वदे तद्गुरासिद्धये हरिनुत सोमात्मज सौस्यद ॥१॥

जलिधसमगभीर प्राप्तजनमादिवतीर

प्रबलमदनवीर पचधामुक्तचीर

हत्तविषयविकार सप्ततत्वप्रचार

स जयित गुराधार सुत्रतो विष्नहार ॥२॥

xx=]	[गुरका सगर
पर्सां ⊶	निकुषन नवहित्तपर्या कर्या सुपित्रमृतिकर स्वयन्ताः ।
	कर्णार्थक्ष्यां मुनत्रेको अवधि इत्तर्वर्धे १११॥
	बी वक्षयीतिलेवतपुरुदमहारत्वरत्तम्बनिकरः ।
	प्रतिपातितवरणस्त् केवलवीचे लेक्टियुक्त्ये ॥६॥
	र्श पुनिशुक्तवार्थं नत्था क्ववार्धिः तथ्य अ न्तीहः ।
	शृण्यन्तु सन् यासमाः जिन्दर्यपराग्न सीमर्तदुत्ताः ॥३॥
प्र िद्धर्श र	प्रवत सम्बाल रहे बनवोहन नगव शुरैक वने वर्ति बीट्य !
	राज्येह नवरि वर कुमार बुनिय कुर किही निवी पूर्वर ।।१।।
	क्ताबुद्धीनुष्यक्ती वाला, तस राखी बोगा सुविवाला।
	पश्चिमप्त्रणी व्यक्तिपृथ्ववामाः स्वज्न कोल देखें दुल्यामाः । ११।
	एतारे वें यदि मु निपवाल क्याप क्यारि देवें सुमनवास ।
	प्रामृहीह को अबद बनीब्हर एव खनाच बना पुत्र बुखकर ११६११
	हरितानों पूर्वति युनि नेनच आक्ट स्वयं ह्या वाक्तमा ।
	मामलुमिन नोजें पुस्तमाधी जनमी पर्क रही। तुप्ताधी (1) है
दुनहरूपात	वर्रीत प्रतिवे वर्र वर्धवार्र न रेकाच्य प्रवचारामधार्र
	देश बानको स्त्राचनात्रीत्वानुराशस्त्रकात् न पूचा तुवश (११)।
	पुरं विचित्रियाकितिरेश्वना कृष्टं त्राप्त शोकिन केंद्रे क्या या ३
	रिमद वर्षपाचे किन विश्वकोषे अकान्यावराचे पताहित्समाने ॥२॥
	पुत्राची हि वेशो अपूर्वन्ति वास विश्वकोरणगरीतपुरुक्त्यास ।
	वरं वच्चूचं क्यावानुक्ष्मं अझीलं तिक्क्ष्यणं कुंचं चूत्र्यं ॥१॥
	बुरक्रीयनगर्वेर्वेत्तरप्रित्र स बस् राल्युहि धुर्थ पृष्यरात्रं र
	विश्वं वर्षप्रका विभिन्नुं छोई वृद्धं स्तीति सीवात्वजं सीक्तवेर्यं ११८०।
ultgreet-	बीजियबर बज्याच्या महि जितुषय थिह्न हवां मुख्यां यदि ।
	र्वशासिह संख बाह्यान नुस्ति बहुना गरे यह बदरन १११%
	देशांब नकी रखती जिन वानी, तुरतरत् द देवें शह वानी ।
	देशास्त्र बास्य पूर्वपः, संगीतिहत् बीहें बुल्पविषः ॥२॥

गुटका मपह]

मोतीरेताुख द--

तब ऐरावरा सजकरी, चट्यो शतमुख धाराद भरी।
जस कोटी सतावीस छे श्रमरी, करें गीत नृत्य वलीदें भमरी ।।३।।
गज कार्ने सोहें सोवर्षा चमरी, घण्टा टक्कार विद सह भरी।
धाराण्डलश्रकुरावेमेंधरी, उछ्यमगल गया जिन नगरी।।
राजगर्यों मलया इन्द्रसहू, वाज वाजित्र मुरग वहु।
धारू कहाु जिनवर लावें नहीं, इत्राणी तब धर मभे गई।।
जिन बालक दीठो निज नगर्में, इत्राणी वोलें वर प्रयमें।
माया मेसि सुतहि एक कीयी, जिनवर गुगरीं जइ उन्द्र दीयो।।

इसी प्रकार तप, ज्ञान और मोक्ष कल्याण का वर्णन है। सबसे प्रधिक जन्म कन्याण का वर्णन हैं जिसका रचना के प्राचे से प्रधिक भाग में वर्णन किया गया है इसम उत्त छ दो के प्रतिरिक्त कीलाउती छन्द, हनुमतछन्द, दूहा, क्षभाग छन्दों का भीर प्रयोग हुमा है। प्रन्त का पाठ इस प्रकार है—

कलस---

वीस धनुष जस देह जह जिन मख्य लाछन ।
श्रीस सहस्र वर वर्ष श्रायु सन्जन मन रखन ।।
हरवशी पुरावीमल, भक्त वारिव्र विहडन ।
भनवाछितदातार, नयरवालोडनु मडन ।।
श्री मूलसब सबद तिलक, ज्ञानभूषण मट्टाभरण ।
श्रीप्रभावन्द्र सुरिवर कहें, मुनिसुष्रतमगनकरण ।।

इति मुनिसुवत छद सम्पूर्णोऽय ।।

पत्र १२० पर निम्न प्रसस्ति दी हुई है-

सवत् १८१६ वर्षे वाके १६८४ प्रवर्तमाने ज्येष्ठ सुदी ६ सोमवासरे श्रीमूलसन्ने सरस्वतीगच्छे बलात्कार-गूणे श्रीकुदकुदावार्यान्वये भट्टारक श्रीवद्यनिद्ध तत्पट्टे भ० श्रीदेवेन्द्रवीत्ति तत्पट्टे म० श्रीविद्यातित्व तत्पट्टे भट्टारक श्री मिस्त्रमूपण तत्पट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्र म० तत्पट्टे श्रीवीरचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूपण तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीवादीचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीमहीचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीमरुचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीजैनचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीविद्यानन्द तिच्छप्य कहानेम्सागर पठनार्थे । पुष्पार्थे पुस्तक लिखायित श्रीसूर्यपुरे श्रीभादिनाथ चैत्यालये ।

x (]			[गुरक्रक
विषय	कर्ता	यादा	मिलोप -
१. नातास्यत्वती वा व	सहीयग्र क्ट्रारक	नसहस्र हिली	१ १ १∼२ ≉
१ शस्तिगमपूरा	×	चंत्रव	
११ कर्नव्यक्ष्यूना	वर्गक्ष	,	
१२ प्रमण्डवराव	म्म्पिनसल	ध ्नि री	
१३ महरू दूबा]	वैविक्छ	धंस्कृत	र्वे स्थल की त्रेरहा वे
१३ सप्टक	×	₽ =0	मक्ति पूर्वक से गर्र
१६. सन्तरिक्र पाल्यनाम् यह	* ×	वंशक्य	
१६ किल्सूमा	×		
वि देव पण न ।	६ पर किम्म के स निका	lat (f—	
बहुत्तक वी १ प्रतिरवास्त्रिके राजि अक्ट कावली।		१ तांबय क्षके १६६६ प्र	वर्चनाने वर्तित्वनावे इंट्स्पर्ट
⊁4=२ गुटकास	२। तम वर्ष ६३। बा	व्हे ×६ ६थ । वाला–हि	ल्दी (मिन्द-नर्ग[र नम
संदर्शतं कलावे १	१६) दुर्स रवा–वा नान	6	
		नार क्षमा बाटक है। यह	त्रवि स्वयं हेक्क हार्ध विक्री
हुई है। सन्तिम दुन्पिया विभ्न तर		बक्तरान बद्धाः वं १६	
	_		
-		४२८४ ६म । जा गा-रीस	छ-भिन्दी। विक्य-X ^व
सम्बद्धी ११.४ (पूर्ण) क्यां∺ रिक्टेस-स्थानकार	शनस्य। ग्रेबीनावेतवाना।		
•	y	**	
१ रक्षामभविषि इ वरवानोतिः	वनारतीयाथ	हिन्दी	१~३ ५ –११
र प्रान्तवस्थातिक इ.स्ट्रानकस्थातिक	×	्र चंत्रुव	11-41
४ क्रवराज्यसंत्र	×	9 -0 1	¥8-304
र, जैननाहक	×	र्थसम्ब	YK-YE
६ दूबा	क्यत्रन्दि	,	¥+−\$¥

```
गुटका-समह
                                                                                   [ ४६१
  ७ क्षेत्रपालस्तोत्र
                                    X
                                                                               44-46
                                                          "
  < पूजा व जयमाल
                                    X
                                                          33
                                                                               xe-0x
          ४२८४ गुटका स० ४। पत्र स० २५। श्रा० ३×२ इख । भाषा-संस्कृत हि दी । ले• काल × ।पूर्ण ।
दशा-सामान्य।
          विशेष-इस ग्रुटके मे ज्वालामालिनीस्तोत्र, श्रष्टादशसहस्रकीलभेद, पट्लेश्मावर्शन, जैनसस्यामन्त्र शादि
पाठों का सग्रह है।
          ४३८४. गुटका स० ४ । पत्र स० २३ । मा० ५×६ इच । भाषा-सस्कृत । पूर्ण । दशा-सामान्य ।
          विशेष-भर्व हिरदातक ( नीतिशतक ) हिन्दी अर्थ सहित है।
          ४३८६ गुटका स०६। पत्र स०२८। मा० ५×६। भाषा-हिन्दी। पूर्णं।
          विशेष-पूजा एव शातिपाठ का सग्रह है।
          ४३=७ सुटका स० ७। पत्र स० ११६ । मा॰ ६×७ इन । ले॰ काल १८५८ मासीज बुदी ४
श्चनिवार । पूर्ण ।
  १ नाटकसमयसार
                                  वनारसीदास
                                                            हिन्दी
  २ पद-होजी म्हारी कथ
                                                                               2-80
          चतुर दिलजानी हो
                                   विश्वमूपग्
  ३ सिन्दूरप्रकर्ग
                                                             "
                                                                                 23
                                   वनारसीदास
                                                                            85-228
          ४३८८ गुटका स॰ ६१२। मा॰ १४६ इख्र | ले॰ काल स॰ १७६८ | दशा-सामान्य ।
          विशेष—प० धनराज ने लिखवाया था।
          ४३८६ गुटका स०६। पत्र स०३४। मा०, ६×६ इख। भाषा-हिन्दी।
          विशेष-जिनदास, नवल भादि के पदों का संप्रह है।
          ४३६० गुटका सं०१०। पत्र स०१४३। ग्रा० ६×४ इख्रा ले• काल स० १६४४ श्रावरा सुदी
१३। पूर्ण। दशा-सामान्य।
   १ पद-जिनवाणीमाता दर्शन की बलिहारी 🗙
                                                      हिन्दी
   २. वारहमावना
                                   दौलतराम
                                                                                $
   म मालोचनापाठ
                                  गौहरीलाल
   ४ दशलक्षरापूजा
                                                        77
                                   मूधरदास
```

***]			[गुरक्र+संबद	
८. प्रजमेर एवं नंदीधायुका	दानवराय	विल्ये	3 11	
६. तीम चौबीबी के नाम व वर्धनपाठ	×	शंधक हिन्दी	7 74	
! ७ परमानन्यस्वीत	वनारशैकतः		ŧ	
वस्पीतवीच	चलवर्धन		ì	
है. निर्मालकामानाया	वयवतीयस्त	-	1 -6	
१ तत्त्रार्लसूच	इया स्थानी	-	***	
११ वेनवासमञ्जल्ला	×	िली		
१२ - गीमीब तीर्नेट्स्ट में की गूजा	×		१११ तक	
रहेर्द गुरकाचे हैं।	यत्र वं दृदर। या	रै-Xदिखास	ला–ीलो । के क्या के	
faxe 1				
विवेद—दिम्ब पार्टी दा सम्ह	k)			
राम्ब्यः नहाकातः क्या	×	क्षियी पद्य	1 (7	
[४५ अलॉ का बत्तर 🛊]			* * * *	
र कर्यपुरवचरेतिः गुनि ।	क्वरो चि	*	१ १− १ ≪	
सर्व वीत निकले				
देहा वर्मपुर कर ने कर, बीतपाली संस्वार ।				
	रियम बंबन वरे, क			
नीमी कुछै इ	छ बार्रम्बो वक्तरी	त वाक		
	को प्राफी कोसंबी वश्वि			
	रर्भन ने बाध्य वस्तुर	_		
	। ज्यानु करशरी का कर्या			
,	धारता वैवनी बीक् संब			
	विद्रोती ज्यानुकर व			
बास कर्ने पांचनीय कुछने प्राप्त केरो ।				
योग गीय गीट् शिद्धो गाहै, स्प्ताराहँ सब सेटी ।। पिदासकि युवित सम्बन्धा परिकेल दुव्यवाहँ ।।१।।				
1-01-16 9-4	थ नःस्थानः न श्री हत्	इक्नार् ॥१॥		

```
• इका समह
                                                                                              ४६३
  हा-
                          एक वर्म को वेदना, भु वे
                          नरनारी वरि उधरे, घरण गुण्यस्थान गलोदी ॥१॥
 ।न्तिमराठ- कवित्त-
              सकलकोत्ति मुनि माप मुनत मिटैं सतान चौरानी मिर जाई फिर ग्रजर ममर पद पाइये ॥
              जूनी पोधी भई मधार दीसी नहीं फेर उसारी यथ छद रियत्त देसी यनाई क गाईये।।
            चप नेरी चाटसू केते भट्टारक भये सामा पार झडस ठ जेहि कर्मजूर बरत वही है बगाई ध्याइये ॥
           सवत् १७४६ सीमवार ७ यरबीबु वर्मेचूर व्रत वैठगी प्रमर पद चुरी सीर सीधातम जाइयै ॥
नोट-पाठ एक दम प्रसुद है। लोपि भी विरुत्त है।
  २ ऋषिमण्डलम अ
                                      X
                                                           सम्बात
                                                                                 मे॰ बान १७३६
  ४. चितामिए। पार्श्वनायस्तीत्र
                                                                                      35-05
                                     X
 ४. मजना को रास
                                                            33
                                                                               प्रपूर्गा २०
                                  धर्मभूपगु
                                                           हिन्दी
                                                                                  ₹₹-₹₹
    प्रारम्भ--
                       पहैली रे महैंत पाय नमें।
                       हर भम दुरा भजन त्व भगवत वर्भ वायातना वा पती।
                       पाप ना प्रभव मिस सौ मत ती रास भगी इति भजना
                       तै तो सयम साधि न गई स्वर लौक तौ सती न सरोमिस्स वदीये ॥१॥
                        वस विधाधर उपनी माय, नामै तीन वर्निय सपजे।
                        भाव करता ही भवदुम्ब जाय, सती न सरोमिश्ण वक्ये ॥२॥
                       प्राह्मी नै मु दरी बदये, राजा ही रसम ससी घर है थ।
                       वाल पर्गी तप वन गई काम ना भीगन वछीय जे हती ॥ सती म
                       मेघ मेनापति नै घरनारि भजना सो मदालसा।
                                                                                 ₹ 11
                       त्यारे न कीनै सीयाल लगार तो ॥ सती न
                       पवसै किसन कुमारिका, ईनि वाल कुमारी लागौ रे पावै।
                      जादव जग जानी करि, दारिका दहन सुनि तप जाय ।
                      हरी तनी भजना बदीय जिनै राग छीडी मन मैं घरघी वैराग तो ॥ सती न
```

र्वत] [गुरुक्त-सम्ब

धन्तिय सठ---

सत्त विचायर कार्मि परता नाथे नवशिषि पायदी ।
जार करेंगा ही वस बुध आस्त्रों साली न गरोनिंग वंदीये ।। इस माने वर्ग हुए गरा एक्सान प्रजी राजिए प्राप्त ।
पर्व पंचीनीत संपन बना नहें गराफ उपने एक विचास ।)
कार नवस केरी एम क्ये कर दिना एक किस होईं ।
पूर्वि दिना जान वर्गियों, इस दिना बारत नीय वानी हों ।
ऐसक विचा संपर सम्प्रार्थ, देशकीय चार विचा कर हार में हैं
एक विचा संपर सम्प्रार्थ, देशकीय चार विचा कर हार में हैं
एक विचा संपर सम्प्रार्थ, देशकीय चार विचा कर हार में
विचा विचा संपर सम्प्रार्थ, विचा दिन नाम प्याप्त करा ।
विज्ञा विना बीच परें हुन बहुयेग निर्मित सम्प्रं ।
देशका करही एक्सीय प्राप्त विचा हुन्यैं करायक स्वचार ।
वृक्षि वार्मा करायी, प्राप्ति महिला विर्यंत सम्प्रं ।

स्वतित यो प्रमुपनि कारवर्गिनम्मै स्वानकारनारो भीनुनंतुन्यानार्थनस्ये स्वृत्तरस्य बीयस्तारित रूपन् में योवेक्क्सीत स्वरुट्ट स जीव्येक्सीत त्यस्य मानिक्सीत स्वर्णनिक्स द्वस्त्रमेतित स्वरूपि स्वरूपनिक्स स्वरूपनि विद्यास्य मोत्यस्य स्वरूपनिक्सित स्वरूपनिक्स

इ. बोबोल तीर्वदूर परिषय X हिन्दी इ.६०-१. दियो प्राप्त प्राप्त १ केंद्र जी एक विच है वें १ र में यें बुक्तकारण के वेराज में ब्रांतिकीर की मी !

१ व्यक्तिकारायवानीकमा व राज्यां हिन्दी ४१-न१ रचनाकाल व १९६९ का १ पर देवापिय ने काम व १ २१ वीराव (बीराज) ने बुवायपण

के प्रतिनिर्देश की वी । पत्र - र पर शीवें क्रूपों के व निम हैं।

गुटका-सम्रह]			
११ हनुमतकया	ब्रह्म रायमल्ल		८ ४६४
१२ वीस विरहमानपूजा	नस्य रायमक्ष हर्षकीति	हिन्दा	5 • \$−\$ =
१३ निर्वासाकाण्डभाषा	भगवतीदास	37	११०
१४ सरस्वतीजयमाल १५ ग्रमिपेकपाठ	ज्ञानमूपरा	" संस्कृत	888
१६ रविस्रतकया	× भारु	99	११२ ११२
१७ चिन्तामिंग्लान	×	हिन्दी	११२- १२१
१८. प्रद्युम्नकुमाररासो	न्ह्यरायम ्ह् म	संस्कृत ले _{० काल} हिंदी	•
१६ श्रुतपूजा	×	-	१२३-१५१ ६२८ ले० काल १८११
२० विपापहारस्तोत्र	े घन ज्जय	संस्कृत	१५२
२१ सिन्द्ररप्रकरम् २२ पूजासग्रह	बनारसीदास	" हिन्दी	१ ५३ −१ ५६
२३ कल्यागमन्दिरस्तोत्र	×	39	<i>१५७−१६६</i> 2510 • • •
२४ पाशाकेवली	कुमुदचन्द्र ×	संस्कृत	१६७-१७२ १८३
२५ पद्मकत्यागुकपाठ	रूपचन्द	हिन्दी	१5x-२ १ ७
भ्यय-कह जगह पत्र। ४२६२ सन्दर्भ	के दोनो भोर मुन्दर वेलें ह	17	780-777
विशेष—निम्न पाठा का	१२ । पत्र स० १०६ । मा० सग्रह है।	। १०२×६ इच्च । भाषा-हिन्दी	1
१. यज्ञ को सामग्री का व्योक्त			
विशेष — (भ्रथ जागी व	ो मौजे सिमरिया में प्र० देव	हिन्दी	8
पूर्णिमा पुरानी पोथी मे ते उतारी। पं र यज्ञमहिमा विशेष—मौजे विश्वरिक	ोयो जीरण होगई तव उतरी	हिन्दी ाराम नै ताकी सामा भाई सस्य । सब चीजो का निरख भी जिल्	॥ १७६७ माह बुदी •
विशेष—मौज विकारिक	×	हिन्दी	ति हुमा है।

विशेष-मौजे सिमरिया मे माह सुदी १४ स० १७६७ मे यज्ञ किया उसका परिचय है। सिमरिया में चौहान क्श के राजा श्रीराव थे। मायाराम दीवान के पुत्र देवाराम थे। यज्ञाचार्य मीरेना के पुरु टेकपन्द थे। यह यज्ञ सात दिन तक चला था।

»(()			[गुरदा-मद
। पर्नेत्यार	y	RETT	1 11
ि रोग—प्रद्रा ना	रर नवार ने नै निया बबा है	। शीन यानाथ है ।	
४ बारीधर १३ सम्बद्धार	, y	हिन्दी १६६० व ^{र्ण} तव	नुर्ग tttr
यारीधर को नजागरण-वर्षश	04		
	पुर बनार्शियन ध्वार्ट	विन परम नरम स्याउ ।	
	वित वॉनि नेंड घेनी वृ	वि वॉनि मैंद्र वैदी ॥१॥	
	धारीया दुल बाई वर	साब संदु (१) वार्ड (
	पारित विनेत्र गाँवा, म	रंद वा राहु दीना ॥२॥	
	स्ति शुव होई विष्यारी	जन नीन बरन बारी ।	
	सर क्षाप्त्री नवार व	र्दं करन चतरार्दशानः	
	बुधि भीच कात्र व्यवह	नहि बादु हार बारद (
	केइ बच्चा तक्या, चोई	रतन वर्ति बहुसाराठा	
धन्तिमञ्ज —	र्दिन गरन पुत्र बावड	क्त मोचि दीहु पायह ।	
	৭৫ মাট্ডছ ৰূপ নাদত্ব	बहु परव नरन रानद् ॥३१॥	
दोडरा—	भवानस्त्र विवसमी व	ी नापहि वे नरवारि।	
	सम्बद्धित यम अध्यक्षी	निर्दि च्हुचिंद् बचरार ॥७३॥	
	मीपमह भडनडि दरप	नानिक नुरी श्रीवरात (
	श्रामकोट सुन वानवर	বৰঃ নিৰ বিষয়ের গ ই।।	
	इति भी बारीभरदी रा	वनोनश्कु बनात ॥	
হু দ্বিনীৰ সমাদালা	engeled	िल्यो	tr tt
क्रांट्सस्—	ब्रवम मुनिरि जिनराज धर्मन वृ	भ निवास नेपस शिव संघ	
*******	जिनकाली नुविश्त ततु वर्ष स	गी पुनकान बिहाक सिनु को १११।	
	पुराव नेवडु बाध पुलाल देवका	स्प कुर बन्त शतः ।	
	इनदि नुर्वार वरमी नुम्लार, व	नवतरन चैने विन्तवार ॥१।	
	दीड पुनि बगालो परे पूरिण	वंद प्राप्त पानी करें ।	
	नुनहु सन्द देरे वरवाल सरीवर	न पी करों वचाय शरा।	

मुभ ग्रासन दिव जं.ग ध्यान, वर्द्ध मान भयो केवल ज्ञान । समोसरण रचना ग्रति वनी, परम घरम महिमा श्रति तर्णी ॥४॥

मन्तिमभाग-- चल्यौ नगर फिरि भ्रपने राइ, चरण सरए जिन भ्रति सुख पाइ।

समोसर्गाय पूरण मयौ, सुनत पढित पातिग गलि गयौ ।।६५!।

दोहरा- सोरह से ग्रठसिंठ समै, माघ दसै सित पक्ष ।

गुलालब्रह्म भनि गीत गति, जसोनदि पद सिक्ष ॥६६॥

नूरदेस हिं कतपुर, राजा वक्रम साहि।

गुलालब्रह्म जिन धर्म्यु जय, उपमा दीजै काहि ॥६७॥

इति समासरन ब्रह्मगुलाल कृत सपूर्ण।।

६ नेमिजी को मगल

जगतभूपरा के शिष्य

हिन्दी

१६-१७

विश्वमूपरा

रचना स० १६६ - श्रावण सुदी =

ादेभाग---

प्रथम जपौ परमेष्ठि तौ ग्रुर हीयौ धरौ !

मस्वती करहू प्रणाम कवित्त जिन उच्चरौ ।।

सोरिं देस प्रसिद्ध द्वारिका मृति वनी ।

रची इन्द्र नै ग्राइ सुरिन मिन बहुकनी !!

महु क्नीय मदिर चैत्य लीयो, देखि सुरनर हरपीयो ।

समुद विजे वर भूप राजा, सक्ष सोमा निरस्रीयौ ।।

प्रिया जा सिथ देवि जानी, रूप भ्रमरी जहना !

राति सुदरि क्षेन सूती, देखि सुपने पोडमा ॥१॥

मन्तिम भाग---

स्वन् सीलह सै पठानुवा जालीयी।

सावन मास प्रसिद्ध मप्टमी मानियौ ॥

गाऊ सिक्दराबाद पार्श्वजिन देहरे।

श्र वग क्रोमा सुजान धर्म्म सौ नेहरे॥

ध पर्म सी नेहु प्रति ही देही सवकौ दान जू।

स्यादवाद वानी ताहि मानै करै पढित मान जू ॥

्रिट्डासम yfc] वक्तभूपण भट्टारेंच विश्वकृतमा बुनिवर । बर नारी अधनकार बाबे पटन वातिय निग्नी ।। इति वैनिकाच सूची ननन नवाता ।। **॥ राजेतावव**रिय विश्ववृत्त् [रुदी 23-12 नारम जिनलेक की नुमह परिष्कु अनु भाई १। देश १। बारियान रायुन्ध---वनह शारदा नाह यती नवकर चिनुराई ह क्ताल रका नंबंध वही ब्रह्मा नुसदाई ॥ बद्ध इतिल धरव में नवर चोदना बाय । राजा थी वर्षिय है, हुवरी नून बनाय (। शारन विन ा बिप्र तहां एक वर्ग पुत्र ही एवं नुपास । बबढ़ बड़ी बिचंधेंड विश्व दे हैं स्व बताय ।। शव जैवा नरविष को अनुवरि दर्श हा नाम। रति श्रीता नेज्या रच्यों हो सबढ़ बास के बाब ।। सारव जिम ।। योग् की वी भरतृति वही मंत्री को राज्यी। बीच वह नहीं बहरों काम रह संदर बाल्यी ।। मनठ दिने एम कारने यकर बृति बांची बाई। सी भरि **वन डानी क्यो एकिनि क्षों** विव थाइ ॥ पारन विन ।। संदर्भ केत गरि नात तही दैवनि तब बानी। वन्ति वरस वक्रकाक्षि प्रचलेक क्षम मनित्य पर ठाली ।। सुद इल्बर्ड निवारिके पार्थनाच जिलेता। सकार करण वर कार्रिके अने बुरिक त्रिवर्वय ।) पारत जिया ।। बसर्बंद दइ रिम्बक्स्प्स मुन्दि रही। उत्तर देखि पुरास धीय का वर्ष नुवारी ।। वर्त बहायन जीम पु. राम चतुर्विव रा के । बार्श्यक्या विद्वार्थ सूत्री हो मोखि प्रार्टि फल केट ।। बारक क्षित्रदेश की, सुरङ्ग पणितु वस बाद ।।२३।। इति भी वार्थनामनी की वरिष्ट क्षेत्रर्म ।

् वीरिजियादगीत मगीतीदास हिन्दी १६-२० १ सम्प्रतानी घमाल """ २०-२१ १० स्प्रतमद्रसीलरासो × "" २१-२२ ११ पार्वनायस्तीत्र राजवेन "" २४ १४ " पप्रानीन्द "" २४ १५ " पप्रानीन्द "" २४ १६ हे तुमतक्या प्रानीन्द "" २४ १७ सीतावरित्र × स्वमत्त्र "हिन्दी र० काल १६१६ २४-७४ १७ सीतावरित्र × हिन्दी प्रपूर्ण ७७-१०६ ४३६३ गुटका स० १२ । पत्र स० ३७ । मा० ७३ ४१० इखा । से० काल स० १६२२ मासोज बुदी ७ । पूर्ण । द्या-सामान्य । विशेष—निम्म पूजा पाठो का सम्रह है— १ फल्यातीन्दरस्तोत्रमाणा वनारसीदास हिन्दी प्रूर्ण "" १ कल्यातीन्दरस्तोत्रमाणा वनारसीदास हिन्दी सस्कृत "" १ कल्यातीन्दरस्तोत्रम प्रान मानतु ग "" १ कल्यात्राच्युजा अथमाल × सस्कृत "" १ पार्वनायपूजा अथमाल × सस्कृत "" १ पार्वनायपूजा अथमाल × सस्कृत "" १ पार्वनायपूजा प्र्यास्तोत्र प्रानायस्तोत्र "" १ पार्वनायपूजा प्रयासित्र प्र्यासावर्त "" १ पार्वनायपूजा प्रयासित्र प्र्यासावर्त "" १ पार्वनायपूजा प्रयासित्र प्र्यासावर्त "" १ पार्वनायपूजा प्रयासित्र प्रयासित्र "" १ पार्वनायपूजा प्रयासित्र प्रमासावर "" १ पार्वनायपूजा प्रयासीत्र प्रमासावर "" १ पार्वनायपूजा प्रयासीत्र प्रमासावर "" १ प्रयासीत्राच प्रयासीत्र प्रमासावर ""	गुटका-समह]			
 १० स्थलमहानी यमाल १० सार्वनायस्तीत्र १० सार्वनायस्तात्र १० सार्वनायस्तात्र १० सार्वानायस्तात्र १० सार्वानायस्तात्र १० सार्वानायस्तात्र १० सार्वानायस्तात्र १० सार्वानायस्तात्र १० स्थलमान्तरस्तोत्रमाण वनारसीदास १० सम्बर्ग पाठो का सम्रह है— १० कल्लामान्तरस्तोत्रमाण वनारसीदास १० कल्लामान्तरस्तोत्रमाण वानारसीदास १० कल्लामान्तरस्तोत्रमाण वानात्तात्रमान्त्यमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमा	 वीरजिसादगीत 	भगौतीरक		[
१० स्थ्रतमद्रश्वीलरासी ११ पार्यनायस्तीत्र ११ पार्यनायस्तीत्र १२ ,	६ सम्पन्जानी धमाल		हिन्दी	१ ६-२०
११ पार्वनायस्तीय १२ ग वानतराय १३ ग ४ सस्वतः १३ ग १ पार्वनायस्तीय १४ पार्वनायस्तीय १४ ग पपार्गन्द १४ ग स्वतः १४ ग			"	२०-२१
१२ ॥ चानतराय ॥ २२-२३ १३ ॥ ४ सस्कृत २३ १४ पार्वनायस्तोत्र राजसेन ॥ २४ १४ ॥ पद्मानिद ॥ २४ १६ हतुमतकया मृद्धा प्रचानिद ॥ २४ १६ हतुमतकया मृद्धा प्रचानिद ॥ २४ १७ सीतायरित्र मृद्धा मृद्धा ५० राययल हिन्दी र काल १६१६ २४-७४ १७ सीतायरित्र ४ हिन्दी मृद्धा ७७-१०६ ४३६३ गुद्रका स०१३। पत्र स०३७। मा०७१×१० इख्र । ले० काल स०१६२२ मासोज बुदी ७। पूर्ण । द्या-सामाया । विशेष—निम्म पूजा पाठो का सम्रह है— १ कल्यामन्दिरस्तोत्रभाषा बनारसीदास हिन्दी पूर्ण २ कल्यामन्दिरस्तोत्रभाषा बनारसीदास हिन्दी पूर्ण २ तस्मीस्तोत्र जमास्वामी ॥ भावमारदेव सस्कृत ॥ भावमारतीत्रभ मा० मानतु ॥ ॥ १ सक्तामरस्तोत्र जमास्वामी ॥ ॥ १ सक्तामरस्तोत्र प्रमास्वामी ॥ ॥ १ सक्तामरस्तोत्र प्रमानतु ॥ ॥ १ सद्युजा ४ हिन्दी सस्कृत ॥ थावस्तामरस्तोत्र ॥ सस्कृत ॥ १ पार्वनापपूजा जन्माल ४ सस्कृत ॥ १ पार्वनापपूजा अभाव ४ हिन्दी सस्कृत ॥ १ पार्वनापपूजा भ ॥ सस्कृत ॥ भावमान्दि ॥ सस्कृत ॥ १ पार्वनापपूजा भ ॥ सस्कृत ॥ भावमान्दि ॥ सस्कृत ॥ १ पार्वनापपूजा भ ॥ सस्कृत ॥ भावमान्दि ॥ सस्कृत ॥ १ पार्वनापपूजा भ ॥ सस्कृत ॥ भावमान्दि ॥ सस्कृत ॥ १ पार्वनापपूजा भ ॥ सम्कृत ॥ भावमान्दि ॥ सम्कृत ॥ भावमान्दि ॥ सम्कृत ॥ १ पार्वनाप्तामस्तोत्र १ भावाम्द ॥ सम्कृत ॥ भावमान्दि ॥ सम्कृत ॥ भावमान्दि ॥ सम्कृत ॥			>>	२१-२२
१३ ,	95		37	
१४ पार्वनायस्तोत्र राजसेन ॥ २४ १४ भ पार्यनायस्तोत्र राजसेन ॥ २४ १६ हतुमतकया छ० रायम् हिन्दी र० काल १६१६ २४-७४ १७ सीताचरित्र ४ हिन्दी मपूर्ण ७७-१०६ ४३६३ गुटका स० १३ । पत्र स० ३७ । मा० ७१४० हस्त्र । से० काल स० १८६२ मासोज बुदी ७ । पूर्ण । द्या-सामान्य । विशेष—तिम्म पूजा पाठो का सग्रह है— १ कल्यामन्दिरस्तोत्रमापा बनारसीदास हिन्दी पूर्ण २ लक्ष्मीस्तोत्र (पार्थनायस्तोत्र) पप्रममदेव सस्कृत ॥ २ तत्वपंसूत्र जमास्वामी ॥ गण्यामदेव सस्कृत ॥ ४ स्त्रमात्रातेष्ठ मानतु म ॥ ॥ ४ सक्तापर्दतोत्र मानतु म ॥ ॥ १ सत्वप्राण्यूजा जयमाल ४ हिन्दी सस्कृत ॥ ६ साद्युजा ४ हिन्दी सस्कृत ॥ ६ पार्यनायपुजा अथमाल ४ हिन्दी सस्कृत ॥ ६ पार्यनायपुजा ४ हिन्दी सस्कृत ॥ १ पार्यनायपुजा ४ हिन्दी ॥ १ पार्यनायपुजा ४ हिन्दी ॥ १ पार्यनायपुजा ४ हिन्दी ॥ १ पार्यनायपुजा भ भ हिन्दी । १ पार्यनायपुजा भ भ हिन्दी । १ पार्यनायपुजा भ भ स्व १ प्याप्त । १ पार्यनायपुजा भ भ स्व १ प्याप्त ।	77		39	
१५ भ पद्मानिय भ २४ १६ हतुमतकया प्र० रायम् स्र हिन्दी र० काल १६१६ २५-७५ १७ सीताबरित्र × हिन्दी प्रपूर्ण ७७-१०६ ४३६३ गुद्रका स० १३ । पत्र स० ३७ । मा० ७३ ४१० इख । से० काल स० १६६२ मासीज बुदी ७ । पूर्ण । द्या-सामान्य । विशेष—निम्न पूजा पाठो का सग्रह है— १ कल्यामन्दिरस्तोत्रभाषा बनारसीदास हिन्दी पूर्ण १ कल्यामन्दिरस्तोत्रभाषा बनारसीदास हिन्दी प्रण्ण १ कल्यामन्दिरस्तोत्रभाषा बनारसीदास हिन्दी प्रण्ण १ कल्यामन्दिरस्तोत्रभाषा बनारसीदास हिन्दी प्रण्ण १ कल्यामन्दिरस्तोत्रभाषा वनारसीदास हिन्दी संस्कृत भ भ व्याप्तान्यमाल भ संस्कृत भ भ वन्द्रमान्द्रमाण प्रण्ण भ संस्कृत भ भ वन्द्रमान्द्रमाण भ संस्कृत भ भ वन्द्रमान्द्रमाण भ संस्कृत भ भ वन्द्रमान्द्रम	73		संस्कृत	
१६ हतुमतकथा प्रश्नाविद		राजसेन	25	
१७ सीताचरित्र १७ सीताचरित्र ४३६३ गुद्रका स० १३ । पत्र स० ३७ । मा० ७६ ४१० इख्र । ले० काल १०१६ १५० ह्या सोज बुदी ७ । पूर्ण । दशा—सामान्य । विशेष—निम्म पूजा पाठो का सम्रह है— १ कल्पामन्दिरस्तोत्रभापा बनारसीदास हिन्दी पूर्ण सम्मस्तोत्र (पार्वनायस्तोत्र) पद्मप्रमदेव सस्कृत ग्रा सामान्य मानान्य ग्रा सामान्य सामान्य सामान्य ग्रा सामान्य सामान्य सामान्य सामान्य सामान्य सामान्य सामान्य सामान्य सामान्य सामान	**	पद्मनन्दि		₹४
१७ सीताचरित्र	१६ ह् नुमतकया	व० रायमहा		२४
हिन्दी मपूराँ ७७-१०६ ४३६३ गुटका सं ११। पत्र सं ३७। मा० ७३ ४१० इख्र । से० काल सं ०१६६२ मासीज बुदी थ। पूर्ण । द्या-सामान्य । विशेष—निम्म पूजा पाठो का सग्रह है— १ कल्यामन्दिरस्तोत्रभाषा वनारसीदास हिन्दी पूर्ण २ कल्यामन्दिरस्तोत्रभाषा वनारसीदास हिन्दी पूर्ण २ कल्यामन्दिरस्तोत्रभाषा वनारसीदास हिन्दी २ कल्यामन्दिरस्तोत्रभाषा अधारमात्रम् अधारम्वन्ति २ कल्यामन्दिरस्तोत्रभाषा अधारम्वन्ति २ कल्यामन्दिरस्तोत्रभाषा वनारसीदास हिन्दी २ विद्यन्ति अधारम्वन्ति १ क्यानायर अधारम्वन्ति अधारम्वन्ति १ क्यानायर अधारम्वन्ति १ क्यानायर अधारम्वन्ति १ क्यानायर्थे अधारम्वन्ति अधारम्वन्ति १ क्यानायर्थे अधारम्वन्ति १ क्यानायर्थे अधारम्वन्ति १ क्यानायर्थे अधारम्बन्ति १ क्यानायर्थे अधारम्बन्ते अधारम्बन्ति १ क्यानायर्थे अधारम्बन्ति १ क्यानायं १	914		• ए.पा ५० काल	<i>१६१६ २५-७५</i>
४३६३ गुटका स०१३। पत्र स०३७। मा०७३ ×१० इख्र। ले० काल स०१६६२ मासोज बुदी ७। पूर्ण। द्या-सामान्य। बिशेष—निस्न पूजा पाठो का सग्रह है— १ कल्पामन्दिरस्तोत्रभापा बनारसीदास हिन्दी पूर्ण २ लक्ष्मीस्तोत्र (पार्श्वनायस्तोत्र) पद्मप्रमदेव सस्कृत ३. तस्वार्षसूत्र जमास्वामी "" ५. देवपूजा × हिन्दी सस्कृत "" ६ सिद्धपूजा × हिन्दी सस्कृत "" पार्र्यनायपूजा जगमाल × सस्कृत "" पार्र्यनायपूजा × सस्कृत "" १ पार्र्यनायपूजा × हिन्दी "" १ पार्र्यनायपूजा × हिन्दी "" १ पार्र्यनायपूजा प्रमाल × सस्कृत "" १ पार्र्यनायपूजा प्रमाल × सस्कृत "" १ पार्र्यनायपूजा प्रमाल भ सस्कृत "" १ पार्र्यनायपूजा भ स्वाप्ताय भ स्वस्कृत "" १ पार्र्यनायपूजा भ स्वाप्ताय भ स्वस्कृत "" १ पार्र्यनायपूजा भ स्वाप्ताय भ स्वस्कृत ""			ਦਿ≕ਿ ਰ	,
विशेष—निम्न पूजा पाठो का सग्रह है— १ कल्यामन्दिरस्तोत्रभाषा वनारसीदास हिन्दी २ लक्ष्मोस्तोत्र (पार्थनायस्तोत्र) पद्मप्रमदेव सस्कृत ३. तस्वार्यसूत्र उमास्वामी ४ मत्तामरस्तोत्र मा॰ मानतु ग थ. देवपूजा ६ सिद्धपूजा ८ द्यालक्षराण्यूजा जयमाल ८ पोट्याकाररण्यूजा ४ पार्थनाययूजा ४ पार्थनाययूजा ४ सस्कृत १० प्राशाबर १० प्राशाबर १० प्राशाबर १२ पद्मिन्युजा	४३६३ गुटका स	१३। पत्र सत्याः	. १९४० मपूरा	५०१-१०६
विशेष—निम्न पूजा पाठो का सग्रह है— १ कल्यामन्दिरस्तोत्रभाषा वनारसीदास हिन्दी २ लक्ष्मोस्तोत्र (पार्थनायस्तोत्र) पद्मप्रमदेव सस्कृत ३. तस्वार्यसूत्र उमास्वामी ४ मत्तामरस्तोत्र मा॰ मानतु ग थ. देवपूजा ६ सिद्धपूजा ८ द्यालक्षराण्यूजा जयमाल ८ पोट्याकाररण्यूजा ४ पार्थनाययूजा ४ पार्थनाययूजा ४ सस्कृत १० प्राशाबर १० प्राशाबर १० प्राशाबर १२ पद्मिन्युजा	७। पूर्ग । दशा-सामान्य ।	49/1	भा० ७३×१० इख्र । ले० काल स०	१८६२ मासोज वदी
१ कल्पामन्दिरस्तोत्रभाषा वनारसीदास हिन्दी २ लक्ष्मीस्तोत्र (पार्वनायस्तोत्र) पद्मप्रमदेव सस्कृत ३. तस्वार्यसूत्र जमस्वामी ४ मक्तामरस्तोत्र मा० मानतु ग १. देवपूजा ४ हिन्दी सस्कृत ६ सिद्धपूजा ४ हिन्दी सस्कृत ७ दसलक्षणपूजा जयमाल ४ मस्कृत ६ पार्श्वनायपूजा ४ १० पार्श्वनायपूजा १ पार्श्वनायपूजा	विशेष-—निम्न पूजा	गठो का सग्रह है		3 ··
२ लक्ष्मीस्तीय (पार्श्वनायस्तीय) पद्मप्रमदेव सस्कृत युर्सा दे. तस्वार्यसूत्र उमास्वामी " ४ मत्तामरस्तीय मानतु ग " ४. देवपूजा				
३. तत्त्वार्यसूत्र उमास्वामी ४ मकामरस्तोत्र मा० मानतु ग ५. देवपूजा ६ सिद्धपूजा ० दशलक्षरापूजा जयमाल ५ पोटशकाररापूजा ६ पार्यनायपूजा १० शाविषाठ ११ सहन्तामस्तोत्र १० भाशाधर ११ पद्मित्राण्या १० भाशाधर ११ पद्मित्राण्या ११ पद्मित्राणा ११ पद्		वि) प्राचनके	हिन्दी	मर्गा
४ मकामरस्तोत्र मा॰ मानतु ग " ५. देवपूजा	३. तस्वार्यसूत्र		सस्कृत	·
६ सिद्धपूजा ६ सिद्धपूजा ६ सिद्धपूजा ६ सिद्धपूजा ६ पोव्हराकारराणपूजा ६ पोव्हराकारराणपूजा ६ पार्श्वनायपूजा ६ पार्श	४ मक्तामरस्तोत्र		73	"
६ सिखपूजा X हिन्दी सस्कृत " पद्मालक्षरापूजा जयमाल X सस्कृत " पोटराकाररापूजा X सस्कृत " पार्यनायपूजा X हिन्दी " रे॰ सातिपाठ X हिन्दी " रे॰ साह्यनामस्तीय प॰ माशाघर "	५. देवपूजा		2)	37
 दसलक्षरापूजा जयमाल पोटराकाररापूजा पार्थनायपूजा पार्थनायपूजा पार्थनायपूजा पार्ववायपूजा पार्ववायपूजा पार्ववायपूजा पार्ववायपूजा पार्ववायपूजा पार्ववायपूजा पार्ववायपूजा प्रमुखा प्रमुखा प्रमुखा पुष्परवित् 	६ सिद्धपूजा		हिन्दी सस्कृत	77
 पोटराकाररणपूजा पार्यनायपूजा पार्यनायपूजा पार्यनायपूजा पार्वनायपूजा पार्वनायपूजा पार्वनायपूजा पार्वनायपूजा पार्वनायपूजा पार्वनायपूजा प्रस्कृत प्रस्कृत प्रभाशाधर प्रभाशाधर प्रभाशाधर प्रभाशाधर प्रभाशाधर प्रभाशाधर 			39	37
 १० पार्श्वनायपूजा १० पातिपाठ १० पातिपाठ ११ सहस्रनामस्तोत्र १२ पश्चमेरपूजा १२ पश्चमेरपूजा 	न पोटराकाररापुजा		संस्कृत	77
१० शातिपाठ X हिन्दी " ११ सहन्तनामस्तोत्र X संस्कृत " १२ पञ्चमेरपूजा प० भाशाधर "	६ पार्यनायपूजा		5)	73
११ सहन्तनामस्तोत्र संस्कृत " १२ पञ्चमेरपूजा " भूषरवति			हिन्दी	73
१२ पञ्चमेरुत्रुजा भाषाधर »	११ सहस्त्रनामस्तोत्र		संस्कृत	73
न्नेघरवात			"	"
		न्नघरयात		**
53				33

74.]			[गुरधर्गय
११ महाहिकापुरा	×	धरकृत	
१४ मजिएकनिवि	×	×	
१६ निर्वालगोबनाया	वपनतीशा च	િ લ્લ ો	,
१६ पद्मसङ्गल	र पपन्द		
१७ धन ण पुना	×	धर क्र	
विवेद-च्या दुश्तक पुक	राम ी बन के दुव नदगु	द के वहने के लिए निसी वर्ष	नी 1
धरेध शतुरुका स ् र	शायवर्ष स्थाया	४X४} हम । बाता –वंस्ट त	। दुर्स । दवा-दाना र ।
विकेषवारवाष्ट्रक (विश	री)ंतका ४ ब्राह्यको	के ताम 🗓 ।	
प्रदेश गुजकान है	≵।पण ह ¥३। या	३)८३ ६५ । बारा-हिन्दी	। में नाल १६ पर्ट
वितेष पाठ मधुह (
१ ४ इन्द्रीयी नेमजीयु नाय स्ट्रेत	ो नाही बेन नाता 🗶	fiet	t
२. हो पुनिवर तब विश्वि है करन	ारी दावसन्द		1-7
६ प्याचीमा हो प्रमु मलबीनी	×		*
४ अधु बांसीमी मूख ननही नोर्स	मी ब्रह्मपट्टर		t
५, दरन भरत नहे श्वरणे देखी ।	गरी ×		ŧ
६ जान भीरनी महारी घरन दिव	प्रतिचरी 🗶		ŧ
पुन बी रवा विचाये देनि	×	*	**
व वहमोत्री नैनिबीनु वास न्हे	वी 🗙		2.5
६. कुथे वारोनी बार्ड बार्ड	×		११
< सकोवर्षं वर्शतस्त्राचारा	बु बर <i>व</i>	*	21 4
११ - वहमीजी नैनिजीयु चाम ग्हेर्ड	विषयि सम्मानी सम्म	TT pp	92 31
दर वाल की जो नदारी बाव रिपन	दिसमी X	29	**
१३ अर्जिन नने रीया हर्ना तुनकी	रमा विश्वादी X	PP	48 84
१४ महे बग्रवामी हो बहु बोवपू	×	-	₹¥
रेट मादुरियबर स्वत उरवा व	रङ्गनगरी 🗶		TX.

	•		[४७१
गुटका-संग्रह]	बुधजन	99	२ ६
१६ म्हे निशिदिन ध्यावाला	•		२६२७
१७ दर्शनपाठ	×	11	२ २६
१८ कवित्त	×	33	३३-३ ४
१६ बारहभावना	नवत	17	
२०, विनती	×	91	₹ = ₹ •
२१ वारहभावना	दलजो	33	₹5-3€

४३६६ गुटका स० १६। पत्र स० २२६। ग्रा० ५३×५ इख । ले० काल १७५१ कार्तिक सुदी १। पूर्मा । दशा-सामान्य ।

विशेष—दो गुटकाभी की मिला दिया गया है।

विषयसूची			
१ वृहद्कल्यम्य	×	हिन्दी	777
२ मुक्तावलिवत की तिथिया	×	11	१२
३ क्याडादेने का मन्त्र	×	13	१२-१६
४ राजा प्रजाको वश्वमें वरनेका मन्	त्र X	79	१७-१=
५ मुनीश्वरों की जयमत्व	व्रह्म जिनदास	39	२३-२४
६ दश प्रकार के ब्राह्मए।	×	सस्कृत	२५-२६
७ सूतकवर्णन (यशस्तिलक से)	सोमदेव	3)	9 € −0 €
 गृहप्रवैशविचार 	×	13	30
६ अक्तिनामवर्गीन	×	हिन्दी सस्कृत	₹ ₹ - ₹ ₹
१० दोपावतारमन्त्र	×	93	३६
११ काले विच्छुके डक्ट्स उतारने का	। मत्र 🗙	हिन्दी	₹⊏
नोजयहा मे फिर सख्य	॥ प्रारम्भ होती है।		
१२ स्वाच्याय	×	संस्कृत	€ −3
१३. तत्वार्यसूच	रमास्वाति	•	१ ३
१४ प्रतिक्रमगुपाठ	×	59	8E-36
१५ भक्तिगठ (सात)	×	33	₹७-७२

yw⊃]			[गुरुध∺स
१६ दुशस्यमं दूरतीय	त्रक्तमहावार्य	p	ul-st
tu वसप्रकारपरा दुर्वातनि	×		46-41
(४ मानगप्रतिक्रमक्	×	शक्य संस्कृत	ey-t w
११. युवस्त्रव	का हैयक्ट्र	ছালু ব	t##-{t
२ युवाबतार	भीवर	बंदरत वस	{{ 4 =-{ 4 }
२१ मालीयनः	×	মদৃত	144-114
२२. सषु प्रतिक्रमण	×	माहत बंस्हत	115-115
२३ वक्तावरस्तीय	याम्यु याचार्य		145-111
र्प मेथेत व गी समयाना	×	र्वस्तुत	117-119
२४. कोरायनीतार	देशनेश	মাছত	124-140
२६ र्ववीवर्गनाविकः	×		\$45-29 3
 তিনিদিনতীক 	वेगम ि क	र्वस्ट्रक	Pet Set
२ बूरलगोगीकी	यूरालक्ष्मि		{**{
२६, एडीबलस्त्रोच	गाविराज	20	1 (11)
। বিদানভাষেত্রীক	धनञ्जन	27	\$42 \$ £
६१ वयसक्यायसमान	∜ रस्द्र	क्षराज च	\$46-\$8E
३२, वश्यास्त्रमधिरस्तो व	12000	र्वस्तृष्ठ	124-2 1
६६ सम्बीस्योग	प्रध्य वर्षेक	я	₹ ₹ ~₹ ¥
६४ नन्धारितीस	×		4 5-548
प्रवरित—वंदग् १७१ साथार्न सी शरभीति वं वंगाराम	(१ वर्षे सामैः १९१६ झ यम्पार्वे वाचवार्षः ।	र्धातने वर्धात्रवाने युक्का	म्रीवासः १ विशे नद्ववर्गीः
४३६वः शहका स	\$0 4x ft A P 1	at axi in	
१ सध्यत्वितिसम्बद्धः	×	माइत ह	ल्हित व्यक्त्य तहित । १
१, बस्तरातीयनम	×	र्वस्त्रुत	¥
। बंबरिवर्धि	×	w 9	ह्यानार से क्यून ६-१
γ श्वर्तश् वा र	×	**	•

गुटका-सग्रह]			
४ सदृष्टि	V		ξυν }
६ मन्त्र	×	संस्कृत	88-3
७ उपवास के दशभेद	×	77	१४
 फुटकर ज्योतिष पद्य 	X	"	१५
६ भढाई का व्योरा	×	7>	१४
१० फुटकर पाठ	×	77	१ 5
१ १. पाठसग्रह	×	n	१ ५- २०
	×	मस्तृत प्राकृत	21-2~
१ २ प्रश्नोत्तरस्तमाला	गो 	मिट्टसार, समयसार, द्रव्यमग्रह	मादि में सग्रहीत पाठ है।
१३ सज्जनचित्तवहाम	* * * *	संस्कृत	38-54
१४ ग्रुएास्यानन्याख्या	मिलिपेगाचार्य	33	₹₹₹=
	×	79	20.00
१५ छातीसुस की भौपधि का नुससा	п ×	प्रवचनसार तथा ही	४६-३१ ोका मादि से सगृहीत
१६ जयमाल (मालारोह्गा)	×	हिन्दी	३ २
१७ उपनासनिघान	×	भपश्र श	₹ ? —₹
१ ८ पाठसग्रह	×	हिन्दी	き れーáを
१६ मन्ययोगव्यवच्छेदकद्वानिशिका	211 °	प्राकृत	34-36
२० गर्म कल्याएक क्रिया में मक्तिया	×	सम्कृत मन्त्र	व भादि भी हैं ३८-४०
२१ जिनसहस्रनामस्तोत्र	ि जिनसेनाचार्य	हिन्दी	**
२२ मक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	सस्कृत	84-86
२३ यतिभावनाष्ट्रक	मा० कुदकुद	"	४६-४२
२४ मावनाढात्रिशतिका	भा० ग्रमितगति	n	५२
१२ भाराधनासार	देवसेन	17	₹ ₹ ~¥ ¥
२६ सवोधपंचासिका	×	प्राकृत	44-4 ₅
२७ तत्त्वार्थसूत्र	र उमास्वामि	भपभ्र श	₹6 − ξ₀
२६ प्रतिक्रमग्र	X	सस्कृत	~
२६ भक्तिस्तोत्र (प्रानार्यभक्ति तक)	×	प्राकृत संस्कृत	45-40 46-5 5
	-	संस्कृत	
/			56-906

_			(
M8]			् गुरका-सम
। सर्वपृत्तोत	वा समन्तमह	र्वश्वस	ર વ દેર
३१ नवसीस्तोत	पधप्रनवेष	**	**************************************
३२ वर्षनस्तोत्र	सक्तवन्त्र		111
३३ मुजनातस्तवन	×	**	175 355
६४ वर्षमस्तीव	×	মাস্থ্ৰ	193
३१ - बसामार दुरावनी	×	संस्कृत	645-41
१९ परमानन्दस्कोच	पुर णाल		184-81
१७ नाममाला	वगञ्जय		842 840
गीवरामस्तो न	पद्यवन्त्रि		224
११ कम्लक्ट्रशालीय	-		ţtt
४ विविशियस्तीत	वेषमन्दि	•	171-355
४१ सबदतारगलाः	मा कुल पुन		\$4\$
¥२, म ई यूतिविकात	×	29	{*{-{*}}
¥३ स्वस्त्यवनविक्रल	×		111-111
४४ समस्या ग	×	27	225 1 5 5
४% , विसस्यप्त	×	*	144-14
y६ वर्षेष्टुमधूरा	×	99	\$4 -{#\$
yu, पोक्शनारंग्यू वा	×		\$#\$-\$#\$
४८ व्यक्तवाल्यु का	×		\$ 4~{#E
४६ निवल्यु वि	×	*	1-2-5
६ सिक्ष्या	×		t ← t
प्रश्रम्यानिकाः	श्रीषर	79	१ २-११२
१२ सारतपु रम	पुन गर	\$79	866-8 4
१६ माति र्लय	×	∌ १ रह ७०	वाति १ ७—१
र् _{थ पुरस} रवर्सन	×	29	₹ €
रूर योज्यनारण ृ जः	×	*	41
	_		

५६ भौपिंघयों के नुसखे	×		ৰ্থি ২৩২
४७ संग्रहसूक्ति		हिन्दी	२१ १
५८ दीक्षापटल	×	सम्कृत	787
४६ पाइर्वनायपूजा (मन्त्र सी	X देन)	77	713
६० दीक्षा पटल		n	788
६१ सरस्वतीस्तोत्र	*	77	₹१=
६२ क्षेत्रपालस्तोत्र	×	77	२२३
६३ सुमापितसग्रह	×	77	797-898
६४ तत्वसार	×	27	35x-55=
६५ योगसार	देवसेन	प्राकृत	732-734
६६ द्रव्यसग्रह	योगचन्द	संस्कृत	738-73
६७ श्रावकप्रतिक्रमर्ग	नेमिचन्द्राचार्य	प्राकृत	735-730
६८ भावनापद्वति	×	संस्कृत	779-776
६६ रत्नथयपूजा	पद्मनिन्द	78	3xt-3xe
७० क्ल्याणमाला	"	77	च४=−२५€
७१ एकी भावस्तोध	प० माशाघर	33	₹4.6-5£°
७२ समयसारवृत्ति	वादिराज	77	740-743
७३ परमात्मप्रकाद्य	प्रमृतच द्र सूरि	99	768-644 768-644
७४ कत्याणमन्दिरम्तात्र	योगीन्द्रदेव	धपम्र श	₹-₹-३° ३
७५ परमेष्ठियों के ग्रुए। व म्रतिदाय	श मुदचन्द्र	सम्बृत	40%-50 <i>€</i>
३६ स्तोत्र	^	प्राकृत	३०७
 प्रमाराप्रमेयविलया 	पद्मनन्दि नरेन्द्रसूरि	संस्कृत	
१८ देवागमस्तोत्र	मा० समन्तभद्र	57	305-30E 380-378
६ मनलङ्गाप्टन	महाकलक्क	77	
॰ मुभाषित	×	99	377-376 32- 3-
१ जिनगुस्तवन	×	72	395-778
		79	446-446 446-446

x+4]			[गुरका-मगर
१ किन् लिकाच	×	**	111 111
६३ मंज्ञा नालपद्व ी	×	वयम थ	£17-£10
बंध स्तीव	ब दमी प्रश् <u>व</u> देव	সাক্ষর	भर भर
 स्थीयङ्गारवर्शन 	×	र्चस्त्रच	\$11-PY
६ भनुविधितकोष	याभ्यस्य	19	314-41
वर्थ प्रज्ञनसस्वत्सरोच	क्या स्थायि	**	m
नृत्युवक् रोतस म	×	•	£A£
🛭 यसन्वर्गदीवर्शन (अन्य	ল ছিল) ×		124 12c
६ यानुर्वेद के नुस्त ने	×	#	EAST.
१ ९. पाठवंबाह	×		\$\$ ~ -\$\$.x
१ २ सन्दुर्वेद नुख्यालंबहः	रव भवावि तसह 🗙	सस्ट्रेड हिन्दी बोनबद	र्वेषक से संबंधित ११४०-१०
१३ सम्बराह	×		£< −A a
इनके सरिरिक ^{हि}	गनगढ़ रह द ने में और हैं।		
१ वस्ताल देशा २	बुनिश्वरोपी समाता (शक्ष जिन्ह	ला) ६ वक्र मशास्त्रीय	र (क्ल्स्युरालेट्ट गरिने)
y सूतक्रविकि (समस्तिन	क राज्यु है) १ द्वारियम ाबस्	६ बीपानवारम	ৰ
४३६८ गुरका	सक १० । यत्र वं ४६ । सा ४	X१. इक्ष । माना–हिन्द	ो∮क कलाई t Y
मायस बुधै १२। पूर्व । क्या			
। शिक्तराय मञ्जूनमयोग	×	विल्यी	£ %
२ तत्वर्द	विद्य ापीला ल	ते राम १०७	Y प्रश्नुष दुवी १ १∽ ^{үद}
६ रक्तीतुक राव बना छ	न गहरात	n n t Y	ताकत बेद्या दर अर _{हर}
बीहा—	यथ रह वीनुक निस्को-		
	बंधाबर केपहु तथा, शत्रुक परिक प्र	শীস ।	
	राज बना स्वनं नहेत जन हुतान	रन नीन ॥१॥	
	रं चित रक्ति नैरोय वन निधानुष्टन	गुषेद् ।	
	भो दिन बाम सर्गद सौ बीलव नो		

गुटका-समह]

सुदर पिय मन भावती, भाग भरी सकुमारि ।
सोइ नारि सतेवरी, जाकी कोठि ज्वारि ।।३।।
हित सौ राज सुता, विलसि तन न निहारि ।
ज्या हाथा रै वरह ए, पात्या मैड कारन भारि ।।४।।
तरसे हू परसे नहीं, नौढा रहत जदास ।
जै सर सुकै भादवै, की सी उन्हाले ग्रास ।।४।।

ब्रन्तिमभाग-

समये रित पोसित नहीं, नाहुरि मिलै विनु नेह ।
श्रीसिर चुनयी मेहरा, काई वरित करेंह ।।६८॥
मुदरों ले छलस्यों कहाँ, श्री हों किर ना पैद ।
काम सरें दुख वीसरें, वैरी हुवो वैद ।।६६॥
मानवती निस दिन हरें, बोलत खरीवदास ।
नदी किनारें रूखडों, जब तब होई विनास ।।१००॥
सिव सुखदायक प्रानपित, जरों मान कौ भोग ।
नासें देसी रूखडों, ना परदेसी लोग ।।१०१॥
गता प्रेम समुद्र हैं, गाहक चतुर सुजान ।
राज सभा इहै, मन हित प्रीति निदान ।।१०२॥

इति धी गगाराम कृत रस कौतुक राजसभा रक्षन समस्या प्रवध प्रभाव । श्री मिती सावए। विधि १२ बुधवार सवत् १८०४ सवाई जयपुरमध्ये लिखी दीवान ताराचन्दजी को पोधी लिखत माणिकचन्द वज बाचै जीहने जिसा माफिक वंच्या ।

४३६६. गुटका स० १६। पत्र स० ३६। मापा-हिन्दी। ले० काल स० १६३० घ्रापाढ सुदी १४।

विशेष--रसालकुषर की चौपई-नखरू कवि कृत है।

४४०० गुटका स०२०। पत्र स०६८। ग्रा०६×३ इख्र । ले० काल स०१६६४ ज्येष्ठ बुदी १२। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेय-महीधर विरचित मन्त्र महौदधि है।

बंस्कृत

•

हिन्दी पथ

बाबिह पुल्त ने तत ॥१॥

बीवर ईंग्रावि वेच शरेश

वच्चमधि च्याप सर्थ

कुनिनई व्या वननाह शहर।

दर्व वरतिन परमध्य सल्बू ।।ए।।

व्यक्ति बन्द पर गान्यु ।।६।)

रवर्त ४६

#?

8-E4

1-03

2 2 27

\$40-fa4

₹# ₹

२१ ११

२६१ व

1 1

ME	ı						Li	Sec. 6
		χy	₹	गुरका सं	२१। यचर्स	११६ । धा	६X१ इस] पूर्छ : रहा-सामान ।	

	१ ४ १ गुल्कास	२१। पत्र स	११६ । मा	६X१ इख । यूछ । दसा∺कानाच ।	
,	सामप्रीकाचार	x		र्वसङ्घत माङ्गर्व	

२ तिक मीक मावि संबद् × भाइन

श्चनगुन्ह र्वसम्ब

३ समन्त्रपद्भरपृति -

४ साबाधिकपाठ × মা#ুব

देवनन्दि

×

बुगगन

×

×

х

×

विननेभूगीति

जिनवह बुबोबह बन्धि मानु पान नवी नहुं करहूं विचार ।

समझ्य राजा र ए क्लीह, बाव दूबि बाद परि तुलीह ।

श्विराज नातवह वरि बाजू अध्युरेण लोलक बतारहु ।

क्षा परि वर्गात्म किवि पानी । अथ यम्प्रारम क्षामह स्वादी ।

दिजनदक्षणा राजा वरि जोंदु र्थशाबुलरि शङ्किक मुख्याद् ।

विवन बाह्य राज्य वरि बांदुः वंदामुन्तरि शहरिकाः बनास्युः ।

१ विकिधिक्योप

६ पादर्जनान का रहीन

🗸 ৰপুৰিয়তিনিবকুক

११ सक्तीकदल्यिका

१५ जिनवीरीसम्बन्धरण्ड

यूनीभ्रप्ते की संयनका

प**क्र**तोच

[जिनवरस्तोण

प्रादिशाच---

77-00

t-11

गुटका-समह]

विमल वाहन राजा धरि मुग्गोइ, प्रथमग्रीवि महींमद्र मुभग्गोइ। शभव जिन मवतार ॥७॥

धन्तिमभाग---

भादिनाय भग्यान भवान्तर, चन्द्रप्रभ भव सात सोहेकर। शान्तिनाय भवपार ॥४५॥

निमनाथ मयदशा तम्हे जाणु , पार्श्वनाय भव दसह वसाणु ।

महावीर भव तेत्रीसह ॥४६॥

मजितनाय जिन ग्रादि कही जह, ग्रठार जिनेश्वर हिइ धरीजई। विशा त्रिशा श्रव सही जागु ॥४७॥

जिन चुवीस भवातर सारी, भएता सुएता पुण्य भपारी । श्री विमलेन्द्रकीत्ति इम बोल हु ॥४८॥

इति जिन चुवीस भवान्तर रास समाप्ता ॥

१३	मालीरासो	जिनदास	हिन्दी पद्य	₹05-3₹0
\$8	नन्दीश्वरपुष्पाञ्जलि	×	सस्कृत	₹१-१३
	पद-जीवारे जिरावर नाम भजे	×	हिन्दी	३१४~१५
8 €	पद-जीया प्रमु न सुमरची रे	×	39	385

४४०२ गुटका स० २२ । पत्र स० १४४ । आ० ६×१३ इख्र । भाषा-हिन्दी । विषय-भजन । ले० काल स० १८४६ । पूर्ण । दला-सामान्य ।

₹	नेमि गुए। गाऊ बाद्धित पाऊ	महोचन्द सूरि "	हिन्दी	•
		वाय नगर में स०	१८८२ मे प० रामचन्द्र ने	प्रतिलिति के के
7	पार्खनायजी की निवास्मी	हर्प	हिन्दी	नावायाय का था ।
3	रे जीव जिनधर्म	समय सुन्दर	16.41	१−६
¥	सुल कारण सुमरो	×	23	Ę
K	कर जोर रे जीवा जिनजी	प० फतेहच द	7)	v
Ę	चरण शरण भव भाइयो		19	5
	रुलत फिरची मनादिसी रे जीवा	27	n	
	जन्म जनस्वा र जावा	"	"	5

•)				Į	गुरका सम
-	तस्य काम बलाय	प्रदेशका	ीएची	र दानत १	Y K
	र्धन दुर्देगरे वी	27	10		ŧ
१ ज	प्रतेत पर बारले जी		n		11
रर क	रीने विनंदनी पारी	77			**
१२. व	त्वत वरक नः	10	9		\$3
£ \$ 55	व बाय स्वामी		•		11
₹¥ W	ब स्यू वेलि जिल्ला	₩			₹¥
१६ च	द महाब वरम् जित वंदिये		78		\$2
₹ ₹	र्म करमाये	8			14
to স	बुधो बाई उरले मागा	77			¢9
t=. ≪	र क्टारी निवनी	10	*		ţw
₹2 €	सि बारचे बूर्रंत स्वि पार्ध	#	**		
1 5	যু ৰাম সমানী			ब्यूर्ख	ŧ
71 P	त परणः विकासो	le .			ŞE
12 74	(रो नद नामोनी	**	,		2.5
11 T	इत वीर वरे	নিনাখন্দ			*
१४ में	र बनशः भारा	नुवारेन			3.5
११. घ	छ न्यांचे बाह्ती	विज्ञान	10		**
२६ स	वर्धवयक्तीरी बाहुरत्व		10		33
∃७ न	प्रीतनो के मन्दर	वरवाधन	m		31
y N	हुरम हुर स्तानी	बुरायम	10		54
	र्वीवराम गोर्थ देशे	विजयशीरी			44
• •	ग्रीर २ ही की वांगी	बीचलुराम			₹₹
11 4	विक्रमेट्रा ज्ञानु नाम	नरामान्दर	29		*
12. 4	रत बका क्रमण सहीर गाँउ	क्षत्रेसम			4.0

बुक्रको**स**

विनोधवीति

18

ş

१२. वरत वहा उत्पृष्ट वहीर कुरि

रेप करो दिन मुख्याई जिन्हाई

रा देशा देश वर वर्गा

33

४६ हमरैतो प्रमु मुरति

53

33

62

\$ 52	1			[गुटक
•	चौरिषनजी को घ्यान वरी	वनतराम नीदीका	श्र ीली	w1
4.8	प्राप्त प्रथम ही वयो	h		w
44	बाने की नेविकुमार	ħ	,	रान राजकरी 🖭
**	बहु के बर्रान को में धाबी		"	wt
44	हुम्ही धन रोष जिहाने	*		¥t
41	कून गंदरी नेनि चकार्य	**		wt
11	विशा तु वानत नवी नर्दि रै	fe .	**	*1
40	उची मेरे बारन को पिशारी		22	94
•	राजीनी जिनसंख बरन	*		70
5.8	निष्टनी से वैधे श्रवन नहीं	*	п	94
	पुनि हो बरक ते रे योग परी		n	**
۳ţ	नेरी क्षेत्र यति होशी	*		39
**	वेसोरी नेम कैंदी रिजि वार्ड	*	н	94
*1	मानि वनाई राजा नामि के	žņ.	*	44
-	बोतधम नाम मुनदि	दुनि विजयगैति		wt
41	ना नेतन सब दुखि भी	बनारवीशत		wt.
-	इस नवरी ने फिछ विम खुवा	बनारती रात		wt.
•	में पाने दुव निष्ठपत राज	हरीबिह		*
•	क्षमधीयत संक्ष हरला	थ विजनतीति		
44	वारे वेटी दुव वेजू	व्यक्तिकर	*	
	रेबोरी धारीभरत्नामी क्रीता व्या	व सवाबा है जुराज्यमंत		48
,	जे में में जिल्लाम	नान्यव	**	*
•	बहुनी विद्वारी क्षरा	ब्रुरीविक्	-	ŧ
1	बनकि १ पुन ठांबर दि दा दा	रामभक्त	70	*
4.4	दिषन श्वान सुन कारण साथी	न्यम	24	*
1	सुनि जिन देशी देशकी	क्वेहशन		# \$

गुटक-समह			ر ــــــــــــــــــــــــــــــــــــ
-			83
८६ देखि प्रमु दरस कौए	-	,	, 93
८७ प्रमु नेमका भजन करि	****	,	٠ ٠ ٤ ٣
पन भाजि उदै घर सपदा	طب	**	- & 5
पर. मज भी ऋपम जिनद	-		£=
<o o="" चाव="" ता="" मेरे="" योही="" है<=""></o>			•
६१. मुनिसुवत जिनरान को	-	4	६न
६२ मारे प्रमु सू प्रीति लगी	تيلئ	V .	33
६३ शीतल गगादिक जल	क्रि	·	8.8
१४ तुम मातम गुण जानि	fer-3	•	e e
हर सब स्वारय के मीत है	يتريسوي		33
	1	*	१००
६६. तुम जिन झटके रे मन	2	Yes	13
६० क्हा रे मजानी जीवह	y	P	55
६८ जिन नाम सुमर मन बावर	متداع	+	१०१
६६ सहस राम रम्न पीजिय	Comme	*	,
१०० सुनि मेरी मनसा मानरण		· 7	19
१०१ वा सायु ससार में	/		33
१०२ जिनमुद्रा जिन सारसी	1	7	33 2 o 3
१०३. इस्मविधि देव मदेव की	£	*	₹०२
१०४ विद्यमान जिनसारसी प्रतिका हि १०४ काया वाही काठको साम्य	वि सारे	₩	n
१०५ काया वाडी काठको सीमत मून १०६ ऐसे क्यों प्रमु पाइये	مقطط لقداولة	*	#
१०६ ऐसे क्यों प्रमु पाइरो	मार मिनान्त्रक	>	**
रें एमें या प्रम पान्ने		•	₽o \$,
रै०६ ऐसे यो प्रभु पाको 🗝	4	1	"
		*	79
रेरे॰ प्रमुजी को तम तारक	Marrie B		27
१११ रे मन विषयां मूसियो	¹⁹¹ हैरकद _{्द}	,	₹0¥
4 , A483	* 4	*	•

केन्द्रिक होन

rar]			्रारध-सम्ब
११२ पुमरम की में त्यार	चानवराम	िहमीर स	[गुरफा-सम्बद ११
११६ घर से जैनकर्म को सरलो	×	,	et
११४ मैठे सम्बद्धत जूपाल	वानसराव		ą t
११% धह बुंबर बूरत वार्श की	×	77	9.3
११९ पठि संवारे नीजिने बरसका	×		ŧ٩
रिष्ण कीन कुनाए। परी रे नवा तेखे	×	10	7.5
११४ राज भरव तो नहे तुवान	वानसराय	"	41
११६ सहे मध्यमी नृति हो राम		89	£1
१२ मूर्रात की राजें	वयत्तराज		દો
१२१ देखी सबि गीन है नेम जुनार	विवयभौति	10	et
१२२ जिलगरबीबू जीवि करी थे	w	77	ξY
१९६ जोर ही साथे प्रदुक्तीय तो	हरकान	29	4.4
१२४ विनेतुरवेत माने करक गुरु देव	वक्तराग'		FA
१२६ अभी बने त्यीं दारि नोक्ट	कुनासक् च्या		£¥
१२६. इवाधे बारि थी नेतिकुमार	×	п	¥3
१९७ याचे एक्टराने करी की	×		ex.
१२० १री वजी प्रकृति वर्ष करो	वनतरान	*	ξĬ
१२६ मेंबा नेरे क्त्रीय है खुनाग	×		15
१६ - सामी कामी प्रीणि तू वाने	×		42
१६१ सें तो मेरी सुधि हुव नई	×		ŧξ
१६२ मानी में तो किय किया नार्द	×	P	45
१६६ जानीये तो बाली देरे बगकी यह	ली विजयपीर्ति		£4
१३४ सकत समें मेरे नकत वाने	×		11
१६४. बुक्ते नहरि करी नहाराज	निजभक्षीरिः	*	51
११६ वैदन केंद्र निज कट नाहि	-	,	54
११७. दिन मिन यस जिला वरण निहास		-	£.

गुटका-सम्रह]			[אבּיַ
२ -	मानुकोत्ति	हिन्दी	93
१३६ तेरी मूरित रूप बनी	रूपचन्द	17	وَفُ
१४० मियर नरभव जागिरे	विजयकीति	***	દ ર્વ
१४१ हम हैं श्रीमहावीर	19	37	ê۳
१४२ भलेभल धासकली मुक्त प्राज	17	33	£ =
१४३ कहा लो दास तेरी पूज करे	"	"	٤5
१४४ मार्ज ऋपम घरि जावे	27	33	33
। १४५. प्रांत भयो बलि जाऊ	5>	37	33
१४६ जागौ जागीजी जागो	11	39	33
१४७ प्रात समै उठि जिन नाम लीजै	हर्पचन्द	77	33
१४५ रेसे जिनवर मे मेरे मन विललायो	भनन्तकोत <u>ि</u>	11	१००
१४९ म्रायो सरग तुम्हारी	×	23	77
, १५० सरण तिहारी भायो प्रभु मैं	ग्रखयराम	53	7)
१५१. वीस तीर्यक्कर प्रात सभारों	विजयकीत्ति	,	१०१
१५२ कहिये दीनदयाल प्रमु तुम	चानतराय	19	•
१५३ म्हारे प्रकटे देव निरक्षनं	वनारसीदास	33	13
१५४ हू सरसागत तोरी रे	× '	יי ט	53
१४५ प्रभु मेरे देखत भानन्द भये	जगतराम	33	*** **********************************
१५६. जीवंडा तू जागिनै प्यारा समिकत	महलमे हरीसिंह	,	
१५७ घोर घटाकरि मायोरी जलघर	जयक्षीति		11
१ ५८ कौन दि वा सू ग्रायो रेवनचर	×	13	n
१५९ सुमति जिनद ग्रुगमाला	गुराचन्द	23	"
१६० जिन बादल चढि ग्रायो हो जगमे		29	१ ०३ '
१६१ प्रभु हम चरणन सरन करी	, ऋषमहरी	37	17
१६२ दिन २ देही होत पुरानी	जनमल	"	99°
१६३ सुगुरु मेरे बरसत ज्ञान भरी	हरख चन्द	77	3)
-		n	१०४

,\$c6]			[गुरका-संगद
१६४ स्मा सोचत पश्चि जारी है सन	चानवराम	िहरूती	1 4
१६४. तमनित बतन भाई सक्तम	n		n
१६६ रे मेरे बटशान क्लायन आयो			t x
१६० ज्ञान सरोक्ट सोड हो अधियन		"	H
१६० हा परमञ्जूष बरसक सामावरी	n	27	#
१६६ उन सः । जिल्ह्यांत को	नेम वैवतेन	n	
१ मेरे सब द्वार है बच्च में बंबतो	इर्वेशीर्ति	11	1.5
१७१ मनिहारी सुदा के गण्डे	जानि नीव्यव		
te२ में दो देरी सान नहिना शानी	बूबरदास		,
१७६ वैकोरी साथ नेतीनुर सुनि	×	p	=
१७४ - रहारी नई नक् नहत न वाले	ৰাপত শেৰ	w	\$ 4
१७८, रेवन गरि सदासधीय	वना श् <u>चीवाच</u>		
tot मेरी र गरता बनम वन्। र	स्पर्यस		"
👣 🎉 बुवानी रे में जानी	विवयचैति	24	m
१७६ माथा में उसी पूनति वर्गनी	वनारद्वीयल		*
१०६ वनित्र विया मान	विवयशीति		
र । सद भन मोनद नाम नवत ने	×		
द्द्रदेशस्य सम्मे काडी गीर	मूच रदान	*	t t
१ क चनन नेचुन दोहि संबार	बनारशीयल		#
१ १ निन रहोरे मरे	यणतराव	69	,
t y लाबि रक्तो जीव परभाष वे	×	19	*
१ ४ इम नाने धारामराम ना	वाननराव	19	ŧŧ
६ ६ निरुवर भाग्र विनि जिन्छ	विमक्तीति	70	•
१ 🚁 शित नयोरे चैनी बीन्द्र छ।	भूषस्थाम	*	*
१ जन में के कामी मीन है	बनारगीराल	-	n
१ ६ दुर्भवा गय जीती	×		555

गुटका-समध् ै			(X=0
१९० जगत में सो देवन का देव	वनारसीदास	हिन्दी	१ ११
१६१ मन लागो धी चवकारसू	गुगाचन्द्र	57	77
१६२ चेतन भव स्रोजिये	71	13	राम सारङ्ग ११२
१६३ भ्राये जिनवर मनके भावर्ते	रागसिंह	ŦT	77
१६४ करो नाभि कवरजी की ग्रारती	सालचन्द	37	ກ
१६१ री भाको वेद रटत ब्रह्मा रटत	चन्ददास	מ	११३
१६६ तें नरभव पाप कहा कियो	रूपचन्द	37	55
१९७ मिलिया जिन दर्शन की प्यासी	×	77	77
१६ वर्ति जड्ये नेमि जिनदकी	শা ৱ	ž"	33
१६६ सब स्वारय के विरोग लोग	चिजयकी र्ति	> >	44.8
२०० मुक्तागिरी वदन जइये री	देवेन्द्रभूपरा	27	"
	स० १	८२१ मे विजयकौत्ति	ने मुक्तागिरी की बदना की थी।
२०१ उमाहो लाग रह्यो दरशन को	जगतराम	हिन्दी	88%
२०२ नाभि के नद चरण रज वदी	विसनदास	37	99
२०३ लाग्यो धातमराम सॉ नेह	चानतराय	73	31
२०४ धनि मेरी माजकी घरी	×	77	११ ५
२०५ मेरो मन बस कीनो जिनराज	चन्द	23	59
२०६. धनि वो पीव घनि वा प्यारी	भ्रह्मद याल	19	33
२०७ भाज में नीके दर्शन पायो	कर्मचन्द	33	79
२०८ देखो भाई माया लागत प्यारी	×	17	१ १६
२०६ कलिजुग मे ऐमें ही दिन जाये	हर्यकीत्ति	11	"
२१० धीनेमि चले राजुल तजिके	×	77	3)
२१९ नेमि कवर वर वीद विराजे	×	33	११ ७
२१२ तेइ बडमागी तेइ वडमागी	मुदरमूपरा।	>>	"
र २१३ भरे मन के के बर समकायो	×	77	<i>t</i>)
२१४ कब मिलिहो नेम प्यारे	विहारीदास	1'	33

3)

•			
~ k=]			[शुरका-समर
२११, वैभिविनंद वर्गन को	নৰক্ষী বি	हिली	- 98
२१६. धन बाज्यो शव नन्यो है अजने न	पीयप रत 🗶	77	
२१७. रे नन बाबको बिया ठीर	×		
२१वः निभम हीन्द्रहार को होय	×	#	
२१८. बमक नर बीवन नोरी	रत्त्व		
दर नव गई नवन इनाउ	बंदतराव	-	tte
२११ घरे दो को कैने २ वह सबकातें	चैन विश्वय	*	
२२२ माबुधै बैनवाली	वरतराम		
र१३ इस धाने हैं विनराब तोरे कचन	थी चानव राम	27	,
१२४ मन बदनमी च घटनवो	वसराम्		=
२२६, वैंब वर्ग नहीं दौता वेश्व हेही व	रती बद्धाविनवान	#	11
२१६ इन नैवीं दा वही नुवान	.T 39		p
२२७ वैना वचन सबी जिल बरवन पार	ो पश्चम	*	
२२४ तब परि करन है नरबान	PPPY		
२२६ तब गाँँ वस चेत शत	हर्वशीव		
२३३ - रे बन बावनो निय और	वयनराव		292
२३१ जुनि भन्न नेमजी के बेन	धानन राज	>	
२६२, तसर वाहि है से वाहि बातनो वर	द बदहरान	n	7
१३३ चलत प्रान्त नयो रोमेरी काया	×	**	
१३४ नामप रन नृपन रेनामा	यक्ती र्ति		
११६, सब गुण मानो वैदानरावा	30.44	*	775
२३६, रोगा म्यान वरपा है	वनतराम	30	
२६७ परिरेण सम्बन्धित वर्षानी	বাশবংশ		•
२१४, नार्ट्य नेत्रत है चीनाव	वरात	99	•
२३६, देव मीरा ही बदवनी	लयम्बर	pd	273
२४ वंदी नेते ही मित व	CHRICK	*	*

गुटका-सपह			{ y
२४१ में बदा तेरा हो स्वामी	थाननराय	हिन्दी	१२३
२४२ जै जै हो स्वामी जिनराय	रूपचन्द	99	£2
२४३ तुम ज्ञान विभो फूली वसत	चानतराय	23	१२४
२४४ नैननि ऐसी वानि परि गई	जगतराम	75	59
२८५ लागि ली नामिनदन स्थी	भूधरदास	99	93
२४६ हम प्रातम को पहिचाना है	द्यानतराय	11	37
२४७ कौन समान भने कोन्होरै जीव	जगतराम	53	11
२४५ निपट ही बठिन हेरी	विजयक्तीति	11	53
२४६ हो जी प्रमु दीनस्याल मैं बदा तेरा	धक्षयराम	**	१२५
२४० जिनवाणी दरयाव मन मेरा	गुणचन्द्र	15	37
२५१ मनह महागज राज प्रभु	19	•	17
५२ इन्द्रिय ऊपर शसवार चेनन	29	35	37
२४३ भारती देखत मोहि मारसी लागी	ममयसुन्दर	19	१२६
२५४ नांके गढ फौज चढी है	×	17	5>
२५५ दरनाजे वेडा स्रोलि स्रोलि	ग्रमृतचन्द्र	"	15
२५६ चेति रे हित चेति चेति	धानतराय	19	59
२५७ चितामिंग स्वामी सोवा साहव मेरा	वनारसीदास	>>	35
२४६ सुनि मापा ठिंगनी तैं सब ठिगी खाय	। भूधरदास	37	१२७
र १६ चिल परसे श्री शिखरसमेद गिरिरी	×	99	35
२६० जिन ग्रुग गानो री	×	31	49
२६१ वीतराग तेरी माहिनी मूरत	विजयकीति	19	n
२६२ प्रभु सुमरन की या विरिया	53	"	१२८
२६३ किये ग्राराधना तेरी	नवल	33	n
२६४ घडी घन ग्राजकी ये ही	नयल	98	27
२६४ मैय्या भवराध क्या किया	विजयकीति	97	** १२६
२६६ सिजिके गये पीव हमको तकसीर क	ग विचारी, नवस	"	n

*1	3			1	गुरका समर
२६	मैबा री निर्दि कार्यये मोद्वि नेवयीलू कार	r है, भीरा य	77		181
75	नैम स्वत्नमृ धाना नेव तेहरा बंबाना	विनोधीनाम			a
448	बन्य तुत्र अन्य तुत्र परिश्व वादन	×	,		\$ \$\$
**	वेतन नावी जुलिये	भूक्त	*		
1 1	त्याची भी महाबीद मोकू बीय जानिके	शवादेशम्			
₹₩ ₹	मेरी मन बस नीन्ही महाबीर (बावनपुर	s) হুৰ্বকী য়ি			
9#9	रामी तीवा कम्बू गेंड्	च पराराम	77		
Rer	रहे शीवाओं भूति शतका	19		3	111
٧٤.	नहिं सावा हो जिल्हान शाम	ह्वंबीति			
745	वेशक्रद पहिचाल बंदे	×			
٧,	नेवि जिनंद विरमेश्या	बीधरान			111
•	सम परदेती हो पतिकारी	ह र्पशीत	हिल्स		\$13
448	चटन मान न शा नो विश्व	वानदराव			P
*	बांगरी बुद्धा मेरे जन गर्छी है नहीं	मुबक्	#		
* *	माना रे बुडारी बैंग्री	नु गरमाय	M		#
*	नाहियो । शैवनहीं महाचे	विनष्ट्यै			644
₹ ₹	पर्व सङ्ख्यादारः	विमयति ह	#		
₹ ¥	वे । वनिद्वाचे हा जिन्हान	×	10		
₹ \$	रेक्श दुनिया जिन के नाई यजन शनाया,	तूनस्ता	•		642
4 4	चटर्र जैवा म ो वहेगा	वृत्रम	*		*
4	चना विमध्यिकं गणे सम्बं	वानवराय			*
*	जमनबस्त तम माग्यक जारी-गीत	ж	*		*
	माधित बरिय तानु नेमशी प्यारी विक्रियाँ		10		444
16	हाना दश म्यान कतारी का घरणा	हे गरा ग	91		
	लगा हा नावे लांद हूँ।	×	**		#
423	प्रकार प्रकार प्रकार में विकास के बाली	व रतीशत	**		=

गुटका-सप्रह ो	[XE?
२६३ होजी हो मुपायम एह निज पद भूलि राह्मा 😾 हिन्दी	१३६
२६४ मुनि यत्तर वीनि यो जगडी मोतीराम "	१३७
रवना काल स० १८४३ लेखन वाल सबत् १८४६ नागीर मे प० रामचन्द्र ने लि	पेकी।
२६४ छीर विचार X हिन्दी से० कात १८५	७६५ ७.
२६६ मांवरिया घरज मुनी मुक्त दीन की ही प० रोमचद हिन्दी	१३८
२६७ वांदलेडी मे प्रमुत्री राजिया ,,	1)
२६८ ज्यो जानत प्रमु जोग धरची है चन्द्रभान 19	53
२६६ म्रादिनाय यो विनती मुनि वनक यीति ,, र० वाल १८५६	08-3F5
२०० पार्श्वनाथ की भारती // ग	१ ४०
रे•१ नगरो की यमापत का सबत्वार विवयसा 33 39	141
सवत् ११११ नागौर मठाएं। भारत सीज र दिन ।	
" ६०६ दिली यसाई धनगयात्र तु वर वैसाय मुदी १२ भीम ।	
, १६१२ भगपर पातणाह भागरी वसायो ।	
,, ७३१ राजा मोज उजगो बसाई।	
5 १८०७ महमदाबाद महमद पातमाह बसाई।	
१/१५ राजा जीधै जोधपुर बसायो जेठ मुदी ११ ।	
» १५४५ बीनानेर राव बीवी बसाई	
» १५०० उदयपुर रागी उदयसिंह बमाई ।	
१४४५ राव हमीर न रावत फलोधी वसाई ।	
५० १०७० राजा भोज रै बेटै बीर नारायण सेवाणी बसायो।	
11 १५६६ रायल वीदै महयो बसायो ।	
 १२१२ माटी जैसे जैसलमेर बसायो सां (वन) बुदी १२ रवी । 	
११०० पवार नाहरराव महोवर बसायो ।	
१६११ राव मालदे माल नोट फरायो ।	
 १५१८ राव जोषायत मेहतो बसायो । 	
n १७८३ राजा जैसिह जैपुर वसायो कछावै।	

```
21.8
                                                                                ्र गुरुश-सम्द
           मेरा १३ जागीर शीनशारे बनाई।
                 १३१४ धोर्रवनाइ पान्नार बीर्रवासा बनाने ह
                 है है । कारबाद् धनावहीन मोदी नीरवरे वाच बारो ।
                 १ २ बगारम दुरान राग्य बनाई रैनाल स्टी ३।
                 र > ( ११ १ ) ? राव सक्रीच्य प्रवाद सरवेर सवाई ।
                ttv विकास भी हरेती पाला है।
                रभाव देवरो विरोध बनाई ।
                रे देश राज्यात सरवर वजनम वीची।
                 १३१६ शक्ती हैंग्यों मन्द बचानी ।
                रा १ प्रचोची शास्त्रपायकी ।
                रेर्देश पानवात सरकर बदकरावार मोची व
                १६६६ रार मानदे वीकानेर मानी बास २ रही दार ाना काम यहा। इ
                १६६३ सार विजय नह विकास बनायो ।
                १६१६ नामपुरी स्थानी ।
                रता (लागे रेट्रां काना।
                 ६ २ मोनीय विशंतर सोपीने क्यार्ट ।
                ११ वह विजय अभीत्वर हुती विवस बनाई।
                १६ १ प्रानिष्ट धरवर चीतीह लीबी वे ब्ही १३ ह
                १६३६ नात्रमा बनना राजा उर्रामहरो १ आयंग से नियार संबो ।
                १६३४ बलनाइ सस्वयर वर्टरिवर नीबी १

    १ श्रीप्रव्यस्तिन के भौराली बील

                                                       िन्दी
                                                                                 111-11
1 1 दैन मत या समाध
                                                        वंश्यत
                                                                                     al.
                                        ×
                                                       िली पर
                                                                                     121
१ ४ सहर नारी दशी वशी
                                        ×
                                                                 म १६६ यसाइ वरी १४
                        दर्दब्रियं ब्रह्मपति हितै शुक्रवाय स्लाहा थी निक्ति ।
                        मुनुनी बद्धीयन्द्रीय को विदर्व नवर्गेद हुत्तम मुन्तुर्व सदयं ॥१॥
```

किरंपा फुिंग मोहन जीवग्य, ध्यरपुर मारोठ थानकर्य ।

सरवोपम लायक थान छजै, गुरु देख सु धागम मिक यजै ।।२।।

तोर्थ द्धुर ईस मिक्त धरै, जिन पूज पुरदर जम फरै ।

चतुसव सुभार घुरधरय, जिन चैति चैत्यालय कारकय ।।३।।

तत द्वादस पालम सुद्ध खरा, सतरै पुनि नेम धरै सुथरा ।

वहु दान चतुनिध देय सदा, गुरु बास्त्र मुदेव पुजै सुखदा ।।४।।

धर्म प्रश्न जु श्रीगिक भूप जिसा, सद्यश्रेयास दानपति जु तिसा ।

निज वस जु व्योम दिवाकरय, गुग्ग मौस्य कलानिधि बोधमय ।।४।।

सु इत्यादिक वोयम योगि वहु, लिखियो जु कहा लग वोय सहू ।

दयुडा गोठि जु श्रावग पच लसै, शुद्ध वृद्धि समृद्धि धानन्द यसै । ६।।

तिह योगि लिखै ध्रम वृद्धि सदा, लहियो सुख सपित भोग मुदा ।

इह थानक मानन्द देव जपै, उत चाहत लेम जिनेन्द्र कुपै।

प्रापरच जु कागद माइ इतै, समाचार याच्या परमन तितै ।।=।!

सह वात जु लाय घ्रमकर, घ्रम देव गुरु पिस मित्त मर ।

मर्याद सुधारक लायक ही, कल्पद्रुम काम सुदायक ही ।।६।।

यधवत विनैवत दानृ गहो, गुए।कील दयाध्रम पालक हो ।

इत है व्यवहार सदा तुम को, उपराति सुमै निह मीरन को ।।१०।!

लिखियो लघु को विध्मान यहु, सुल पत्र जु बाहुडता लिखि हू ।

वस् वारा वस् पुनि चन्द्र किय, विद मास मसाढ चतुर्दिशियं ।।११।।

इह त्रोटक छद सुचाल मही, लिखवी पतरी हित रीति वही ।

"" " ।१२।।

सुम भेजि हू यैक सकर नै, समचार कहा। मुख तै सुइनै ।

इनके समाचार इतै मुख तै, करज्यो परवान सबै सुखते ।।१३।।

।। इति पत्रिक सहर म्हारोठ की पचायती न ।।

×

श्चे श्री गुरुद्रा सः प्रेश पर वं १वर । या ०x ११ र च । पूर्ण । वधा-तावाच । विनेय-विक्ति रचवामी में से विक्ति पार्टी का संग्रह है।

१४ ४ मुद्रकास∙ १४ । यम वं १ । सा ७%६ वृक्ष । काया-सन्तर द्विनो । विवर-द्वा ।

कुर्ग (वया-नामन्य ।				
*	चनुविश्वति दौवकुरहरू	44	भीति	बस्ट्रेड	1-61
2	जिन्दौतालम् वदमान	राजा व	পত্য	f et i	11-11
ŧ	रामस्त इत शी वयमञ्ज	44	भीव	b	**-*1
٧	भारितश्रापृक	,	4	87	#1-#1
٤,	. महिस्लारर वयगळ	,	ζ.	*	81-48
1	मन्त्रीचाः यारती	>	(dy	t
		क्ष्रावस सं १५।	•ाया ६	X९ इ व । भाषा-संशक हि	व्योगिक प्रमार्थ
\$ X	६ मोदोज दुरी १६ ।				

11	३४०८ गुरेका स मातोज दुरी १६ १	ষ্ঠাণগৰ হৈছাল	९×२ इ व । चापा-संस्कृत	हिमी। के प्रसार्व
•	ব্যালভাতি হুবা	~	र्थसङ्ख	1 5
*	समुख्यम् स्तान	×	,	25-24
1	यतपर्वा	×		85-54
¥	चौदश्चार <i>णसूचा</i>	×		43-50
1	विनवहस्रवाथ (नवु)	×	17"	₹4—₹₹
٩	बोनगारकधन	बुनि वरनशीति	हिल्दी	44-84
	देवपूरा	×	वीत्त्रत	x -44
	বির্যুখা	×		90-49
ŧ.	- वश्रमेरद्वा	×		97- X
t	यहां हूरा चीतः	×	*	# !-4
ŧŧ	सरकार्यभ ूष	व नास्तापी	>=	₹+ - ₹ ₹
t	दलसंदर्गा	पीक्षावार्थं वरेष्ट्रप्रेय	*	556-550
ŧŧ	धनात्मो र्डा	बहादेन	*	\$\$ 4- \$\$\$

१४ बोच्हर्विनिवर्तन 111 × (Poli

१५ वीसिवद्यमान तीर्थेक्टरपूजा
 १५१-५४
 १६ शास्त्रजयमान
 ४ प्राकृत
 १५१-५४

४८०६ गुटका सः २६। पत्र स० १४३। मा० ४×४ इश्च। ले० काल स० १६८८ ज्येष्ठ चुदी २। पूर्ण | दशा-जीर्ण |

	7777777	सस्तत	8-x
१ विपापहारस्तोत्र	घनस्रय	41 (2.4)	
२ भूपालस्तोत्र	भूवान	33	<i>1</i> −€
३, सिद्धि प्रियस्तोत्र	देवनिद	77	€-63
४ सामविक पाठ	×	33	१३-३२
५ भक्तिगठ (सिद्ध भक्ति श्रादि)	×	17	₹₹~७०
६ स्वयमून्तोत्र	समन्त भद्राच	1)	65-50
७ वलेतान की जयमाला	×	35	32-22
< तत्त्वार्यमूत्र	उमास्त्रा मि	rt .	56-90
६ श्रावकप्रतिक्रमग्	×	11	₹0=-₹₹
१० गुर्वावति	×	19	\$ 28-55
११ कल्याणमन्दिरम्तोत्र	कुमुदचन्द्राचार्य	99	3 = 1 - 7 = 9
१२ एकीभावस्तोत्र	वादिराज	11	\$ \$ \$- ! \$\$

सवत् १६== वर्षे ज्येष्ठ बृदी द्वितीया रवौदिने ब्राचोह थी वनौषेन्द्रये श्रीचन्द्रप्रभवैत्यालये श्रीमूलसधे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे कुदकुदावार्यात्वये कट्टारक बीविद्यानित्व पट्टो य० शीमिहिसूपण्पट्टो ४० श्रीलक्ष्मीचन्द्रपट्टो म० श्रीमभपचान्द्रो भ० श्रीमभपचान्द्रो श्रह्म भ० श्रीमभपचान्द्रो श्रह्म श्री मभयसागर सहायेनेद क्रियाकलापपुम्तक लिखित श्रीमद्धनौषेन्द्रगच्छ हुंब्दजालीय लघुशाखाया समुत्पन्नस्य परिख्र-रिवरासस्य भार्या वार्ड कीकी तथो सभवा सुता मताइनाम्नै प्रदत्त पठनार्थं व ।

४४०७ गुटका स० २७। पत्र स० १५७। शा० ६×५ इख्र । ले० काल स० १८८७ । पूर्ण । दश-

विशेष-- प॰ तेजपाल ने प्रतिलिपि की थी।

, x14]			[गुरुष-संगर
३ जैयम गाउँ	×	र्मसङ्ख	*~
y सम्मलनी	×	r	1 /-5
 ठील चौबीबी नाम 	×	fg-c)	19-11
ং বর্তপদত	×	र्नस्टूत	11-11
 ग्रेरक्नामस्योग 	×		ty-tx
पञ्चमेरपूर्वा	যু খংকল	ीं(गरे	₹ 2 -₹
॥ च्छाद्विरस्या	×	र्वश्यव	98-88
१ कोक्सकारसङ्ख्या	×	77	71-7 0
११ वस्त्रज्ञसम्बन	×		₹#-4€
१२ रक्तरवेकीयुना	×	,,	₹8-1
१६, शक्तकपूरा	×	हिन्दी	11-11
१४ जिल्लाहरूमान	याचावर	बस्य	\$1-15
१६ वसम्परस्तीय	বাল্যু বাৰাৰ্য	नरष्ट्व	79-X (
१६, बस्मीस्टीच	क्टामर्देश		27-22
१७. मधानवीस्तोन	×	,,	1 12
: न्यामधीरहण् नाम	×		41-01
१८ वलार्वद्वत्र	वनस्वादि	*	24-44
२ बामेद विकर निर्माण गान	×	ि ग्गी	er-t!
११ भारतम्बनस्योग	×	र्गसङ्ख्य	49-53
१२, छलावेषुत्र (१-३ शब्दान)	उनाम्बद्धीय		t ss
१६ वक्तमरस्तीयवागः	हैमराग	हिल्दी	2 29
र्४ क्ष्माएभनियस्टीच वामा	वनारतीयात		t mettt
रू. दिवांबुकान्यसम	व्यवसीयत		{ 12-53
२६ स्वरीकाविकार	×	79	tt u- tt
१७ वर्तसरारिकड	×	*	259-095
१ व. सामा विक ्याठ नेपु	×	79	१२४ १६

```
गुटका-समह ]
  २६ श्रावक की करणी
                                                                                             ४६७
                                           हर्पकीति
                                                                   हिन्दी
  ३० क्षेत्रपालपूजा
                                                                                       १२६-२=
                                             X
  ३१ चितामगीपार्श्वनायपूजा स्तोत्र
                                                                     11
                                                                                       825-32
                                             X
  ३२ कलिकुण्डपार्श्वनाय पूजा
                                                                    सस्कृत
                                                                                       १३२~३६
                                             X
  ३३ पद्मावतीपूजा
                                                                   हिन्दी
                                                                                      १३६-३६
                                            X
  ३४ सिद्धप्रियस्तोत्र
                                                                  संस्कृत
                                                                                      880-55
                                          देवनन्दि
 ३५ ज्योतिष चर्चा,
                                                                    "
                                                                                      १४३-४६
                                            X
            ४४०८. सुदका स० २८ । पत्र स० २० । झा० ८३४७ डखा । पूर्ण । दका-सामान्य ।
                                                                                     १४७-१५७
            विशेष-प्रातिष्ठा सम्बन्धी पाठो का सम्रह है।
           ४४०६ गुटका स० २६। पत्र स० २१। म्रा० ६३ X४ इखा ले० काल म० १८४६ मगसिर मुदी
 १० । पूर्ण । दशा-सामान्य ।
           विशेष--सामान्य शुद्ध । इसमे सस्कृत ना सामायिक पाठ है ।
           ४४१० गुटका स० ३०। पत्र स० ८। मा० ७×४ इख। पूर्ण।
           विशेष—इसमे भक्तामर स्तोत्र है।
           ४४११ गुटका स० ३१। पत्र स० १३। मा० ६२×४३ इन। मापा-हिन्दी, सस्कृत।
           विशेष-इसमे नित्य नियम् पूजा है।
           ४४१२ गुटका स० ३२। पत्र स० १०२। मा० ६३×१ इख्र । मापा-हिन्दो । ले० काल स० १८६६
फाग्रुता बुदी ३ । पूर्ण एव शुद्ध । दशा-सामान्य ।
          विशेष—इसमें प० जयचन्दजी कृत सामायिक पाठ (भाषा) है। तनसुख मोनी ने अलवर में साह
दुलीचन्द की कचहरी में प्रतिलिपि की थो। मन्तिम तीन पश्रो मे लघु सामायिक पाठ भी है।
          ४४१३ गुटका स० ३३। पत्र स० २४०। मा० ५×६६ इख । विषय-भजन सग्रह । ले० काल ×।
पूर्ण । दशा-सामान्य ।
          विशेष-जैन किवर्यों के भजनों का संग्रह है।
          ४४१४ गुटका सं ३४। पत्र स० ४१। बा० ६ई×४ इख । भाषा-संस्कृत । ले० काल स० १६००
पूर्ण । सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।
```

in]			[गु रक्र- संमर
 अध्यक्ष पाठ 	×	र्गस् ष्ट त	4-1
४ नामानगी	×	,	4-11
 तीन चौनीती नामः 	×	fipd	11-11
६ वर्तनपाठ	×	र्गसङ्ख	tt-tr
 ग्रीरवनामस्तीक 	×		tw-tx
पञ्चयेक्यूबा	पू वताल	मृत्या	₹ ₹ −₹
१ चन्नाधिकातुमाः	×	संस्कृष	₹ ₹-₹%
१ वीक्यकारस्युवा	×	=	२ऱ~२ ७
११ वर्षनकसूत्रुवा	×		9888
१२. पक्सरनेष्ठीपुका	×	,,	₹€-1
१६ सम्बद्धप्रदुवा	×	िल्य	4(-11
१४ विनवस्थान	माकाभर	वरस्य	14-44
१४ वट्यमसरोत	বালবু বাধার্য	चन्हरव	A0-\$1
१६ कामीस्योग	वस्त्रज्ञे न	**	१२ ११
१७. पद्मार्थस्योष	×		24-4
१ पयलकीसङ्कलाव	×		44-01
१८, वललंचुर	रमास्थानि		46-44
९ अमेर क्रिक्ट निर्मेक गान्य	×	हिली	40-L1
२१ ऋषिमञ्ज्ञकारोत्र	×	र्वसङ्ख	६१-६४
१२. क्लापेंपूच (१~१ वेम्बाम)	उना र वामि	19	1-33
१६ मतागरस्योधमाना	द्वेभश्य	हिन्दी	75-4 9
२४ कल्काएकविदस्योज काला	वनारबीयान	*	\$ m-218
रा. निर्मेक्षकावमास	भगवतीयात		\$ \$ 3- 5 \$
tt. erdetfeut	×	**	294-88
रक वार्तकपरिवद्	×		179-172
रेन, सामानिकपाठ स <u>म</u> ु	×	77	642 46

४४०८ गुटका स० २८। पत्र स० २०। मा० ५३×७ इख । पूर्ण । दशा-सामान्य)

×

78-589

880-880

"

विशेष-प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठों का सग्रह है।

३५ ज्योतिष चर्चा,

४४०६ गुटका स० २६। पत्रं स० २१। मा० ६३ ४४ इख्र । ले० वाल २०१८४६ मगसिर मुदी

विशेष--सामान्य गुद्ध । इसमे सस्कृत ना सामायिक पाठ है।

४४१० गुटका स० ३०। पत्र स० ८। मा० ७×४ इश्र। पूर्ण।

विशेष-इसमें भक्तामर स्तीत्र है।

४४११ गुटका स० ३१। पत्र स० १३। मा० ६३×४३ इच। मापा-हिन्दी, संस्कृत ।

विशेष-इसमे नित्य नियम पूजा है।

४४१२ गुटका स० ३२। पत्र स० १०२। घा० ६५×५ इख्र । भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १८६६ काग्रुण बुदी ३। पूर्ण एव शुद्ध । दक्षा-सामान्य ।

विशेष—इसमे प॰ जयचन्दजी कृत सामायिक पाठ (भाषा) है। तनसुख सोनी ने धलवर में साह दुलीचन्द की कवहरी में प्रतिलिधि की थो। भन्तिम तीन पत्रों में लघु सामायिक पाठ भी है।

४४१३ गुटका स० ३३ । पत्र स० २४० । आ० ४×६६ इख । विषय-भजन सग्रह । ले० काल ×। पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशोप--जैन कवियों के मजनो का सग्रह है।

४४१४ गुटका स० ३४। पत्र स० ४१। मा० ६ई X१ इख । भाषा-संस्कृत । ले० काल स० १६०६ पूर्ण । सामाय शुद्ध । दशा-सामान्य ।

, , kts]			ि गुरक्र-वर्ष
१ स्थोनियसार	हुरायम	िल्स	F-\$
			(७१२ कॉलेक हुएँ १ ।
conference airms			
वाधित्रत्र देखाः—	त्तरस अथत तुर समुर गर, प	रक्षत नलपति पाय ।	
	सो गलनि पुषि बोबिये ज		
	धर पत्ती परनन पत्त ह	_	
	बसा कान जिल परन को सु		น
	हरि राजा राषा हरि, धुवन प्		
	बनत शारवी में नयीं दूजी है		
	बीबरित घोडी नत्त पर, एकहि		
	मनो लख वन शोक क्षति वर्ध	त्रनी नाव धीर ।।	
	गाउँ विधि वयं विकासी वर	ल राविका स्थान ।	
	नमस्वाद नर बोर्टि कै जाय	र विरसस्य ।।	
	साहितहापुर सहरने नामक	धमाराष ।	
	द्वपायन विदेशन में दा नु	त किरवादाय सदस	
	सनुबातर को उन्च वह तुनी	वंशिवन वांव ।	
	साके सर्वे स्लोक ने बोहा स	रे बरास ११४८।	
	भी क्षत्र में तुनो असे मुबर	य निवारि (
	द्यारा बहुविधि हैंग सी, बहुते	-	
	मनगुनताद्यं वै वस्य ग्रीर व		
	वर्शनक मुद्दी दसमी दुद, रम्पी	=	
	बब उन्ने तब बी नार यह निर		
	नाम भाषी का सम्य की तालें	-	
	म्पेरित बार चु बन्द भी उन		
	ताची नद नाना नन पुरी दु	-	

मन्तिम---

भध वरम फल लिखते-

सवत् महै होन करि, जनम वर (प) ली मित । रहै मेप सो गत वरप, भावरदा में वित्त ॥६०॥ भये वरप गत ग्रम्ह, ग्रर, लिख घर वाहू ईस । प्रयम येक मन्दर है, ईह वहीं इनतीस । १६१॥ श्ररतीस पहली घूरवा, श्रक को दिन अपने मन जानि । टूजे घर फल तीसरो, चीये म मिलर ज ठान ॥६२॥ भये वरप गत ग्रक की, गुन घरवावी चित्त। गुर्णाकार वे श्रक में, माग सात हरि मित ।।६३।। नाग हरै तै सात कौ, लब्ध भक सो जानि। जो मिनै य पल मैं बहुरि, फल तै घटी वसानि ॥६४॥ घटिका मै तै दिवस मै, मिलि जै है जो ग्रक । तामे भाग जुसस को, हरिये मित न संगाहरा। भाग रहै जो भेप सो, बचै ग्रक पहिचानि । तिन में फल घटीका दसा, जन्म मिलावो म्रानि ॥१६॥ जन्मकाल के धत रिव, जितने वीते जानि । उतनै वातै मस रिव, वरस लिख्यौ पहचानि ॥६७॥ षरस लम्यौ जा मत मैं, सोइ देत चित धारि। वादिन इतनी घढी जु, पल बीते लगुन वीचारि ॥६८॥ लगन लिखे तै गारह जो, जा घर वैठो जाह। ता घर के फल सुफल को, दोजे मित बनाइ ॥६६॥ इति श्री किरपाराम कृत ज्योतिपसार सपूर्णम्

१ पाशाक्वली

२ ग्रममृहर्त्त

 \times

हिन्दी

×

98−3€

"

₹**€-**४१

पुनीशा

प्रश्नास्त होत्यास्त वेशायवं त्याचा ६२/१६ दशाधायाः ×। विवस-ध्यद्। ते वस सः १०व६ मानमा पुरो ३ । पूर्व (^{प्}षुष्ठः) यसा∹सायल्य ।

निवेच-जवपुर वे प्रतिशिष की गर्रे थी ।

१ वैविनायबी के यश कर	×	हिन्दी पद्य	t t
२ निर्वास कला	वयनतीयान	र गाम	taxt x a
। वर्णन पाठ	×	सरेष्ट्रण	
४ पार्श्वनाय पूकाः	×	िन्दा	t-t
४., दर्श म शाठ	×	•	ţŧ

६ राष्ट्रपत्नीयी नामक्य विनोदीनाथ 14-1 अप्रदेश ग्रहकास देश वर्ष हे १ शामा । IDK९ इका माना-हिन्दी : नियम-वेयह ! नै

काल १४८२ सम्बद्धान । पूर्णालक्ष्मा । यथा≔वारा ।					
सि वेदपुर का बीर्स है । जि	पि निष्टत एवं विस्कृत धर्	9 (1			
a share records all true	J	Bud water and select 1 24			

24-1 २ व्यक्तिवर्धी के सन्द ×

में कामा १७ २ मध्ये वृदी ६ शल गीना (एक्ट) 20-11 ×

11-17 ४ ब्रह्मार परिव × 11-YR बोडम्बर रामा शो तथा ×

११६ रथ । गीराविक बना के बालार ^{वर ।} ६ वस्तवसासामानि first. к

नं १७०२ महामूची हर ह

\$ 28 AB BB 188 च चानर नीत ×

-×

22-24

a का नील गया × 4 Tr 11-1 ×

गुटका-संप्रह]			६०१
११ वारहखडी	×	हिन्दी	६०-६२
१२ विरहमञ्जरी	×	31	६२ −६⊏
१३ हरि बोला चित्रावली	×	,, पद्य स ० २६	६ ८७०
१४ जगन्नाय नारायण स्तवन	×	73	80-08
१५ रामस्तोत्र कवच	×	संस्कृत	७५–७७
१६ हरिरस	×	हिन्दी	७५-५५

विशेष---गुटका साजहानावाद जयसिंहपुरा में लिखा गया था। लेखक रामजी मीगाा था।

४४१७ गुटका स० ३७। पत्र स० २४०। घा० ७३×४३ इख।

१ नमस्कार मत्र सटीक	×	हिन्दी	ą
२ मानवावनी	मानकवि	33 Y	३ पद्य हैं ४-२ ६
३, चौवोस तीर्थद्धर स्तुति	×	35	३२
४ भ्रायुर्वेद के नुसखे	×	55	₹X
५ स्तुति	कनककोति	99	30
		लिपि स० १७६६ ज्ये	गुदी २ रविवार
६ नन्दीश्वरद्वीप पूजा	×	सस्कृत	४१
नुशला सौगाएगी ने स	• १ ७७० मे सा० फतेह	ान्द गोदीका के भो ल्ये से लिह	ति ।
७ तत्त्वार्यसूत्र	उमा म्बामि	संस्कृत ६ ।	प्रच्याय तक ६१
< नेमोश्वररास	ब्रह्मरायमञ्ज	हिन्दी र०	म० १६१४ १७२
६ जोगीरासो	जिनदास	" लिपि स	०१७१० १७६
१० पद	×	"	33
११ भादित्यवार कथा	भाऊ कवि	72	२०४
१२ दानशीलतपभावना	×	23	२०४-२३६
१३ चतुर्विशति छप्पम	ग्रुग्।कीति	39 र० स० १	१७७७ ग्रसाह वदी १४

मादि भत जिन देव, मेव मुर नर तुक करता। जय जय ज्ञान पवित्र, नामु लेतिह भ्रथ हरता ॥

व्यादि भाग-

[गुरुष-संगर बरपूर्वि तनइ प्रवाद श्वान सम्बोधित पुरद। कारर साथी दाइ वैभि दुख शांतिह करह ।। हुद निरम्भ प्रजाय कर, जिन चडवीतो यन बदड ! इनरीति इस चक्ररहः सुन बताई व वैता तरज ॥१॥ नामिराय पुराचन्य नेत्र शक्तेकि जानत । कीर वर्ष कर प्रश्न वृत्य बाल्य कु बखान ।। हेंग नर्ग की दानु, यानु तस्य दुवीराती । दूरक करती एहं जन्म समोच्या करती ।। यरबद्धि राषु नु सीर्थ कर धस्टाराव सीबार तथा। कुनरीयि इन कमस्य, मुत्रवित लोक वन्यकु स्था ॥१॥ धन्दिय माग---भीमूनतंत्र विच्यातयम् तरत्तिव क्यान्यः। तिहि वहि जिन प्राचीम ऐह सिका मन बार्टर ।: पराय श्रद प्रसाद, उत्तन बुलचन्द्र त्रञ्जाती । स्टीर्रबारे परिवाहे, राजु विजीपरि धानी ।। स्तरप्रसद्ध स्टोत्तरा, वृष्टि श्रवाह चढवर्ति करना । दुमरीकि इस उक्कर, सु ब्यम श्रेष विषयर बरना ।। इति भी क्तुनिवद्यशिक्षर क्लीय धन्तुर्छ । **134**6 रक्का ई १०११ ₹¥ ६६ सीक्षरान Ω, dt ४४१८ गुरुका स रे--नवर्तका--२९१। -सा १ Xwi बका-बीर्ज I

मिल्बो

दस्य

करीय २ रोगी नो विनित्ता ना विस्तृत वर्कीय है।

कई रोको हर एक दुस्का है।

पितेत—१४ प्रत तक सापुर्वेद के सब्से तुत्त है है।

×

ж

१ प्रधानती नहा

र, माधीपशिका

३ शील सुदर्शन रासी

×.

X

हिन्दी

30-83

¥ पृष्ठ सख्या ५२ तक निम्न भवतारो के सस्मान्य रगीन चित्र हैं जा प्रदर्शनों के योग्य हैं।

(१) रामावतार (२) कृष्णावतार (३) परशुरामावतार (४) मच्छावतार (५) कच्छावतार (५) कच्छावतार (५) कच्छावतार (६) व्युद्धावतार (१०) हयग्रीवावतार तथा (११) पार्श्यवाय चैत्याच्य (पार्श्वनाथ की सूर्ति सहित)

७ पृष्ठ ६८ पर मने हुए व्यक्ति के वापिस आने का पत्र है।

5	भक्तामरन्तिय	मानतु ग	संस्कृत	50
3	वैद्यमनोत्सव (भाषा)	नयन सुख	हिन्दी	۵۲- <i>۲</i> ۶
१०	राम विनाद (प्रायुर्वेद)	×	77	५ २-१८
11	सामुद्रिक शास्य (भाषा)	×	39	711-33

लिपी कर्ता-मुखराम बाह्यए। पचीली

				2 2
१	२ शोघवाभ	काशीनाथ	सस्कृत	
8	२३ पूजासग्रह	×	1)	₹€४
1	😮 योगीरासी	जिनदास	हिन्दी	? <i>E</i> 9
;	१५ तत्वार्धसूत्र 🥠	उमा स्वामि	संस्कृत	२०७
l	१६ कल्याएामदिर (भापा)	बनारसोदास	हिन्दी	
	१७ रविवारयत कथा	×	-	२१०
	१ - वतों का व्योरा		77	१२४
	• १ वसा स्व ज्यादा	×	77	71

यन्त म ६४ योगिनी भादि के यत्र हैं।

४४१६ गुटका स० ३८--पत्र त० ६४। मा० ६×६ इख्र । पूर्ण । दसा-सामान्य । विरोप--सामान्य पाठा का सग्रह है।

Zeon]			िगुटका समझ
	¥०—पण चै १ ग ा	या ॥%६ इस	। थाया—विस्थिति वे १८८
पूर्व । सामान्य पुर	L		
निरोत-पुत्रक्यों का वं	ंब्र् क्टनाप्रकृत से दर	इ स्वर्थ एवं कृष्ये का	दं का वस्तिक दिवा हुवा है है
रथरर गुल्हा स	४१—गर सम्मा— २५४	0 WIO	इक्षः नेकन कल-वित् रेगण्य
नव् दुरी ७। पूर्ल ।	रका उत्तम ।		
१ समस्रारणाटक	वनारखीयास	हिन्छै रच	ैरदश्यानो कुरश्र-पर
२. नारिक्त्यमाना	शब्द वर्ता	हिल्ही सं	ल्ह्य बल्ह्य नुवासिक ३२ १११
व नक्रधोत्तरी	ब्रम् बलबानर		
६, देवासमस्तीत	भाषार्थं समन्त्रका	नस्कृत	निधि श्रीमात् १. ९१
क्ष्माचमतीयास्ये वे व	ग्रौनी चना के पळनार्व ह	म ौदी पांच मे बरित	निर्देशी । 185 - १११वे ११६४
४ सन्दर्शिकक्तोत्र	×	. 6	विषं १ ६६ ११४-११६
 परमार्जकरवीन 	×	वसद्व	***-***
📞 वासान्तियक	থানিবদ্ধি	**	११ ₩-११¤
 पैक्तिमस्स 	×		{{ £
 पीत्रीक्टीर्वक्टप्रतिक 	×		7-335
		रिकार सं	(६७ वेतम तुर्थ र
६. देख् भारतमा	नगरधीताव	हिन्दी	7 3
१ वर्षनपाठ	×	र्रास्कृत	१२६
११ गंधनंत्रम	क्लचंद	मि न्दो	??—??
१२ कान्यस्तानिद वावा	बचारसीयास		₹ ₹ -₹
१६ विवासक्। स्त्वीम भागा	शयसमीत	n	\$F\$\$
			रणनाथना दे देवे है
१४ मछामरस्टीम भागा	हे नसम	श ुल् याः	29 953
१६. वक्षवाधि पक्षवित्रमे जानग	। भूमध्यान	*	(12-11

गुटका-समह]			
_			्र ६०४
१६. निर्वाण काण्ड भाषा	मगवती दास	59	१३-३७
१७ श्रीपाल स्तुति	×	" हिन्दी	
रैन. तत्त्वार्यसूत्र	उमास्वामी	संस्कृत	१ ३७—३=
१६ सामायिक वडा	×		ያ <u>\$</u> ≃− ጾ ጀ
२०. लघु सामायिक	×	4 22	१४४–५२
२१. एकीभावस्तोत्र भाषा	जगजीवन	"	8×2-×3
२२. वाईस परिपह	भूषरदास्	हिन्दी	१५३-५४
२३. जिनदर्शन		71	१५४-५७
२४ सवोधपचासिका))	73	१४७ ४=
२५. वीसतीर्यंकर की जकटी	धानतराय	1)	१५६ -६०
२६ नेमिनाय मगल		77	१६० – ६१
- 13	नाल	हिन्दी	१६१ १६७
२७ दान बावनी		र० स० १	७४४ सावरा सु॰ ६
२८ चेतनकर्म चरित्र	धानतराय	71	१ ६७-७ १
क्षांत्रण सार्थ	भैय्या भगवतीदास	33	•
२६ जिनसहस्रनाम			१७१-१=३ १ १७३६ जेठ वदी ७
२० मक्तामरस्तोत्र	माद्याधर	सस्कृत	
३१ मन्यासमन्दरस्तोत्र	मानतु ग		१= <i>६</i> —६६
३२ विपानहारस्तोत्र	गु मुस्चन्द	" स स् त	? =8-87
रैरे सिद्धिपस्तोत्र	धनशुय		89-53
रे४ एकीमायस्तोत्र	देवनन्दि	"	\$68-64
३४ न्नावनीबीसी	वादिराज	53	१६६-६=
वै६. देवहूजा	मूपाल निव	n	१६५-२००
३० विरहमान पूजा	×	ŋ	२००-२०२
देव सिद्धान पूजा	×	"	२०२-२०४
···• } 7	×	27	२०४-२०६
		1)	२०६-२०७

(Tere)			[गुरका-सम्ब
११, बोलह्यारलपुत्रा	×	*	₹ ₩-₹+4
४ वत्त्रकस्यूजा	×	**	₹ -₹ €
¥१ रातमसूत्रा	×	,,	4 6-62
४२ कविकुत्यसपू ताः	×	19	66A-65K
४६ विदासीस पार्शनाचपुत्रा	×		794-75
s' चरित्र ाक्स्तो श	×	,,	975
€%, पार्स्समामधूना	×		सूर्व २१६-२४
४६ - वीबीस डीवेंब्रुट स्टबन	देशवन्ति		17 -18
Ye नवप्रहर्वाध्य पार्श्वनत्य स्तवन	×	39	२१७-४
४व क्षेत्रकुक्यसस्यगानस्योग	×	**	\$40-AS
		सेवन काव १०६	शासनुद्धी ६
४१ परश्लामस्तोष	×		424-24
१ वर्षीयनवङ्कताम	ж	**	546-44
		सेचन कास हमा	र्शवास पुग्ने र
११ त्रकिमुकायनिस्तोय	×		444-K!
१२ विनेत्रस्थोत्र	×		454-2A
१३ वहत्तरसमा दुस्य	×	हिन्दी वस	éze
६४ जीवर क्या स्त्री	×	*	
४४९ शुटकास ४०। पण	र्व १२६।मा ५ ००४	इचा । पूर्वा	
विश्वेष इसमै पूजरवास ी का पर	र्गो धरायम है।		
१४९६ गुरुका स ४ ६ —वर	संद∃।मा ६३×।	.३ ४ ८ । थाना–संसाय	के समारक्ष
नार्विक बुक्रम १३ । दुर्श एवं बुक्रा ।			
विसेष—व वेरवाताल्य वे साह व	ी बयक्य के पड़मार्ड क्टु	गरक भी केनचन्त्र ने ≭वि	भिक्ति की भी। अर्थि
बंतरत टीका सहित है। बानानिक बाद बा वे क	गर्च आह्⊈।		
४४९४ गुरुका सं ४४। पर स	र ४३ । मा १ xx	. इ.अ.१. मारा ∺हिन् गी ≀ इ	च्छे। यहा चीर्च ¹
विदेव—वर्णार्थी का बंधह है।			

X

मेरुचन्द्र

गीतमस्वामी

म्राशाधर

×

X

X

X

×

वादीचाद्र

विद्यामूपरा

X

४४२६ गुटका स० ४६—पत्र स० ४६। भा० ७३ X४३ इख। भाषा-हिन्दी। पूर्ण एव

भ० महीचन्द्र

विशेष —वसतराज कृत शकुन जास्त्र है।

भट्टारक महीचन्द्र

27-32

37-38

११-४१

84-40

20-67

44-08

93-80

199-03

१२२-२५

१२६-२७

88-388

? ? ? - ? ?

१३४

१२८

79

"

77

77

"

22

17

"

हिन्दी

99

संस्कृत

हिन्दी

11

संस्कृत

७ दशलक्षरापूजा

६ पचमेरुपूजा

रै॰ मनन्तचतुर्दशीपू ।।

११ ऋषिमहलपूजा

१२ जिनसहस्रनाम

१३ महाभिषेक पाठ

१४ रत्नत्रयपूजाविधान

१५ ज्येष्ठजिनवरपूजा

१७ गगाधरवलयमत्र

१८ मादित्यवारकथा

२० लघु सामायिक

२१ पद्मवतीछद

१६ गीत

পযুৱ।

१६ क्षेत्रपाल की आरती

प नन्दीश्वरपूजा

) € + =]		[गुरका-स्पर
	टकार्स ४०। पर्व १४ । मा	XX इक्क पूर्ण । स्था—गाराण्य ।	,
र पूर्व के बत नाय	×	ৰম্বত	ŧ
१ वन्दी मोद्य स्टी च	×	*	1.1
৯ বিবাহিচ্চিবি	×		7-1
४ वार्कचेदपुरास्	×	**	¥ tt
६. कलीवङ्ग्लान	×	*	\$ \$\$
६ तृतिहरूका	×	#	\$ \$ 8-5X
 वैशीनुक 	×		834-EE
द. र्नन-संहिता	×	नरङ्गत	164-551
१ ज्वाचानातिमी स्टॉर	π ×	74	98 - 98
१ इस्मीये बनाव	×		२३६-७३
११ मारामस् काम एवं	ngs ×	m	401-0C
१२, चामुच्योपनिषद्	×	10	२७१-५४१
११ गीठ पूचा	×	**	\$ 6-00
१४ मोलिनी नवम	×		84m-88
१६, यानंस्वहुधै स्तोप	मंकरावार्थ	•	\$66-60
४४२८ गुट	कामब्धयः । यत्र वं—-२२२ । बा—	–६।DC३।। इत्र पूर्ण (क्या-बास	<u>ج</u> ا
१ विशःसानग	र्वं धानात्वर	र्वल्ह्य	\$~£25
१, प्रमस्य	वहां वानीवर	p	\$ \$ \$ - A.g.
4)6	० वन शास्त्रसम्मागन प्रथमितः।		
	गिर्म सम्मरिके विश्वमांशास् वनसू का		
	क्या प्रकृष वस्तेर्थ क्यारित तो ह्योत्तर्थ		
	वक्कारिकी वक्की वक्कार-जनाविती		
	त्विताराचिता पापि गरंशा क्षामाचेकरी		
•	क्षितो शेवनारीच वंशाशर्लनवारकम्	I	

वय-महीत-वज्यास्वर्गरयाश्वयात्राच्यः ।। ३ ।।

मुलसचे वजात्कारगरो सारस्वते सति । गच्छे विश्वपदष्ठाने वर्षे वृदारकादिति ॥ ४ ॥ नदिसधोश्रवत्तर नदितामरनायक । कृ दक् दार्यसज्ञोऽसौ वृतरत्नाकरो महान् ॥ ५ ॥ त्तत्पद्रक्रमतो जात सर्वसिद्धान्तपारग हमीर-भूगसेव्योग धर्मचद्री यतीश्वर ॥६॥ तत्पद्वे विश्वतत्वज्ञी नानाग्र यविशारद रत्नत्रयकृताभ्यासो रत्नकीतिरभूनमुनि ॥ ७॥ शकस्यामिसभामध्ये प्राप्तमानशतोत्सव प्रमानदो जगद धौ परवादिभयकर ।। म ।। कवित्वे वापि वक्तृत्वे मेघावी शान्तमुद्रक । पयनदी जिलाक्षीभूतत्वट्टे यतिनायक ॥ ६॥ तन्छिप्योजनि मन्यौषपुजिताह्निविश्दधी श्रुतचद्री महासाधु साधुलोककृतार्थक ॥ १०। प्रामारिएक प्रमागोऽभूदरगमाध्यात्मविश्वधी । लक्षणे लक्षणार्थको भूपालव दसेवित ॥ ११ ॥ महंत्प्रग्रीततत्वार्थजाद पति निशापति हतपनेपुरम्तारिजिनचडी विचक्षरा जम्बूद्रुमाक्ति जम्बूद्वीपे द्वीपप्रधानको । तत्रास्ति भारत क्षेत्र सर्वभोगफलप्रद ॥ १३॥ मध्यदेशो भवत्तत्र सर्वदेशोत्तमोत्तम धनघान्यसमाकीर्राग्रामैदेविष्टितिसमै ॥ १४॥ नानावृक्षकुलैर्माति सर्वसत्वसुखकर मनोगतमहाभोग दाता दातृसमन्त्रित ॥१५॥ तोडास्योमूत्महादुर्गो दुर्गमुख्य श्रिमापर । तच्छाखानगर गोपि विश्वभूतिविधाययत् ॥ १६॥

स्वरूपानीयवंपने वारिक्रशहिनिर्मान्त । भी **गत्रवहरूला मान्द्रम्याचारवृ**ष्टिली 11 gw 21 पर्दत्वेत्वालये देने अवदालंदकारपं- । विविध्ययस्थाते व्यक्तिस्थलपूर्वविदे ॥ १० ।। धत्रभावितरिस्त्य प्रवताकी नसपृष्टकः । राम्यापेशे विभाग्येव हैं अक्षारकर्मावयः ॥ १६ ल रिप्यान रामको जाह्ये कुटविश्वहरास्यः । नेकाबर्गविवाद्यो विकासम्बद्धियारकः ॥ २ ॥ योगोगर्वक्रापेको सम्मीतिक्षाकः। रामसिद्दो निकुर्वीनान् कृपयेन्द्रो सहामधी ।। २१ ।। बार्टीअज्ञिक्षका स्थापनित्राम् पाधवानावर ओही प्रविचनोक्खानकीर्रे ।।१२(१ भावकापारश्चिता वस्ताहाराविकापार्ट । धीकबुनिरक्तस्य भूजरिजियमधिकेः ॥ ५४॥ पुणस्त्रवीरकृत्वाचुम्बद्धाईल्पुनक्तियः । र परोज्यस्तान्याची विमार्गनविभोत्तवः ।।रुक्ताः चीवनायायतस्त्रको बुत्तासम्बदादियः ३ देखा बाबू वधावायै दानवसम्बद्धिसः ॥२१॥ वन्त्रः नक्षं बहुत्वाच्याः श्रीननीरवर्धनिखी । त्रियक्का विकास एकाको को यनका एउसी ११९६१ वनी जनेक बंगावी पूर्वी नालम्बन्धुरी। बरम्बाः व्यवस्थानी रामकानगुणानियः ।।१७०। िनम्बोरनमञ्चलपरिशो' वतवारिशो । बर्हतीर्ववहायानना पर्स्ट श्रीववासिमी ॥२ ॥ यमस्तिक्षमहायूपनयमञ्जूरशी पूजी । बबुत वर्णनवासारी वर्जानामुनहोसनी ॥२८ :

Zu.]

तथ्याटरोभवदीरो नायकै खचन्द्रमा । नोकप्रशस्यसंस्कीति धर्मसिही हि धर्मेभृत ॥ ३०॥ सत्कामिनी महछीलधारिगो शिवकारिगी। चन्द्रस्य वसती ज्योत्स्ना पापच्यान्तानहारिखी ॥३१॥ कुनद्वयविशुद्धासीत् सधमक्तिमुख्पणां। धर्मानन्दितचेतन्का धर्मश्रीर्मर्नुभाक्तिका ॥३२॥ प्त्रावाम्नान्तयो स्वीयरूपनिजितमन्मयी। लक्षणाक्षणसदगाठी योपि मानसवल्लभी ॥३३॥ मर्ह् वसुसिद्धान्तगुनमत्तिसमुचतौ । विद्वजनित्रयी सौम्यी मोल्हाद्वयपदार्थकौ ॥३४॥ सुधारिंडण्डीरसमानकोति कुदुम्बनिर्वाहकरो यशस्वी । प्रतापवान्धर्मधरो हि धीमान् खण्डेलवालान्वयकजमानु ॥३५॥ भूपेन्द्रकार्यार्थकरो दयाच्यो पूट्यो पूर्णेन्द्रसकासमुखीविष्ठ । श्रेष्ठी विवेकाहितमानसोऽसौ सुधीर्नन्दतुभूतलेऽस्मिन् ।।३६॥ हम्तद्वये यस्य जिनार्चन वैजैनावरावाग्मुखंपंकजे च । ह्यक्षर वार्हत्मक्षय वा करोतु राज्य, पुरुषोत्तमीय ॥३७॥ सत्प्रारावल्लमाजाता जैनव्रतविधाविनी। मती मतिक्षका श्रेप्ठी दानोत्कण्ठा यशस्विनी ।।३८।। चतुर्विधस्य सधस्य भवत्युत्नासि मनोरथा । नैनश्री सुघावात्कव्योकोशाभीजसन्मुखी ॥३६॥ हर्पमदे सहपत् द्वितीया तस्य वल्लमा। दानमानोन्सवानन्दर्वद्विताशेपचेतस ।१४०॥ श्रीरामसिहेन नृषेण मान्यश्रतुविषश्रीवरसघमक्तः। प्रद्योतिताशिषपुराएलोको नाथू विनेकी चिरमेवजीयात् ॥४१॥ माहारशास्त्रीपघर्जावरक्षा दानेषु सर्वार्थकरेषु साधु । कल्पद्रुमोयाचककामघेनुर्नाशुसुसायुर्जयतात्वरिच्या ।।४२ः।

** [12] गुरुष-सम सर्वेश बारनेद पर्दप्रशस्यं धीसारत्रशानास्त्रसान्यज्ञातः । स्वयाप्त्रविकृतिकृतिवार्तं समस्त्रकृतार्वविवानवर्तं ।।४३।। वालेबु सार्र सुधिकानकार्त सका विज्ञोतका विश्वपूत्रकोऽव । क्रीपि क्रमा परममार्गं असीनिकेश्वानुसभा प्रतिश्री ।।४४० नेक्स्या जुनावानं प्रतिप्तत्वारतत्तर्यः : बहाबालीकरामापि बताबाल बालहेतके ११४३।। धण्याध्रवात्त्रसूपाके राज्येकीतेति सम्बरे । विक्रमानित्वस्थान जुनियानक्षिधेवरोः ॥४६॥ क्याने नामें विशे पने बोयबारे हि सीम्यकै। प्रतिक्राचार एकासी समाविष्यवयस्पर्ध ११४७।। सर्वेत्वमानीवनशस्त्रकांची तहतुपराक्षुस्त्रुटतर्पनारः। चयानती बालनवेनठा का बाबू तुवाबू विश्मेव वाताद ।।४०।। व्यूबोविकाः परं वेश जनासम्पूक्तानरी । धीकार्तविक्रवेद्योग्य नाम् साम् सनम्बद्धः १४४ । ।। इति प्रचलकान्य ।। 244 कर्मिकाकितीलव × र्लक्टल **৮ ব্যাংল্যাচিক্**বিদি 143 × **८. नववस्त्रा**क्ताप्रवाधि × the st ६, दुनामी दानहीं मी पूची × विल्यी لاؤسواع श्रमाविधारल × गंपकरा . --ক্ষরতি বি × 111 × ∥ वैसाइल SE SEA कराबरस्टोच मेंचवरित × 48 ११ धनोत्रारपंत्राविका पूजा × ४४२६ गुरुका सं ४६—पत्र वं−६ । या २८४४ दक्षा नेवण राल सं—१ १४ दुर्ग। दशा-सामान ।

गुटका-सम्रह]			[६१३
१ सयोगवत्तीसी	मानकवि	हिन्दी	7-77
२ फुटकर रचनाए	x ×	13	२६–५≒
४४३०	• गुटका स० ४०। पत्र स० ७४। घा० =×	(४ इध्र । ने० काल	१८६४ मगमर सुदी १४ । पूर्गा ।
विशेष	गगाराम वैद्य ने सिरोज मे ग्रह्मजी सतसागर	के पठनार्थ प्रतिनि	पि की थी।
१ राजुल पञ्चीसी	विनोदीलाल लालचद	हिन्दी	१~ ५
२ चेतनचरित्र	भैयाभगवतीदास	55	;
३ नेमीरवरराजुल	विवाद ग्रह्मज्ञानसागर	3 7	₹७-३१
नेमीश्वर राजुल को	मगहो लिख्यते ।		
श्रादि मागराजु	ुल उदाच—		
	भोग धनोपम छोडो करी तुम योग लियो सो व	हा मन ठाणो ।	
	सेज विचित्र तु लाई ग्रनोपम मुदर नारि व	ो सग न जानू॥	
	सूझ तनु सुख छोडि प्रतक्ष काहा दुख देख	त हो मनजातू।	
	राजुल पूछत नेमि कु बर कू योग विचार	राहा मन भानू ॥ ः	! !!
नेमीश्वर ख्याच			
	सुन रि मित मुठ न जान जानत हों भव भोग	तन जोर घटें हैं।	
	पाप बढे खटकर्म घके परमारय को सर		
	इदियको सुख किचित्काल ही माग्विर दुख	ही दुन रदे हैं।	
	नेमि कुवर कहे सुनि राजुल योग बिना नी	हं कर्म्म कटेहा।	₹ 11
मध्य भाग-राष्	दुलोवाच		
	करि निरधार तजि घरवार भये वतघार	ानोक गोसाई।	
	धूप मनूप घनाघन धार तुबाट सही 🖔		
	भूल पियास मनेक परिसह पावन हो कडू		
	राजुल मार कहे सुविचार ज नेमि क बार	सन गर रहे ।	

राजुल नार कहे सुविचार जु नेमि कुवार सुनुमन लाई |। (७ |। नेमीश्वरोधाच

काहे को बहूत करो तुम स्यापनप येक सुनो उपदेस हमारो । मोगिह मीग किये भव हवत काज न येक सरे जु तुम्हारी।।

£85]			[गुटका-सम
र मानव जग्म नश्री	थपगल के दाव निना न ृ	कृतमे वारी ।	
नैनी नहे तुत्र द	∪दुन तृक्द नोहत्तवि ने	काम सकारों ।) है B	
सम्बद्ध भागराषुकोत्राव			
भावक भागी विवा	। सुव केशम काय कि सबस	रेष गुनाद ।	
कोय तमि वन कु	व नरि जिन वैन तको जब ब	वत याह् ॥	
केर यनेक करी हा	बतादिन मस्य की सब का	व पुनारी !	
नोचवरी वन स	त्य वरी नधे राश्चन नार वर्षे ।	हर बाई छ स्ट्रेस	
मनश—			
ग्रावि रचन्द्रा	विकेक क्ष्मण पुल्दी सन	ऋमो ।	
नैमिनाच हड वि	तत्त न बद्ध रम्बर्थ कु समा	बामो ।!	
ঘৰদলি শ্ৰীৰ	ा के शुक्र मान शंक्य वं	म्पे ।	
बद्ध बलबलर न	है बार नैनि राकुल कीवी	U 48 II	
।। परि	त्रे नेनीस्वर धनुस्त विवास क ूर	र्जेच् ॥	
४ यहर्महरतात ग ^{न्} ।	विनक्सीर्वि	हिली	15-11
६ पार्श्वनात्वस्तोष	बग्न श्चरेन	श्रम्बर	11
🕻 द्यातिमात्रस्योज	बुगिष्टकमा		
 वर्षमानस्तोष 	×		44
चित्रज्ञतिसम्बंगलम्बोन	×		10
 निर्वालकाण्य जाराः 	वनपतीरत्व	स्चि	ţe
१ व्यवनारयोज	রাসবংল	39	11
११ प्रमीतनती	बूबरका त	×	¥
११ बलावेनी	वनारसीयाध	*	A1-A4
१३ प्रभानी सम्बन्धनसम्बन्ध	×		¥₹
र्थ को वर्धक दू छाहक खारोगी	कुलावशिक्षम -	**	701
१४ मन तेरी कुल वेलू	बीवर		**
१६ जारहरी नुबर देव	Account		**

गुटका-समह ी			[६१४
२० ऋषभजिनन्दजुहार नदारियाँ	भारुकोनि	हिन्दी	¥ሂ
१८, यकः प्रराधना तेरी	भवल	17	77
१६. भूल भ्रमान नेई भने	×	11	¥Ę
२० श्रीपात्रदर्गन	×	11	ሃ ሁ
२१ भत्तामर भाषा	×	373	¥=-X?
२२ सावरिया तेरे बार द्वार वारि जाऊं	जगतराम	77	ध्र
२३ तेर दरवार स्थामी इद्र दा लडे ह	×	17	५३
२४ जिनकी याकी मूरत मनटा मोह्यो	प्रहा बपूर	31	73
२५ पार्चनाय नीव	धानतराय	"	ንሂ
२६. त्रिभुवन गुर स्वामी	जिनदाम	97	र• स० १७५६, ४४
२७. महो जगापुर 🔭	भूषरदास	57	५६
२८ चितामिण स्थामी गापा माहव मरा	बना रसीदाम	77	४ <i>६</i> –४ <i>७</i>
२६. वच्यासमि दरस्तात्र	कुमुद	n	५७–६०
३० गनियुग मो विनती	ग्रह्मदेव	17	६१ –६३
३१ झीलग्रत र भेर	×	n	€3-€ €

४४४१. गुटका स्ट ४१। पत्र स्व १०६१ ग्रा० ८४६ इ.च । विषय-सग्रह । ते बात १७६६ पानमा मुद्दी ८ सन रतार । पूर्ण । द्या-सामाना ।

ミソーモニ

गगाराम वैद्य

विलेय-मगर्द जयपुर म लिवि की गई भी।

३४ पदमग्रह

7	भारताचारसदर	पामुस्टराव	सस्न	3-60
\$	नमामरम्शय रिगो टीका गरित	*	ग ग०१५०	709-13 0

४।३२ मुटरा स० ४१ र । पत्र गल १४२ । पा० द×६ द्वा । प० राज १७६३ माप मुद्दी २। पूर्व । रपा-नामा र ।

विन्त-वित्तनिह कृत जिदानीत भारत है।

४४३३ मुन्या सर ४२ । एष रत ११४६८+८६ । याः ८४७ ह्या ।

· m]			[गुरुष-संब
विचेद-बीन बगू स प्रश्नी	का विधान 🗓 ३			
्रिश विश्मलन् त	×	इस् च		
१. रक्कतास	×			
६ सम्देशसम्बद्धाः	×			
४ वं महरासर्वनस्तरक (बृह्य)	मुनियमपर्वेश	पुष्यो हिली		
४ सम ित्यां तिस्त्वत	×			
\$ m	×			
७, बन्द्रसरोप	×	**		
व, वर्वीद्विनगरकस्त्रीय	विनवतन्तृरि	89		
१. प्रकारतंत्र एवं सतामरण	39	*		
१ वकामशस्तीय	प्रत्यर्भशन्तु व	र्थस्त		
११ वस्थासमन्बरस्थात	2.3444			
१२. व्यक्तितवर्ग	देवकृरि	я		
१३, तत्रविधिकत्वकः	×	शस्त्र		
विदि वैतत् १७३ मास्रोज सुनी	। ४ को बीबाम हर्न	नै प्रतिक्षिपि की बी।		
१४ वीवनिवाद	नीवाधरेवपृदि	प्रवृक्ष		
१४, व्यवस्यविषार	×	*		
१६ समितवासितवन	मेवनम्द न	ुरागी वि श्वी		
१७, डीवंबरल्यलीततस्य	×			
१ बीएसवान्स्यनम	तमस्भूनर विश	यतस्यानी		
१६. चेक्स्एस्सर्वनानस्थानः नह	×			
a F	×	•		
२१ श्राविमानसम्बद	क् यक्टुम्ब र	15		
१२ अञ्चलकि विवस्तवन	चपशनार	ि्ली		
२३ चीजीत्तवित्र नात पिता नाजस्तवन			रचना र्ड	6244
र्४ भवरबी वर्णन्त्रवस्तवन	बमक्तृत्यस्मीह	रामस्थली		

गुटका-समह]

79 . W. W. W. 7		• •
२५ पार्श्वनायस्तवन	ममयसुन्दरग िष	राजस्थानी
२६	73	99
२७ गौडीपार्धनायस्तवन	11	"
7° "	जोघराज	"
२१ चितामणिपार्स्वनायस्तवन	सालचद	n
३०, तीर्पमालास्तवन	तेजराम	हिन्दी
₹१ 33	समयमुन्दर	n
३२ वीसविरह्मानजकडी	n	77
३३ नेमिराजमतीरास	रत्नपुक्ति	v
३४ गौतमस्यामीरास	×	53
३५ बुद्धिरास	शालिभद्र हारा सकलित	n
३६ शीलरास	विजयदेवसूरि	53
	जोधरा ज	ने खींबसी की भागी के पटनार्थ लिखा।
३७ साधुवदना	भ्रानद सूरि	ກ
रेम दानतपशीलसवाद	समयधुन्दर	राजस्यानी
१६. मापादमृतिचौढालिया	क्लक्सोम	हिन्दी
	र० काल १६३८।	लेपि काल म० १७५० कालिक बुदी ४।
४०. भादकुमार धमाल	n	27
	रचना सब	त् १६४४ । बमरसर में रचना हुई थी ।
४१. मेघकुमार चौदालिया	n	हिन्दी
४२ कमाछतीसी	समयमुन्दर	17)
	चि षि	सवत् १७१० कार्तिक सुदो १३। प्रवरगानाद ।
४३ कर्मवतीसी	राजस मुद	हिन्दी
४४ बारहभावना	जबसोमगरिए	99
४५. पद्मावतीरानीमाराधना	समयमुन्दर	'n
४६ शत्रुक्षयरास	ກ	n
		**

(/c]		[गुरबा-सम्ब
४७ नैमिजिनस्तमन	योगराज युनि	fjerli
४व मधीरामस्यासस्यक	**	
४६ प्रकारकाराकातुति	×	मारच
१ पंचनीस्तुर्वि	×	बस्य -
११ वंगीतकचारलंजिनस्तुति	×	िंग्यो
१२ जिनश्युति	×	⊯ विशिष रंधर
१ १ नवराजन िमास्त्रयः	जिन यहालन् दि	
१४ वरशासम्बद्धाः	रचराजवरित	
11 "	इस्त्र चसृ€ि	,
३६ वौतनस्वत्रमञ्जयः	वसम्पुषर	
16 H	×	
३ जिनवत्तपृतिनीतः	मुख्यपाछि	
३१ जिल्लुसलसूरिको∉ ै	वक्षावर उपावस्थ	pr .
		र संबद् १४म१
६ जिमकुगतसृहिस्तवन	×	
६१ नेपिरायुक्तमारहमाला	मा गापतू रि	_स रह १९६
६२ वेनिराद्वन मी व	कुरगमेति	
<i>G.</i>	निमहर्ष हुरि	
(γ _γ	×	
६१ जुलिनड गीव	×	
६६ वनिराजीं तन्त्राम	सरश्रमण्ड	*
40 SLATE	*	₩ terr
६० परक्षास्थरकार		
११. येण्युनारसम्बद्धाः	-	•
श्रमाचीडुर्तश्रमानः	*	<i>n</i>
७१ सीतामीरी शम्माम		

	7
www.rest. Tri tri III	- 1
गुटका-समह	- 1
3000	

Beat west 1		P3	
७२ चेलना री सज्भाय	×	हिन्दी	
७३ जीवकाया ,,	भुवनकोति	37	
υΥ " <u>π</u>	राजसमुद्र	"	
७५ मातमशिक्षा "	97	1)	
७६. ,, ,,	पद्मकुमार	77	
00 m	सालम	11	
65 13 33	प्रसम्बन्द	n	
७६ स्वार्थवीसी	मुनिश् <u>वी</u> सार	57	
८० शत्रु जयभास	राजसमुद्र	91	
५१ सोलह सितयों के नाम	99	37	
प्रवादित महामुनि संज्माय	समयसुन्दर	99	
५३ श्रेग्गिकराजासज्काय	77	हिन्दी	
५४ वाहुबलि 🥠	77	83	
५५ शालिसद्र महामु नि 🥠	×	n	
८६. वभ णवाही स्तवन	कमलकलश	77	
५७ श युद्धयस्तवन	राजसमुद	บ	
== राणपुर का स्तवन	समयसन्दर	f 1	
८६ गौतमपु च्छा	29	37	
ह० नेमिराजमित का चौमारिया	×	17	
६१ स्यूलिभद्र सन्माय	×	n	
६२ कर्मछत्तीसी ्र	समयसुन्दर	9)	
६३ पुण्यछतीसी	29	"	
६४ गौड़ीपार्श्वनाथस्तवन	37	n 60 40 6 200	
६५ पञ्चमतिस्तवन	समयमुन्दर	n	
६६ नन्दयेगामहामुनिसज्माय	×	"	
६७ शोलबत्तीसी	×	"	

(२०]		्र गुरक्य-धनर
१.व. नीक्एकार की स्तवन	वनशुक्तर	िर्म
		विकामित में एवी वहें। विधि वं १७६१।
४४३४ शुरुका सं० ३३।	पत्र सः १६६ ।	मा वर्×४१ रख । तैवनकात (४७६ । दुर्घ ।
दबा-दानम्ब ।		·
 रामाच्याहर हो चौत्तर्थं 	व्यक्ति	िली
२. तिर्वाकुकाम बाका 📑	पा चयवतीयम्	
		-
 बहुरी को तून तारक नाम चलको 	कृषेशन्त	
४ माल नामिके हार और	श्राधिकम्	
ಒ तुम वैवाने बाम थी ही बच्छ वरी	MITTHE	_
६ परम कम्ब विकेशस वैक में		
 बोही सन्त विरोमित निषवर पुत्र वाने 		
व मंत्रन कारती कीवी भीर		
 बारती कोर्न की वैनक्षरकी 	70	
् बंदी दिसम्बद कुछ चरल बन तरक	कूनररात	
वारम बान		Pr
् ११ - विदुष्त स्थानीयी नक्का निर्वि वातीयी	,	N
१२, बाना प्रतिया नहरा गर्हा जन्मा हो। सहस्य भूगार	•	29
१३ मेन पंतरती वे बारि कला	धारित	
(Y क्यूरक सहैप्यकीर्विमी की करती	महेन्द्रकरित	
१४., बही बक्द्रास बनग्दि गरनामंश विनाम	बूबरराज	39
१६, देश्या दुनिया के मीच में कीई		-
धान क्षणाया १७ दिनती-मंदीं भी भागूंपदेन बारव निमय बुनएस ब्रिएटे यह		•

गुटका-सप्रह]		~	ं[६२१
राजमती वीनवै-नेमजी मजी	विश्वमूपरा	हिन्दी	
तुम क्यो चढ़ा गिरनारि (विनती)	i	/	•
१६ नेमोक्वररास व	ह्य रायमझ	11	र० काल सं० १६१५ लिपिकार दयाराम सीनी
२० चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्नों का फल	×	77	ť
२१ निर्वाणकाण्ड	×	भा <u>क</u> त	
२२ चौवीस तीर्थस्त्रर परिचय	×	हिन्दी	
२३ पात्र परवीद्रत की कया	वेग्गोदास.	53	लेखन सक्त् १७७१
२४ पद	वनारसीदास	41	(
२५ मुनिष्वरों की जयमाल	×	" ท	•
२६ मारती	धानतराय	1 77	1
२७ नेमिश्वर का गीत	नेमिचन्द	81	•
२८ विनति-(चदहु श्री जिन्दाय मनवच काब करोजी)	कनककीति ,	η	,
२६ जिन भक्ति पद	हर्पकीति	11	
३० प्राखी रो गीत (प्राखीडा रेनू काई सोवै रैन सिंत)	×	137'	
३१ जकडी (रिपम जिनेश्वर बंदस्यी)	देवेन्द्रकीर्ति	77	
३२. जीव सबोधन गीत (होजीव	×	77	
नव मास रह्यो गर्म बासा)		17	
३३ चुहरि (नेमि नगीना नाम या परि वारी म्हारालाल)	×	39	
३४ मोरहो (म्हारो रै मन मोरहा वृतो चिंह गिरनारि जाइ रै)	×	7)	
३४ वटोइ (तू तोजिन भिज पिलम न लाय वटोई मारग भूली रे) ,	×	हिन्दी	r
रे६ पचम गति की वेलि	हर्वकीति	"	र० स० १६८३

412]		[सु रक्र ∮गर्
ee]		• •
१७ करन दिव्योत्तरहा	×	[ling:
दम पर(ब्रान क्टोनर नोहि कुनै रे हैं ता	नुरेश्वरोति	#
११. पर (जीवी वों हीवीकर करी	শীশিখ ধ	*
मीर नवन)		
४ करनो को बर्जि न्याये हो	बहानानु	*
Y१ माफी (कर्षे वर्षि क्रेनरके की	नामपर	
शतकी)		
४२ शास्त्री	बामस्यान	
४१ वर-(बोवड़ा दुवी बी पारत	,	
निनेत्र रे)		
पर भीत (बोरी ने बवानो हो नेपनी	ची शहराय	
का नाम स्क्री)		
४४. गुर् रि-{ मी बढ़ार समावि मी तोड़ी	ইনিখন	
बाव बच्चो थी शो)		
YL बुद्दरि-(देनि क्रुंबर नाकृत नामी	-	
रायुष करे इ विकार)		
Ye. क्षेत्रोरको	ग्रंडे विकास	
४४. वसिपुत को कमा	विकास	ल प्रश्नपुत्र । के वे दे वती
YE राष्ट्रवरचेवी	वलक्तर विशेषीयल	
६ व्यामित्ना श्र्य क्या	•	र्ग हन्द ि
६१ पुनिस्तरों को मनगल	ब्रह्मीयगरा स	•
इ.इ. नक्नास्क्रमन्त्रियस्तोषनाता	बनारसीचाय	
११ गीर्थेक्टर नक्सी	हर्वकी र्ति	*
ty मन्त्र में को बैनल नमें वैव	क् राएडीट ाल	1 7
प्रद. इन की व्यक्त मीत है।	~	>
१६ नहां घड्नी मीचनी प्रवंतान नताने	-	•

गुटका-सप्रह्]			
			[६२३
५७ रग बनाने की विचि	×	गेंहिन्दी	
४८. स्फुट दोहे	"		
४६ ग्रुणवेलि (चन्दन वाला गीत)	2)	11	
६०. श्रीपालस्तवन	39	'j ,	
६१. तीन मियां की जकडी	थन रा ज	1)	
६२. सुलघडी	37	71	
६३ कक्का वीनती (वारहलाडी)		ור	
६४ भठारह नाते कीक्या	n सोहट	וד	
६५ मठारह नाता का व्योरा		7	
६६ मादित्यवार कया	×	77	
६७ घर्मरासो	×	11	१५४ वदा
६= पद-देखो माई म्राजि रिपभ घरि मावे	×	- 11	
६६ क्षेत्रपालगीत	. ,	77	
७०. ग्रुस्मों की स्तुति	शुभवन्द्र	17	
७१ सुमापित पद्य	-	संस <u>्कृत</u>	
७२ पार्श्वनायपूजा	×	र्गेहन्दी	
	×	"	
७३ पद-उठो तेरो मुख देखू नाभिजी के न ७४ जगत में सो देवन को देव		77	
७५. दुविधा कव जह या मन की	बनारसीदास	יל דל	
७६ इह चेतन की सम निः —	×	 Ti	
७७ नेमीसुरजी को जनम हुयो	बनारसीदास		
७८. चीबीस तीर्थक्करों के चिह्न	×	77	
७६ दोहासग्रह	×	19	
प्त ्राम् क चर्चा	नानिगनास	33	
मरै दूरि गयो जग चेती	×	"	
पर शर गया जग चेती 5२ टेक्टो पर	घ नश्याम	9)	
मर देखो माइ झाज रियम घर झावै	×	27	
		79	

4sh]	[गुरुक्त-सम्ब
स्थ परायुक्तमत की प्यान मेरे 🔀 🔀 🔀 💢 💢 💢 💢 💢 💢 💢 अपने स्थान स्था	िं ^त ी
 व.४ जिनमी श्रांचीमी बुच्छ पत्रही नोहियों × 	
बर्ग, नारी मुस्ति पंत्र वट धारी नारी अ	
स.६. समस्ति नर भीवन योशी स्थानमा	*
 वेनवी दे नाई हरु नारपी वहारात हर्पनीति 	7
व वैश्वरी कई वैणि दुवार 😕	
बर- प्रयु तेरी बूरत कर क्यों क्रक्ट	,
र विदामणी स्वामी सोचा बक्का नेरा 👙	•
हर पुष्टममे नन मलेगी ए चैनीर्थि	,
६२ चेत्रव तृतिह्रं राज्य धरेका _{११}	
१३ वय संसत कड ्याच	*
EY प्रदुषी गांगा वरकात बु. कुच गांगां चारा नपुरशन्त	*
१५ ब ष्टुनंपन क्यक्त	
१५. सम्मेर विकार मन्त्री है जीनहा 💢	
१७. इत वाचे हैं जिनदान तुन्हारे क्लन को । जनवरान	*
१ बागरचीयी क्लारडीयाड	*
टर तुमन कृषि न रैत्रासी तक्षामी ×	
१ इसिये स्थान प्रदुष्ट्रियेत स्थाल 💢	
१ १ मेरा मन सी बद्धा क्यनुविद्यो स्वत्तर्विङ्	•
१२⊾ बृत्ता ठेंछे भुन्दर कोही ×	
१ व प्यारे हो लाल बहु का बरस की मिनहारी अ	
१ ४ मञ्जूनी त्यारियां त्रमु धान् वातिन्ते त्यारियां अ	20
१ % भी गारी भी त्यारीमा सम्बन्धि सुवासम्ब	
१ ६. मोदि बन्दा की जिल्लाहरू १ ५ मादि करते करते करते कर	
१ % मुम्पम ही में कार्य समुद्री पुण शुक्रम ही में लार्य -	
21110	**

गुटका समह]

१०८ पार्श्वनाय के दर्शन

वृन्दावन

हिन्दी र॰ सं० १७६ ६

१०६ प्रमुजी में तुम वरण्यरण गह्यो

वालचन्द

"

१४३४ गुटका स० १४ । पत्र त० ८८ । ग्रा० ६४६ १ श्रु । ग्रपूर्व । दशा-सामाप ।

विशेष—इस गुटके में पृष्ठ ६४ तक पण्टिसाचार्य धर्मदेव विरचित महाझातिव पूजा विधान है। ६५ में ६१ तक मन्य प्रतिष्ठा सावन्धी पूजाए एवं विधान हैं। पत्र ६२ पर मपन्न धा में चौद्योस तीर्पेष्ट्रर म्तुनि है। पत्र ६५ पर राजस्थानी भाषा में 'रे मन रिम रहु चःग्गजिनन्द' नामक एक वटा ही मुन्दर पद है जो नीचे उद्धृत विया जाता है।

रे मन रिमरह बरण जिनन्द । रे मन रिमरह बरणजिनन्द ॥ढाल॥ जह पठावहि तिहुवरा इद ॥ रे मन ।। यह समार ग्रमार मुर्गे घिरा वन्न जिय धम्मु दयाल । परतय तन्तु मुलहि परमेट्विहि सुमरीह झप्पु गुलाल ॥ रै मन ।। रै ॥ जीउ पजीव दुविह पुणु प्रामय बन्धु मुस्सिह चरुभेय। सबर निजरु मोखु वियासाहि पुण्सापाप सुविसीय ।। रे मन० ।। रै ।। जीउ दुमेउ मुक्त ससारी मुक्त सिद्ध मुनियाणे। वसु गुरा जुत्त बलद्ध विविजिद भासिये फेवलरागरी ।। रे मन० ।। ३ ।। जे ससारि भमहि जिय सबुल लख जोरिए चडरासी । थावर वियलिदिय सर्यालिदिय ते पुगाल सहवासी ।। रे मन० ॥ ४ ॥ पच मजीव पढयमु तहि पुगालु, घम्मु मधम्मु मागास । कालु मरााउ पच कायासी, ऐच्छह दव्य पयास ॥ रे मन० ॥ ५ ॥ मासउ दुविहू देव्वभावह, पुणु पच प्यार जिल्ला । मिच्छा विरय पमाय कसायह जोगह जीव प्रमुत्त ॥ रे मन० ॥ ६ ॥ चारि पयार वाधु पयहिय हिदि तह ग्रत्युभाव पयुस । जोगा प्यिंह प्यूसिंठदायागु भाव कसाय विसेस ॥ रै मन० ॥ ७ ॥ सुह परिणामे होइ सुहासन, असुहि असुह वियाखे। मुह परिखामु करहु हो भवियहु, जिम मुहु होय निवाखे ॥ रे मन० ॥ द ॥

```
संबद करोई बीच अब मुखर शासन बार निरीहें।
मस्द सिव सम्बाद बाद अवस्थात सोव्ह सोर्व बीर्ड ।। १ मन । (१.1)
रिवर बच्च विश्वासह पारत्, बिय विद्यानका सबसे ।
बारक्ष विक्र तथ यसविक्र तथस्, पीच सहायक पतने ।। रेसन ।। रेस
सहिवदि बम्मविद्वक्त परमञ्ज वरमध्यक्ष्मीच बालो ।
कि पहु मुनुतिन रक्षमु तक्षिपुरि, विभाग दैन्सार वाको ११ र गर्न ।। ११ ।।
आणि भरूरत रह नवा करका पवित् अनह विचारह।
जिल्हर दासम् चन्द्र प्रमाधम्। श्री दिव इद विद धारद श दै वयः ॥ १२ ॥
```

्राप्रदर्भसम्

ų-t

4-22

विभेग--पूजा गाठ एव स्टोच धारि का शंघह है।

424]

f 21 mi

१ कर्मनोधर्मवर्जन

४४६० गुरुवासं १६। वय वं १४ । सा रहे×४३ ६ळा। पूर्ण एर्व बीर्स्ट। प्रविशंव प्रस थब्ड है। निधि विश्व है।

४४६६ गुटकास ४४ । वस्त २४ । या ६८६६ सक्षः वापा–विल्यो संस्कृटा के गण

नाकुन

िली

विश्वेष--- इसमे निम्त पाठौँ का क्षत्रह है।

२ भ्या इ.सव.एवं चौबइ पूर्वी ना विवरता

1	रवेतान्यरो के ४४ मार	×	19	84-84
٧	सहबत नाम	×	87	11
z	सभोद्रशत्ति शबव	×		6.4
	🗈 तम भी पार्श्वताल करी	। बुडची चित्रा एकाच्य पिष्य	त्मबोड स्थापितं ॥ १ ॥	
	क्षेत्र १६६ वर्षे अप्रवास्त्रीक	प्रमु जिनवर्ता स सव यनि	भारतं स्पेरापटभश्च स्पापितः ।। १	18
	भी बीयनतीनकुरकले ली	(क्यामानार्यपुनेश पर्णतेव	विपरीतवर्त विष्यास्य स्थानिये	11 4 11

×

×

वर्वतीर्वक्रप्रायाः काले विवयमिष्यार्थे ॥ ४ ग भीपार्मनावनश्चि विभ्नेक् मस्वरिपूर्णनाद्यानिभ्नात्वं भी नद्दानीर काले स्वापितं ।। १ ।। बंबत् ६२६ वर्षे थीः पुरस्तात्रविक्षेत्रः साहुत्त्वनिवतः वच्यविद्याः स्थापकाककेत्। प्रापिदधेनः स्थापितः । र्वसत् १ ६ वर्षे स्वेतस्टार्श् श्रीकनधान् प्रामनात्र संबोदधीयाशीयाः । ७ ॥

चतु सथोदाति बच्याने । श्रीभद्रबाहृशिष्येण श्रीमूलसघमिष्टितेन ग्रहृँदिनिग्रितिग्रुप्ताचार्येविशामाचार्येति नामयय चारकेण श्रीग्रुप्ताचार्येण निन्दमघ , मिहमघ , मैनसघ , देवसघ इति चत्रार सघा स्थापिता । तेम्यो ययाक्रम बलात्वारणणादयो गण्ण मरम्बरगदयो गछाश्च जातानि तेया प्राप्रज्यादियु कर्म्मसु योपि भेदोस्ति ॥ ८ ॥ सचत् २४३ वर्षे विनयपेनम्य शिष्येण मन्यासभगयुक्तेन गुमार्येनन दारुयघ स्थापित ॥ ६ ॥

सवत् ६५३ वर्षे सम्यक्तप्रकृत्यदयेन राममेनेन नि पिच्छाव स्थापित ॥ १० ॥ सवत् १=०० वर्षे प्रतीते वीरच द्रमुने सनाशात् भिल्लमघोत्पत्ति भविष्यति ॥ एक्योना येपामुत्यति पचमकालावसाने सर्वेपामेथा ॥

गृहम्याना शिष्याण विनासो अविष्यत्येव जिनमत विष-काल स्याप्यतीतिज्ञेयिमिति दर्शनसारे उक्त ॥

६ गुरान्यान चर्चा	×	प्राकृत	14-50
७ जिनान्तर	बीरचद्र	हिन्दी	२१-२३
= सामुद्रिक ज्ञास्त्र भाषा	×	27	२४-२७
ह स्वर्गनरक वर्गन	×	71	₹ २ −३७
१० यति माहार का ८६ दीप	×	99	३७
११ लोक वर्णन	×	12	35-43
१२ चडवीस ठाए। चर्चा	×	33	XX-46
१३ भन्यस्फुट पाठ संग्रह	×	33	१०-१५०
			_

४४३८ गुटका म० ४७--पत्र म० ४-१२१ । प्रा० ६×६ इख । प्रपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

	3-111		6	
8	विकालदेववदन <u>ा</u>	×	सस्कृत	X~\$ 5
२	सिद्धभक्ति	×	**	१२-१४
ą	नदीश्वरा दि मित्ति	×	प्राकृत	१४-१६
¥	चौतीस प्रतिशय मिक्त	×	सस्कृत	१ <i>६</i> १ <i>६</i>
ሂ	युतज्ञान मक्ति	×	n	१६-२१
Ę	दर्शन मक्ति	×	17	२१– २२
v	भान भक्ति	×	n	रर
=	चरित्र भक्ति	×	सम्इत	२२ -२ ४
\$	मनागार मिक्त	×	73	२४-२६

(२च]			[गुरच+ार
१ मोगमिक	×	,	31-3
११ निर्पारणकात्त्व	х	मार्थत	₹ 1
१९. वृक्कस्वयंपु स्तोत	समन्त्रद्वाच थ	संस्कृत	10-41
१९ इरामनी (मनुभाषार्थभक्ति)	×	,	¥{-Y¥
१४ च्युनिसंदि तीर्नकर स्तुदि	×	,,	17-11
१ ३. स्तीम सबह	×		YI I
१६. भागमा बद्रोसी	×	,	X1 X1
१७ यारावनाशाद	र्यक्त	प्रमुख	14-5
रेण संबोधरणा तिका	×		41-44
११. इस्यस्य	मैकिय प्र	_	ta-at
१ मन्तामरस्वोत्र	नान्यु बाचार्व	क संस्कृत	ut ut
रे१ बावसी गाना	×	#	₩ X61
२२. परमार्तव स्तीत	×		हरे पY
२३ सङ्बद्धियदि सर्वि	हरिश्यम्	मार्च	τ .
रे पूनगैरात	विकासका		£ EY
२६. छवाबिनरक्ष	×	मरप्र व	EY-RE
१६, निर्भरपंत्रमी विश्वान	য িবি শশ শস্থ		2 5 33
२७ कुप्पनगेहा	×	•	12.21
रेथ शासनुरोका	×	,,	\$\$# - \$\$\$
4L #	बस्स		464 86a
হ থাবি পৰ্যা	शहस्या ज्ञानच द		fix fit
३४३६ शुरुषा सः ३ विभेद-भुरुषा आणीत् ।	द्र यम में १६−३१ सा ५: }।	×६ । धार्ले ।	
१ जिनसमिषिणलयम	नरमेश	वयस्य व	तूर्व १६१
भन्तिम भाग— वृतिय विश्व पर	हीत दक्तिहिशव सम्मदि विगुप स्वयक्तानमा विनयीत हिन्द्रमुग्री		

मत्रवहित जोग्रारित करेसइ, सो मरद्धयम्य नहेसइ।
सारय मुच महियिन भू जेसइ, रइ समाण कुन उत्तिरमेसइ।।
पुणु सोहम्म सम्मी जाएसइ, सहु कीलेसइ गिरु मुकुमानिहि।
मापुवसुखु भु जिनि जाएसइ, सिवपुरि नामु सोनि पानेसइ।
इय जिग्गरित निहागु पयोसिय, जहजिग्गसासिंग गग्गहरि भासिय।
जे हीग्गाहिय काइमि युत्तय, त बुहारण मठु समहु ग्णिक्तय।
एहु मत्यु जो लिहइ लिहानइ, पढइ पढायइ कहइ कहानइ।
जो नर नारि एहमिंग मानइ, पुण्णाइ महिय पुण्ण फलु पानइ।

धत्ता--

सिरि एरसेएह सामिन, सिवपुरि गामिन, बद्दमारा तित्वकः।
जद्द मागिन देइ कररा करेइ देन सुवोहि लाहु परमेसकः।। २७।।
इस सिरि वङ्दमाराकहापूरारो सिंघादिभवभावावण्यारो जिसाराइविहासाफलसपत्ती ।।
सिरि रारसेसा विरहए सुभव्वासण्यासासिमित्ते पढम परिछेह सम्मतो।

।) इति जिल्हाति विधान क्या समाप्ता ।।

२ रोहिणिविधान

मुशिपुराभद्र

प्रवस्त्र श

२१ ६५

प्रारम्भिक भाग--

वासवनुमपायहो हरिपविसायहो निज्जिय कायहो पयजुलु ।

सिवमग्गसहायहो केवलकायहो रिसहहो पर्णाविव कयकमलु

परमेट्ठि पच पण्णिविव महत, भवजलिह पोय विहिडिय कयत ।

सारम सारस सिस जोल्ल जेम, िणम्मल विग्णिज केण्णिकेम ।

जिहि गोयमण् विग्णिष वरस्स, सेिश्य रायस्स जसोहरस्स ।

तिह रोहिणी वय कह कहींम भव्य, जह सितिश्य वारिय पावराध्य ।

इय जबूदीव हो मरइ खेति, कुठ जगल ए सिवि गए जर्णेति ।

हर्षिणाउठ पुरजिण पवरिद्ध जर्गु वसइ जित्यु सह सम सिमद्ध ।

तिह वीयसीच गयसीच मूच, बिज्जु पहरइ रइ हियय मूच ।

तहां रादणु कुल्णान्दरा प्रसोच, जिम्लिव गच घड पुरि सीच ।

```
44 )
                                                                                        ्रिरम-सम्
           बह यन विशव करा दुरुष वितय करावदि पटन ब्रुखाद विश्वय ।
           मद्रह एर्गनेची उएएरनेतु सिरियह विक्तकित रिज क्यन्तु ।
           नुष बहु तानु घाँर जिएय तानु, रोतियों वान्यालं कामपान् ।
           नित्तं बहुर्रीत्व बोरवास, बरपूर विद्व विस्त वनु पुरवदास !
           बिरा प्रविति मुलि वरिति यमेन विदि वामुग्रम्य पर्यापविते !
           मह सीम्परित भन्ताहो दिनह बेह सोप्रीन्द्री काराया व्यवसह ।
           सबनोहिक सुक कुमाल समेद, परिएमल वित हदयशि यमेता।
           न्तिकरित नेतृ विविद्यवि समेत्र दिया शृद्धि विविद्यवि विद्याययेत ।
     <del>약</del> 편 - - -
           ता पुरवड वहिरि कि परित्र साहि, रिवड बँच चढ वासाँहै ।
           रहारमयनु साथिय रुद्धा करियम्, महित्य बहर शास्त्रीहु ।। १ ।)
     भनितम मारा---
           নিসুত্তহ নিভাগত ভাৰহুখনু বিধানহুটো কলেছু ভাৰবানু ।
           बन्दा द्वाम दे बहु बरगुल्लीन जब बादहो वीवहो बहुल्वरिय ।
           मत् इत्रहतुत्रमुह एत्पुतीय चलु विरुणु नेह बरनाव कीय।
           ननार बङ्गरुष्णु पुरकर बङ्गरहः अंद्रीय भाव निहन्नु नुनुरहः।
           स बबद बन्दू को एति निक, शही विनर्ग तैनव होद नन।
           सर्व बर्डर सहियह परमुष्टाङ परिचनित्र सोह बीवित सराउ।
           हुबर दिशा बस्यू सनुति नम्यू, शृषि अंगहियत बस्मेय नम्दर ।
           इत मुन्तिक स्पेति जिला विक्या विकास कृति क्लान्य राज समोज निका ।
             महिन कर भाग्यत समागरास्त्र ने मधु नक भी स्वद्व गुष्ट विद्वारत् ।
           धी तल्ड वर्धिर परव्याशीन बन्दु, वृष्टि, दिवि वी तिंदु बची ।
           बीबर विक्रांग लेरत करने अरथरी दिल्लिक मुच्छू करने ।
           हब के बनो क्य बदर्शना विकास अन्य हवाँह रिप्टवर बुरित तस्त्र ।
           नप्रपटित सम्बर्धभी वर्षि नुसन्ति, २) पर्शातिर वान दली वर्षाव्य ।
           रा इश्च विद्या तारएव रोहिणि कहाँवरस्य शालु हेव।
```

```
६३१
```

धत्ता-

गुटका-समह

सिरि गुगाभद्दमुग्गीमरेगा विहिय वहा बुधी भरेगा ।
सिरि मनयवित्ति पयल जुयलगाविवि, मावयनमो यह मगुद्धविवि ।
गादउ सिरि जिगासस, गादउ तहसू म बानुगा विग्धं ।
गादउ समस्ता समस्त, दितु सया मन्पतरु मजह भिगम ।

।। दति श्री रोहिएगे विधान समाप्त ।।

 ३. जिनरात्रिविधान पथा
 ×
 भ्रापञ्च श
 २६-२६

 ४ दशलक्षरण्यथा
 मुनि गुग्पभद्र
 ११
 ३०-३३

 ५ चदनपृश्चित्रतक्ता
 भावार्य छत्रसेन
 सम्कृत
 ३३-३६

नरदेव के उपदेश से प्राचार्य द्वपसेन ने कया की रचना की थी।

श्रारम--

जिन प्रसान्य चद्राभ कर्मीयच्यान्तभास्कर । विधान चदनपष्ठ्यभ्रभत्यानां कथिमहां ।। १ ।। द्वीपे जम्बूदुम केस्मिनु क्षेत्रे भरतनामिन । काक्षी देशोस्ति विख्यातो विज्जितो बहुधाबुधै ।। २ ।।

श्रन्तिम—

म्नाचार्यछत्रमेनेन नरदेवोपदेशत ।

मृत्वा चदनपट्ठाय मृत्या मोक्षफलप्रदा ॥ ७७ ॥

यो भव्य कुरुते विमानममल स्वर्गापवर्गप्रदा ।

यो य कार्यते करोति भविन व्याख्याय सवीधन ॥

मृत्यासौ नरदेवयोर्व्वरसुष सच्छत्रमेनाम्नता ।

यास्यतो जिननायकेन महते प्राप्तिति जैन श्रीया ॥ ७६ ॥

।। इति चदनपटी समाप्त ॥

६ मुक्तावली कथा

X

स् स्कृत

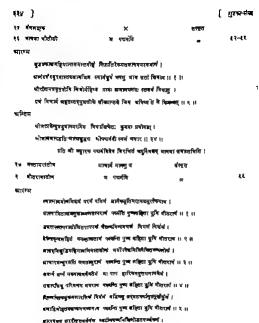
₹६-३८

आरम्भ--

भादि देव प्रराम्योक्त मुक्तात्मान विमुक्तिद । भ्रथ सक्षेपतो वक्ष्ये कथा मुक्ताविविविध ॥ १॥

(1 1)		्रगुरका सबस
७. पुर्ववस्पनी वना	रामगीत के थिया सरझ स	1-11
	विकल कीर्यि	
चादि याग		
	पएनेप्पित्र सम्बद्ध जिल्लेसरही का पुरुवकृति सावव विश्वता।	
-0	खिनुष्टिनमङ्क वर्षिनकः इस्त्रमधा वहरहिष नुववश्यती हियवस्थित ।।	
चन्दिम पाठ	बसमिद्धि कुर्यंत्र विद्वार्ष्ट्रकर्शेवरतु श्रद्धव वण्य कण्यन्त्र वरेविरद्ध ।	
	नवस्य प्रावेरपेकि प्रवादिक काली नुहर नु वह व्यक्तिरोर्थि ।।	
	पुरुषी मण्डल् पुरु मुक्त पुरुष्ट्व राज क्वाड वयावल बह्नाहु ।	
	वानसः मु बीर यक्ति कपच्छी वक्तुमाधि नामि ६९व्ली ॥	
	विक्ति विक्रित्त दुर्वाट नियस्तद्व क्सी यन्त्रकोय गाएक योहती।	
	बासवच्या अन्यति सुर्धेह तालु विस्तृषदः सामित परवदः बाणु विद्व १८	
	ছানু ৰৱবিছ বিঠি ত বেকাই চাই ৰ ছাৰ কা বৰতা ও কছাই।	
	बान्यच्य पेकि गुप्रकृष्टि गोमाहरह ब्रम्म सत्तर्ग्य ।	
	रामें बार्याः बार्याः वानाः पुत्त शत्ताः विकास्याः ।।	
	रामितित द्वर्राविएउ करेंद्रिया विश्व निवस गीति यहियसि प्रवेषिस् ।	
	नबार पुत्रु तम परायु करिनेत्यु बार अयुक्तमेल तीयननुमहेबार ।।	
ख	वी भरह करावह श्रृतिवीह वच्चान्तिय विचित्रक्त वर्त्वह ।	
	হী বিহুইছে বাডিআরু বস্তু শীরতু কৰা বসহ ।।	
	चंदि भुववरव र्वाल्या वगरवा	
पुगावसि क्या	× लग्न व	46.44
धारम्य	बाव बाद धरह निलेबर ह्यामीलर पुतिविधीगरपदार्थरतः ।	
	धमतन वतावादुर बहुरवाहीकर बुदि विराग्तर क्षमकरतः ॥ ६ ॥	
धन्दिस वचा	वसवस्तितारित स्वराणिति पुण्ति स्टिम्स सुद्दिषं विज्ञाह ।	
	मामाधिति बुड मर्नवर्तितितुत कुन्दु बरिट विहि किन्यह ।। ११ ।।	
	पुष्पांचिक कथा समाप्ता	
	4	

गुटका-सप्रह]			
ध मनतिक्यान नपा	×		£\$3
५४४० गरका सद्		घरम् व	₹ 5 4
रे. नित्ययदना सामायिक	६—१७ सस्या—१६३ । म	10-011/६ देना मामायतीर्ग	
२ नैमित्तिनप्रयोग	×	सस्त प्राप्त	1 10
	×	सस्त्र	7-12
३ थुतमितः	×	444	2 4
४ पारित्रमक्ति	×	79	2 y
४ माचार्यमक्ति	×	n	35
६ निर्वाणभक्ति	×	ħ	24
७ मोगमिता	×	17	₹3
८ नदी-बरभक्ति		n	27
६ स्वयभून्तोत्र	४ माचार्यं समन्तमह	17	?; २६
१ • गुर्वायिन		n	₹ ₹
११ स्वाध्यायपाठ	×	11	ďχ
१२ तत्वार्यमूत्र	×	शहत सम्म	50 67
 १३ सुप्रमाताप्टक	उमा म्यामि	नरात	
१४ मुप्रमातिकस्तुति	यतिनेमिचद		६७
रेप्र स्वप्नाविन	युवन मूपरा		वि० ⊏
	मुनि देवनदि	11 17	२४
^{१६} सिद्धिप्रिय स्तोत्र	93	"	२१
१७ सूपानस्तरन	मूपाल मिव	t) n	रथ
१८ एकोमावस्तीय	यादिराज	23	२५
१६ विपानहार स्तोत्र	धनख्रय	33	२६
२• पार्स्वनायस्तयन	देवचद्र सूरि	"	Y•
२१ मत्याण मदिर स्तोत्र	रुपुरच द्रमूरि	77	**
२२ भावना बत्तीसी		सस्तृत	
२३, फस्साप्टक	X	71	
२४ वीतराग गापा	पद्मनंदी (39	
	×	प्राकृत	



मनदावनाति सक्तपात विवास नोर्ने चरवन्ति पुण्य विदेशो पुनि नीवराने ११ ६ ॥

स्वस्त्रोद्धलन्धिशिविशिविशिविश्वित्वसेधन द, स्याद्वादवादितमयाकृतसिद्धणार्व ।

नि सीमसजमसुधारसतत्तद्धाग पश्यित्त पुण्य सिहता भुवि बीतराग ।। ७ ।।

सम्यक्प्रमाणकुपुदाकरपूर्णचन्द्र मागल्यकारशामनसग्रुण वितन्द्र ।

इष्टप्रदाणविधिपोपितभूमिमाग, पश्यित्त पुण्य सिहता भुवि बीवराग ।। ६ ।।

श्रीपद्मनि-रचित किलवीतरागस्तीत्र,

पवित्रमणवद्यमनादिनादौ ।

य कोमलेन बचसा विनयाविधीते,

स्वर्गापवर्गकमलातमलं वृग्गीत ।। ६ ॥

।। इति मट्टारक श्रीपद्मनन्दिविरचिते वीतरागस्तोत्र समाप्तेति ॥

38	ग्रारा धनासार	देवसेन	बापभ्र वा	र० स० १०५६	
80	ह्नुमतानुप्रेक्षा	महाकवि स्वग्रभू	,, स्वयम्	रामयरा का एक भंश ११	3
₹१.	कालावलीपद्ध डी	×	33	11	3
₹₹.	ज्ञानिपण्ड की विशति पद्धविका	×	97	₹ \$	
₹ ₹	शानीकुश	×	सस्कृत	? ? ?	
₹ 6,	इप्टोपदेश	पूज्यपाद	97	? ३	
₹X	सूक्तिमुक्तावित	ष्माचार्य सोमदेव	57	ę _×	
इ६	श्रावकाचार	महापडित भागाभर	_{য়} ৬ বঁ গ্ল	न्याय से झागे झपूर्ण १८	

४४४१ गुटका स०६०। पत्र स० १६। मा० ८×६ इख। मपूर्ण। दशा-सामान्य।

र रत्नत्रमपूजा	×	माकृत	२२–२७
२. पचमेर की पूजा	×		
B		37	२७–३१
१ लघुसामायिक	×	सस्त	4 7-33
४ मारती			11 44
	×	99	३४~३५
४ निर्वागुकाण्ड	×		***
	^	प्राकृत	₹६-३७

४४४२. गुटका सं० ६१। पत्र सं० ५६। ग्रा० ६५×६ इच । मपूर्ण। विशेष-देवा ब्रह्मकृष हिन्दी पद सग्रह है।

m]			् गुरुष्य सन्द
४४४३ शुक्का सं०६२। समूर्यः	पनर्व १२०। शा	DC६ स्था: जाश-विल्योः	ति काल वं १०२०
निषेत—प्रति शीर्मबीर्ज धव	रमा में है । मनुबासची ।	री दमा 🛊 :	
४४४४ गुरुका सं ० ६ ६ ।	_		पूर्ण । स्था-बासम्ब
१ धीचींबस्तिमाल	×	464.0	t-tt
१ विनस्कृतनाम	चापाचर -		₹ १- ₹₹
	dialat.		₹4-4€
। रेतकसम्बद्धाः	19	>	9w-{ q K
४ विषयसम्ब	•	#	
रश्य शुक्रकारी ¶४।	पदर्व४ । बा ७>	(७ इच्चाभाचम∹हिम्सी। दु	ម្លាំ រ
विकेष—विकायिक विको के व	यो का पंचा है ।		
रप्रथ६ शुरुका सं० ६४	पण संक्रमः- ९-४११ ।	बर ४×६० । विश्वनकाल	—१६६१∏ स्पूर्त ।
दका~बी र्स ∤			
१ वहम नाम	र्वे सञ्चानर	१ स्कृत	धपूर्व। ९-नक
२. चलवस्त्रुवा	पथलंकि	बाय ब	n we-ti
३ नंदीसारपविद्या	17	चंस्ट् व	* 64-50
४ समेरिकपुण (कर्मस्मृत पुणा)	क्षोजवस		e -t 4
 सारस्थतमेन प्रणाः 	×	77	ŧ
१ भूत्वविञ्चलपुरा	×		t w ttt
थः वक्कप्रशासन्त्रुचा	×		279-255
वंदीस्तर कारमञ्ज	×	Free	225
८. बृह्त्गी कृषकारसञ्ज्ञा	×	वस्तुव्य	११६-१२व
१ ऋषिसंबसपुत्रा	काम भूवरा		170-66
११ वाधिनामुगा	×	*	₹ 1 0−1
१२. प्रमोसूना (पुन्नक्षणि)	×	क्षरण च	tv-sts
१६ पदाक्रम्याः सम्पान	×		8×8
१४ नाश्च प्रपुत्रेका	×	že .	(Af-Xa
	1		

गुटका-सप्रह]			
१५ मुनीस्वरो की जयमाल १६ रामोकार पायडी जयमाल	×	भ्रपञ्ज श	[६३७ १४७
१७ चौवीस जिनद जयमाल	×	n	१४६
१८ दशलक्षरा जयमाल १६ मक्तामरस्तोत्र	रड्घू मानतु ङ्गाचार्य	77	१४३-१४२ १४३-१४५
२० क्ल्यारामदिरस्तोत्र २१ एकी-गवस्तोत्र	कुमुदच द्र वादिराज	नस्मृत ग	<i>{**a-</i> 5 <i>*</i> = <i>{*</i> ** <i>-{*</i> **
२२ मक्लकाष्ट्रक २३ भूपालचतुर्विद्याति	स्वामी भन्नक	12 27	१४ ५−१ ६० १६₀
२४ स्वयमून्तोत्र (इप्टोपदेश २५ लक्ष्मीमहास्तोत्र	भूग ाल प्रज्यपाद	77	१६१ –६२
२६ लघुसहस्रनाम २७. सामायिकपाठ	पद्यनदि ×	19	१६२-६४ १६ <i>८</i>
२६ सिद्धिघयन्तोत्र	× देवनदि	भ शकृत सस्कृत ने स	१६४ १६७४, १६४ <u>~७</u> ०
२६ मावनाद्वात्रिद्दिका ३० विषापहारम्तोत्र	× घनस्रय	चेन्द् <u>र</u> त ११	१७ १ ९७–१ <i>७</i> ९
३१ तत्वार्यसूत्र ३२ परमात्मप्रकाश	उमाम्बामि योगीन्द्र	3) 31	807-68
३३ सुप्पयदोहा	×	भ्रपत्र ग ^{ले} ० स० १६६१	१७४-७= १७६-५= वैद्यान सुदी ४।
३४ परमानदस्तोत्र ३५ यविभावनाष्ट्रक	×	× सस्कृत	₹55-€0
३६ करुणाष्ट्रक ३७ वत्त्रसार	पद्मनदि	n	? 6 ? T
३८ देतमानुप्रेका १६. वैराग्यगीत (न्दरगीत)	देवमेन ×	श्रा द् रत	₹€ २ ₹€¥
४० मुनिसुवतनायस्तुति	छोह _त ×	हिन्दी	77 १ ६५
			मपूर्ण १६४

₹ ‡≈]		[गुरक्य-संगर
¥१ विजयम्बागा	×	संस्था ११६-६७
⊀२ विनयामनविक	×	प्रवहत समूर्ण १११−९
४६ भर्मगुद्रेशा जैनी का (निपतकिया)) ×	हिल्दी १ र–१७
विक्रेप-विकि स्वास १६३	थ । या सम्बद्धाः ने पट	के की प्रतिनिधि करामी तका भी मानविद्यों के
बाप्रकाल में बहरोटा जानमें हरवी भी		•
YY वैदिशिवंद व्यवसी	पेत्रश्री	विस्ती १३ ५ –४२
Y7 नल्बरवस्त्रवंदसम्बद्ध (वीठे)	×	m 545
४६ वर्नस्थ्य वा सम्बद्ध	×	, m
Ya वदसस्यक्षतीयारमञ्जा	- नुपरिगाद र	ling bat-ta
४४ पंचनीयरोधायरपूरा	कुमारगार केवाबरेन	# \$6X-8X
¥६ रोहिलीवत पूना	×	ू २०१ -
१ चेरवक्तिकेदारक	के के कार्यात	शंसूच २७१-वर्
११ जिनक्कानवारन	×	हिल्दी संपूर्ण २ ९−£४
१२ विशिवदेशि	श्रीकृत	हिल्सी सपूर्व १७
४३ नेमीसूर कवित्त (नेमीनूर	वर्षि उन्दूरशी	n 1 1 - t
राजनवीनैति)	(शमिकेस व्य प्रतः)	
३४ विरदुष्तर की सम्बन्ध	×	m q e-et
 इक्षेक्ट्रमार वस्याल 	×	वागम वा १११ ए४
३६ निर्वातासम्बद्धाः	×	सक्रव ई६४
Lu. grapes	क्रमुखी	हिन्दी हो अन्तर्भ
१ साममञ्जानमी	यगासम्	# 3f St
र इ. यान की कड़ी मानगी।		६१२ र
६ वेतीश्वरणीराव	चाउनमि	145-11
₹t " #	वस्यसम्बद्धाः	क्ष द व्यक्ति । इस्त का
६२, वेक्सिकास्ताव	ছদশীয়ি	444-441
६६ जीपलसम्बो	वहारतवाह	" C & 444 AXI-EE
६६ भीपलयस्थे	वस्यानम्	" C4 441 AN-EE

74-70

ब्रह्म रायमल

हिन्दी र स. १६२६ ३५६-६६

सवत् १६६१ मे महाराजाधिराज मार्घासहची के शासन काल मे मालपुरा मे श्रीलाला भावसा ने मातम पठनार्थ लिखवाया ।

हिन्दी 340-45 जिनदास ६५ जोगीरासा 34=-48 भ० सकलकीति ६६ सोलहकारएएरास 77

356-53 प्रहारायम्स ६७ प्रद्यमनकुमाररास 77

र्यना सवत् १६२८ । गढ हरसीर मे रचना की गई थी।

३८३-६५ ६८ सक्लीकरखिविध X संस्कृत ६० वीसविरहमारापूजा X 254-80 17 ७० पकल्यारगकपूजा X मपूर्व ३६५-४११

४४४७ शुटका स॰ ६६। पप स॰ ३७। मा॰ ७×१ इख । मपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ भक्तामरस्तोत्र मत्र सहित मानतु गाचार्य सस्कृत १-२६ २ पद्मावतीसहस्रनाम

X

४४४८ गुटका स॰ ६७ । पत्र स॰ ७० । मा॰ ८३×६ इख । मपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

१ नवकारमत्र मादि X प्राकृत 8 २ तत्त्वार्यसूत्र **उमास्त्रामि** सस्कृत 5-28

हिन्दी भर्ष सहित । भपूर्ण

३ जम्बूस्वामी चरित्र X हिन्दी मपूर्ण

४ चन्द्रहसक्या टीकमचन्द र स १७०५। मपूर्ण 99

५ श्रीपालजी की स्तुति पूर्ण "

६ स्तुति भपूर्ण

४४४६ गुटका स० ६८। पत्र स० ६८-११२। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण। ले॰ काल सं॰ १७८० चैत्र बदी १३।

> विशेष---प्रारम्भ मे वैद्य मनोत्सन एव बाद मे प्रायुर्वेदिक नुसले हैं। ४४४० गुटकास०६६। पत्र स०११८। मा०६×६६ च । हिन्दो । पूर्ण। विशेष--बनारसीदास त समयमार नाटक है।

ग्रहा-क्रम

11-Yt

¥3-29

24-51

\$¥ \$\$

11-01

n1-05

-1---

.....

w -43

₹~4₹

1-50

##~#**?**?

1-111

110

erk.

43

tr 1

१ लग्नेस

२ मुर्वेशस्य

६ स्थ्यतिसम्

৮ ইবলিবচুরা

६ स्पनवस्त्रवा

६, यजप्रपूजा

শলহুণাত্ত্বেরা

द, बार्सवाक्त्रत

t. effections

१ केमपलपुता

११, सूबनाविष

११. बानीस्टोप

१४ स्रांतिसङ

१६, रामधिमोर जला

१. नाटक चनपकार

१, नगरबंदिवास

६ स्वीकृतिकाचन

१६ क्लार्वेनुत्र होन प्रध्यक्ष तक

fir to

वंशन

fire

ील्या रचना सन्पुरुष्कृति विषये १४७६ ।

> fir ti " सपूर्णपदा**र्थ**

रियेत —रन दुरके में जनान्यानि इत तरशर्वनुष की (दिन्दी) दीशा दी हूं। है। दीश कुनर वृत्रे रिश्ना				
है तथा पान्ये कारण्यती पूर्व है।				
१४४९ गुरका संचरे। या वं	११-२२१ । का	X६ इ.च.३ धरूरी ३ रहा-मानत्त्र ।		

¥

×

चार्चार

×

×

¥

30

×

×

×

×

×

क्षतास्त्रती

×

रामविनीय

×

१४४१, शुरुकास चरायवर्ष र ४१ वा ६५ँ×६३ ६ व । पूर्ण । स्वान्धानाम । वनारबीवास

६४१

```
गुटका-समह ]
```

४४४४ गुटका स० ७३। पत्र स० १५२। मा० ७×६ इ च । अपूर्ण । दशा-जीर्ग शीर्ग ।

१ राग्रु भासावरी

रूपचन्द

भपभ्र श

8

प्रारम्भ--

विसरुगामेगा कुरुजंगले तहि यर वार जीर राजे । धगाकगागायर पूरियर कगायपहु धगार जीर राजे ॥ १ ॥

विशेप-गीत अपूर्ण है तथा अस्पष्ट है।

२ पद्धही (कौमुदीमध्यात्)

सहरापाल

भगभ्र श

3-13

प्रारम्भ--

हाहर धम्मयुर हिडिउ ससारि मसारइ । कोइपए सुएाउ, गुएादिरुट्ठ सख विग्तु वारइ ॥ छ ॥

श्रन्तिम घत्ता--

पुगुमित कहद सिवाय सुिंग, साहगामेयहु किञ्जह ।
परिहरि विगेहु सिरि सितयत सिंघ सुमद साहिज्जह ।। ६ ।।
।। इति सहगापालकृते कौमुदीमध्यात् पढडी छन्द लिखित ।।

३ कल्यागुकविधि

मुनि विनयचन्द

धपभ्र श

\$ **3**-0

त्रारम्भ—

सिद्धि सुहकरसिद्धियहु

पर्णाविवि तिजइ पयासरा केवलसिद्धिहि काररायुराणिमहरु ।

समलिव जिरा कल्लारा निहयमल सिद्धि सुहकरसिद्धियहु ॥ १ ॥

श्रन्तिम--

एयमतु एक्कु जि कक्षाराउ विहिस्तिन्वियि महवद गराराउ । भहवासय लहसवराविहि, विरायचिद सुरित कहिउ समत्यह ॥ सिद्धि सुहकर सिद्धियहु ॥ २५ ॥

।। इति विनयचन्द कृत कल्याएकविधि समाप्ता ॥

४ पूनडी (विराय विदिव पच गुरु)

यति विनयचन्द

भपञ्च श

१३-१७



गुर	का-क्ष्यह]			ि ६४
Ä	रत्नत्रयपूजा	×	हिन्दी	५६– ६१
Ę	पादर्वनायपूजा	×	11	६२–६७
ø	शातिपाठ	×	77	६७–६६
ς,	तत्वार्थसूत्र	उमास्वामि	7)	७०-११४

४४४६ गुटका स० ७८। पत्र मध्या १६०। त्रा० ६×४ इ च। अपूर्ण। दशा-जीर्ण।

विशेष-दो गुटको का सम्मिश्रण है।

#[

१ ऋपिमण्डल स्तवन	×	संस्कृत	२० - २७
२ चतुर्विशति तीर्यद्वर पूजा	×	19	2=-32
३ चितामिएस्तोत्र	×	37	३६
४ लक्ष्मोस्तोत्र	×	37	75-05
५ पार्श्वनायस्तवन	×	हिन्दी	35-35
६ कर्मदहन पूजा	भ० शुभचन्द्र	संस्कृत	१४३
७ चितामिए। पाइवेनाय स्तवन	×	55	そ 考~ そ 年
म पादर्वनायस्तोत्र	×	11	85-43
६ पद्मावतीम्तोत्र	×	29	५४-६१
१० चितामणि पार्वनाय पूजा	भ० शुभचन्द्र	99	₹१ – ≈€
११ गण्धरवलय पूजा	×	73	< E- 2 8 x
१२ ग्रष्टाह्निका कया	यश कीर्ति	"	१०४–११२
१३ धनन्तव्रत कथा	वलितकोत्ति	33	883~88=
१४ सुग चदवामी कथा	77	55	११५-१२७
१५ पोडपकारण कया	27	53	१२७ - १३६
१६ रत्नत्रय क्या	37	73	१३६-१४१
१७ जिनचरित्र कथा	23	25	8x8-8x0
१८ प्राकाशपचमी कथा	33	53	१४७-१५३
१६. रोहिग्गीवत कथा	77	37	भपूर्ण १५४-१५७

(M]			[गुरका-स्थ्य
१ सम्बीस्तीय	नव्यवसीन	र्गसूत	
४ औपल <i>नो नी स्तुवि</i>	×	विश्वी	
५. सामुबदशा	वनारबीराध		
६ बोबतीर्वकृतें की बनबी	हर्वगीति	,	
वार्ष्यमना	×	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	
द. दर्घमशुक्र	×	विल्यी	थव वर्धनों का वर्तन है।
t, पर-परश केमस की ध्याल	ए देखि	77	
१ नकामसरोजनाका	×		
४४१७ गुटका स ७६	। पत्र संस्था—१व	। बा•—१।DCYII १ ०	त्वतं १७३। योसी
१ समार्वसूच	वयस्यापि	बल्हर	
९. नित्वनुषा व बाहरद पुत्रा	×		
वंशिक्यरपूजा	×		
		वंडित अक्टार है	विरक्तेवार्वे प्रविचिति गी।
४ भीतीर्मंदरदीकी जनकी	×	ील्पी	ळविनिपि इक्ता वें नी वर्षे।
হ, ভিৰিদিনবৌগ	देशनीर	र्वसङ्ख	
🐛 एसीमाधस्त्रीय	वारियम		
🖦 নিল্মবিনিদ কৰি বীৰ্ঘ	×	प्रियो	
विवासीयुक्ती की क्षत्रकल	वर्षर	_{स्म} कोशं	वेरवें नवराजने जितिनादि की थी ।
१. वे त्रशासकीय	×	र्वस्त्रच	
 वक्तमरस्तीय 	वार्यर्भगलपु व	*	
XXXF ILEAL SIO AND	पर सं ११६। वर	DOLEGE AND	र्वस्थात हो। वी पान १६१६
नाइनुगै १२।			
१ देशसिक्यूमा	×	र्शन्द्रत	₹ 1 1
९. वंधिनस्त्रूमा	×		# 1-44
६. सीनद्रशस्त दूजा	×		YY-1
y रवनवरातूमा	×	29	2+-11

			The state of the s
गुटका-स्रमह]			
५ रत्नत्रयपूजा			[& & & ?
६ पारर्वनायपूजा	×	हिस्दी	४६–६१
७ धातिपाठ	×	17	६२–६७
⁵ तत्वार्धसूत्र	×	77	33-63
	उमास्वामि	73	
रुष्टर गुटका स०	उद्धा पत्र संख्या १६० ी श्रा	। ०६×४३च। श्रपुरा	1 can_=h
विशेष—दो गुटका का	सिम्प्रण है।	4.	. । रसा–जासा ।
१ ऋपिमण्डल स्तवन			
२ चतुर्विशति तीर्धद्धर पूजा	×	संस्कृत	<i>२०</i> - २७
३ चितामिएस्तोत्र	×	11	₹=-३१
४ लक्ष्मोस्तोत्र	×	33	₹₹
४ पार्श्वनायस्तवन	×	23	7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7
६ कर्मदहन पूजा	×	हिन्दी	₹€-४०
७ चितामिए। पार्वनाथ स्तवन	म० शुभ व न्द्र	संस्कृत	\$-83
द पार्श्वनायस्तोत्र	×	73	\$3 ~ \$ € ,−° ⁴
६ पद्मावतीस्तोत्र	×	33	
१० चितामिए। पार्श्वनाथ पूजा	×	n	¥5- <u>4</u> 3
११. गराघरवलय पूजा	भ० शुभचन्द्र	59	48-E8
१२ मप्टाह्मिका कया	×	"	₹१ - = ε
१३ अनन्तवत क्या	यश कीत्ति	"	26-558
१४ सुगन्धदशमी कथा	ललितकीत्ति	n	१०४–११२
४ पोडपकारण कया	27	"	१ १२ - ११=
६ रत्नत्रय कथा	"	33	११ ८-१ २७
८७ जिनचरित्र कथा	77	n	१२७ - १३६
८ भाकाशपचमी कया	39	23	१३६-१४१
 रोहिस्सीव्रत क्या 	33	33	१ ४१-१४७
	19	5)	# γ γ γ ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο ο
	470		धपूर्ण १५४–१५७

484]			[गुरका-संग
२ ज्यालामानिनीस्तोश	×	शंसका	\$2.4—\$\$\$
२१ वैजपालस्तीत	×		१ ६२-६1
२२ मान्तर होय विचि	×		tax-a4
१३ भौगोसी निवती	व रागका	ग िक	ţ ≈€ ≈€
४४५ गुरका स क	∟ापण वं देश । सा ७×	अ ३ द च] चपूर्ण ।	
१ च नोविषस्य	बाह्यस	चंस् क त	\$ ₹#
१ एकेक्लोक रामायल	×	*	78
 एनीस्कोक शासरत 	×		-
४ वर्गकालकाम	×	21	15-45
१, नवपहरकोच	NAMES	*	14-11
३४६१ गुरुकास =	ायम सं १ -४८। स	4 XV2 4 4 1 14	ग⊢प्रसक्त तथा हिन्दै ।
बरूर्व ।			
विसेष- पश्चमण्या नार्यस	परिष्या, वेबाधूना एवं सत्वार	चित्र का संबद्ध 🕏 ।	
≉४३२ गुक्कार्सन्द	। पत्र शंरू∼१६ । सा	t _द ×४ ६ व । जारा∺	तंस्तृतः । सनूर्तः । दवां~
सामान्त्र ।			
विसेष—निष्य पूत्रा ६व	गाठी का बंधह है।		
४५१३ गुटका सं वर	। कार्य ६ व्या ६००	इ.थ । नामा चेल्हा ।	कें बाम सं देवनदें।
विकेष१पानची स्वीन	एवं विनवहत्तनाय (वं य	मागर)का संबद्ध 🕻 ।	
३४६४ गुरुका सः नः	। यथ सं १ – ११। सा	exy ₅ % # 1	
<u>६. स्थरतामात्रिक</u>	×	चंस्कृत	tt
र, विवयूना	×	**	११−११
। योक्सवाराण्युमा	×	29	4A 4x
४ व्यापसाराष्ट्रका	×	*	44 70
६ समस्याम	×		4=-14
६ इस्राधन	×	17	1≠-18

७. विनामीसूबा

< तन्त्रापेट्ट**न**

X

नंस्त

दनान्वनि

45-25

\$5-X\$

४४६४. सुदका म० २४ । पण्य- २२ । मा० ९४४ इच । नारा-मन्द्रत । मर्गु । दण-मानाच विकेष-पत्र १-४ नहीं है। जिननेनाबाद इत जिन सहस्रनान म्नोज है।

४४६६. गुरुका स० =६। पत्र स० १ से २५। हा० ६४१ ई.व । प्राया—हिन्दी।

विरोध-१६ ने ६७ मदैया का सबर है किन्तु किस प ये ने हैं वह बतात है।

४४६७ सुटका सं० =७१ पय स∙ ३३ । मान =८४ इच । मारा-मन्द्रत । पूर्ण । देपा-मानान्य ।

१ दैनरक्षाम्तोत्र	×	मंस्त	₹\$
२ जिन्नीयः स्टोत	×	77	X-1
३ पार्वनापस्तीव	×	n	Ę
४ चक्रोबरीम्बोब	×	\$1	σ
१. पदावडीन्डोप्र	У	'n	5-62
६ व्यानामानिनीसीत्र	×	77	72-15
 ऋषि मडनम्दोध 	ीतम गण्डर	91	१=- २४
= चरम्बतीम्बृति	मागामर	* ?1	28-52
६. कीवनाष्ट्रक	×	n	73-37
१०. क्षेत्रयान्न्तीय	Y	11	55-23

४४६म शुटका स० मम। पण सै० २१ । घा० अX१ इख । महूर्त । दशा—मामान्द । विरीय-गावामें विर्तवित पान मेदना है !

४४६६. गुटका मं० २६। पत्र ५० ११४। मा० ६४१३ इ.स.। मापा-सम्बद्ध हिन्दी । एउटी । विराय-प्राप्त में पूरामों का तकह है तथा मन्त में मनकार्ति कुछ नव नवकाररात है।

४४४० तुरका स०६०। पर म० ५० से १२०। मा० =XYर् उच । मापा-समूत । मर्जा ।

विशेष—मिन पाठ तथा चतुर्विशति तीर्यद्वर स्तृति (माचार्य सम्नतसङ्ख) है।

४४४१ गुटका स० ६१ । पत्र छ० ७ चे २२ । मा० ९X६ इ.च । विषय-स्वीत । म्हूरी । दशा-

चानान्य ।

₹ ₹]			[गुरम-सम
१ संबोद रं वाशिकामाया	चानवरस	हिल्ही	gK
६ नतानरमहा	हेमरा≉	n	t-ta
 च्याम्य महिन्दलोषभाषाः 	वनारबीधाः		£1.78
११७ सुरकार्स ६२।	पत्र में १३०२	रे। या × इत≀	नापा-संस्टुत हिन्दी । ने
नात १ ६६ । पपूर्वा । वसा नामान्य ।			
 अविध्यस्तरम् 	रायपञ	ficali	110−41
२. जित्रपञ्चरस्तीच	×	र् खव	१वर्ड वर्ष
१ पार्सनामस्योव	×		ţet
४ स्तवन (बर्फिश्चनंतका)	×	हिन्दीः	ę ϩ –ε۱
হ বক্তাৰথি	×	,	११ ₹≔1 1
१४०३ गुरुका सं ६३। निषेत्र—सारका के २४ वस व		।या ध≾६६ दः। सन्	र्म।
१ प्रस्कारपुर्वः	· · ×	हिल्ली	सर
२ बकामरस्तीत	यारनु राचार्य	र्चस्तृत	£A
१ लडमीस्वोत्र	पश्चमनेत		44
४ वस्यु बहु का मगजा	ब्यूवंब	ि न्द ी	44
६ स्था नमें विरवर क्	×	77	E#
🐧 बार्ति गण्डि के नवन कू बय बंदन	*		1
🤋 श्रीकारी दी दिनकी	×		wt
থ বাৰাবিদুৰ	उनस्थापि	र्वसर्व	**-67
र १९- घरने क्या का जिल्हानकी राज	शार्ष ः ×	िक्दी व	श्रदूरमं १९
र 🚅 को परि करोजी ग्रमाल के के विकरा	महर्गम नुबरन	*	£#
१३ _ल नमीन कोडी ननी वेसी	×		ęŧ
११ 📲 पुत्र गति पायन सक्षी चित्र भारीर्ज	ो नक्स	79	ęŁ
१३ _ल बाओगी सीन नेव वंदार	×	=	t
१४ _अ रुप नशर नहर थे। वरना	बूपरशन	10	4.4

गुटका-संप्रह]			[६४६
१५ खेलत है होरी मिलि साजन की टोरी	हरिश्चन्द्र	हिन्दी	रै०२
(राग काफी)	•		
१६ देखो करमा सू फुन्द रही ग्रजरी	किशनदास	77	१०३
१७, सखी नेमीजीसू मोहे मिलायोरी (रागहोरी) द्यानतराय	77	59
१८ दुरमित दूरि खडी रही री	देवीदास	99	१०४
१६. प्ररज सुनो म्हारी प्रन्तरजामी	सेमचन्द	37	१०६
२० जिनजी की छवि सुन्दर या मेरे मन भाई	×	37	श्रपूर्ण १०=

प्रथिष गुरका स० ६४। पत्र स० ३-४७। मा० ५×५ इच। ले० काल स० १८२१। म्रपूर्य। विशेष-पत्र सध्या २६ तक केशवदास कृत वैद्य मनोत्सव है। म्रापुर्वेद के नुसले हैं। तेजरी, इकातरा मादि के मत्र हैं। स० १८२१ में श्री हरलाल ने पावटा मे प्रतिलिपि की थी।

४४७४ गुटका स० ६४ । पत्र स० १८७ । भा• ४×३ इख । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ मादिपुराण	जिनसेनाचार्य	सस्कृत	१-११=
२ वर्षासमाधान	भूषरदास	हिन्दो	288-388
३ सूर्यस्तोत्र	×	संस्कृत	१३८
४ सामायिकपाठ	×	39	१३ =-१४ ४
५ मुनीस्वरो की जयमाल	×	17	१४५-१४६
६ शातिनायस्तीत्र	×	1)	१४७-१४८
७ जिनपजरस्तोत्र	कमलमलसूरि	22	१४६-१५१
भैरवाष्ट्रक	×	**	१ ५१—१५६
६ भक्तंकाष्ट्रक	ध कलक	33	१४६-१५६
१० पूजापाठ	×	2)	१६०-१६७

४४७६ गुटका स ६६ । पत्र सं । १६० । भा० ३×३ इख्र । ले० काल स० १८४७ फाग्रुए सुदी ८ । पूर्यो । दशा-सामान्य ।

१ विषापहार स्तोत्र	धनज्जय	सस्कृत	₹ –¥
२ ज्वानामातिनीस्तोत्र	×	73	

Q]			[गुरक्ष-वंग
६, विवासदियासंग्रहतीय	×	बंस्ट	
४ नस्मीस्तोत	×	**	
१, वैत्यवदना	×	*	
६ मानस्योची	बनारसीवास	र्गिक्री	4+ 41
, भीपासमृ वि	×	P	65-64
विवास्त्रारक्तोयवाना	सचलकीति		18-18
 चीनीवरीचचुरस्वयम् 	×	*	66-60
१ वंसर्वदश्य	स्तर्पर		\$4-3,0
११ वस्त्रजीतुम	वनस्यानि	क्षम्ब र्द	Y== 12
१२ पर-नेरी रे समाने जिनको का कावसू	×	file-ft	4
११ क्ल्पालमंदिरस्तोनवाना	वनारबीयाव	67	46-00
१४ नेगीसर के स्तुवि	चूनस्तर	हिन्दी	9 €
१८ वस्ती	कार्यद	**	44-44
16	चुन स्वास		#4-41
रेक पर-धीनो जान हो लीने रे बाली	×		School of London
दिनमी को नान बन प्रको			
१ निर्वालकात्र्यसम्बद्धाः	वनवरीयात	**	थर∽द र
११ मध्यलर्जनंत्र	×	19	eout
१ वीर्णकुराज्ये वरिवय	×		\$\$ \$- # \$
२१ वर्षमञ्च	×	बस्व	648-65
१२. पारतनावारी सी निवासी	×	दिल्दी	\$ 6.4-4.a
वर न्युति	क्रक्रोति		t == t
रु४ पड−(०४ू' भौजितराम नगवण काम प	rक्षी) x		
श्वक गुरवासं स्कार	ाम की क र्⊥सा	₹XXदे दक्ष । पाता-बंदरत (पूर्व १ रदा बलाम र
विभेष-बुरकामीर्थं बीर्ल ही प्र			
१ बनार्रपुर	उत्तरसामि	बंध्य	

गुटका-समह

२. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	83	
३ एकोभावस्तोत्र	वादिराज	11	
४ कल्यागामदिरस्तोत्र	कुमुदचद	ענ	
५, पंदिर्वनीयस्तीत्र	×	75	
६ वर्षमानस्तोत्र	×	11	
७. स्तोत्र संग्रह	×	77	44-04

४४७८. गुटका सं० ६८ पत्र स० १६-११४। ग्रा० २३×२३ इख । भाषा-स्स्कृत । मपूर्ण । दशा सामान्य।

विशेप-नित्य पूजा एवं पोडशकारणादि भाद्रपद पूजामो का सग्रह है।

४४७६, गुटका स० ६६। पत्र स० ४-१०४। मा० ४×३ इश्च।

र. कनकावतीसी	×	हिन्दी	¥-23	
२ त्रिकालचौदीसी	×	53	<i>6</i> 2-4 <i>9</i>	
३ मक्तिपाठ	फलककीति	91	१७२०	
४ तीसचीवीसी	×	53	२१~ २३	
५ पहेलियां	मारू	n	२४-६३	
६ तीनचौवीसीरास	×	33	\$ % <i>६</i> ६	
७ निर्वासकाण्डमापा	भगवतीदास	11	<i>€७-७३</i>	
< श्रीपाल वीनती	×	33	20-80	
१ भजन	×	n	७ ६५•	
रै॰ नवकार बढी वीनती	ब्रह्मदेव	99 EI	o	
११ राजुल पद्मीसी	विनोदीलाल	53	\$०१− <i>६</i> =	
१२ नेमीश्वर का व्याहला	लालचन्द		दूर्ण १०१∸१०५	
४४८० गुटका स० १००। पत्र स० २-८०। मा० १०×६ इस्र। मपूर्ण। दशा सामान्य।				
१ जिनपचीसी	नवलराम	हिन्दी		
२। भादिनायपूजा	रामचद्र	»		
३ सिद्धपूजा	×	" संस्कृत	8-4 8-4	

EXE]	_		[गुरका-
४ एरीव्यवस्तान	वारिएम	पंसा त	¥-
१. बिनपुनानिकान (चैनपुना)	×	विश्वी	* −₹
C RÉCIAL	यानवराम	**	11-1
 मतावास्तोत्र 	माननु धानार्व	वस्तुतः	11-1
थ, शस्त्रमंतुष	स्वास्त्र ि	P9	15-4
८. बोबरपाण्ड्युका	×		१२ र
रधनस ण्डूना	×	**	55 E
१. एलम्बर्गः	×	•	11 15
र. पद्मरस्येहोपूचा	×	ह ्न त	11
१, अंग्रेसच्योगपुरः	×	र्गसङ्ख्या	10-16
Y चारमपूर्वा	×	84	Y
इ. सरसदीपूर्वा	×	दिल्ली	M
६६ तीर्वपूरपरिषय	×	-	17
🐤 बरक-स्पर्य के बंध पूरवें। बर्रांद का वर्छ	тх	•	41-1
(व. वीवपातक	नुबरशान		29-26
८. एक्षेत्रामस्तोपनामा			quest!
<u>हारवलुनेमा</u>	×		65-61
११ वर्धनलुटि	×	n.	15 14
१२. बादुवंदना	यगाजीयाव		62-12
E1 वंबरद्वीय	44.64	fipti	42-48
रूप बोगीएको	विगरास		45-44
१६ वर्षाने	×		-
श्वरत गुरुवा स+ १ १।	पत्र वं २–२१ । बा	व्हे× देदचा मता⊷	बस्य । रियम-पर्या
बर्जुर्छ । बडा-बासान्य । श्रीवीय बाला ना	गाउँ है ।		

बायल्या । निम्म वर्षियो के यहाँ वा मंद्रशृ है।

ent of g with g of			
धुंदका समह -			_
, १ दून क्यों गया ती न्हानें	×	हिची उ	[EV3
्र विन दिव पर लाऊ में बारी	राम :		S
र अधिया नगी तैंडे	×	17	÷
, इंगिन नुख पायो लिनत्र देखि	×	19	₹ .
४. लान मोहे नार देवन की	बुषजन	37	₹
 जिननों का ब्यान में मन लिए उहते 	×	77	rrv
्र ७ प्रमु निन्दा दीवानी विद्यावा कैने किया :	सड्या~ 🗴	77	\$
 भ नहीं ऐंडी जनम बारम्बार 	नवलराम		Y
६ मानन्द नङ्गल मात्र हमारे	×	n	• '
१०. जिनराच मटी चोही चोत्वो -	- नवनराम	53	Y
११ लुम पय लगो ज्यो होय मना		17 ¹⁹	ý
१२ धारदे मनकी ही कुटिनता	37	19	У
१३ सदन ने इया है धर्म को दून 🙄	7)	73	*
१४ हुल काह नहीं दीने दे माई	<i>"</i>	23	ę.
१४ मारगुलाच्यी :	नवनरान	# ·	₩.
१६ दिन बर्गा चित नगाय मन	11	93	¢
१७ हेना जा मिनिये भी नेनज्वार	73	n	- v
१८ न्हारी नाच्यो प्रमु नू नेह	27	57	•
³ €. यों ही संग नेह नम्बो है	93	27	*
२०. या पर नारी हो जिनसम	22	77	٤
री. मी मन या ही बा ताच्ये व	73	22	٤
२२, धनि बड़ी ये नई देते प्रष्ट नैना २३ वीर से पीर मोसी कासी कृहिये	22	57	£
२४ जिनस्य ध्याती मनि भाव मे	33	"	٤
२१ मनी जाद जादी पति की समकावी	n -	77	? o
रूट प्रहुकी म्हारी विनती भववारी हो नाव	27	n	₹o
ुं गा नग्याय हा सञ्च	11	27	{
	1	,	₹ ₹

ix]			[गुरवा-सम्ब
४ एरीभारतीत	वाविसाम	र्गसरच	* *
६. बिनपुरानिवान (बैक्पूना)	×	ferti	₩~{₹
६. सहरामा	चामवराव	•	11-1
 नत्त्रवरस्तोत्र 	नामनु याचार्व	बस्हरू	11-11
ब, यस्त्राचेंसूत्र	समायानि	**	1821
 बोलहरारलपुरा 	×	w	२१ र४
१ वस्त्रका ल्यूका	×	87	रह देर
११ प्रमान पुरा	×		11-11
१२. पञ्चपरमे हीपुत्रा	×	िली	to
१६ मंधेलपीयुका	×	र्वसङ्ख	in-it
१४ योशपृता	×	99	¥
१३. रास्तरीपुता	×	(jed)	٧t
१६ डीर्वकुरपीरबन	×		44
१७ - गरम-स्वर्ग के अंत्र कृषी मानि का	र्रार्शभ 🛪	77	A# #
१०. मीमध्यक	भूबरवास	-	126-48
१८. दमीवायकोपमाण		*	40-41
२ इत्यानुरेका	×		41-44
२१ वर्षवस्तुवि	×	h	48 44
२९. बाहुर्यसमा	वदारवीक्स	**	42-62
२६ पंत्रमञ्जूत	करकर	Sprill	42-44
१४ गोगीयको	विगयम्	10	46-44
रा८ प्रवर्मि	×	lia.	ya-4
११वर शुरुकास १ र प्रपूर्ण । स्था-काराज्य । जीतीय बाह्य		म ×स2 इ.च । सला-	बस्य । दिश्य-वर्षः।
श्चर गुरुष च १ र		१८८४ इ.च.) वादा -वि	(स्त) व्युर्व। ^{इक्क}

क्षामान्य । निम्म वरियो के क्यों का श्रीकृ है ।

सुटका•समह -			[ˈ ६ x੩ [;] ³
१ भूल क्यो गया जी म्हानें	× `	हिन्दी दे।	२
२ जिन छनि पर जाऊ मैं वारी	राम ",	73	₹
३ मिलमा लगी तैंडे '	×	1)	₹ ,
 इगिन मुख पायो जिनवर देखि । 	×	37	२
४. लगन मोहे लगी देखन की	बुधजन	**	₹
६. जिनजी का ध्यान में मन लिंग रही।	×	97	ą
🛴 ७ प्रमु मिल्या दीवानी विद्योवा केसे किया र	सइया [√] ×	"	¥
नहीं ऐसो जनम वारम्बार	मवलराम '	53	*
६ मानन्द मञ्जल माज हमारे 😶	×	"	¥
१० जिनराज भजो सोही जीत्यी	नवलराम	17	¥
११. सुम पय लगो ज्यो होय भला	"	77	ሂ
१२ छाडदे मनकी हो कुटिलता	11	>>	*
१३ सवन में द्रमा है धर्म को अमूल ।	17	39	Ę
१४. दुल काहू नही दीजे रे माई	×	13	Ę
१५ मार्गलाचो ।	नवलराम	22 27	Ę
१६ जिन चरणां चित लगाय मन	53	n	b
१७ हे मा जा मिलिये थी नेमकवार	5>	77	ts
१८ म्हारो लाग्यो प्रभु सू नेह	27	99	= =
१६ या ही सग नेह लग्यो है	11	93	€
२० र्था पर बारी हो जिनराय	11	33	3
-२१. मी मन यां ही सग लागो	19	35	3
२२ पनि घटो ये मई देखे प्रभु नैना	33	33	٤
२३ वीर री पीर गोरी वासी कहिये	\$3	77	१ <i>०</i>
२४ जिन्दाय घ्यायो भवि भाव से	53	79	? o
२४. समी जाय जादी पति को समकावी २६ प्रमुत्री म्हारी विनती प्रवधारी हो रा	33	77	??
१४ अनुना न्याया अवधारा हा रा	ज ₉₃	77	tt

₹K8]			[गुरका-संगर
२७ हैं किया बैधिने हो कड़ार कर	नवसराय	हिस्सी	ŧ٦
र प्रदुष्ट्रग नावो धरिक बन	ь		१र
१८. वो मन म्हारो विनवी सु साची	*		11
र प्रश्न प्रकृतिर मेरी नाफ करो है।		>	11
३१ बरतन करत सब सब वसे	,		**
३१, देवन सोविक्स दे	#	-	ξA
१३ म ठ दूर वेराने किट फी नी	*		**
१४ देव दीन को दवाश जानि नरस करत	वासी _{हर}		
३४, बाची है भी जिब विकास खारि	77	79	n.
३६ प्रदुषी म्हारो प्रस्त नुवी किरातम	77	19	17
३७ ने विका किए नाई	19	=	64-50
 मैं पूर्ण फल नाछ सुनी 	10	#	8
१८, जिन गुनरन की बार	*	•	*
 शानप्रिय स्तुति तंत्रण करि के 		**	15
Y१ विश्वनानी की क्या क्या मैंग जान	संदर्भन	#	
४२ वैदी नहीं न काडी जिला	9		8
४३ एक मध्य कुते ब्रह्म गीरी	ধানবংশ	*	
४४ मी वे यस्ता क्र ब्वार रिखब दीन वेट	ु बुचनन	*	*
Y%, घाना रंड में टंड क्योगी बक् य	×		
४६ नेया यन बच्चनर बरलवे	×	*	46
४७८ चैंग दूम चोटी खानोनी	dicasia		
प्रस्त वहीं देशवाद दिला २	चीलवरान	29	
४६. व्या वर वरशह	×	Pr	२१
 नारन घरनी चीन शुक्राणी वीरै 	×	29	,
११ कृति नौदारे जिल्लाम रेक्षोची	×	•	-
१२. वद स्थिता रे वार्ड	बुनदास	29	r

सुटका-सप्रह]			[६४४
४३ माई सीही सुगुर बलानि रै	नवलराम	हिन्दी	२३
५४. हो,मन जिनजी न नया नही रटै	11	39	979
४४, की परि इतनी मगसरी मरी	3)	1)	भपूर्ण
४४ ≒३ गुटका म ० १०३।	पत्र म० ३-२०। इ	ग०६×५ इखा मपूर्णाद	या- जीर्छ ।
विदोप-हिन्दी पदा का सप्रह			
४४८४ गुरका मः ५०४।	पन स० ३०-१४४	!। घा० ६×६ दश्र । ने० व	नाल स० १७५८ कार्तिक
सुदी १४ । प्रपूर्ण । दशा-जीर्स ।			
१ रत्त्रवयूजा	×	সাকুর	₹०—₹₹
२. नन्दीदगरहीप पूजा	×	77	33-YU
३ स्नपतिविधि	×	गस्त्रन	よ ≃−É ∘
४ क्षेत्रमासपूजा	×	33	₹0 - ₹ ४
४. क्षेत्रपानाष्ट्रन	×	•	& & & *
६. यन्देतान नी जयमाना	×	**	4 x - 4 e
७. पार्शनाय पूजा	×	97	৬০
८ पार्रेगाय जयमाल	×	11	90-97
६ पूजा भगाव	×	सस्त	۷Y
१० नितामिता की जयमान	ग्रह्मग्रायमञ	िर्दा	৬५
११ पतिबुष्यस्तवन	×	शतृ त	<i>97-95</i>
रे॰ विषयमान वीस तीर्पन्द्रर पूजा	नरेद्रवार्ति	मम्ब	= 7
१३ पधारतीवूना	1"	29	57
१४ रानावनी पत्री की विषिधी के नाम	72	हिन्दी	EX-E 0
रेष्ट साल गगन में।	n	**	55-5E
१६ जित्रमहमत्ताः	पागाधर	गम्मुस	<u>-</u> -€∘₹∘₹
६० शिवसादिविधात	×	**	₹•२–१२१
रमः वता की विभिन्ने का कोरत	¥	ि दी	१२१-१ १६
४४म्४. गुरुका सद १०४। १त ग० ११०,। हान् ६०६ इ.म.।			
		*1	-

exe]			[गुरमु सम्ह,
१ वर्षमुत्रसेन बाव्ह बावा	थगराज	िंगी	ब्रमूर्त २४-४३
रे. विशेश संग्रह	×	-	vi-et
	ित्रज्ञ वर्षियों के	नायक माधिका शबन्धी	परिता हैं।
३ बाररेग शकीती	×¹	विभी	व्यूष्टं ६१-६१
४ मस्ति	नुवसार	29	£5-4#
१४म६ शुरुका मं० १०६।	प्रम प्र≀मा	६८६ इ.स.। मारा <i>व</i> र	क्त । पूर्ण । शेर्य ।
विभेपविकासकार्वि कृत सरकार	र्वपूर्व है		- 1
अथवन शुरुषासी है जान	स्थं १०–६४ । या	१४१ इस । बाला-र	हिन्दी में बाल वें डिप्ट
र्वेषास तुरी १ । स्पूर्ण) वदी-नामस्य ।			
रै इप्लब्स्विणियीन दिन्दी वस होता नहिए	पुर्वाराम	हिन्दी	20-27
नेकर १	शहने रेक्टर वैद्या	स्द्रपुरी १४ ९ जान	८६ १६६७ बहुरों ।
মনির গাত ংম্বর ব্যবহারতাতী	रहनी रन विष्यापन	दन दालस है।	
नरमधि स्वनित्तु छन्	छ महत्तरि वहि या द	हितियम पद्देश १ ।।	
टीका प्रति एशातई वर्गन	। লাখহ খাদ্দেখা	वद रनता बीवार्ता व	रत देशह सेपा बरीब
महो। पर ते वयन महिं। पूज्य वैसर्त नागर	(साच नागिज्यी । स्व	बर्छा बरस्वतीनी तहा	बरी 🛊 बरानती जिसर 🎫
मतः वद्दी नुमनदः यास्त्रत्तं वाली १। वाली	धर्ववान गरी वेहना कु	a वरी नुसी विवही व	सद्वेगर ॥
	भ व मीलि बहिया ह	-	
		धि वकाइका। ११।	
डोबा-चंत्रमधि नत्र क्य सक			
नक्री निवद महुनार निवद न्यान्या विस्था प	म्ब गाहि हुव्या रहा।	तिन्त्र गारक हूँ वाहर	विवासक हूं था घर हुए।
	क्षि बस्बर विश्ववस्ति		
		न गरमान्द्र क्या॥ ११	
द्रीका—समान काँग तरन र म्			
बीं। तथि दात्र मौतत यह ॥ वरि यो क्षारा नवजे दिव राज गाँउ गाँउ तीर श्रीक्षत वनदि त्यार विवय जी बस्ती वर्ग मतौर करमञ्जी प्रस्कृतव यो करमञ्जी अस गरी भारता नीती य वेदी ब्यूरो अवसी कारते वौद्यवित राज निम वर्गर			
	ति भागमाः नीमा यः मध	: ब्यहा क्ष्मता सम्तः	ELEGERA CHE LEG AND
मरत भी सहयो क्य भन्न धानह ।			

```
र्टका समह 🛾 ]
                  वेद बीज जल पयरा गुरुवि जउ मटीम घर।
                   पत्र दूहा गुण पहुपवास भोगो लिएमी यर ॥
                   पत्तरी दीप प्रदीप प्रधिक गररी या दवर !
                   गनस्जेगाति शव पन पामिइ ग्रंबर॥
                    विसतार योग खुचि जुगी विमन पग्गी निसन पर्गाहार भन ।
                    भगत देनि पीपल भतद रोपी गनियाण सनुज ॥ ३१३ ॥
            अर्थ-मूत्र वेद पाठ तीनी बीज जल पाणी तिनी गिययण तिये वयणे गरि जष्टमाशीस हव पिगृद ।।
 दूहा ते पत्र दूहा गुण ते कूल सुग प वाम भागी भमर श्रीकृष्णाजी वेलिड मानल्ड परो विस्तरी जगत्र नद जिगै दीप प्रदीप !
  व दीवा भी मधिक मत्यात विस्तरी जिके मन मुधी एए गड की जाए इ तीकी इसा पात पांमद। मबर कहिता स्वर्ग
  ना गुरा पामे । विस्तार वरी जगन्न नइ विषद विमल बहीना निर्मल श्रीविसनजी चेनि मा धमी नइ वहण हार धाय
   तियो विसा प्रमृत रूपसा वेति पृथ्वी नह तिगह प्रविचन पृथ्वी नई विवराज श्री वन्यास तम वेटा पृथ्वीराजह गाया।
              हति वृत्वीराज गृत भूषण कामणी बेलि तपूर्ण । मुण्णि जग विमल वानणार्थ । सवन् १७४८ वर्ष वैद्याल
   मासै कीयमु पक्षे तिथि १४ भ्रष्टुनागरे लिखत उरिएयरा नग्ने ॥ थी ॥ रस्तु ॥ इति मगल ॥
     २ कोवमजरी
                                               X
                                                                  हिंदी
                                                                                               XX
      ३. विरहमजरी
                                              नददाम
                                                                                           44-68
                                                                     17
      ४ बावनी
                                               रेमराज
                                                                              ४६ परा हैं
                                                                                           ६१-६७
                                                                     11
      ५ नेमिराजमित बारहमासा
                                                ×
                                                                                                EU
                                                                     17
       ६. पुच्छावित
                                                ×
                                                                                           ₹E-50
                                                                     11
                                           यनारमीदाम
       ७ नाटक समयसार
                                                                                            44-518
                                                                      "
                 प्रथमम गुटका स० १०७ क । पत्र स० २३४ । मा० ४×४ इख । विषय-पूता एव स्तोत्र ।
        १ देवपूजाप्टक
                                                 ×
                                                                    सस्रुत
                                                                                              2-8
        २ सरस्वती स्त्ति
                                              शानभूपरा
                                                                      33
                                                                                              Y-Ę
        १. श्रुवाष्ट्रक
                                                  X
                                                                       11
                                                                                              4-19
         ४ ग्रुघ्स्तवन
                                               पातिदास
                                                                       33
                                                                                                 5
         ५, गुर्वाष्ट्रक
                                               पादिराज
                                                                       17
                                                                                                 3
```

(rc]			[गुटका-€न्द	
६ तरस्वती जयमान	वस्यितराम	हिन्दी	t=-tt	
७. दुक्तपनाना	99	**	11 1 2	
मणुष्यपर्गावधिः	×	र्गरङ्गन्त	१६-२।	
≅ निवस् कृता	×	,,	41	
t वनिदुष्टराहर्यनास्त्रुहा	सरोदिश्रद	**	11-11	
११ गोवसकारगाङ्गकः	×		11-16	
११ श्यनकणद्वा	×	29	\$ £- Y?	
१६ नन्धेशस्त्रमा	×		¥1-¥1	
१४ जिननहष्यनाम	च <i>न्</i> गापर	*	84-16	
१६. महक्कतिर्विषत	×		\$2-58	
१६ शम्यकार्यनपुत्रा	>	n	44-44	
१७ मरम्ब्रहीसपुनि	माग्राषर	सम्हण	64-66	
६ सम्बद्धमा	×	81	† a—a †	
१६ वहरियन्तवस	×	n	wţ-#1	
९ स्वान्यसर्वाचयान	×	*	* !- #!	
२१ चारित्रपुता	×		क र्−द१	
२ - एलप्यसम्बन्धः तथा विवि	×	प्राष्ट्रत धरहण	t-e t	
२६ बुज्यस्यान विकि	×	संस्कृत	27-518	
रे४ व्यप्तिमध्य नावसङ्खा	y		666-45	
१६ भट्टाक्षिपाद्रमा	×		646-45	
२६ विद्याचनी	×	23	125 1	
₹ ৬ ব ৰ্গৰমণুতি	×	17	646-48	
 पारावसा त्रनिवीधनाइ 	दिवनेनागीति	रिन्दी	112-11	
	।। ३० लक् विद्वार	E II		
ची जिल्लासम्बद्धाः स्टेबि श्रुव विश्व [ा] अस्त्रवेशी ।				

बहु बारावता तुषिचार **बंधे**रे सारी चीर ।। १ ।।

हो क्षपक वयए। ग्रवधारि, हिव चाल्यो तुम भवपारि। हो मुभट कह तुभा भेउ, घरी समिकत पालन एहु ॥ २ ॥ हवि जिनवरदेव ग्राराहि, तू सिघ समिर मन माहि। मृत्या जीव दया घूरि धर्मा, हिव छाडि मनुए वर्मा ॥ ३ ॥ मिथ्यात कु सका टाली, गरागुरु वचनि पाली । हिव भान धरे मन धीर, ल्यो सजम दोहोलो बीर ॥ ४ ॥ चपप्राचित करि व्रत सुधि, मन वचन काय निरोधि । तु क्रोध मान माया छाडि, ग्रापुण सु सिलि माडि ॥ ५ ॥ हिन क्षमो क्षमावो सार, जिम पामो सुख भण्डार। तु मन्न समरे नवकार, घीए तन करे भवनार ॥ ६॥ हिन सने परिसह जिपि, धमत्तर ध्याने दीपि वैराग्य धरै मन माहि, मन मावड गाहु साहि॥ ७॥ सुरिए देह भोग सार. भवलधी वयरा मा हार। हिव मोजन पारिए छाडि, मन लेई भुगति माडि ॥ = ॥ हिन छुए। सए। पुटि मायु, मनासि छ। हो काय। इ द्रीय वस करि धीर, कुटव मोह मेल्हे वीर ।। ६ ॥ हींन मन गन गाठू वाधे, तू मरु समाधि साधि। जे साधो मररा सुनेह, ज्ञेया स्वर्ग मुगतिय भरोय ।। १० ।।

X

- -

X

X

X

शन्तिम भाग

है व हइ डि जािश विचार, घाषु कि हइ कि ि सु प्रपार ।
लिमा म्राशसास दीख्या जासा, सऱ्यास छाडो प्रासा। १३॥
सन्यास तराा फल जोइ, स्वर्ग सुद्धि फिल सुन्तु होइ।
वित श्रावक कोल तू पामीइ, लही निर्वास मुगती गामीइ॥ १४॥
जे भिरा सुस्तिन नरनारी, ते जाइ भविव पारि।
धी विमलेन्द्रकीर्ति कहा। विचार, म्राराधना प्रतिवोधसार॥ १४॥

इति श्री माराधना प्रतिवोध समाप्त

#*]			[गुरका-सम्ब	
	देश्य पीर्वि	र्वस्तृत	tu -te	
१ <i>वर्गस</i> पूजा	४३ ।पोटियम	्रिया	₹# - ₹₹	
११ मछवरयमगूना	युवपार	वलुद	gee itt	
११. पश्चरत्वात्त्वतीवारंत पूरा	भ क्षानुबुक्त	P	बपूर्ण २११-६१	
४४व्यः गुरुवा संव	१९८६। यस नौ १२ । बा	ध्यः दश्र । यागा-हि	ल्ही ३ पूर्ण ३ वया-जीर्स ।	
विषयहमनसम्बद्धाः	वनारजीयान	ध ्नित	१- 91	
१ मचुमहत्त्रसाथ	×	क्षंड्य	₹ २ –₹ø	
६ स्टबन	×	परात्रं य	ब्यूर्ज १	
Y 9E	बन्धन	हिन्दी	39	
		में राग १७३३	मलोन पुर्च ६	
\	न 👪 वर नमी तेरी ।			
धरप्रदर्शन सेनम मोचर जो, मारक पुरुषण केटी ।। टेप ।।				
ताल बाल वालनि नुत कं⊈, वरन कंद वी वेरी ।				
करि है मौन सलवित वीं जब वीर्द नहीं सारव नेरी ॥ १ ॥				
प्रकृत प्रज्ञत सकार यहन वन नीनी व्यक्ति वतेयी ।				
निष्या बोह सर्वे संघणी, पह तस्य है नेरी 11 र 11				
-	। रचन बीद यह ग्रीपक निर्देशक			
	मात परोड भाग मन, भी मानड			
	। विक्रमप्तवार्थि सार्थनी याच या			
T	अवराज अवेदान परवी, बहुवें हुं	in the same of		
 पद-मो दिव विदल्तद गणीन 	भग राव	हिल्दी	ŧ	
६. पेतन समीद देखि परमाहि		क्र व र्ष	f B	
🖦 वे बरमेक्सर्य मी बरका विकि	20	*	27	
न, वर्तात पारिवाद विकोप मा	ग्राड ×	**	1,1	
 চলকৰ মন্ত্ৰীৰি বিধিয়া 	ė .	-	\$4-\$£	

१०. पनमगति वैति	हर्षनीति	िंदी	म० १६८३ श्रावमा प्रवूर्ग
११ पंच संधावा	×	27	33
१२ मेषगुमारगीत	पूना	हिंदी	te-14
१३ भतागरम्तोत्र	हेमराज	11	€
१४ पर-प्रव मोहे गपून उपाय	रुपचंद	1)	27
१४. पंचयरमेष्टीम्तवन	×	সাহা	34-08
१६ शातिपाठ	×	सस्ता	2 0 − 2 5
१७ स्तपन	घागापर	H	५ २
१८ बारह भावना	म विष्राचु	हिरी	
१६. पचमात	मपचद	n	
२० जगरी	38	m	
78 17	11	27	
२२	11	11	
२३. "	दरिगर्	11	

गुनि मुनि जियरा रे तृ तिभुगन या राउ रे!

तृ तांज परपरवारे चेतिस महज मुभाव रे।।

चेतिन सहज मुभाव रे जियरा परम्यों मिनि यया राप रहे!

प्राप्ता पर जाण्या पर भप्याणा घडमइ दुग्य भणाइ सहे।।

प्राप्ता प्राण् चरणमय रे जिउ तू रिभुवन का राउ रे।।

थंसण एगण चरणमय रे जिउ तू रिभुवन का राउ रे।। १।।

परमिन वित्त पिड्या रे प्राण्या मूढ़ विभाव रे।

मिय्या यद निट्या रे मीहा। मीहि भएगाइ रे।।

मोहा। गोह भएगाइ रे जिय रे मिय्यामद नित्त माचि रह्या।

पट पिटहार राङ्य मिदरावत ज्ञानायरणी भादि कह्या।।

हिंड चित्त मुलाल भटयारीए। भ्राप्तावदीग्रे चताई रे।

रे जीवडे करमिन वित्त पिट्या प्रस्थाया मुढ़ विभाव रे।। २।।

1 44]			[गुरका-समर्	
तू मति बोलाह न चौदा रे वैदिन मैं लक्षा बात रें ।				
मनजन दुखरान गरै विश्वमा गरै विवास रै ।।				
तिनका करीड़ विशास दे जिससे तू मुद्रा मंदि विश्वयु करे ।				
सम्बद्ध बच्छ बच्च बुखबायक तिवस्त्री यू निव वेह करें ।।				
E72	मारो माता यारे प्रिष्टा गाँह सम्माः अस्य र ६			
† :	रे को ब नू यति को पक्षि व चीता वैदिव वे वक्का वाच है।।			
ते बनवाहि बाने रे रहे यक्तास्ववनाह रे ।				
- Pro	ल विषय जबारे, प्रवटी बोवि नु	माइ रे ।।		
20	जनटी जोति सुवाह रै चीवडे विष्या रैन्सि विहासी ।			
स्वारमेद कार ल जिल्हा किलिया ते क य हुवा वाली ।:				
मुद्दार प्रवर्ग गेच वरनेच्ये किनवे कार्याः वास रे ।				
वहे वरिवह जिम निवुचन वेषे रहे संतर स्वयनाह रे ॥ ४ ॥				
रे४ नस्यान्यमंदिरस्तीनशाचा	वनारबीयाव	हिल्सी में काम ह	७३१ वालीन दुरी है	
 भ्य निर्वालकाण्य नामा 	×	माहव		
१६ पुत्रा तबह	×	र्वहरूते -		
४४६ शुटकास १६। वन वं १६९। या ६८४ इका विकास १६ कारत दुर्व ६। सर्गारण-नीर्लयोगी।				
वियोग-निर्मित विश्वत	। एन बयुउ है ।			
१ सन्धिरदेश की क्या	×	ft-å	\$\$4	
१, वन्या त्त्रविद्यस्तीयवाणा	वनारबीया च	**	64-64	
३ - वेर्रियमान सा बारहसाला	×	म अपूर्ण	₹ 7- ₹\$	
४ जरही	দীনি ৰ ন্থ	79	11	
१, तरेश (नृत होत यरीरपो वानिर मापि मार्ड) × #			•	
१, वर्षस (भी जिमस्य के व्यान सी उद्युष्ट मोहे नामे 🥫				
 विशीनुकाणकारा 	भनवनीदान	,,	10-11	

			ि ६६३
गुटका-सम्रह]	~	हिन्दी	₹ \$ % —3 €
८ स्तुति (भागम प्रमु को जब भयो)	×	16.41	
६ बारहमासा	×	"	3€⊍€
१०. पद व मजन	×	33	४०− ४७
११ पार्श्वनायपूजा	हर्षकोत्ति	57	\$ 4- \$\$
१२ धाम मीवू का भगडा	×	93	५०-५१
१३ पद-काइ समुद विजयमुत सार	×	59	<u> ५२–५७</u>
१४ गुरुमो की स्तुति	मूधरदास	37	, दर-४६
१५ दर्शनपाठ	×	सस्कृत	६०–६३
१६ विनती (त्रिभुवन गुरु स्वामीजी)	मूषरदास	हिन्दी	६४–६६
१७ लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रमदेव	संस्कृत	<i>६७−६</i> ⊏
१ पद-मेरा मन वस कीना जिनराज	×	हिन्दी	90
१६. मेरा मन बस कीनो महावीरा	हर्पकीति	19	७१
२० पद-(नैना सफल भयो प्रभु दरमण पाय)) रामदास	95	७२
२१ चलो जिनन्द वदस्या	×	31	65-63
२२ पद-प्रभुजी तुम मैं चरण शरण गह्यो	×	13	৬४
२३ भामेर के राजाओं के नाम	×	ท	৩২
8A " "	×	"	७६
२५. विनती-चोल २ भूलो रे माई	नेमिचन्द्र	77	30-26
२६ पद-चेतन मानि ले वात	×	27	30
२७ मेरा मन बस कीनो जिनराज	×	27	40
२८ विनती-बद्ग श्री भरहन्तदेव	हरिसिंह	33	८१- ८२
२६ पद-सेवक हू महाराज तुम्हारो	दुलीचन्द	35	5 7- 58
३०. मन धरी वे होत उछावा	×	77	~ ~~ ~~Ę
३१ घरम का ढोल बजाये सूर्णी	×	39	±0
३२ भव मोहि तारोजी जगद्युरु	मनभाराम	'n	-5¢
३३ लागो दौर लागो दौर प्रमुजी का ध्यानमे	मन । पूरसादेव	11	
३४ मासरा जिनराज तेरा	×	17	
		**	44

118]			्रिटका संबद
३६, पु वासे क्यों तारीश	×	Sprits	41
३६. मुन्दारे वर्ष देवल हा	चीचराज		i
३७ सुनि १ रे बील मेरा	मनकाराव	_	2 -21
रेक भरतय २ बेसार चतुर्वति दुस तहा	×	**	t;-ct
 शीरेवकुनार द्वारो वर्ती व क्लारी वार 	×	,	ex
४ बल्खी	×		£4-2#
४१ पर-विनती कराको श्रृ यानो वी	विध्य पु नाव	,,	ξq
Y2, वे भी मबू दुव ही क्लारोंवे पार			u
४६ प्रमुची नीक्स से तब बन बाल	×		ei.
४४ वंषू भीविषयन	क्ष्मक्ष्मीर्चि	•	t -t t
४%, बाजा बजम्मा प्यारा २	×		1.3
४९ सचल वरी हो बहुवी	नुबालगर		
XW, 9K	वेशविष्	w	1 4-4 X
४० चटका चलवा नाही रे	पूजरवाध	**	* *
१९. वकामराको व	वलवुद्गानार्थ	नंश्ह्य	\$ m-\$m
 चौनीय रीलॅंकर स्तुधि 	Pa	BerG	28-25
६१ नेम्युनारगर्वा	n	m	846-44
इ.५ श्रीमस्यरं की क्या	27		\$ 55-AL
११ क्लंदुइ की विश्वती	10		125-11
द√ ५९—धर व गर्व कृ वीशराल	**		646-20
इ.स. स्क्रीय वाळ	w		१४४ ११
प्रथमी सुक्रमा सः ११ । पर	थे १४३३ मा	९XY इ.च । भागा-हिन्दी बस्तर	i t
१ जिल्लामा	×	चेरक्ट	4-46
२ मोश्रयमम	बंबस्या मि		78-YE
१ नव्यमस्तिक मा	नामपु च		10-1
¥ पंचर्ववत	***		£ -44

५ कल्यारामन्दिरस्तोत्रभाषा	वनारसीदास	हिन्दी	६≂−७५
६ पूजासग्रह	×	**	602-50
७ विनतीसग्रह	देवाष्ट्रहा	57	१०२-१४३
४४६२ गुटका स०११ । पत्र स०२६ । घा०६६ै×४६ै इच । भाषा–सम्कृत । पूर्श । दशा–सामा य			
१ मक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	सस् रत	₹-€
२. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रमदेव	21	११
३ चरचा	×	प्राकृतिहन्दी	88-28
विशेष—''पुस्तक भक्तांमरजी की पुर लिखमीचन्द्र रैनवाल राज्य की है। कि रूप रूप			

विशेष—''पुस्तेक भक्तामंरजी की प० लिख्मीचन्द रैनवाल हाला की छै। मिती चैत मुदी ६ सवत् १६५४ का मे मिली मार्फन राज श्री राठोडजी की सूपचासू।'' यह पुस्तक के ऊगर उल्लेख है।

४४६३ गुटका स०११२। पत्र स०१५। ग्रा॰ ६४६ ड च। भाषा—सस्कृत। ग्रुर्गा। विशेष—पूजामो का सम्रह है।

....

४४६४ गुटका स० ११३। पत्र स० १६-२२। ग्रा० ६३×५ इ च । ग्रपूर्ण । दशा-सामान्य । श्रथ डोकरी श्रर राजा भोज की वार्ता लिख्यते । पत्र स० १८-२०।

डोकरी ने राजा मोज कहां डोकरी हे राम राम | वीरा राम राम । डोकरी यो मारग करा जाय छै । वीरा ई मारग परथी माई घर परयी गई ।। १ ।। डोकरी मेहे वटाउ हे वटाउ | ना वीरा थे बटाऊ नाहीं । वटाऊ तो ससार मांही दोय मीर ही छै ।। एक तो चाद घर एक सूरज ।। २ ।। डोकरी मेहे राजा हे राजा ।। ना वीरा थे तो राजा नाही । राजा तो ससार में दोय मीर ही । एक तो मन्न घर एक पाएगी ।। ३ ।। डोकरी मेहे चोर हे चोर । ना वीरा थे चीर ना । चोर तो ससार में दोय मीर ही छै । एक नेत्र चोर मीर एक मन चोर छै ।। ४ ।। डोकरी मेहे तो हलवा है हलवा । ना वीरा थे तो हलवा नाही ।। हलवा तो ससार में दोय भीर ही छै । कोई पराये घर वसत मागिवा जाइ उका घर मे छै पिए। नट जाय सो हलवो ।। १ ।। डोकरी तू माहा के माता हे माता । ना वीरा माता तो दोय मीर ही छै । एक तो उदर माही सू काढ़े सो माता । दूसरी घाय माता ।। ६ ।। डोकरी मेहे ते हारघा हे हरघा । ना वीरा ये क्या ने हारघो । हारघो तो ससार मे तोन मीर ही छै । एक तो मारग चालतो हारघो । दूसरी वेटी जाई सो हारघो तोसरी जैकी भोडी मस्त्री होइ सो हारघो ।। ७ ।। डोकरी मेहे वापडा हे वापडा । ना वीरा ये वापडा नाही । वापडा तो च्यारा मीर छै । एक तो गऊ को जायो वापडो । दूसरी छघाली को जायो वापडो । तीसरो जै की माता जनमता ही मर गई सो वापडो । चौया थामए। वाण्या की वेटी विधवा हो जाय सो वापडो ।। डोकरी म्रापा मिला हे

855 3 [शुरुषा-स**म्** मिना। बीच जिल्ला नाणा हो शहार में आहि और ही ही। वैनी बार विरशा होती सी वां रिनतो। बर वे से केंगे गरदेस सु दाओं होती तो वां निवती । इक्टो सांवल आकार नी नेड बरत ती वी सक्तर तु । दीवरी वालेंग मी भीत पैराया आही को थी जिल्ली । चीवा स्थी पृथ्य निकारी । बोकरी बाल्या है जान्या । प्रतिमा नहे न करों ममती धाना । बुच्या धाई पारवा बीसार शरका ।। १ ।। ध बर्देर बोच्टरी एउटा बोज की बाली सरसर्व छ नेप्रस्थित ग्रहणा स्त्री रेश्वर (पण वे प्रत्येश का प्रदेश का प्रत्येश का विकेष---स्तीय एक कुटा ब्रेडड हैं। रुपार्क गुरुका सं ११≿ । यह सं १६ । यह ६०१ इ.स. काला-देल्यो । बदली । यहा-समान निर्मेष---पूना तंत्रह, जिनसङ्कर (सामाधर) एवं स्वयकुरतोय का श्रेषद है । श्परंक शुरुका सं ११६ । यह सं १६६ । था ५×६ इ.च । जला-बंदरह । पूर्व (स्वा-बंदी

विक्रेय-व्हरके में निवस श्राह संस्थेतकोत्त है ।

४ दूरमधीत योत 27-14 (Pri 1401 याजि पदाव सुरुष प्रदेशी वह वनु निवतत् जि बहुशीए । पोर्डि मनन्त नित कोटिति धासिक् शुर्क प्रव शुर्क प्रव केवहि सुर्यार स्तीप !! मार एती शन्दक क्षणी बात इस वावति गीरण तम तर्र । मनु होचि बरमस्य अलीह नवपुत्ता होत्र मिछ नवनिर्धि परि ।।

क्र∉ प्रचन संबद नेस्टिशासि नामन माप €। बीक्षमन्त्रति परता महानेई तथी मात्र बदल हो ।। १ ।। रेपा निवि चारित अधिपालक रिनक्ट विनक्ट जिल वनि सेमेड ये । धर्माक्षः मारिक वर्ष तथानै नालो हो पालो वर्ष यम गीवद ए । भीशन्ति नाली क्या अनि युनु बन्द शायन शासप् । बर प्रमा यह प्रशासितमाना । स्टास्टर वनासए ।। बालील परिवार बहुद संचित्रं पास्य नदि विदा प्रशासिकी । नीवनानीति करण रखनि मु भारित् वसु देख निमे ।। १ ।। कुण कुलार्क स्रकाशकाह जारवस् पीक्षत् जोड्ड जदान्यण शरवियो स् (रपिपति विक्रू रेति ह सहित्र पूर्व क्षेत्रपूर् कोन्ड्रकरि विद्वि रानीमी ए 🕫 रालियो जिमि क चैंड करिहि वनउ करि इम वोलइ। गुरु सियाल मेरह जिउम्र जगमु पवरा भइ किम डोलए । जो पच विषय विरत चित्तिहि कियर खिर कम्मह ताग्र । श्री भुवनकोति चरण प्रणमइ घरइ भठाइस मूलगुरा।। ३ ।। दस लाक्षरा धर्म निजु धारि कु सजमु सजमु भसगु वनिए ! सन्न मित्र जो सम किरि देखई गुरनिरगयु महा मुनीए ॥ निरगथु गुरु मद ग्रदु परिहरि सवय जिय प्रतिपालए। मिय्यात तम निर्द्ध ए। दिन म जैए। धर्म उजालए ।। तेरन्नवतह प्रखल चित्रह कियउ सकयो जम। श्री भुवनकोति चरण पणमज धरइ दशलक्षिण धर्म्म ॥ ४ ॥ सूर तर सब कलिउ चितामिए। दुहिए दुहि । महो घरि घरि ए पच सवद वाजिह उद्धरिग हिए।। गावहि ए कामिए मधुर सरे मित मधुर सरि गावित कामिए। जिएाह मन्दिर मनही मष्ट प्रकार हि करहि पूजा कुसममाल चढावहि ।। बुचराज भिए श्री रत्नकीति पाटिउ दयोसह गुरो। ष्पी भूवनकीर्ति मासीरवादिह सघु कलियो सुरतरो ॥

।। इति माचार्य श्री मुवनकीर्ति गीत ।।

प्र नाडी परीक्षा X संस्कृत १५-१= ६ भायुर्वेदिक नुसस्रे हिन्दी X 86-80€ ७ पारवैनाथस्तवन समयराज 200

सुन्दर सोहरा गुरा निलंख, जग जीवरा जिरा चन्दोजी। मन मोहन महिमा निलउ, सदा २ चिरनदो जी ॥ १ ॥ जेसलमेरू जुहारिए पाम्यउ परमानन्दोजी । पास जिरोसुर जग घराी फलियो सुरतरु मन्दोजी ॥ २ ॥ जे० ॥ मिए। मारिएक मोती जड्य कचरएरूप रसालो जी। सिरुवर सेहर सोहतउ पूनिम सिसदल भालोजी ॥ ३॥ जै० ॥

115]			[गुरुक्र-संब
•	इ सौद्धभएउ दिन मुख	and from the c	(3
	-	क्यत्व स्थानात्रः । क्रम्बनात्रीत्री ॥ ४ ॥ व	
_			11
•	वंदिनंड और वारि नव	- 4	
•		व वारोगी ॥ इ.स.चै. ।	ı
बरवत विश	तनु बी पनी थोहन सु	पनि भाषेगाः	
मुन सोर्ग सं	यर मिन इ मिन्डवर का	य परारोगी ।। ६ ।। वे	87
इन परि पर्स	जिल्लेस वेटवर दुने	विश्वारोगी ।	
जिल्लामा मृहि	(पक्षात्र लड् समयरा	न गुणरा रोजी स ७ स वै	112
1) इति :	यो पहर्शना यस् वन व म	तोऽर्थ ।।	
३४६८, गुरुषा स ११७३	रवर्द ३३ । या	1 ×1 101 101-	र्वसन्त हिन्दी। पन्नर्व ।
द्धा शंत्राच ।			
विधेय~ दिवित पाठी का बंद्र	। है । बर्बाए प्रसार एवं	विशिक्षांकि विकास के क्षे	सेंबर राष्ट्री ।
१४६६, गुरुका सं ११८।			-
•		fpd:	7
१ विका पदुष्क	नवसरान	right)	
२, भी जिल्लार पर शन्द के की	युक्तरस्य	79	x-• \
 इ. इ.स्ट्रॉव चरमणित शास्त्रं 	श्वकियम	*	£-1
४ फेटन हो तेरै रस्त्र निवान	विनवत्त		११-१२
इ. चेरल्यंश्ता	सम्बद्ध	र्मस् रू व	17 73
६ कस्त्राञ्च	ব্যক্ ৰি		**
 पर—माथि दिवशि वित नैसे नैसदा 	राम क् ष्ट	विश्वी	10
पत-प्राचनको नुमरि वेन	वयराम		2.4
१. पर-पुण्लमनीयी प्र वृ	बुश्राम ग रा		wX
१ निर्वाराष्ट्रीय संवय	विकास सूच क	8	1-6
	er.	त् १७२६ ते बुक्तवर मे व	केचरीजिङ्गे निया।
११ पळ्ळमातिमेलि	हर्वची र्वि	तिह न्दाः	ttx-t

रचनातं १६ ३ त्रदि विधि तं १०६

गृटका-समह]

४४००. गुटका स० ११६। पत्र स० २५१। भा० ६३×६ इख्र । ले० काल स० १८३० श्रसाढ़ बुदी ८ । भपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष-पुराने घाट जयपुर में ऋषभ देव चैत्यालय में रतना पुजारी ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। इसमें कवि बालक कृत सीता चरित्र हैं जिसमें २५२ पदा हैं। इस गुटके का प्रथम तथा मध्य के घन्य कई पत्र नहीं हैं।

४४०१ गुटका स० १२० । पत्र स० १३३ । ग्रा० ६×४ इख । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय सग्रह । वृर्ण । दशा-सामान्य ।

१ रविव्रतकया

जयकीति

हिन्दी र-३ ले० काल स०१७६३ पीप सु० =

प्रारम्भ--

सकल जिनेश्वर मन घरी सरसित वित ध्याऊ ।
सद्गुक चरण कमल निम रिवन्नत गुण गाऊ ॥ १ ॥
व गारसी पुरी सोमती मितसागर तह साह ।
सात पुत्र सुहामणा दीठे टाले दाह ॥ २ ॥
मुनिवादि सेठे लीयो रिवनोन्नत सार ।
सामालि कह वहासा कीया वत नदी मपार ॥ ३ ॥
नेह थी घन कण सहूगयो दुरजीयो थयो सेठ ।
सात पुत्र वाल्या परदेश मजीध्या पुरसेठ ॥ ४ ॥

छन्तिम--

जै नरनारी माव सहित रिवनो व्रत कर सी ।

त्रिभुवन ना फल ने लही शिव रमनी वरसी ॥ २०॥

नदी तट गच्छ विद्यागणी सूरी रायरत्न सुमूपन ।

जयकीति कही पाय नमी काष्ठासच गति दूपगा ॥ २१॥

इति रिवन्नत कथा सपूर्ण । इन्दोर मध्ये लिपि कृत ।

ले० काल स० १७६३ पीप सुदी = प० दगाराम ने लिपी की थी ।

्र धर्मसार चौपई

पं॰ शिरोमिए।

हिन्दी

३-७३

(wo]			[गुरफ्र-बंबर
 विपानहार स्तोत्रवाला 	মৰণগীবি	िली	€ Ž- 4 €
४ वतपूच शहक	×	५ सम्बद	
	वनाराम ने सूरत में	अवितिरि शी थी। वं	रक्टप । इसा है।
३. तिप <u>तिकत्ताकास्त</u> ्रक	धीपाल	वस्य	£1-£1
 परविशेषिर कृष्यति समरी 	दुपुरचन्द्र	दिल्ही	te.
 पद-प्राप्त समै सुकरो जिनदेव 	चीराज	29	t•
पल्लोबबती	वस्तरम्		t=-Lt
≋ प्रतित	पहित्रमान	-	१२६
	विरनार	नी नागा के सबब नूरा	ने विपि हिमानमा।
×४०२ शुदकास १२१	। पत्र है देश का द	XV} रहा । चला-दिन	Ĉ1
विसेप-विक्रित व्यवियों के पूर			
४४ वे ग्रहका सं १२२	* *		
विकेष-शीम मोबीसी भाग व			
स्त्रीत (भागपुनाचार्स) नवनीस्त्रीय (सं पत्रीची (भवस) पत्रश्रीतानस्त्रीय सूच्य			
(कियो) बादि पाठो का बंबह है।	ाच्याचा व्यवस्था नारस पर	व्यक्ति नगर्ययकः (क्या	(सम्बर्ग सामग्रदक धरा
• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •			. ~
धर ४ शुरुवास १०६।	। यथका नृहासा ५×	६ इक माना-बस्तुत हि	ना । स्वान्नाखबस्र ।
१ मत्रावरातीन ऋदि वन वहिय	×	र्वसम्बद	2-1
२, परणविधि	×	27	१ ५१
। जैनाचीती	गवलराव	हिली	२१-११
ध्यं थे. गुरुकासः १२४।	नगत ६६ । मा ७%।	रं रच ।	
वितेष-पूचायी एव स्तीनो का	र्थपर् है ।		
ak ६ शुक्कांस १९४1	पण वं इ.६.। सा०१२०	(४ दव । पूर्ण । सामान	बुद्धः। वद्यान्वातान्यः।
१ नर्म ब्रह्मीत पत्री	×	हिन्दी	
१. भौगीवस्त्रका चर्चा		w	

३ चतुर्दशमार्गणा चर्चा

×

द्वीप समुद्रो के नाम

:

हिन्दी

५ देशों (भारत) के नाम

🗴 हिन्दी

१ प्रगदेश । २ वगदेश । ३ किलगदेश । ४ तिलगदेश । ५ राट्टदेश । ६ लाट्टदेश । ७ कर्णाटदेश । ६ मेदपाटदेश । ६ वैराटदेश । १० गौरुदेश । ११ चौरुदेश । १२ द्राविरुदेश । १३ महाराष्ट्र-देश । १४ सीराष्ट्रदेश । १५ कासमोरदेश । १६ कीरदेश । १७ महाकीरदेश । १८ मगघदेश । १६ सूरसेनुदेश । २० कावेरदेश । २१ कम्बोजदेश । २२ कमलदेश । २३ उत्करदेश । २४ करहाटदेश । २५ कुरुदेश । २६ क्लाएदेश । २० कच्छदेश । २८ कौसिकदेश । २६ सकदेश । ३० भयानकदेश । ३१ कौसिकदेश । ३२ %

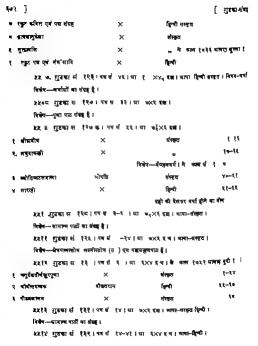
×

। ३३. कारुतदेश । ३४ कापूनदेश । ३५ कछदेश । ३६ म्ाकछदेश । ३७ भोटदेश । ३८. महामोटदेश । ३६ कीटिकदेश। ४० के किदेश। ४१ को लगिरिदेश। ४२ कामरू ग्देश। ४३ कुण्कुरादेश। ४४ कु तलदेश। ४५ कलकूटदेश । ४६ करकटदेश । ४७ केरलदेश । ४८ खगदेश । ४९ खर्परदेश । ५० खेटदेश । ५१ देश । ५२ वैदिदेश । ५३ जालघरदेश । ५४ टक्ला टक्क । ५५ मीडियालदेश । ५६ नहालदेश । ५७ तुङ्गदेश । ४= लायकदेश । ४६ कौसलदेश । ६० दशार्गादेश । ६१ दण्डकदेश । ६२ देशसभदेश । ६३ नेपालदेश । ६४ नर्तक-देश । ६५ पश्चालदेश । ६६ पह्नकदेश । ६७ प्र डदेश । ६८ पाण्ड्यदेश । ६९ प्रत्यग्रदेश । ७० मंबुददेश । ७१ वसु-देश । ७२ गमीरदेश । ७३ महिष्मकदेश । ७४ महोदयदेश । ७५ मुरण्डदेश । ७६ मुरलदेश । ७७ मरुस्थलदेश । ७८ मुद्गरदेश । ७९ मगनदेश । ८० मल्लवर्तदेश । ८१ पवनदेश । ८२ ब्रारामदेश । ८३ राढ्कदेश । ८४ महोत्तरदेश । **५५ महावर्तदेश । ५६ ब्रह्म**रादेश । ५७ बाहकदेश । विदेहदेश । ५६ बनवासदेश । ६०**.** बनायुक-देश । ६१ वाल्हाकदेश । ६२ वल्लवदेश । ६३ भवन्तिदेश । ६४ वन्दिदेश । ६५ सिहलदेश । ६६ सुद्धादेश । ६७ सूपरदेश । ६८ सुहडदेश । ६६ मस्मकदेश । १०० हुए।देश । १०१ हुर्म्मकदेश । १०२ हुर्म्मजदेश । १०३ हसदेश । १०४ हुहूकदेश । १०५ हेरकदेश । १०६ बीराग्रदेश । १०७ महावीराग्रदेश । १०८ महीयदेश । गोप्यदेश । ११० गाहाकदेश । १११ गुजरातदेश । ११२ पारसकुलदेश । ११३ शवालक्षदेश । ११४ कोलवदेश । ११५ शाकंभरिदेश । ११६ कनउजदेश । ११७ घादनदेश । ११८ उचीविसदेश । ११६ नीला-षरदेश । १२० गगापारदेश । १२१ सजारादेश । १२२ कनकगिरिदेश । १२३ नवसारिदेश । १२४ भाभिरिदेश ।

६ कियावादियों के ३६३ भेद

हिन्दी

X



गुटका-संप्रह

१ पद्मासिका त्रिभुवनचन्द हिन्दी ले० वाल १ दर् १५-२२ २. स्तुति X ॥ २३-२३ ३ दोहारातक स्पषन्द ॥ २५-३६ ४. स्पुटदोहे X ॥ ३४-११

४४१४ गुटका स० १३३। पत्र स॰ १२१। मा० ५३×४ द च। भाषा-सस्त्रत हिन्दी।
विशेष-छहढाला (चानतराय), पचमञ्जल (हपच द), पूजावें एव,तत्वार्धमूत्र, कक्तामरस्तोत्र मादि
वा संग्रह है।

४४१६ गुटका सं० १३४। पत्र स० ४१। मा० ५३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विशेष---शांतिनायस्तोत्र, स्वन्दपुराल, भगवद्गीता के कुछ स्यत्त । ले० काल स० १८६१ माघ सुदी ११। ४४१७ गुटका स० १३४। पत्र स० १३-१३४। मा० ३६×४ इ च । भाषा-सस्कृत हिन्दी । प्रपूर्ण विशेष---पचमञ्चल, तत्वार्यसूत्र, भादि सामान्य पाठी का सग्रह है।

४४१८ गुटका स० १३६। पत्र स० ४-१०८। मा० ६३×२ इख। भाषा-सस्कृत।

विशेप-भक्तामरस्तोत्र, तत्वार्धसूत्र, प्रष्टक प्रादि हैं।

४४१६ गुटका स० १३७ । पत्र तं० १६ । मा० ६×४३ । भाषा-हिन्दी । मपूर्ण)

१ मोरपिच्छधारी (इप्र्णु) के क्यित धर्मदास, क्पोत, विचित्र देय हिन्दी

हिन्दी ३ कवित्त हैं।

२ वाजिदजी के महिल्ल वाजिद

99

वाजिद के विवसों के ६ अंग हैं। जिनमें ६० पदा हैं। इनमें से विरह के अग के ३ छन्द नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं।

वाजीद विपित वेहद वही कहां तुक्त सी। सर वमान की प्रीत करी पीव मुक्त सी।
पहने प्रपनी भीर तीर की तान ही, परि हां पीछे टारत दूरि जगत सब जानई ॥२॥
विन वालम वेहाल रहाी क्यो जीव रे। जरद हरद सी मई विना तोहि पीवरे।
स्थिर मीस के सास है क चाम है। परि हो जब जीव लागा पीव भीर क्यो देलना ॥२५॥
कहिये सुनिये राम भीर न बित रे। हिर ठाकुर की भ्यान स घरिये नित रे।
जीव विलम्ब्यों पीव दुहाई राम की। परि हो सुख सपित वाजिद कही क्यों काम की। २६॥

४४२० गुटका स० १३६ । पत्र स० ६ । मा० ७×४३ ६ च । मापा-हिन्दी । विषय-कया । पूर्ण एव गुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष-मुक्तावली व्रतक्या भाषा।

des]			ि शुक्रकंत मीगद
११२१ सुरका सं	१४०। यदक्ष कामा ६	}×्रव्{ द द । घास⊸	हिन्दी। विषय–दूबा। ने
कुल वे १६३५ माराम मुरी १६:	। पूर्णं एव पूडः यका-सामान्यः।	ı	
विश्वेय-शोनापिरि नू	ग है।		
ड्र.१९. शुरका सं	देशहे। पन सं का पा क	८६ दश्च । मारा संस्ट	तः। क्षित्रम-स्तीत्वः।
निषेत-देश्या तहस	तम स्तोष है ।		
	रक्षर। यस में र । मा २०	८४ इ.च । बाता-दिली	ांने कलंडी रेटरं≍
धनाव बूरी (४। धन			
	व २ पाठ उस्तेत्रतीयु हैं।		
१ भट्डला	বাদবয়ন	ged:	
र. सहरता	বিজ্ব		१ ११
ध्यंच्य गुक्का सं	रेटकेशपार्थ रक्ष्याचा प	. XY ६ व १ चीलां-	हिनी बेरहर । वे परण
र्वर । पूर्व ।			
विकेश—बाह्यस्य गाउँ	(का संबद्ध है , ।		
•	-		

४४९८ गुरुका सं• १४४ । पत्र तं ५१ । था 💢 ६ इ.व.। वावा-तत्त्वत् हिग्छै । पूर्व । विवेप--दानान्य पाठी का बंधह है।

बद्दी पहाड़े की विश्वे क्षेत्र हैं। स्वविशोधः यस श्रामी हैं।

६८९६ शुक्कार्स १४४। पण्य ११। मा ६८८ १ था नाम्-सत्तानः विका-नवीवतः। में कल १४७४ में हबुरी १४।

भारत्म के पर्य—

क्षामानमञ्जूषेत्रं प्रद् यात्त्रविद्यारयं । चरिम्मर्स्परीयस्य वसते वचासिका ॥१॥

सर्वन बारनसरोस गाँकै कलावर्ग वसि । ८ जे : कुलाकुन विदुश्यकी समृक्तियु विभिन्ने ॥१॥ ३.६९७ शुद्रकार्स १४६। यस वं २४ । या ७×१ ६ व । बाहा-विली । स्पूर्ण । स्वा-धानाव

४४२८ गुटका स० १८७। पत स० ३-१७। पा० ६X१ इ.वृ । भाषा-सस्कृत । विषय-उर्वातिष । दगा-जोर्स वे र्स ।

विशेष-शीघवीष है।

४४२६. गुटका स० १४८। वय स० ४४। मा० ७४४ इ.च.। भाषा-सस्वतः। विषय स्तीय सप्रह है ४५३० गुटका स० १४६ । पत्र स० ६६ । मा० ६,८६३ इ च । भाषा-हिन्दी । ले० कान म० १८४६

कातिक सुदी ६ । पूर्ण । दशा-जीर्ण ।

१ विहारीसतसई

बिहारीमान

बृन्दकि

देवीदास

हिन्दी

१-३४ 44-50

२ वृन्द सतसई

३ कावेस

शीर्ए।

७०८ पदा हैं। मे० बान स० १८४६ चैत सुदी १०।

हिन्दी

34-40

४४३१. गुटका सः १४०। पत्र सः १३४। मा॰ ६३×४ इ च । प्रापा-सत्तृत हिन्दी । ले॰ काल

स॰ १८४५ । दशा-जीर्ग शीर्ग । विशेष-लिपि विवृत्त है। वनका वत्तीसी, राग चीतरा का दूहा, पूल भीतरा वा दूहा, पार- पाठ है।

मधिनांश पंत्रे साली है।

४४३२. गुरुका नद (४१) पत्र स० १८ । मा० ६×४ इ च । मापा-हिन्दी ।

निर्वाणकाण्ड है।

निरोप-पर्दो तथा विनतियो मा सपृह है तथा जैन पर्धामी (नवलराम) बारह भावना (दौलतराम)

विदोप--विभिन्न ग्रामी में से छोटे २ पाठों का सग्रह है। यत्र १०७ पर मट्टारक पट्टाविल उल्लेखनीय है। ४४३४ गुटका सः १४३ । पत्र सं० ६० । मां० द×११ इ वं । भाषा-हिन्दी सस्वृत । विषव- सप्रह

मपूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष-भक्तामर स्ताय तस्वार्थ सूत्र, पूजाए एव पश्चमगल पाठ है।

१ भागवत

४४३४ गुरका सः १४४। पत्र स० ८६। मा० ६×८६ म। ले० काल १८७६। X

४४१२ गुटका ५०१४ । पत्र स॰ १०७। मा॰ १२४४ इ.च.। भाषा-सस्कृत हिन्दी। दना-जीर्ण

१-5

€-१२

२ मत्र मः दि मग्रह

×

सस्कृत

1.1			्रास्थ-संद	
वे चनुरसीयो मीवा	×	_	31-17	
४ जामका महिला		# दिल्दी		
 चामच्या महिना 	×	•	रूर ११	
		दीयों के भागः	हर्व वैन्यविदेश स्त्रीय है ।	
३. बहाबारत विध्यु सहस्रकात	×	बंस्युत	37-48	
रहरे ६ शुरका सं॰ १श	रायसची दल। द×दा	६ च। भाषा-र्थसद्वतः । १	(र्स ।	
१, बोमेन्द्र पूजा	×	बंदप्रव	₹~₹	
२ वारवेंनाच वयनाल	×	*	A-68	
१ विक्रूस	×	pe	\$?	
y ব্যাইনাবান্ত্ৰ	×		11	
1., चीवधशार ल्यू ना	मानार्य केयन	9	£-\$4	
🐧 श्रोतहरारस नवनाल	×	संश्च व	15-2	
 वयसम्बद्ध नमनाव 	×		17 52	
व, इत्स्यवस्तुया वयवाल	×	र्वतहरू	64-4	
📞 क्योपार पैतीकी	×		#1-#X	
श्रद्धक शुरुषा सं १४१	(। पत्र व १७ । या ६	×ररगाचे नाप	१७७६ व्येष्ठ गुर्वे २।	
श्राम-हिन्दी। पत्र सं ७१।				
বিধিব—ধাৰণ ৰামাণৰি বং	हेंग है।			
४४६म. गुरुवा सं० १४५	ायवर्ष १२ । सा ६)	८६ चांके कला १०	179	
विकेर-जलाकास्तोक स	सर शानगी, (यानदान) इर्ष र्वपर्वपत्त के पात	है। वं क्यार्टराम ^{के}	
निवसन मैताया में हैं है है में सीह	विवरित की ह			
४२६६ शुरुका सं ११० (क) पत्र सं १४६ । वा ६८४ एक । काला-दिनो दिनित परियो है नवीं का संबद्ध है।				
्र ११४ गुरुवाचे ११५	ायत के देशका	ok६ इ.च.। बा वा-दि र्च	ो कि वस्ती हैं।	
रबा-भीर्छ । विशेष—सामान्य पर्याची व	र पात 🖁 १			
प्रश्नर्थ सुरुष्म सं ११६ । पर सं १६ । या ७२८४ के सम्ब-×ध रचा-पीर्छ। सिना				

नरियों के नरीं का बोध्ह है ।

५५४२ गुट∓ा स० १६०। पत्र स० ६५। ग्रा० ७×६ इटच । भाषा–सस्कृत हिन्दो । पूर्ण ।

विशेष-सामान्य पाठो का सग्रह है।

४४४३ गुटका स० १६१। पत्र स० २६। ग्रा० ४×१ इञ्च । नापा हिन्दी सम्यूत । ते० काल १७३७ पूर्ग । सामान्य पाठ हैं ।

४५४४ गुटका स० १६२। पत्र स० ११। म्रा० ६×७ इञ्च। भाषा-सस्कृत । श्रपूर्ण । पूजाम्रो.

का सग्रह है।

४४४४ गुटका स० १६३। पत्र स० २१। मा० ४×४ इञ्च । मापा-मस्कृत 🐧

विशेष-भ नामर स्तोष एव दर्शन पाठ मादि हैं।

५५,४६ गुटका स० १६४। पत्र स० १००। मा० ४×३ इख । भाषा-हिन्दो । ले० वाल १६३४ पूर्णा। विशेष-पद्मपुराए में से गीता महातम्य लिया हुवा है। प्रारम्भ के ७ पत्रो मे सरवृत मे भगवत गीता

४४४७ गुटका स०१६४। पत्र स० ३०। घा०६३×४३ इख । विषय-प्रायुर्वेद । घपूर्ण । दशा -जीर्स ।

माला दी हुई है।

विशेष-श्रायुर्वेद के नुक्ते हैं।

४४४८ गुटका स० १६६ । पत्र स० ६८ । म्रा० ४×२३ इश्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१ मायुर्वेदिक नुसखे ×

हिन्दी 2-Ya २ कर्मप्रकृतिविधान वनारसीदास **४१-**६८

४४४६ गुटका स० १६७। पत्र सं० १४८-२४७ । मा० २×२ इख । मपूर्ण । ४४४० गुटका स० १६=। पत्र स० ४०। झा० ६×६ इछ। पूर्ण।

४४४१ गुटका स०१६६। पत्र सं०२२। मा० ६×६ इझ। भाषा-हिन्दी। ले० काल १७८० श्रावरा सुदी २। पूर्ण। दशा-सामान्य।

X

१ धर्मरासी

हिन्दी

१-१८

श्रथ धर्मा रासो लिख्यते-

पहली वदो जिरावर राइ, तिहि वद्या दुख दालिद्र जाइ। रोग कनेस न सचरे, पाप करम सेव जाइ पुलाई ।। निश्चे मुक्ति पद सचरे, ताको जिन धर्म्म होई सहाई ॥ १ ॥ tor 1 ं गुरुद्ध-र्धपर कार्य इदेशी जैनशी शह दरसन ने द्वी परकान ! कायम जन मृश्विमें वे वाल जन्मग्रीय विद्यासंस्कृती ॥ बड़ा बिस गुन होई निवान वर्म्म पुरेशो धैन को ॥ २ ॥ क्षत्रा वंदी बारद मर्द्ध बनी याचर वाली क्षत्र ॥ कृति वर्षेत व साथै यहा सुनति वंदी यदिवाह ।। जिएपर्न्य राजी वर्णन जिहि परत बन होह उद्घयः॥ वर्ग प्रदेशी वीग की 11 ४ छ धन्तिव--- क्रेंगी सीमल वॉर्न सही बायन कल जिलेन्द्र नहीं। बर पाना बाहार नै ये बट्टाईस मुनद्वाल बारिन।। नाथ बड़ी के रामहीं से मनुक्रम पूर्वि निरवास्ति। बर्ज्य बुरेनी बीन की शह परश बुद्ध देन पुरुवारण बन्धान्ति 🍞 वर् धनाम्भाव बान्ति । बाई दीव सदा मारि है बाई द सी तत्र वर्ताचा । है निवर्ग सम्पन्त वर्ग देशी निर्मित्रामी प्रस्तिय । कर्म्य बुद्देशी बीग को १११३ है।। इ.स.मी. बर्म्मराची हमारता ।।१।। ६ १७३ % अवल इसे १ शांवानावर नभी ३ अध्यय शुक्रमा से १ । वस में १। या श्राय द स मा नामा संस्कृत । विषय पूर्वा िवरील-विकास 🛊 । Yark गुरुषा सं ११। ल वं ६। या॰ शरण ६७। बाश-हिन्दी हविनद-पूरा । चित्रेन-कामेर्राधकर प्रमा है। अन्द्रमा सुरक्षा ३८ १७ । वस स ११ १ । सा ३०८३ इस । सामा बामून दिनी। ^{हे} रलंड ११ । बारण मुर्ते १ । रिमेर-पूरा पर एवं विनशियों का नवह है। ३४४४ मुद्रकासः की।पत्रय १ १।या ५×४६ च।सार्ल। बसार्जनी विशेष - मानुर्वेद के नुगणे मन्त्र सम्बादि सामग्री है। वीदै उत्पादनीय रचना नहीं है।

४४४६ गुटका स०१७४। पत्र स०४-६३। घा० ६×४३ इ च। भाषा-हिन्दी। विषय-शृङ्गार रस । ले० काल स० १७४७ जेठ बुदी १ ।

विशेप-इन्द्रजीत विरचित रसिकप्रिया का संग्रह है।

४४४० गुटका स०१८४। पत्र स०२४। मा० ६×४ इ च। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा।

विशेष-पूजा समह है।

४४४८ गुटका स०१७६। पत्र स० ८। मा० ४×३ इन। भाषा-सस्कृत। विषय-स्तोत्र। ले०

काल स० १८०२। पूर्ण।

विशेष-पद्मावतीस्तोत्र (ज्वालामालिनी) है। ४४४६ गुटका स० १७३ । पत्र स० २१ । मा० ४ '×३३ इ च । भाषा-हिन्दी । मनूर्ण ।

विशेष-पद एवं विनती सग्रह है।

४४६० गुरका स० १७६ । पत्र स० १७ । मा० ६×४ इ व । भाषा-हिन्दी ।

विशेष---प्रारम्भ मे वादशाह जहागीर मे तस्त पर वैठने का समय लिखा है। स० १६८४ मगसिर सुदी १२ | तारातम्बोल की जो यात्रा की गई थी वह उसीके प्रादेश के प्रनुसार धरतीकी खबर मगाने के लिए की गई थी।

४४६१ गुटका स०१७६। पत्र स०१४। मा० ६×४ इ व। मापा-हिन्दी। विषय-पद सग्रह। म् ऱ्याँ ।

विशेप-हि दी पद सग्रह है।

४४६२ गुटका स० १८०। पत्र स० २१। मा० ६×४ इ व । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—निर्दोषसप्तमीकथा (ब्रह्मरायमञ्ज), माद्वित्यवरकथा के पाठ का मुख्यत सग्रह है।

४४६३ गुरका स० १८१। पत्र स० २१-४६।

१ च द्रवरदाई की वार्ता हिन्दी X २३-२६ पद्य स० ११६। ते० काल स० १७१६

38-88

२ सुगुरुसीख हिन्दी X २८-३० ३ कनकावतीसी

ब्रह्मगुलाल र० काल स० १७६५ ३०-३४

४ मन्यपाठ Х

विशेप-मधिकांश पत्र खाली है।

४४६४ गुटका स० १८२। पत्र स० १६। म्रा० ९४६ इ.च. भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा । मपूर्या ।

77

विशेष--नित्य नियम पूजा है।

tro }			[गुरुष्य-संबद
४४६४. गुरुस र्ग	स्दरै। पत्र सं १ । या	t X\$ \$414	रग–सस्त्र दिनो । बर्ग ।
रधा−त्रॅरा थीर्ल ।			
विमेशप्रयम १ पत्री	गर प्रस्तान हैं। समा दम १०−२	तह सङ्ग्रमान्त्र	है। हिन्दे का में है।
४५६६ शुटका स	१८४। यम स २४। था ५३	×१ इ.च.। मागा-	मिया । य <u>ा</u> र्ल ।
विग्रेषपृत्व निर्मोद र	स्टस्ट के प्रदुष पद्य से दूर पद्य	तक है।	
११६ गुरुहा स	रेच्द्र । पर चं भन्दम । या	t xx2 4 4 1	नावादिल्यो । से वाल ६
t २३ वैदाच पुरी क i			
विसेश-वीक्तेर वे ब	विशिषि की वर्ष की ह		
र चमक्या रनाटक	वनारसीयान	fjrdt	***
९. चनापीकाच जीवाजिया	नियम विनयपरित	77	करेपसर्वे कीन्स्य
L भागमान नीव	×	fipti	क् य-दर्दे
	दम प्रायाम में प्रशंप थ	नय गीठ 🕻 । प्रन्य	वे चूचिका ग्रीव है।
४ स्ट्रुट पर	×	विल्यी	83-64
११६ शुक्का स	हेद्दा । पत्र वे १२ । बा ६००	इय क्षान-दि	थो । विश्वत पर कव्यत् ।
विधेय१४२ पर्वे का	संबद्ध है पुल् यक बाह्यस्थान के पर	ğı.	
देशके गुरुष छ	(दशाय मा क ापूर्यः		
विधेय-पुरुषे के कुस्त	राक्ष निम्न जकार 🕻 ।		
१ चीयसी शेव	×	बिल्पी	१- 4
% नक्ताहा रंघ के राजाती के लाग	r x		f-A
 वेट्सी धानामों को वधानती. 	×	*	2-25

×

х

×

म्ह्याचर्याः ४ _ल १९ ⊁≿क शुक्रकासः १००० । पर ११००३ । या १८८% । याना-दिलो सस्य[ा]

रिर्छेश--पूरके ने जलाभग्रतीय वकालवनियसतीय 🖁 ।

४ देश्यों के बालपाओं के परमारों के गाम

६, बीब बच्ची

६. १६ शाध्यानी के नाम

भोगीय कान्छा चर्ना

-

\$**\$**—\$

28 XX

35

3-0

गुटका-समह

१ पार्चनायस्तवन एथ प्रन्य स्तवन

यतिसागर के शिष्य जारा हिन्दी

रण राव १ ५००

ग्रागे पत्र जुडे हुए हैं एव विकृत लिपि में लिखे हुये हैं।

४५०१ गुरका सं० १८६। पत्र स० ६८७० । मा० ५३×४ दख । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-

इतिहास ।

विगेष-प्रायत वादगाह एव वीरवल प्राटि की वार्ताए हैं। बीच भीच के एवं प्रादि प्रन्त भाग नहीं हैं। ४५७२ शुरुका स० १६०। पत्र स० १७। मा॰ ४×३ दख । मापा-हिन्दी ।

विशेष-- रपबन्द यूत पश्चमगल पाठ है।

४५७३ शुटका स० १६१। पत्र स० २८। मा० ८३×६ इ च । भाषा-हिन्दो ।

विशेष-मुदरदास गृत सर्वेथे एक भाग परा है। भन्नर्श है।

४५७५ जुटका स० १६२ । पप स० ४४ । मा० ५३×६ इ प । भाषा-प्राकृत संस्कृत । ले० काल

\$500 1 १ ववित

५ प्रजितशातिस्तवन

× हिन्दी 8-8

२ भयहरस्तोन्न

X प्रापृत **X~**&

हिन्दी गय टीवा सहित है।

विचासिद्धि 33

X 81-3 " नन्दिपेरा **१**३-२२ 27

३ दांतिकरस्तोत्र ४. निमञ्जास्तोत्र

> मानतु गाचार्व रुस्त 23-30

६ नक्तामरस्तोत्र ७ कल्याग्रमदिरस्तोत्र

सस्कृत ३१-३६ हिन्दीगच टीकासहित है। X × प्राकृत ४०-४५ 7)

= शांतिपाठ 25601

४४७४ गुटका स० १६३। पत्र स० १७-३२। ब्रा० प्रशेष्ट्र इख । भाषा-संस्कृत । ले० काल

विशेष-तत्वार्धसूत्र एव भक्तामरस्तीत्र है।

४४७६ गुटका म ० १६४। पत्र स० १३। मा० ६×६ ६ च । भाषा- हिन्दी। विषय-कामशास्त्र ।

मपूर्ण । दशा-नामान्य । कोकसार है । ४४७७ गुटका स० १६४ । पत्र स० ७ । मा० ६×६ इ च । भाषा-सस्त ।

विशेष-मट्टारक महीचन्द्रकृत त्रिलीवस्तीय है। ४६ पद्य हैं।

# =?]				[गुरुषा-संगर
k)	४≍. स्टब् र स	१६६ । पण मं १२ ध	। ২ ×६६५। বসা⊬ছিশ	θı
Per	रेप <i>→</i> नारकसभवा	बा€∦।		
**	थ्यः गुरका सं	१६७। पत्र वं ३ । मा	X६६ च । धारा-विश्वी	াই ক্ষেত্ৰ বৈশ্বি মাহত
पूरी १४। पुणस	के पदो का सम	(ħ)		
k	द ः गुरका स	१६८ । वस वे १६ ।	स व∉X३ इ.चाबहुर्ल	ो पूजा राज तक्त्य है।
			।या च्युर दर्गाया	
श्या-नीर्सं ।			'	
Per	हेप-पूजा पाठ संब	€€1		
2(3	पर, गुरका सं	रे । क्याची स्था क	्र×न इ.चः। दूर्यो । वद	र–कामस्य
१ विवयत व	गर्द	रहामनि	साचित्री	
रचना संब	द १११४ मालना	-	७ १२ : नालच विचली वहा	तन्त्र में अविक्षिपि की की ।
१. बालीनगर १		वंद्यकोर्दि	त्राचीय हिल्मी	क्यूर्स
*	राम छ १९६४	• । एववा स्थान -शामकी ट ।	के कार में १७४३ म	वसिर पूरी ७ । म हलं द हे
		. वे तम ५१ तक के नव है।		-
। वंत्रवादो		×	राज्ञलानी बेरवड पी	
४ नवित्त		वृ दलवदात	विल् धे	
र. वर्ष रेमन र	त्रव शित्रविष क्यू	व विवार सक्तीवानर		राजग्रहार
५ दूरी दूरी	मेरे सम्बद	*		राजनारकी
 पूर्वी कृषि : 	र पूर्वी बील			×
वर्षिस		शक्षा प्रमाण एवं वृ वावन	t	यम रेड
	पक्ष थ १ १	प्रमुख कुरो १४। क्सीर	स्पर्वकाल ने प्रतिकार के	रे मी। वैत्तात का ^{वाती}
शेष देखाः				
ং শন্ত পুরিসা	करा	×	ीं। के	पूर्च
१ क-वेश ११ =		बद्धा पुनरम	39	
		×		

१२. समुय विजय सुत सावरे रग भीने हो

X

ले॰ काल १७७२ मोतीहटका देहुरा दिल्ली मे प्रतिलिपि की थी। सस्कृत ते० काल स० १७५२ ज्येष्ठकृ० १०। X १३ पञ्चकन्याएकपूजा मप्टक

१४ पट्रस कया

सस्कृत

ले० काल स० १७४ र 1

X ४४८३ गुटका स० २०१।पत्र स० ३६। मा० ६×६ इ.च.। माषा-हिन्दी । विषय-कया । पूर्ण ।

विरोप—मादित्यवारमया (भाऊ) सुशालव द कृत शनिवचरदेव यथा एव लालनन्द कृत राजुन पदवीसी के पाठ मौर हैं।

१७४० ।

४४८४. सुटका स० २०२। पत्र स० २८ ामा० ६×५६ इ.स.। भाषा-संस्कृत । ते० काल स० विभेष पूजा पाठ सग्रह के प्रतिरिक्त शिवचन्द मुनि पृत हिण्डोलना, बहाचन्द पृत दशारास पाठ भी है।

४४=४ गुटका क्र० २०३। पत्र स० २०- ३६, १६४ से २०३। मा० ६×४३ इ प । भापा सस्वत

हिन्दी । प्रपूर्ण । दशा-सामान्य । मुस्यत निम्न पाठ है ।

१ जिनसहस्रनाम	माशापर	सम्बृत	35-05
२ ऋषिमण्डलस्तवन	×	77	35-05
३ जलयात्राविधि	ष्रह्मजिनदास	n	167-165
Y गुरुषों की जयमाल	3)	हिन्दी	१६६-१६७
४ एामीकार छन्द	ब्रह्मलाल सागर	23	\$80-220

४४८६. गुटका सः २०४ । पत्र स० १८० । मा० ६४४ इ च । भाषा-स्स्कृत हिन्दी । ले० काल स० १७६१ चैत्र सुदी ६। मनूर्णे। जीर्ण।

विदीप—उज्जैन मे प्रतिलिपि हुई थी । मुस्यत समयसार नाटक (बनारसीदास) पार्श्व नायरतवन (ब्रह्मनायू) का सप्रह है।

४४८७ गुटका स० २०४। निख नियम पूजा सग्रह । पत्र स० ६७ । मा॰ दर्भ १३ । पूर्ण एव शुद्ध । दशा-सामान्य।

४४म= गुटका स०२०६ । पत्र स०४७ । मा० ६ रू७ । भाषा -हिन्दी । मपूर्ण । दशा सामाय। पत्र सः २ नही है।

१ सुदर श्रृगार

महाकविराय

हिन्दी

पद्य स० ८३१

महाराजा पृष्वीसिंहजी के शासनकाल मे भ्रामेर निवासी मालीराम काला ने जयपुर मे प्रतिलिपि भी थी।

```
KEK ]
                                                                                 ्राटका-सम
 २ स्थानवत्तीधी
                                      नम्बन्ध
        भीरानेर निकासी सहारमा प्रजीश ने जलितिया हो। मालीशम नामाने सं १०३१ मेप्रतिविधि कराई हो।
     भन्तिस भाग--
                   वोद्दा—कृष्ट्या व्यान कराषु ग्रठ धननकि सुद्ध प्रवान ।
                         न्ध्य स्थान कमनन कह यहत व एव स्थान ।: ३६ ।।
     श्राप्त मत्त्रायम्य---
                   स्त्री तन गारिक भारतस्तेत श्रद्धा देश सहैश यू पार न नायो ।
                   को पुन म्यास विरंपि वकावत निवय के बीपि सवय बतायी।!
                   €न्द्र बाम्द वर्षेष्ट्र कार्य करोबांत सम्बन्धा वृत्र शानि बहत्त्वी ।
                   क्षो कवि या शवि बहारून ऋषे हु करवान हु स्थान वर्श हुनवासी ११६७।१
           इति यो समस्या कृत स्थाप वतीयो बपूर्व ।। विश्वतं तक्षरमा अस्पेरा गली जोजनेर था। विश्वनद्
बालीश्रम कला संबद् १ ३१ विटी जलका पूरी १४ ।
           हे£स्ट शुरुकार्स० २०७ । पत्र के २ । या कX देव | बाधा-हिन्दी बस्केट | से कस
t 15451
           विश्वेष—क्षामान्य पृथा बाठ, यह एवं श्ववरों का संद्र्य है ।
           ११६ शहकार्धर०मा पत्र प्रशास १७।मा १३ ५३ ४०। <del>पता-दिनी</del>।
           विकेच---धारकम मीरिसार क्या बाबरान इय बाह्यकार है।
           ४४६१ शहबा स० २ ६ । पण वं १६~१४ । वा ६>८० इ व । वाना-वीली ।
           विकेच-सरवास पर्याजन प्राप्ति कवियों के नवीं का लेवह है। विकास-सम्बद्ध प्रतिक है।
           श्चर्यः बृहक्तार्थः २१ । पण वं २ । या १२×१६ इ.व.। जाना-विल्ये ।
           विश्वेय-च्यूर्वय क्रुल्यल चर्चा है।
           देश्रदे मुहत्कार्स २११ । गण सं ४१~०० । या द×्रदे च व | जाया-दिल्ये । में नाम रेगरे ।
           देशका शहरका की कृति। वस में ब-देश | या के/देश था।
           विधेप-स्तीन पुना एवं पर बंबह है।
```

४४६४ गुटका स० २१३ । पत्र स० ११७ । घा० ६८५ इ.च.। भाषा-हिन्दी । लि॰ काल १८४७ । विशेष—यीच के २० पत्र नहीं है। सम्बोधपचासिका (द्यानतराय) वृजलाल की वारह भावना, वैराग्य पद्योसी (भगवतोदास) मालोचनापाठ, पद्मावतीस्तीय (समयमुन्दर) राजुल पद्मोसी (विनोदीलाल) म्रादित्य-वार क्या (भाऊ) भक्तामरम्तोत्र ग्रादि पाठो का सग्रह है ।

४५६६ गुटका स० २१४। पत्र स० ८४। ग्रा० ६×६ इ च।

विशेष-सुन्दर न्यु गार का सम्रह है।

४४६७ गुटका स० २१४। पत्र स० १३२। म्रा० ६×६ इ च । भाषा-हिन्दी।

_				
१ कलियुग की विनती	देवाग्रह्म	हिन्दी		५– ७
२ सीताजी की विनती	×	77		9-5
३ हस की ढाल तथा विन 1ो ढा	× ×	11		€-१२
४ जिनवरजी मौ विनती	देवापाण्डे	77		१२
५ होली क्या	छीतरठोलिया	23	र० स० १६६०	३−१⊏
६ विनतिया, ज्ञानपद्यीमी, बारह	भावना			
राजुल पचीसी मादि	×	11		₹€-४0
७ पाच परवी कया	ब्रह्मवेणु (भ जयकोति के शिप्य)	53	७६ पद्य हैं	४१-४ ०
 चतुर्विशति विनती 	चन्द्रक्वि	77		४ ५–६७
६ वधावा एव विनती	×	22		६७–६६
१० नव मगल	विनोदीलाल	99		ee-37
११. नक्का बतीसी	×	23		७७-५१
१२ वडा कत्रका	गुलाबराय	23		50-52
१३ विनतिया	×	"		5 १−१ ३२
४४६८ गुटका स	ाठ २१६। पत्र स० १६४। मा० १ <u>१</u>	×६ इ च	। भाषा-हिन्दी सस्व	

विशेप---गुटके के उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार है।

१ जिनवरयत जयमाला

व्रह्मलाल हिन्दी

१-२

भट्टारक पट्टावली वी गई है।

१३-१५

२ माराधाना प्रतिबोधसार

सवलकीति

हिन्दी

१ त ः]			[गुरक्र-संद
 मुक्तावित वीत 	धननदीति	ફિલ્લો	? 2
४ चौबीस नक्षणस्त्रकत	इएकीर्व		9
६. महाज्ञिकामीत	म सुप्रसम	77	71
६ मिण्या दुश्यम	प् यागिशवास	*	**
 क्षेत्रपालपुथा 	यशिभड	संस्कृत	19-1
वित्रसम्बद्धाः । व	बासाधर		1 6-111
 महारक विश्वक्यैति सहक 	×	n	१ १
१ १६६ गुरका छ	रहें। पर सं रूपरे । सा	्रे×६३ इ.च। मापा संस	कृत ।
विश्वेषपूचा पाठों व	म संबद्ध है।		
≛६० शुक्का सं∗	रह्मा वय छ १६६। बा	e×र\$ इ.च । वादा-संस्कृ	ह ।
विकेष१४ प्रवासी		•	
44+१ गतकासं	मरेका यन सं १ ४ । सा	ax इथ । चारा -किर ो	1
•	वित्रोक्तर्यकृता है। ते क		
	दश् । पण सं ाधा		
१ निवरविश्वपद्मनीको	यहर्जीत	वर्ग सं व	₹ -#
९ नामभक्ता	গ্ৰহ	र्शसम्बद	g and
विकेषबुटके के या	क्मस पत्र नीर्ध तथा करे हुए।	है एवं प्रत्या प्रपूर्व है ।	
	प्रशायन सं ११-१ ६ ा		शु ल् ये ।
_	ीपा को कन्तरूत गीपुरी (
नव दीना प्रपूर्व है ।			
	ब्र् रायवं ११६। या	ध्८६ ह च । बागा-बंस्ट्रेग ।	
विवेधशामान्य पाते	का संबद्ध है।		
⊁६ k. सुरका स	१२३ । रवं संह १२ । या 💌	०८४ द्र यः। भाषा–दि न्दीः	
विशेष-का कुम्बाई	एवं बनके बंतार विवे हुए हैं।		
३६०६ गुरुका सं	२ २४ । यस सं १४ । सा	थX१ इ.च.। शलास्त	इस प्रतहत । व्या
नार्स चौर्छ एवं बपूर्ल ।			
दिवीय ~पुरामसी (प	पूर्व): अक्तिग्रह स्पनकृत्वीण	क्षरार्थेषुण ए र्थ जामातिक पा	ठ प्रारि है ।

४६०८ सुटका स०२०४। पर स० ११-१७७। शा० १०४८६ इन। भाषा-हिन्दो।

१. निहारी सतमई सटीक-टीफाकार हरिचरणदास । टोकाराल स० १८३४ । वत्र म० ११ ने १३१ । ले॰ काल मे॰ १८४२ माप गृष्णा ७ रिवयार ।

विदीय-पुस्तव में ७१४ वस है एवं म परा टीकाकार के परिचय के हैं।

धन्तिम भाग- पुरपोत्तमदास दे दोहे हैं-

जविष है सोभा सहज मुक्त न तऊ सुदेश । पोये ठौर मुठौर के लख्मे होत विषेप ११७१।।

इस पर ७१४ सन्या है। वे सातसी से प्रधिक जो दोहे हैं वे दिये गये हैं। टीवन सभी की दी हुई है। पेवल ७१४ की जो कि पुरपोत्तमदाग का है, टीवन नहीं है। ७१४ दोहा के प्रागे निम्न प्रशस्ति दी है।

दोहा—

नालग्रामी सरजु जह मिली गगसो भाव। भन्तरान में देव सो हरि कवि को सरसाय ॥१॥ लिये दूहा भूपन पहुत भनवर ये भनुमार। पहुं घोरे महु मीर ह निक्लेंगे सद्वार ॥२॥ रोयी जगस क्योर के प्राननाय जी नांव। सप्तसती तिनसो पढी बिस मिनार वट ठांच ॥३॥ जमुना तट शृङ्गार यट तुलसी विपिन सुदेस। रीवत सत महत जिह देगत हरत वलेस ॥४॥ पुरीदित श्रीन द के मुनि महिल्य महान । हम हैं ताने गीत में मोहन मी जजमान ॥४॥ मोहन महा उदार तिज भीर जाचिये काहि। सम्पत्ति सुदामा को दई इन्द्र लही नही जाहि ॥६॥ गहि मक सुमनु तात तेँ विभि नी वस लखाय। राषा नाम कहें सुनें मानन कान बढाव ॥७॥ सवत् भठारहसी विते सा परि सीसरु चारि । ज'माठै पूरो कियो उप्ण चरन मन घारि ॥५॥

```
इति इश्वरक्षास कृता विद्वारी रश्वित सप्तथती टीका हरिजनावासमा सम्पूर्ण । तेवत् १०१२ वार इप्टा

    रनिवासरे बुजयस्तु ।

    इतिबद्धम—प्रश्वकार इरिक्रक्कासा । पत्र सं १३१-१७७ । मापा-मिली पप्र

            निक्केप-- ११७ तक पक्ष हैं। बाने के पत्र नहीं हैं।
                                 भोद्दन चरन पर्योग में है सुलझों को बास ।
   प्राप्तम —
                                 ठाडि चुपरि इरि चक्त सब करत विष्ण को बाद गरेग
                                 बारान्द को राज्य पूर्णशाल बाको सुख्यान्य
   रविक्त—
                                 मीमा ही हे जोड़न हैं बानध को चीर है।
                                 इसी देंसो एक्टिको को भारत किर्रोप गिठि
                                 धानि को बनावें सभी यस बील गोरी है।
                                 फैरत है कान बासपान में भहाय केरि.
                                 पानि में फक्षाब के की बारिया में वोर्रे हैं।
                                 राविका के सामन के बोस न विक्रोंके विवि
                                 इक इक शोरे पुनि इक इक बोर्र है।।
   सन बीप सक्रमा बेदा---
                                 एव यानम्ब तस्य नी पूर्व ते हैं बीच ।
                                 प्रक्रमा की उसी संक्रमा सीर विश्वता रोग ११६१६
   ग्रतिम वाच---
                                सामा समया श्री पूनी बंबत, पेंटीस भान ।
            चेत्रा---
                               प्रजारक सो बेड बुवि वे सति एपि दिन शास ॥१०४॥
            क्षि भी श्रीरवरणमी निरम्बत कविवलमो सन्य सन्पूर्ण । सः १ १२ नाव कृष्णा १४ रविवाहरे ।
            ≽६ ६ शुद्रकार्य १२६ । पत्र थं र । या ६३८६ इ.चः वाता-हिली । में नाम र <sup>१६</sup>
बैठ बुधा १६ । पूर्ता
                                      नवश्तीवान
                                                                     विश्वी
  १ सप्तर्वनीवाजी
                                                                                          1-1
                                     धनारशीयाच

    क्ष्मवतारकारकः

                    शुरुकास वर्कायम व १६। या १४१३। भाषा हिनी। विशव-मानुर्देश की
 नास व १ र० प्रदाह पूरी ६।
```

t==]

गुरुवा-समर

१--६

6-63

23-25

3-60

गुटका-समह]

विशेष--रससागर नाम का भायुर्वेदिक ग्रथ है। हिन्दी पद्य में है। पोषी लिखी पडित हूं गरसी की

सो देखि लिलो-द्वि० प्रसाढ बुदी ६ वार सोमवार सं० १८४७ लिखी सवाईराम गोघा।

X

37

४६११ गुटका स॰ २२८। पत्र स॰ ४६ से ६२। मा० १x७ इ०। भाषा-प्राकृत हिन्दी। ले० काल

१९५४ | द्रव्य संग्रह की भाषा टीका है ।

४६१२ गुटका स • २२६ । पत्र सं० १८ । मा० ६×७ इ० । भाषा हिन्दी ।

हिन्दी १ पचपाल पैतीसो X

२ म्रकपनाचार्यपूजा X 33

३ विष्णुकुमारपूजा ४६१३ गुटका स॰ २३०। पत्र स॰ ४२ । मा॰ ७×६ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत।

विशेष---नित्य नियम पूजा सग्रह है।

४६१४ गृटका स० २३१ । पत्र स० २५-४७ । आ० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-मायुर्वेद ।

विशेय-नयनसुखदास कृत वैद्यमनोत्सव हैं।

४६१४ गुटका स० २३२ । पत्र स० १४-१४७ । भा० ७X४ इ० । भाषा-हिन्दौ । भपूर्ण ।

विशेप-भैया भगवतीदास कृत भनित्य पच्चीसी, बारह भावना, शत भष्टोत्तरी, जैनशतक, (भूधरदास)

मदिर भाषा, दानवर्णन, परिषह वर्णन का सम्रह है। ४६१६ गुटका स० २३३ । पत्र सस्या ४२ । मा० १०×४३ भाषा–हिन्दी सस्कृत ।

विशेप-सामान्य पाठो का सग्रह है।

४६१७ गुटका स० २३४। पत्र स० २०३। मा० १०×७३ ६०। मापा-हिन्दी सस्कृत। पूजा पाठ. बनारसी विलास, चौबीस ठाएग चर्चा एवं समयसार नाटक है।

४६१८ गुटका स० २३४ । पत्र स० १६८ । मा० १०×६३ ६० । माया-हिन्दी ।

१. तस्त्रार्थसूत्र (हिन्दी टीका सहित) हिन्दी सस्कृत

६३ पत्र तक दीमक ने खा रखा है।

दान वाबनी (द्यानतराय) चेतनकर्मचरित्र (मगवतीदास) कर्म्मद्यतीसी, ज्ञानपच्चीसी, भक्तामरस्तोत्र, बत्याए।

२ चौबीसठाएगचर्चा × हिन्दी €**१-**१€5

४६१६ गुटका सं० २३६। पत्र स० १४०। झा० ६४७ ६०। भाषा हिन्दी।

विशेष--पूजा, स्तीय मादि सामा य पाठों का सग्रह है।

€ 1• 3			् शुरका चंत्र
४६५० गुडेंग	दसी २३ दापक वं २० । सा	•x६ईइं भागा-	हिन्दी। विकास
१७४० प्राचीन दुरी १६ ।			
१ जुम्बनिया	वनररास एव क्य व्यविवस	हिन्दी विकास	र विजयसम् १-६६
२ पर	Amenia.		(1-17
		में काप १७०६	नारण दुरी र
३ विसोक्यरेंहरूमा	वार्ययेव	Ne-tr	17 11
	हा सर्थ १३६। यस वं १९८। मा	१९३×६ सम् । जापा-र	इन्ते ।
१ समूर्वेदिक मुख्ये	X	िल्ही	£ \$¥
र अनुस्तर प्रया र क्यांनीर	ž	_	(Y=#Y
र करातार ३ विकोध वर्तन	×		wr tt
হ সেবাক গতাৰ ৮০০ জনত	हास+ क्ष्र∗। वद वै प्रकाशः	# ३२.४ ६ । घला∹चे	स्कृद्ध । विषय-स्तीर्थ ।
	अक्टाबर स्त्रीय डीका वर्षित संपी		
	प्रसं• १४१ । यम वं १-रेक्ण)		
	Man Astian a rates		
वैदास दुरी मनागला ।	ते बहुत्त्वा सनुद्धम सर्लद्धेपण नाम	a service are store it a	
नक्द-कार	हास्त्रीक्ष्यास्य विश्वतास्य विश्वतास्य हास्त्रीक्ष्यप्रदेशीयमध्ये स्थितः		INTERNATION
	द्वास्त्रक्रायम् स्र ^{⊸र} ः	2001111	
भवानीहरी रच (
	तिवर्ष गायक शन्त है		
	ह्य श्रं कप्रकृतकार्थं देने । सार	4X7 E 4K6-4 2	
	क्षात्र संबद्ध है ।		
श्रृष्ट् श्रुट	भावं २४४ । यस्तं २२ । या		
्रितीच्य मीहन गमण	र्धवणन	संस्थ्य ने	करण रेजरेरे प
१ रधकानुचित्तीन	र्वकरायाम्		ţ-*
s. वर्षेसीवीर्वकाठीय	×		•

×

ж

10-19

४ इधिइरनागायनिस्त्रीय

१. हारबराधि पन

į

६. बृहस्पति विचार

X

ल० काल १७६२ १२-१४

७ प्रन्यस्तोय

X

४६३० गुटका सं० २४८ । पत्र स० १२ । मा॰ ५३×७ ६० । भाषा-हिन्दी ।

४६३२ गुटका स० २४० । पत्र स० १४ । घा० =३×७ ६० । मापा-सस्कृत ।

19

१५-२२

ऐ६२७ गुटका स० २४४। पत्र स० २-४६। घा० ७X१ ६०। विशेष-स्तोत्र सप्रह है।

४६२=, गुटका स० २४६। पत्र स० ११३। मा० ६xx इ०। भाषा-हिन्दी।

विशेष--नन्दराम कृत मानमझरी है। प्रति नशीन है।

४६२६. गुटका स० २४७। पत्र स० ६-७७। मा० ७×४ इ०। मापा-सस्कृत हिन्दी।

विशेष-पूजापाठ संबह है।

विशेष-तीर्धद्वरो के पचकत्याण मादि का वर्णन है।

४६३१. गुटका स॰ ९४६। पत्र स० म । मा० मरे×७ द० । मापा-हिन्दी ।

विशेष--पद सम्रह है।

विशेष-मृहत्स्वयभूस्तोप है।

४६३३ गुटका स० २४१ । पत्र स० २० । मा० ७×५ इ० भाषा-सस्कृत ।

विशेष-समन्तमद्र कृत रत्नकरण्ड श्रावकाचार है।

४६३४ गुटका स॰ २४२ । पत्र स॰ ३ । मा॰ ८३×६ ६० । भाषा-संस्थत । स॰ काल १९३३ ।

विशेष---धकलद्भाष्टक स्तोव है।

४६२४ गुटका ६० २४३ पत्र स० ८ । मा० ६×४ ६० । भाषा-सस्वत से० वाल स० १९३३ । विशेष - भक्तामर स्तोत्र है।

४६२६ गुटका स० २४४। पत्र स० १०। मा० व×१ ६०। भाषा हिन्दी! विशेष-विम्व निर्वाण विधि है।

४६३७ गुठका स० २४४। पत्र सं० १६_। ब्रा० ७×६ ६०। भाषा-सस्कृत हिन्दी ,

विशेष-चुथजन कृत इष्ट छतीसी पंचमगल एव पूजा झादि हैं।

४६३= गुटका स० २४६। पत्र स० ६। मा० = ३×७ इ०। मापा~हिन्दी। मनूर्ग।

विशेष-वधीचन्द कृत रामचन्द्र चरित्र है।

```
$22 ]
                                                                             ारक-ध्या
          ×६३६ मुद्रकार्स= ६१७ । पत्र सः चाया व×१ र । यादा-क्षिपी । रक्त-नौर्सरीर्मे ।
          विरोध-सन्तराम क्षय कवित्र वेशक है।
          १९४० गरकास २४६ । पत्र तं १ । पा १०४४ र । पान-लेक्ट । प्रार्थ-
          विदेश -- वृदिमव्यवस्तीत्र है ।
          व्यविश सुरका स॰ २४६। पन वं रामा ६८४ र । वासा-दिल्यो । से सन १ र ।
          विभेर-दिन्दी पर एवं नायू इत नहुरी है।
          १६४२. <u>रा</u>टका सं० १६० । पत्र वं ४ । या ६०४ इ । पाना-क्रियो ।
          विभेत---वरण कृत बौद्धा श्तृति एवं वर्तन प्रक हैं।
          दे६४३ गुरुकास+ २६१। पन वं ६। या ७८६ इ । बास्-मिन्दी इर गल १ ६१।
          विदेश-कोलाजिरि प्रवीती है।
          ≥६५५ शतकासः २६२ । पर सं १ । या ६००, इ । वाया-नंतृत दिनी । पहुर्ते।
          विचेत-सामी गरेस के पर है।
          प्रदेश गुरुका स• वेदेवे । पत्र त १६३ का ६,×४ ६ । जला-वेरहत ।
          विधेय--- व वरावार्य विश्ववित धारावपुरवरतीय है।
          श्रद्भ हारका सं २६४ । पत्र सं १ । था ६२८४ ६ । बाला-विकी ।
          विरोध--- व्रवस्तिकी गीवा है ।
           ≥६४७ ग्रहकार्स २६४ । पन वं ४ । मा १३×४ ६ । नारा-बरहव ।
          रिमेर---परखद्भराज् में के पूर्वस्तान है।
          १६४८- शुरुका संव १६६ । यस सं १ । या ५०० र । बाला बरहण । से नाम १४४० स्
मुधी है।
          विकेश- वय १-७ तम नहारेगुर्गात करण है।
           श्रदेशक ग्रह्मा सं वेहें व । यह सं क । यह १००५ है । आसा हिस्से ।
           दिरीय-भूबरदान पुत्र एडीबाव स्तीय भाषा है।
           ३६४ सुरकार्सं≉ १६थ। वसर्वं १३। सा ३ २४४ इ. । शासा-संसदा श्रे काल १० ६
 रोप नदी र 1
           विकेच---वहारणा वताराम ने अविभिन्नि की थी। चयारती चूना, चनुचक्की स्तोप एवं नियमहर्गाणी
 (ब्राचापर) है।
```

FÌ

४६४१. गुटका स० २६६। पत्र स० २७। मा० ७२^२४५१ ६०। भाषा-सस्कृत ने देवूर्ण।

विशेष--नित्य पूजा पाठ सग्रह है।

४६४२ गुटका स० २७०। पत्र स० ६ । मा० ६३×४ ६० । मापा-संस्कृत । ले० काल सं० १६३२। पूर्ण ।

विशेष-तीन चौबीसी व दर्शन पाठ है।

४६४३ गुटका स० २७१। पत्र स० ३१। मा० ६×५ इ०। भाषा-सस्कृत। विषय-सग्रह। पूर्ण।

विशेष - भक्तामरस्तोत्र, ऋदिमूलमन्त्र सहित, जिनपञ्जरस्तोत्र हैं।

४६४४ गुटका स० २७२ । पत्र स० ६ । मा० ६४४३ इ० । भाषा-सस्कृत । विषय-सम्रह । पूर्ण । विषय-सम्रह । पूर्ण । विषय-सम्रह

४६४४. गुटका स० २७३ । पत्र स० ४ । मा० ७×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।

विशेष—स्वरूपचन्द कृत चमत्कारजी की पूजा है । चमत्कार क्षेत्र सवत् १८८६ में भादवा सुदी २ की प्रकट हुवा था । सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

४६४६ गुटका स० २७४ । पत्र स० १६ । मा० १०×६३ इ० । मापा∽हिन्दीं । विषय–पूजा) पूर्ण विषेप—इसमें रामचन्द्र कृत शिखर विलास है । पत्र = से मागे खालो पढा है ।

४६४७. गुटका स० २७४। पत्र स० ६३। मा० ४३×५ ६०। पूर्ण।

विशेष—निम्न पाठों का सग्रह है तीन चीनीसो नाम, जिनपञ्चीसी (नवल), दर्शनपाठ, नित्यपूजा मक्तामरस्तोत्र, पञ्चमञ्जल, कत्याणमन्दिर, नित्यपाठ, सबीधपञ्चासिका (चानतराय)।

४६४८ गुटका स० २७६। पत्र स० १०। मा• ६३४६ इ०। भाषा—सस्कृत} ले० काल स० १८४३। मपूर्णी

विशेष-भक्तामरस्तोत्र, वहा कवका (हिन्दी) झादि पाठ हैं।

४६४६ गुटका स०२७७ । पत्र स०२-२३। ग्रा० ५३×४५ ६०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। मपूर्ण।

विशेष—हरसवन्द के पदो का संग्रह है।

४६६०. गुटका स० २७६। पत्र स० १-६०। मा० ६८४ ह । मपूर्णी

विशेष--वीच के कई पत्र नहीं हैं। योगीन्द्रदेवः कृत परमस्मप्रकाश है। ि ा

४६६१ गुटका स० २७६ | पत्र स० ६-३४ | मा० ६%४,३० | मापूर्ण |

विशेष—नित्यपूजा संग्रह है।

```
EEY ]
                                                                               िगरक-का
           ×६६६ सहस्य सं०६८०। पत्र सं २-४१। या ४३xx इ. । वारा-विन्धे पत्र स्पन्त ।
           रिकेट-स्थानों का वर्तान है।
           १६६३ सप्टबार्स-क्टरीयम् ६ ६२।या ६४६ र । धारा-Xोपवी।
           विकेश---वार्ताकारी, प्रवासंदा, बक्तसंत्रा स्रोकाकारका प्राधिकारा राजवस्तुका, शामार्थका मार्थ
कार्ये का एका है।
           प्रदेश ज्ञाप्तकारी वृद्धका वर्ष ११-वर । या ६३×४३ ए ।
           विकेद--- निम्न कुका पाठों का शंबह है--- बैनएकोडी क्व ( पुकरवाल ) अक्षानरताया, ररनन्ते देवता
विवाद्यारकारा ( सवसकीतः ) निर्वादाकायः अधीयान सक्षीवनवैत्याकार कार्यसः ( अवस्तीरान ) वर्णाना
बार्परना रिवरी ( इवस्थात ) विस्तृता ।
           हर्षेक्ट गुरुका सं∗ १८३ । पत्र शं ६३ । या क्रुं×१ र । वाला-विन्दी पर । विन्त-समार ।
धपुराँ ।
           विक्रीय--- १३ वे बाने के वय बाली हैं । बनारबीयल कर वयनवार है ?
           ≭६६६ ग्रहकासः २०४४ वस्त तं १ देश सा ०४६% इ ः वस्त-दिनो बंसक्या प्रदर्ताः
           रिकेश---वर्णावतक ( कालतराम ) अत्योच ( कालिशब ) ने वी रचन वे हैं।
           .स.६६७८ शहरका सं २००१ वर्ष १-४६३ वर ४८६६ १ थस्या-बंस्कृत शहर । वर्ष
           विश्वेत---विकास, स्वास्थ्यपाठ, भोगीतसम्बादयाँ में रचनार्वे हैं ।
           अविदेश गुरुका से १वदे। पण व देश। मा अव द १ वर्ण।
           निवेद-अन्यर्थक प्रसाद वर्ष कियो टीका समित ।
           श्रीहरू गुरुषा क्षेत्र १८० । पर व. १२% याः को X2. ४ । प्रसा-बोहरा । दुर्व ।
           विशेष-- करवार्गसम्, मिल्हामा है ।
           - अर्थकः, शुक्रका सक्त १५०४ वर्ष १-४९ । वर्ष १ । विषय-क्रम् । वर्षे
           शिकेन-ब्बर क्या महीर दिया हुना है ।
           कर्षका श्रीका सं क्षात्र । पर वं १ श्रा १०४४ र । साला-दिन्छ । विवय-शहार । हर्ग
           विवेष-चित्रपाम पूर कोड्योमा में से करूप थीती श्रंपास दिना है।
```

न्दर क्षम नश्याच की कुरति कई हरिराह । वित्र क्य बानी नामि के ऊसी जिलो बुनाइ स

स्त्य--

चन्तिम-

श्रीकिरसन वचन ऐस कहे ऊघन तुम सुनि ले।

नन्द जसोदा ग्रादि दे वज जाइ सुख दे।। २।।

ग्रज वासी बक्लम सदा मेरे जीउनि प्रान।

तानै नीमप न बीसरू मीहे नन्दराय की ग्रान।।

यह लीला वजनास की गोपी किरसन सनेह।

जन मोहन जो गान ही ते नर पाउ देह।। १२२॥

जो गान सीप सुर गमन पुम वचन सहेत।

रसिक राय पूरन कीया मन वांछित फल देत ।। १२३॥

नोट-भागे नाग लीला का पाठ भी दिया हुवा है।

४६७२, गुटका स॰ २६० । पत्र स॰ ४२ । मा॰ ६×४ ६० । मपूर्ण ।

विशेष---मुस्य निम्न पाठो का सग्रह हैं।

8	सोलहकारएकथा	रत्नपान	संस्कृत	5 -1	₹
२	दशलक्षणीकया	मुनि ललितकोति	n	१३-	₹७
Ą	रत्ननयद्भतकया	27	n	1-09	-
¥,	पुण्गाञ्जलिवतकया	n	11	78-3	
ų	मक्षयदशमीक्या	37	10	73-3	
Ę	भनन्तचतुर्दशीव्रतकया	33	n	२७	
ø	वैद्यमनोस्सव'	नयनसुख	हिन्दी पद्य	पूर्ण ३१-४	2
					•

विशेष — लाखेरी ग्राम में दीवान श्री युधांसहजी के राज्य में मुमि मेघविमल ने प्रतिलिपि की थी। ग्रुटका काफी जीर्रा है। पत्र चूहो के खाये हुए है। लेखनकाल स्पष्ट नहीं है।

४६७३. गुटका स० २६१ । पत्र स० ११७ । मापा-हिन्दी सस्कृत । विषय-सम्रह । विशेष--पूजा एव स्तोत्र सम्रह है । सस्कृत मे समयसार कत्त्रद्रुमपूजा भी है । ४६७४, गुटका स० २६२ । पत्र स० ४८ ।

१ ज्योतियशास्त्र
 २ फुटकर दोहे
 ४ हिन्दी ३१ दोहा है ३६-३७

```
{c4 }
                                                                               [ गुरमभय
१ पदरोत
                                         शीरर्पन
                                                             बस्युत
                                                                                   14-77
                              मैं नाम वें १७६३ वंत हरियाराम ने सवाल में प्रतिनिधि ही हो।
           अर्थ्य गुटका संव श्रेष्ट्री। वंबह नहीं बाब्दे शीहरतनती। पत्र वं अर्थ का १×६ का है
राम म १७३३ । यहर्म । वया-जीर्स ।
          रियेश-पानुदेशिक मुलने एवं मंत्रों वा शबह है।
           १६३६ गुरका सं० १६४। पर नं ७७१ वा १८४ इश्वाम कान १७४४ वीर नुते ६१९७।
बानस्य युद्ध । स्था-नीर्ल ।
          रिरोप-र्न गोर्व्य व वे प्रतिनिधि की वो । पूजा वर्ष रुपोध बंद्य है।
           2500 ग्रहकार्स २६४ । यह में ३१-६३ । या YXXI इक्र आया-संस्तृत दिनी । वे र<sup>ा</sup>
यत्र वं १६२१ कारन दुरी १।

 िपेर—गुम्पाङ्गायन तृबं बळावणतीय जागा है।

          ४६७म शुरुवा सं० २६६। यत्र वं १-४१। था १४६) इषः। वारा-वंतरतः। विकन्तीरः।
कपूर्व । दया-दानन्त ।
          हिर्तेष-अत्मनसतीय इवं क्लावं तून है।
           ≱६4६ गुरुद्धा सं २६७। पत्र वं २१ । या ६८४ १द्या यस-निर्मा गुर्छ।
          विरोध-सामुर्वेद के मुलबी हैं।
           ≽६८० गुरुकास २६८। यस वं ६२। या ६०४२ इका बाला-दिन्दी। पूर्णः
          विकेश-आरम्भ के पृष्ट का बाली हैं। पृष्ट के बाले फिर पण हु ए के आरम्ब है। पण १ वर्ष गाउँ
के पश्चित हैं।
           १ काण्ड्रममा-च्या १ =२१ तक। पूहर यथि ना है। ११ वर है। यस्ते कुनर है। गरियाँ
दम सिक्रमर वराजा नगा है। १७ वस है।

 शास्त्र मामा---मोदिन्द ना-नद ११-३१ तक।

           asat गुरुकां स व्हर । यह वं ४१ । या ७०४% र । यापा-क्रियो । विषय-गृहार ।
          विकेश-शोवचार है ।
           ≱इंतर-शुक्रकार्स ३ । यम व १२ । या ६×२० है इ । यापा-दिल्यो | विषय-सन्ययसर्ग |
          विदेश--मन्दराहर, प्रामुक्त के नुक्के । यह ७ वे याने काली है :
```

गुदेश समह]

€.७

४६=३ गुटका स० ३०१। पत्र न० १८। धा० ४२×३ ६०। भाषा-सस्कृत हिन्दी । विषय-मग्रह । ने० काल १६१८। पूर्या ।

विरोप—लायगी मागीतु गी नी – हर्पकीति ने त० १६०० ज्येष्ठ गुदा ५ नी यात्रा नो यी ।

४६८४ गुटका स० ३०२। पत्र म० ४२। म्रा० ४×३३ ६०। मापा-मस्रा । विषय-सग्रह । पूर्ण विशेष--पूजा पाठ सग्रह है।

४६८४ गुटका स० ३०३। पत्र न० १०४। मा० ४३×८३ इ०। पूर्ण।

विशेष— ३० यन्त्र दिये हुये हैं। कई हिन्दी तथा उर्दूमें लिखे हैं। म्रागे गत्र तथा मत्रिपि दी हुई हैं। उनका फल दिया हुमा है। जन्मात्रो म० १८१७ वी जगतराम के पौत्र मासक्चन्द के पुत्र वी स्नायुर्वेद के नुसी दिये हुये हैं।

४६ म्ह गुटका स० ३०३ क । पत्र न० १४ । मा० ८४१ ह० । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । प्रविचेष-प्रारम्भ मे विश्वामित्र विरिचित रामयाच है । पत्र ३ मे तुलमीदाम गृत कविलाय रामचरित्र है । इसमे छप्पय छन्दो वा प्रयोग हुवा है । १-२० पद्य तक सस्या ठीक हैं । इसमे आगे ३४६ सम्या से प्रारम्भ वर ३६२ तक सस्या चली है । इसके आगे २ पत्र साली है ।

४६८० गुटका म० ३०४। पत्र स० १६। मा० ७३×१ इ०। भाषा-हिन्दी। म्रपूर्ण।

विशेष—४ ने ६ तक पत्र नही हैं। मजयराज, रामदाम, बनारसीदास, जगतराम एव विजयकार्ति के पदो का सम्रह है।

४६८८ गुटका म० ३०४। पत्र स० १०। घा॰ ७४६ इ०। भाषा-सस्कृत । विषय-पूजां। पूर्स । विशेष—नित्यपूजा है।

प्रद=६ गुटका स० ३०६। पत्र स० ६ | मा० ६३×४३ ६०। भाषा-सम्वतः। विषय-पूजा पाठ। पूर्याः। विषय-पातिपाठ है।

४६६० गुटका स० २०७। पत्र स० १४। म्रा० ६१×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। म्रपूर्ण। विशेष--नन्ददास की नाममञ्जरी है।

४६६१ गुटका सं० २०८ । पत्र स० १० । मा० ५×४ई इ० । भाषा-सम्कृत । विषय-स्तोत्र । पूर्ण विषेप--भक्तामरऋदिमन्त्र सहित है । [गुरक्तस्य १ प्रयोग मोपर्यंत सहाय १-गर के कला से १७६३ संग्र हिन्समस्य ने स्वस्त्य में प्रतिनित्ते गो गी। १६७१ गुरुका सं० ११३। संग्रह क्यों पान्हे सीतरमत्यी । पत्र सं ७६। मा १४६ छ। है सम्ब सं १७६३। स्वर्ति । स्वान्योगि । विदेश-समूत्रेवित गुरुके दुर्व गोनी का सम्ब है।

४६०६ शुरुका सं० २६४। यन सं ७७। वा ६८४ इस (के कस्व १७०० धीर दुर्ग ६। हर्गे। सारान्य दशास्त्रा नीर्थे।

विकेद—में योगर्जन ने प्रतिनिधि की वो । यहा वर्ष क्लीप बंबा है ।

. १६७० शुक्का सं० ६६१ । पत्र सं . ६१—६२ । या १७८६। सङ्ग सम्यासेलय क्रियो । वे स्म सम्बद्ध १९९१ सम्बन्ध करो ॥ ।

विकेश—सम्बद्धकारक एवं अकानकतीय कारा है।

हर्षेच्या हुउद्यास १६६ । पण स्टंप-४१ । या १४६३ इञ्च । यस्त-राह्यतः । स्टब्स्-सीर्वः स्टुर्ट । स्वा-राजन्तः ।

विकेय-अस्तावससीय सर्व सत्यार्थ सन् है ।

25-64, गरका सं २६७ । पन सं ११ । या ६००० इक । बाला-दिनी । महर्च ।

विकेद-बायुर्वेद के पुत्रकी है।

्रह्म- शुरुषासः १६८। १९ व ११। या १३/८१ इत्र । बला-मिनी। पूर्व ।

विक्रेष—प्राप्त के पशुपव कानी हैं। पेटे के बाने फिर रूप १ के आएम है। पण १ वर्ज नहीं के करिता हैं।

र माञ्च गला—गर १ –१६ तकः। स्त्रार कृति काहै ११९ वर है। वर्षार कुतर है। वर्षार है। उन्हों निकार स्थाना कर्ता है। १७ वर्षा है।

१. बार्छ् नहाा-नीविष्य का-वन ११-३१ तक।

प्रदेशके शुक्का सं १६६। पण सं ४१। सा ७००% इ । बाया-दिन्छे । दिवस-महार।

निवेद-मन्द्रवासभ पानुर्वेद के पुत्रवे 1 ५४ ७ हे धाने वाली है।

गुटका-संप्रह]

१ पूजा पाठ सग्रह

×

संस्कृत हिन्दी

२ प्रतिष्ठा पाठ

X

73

३. चौवीस तीर्थद्धर पूजा

रामचन्द्र

हिन्दी ते॰ नाल १८७५ भादवा सुदी १०

४६६६ गुटका स० ६ 'पत्र स० ३१७ । मा० ६× द० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ते० काल स० १०६२ मासोज सुदी १४ । पूर्ण । वे० स० ८६४ ।

विशेष—पूजा एव प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठो का सम्रह है। पृष्ठ २०७ पत्र भक्तामरस्तोत्र की पूजा विशेषत उल्लेखनीय है।

४७०० शुटका स०६। पत्र म०१८। घा०४४४ इ०। भाषा-हिन्दी। पूर्ण। वे० स० =६४। विदेष--जगतराम, ग्रुमानीराम, हरीसिंह जोधराज, लाल, रामच द्र पादि कवियो के भजन एव पदी का सप्रह है।

ख भगडार [शास्त्रभगडार दि॰ जैन मन्दिर जोवनेर जयपुर]

४७२१ गुटका स० १। पत्र स० २१२। मा० ६×४३ इ०। ले० कान ×। मपूर्ण।

8	होडाचक	×	सस्कृत	मपूर्ण	=
9	नाममाला	धन झय	n	17	E-3 ?
₹.	श्रुतपूजा	×	33		35-56
٧.	पञ्चकत्यागुकपूजा	×	, से०क	ाल १७५३	3E-EX
ሂ	मुक्तावलीपूजा	×	33		६५–६६
Ę	द्वादशयतोद्यापन	×	27		६६-५६
b	प्रिकालचतुर्दशीपूजा	×	, ले० काल	स० १७८३	56-20 2
5	नवकारपैंतीसी	×	33		• •
3	म्रादित्यवारकया	×	57		
१०	प्रोपधोपवास व्रतोद्यापन	×	99		१०३२१२
११	नन्दीश्वरपूजा	×	77		
	पञ्चकल्यागुकपाठ	×	1)		
१ ३	पञ्चमेरपूजा	×	99		

क मगडार [शास्त्रभगडार वावा दुलीचन्द जयपुर] रहरू गुरुषा स ११०० व २०११ वा १२०० (बा १ व ११०) वि

१ बागवू	रस	भीरवर्षिङ् राठीड	figelt	१ − 4
२ बढोत्तर	र सनाव विधि	×	, h	तत्त्व वं १४६६ छ।
	योरंपदेश के समय में	् सम्बद्धाः वे सहारूरीः	व प्रतिविद्य की वी ।	
३ वीलयक	•	पूरराज	दिली	tr
४ समयना	र नाटक	ववारबीदाव		ttv
	गलपञ्च साहग्रही के स	लाव काम में तें १७ व	में लाहीर में ब्रसिसिरि	हरीं भी।
१. वतारची	विकास	×		355
	विदेशवादवाह बाह्	नहां के कालनपाल से १४	११ में जिल्लास ने	प्रतिविधि हुई भी ।
	श्रीक्षेत्र शुक्तका सं	कायनसः २२४।सा	च्यार ह्या । महर्च	्दे हो दर्दा
	विक्रेच—स्टोच एवं पूज	ा पाठ सं षद् है ।		
	रहेर गुरका से	। वन वं २४ । या ६	हे×१३ ६ । जावा⊷	हेल्यी (पूर्व) वेड प्र
१ स्रोतिक		×	श ुल् स	t
र महर्मन	पेक कामबी	×	п	१ −€
🞙 प्रविद्वा	में राज बारे नारे ६६ वं	सेंके चित्र ×		6-64
	श्रीकृष्ट गुरुवा स	रायमधीरकामा ह	×={ द । पूर्व । ¶	र्शन है
	विकेष—पूजामीका क	पर है।		
	अर्थ्य शुक्का स	रायवर्ष स्टामा ६	×४४ इ. । मान्।—वेस	एव हिमी। बहुर्स वे. वं
46.1	विवेच—मुखावित पाठों	का बंधव् है।		
131	१६६७ गुरुमास ^१	। यस वै १९४१ था	६२८४ ६ । जारा-बर	इव । पूर्ण । बीर्ल । १ व
***	नियोग—विशिष स्तोपों			
	अवस्य गुरुषा स	। यम से ४१६ । घर	∰×tτiħ π	संस्था १ ४ वरात्र वृद्धि ५
पूर्ल । वै	4 111			

ुटका-समह]

४७०४ गुटका स० ४। पत्र स० ४८। ग्रा० ५×४ ६०। ल० काल म० १६०१। पूर्मा।

विशेष--कर्मप्रकृति वर्णन (हि दी), बल्यागमिन्दरम्तोत्र, सिद्धित्रयस्तोत्र (मन्कृत) एव विभिन्न निवयो के

ग्दो का सग्रह है।

४७०६ गुटका स०६। पत्र न० ८०। ग्रा० ८२४६% ६०। ले० काल 🗴 । मनूर्ण । विशेष-गुटके मे निम्न मुख्य पाठो का सम्रह हैं।

१ चौरासीबोल कौरपाल हिन्दी प्रपूर्ण ४-१६ २ मादिपुराणविनती गङ्गादास " १७-८३

विशेष-सूरत में नरसीपुरा (नर्तिचपुरा) जाति वाले विशिव पर्वत के पुत्र गङ्गादास ने विनती रचना

को थी।

पद- जिएा जिएा जिए जिनडा
 हर्पकीत्ति
 प्रष्टक्पूजा
 प्रश्चिम्पूणा
 पूर्ण
 पूर
 पूर
 पूर
 पूर
 पूर
 पूर
 पूर
 पूर

४७०७ गुटका स० ७ । पत्र स० ४० । घा० ५३ ×४३ ६० । ते० काल × । प्रपूर्ण ।

विशेष—४८ यन्त्रो का मन्त्र सहित सग्रह है। मन्त मे कुछ बायुर्वेदिक नुमर्पे भी दिये हैं।

४७०८ गुटका म० ८। पत्र त० X। मा० ५X२ई इ०। ते० काल Xी पूर्ण।

विशेष-स्फुट कवित्त, उपवासी का ब्यीरा, धुभाषित (हिन्दी व सस्यत) स्वर्ग नरक मादि का यर्गान है।

४७०६ गुटका स०६। पत्र स०५१। मा०७४५ ६०। भाषा-सस्कृत। विषय-सग्रह। ले० कान स०१७६३। पूर्ण।

विशेप-भायुर्वेद के नुसखे, पाशा केवली, नाम माला भादि हैं।

४७१० गुटका स०१०। पत्र स०८४। मा०६×३३ ६०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद सप्रह। ले० काल ×ा पूर्ण।

विशेप — लिपि स्पष्ट नही है तथा मशुद्ध भी है।

४७११ गुटका स०११। पत्र स०१२-६२। म्रा०६×५ ६०। भाषा-सस्कृत। ले० काल ×। मपूर्या। जीर्या।

विदोप---ज्योतिष सम्बन्धी पाठों का सग्रह है।

]			[गुरक्रभव्य
१७०२ गुरका स	सायक १६६ । मा	ε⊠६्६ ाने कल XI	इस-बोर्ड बोर्ड ।
विस्तेष्ट्रवर्धन	×	वंसाय हिन्दी	t t
पालपक्ष्यर्श न	×	विल्यी	11-11
विवारवावा	×	वासून	11-11
चौनीचरीर्वञ्चर परिचय	×	हिल्दी	14-11
परवीदक्षांचर्ग	×		\$ 7-0 4
माधव विवसी	×	NT SEC	#4- ? †\$
वासर्वेष्ठ (बालनियक्ती)	×	•	111-111
नेपनकिया भा तकानार निपाल	×	चंत्क्रव	fån fra

ŧ ŧ ١. ٧ ٤. ٤.

दुर्ग ।

व नैपनक्रिया शासकाबार निप्पल × र्सरकरा **८. तत्त्वार्वसूत्र** उपारवद्यय

224-254 ±७+३ गुरकास ३ । यन सं २१६ । या ६×६ ६ । के काम × । पूर्णी विधेय—निरापुर्वागाठ तथा भन्मर्वेश्वर् है । १६% प्रतिरिक्त निरमपाठ संबह् है ।

n **१ यदुश्रक्तीर्थरा**स **दयकनुष्**र िली र. वास्त्रवादना निवस्त्रसूरि र राजा १६१६ विन्तर

¥1-Y1 ६. स्पर्वनप्रतिकरीत नैवसिङ् 45-64 ४ वासिवर कीपर विक्र**िया**ची 976 25

ey-1 4 क्तुविद्यति जिलसम्बन्तुति 2 4-210 ६ बीक्रतीर्व क्रुप्रीयलखुवि 110-112 महाचीरत्स्वन **विवस्त** ** मारीचायतवन

equ-{ 91 2. TRETARROTT

144-145 १ विश्वती पाठन स्तूति

रूप प्रशुक्तम सः प्रथम सः वर्गामान प्रदृष्टहर । भारा-दिन्दी हे नाम वं १६ ४।

```
502
शुटका-समह ]
          ४७२१ सुद्रका स० २१। पत्र संव ४-६२। माव ४३×४३ ६०। तेव गान 🗶 । मपूर्ण । जीर्ण ।
          विदोप-समयार गाया, सामायिनपाठ गृति सहित, तत्वार्यमूप एथ भनागरम्तीय के पाठ हैं।
           ४७२२ गुटका सट २२। पद म० २१६। धा० ९×६ ६०। ते० बात सं० १८६७ मैय मुदी १४।
पूर्ण ।
           विशेष-५० मंत्री एव स्तीत्री वा सवह है।
           ४७२३ शुटका सठ २३। पत्र न० ६७-२०६। घा० ६४४ ६०। ने० गान 🗴 । धरूर्ण ।
                                                                         पूर्ग
  १ पद- / यह पानी मुलतान गये )
                                                          हिरो
                                         X
                                                                                      23
  २ ( पद-पोन सत्तामेरीमै न जानी तजि
                                         X
                                                            11
                                                                          33
                                                                                       में गमें गिरा।रि )
  र पद-( प्रभू तेरे दरमन की विनहारी )
                                         X
                                                            77
                                                                          99
  ४ मादियवारनथा
                                         X
                                                                                 £E-17X
                                                            17
  ४ पद-(पनो निय पूजन श्री बीर जिनद )
                                                                                309-209
                                         ×
                                                                          33
                                                            91
  ६ जोगीरासो
                                      जिनदाम
                                                                               731-035
                                                            17
  ७ पञ्चेद्रिय देनि
                                     उरहारसी
                                                                               १६२-१६५
                                                            91
   प जैनविद्रीदेश की पश्चिका
                                     मजलसराव
                                                                               १६५-१६७
                                                            27
    ग भगडार [ शास्त्रभगडार दि० जेन मन्दिर चौधरियों का जयपुर ]
            ४७२४ गुटका स०१। मा॰ ८×५ इ० । ते॰ काल × । पूर्या । ये० स० १०० ।
            विदोप--निम्न पाठा मा सप्रह है।
   १ पद- सविरिया पारसनाय माहे हो चागर रासो
                                                   गुशालच इ
                                                                                    हिन्दी
      🥠 मुक्ते है चान दरसा पा दिखा दोगे सो वया हागा
                                                      X
   १ दर्शनपाठ
                                                      ×
                                                                                    सस्यत
     तीन चीवीसीनाम
                                                      X
                                                                                    हिन्दी
    ४ पत्याणमन्दिरभाषा
                                                   बनारसीदास
                                                                                      "
    ६ भक्तामरस्तोत्र
                                                   मानत्ङ्वाचार्य
                                                                                   संस्कृत
```

पपप्रभदेव

"

७ सहमीस्तीय

```
् गुरका-स्था
402 ]
          ४०१२ गुरुकार्सः १२ । पत्र वं २२३ । सा ५×४ व । वासा-संस्टट-विन्धे । ते नन
सं १३ ६ वैसाम्ब बुधी १४ । पूर्वाः
          विश्वेय--पूजा व स्तोधों का संबद्ध है।
          र•१६ शुरकास०१३ । पार्च १८६ । सा ५८५2 व । के राज×ापूर्त।
          विसेच---शामान्य स्तोध धर्च बुजा पाठी पा बंधा है !
          x+१४ सुरकास १४।पवस ४२।मा व्हेऽरा<sub>व</sub> ६ १वापा-हिमो।से सम∷ाण्ड्रती
                                                                                1-64
                                       x
                                                         दिन्धी
```

१ पिनोस्पर्जन 12-45 ९ वर्षेचा री परणा × 21-58 १ वेसव धनाना इनवनर्तन ×

a श्रेष्ट शुटकासं १४ । यथ सं अद्वासा ६८६ दाले कला ×ादुर्सी विवेष --पूजा पूर्व स्तानी ना संबद्ध है।

± रेदै शुक्रकासा रेदी। पण वं १२ । या द>८६ द र दे बस्तार्थ (७८६ वैदल बुधी १। पूर्व । tout E हिन्दी १ सम्बद्धारमञ्जूष **मनारतीयात**

220-21Y २ पार्श्वनलजीको विकासी × ? ? ? ? ? § § शान्तिनावस्यवन **प्रत्या**त्र र 75 055 ४ प्रवेशशीयिलकी ×

ayatu शुक्रकासः १७।पगः र ११६।मा ६८६ इ. वि. कल ४ ।मञ्जी विकेश-स्तीय धर्व पुताब्दी वा संबद्ध है ।

अपूर्ण ।

। भरेद शुक्रमासः १मा वयर्थं १९४१ मा र्थ्य×दर्श भारा-वास्वादे कल^X। विक्रम-नित्य वीवितित पुना पाठों ना बंधह है 1

±+१६ गृहकासं १६। वर्षं ११३। या १×१ इ. । ते राज × पूर्णं।

विकेश-नित्य पाठ व अब वादि का बंधह है वका समुर्वेष के मुक्ती जी दिये हुने हैं।

≱⊌२ शुद्रकासं ए∌।यगथे १६९।मा ७८६६ ।मे नामसै १ २१।मार्गि!

क्किंग--मिरप्यूनासक वार्ववाच स्तोत्र (पधनवरेव) जिनमूचि (क्रवच्द, हिपी) पर (पूर्व बर्द एवं बनवरीरित) कोलवाली को बरवींत तथा आनुविक बसाव आदि वांग्रे का बंबद है ?

600 गरका-समह ४७२१ सुटका स० २१। पत्र से० ४-६२। मा० ४३×४३ इ०। ते० रान 🗴 । मपूर्ण । जीएँ। विशेष-समयनार गाया, सामायितपाठ पृत्ति सहित, तत्त्वार्यमृत एव भक्तामरम्तीत्र वे पाठ हैं। ४७२२ सुटका सट २२ । पत्र स० २१६ । सा० ९४६ ६० । ते० बाल सं० १८६७ चैत्र सुरी १४ । पूर्ण । विशेष-५० मंत्रा एव स्नोत्रो मा सयह है। ४७२३ शुटका स०२३।पत्र स० ६७-२०६।क्षा०६×५ ड०।ते० गान × । घर्गा। पूर्गा हि से 20

१ पद- / वह पानी मुलतान गये)

X

×

×

२ (पद-यीन खतामेरीम न जानी तजि Y 11

के पम गिनारि)

३ पद-(प्रभू तेरे दरमन की कनिहासी)

४ मादित्यवारनथा

४ पद-(चलो निय पूजन श्री बीर जिनद)

जोमीरासी जिनदाग

पञ्चेदिय वेलि ठरपुरसी ८ जैनविद्रीदेश की पश्चिमा मजनसराव

ग भगडार [शास्त्रभगडार दि० जेन मन्दिर चौधरियों का जयपुर]

४७२४ गुटका सब् १। मा० म×५ इ० । ले० वाल × । पूर्ण । वे० स० १०० । विशेष--निम्न पाठा वा भग्ना है।

१ पद- सोवरिया पारतनाय माहे तो चाकर रासी

म मुक्ते है चाव दरसन या दिया दोगे तो यया होगा

६ दर्शनपाठ

४. तीन चीबीसीमाम

४ फल्याएमिन्दरभाषा ६ भक्तामरस्तोत्र

७ सदमीस्तीय

11

77

33

EE-134 309-209

11

739-039

167-164

१६५-१६७

हिन्दी

संस्कृत

हिन्दी

संस्कृत

57

<u>पयप्रभवेव</u>

गुपालव र

X

X

X

वनारसीदास

मानतुद्गाचार्य

ash]		[शुरुषांप
व केलूबा	×	दिल्ये बंदर
 बर्शिय विष चैत्यालय अववाल 	×	6 p €
१ दिशे पूरा	×	बंस्ट
११ चीमहत्तारण्युवा	×	,
१२, बदलकालपूजा	×	,
१६ का ^{मित्रराठ}	×	,
१४ पार्लनारपुराः	×	
१९. पंचमेरपुत्रा	बुदरदा स	<u>⊊-d</u>
१६ वर्गासस्युदा	×	स्दा
१७ तलार्पसूच	चनस्वद्रीन	बपूर्ल
tu, राजपरपूरा	×	
१६, धरुषिन वैत्रालय वदमाल	×	0 ed
২ নিৰ্মন্তৰাজ নাবা	वैदा व्यवसीयास	
११ डुक्मो नो जिनदी	×	
१२. विश्वन्यिती	वयवराम	•
१६ दलार्चपुत्र	वयत्त्वार्थि	पूर्व वंदर
२४ व्यक्तमञ्ज्यसम	स्थल्य	(je č
११, पर-वित्र देवरा विश्व रहो क बाग	দিমদবিছ	
१६ 🙀 गोनी हो जैनन थो प्यार	वास्त्रदाव	*
२ _अ मनुम्बस्थरव कुलो मेरी	नम्ब कवि	
२४. 😠 असे तुम भाग वेबत ही		
१६. 💣 वर् मेरी सुनी विश्वती	19	
१ 🍙 परमो शंतार की बारा विककी भार नहीं वाधा		
३८. 😠 नता रोबार प्रश्नृतेया बना नर्नेत्र तसुर हेरा	77	
ार सुवि	शुक्षमय	
३३ वै मिना ण के बक्त जब	×	,
इ⊻ पद− मैंत कब परबी देवाई	×	#

758-803

४७२४ गुटका स० २। पत्र स० ८३-४०३। ग्रा० ४३×३ इ०। ग्रपूर्गा। वे० स० १०१।

विशेष--निम्न पाठी का सग्रह है।

१ कत्यागमन्दिर भाषा	वनारसीदास	हिन्दी	भपूर्ण ८३-६३
२ देवसिद्धपूजा	×	77	¥\$\$-€3
३ सोलहकाररापूजा	×	भपश्र श	११५–१२२
४. दशलक्षरापूजा	×	भपभ्र श संस्कृत	379-579
५ रत्नत्रयपूजा	×	संस्कृत	१२= —१६७
६ नन्दीश्वरपूजा	×	সাকৃत	१ <i>६</i> ८-१८१
७ शान्तिपाठ	×	सस्कृत	१ ८ १ –१८६
= पञ्चमग ल	रूपचन्द	हिन्दी	१८७२१२
९ तत्वार्थसूत्र	उ मास्वामि	सस्कृत ।	मपूर्ण २१३-२२४
१•. सहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचार्य	"	२२५–२६=
११. भक्तामरस्तोत्र मत्र एव हिन्दी			

मानतुङ्गाचार्य

सस्कृत हिन्दी

१८७२६ गुटका स० ३। पत्र स० ८६। ग्रा० १०४६ इ०। विषय-सप्रह। ले० काल स० १८७६

पद्यार्थ सहित

श्रावरण सुदी १५ । पूर्ण । वै० स० १०५ ।

विशेष--निम्न पाठो का सग्रह है। १ चौवौसतीर्यंकरपूजा हिन्दी द्यानतराय २. मष्टाह्मिकापूजा " 93 ३ पोडशकारए।पूजा 33 73 ४ दशलक्षरापूजा 23 33 ५ रत्नत्रयपूजा 27 73 ६ पचमेख्यूजा 22 5) ७ सिद्धक्षेत्रपूजाट । 37 33 ८ दर्शनगठ × 27 १ पद- भरज हमारी मुन × 77

•••]			िगुरकासम्	
र बक्तानरस्कानीस्पत्तिकता	×	#		
११ मस्त्रमरस्तोत्रच्छिमेत्रसहित	×	बोसाय मिट	0	
		न्यमन स्व रि	ल्यो धर्व स्त्रीय ।	
४०१० गुरुषा स	ष्टापमधं ददाया व ×	दरा चला–दिली	(कि अञ्चल दश्या	
पूर्वाके सं १ का				
विकेश-नेय श्वितीं है	कियो को कार्डक है। इस	में बीबतराय चावतरा	र बोश्सव स्थम दुगम	
भैम्पा बाल रठीयाच के गाम जरनेवानी				
घ मगडार [दि	र० जैन नया मन्दिर	वैराठियों का	जयपुर]	
रुअन्दः शुक्कासं १ । पम वं ६ । या ६३/८६ ६ के काम x । हुती । दे वं १४ ।				
विक्रीय—विक्रम वाद्ये का विक्रम हैः—				
र जनवाम रस्त्रीण	নালবু দাদার্য	र्वसमूच	1-1	
रै क्रटकरदासम्ब	×	n	•	
रै बनारची/वसन्य	वनारसीयम	त्र ाल ी	3-146	
४ नविस	99	n	140	
% परमार्थवीका	क्ष्यमध		^{दिद} ⊸ईका	
 वापनलागरंग 	वनारधीयाच		₹₩Ҳ─₹₡₽	
 ध्रतेकस्थाननलाः 	नम्बर्गन		15-154	

×

×

क्पहीप

×

बूमरवात

×

विकेश—भी देशमधन्त में असिमिधि की भी ।

8

चतुर्गं

विन**िमसस्य**कीय

१६ माठामरकाराः (नवः)

L. favoret

ियसम्बद्धाः

११ देखुना

११ जैनस्टब

220-2 E

₹ 0-₹{{

२११-२११

444-41R

257-7 \$

744-1

गुट्का-संप्रह]

प्र७२६ गुटका सः २ । पत्र सः २३३ । ग्रा० ६×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० स० १४१ विशेष-निम्न पाठो का सग्रह है ।

3-808 योगी द्रवेव प्रपभ्र श १. परमात्मप्रकाश विशेष-सस्कृत गद्य मे टीका दी हुई है। हिन्दी 980-800 २ धर्माधर्मस्वरूप X १७१-१६२ ढाढसीगाथा ढाढसीमुनि प्राकृत 823-8EX Y पचलव्धिविचार X 11 758-884 हिन्दी य्र० जिनदास भ्रठात्रीस मूलगुरारास 285-28% ६ दानकया 11 77 284-289 ७ वारह मनुप्रेक्षा X २१७-२१३ य० मजित हिन्दी हसतिलकरास 220-286 ६ चिद्रपभास X १० भादिनायकल्याणकक्या यहा ज्ञानसागर 225-233 ४७३० गुटका सं० ३ । पत्र स० ६८ । मा० ५३×४ इ० । ले० काल स० १६२१ पूर्ण । वे० स० १४२ जिनसेनाचार्य १ ,जिनसहस्रनाम सस्कृत 8-34 २ मादित्यवार कया भाषा टीका सहित मू० क० सकलकीति हिन्दी ३६-६० मापाकार-सुरेन्द्रकीति र० काल १७४१ ३ पद्मपरमेष्ठिगुरास्तवन **६१-६**5 33

४७३१ गुटका स० ४ । पत्र स० ७० । मा० ७३ ४६ इ० । ले० कास 🗴 । पूर्ण । वे० स० १७४३ १ तत्त्वार्यसूत्र उमास्त्रामि सस्कृत 4-24 भक्तामरभाषा हेमराज हिन्दी 75-37 जिनस्त्वन दौलतराम 37-33 ४ छहढाला 38-48 33 ४ भक्तामरस्तोत्र माततु गान्नार्ध संस्कृत ६०-६७ ६ रविवारकया देवेन्द्रभूपरा हित्दी ६५-७०

५०८] [-गुडका-संद

रूप्रेर-गुरकासं रापवर्ध ३६। या वर्×७६ । जापा-विशो। वे नास×। हुई। वे संस्था

निकेय--पुनायो का सवह है।

रेक्टरे सुदक्त से० के। पक्ष क-केश्री था क्ट्रेटर । जावा कियी | हैं कार्य ८। कार्य के से १९७६ ।

रिवेप--प्रवादों का बंब्य है।

४७१४ गुरुकासः ७। पर सं २-३३। या ६२,४४२ ६ । त्राया-क्षिती इंस्टुट । त्रिया-हुना। वे कल्प × । सर्वो । वे संभव ।

रूपेर गुरुकासंस्थापण वं १७-४० । या ६२्४६ इ । जला-श्रृती } वे वस X । सर्वाचे दे १४६ ।

निकेप---ववारतीविकास तथा कुछ वर्षों का सबस है ।

प्रकार प्रकार के । पर व देश का घटना है करने से स्वरंग से स्वरंग है । इन्हें दें के स्वरंग

विकेश--शिली वरी का संबद्ध है।

रूपरेण शुरुका संदे । यन वं ४ । या ६००० स्थापना हिन्दी । विश्वन-हुमानाङ केसी वे कम्बर × । उस्ते । वे साथ रा

दश्केषः शुद्धकासः ११ । पणकः २१ । सा ७X६ द । मलादिन्यी। विशव-नृतागठ वैद्या ते कला×ोकरणी वै र १११ ।

क्षेत्रेर शुरकाशं १२ । पत्र सं २४-वर । सा ×६३ इ । क्या-विक्यों क्रिक-द्वा पाठ संख्या । के कला× स्वयत्री । वे १४६ ।

रिवेष-स्तुट शादी वा संबद्ध है।

भगडार [शास्त्रभगडार दि० जैन मन्दिर संघीजी]

रूपरे मुख्यासे १। पर वं १०। वा २०६३ ६ । जसा-सून्ये बेस्ट्य । वे वार ४। व्यूपो । विकेष-प्रवास क्ष्मेणे वार्तक है। १८७२ गुटका स०२। पत्र स० ६६ । म्री० ६४५ इ० । भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल स० १८७६ वैशाख शुनला १०। म्रपूर्ण ।

विशेष — चि॰ रोमसुर्खेजी हू गरतीजी के पुत्र के पठनार्थ पुजारी राधाकृष्ण ने मढा नगर में प्रतिलिपि की थी। पूजाओं का सग्रह है।

४७४३ गुटका सं० ३। पत्र स० ६६। मा० ६६×६ इ०। भाषा-प्राकृत संस्कृत । ले० काल ×। म्रपूर्ण।

विद्येष-भक्तिपाठ, संवोधपञ्चासिका तथा सुभाषितावली म्रादि उल्लेखनीय पाठ हैं।

१८६५ गुटका स० ४। पत्र स० ४-६६। मा० ७४८ ६०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल स०

विशेष--पूजा व स्तोत्रो का सग्रह है।

४७४४. गुटका स० ४ । पत्र स० २८ । मा० ५×६३ इ० । मापा—सस्कृत । ले० काल स० १६०७ । पूर्यो ।

विशेष---पूजामों का सग्रह है।

४७४६ गुटका स०६। पत्र स०२७६। आ॰ ६४४१ इ०। ले॰ काल स० १६६ माह बुदी ११। अपूर्ण।

विशेष—मट्टारक चाइकीर्ति के शिष्य माचार्य लालचन्द के पठनार्थ प्रतिलिधि की थी। पूजा स्तोत्रो के मितिरिक्त निम्न पाठ उल्लेखनीय है —

१ भाराधनासार देवसेन प्राकृत

२ सवीषपचासिका 🗙

३. श्रुतस्तन्त्रं हेमचन्द्र सस्कृत

४७४७ गुटका स० ७। पत्र स० १०४। भा० ६ र् ×४ र् इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष-मादित्यवार कथा के साथ मन्य कथायें भी हैं।

४७४८ गुटका स० ६। पत्र स० ३४। ग्रा॰ ४३×४ ६०। भाषा-हिन्दी । ले० काल ×। मपूर्ण। विशेष-हिन्दी पदो का सग्रह है।

४७४६ गुटका स० ६। पत्र स० ७८। मा० ७५×४ ६०। भाषा-हिन्दी। विषज-पूजा एव स्तीत्र समह। ते० काल 🗴 । पूर्ण । जीर्ण।

```
4?
                                                                           <u>ग्रह्म संघ</u>
          १४४१ सटकार्स० १ । पत्र स १ श्या ७५×१६ । ते कला.× । पपूर्तः
          विदेश--प्रात्मका एक सम्बद्धात के पूर्वी का श्रीवर है ।
          र∙र्थ गुरुकास ११।पण स २ । था ६३×४३ ६ । शाया-शियो स्ते समा×ा
पार्ख ।
          विकेप--- समरवास गावि पविजों की लातियों का ग्रंबर है।
          १५४२, सहस्रास १२ । पन संद्राधा ६०४, इ. । आस-किसी । ने नाम X । नाएं
          विकेश---पञ्चमञ्चल करपन्य इस प्रवास एवं विनशियों का लंबा है है
          ४५६३ गुरुकास १३।पन्न रे १ ।या X६६ (मना-विनी1के मन X1ईर्स)
  १ वर्षविभाग
                                                        तिल्ही
                                    चामवरम
  २ बैतस्तक
                                     नवरदाव
          श्र-राप्त गृहक्या सं= १४। पत्र वं १६ के १६४। या १८५३ व । धारा-क्रियो । ते नात ८१
                    विचेत - पर्या लेखा है।
पुरुष ।
          १८४४ सुटकारः १४।पत्र ७ ४ ।मा ७ ४१६६ इ । जला-विन्दी।के कल ×।वर्ष
          विकेश-कियों वर्त का संबद्ध है।
          ४०४६ शुरुकास १६।वन सं ११४।या १८४६ इ.। वाला-हिलो संसदा है कान XI
हाउली १
          विभेर-प्रगाराठ वर्ष स्त्रीची का संबद्ध है।
          ≵कार सुदक्षा सं १७। वद सं १ था ६०४४ इ.। बाया–हिम्मी। के बरू X। महर्ज ।
          विकेच--नज़ विकाध वादि पविनों के पर्धों का सब्ब है।
          ४७४८. गुरुकास १८। वनसं १९१मा १८९६ । मला–संस्टर (में कल Xासपूर्ण)
                 विकेश--तरशर्मकम एवं कुनान है।
बीता ।
          प्र-वसः शुक्तकासं १६। यम वं १७१ ! मा १८७३ इ । मारा-विली । से नान ×ा वहाँ
                                                                               प्रापं
  १ किन्द्रसम्बद्ध
                               - समाराभी प्राप्त
                                                     क्रिक्री
                                                                              पर्ज
  ९ जम्बस्यामी श्रीतहें
                               व राजनळ
                                                      100
                                                                               बार्र

    मकारीसामाग्रः

                                   ×
                                                      77
   अ समर्थितरलवलाः
                                   ×
                                                                               10
```

ि ७११ गुटका-संप्रह 🛚 ी १७६० गुटका सः २०। पत्र स॰ ५३। आ० मर्द्र ४६५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले॰ काल 🗙। मपूर्श । विशेप-गुमानीरामजी ने प्रतिलिपि की यी। सस्कृत हिन्दी र० काल स० १८२५ X १ वसतराजशकुनावली सावन सुदी ५ । × संस्कृत धनस्रय २ नाममाला '४७६१ गुटका सद २१। पत्र स० ८-७४। झा० ८×५१ ६०। ते० काल स० १८२० घपाढ सुदी ६। मपूर्ण। हिन्दी १. ढोलामारुखी की वार्ता X २. शनिश्चरकया X n ३ चन्दकुवर की वार्ता X ४७६२ शुदका स० २२। पत्र स० १२७। मा० ५×६ इ०। ले० काल X । मपूर्ण। विशेप-स्तोत्र एव पूजामों का सग्रह हैं। ४७६३ शुटका स० २३। पत्र स० ३६। मा० ६३×४३ इ०। ते० कात ×। मपूर्ण। विशेप--पूजा एव स्तीयो का सग्रह है। ४७६४ गुटका स॰ २४। पत्र स॰ १२८। ग्रा॰ ७×५६ द०। ले॰ काल स॰ १७७४। प्रपूर्ण। जीर १ यशोधरकया हिन्दी र० काल १७७५ खुशालचन्द काला २ पद व स्तुति × 11 विशेप-सुरालचन्दजी ने स्वय प्रतिलिपि की थी। ४७६४. गुटका स० २४। पत्र स० ७७। मा० ६×४३ ड०। ले० काल × । मपूर्ण। विशेष - पूजामों का सग्रह है। १७६६ गुटका स० २६। पत्र स० ३६। मा० ६३×५५ इ०। मापा-सस्कृत। ले० काल ×। मपूर्ण र्छ । १ पद्मावतीसहस्रनाम X सस्कृत ५ द्रव्यसग्रह X प्राकृत ४७६७ गुटका स०२७। पत्र स०३३८। मा० म्प्रह इ०। ले० काल 🗙। मपूर्ण। १ पूजासग्रह × सस्कृत

२ ब्राप्तसम	च्या समा		E्लि
१ रहर्मनराज	*		
¥ वीरानसान	**		
६, वर्णान्यस्वयः	-		
	। वदावय के देश (सा ४०० सम्बद्धाः सम्बद्धाः ४००	w _t t il	नान x । द्वारी ।
	म पाउ उप्लेमनीय है ।		
१ वासनामा	वर्गनव		क्ष्मा
१, बर्गरपुर	यरनंदर		*
६ विनोद-दिनकातीच	महारक बहीचन्द		
¥ विवयम्बनाय	वातावर		
६ देन्द्रीयांची	विश्वसम्		S(mb)
३३६६ शुरुवा मे	No mist bitlife	re E IR	ere d' tear tere er
दा <u>वर्</u> गी।		•	
१ विश्वविद्यासम्बद्ध	×	हिल्हे	
६. चीरीम डीचेंबर दुशा	रामकड		
६ वर्षधनपूरा	देशपाद		
γ र्ववार्वद्वावा	×		र करते ३ छ
			के का जे हुआ
		रीशीराय का	(व) वे इन्टिनि को की ।
६, रंग ामान्यपूर ा	*	(rt	
६ इन्बर्रेस्ट्रबन्तः	वानभूत्रम		
sem Atel il	terms to rectan	1 14 4	ल × । बार्गः।
t gerendung	×	777	
t fegureur	# question #	fe-ti	
1 #517-151744"5	dante		
* 17 m m	-	_	

ote]

```
७१३
प्टका-सम्रह
                                                                               सस्कृत
५ नाममाला
                                       घनस्रय
                                                                                           FP
          ५७७१ गुटका स० ३१। पत्र स० ६०-११०। म्रा० ७×५ इ०। मापा-सस्कृत हिन्दी। ले०
काल 🗙 । अपूर्ण ।
          विशेप---पूजा पाठ सग्रह है।
          ४७७२ गुटका स० ३२ । पत्र सं० ६२ । आ० ४३ ×५३ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।
१ वयकावत्तीसो
                                                                                हिन्दी
                                         X
                                                                          सस्कृत हिन्दी
२ पूजापाठ
                                         ×
 ३ विक्रमादित्य राजा की कथा
                                         X
                                                                                  52
 ४ शनिश्चर्देव की कया
                                          X
                                                                                  "
           ४७७३. गुटका स० ३३ । पत्र स० ८४ । मा० ६×४३ इ० । ते० काल × । पूर्ण।
 १ पाशाकेवली (भ्रवनद)
                                                                                 हिन्दी
                                          X
  २ ज्ञानोपदेशबत्तीसी
                                       हरिदास
                                                                                   "
  ३ स्यामवत्तीसी
                                           ×
                                                                                   77
  ४ पाशाकेवली
                                          ×
                                                                                   17
            १८७४ गुटका स० ६४। मा । १८५ इ०। पत्र स० ६४। ते० काल 🗴। मपूर्ण।
             विशेष-पूजा व स्तोत्रो का सग्रह है।
             ४७७४ गुटका स० ३४। पत्र स० ६६। झा० ६×४५ इ०। मापा-हिन्दी। ले॰ काल स० १६४०।
   पूर्ण ।
              विशेप--पूजामो का सग्रह है। बचूलाल छावडा ने प्रतिलिपि की थी।
              १८७६, गुटका स० ३६। पत्र स० १५ से ७६। झा० ७×५ ६०। ले० काल × । मपूर्ण ।,
              विशेष-पूजाभी एव पद सम्रह है।
              १८७० गुटका स० ३७। पत्र स० ७३। मा० ६×१ इ०। ले० काल ×। मपूर्ता।
     १ जैनशतक
                                            मूघरदाम
                                                              हिन्दी
     २ सवीषपचासिका
                                             धानतराय
                                                               77
       पद–सग्रह
                                               "
                                                               22
```

करेश] [गुरुक-सम्

प्रकर- गुरुकास देवापण में २६ । या १३/४३ द । जन्म-हिनो संस्कृत हे सम्ब≺। पिरेप--पुणसों समाकोणों का संस्कृति ।

र्रक्क सुतकार्स≎ १६ । पत्र सं ११व । सा च्_र×६ द } अला-हिन्दी} वे कलाक १व६१ | पर्ताः

विचेत-कात योथा ने याची के बाला में प्रतिविधि की शी ।

१ द्रवालप्योती प्रश्नकल हिन्दै १ पोर्डपकला हर्पकि ७ र काला_१७ व ही जा वै (रा) १ मेडिपिकटर व्यापनीताल

र महायरणमुद्ध यणारशीयाल ॥ ४ भ्रमप्तरयोगम ॥

र. दुबर्लबङ् × ॥ ९ मण्डामरस्दोत्र (बंगदिहा) × थंतकृत के का क १०११

७.मप्रीप्पनार नजा X हिलो के कार्यदेशी - देव्य-७ शहकास ४ ।पत्र वं २ ।सा ६३४४४ र १ के कमा × ।पत्री

रूप्तर पुरस्का संधेरे। यस संदेशा धा ७,४४१३ इ.। सला≔हिन्दी सस्य संदेश सम्बद्धाः

-विकेश-अधितिय श्रेष्टमी सामित्र है ।

्ररूप-२. शुरुष्कार्ध ४२ । पत्र वं १३ । या व×१ र । जला--र्वल्ड हिली । नियम-द्विग पक्र । ते कल × । पर्याः

विकेष---मनोहरशास हत शार्माचरामरित है ।

क्षेत्रके गुरुका स ध्री । वन वं ी या ६८१ १ । वाला-मिल्सी विश्व-नमा व वर्षः

के कत्र ×। बनूर्य।

विकेप---यनिश्वर एवं यहिरतकार वक्तों तका क्यों का बबह है।

प्रथम् शुक्रका सं प्रशासन व त । या श्रद्ध र । के काल सं १९४६ बाह्न प्रते

१४) पूर्ण । विवेत-स्टोनर्सन्ह है । ४७=४ गुटका स० ४४। पत्र स० ६०। ग्रा० = XX रे ६०। ले० काल X । पूर्ण ।

१ नित्यपूजा

X

हिन्दी सस्कृत

२ पद्ममञ्जल

रूपचन्द

55

३ जिनसहस्रनाम

माशाधर

सस्कृत

४७=६ गुटका स० ४६। पत्र स० २४५। मा० ४×३ ६०। माषा-हिन्दी सस्कृत ो ले० काल ×। मपूर्यों।

विशेष-पूजामी तथा स्तोत्री का सग्रह है।

४७८७ गुटका स० १७ । पत्र स० १७१ । आ० ६×४ इ० । ले० काल स० १८३१ भादना बुदा ७ । पूर्ण ।

१ भनु हरिशतक

भन्हिर

संस्कृत

२ वैद्यजीवन

लोलिम्मराज

93

३ सप्तश्वती

गोवर्द्धनाचार्य ले० काल स० १७३१

विशेष-जयपुर में ग्रुमानसागर ने प्रतिलिपि की थी।

४७८८ गुटका स० ४८। पत्र स० १७२ | घा॰ ६×४ इ० । ते॰ कात ×ी पूर्ण।

१ वारहखडी

सूरत

हिन्दी

२ कक्कावत्तीसी

×

13

३ वारहखडी

रामचन्द्र

11

४ पद व विनती

×

11

विशेप--- प्रधिकतर त्रिभुवन चन्द्र के पद हैं।

४७८६ गुटका स०४६। पत्र स०२८। मा०८३×६६०। भाषा हिन्दी सस्कृत। ले० नाल स० १६५१ | पूर्या।

विशेप-स्तोत्रो का सप्रह है।

४७६० गुटका स० ४०। पत्र स० १५४। मा० १०३×७ ६०। ले० काल ४। पूर्गा।

विशेप--गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है।

१ शातिनाथस्तोत्र

मुनिमद्र

संस्कृत

२ स्वयम्भूस्तोत्रभाषा

द्यानतराय

53

सूचरशस 8-0 ४ स**दोवप≡ाविका**वाया SITERATOR नियोजकत्वपामा × সাহত १ जैत्यत्य बूबरवास विश्वी শিক্ষানা संस्कृत यामावर सद्वामादिक वाया महाचन्द्र 17 ∥ क्रस्मदीपुचा सुविरयनन्दि शक्त है जुलका से अहै। पथ से १४ । बा पहें XV2 द । में साल में १११७ पैंड बुधी रै प्रपर्श । विदेय-विमनजास जोवसा ने प्रतिनिधि थी की । १ विपाद्मारस्वीयमञ्जा × क्रिया १ रवयात्रलखंड 30 संप्रताबी के मन्दिर की एक्याना का वर्त्तान × विकेद-व्यक्त रजनाना सं १६२ प्रस्कृत पूरी व संबंधवार की हर्द थी। श्रुक्टर गुद्धकास् । प्ररापन त १६९ मा ६८६३ व । प्रापा-वेस्टर हिन्दी। व समर्थ

्राह्म-सम

१=१=। सप्ती। निश्चेप--पुष्पा स्ट्रीम व पद समह है ।

ko ६६ शुद्रका संक्षापण वंक्र । मा १ ४७ ६ । बारा-वंद्युद मृत्यो । दे नार्व ४ ।

विशेष-पूजा पाठ सम्बद्ध है ।

क्रम्बद्ध बारुक्य क्षेत्र क्षेत्र । यथ में १ श्राम अपने व । वापा-दिल्को । से अन्य वे १४४४ यातीन तुरी १ । सपूर्व । नीर्श नीर्श ।

क्षित-नेविकान राती (बद्धाराययोग) एवं मन्द क्षानान्य पाठ 🖁 ।

प्रकार, गुरुकास क्षेत्र । यह वे ७-१२० । या कश्यक्षेत्र । के काल 🗵 । अपूर्वी विकेश-पुरके में कुलका कमनवार नारक (जनारक्षीयात) क्षता वर्धनरीका जाना (समेक्टबार)

रव 🕻 ।

र्फ़ १

416]

१ एकी बाक्स्ती बजाया

४७६६ गुटका स० ४६। पत्र स० ७६। मा० ६x४३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १८१५ वैशास बुदी ८ । पूर्ग । जीर्ग ।

विशेष-कवर वस्तराम के पठनार्थ प॰ माशाराम ने प्रतिलिपि की घी ।

१ नीतिशास्त्र चाए। नय सस्कृत २ नवरत्नकवित्त हिन्दीः X

३ कवित्त X ४७६७ गुटका स० ४७। पत्र स॰ २१७। ग्रा॰ ६३×५३ ६०। ले॰ काल ×। प्रपूर्ण।

विशेष--सामान्य पाठो का सग्रह है।

४७६८ गुटका सं० ४८। पत्र स० ११२। आ० ६३×६ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले० काल 🔀।

मयूर्ग । विशेष-सामान्य पाठो का सग्रह है।

४७६६ गुटका स० ४६ । पत्र स० ६० । मा० ५×४ इ० । भाषा-प्राकृत-संस्कृत । ले० काल × ।

पूर्ग ।

विशेप-लघु प्रतिक्रमण तथा पूजामो का सग्रह है।

४८०० गुटका स० ६०। पत्र स० ३४४। मा० ६×६३ इ०। मापा-हिन्दी। लें० काल ×। मपूर्ण

विशेप--- ब्रह्मरायमञ्ज कृत श्रीपालरास एव हनुमतरास तथा अन्य पाठ भी हैं।

४५०१ गुटका स०६१। पत्र स०७२। म्ना॰ ६४४ई इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले॰ काल 🗙 🏾।

पूर्ण । जीर्ग ।

विशेप—हिन्दी पदो का सग्रह है। पुट्टो के दोनों झोर गरोशजी एव हनुमानजी के कलापूर्ण चित्र हैं। ४=०२ गुटका स॰ ६२। पत्र स॰ १२१। म्ना॰ ६×४ इ०। मापा-हिन्दी। ले॰ काल ×। मपूर्ण।

४८०३. गुटका स० ६३। पत्र स० ७-४९। ग्रा० ६३×६ ६०। मापा-हिन्दी। ले० काल 🗙 ।

भपूर्श ।

४८०४ गुटका स० ६४। पत्र स० २०। मा० ७४५ ६०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ४। मपूर्ण। ४८०४ गुटका स०६४। पत्र स०६०। मा० ३३×३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेष-पदो का सग्रह है।

४८०६ गुटका स० ६६। पत्र सं ० ८। ग्रा० ८४४३ ६०। भाषा-हिन्दी। ले० काल 🗴 । प्रपूर्ण b

विशेप---प्रवचनसार मापा है।

तिकता संस्थान वं रूपरण

च भएडार [दि॰ जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर]

अद्भाव सुरुक्त संदेश वर्ष संदर्श सा व्यू×४२ द । त्राचा-दिली बंस्टल । वे रल संदर्भाग (पूर्व । वे संकरक ।

विधेप--प्रात्म में बायुर्वेद के बुक्के है तथा फिर साधान्य पूजा पाठ संप्रह है।

रुष कः शुरुषा सं०१। तत्रहरूको ४ फोहरूक समीर। यह सं २४०। वा ४४९६।

मामा-हिमी वस्तृत । वे जेल 🗴 । वृक्ते 🎉 😼 🕬 र ।

१ फिलियन के बीबे

थ नवरार संग पर्या

प्रति है स कर्री

t. को स्वर्धि ना जीत

wie T

विदेववाराचन्त्रज्ञी	के पूत्र सेवान्यमधी पाटली	🕸 प्रशानी विका स्था वा—

५. पूजन न नित्न पाठ संबद्	×	क सीरक्षां के माना के हेक्टर
१ पुरसीय	×	हिन्दी १ हिलानें हैं।
Y जलपदवी	यनीहरतत्त्व	,
६, चैलपेका	×	गल्हार
र क्षापुष्य के ११ स्थवा	*	िर्मा
थ, यहाँकपनार मी नमा	×	

×

30

×

१ सहवास्तरील 🗶 % ११ प्रकारिका × % श्रे ब्रह्म वं रेवर्स १२ चैत्र मारोपेक की वर्षो × " ॥

रूप ६. शुक्रका स्त्रं ३ । पत्र वं १७ । का ६८५३ ए । माना संस्त्र दिल्पै। पियन-प्रेण स्त्रोच । में नम्ब × । पूर्वी के वे ४५६ ।

्रकार शुरुषासं शायत वं ९ वामा १००६ इ. । माना हिन्दी दिवस-स्व स्वपः है पन्न × । पर्या दें वं ७६ ।

विशेष-सामान्य पूजा पाठ सग्रह है

्रूप्टका स०६। पत्र स०१४१। म्रा०६३ ४५३ द०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। विषय-पूजा। पाठ। ले• काल ×ा पूर्ण। वे० स०७५२।

विशेष-प्रारम्भ मे मायुर्वेदिक नुसखे भी हैं।

४८१३ गुटका स०७। मा॰ ६४६ इ॰ भाषा-हिदी संस्कृत । विषय-पूजापाठ। ले॰ काल ४। पूर्ण । वे॰ स॰ ७५३।

४८१४ गुटका स० ६। पत्र स० १३७। मा० ७३×४६ इ०। मापा हिन्दी संस्कृत। विषय-पूजा पाठ। ले० काल ×। मपूर्ण। वे० स० ७५४।

४=१४ गुटका स॰ ६ा पत्र स॰ ७२। मा० ७३×४३ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूजा पाठ। ने० काल ×। पूर्ण वे० स० ७४४।

४८१६. गुटका स० १०। पत्र छ ३५७। झा० ६४५ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। विषय-पूजा पाठ। ले॰ काल ४। मपूर्ण। वे॰ स० ७५६।

४८१७ गुटका स०११ । पत्र स० १२८ । मा० ६३×५ हुँ इ० । भाषा-हिन्दी सस्कृत । विषय-पूर्वा पाठ । ले० काल × । पूर्णा वे० स० ७५७ ।

४८९८ गुटका स०१२। पत्र स०१४६-७१२। म्रा०६x४ इ०। भाषा सस्कृत हिन्दी। ले० काल x। मपूर्या वि० स०७५८।

विशेष-निम्नपाठों का सग्रह है-

٤.	दर्शनपच्चीसी	× fe	दी
२	पश्चास्तिकायभाषा	×	"
B	मोक्षपैडी	बनारसीदास	9)
४	पचमेरुजयमाल	×	77
٧.	साधुवदना	बनारसीटाम	13
Ę	जखडी	भष् रद्यास	5)
ø	गुरामञ्जरी	×	13
5	लघुमगल	रूपचन्द	"
3	लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	3)
		•	

₩ ₹•]		् गुरुध-केन
 মছদিদকীনাদ্ধ সকলল 	भेधा चपवतीया त	सर्थ देशका
११ बार्रेण परिचय	बूबरवास	n
१२. निर्वाखनाव बत्या	चेता भगवतीयाध	प्रीकृति हा 🙀
१३ बायह भारता		•
१४ एपीवायस्तीम	मूच रहा स	
११. जंबन	विमोदीमान	_ल र प्र देवपर
१६ वळार्गमा	क्रायम	9
tu. बकामरस्तोत्र नावा	वयनस	
∴्रव स्वर्गमुख वर्णन	×	
१८. बूदेशस्त्रक्य गर्छन	×	8
२ शमक्तारमध्य भीवा	वनारतीयाव	# € \$# 5 \$
११ व्याससमृद्धाः	*	*
२२ एडीमामस्तोत	वारियान	धस्तृत
५३ स्वयंक्रतीय	श्चेतनहानार्वं	,
ए४ विश्व द्य नान	वामाचर	
१९, देवक्षमस्टोप	सर्वतस्यापार्व	
१९, चतुर्विश्वतितीर्वेद्धर सुवि	474	ferti
হয়, শীৰীয়তাকা	वैवि या त्रापानी	মা র্কির
	>	B erl t
Keier Alsei a	हर्मायमधी प्रशासा प	_९ X४३ ६ । माना-दिल्दा सम्बद्ध । में नाद X
पूर्व । वे प्रदेश		
्रातीश—कृता पाठ वे	धाजिएक सङ्ग वाग्यवय राजनी	र्खनी है।
४८६ ग्रहसाची	र्धावरचे ≍ावा र	×६३ ६ । भाषा-दिल्यो । ने नासं×ा म्यूर्ण
a wat i		
विकेश वक्षातिस्थान	र जाना बीका प्रक्रिय है ।	
श ्रह गुरुका क	क्षित्यक कृत्यकाचा	् ६३%र१३ ह ्या माना-वित्यो बसाय । रिपर्य-
पूराश्चाताचे माना×। बहुती	।व से च्यर ।	

गुटफा-समह 🗍

प्रदेश स्व १६ । पत्र मं ०१२७ । ग्रा० ६ १४ ४० । भाषा-हिन्दी मरपूरा । विषय-पृता पाठ । ने ० माल × । ग्रवूर्ण । ये० स० ७६२ ।

प्रदन्त स्व १७ । पत्र सव ७-२३० । श्राव दर्दे हव । भाषा-हिन्दी । नेव मान सव १७६३ प्रासोत बुदी २ । प्रपूर्ण । येव सं • ७६३ ।

तिशेष—यह गुटमा बमना निवामी प० दौजनरामजी ी रचर्य में पढ़ने में मिन पारसराम श्राह्मण म सिन्दवाया था 1

१ नाटकगमयगार	वनारमीदास	रि दी	घपुर्म १-८१
२ बनारमीविजास	97	79	= 2-10=
८, शोर्थकूरों ने ६२ स्यान	×.	1)	156-220
४ पदेतवालां की उत्तिति ग्रीर	उनके ६४ गीत्र 🖊	21	マンソーやその

प्रदर्श सुदक्ता सु० १८ । पत्र मं० ५-३१५ । सा० ६५४६ द० । जापा-हिदी मन्यूम । विषय-पृता पाठ । ति• वान ४ । सपूर्ण । वे० स० ७६४ ।

भ्रम्भ गुटका सद १६। यत्र स० ४७। धा• वर्×६३ ४०। भाषा-हिकी संस्कृत । विषय-स्मित्र नि० मान ×। पूर्ण । ४० म• ७६४।

विवेष-मामाय म्हाश्री का मग्रह है।

४८२६. गुटका स्व २०। पत्र मं० १६४। शा० ८४४ दे १०। भाषा-हि ही संस्कृत । विषय-नृशा स्तीत । नि० वाल ४ । श्रुम्में । वै० स० ७६६।

४८२७, सुटमा स० २१ । पत्र म० १२८ । ह्या० ६%३१ ४० । नापा- / । विषय-पूजा पाठ । वि० कात × । प्रपूर्ण । वे० स० ७६७ ।

विरोप-गृहका पानी में भीगा हुया है।

४८२८ सुद्रका स० २२ । पत्र य० ४६ । प्रा० ७४१ ई इ० । आपा-हिरा । विषय-पद संग्रह । छ० भान × । प्रपूर्ण । वे० म० ७६८ ।

विधेय-हिदी पर्दों हा गंग्रह है।

[गुरक्रधंप e44]

ब भगहार [दि॰ जैन मन्दिर गांधों का जयपर]

अपन्देश, शुरुषा सं १। पन सं १७ । वा १४१६ । भाग दिन्दी बीलत । से नार XI

न्द्रुप्त । वे व १३१ :

विदेश-पूजा एक स्तोध बांद्य है। बांच के श्रीवरांच का यते एवं क्ष्री हुए है। बुक्त कर्ते का वैद्

४ चीबीवरीवॅक्टराम

निम्न बराइ है।

रे नेवीयाचन

12 48 \$1 वविरतवसीत n-c

१ नेत्रीयर को वैकि अकुरको 1 Glenille

> 1 1-6 1 124-111 eve-ttt

84-11 41.11

t. felvarel Constant ६ वेषपुर्वारगीत पुत्रो नविद्यम्

30

155-131 ७ ध्वातातीत ना ध्राप्त प्रदेश प्रस्थ

121-11 R mm d 2568 du 30 65 150-111 ८ शन्तिनायस्तोय <u> एज्ञस्यामी</u> वंसाय

227-227 र नेनीरवर ना द्विशनना बुनिस्त्वनशीर्थ वैची a न्यु तुल्कासं राज्य वं २९ । मा ६८६ दा माना-हिन्दी । रियम-वंद्यः । व

कार×। इता । देल १।२। e am sweet tott १ वैदियाचन्नव तानवन

19-22 ६ राइनान्त्रीयी

क्रम्पेरं सुरक्तासं ३ त्वच वं प-प्रशासा अदृह । बाता-दिशी शेरं वल × । बार्च।

4 € 3111 Y-73

१९७एव H^aCt 2 MARKET

11 প্ৰস্থানি १ धा दनलाविषयी

15-71 क्षेत्र होर्बेडचे की बदनान 44.6

47-44

गुटका-समह] ४ चन्द्रगुप्त के सोहलस्वप्न

×

हिन्दी

४, गुटका स०४। पत्र सं०७४। ग्रा०६३, ४६ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले० काल ×।

इनके मतिरिक्त विनती संग्रह है किन्तु पूर्णत मश्द है।

म्रपूर्ण । वे० स० २३४ ।

विशेष-प्रायुर्वेदिक नुसखो का सग्रह है।

४५३३ गुटका स० ४। पत्र स० ३०-७५। मा॰ ७×६ इ•। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ते० काल स०

१७६१ माह सुदी ४ । मपूर्ण । वे० स० २३४ ।

भाऊ

हिन्दी

मपूर्ण

३०-३२

१. झादित्यवार कथा

X

22

२ सप्तब्यसनकवित्त

बनारसीदास

४ मठारहनाते का चौढाला

४८३४ गुटका स०६। पत्र स०२-४२ । मा•६३×६६०। भाषा-हिन्दी। विषय-कया। ले०

सोहट

99

काल X । मपूर्ण | वे० स० २३४ ।

३ पार्श्वनायस्तुति

विशेष-शिवश्वरजी की कथा है।

सं० २३४।

४८३४ गुदका स० ७। पत्र स० १२-६४। मा० १०३×५३ इ०। ले० काल ×। मपूर्ण । वे०

संस्कृत

मपूर्ण १३

१ चाणुक्यनीति २ साखी

चागा स्य भवीर

×

। हिन्दी

संस्कृत

हिन्दी

33

77

मपूर्ण

१३-१६ \$€-28

ξų

प्रतिष्ठाविधान की सामग्री एव वतो का चित्र सहित वर्णन

३ ऋदिमन्त्र

१ वलभद्रगीत २. जोगीरासा

पाढे जिनदास X

×

४८३६ गुटका स॰ ८ । पत्र स॰ २-१६ । मा॰ ६×५ ६० । ले॰ काल × । मपूर्ण । वे॰ स॰ २६७ । हिन्दी

₹-€ 0-22 21-14

३ कवकाबसीसी

đ١

मनराम ४ पद-साधी छोडो कुमति मकेली विनोदीलाल **,, रे जीव जगत सु**पनो जान खीहल

१= २०

24-25

₩₹ ₩]			[पुरस्र ^{ते} प
😘 🙀 मत्त्व भूत मधी में नधरी	काकीर्ति		20-71
थ, बुहरी- हो सुन बीव घटन हमारी वा	श्राम्प	n	99-77
प्रशास सुद्धी	×	10	11-11
१ १६- ग्रॉट शोगपनि के नलस्नानी	कृतकृत		77
११ 🚅 बीच दिव वेखन में पनारी	greet		14
१२. 🔐 मीच वेरे किल्पर बाब नवी	×	*	#
११ , बोबी का दु सलाखे रहा वैच	×	77	π
ty 🔐 भर्दात हुन नागी नानी नन नानी	धनवस्त्र	**	94-11
११. 🔐 भिर देख्य वाणिह मान्या	×	29	Ħ
१६, परमानवस्तीन	रुपुरचना	शस्त्रव	17-11
रेक पा- पट प्रतानि नैननि योजर की	वनराव	गिन्धी	rt.
गारिक शुरूत केंग्रे			
रूप 🔐 जिय हैं नरजन नोही जीनी	गणराम	**	18
१८. 🔐 ग्रीमध्ये भाग पवित्र वर्षे	20		
र 🔐 वर्षा क्रमो है वर्धन हेनी नेगीतुर			
वित्र केबीमी	वरस्यान		" l
२१ 🙀 वनी ननी नै वी मर्णिय		*	46-44
२२. 🌞 बाबुधै दिनकानी श्रुप दे नाषुधै	=	19	44-44
११, किंप देनी नाठा को बाठनी	पुनि युजनग	n	44.4
१४ वर-	77	•	yest
₹E, #	*	10	
१८ 🔐 इमरी बहीडी देन बहोड्ये झान			yer!
दुनग्रीर का १७ म में बादि बाहरिए स्वाची नीली बीड़ी	19 41	-	t(-t)
14, 84 55		-	LI-EC
श्चर्क गुरका संदाक्ता करून	4 4-t4t i u	ा ५००३ र । में का	a×iaMine}

12=1

गुटका-सप्रह

४८३८. गुटका स० १० । पत्र स० ४ । मा० ५३ ×६ ६० । विषय-सग्रह । ले० काल × । वे० स०

1338

१ जिनपचीसी

नवल

हि दी

9-3

२ सवोधपचासिका

चानतराय

3-8 ४म३६. गुटका स० ११ । पत्र स० १०-६० । भा० ५३×४३ ६० । भाषा-सस्कृत । ले० काल ×।

वै० स० ३००।

विशेष-पूजामों का सग्रह है।

४८४० गुटका स० ११। पत्र स० ११४। मा० ६२×६ इ०। भाषा-सस्कृत। विषय-पूजा स्तोत्र।

ले० काल Х । वे० स० ३०१ ।

४५४१. गुटका स० १२ । पत्र स० १३० । मा० ६३×६ इ० । भाषा-सस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र ।

ले० काल 🗙 । झपूर्ग | वे० स० ३०२ ।

४-४२ गुटका स० १३। पत्र स० ६-१७। मा० ६३×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा स्तोत्र।

ले० स० 🗶 । झपूर्ण । वे० स० ३०३ ।

४८४३ गुटका स० १४। पत्र स० २०१। आ० ११x५ इ०। ले० काल 🗙 । पूर्ण। वै० स० ३०४ विशेप--पूजा स्तोत्र सप्रह है।

४८४४ गुटका स० १४। पत्र स० ७७। मा० १०×६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। ले० काल स० १६०३ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० स० ३०५ ।

विशेष--इखनाक मह सनीन पुस्तक को हिन्दी भाषा में लिखा गया है। मूल पुस्तक फारसी भाषा मे है।

छोटो २ कहानिया हैं।

ध्प्पर्थ गुटका स० १६ । पत्र सं० १२६ । झा० ६×४ इ० । ले० काल × । झपूर्ग । वे० स० ३०६

विशेष—रामचन्द (किंव बालक) कृत सीता चरित्र है ।

४८४६ गुटका स०१७। पत्र स०३-२६। मा० ४×२ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।

भपूर्श । वे० स० ४०७।

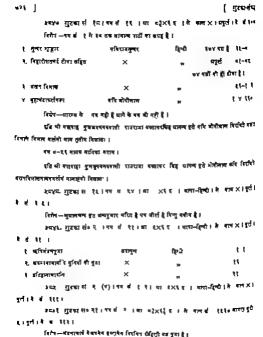
१ देवपूजा सस्कृत

२ यूलभद्रजी का रासो हिन्दी १०-२१

३ नेमिनाय राजुल का बारहमासा 77

२१--६६

श्रपूर्ण



४८४२ गुटका स० २२। पत्र स० १६। भा० ११×३ इ०। ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स० ३१४। हिन्दी E X वज्रदन्तचक्रवित का वारहमासा E-12 X 33 २ सीताजी का वारहमासा १३-१६ X ३ मुनिराज का वारहमासा 73

४८४३ गुटका स० २३। पत्र स० २६। ग्रा० ८३×६ ६०। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-कया। ले काल 🗙 । पूर्ण । वे ० स० ३१५ ।

विशेष-गुटके मे प्रष्टाह्मिकायतकया दी हुई है।

४८४४ गुटका स० २४। पत्र स० १४। मा० ८३×६ इ०। भाषा-हिन्दी विषय-पूजा। ले• काल स० १६८३ पौप बुदी १ । पूर्ण । वे० स० ३१६ ।

विशेष-गुटके मे ऋषिमडलपूजा, भनन्तन्नतपूजा, चीवीसतीर्थकर पूजादि पाठो का सग्रह है।

४८४६ गुटका स०२४। पत्र स०३४। मा० ८×६ ६०। भाषा-सस्कृत। विषय पूजा। ले० काल X । पूर्ण | वै० स० ३१७ ।

विशेष-प्रनन्तवतपूजा तथा श्रुतज्ञानपूजा है।

४८४: गुटका स० २६। पत्र स० ५६। मा० ७×६ ६०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। ले० काल स० १६२१ माघ बुदी १२ । पूर्ण । वे० स० ३१८ ।

विशेप--रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थंकर पूजा है।

४८४७, गुटका स० २७। पत्र स० ४३। मा० ६×५ ६०। ले० काल स० १६५४। पूर्गा । वे० 138€ ○

विशेप- गुटके में निम्न रचनायें उल्लेखनीय हैं।

१ धर्मचाह ×

निहारीदास

? **3-**¥

२ वदनाजखडी ३ सम्मेदशिखरपूजा

गंगादास

सस्कृत

हिन्दी

33

X-2•

४८४८ गुटका स० २८। पत्र स० १६। मा० ८४६ इ०। ते• काल ४। पूर्ण। वे० स० ३२०।

विशेप--तत्वार्थसूत्र उमास्वामि कृत है।

४८४६. गुटका स॰ २६ । पत्र स० १७६ । मा० ६×६ इ० । से० काल × । पूर्ण । वे० स० ३२१ ।

विशोप--विहारीदास कृत सतसई है। दोहा स० ७०७ है। हिन्दी गद्य पद्य दोनों में ही प्रर्थ है टीका-काल स० १७८५ । टीकाकार कवि कृष्ण्यास हैं। म्रादि मन्तभाग निम्न है —

```
45 ]
                                                                                      ग्रिका-स्प
                        सब विहारी बतनई दौरा प्रवित्त बंब निरम्दे --
  प्रारम्बः--
                        मेरी वर वाचा इसी रावा मागरी बोद !
                        बालन को बाँड करे, स्वान द्वरित दुर्ति द्वीह ।।
           टोरा—बहु नवलावरन है वहां की रावा चु की स्तुवि य व वर्ता कवि वरतु है। ह्यां एवा करेर है
ब'ते जा तर नो कोई परे स्थाय इंटिंट दुनि होड का पर हैं थी दूबनान सुना की प्रतीति हुई --
बरिच-
                        बारीयमा धरमीरत ही तिह लोक वो भूत्यरना वहि बारि ।
                       कृष्ण नहें करनी रहे वेंशनि की नाजू बहा नुव र्मवन कारी।।
                        जलन नो कनके अनवे हरित चुदि स्वाय नो होत निहारी ।
                        थी बुवजान कु बारि हुना में शुराबा हुनी जब बाबा हवारी 📑 🖯
                       बाबुर विशु वकीर पुत्र सङ्गी इच्छा वरि सात ।
   द्वन्तित राठ---
                       मेवपु हो तब वनितु को बन्धु नचुद्रुरी बांड ।। १४ ।।
                        राजा बाल वृद्धि प्रभा वर तरपी हुना के तर ।
                        कानि क्रोनि विरया हुये। बीनी बर्सन असार ॥ २६ ॥
                        एक दिना वर्षि और दूरित नहीं नहीं नी जाता
                        बोक्त बोहा क्षीन वरी नवित बृद्धि यदश्य ॥ २६ ॥
                        प्रापेष्ठ केरे कर दिव में इती विचार ।
                        बरी नाइका चेंद्र की छ व वृद्धि चनुकार स १७ स
                        के बीते पूरव वनियु बात व व मुमशह ।
                        निर्माह शाहि केरे वर्षन को वडि है अनुभार ।। २ ॥
                        बानिय है सार्ने दिवें विशेश वांश प्रवाल ।
                        मृत की ब्राइन बाइके दिव में भवे हुवाल ।। नेह ॥
                        क्षेत्राण में कीहरा मुक्क विहासिका।
                        बर बोर्ड तिरही रहे हुनै बुरे गरियान ॥ १ ॥
                        क्रमी भरीनी नर्दन में नड़री बालश बाद ब
                        बाने पन प्रेशनु मेंच दीने वर्षित लगाए हा देह अ
```

गुटका-संप्रह]

विक्त जुिंक दोहानु की श्रक्षर जोरि नवीन ।

करें सातसों किवत में सोखें सकल प्रवीन ।। ३२ ।।

मैं ग्रत हो दोढ़्यों करी किव कुल सरल सुकाइ ।

भूल चूक कछु होइ सो लीजों समिक वनाइ ।। ३३ ।।

सयह सतसे ग्रागरे ग्रसी वरस रविवार ।

कातिक विद चोिंय भये किवत सकल रससार ।। ३४ ।।

सतसे प्रथ लिख्यों श्री राजा श्री राजा साहिवजी श्रीराजामल्लजी की हिलेखक खेमराज श्री वास्तव वासी मौजे श्रजनगीई के प्रगने पछोर के । मिती साह सुदी ७ बुद्धवार सवत् १७६० मुकाम प्रवेस जयपुर ।

इति श्री विहारीसतसई के दोहा टोका सहित सपूर्श ।

४=६०. गुटका स० ३० । पत्र स० १६= । आ० =×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण वे० स० ३५२ ।

१ तत्वार्यसूत्रभाषा२ शालिभद्रचोपई

कनककीर्ति

हिन्दी ग०

मपूर्ण

जिनसिंह सूरि के शिष्य मितसागर "प० र० काल १६७८ "

ले० काल स० १७४३ भादवा सुदी ४। झजमेर प्रतिनिपि हुई थी।

स्फूट पाठ

X

99

४८६१ गुटका स॰ ३१। पत्र स० ६०। मा० ७४५ ६०। मापा-सस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा। ले॰ काल ४। मपूर्ण। वे० स० ३२३।

विशेष-पूजामो का सग्रह है।

४५६२ गुटका स॰ ३२। पत्र स॰ १७४। आ॰ ५४६ इ॰। भाषा-हिन्दी। विषय पूजा पाठ। ले• काल ४। पूर्ण। वे॰ स॰ ३२४।

विशेष--पूजा पाठ सम्रह है । तथा ८८ हिन्दी पद नैन (सुखनयनानन्र) के हैं ।

४=६३ गुटका स० ३३। पत्र स० ७५। मा० ६×६ इ०। मापा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।

विशेय-रामचन्द्र कृत चतुर्विशतिजिनपूजा है।

४८६४ गुटका स० ३४। पत्र स० ८६। झा० ६×६ ६०। विषय-पूजा। ले० काल स० १८६१ श्रावणा सुदी ११। वे० स० ३२६।

विशेष—चौवीस तीर्थंकर पूजा (रामचन्द्र) एव स्तोत्र सग्रह है। हिण्डौन के जती रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

्रास्थ स्थ ule l इप्पर्केट, गुरुकार्स देश। वन सं १७ | या ६०० व ३ चला दिल्दी (में समा×। क्री। R # 1901 विसेद--पापावरि बीनाविर दुवा 🖁 । श्यक्ष शुरुका सक वृक्ष । यस बीव क । या । अध्यक्ष १ । वाता-बीवार । विवय पूना पत्र ली क्वोदिक्यात |के काथ x । यथर्ता | वे वं वरू । बद्धपीयबद्धारका प्रभा र्धास्त्रद २. पायतस्त्रीति समय पालका 3 सामित्रीय न्दर्श ¥ र्शनकर देवदेक गुरुकार्थक हैक। यह सं १ । यह ७८६ ६ । जाल-संस्कृत के नाल ८। बार्टी में से करता धन्दिः गुरुक्षार्थं• देन। वत्र सं २४। या धरश्यः । वत्ता–कस्तरा विकास ×। दुर्गः

विश्वेष-पुषाओं का बंधा है । इसे में प्रकारित पुरसकें की बन्दी हाँ हैं । देवहें. गुहकास है। पर व ४४। वा ६८४ इ (वला-वल्डा के सन XIहरी

विधेय-वैवविकास माहि वी हर्द है।

R 2 11 1

₹ € tit:

इक्क शुक्रकासकप्रकायम वं वासा ४८६ हो। शास-दिल्यो। दिस्य बङ्ग्राँदा है राज × । पर्या । वे वे वे वेदर :

विवेद-मामुक्ति के बुक्के दिने हुने हैं पदानों के कुछों ना वर्लन की है।

क्रक्कर सुबक्त सं धर । यन वं कर । वा कं)रश्चेत्र । वाला-वेल्यत दिल्यो । के राज × ।

क्षी है है से समस

बौक्री कुला ने प्रतिसिधि की वी ।

विदेश-- इसा पात्र श्रेष्ट है।

श्यक्षरः गुरुकासः प्रदेशया वं दशया अप्रदेश । बाला-दिल्ये बंलाय । से नाम वं रक्तर । म्युर्ज । रे सं १६४ । विकेद-विकेद केम के बीच बोर्यन में पी पूजा एवं घटाई होता पूजा हा बंबद है । दोनों ही बार्ड है। ४८७३ गुटका सं०४३। पत्र स०२८। धा० ८३४७ ६०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। ले० मान ४। पूर्ण। वे• स०३३४।

४८७४ गुटका स० ४४। पत्र स० ४८। घा० ६४४ ६०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। से० कास ४। पूर्ण | वे॰ सं० ३३६।

विदोप-हि दी पद एवं पूजा सप्रह है।

ध्यका सुद्रका स० ४४। पत्र स० १०८। छा॰ ८३×३३ ६०। भाषा-सस्कृत हिटा। विषय पूजा पाठ। ति॰ बात ×ी पूर्ण। वै० स० ३३७।

विशेष—देवपूजा, तिळपूजा, तत्वार्थसूत्र, बस्याणमन्दिरस्तोत्र, स्वयनूस्तोत्र, दशलक्षण, सोलह्बारण मादि का समूर है।

४८६६ गुटका स० ४३। पत्र सं० ४४। मा० ८४४ ६०। भाषा-हिन्दी संरकृत । विषय पूजा पाठ स० कास × । मपूर्ण । वे० स० ३३८।

विदोष-तत्वार्यसूत्र, ह्याविधि, सिद्धपूजा, पार्द्यपूजा, सोसहवारण दरालक्षण पूजाए हैं।

प्रदंधि गुटका सुद ४७ । पत्र स० ६६ । मा॰ ७४४ द० । भाषा हिन्दी । विषय-पथा । ते० काल ४ । पूर्ण । ये० स० ३३६ ।

१. जेष्ठजिनवरणया	पुञ्चातपन्द	हिन्दी	₹६
		र० फाल स०	१७८२ जेठ सुदी ह
२ मादित्यव्रतक्या	11	हिरी	41-18
३ सप्तपरमस्यान	n	11	16-28
४ मुरुटसप्तमीव्रतकया	91	11	25-30
५ दशनदाराष्ट्रतक्या	71	97	\$0-38
६ पुष्पाञ्जलिवतक्या	31	1)	3Y-Y0
 रक्षाविधानकथा 	77	क स्मृ त	46-4 4
८ उमेश्वरस्तोत्र	29	33	¥4-44

प्रमण्य गुटका स० ४=। पत्र स० १२=। मा० ६×५ ६०। भाषा-हिन्दो । विषय-मध्यातम । र० काल स० १६६६ | ले० काल × । मपूर्या । वे० स० ३४० |

विशेष--बनारसीदास पृत समयसार नाटक है।

```
#$2 ]
                                                                                   ्रारध-६व
           श्च-६६ सुरुवार्स धुरु । पान गं धुरु । या शु×ु । भागा-शिन्दी तस्तुष । ने नल ४।
पूर्व और वं १४१ ।
           विकेश-मृद्ये के मुक्त वाठ निम्न प्रकार है-
   ) dames
                                                                                         1.11
                                          चुवरदाख
                                                                (int)
   २ श्वविक्यानस्योग
                                        वीतपश्चामी
                                                               संस्थल
                                                                                       PY-7
                                                                      It wer tunn by Yt

    प्रमाणकारिको

                                           STATE OF
           इस्स्य शुद्धकास द्र∙ापन वं २६४। या १४८६ १ जला-तंत्रत हिमी। विस्त-पूर्व
पळके राज्य ≍ाष्ट्रको≀के ६ ६४२
           श्रमम् शुक्रकास ० श्रद्दे । पत्र सं १६६ । सा ७<sub>६</sub>×४३ ६ । साला-दिल्यं संस्तृत । ते सम्
वं रबवर। पूर्णः वे सं वेशवे ।
           विकेच--बटके के लिग्न बात सकतः वालेकरीय हैं।
                                                                                         13
   १ नवच्छपन्तियासर्वस्योग
                                           32
                                                               प्र कृत्य
                                                                                         1-4

    श्रीविकार

                                   er Maren
                                                                                        a tv
                                           ×
      STORES FOR
                                                                                       22-44

    चौबीक्षक्रमस्त्रिकार

                                           ×
                                                               Red
                                                                                      11-11

    तेर्वत प्रोत्स विवयतः

                                           ×
                              बादा की नसीधी नुर्योक्य नरे जल बाद।
           विकेष---
                                     सूर की क्योदी बोर्ड शती बुदे एन में 16
                               बिम की क्वीडी नामको प्रयद श्रीय ।
                                     श्रीरा की क्षीरी है बीहरी के बन में 10
                               भूत को क्वीटी यादर धनकार चानि ।
                                     शोगे की स्थीदी सरासन के स्थान में ।)
```

महै जिल्हान की परार होती की नक्ति थीं। धानु की करीयों हैं। बहुत के बीच से ।।

first

धनकनुष्ट

१ विवटी

e == 1

२ द्रव्यसग्रहभापा

हेमराज

77

र० काल स० १७३१ माघ सुदी १०। ले० काल स० १८७६ फाल्युन सुदी ६।

३ गोविदापृक ४ पार्श्वनायस्तोत्र

हिन्दी शङ्कराचार्य

१४४-१४५ , ले० काल १८८१ १४६-१४७

११७-१४१

५ कृपगुपचीसी

विनोदीलाल

X

» » १८८२ १४७-१**५**४

६ तेरापन्य वीसपन्य भेद-

×

99

१५५-१६३ ४८८२ गुटका स० ४२। पत्र स० ३४। मा० ७३×४ ६०। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १८८७

कार्तिक वृदी १३। वै० स० ३४४।

विशेष---पूजा पाठ सग्रह है। प० सदासुखजी ने प्रतिलिपि की थी।

४८८३ गुटका स० ४३। पत्र स० ८०। मा० ६३×५३ ६०। भाषा-हिन्दी । ले० काल 🗙 । पूर्ण । वै० स० ३४५।

विशेष-सामान्य पाठो का सग्रह है।

४८=४ गुटका स० ४४। पत्र स० ४४। मा० ६३×६ ६०। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण। के० स० ३४६ विशेष---भूधरदास कृत चर्चा समाधान तथा चन्द्रसागर पूजा एव शान्तिपाठ है।

४नन्थ गुटका स० ४४। पत्र स० २०। मा० ६३×६ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा पाठ

ले॰ काल ×। पूर्ण । वे॰ स॰ ३४७।

४८८६ गुटका स० ४६। पत्र स० ६८। म्रा० ६३×४३ ६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल 🗴 । पूर्ण । वे० स ३४८ ।

४८-. गुटका स० ४७। पत्र स० १७। मा० ६३ ×५३ ६०। भाषा-हिन्दी । ले० काल ×ा पूर्ण । वै० स० ३४६।

विशेष-रत्नत्रय व्रतिविध एव कथा दी हुई हैं।

४८व८ गुटका स० ४८। पत्र स० १०४। म्रा० ७×६ इ०। भाषा–सस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा पाठ । ले० काल 🗙 । पूर्शी । वै० सं० ३५० ।

विशेप-पूजा पाठ संग्रह है।

४-- गुटका स० ४६। पत्र स० १२६। मा० ६२×५ इ० द्विमापा-संस्कृत । विषय-मायुर्वेद । ले॰ काल 🗙 । मपूर्ण । वै॰ स॰ ३५१ ।

विशेप--रुग्नविनिश्चय नामक प्र य है।

•38 T िश्रका-समा रेप्पर गुरकारी० ६० । पर सं ११३ । सा ४८३ इ. । भाषा–संतक्ष्य क्रिये ⊬ हे रहा×। प्रतीकिं स ११२।

विवेष-पूज रहोण एक बकारबी निवास के कुछ यह एवं वाठ है। क्ष्मदे र गुरुका सं० ६१। यन सं २२३। या ४×३ व । वाया-सन्दर्ध दियो। वे नाम X1

पूर्वा वे सं वस्ता

९. बावियासस्यार

६ बसावपद्मानी परे गर्छ

विचेष--पना पाठ सच्छ है।

धन-६२ गुडकास-० ६२ । पर इं २ व । सा १८४० ६ । बाला-वंदान्त हिन्छे । में राह X ।

पर्खाक्षेत्र में क्षेत्रका

विवेश-सामान्य स्तीव एवं पूका पाठीं वा संख्य है ---

हम्म\$ गुक्का सं• ६२ । पत्र व १६३ । था ९५×९ इ । भागा-हिन्दी वे कल ×। महर्त।

A W TER ! विकेर---विस्त पाठी का श्रंक्स है ।

६ क्षुपतरास ग्रारामक

दिल्यी

संकल्पचं १६ काइल हुये हैं। हिम्पी × 6 6-6x3 ×

क्षेत्रकार १११ नव्ह <u>प्र</u>शी

विकेश---कोल्यारी ल्लानॉव्ह परनार्व निकी इनप्रशिनने । ×

४ देशकार × इ. मानपूर्वर की वार्ती ६ करप्रिकादी विगहर्व

 पुरवण्यनानिका से वाली × र"४४ शुरुवासं ६४। वयर्व ६७। या ६_५४४ इ । माना हिन्दे बस्तव । दूर्छ। ^{हे} ^{स्व} ×14 d 4441

पक्रम प्रस हमस हरहे 179-157

?Y-29

ea-tt

***-**

क्यूको १५०-२११

è-

विकेष--नवज्ञास विकोधीसामा एक एवं वब स्पृत्ति एवं पूर्वा संबंध है !

and the second of the second o

The second of the second

A to have to a same to by the best a time to the

m - cmg - the - the sweet

第2項目 2章章 まとり、またい、またいままた。 せんだかか エ デローン・コ と まままた。

of whenter a major to the

a which with the first f

A ST - TYTEST WE ST

The second secon

The market of the section of the

t to the total and the total a

for a direct many of the form of the

+ # f

प्रेड के स्थानित्य करें। जा के कार्य के प्रेड के कारण के प्रार्थ के जात कर जाता है। विकास के प्रेड के कारण जाता

```
•રક ]
                                                                            ्रित्य-स्थ
          ४६ म् गुटकास० ७२। पत्र तं १९७१ मा ४८६ इ. । बाता-बस्ट्र दिल्पो | ते नत्र ४।
पूर्व भी भी १९४1
          विकेश-पुत्रा पाठ व क्योश साहित का ब्रेस्ट है।
          १६. हे <u>सरकार्सं</u>≉ भदे। पत्र त १६। मा ४८६ इ.। जास-संद्रुत (ल्सी) त नार XI
TO 18 # $521
  १ पना पात संपन्न
                                                          चंस्ट्रच हिन्दी
                                         ¥
                                                                                5-44
  २ सामुक्त देख गुलकी
                                         ×
                                                          Breft.
                                                                               YZ-45
          र६०४. गुरुका सं० ७४। यह सं १ । बा १,×१३ ६ । जला-दिल्ये | में सन × । बार्ल
R & bts :
          विक्रेप-मारम्थ में तुथा पात तथा तुनके दिने हुने हैं क्या प्रत्य के १७ वर्षों में हंबर 🧜 ११ वे गात
के राजाओं का परिचय दिवा ह्या है।
          १६६४ गृहकासे क्षापवन ६ । शा र<sub>व</sub>×रहेद । शासाहिन्से तस्त्रा हे रत×।
मार्च हो से ३६०३
          रिकेट—बारान्य नार्थे का बोध्य है ।
          ates शहबा संकथ६। पर से १ −१३०। यात थ×६, इ. । बादा दिन्दे बंदर । से
सल ≍ । बहुता।के वे ३६ ।
          विकेश-स्थापन में कुछ नन है तथा फिर बानू दिन कुनके दिने हुने हैं।
          at क शहरता सं कशायन सं २०१मा ६३×४३ र । शहर-दिन्दे। हे स.स.×। महर्न
1322 % 4
                                   मगोपूरदाल
                                                        िनी
                                                                    224 40 F & 1E
```

হ প্রাথিকাগরিত व सम्प्रतिवक्तर्शी की मानना 4400 11-11

×

1 वर्धहर्द्धविद्या वार्ग 65-63 P

इर् सः शुरुवासी • बस् । वस्य १९ । सा ६८३६ र त्र जाला-अस्तित हे जला ८। व्यूपी

m a tot !

(शोप्-मानगला सन्। मरियमार बार्टि में मे पाउ है ।

४६०६ गुटका स० ७६। पत्र स० ३० । ग्रा० ६३ँ×४३ँ ६०। भाषा–हिन्दी । ले० काल स० १८१ ो पूर्ण । वे० स० ३७१।

विशेष - ब्रह्मरायमल कृत प्रद्युम्नरास है।

४६१० गुटका स० ८०। पत्र स० ५४-१३६। मा० ६३×६ इ०। भाषा-सस्कृत। ले० काल 🗙।

भपूर्ण । वे० स० ३७२।

विशेप--निम्न पाठों का सग्रह है।

१	श्रुतस्कन्ध	हेमचन्द	प्राकृत	श्रपूर्ण	38-0E
۶	मूलसघ की पट्टावलि	×	सस्कृत	"	50 – 53
ηγ	गर्भपडारचक्र	देवनिद	"		•
¥	स्तोत्रत्रय	×	सस्कृत		58-60
		एकीभाव, भक्तामर एव		F	६०-१०४
		द्रावानम् वर्गानस् द्रव	. भूगाल चतु ।वश	।त स्तात्र ह ।	
ሂ	वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनन्दि	77	१० पद्य हैं	१०५-१०६
υ*	पाइर्वनावस्तवन	राजसेन [वीरसेन के शिष्य]	"	e	
10			**	دو ع	१०६–१०७
9	परमात्मराजस्तोत्र	पद्मनिन्द	"	१४ "	308-008
5	सामायिक पाठ			••	
		भ्रमितिगति	99		११०-११३;
3	• तत्वसार	देवसेन	Tree=		
		4404	प्राकृत		३१३–११६
१०	भाराधनासार				
9.0		33	39		१२४-१३४
११	समयसारगाथा	मा ० कुन्दकुन्द			
		2.33.4	3)		१३४-१३८
	A. O. O. O.				* * * *

४६११ गुटका स० =१ । पत्र स० २-५६ । मा० ६४४ ६० । भाषा-हिन्दी । ले• काल स० १७३० भादवा सुदी १३ । मपूर्ण । वे० स० ३७४ ।

विशेप-कामशास्त्र एव नायिका वर्णन है।

४६१२ गुटका स० दर। पत्र स० ६१×६ इ०। भाषा—सस्कृत हिन्दी। ले० काल × । पूर्ण। वे० विशेष—पूजा तथा कथामों का सप्रह है। मन्त मे १०६ से ११३ तक १८ वी शताब्दी का (१७०१ से १७४६ तक) वर्षा मकाल युद्ध मादि का योग दिया हमा है।

४६१३ गुटका स० ८३ । पत्र स० ८६ । आ० ६×४ ६० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । जीर्रा । पूर्ण । वे० स० ३७५ ।

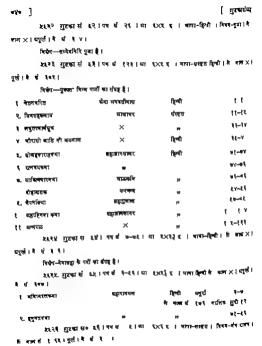
⊌ ₹≂]			[गुरस्का	
१ इ¥उराल	×	Destr.	वण वं कर है 1−स	
	महापुरस्तु के बस्नय स्कृत्य में वे निया नग्र है।			
२. कार्यालालस्य करा	,×		16-71	
१ क्ष्महितहरू	×		₹ 9 —₹	
श्वरेष गुरुषा स॰	मान्ना विकास स्था स्था स्था ।	षा ६ ४६६ । १	ाता -वीवा य । के रस×।	
म्यूर्जंं हैं । चं २७६।				
विकेरवैकक्सार ए	रं वेशकाय क्यों या बंध्य है।			
प्रश्रेक्ष गुढका सं∗	⊏≿।पण संगरामा स	×६६ । यता∹हि	भी (के काव×ान्त्र्व।	
वे सं १७७।				
विश्वेषशै ब्रुटको का	एक उटका कर विद्या है । फिल	पाड पुरुषक परनेक	रोब 🕻 ।	
१ क्लिनामश्चित्रययाच	बन्दु रची	हिल्दी	११ सम हैं र⊷वर	
र केलि	भीव्य		११-२१	
ই বঁ য়াপ্ৰাপতি	युवा		? 1.7	
¥ चैतनमीतः	বুনিমিত্ নশ্বি		40-1	
१. विश्वम्	व्यक्त रागरका		18-41	
६ नेतीलप्त्रीयाचा	रिक्गरिक		15 11	
७ पंजीनीत	वीषुश		A6-24	
म नेमोसमार केश भाग	वहायमंत्रीय		Africa	
१. पीव	गरीय प्रस्तृ		A8-Ag	
१ वीर्यवरस्थयन	म्मुधी		Af f	
११ बाहिनासस्यमन	वरि प्रमृ	*	Af g	
११. स्तीव	च ं निगमना वैश		ų -t?	
१३ पुरुषर चीनई	म नावरेव		74-41	
	. 6	के काम वे १६		
१४ वेन्द्रभार गीत	पूर्णी	**	१२-१1 १६-२१	
१६८ चल्ल्या के १९ स्थल	व्याग्रह्म		44-45	

४६२० गुटका स०६०। पत्र स०३-६१। मा० ८×४५ ६०। भाषा -हिन्दो। बिपय-नद सग्रह। ले० नाल 🗙 । पूर्ण | वे० स० ३८२ ।

विशेष--नलवराम के पदो मा सग्रह है।

४६२१ गुटका स०६१। पत्र स०१४-४६। धा० म्वै×४३ ६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत । ते० काल × । पूर्ण । वे० स० ३५३ ।

विशेप—स्तोत्र एव पाठो का सम्रह है।



१	नक्तानरस्तोत्र ऋदिमत्रयत्रसहित	माना गाचार्य	संस्रुत	१− ४३
ą	पद्मावतीक्वच	×	n	と ガーをえ
₹	पद्मावतीसहस्रनाम	×	99	¥ ? –६३
¥	पद्मावतीस्तीय बीजमय एव साधन	विधि X	n	६३-=६
ሂ	पद्मावतीपटल	×	93	¤€~#७
Ę	. पद्मावतीदउक	×	n	57-56

४६२७ गुटका स०६७। पत्र स०६-११३ घा०६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० वाल ×। मपूर्ण वे० स० ३८६।

१ स्फुटबार्त्ता	×	हिन्दी	मपूर्ण	E-77
२. हरिचन्दरातक	×	13		23-55
३ श्रीयूचरित	×	11		₹3− 0₹
४ मल्हारचरित	×	n	भन्नर्ग	€ ३ −१ १ ३

प्रध्यः गुटका स० ६८ । पत्र स० ५३ । मा० ५×५ २० । भाषा-सस्तृत हिन्दी । ले० माल × ।। मपूर्ण । वे० स० ३६० ।

विरोप-स्तोत्र एव तत्वार्थमूत्र मादि सामाय पाठो का सग्रह है।

४६२६ गुटका स०६६। पत्र स० ६-१२६। मा० ५३×५ ६०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले० वाल ×। मपूर्ण। वे० स० ३६१।

४६२० गुटका स० १०० । पत्र स० ६८ । आ० ६४६ ६० । भाषा-हिन्दी । से० काल ४ । प्रपूर्ण । वे० स० ३६२ ।

ţ	ग्रादित्यवारकया	×	हिन्दी	{ <i>x−</i> ₹ <i>x</i>
२	पक्की स्याही बनाने की विधि	×	71	₹ ५
7	सकट चौपई क्या	×	33	₹५—४३
`	४ नयका वत्तीसी	×	23	ሂ ሂ– ૪ ७
,	१ निरंजन घतक	×	"	₹ ₹~ 5 ¥

विशेष--लिपि विकृत है पढने मे नही माती।

હ્યર]	[गुरक ा वंग							
४६३१ गट	तस≎ १०१ । यस संदश्यामा द _द ×४३ द्राचला—हिन्दे। ⊪ यस ×।							
महर्खात १६१ ।								
-	विदेश—वृत्ति सुन्दर हुत नामिका शक्तक विधा क्रुया है । ४२ के १५ वस तक है।							
	इस्ं•१०२ । यस वं थर−१ १ । सा «Xo इ । आया-हिलो । विवस-संस्							
के नात X बहुती है वे देश्या								
१ चतुर्वधी रचा	कल्लाम क्रिकी र क्रास १७६६ क. केंद्रपूर्णः							
1 28241 121	में काल से १७१६ के पूरी १४। ब्यूर्ण ।							
0.2. 30	च ते देश चयातक हैं।							
सम्ब-सा सम्ब-साग	0 3 44 40 0 4 5							
नाता पृँधो 🗱 मंदि करी धेवन विना वीचन निधवरै।								
	रानी माता करनी जार धालपराम सरेको बार ।। १७६॥							
दोदा	मान वैक्षि कर वैक्षित्रे दुख धुव थोत कैंद ।							
	मातन ऐक विचारिये, जरनगः नहु न क्षेत्र ।। १७० ।।							
	संप्रणाचार कंपर तो तीसी विकास केन्न कंपर यस नहीं !							
	मुवामी वामै जीक्य हत्त्व चैक्य चैक् पुरीसुर दाव (1 १७< ³⁾							
चन्तिमगाठ								
वृधि बाद नगा शरी प्रभवश्ची प्रश्नताग ।								
महत्त्व करण में रेड् सी बैडो पथे जु. बांछ ॥ १९ ॥								
	सहरात्ती प्रचानने अपन केंद्र बुद्दि सामि ।							
कोजनार करनी जाती पुष्टा जना वकावि ॥ २१६ ॥ विजेतपाल गोहरा मोत स्रोपनशी में बात । कालु नद्दे पति भी हती पूंचितन नी साल ॥ २३ ॥ महाराजा बीजनीवासी यामा, साहा। साम्ब की बार ॥								
				नहारका वार्यकालका अन्यः, साहासाल प्रशास । वीनाचना वहे पुर्णे वी पुरिवारी सार ॥ १३१ ॥				
				चीरवा की क्या बंधूर्त । सिती त्रवा के बुदी १४ बीवत् १७१६				
९. चौदवनीजनगा व	× Belt E1-Ex							
६ वारासंगीनको क्ला	× अ के काल स १७१३ १४-१९							
	,							

3-8

गुटका-समह

73-03 वनारसीदास 7) नवरल कवित्त 008-23 ५. ज्ञानपच्चीसी 27 भ्रपूर्श १००-१०१ × ६ पद

४६३३. गुटका स० १०३। पत्र स० १०-५४। धा० ५३×६३ ६०। भाषा-हिदी। ले० काल ×।

धपूर्ण । वे० स० ३६५ ।

विशेष---महाराजकुमार इन्द्रजीत विरिधत रसिकप्रिया है।

१६३४. गुटका सब १०४। पत्र स० ७। मा० ६४४ इ०। भाषा-हिन्दी , ले० काल ४। पूर्ण । वे० स० ३६७ ।

विशेय-हिन्दी पदी मा सग्रह है।

ज भगडार [दि॰ जैन मन्दिर यति यशोदानन्दजी जयपुर]

४६३४ गुटका स० १। पत्र स० १४०। मा० ७१×४३ इ०। लिपि काल ×।

विशेष-पुरुषत निम्न पाठो का सम्रह है।

१ देहली के बादशाहो की नामाविल एवं हिन्दी 39-9 परिचय ले॰ काल स॰ १८५२ जेठ बुदी ५। X २ वित्तसग्रह × 20-88 ३ शनिश्चर की कया X गरा **४**५-६७ ४ कवित्त एव दोहा र प्रह X **44-68** 93 ४ द्वादशमाला मयि राजसुन्दर 33-43 ले॰ काल १८५६ पीप बुदी ५।

विशेष-रणयम्भीर में लक्ष्मणदास पाटनी ने प्रतिलिपि नी या ।

४६३६ गुटका स० २। पत्र स० १०६। पा॰ ४×४३ इ०। विशेष--पूजा पाठ सम्रह है।

४६३७ गुटका स० ३ । पत्र स० ३-१५३ । मा० ६×५३ ह० ।

विशेष---मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है।

१ गोत-धर्मकीति हिं दी

(जिरावर ध्याइयडावे, मनि चित्या फलु पाया)

२ गोत-(जिएावर हो स्वामी घरएा मनाय, सरसति स्वामिए। बीनऊ हो)

ass]			[शुरुध मंग
१ पुणाजनिजयसान	y	वस्य व	₩ -₹¢
२ तपुरम्यत्रसम्	×	हिसी	84-81
1 वन्तमार	देशनेन	प्राप्त	76 1
४ पारापनलार	**		€ 1-1
र हारवानुवेचा	महनीनेश	*	t ⊷ttt
६ नार्र्यनामस्तरेष	चयमन्द	संस्था	\$\$\$ - \$\$\$
· Entire	या नैमियन्य	RHT	ire tet
१६१८ - गुरुषा स॰ ४ ।	पवस स्वर्गामा ८ ४	(वड । चारा-दिश्यै।	ने कान वं स्थित
माराह नुती १६ ।			
दियेय—विस्त पर्ने का श्रंद	nç il i		
१ रासीपुरस्य	भूवरयान	दिगी	1-1 7
रै. क्यमोपुनद्यस्त्रीय वर्सन	×	# (4X	?
१ इट्टनन्त गोराई	न रह्ममन	# \$499 H	त्तात्रं इसे १ 🚁 💮
४६३६ गुरुवा स० ४।	पत्र वं १४ । या ७३:	XV ६ । मामा-संस्कृत	ı
विधेय-पूजा बाठ बंधह् है	1		
श्रम्थः शुरुका सं०६।	नगर्व २१३। या ८०	(६.६. । मारा–धंस्ट्रत ।	से सम्बद्धाः
विदेश—कामान्य पासी हा।			
र ४१ गुरकास ७।			
क्षियेच—र्थ देवीचन्दप्रस हि		-	
दोती में है। देवी रूप ने पाना कीई परि	वय नहीं शिक्षा है। वन्तुर	में प्रतिनिधि की वह बी।	मला वापारलं है 😁
वन सेरी वेशा है	र रहि ही। बैने नहि नपर	त दुवा यहि वे गीवरी।	
	लाधे सम्बद्धानलाम् सा		
-	वलारी नयी अनन शन ना		
वार्त्ता—बाप की दश्द में तै			
शिववेज केट की काट वेली । न यानी नव		में नदा योगी। वसीर पू	वा के नेवल वर कार्य
रै क्रम सन देशास्त नी न चानो तर सम	रम गाँ कामी नहीं ।		

ाुटफा-समह]

प्रपूर्ण ।

प्रदेशर गुरुका स० = । पत्र मं० १६६-४३० । आ० ६×६ ड० । भाषा-हिन्दी । ले० कात × ।

विरोप-व्यूलाफीदास पृत पाटवपुराण भाषा है।

४६४३ गुटका स० ६ । पत्र स० १०१ । मा० ७६ ४६२ इ० । विषय-संग्रह । ले० नाल 🗡 । पूर्ण ।

विदोप-स्तोत्र एव सामान्य पाठो पा मग्रह है।

४६४४ गुरुका स०१०। पत्र स०११८। मा० ५३×६ ६०। नापा-हिदा परा। विषय-सन्तर। ले॰ माल स॰ १८६० माह बुदी ४ । पूर्ण ।

१ मुन्दरविलाम

मृदरदास

हिंदी १ ने ११६

विशेष--- त्राह्मण चतुर्भु ज स्वस्तवाल ने प्रतिलीपि की थी।

२ वारहसङी

दत्तलाल

27

विशेष-६ पद्य हैं।

४६४४ गुटका स०११। पत्र स०४२। ग्रा० म^१×६ ६०। भाषा-हिदा पद्य। त० राल ७० १६० = चैत बुदी ६ । पूर्ण ।

विशेष-- वृदसतसई है जिसमे ७०१ दोहे हैं। दपकत चीमनलाल कालल हाला का।

४६४६ गुटका स०१२। पत्र स०२०। प्रा०८×६३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० जाल म०१२६० मासोन युदी ह। पूर्ण।

विशेष-पनमेरु तया रत्नमय एव पार्चनायस्तुति है।

४६४७ गुटका सं० १३। पत्र स० १४४। मा० =×६३ इ०। भाषा-सस्वत हिन्दी। ले० काल स० १७६० ज्येष्ठ सुदी १। मपूर्ण।

निम्नलिखित पाठ हैं---

कल्याणमदिर भाषा, श्रीपालस्तुति, ग्रठारा नाते का चौढाल्या, भक्तामरस्तोत्र, सिळपूजा, पार्श्वानाथ स्तुति [पद्मप्रभदेव कृत] पचपरमेष्टी ग्रुगमाल, धान्तिनाथस्तीत्र धादित्ययार कथा [भावमृत] नयकार रामो, जोगी रासो, भ्रमरगीत, पूजाप्टक, चिन्तामिंग पार्व्य नाय पूजा, नेमि रासो, गुरस्तुति मादि ।

वीच के १०० से १३२ पत्र नहीं हैं। पीछे काटे गये मालूम होते हैं।

```
प्रश्न ] [ गुरक्तरंत्र्य

मा भगडार [ शास्त्र भगडार दि० जैन मन्दिर विजयराम पाट्या जयपुर]

हरेश- गुरुका स १ । वन सं २ । या १ ५०४ ६ । जला-हिन्ये । हिन्द-नंद्रा है रल

सं १११० | पूर्वा वे १ । वा १ ५०४ ६ । जला-हिन्ये । हिन्द-नंद्रा है रल

स्वरित-पालेक्यान वार्यका वार्यका वार्यक्र वार्यक्र वेष्ट्र है।

१९८८ गुरुका स २ । वन सं २२ । या १५४४ ६ । जला हिन्ये वस है ।

स्वरित-पोरस्स के नितार कर वेष्ट्र है।

१९८४ गुरुका से १ । वा ६५४६ । जला-बंस्स्ट हिन्ये । है कन ४।

प्रश्न गुरुका से १ । वा ६५६६ । जला-बंस्स्ट हिन्ये। है कन ४।
```

४६४१ गुरुकास ४ । पन वं ११ । बा ध×रई द । बापा दिली | के कद×। ईर्ज ।

हिन्दी

10

1-11

99

22 31

21-17

24-52

SK XD

Y#-11

22-1

x 11

-1-21

श्वनारचीयस

विश्व कुर्वश्व

वार्गवरम

× विशेष—वपणयः ने शायरे में स्वप्रमार्थ विश्वी थी । क्ष्मीर्थित

नगरधीचात

बनारची राज

क्पवन्द

विकेप---बायान्य पाठी वा श्रीवा है ।

विदेप-भूष्यतः निम्न पार्धे का श्रेषद् है।

वे संबर्ध

Y विवरी

१, मुख्यकी

६ तिनुस्मध्स्य

७ सम्बद्धमधीहा

.

व डायुवरका ६. बोलवंडी

१ दिवबहस्तामस्योग

२ सहरी नेमीन्धरनी

पश्च स्टाप्त कर सुन्नावना

४६४२. गुटका स०४। पत्र त०६-२६। मा० ४×४ इ०। भाषा-हिन्दी । ते० काल ×। मपूर्श वि० स० ३२।

विरोप-नेमिराजुलपचीसी (विनोदीलाल), बारहमासा, ननद भौजाई का भगडा ब्रादि पाठो का सग्रह है।

४६५३ गुटका स० ६। पत्र स० १६। मा० ६×५० इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० ४१।

विशेष -- निम्न पाठ हैं-- पद, चीरासी न्यात की जयमाल, चीरानी जाति वर्णन ।

४६४४ गुटका स० ७। पन स० ७। पा० ६x४३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल स० १६४३ वैशाल सुदी १। मपूर्ण । वे॰ स० ४२ ।

यिशेष-विपापहारस्तोत्र भाषा एव निर्वाणनाण्ड भाषा है।

४६४४ शुद्धना स० = । पत्र स० १=४ । भा० ७×४६ ३० । भाषा-हिन्दी नस्कृत । विषय-स्तोत्र । ते॰ माल X । पूर्ण | वे॰ स॰ ४३ ।

₹.	उपदेशरातक	द्यानतराय	हिन्दी	ξ − ₹ χ
२	छहडाला (मसरवावनी)	37	27	35-75
ą	धर्मेरधीसी	33	97	78 – 88
४	तत्त्वसारभाषा	27	11	34-88
¥	सहस्रनामपूजा	धर्मचन्द्र	सस्कृत	¥8-3¥
Ę	जिनसहस्रनामस्तव न	जिनमेनाचार्य	9)	१-१२
			से कार सक शक्त हा	ਹੜ ਹੁਣੀ 🍇

ले॰ काल स॰ १७६८ फायुन सुदी १०

39-8

४६४६ गुटका स० १ । पत्र स० १३ । मा० ६ XXX इ० । भाषा-प्राकृत हिन्दी । ले० काल स० १६१८। पूर्ण । वे० स० ४४।

विशेष-सामा य पाठी का सग्रह है।

४६४७ गुटका स०१०। पत्र स०१०४। मा० ८×७ इ०। ले० काल ×।

रै परमात्मप्रकाश योगीन्द्रदेव मपभ्र श २ तत्त्वसार देवसेन प्राकृत 20-28

48 =]			[सुरुध ६प(
व वास्त्रमारी	×	चंत्रुव	₹ ٧ −₹ø
४ समाधिराच	×	दुसमी हिल्दी	₹9—₹8
विदेय वे बालूराम	मैं ध्रमी पड़ने के निए निसा	411	
६, हारपानुत्रेवा	×	पुरानी हिन्दी	te II
६ नोदोराबी	यीयीरप्रवेश	घरम् व	19-41
 भावराचार रोहा 	शावविद्	100	11-11
न । वर्पकृत	<u> दुन्ददुन्दावर्ग</u>	মাছর	YIY
बटनेस्ना गर्गन	×	सरङ्ख	t v-t t
४६१६. गुरका स	११ । यस वे १६ । (शुरे ।	वियासमाशार) द्रा ७३ २	(१.इ.। बासा–हिमी
से नला×। पूर्वावे में ४।			
विकेय-पूजा एवं स्तो।	र सम्बद्ध है।		
४६४६ गुरुषा सं	१९। यदस १ । सा ६)	८६ ड वाला -किली :	र तल ×। श्रृष्टी
4 4 5 1			
(दसेय—विस्य दुवा पा			and or traff
केस ११। केस ११।	१३ । पत्र में ४ । ब्रा ६०	८६ ६ । बाबा⊸हिला। ब	46.01.40
१ सम्बन्धाः	शरवस्त	िस	₹ - -₹₹
	a.९ नम तक सामलेरी के राव	। क्य की बचा है।	
१ फुटकर गरिया	धनरका		4 <i>4</i> -4
विकेशवन्तर समिता	पिरि क्या है।		
kt.६१ सुबका सं	१४। ययस व व्यवस्थाना व	×६६ । क्या⊸श् या त	(सी वेतसर्व
१९४१। पूर्व । वे हं १ ।			
 चौरासी वादि नेव 	×	पिन् दि	4-44
म् नेवियान कर्य	युष्पर श्च		१०-२१
विश्वेषव्यक्तिय पार			
_	विषय तम प्रस्त निषय सेव क		
ु चर	ल पुनिषर जलाइ जीसंग पुत्रव		कुद ६४ लग्हें।
`	 इदि भी नेनियान कर्युः 		-

<u> पुटका-सप्रह</u>]			ુ હજુદ
३ प्रयुम्नरास	य्र॰ रायमल्ल	हिन्दी	२६-५०
४ सुदर्शनरास	12	1)	£8-50
५ श्रीपालरास	57	77	388
		ले॰ याल स	॰ १६४३ जैठ वृदी २
६ दीलरास	"	57	१३३
७ मेघजुमारगीत	पूनी	77	<i>₹ ₹</i>
८ पद- चेतन हो परम निधान	जिनदास	n	२३६
 भेतन चिर भूलिंड भिंगड देवंद 	ī		
चित न विचारि ।	रूपचन्द	22	२३८
१० , चेतन तारक हो चतुर सयाने वे	निर्मेल		
दिष्टि मद्यत तुम भरम ग्रुलाने ।	33	11	39
११ ,, वादि प्रनादि गवायो जीव वि	धिवस		
बहु दुख पायो चेतन ।	77	55	
१२ "	दास	57	२४०
१३. 🖪 चेतन तेरो दानो वानो चेतन ते	री जाति । रूपचन्द	v	
१४ 🕫 जीव मिय्यात उदै चिर भ्रम	म्रायो ।		
वारत्नत्रय परम घरम नः	नायी ।।	93	
१५ " सुनि सुनि जियरारे, तू त्रिभु	वन का राउ रे दरिगह	5)	
१६. "हाहा मूता मेरा पद मना वि	जन यर		
घरम न वेये।	33	5)	
१७ 🔐 जैजैजिन देवन के देवा, स्	गुर नर		
सक्ल करे तुम सेवा।	रूपचन्द	27	२४७
१८ श्रकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	×	प्राफृत	२५१
१६. मक्षरगुणमाला	मनराम	हिंदी है	ो० काल १७३५
२०. चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	×	37	ने० काल १७३५ २५७
२१. जकडी	दयालदास	1)	२३२

共•]			[गुर	म-सम
२२ पर∼ राषुगीभे रै कर दुक	बोकर्गी			
द मले।	ध्वै शीति	-		217
२६ रविव्रत नवा	ৰাপুৰ্ণীযি	77	र कात १६०७	115
	(बाठ क्रप्त सोसह 🗣 ब क्र्स्	रिने सुकवा विशव)	
९४ पर्वकी ननीयाकाकोराना	ही थी विश्व			
रोर र मार्ने रैं :	विवसुन्दर	79		141
२५, सीमनतीसी	प्रभूपच	77		454
२६ टंडाएल योज	हरतन	17		***
९७ अयर गीत	वर्गास्थ		श स	111
	(व	हो दुवी पवि जसी	दुव अमरा रै)	
				d i b
३६६२ गुटकार्स	१≵। पत्र स २७६ बा	१८४३ इ. । इ. व	क्षिय (करका)	
-	१.प्र.।पदश्च २७६ बा	DASE I & A	।सस्य (करका)	
-	हेड्रायतस्य २७३ (वर्षाः वदारसीयस्य	्रक्ति (१८४२ हा का	led (ever)	113
f () 1	वकारखीदस्य			
f () 1	वकारखीदस्य	वि ल् वी	नलाई १७६६	
ि १ १। १ शस्त्रकं समयसार	वकारश्रीकाश र क	हिल्दी अनब १६६३ दे	नलाई १७६६	111
र १६। १ शांटक समयचार १ मेवकुमार गोठ	वनारशोदस्य र कः पुनी	हिल्दी अनग्र १९६३ । दे	नलाई १७६६	≀(1) -{(1)
वे १६। १ शंद्रक समयवार १ वेषकुमार गोठ ६ वेरकुमारिया	वकारशीयसः र कः पुत्री क्यारशीयस्त	विल्पी शास १९८३ (दे स	नलाई १७६६	253 -256 2 ×
वे १६। १ मध्यक समयचार २ वेषकुमार गोठा ६ ठेरहकाजिमा ४ विषेक्षण्यमधी	वदारक्षीदस्य इ. इ. पुनी वदारक्षीदास्त जिनवास	विल्यी सामा १९६६ वे 	नलाई १७६६	₹\$\$ -}\$£ † #
र १। १ माठक तमयवार २ मेवहूनार गोठ ६ ठेरहकालिया ४ विवेक्शनयी ६ इस्तुकारमाला	वकारश्रीकासः र कः पुत्री समारश्रीयासः निजनसः सन्दास	विल्यी ; शनव १९६६ दे ल ल ल	नलाई १७६६	₹\$\$ -}\$£ † #
र १। १ माठक वेनपचार २ वेनकुनार गोठ ६ ठेरहकारिना ४ विवेच्चनदी ६ कुछाबरमाना ६ कुमोबरसो से बनमाच	वकारसीयसः ए कः पुत्री वकारसीयसः निजयसः सन्दर्भ विकासः	हिल्से शास च १६८६ दे म म म म स	बलाई १७६६ १६२	{{1}} -{{{1}} {{1}} {{2}} {{3}}
द १ १ । १ शास्त्रक सम्प्रधार द वेषकुमार गोस्त ६ तेषकुमार गोस ६ तेषकुमार गोस ६ कुल्लासमाना ६ कुलोसस्सी गो सममाप • मानगी	वकारशीकाः ए कः पुत्री वकारशीकाः निगदस्य मनस्य दिकाराठ वकारशेकाः	शिल्पी । शास १६६३ वे स्टब्स् स स स स	वलाई १७६६ १६२	

⊁६६४ शुरुका सं १०। पर सं १४२। था ९८६ इ.। जाया–हिमी। ते नल ४। १र्ल ।

विकेश—सामक्य पाठी सा'र्संबद् 🕻 ।

R # 1 * 1

१ भविष्यदत्त चौपई

व्र॰ रायमल

हिन्दी

११६

२ चौवोस तीर्यद्वार परिचय

X

"

१४२

४६६४ गुटका स०१७। पत्र स०८७। ग्रा०८×६६०। भाषा-हिन्दी। विषय-चर्चा ले० काल

विशेष-प्रग्रह्यान चर्चा है।

४६६६ गुटका स०१८। पत्र स०६८। आ० ७×६६०। भाषा-हिन्दी। ले० काल स०१८७४। पूर्ण। वे० स०१११।

१ लग्नचन्द्रिका भाषा

स्योजीराम सौगानी

हिन्दी

१-४३

प्रारम्भ-मादि मंत्र कू सुमरिइ, जगतारण जगदीश ।

जगत ग्रयिर लिख तिन तज्यो, जिनै नमाउ सीस ।। १ ।।

दूजा पूजू सारदा, तीजा ग्रुह के पाय।

सगन चिन्द्रका ग्रन्थ की, भाषा करू वर्णाय ॥ २ ॥

गुरन मोहि भाग्या दई, मसतक धरि के वाह।

लगन चद्रिका ग्रंथ की, भाषा कह बस्माय ।। ३ ।/

the comment of the first that the

मेरे श्री गुरुदेव का, भावावती निवास ।

नाम श्रीजैचन्द्रजी, पहित बुध के वास ॥ ४ ॥

लालच द पढित तरो, नाती चेला नेह।

फतेचद के सिप तिनै, मौकू हुकम करेह।। ५।।

किन सोगाणी गोत्र है, जैन मती पहचानि ।

कवरपाल को नद ते, स्योजीराम वसािंग ॥ ६ ॥

ठारासे के साल परि, वरप सात चालोस। माघ सुकल की पचमी, वार सुरनकोईस ॥ ७ ॥

लगन चिन्द्रका ग्रथ की, भाषा कही जुसार।

जे यासीखे ते नरा ज्योतिस को ले पार ॥ ५२३ ॥

२ चृन्दसतसई

श्रन्तिम---

वृत्दकवि

हिन्दी प० ले० काल वैशाख युदी १० १८७४

```
•x₹ ]
                                                                            [ गुरक्रसंब
  ) राजातीचि स्टीरण
                                Referen
                                                    n X
                                                                              223 er 1:
           प्रदेश गुरुकार्स १६ । यम स. ६ । या ×६६ । जाना-विन्दी विकास सर्वा है सम्बद्धा
पूर्ण । वे वे ११२।
          विकेद--विकित कविनों के पर्यों का ब्रीव्ह है 1 बटका बदाई तिया। बता है 1
          श्रदेष: गुरुषा सं २ । पथ सं २ १। मा ६/६ र । जाना क्रिमी संस्ता किस-पदा
मै काल वं १७०३। पूर्णामै से ११४।
          विरोध-साहितान की बीनती धीपानस्तृति, युनिवनचे की पत्रवास बडा कन्या, क्षाप्रवास्तिर
यारि 🕻 ।
          ≱६६६ शहकार्सं⊪ देश । यस सं २७६ । या ७×४३ द । यस्त⊢क्षिमी । निका-क्षेम्र । वे
काल 🗴 । पूर्ण में   सं   ११३ । ब्रह्मराजनक कृत धरिष्यमां परास्त्र मेरिन्सस तथा श्रुपत परिर्ण है।
          xav गुटकास वरायवच रददशासा ६X६ द । सला-कियो।विक-नुवांके
सार×। ब्युर्खाले व र⊁।
          प्रदेश र शुरुका स रेहे। पण सं १ । सा ६×६ द । सल्त-संस्तृत । विका प्रवासका
के कार×ावर्ताकी। के संस्था
          विकेच---पुत्रा स्तोष संघड है ।
          ≭६७२ शुद्रकासं २४ । पद वं २ १ । सा ६८८६ द । बाला दिल्सी वंसक्ट लिल्<del>स ह</del>ुग
प्रकाशी काल ×ाप्तर्शाचे से स्वरा
          निकंद---विनयहसमान ( शाकावर ) वद्यक्ति वाठ एवं प्रवासी का तबह है ।
          प्रदेशके गुटकास २०११म वं र-वासा ६८० इ.। जला-सक्तर वंतरत। विल<sup>-</sup>िय
गठावे काल ≍ाब्यूर्णाचे सं १६६।
          प्रदेशक सुरुष्य सं १६ । पत्र व वदा शा ६८१ इ.। भाषा-विश्वी । निवन-पुनारक है
मा × । पूर्वा वे वे १३४ ।
          ≳६७३८ शुरुकार्स १७ । वन स ११। सा ६×६६ । जला दिल्यो । के कल ×। देती
8 d 2291
          विकंप-व्यारपीरिताल के पुछ गढ़, स्वयन्त थी बढ़ती. जन्म संख्य एव पुधारें है।
          kto4 शुरुषास संदेशकार्य १९६ । या १८०० इ. । माना–Ωल्णी श्रेष नान वं रूर <sup>१</sup>।
क्तार वं १६६।
```

विशेव-समयसार नाटक, भक्तामरस्तोत्र भाषा-एवं सामा य कथायें हैं।

४६७७ गुटका स०२६। पत्र स०११६। ग्रा०६४६ इ०। भाषा-हिन्दो सम्फृत। विषय-संग्रह ले॰ काल 🔀 पूर्ण। वे॰ स०१५४।

विशेष-पूजा एव स्तोत्र तथा प्रन्य साधाररा पाठो का सग्रह है।

४६७= गुटका स० ३०। पत्र स० २०। द्या० ६×४ इ०। भाषा-सस्कृत प्राकृत। विषय-स्तोत्र। ले॰ काल ×। पूर्ण। वे॰ स० १५४।

विदोप-सहस्रनाम स्तीय एव निर्वागुकाण्ड गाथा हैं।

४६७६ गुटका स०३१। पत्र स०४०। ग्रा०६×५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषयमकथा। क्षेठ काल ×ो पूर्ण । वे स०१६२।

विशेष-रिवयत कथा है।

४६८० गुटका स० ३२ । पत्र म० ४४ । मा० ४३×४६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-सग्रह । ले ४ कात × । पूर्ण । वे स॰ १७७६ ।

विशेप—बीच २ मे से पत्र खाली 🥻 १ बुलाखीदास सत्री की वरात जो स० १६८४ मिला मगसिर मुदी ३ को भागरे से महमदाबाद गईं, का विवरण दिया हुमा है। इसके भतिरिक्त पद, गरोसछद, लहरियाजी की पूजा मादि हैं।

४६८१ गुटका स० ३३ । पत्र स० ३२ । मा० ६० ४४३ इ० । मापा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वै॰ स॰ १६३ ।

१ राजुलपच्चीसी	विनोदीसाल सालचद	हिन्दी	-	-	4
२ नेमिनाय का वारहमासा	79	1			•
३ राजुलमगल	×	, »			
प्रारम्भ—	तुम नीकम भवन सुढाढे, जूव कमरी भई वरागी।				`
घन्तिम	प्रभुजी हमनै भी ले चालो साथ, तुम विन नही रहै वि भ्रापा दोनु ही मुकती मिलाना, तहा फेर न होय भावा राजुल भ्रटल सुघढी नीहाइ, तिहा राणी नहीं छै के सोये राजुल मगल गायत, मन विद्यत फल पावत ॥१	गवना । ाई,	ζ		١

इति थी राजुल मगल सपूर्ण।

```
्रिग्टबर्धस
exy 1
          प्रधान मुद्रका से ३४। पर स. १६ । बा. ६८४ इ. । बाना-हिन्दी स्तरहा में कार/।
प्रकी वे से २३३।
          विकेत--पूजा, स्टीम एवं टीक्य की चतुर्वकी रूपा है।
          इश्यदे शहका से देश पण स ४ | बा १०८४ व । बाया-हिन्दी प्रस्तुत के कार XI
पूर्वा वे स्वप
          विचेष--शामान्य प्रवा पाइ 🕻 ।
           १६८% ग्रहकारी ३६।यस्त २४।बा ६०४६ । बामा-विल्ये बेस्टा वे सम्बर
.२<del>०४२ फायुक्त बुदी १</del> । दूर्ख ⊧ वे सं वे वे देर ।
           विकेच--- मतावर स्तोप एव करवास वॅपिर शसात धीर पावा है।
           श्राच्यः, गुरुकासं क्र⊎ापण र्व २१६।मा ४८७ इ.। बस्तावित्यो संसदा वे नाम ४।
पूर्व ।
           विकेश---प्रवास्तोत्र जैन लक्ष्य तथा पर्वो ना तंत्रह है।
           ४६८६ सुद्रकांस० ३८। यम ६ १६। सा ७/४४ इ । बादा-हिन्दी। विवय-द्रमा स्वीर ।
में समा×।पूर्वामे वे १४९।
           मिचेन--- सामान्य प्रचा पाठ श्रीच्या है ।
           श्चनक गुडका सं ३६। गम सं १ । या ७×४ र । श काल × । दुर्खा है वं २४६।
  १ पत्रक्रिक्यक
                                                                                  2 EY
                                         ×
                                                          भावत
  ९. वदविहुवस्तरोष
                                                                                en te
                                   धनकोतकृरि
```

६ प विश्वचान्त्रिः बनस्तीत ₹ -- 7% × 25 27 ¥ भीवेदशक्तोत × कम्ब स्तीन पूर्व भौतयराता व्यक्ति पाठ है।

⊁६≒ः गटकास ४ । पर ६ २४ । सा ५×४ इ । जलस-मिलो । मे नल ×ाईर्ल।

■ € ₹855

विकेष--वानानिक यस है।

प्रध्यः गुरुकास प्रदेश परंत ४ । सा ५×४ ६ । बादा—दिन्दी। ≣ नान × । प्र^{ही} 8 8 8VE 1

विकेश-हिल्ही पात श्रीवह है ।

४६६० गुटका स०४२। पत्र सं०२०। मा० ४४४ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स०२४७।

विशेष-सामायिक पाठ, कल्याएामन्दिरस्तोत्र एव जिनपच्चीसी हैं।

४६६१ गुटका स० ४३। पत्र स० ४८। भा० ५×४ ६०। भाषा हिन्दी। से० काल ×। पूर्ण। वे० स० २४८।

४६६२ गुटका स० ४४। पत्र स० २५। मा० ६४४ इ० भाषा-सस्कृत । ले० काल ४। पूर्ण । वै० स• २४६।

विशेष-ज्योतिष सम्बाधी सामग्री है।

४६६३ गुटका स० ४४। पत्र स० १८। झा॰ ८४६ इ०। भाषा-हिदी। विषय-पुभाषित। ले॰ काल ४। मपूर्ण। वे॰ स॰ २४०।

४६६४. गुटका स० ४६। पत्र स॰ १७७। ग्रा० ७×५ इ०। ले० काल स० १७५४। पूर्या | दे० स० २५१।

१ भक्तामरस्तोत्र भाषा	भलयराज	हिन्दी गद्य	१ -३४
२ इष्टोपदेश भाषा	×	39	३४- ५२
३. सम्बोधपचासिका	×	प्राकृत संस्कृत	५३–७१
४. सिन्दूरप्रकरण	वनारसीदास	हिन्दी	<i>७२–</i> ٤२
१ चरचा	×	99	£9 - \$03
६ योगसार दोहा	योगीन्द्रदेव	99	१०४-१११
७ द्रव्यसग्रह गाया भाषा सहित	×	प्राकृत हिन्दी	११२-१ ३३
 ग्रनित्यपचाशिका 	त्रिभुवनचन्द	99	१३४-१४७
६ जकडी	रूपचन्द	27	१४५-१५४
₹ o 53	प रिगह	19	१५५-५६
११ ,,	रूपचन्द	"	१ <i>५७–१६३</i>
१२ पद	33	29	१ ६४- १ ६६
१३ मात्मसंबोध जयमाल मादि	×	"	१७०-१७७

४६६४ गुटका स०४७। पत्र स०१६। मा॰ ५×४ ६०। भाषा-हिदी। ले॰ काल ×। पूर्ण।

```
924 T
                                                                             गरकासम
          ४३३६ सरकास ४८ । पर्वर १ ्री घा ६८४ इ. । घरता-विल्डी ३ के कल वं १०३
क्की वे स न्दर ।
          विकेप-धारित्यशासका ( भाऊ ) विद्यानंत्रशी ( नत्त्वसा ) एव बागुर्वेषिक नुवसे हैं।
          ⊁६६७ सुटब्र्यस ४६ | पन स्री ४-११६ । सा १८४४ ६ | सामा-सस्कृत हो। सस्त X । पूर्व
a of Symit
          विवेच---प्रायान्य गाठी रा संबद्ध है।
           १६६८ सुटकास १ । पत्र वं १ । या १८२६ इ. । भारा∺संस्कृत से तल X [र्हा
के ही २% ।
           विकेय--- पर्वी एवं सामान्य पाठो रा संबद्ध है।
           हर्र गुद्रकालं ११ । पत्र सं ४७ । सा ×१ ६ । मला-संस्टत् । मे कार×ाप्ट्री
के वं २५६।
           विश्वेष-अधिहा पाठ के पाठों का श्वेदा है।
              ्युद्रकार्सं देरे। पत्र ठ १ । मा १०८६ ६ । माला-हिल्डी से ई १७२१ वर्षा
क्दो २। प्रजी वे छं २६ ।
           विशेष---धमनसार नाटक तथा बनारसीविश्वास के पाठ हैं।
           ६ १ शुरुका सं १६। पत्र सं २२ । या १०४७ ६ । बाया-दिली। के राज में १७१२।
 वर्त के से २६१।
                                                                                  1-61
                                     बबारधीदाव
    १ स्वयसार शास्त्र
           विकेष--विद्वारीयास के पूत्र नीवती के पढ़नार्वे सर्वाराय ने विका था ।
                                                                                  2-114
                             रागचन (शतक)
                                                           first

    गौतापरित्र

                                   व्यवि शंतीबाद
                                                              100

    कालस्वरीक्प

                                        परक्षाध
 र, पद्पचारिका
                                           ×
            ६ म शुरुकार्स+ देश । पण क ६ । सा ४८६ इ. । सला-हिल्फी | हॅ नार्व ई १२०
 केठ मुद्दी १३ । पूर्ण १३ वर्ष १६२ ।
                                                                                  1 10

    स्थरीयव

                                             first
            विदेश-उमा नहेब सनाव में दे है।
```

नायू

मम्बु त

33

33

33

99

हिदी

"

22

11

'१६ पद्य हैं।

२० पदा है।

३७ पद्य हैं।

१२ पद्य हैं।

भ० जिल्लाच

४० ग्रमरवीति

१० शालि

X

×

निनदास

33

गगादास

×

मनोहरदास

५. चेतावनी गीत

१० महाबीरम्तीत्र

११. नेमिनाच स्तोत्र

१२ पद्मावतीस्तोत्र

१३ पट्मत चरचा

१४. घाराधनासार

१६. राजुल की सज्भाय

१५. विनती

१७ भूलना

१८. झानपैडी

१६. भायकाक्रिया

६ जिनचतुर्विगतिस्तोष

```
44= 1
                                                                            ि ग्रह्म-संग
           विगेर-विशिध क्षिण एक बीतराय रही व साहि हैं।
           ६ ८४ गुरुबास १६।यत्ररं १५ ।या ४३x४६ । बारा-दियो बस्ता के रम.X
प्रगावेत २०३१
           निरोध-सामान्य पार्टी का संवस है।
           ६ र गुरुका सं २०। पत्र सं १--वट। या ६३००ई र । बाबा-दिनो संस्का कि नत
से रेक्टरे चैन बडी रेट । बडर्ल । में से २७८ ।
        नियेत-मतारास्त्रोत्रः स्तुति, वस्यारामन्दिरं भारा, वाचिराठ, तीन भीवीती के नामः एवं देशा दूरा गरी है
           ६ ६ शुक्कासं-३८ । प्रदश १६। या ९४४ इ. । मारा–हिन्दी । ते नल ४ (दुर्पे ।
$ er 2 t i
  १ सीसचीरीकी
                                                          हिन्दी
                                         x
                                                               र याल १४४१ वेड वृधे र
   २ ही सची हो हो। बी गर्रे
                                          tara
                                                     के बार स १७४२ वार्तिक हुए द
               कन्तिल-नाम चीरहे क्रम बहु, नोहि करी नहि स्थान ।
                        बैक्स व नव डोलिया, कोवन र राव वार्य ॥२१६॥
                        स्तरमी जनवान ने प्रश्न कन्य शनाय।
                        चेत्र क्रमानी पचयी। विजेशका सरस्य सरस्य ॥११७॥
                        एक बार के बरवड़े, बपना नहिक पत्र ।
                        बरक शीच अति के पिर्व यात्रे करे करार (19१ वर)
                             ।। इति को तीक चौड़को जी नी चौठाँ ।।
           ६ क सुरक्षासः ३६। पणसं १६। सा ६८५३ ६ । माना-संपन्त बहुत कि कल XI
 वर्षा वे सः २६६।
           विग्रेय-स्वीमनीमी के नाम मन्त्रमंद स्तीन चंत्राल परिका की बावा करदेय राजनावा की बाता
प्रार्थि है ।
           ६ ८. गुरुकास ६ । पत्र सं १४। था ६८५ इ । बला-हिन्दी। ते शब सं १८४९
क्टी विच स्थ्या
```

वीगधन

। समन्त्रस्यका

हिन्दी र शता हेक्स्ट्रवेचाच द्र^{दी क}

२ श्रावको को उत्पत्ति तथा ५४ गीय

×

हिन्दी

३ सामुद्रिक पाठ

X

"

प्प्रन्तिम—सगुन छत्तन मुमत सुभ सब जनकू सुख देत । भाषा सामुद्रिक रच्यो, सजन जनो के हेत ॥

६००६ गुटका स०६१। पत्र स० ११-४८ । म्रा० ८१४६ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत । ले० काल सं १९१६ । म्रपूर्ण । वे० सं० २९६ ।

विशेष—विरहमान तीयद्भुर जनही (हिन्दी) दशनक्षां, रत्नवय पूजा (सम्कृत) वंबमेरु पूजा (भूधरदात) नन्दीश्वर पूजा जयमाल (सम्बृत) प्रनन्तिजन पूजा (हिन्दी) चमत्कार पूजा (स्वरूपचन्द) (१६१६), पचकुमार पूजा प्रादि हैं।

६०१० गुटका स्न०६२। पत्र स०१६। द्या० ५५ ६०। ते० काल×। पूर्ण। वे० स० २६७। विशेष—हिन्दी पदा ना सग्रह है।

६०११ गुटका म०६३। पत्र स०१६। मा० ६३×४३ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। विषय-मग्रह। ले०काल ×। पूर्ण। वे० स०३०८।

विशेष-सामाय पाठो का सग्रह एव ज्ञानस्वरोदय है।

६०१२ गुटका स०६४। पत्र स०३६। घा०६×७३०। भाषा-हिन्दी। ले०काल ×। पूर्ण। वे०स०३२४।

विशेष—(१) कवित्त पद्माकर तथा ग्रय विवयों के (२) चौदह विद्या तथा कारखाने जात के नाम (३) ग्रामेर के राजामों का वशावला, (४) मनोहरपुरा की पीढिया का वर्णन, (५) खंडेला की वशावली, (६) खंडेनवालों के गोत्र, (७) कारखानों के नाम, (६) ग्रामेर राजामों का राज्यकाल का विवरए, (६) दिल्ली के वादशाहों पर कवित्त ग्रादि है।

६०१३ गुटमा सः ६४। पत्र सः ४२। षाः ६x४ इ०। भाषा-हिन्दा सस्कृत । ले० काल x। पूर्ण। वे० सः ३२६।

विशेप-सामान्य पाठी का सग्रह है।

६०१४ गुटका सब् ६६। पत्र स॰ १३-३२। द्या॰ ७४४ इ० भाषा-हिदी सस्कृत । ले० काल ४। प्रपूर्ण। वे० स० ३२७।

विशेष-सामा य पाठो का सग्रह है।

```
---
                                                                          Ter-fer
454 ]
          ६०११ गुटकास ६७। पत्र स १२। या ६८४ इ.) अध्या-विक्ती सल्दर । के नार X ।
पूर्त । वे सं १२०।
          विकेश-अधिक एक कापूर्वेद के बुतकों का स्थाह है ।
          दे देवे राज्या स विद्यापत में प्रदेश सा ६,5002 ा बारा-विन्देश विका-संख्या है
शास × । पूर्वाली सं ३३ ।
          विदेश-पर्ये एवं विश्वायों ना श्रंप्य है।
          ६ रेक सरकार्स ६६ । पत्र संबद्धाला ६८८ ४ । अस्त हिनी से रहा×ाइरी।
B of 337 i
          विकेश-विजिल कविनों के पद्ये का नवह है।
          ६ १६. गुरुकास ७ । यत्र सं ४ । या ६ ४३६६ । यापा-हिन्ते 🕒 मार 🗡 🗗
4 # 1111
          विकेष---परी एवं प्रवासी का संबद्ध है ।
          ६०१६, शहकार्ध ७१। पत्र सं इत्राक्षा ४६×६३ र । भारत-विची । विवय-समयन्त्र (
में सन्त×। दुर्खा के वं देवशा
          ६२ शुरुवासं अर्।स्ट्रयमा वैवेशका,
          क्रिकेट -- करों की १५७ प्रश्तिकों प्रस्कृतीको वर्ष बोक्यान प्रवेशी का संबद्ध है ।
          ६ २१ शहरदास थ8 । यत्र वं देश । सा ३४६ १ । शापा-दिन्यो | में नाम X । पूर्ण ।
B # 1101
          विमेत्र --ब्रह्मविनासः चौबीवश्थातः नार्यस्य ववस्, धकनसूर्यः तदा सम्पत्त्वरखेती ना सम्प है ?
          ६ वर् शहरता स्र्के अप्र । पत्र मं ६६। या ३००६ र । जाता-दिनी । विवय-नेयह । मे
पत ×1 औ । वे वे ३३ ।
```

विमेश-विवरियां पर एवं सन्य शारी का बयह है। बार्डे की करवा हर है ।

विधेय-अरक ब्राच्य वर्त्तन वर्ष वैजिनाव के १२ वर्षी का वर्तन है।

नुर्ति है दे देवर ।

६०२६ शुरुवास «४। पत्र में १४। या १०८४ र । जारा दिली कि बार है १८१८ र

गुटका-सप्रह

[७६१

34 m and

६०२४. गुटका स० ७६ । पत्र सं० २५ । झा० ५६ ४६ इ० । भाषा-सस्रत । । ले० काल 🔀 । पूर्ण । वे० स• ३४२ ।

विशेष-भायुर्वेदिक एव यूनानी नुससी का सम्रह है।

६०२४ गुटका स० ७७। पत्र स० १४। म्रा० ६×४ इ०। नापा-हिन्दी । विषय-सम्रह । ले०

काल 🗙 । वे० स० ३४१ ।

विशेप--जोगीरासा, पट एव विनितयो का सग्रह है।

६०२६. गुटका स० ७८। पत्र स० १६०। मा० ६४५ इ०। भाषा-सम्युत हिन्दी। ले० काल ४। पूर्ण। वे० स० ३५१।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ सग्रह है। पृष्ठ ६४-१४६ तक वशीधर कृत द्रव्यमग्रह की वालावबोध टीका है। टीका हिन्दी गद्य मे है।

६०२७. गुटका स० ७६। पत्र स० ६६। म्रा० ७४४ ६०। मापा-हिन्दी। विषय-पद-सम्रह। ले० काल ४ । पूर्ण। वे० स० ३५२।

ञ भगडार [शास्त्र भगडार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, जयपुर]

६०२८ गुटका स० १। पत्र स० २४८। मा० ६×४ इ०। । ले० काल ×। पूर्ण। वे० स० १।

विशेष--पूजा एव स्तीत्र सग्रह है। लक्ष्मीसेन का चितामिण्स्तवन तथा देवेन्द्रकीर्ति कृत प्रतिमासा त चतुर्दशी पूजा है।

६०२६ गुटका से०२। पत्र स० ५४। आ० १४१ द०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले० काल स० १८४३। पूर्ण।

विशेष-जीवराम कृत पद, भक्तामर स्तोत्र एव सामान्य पाठ सग्रह है।

६०३०. गुटका स० ३। पत्र स० ४३। मा० ६×४। भाषा सस्कृत । ले० काल ×। पूर्ण।

जिनयज्ञ विधान, धिमपेक पाठ, गराधर वलय पूजा, ऋषि महल पूजा, तथा कर्मदहन पूजा के पाठ हैं। ६०३१. गुटका स० ४। पत्र स० १२४। आ० ५×७३ ६०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले० काल स० १६२६। पूर्ण।

विशेष—नित्य पूजा पाठ के अतिरिक्त निम्न पाठो का सग्रह है— १ सप्तसूत्रभेद

संस्कृत

454 7 ि गुरुश संग २ जूबता बसोनुदा हत्याहि 20 t. finfen × ४ बद्दमार या पुग्यपुग्य 573 L SPECTOR (Pril) **R15** ६ पेकारम **मान्य**स वर्ततस्योत्तः fars. व बहुदिनुबीदर्ग ¥ ६. वंपारदायी v ইক্ষরীর विकास र्ष १९२६ में क्षेत्राच्छी में प्रतिचित्र हुई थी। ६ ३६ शुक्रका सं १। पत्र सः ७३। या प्रत्य १ वाला-लीव्या कि वाय सं १६ ३! বয় । विरोध-मनीबी का ठाए है। सं १६ ६ में नागेर में बार्ट के दिला जो उनका प्रतिमा बच को है। ६ ४६ गुरुवा सं ६। वर तं २२। या १८९ व । बाला-निर्मा विषय-संग्रा ने वणा ४ के ले का १ वेगीरवर का बारहरूला **केइपिड Brit** र पर्यापार के बद्धावर हरावर s entre × ६ ३५ गुरुवास करवरस १ कामा १०८४ त्याल-विश्वेत सन्दराक्ष्यी विकेश—निकारिताक पास, स्थापित (दुवरवाम) तथा बातक तथदवार (बनारवीचन) है। ६ ३३ शुक्कास का प्रवर्ग १४६ का ६×६३ हा बारा-वॉल्ड क्लाकि। ने पन×। धर्म **্ৰিন্**নেশিকেৰ্ণন মাধ্য क्षीय G 18 G बुनि दुग्लारि ६. व्यक्तिकामा वसराज ब्रिकेट-सिंद पूजा एक मंदह की है।

४. वित

६०३६. गुटका स० ६ । पत्र स० २० । ग्रा० ६×४ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठो का सग्रह, लोक का वर्णन, श्रकृत्रिम चैत्यालय वर्णन, स्वर्गनरक दुख वर्णन, चारो गतियो की प्रायु प्रादि का वर्सन, इष्ट छत्तीसी, पश्चमङ्गल, प्रालीचना पाठ प्रादि हैं।

६०३७ शुटका स० १०। पत्र म० ३८। मा॰ ७×६ इ०। भाषा-सस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण।

विरोप-सामायिक पाठ, दर्शन, कल्याणमदिर स्तोत्र एव सहस्रनाम स्तोत्र है।

६०३= गुटका स० ११। पत्र स० १६६। झा० ४×५ इ० । भाषा-हिन्दी। ले०काल × । पूर्ण।

77

सस्कृत हिन्दी ले॰ काल स= १७२७ चैतसुदी ५ X १ भक्तामर स्तोय टब्बाटीका २ पद- हर्पकीति X 27

(जिल् जिल् जप जीवडा तीन भवन में सारोजी)

ले॰ काल स॰ १७२६ ३ पंचगुर नी जयमाल प्र॰ रायमल 93 X

५ हिलोपदेश टोका X 33

६. पद-ते नर भव पाय वहा वियो हिन्दी रुपचन्द

७ जक्ही X 25

 पद-मोहिनी यहकायो सब जग मोहनी मनोहर \$1

६०३६ गुटमा स० १२ । पत्र सं० १३६ । मा० १०४६ इ० । मापा हिदी सल्तन । ले० नाल ४ । पूर्ण । निम्न पाठ है —

क्षेत्रपात पूजा (सम्वत) क्षेत्रपाल जयमाल (हिन्दी) नित्यपूजा, जयमाल (सस्वल हिन्दी) मिद्धपूजा (न॰) पोडसरारण, दसनक्षमः रत्नत्रयपूजा, मनियुण्डपूजा भीर जयमान (प्राप्टत) नदोश्यरपक्तियूजा प्रनन्तचतु-र्दर्शांपूजा, प्रक्षयिनिधिपूजा तथा पारवंनास्नोत्र, प्रायुवेंद ग्रंथ (सम्युत्त क्षे॰ वाल स॰ १६८१) तथा वर्द तरह पी रेगामा वे चित्र भी है, राजियन भादि भी दिये हुये हैं।

> ६०४० शुटका सद १३ । पत्र स॰ २८३ । घा० ७४४ इ० । ते० बाल स० १७३८ । पूर्ण । पुटने में मुचा निम्न पाठ है-

१. जिनम्न्ति मुमितिकीति हिन्दी २ गुराम्याकाति ६० थी यहाँन

æ{8]			[गुरका-संभ्य
	ঘ লিক	×–थए।ति भी न≨नि ब्रह्म एहं दानी व	विधस नुवा करह		
₹.	सम्पत्त्व वयश	т х	वरप्र द		
¥	परमा र्वेडी ख	क्यक्क	fi pt i		
1.	पर-ध्यो नेरे	की व तू करा करवायी तू			
	ৰৱন আহু ৰৱ ৭	रस है यमि नहां चुनावी । बनरान	77		
•	मेक्ट्रवारपीय	पूची	*		
9	नगोरवसाला	वयभगीति	*		
	प्रवता विद्धि व	खा इस पारलॉ ,			,
€,	वहेनीयीय	भू नर	ligetr		
	•	हुन्ही है नो संसार बढ़ार मी बिस में म	उपनी की छो्चनो है		
	**	ो रांचे सो यकार क्षत का कोबन किर	च्छी ।		
L	41-	नीर्थ	विल्य		
		या दिन होंच ननी नर सोति न	र्तिन सल्ब कहा है पीड़ि ॥		
		षण भल हे दुध ऐसी राखी ।	हो देनि विसी बात पाछी ।।		
		शक विवद्धी क्यर्ग सरीर, बोरि	इ बीक्षि ≒ समक्ष चीद ।		
		पारि वला बब्ब से वाह , वा	में वही प्रमुख दे बाहि ।		
		भगता पूर विशास नात की	नम् नेद्याचनः करातः।		^
		पामा बाबा सूनी वाले. योहरा	होक भवन परवारित ॥१॥		
ŧ	पर-	वृ ष्णिति	ि र् ग्य		
		र्थों है क्रोबी ही निश्चान नाग नीहि व	र गिष्याच से बस्र वर्ष गरन ।		
**		वर्गापुर	िली		
		नेव सी जिन साहित की की	नरमण शहरे बीने		
11	44-	নিক্সব	ी ं प ी		
13.	*	स्तमपाद	ъ		
tv.	बोह निरेक्पुर	वनारबीवास			
ŧĸ.	<u>सस्यमु</u> क्ताः	बूधन	•		

१७ विनती १८ पचेन्द्रियवेरि १९ पद्मगतिवेरि २० परमार्थे हि	न न	रूपचन्द विन के देवा, सुर नर सम ठनकुरसी हर्यकीर्ति		गल स० १५ ८५
१६. पञ्चगतिवेरि २• परमार्थ हि	न न	ठनकुरसी		गल स० १५ ८ ५
१६. पञ्चगतिवेरि २• परमार्थ हि	न	-	हिन्दी र० म	गल स० १ ५ ≈५
२• परमार्थ हि		हर्पकीर्ति		
	5 -	6	17 27	ा १८६३
२९ मधीवीन	हालना	रूपचन्द	"	
77 441110		छीहल	33	
२२ मुक्तिपीहर	गीत	×	37	
२३ पद∽अवा	नोहि ग्रौर कछु न सुहाय	रूपचन्द	"	
२४ पदसन्नह		बनारसीदास	39	
Ę0	४१ गुटका स० १४।	पत्र स० १०६-२३७ झ	ा० १०×७ इ० । मापा	सस्कृत । ले॰ काल ×।
मपूर्ण । वि	शेष—स्तोत्र, पूजा एव उस	को विधि दी हुई है।		
Ę	४२ गटकास०१४।	पत्र स॰ ४३। मा० ७४५	१ इ० । भाषा-हिन्दी ।	विषय-पद सग्रह। ले॰
काल ×। पूर्ग				
Ę	१४३ गुटकास०१४।	पत्र स॰ १२ । मा॰ ७×	(५ इ० । भाषा -सस्कृ त (हिन्दी । विषय-सामान्य
पाठ सग्रह । ले०	काल × । पूर्ण ।		,	
पूर्ण ।	०४४ गुटका स०१७।	पत्र स०१६६। म्रा०१	!३×३ ६० ले०काल स	त ० १६१३ ज्येष्ठ बुदो ।
१. छियाली	स ठाएा	य॰ रायमल	सस्कृत	38
fe	कोप—चौबीस तीर्थद्धरो	के नाम, नगर नाम, कुल,	वश, पचकल्यासकों की जि	तेथि भादि विवरसा है।
	ठाएा चर्चा	×	99	2=
३ जीवसम	गस	×		स० १६१३ ज्येष्ठ ५६
1	विशेषव्र० रायमल ने देः	इली में प्रतिलिपि की थी।		" - 1 11 1
४ सुप्पय दोह	ī	×	हिन्दी	5 0
५. परमात्म प्र	काश भाषा	प्र <u>मु</u> दास	77	६२
६ रत्नकरण्डा	शवकाचार	समतभद्र	संस्कृत	£8
		। पत्र स० १५०। म्रा० ७		

×

33

१६ द्वादशानुप्रेक्षा

σ ξ ε]			[सुरक्ष सम्ब
	म्हारा रै बेरानी चीची चीपछि	र्तन वादी थी।	
	थान सरोवर मक्ब कुनती वार्व क	न यह भीड नार्रेडी	11
३ स्टब्स	विद्वारीयाच	शिल्पी	समूर्ध १-६१
•		ी क्लार्स १४	रद बाद सुधी २ ।
fries	।।। वाके १२ पोहे नहीं हैं। पुन ७१ वो	₹ ₹1	_
y वैद्यवनोस्थ्य	नवप ुद	,	सहस्र १७-११॥
4 26.3	हुरकार्स+ ४०। वर वं २६० जाना⊸र्स	सहस्र । दिवय-मोदि ।	ने राज्य छ ३ ३६ गीर
बुदी थ । दुर्सी वे थ	tt v I		
वि वे य—प	ज्यानक गीति का वर्धाव है। सीचन्यती सर	भाम के परमार्थ जक्तुर	. में प्रतिकिशि की वी।
€x g	टकासं० ≿ । यथ वं ४ । भारा∺दै	नी। वे कल वे	१४६१ । बहुर्स (. व
22 X 1			
	विश्व कवियों के म्यूक्तार के बतुठे व्यविश्व 🛭	•	
	[शकार्यक् यर्थक्शासा र)	∀ ६ । मनाहिली	ार कात वे १९४०)
	क्तिनुधे ६। पूर्णा वै वं १६ ६।		
	परराज्य एतः पुण्याग्यञ्जार है । श्रे क्ताक में	•	
	हिकासं का वचर्ष प्रदासा १८०	र्द्धा यापा–दियं	ाक्षेत्रमासः १५३१
रेकास पुरो न । यहर्स			
१ वर्गकरा	धनर (शतकातः)	fip-tr	बर्फ़ा १-१
विवेषकु	ब ६३ पत्र है पर शाधन के ७ पर नहीं है	। स्वराक्षय कुलांत	ता वानवताई एवं वर्ष
विस्त प्रकार है—-	क्षांची बाँटे चैवधी पार्क वक्षारा काय	1	
	पार्ध्व असरा स्थाप मन्त्र पुर सीसः ।	(भर्म)	
	न्यान पुरान नवान विशास वै. वरत १	लामे ॥	
	करो विक्रमो शैक्ष मृतय वय मैस म		
	शीचन समर्थनीय परत विकास की		
	सनर नीन साथि से व्यक्त वैध्योख आहे		
	वांची नार्ट मैचरी नावी सम्बद्धा सान	nt II	

हिन्दी

३. द्वादशानुप्रक्षा

१७–२१

ले काल स० १८३१ वैशाख बुदी ८ ।

विशेष-१२ सवैये १२ कवित खप्पय तथा ग्रन्त में १ दोहा इस प्रकार कुल २५ छद हैं।

म्नन्तिम—

अनुप्रेक्षा द्वादश सुनत, गयो तिमिर अज्ञान।

श्रष्ट करम तसकर दुरे, उग्यो श्रनुभै भान ।। २५ ॥

इति द्वादशानुप्रेक्षा सपूर्ण । मिती वैशाख बुदी द सवत् १८३१ दसकत देव करण का ।

४ कर्मपच्चीसी

भारमल

हिन्दी

२१-२४

विशेष-कुल २२ पद्य हैं।

भ्रन्तिमपद्य--

करम पा तोर पच महावरत धरू जपू चौवीस जिएादा।

प्ररहत ध्यान लैव चहु साह लोयए। वदा ।।

प्रकृति पच्यासी जारिए के करम पचीसी जान ।

सूदर भारेमल

स्यौपुर यान ॥ कर्म भ्रति० ॥ २२ ॥

।। इति कर्म पच्चीसी सपूर्ण ।।

५ पद-(बासुरी दीजिये वर्ज नारि)

सूरदास

23

२६

६ पद-हम तो व्रज को बसिवो ही तज्यो

73

33

२७-२5

व्रज में विस वैरिणि तू वसुरी

७ श्याम वत्तीसी

श्याम

₹७-४०

विशेष-मुल ३५ पदा हैं जिनमें ३४ सबैये तथा १ दोहा है -

मन्तिम---

कृष्ण ध्यान चतु भ्रष्ट में भ्रवनन स्नत प्रनाम ।

कहत स्याम कलमल कह रहत न रञ्जक नाम ।।

प पद-विन माली जो लगावै वाग

मनराम

हिन्दी

Yo

६. दोहा-कवीर भौगुन एक ही गुरा है

कवीर

39

39

लाख करोरि

१० फुटकर कवित्त

X

77

48

११ जम्बूद्वीप सम्बन्धी पंच मेरु का वर्शान

×

मपूर्गा 33

४१~४५

```
454 }
                                                                               ्राटका-संग्रह
                  ट भगडार [ श्रामेर शास्त्र भगडार जयपुर ]
           ६०२६ सुदेकासं १) पार्च ६७ । बाता-हिमी । विदय-बाबहा 👫 कार X । पूर्ता । वै
सं ११ १।
   १ मनोद्धरमञ्जरी
                                    नगैहर मिथ
                                                            क्षित्री
                                                                                     1-16
        धारम्ब--
                        धप यनीक्षर मंदरी यस तम बीवना शक्ततं।
                        बाड़े बोबन र्राष्ट्रको संब सब सार्थ सोर १
                        मृति तुकात नव भीवका चक्क केव हैं और 11
प्रतिवा--
                        महमहर्की प्रति रतयशी यह बुवाद क्याठ (?)
                        निर्देश बनोहर मंबरी, रहिक मुझ मंबरात ॥
                        वृति सुवृति अभिवान तथि वन विवादि एव श्रीच ।
                        शहा विद्ध नित हैम रह, तही हीत दुख मोख ।।
                        चंद शक्ष है रीप के संख दी के समझाता।
                        थपी ननोक्षर नेजरी। जैकर श्रांदनी बाल ।।
                        मापूर राहो बक्पूपे वस्त बहोनी वीरि।
                        क्ये बनोक्षर कबरी, बनुर रह सोरि ।।
             इति  म   चननवीक्युवनशिनधैनिमेनधैनिकश्तोधीनवरश्च बक्रुश्चनविद्यारमधीननवरसम्मेनिनम
मनोत्तर निच रिर्दाचना ननोङ्गणनदी स्वान्ता ।
           क्ष कर बर है। से कर तक ही दिने 👫 है। महिना मेर वर्शन है।
                                                                                  1 15
  र पुढ्यर बोहा
                                         ×
                                                           विषी
          fefe-- u dit & !
                                                                                     12
  र बाधुरेरिक तृक्षाने
                                         ×
          ६ ४०. सुरकासं २ । प्यर्व २ २ । भाषा-हिली। मे शास सं १७६४ । बहुर्सा दे व
18 21
                                                                                  4-1
                                                          हिनी बास १६६
  र नावनवरी
                                      र्भवशाम
                                                                                35-7
 ६ सन्दर्भन वर्षे
                                            श्याची सेमबाध ने प्रतिनिधि की वी ।
```

```
ग्टका-समह
                                                                                                      ४१-४
                                                        X
 .7
             ३ कवित्त
                                                                             "
                                                     उदयभानु
              ४ भोजरासी
                                    श्री गरोमाय नम । दोहरा ।
           प्रारम्भ-
                                     कु जर कर कु जर करन कुजर मानद देव।
                                     सिंघि समपन सत्त सूव सुरनर कीजिय सेव ।। १ ।।
                                      जगत जननि जग उछरन जगत ईस भरधग ।
                                      मीन विचित्र विराजकर हसासन सरवग ।। २ ॥
                                      सूर विरोमिण सूर सुत सूर टरें नहि मान।
                                      जहा तहा खुवन सुम जिये तहा भूपित भोज वसान ॥ ३ ॥
                        मन्तिम-इति श्री भोजजी की रासी उदैभानजी की कियी। लिखत स्वामी लेमदास मिती फाग्रुए।
            ११ सवत् १७६५ । इसमें कुल १४ पद्य हैं जिनमे भोजराज का वैभव व यश वर्गांव किया गया है।
               ४ कविस
                                                        टोहर
                                                                           हिन्दी
                                                                                          कवित्त हैं
                                                                                                       x6-1
                        विशेष—ये महाराज टोडरमल के नाम से प्रसिद्ध ये भीर भक्तवर के मूमिकर विभाग के मन्नी थे।
                        ६०४८ गुटका स० ३ । पत्र स० ११८ । मापा-हिन्दी । ले० काल स० १७२६ । मपूर्ण । वे•
             १५०३।
                १ मायाब्रह्म का विचार
                                                                             हिन्दी गद्य
                                                        X
                                                                                               भपूर्ण
Fish
                        विशेष-प्रारम्भ के कई पत्र फटे हुये हैं गद्य का नमूना इस प्रकार है।
                        "माया काहे तै कहिये व मस्यो सवल है तातै माया कहिये। मकास काहे तें कहिये पिंड ब्रह्मांड का ह
, #
             मानार है तातें भाकास कहीये। सुनी ( शून्य ) काहे तै कहीये-जढ है ताते सुनी कहिये। सक्ती काहे तें कहिये स
             ससार को जीति रही है तातें सकती कहिये।"
                        अन्तिम-एता माया ब्रह्म का विचार परम हस का ग्यान ब्र म जगीस संपूर्ण समाप्ता । श्रीशक्राचा
 13
130 E
             वीरस्थते । मिती भ्रसाढ सुदी १० स० १७२६ का मुकाम ग्रहाटी उर कोस दोइ देईदान चारएा की पोथीस्यै उत
             पोथी सा
                            म ठोल्या सार नेवसी का वेटा
                                                             कर महाराज श्री रुधनायस्यघजी।
5-12
                २ गोरखपदावली
                                                     गोरखनाथ
                                                                            हिन्दी
                                                                                               मपूर्श
فلامي
                         विशेष-करीन ६ पद्य हैं।
```

```
*4= ]
                                                                               ातका सम
                        महारा र वैरानी चोनी चोनशा संचल बारी की।
                        मान करोपर करस कमती धाने नयक वड गंड गारेंबी।।
   ३ बरवर्ष
                                     विश्वारीलाल
                                                            विन्दी
                                                                           भपूर्ण
                                                                                   1-11
                                                       में काम वं १७२६ मान एकी २।
           निवेप---प्रारम्य के १२ वीचे नहीं हैं। कुम ७१ वीचे हैं।
  ४ वैचनकोत्सक
                                                                             पहले १७-११
           ६ ४६. शुरुका सं ४ । वर्ष सं २६ । यामा-संस्कृत है विषय-मीति । वे काल क १ छ। योग
सुरी का पूर्वा विकास प्रका
          विकेश---वासामध्य मेरित का वर्काव है । नी पन्नभी मंगलक के पठनार्व असरर. में प्रतिक्रिय की मी ।
           ६ प्रशुद्धकाओं ≥ायम सं ४ । बायम-विक्तीः में कल्ला सं १०३१ । सप्तां वे वे
tz 21
          विश्वेय-विभिन्न परियों के न्यूकार के कहरे कवित है।
           ६०४१ शुरुकार्स ६। पर र्थ वटाचा धरपदा नागा हिन्दे। र कमार्थ १६०६।
क्षेत्र कार्य कार्यक प्रधान । प्रकार के व्यापन
           विवेश---मृत्यराज्य इसः कुन्यरप्रद्वार है। जेक्यास योगा बावपुरा वाले ने अस्तियिप की वी।
           ६ १६, स्टब्स्यासी का वय वं प्रदेश सा १२०० है इ. । वाला-विन्यो । ने नाम संदर्भ
संबाद पुरी था बहुर्जा (के का देश का
                               संबद (संबद्धाः)
                                                           हिल्ली
                                                                          पत्रर्श
                                                                                   1-1
   १ ऋषिण
           विकेद-पुन ६६ वस है पर शरान के ७ पन नहीं है। इनवर क्रम अन्यतिया वर बस्ता है एवं सर्
विस्त्र हरार है-
                        शानी शारी केलरी पाने बच्चरा पान ।
                        वाली बक्षरा कार रहता हुए कीमा न नाने ।
                        ন্যান বুলো নভাপ জিলাক নী বাংক ভালালী।।
                        करी विक्रमो रीत नवय चन केत न बाजी।
                        मीथ व सम्बद्ध जीन परस विस्ता से कार्ड ।
                        यगर शीम बादि से यह थेमील करे क्याय ।
                        भागी बारे बेक्टी नहीं बहारा बाब 112 11
```

```
७६६
गुटका-सप्रह
                                                                  हिन्दी
                                             लोहट
                                                                                            १७-२१
   ३. द्वादशानुप्रेक्षा
                                                               ले • काल स • १८३१ वैशाख वृदी ८ ।
            विशेष-१२ सबैये १२ कवित छप्पय तथा मन्त में १ दोहा इस प्रकार कुल २५ छद हैं।
                           श्रनुप्रेक्षा द्व।दश सुनत, गयो तिमिर मज्ञान।
प्रन्तिम---
                           श्रष्ट करम तसकर दुरे, उग्यो श्रनुभै भान ॥ २४ ॥
            इति द्वादशानुप्रेक्षा सपूर्ण । मिती वैशास बुदी = सवत् १=३१ दसकत देव करण का ।
                                                                  हिन्दी
    ४ कर्मपच्चीसी
                                            भारमल
                                                                                             28-28
             विशेष--कुल २२ पद्य हैं।
                            करम पा तोर पच महावरत घरू जपू चौवीस जिएादा।
  धन्तिमपद्य---
                            भरहत ध्यान लैव चहु साह लोयए। वदा ।।
                            प्रकृति पच्यासी जारिए के करम पचीसी जान ।
                             सूदर भारेमल
                                                   स्यौपुर थान ॥ कर्मभ्रति० ॥ २२ ॥
                                      ।। इति कर्म पच्चीसी सपूर्ण ।।
      ५ पद-( वासुरी दीजिये वज नारि )
                                              सूरदास
                                                                                                  २६
                                                                   11
      ६ पद-हम तो वज को वसिवो ही तज्यो
                                                                                             २७-२5
                                                                   11
                                                 33
         वज में वसि वैरिशा तू वंसुरी
      ७ श्याम वत्तीसी
                                                 श्याम
                                                                                              ₹७-४०
               विशेष-मुल ३५ पद्य हैं जिनमें ३४ सबैये तथा १ दोहा है --
    भन्तिम-
                              कृष्ण ध्यान चत् घष्ट में श्रवनन सुनत प्रनाम ।
                              कहत स्याम कलमल कहू रहत न रञ्जक नाम ।
       प्र पद-विन माली जो लगावै वाग
                                               मनराम
                                                                    हिन्दी
                                                                                                  80
       ६ दोहा-कवीर भौगुन एक ही गुरा है
                                                कवीर
                                                                      53
                                                                                                   71
                   लाख करोरि
       १० फुटकर कवित्त
                                                  ×
                                                                      33
                                                                                                   48
       ११ जम्बूद्वीप सम्बन्धी पंच मेरु का वर्शन
```

×

मपूर्ण

¥8~8X

17

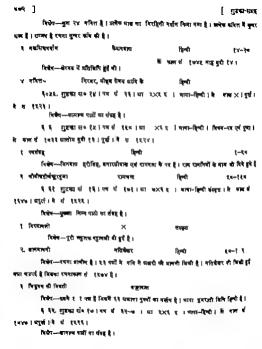
६ ४३ शुरुकास काय	गर्वदश्च मा	exनदाने नलतं	१७३६ यत्तरा पुर्व १ ।
पूर्वा वे सं ११ द ।			
१ इप्लब्स्वारित वेशि	हुणीराव राठीर	धारमानी हिनन	t t
		र नाम	r ar \$550 m
विगेष-च व हिन्दी वब टीवा	सहित है । पहिष	हिन्दी एवं 🕻 फिर नव बीना	की वर्ष है।
१ विष्णु वैवर रखा	×	बंस्ट्रत	*1
 मनव (यह वेंशा रैथे सीने रे बाई) 	×	शिल्यो	44-64
पव-(बैठ नम निष्कु च बुद्धीर)	पगुर्द व		#£
र. » (बुनिनुनि बुरनी थन वानै)	हरीयम		77
🔍 😼 🍕 सुन्दर सांपरी धार्न पानो धर्की) नंदपात		
 н (बालपोपल ध्रैवन गेरै) 	परवालन	27	
» (वन दे सामग्र मामग्र मीरी)	×		*
६ ४४ गुरुवासं ६। पत	स १.1 सा	ध्>रण इ. । मारा-दिनी र	के रम×। पूर्वः
के संदर्ध।			
विदेश-नेयन हुप्लस्वका की	न पूर्णाराज राजी	टल है। अधि दिल्ली की	रा सम्बद्ध है। दीरत्यार
मराध है। दुरशा व 📑 में बाई हुई दौशा वे	निवाहे । बीका क	ल वहीं दिया है।	
६ थ्यः गुरुषा सः १ । ग	र वे १७०−१ १।	मा १८९० च । मारा-रि	ल्दीः ने रल×।
महर्ला १ वे वं १६११ ।			
र गरिस र	उन्हानी विनय		f#-5#\$
विगीत-न्युक्तार रख के मुख्यर व	रिक्त हैं । रिच्छिनी	नः वर्शन है। इसमै एक वरि	त्त झेहन नामी है।
२ - बोस्त्वतिहरूकानी वो सची	तिगरका व	चत्रलामी पर	₹# ₹ ₹#\$
हिसी।—हाँठ थी दश्मती हुप्स	में भी सभी विकास	क इस स्टूर्ण ॥ वस्त् १७६	। वर्षे अपम चैम वाले
पूत्र कुल्म को दियों बसन्त्रों कुषवाकरें भी कु			
थेह साहरी बाधवात । नियमं स्थान बाना ना	म्या १		
१ व िरत	×	िनी	8 8-725
विदेश-मूचरवान मुनाराव विद्वा	ये थना नेयरशब ने	वितासी का बंबह है । ४० व	रिता है।

-

. .

. .

```
गुटका-समह ]
           ६०१६. गुटका सं० ११। पत्र सं० ४६। ग्रा॰ १०×८ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। श्रपूर्ण
वे० स० १५१४।
                                                                              मपूर्ण
                                                                                         8-85
                                                              हिन्दी
                                         केशवदेव
   १ रसिकप्रिया
                                                              ले॰ काल सं॰ १७६१ जेष्ठ सुदी १४
                                                                                            38
                                            X
    २ कवित्त
            ६०४७. गुटका स० १२ । पत्र स० २–२६ । घा० ५×६ इ० । मापा-हिन्दी । ले० काल × । घपूर
            विशेष--निम्न पाठ उल्लेखनीय है।
                                                                                         ६-१%
                                                               हिन्दी
                                         जनमोहन
    १ स्नेहलीला
                 श्रन्तिस-या लीला व्रज वास की गोपी कृष्ण सनेह।
                           जनमोहन जो गाव ही सो पाव नर देह ॥११६॥
                           जो गावै सीखै सुनै भाव भक्ति करि हेत ।
                           रसिकराय पूरण कृपा मन वाखित फल देत ॥१२०॥
                                      ॥ इति स्नेहलीला संपूर्ण ॥
             विशेष-ग्रन्थ में कृष्ण ऊधन एव ऊधन गोपी सवाद है।
              ६०४८ गुटका स० १३ । पत्र स० ७६ । भा० ८×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० ×
   पूर्ण वि स० १५२२।
                                         श्याम मिश्र
                                                                हिन्दी
      १ रागमाला
                                                                                          8-83
                       र० काल स० १६०२ फागुग्। बुदी १०। ले० काल स० १७४६ सावन सुदी १५।
              विशेष--- ग्रत्य के मादि मे कासिमसा का वर्शन है। ग्रंथ का दूसरा नाम कासिम रसिक विलास भी है
                   भनितम-सवत् सौरह सै वरण ऊपर बीतै दोय।
                             फाग्रुन वदी सनो दसी सुनो ग्रुनी जन लोय ।।
                             पोथी रची लहौर स्थाम भागरे नगर के।
                             राजघाट है ठीर पुत्र चतुर्मु ज मिश्र के ।।
               इति रागमाला ग्रन्य स्थाम मिश्र कृत सपूर्या । सवत् १७४६ वर्षे सावरा सुदी १५ सोववार पोयी तेरग
    प्रगर्ने हिंहोंग का में साह गोरधनदास भग्नवाल की पीयी ये लिली लिखत मौजीराम।
        २. दावशमासा (बारहमासा)
                                     महाकविराइसुन्दर
                                                                   हिन्दी
```



```
५ ७७३
```

गुटका-सप्रह ो

६०६३ गुटका स० १८ । पत्र स० ७० । मा० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल स० १८६४ ज्येष्ठ बुदी ऽऽ । पूर्ण । वे० स० १५२७ ।

१ चतुर्दशीकया हिन्दी र० काल स० १७१२ टीकम विशेष—३५७ पद्य हैं।

२ कलियुगकी कथा द्वारकादास 53

विशेप-पचेवर मे प्रतिलिपि हुई थी।

३ फुटकर कवित्त, रागो के नाम, रागमाला के दोहे तथा विनोदीलाल कृत घौवीसी स्तृति है।

४ कपडा माला का दूहा राजस्थानी सुन्दर

विशेष—इसमे ३१ पद्यों में कवि ने नायिका को मलग २ कपडे पहिना कर विरह जागृत किया तथा किर पिय मिलन कराया है। कविता सुन्दर है।

६०६४ गुटका स० १६ । पत्र स० ५७-३०५ । मा० ६३×६३ ६० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-सग्रह । ले० काल स० १६६० द्वि० वैशाख सुदी २ । मपूर्ण । वे० स० १५३० ।

भविष्यदत्तचौपई

व॰ रायभल्ल

हिन्दी धपूर्ण ५७-१०६

२ श्रीपालचरित्र

परिमल्ल

55

१०७-२=३

विशेष — कवि का पूर्ण परिचय प्रशस्ति में है। म्रक्वर के शासन काल में रचना की गई थी।

३ धर्मरास (श्रावकाचाररास)

X

₹= ३- २६ =

६०६४ गुटका स०२०। पत्र स० ७३। मा० ६×६३ इ०। भाषा–सस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १८३६ चैत्र बुदी ३ । पूर्ण । वे० स० १५३१ ।

विशेष—स्तोत्र पूजा एवं पाठो का सग्रह है। वनारसीदास के कवित्त भी हैं। उसका एक उदाहरए। निम्न है ---

कपडा की रौस जाएं। हैवर की हौस जाएं।

न्याय भी नवेरि जागौ राज रौस मागिवौ ॥

राग तौ छत्तीस जाएँ। लिपए। बत्तीस जाएँ।

चूप चतुराई जारा महल में मारिएवी।

वात जारा सवाद जारा खूवी खसवोई जारा ।

सगपग साधि जाएँ। मर्थ को जाएगुनौ।

फहत ब**णारसीदास एक जिन नांव विना** ।

वूढी सव जाग्रिवी ॥

```
43 ]
                                                                            ारक-संगर
           ६०६६ गहकास २१। एव वं १६४। मा ६८४ ह । श्रीपा-हिल्ही संस्का दिवस बंदा।
ने राज्य सं १०६७ । सपूर्णी वे सं १४६२ ।
          विकेश-सामान्य स्तीम पाठ श्रेक्ट है ।
          ६ ६७ शहका सं <sup>७ क</sup>र । यन ७ ४० मा १ ४७ ६ । माना-शिनी संस्टा विका-स्वाः।
में गाम अवस्था के स शहर का
          विकेष-स्टोन एवं वर्धे का बंध्य है।
          ६ देवः <u>गु</u>रुका छ २३ । यन वं १६ ६२ । मा १८८४ इ. । माया<del>-दिन्दी । दे नात</del> वं
र अंग्रस्टी के वे शरीकरी
          विक्रेय--विम्न कार्ते का सबह है:--वकायर घाला, परमान्योपि चाया, बाहरत्व की बोक्टी बहा
निनवाद एवं नमर्परीति के बद, निर्वास्त्रकान्त्र अल्बा, विद्ववन की बीवती तथा विक्टुनारकीपरे ।
          ६ ६६ मुद्रका स्व नेप्रायत छ २ । या ६००% इ. । बादा क्रियो । ते मान १०० ३
सप्तर्म। वे स १६६६।
         विशेष-अंग नवर में प्रतिविधि 💕 वी ।
          दै ४० बुढकास पेटायम सं पेरासा ६०४ इ (सहा-हिन्दी) में मन्त्र । सहती।
के में ११३६।
          विकेप-निम्न पार्टी हैं। संबद्ध है:-विचारहार जाना (शवनकीति ) पुरानवीती बारा, नडासर
भाषा (द्वेगराज)
          ६ वरे सदका एक रहा एवं ने ए वा ६×४३ ए । वास-क्रिकेट है नाम बे
रमध्या बार्ला हो से श्रेष्ट्रक
          विदेश---कामान्य पाठी का वंशह है।
          ६०४२. शुरुषा स २७ । यथ सं ११-१२ । बाया-संस्था । ते कल १ ११ । मार्ख । वे
er tuba t
         विलेश-स्टीव संबद्ध है।
         ६ - ३ शुक्रकास ६८ । वस बंदेश । जाया-वंदरक हिल्ली । के बाव संदर्भ । व्युर्त ।
```

के ल १९६६) विकेश-कारण्य पाठी पा बंबब है। वं १७६६ वयाइ दुर्गा के बु भी जन्दपुर वंपायी नाटड । रनोपाय बारवारी से पुरुष्ठ के क्यावन के जीतीक्षी भी भी) ६०७४. गुटका स० २६। पत्र स० १६। मा० ५४६ इ०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। विषय-पूजापात्र । ते० कात ४। पूर्ण। वे० स० १५४०,

विशेष--नित्य पूजा पाठ सत्रह है ।

६०७४ गुटका स०३०। पत्र त०१५४। मा० ६×६ ६०। भाषा-हिन्दी। ले० वाल × । पूर्ण। वै० त० १४४१।

१ मविष्यदत्त चौवाई

ग्र∘रायमल

हिन्दी

7-05

र० स० १६३३ कार्तिक सुदी १४।

विशेष-फ्रोराम वज ने जयपुर मे स॰ १८१२ ग्रपाड बुदी १० को प्रतिलिपि की घी।

२ वीरजिएन्द की संघावली

पूनो

हिन्दी

30-00

विशेष-मेघकुमार गीत है।

३ मठारह नाते की कया

लोहट

८०-८३

४ रविवार क्या

बुगालचन्द

21

.

विशेष-लिखतं फनेराम ईनरदास वज वासी सा गानेर का ।

५ ज्ञानपद्यांनी

वनारसीदास

53

् ।

६ चौबोसतीर्यंकरों की घदना

ना नेमीचन्द

27

११३

फुटकर सैवयापट्लेस्या वैलि

× हर्पकीति

27

र० काल स० १६=३ ११६

६ जिन स्तुति

जोधराज गोदीका

93

११=

१० प्रीत्यकर चौपई

मू० नेमीचन्द

११६–१३४

र० काल स० १७७५

र० काल स० १७७१ वैशाख सुदी ११ ६०७६ सुटका स० ३१ । पत्र स० ४-२६५ । म्रा० ५२%६ इ०। मापा-सस्ट्रत हिन्दी। ले०

मात ×। मपूर्ण । वे० त० १५४२।

विशेप-पूजा एव स्तोत्र सग्रह है।

६०७७ गुटका स० ३२। पत्र स० ११६। ग्रा० ६×४३ ६०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×

पूर्ण वै० सं० १५४४।

विशेष---नित्य एव भाद्रपद पूजा सग्रह है।

```
-46
                                                                               [ गुरका-संबद
           ६०अद, गुरुका स॰ देहे। पन सं ६२४। या १८४ इ.। भागा-मिली। के बान ये १७१६
4 सामा सरी है। मनुर्का के वं रहर है।
           विकेट <sup>के</sup> शासका प्राप्तें का श्रेवत है ।
           ६०वर. ग्रहकार्स देश पन सं १६० मा १८६ र । भागा-हिल्से । से कार ८ (पूर्त)
# # PEYE |
           विधेय---स्वरुतः नाटक बयबबार की प्रति है ।
           ६०८ ाहका सं० देश। यन सं २४ । या १८८६ । वारा-विश्वी / विवय-सर संख्या वे
वास ≾ । पूर्णा ले हे १३४७ !
           ६०वर गुरुकास ६० । पर वे १७ । या ६०४ इ. । बारा-किसी बास्टा है। नाम XI
वर्सा वे सं १६४६ ।
           विभेद-दिल्युमा पाठ चैवह है।
           ६०८२. ग्रहका सं० ६८ । पन सं ६४ । या ३,८४ ६ । बारा-क्रिको संस्ट्रत | दे अस्त १४४९
वर्षा वे सं १६४= s
           विकेय -- स्वयंतः निम्म पाठी का शंबद्ध है।
                                 ननदाय एवं सुवरतात
  १ परर्वन
                                                             हिन्दी
                                         € देविह
  २. स्ववि
  । पहर्वनाय नी इस्तमाया
                                         लोहर
  ४ दर ( दर्सन दीम्शोबी नेगकुनार
                                         मेबीराव
  इ. चारती
           विकेष---व्यक्तिव-वारती करता बार्सीत नामै मुचनाम बाठ नवव में साथै ११४ र
  s, एर-- (वे दो शारी धाव वक्षिया जाती ) वैदा
  ७ धाररत्न
                                     वनारतीय:
                                                                        में बल र र
            विकेश---वरपुर में कालीकात के मकल में बालारान ने प्रतिसिधि की वी ।
   द. क्द- बीड नीर में व्हिंद रहे ही नाल
                                         EÜler
                                                            हिली
  2. .. वहि देरी पुत्र देणु शानि चू के लेखा टीवर
 १ चनुर्विचित्रसमुद्धि
                                     Scittere.
 ११ दिनदी
                                         वर्षेशस
```

६०८३ गुटका स०३६। पत्र स० २-१५६। म्रा० ५×५ इ०। भाषा-हिदी। ले० काल ×। पूर्ण।

वे० स० १५५० । मुख्यत निम्न पाठो का सग्रह है —

• • • • •	•		
१ भारती सम्रह	द्यानतराय	हिन्दी	(५ ग्रारतिया है)
२ भारती-किह विधि धारती करौ प्रमु	वेरी मानसिंह	, ,,	
३ ग्रारती-इहिविधि मारती करो प्रभु ते	री दीपचन्द	77	
 भ्रारती-करो भारती भातम देवा 	विहारीदास	5)	₹
५ पद सग्रह	द्यानतराय '	25	₹७
६. पद- ससार ग्रथिर भाई	मानसिंह	7)	٧o
७ पूजाष्टक	विनोदीलाल	55	۶ ۷
८ पद~ सग्रह	भूघरदास	"	६७
६ पद-जाग पियारी भव क्या सोवै	कवीर	"	৩৩
१० पद-क्या सोवै उठि जाग रे प्रभाती	मन समयसुदर	7)	હ્ય
११ सिद्धपूजाप्टक	दौलतराम	53	5 0
१२. मारती सिद्धो की	खुशालच न्द	23	দ १
१३ गुरुमप्टक	द्यानतराय	"	५ ३
१४ साघु की मारती	हेमराज	17	5
१५ वाणी भ्रष्टक व जयमाल	द्यानतराय	17	"
१६ पार्श्वनायाप्टक	मुनि सकलकीर्त्त	99	"
ग्रन्तिम—ग्रष्ट विधि पूजा	मर्घ उतारो सकलकोत्तिमुनि	काज मुदा ।।	
१७ नेमिनाथापृक	भूघरदास	हिन्दी	११७
१८ पूजासंग्रह	लालचन्द	"	१ ३५
१६ पद-उठ तेरो मुख देखू नामिजी	के नदा टोडर	"	የ¥ሂ
२० पद-देख्रो माई श्राज रियम घरि	मार्वे साहकीरत	"	n
२१ पद—सग्रह	शोभाचन्द शुभचन्द ग्रानद	33	१४६
२२ न्हवरण मगल	वसी	72	१४७
२३ क्षेत्रपाल भैरवगीत	शोभाचन्द	73	388

			[गुरस्येग				
३४ म्हरू इत्तर	feetig	(Ct)	ţţ				
#* 18-m	वेद्रशन्तर वर्गमु वेद, व्रिश्त ण	र -१ रिग्न वर्गन वेर ॥					
म्हें बारश बररहरे	र स्थिए	-	tti				
६ दर गुर		कार्य १ । मन्तर-दिशी	के स्टब्स्टिइस्टर				
रा ^क ारे में स्टारा							
feit-ere	य पार्ट का बहर् है।						
क्ष्म हुत	प्रमान्ध्री । चर वे नरक (का	व रहेर । बचान	न्हर्गान्तर है क्य				
d teertemite	tuu						
दुश गरे हरू	ने रहे हैं। तथा नवरपार बन्त की	ŧ i					
fest net	। संक्ष्या कर मंद्रशास	274 2 2 R 47	e tote degit t				
क्यूनारे हे १६६३।							
(ett-en	१ सार विध्य है 🛶						
أيمدا أيكاليامة أ	×	FTT	•				
। सम्बद्धाः वीर्ताः	श्रीचण स ^{ट्} र	f ed	1				
,	. 444 1110 am 12 11	in and total	दिन हुए हैं।				
fetr~ser	में भो लारी चपुरा बण की क्र	tů s					
70	परन्य नेएक निर्देश कर्नात सम्बद्ध का	n बड़े शरर [्] न शहरूप					
art!	विरामी बाहि दिस्ता वे दे पूर्व व	ا فينه لغرة أ					
45	बता श्रीनव कर बत्ती विश्वतिको	बन्दि वेटी वटी ग्राहर का					
	× × ×	× ×					
	इ.स.चीर्य वर्णन द्वार हुमा संदर्भ :						
	रि रामी वाकाश करने करियोग में स्थे मुख्यमा						
	रिक्क क्षेत्रीय हिंदिन क्ष	र दिवरीश जन्म भी वे	PER TIME!				
ting ation							
6 1 2x 4, m,s	arte	tr e					
4 Actor 3 ali	ित्तरपुत्र	•					

गुटका-रुमह

हिन्दी नेमीदवर राजुल मी सहूरि (बारहमामा) सेतरिह साह समयगुदर 77 ६ ज्ञानपंचमीवृहद् स्रावन रगविषय ७ मादीस्वरगीत 77 जिनरगमूरि द. बुरालपुरसावन 21 समयमुदर 33 13 जयसागर १० चौबोसीस्तयन 17 यनवनीति ११ जिनस्तवन " जाम स० १६६७ १२ भोगीदाम को जन्म गुण्डली X 11 ६८८७. शुटका स० ४३ । पत्र स० २१ । मार ५६×१ ६० । भाषा-सस्तृत । तेर पान संर १७३० मपूर्ण । वै० स० १४४४ । विशेष-सत्यार्थेयुत्र तथा प्रधावतीरतीत्र है । मनारना में प्रतिनिषि हुई यो । ६०मम गुटका स० ४४। वत्र सं० ४-७६। मा० ७४४ई ६०। नापा-हिदी। से० काल४। बहुर्गा ये० स० १५५५। विशेष-गुटवे वे मुख्य पाठ निम्न हैं। १ दवेताम्बर मत के ६४ बील हिन्दी र• मान स॰ १८११ ने० नान जगरूप ग॰ १८६६ मागोज सुदी ३। २ व्रतविधानरासो दौलतराम पाटनी हिन्दी र• मान सं० १७६७ मागीन ग्दी १० ६०=६ गुटका म० ४४। पत्र स० ४-१०३। मा० ६३×४३ ६०। भाषा-हिन्दी। ते० कात स० रैन६६। मपूर्ण। वे० स० १५५६। विदोप-गुटवे के मुख्य पाठ निम्न हैं। मुदामा की वारहपडी हिन्दी X 32-38 विशेष-पुत २८ पद्य हैं। २. जामकुण्डली महाराजा स्याई जगतसिंहजी भी 🗶 सस्तृत १०३ विरोप---जन्म स०१८४२ चैत बुदो ११ रवी ७।३० घनेष्टा ५७।२४ सिष योग जाम नाम सदानुख । ६०६० गुटका स०४३। पत्र स०३०। मा० ६३×५३ इ०। भाषा-मस्कृत हिन्दी। ने० कान 🗙 पूर्गा । वे० स० १५५७ ।

वियोप-हिन्दी पद सग्रह है।

```
4= 1
                                                                          ्रातका सम
          ६०६१ सहदासी ४० | यम व ३६ | या ६×६० व । मता संस्कृतिको । मे नत्र ×ा
प्रश्री वे व १६६ ।
          विशेष--शामान्य पूजा पाठ शंबह है।
          ६६२ गुटका सं ४८। पत्र क शायाः ६४६३ इ । माधा-साक्ष्यः । विशव-साक्ष्यः । ॥
नल प्रशासक्ति। के से ३५३३ ।
          विपेय--वनवीतन्त्रकारावार्यं क्य बायस्यत प्रक्रिया है ।
          ६ ६६ गुरुषा ७ ४६। यम में ६६। या ६×६६ । मापा-क्रियो । से नार में १५६४
सारत क्यो रशे प्रति वे संस्थर ।
          निकेत-देनात्रहा कुछ विभवी सम्बद्ध बना सीहर कुछ धठाएड बाते का चौजानिका है।
          ६०६५ सुरुक्तार्सं ३ । पत्र सं ७४ । सा ६८४ ६ । बाया–दिल्सी इस्टिन । हे रान ४ ।
पर्णा वे वं १३६४।
          विरोध-मामान्य पार्टी का बंबब है।
          ६ ध्रम्प्रहास प्रशासन्तर्भ १७ श्वा १३०४४ (बारा-दिन्दे) ॥ तल XI है
 पल × । दर्ला और संश्वदश्वा
          विदेव--विम्न स्ट्रम पाठ हैं।
   ) व्यक्ति
                                                          βr∞etr
                                                                           t 1-1 0
                                   श्रमेशताल
          विदेश-- १ वशित हैं।
                                                                           111-114
   २. शामनाचा के बीडे
                                     वैतयी

    बाखनामाः

                                    वसयक
                                                                27 872 # 18m 278
          ६ इट गृहका से 2२ | यत वे १७० : बा ६२×६ इ । बाता-शिली ! ते पार्त X
```

ugef | 4 4 1254 1 विशेष-बावाय पार्टी का बंबह है।

६८६. गटका सं देशे पत्र वं वे ४ । या ६, ४१ इ । जला-सरक क्रियो के बार व १७ इ माह दुवी ४ । पूर्णी । वे वे ११६७ ।

वि**देव—पू**टके के दूका पाठ निम्ब प्रशाद है।

ট্ৰবৰণ<u>ী</u>বি १ प्रशिक्षशास्त्री

flett

124

fr-ft दंगीयम 145-50 चेहिन्छं चिन्तिका र० यात म० १६६५ वरेष्ठ गुरी २। मारह में पाताफ हाँ, यह प्रया दुलिया भी fu-7--पालिहादार नगर नपमान, प्रयोग नित्र पालिमान ।। ŧ मुप्तित मीर्रा कियान, विद्यान्तित मायप समारा । सा जिल है तेयात गुणात, मही जिलापर की मान गर्दना ध्रक्षर पर मुक्त र है जु हीन, पड़ी बनाद मना बरबीत ॥ सभी मारदा विकास प्रका मुख्य दवने पर्यो गुभार ॥=०॥ इति शतिर्णाधिक प्रयोगमास ॥ f: "if गर्ना र नि १. भीतरासमामा \$32 र राजवना गाम व धनारणी 40111 संस्कृत 134-1=5 1 र विल्लो भोगड की fr-t TIT = 63-- 88 ६ पाच पानरम सन नाहर 22 -77 ६०६= सुद्रका संव ४४। यत ४० २२-३०। छा- ६१४८ इव। भाषा-ति छ। स. व व 🗡 🗗 मपूर्ण । ये० य० १५६८ । विनीय--- हिन्दी या मा मग्रह है। Ĭ ६०६६. गुटवा स० ४४। पत्र ग० १०४। मा० ६८४३ ६०। भाषा-गरहा हित्ती। ग० नाव गंट १८८४ | मद्रार्ग । गैठ सँ • १४६६ । मिरीय-हुटम में मुख्य पाठ निम्न प्रनार है-पंजामुम र सभावधागु मंखा भ्राम . to-75 विशेष-इवागा में नीभे हिंदी मर्थ भी है। मरवाय के मात में वृष्ठ १२ पर-3 क्षी श्री महाराजि उपन पाँचा विरोगिते मध्य मुम निरमित प्रविभीष्माव ॥ २ पुटपा दोह गारिक हिं दी ६१०० गुटका स० ४६। पत्र सं० १४। घा॰ ०१८४२ द०। भागा-हि से। स० गात ४। पूर्ण। प० म०,१५७०।

विशेष-गोर्द उल्लेमनीय पाठ गई। है।

e=₹ }			्राह्मा सम
६१०रे गुरकास १०।०	त्र संच्याचा ६	XX ¹ व । सामा⊷क्षेत्र	रताले साल ले ३०००
वेस नुरी १ । पूर्ण । वे वं ११७१ ।			
रिकेयनिवस बाड है			
रे सम्पनतशरे	वृत्र	9-6	
रे. क्रस्ताविक क्रीक्रम	रीय मेरकान्य	re-er	•१२ होई्डा
वै विकि चपनबोर का		20	
•	विक्तान	*	
६१०६ शुरकार्धश्रम।	पर व पर । या ।	८८६३ र । नाग⊸ई	लाव हिन्दै। में बल 🗡 🗆
ह्यों।रेडं ११७१।			
विग्रेय-सामान्य वाठों का श्रेष	n(E)		
६१ ६ गुरका सं ४६। व	TP (5 7 2 W F	७X४हे इ. । भारा-ॉ	हेली बेस्ट्रय । से चला X
चतुर्खाते सं १६ १।			
विचेषकामान्य राठी पर ६४	et:		
दि ४ गुरुवास ५ । व	पर्वर । स्टर∙ थ	X12 ६ । धरा≪ि	क्त क्रिकी । में बास स्रो
पदुर्त (दे च+ ११७४)			
विदेशयुका पाठ विस्त तरा	c t i		
रै नवुश्रासार्वेत्य	×	र्वसरव	
% बारान्या शरीवीवसार	×	ijet	११ लई
दी ४. ग्रह्मा सं देश । व	पर्वाप्तासा क	-	•
र रेथ भारता प्रते ६ । पूर्व ३ वर्ष १ रक्ष			
शिक्षेत्रमुका पाड विल्ल प्रकार			
१ वास्त्रका	ж	वेला	11
र. विवती-राश्ये विवेश्यर वंदिये रे	पुरावविजय		Ye
वादिव पुत्रति क्षत्र वातार रे		-	
१ पर-किमे मारावशा केरी दिने जलक	नरकराय	-	
व्यास्य है		-	

v. पर-देवी देशनी कित बाद ही वेग कवार

```
ি ডদই
गुटका-समह ]
                                                                     हि दी
                                                                                           ४१
                                            खुद्यालचद
 प् पद-नेमकवार री याटडी हो रागी
                   राजुल जोवे खढी हो खडी
                                                                                           83
 ६, पद-पल नही लगदी माय मैं पल नींह लगदी
                                             वखतराम
                                                                      11
                 पीया मो मन भावै नेम पिया
  ७ पद-जिनजी को दरसए। नित करा हो
                                              रूपबन्द
                                                                                            17
                                                                       11
                          सुमति सहेत्यो
                                                                                           88

    पद-तुम नेम का भन्न कर जिससे तेरा भला हो

                                                वसनराम
                                                                       17
                                                 मजैराज
                                                                                           ¥۶
     विनती
                                                                       13
                                                                    हिन्दी
                                                                                 मपूर्श
                                                                                           38
                                                   X
 १० हमीररासो
                                                                                           70
 ११ पद-भोग दुखदाई तत्रभवि
                                                जगतराम
                                                                      23
                                                                    हिन्दी
                                                                                            ¥ Ł
  १२. पद
                                               मवलराम
                                       विनोदीलाल
                                                                                           ४२
  १३ ,, (मञ्जल प्रभाती)
                                                                       33
  १४ रेखाचित्र
                      मादिनाम, चन्द्रप्रभ, बद्धीमान एव पार्श्वनाय
                                                                                       X6-75
                                           मजैराज
                                                                                       48-58
  १५ वसतपूजा
                                                                       11
             विशेष-- प्रन्तिम पद्य निम्न प्रकार हैं -
                     भावेरि सहर सुहावणू रित बसत कू पाय।
                      प्रजैराज करि जोरि के गावे ही यन वस काय।।
              ६१०६ शुटका स० ६२ । पत्र स० १२० । मा० ६×५३ ६० । मापा-हिन्दी । लेव काल स० १९३८
   पूर्ण । वे० स० १५७६ ।
             विदोप-सामान्य पाठो का सग्रह है।
              ६१०७ गुटका स० ६३। पत्र स० १७। मा० ६X ५ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल X । मपूर्ण।
   पै० स० १५५१।
              विशेष-देवाबहा कृत पद एव मूधरदास कृत गुरुम्रो की स्तुति है।
```

६१८८ गुटका स० ६४। पत्र स० ४०। मा० दर्ग्×४६ ६०। भाषा-हिन्दी। ले० काल १८६७।

मपूर्ग । वे० स० १५ ८० ।

```
ACA J
                                                                          ्राटक मंग
           ६१ ह. गुरुष्म सं०६४। पन वं १७६) सा ६२×४. इ. । मारा-दिली। में नाम ×ानुर्व
 tunt:
          विश्वेष---पना पात स्तोध बंधार है ।
          १११ - ग्रहका सं: विकास अपने का विकास के का अपने के का अपने के किया है है है
मपूर्णाणे ने १६०२ :
          विकेत -- पंचमेद पूरा, घटाञ्चिका पूरा तथा छोतक्कारण पूर्व दशकारण पूरान् 🖁 ।
          देशेरे शुरुकास देशांचवर्षे १४१। या ६ X७४ । वापा-दश्रत क्रिकी है तर्न
यं रकप्रायुक्ती के संदर्भका
          विचेप-सामान्य पूजा बाठ बंश्व है।
          ६११२ शुरुकास ६मापन वं ११६। था ६४६६ । बाया-द्विती । से नल ४ । हुई ।
t et treut
          रिकेर--प्रजा पाठों का संबद्ध है।
          ६११६ सुटकास ६६। पन सं १६१ मा ४३×४ र । बारा-अस्तित । ने सल ×। पहर्ण
वै तं १६ वा
          विशेष-- स्तोगी का बंधक है।
         ६११४ गुटकार्स ७ । पन स १७-१ । सां ७{×१६ । जला-संस्ता के नल ×1
प्रची ने सं ११ ६।
         विकेप--नितन पूजा पाठीं का चंत्रह है ।
         देशक ग्रहणा संक करे । पत्र सं १ । या १८८६ र । प्राया-बंस्कृत क्रियो । दे राज XI
प्रयोगी में १४६ ।
         विकेद-व्यामीय असा वर्षा है।
         ६११६ <u>ग</u>ुबकाचे ७२ । यन वं १ । था प्र‡×६९ इ । जाना-विशो कस्टा के राज ×
TIPES & PIUS
         विकेष-पुता पाठ संबद्ध एव भीतान स्तुधि साहि है।
         ६११७, शुक्का सं ७३। पत्र वं ६-१ । या ६३/४६ ६ । वाला-वीरहत हिन्दी । ने तर्ल
  । पहुर्त भी वे १६६६ ।
```

सुरका समद

६९१= गुटवा सञ्चर । पत्र मर ६। मार ६१/२४३ इत । भाषा-हिन्दी । हेर बात 🗡 । प्रपृष्णी । वेरु मर्क १४६६ ।

शिष-महोहर एव पूना वशि में पद है।

६९१६. गुटका स० ७४ । पप स० १० । घा० ६४५) १० नापा-स्थि । घ० पात ४ । घपूर्ण । पे० स॰ १४६८ ।

विषेष-पानानेजनी भाषा एवं पार्टम परीपा पर्या है।

६६२० सुद्रम् स०७६। पन न०६८। मा०६०४६०। एस-मन्द्रतः। विषय निद्वातः। त०पातः । मर्गा। पे० न० १४६६।

विवेद-जनस्यानि प्रत तनसम्बद्ध है।

६८२१ शुद्धरा स० ७३। पत्र ग० ६-८२। घा० ६४८३ ६०। भाषा-स्थि। ने० गाउ २८। सङ्ग्री। पे• ग० १६००।

विमेष-सम्बन् दृष्टि की भावना का बार्यन है।

६६२२ गुटमा सब्धः। पर पत् ७-२१। धाव ६×१३ इत्। कास-सन्त्रतः। सव सार 🗶। ष्युर्गो । वे• पव १६०१।

विकार-उमान्यामि का तत्यार्थ गुत्र है।

६१२३ गुटका स० ३६ । पत्र ६० २० । बा॰ ७८४ ६० । चापा—गरात हिदी । स. १४४) बपूर्ण । ६० स॰ १६०२ । चामाच पूजा पाठ हैं।

६१२४ गुटका स० प० । पत्र स० ३४ । घा० ४/३३ ६० । गणा-हिदी । ते० तात्र 🗙 । ग्रुर्ग्ग । य० स० १६०४ ।

विभीय-विवादता, प्रपरदान, जगराम एव बुपजा के पदी मा सबह है।

६१२४ गुटया स० ८१। पत्र गं० २-२०। मा० ४४३ उ०। भाषा-हिद्यो । निषय-विक्ती गर् । से० पात्र 🗸 । प्रार्ग । वे० ग० १६०६ ।

६१२६, सुटका स० ६२। पत्र मह २६ । शा० ४४३ ६०। भाषा-सरकत । विषय-पूजा स्तोष । के० मान 🗴 । सपूर्ण । पे० स० १६०७ ।

६१२७ गुटना स० ६३। पत्र स० २-२०। गा० ६३×११ ६०। नाया-सस्त हिन्दी । से० गान /

विशेष-सहत्रनाम स्वात्र एव पदों गा सब्रह है।

wes 1 ् गरचा-स्वर

६१-८८ गुरुक्त संस्थापन र्व १४ । बा बहै×६ ६ । बापा हिन्दी है नल X142र्त। 4 w 21.22 1

विधा-देवलाग्र क्य पर्वे का संबद्ध है।

६१२६, गुरुष्का संव यह । यम सं ४ । आ ६,×४३ छ । माया-हिम्मी । ने सम्ब (७२१ । पुर्वा में सं १६४६।

विकेश---व्यवस्था एवं वक्तराम के वह तका मेतीराम ब्रख कम्याखयन्वररहोत्तकाता है।

६१३ शुक्रकास सकारण ७ -१२०।चा ६८१३ र शास्त्र क्रियो है नाम १०१४ मदर्शाने व १९१७ ।

विश्वेष--पुत्रकों का शंक है ।

६१६१ गुडकासं ⊏ः।पत्रसः रेगासः र्¦×र्र्यः । सत्ता⊸संस्थाने कार×।कर्ष A of Page 1

विकेद--- विरय मैमितिक प्रवा गाठों का संबद्ध है

६१३२. गुरुकासं स्थापनसं १६। या करश्यः । नत्य-दिनी। ने कल्प×ा वृद्धी t w texti

विश्वेष---अववानदात कृत याचार्व व्यक्तिकावर की दवा है।

६१६६ गुटकास ६ । पर्ना १६। या ६३/८७ ६ । भाषा-दिश्यो । के कल १६१०।

क्ष्यों के संदर्भ ।

निवेप---रनक्यणम्य इस दिख केपी को प्रवासी का शंबह है ।

६१६४ शुरुकास ६१ । वस्त ७२ । या ६२/८६ व । जाग-दिन्ती। के काम से १८१४

वर्ता है से १६६१।

विवेप-आएम के १६ वर्षों पर १ वे १ तक पहले हैं जिनके आर बीति तका महार स्व है ४० रोहे हैं। फिरमट के कविता समा समितकर देव भी गया मादि है।

६१३४ शुद्रकास ६२ । वर्ष र । या १०८४ इ. । वादा-दिल्यी । ने काव × । स्पूर्ण ।

. 4 1111 1 विकेप--रीपुक शवसकूपा (मैंव र्वक) क्या न्वोदिय सम्बन्धी सम्बन्ध है ।

६१३६ शरकार्स ६३।वर वं ६०।या १८४४ इ. बाला-संस्टा में बात X 1 इति।

```
ত=ত
टका-समह
        विशेष-सधीजी श्रीदेवजी के पठनार्थ लिखा गया घा। स्तोत्रो का सग्रह है ।
        ६१३० गुटका स० ६४। पत्र स० ५-८१। मा० ६४५ इ०। भाषा गुजराती। ले० काल 🗙।
पूर्ण। वे० स० १६६४।
        विशेष-वल्लभकृत रुवमिंग विवाह वर्णन है।
         ६१३८ गुटका स० ६५ । पत्र स० ४२ । घा० ४×३ इ० । भाषा-सत्कृत हिन्दी । ले० काल × ।
र्गा। वै० स० १६६७।
         विशेष---तत्त्वार्धसूत्र एव पद ( चारु रथ की वजत वधाई जी सब जनमन ग्रानन्द दाई ) है । चारो
यो का मेला स० १६१७ फाग्रुए। बुदी १२ को जयपुर हुमा था।
         ६१३६ गुटका स० ६६। पत्र स० ७६। मा० =XX इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल XI
र्गा । वे० स० १६६८ ।
         विशेष--पूजा पाठ सग्रह है।
         ६१४० गुटका स० ६७। पत्र स० ६०। मा० ६३×४६ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।
र्र्ण । वे० स० १६६६ ।
         विशेय-पूजा एव स्तोत्र सग्रह है।
         ६१४१ गुटका स० ६८। पत्र स० ५८। मा० ७×७ इ०। भाषा-हिन्दी | ले० काल ×। मपूर्गा।
ि स० १६७०।
         विशेष--सुभाषित दोहे तथा सबैये, लक्षण तथा नीतिग्र थ एव शनिश्चरदेव की कथा है।
         ६१४२ गुटका स०६६ । पत्र स०२–१२ । मा०६४५ इ०। भागा–मस्कृत हिन्दी । ले० कान ४।
मपूर्ण । वे० स० १६७१ ।
         विशेप---मन्त्र यन्त्रविधि, मायुर्वेदिक नुसक्षे, खण्डेलवालो के ५४ गोत्र, तथा दि॰ जैनो की ७२ जातिया
जिसमें से ३२ के नाम दिये हैं तथा चार्णक्य नीति मादि है । ग्रुमानीराम की पुस्तक से चाकसू मे सं० १७२७ मे लिखा
गया ।
          ६१४३ गुटका स०१००। पत्र स०५४। म्ना० ६×४३ इ०। भाषा−हिन्दी । ले० काल ×।
मपूर्ण । वै॰ स॰ १६७२।
          विदोप—बनारसीदास कृत समयसार नाटक है। १४ मे मागे पत्र खाली हैं।
          ६१४४ गुटका स० १०१। पत्र स॰ ६-२४। द्या० ६×४३ ६०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले०
काल स० १८४२ | मपूर्ण | वे० स० १६७३ |
          विशेप-स्तोत्र संस्कृत एव हिन्दी पाठ हैं।
```

```
( गुरु<del>ध-ध्र</del>ा
           देरेशक शतकास्य देवर । पत्र सं काशमा ७९७ क । भाषा-दिनौ संस्कृत | व नाम ।
महार्था क्षेत्र का १९७४ ।
          नि<del>धेन</del>-भारत्वयी (सूरत) शरक बौहा (सूत्रर) तत्वार्वसूत्र (जगस्वानि ) तवा कुटकर वर्षेश है।
           देशक अवकास १ के।यह व १६।या १८४ व । अला-सस्यवाने नास X (दुर्स)
B & ttwx |
          विकेय--विधारहार, निर्वोक्तपाध्य क्षणा मक्तामरस्तीय एवं परीचड वर्जन है।
           ६१४७ ग्राटकास १ ४ । वस से ६ । बा ६८६ द । बाब हिन्छे। के नान X । सनूती
# # ttat 1
          विभेद-वक्कपरमेन्द्रीहुक् बार्व्ह्वालगा, बावेंस परिवह, स्रोबहुकारस बावना साहि है।
          <sup>१६</sup>१४ म. शुरुषास् ०१ १ । यस सं ११ ४० । या ६८९ ४ । जलस—किसी <sup>1</sup>के नरि×ी
सपूर्ण (के संवे १६७७)
          ६१४८ <u>सुरु</u>का सं १ ६। पत्र सं १६। ब्रा ७×६ ६ । ब्रह्म-प्रेस्ट । हे रास×ा ह्याँ।
के थे १६७४ ।
          विदेय-कार्य मानवा अवस्थल स्वा स्वतंत्रकारा पूजा है।
           ६१४ शहकास १०७।पत्रर्थ ।सा ७४६।बागा-शिल्पी।वे शक्त×ा इर्थ।वे
d ttut i
          निवेष---धारेगाविकारमञ्ज्ञास्य निर्वादाकान्य ( से तम् ) कुरुकर पर एवं निवित्तल के दश्र नव हैं।
           ईर्ध्र गुटकासं १०००।कार्य २४ था कर्राह (मला-क्लिये) में दातं⊼ी
पत्रवी। वे ४ १६ ।
          विकेद--देवाच्या क्रय कवियुन की शीनती है।
           देश्वर सुक्षका हो १ स । यस से ६६ । जा १०८६ र भागा-हिन्दी । विवत-स्वर्ध है
रक्ष प्राचनमा के व देव देव
           निकेद--- हं हैं प्र शवा ३४ से १९ वर्ष नहीं हैं। जिला पात हैं --
                                                               विकार ।
  १ शरणी के बीड़ा
           विरोत-- कर के शहर अप के शहर वीचे तक है बावे नहीं है।
                        हरनी रचना शी नहें, देशो रक्ष व बोर।
                        विक्रमा द पीवत वहीं किर कीई किहि धीर ३। १६६ ।।
```

हाजी हरजी की गरी रसना बारबार।

पिन तिज मन हायो । स्वी अमन नाहि तिहि बार ॥ १६८॥

7	पुरुग-स्त्री मताद	रामगद	हिदी	१२ पद्य ह।
₹	फुटकर कवित्त (श्रृ गार रस)	×	1)	४ गवित्त है।
Y	दिल्नी राग्य दा व्योरा	*	n	

विधान-पीहान राज्य तक वर्धन दिया है।

प्राधानीको से मत्र व सत्र हैं।

६१४२ गुटका स०११०। पत्र २०६४। मा० ८४४ २०। भाषा-हिदी सस्रुत । विषय-सग्रह । से०काल 🗙 । पूर्ण । वे०स०१६५२।

विनेष -निर्माणका, भातामरस्तोष, तत्वार्थमूब, एकीभावस्तोष मादि पाठ हैं।

६,४४ गटका स०१/१। पर स०३८। घा०६४८। नापा हिन्दी । विषय-क्ष्यह । वे० गाल 🗙 । पूर्ण । वे० स०१६८३।

निर्वेष—निर्वाग्रहाण्ड-नेवग पद तम्रह-नूमस्दान, जामा, मनोहर, तेमग, पद-महिद्रशीर्ति (ऐमा देव जिनद है तिमो निर्वानो) तथा चौरासी गोधोत्यत्ति वर्णन माहि पाठ है।

६१४४ गुटका स० ११२। पत्र स० ६१। मा॰ ४४६ इ०। भाषा-मस्तत । विगय पाले० पाल ४। पूर्ण । वे० म० १६८४।

विशेष-जैनेतर स्तोत्रो या सग्रह है। ग्रुटमा पैमसिंह माटी या लिया हुमा है।

६१४६ गुटका स्न०११३ । पत्र स०१३६ । मा०६४४ ६० । भाषा-हिन्दी । विषय-सग्रह् । ल० कात × । १८८३ । पूर्ण । पे० स०१६८४ ।

विशेष---२० या १०००० मा, १४ मा २० या यत्र, दोहे, पाला मेनली, नक्तामरम्नोत्र, पद सग्रह तया राजस्थानी में १२ गार में दोहे हैं।

६१४७ सुटका म० ११४। पत्र म० १२३। मा० ७४६ ६०। भाषा-सम्ततः। निषय-म्रस्त परीक्षाः। ने० पान ४।१८०४ मणाः पुरी ६। पूर्णः। ने० स० १६८६।

विशेष—पुम्तक ठाउँर हमीर्रामह ितयाङो वालो वी है खुशालचन्द ने पाउटा मे प्रतिलिति की पी। ग्रुटमा सजिल्द है।

```
44. ]
                                                                             ् गुरक्षश्रंथ
          ६१४मः संदर्भासं ११४ । पत्र च ६२ । मा ६ ४६ इ । बाया-दिली । दे रख×।
मारा है वे ११६।
          विजेप-मायुर्वेदिक वसकी हैं।
          ६१४६. <u>श</u>टकार्स ११६ । पत्र तं ७० सा 🔀 इ. | बादा शिली । ते काब 🗙 । दूरी
वे सं १ २।
          विकेत-प्रदेश स्वित्त है। क्ष्मेणवालों के ४४ पोण विक्रित दृतियों के एवं तथा बोबाल समस्त्रणी
के पुत्र मानतीतान की वें १९१६ की काम पत्री तथा साबुर्वेदिक पुत्रके हैं।
```

देरेचे <u>श</u>ुरकास ११७। पण से ६१। धाना-विश्वी तो कला × त्युर्ख (वे से १०३) विवेच--- फिल्म निवम बुवा श्रीश है।

६१६१ <u>श</u>रकासं ११६। पव वं ७६। था 🔀 इ.। भारा-क्सरत क्रियो वे नास 🗡 सपूर्वा के सा १७ %।

विकेश--- प्रवा पाठ एवं स्टोभ लंदन है।

६१६२ शुरुका स ११६। यह है २४ । ब्रा १०४ इ । बारा-क्रिकी है क्या व १वर्ग पपूर्वा® तं tuttı

विकेप--- जानगर योगा कियो पर शोश दया गाविकेयोपस्थान कियो पर में हैं योगें ही प्यूर्त हैं :

६१६३, शुरुकार्स ६२ । पर स. ६२-१३ । सा ५०८४ इ. | बाला दिन्सी । हे नाम XI बहुर्ल (वे से १७१९)

विश्वेष-पुरुषे के पूर्व यात निम्न प्रशार है --

१ वयपस्पना रेवकर विली बपुर्ल 18 YE २. यात्रशायाना Y YY

विक्रीर-पूजा का का क्षेत्राच्यर साम्प्रतानुसार निम्न प्रसार है-अस अन्यत पूरा कुर होत, बाबर,

मेरेत कर इसरी अध्येष्ठ सी बलस धतन पूजा है।

बादुरील p r of thee x -lx ३ बत्तरमेरी पुत्रा Y Tréss × 30

६१६४ शहकारी १०१। पर वं ६ १९१। था ६८६ इ. जल्ला-क्रियी वंशका में पार

गुटका-संमह]

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है —

१३ हिन्दी यहा जिनदास १ गुरुजयमाला मुनि सफलकोति ३८ २ नन्दीश्वरपूजा संस्कृत ५२ ३ सरस्वतीस्तुति भाशाधर 33 ६८ ४ देवशास्त्रगुरपूजा 22 33 १०७-११२ ५ गराधरवलय पूजा 33 हिंदी ११४ प० चिमना ६ भारती पचपरमेशी

भ्रन्त में लेखक प्रशस्ति दी है। भट्टारको का विवरण है। सरस्वती गच्छ वलात्कार गण मूल सघ के विशाल कीर्ति देव के पट्ट मे भट्टारक शांतिकीर्ति ने नागपुर (नागीर) नगर मे पार्वनाय चैत्यालय मे प्रतिलिपि की थी।

६१६४ गुटका स० १२२ । पत्र स० २८-१२६ । भा• ५३×५ इ० । भाषा—सक्रमूत हिन्दी ।

ते॰ काल 🗴 । मनूर्ण । वे॰ स॰ १७१४ ।

विशेष-पूजा स्तोत्र सग्रह है।

६१६६ गुटका स० १२३। पम स० ६-४६। घा० ६×४ ६०। भाषा-हिन्दी। ते० काल ×। मपूर्ण। वे० स० १७१४।

विशेष-विभिन्न कवियों ने हिन्दी पदो का सम्रह है।

६१६७। गुटका स० १२४। पत्र स० २४-७०। झा० ४४५३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० नाल ४। भपूर्ण। वे० स० १७१६।

विशेष--विनती सग्रह है।

६१६८ गुटका स० १२४। पत्र स० २-४४। भाग-संस्कृत। ले॰ काल ×। प्रपूर्ण। वे॰ स॰ १७१७।

विशेष—स्तोत्र सग्रह है।

६१६६ गुटका स० १२६ । पत्र स० ३६–१६२ । मा० ६ \times ४ ६८ । भाषा-हिन्दी । ले० काल \times । मपूर्ण । वे० स० १७१६ ।

विशेष-भूषरदास कृत पार्श्वनाथ पुराण है।

६१७० गुटका स० १२७। पत्र स० ३६-२४६। म्रा० ८×४३ ६०। भाषा-गुजराती । लिपि-हिन्दी। विषय-क्या। र० काल स० १७८३। ले० काल स० १६०४। मपूर्ण। वे० स० १७१६।

विशेष—मोहन विजय फूत चन्दना चरित्र हैं।

```
412
                                                                ्रियम-स्व
        ६१७१ शुरुकार्स १२८ । पत्र सः ६१–६२ । मा १८८४ इ. । मापाकिकी संस्टा देशस
Xोमपूर्णाले स १७२ ।
```

विवेश--पुत्रा पाठ संबद्ध है। ६१७२. सुतकास १२६ । पण तै १२ । मा १८४६ । वापा–विनी । 🖥 काप X । मूर्ण रे से १७२१।

६१+३ गुरुकास १३० । पवर्षं ६—१८ । या ६×४ इ. । शाक्षा दिली पर । दे नात ×। मदर्गाकै स १७२३।

रवक्षीतुक्रधायवनार्थवन ६२ छ १ । तक पक्ष है।

क्ताप्रेस समूद्र है पाइक चतुर सूचान। धारिकास ---

राजसभा रंबन बद्दै, यब दिद शीदि निवाल ॥१॥

इति ये रमकोलक राजधानार कर समस्या ज्वान्य अक्त नाह सार्थ है।

६१७४ गुरुका स+ १६१ । यन सं ६-४१ | या ६×६६ | बाला-संस्ट्रा ते नमा वं १०६१ मनुर्खा वे वं १७२३।

वितेत---वकानी सङ्ग्रमाय एवं करण है ।

६१७४. <u>शुरु</u>क्तासं १६२ । पत्र सं ६–१६ । मा १ ⋉६ इ. । जला-तेल्यी। ‼ समार्थ १७व७ | यदुर्य | १ वं १७२४ |

दिवेप-क्लमन्त कना (व राज्यक्क) गेंटाकरल यम शिवती बदालांच (वनवान महासीर ^{क्रियेप}

ष्र १०२२ मुरेन्डमीति बहारकतक) शर्शर पक है।

६१७६ शुरुकार्स १६६ । पर स २२ । सा १८८६ । सामा-हिल्मो । से सक्त X । वॉर्ड R E Cutti

विकेत-- हमबसार बाटक एवं सिन्पुर बक्रस्स बीमो के ही सन्छ बाट है।

६१७० गुरुकार्स १३४ । वन सं १६ । या १८६ ४ । शासा-दिन्धे । से कन ८ । मॉर्फ 4 E tw85 |

विकेद--सामान्य पाठ संबद्ध है।

रूपर पंचनुर्वा वे ते रेक्ट ।

M म, गुरुकार्स १३ १ । पद स ४५ । या ७×१ र । बारा-संस्कृत हिला। हे बार्स र

 पद- राखो हो वृजराज लाज मेरी 	सूरदास	हिन्दी
२ " महिडो विसरि गई लोह कोउ काह्नन	मलूकदास	99
३ पद-राजा एक पडित पोली सुहारो	सूरदास	हिन्दी
पद-मेरो मुखनीको मक तेरो मुख थारी ०	चद	"
५ पद-भव मैं हरिरस चाला लागी भक्ति खुमारी॰	कवीर	99
६ पद-वादि गये दिन साहिब विना सतग्रुरु चरण सने	ह विना "	ນັ
७ पद—जादिन मन पछी उडि जौ है	"	17
फुटकर मत्र, घौपधियों के नुसखे झादि	ž i	

फुटकर मन, भोपाधया के नुसखे मादि है।

६१७६. गुटका स० १३६। पत्र स० ५-१६। ग्रा० ७×५ इ०। भाषा–हिन्दो । विषय–पद । ले० काल १७८४ । अपूर्ण । वे॰ स॰ १७५५ ।

विशेष --वस्तराम, देवाग्रह्म, चैनसुख मादि के पद्मों का सग्रह है। १० पत्र से मागे खाली हैं।

६१८०. गुटका स० १२७। पत्र स० ८८। मा० ६१८५ इ०। भाषा-हिन्ही । विषय-पद । ले॰ माल x । अपूर्ण । वे० म० १७५६ ।

विशेष--बनारसोतिलास के कुछ पाठ एव दिलाराम, दौलतराम, जिनदास, सेवग, हरीसिंह, हरपचन्द्र, लालचन्द, गरीवदास, भूघर एव किसनगुलाव के पदों का सग्रह है।

६१८१ गुटका स० १३८। पत्र स० १२१। मा० ६३४५३ इ०। वे• स० २०४३। विशेष---मुख्य पाठ निम्न हैं ---

१ वीस विरहमान पूजा	नरेन्द्रकोर्त्ति	हिन्दी सस्कृत
२ नेमिनाय पूजा	कुवलयचन्द	
३ कीरोंदानी पूजा	प्र मयचन्द ^{्र}	संस्कृत
४ हेमकारी	विस्वभूपरा।	" हिन्दी
५ क्षेत्रपालपूजा	सुमतिकीत्ति '	(S.c.)
६. शिखर विलास भाषा	घनराज	92
50-5	• • • •	भ र० काल सँ० १८४८

६१=२ गुटका स॰ १३६। पत्र स॰ ३-४६। मा॰ १०३ै×७ इ०। भाषा-हिदी प०। से॰ काल स० १६४४। मर्ग्स वे० स० २०४०।

विशेष--जातकाभरण ज्योतिष का ग्रन्थ है इसका दूसरा नाम जातकालकार मी है। मैस्लाल जोशी ने प्रतिलिपि की थी ।

```
[ सम्बन्ध
456 ]
           ६१८६ गुरुकार्स १४० । पत्र से ४-४३ | सा १ <sub>स</sub>×७ इ । जाना-संस्<u>रु</u> । दे रहा
११ ६ कि वल्लावरी २ । धप्रती वे सं ४ ५०० ।
           विकेच-अपूर्वपन्य पूरि कृत समयकार वृति है।
           दिराध गुरकास १४१ । पर्यं से १-१ ६३ था १ «×६३ ६ । शता-पृत्यो । हिस्स
र्धरू देव देव देव देव देव हैं। यह स्थाप के स्थाप
           विचेत-वम्प्रयुक्त इत वैकावोप्रयुक्त ( १ वं १६४१ ) क्षता वनारशीविकास माहि के पार्ट हैं।
           ६१च्ये ग्रहकास १४२ । पर संच~६३ । क्रमा-क्रियो । में नाम ×। स्पूर्ण । रेन्ड
R Yel
           निवेद--बानवराम इव वर्षांबवक दिल्ही दला टीका सहित है ।
           ६१म६ शुक्का सं १४६। पत्र सं १६-१७१। या क्रीप्रस्2 र शाया-सम्बर्ग ॥ नव
र्व १९१६। बहुर्खी के ले २ ४म ि
            निवेच-पूजा स्टोच याचे पाठों का संबद्ध है।
            र्वत् १६१२ वर्षे नगार पुढी १ दिने भी कुवाचने प्रश्तवतीयच्ये यसाल्यारमञ्जे श्रीवादिनावर्षसालेतीः
मानी बुबरमानो व ब्होबक्यकोर्थि व बुक्तकोरित व बावसूच्या थ रिज्यकोरित व बुज्यम्, मा हुवरमेवर्थ
 या बीएनकेलिया स्थलकेलि करावतः।
            ६१८७ गुरुका सं १४४) पत्र यं ४६। मा वश्रद्धः । बादा हिन्दी । विवय-नर्ताः है
 काल सं १६२ । प्रयोगितं २ ४६ ।
            विकेश---विकास पार्टी का बोधक है।
                                                                             र परवर्ष रेजवर
   १ बुळायबिक्ना
                                           नारमळ
                                                               क्रिक्रे
```

× education

ध वलकार

विकासीत

वेकेन्द्रवृत्तस्य (ज. विश्ववृत्तस्य के विष्य)

१ काम वं रेण रे

_ _ two!

पावे प्ररिक्षमण

२. चीविक्षीश्वकरा

L grapheores

Y व्यवसङ्ख्यात्रकाः

६ अब्रूटचीवश्वकता

धारतमारश्राणीयवाः

निर्वीयत्तनगीरका

১. মস্মীরকলবা

		٠,
क्त उद्धार	TITE	- 1
गुटका	त्तमञ्	

६ निज्ञल्याष्ट्रमीकया	पाण्डे हरिकृष्ण	हिन्दी	
१० सुगन्धोददामीवया	हेमराज	77	-
११ ग्रनन्तचतुर्दशीव्रतकया	पाढे हरिकृष्ण	53	
१२ बारहसो चौतीसव्रतकया	जिनेन्द्रमूपर्ण	33	

६१८८ गुटका स० १४४। पत्र स० २१६। मा० ६×६३ इ०। ले० काल ×। पूर्श । वै० स० २०५०।

विशेष-गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं।

१ विरुदावली (पट्टावलि)	×	सस्कृत	y
२. सोलहकारसपूजा	व्र० जिनदास	99	६१
३ दशलक्षण जयमाल	सुमितसागर [ग्रभयनन्दि के शिष्य]	हिन्दी	50
४ दशलक्षण जयमाल	सोमसेन	सस्कृत	6.0
५ मेरपूजा	53	57	
६ चौरासी न्यातिमाला	व० जिनदास	हिन्दी	१४७
विशेष—इन्ही भी	एक चौरासी जातिमाला भीर है।		
७ मादिनायपूजा	व्र॰ शांतिदास	n	१५०
द भनन्तनाथपूजा	19	11	१६६
६ सप्तऋविवूजा	भ० देवेन्द्रकोत्ति	संस्कृत	१७६
१० ज्येष्ठजिनवरमोटा	श्रुतसागर	99	१७८
११ ज्येष्ठजिनवर लाहान	प्र ० जिनदास	संस्कृत	१७८
१२ पश्चक्षेत्रपालपूजा	सोमसेन	हिन्दी	135
१३ शीतलनायपूजा	धर्मभूपगु	22	२१०
१४ व्रतजयमाला	सुमितसागर	हिन्दी	२ १३
१५ मादित्यवारकया	प॰ गङ्गादास [धर्मचन्द का शिष्य]	55	२१ ह

६१८६ गुटका स० १४६। पत्र स० ११-८८। मा० ८१४४ ६०। भाषा-सस्कृत हिन्दी । ले० काल स० १७०१। म्रपूर्ण । वे० स० २०५१ ।

विशेप-जनारसी विलास एव नाममाला भादि के पाठों का सग्रह है।

४६६] ्यरक-संस

६१६० सुद्रकार्स १४०।पन सं १ –६१ सा ४८८% है । नास-बस्द्रत है पन X1 सन्दर्भ के पं २१०५।

रितेर-सोनी ना तंबह है !

देशकर गुरुकार्स रेशकापण सं रशासा और इं। से काम सं रूपका पूर्वी है में रेरका

१ पद्यारमञ्जूक हरिकल हिन्दी १—२ र सम्बर्धासम्बर्धाः

 मैरनकियास्तरोकास्य वेक्प्रकारितः शंस्त्रयः विकेच—पीमेका में चन्त्रयम चैत्र्यालकावे प्रतिकृति हुई थो ।

र पहारति X विल्वी १६

देहंदर सुद्रश्कासः हेश्वे । यस वं ११ त्या ५८६ इ. । वाला-देश्यो । पेतन-रविस्ताने राजाचं १ २८ लोड सुर्वा१२ । पूर्वावै संस्तृत्वे ।

विचेत—निरमार पामा का वर्णन है। चांदववांच के बहुत्वीर का वी उत्तेश है।

६१६६ गुटकासं०१६ । पत्र सं ४४६ । छा «४६६ । बाला-हिमी संस्थानि रस्म १७१७ । पूर्वाने सः ११६२ ।

नियेग - पुत्रा पाठ एवं स्थिती की बास्त्रकाल कर ज्योरा है।

देशीय गुरकास १८१। पर वं १९। मा १८६६ । भागा-माक्कानिको से कार ४। मार्का वे १११६।

विकेर---वार्वछा चौजीस अस्ता चर्चा तथा प्रत्यागरस्तोच सावि हैं।

६१६४: शुद्रकालं १८२।पवलं ४ ।या ७_५४८ ६ । बाग्य स्वद्य दि<mark>र्गी।वे सम्</mark>वर्थ सदर्थी-वे ११६६।

विसेन-कामान्य पूजा पाठ वेशह है ।

दर्शस्य गुडकासः १४३। पत्र सं २७–१३१ । वा ६२/४६ । यसा–संस्ट देसी। है कमर × । सार्थ । वे स्टर्भा

विकेर-कारान्य दूरा पत्र विद्या है।

६१८० गुरुकास १४४ । पर वं १७—१४०) या ०००६ । बारा-विक्यो हे कस्य 🗵 सन्दर्भ वे ११६ ।

निवेत—सामान्य पुत्रा पाठ वंशह है।

गुटका-सम्रह्]

६१६८ गुटका स० १४,४ क । पत्र स० ३२ । भाषा—सस्कृत । विषय—पूजा । ले० काल ४ । घपूर्ण । वै० स० २१६६ ।

विशेष-समवदारण पूजा है।

६१६६ गुटका स० १४४ । पत्र स० ५७-१५२ । आ० ७३४६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल ४ । अपूर्ण । वे० स० २२०० ।

विशेप-नासिकेत पुराग हिन्दी गद्य तथा गोरख सवाद हिन्दी पद्य मे है।

६२०० गुटका स०१४६ । पत्र स०१८-३६ । झा० ७३×६ ६० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० स०२२०१ ।

विशेष-पूजा पाठ स्तोत्र मादि हैं।

६२०१ गुटका स० १४७ । पत्र स० १० । झा० ७३×६ इ० । भाषा-हिन्दो । विषय-प्रायुर्वेद । ले० काल × । मपूर्ण । वै० स० २२०२ ।

विशेष--आयुर्वेदिक नुसखे हैं।

् ६२०२ गुटका स० १४६। पत्र स० २-३०। घा० ७×५ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। ले० काल स० १६२७। मपूर्ण। वे० स० २२०३।

विशेष-मत्रों एव स्तोत्रो का सग्रह है।

६२०३ गुटका स० १४६। पत्र स० ६३। मा० ७५ ४६ द०। भाषा-हिन्दी। ले० कान ×ा पूर्ण वे० स० २२०४।

विशेप—कळुवाहा वश के राजाग्रो की वशावली, १०० राजाग्रों के नाम दिये हैं। स० १७५६ तक वशावली है। पत्र ७ पर राजा पृष्वीसिंह का गद्दी पर स० १८२४ में बैठना लिखा है।

२ दिल्ली नगर की बसापत तथा बादशाहत का व्यौरा है किस बादशाह ने कितने वर्ष, महीने, दिन तथा भडी राज्य किया इसका बृतान्त है।

३ वारहमासा, प्राणीटा गीत, जिनवर स्तुति, शृङ्गार के सवैया धादि है।

६२०४ गुटका स० १६०। पत्र स० ५६। मा० ६×४३ ६०। भाषा-हिन्दी सस्कृत। ले० काल × मपूर्ण। वे० स० २२०५।

विशेष-वनारसी विलास के कुछ पाठ तथा भक्तामर स्तोत्र ग्रादि पाठ हैं।

थ्रंट] [गुरक्तभग

६२० शुरुकासं १६१। पन सं १६। सा ७८६ द (जाना-साहस्र हिन्से) वे नाप XI सर्था वे सं २२ ६।

विरोर-सावक प्रतिक्रमण हिल्दी धर्म तहित है । हिल्दी पर हुनराठी का मनाय है ।

रे से प्रतक नो मिनती के वन हैं। इसके बीख बंग हैं है से प्रतक नी मिनतों के देद कार्नों सामग्र है। इसके १२ पहाड़ि

हर के मुहका सं- १६२ । यन सं १६-४५ । या ६,४७६ र । याना-हिन्दी । नियन्तर । मैं मान सं १६६६ । सम्ब्री के कि २९ म

निरंग-तेवच पनवास्य भवतः वचतेव नागुक पनसाम नवास्त्रीयकः जुललाकन्य, दुवनगः लागः सार्थि वरित्रक तथः सार्थितियों में पह है।

६२ ७ शुरुकार्सल १६६१ पत्र वं ११। सा १३४५ इ.। प्राया-दिल्यो। हे कस XI सर्वारे से २२ ७।

विकेश—नित्य निवय पूजा गाउ है।

६९० म्. गुरुकार्सं १६४ । यस वं ७० । सा ६६४६ इ । माया-वेलारः । वे कल X । सहस्राति वं २२ ६ ।

विमेय-विवित्र स्वीभी का शंबह है।

६२ ॥ गुरुकास १६४ । वर्ष १२ । या ६३×४३ व | यासा-दिन्यो । विस्न-नरा ॥ नान ×। कार्यो । वै व १२१)

विदेश— नवस सबदास अवस्थान पुरस्तान पुरस्तान वैत्राहरू वैत्राहरूव देशाया वेत्राप्त वेत्राप्त वेत्राप्त वेत्राप्त सप्तारात कृत्य, साहित्यात वित्रोधीताल साहि विविधे के विविध एक साहित्यों में दर है। कुरवह योगसीयात्त्री के स्तितिहरू करमाई की।

न वादोनार नरवार था। ६०१ शुद्रकासः १६६। यथ वं ९४। सा ६१,४४३ र 1 वासा-दिन्दी। ने राम 🗡

बार्ल | वे थे १२११ | १ कारह नाचे वा बोहर हिन्दी है थे

२. पूर्णपुनारनीयानः यद्वाराः ॥ १-१३ ६२११ शुरुकार्गः १९०।वर वः १४:वा ५०४वृदः । नाम-वंदरः । विषय-वर्षारणः

के बान × । पहले । वे वे देवरते ।

विशेष-पद्मावतीयन्त्र तथा युद्ध मे जीत का यन्त्र, सीचा जाने का यन्त्र, नजर तथा वशीकरए। यन्त्र तथा

टका-समह]

हालक्ष्मीसप्रमाविकस्तोत्र हैं।

६२१२ गुटका स० १६८ । पत्र स० १२-३६ । मा० ७३×५३ ६० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।

पूर्ण । वे० स० २२१३।

विशेप--वृन्द सतसई है।

६२१३ गुटका स० १६६ । पत्र स० ४० । मा० ५३×६ इ० । मापा-हिन्दी । विषय-सग्रह । ले०

नल 🗶 । मपूर्गा। वै० स० २२१४ ।

विशेप-भक्तामर, कल्याणमन्दिर ग्रादि स्तोत्रो का सग्रह है।

६२१४. गुटका स० १७०। पत्र स० ६६। मा० ८४५३ इ०। भाषा-सस्कृत हिन्दी। विषय-सग्रह ।

ने० काल 🗙 । भपूर्गी । वे० सं० २२१५ ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, रसिकप्रिया (केशव) एव रत्नकोश हैं।

६२१४ गुटका स० १७१। पत्र सं० ३-८१। घा० ५३×५५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद।

ले० काल ⊠ा मपूर्गा । वे० स० २२१६ ।

विशेष-- बगतराम के पदो का सग्रह है। एक पद हरीसिंह का भी है।

६२१६ गुटका स०१७२ । पत्र स० ५१ । झा० ५×४६ ६० । भाषा−हिन्दी । ले० काल × । झपूर्गा । वे॰ सं० २२१७।

विशेप--मायुर्वेदिक नुससे एव रति रहस्य है।

श्रवशिष्ट-साहित्य

६२१७ श्रष्टोत्तरीस्नात्रविधि । पत्र स० १। मा० १०×५३ इ०। भाषा-सस्कृत । विषय-विधि विधान । र० काल 🗙 । ले० का० 🗙 । पूर्रा। वै० स० २६१ । स्थाभण्डार ।

६२१८ जन्माष्ट्रमीपूजन । पत्र स॰ ७। मा॰ ११ई×६ ६०। मापा-सस्कृत। विषय-पूजा। र० काल ⊠ । ले० काल ⊠ । वे० स० ११५७ । श्र्य भण्डार ।

६२१६ तुलसीविवाह । पत्र स० ५। मा० ६०% ४४३ ह०। भाषा-सस्कृत । विषय-विधिविधान । र० काल 🗙 | ले० काल स० १८८६ । पूर्या | जीर्या | वे० स० २२२२ | अप्र मण्डार |

ृ ६२२० परमाणुनामविधि (नाप तोल परिमाण्) । पत्र स०२। मा० ६३×५३ ६०। भाषा– हिन्दी । विषय–नापने तथा तोलने की विधि । र० काल 🗙 । ले० काल 🗙 । पूर्णा । वै० स० २१३७ । घ्रम् भण्डार ।

द•० <u>]</u> [गुरमासंख

दैनेदे प्रतिप्रशाहिक्षियः स्थापक वं २ । सा प्रदृद्धा जला—श्रिको । लिल-दुस् विवि । स्थापक कल प्राप्त होते वे च ७०३ । का स्थार ।

६२०२, प्राथमितम् क्षिकाटीका—सम्बद्धत्। यत्र धं ११। या ४४१६ । प्राथ-संसर।

दिवय—प्राप्तारमान्य १२ वस्त्र ×ावे कस्त्र ×ोपूर्णावे छ ३३ । ६६ सध्यार । विक्रय— काला बनोचला वे प्रतिनिधि की वी । क्यी क्यार से एक प्रति (३० व. १९१) मीर है!

1.२२३ प्रतिस २ ।पन सं १ दाने कला×ाने संदशास बनार।

विश्वेप---शैक्य का पान जासीकत विविध्ययपृत्ति विशा है ।

६२९४ अस्तिरक्षाकर—चनसाबी अद्वाचन टॅ१६। या ११६५×१६ । जाना—कंस्ट्राविस-स्तोचार कला×। ने कका×। यद्वरी। चीर्जीवें स्ट २९६१ व्यवस्थार।

६२२४ अञ्चाहुसदिया—अञ्चलहु। पण वं १०। सा ११६८४ इ. असस-वंसरः। स्मिन्स-क्योतिका र कम्म × । ते कस्य × । स्मार्थः। वे सं ११। आरममारः।

नियेप—इसी अव्याद में एक गति (ने स. १६६) घीर हैं।

६२२६ विभि विकास******। पत्र तं ७९-१४६। या १२४४ द शासन-४५वा ^{(विदर} प्रवादिकान । र कस्तर ४ | ने कस्त्र ४ | व्यवसंति क्षा १ १ । व्यवसंति ।

द्राणियला।र कस्त्र ⊠ाल कस्त्र ≿ीयपूर्वाचे क १ रोज्य गणारः। ६२२७ असिका रोज्य सं ४०।के कक्त ≾ावे व ६६०।क बच्चारा

६२२८. शतकारराष्ट्रका—पत्रकाकाबृतीयाको (यप रं १) धर १२३४ वर्ष । धरीन किनो । विचर-प्रकार तकार्थ १६२१ । के तका ४ । वर्षो के सं ७०३ । संबन्धरः ।

६२२६. प्रतिसं २ । यस सं ४६ । से कम्बर्स १.४२१ सामस्य कुन्न १२ । ने सं ४७४ । हे सम्बार ।

विदेप—इक्षो प्रधार में एक मिट (वै सं ७७६) चीर है।

६२६ श्रीदार्श १। पण र्थ थर । के ज्याचा १६२ तथबा तुरी १। के स र । ह

इन्दर् प्रति स्त्री शांपन सं १३६। ने वस्त्र ×ाने सं २७ । स्म सम्बार।

६२६२. सञ्जवस्थीयोश्चरिकेष्टरपूर्वा^{™™}ायतः है । वा ११३४८३ ^१६ । वाना-क्षि^{की} कियर-पूर्वा । र कल × । के नल ≺ । दुर्वा के सः १ र । का नवार ।



ग्रन्था**नुक्रमीरााका**

श्र

	ㅋ						
प्रन्थ नाम	ले	खक	भाषा !	ुष्ठ स	0] 5	ान्ध नाम	
ग्रवंबर बोरवल याती			(हि॰)	६८१	: 1	र क्षयदशमीक्षा	
भवनद्भवरित्र			(हि० ग०) १६०	۰ ۱	प्रदायदशमाविधा	न
गक्लद्भचरित्र	ना	श्रूराम	(हि०)	१६	۰ ,	पक्षयनिधिपूजा	
मनलयुदेव गया		-	(৭০)	38	₹		
भवल द्धनाटक	मक्त	ग्नना ल	(हि॰)	38	Ę	प्र दायनिधिपूजा	
धन नद्वाप्टक	भट्ट	ा फ्लाङ्क	(स∘)	٧V	ય	मक्षयनिधिमु ष्टिव	तिवध
			६३७, ६४	६, ७१	٦	मक्षयनिधिमङल	[म
ध कलसु:12क			(स०)	३७	3	ग्रक्षयनिधिविधाः	न
भ कलङ्काष्टकभाषा	सदासुर	। कामलीः	वाल (हि॰)) ইড	30	प्रसयनिधिविधा	नवप
म यनद्वाप्टक		-	(हिं०)	७६		म्रक्षयनिधिव्रतक	या
स मपनाचार्यपूजा		-	(हि॰)	६्	3:	मक्षयविधानकव	τ
भवतमदवार्ता			(हि०)	३३	143	प्रक्षरवावनी	
प्र कृतिमजिनचैत्यात	पजयगान	· —	(গা৹)	85	(३	मजितपुराएा	9
ग्रनृत्रिम जिनचैत्याल	य जयमाः	न भगवती	दास (हि॰) ६१	¥3	ग्र जितनायपुरार	Ą
				ও:	२०	म जितसान्तिजि	नस्तं
घरुतिमचैत्यालय ज	ायमाल	_	(हि॰) ৬	08,6	४६	प्र जितशान्तिस्त	वन
ग्र कृतिमचैत्यालयपूर	ना	मनरङ्गला	ल (हि॰) Y	¥¥		
मकुत्रिमचैत्यालयपूर	ना		(स •) ሂ	१५	म्रजितशातिम्त	वन
मर्तिमचैत्यालय व	र्गान	_	(हि) v	६३	म्रजितमातिस्त	वन
म वृत्रिमजिनचैत्या	तयपूजा	जिनदा	स (स) Y	१५३	भ्र जितशातिस्त	वन
म कृत्रिमजिनचैत्या	लयपूजा	चैनसुर	व (हि	o) 7	የሂ३	भजितशातिस्त	वन
प्रकृत्रिम िन चैत्या	लयपूजा	लालड		•) '	४५३	म्रजितदाातिस्त	वन
भ कृत्रिमजिनालय	पूजा	पाडे जिन	दास (स	10)	४५३	प्रजीर्णमञ्जरी	

।क्षयनिधिपूजा (स०) 848 ४०६, ५३६, ७६३ प्रदावनिधिपूजा (हि॰) **448** झानभूपण प्रध्यनिधिमुष्टिकाविधानप्रतक्या (स∘) २१३ प्रशयनिधिमङल [मडलचित्र] ५२५ प्रक्षयनिधिविधान (स०) 828 प्रसयनिधिविधानवपा (ন∘) 288 **म**क्षयनिधित्रतकया खुशालचन्द (Fe) 288 प्रक्षयविधानकवा (대) 788 द्यानतराय (हि॰) 🕖, ६७६ प्रक्षरवावनी पहिताचार्य श्ररुणमणि (न०) मजितपुराए। विजयसिंह **प्र**जितनायपुराएा (भप०) १४२ मजितसान्तिजिनस्तोत्र (সা৽) 820

नन्दिपेरा

मेरुनन्द्रन

काशीराज

(গাং)

(प्रा० स०) ३८१

(स०)

(हि०)

(हि॰)

(स∘)

(स∘)

308 ६८१

३७६

६१६

६१६

४२३

388

तेत्र क

ललितकीर्त्ति

भाषा वृष्ठ स०

६६५

४३५

(40)

(म०)

E+2]					[=	स्थानुषक्रिय
प्रस्य नाम	संबद	मापा पुर	EB 2	ग्रम्थ नाथ	संवद	मन्द्र पृष्ट र
धर्मार्गुनक्रपे	_	(4)	924	धक्तवपूर्वपौगवा	~	(₹) रेश
धराई का मेरक [कि	d -		१११	धनन्त्रपुर्वतीरश	मुमीन्द्रशीर्व	(M) 612
चहारै का स्थीरा	·	(v)	213	धननाचनुईधीवया	ह ज्ञानमागर	(E) 111
धर्मात बुत्तकुत वर्णन	-	(18)	४व	धक्तपपुरीग्रेश	भ सेडचर	(4) (3)
सठाय नारे की क्या		(fk)	223	धक्कचपुरंगीर्श	शान्तिशास	(4) XI
सठाया नारे की करा	-		200	धन्तवपूर्ववीद्वा	- (Perze (1
धठाएड नाने का भौता			w21	यमनार्परीयुश	बी भूपत	(\$) nt
		#E	¥34	प्रकारपुर्वी हुआ	_	(4 It) Ast
महारह बले हा चौड	तथा —	(fig.)	FYE	दनक्षत्रुईदीइत्स्या	द पूर्वा सुशासप	म् (दि) शा
बहारह नारे का भी स	- 1	(fg)	£ ₹₹	सन ्यपपुर् थीयनस्या	स िन शैरि	(#) tit
बटारीसर्गर क् रा च	म > बिनदास	(fg)	* *	वरन्तपर्वाधीश्वरचा		(ft) mil
महीतरलनापवित्र	_	(fit)	157	वनन के तप्पर	धम बग्रू	(g.) are
महाई [बाद हव] ही	सूत्रा शुभक्त	(d)	YIL	वनस्त्रीवस्त्रुवा	सुरेन्द्रकीचि	(a) Asi
बहाईहीर पूजा	डार् गव	(fg)	at	स्रमन्द्रिकपूरा	-	(4) u
बडाईडीर दुश	_	£ }	₩ŧ	समन्त्र वाच्यु राग्य	गुण्यत्राचान	(a) 145
षडा ^र द्वीरश्लन	_	(+)	111	धवस्त्रास्त्रा	भी भूपत	*) MI
बलवर्वितिश्रं वि	इरिमाण पाग्यात	(u:)	\$¥\$	अनन्त् यासरूमा	सबग	(ft) 415
		Ęŧ	68.6	वक्तवास्त्रम	~	(#) Asj
मलत या वस्त [वि	T\$]		१११	बनन्तरास्त्रा ३	। शास्त्रिशस (र	
श्रतिधयमेग्रामा	_	(Fg)	221	<u> परच्चशस्त्रुवा</u>	~	(ft) YU
बर्द्युननावर	-	(fg)	139	प्रतन्त ्रा	~	(4) 311
बध्यपन वं व		(fg)	54	वनमञ्जाद्यास	~	(4) A11
यम्बन्धरतस्यार्गस्य	की समझ	(⋞)	395	वक्तरियासका	~	(mt) 111
सम्यापनग्रीद्वरी	सामकेष	(4)	33	धनन्तरप्रश	स पप्रतिहर	(a) #ts
ग्रध्यत्रवरीदा	स्वयम्	(F()	wet	वनश्वाप्त्रभा	मृतम।गर	(8) 441
सम्बर्गसम्	श्वयम् दावदा	(f()	EE	धक्रण्य १४ वर्ग	समित्रशीन	(4) tas
धानावयरीशी	प नारभीश्रम	(fe j	ER.	धकार ग श्या	मर्मद्रीचि	(4) 410
श्रम् नगापूनश	क्षि मृत्त	(fg)	ee	वरनागश्या	-	(m) 514
वनशास्त्रशृत	व चाराध्यर	(4)	**	SH-13-13-41	-	(al) dig
यकार्चरीयः न [वः	1 N(17) -	(4,)	11	EL LISSAI	नुगात्रपग	(1/2) str

लेखक भाषा पृष्ठ सः प्रन्थ नाम (स∘) ५१५ श्री भूपण **ग्रनन्तव्रत**वूजा (स०) ४५७ मनन्तप्रतपूजा प्रह, ६६३, ७२८ भ० विजयकीत्ति (हिं०) 810 **प्रनन्तव्रतपूजा** (हि॰) साह सेवगराम 270 **धनन्तवतपूजा** (हि०) ५१५ मनन्तव्रतपूजा ४१६, ४८६, ७२८ (स०) ४५७ भनन्तव्रतश्रुजाविधि मदनकीत्ति (स०) 218 धनन्तप्रतविधान व्र० जिनदास (हि०) 450 भनन्तव्रतरास **प्र**नन्तव्रतोद्यापनपूजा आ० गुराचन्द्र (स∘) **228** ५१३, ५३६, ५४० प्रनागारमक्ति (स०) ६२७ मनायी ऋषि स्वाच्याय (हि॰ गुज॰) ३७६ **य**नायानोचोढाल्या खेम (हि०) ४३४ धनायोसाध चौढालिया विमल्वितयगिता (हि॰) 850 श्रनाथीमुनि सज्काय (हि॰) समयसुन्टर् ६१५ धनायोमुनि सज्काय (हि॰) ¥34 **प्रना**दिनिधनस्तोत्र (刊0) 308,808 मनिटकारिका (刊0) २५७ **भ**निटकारिकावचूरि (स०) २५७ श्रनित्यपश्चोसी भगवतीदास (हि॰) ६८६ मनित्य गञ्जासिका त्रिभुवनचन्द्र (हि०) ७५५ दीपचन्द्र कासलीवाल (हि॰) मनुभवप्रकाश ४८ **प्रनु**भवविलास ¹हि०) प्रश **ग्रनुभवानन्द** (हिं० ग०) ¥5 **प्र**नेकार्यस्वितमञ्जरी महीच्रपणकिव (40) २७१ यनेकार्य ब्विन मञ्जरी (स०) २७१ **यनेकार्यनाममाला** (हि॰) नन्दिकवि ७०६ |

लेखक भाषा पृष्ठ स० प्रन्थ नाम **ग्रनेकार्थमञ्जरी** (हि॰) २७१ ७६६ नन्ददास भ० हर्पकीर्क्ति (स∘) २७१ भनेकार्यशत **ग्र**नेकार्यसग्रह हेमचन्द्राचार्य (祖0) २७१ भनेकार्यसग्रह [महीपकोषा] (स०) २७१ भन्तरायवर्शन (हिं०) ५६० **धन्तरिक्षपार्श्वनाया**पृक (स०) ४६० म ययोगन्यवच्छेरक्दाविशिका हेसचन्द्राचार्य (स०) ५७३ ग्रन्यस्कुट पाठ सप्रह (हि॰) ६२७ धपराधसूदनस्तोत्र (स०) शङ्कराचार्य 533 **घवजदकेवली** (स०) 308 मनिशान शायुन्तन कालिदास (刊0) ३१६ **9रुपोत्तमदेव** प्रभिघानकोश (स ० २७१ म्रभिवानिवतामिंशनानमाला हेमचन्द्राचार्य (स०) २७१ धमचन्द्रगणि **अभिधानरत्नाकर** (स०) २७२ **प्रभिधानसार** प॰ शिवजीलाल (स∘) २७२ मभिषेक पाठ (平0) ४५५ 1 ७६१ ध्रभिपेक्षविधि लदमीसन ४५५ ग्रमिपेकविधि (40) 385 ४५८, ५७० मभिपेन विधि (हि०) ४५५ ग्रमरकोश श्रमरसिंह (स०) २७२ धमरकोशटीका भानुजी दीन्तित (स०) २७२ प्रमरचन्द्रिका (हि∘) ३०८ धमरूशतक (स०) १६० ममृतघर्म रसकाब्य गुण चन्द्रदेष (स∘) ሄፍ स॰ नवाई प्रतापसिंह अमृतसागर (हि०) ३३६ घरहना सज्काय **समय**पुन्द्र (传。) ६१८ **भ**रहन्तस्तवन (स∘) 30₹

£ ¥]	[57	वानुकर्वपम
क्षा का से विकास सम	शतक	यापा १४ सेः
प्राप्त । (१) १०३ व्याप्त विद्याल स्त्री व्याप्त विद्याल स्त्री विद्याल स्त्री व्याप्त विद्याल व्याप्त विद्याल विद	देवचम्यः व दोशो भाष्ट्रक्रद्व विद्यामन्दिः संद्रक्षभीति वे येघायी पहाचीति द्याचमन	(a,) th (a,) th
स्रश्याच्य स्थला — (वे) व स्रश्याच्य स्थलां दिस्स्ववित्व[वित्वत्वत्व](रि) ४३३ स्रह्माचीव्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच	त्र झानसागर स्वयत्ते स्वयत्ते स्वयत्ते	(हि) सार सं) सार
वनद्वारहीन क्रिलवक्ष स्थि (वं) २ वनद्वारवारव — (वं) १ वनद्वारवारव	 ३७० शास्त्रसाय	त्रक प्रदेश हैं। इस्ट इंट इस्ट
चन्दरास्य — (४) ११० चन्दर्य — (१) ११० चटवर्श्वर्यस्य — (१) ११० चटवर्श्वर्यस्याः — (१) ११० चटवर्श्वर्यस्याः (१) ११६ चटवर्श्वर्यस्याः (१) ११६	वाजनराव — सुरेग्द्रकीचि — विजयकीचि	(g) str (g) str (g) str (g) str
स्पर्यकाः वं सदृषः (दि) कद् ह्यारेशाः — (वं) क्द् ह्यार्शाःश्चित्राव्यः — (वं) देद ह्यार्शाःश्चित्रां — (वं) देद ह्यार्श्वःश्चित्रां — (वं) देद ह्यार्शः वृत्रद्वात्राव्यः व्याद्वात्राद्यः व्याद्वात्रः व्याद्वात्राद्यः व्याद्वात्राद्यः व्याद्वात्राद्यः व्याद्वात्राद्यः व्याद्वात्राद्यः व्याद्वात्राद्यः व्याद्वात्राद्यः व्याद्वात्रः व्याद्वात्यः व्याद्वात्रः व्याद्वात्यः व्याद्वात्रः व्याद्वात्यः व्याद्यात्यः व्याद्वात्यः व्याद्यः व्याद्यात्यः व्याद्यात्यः व्य	साम्रचन् विनानीः अस्तिमागरः	17 (3) 17 (3) 17 (3) 18

,						
arth, h	20 1 2 1 4 1 4 1 4 1 4 1 4 1 4 1 4 1 4 1 4	41% 7	5 . =	1.17.11.11	٧,٣	साया प्रष्टु मारु
Committee war many		$\{t_i \neq t\}$		True land	Hartista	([-+) *)
the fract back	photoi	£ (* *)	1.1	रा न न्युत	साल कृत	$(t_{i,r})$
ere modile	ge with r	$\{t_i^{i,c}\}$	62.5	1 -1 - 1	1:77	(ffr) 11g
				di manini me 124, 2	m ga man	(# *) =
इत्यास्य द्वारा स	e in the	(1(*)	44.5	4 Lowe 40	द पाउँटाय	(for) ten
the all and the	banah	<pre>{**}</pre>	12 5	عاند نف ۱۰۵ نو	t ille f	(12) 30-
Little, mar stan			* ~	40 mil 4	भवाद भुग्द	(1 x) 1 xx
Budd a (5 Shan, s.S.	-	18001	~ # V	the often to the contract	r aun	18503 271
Kestat de	धर् सूदल	(100)	724	4 mm m	*11 TTE 1	180-3-336
totte (8)	का विश्वत न	$\{t_{\mathcal{F}_T}\}$	250	t::4: = = = = = = = = = = = = = = = = = =	gu van	ff). Şər
	या			L	Javanie	(r)) lec
				Te segment	w.	(47 +) tep
सार क इ.६ व स				\$ 2 mm m 2 m	भगायस्थाम	(1 x) 7 4 7
म् र र स्या स्या		,		3- 4-1 4-1	न हु हुई त्यादि	(** " *) ***
Hit make yang	da Aplino	124)		1 + +1.	(यातमाः रीमार	1 ,) 1+0
element of and	الله المالية ا	((**)	* € \$	E- '	रत प्रशास	दभ्द
tia mit juli	पा " करिक्ष्ण	500)	3" \$	र्क् र साम र	EN 15 151	as
mighetht angel		(1+)	277,	E !- "3, FA "]		# > *
Cidada 1	44400	(R)	177	t ,fg 24 727 1	म्यास	(10) 278
धारानींत्र ।।म	मान राम	(11)	31 E	र , "- यण्यनपा	हर मानमाना	(160) z=n
द्यामा (एउन्हा)			3 25	1	भाड परि	
प्रामागार	धीरन ?	*) rt	\$ 400, 500	124, 023, 310,	22", 161, 352
uldtuir	पन्नाताल घीवर्ग) (मान स्थापन	मह मा सहत	(Fir, 37-
मारागंगात	-	(Ta) :			(10) (00)
मासाध्यक्ति	***** 3	(1,0) 44	धादितास ।	गारामा दूष्त्रशा	- परन्तीति
ग ापापमील	पन्नाताम संस्री	ि (दि:) Y.,	• จะกร	- सुरेन्द्रशीर्त	(410 Fro) 3 5
, यावाचा मा प्यार		(1:4	·) ३১	• ग्रा ^त द प्रवास्त्रपा		(fra) 523
	<u>धिश्रमृपता</u>		-	1	*34, 312	314, 31=, 344
पाग्यनिसा	पप्तगुनार	(f) ₁	r) \$2	र पादि गरासूना		(fro) 145
				gal Mon.		

E+\$]				[प्रमानुबद्धारण
प्रम्थनाम	सेत्रक	माना प्रमु सं ०	प्रम्थसास से	লক নাতা যুৱ ক
मारि पत्रतपुत्र।	_	(#) ¥48	धातीबार का सबकारण	m (B)
माधिपदारक हो बातन	_	(d) XY	वाहीशस्त्रवंव वित्	न्त्र (दि) भग
मारिपारतस्या	लुरासचन्द	1fe (3ft)	धारीभरीक्ष्मति -	— (<u>I</u> ff) xii
बादि पत्रतपूत्रा	दे शभग्तेन	(#) YH	वाध्यागारमयान दशकसं	ोम (दि) ११०
वाश्यिक्षतीवारन	-	(4) IX	बात्महीकरयाका स० क्रइमीक	स्म् (सर) १३
बर्दे (नावकस्थार) त्वा	# ॰ द्वानसागर	(B _k) w w	वानन्यमङ्गीस्तोच राष्ट्रगुनाये	(r) (c
धारिताब दीव	मुनि हेमसिय	(fg) ¥35		~ (4) sis
महिनसङ्ग	मनहारेब	(fg) ute	धारुपीसा विद्यानी	ig (#) {11
बारिनायपुत्रा	रामचन्द्र	(हि) ४६१ ६४	यक्षयोगाचा समस्त्रप्राच	ार्थ (क्री) ११
बादिनावपू रा	म हादिकास	(lt) wtt	यातथीवांदायथा वयचन् ह	रामझा (दि) १६
बारिकार हुआ	सेशगराम	(lg) twy	बातभीवांबार्नप्रति विद्यान	हिन्ह (स.) स
महीतरमूबा	_	(fg) 443		— (a) ai
मारिनाय की दिनती		(ह) vev ex?		नरहा — (दि) वर् द
बारिनाब विनशे	वनस्कृति	(हि) ७१२	स्तरोप के राजाधोजी र्वधादनि	ــ (گ ^و) مند
ब र्जरनादनग्रस्थ	_	(fg) YES	वार्तिक कर	— (4) sta afs
बादिनावरनदन	कवि पश्च	for (ગુ ²)	बार्वेरिक नुसर्व	— (d) 384 238
बारिनासतोय	श्रमपमुग्द्र	(हि) ११६	बार्रशीक कुमरे	- (R) (1
बादिनाचाटुक	_	(lk) 28x	110 tas 45 454 41	tu, wit wit state
बार्र स्टूचल	विवसनाचाय	(g) fas exf	चरूद करंद करने कर क	ic at attate
बर्रासुक्त	पुरस्य (ब्त) १४३ १४१	sto set	
मा रिदुराग्	बीश वसम	(हिन्द्र) १४४	शार्देश नुमर्वी या शंदर् -	- (N) W
धा"रपुरक्त दिपक्त	प्रमाचम्	(#) tvs	धापुरेश्वरीशि शुन्ते	
बा स्ट्रुसम्त्र स्थिती	गङ्गापास	(((3)) • t	मारही -	- (4) etc
बारीचर बारगी	_	(1g) sea	भारती धानदरा	
चारी भर नीत	रह िक्छय	(ft) ans	बारनी दीपचर	* * * * * * * * * * * * * * * * * * * *
मारंघर के हैं। बा	गुराबम	(ft) mis	कारी मामर्नि	~ (1)
यारे <u>भरतू श्र</u> र		(G) 198	बाली साम्रपर	1 (4)
व राभरका	शः कर्म् य री	(fg) 15	बारनी दिशारीदा	α (ξ() 1/ (ξ() 41)
बार-परोज्य	मध्यप्रीनि	(fg) 4 5 1	बार्गा गुअवस्	(()

प्रन्थानुकमिएका]

,							
प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	स∘ ∣	प्रन्थनाम	त्तेखक	भाषा प्रष्ट	
प्रारती पञ्चपरमेप्ठी	प० चिमना	(हि॰)	७६१	ग्राश्रव वर्गन		(हि॰)	२
श्रारती सरस्वती	व्र० जिनदास	(हि॰)	३८६	मापाढमूति चौढालिया			६१७
भारती सग्रह	त्र॰ जिनदास	(हि॰)	३८६	म्राहार के ४६ दोप वर्ण	न भैया भगवती	दास (हि॰)	40
भारती सग्रह	द्यानतराय	(हि∘)	७७७		इ		
•	खुशालचन्द	(हि॰)	७७७	द्दवकीसठाएगचर्चा	सिद्धसेन सुरि	է (গা∘)	२
श्राराधना	_	(সা∘)	४३२	इन्द्रजाल	-	(हि॰)	१४७
यारा धना		(हि॰)	३८०	इन्द्रव्यजपूजा	विश्वभूपण	(स०)	४६२
म्राराघना कथा कोश	_	(स∘)	२१६	इन्द्रव्वजमण्डलपूजा	_	(स०)	४६२
ग्राराधना प्रतिवोधस	तार विमलेन्द्रकीर्त्त	(हि॰)	६५८	इप्रदत्तोसी	वुधजन	(हि॰)	६६१
धाराघना प्रतिवोधस		(हि॰)	६८५	इप्टबत्तीसी	_	(हि०) ७६०	७६३
म्राराधना प्रतिबोध		(हि॰)	७५२	इष्टोपदेश	वूज्यपाद्	(ন৹)	३८०
माराधना विधान	_	(स∘)	४६२	इप्टोपदेशटीका	प॰ श्राशाधर	(स०)	३८०
	देवसेन	(সা৽)	3¥	इप्टोपदेशभाषा	_	(हि॰)	७५५
	७३, ६२⊏, ६३४, ७०	• •	७४४	इष्टोपदेशभाषा		(हि॰ गद्य)	३५०
माराधनासार	जिनदास	(हि॰)	७५७		ई		
ग्राराधनासार प्रवन्ध		(स∘)	२१६	ईश्वरवाद	ਰ	(ন৹)	१३१
भाराधनासारभा प	ा पन्नालाल चौधरी	(हि॰)	38	उच्रग्रहफल	७ यत्तद्त्त	(मः)	२७६
भाराघनासार मा प		(हि॰)	५०	उप्परकृतित च्यादिसूत्रसग्रह	च्याप् प चन्त्रवलद्च	(°F)	२५७
	निका या० दुलीचन			"	गु ण् भद्राचार्य		
ग्रा राधनासारवृत्ति	•	(प०)	•	3	प्रभाचन्द्	(स∘)	१४५
धारामशोभा कया		(स∘)	२१७	1 -	खुशालचन्द	(हि॰ पद्य)	१४५
प्रा लापपद्वति	देवसेन	(a∌)	१३०	उत्तरपुराणभाषा स	स्वी पन्नाताल		१४६
भालोचना	B**Newed	(সা৽)	५७२		-	(সা৹)	· · ·
मालोचनापाठ	जौहरीलाल	(हि॰)) ५६१	उत्तरा च्ययनभाषाटीका		(हि॰)	ą
मालोचनापाठ		(हि॰)	४२६	उदयसत्तावधप्रकृतिवर्ग	i -	(स∘)	₹
		६५४, ७६	३, ७४६	उद्धवगोपीसवाद	रसिकरास	(हि॰)	६९४
माथवित्रमङ्गी	नेमिचन्द्राचार्य	(সা৹) 7	र उद्ध वसदेशास्यप्रवन्ध	_	(स∘)	१६०
भाभववि भङ्गी		(प्रा०)		1	जिनहर्प	(हि॰)	३२४
माथविभङ्गी	-	(हि०)) 7	उपदेशपचीसी	_	(हि॰)	६५६
				- Jacob			

e =]			[शम्बासुकप्रदिध
प्रश्वनाम	होसक	मापा पृष्ठ सं	सम्बन्धम श्रेक्ट माशाहर ^क
इन्देयसम्बन्धाः	सरक्रम्पया	(d) x	व्यक्तियतक स्थलपकृत् विज्ञाता (हि) ११ शी
क्षरेयरलगुला	पर्मशासगिष	(NT) WK	अदयक्षेत्रसूचि जिल्लासेन (d) गर्
द्वारेसरम्यानामाना		(11) 10	1 to
		` '	and the state of t
चप्रदेखस्त्रमानामाना			्रवासम्बद्धाः — (f) १९
इपरेड एन मान्या माचा	_	(Ng.) %	and a sea final
इपरेशस्त्रक	चानवराष (है) ईर्डर करन	Contraction on State 1
स्परियमग्रहान	देशदिका	(Bg) ₹≈	1
चपरेयसम्बद्धाः	रग्रक्षिणय	(fg) t=1	
सरवेषसम्बद्धाः	श्रापि रागचन्त्	(fg) %=	महरित्रकाश्रपुता (में) प्रदेशकारी
सप्रेयविक् रस्यरलना	ना संबारी नेसिक	म (मा) श	
स्परेम सिकाटराज्यमा	रामसा भागवन्य	(N() 1	
क पनास ब्द स्थिति	_	(AT) YE	व्यविनयानपूर्वा सङ्ग्रह्मम् कासमीवास (वि) ^{करा}
कारात के दब घेर	_	(d) Xw1	च्छितमध्यसमम्ब — (त) ^{१६१}
इपनासनिधान	-	(B) Kw!	
उपवाको हा स्पीरा	_	(Tg) w 1	
इएसमें हर स्तोत	पूर्वभन्नाचार्व	(4) 11	
बासर्वहरस्तीय	_	(W) YE	अंदर प्रदे प्रवृद्ध विकास
बरसर्वाचीवदर ण	<u>षुपाचार्य</u>	(W) 1,3	श्रावित्रकातस्तीय ~ (a') ११ ^{६६१}
क्यांवननिवहण्या	_	(d) 111	·
क्याविष्याकरश्च	-	(ef) 1211	एवसीप्रवहतार मीववर्णन 🔭 (है) 🕬
क्रांसराजार	_	(d) t	एकाशरकोध क्यतंत्र (दे) राग
वपावपापारपंजा	चा सदगीयग्र	(97) R	्वाचरमाध्यामा (d) रश
क्पलराध्यल	_	(#) 11	पुराक्रपेशोध बर्फिय (में) रेश
वनेत्रस्तीत	_	(d) will	एकामरोगीय (वे) राग
	ऋ		व्यावरीसीष [वयारावर] (वं) १९
	74,		प्रशेषानस्तीय वादिराज (४) दर्ग
ब्रह्मसम्बद्धाः	श्रमणणम्हगरी	(मा) ११०	व इ. प्रदेश प्रवेश वर्ष व्यवस्था वर्षे
मानु द्वार	कारीत्राध	(4) 641	1
ৰ টোৰশ		(g) ms	Se ala se als
11	~ .		

प्रन्थानुक्रमणिका

प्रन्थनाम

(स∘) ४०१ नागचन्द्रसूरि एकीभावस्तोत्रटीका (हि॰) ३८३ एकीभावस्तोत्रभापा भूघरदाम ४२६, ४४८, ६५२, ६६२, ७१६, ७२० (हि॰) एकीभावस्तीत्रभाषा ३८३ पन्नालाल (हि॰) जगजीवन ६०५ एकीभावस्तोत्रभाषा (हि॰) एकीभावस्तोत्रभाषा ३६३ (स∘) ६४६ एकश्लोकरामायए (स∘) ६४६ एकीश्लोकभागवत आ मौपिधयों के नुमले (हि॰) XUX क (हि॰) FYF गुलावचन्द कक्का कक्काबत्तीसी (हि॰) इ७ह त्र॰ गुलाल कक्कावत्तीसी (हि॰) नन्दराम ७३२ क्वकावसीसी (हि॰) मनराम ७२३ क्वकावत्तीसी (हि॰) **६** ५ १ ६७४, ६८४, ७१३, ७१४, ७२३, ७४१ कनका विनती [वारहखडी] (हि॰) धनराज ६२३ कच्छावतार [चित्र] ६0३ कछवाहा वशके राजामींके नाम --(हि॰) 550 कछ्वाहा वश के राजामोकी वशाविल --(हि॰) 030 कठियार कानहरीचीपई (辰0) मानसागर २१८ हरिपेगााचार्य (स०) क्याकोश 388 कयाकोश [मारधनाकथाकोश] प्र० नेमिद्त्त (स०) २१६ कयाकोश देवेन्द्रकीत्ति (₹0) 388 क्याकोश (40) 388 क्याकोश (हि॰) 388 क्यारत्नसागर नारचन्द्र (स०) २२० कथासग्रह (स∘) 370

त्तेखक

भाषा प्रष्ठ स० .

लेखक भाषा पृष्ठ स० प्रन्थनाम (स० हि०) २२० कथासग्रह (प्रा॰ हि॰) क्यासग्रह २२० (हि॰) कथासग्रह व्र० ज्ञानसागर २२० (हि०) कथासग्रह ७३७ (राज०) क्पडामाला का दूहा सुन्दर् ६७७ कमलाप्टक (स०) ६०७ कयवन्नाचोपई जिनचन्द्रमूरि (हि० रा०) २२१ करकण्डुचरित्र भ० शुभचन्द्र (स०) १६१ करकुण्डचरित्र मुनि कनकामर (भप०) १६१ (स०) करणकौतृहल 308 (সা০) करलक्खरा 305 पद्मनन्दि (स०) करुणाप्टक ६३३ ६३७, ६६८ करुए।पृक (हि०) ६४२ कर्णविद्याचिनीयन्त्र (स∘) ६१२ वपूरचक्र (स०) 308 कर्पू रप्रकरण (म॰) ३२५ राजशेखर कर्नु रमञ्जरी (편이) ३१६ कर्मग्रन सत्तरी (সা০) ₹ **क्मंच्र** [मण्डलचित्र) १२४ कर्मचूरव्रतवेलि मुनि सकलकी ति (हि॰) ५६२ **कर्मचूरप्रतोद्यापनपूजा** लदमीसेन (स०) ४६४, ५१६ कर्मचूरव्रतोद्यापन (स०) ५०६,४६४, ५४० कर्मछत्तीसी समयपुन्दर (हि०) 387 कर्मछत्तीसी (हि∘) 8=€ कर्मदहनपूजा वादिचन्द्र (स०) ५६० कर्मदहनपूजा (स०) शुभचन्द्र ४६५ ५३७, ६४५ कर्मदहनपूजा (स०) ४६५ ४१७, ४४०, ७६१

st•]			[सम्बातुकसम िका
मन्त्रवास	सेक्ड	माया प्रष्ट सं०	मन्त्रनाम क्षेत्रक माचा इष्ट वं
कर्मस्त्रनपुरा	टेकपन्य	(IE) Y4X	क्तवाधेपलिविव — (वि.) प्र ⁽ (
शर्मशक्त (सन्दर्भ वि	_	प्र२४	कविदुव्यपार्ववापपूना स श्रमाणम् (d) ४९०
क्रमें स्थून का नच्छन	_	(fk) 41	ननिकुष्यानर्गनानपूता वशावित्रमः (तं) ११
कर्म रङ्ग्यसम्ब	_	(a) g.m.	नविकुक्तपार्मनासपूता (हि) ११॥
वर्ष थोधर्म वर्शन		(का) ६५६	श्रीवरुव्यवार्वनाम [बंक्सविम]
पर्मश्योती	मारमच	(fg) wee	क्रिकुक्तवार्त्तवानस्त्रवयः — (वं) ११
वर्गप्रकृति	नेमिचन्द्राचार्वे	(ят) ₹	श्रीवहुष्यपूर्वा — (ई) र्राः
नर्मब्रह्मीतवर्गा		(हि.) इ. वर	ANY ESA KAN E & ESA
कर्मप्रकृतिकर्षा	_	(PE) 40	व्यविषुद्याद्वा बार बनयल
कर्ममङ्गतिहोसा	सुमविष्यी व	(#) K	पशिकुष्करतयम
नर्नप्रकृति का स्पौर	- 7	(fit) ⊌t≪	क्रिकुश्वस्त्वचन
कर्नवङ्गतिवर्णन	_	(fk) w∘t	वितर्भारतीय 🔭 😘
कर्मप्रशृतिविद्यान	बनारसीवास	(Bg) %	क्तिकाबीका करी ।
		54 4mm mag	कवितुत्र की क्या हारकादास (मा.)
कर्वचलीची	रामधरुष	(Rg.) 48w	वसिकुर की विनशी हेवाल्या (हि) दूर
पर्वबुद्ध की विनदी		(UE) 44A	£ 17 Aug
कर्वनिवास	_	(व) परश प्रवद	क्षीनम्बरतार [चित्र] (४) सर
क्रमीरशस्त्रवेतः।	एक्सपी चि	(ef.) K	करा, श्रुवा
দৰ্মবিশক্তাকা	_	(fig.) 9m	क्रम्पतिक्रांतर्मम्
नर्वसम्बद्धाः [क्रि	विकास —	(₫) ₹	वस्त्रम् सहसाह (११)
क्रमस्त्रवसूत्र	वेदेणस्त्रि	(बा) १	stells land to I set
कर्मद्विकीश्वना	_	(A) 644	desidential (4)
कर्ती भी १४० म	रविभा	(B) #4	desidation and form
नवस्तियल	भोइब	(4) 744	कारस्त्रमृत्या
वसस्याम	_	(a) Att	desirable [deservers]
क्सप्रसिधि		(a) > 44 £ (a)	143
क्लशिक	निधमूच्य	(4) Ada (BE) Add	व्यवसायकारी विश्ववसागर (d) पर
दसवर्गनेष	प् चारापर		रस्वालगीनर इवंद्याचि (त) ४१
- नमधारीतस्मीमी	वं बाशावर		Ca- 0-

१०३

भाषा प्रष्ठ स० । लेखक प्रन्थनाम (म०) Yaf मन्यारामन्दिरस्तोत्र **कुमुद्चन्द्र** ४०२, ४२४, ४३०, ४३१, ४३३, ४६४, ४७२, ४७४ प्रदेश, ६०५, ६१५, ६१६, ६३३, ६३७, ६४१, ६८० इत्र, इहरे, ७०१, ७३१, ७६३ कल्याणमन्दिरस्तोत्रदीका (40) 357 मल्याणमन्दिरम्तोपवृत्ति देवितिलक (स∘) ३८४ कत्याए।मन्दिरस्तोत्र हिन्दी टीना --(ন০ हि॰) ६८१ कन्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा पञ्चालाल ·(80) 4 = A मन्याणमन्दिरस्तोत्रमापा चनारसीटाम (हि०) なった ४०६, ५६६, ५६६, ६०३, ६०४, ६२२, ६४३, ६४८, ६६२, ६६४, ६७७, ७०३, ७०४ पत्याणमन्दिरम्तोत्रभाषा सेलीराम (尼0) 5=E मन्यारामन्दिरम्तोत्रभाषा ऋषि रामचन्द्र (हि॰) 358 **मत्या**णमन्दिरभाषा (信0) \$ = \$ ७४४, ७४४, ७४४, ७४८, ७६८ प० आशाधर वल्यासमाना स०) ५७४, ३८४ कल्यागुविधि मुनि विनयचन्द (भव०) 288 **फ**ल्यागाप्टकम्तोत्र पद्मनन्दि (स०) 206 (स०) २२१, २४६ षत्यलचन्द्रापण्यतक्या कविक्पंटी (9P) 30€ मवित्त श्रमदास (fgo) ७६५ कवित्त कन्हैयाताल (हि॰) 950 मवित्त केसबदास **(हि∘ ** EX3 कवित्त गिरघर (हि०) ७७२ ७८६ कवित्त भ० गुलाल (हि०) ६७०,६८२ कवित्त छीहल (配) 000 कवित्त जयिकशन (底。) モメヨ कवित्त देवीदास (हि॰) *EUX* कवित्त (fgo) पद्माकर 340

लेखक भाषा पृष्ठ स० प्रन्थनाम **बनारसीदास** (हि॰) ७०६,७७३ गवित्त मोहन (हि॰) ७७२ कवित्त (fgo) **६** = २ मवित्त **पृ**न्दापनदास (हि॰) **६** ह २ गयित सन्तराम (हि॰) ६५६ षवित्त सुम्बलाल (हि०) गवित्त 443 **मुन्दरदाम** संवग (E0) 500 कवित्त - (राज॰ डिगन) कवित्त 000 **(हि∘)** वितत्त ₹ = १ ७१७, ७४८, ७६०, ७६३, ७६७, ७७१ (हo) कवित्त चुगलगोर वा शिवलाल 520 (हिं०) ६५६, ७४३ वित्तमग्रह (हि॰) केशवदेव 158 पवित्रिया (हि॰) हरिचरणदाम ६८८ वयिवल्लभ मिद्धनागार्ज् न (40) २६७ कदापुट (40) २५७ कातन्त्रदीका दौर्गसिंह कातन्त्ररूपमालाटीका (뭐) २५५ यात त्रम्यमालावृत्ति २५५ कातन्त्रविभ्रमसुभावचूरि चारित्रसिंह 240 शिववर्मा (ন০) 348 कातन्त्रभ्याकरसा (स०) १६१ **कादम्बरीटीका** कामन्दकीयनीतिसारभाषा (हिं०) ३२६ (हि॰) कामशास्त्र ७३७ कविद्याल (সা॰) काममुत्र 343 कारकप्रक्रिया (0 H) 325 कारकविवेचन (स∘) 325 कारन समासप्रन रए। (स०) 325 कारम्वानो ये नाम (हि॰) 340 **कार्त्तिकेयानुप्रेक्षा** स्वामी कार्त्तिकेय (प्रा०)

द१२]				[समानुकाविद्य
प्रम्ब शाम	होसद	मावा प्रष्ट सं •	मन्त्रताम स्थाप	भाष पुत्र की
वर्णतने राष्ट्रवेशायी	रा शुभाषात्र	(d) 1 x	इप्लक्षमिक्षीत प्रकीराज राठी	र (राष्ट्र विषय) ४००
कास्तिन समुद्रे का रीन	п —	(#) { Y		
नासिने नानुनेकाका	राज्यपन्द्र अर्थन	ा(हिम्राज) १ ४	कृष्णकामास्त्रिकि हिन्दोटीका विद्या	- (fr) titl
कामसम्बर्गन	~-	(Nr) ww	श्य्यारकालिनहुत पहुस मास्य	
नक्षीनस्पद्यवन्त्रा	-	(Rr) who	क्षण्यानतारिका —	. 11
राजीसङ् कवान		(₹) ₹ €	नेवणकान पर स्पीरा	<i>(</i> %) ≀i
কাই বিজ্ঞান বহু	कारनेका बंग 🛶	(# fk) zeż	वेदशक्तांसरकाय वितदस्य	(%) 1et
क्रम्बरमाध्यीका	—	195 (ii)	गौरमञ्जरो	(前) \$14
गावित रहिन्दित	rt	(Nr) wat	क्षेप्रकृष —	(d) 131
किराजा <u>ई</u> मीव	महाकवि मार्ग	(4) 145	धोरगार बामल्	(का) सम
बुक्तमा स्त्र	_	(fg) XF	क्षेपसार	(वि) सर्व धर
	स विश्वमृष्ण	(#) YW	वोजिनारक्षनीच्या म हर्वो	(jk a) 54z
बुच्यसिया	श्चगरमाम	(fg) 10.	रोपुरराजनकृता	(lik) met
दुरेशस्त्रदावर्तम	_	ाशि थर	वीनुवर्गभाषती <u> </u>	(4) *
बुबारसम्बद	काकिदास	(म) १६१	क्रीमुधेस्वा बार यसक्रीर्चि	(#) ^{२१२}
बुमारसम्बद्धीया	कनकसागर	(d) 111	रक्रिरत्वतीयगरपुता समिवसीरि	
बु वस्तमान्त्व	च्यपंत्र शीक्षित	(ri) k =	विक्रमहानेयरस्य —	(4) 441
कुश्चय ाना च	~	(ਰ) ₹		445, 210
कुवलवलन्दर ा रिक		(F) 1 L	गांगीबारत (मध्यम विष) —	181
बुधसस्त ्यम	क्रिनः क्रमृरि	(1) ass	वरणीवरोद्यारणसम्बन्धुः —	(4) 111
- Tuntari	समयसम्बर	(R) ***	क्रियाक्रमाच	(4) 24
दुषसारपुर्वाच मार	मर्ग	(m) tr	विवासकारहोणः प्रभाषम्	
दुर्यानसञ्जन	वकात	(¥) 11	विवारकारवीका —	(e) XI
इक्टा व		(લં) ૧૫૬	क्रिसरमास्त्रीय	
इ न्छ क्र	ठक्द्रश्मी			(ft) x0 412
इ न्स् य ्	चन्द्रकीचि		विमानोधवाण	(ft) 11
पृत्रदारकी नी	िमोदीबास	(B) 611	विकास कियों के १६ कर -	(fe) est
शुभनुत्रेवाङ्क	-	(fg) wt	संदेशनामनाताचीय की शम्बाक	(\$t) YM
इ म्ल रहा दिनाच	भी विश्वनतास		व्यपपुरामास वावीमसिंद	(4) 111
- FIRST	-	(B() with	क्षपेतासस्माः	(4)
٠,			-	•

प्र म्थानुक्रमणिका	1					[=	१३
			1	************	लेखक	भाषा पृष्ठ	. Ho
प्रन्थनाम	लेखक २	भाषा प्रष्ठ	ਚ° /	ग्रन्थनाम	ए।पन	भाषा पृष्ठ	सण
क्षपणासारवृत्ति मा	वबचन्द्र त्रैविधदेव	(ep)	७	म्बण्डेलवालोत्पत्तिवर्णन		(हि॰)	३७०
क्षप्गासारभाषा	प० टोडरमल	(हि॰)	v	खण्डेलवालो की उत्तरि		(हि०)	७०२
क्षमाञ्जतीसी	समयसुन्दर	(हि॰)	६१७	खण्डेलवालोकी उत्मित	ग्रौर उनके ८४ गोः	य — (हि) ७२१
क्षमावत्तीसी	जिनच न्द्र सूरि	(हि॰)	26	म्बण्डेला की चरचा		(हि०)	७०२
क्षमावस्रोपूजा	व्रह्मसेन	(स∘)	838	खण्डेला की यजाविल	_	(हि॰)	७५६
क्षीर नीर		(हि॰)	७६२	ख्याल गागाचन्दका	_	(हि॰)	२२२
क्षीरव्रतनिधिपूजा	-	(स∘)	५१५		ग		
चीरोदानीपूजा चीरोदानीपूजा	स्रभयवन्द	(स∘)	६३७	गजप थामण्डलपूजा	भ० सेमेन्द्रकीर्ति	(स०)	४६=
क्षेत्रपाल की मारती	_	(हि॰)	६०७	गजमोक्षकया	_	(हिं °)	Ęoo
क्षेत्रपालगीत	शुभचन्द	(हि॰)	६२३	गर्जासह कुमारचरित्र	विनयचन्द्रसूर	(स०)	१६३
क्षेत्रपाल जयमाल	-	(हि॰)	७६३	गढाराशांतिकविधि		(स。)	६१२
क्षेत्रपाल नामावली		(स∘)	३८६	गग्धरचरगारविदपू	ना	(स०)	४६६
क्षेत्रपालपूजा	मणिभद्र	(सं∘)	६८६	गग्पधरजयमाल		(সা৹)	४६६
क्षेत्रपालपूजा	दिश्वसेन	(स∘)	४६७	गग्धरवलयपूजा	शुभचन्द	(स०)	६६०
क्षेत्रपालपूजा		(स०)	४६५	गराधरवलयपूजा	छाशाधर	(म∘)	930
**	५१५, ५१७, ५६७,	६४०, ६५!	८, ७६३	गरावरवलयपूजा	-	(स∘)	४६९
क्षेत्रपालपूजा	सुमतिकीर्त्ति	(हि॰)	७१३	_	४१४,	६३६, ६८५	¹ , ७६१
क्षेत्रपाल भैरवी ग	ोत शोभाचन्द	(हि॰)	७७७	गराधरवलय [मडर	नचित्र] —		128
) क्षेत्रपालस्तोत्र		(स∘)		गराधरवलयमन्त्र	-	(শ০)	0 03
r ! }	५६१, ५७५,	• •		गग्ाघरवलययन्त्रमङ	ल [कोठे] —	(हि०)	६३८
: क्षेत्र पालाप्टक	-	(स०)		गरापाठ वा	दिराज जगन्नाथ	(स∘)	३४६
क्षेत्रपालव्यवहार		(स∘		गरमसार		(स०)	४४
क्षेत्रसमासटीवा	हरिभद्रसूरि		•	गिर्णतनाममाला	-	(स०)	३६८
क्षेत्रसमासप्रकर र	•	(সা ৹		गरिएतशास्त्र		(स०)	३६८
	ख	•	•	गिर्गितसार	हेमराज	(हि०)	
				गगोशछन्द		(हि॰)	
म्बण्डप्रशस्तिकाव		(स	•	1		(स०)	
सण्डेलवालगोत्र		(हि _ं				(स ०)	'
सण्डेलवाली ने	द¥गात्र —	- (हि	0) 68	० गर्गसहिता	गर्गऋपि	(स ०) २५०
4							

etr]					ſ	वस्यानुस्वरिया
मन्द्रमाम	岩神 家	माया पूर	Ħ	मधनाम	होतक	ँमाचा १३ ह
यर्भशस्याग्रहस्यिये व	तियौ —	(fir)	241	कुगुम्बान्यलय	_	(Sr) t
पर्भवदारबङ	देवनस्दि	(#) tat	wis	पुश्चस्य ज्ञान ्य अस् वा	_	(∉) til
विरनारतेषपूत्रः य	• विश्वमृषस	(4)	YHE	पुरगात रमाला	मनराम	(\$t) A
विरमार के ण्यू श	_	(ft) 492,	115	पुरावनी	_	(#) \$16,51
विस्तार देश्य ा	-	(Fig)	235	Acabe	धामदराष	(Fg) 1933
पिरिनारवाशक्तीन	-	(N;)	73#	पुरपन्द	शुभकार	(4) H
शी त	कवि वस्ट्	(ft)	91	कृष्टमयम्। व	त क्रिक्शम	(F) 110
मीव	ममेकीर्च	(R()	wrt			દુ દુ થી
€ीत द	ांड नाम्राम	(fit)	553	बुबवेद की विनती		(12) * 1
गी य	विधानुक्त	(fk)	4 .	पुरमाभाषभिक्त्य	_	(4) 11
ৰীত		(Fg)	#¥f	पुरुगारतन्त्र एवं बत	स्तर स् जिमर् चः	rt (fr) 111
बॅलयोरिड	अध्येष	(a)	252	प्रधाना	विवश्य	(fr) x11
गी तप्रयन्द	~	(#)	1.5	दुर्ग्यसम्ब	_	(4) (4)
वीचवङ्गम य	_	(4)	649	क्षत्रसङ्ग्रमान		(4) 12
नीगरीवरात स्रक्षि	नवका हरी सि	(*)	ţeţ	बुरस्याम	शोविदास	(4) 411
दुलबेनि [बन्दनबाना	क्षक) —	(ft)	121	दुरस्पृति	_	(#) E>
पुराचे नि	_	(fit)	444	बुरस्पूर्वि	भूबरदास	(Fg) {t
इ गानक्ररी	-	(fk)	31#	٧	to and eth	424 662 4 1
द्वारम नवन	-	(d)	110	बूदमी की किनती	_	(f() 4eg
ड्रा क्तवानबीच	भीषयः न	(nc)	*(1	इत्यों की लुवि		(4) (1)
दुगल्यलङ्गारीहर्न्	रक्षशतार	(4)		दर्शहरू	वादिराज	(4) (1)
द्वरास्त्रभावयां	_	(RT)	£ a	पूर्गार [ी] व		(4) 1115,111
बुशस्त्रानवर्ष	वाग्रकीरि	(N;)		पूर्वांग्लागुत्रा		(4) xtt
बूरण्याच्याच		(fg.)	pre	पुर्वांचनी रर्खन	_	(fc) (s)
रूमसारवर्षा	-	(4.)		बोर्नवांक्षी गीना		(\$\dag{\$\psi\$}\) 110
बु टास्थानप्रदरना	-	(4)	5	बोधबरमार (वर्षकार	त्र] नेक्षिणहामा	र्व (गा) ^{११}
दुत्तस्यलयाः दुत्तस्यलयार्गताः	_	(4) (fr.)	ĺ	वोध्यद्रबार [यर्वेगाव		
दुराजातमञ्जा बुराजातमार्गमा	, –	(4.)	- 1	नोध्यदमार विशेषां		2 (4) 1,
दुम्म्युप्तरार्थन	_	(4)	اي	नोध्नानार [पर्नेपांड	-	(4) 11
-		. ,	_		-	

घउसरप्रकरण

चतुर्गति की पढ़ही

वतुर्दशगुरूस्गः**नच**र्ना

चतुर्दशतीर्थ द्वरपूजा

चतुर्दशमार्गगा वर्चा

चतुर्दशागबाह्यविवरण

चतुर्दशसूत्र

चतुर्दशसूत्र

चतुर्दशीकया

\$ \$ 3

£20

६१८

६१८

220

(हि०)

(हि॰)

(हि॰)

(₹0)

गोडीपार्श्वनायस्तवन समयसुन्दरगिः (राज०) ६१७ ६१६ गौतमकुलक गौतमस्वामी (সা॰) १४ गौतमकुलक (সা০) 28 गौतमपृच्छा (সা০) EYB गौतमपृच्छा समयसुन्दर (हि॰) 387 गौतमरासा (हि॰) 8×8 गौतमस्वामीचरित्र धर्भचन्द्र (स∘) 833

गौतमस्वामीचरित्रभाषा पन्नालाल चौधरी (स॰)

समयसुन्दर्

गौतमस्वामीरास

गधकुटीपूजा

गौतमस्वामीसज्काय

गौतमस्वामी सन्भाय

(प्रा०) 48 १०५ चक्रवित की बारहभावना चक्रे श्वरीस्तोत्र (स∘) ३४५ ३८७, ४३२, ४२८, ६४७

विनयचन्द्र

टीकम

(भ्रप०)

(हि॰)

(स०)

(हि॰)

(Ho)

(সা৽)

(स०)

(हि०) ७४४, ७७३

६४२

६८४

६७२

६७१

14

14

1 Y

e48]					ſ	प्र ग्वानुक्रम विध
मन्त्रमास	संसद	मापा प्र	ए स	। मन्त्रज्ञाम	सेतव	सामा पूर व
यर्वकस्यात्त्रकृतियारै ।	र्राधमा —	(fg)	X w R	}	****	(ft) (
वर्तपदारचळ	वेषनमिक	(11) 531				•
मिकाओस्पूजा व	। विश्वमूपया	(4)				(a) til
पिरवाळीवपूजा		(gt) set		a dimension	सनराम	(1) H
विरनारकेत्रपूजा	-	(f)r)	, 11		~-	(#) 115,14
विधितास्या वर्त्तन	_	(B _E)	984	इ रसष्टक	वामदराव	(A) AN
बीध	कवि पश्च	(fig.)	91	3.44	ा सचन्द	(St) 14
नीव	वमेकीर्थ	(Rc)	at.	पुरंगवयान	त्र विक्सास	(U) 644
बीख	शंडे नामुराद्य	(fit.)	577	1		tar of
बीव	निषाम्यस	(%)	4 9	Reed on takel	_	(B) w1
ग रेत	1141414	(%)		३ पगानवि क् य	_	(R) 14
गी तयोगिष	स्यक्त	(ei)	844	इस्पाध्कन एर्थ वत		
भीवस्था	-144	(8)	-	प्रसूता	जिन् हास	(fg) th
गीतमञ् गतम्	_	(4.)	1 5	पुरमुक्छक	_	(4) 44
बीक्बीवराव स्रसि	नव चा हवी कि	(4)	1.5	हरतद् सनाग	_	(g) (40
इलबेनि [पम्यवदाना		(%)	493	इ रस्तेषम्	शांविदास	(4,) 410
द् र ापेति	·	(ft)	441	इस्त् रुवि	_	(d) (+
ई सन क री		(Ar.)	988	प्रन्द्वति	भूषरदास	(fit) ex
∰क्तरवरम	~	(4)	150	1	in and tix t	
g জুল সংগীত	লীবয় ন	(fir.)	*11	इच्यो की विनदी	_	(g) (t)
\$ रस्यामकारोहसूच	धारागर	(d)	-11	प्रस्थों की स्पृति	_	1- 1
इस्थम चर्चा	_	(III.)	42	प्रविद्या	वातिराम	(#') (t*
⊈स्त्या नचर्चा	चन्त्रधीर्त	(Nc.)		पुर्वाचित	- 6	(4) sts
⊈ हस्यान कर्या		(fig.)	974	प्रकारतातूचा		(4)
⊈गुस्यलयर्था	_	(4)		प्रवीनशीवर्शन		(14.)
⊈क्ष्यलयस्य	_	(#)	(ء	नोकुलनावरी बीला -		(-4 /
\$रास्त्रालमेश -		(#)	- 1	नीम्मरकार [कर्मसाध्य	-	(41.)
इ फ्ल्बलनलेखा	-	(fg:)	- 1	वीम्बरसार [वर्शवां व]		
द्वगुल्यालयार्थका स्वका		(10)	- 1	वीस्मदक्कार [वसकांक]	-	(i) (t)
रुक्तवागरर्श्चव व	_	(d)	£ 1	थीम्परछार [पर्यशंज]	धीना —	(4) ts
The second of th	~~.					

						r	_
न्यानुकमणिका]						[=	१७
ग्न्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	स०	प्रन्थनाम	लेखक	भापा ष्टष्ठ	स०
दनषष्ठीम्नतपूजा	चोखचन्द	(स∘)	४७३	चन्द्रहसकथा	हर्पकवि	(हि॰) ५	४१९
दनपष्ठीव्रतपूजा -	देवेन्द्रकीर्त्त	(स o)	४७३	चंन्द्रावलोक		(स∘)	30€
न्दनपष्ठीम्रतपूजा	विजयकीर्त्ति	(स∘)	४०६	चन्द्रोन्मीलन		(स०)	३४६
न्दनपष्ठीव्रतपूजा	शुभवन्द्र	(4 o)	४७३	चमत्कारमतिशयक्षेत्रपूजा		(हि॰)	४७४
न्दनपष्ठीव्रतपूजा	-	(स∘)	४७४	चमत्कारपूजा	स्वरूपचन्द	(हि॰)	५११
न्दनाचरित्र	शुभचन्द्र	(₹०)	१६४			₹£₹, 1	3 X e
न्दनाचरित्र	मोइनविजय	$(a \circ)$	७६१	चम्पाशतक	चम्पाबाई	(हि॰)	४३७
। न्द्रकीत्तिछन्द		(féo)	३८६	चरचा		(प्रा॰, हि॰)	६६५
ान्द्रकुवरकी वार्त्ता	प्रताप सिं ह	(हि॰)	२२३	चरचा		(हि॰) ६५२,	७५५
वन्द्रकु वरकी वार्ता	_	(हि॰)	७११	चरचावर्शन		(हि॰)	१५
वन्द्रग्रुप्त के सोलह स्वप	т —	(हि॰)	७१=	चरचाशतक	चानतराय	(हि॰)	१४
		७२३	, ৬३८	1		£88,	¥30
च द्रगुप्तके सोलह स्वप	नोकाफल —	(हि॰)	६२१	चर्चासमाधान	मूघरदास	(हि०)	१
चन्द्रप्रज्ञप्ति	_	(গাং)	385			६०६, ६४८,	५ ३
चन्द्रप्रभचरित्र	वीरनन्दि	(स०)	१६४	चर्चासागर	चम्पालाल	(हि॰)	१६
चन्द्रप्रभकाव्यपञ्जिका	गुणनन्दि	(स∘)	१६५	चर्चासागर	_	(हि॰)	१६
चन्द्रप्रमचरित्र	शुभचन्द्र	(स०)	१६४	चर्चासार	शिवजीलाल	(हि॰)	१६
चन्द्रप्रमचरित्र	दामोदर	(মণ৹)	१६५	चर्चासार	_	(हि॰)	१६
च द्रप्रमचरित्र	यश कीत्ति	(भप०)	१६५	चर्चासग्रह		(स॰ हि०)	१५
	यचन्द् छाबडा	(हि॰)	१६६	चर्चास्यह	_	(हि०) १५,	७१०
चन्द्रप्रभचरित्रपञ्जिका -		(स०)	१६५	चहुगति चौपई		(हि॰)	७६२
चन्द्रप्रभजिनपूजा	देवेन्द्रकीर्त्त	(स०)	808	घाण्यमीति	चाग्वय	(स∘)	३२६
च न्द्रप्रभजिनपूजा	रामचन्द्र	(हि॰)	Y0 Y			७२३,	
चन्द्रप्रमपुरारा	हीरालाल	(हि॰)	१४६				३२७
चन्द्रप्रभपूजा चन्द्रलेहारास		(स०)					३२७
	मतिकुशल	(हि०)					ሂሄፍ
च द्रवरदाई की वात् चन्द्रसागरपूजा	11	(हि॰)			पृथ्वीधराचार्य	(स०)	३५५
यन्द्रसागरपूजा यन्द्रहसकया	— ਜੀਵਾਸ਼ਾ	(長o)		,	_	(स∘)	६०८
	टीकमचन्द	(१६०) ५२	४, ६३६	' चारभावना	_	(स∘)	ሂሂ

stf]		1	मन्यानुक्रमविका
ग्रन्थनाम क्षेत्रक	मापा प्रमु स	मन्धनाम संसद	भारत पृष्ठ सः
बर्तुसीरवा शास्त्राम	(fit) are	च्युनिवर्षितीर्वद्रात्मक चन्द्रकीति	(d) ter
चर्तुर्वशैविचानक्या —	(ख) पृष्	चतुर्विद्यविषुत्रा —	(fg) Yat
चनुर्दमीद्रतपुरा —	(4) AdE	শুৰিঘবিজ্ঞবিদ্যান —	(N) 177
ৰদুবিৰাদান	(a) 3 x	चपुर्विसरिविवती चन्द्रकारि	(t) (t)
बहुबियाँत गुज्जकीर्ति	(f(c) = t	चर्जनसरिवयोधास्य	(a) ₹H
क्तुविद्यविद्वन्तुस्वानगीविद्याः —	(₫) १=	ব্যুবিয়াটবেলক সমিৰস্যাদাৰ	(sa) t
बनुविद्यतित्रवयम् यति माघवदि	37Y (19)	पशुर्विधानिसपुरुष्टरा —	(r) tt
कार्विकतिवित्रकृता रामचन्त्र	अर्थ (आहे)	বদুবিদ্বতিবেশ —	(e) tes Ytt
क्तुरब्रिटिनियसम्बद्धिः जिवसिंहस्पि	(fg) we	न्त्रृषियक्तितृति —	(ता) भ≓
भनुन्दिसतिविवस्तवन अयसागर	(fg) 414	चपुर्विचितालुकि विनावीसास	(SE) #14
वनुदिव्यक्रिकिनमृति जिनसामस्रि	(E) 1 h	नपुनिवासिस्टोन सूबरदास	(JE) A45
क्पुनियतिवित्रगत् स्थापनम्	(H) XW	च्युत्वीचीचीवा —	(4) 111
क्नुदिस्तितीर्वेषुर वयनाथ 🗼	(NI) ###	चनुत्रपञ्जीसतीय	(H) 468
वनुविष्यवितीर्वद्वरपुरा — (त) AB - £AK	चनुप्तरीस्तीय	(A) 2 ca
वतुर्विश्चनितीर्वञ्चरपुत्रा न तेषम्ब् पाडनी		रणकरा सरमय	(A) ale
क्तुनिव्यविक्षेत्रेष्टुरपूरा वस्तावस्ताव	(B) 108	करकु बर की पार्टी 💝	(pt) ags
चनुविचतितीर्वद्वरपूरा सन्दर्भाज	for (3)	चन्द्रवस्तारम् —	(A) 111
क्तुविश्वतितीर्वञ्चरपुत्रा रामचन्त्र	(gt) Ans	बन्दनजनवर्श्वधीयया धनुसेन	(दि) रश
बतुर्विद्यतिदीर्वेषुरपूरा बुम्बावन	(H) set	चन्दनजनसम्बद्धियोग्या चतर	(कि) स्थ
वनुविद्यतिवीवकूरहरा सुरानवान्	(g) And	नन्दननगरियेक्या	(E) ate
बनुदिमातिनोर्बद्धारपुना संबाराम साह्	(fg) Ye	नन्तनवित्तना त सुरासागर (र	2) 544 FM
वनुविधितिवीर्वद्वरपुर्वा —	(ft) Yet	वत्तनपष्टिचया	(सं) दर्दे
क्षुविद्यांतर्वार्वपुरमाधन हेमविमसस्पि	(ff.) A43	क्त्यक्वहिक्त्रा एं इरियम्	(44) 515
क्युविसात्रश्रेषं प्रस्तात क्रमकविक्रयगर्वि		पन्तवद्वीपूर्वा सुरशसम्म	(A) the
क्तुविधिततीर्वकुरल्युवि जन्म		भवनवद्वीविद्यानवयः —	(mr) fri
पनु विम्नतितीर्चेष्ट्ररलुपि समन्तमङ्	. (क्यनगद्गीतराया था स्थासेथ	(ii) 111
	- 1	करनस्थीवनस्था भृतसागर	(d.) 1544 (d.) 165
-		चनवच्योत्रस्य मुख त्रव म्	स्य स्य (ति) स्थ
वनुविधारितीर्वेषुसरवीत्र —	(4) 1 1		411 7.

भाषा क्रमस

नेसक

यः पा शुक्तमाल्यम	J			
प्रन्थनाम	लेखक	भाषा	व ेठि ४०	प्रन्थनाम
चैत्यवदना	सकलचन्द्र	(H o)	६६८	चौत्रीसतीर्यद्वररा
चै त्यवदना	_	(4 o)	3=6	चौबीसतीर्थं द्वरव
		३६२, ६४०	, ৬१=	चौगीसतीर्थङ्कारम्त
चैत्यवदना		(हि॰) ४२६	, ४३७	चौबोसतीर्थं द्धरम्त
चौमाराधनाउद्योतककथ	। जोधराज	(हि॰)	२२४	चौवामतीर्यं द्वारस्त
चौतीस मतिगयभक्ति		(स∘)	६२७	चौबीमतीर्यद्वरम्न
घौदण की जयमाल		(हि॰)	७४२	चौबीमतीर्थं द्वारस्य
चौदहगुग्गम्यानचर्चा	श्रवयराज	(हि॰)	१ ६	चौबीमतीर्यं द्वारन्त्
चौदहपूजा		(स०)	४७६	चौबीसतीर्थन्द्वरा
चौदहमार्गणा	_	(हि॰)		चौवीमतीर्यंद <u>्</u> यरावि
चौदहविद्या तथा कारर	।।नेजातने नाम	— (हि॰)	७४६	चीवोसतीर्घद्धरो
प ौबोसगण्धरस्तवन	गुणकीत्ति	(हिं०)	६६६	चौवीसदण्डक
चीबीसजिनमातपितास्त	वन छानस्यस्	रि (हि॰)	६१६	पापासदण्डक
चौबीसजिनदजयमाल	_	(भप०)		1-2
चौवीसजिनस्तु ति	सोमचन्द	(हि∘)		चीबीसदण्डकविच चीबीसस्तवन
चौवीसठाएगचर्चा	_	(स॰) १६		1
चौवीसठागावर्षा ने	मिचन्द्राचाय	(গ্লা৹)	१ ६	चीवीसीमहाराज
			, ६६६	चीबीसी विनती
चौबीसठाएगचर्चा	-	(हि०)		चीवासीस्तवन
६२०), ६७०, ६=०	\$=6. \$ 6.	. uez	चौबीसीस्तुति
चौबीसठाएगचर्चावृत्ति	_	(स∘)	१न	चौरासीमसादना
चौबीसतीर्यद्धरतीर्थंपि	चय	(हि॰)	-	चौरासीगीत
चौवीसतीर्थसूरपरिचय				चौरासीगोत्रात्यत्ति
	***************************************		५६४	चौरासीजातिकी ज
चीतीसतीर्श्वकणाः [-		६२१, ७००	, ७५१	चौरासोज्ञातिछन्द
चौवोसतोर्थद्धरपूजा [स चौबोसतोर्थद्धरपूजा				चौरासी जातिकी
गमावताय द्व रपूजा	रामचन्द्र	,		चौरासीजाति भेद
-2 A-whele		७१२, ७२७		चौरासोजातिवर् शन
चौबीसतीर्थ द्ध रपूजा	_	(हि॰) ५६२	, ७२७	- चौरासीन्यात की ज
चौबीसतीर्थक्करभक्ति	-	(स०)	Eor	, चौरासी यातमाला

	í			
६६=	चौत्रोसतीर्थद्धरराम		(हि॰)	6-
3=€	चौबोसतीर्थं द्धरवर्णन		(हि॰)	¥₹¢
े द	चौगीसतीर्थः द्वारम्तवन	_		Ęos
४३७	चौबीसतीर्थद्धरम्तवन लृग्	कर् णकामल	निवाल (हि	(o) ¥
२२५	चौवामतीर्यः द्वरस्तवन			£y a
६२७	चौबीमतीर्यद्भरम्नुति	-		६२५
७४२	चौबीमतीर्थं द्वारस्तुति	नहादेव	• •	ΥĘ
१ ६	चौबीमतोर्यद्भरग्तुति	-	(हि॰) ६	
४७६	चौबोसतीर्थद्धरा के चिह्न		•	६२३
१ ६	चौवीसतीर्यद्धरांवे पञ्चकत्या	ग्गक की तिथि		
३४७	चीवोसतीर्घद्धरो की वदना			
६८६	1	ो लतराम		
६१६	1	?E, ¥¥5, !		
७६३	चीगीसदण्डकविचार	_		., ७२० १३
¥3७	चीवीसस्तवन	_	, , ,	३८६
७६५	चौवीसीमहाराज [मडलचित्र	r) —	. ,	४२४
१ ६	चौबीसी विनती भः	•	f <i>≅</i>)	
६६६	चौवासीस्तवन ज	यसागर	f <i>≅</i>)	300
१ 5	चौबीसीस्तुति	- (हि०) ८३७	, ७७३
35 6	चौरासीभ्रसादना		(हि॰)	90
१५	चौरासीगीत	_	(हि॰)	६८०
७६४	चीरासीगोत्रात्यत्तिवर्णन		(हि॰)	७८६
८६४	चौरासीजातिकी जयमाल वि	नोदीलाल	(हि॰)	०७६
१४९	चौरासोज्ञातिछन्द		(हि॰)	३७०
৽ৼ	चौरासी जातिकी जयमाल	_	(हि॰)	७४०
33	चौरासीजाति भेद		(हि॰)	७ ४५
१	घोरासोजातिवर्णन		(हि॰)	७४७
२७	चौरासीन्यात की जयमाल	_	(हि०)	७४७

त्रश्जिनदाम (हि॰)

st=]				[म	ग्वातुबद्धीत्व
प्रस्थाम	सेवय	भाषा प्राप्त	सं∘	धरभवाम सत्तव	माचा ११ ई
चारमञ्जूनी पञ्चनी नि	ব্যব্যিক]		t 2x	विन्तामस्त्रियासर्वनासपूर्वा एवं स्त्रीत क्षर	रिक्टेब (१ /४१)
चारमियों की क्या	चावपराज	(fig):	११%	चिन्तायश्चित्रसर्वनामपूचास्त्रीतः —	(4) 10
वारिकपुत्रा	_	(8,)	4 24	चिन्तायविशासम्बन्धस्त्रमः —	(#) 171
वारियमक्ति		(E) 570	521	भिग्तामरितपासर्वनागस्त्रथम काल्यम्	(सर) ११३ (सर) वरी
	तकाब चौपरी	(Nr.)	77	क्षितायविह्यसम्मानस्त्रम्	
बारिवयुद्धिविचान	बीभूपख	(ei)	797	भिनामकिरासर्वनायस्त्रीय ·	65× 45 (4) 3/1
वारितवुकि विना न	शुभवन्द्र	(4)	wt		(4) 1= 7
বাংসভুৱিবিদান	सुमतिकका	(4)	Yet	विन्तावरिक्तासर्वनावातीय (नय विक्रिः)	
-	रीसवागुवहराय	(#)	χX	चित्रजलिपुरा (इहर्) विद्याम् पदम्	(d) (m)
बारिषसार	_	(8,)	25	भिवायवि पूर्णा —	(4) 14
वारिवसारमाना	भनावास	(Nr.)	χÇ	क्रिटामण्डिक न	(6) 14
वास्त्रदार्थार	परवास्त्रकीर्यि	(ft;)	114	विन्तागरिक्तन ब्रह्मीसेन	H# (%)
वास्त्रसम्बद्ध	वर्षकांक	(R()	375	1	(n) 10°
पास्तवरित्र	माराम क	(Nr.)	124	विम्हायक्तिरहोत्	Yet, 171
वार्धे विश्ववेदी धर्म	[मार्थिका कर्णक	(N∈)	*11	विद्यितियांन शीपचन्य कासवीवार	4 7
विक्तित्वाचार	_	(Nr.)	339		(पर) दर्ग
विकित्तांत्रवत	डपाम्माव विधार्पा	चं (व)	₹₹	पूरती वितयपन्त	(64) (62
वित्र गीर्वदूर	_		257	भूत्याराव विनवचन्द	(a,) sta
विवयमस्त्रीम	_	(q.) s	f Adé	बूर्णिवरार	R() { \$ (et
विवयेतसम्बर	-	(d,)	542		(3) 4(5
नित्र पत्रस्थ	-	(R)	• •	केन्त्रजीतः जिमग्रास	(ग्री) करेव
বিভাগতিখনদল	ठ पड ़्स्सी	(Nr.)	wit	वेननबीत सुनि सिंद्यनिर	(SE) 418
विद्यागर िक् स्वरामा	अ शामसङ्	(NE)	422	वितनवरित अगवतीवाम	dat age
বিশ্বনাজিগৰণাল	मनःष	(Ar)	444		(E) re
विश्वासीस् रास्त्रीयाः		(err)	16A.	नेवच्यान पर्राडमस	(a) 110
विन्दान शास्त्रवास		(179)	66 5	वित्रवाधिसामान	(LE) ASA
विन्तानन्तिवर्गनाः -		(ef.) (ef.)	ų Vat	विश्वनानीतः नाम् विश्वनानमामः सम्बद्धन्तरः	(ft.) +to
সিংবাদ ভি ৰা ন	स्तुना शुक्षचन्त्र	(") \$ \$ \$YX		वेस्कारियाती स्वयं	(ft) Afa
		, , ,,,,	,		

(हि•) जिनपचीसी व मन्य सग्रह (हि॰) ४३८ जिनकुशलसूरिस्तव**न** (हि॰) ६१५ जिनपिंगलछदकोषा (हि॰) ७०६ जिनग्रुएउद्यापन (हि॰) ६३८ जिनपुरन्दरव्रतपूजा (स∘) 805 जिनगुरापचीसी सेवगराम (**爬**0) 886 जिनपूजापुरन्दरकया खुशालचन्द (हि॰) २४४ जिनगुरामाला (हि॰) 3€0 जिनपूजापुरन्दरविधानकथा श्रमरकीत्ति (ग्रप०) २४६ जिनगुगासपत्ति [मङलचित्र] — **478** जिनपूजाफलप्राप्तिकथा (स∘) **४७**5 जिनगुरासपत्तिकथा (स०) २२४, २४६ जिनपूजाविधान (हि॰) जिनगुरासपत्तिकया ब्रव्हानसागर ६५२ (हि∘) २२८ जिनपञ्जरस्तोत्र कमलप्रभाचार्य (स०) ३६०, ४३२

4 2]					1	सम्बामुक्यांकृत
** 1				_	ı	Hard (Same)
धरवनास	शेसक	मापा पुर	र स	मम्बदाम	क्षेत्रक	मारा 👣 🕫
शोराधीयोग	क्षरपाक	(fk)	w t	व्यक्तिरोग ग	स्रोगनाम	(fg) axt
भौरम्धीसम्बद्धर हत		(fk)	1,0	जे रसप्त <u>ा</u>	_	(∦ા ≀ાર
পানত সংশ্লিপুলা	स्वरूपचम्	(fir)	705	धरानुसाधनवृत्ति	हमक्त्राकार्य	(#) a t
चोब ठकसा		(ft)	1.5	- सर्थतर	इवडीवि	(∉) 14
चौत्र क्षोवित्रीकत		(4)	1.1	}	ज	
चीडस्तो यिनीस्तोत्र	_	(वं) १४८	ALK	वस्त्री	≢विरक्ष	(fg) wat 44t
पीसर्वविषयुगार सारी	भी पुना समित	क्रीचि (वं)	REV	वस्थी	चानस्ताव	(8) 64
	_			1 - 1 - 1	4/444/4	gri utt
	哥			यक्ती	देवेष्ट्रकीर्वि	(fg) 411
क्का बारा ना विश्वार	_	(fit)	ţo.	नकारि	अभिकर	(R) 413
क्षतीय शास्त्रामंति गा		(fig)	4	गक्यी	राम कृ ण्य	(fg.) v1
प्रदेशका	किसन	B()	ter.	गफरी	क्राचम्	(fg) ex
MENT	चानचराव	(R:)	42.9			ddi add agg
-		THE THY	MA.	बकरी		(fg) =(1
WESTER	रीक्र वराम	R _(j)	1/0	वक्तावकाराक्क्क	~ ~	(B) £ \$
		9+9	wat	वयश्रावस्थ	शक्तुराणार्थ	(4) fer
क्क्सभा	बुधवन	(fit.)	20	बागार्चु क्ली [बहार	(वा समा र्द वक्तरि	() - () and
भारतेनुक्को भीववि क	नुबका —	(fk)	१७३	वनाकु क्लीविचार		(B() ६ ग
क्रियर क्षेत्रपता थ पी	रीस वीर्ण 🖫	गंडलविष] ∽	१२१	सम्बद्धी दीवास स	ाननीत्राम —	(#E) Ar
क्रियाची चङ्गल		flg)	XdA	वासूचुमारसम्बद्धान	***	(Nr.) YEE
विमा नीसस्या	अ राजनका	덕)	44	बम्भूद्रीवपूजा	पृष्टि विनद्श्य) β, β, β, βα (α) γαφ
क्षिमानी चक्रमणाचर्ना	~~	(भं)	- १६			(M) 416
व्यविषय व	प्रभूतमिष्	×1)	X*	वान्तृहीरमञ्जीत	निविष्यात्राय	(#) {t
बोद्यावर्धन	नुधवन	(fig.)	464			(fg) w12
बोटॉरियाध्क्रियि		(fig.)	Sed.	बामुद्रीय सम्बन्धी व		(4) 600
व्यवीवनविता स	हरेण्यकीशि		9XX	वसूरवारीवरिष		(4) 144
संस्थीय	_	(4)	11	क्षम् _{रवा} कीवरिय		(a) (a)
Mary at	रक्राक्षरस्	(4)	3 6		विश्वयकीर्यः 	
	कृत्यावज्ञास	(FE)	44.0	बन्दूरवाणीयरिणवाः	स प्रकासिक नान	

	-					_		
भ्रन्थनाम	7	तेसक	भाषा प्रष्ठ	स॰	प्रन्थनाम	लेवक	भाषा पृष्ठ	
जिने दस्तोत्र			(₹0)	€0€	४२६, ६४२, ६७०	, ६८६, ६८८, ७	०६, ७१०,	७१३
जिनोपदेशोपकारम	नरस्तोत्र		(€F 0)	¥83			६, ७३२, ।	
जिनोयकारस्मरणम			(4 o)	४२६	जैनमदानार मात्तण्ड	नामक पत्रका प्रत्युत्त	र या० दुल (हि॰)	चिन्द २०
जिनोपनारस्मरणम	तोत्रभाषा	-	(हि॰)	३६३	जैनागारप्रक्रिया	षा० दुलीचन्द	(हि॰)	४ ७
जीवकायामज्काय	भुग	न कीर्त्ति	र्(हि∗)	६१६	जैने द्रमहावृत्ति	श्रभयनन्दि	(स०)	२६०
जीवकायासज्भाय	रा	जममुद्र	(हि०)	393	जैने द्रव्याकरण	देवनस्टि	(स०)	376
जीवजीतसहार		जैतराम	(हि॰)	२२५	जोगीरामो	पाडे जिनटास	(हि॰)	१०५
जीवन्धरचरित्र	भः	शुभच न्द्र	(ग०)	१७०	६०१, ६२२, ६३	६, ६४२, ७०३, ७३	P3, 68X,	७६१
जीवन्धरंचरित्र	नथमल	विलाला	(हिं)	9130	जोधराजपद्यीमी		(हि०)	७६०
जीवन्धरचरित्र	ণদ্বালাল	चौधरी	(हि॰)	१७१	ज्येष्ठजिनवर [मउन	ঘিন] —		५२५
जीव धरवरित्र			(हि॰)	107	ज्येष्ठजिन यर उद्यापन	पुजा —	(स०)	X0€
जीयविचार	मार	नदेवसृरि	(সা৹)	६१६	ज्येष्ठजिनयरवधा		(स∘)	२२५
जीवविचार		questra	(সা৽)	७३२	ज्येष्ठजिनवरवधा	जसकी त्ति	(हि॰)	२२५
जीव वैतटी		देवीदाम	(हि०)	৩४७	ज्येष्ठजिनवरपूजा	श्रुतमागर	(स०)	७६५
जीवसमास			(গাৎ)	७६५	ज्येष्ठजिन गरपूजा	मुरेन्द्रकीत्ति	(स०)	५१६
जीवसमासदिप्पर	য়		(সা॰)	3.5	ज्येष्ठजिनवरपूजा		(स∘)	४न१
जोवसमासभाषा	•		(प्रा॰ हि॰)	3\$	ज्येष्ठजिनवरपूजा		(f=)	६०७
जीवस्वरूपवर्णन	ī	-	(स∘)	38	ज्येष्ठजिनवरमाहान	म ः जिनदास	(स ्)	७६५
जीवाजीवविचा	र		(e P)	38	ज्येष्ठलिनवरय्रत गया	सुशालचन्द (हि 🕜	, ७३१
जीवाजीवविचा	τ		(গা৹)	38	ज्येष्ठजिनवरश्रतपूजा		(स∘)	४५१
जैनगायत्रीमन्त्र	विधान	_	(⋴⋼)	३४८	ज्येष्ठपूरिंगमानया	-	(हि॰)	६८२
जैनपघीसी		नवलराम	(हि॰)	६७०	ज्योतिपचर्चा	-	(स०)	४६७
			६७४	, ६६४	ज्योतिप		(स∘)	७१४
जैनवदी मूहवदी	भी यात्रा	सुरेन्द्रकी वि	त ।हि०)	३७०	ज्योतिपगटलमाला	श्रीपति	(स∘)	६७२
जैनवद्री देशकी	पत्रिका स	जलमराय	(हि०) ७०३	३, ७१८	ज्योतिपशास्त्र		(स०)	६९५
जैनमतका सकर	.	-	(हि०)	५६२	ज्योतिपसार	कृपाराम	(हि०)	४६=
जैनरक्षास्तोत्र			(स०)	६४७	ज्वरचिवित्सा	-	(म०)	⊅£=
जैनविवाहपद्ध <u>ि</u>	1		(स∘)	ሃ ፍ የ	ज्वरतिमिरभाम्कर	चा मुरुहराय	(स∘)	₹€=
जैनशतक	;	भृ्धरदास	(हि॰)	३२७	ज्वरलक्ष ण	—	(हि॰)	२६५
				•				

म्दर]			-	प्रमानुकर्मक
मध्यनाम	शेलक	याचा पृष्ठ से	शन्त्राम सम्बद	: श्राप्त शर्म
विका क्र रस्तीत	_	(v) 18	th day det des mi	२, क्षेत्र, कर कर
14-11 14 (14)	V.	A AM AM	WY I	
		co fen 184	विन्तुकृतनान जिल्लामाण	ક (૧) મા
जितर क्र स्तोवश्राचा	स्बद्धाःचन्द्	(fk) utt	Ytt	C KAS A A BU
जिनम ि हार) vie tit	जिनमहत्त्वनातः निद्वसम् दिवाद	τ (#) H ¹
विवयुका (सोपनक्या	-	(II) PYT	विशव(संगान [सपू] -	_ (#) RI
নিব্যুদ্ধন (মারিস্তান		· · ·	विकादसमामधाना वनारमीहा	H (2) 640 AU
Savience Calcolis	-	16 560 458	विननद्वनायवचा नाम्छ	
নিৰ্কাশিখান		YOR TEE	विनम्बनावधेशः अमर्दा	
विवयस्थानस्य विवयस्थानस्य		(JK) 2000	विश्वभाषामधीका व्यवसार	(T) 111
रियासम्बद्धाः स्थितः सम्बद्धिस्थान	स्वगरा श —		विषयद्वनागरीका -	_ (f) NI
নিৰ্ভাৱনিয়াল নিৰ্ভাৱনিয়াল	_		दिनक्क्षवाक्षुता वर्ममूचर	त्र (शं) परा
वितराजितियामस्याः वितराजितियामस्याः			विनमञ्चनारपुरा -	_ (r) t!
विनर्क्षतिसम्बद्धाः विनर्क्षतिसम्बद्धाः	मरधन	(FT) 42	विषक्षनामपूता चैनसुन हारा	विवा (दि) भर
		r}વ∨ય ધરકો (ઉદ) વર	त्रितनकृतनास्त्रुवा स्वकृतवान्त् वि	
		(Bg) 111	विवस्तान [बर्बियेचपाठ] -	1 5 MY (8) -
जिननाडू विवयरणी विवयी	ज स्वसङ्ख		जिन्द्रस्तास्त्रुवा -	
विवयर वर्धन	इंग्लिड	(Nr.) 4.2	विकाससम्बद्धाः स्थानकर्मा	
वित्यस्य समय वित्यस्य स्थानसम्बद्धाः	वधमन्त्	(गा) १६	विमस्तवन श्रीनवस	
वित्वरक्षात्वनात्व वित्वरक्ष्युति	म गुकास	(दि) ११ (दि) ७६७।	विसम्तर्वक्रिकाचित्रं -	(#) Rt
নিৰম্বদেশ্ৰীয	_ ^	1) 18 104	शिवानूनि सामनपुरि	e (w) tat
विवयसमान्ययम् विवयसमान्ययम्	सम्बद्धाः सम्बद्धाः	(fig.) 48.	विवस्तृति जावराम गर्मीक	
विकास करते । विकास करते था	मरसिह	(0) 145	शिवन्तुति अपचन	t (III) and
वित्रकार्याः वित्रकार्याः	-	(a) if	क्लिसीहरा सुमविकीर्व	(ft) ath
जिनमतकत्त्व <u>ा</u> र	राषुमासु समन्द्रभद्र	(e) tet	विवस्तुनि —	. (%) ¹ !
विनयाना श्री विनयाना श्रीक	-	(m) 41	विश्वास्य वीर्यम्	(E() 170
विवस्तवस र्व	_	(fk) wat		(ft) yet
	र्व जाराधर		तिनेतपुरास य विनेत्रपूर्व	(r) ty
	, t w, ttt tr		विनेत्रकृतिस्तीय —	(lif.) Age
*				

						Ĺ	2-7
	ï	भाषा वस ग	3	म ^{न्} यनाम	नेत्र	भाग गा	टु मं 🤊
	प्रमूर	(lin) to	1	णापास्या ः	grismup.	(170)	57
	रभी	(170) X3	5	Alm Lauta	यु रजन	(f_{i^*})	.,
	Steme	(G7#) (3	3	ए सम्बद्धि (१८)	· · ·	(410)	27
Ś.	भगीर्देश	(he) YE	3	तः सार्यसम्बद्धाः	मभान-इ	(40)	- 1
Ap.		Y=2, 5;	12	र कर्षसङ्ग्रीतर	4.	$\langle r_{ir} \rangle$::
	and the second	(1010) Is	12	र रावभा रशी ह	4171	(fr*)	22
	'पस्पास र	(F) b) f=	=.	प कार्यक्ति	प॰ येगार्य	(t, c)	23
		212.75	35	भावकाँ सहस	प्रमाच न्याप	(:(*)	72
₹ 	Brow plik	(4 tř.)	cn	र वासार्य स्थ	न० सक्य ग्रीनि	(4.1)	55
	district	(fge) 25	><	भगवासमार ३४.	गण पणनात पीपरी	(f, \cdot)	2.5
	*****	(fre) 25	i r	म काद रूप	-मास्यामि	(4e)	
	-	(शल) है।			34, 151, 415, 153		
	Amon	(पपः) ६,	(3		18 522 523 EEG.		
	सरमगुर्ग	(Tite) 1:	2,		3 6 5/2, 575, 533		•
	लगोदर	(470) };	٠,		Cf, 2ne, 202, 3eY,		
	त			v1c, 0-3, 0	£7, 368, 338, 323	, 355 3	s
14	Made	(n+) 2g		र राष्ट्रपुरशेषा	ध्यमापर	(400)	* =
	पत्रासास मधी			म राष्युपरोक्त	्पा० पनवयीनि (ह	f e	3°E
(र्गं विस्ता	भ॰ ग्रानभृषण		/=	गाउ।धगुणशीका	पोटीबान जैमवान		10
सा	-	rr.	-	। 'सान्म् त्र ाता	प॰ राजमत	C	30
1ग्र	-		-	ग गामूनश्रम	त्रवगृह छ। यहा	(fi*o)	3¢
118	*****		2	ช อเร็ตระโรก สะระโตระโรก	पाँउ जपवत	([**)	₹€
रगन	शुभवन्द्र		०२	तरपार्यमृत्यदोना सःसम्बद्धाः	namental and a second		६८१
नसार	देवसेन	(সা _ণ) ২•, <u>খ্</u>	- 1	त गाभदणाध्यापतृ तम्याचमूण भाषा		(46)	इंट र्
	580, 1	3 to, arr, a			रिधरगन्द	(fe r)	\$e
^{रमारभागा}	यानतस्य		Y3	गवायमूत्र माता	महासुग पामनीपान		२६
T II	पप्रालाल चौधरी	100	₹₹	हत्वापमूत्र मापा	-	(f(c)	ą o
			21	तत्वाचमूत गृति	— मिद्रसेन गणि	(frage)	
			48	तत्वारंगुष वृति	- 14(213) 411(4)	(4°)	२६
				•	_	(गं०)	₹⊏

ess]			[धन्यानुव स्तिम
गम्बनाम ह	श्यक मापा द्वष्टक	/ मम्भनाम स्नेत	क माचा हर हर
क्यानामानिनीस्त्रीम	- (#) YRY	श्रामांद्रस -	(a ⁱ) tit
VI VII, III	SET OFF THE P	ज्ञानोचुस्पराठ शहर	ng (n²) və
ज्ञानचिन्तानीस सनाक	रदास (हि) ६व	बागोडुयस्थात्र -	→ (ĕ) ¥₹
	454.434	क्रमार्गंथ शु <u>ध</u> षण्डाचा	a (#) t∈
शामकोस साह दीप		बामार्णवंशीरा [पव] बुदसा	tt (¥) t≇
शायरी लक	- (fg) 88 9k	ब्रामार्थनरीया संगाविक्ष	rπ (t) t
क्रानदीय व र्गत	- (ft) tit	समार्थपंत्राणा स्थमप्रद्वाम	क्षा (हि) स्म
क्षाणाधीकी बनाइसी	ोबार कि । ५१४	बलार्गयक्षचाटीया समित्र विसर	
tiv to t	ink, the wet wat	त्रलॉरचेय के चय -	— (Qt) H3
क्रानार्थ्यमीस्वरम शस्य	सुम्बर (fl:) ४३	ब्रामी स्थानीसी -	- (N) 111
सानारकी मनाहर	tqाम (lj:) ७ १०	म्ह	
■शारळविष्यविका वदायातमः वृ	पुरेन्द्रकीचि (चं) ४०३	ककारी भी यनिकासी की -	- (\$\frac{1}{2}\) \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \
	118	म्हाका वेतेशा याचा	- (fg) and
बाना≋मीवृह्द्राधान समय		मांगरियापु चोरमचा	- (U) as
सम्मरिक्यमा विश्वविद्याहरमा	- (PT) 191	कृतना श्याराव	(R) 413
सलपुत्रा	(計) 秋	₹-3-5-3	-317
ज्ञानपेडो समाहर			
श्रामेशाश्मी स्रविष्		र्देशामानीत पूचरा	
ज्ञान ा ति	- (4) 660	হলান সুখ	
ब्रास्युवीयकातक दाहिया		क्षेत्ररी बंद शका मोजराब मी मार्ग	(et) (ec
बालनूबीस्वनादयमानाः शहस्य		बाडमी नामा — बाजनी नामा व्यवसी सुनि	4
क्षणमृत्यीयकारकवेता वक्षताः क्षणमृत्यीयकारकवेता सक्षताः		दानवारा डाडका शुःक सम्मवारा —	(TE) 140
~		बल मङ्गमनरी —	(F) 111
प्रमानदरीहर शहस			(Fg) 991 1
##र र देश		दीना नावश्री वी वार्ता —	(4) ett
arcines epo		बीमा नार श्ली चौराई पुराय साम	(IE) 414 SSE
क्राच्याचनी सनाइसी		सरवार पश्चितिय पूत्रा -	(d) 13
अलपमर सुन्दिवड	र्मि≼ (ग) १६ ।	रागीरारभव —	(8.) 314

A Section of the sect

9

२१

? १

२१

लेखक भाषा पृष्ठ म० प्रन्थनाम लेखक भाषा पृष्ठ स० प्रस्थनाम तत्वार्घवोध (E0) (figo) **독도**쿡 **ग्**मोकारछद न॰ लालमागर (Fe) (后。) तत्वार्यवोप 358 वधजन ऋषि ठाकरसी **रामोकारपच्चीसी** सत्वाधवोधिनीटी वा (no) (**ध10**) €३७ रामोकारपायश्रीजयमाल तत्वार्थ रत्नप्रभागर प्रभाचन्द (ग०) गुमोवारपँतीसी कनम्कीर्त्त (中0) 410. तत्यार्थराजवर्शतक भट्टावलकदेव ४८२, ६७६ तत्यार्थराजवाति । मापा गामोकारपैतीमी (সা০) 385 प॰ योगदेप तत्यार्थवृत्ति रामोवारवैतीसीपूजा (स०) ٧**٤**२. श्रदायराम त्तत्वार्यसार श्रमृतचन्द्राचार्य प्रश्ज, प्रइह तत्वार्यमारदीपक भ० सकत्र शक्ति ग्मोनारप चासिकापूजा (귀ㅇ) 210 तत्वार्यमारदीपनभाषा पत्रालाल चौबरी रामोकारमय क्या (fgo) 366 डमास्वामि तत्वार्य मुत्र (尼。) रामोक्तारस्तवन ¥3F ग्मोनारादि पाठ (no) ¥35 गागपिण्ड (भप०) **६८२ ऐमिए**।हनारिड लदमणदेव (ग्रप०) १७१ **गोमिगाहचरि**उ दामोदर (भप०) १७१ त तत्वार्षसूत्रटीका श्रुतनागर तकराक्षरीस्तीत्र (स०) 386 तत्वार्यमूत्रदीका तत्वकौस्तुभ पत्रालाल सघी (हि॰) 10 छोटीलाल जेसवाल तत्वार्यसुत्रटीका भ॰ झानभूपण तत्वज्ञानतर गिर्गो (स०) ሂട तत्वार्यसूत्रटीका प॰ राजमल तत्वदीपिका (F) २० तत्वार्यमूत्रदोका जयचद् छ।वडा तत्वधर्मामृत (स∘) 325 तत्वार्षस्रवटीना पाडे जयवत तत्ववोध (स∘) तत्वार्यसूत्रटीका 205 तत्ववर्णन शुभचन्द्र (40) २०२ तत्वार्थदशाध्यायपूजा दयाचद देवसेन तत्वसार (সা০) २০, ধ্৬ধ্ तत्वार्यसूत्र भाषा शिखरचन्द ६३७, ७३७, ७४४, ७४७ तत्वार्यसूत्र भाषा तत्वसारभाषा धानतराय (हि॰) तत्वार्षसूत्र भाषा 989 तत्वसारभाषा पन्नालाल चौधरी तत्वार्षसूत्र भाषा (हि०) 21 तत्वार्यदर्पग तत्वार्षसूत्र वृत्ति (स∘) सिद्धसेन गणि 21 तत्वार्यवोध (₹0) सत्वार्थसूत्र वृत्ति 28

(日の) 22 (FO) D D (刊0) 22 (म०) 22 (円0) 23 (हि॰) 23 (न०) ४२४, ४२७, ४३७, ४६१, ४६६ ४७३, ४६४, ४६४. ४६६, ६०३ ६०४, ६३३, ६३७, ६४०, ६४४, ६४६, ६४७ ६४८, ६४० ६४२, ६४६, ६७३, ६७४, ६८१. ६८६, ६६४, ६८६, ७००, ७०३, ७०४, ७०४, ७०७, . ३००, ७०७, ७६१, ७४१, ७७६, ७८७, ७८८, ७८८ (中の) आ० फनककीर्ति (हि॰) 35€ 30 (13 30 (हि॰) 38 (हि॰) 38 (हि॰) ६८६ (ग०) 853 (हि०) ₹0 सटासुम कासलीवाल (हि॰) २८ (辰。) ₹0 (हि॰प॰) ३१ (स∘) २८ (सं∘) २८

es [L	तम्बानु सम्बद्धिः
शन्त्र मास	हेकर	भाषा पूर	ਚ	प्रम्थ नाम	शेसद	भाषा इह क
ব্যৱিক মঙ্গিশা	-	(a)	२६	तीर् <i>वस</i> ल्लवन	श्चमबमुम्दर	(DE) (I)
ব্যৱস্থাত্ত কৰা	सु राज्ञर्यंद	(flg.)	288	वीर्वादनीस्तीन	-	(4) Mi
तमाचु की धनमान	धार्धश्युनि	(NE)	298	গ্ৰীবৰ্ত্তৰ্যাদ	_	(g.) tu
तर्वशी पिका	_	(4)	111	वीर्वकरवरंगी	ह्रवंदीचि (हि) ११६ शा
तुर्वेत्रकरातु	_	(4)	185	दीर्वंकरवरिषय		(章) HH
दर्कप्रवास्त्र	_	(4)	111	'n		25 656
वर्कनावर	केशम निम	(4)	111	तीर्वं करस्त्रीय	-	(€) YH
तर्रजाया जनसङ्ख्या	गास पन्द्	(4)	१ व२	टीर्बंकरों का श्रेवरान	_	(1 €) 1π1
वर्कच्छ्रम दीपिका	गुरासन स्रोर	(₫)	\$? ₹	रीर्वकरों के ६२ ला		(pg) str
वर्कसं बद्	चन्नंगर्	(원)	288	ती वचौ रीनी	-	(gl) tri at
सर्वे वं बहुदीका	_	(₫)	111	रीवचीबीचीचीपरै	स्वाम	(E) ***
रारत्वनेत की क्या	_	(R ₁)	FY#	वीत्रचीबीदीयाय	-	(R) 141
वास्मिकिरोनशि	रघुनाव	4)	111	तीस्त्रवीबी धीपू बा	शुभवन्	(a.) fH
रीवयांबीधी	_	(ft)	111	वीव चीवची पूर्वा	वृत्सावम	(fit) Yel
वील भी बी सी साम	_	(fig)	121	वीवचीबीबी बनुच्यम् र	ना —	(R) YE
	4.0	fe 132	७१व	ती स्वी बीक्षीस्तवन	_	(4,) HA
रोनचीबीच्या	_	(#)	Ass	वैर्वतयोजनियरण	_	(₹) ⊌R
धीनवीबीबीववा	नेबीश्रम्	(唯)	Act	वैख्कास्त्र	बता रसीदास	(ft) Ytt
दीतवीवीवीपूचा	-	(1	Ret 6			6 8 84
रीतपीनीसीराच	_	(Nr.)	125	वैच्छीस्त्रुवा	গ্রমশন্	(m) And (m) And
द्यानचीचीत्री बहुच्या	र्षा −	(4)	A &	तेरहकीलपूजा स	विरव मृक्य	(a)
दीन विद्यं की शक्त	चनराव	(Nt)	444	वेच्यतीचपूजा	-	(a)
वीनवीतक्षमन		(Nr)	111	देख् री पपूषा	शासमीव	(A)
तीनतील वार्ट	-	(f)	415	वैस्त्राविष्या		(16.7
रीवनीक्यूना (विद्यो	क कार पूजा, जि		- 1	वेच ्य ीरपूचाविवाल	-	(7)
	नेमीचन्	(B()	४व१	ते राह र्यं वय ञ्जीत ी	मायि क्ष	(At) all
वीनबीकपूजा	रेशनम्	(fig)	Yet	वै प् रत्यवीक्षणत्यवेश	_	(IE) +(I
तीममो रमार्थ न		(Bg = r)	255	र्तेषधार	_	(r) (t
होर्ब असम्बद्धन	रीकराम	(fig)	£\$# !	দ ার্টি ছ বিকা	_	(4)

त्रिसानभेत्रपुजा (li'0) त्रियष्ठणतासा युग्यसमा 715 YEY त्रिपध्डिम्मृति **विसो**र्गापत्र (f(*) षाशाधर (सह) 115 37. विलोगतिनगरतोत्र भ० महीलस्ट विश्वतिज्ञ विश्वविद्या (Ho) गरगासिह 510 (भ्रप०) ६८६ वामदेव त्रिलागदीपव (no) **भे**यनविद्या 370 (ग०) ४६, ७६२ खद्गमेन विलोगदर्पएनया त्रेपनिवया (Fr.) ŞEE. ग॰ गुनाल (feo) 080 95€,033 नेपनक्षियाकोग **ै**।लतराम (Fo) 38 शिलोग वर्गान **बेपनब्रियापू**ता (No) 372 (ग∗) **とこと** तिलो**र वर्गान** (মা•) श्रेपनक्रिया [मण्डस गिन्न] ३२२ 428 तिलागवर्गान [चित्र] जेपनक्रियात्रतपृजा 121 (सं०) ሄሩሄ विसोब वर्गा**न** व्रवनिव्यावताचापन देचेन्द्रकीर्ति (स०) ६३८, ७६६

525]					1	सम्बद् धान्यदेश
ध न्य नाम	शेलफ	माना प्रस	#TO	। धम्बनाम	्रे क्ट	भाषा छा ई
नेपनकिनतारीकापन	_		RY.	वर्णनसार	देवसेव	(m) (m)
त्रेपश्चताला <u>पु</u> क्यशिक			tut	वर्षभवारमधा	मनमञ्	(के) सा
वेपठ्यमाकमुक्तकर्वं ग	_	`	w ?	वर्षन्तारमधाः वर्षन्तारमधाः	स्वयास शिवसीसम्ब	(क्) सा
वैश्वोदय सीम नवा अ	मामसागर		22	वर्षनसारमाना	Manage	(E) III
मैलोक्स मोज्यकरण	रायमे ड		12	वर्षमस्त्रीत	_	(m) 424 far
मैक्शेक्यसारटीका	सहस्रकीर्ति सहस्रकीर्ति		12 171	वर्षभरतुरिः वर्षभरतुरिः		(क्ष) धन
त्रैवीपवदारपवा	सम्बद्धागर समितिशागर		YEE	रचनस्तु। दर्जनस्तीच	सद्भारम	(E) tel
	Burganit		Sed.	वर्धकरतीय -	सम्बद्ध	(er) 11
वैसोलप्सारन हापू वा		(4)	•••	वर्धनस्तान वर्धनस्तोन	नग्र तन्त्र स्थानन्त्र	(ar) tl
	य			वर्ध नस्तीम	18004	(बार) देश
दूसप्रदर्श साराची	_	R()	७२६	वर्षनस्तान वर्षनस्त्रम	_	(a) in
वदत्यार्भवातस्वयम	द्वनि चयवदेव	(fit)	111	वसामीवीयम्बाय	_	(fit) Hr
र्वकारपार्वनायस्य यन	_	(राव)	111	रव क्रकारके ब्रह्माण	_	(er) 144
	द		- 1	वस्त्रकार वित	_	(g) tel
	•		1	क्याराहर स्था क्याराहर		(fk) IN
बस ए।सूर्तिस्थोन	राष्ट्रपाचार्ये		**	स्वर्गतस्वीती -	থ/নৱঘৰ	(n) m
रेपा क्राठ	-	(4)	12	स्यवश्चि स्यवश्चि	414404	(fir) 11
देलाधन	_		११७	रचवाळ बस्यूबॉर्ना क्या	_	(Ag) 99#
वर्धनरका	माराम्		१२७	रकत्रकारा स्थाः रकत्रकाराज्यासम्बद्धाः	_	(g') tre
र्श्वनरपत्नोध	-		१२७	वर्गकक्तवा	काक्सेन	(4) 312
र र्धनप्रकेती	_		•88 j	रसम्बद्धाः पा	*****	(d') २२ <i>०</i>
रवं त्रपाठ	_		183		after statement	(17 (78)
4 4 4 48	*** *** **				श्वनि शुक्रमद	(at) su
रर्जन पास	भुषश्रम		198	व्यक्तसम्भा व्यक्तसम् व्यक्तम	हुर।सपन् स्रोमसेन	(4) ME
वर्ज नपात	-		١. ١			1) 844, 210
	,	R4 466 4	- 1		प भाषरामा (म	(MI) AKA
कर्म क्षाउस्तुन्ति			rie	व्यत्तक्षशुज्यम् व्यत्तकशुज्यम्	_ ^	ent (p 1
वर्धनरबुधमाना		(%r) ((%r)	1 E (व्यत्तकसुरम्माल	य स्व <u>य</u>	(44) 44
वर्षेत्रप्रतिवस्तवप वर्षेत्रपरिष	_		150	Y# (440 405
4644149	_	V- 1		****	at and to	

प्रन्थानुकमग्णिका]					['	न्दह
प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	स॰	प्रन्थनाम	त्तेत्वक	भाषा पृष्ठ	ु स∘
दशलक्षराजयमाल	सुमतिसागर	(हि॰)	७६४	दशलक्षरगीकया	ललितकीर्त्ति	(सं ०)	६६४
दशलक्षराजयमाल	-		844	दशलक्षग्गीरास	*****	(মণ৹)	६४२
दशलक्षराधर्मवर्शन प्	सदासवकासली) પ્રદ	दसर्वेकालिकगीत	जैतसिंह	(हि०)	900
दशलक्षराधर्मवर्शान	_	(हि॰)	६०	दशवैकालिकसूत्र	-	(সা৹)	३२
दशलक्षरापूजा	छभयन न्दि	(स∘)	४दद	दशवैकालिकसूप्रटीका	_	(स∘)	३२
दशलक्षराणपूजा	-	(स∘)	¥ 55	दशस्लोकीशम्भूस्तोत्र	****	(स ०)	६६०
x 80, x 3E, x 04	, ५६४, ५६६, ६०	६, ६०७,	ξγο,	दशसूत्राप्टक	-	(स०)	६७०
६ ४४, ६४६, ६५२				दशारास	व्रश्चन्द्	(स०)	६६३
,		७६३,		दादूपद्यावली		(हि०)	३७१
दशसक्षरापूजा	- (मप० स०)	७०५	दानक्या	व्र० जिनदास	(हि॰)	909
दशलक्षरापूजा	श्रभ्रदेव	(a b)	४५५	दानक्या	भारामङ्ग	(हि॰)	२२म
दशलक्षरापूजा	खुशालचन्द	(हि॰)	४१€	दानकुल		(গাৎ)	६०
दशलक्षरापूजा	द्यानतराय	(हि॰)	¥ 55	दानतपशीलमवाद	समयसुन्दर	(राज०)	६१७
		५१६	, ७०५	दानपञ्चापत	पद्मनिन्द	(0B)	Éo
दशलक्षरारूजा	भूघरदास	(हि॰)	५६१	दानवावनी	चानतराय	(हि॰) ६०४	, ६८६
दशलक्षरापूजा	-	(हि॰)	32Y	दानलीला	-	(हि॰)	६००
			, ७५५	दानवर्शन		् (हि॰)	६८६
दशलक्षरापूजाजयमा	_	(स०)	४६६	दानविनती	जतीदास	(हि॰)	६४३
दशलक्षण [मडलवि	_	<i>(</i> C- \	४२४	दानशीलतपभाषना	_	(स८)	Ęo
दशलक्षरामण्डलपूज		(度o)		दानशीसतपभावना	घर्मसी	(f=3)	६०
दशलक्षराविधानकष् दशलक्षराविधानपूर		(स०) २४:		दानशीलतपभावना	_	(हि०) ६०	, ६०१
दशलक्षणवयानपूर		(हि०) (स०)		दानशीलतपभावना ध	ता चीढाल्या 🧸	समय सुन्द् रग	ण
दशलक्षरावृतकथा	श्रृतसागर खुशालचन्द	(fg°)				(हि॰)	२२न
दशलक्षराव्रतकथा	व्यासाय विकास मानसायर	(हि॰)		1.4416		(हि॰)	७६६
दशलक्षगुत्रतक्षा		(हि॰)		really straight.		(हि०)	७५६
दशलक्षरावृतीद्याप	न जिनचन्द्रसूरि			1 (4)	ति तथा बादशाहर		
	नपूजा सुमतिमागर					(हि०) (हि०)	95¥
}		•	, १,६३८	दीक्षापटल		(स०) (स०)	७=६ ५७५
दशलक्षणव्रतोद्या ^प	ानपूजा —	o IF)		1	-	· (हि०)	र७२ ६०
				15		(·ૡ*)	40

E4.]				[प्रम्बानुकव िप
प्रम्बाम	सेवक	भाषा प्रष्ट से	प्रनगनाम	होजक साथ हा क
रीपाश्वारमञ्ज	- (f } tot to	वेदायमस्तोपनाय	ा — (दिला) सा
दुवारशयिकालकक्	मुनि विनयचन्त्र	(Md) 5A	देवाममस्तोषपुति	वास्तुमा [विज वि कालि]
पुर्वेटकाम्य	_	(d) tw	el i	(d) H1
दुर्गमानुबेका	_	(प्रा) ६३	देशीमुक	(#) Fr
देवचीडास	रतलकम्ब	(fk) Y		नाम (व्हें) (प्र
देवचीकाम ।	इउप्रय चाससीना	r (ft) vi	वेत्रशिके वास्त्रक्ष	भी मानावधी एवं परिषम 😁
वेवदास्तुद्धि	पद्मनम्ब	(fig.) 14	.	(हिं) कार्र
देवपूरा	इन्द्रवन्दि बोगीरह	(d) ve		के परवनोंके वान 🗕 (वें) 🥙
वेगप्रमा	4.840.4.400.8	(a) Ai	वेहणीके वासकाही	मान्दीरा (दि) स
	184. 1	X, 69%, 685	बेहलीक राजामीय	प्रेगंसलॉन — (ग्रे) ^{५०}
वेसपूजा		(दि धे) प्रद	पीहा	क्रमीर (पि.) ४८
•		w .	, थो व् रस म्	रामसिंह (बर) १
रेपयुका	धानसम्ब	rfig) xt	वीहासतक	क्रमचन्द्र (दि) १४८ ^{हा}
वेगपुत्रा	_	(BE) 4Y	पीहातप्रह	नानिगराम (मि.) ^(१)
	ξυ τ	۰٤, ٠ ٩٢, ٧ ٤		— (fr) a _{tt}
र्वतपुषादीका	_	(d) YE	चलवरियाच	वानवराव (मि.) रत नेरिक्तानाचे (स.) रा
देशपुषाक्रमा	व्यवस्य सामग्र	(fk) YE	प्रव्यवस्	वासवस्त्राचाच 🗥 🗸
देवपुर्वाष्ट्रक	_	(er) 42:		प्रकृत्य वर्ग और
देशराज बच्चाराज	पोर्ड सामदेवस्रि	(fit) 44	स्पर्य रह मेका	- (#) 82,4ff
देवनोत्तनक्या	_	(₩) ११	प्रव्यसम्बद्धयाना वाव	
वेशकारतहरूपुत्रा	चाराचर ए	f) {\$4 we		- A M
देशकानगुसूबा		(#) 4 1	प्रव्यक्ष वाचा	सथयम्ब सामसा (हि नव) ह
देशबासन्तुःस्तुःशः	_	(Nr.) 441	1	समयम्ब आवडा (दि वर्ष) ।
देवधिकपुत्रा		सं) ४२	क्ष्यत प्रमुखा	वा बुक्कीचान् (दि वड) है। वास्त्रपाल (दि वड)
	Af &A		प्रम्थ सम् याचा	414444
देविकयुगा		(શિં) ક્ટપ્ (શેં) ક્ટપ્	प्रमार्थशहयाया	THIS TING (4)
देशसभस्योत	क्षा समन्तमङ् १३५, ४१४, १७		प्रवेशवर्गमा	4.14- (4)
			प्रश्यक्ष व्यक्ताना प्रश्यक्ष व्यक्ताना	
देवानमस्त्रीयंत्राव	1 MET-1-4 MILTER	(4) 444	1 Kand and a [4]	पनेव धर्मार्थी (इ.स.) "

प्रन्थानुक्रमणिका]						['	=३१
प्रन्थनास	लेयक	भाषा पृ	340	प्रन्थनाम	लेखक	भापा क	म स०
द्रव्यसग्रहवृत्ति	महादे य	(स०)	₹¥	द्वादणानुप्रेक्षा		(हिं०)	308
द्रऱ्यसग्रहवृत्ति	प्रभाचन्द्र	(स०)	₹४			६४२, ७४८,	, ७६४
द्रव्यस्वरूपवर्गान		(स०)	र ह	द्वादशागपूजा		(ग०)	¥£ ?
दृष्टातशतक	Şirayila	(स०)	३२८	द्वादशागपूजा	हाल् गम	(हि॰)	138
द्वादशमावनाटीका	Quinners	(हि॰)	३०१	द्वाश्रयकाव्य	हेमचन्द्राचार्य	(स∘)	१७१
द्वाद्यभावनादृष्ट्रांत	-	(युज०)	309	द्विजयचनचपेटा		(स०)	१३३
द्वादशमाला क	वि राजसुन्टर	(हि०)	७८३	द्वितीयसमोसरण	घट गुलाल	(हिं•)	५६६
द्वादशमासा [वारहमास	ता] कवि राइमु	दर (हि॰)	५७१	द्विपंचकस्याग्यवपूजा		(स॰)	५१७
द्वादशमासातचतुर्दशीय	तोद्यापन —	(स∘)	35%	द्विसधानकाष्य	धनञ्जय	(ep)	१७१
द्वादशराशिफल		(स∘)	६६०	द्विसधानकाव्यटोका	[पदकौमुदी] नेमि	वन्द्र (स०)	१७२
द्वादशयतकया	प० श्रभ्रदेव	(स∘)	२२८	द्विसधानकाव्यटीका	विनयचन्द	(स∘)	१७२
		२ ४६,	•38	द्विसधानकाव्यटोका		(स०)	१७२
ढादशयतक्या	चन्द्रमागर	(हि॰)	२२=	द्वीपसमुद्रो के नाम		हि०)	६७१
द्वादशयतकथा	-	(শ∘)	२२८	द्वीपायनढाल	गुणसागरसृरि		YY 0
द्वादशयतपूजाजयमाल		(स०)	६७६		•		
द्वादशद्रतमण्डलोद्यापन	T	(40)	ሂሄ፥		ध		
द्वादशयतोद्यापन	-	(स०) ४६१	333,	धनदत्त मेठ नी का	T	(हि)	३२६
द्वादशयतोद्यापन	जगतकीर्त्ति	(स०)	838	धन्नाकथान्य		(ग ०)	३२६
द्वादशवतोद्यापनपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(40)	838	धन्नाचीपई	-	(7)	५७२
द्वादशयतोद्यायनपूजा -	पद्मनन्दि	(स∘)	838	धन्नाशलिभद्रचौपई	_	i	२२६
द्वादशानुप्रेक्षा		(40) \$08	, ६७२	धन्नाशलिभद्ररास	जिनराजसूरि	(१ह०)	३६२
द्वादशानुप्रेक्षा	लद्मीसेन	(स∘)	OXX	धन्यकुमारचरित्र	न्त्रा॰ गुण्भद्र	(स०)	१७२
हादशानु प्रेक्षा	_	(प्रा०)	308	धन्यकुमारचरित्र	व्र॰ नेमिद्त्त	(स∘)	१७३
द्वादशानुत्रेक्षा	जल्ह्या	(मप०)	६२=	धन्यकुमारचरित्र	सकलकीर्त्ति	(स०)	१७२
द्वादशानुप्रेक्षा		(য়ঀ৽)	६२८	धन्यकुमारचरित्र	_	(स∘)	१७४
द्वादशानुप्रेक्षा	साह आलु		30\$		खुशालचन्द	(हि॰) १७३,	७२६
द्वादशानुप्रेक्षा	कवि छ्त्त			1 -			५ २५
द्वादशानुप्रेक्षा	नाहट			"	यशोनन्दि	(स०) ४६१,	प्रम
द्वादशानुप्रेक्षा	सूरत	(हि॰)	७६४	धर्मचक्रयूजा	साधु रणमञ्ज		

<

<

~~j				[Re	राषुक्रमीका
भन्धमास	सेवद	मापा प्रमुखं	प्रश्वनाम	हैंबाइ :	साचा शह एं।
वर्गवक्रमुगः		(rf) YE	पर्यरा सा	_	(fg) 111
		21 210	धर्मराखी	— (R) 494 (m)
वर्गक्त्यवर्गम	यम प्रश्न	(m) 189	वर्यनसम्	_	(#) B
समेगळ		upu (B)	वर्गविसास	यानशराप (ध	११८, म
वर्गवस्था		(fr) 1 55	वर्षवर्गाशुक्त सह	क्वि इरिश्मण	(f) tn
वर्गत स्थीत	क्रिमदा स	(ft) w44	वर्गवर्गाम्बुरस्टीरा	क्सकीचि	(के) हेंचा
वर्वदक्तवदार वास्क	_	(d) 18w	वर्नशास्त्रज्ञातीय	_	(4) (1)
वर्त क्रोहेमा जैसी का		(fig.) 44	गर्मेश्ररोकर और	राज गारीक	(() (1
वर्षपञ्चीची	द्यासवराव	(B() wre	वर्मकार [चीवर] एं०	शिरोयविदास (वि	111 32 (
वर्गपरीका	व्यमितिगति	(H) 142			(4) 13
वर्वपरीका	विशासकीर्चि	(fig) was	भवर्षसङ्ख्यानकाचार	_	(4) 11
वर्वपरीकावाया सर्व	हरदास सामी	\$\$# # \$\$		-	R (#
वर्गपरीकाणायाः इत	प्रस्य निगास्था ।	(R 4) 111	-		†() ₩1
वर्षपरीवातत्तः	— (fi	[) lt< wt	वर्यापृतजुष्टिकपह	क्रम्धवर	(4) 41
वर्मपरीकारत्व	त्र विमदाश	(fg) \$x*	वर्गीयवेदनीवृत्रजानकान		(4) (4)
वर्वपंचित्रका	प्रक्रिनदास	(fg) 1t	वर्वीत्रवेश्वयत्त्रकाचार	कामाध्यपँ ((f) (f)
सर्वत्रवीतवाला वा	भाक्तल संवी	(fig) 11	वर्गोत्तरेश्वयानवाचार	≖ नेनि≼च (4) (1
वर्वप्रस्तीतार	विमक्त की चि	(8) 11	थर्मो देखचान रा चार	,	E) (1
वर्महरूतिगर		(fig) 12	वर्गोक्तेसर्वस्य		ξ) u
वर्षक्रमीतर क्रमपार	ार वाचा 🚤	(#) 4	भवस	,	π) 1+
वर्गमस्त्रीतर मानकान	ार भागा सम्पाराः	म (मृ) ६१	बागुराठ है		() 4th
वर्गक्रमोत्तरी		(N) 48	वानुराह		2) 11
धमबुद्धिपीयाँ	BHTH	(ફિ.) ૧૧૬	वहासम	,	17) 451
बनपुरि परायुक्ति गण	n	(मं) १९८	वानुवरावित	•) 111
वर्षपुढि गंदी क्या		(हि) ११६	पू बीला	•	k) 4 k) wit
वर्वसम्बद्ध	र्पमगका	(4) 48	नीपुरुरिव		. /
वर्षरका गा	पश्चमिद्	(11) (3	मनारीपसृत्रा	,	() 4tt
वर्ग स्वामन	. ~	(d) 49 (lk) wol	व्यवारीयसर्गंध		() vtt
वर्षण्ड (बावकावार)) —	(gf.) and	न्यवारीक्लर्वत्र	- (,

प्रन्थानुकमिणका]

प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	स०	प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	स॰
ध्वजारो १ स्विध	श्राशाधर	(स∘)	४६२	नन्दीश्वरपूजा	- (प्रा॰) ८६३,	५०४
ध्यजारोप्णविधि		(म०)	¥83	नन्दीश्वरपूजा	Aringenia	(स॰ प्रा॰)	८ ६३
ध्वजारोहणविधि		(শ॰)	¥63	नन्दीश्वरपूजा		(ग्रग०)	£3¥
	न			नन्दाश्वरपूजा		(हि॰)	¥£ 3
	*1		1	नन्दाश्वरपूजा जयमाल		(स ०)	७५६
नयशिखवर्णन	केशवदास	(हि०)	७७२	नन्दीश्वरपूजाविधान	टेकचन्ड	(हि०)	43X
नखदानवर्णन		(हि॰)	७१४	नन्दीश्वरपक्तियूजा	पद्मनिद्	(स∘)	६३६
नगर स्थापना का स	₋	(हि॰)	040	न दीश्वरपक्तिपूजा	-	(स०)	38
नगरो की वसापत व	ा मवत्वार विवरण					ሃ १ ४,	७६:
3	मुनि कनककीत्ति	(हि॰)	१३४	नन्दोश्वरपक्तिपूजा	_	(हि॰)	¥8:
ननद भी जाई का भ	नाडा —	(हि॰)	७४७	नन्दोश्वरभक्ति		(H 0)	£ 74
नन्दिताढ्यद्धद	-	(সা∘)	३१०	नन्दीश्वरभक्ति	पन्न(ताल	(हि॰) ४६४,	8 9
नन्दिपेण महामुनि	सज्जाय —	(हि॰)	387	नन्दीश्वरविधान	जिनेश्वर दा स	(हि॰)	Α£.
नन्दीदवरउद्यापन	-	(स०)	ु इंध	नन्दीश्वरिवधानक्या	हरिपेण	(स०) २२६,	, ሂ የ
नन्दीस्वरकया	भ० शुभचन्द्र	(स ०)	२२६	नन्दीश्वरविधानकथा	-	(स०) २२६,	२४
नन्दीश्वरजयमाल		(ন০)	F3¥	नन्दीश्वरव्रत्तविधान	टेकचन्द	(fg o)	ሂጀ
नन्दीश्वरजयमाल	-	(গা॰)	६३६	नन्दीश्वरयतीद्यापनपूजा	श्रनन्तकीर्त्त	(태)	38
नन्दीश्वरजयमाल	कनकर्भात्ति	(भप०)	५१६	नन्दीश्वरय्रतीद्यापनपूजा	नन्दिपेण	(円)	38
नन्दीश्वरजद्यमाल	_	(भग०)	838	नन्दीश्वरय्नतोद्यापनभूजा	_	()	33
नन्दीश्वरद्वोपपूजा	रत्ननन्दि	(स०)	४१२	नन्दीश्चरय्नतीद्यापनपूजा	-	()	38
नन्दीश्वरद्वीपपूजा		(स०)	£3¥	नन्दीश्वरादिभक्ति	-	(৽গম)	६२
		६०१	, ६५२	नान्दोसूत्र		(সা৹)	m
नन्दीऋरद्वीपपूजा	980AUS	(গা৽)	Ęሃሂ	नन्दूसप्तमीग्रतोद्यापन		(स∘)	38
नन्नीश्वरद्वीपपूजा	द्यानतराय	(हि॰) ५१	६, ५६२	नमस्कारमन्त्रकृत्विधि	सिहत सिंहनि	ं द (स०)	३ ४
नन्दीश्वरद्वीपपूजा		(हि०)	¥83	नमस्कारमन्त्रसटीक		(स० हि०)	६०
नन्दीश्वरपुष्पाञ्जि		(4°)	३७४ (नमस्कारस्तोत्र	-	(₹0)	४२
नन्दीश्वरपूजा	सकलकीर्त्त	(स ०)) ७६१	नभिऊएस्तोत्र	_	(গা॰)	६८
नन्दीश्वरपूजा		(स ०	-	नयचक्र	देवसेन	(০াম)	१३
	४१४, ६०७, ६४४,	६५८, ६६१	६, ७०४	न्यचप्रटीका	_	(हि॰)	ęĸ

+ 1,					[=	म्बासुकम ि का
मन्पनाम	शैनक	मापा प्रा	3 स	। भग्यनाम	ग्रेक्ड	भाग इड सं
नववक्रमाया	ध्रेमधन	(fic)	483	শব্দুমুদ্রবিদা ল	सङ्गाह	(m) YtY
नव र्गक माराः	_	(B()	111	ववस्त्राच	वेद्ध्यास	(#) trt
नरमञ्चादर्शन (बोहा] भूषरदास	(i)()	41	वयप्रस्तोत	_	(tř. ¥1
		94	ψ×	नवद्धस्यास्त्राविधि	-	(4) (1)
नरक्वर्णन		(ft)	11	भवतत्त्रयामा		(m) to
बररस्वरीयन कृती	यदिका वर्णव	- (%)	5 22	नरतस्वप्रशस्त	_	(না) ৬ ব ব
मरानिजन् यनी	मरपवि	(4)	२ व १	नवतस्यप्रय एए	क्षत्रमीवञ्चम	(fg) to
तम दनक्ती बाटक		(4)	wjf	वरताचन विद्या	पत्रासास चौभरो	(R)
वनीदयराज्य	काकिकाम	(4)	tut.	नवतस्वर्धन	~	(fg) te
न-नेद्यकाच्य	माखिक्क्सूरि	(≰)	twr.	नवतस्वविचार		(fig.) 1881
वयकारकस्य	_	(4)	TYI,	नवतत्त्वविद्यार	-	(Nr.) 1
नवकारवैतीयी	_	(₹)	448	गयनस्थान	देवचन्द	(fig) wit
नवरार्वतीतीचुटा		(e)	1,80	नवनङ्गन	निवारीकाक (वि) 442, WIY
नवकार बड़ो विवद्यी	मध्येष	(B _E)	928	नवयत्त्रपरिता	_	(F) 198
नवकारमहिनास्त्रवर्ग	किनश्क्रमसूरि	(jfl)	11	वदरमदित	च जारसी दा स	(fg) was
नवसारमन्त	_	(₹)	411	वरणनर्गत	-	(我) wtw
नदेशास्त्रस		(m.)	111	वेदरलगान्य	-	(8) १ ६
वयसारतन्त्रभवी	_	(fig)	30	नहोरिष्ट	-	(4) 12
मदकारमा	व्यवस्त्र शिंख	(fig)	170	गहनबीकारप्रनिधि	_	(fig) 98
वदनारराख	_	(fk)	958	शतकुरारचरित्र	धमघर	(g) fat
नवसारक्वी	_	(Ot)	WYK	नामकुगारचरिष	मक्किषेकस्रि	(a) \$ag
वनपरभावनावार		(m)	41	शमकुवारवरिष	-	(4) 1 4
नवकारकरूपान	गुरापमस्रि	(B()	115	भावकुमारचरिष	वक्षाव	(M.) 601
नवकारसम्बद्धाः	क्षाराजगरिक	(fit)	11	धलपुगारवरिश	_	(A) int
नवस् [मध्यत्रवित्र]	~		१२१	मा पञ्चनारच रित <i>दी</i> का	प्रशासम्	(q) int
শ্ৰহমূৰভিত া লৰ্থনাৰ	स्तदन —	(4)	11	वानर्वता	— (A)	साम) २११
भवस्यूवर्गितपन्तर्गत् रो	٧	(m)	***	वत्रमीयः	_	(G() 46x
भवद्यसूत्रम		(a)	MES	नारभाकना	त्र नेसित्च	(a) tit
मदशस्त्रका	_	(4 B)	11	वामधीवया	क्रिशनसिंह	(Pg) 1911

भाषा पृष्ठ स०

(हि॰)

(स०)

लेख क

नित्यनियमपूजा सदामुख कासत्तीवात (हि॰)

प्रन्थनाम

नित्यनियमपूजासग्रह

नित्यपाठसग्रह

न्त्यपूजा

नित्यपूजा

नित्यपूजाजयमाल

नित्यपूजापाठसग्रह

नित्ययू नापाठमग्रह

नित्यपूजाराठसग्रह

नित्यपूजासग्रह

नित्यपूजासग्रह

नियमसार

नित्यवदनासामायिक

नित्यपूजापाठ

नित्यनैमित्तिकपूजापाठ सग्रह

प्रन्थनाम	नेवक	भाषा पृष्ठ	स॰
नागश्रीसज्माय	विनयचन्द	(हि॰)	४४१
नाटकसमयसार	वनारसीदास	(हि॰)	६४०
६५७	s, ६८२, ७२१, <i>७</i>	५०, ५६१, ५	300
नाडीपरीक्षा		(₹ 0)	३६८
		६०२,	६६७
नादीमञ्जलपूजा	_	(स०)	४१८
नाममाला	धनञ्जय	(सं०)	२७४

२७६, ५७४, ६८६, ६८६, ७०१, ७११, ७१२, ७३६ (हि॰) २७६ वनारसीदास नाममाला

६०६, ७६५ (हि॰) ६६७ ७६६ नाममञ्जरी नन्ददास नायिकालक्षण (信0) कवि सुन्दर ७४२ (हि॰) ७३७ नायिकावर्शन

(स∘) २६५ नारचन्द्र (स∘) ६०५

नारचन्द्रज्योतिपशास्त्र नारायणुकवच एव म्रप्टक (हि॰) नारीरासो 646 नासिकेतपुराख (हि॰) 030

नासिकेतोपाख्यान (हि॰) 030 निघटु (स॰) 338 निजस्मृति जयतिलक (स∘) 쿡드 निजामिए व्र० जिनदास (हि॰) ęy. नित्य एव भाद्रपदपूजा (स०) 888

नित्यकृत्यवर्शन (हि०) ६५ ४६४ नित्यक्रिया (सं∘) निन्यनियम के दोहे

नित्यनियमपूजा

(हि०) नित्यनियमपूजा

X3X ७१५

138

५१६, ६७६

(स० हि०) ४२६

निरञ्जनशतक निरञ्जनस्तोत्र

निर्दोपसप्तमीवतकथा

निर्माल्यदापवर्शन

४६७, ६८६ निर्वास्यक्ष्यासम्बद्धा

नियमस।रटीका

निरयावलीसूत्र

निर्दोषसप्तमीकथा निर्दापसप्तमीकथा पाडे हरिकृष्ण

निमित्तज्ञान [भद्रवाहु महिता] भद्रपाहु

बा० दुलीचन्द

(মা০) (म०) ३८ (সা০) 35

(हि॰) 988 (स०) 828 (भप०) २४५

श्रा० कु दकुन्द पद्मप्रभमन्ध।रिदेव निर्भरपञ्चमी।वधानवथा विनयचन्द्र (ग्रप०) २४५, ६२८ (हि॰) ¥30 न० रायमल (स०) ६७६, ७३६

(हि०)

(स∘)

४६5

७७४, ७७६ (प्रा॰ मप॰) ४६७ — (स॰) ४६७, ७<u>६</u>३ — (स॰ प्रा॰) ६३३ (म०) २५५

— (स∘ हि०) **६**83 ७०२, ७१५ (प्रा० स०) 888

(स०) ७००

६८३

(स०)

६६४, ६६४, ६६७ (हि∘) 885 (हि॰) 885

(स०) ५६०

48 £

685

५३४

(म० हि०) ३६८

e#]		[सन्धनुक्यविद्य
मन्द्रम्भ क्षेत्रक मा	गपुष्टसं ∫ मन्यनास	संबद्ध भाषा द्वर सं•
वित्रीक्षराध्यक्षका — (१	II) ३१५ नीविषल्यामुख	सामवेत्रसूरि (ग) ११
YEL YEE 295 495 49 48%	६३ ६६२ गीतिविनोद	— (fi) 11
w Yes 150 250 vet w	क ह वीतिश्रवण	मतृइसि (तं वरध
দিৰ্দিশুক্তহীয়া — (মা) ३६६ गोतिमस्य	चायम्ब (पं) ॥१॥
विवीत्स्वाक्ष्युवा (_{थ ४६} नीतिचार	इन्द्रबन्दि (ते) १२६
	वं) ३९६ नीविवार	बाग्रहन (४) १४४
444 ASE AX1 845 60 864	् १ शीविकार	— (đ) HI
114 112 144 15 1X1 1ES	(७)(७) शीस क्यात्रीवय	नीसकंठ (वं) रूप
#2 #Y#	नीमनुख	— (₹) Ŋ
नियोश्यानकामा स्वय (r) च नेमिकीस	पासचार (हि) ४४६
विशेक्केक्ट्रवा — (दि)	VEE हर येगिनीय	मूचरदास (दि) ४१९
_) ४६२ वेथिशिनवस्था व को	केलची (गि) ११०
विश्रास्त्रका (१	४११ निनिवनस् त्व व	शुनिकोधसक (दि) ११
निर्वात्मुकाराक समरक्रकाल ([‡]	१) ४१६ गैमिबीका वरिव	क्यायाम्य (दि) (वर्ष
निर्वात्मम्बर क — (f	() ६५ विभिन्नी की बहु री	विश्वमूक्या (वि.) कर्म
শিশতিক্তি (ভ)	३११ ६६३ विनियू तकान ्य स	खाक्रणि विक्रम (र्द) १४६
ानवांक्रमतिक प्रमाखा क वी चरी (¥्) ४३६ विनिन रैन्यस्तो च	अशमाभ (ते) १६१
দিখাত্ৰৰতি — (f	ह) १९६ नेनियानएकस् या रीस्ती	
निर्धासपुरियञ्चन विश्वपृष्य ।	६) १६ विनासका नार्यामस	
मिर्वाखभोदगीलक मैशिकास (f	E) 4R]	461
	f) ६। नेविना वका बाद्यमा स	
	ं) १११ नेपिनानकी भागना	चेवकराम (दे) ^(क)
***************************************) १६६ गियनान के स्थानन	(fg.) tas
Therefore the second se	() 411	द करत बरह
	() ^{२२} वैकितात के स्वतन्त्रस	
	E) ७१५ नेविनान क्रमास्क्रम () २३१ नेविनोनोज्यस्य	
	- Industrial Med	बगवम्पव १५
	- Industries	हिम्बन्धावाय (०)
Marketine (() ^{१.६} शिवन सङ् द	शुभवाद्य (व) स्ट

प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	स॰	प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ट	स ०
नेमिनाथपुराएा	व्र० जिनदास	(स०)	१४७	नेमिराजुलगीत	जिनहर्पसूरि	(हिं०)	६१=
नेमिनाथपुरागा	भागचन्द	(हि∘)	१४६	नेमिराजुलगीत	भुवनकीर्त्ति	(हि॰)	६१८
नेमिनायपूजा	कुवलयचन्द्	(स०)	६३७	नेमिराजुलपचीसी	विनोदीलाल		, ७ ४७
नेमिनायपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(40)	338	नेमिराजुलसज्भाय		(fਿੱo)	४४३
नेमिनाथपूजा	_	(हि॰)	334	नेमिरासो	_	(हि॰)	७४४
नेमिनायपूजाप्टक	शभूराम	(स०)	334	नेमिस्तवम रि	जतसागरगणी	(हि॰)	€00
नेमिनायपूजाप्टक	_	(हि∘)	338	नेमिस्तवन	ऋपि शिव	(हि॰)	You
नेमिनायफागु	पुएयरल	(हि॰)	७४५	नेमिस्तोत्र		(स०)	४३२
नेमिनायमञ्जल	लाल चन्द्	(हि॰)	६०५	नेमिसुरकवित्त [नेमिसु	र राजमितविलि]	कवि ठक्कु	
नेमिनायराजुल का व	ारहमासा —	(हि॰)	92X		_	(हि॰)	६३८
नेमिनाथरास	ऋपि रामचन्द	(हि॰)	३६२	नेमीश्वरका गीत	नेमीचन्द्	(हि॰)	६२१
नेमिनायस्तोत्र	प० शालि	(स∘)	७५७	नेमीश्वरका वारहमासा	खेतसिंह	(हि॰)	७६२
नेमिनायरास	वर्गयमञ्ज ((हि०) ७१६,	७४२	नेमीश्वरकी वेलि	ठक्कुरसी	(हि॰)	७२२
नेमिनायरास	रव्नकीर्त्ति	(हि॰)	६३८	नेमीश्वरकी स्तुति	भूधरदास	(हि०)	६५०
नेमिनायरास	विजयदेवसूरि	(हि॰)	३६२	नेमीश्वरका हिंडोलना	मुनि रतनकी त्ति	(हि॰)	७२२
नेमिनायस्तोत्र	प॰ शालि	(स∘)	335	नेमीश्वरके दशभव	व्र धर्मरुचि	(हि०)	७३८
नेमिनायाप्टक	भूघरदास	(हि॰)	<i>ଅଧର</i>	नेमीश्वरको रास	भाऊकवि	(हि॰)	६३ ८
नेमिपुरास [हरिवः	तपुराख] त्र० नेमि	द्त्त (स०)	१४७	नेमीश्वरचौमासा	सिंहनन्दि	(ぽぃ)	७३८
नेमिनिर्वाण	महाकवि वाग्भट्ट	(स∘)	१७७	नेमोश्वरका फा	त्र रायमङ्ग	(1₹)	७६३
नेमिनिर्वाग्पश्चिका		(स∘)	१७७	नेमीश्वरराजुलको लहुर	ते खेतसिंह सा	२ (हिं)	300
नेमिब्याहली	_	(हि॰)	२३१	नेमीश्वरराजुलविवाद	त्र॰ ज्ञानसागर	(हि॰)	६१३
नेमिराजमतीका चं		(हि॰)	६१ ६	नेमीश्वररास मु	नि रतनकीत्ति	(हि॰)	७२२
नेमिराजमती की इ		(हि॰)	४४१	नेमीश्वररास	त्र॰ रायमञ्ज	(हि∘)	६०१
नेमिराजमतीका गं	4.11.1	(feo)	४४१			६२१,	•
नेमिराजमित वार	हमासा —	(हि॰)	६५७	नैमित्तिक प्रयोग		(स∘)	६३३
नेमिराजमतिरास	रन्नमुक्ति	(हि०)	६१७	नैपषचरित्र	हर्पकीर्त्ति	(स∘)	१७७
नेमिराजलव्याह्लो २०-		(हि०)	२३२	नौशेरवा बादशाहकी व	स ताज —	` / (हि॰)	₹ ३ ०
नेमिराजुलवारहम	- 4		६१६	न्यायकुमुदचिन्द्रका	प्रभाचन्द्रदेव	(स∘)	१३४
नेमिराजिपसज्भाग	म समयसुन्द्र	(हि॰)	६१८	न्यायकुमुदचन्द्रोदय	भट्टाकलङ्कदेव	(Ho)	१३४
					-	• •	• • •

sts]						ī	मश्चानुक	qf
मन्धनाम	सेवड	मापा प्र	ĮU.	ਰ•	प्रभवाम	ध्रमण	भाषा	Ų
खन्त ी दिला	यति धर्मभूषण	(4)	,	t 12	र अक्श्यासर पुता	बाटेबाब मिच्च		
न्यन्त्रो पिकामायाः	मधी प्रमाक्षास	(Fg.))	g BR	वश्चन्त्रसम्बद्धाः	टेक्चन्द	(At	
यामग्री स्वित्र वाला	सदासुद्ध कासकी वाक	w (fk))	2 UZ	वश्चनस्यासम्बूषा	पश्चामाध	(9	
	इस परिवासकाणार्वे)	tit.	वञ्चनस्थासम्बद्धाः	श्रीरम्बास	(FI	
नामधारम	_	(હ))	tir.	र शास्त्रासम् या	क्रवणम्	(Nr	
र्गा नता र	माधवदेव	(ਵ)	,	111	वञ्चलकास्त्रकृता	रित्वजीकाक	(1)	
न्यातकार	_	(€)	•	232	वश्चमधाराण्यपूर्वा		fig	
न्यानीस्त्रात्त्वारी	म चुडामयि	(4	,	785				1
न्यामहिक्तम्ब मञ्जूष		(1		113	पञ्चरत्यासम्बद्धाः	-	(च)
न्यासंस्थान कर		(1		285	व्यवस्थान्य विक			
त्वसञ्ज्ञ इसि इ पुवा	_	- Rr		•	पञ्चनपासन्तर्भवि	~	(#1	
र्ग्यकपूर्वा तृतिङ्गलदार्चित्र		-	,	4.4	पश्चमस्थाः एकोचा स	लुका हालभूपय	(#	
शुवद्दलकरण्यन सुरक्षमारती	विक्रवास	(fig.))	444	पश्चमार्ज्या	-	. (1g.) z	
न्दरशास्त्रव	वसी	(1)	-	-	व्यक्तिवनामपुषा	सङ्खादास		
न्द्रश्रह गरि		(er) x		٩v	व्यक्तिकाम्ब ्या	सामसेन		
•	प				पश्चमाध	_	. (बा	
पञ्चकरस्वयर्गतक		(8))	241	शहरूकामग्रह्मा	शुस्रवाह	(4	
सम्बद्धकरणाव म्याप सम्बद्धकरणाव	•	(fig	,	Y	वस्तुस्त्रे वदमल	त्र श्रावसम्ब	æ	
		(A)	-	*11	·		(6	
पेश्वरूक्याल्य पेत		(8	-	111	I	१० विष् रुसर्ग	(₹	
पञ्चनस्यक्षत्रभा	_	(4	-	1	श्रह्मानायाः	_	· (%	
मञ्जूष्यासम्बद्धाः सञ्जूष्यासम्बद्धाः	0.00	(1)		ų.	श्चारत [११] क		(€	
detection in	2 4	(8	-	Nw.	प्रमुखनस्यारस्टीय	वयास्त्रामी	(6)	
दश्चर स्वास्त्र देश	_	(4		1	शक्तवनस्कारस्तीय	विधानमिष	(#	
रहारसामग ्रीय	i grant		-	110	श्रम रहोस्की स्वास्त	_	(4	
d Market Const. A s.	त सुम्लादीचि	(4		X.	रक्षारीत्मीइक	_	Œ	
वास्त्रकाराक्रील वास्त्रकाराक्रील	. 0.0	(4)	YEE			× ×	
difference 2	n	(d		χ.	वज्ञारमहोष्ट्रवयम		(%	
distance.	NEV RE R	ee. 11	L.	137	र <u>ज्ञ</u> परोध्येष्ट्रज्यस्	न शाह्यस	(Ar	1

(स० हि०) ५१७ | पचलव्धिविचार

(प्रा०)

600

<\$=]					I	क्रशानुबर्ग दश
मन्ध नाम	समक र	मापा पृष्ट	सं∘	प्रम्थवाम	संतक	भाषा १३ छ।
म्यापरी शिरा	वति धर्ममूषरा	(a)	242	बह्यस्ता स्त्रवृत्रा	हाटेशस मिचन	(fg) t
न्यामर्र िकाकारा	मंदी प्रशासाज	(E)	7 F F	बद्ध रस्याणुकपूजा	टेक्चम्इ	(Fg) 2 t
न्यासँ रिशामायाः ।	महा <u>सम्</u> य कामकीकाक	(Pg)	292	व≡वस्याश्वयुगा	पश्चासारा	(4) 11
श्यायमाचा परमा	हंस परिवाजकाचाय	(₹)	283	रम्बरस्यात् रस् या	भैरवशुम	(ft) 1 1
स्था यपास्त्र		(*)	113	रक्षरसम्बद्धा र	स्वयम्	(ft) t
स्यादनार	मायवदेष	(4)	212	वक्षरस्कालसङ्ख्या	रिश्वजीकाल	(t) 111
- याचमार	_	(d)	११६	पञ्च यस्यम्यस्या	_	fξ) ∀tt
म्पर्यन्द्रश्लनक्रत	म चुडामरि	(4)	775	ļ		£ 2 ats
ন্দ্ৰনিৱলনক্ষ	बानके दास	(4,)	***	रहा पा रा रपुरस्		(n) (1)
म्पासनु व	-	(4)	775	वश्चरस्वाहरू (नम्ब	सविव] —	(NT) 444
সুবিসমুকা		ĺξ)	4 =	बह्मसम्बद्धाः स्टब्स् ति	-	(#) ¿¿
नु र्वितास्त्रास्त्रीयस	_		4.7	वक्रक्ताल्यास्थान	इंग हासम्पय	V- /
न्द्रवरणपारठी	विक्यास	(f()	64.0	वश्चप्रवास्त्रवा		(F) 2 2 wet
क ्रसम्बद्ध	ब भी	(fig)		ब्रह्मकेचरत्त्वपू रण	वद्वादास	(4) 11
न्त्रशास्त्र	- 6	n) ২ १ ४	42	वस्त्रोदरास्त्रा	सामसन	(f) att
	q			र क्ष राष्ट्र	_	(/
अ वरता दिनव	शुरुवराष वै	(#)	355	पञ्चनुवस्त्यसम्बद्धमः	शुक्षवाद्र	(\$) a ₂₅
१ ज्ञार स्थला राग्ड	-	(ft)	¥	वसपुरशी वश्वल	ड समाज	
पश्चन श्चमत्त्र गाड	इत्याद	(fr)	-	वश्चनरवचार ाः		V / .
बश्चन स्वामान सार		(F)	144	रहात	प ः विप्तुरार्मा	(ii') 11 (fc) 11
वञ्चरम्यानस्त्रूर	_	(ef.)	1	पञ्चलभाषा	-	(d) 11t
वस्त्र स्वास्त्र स्त्रू		(4)	2	रबस्य (१६) क्य	नशान —	
THIMPT	वाहीमसिंह	(#)	20	वश्चनक्यारशीय		(#) x = C, w) t
रहरम्यान् रपू	। मुजनागर	(4)	2,	व≋वस्त्राससीप	विद्यामि ^{त्}	(4) x 1
	_	nt.	. 210	बद्धारकेळीउ यास्य	_	(Fr) 41
नक्षतस्या नपूर		(제)	1	रहारवेप्टीट्रा उ	_	ASP Are
बद्धश ्चामार दूव	ा सुश्यक्रीलि		YEE		_	(g) +n
4Marantalla	-	(4.)	×	वक्षारमेश्वीद्वातमा 	• द्वाद्याम	(8) 11
	2 / 21 21	u ar	168	। बह्नसोचीनगुवर् ग	4 613/14	*

	त्तेखक भाषा !	वृष्ठ सं०	प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ स०
प्रन्थनाम	खिमचन्द (हि॰)		पद	जीवराम (हि	०) ५६०, ७६१
पद	3x Fax		पद	जोधराज	(हि॰) ४६४
	गरीबदास ^{(हि॰})	- 1		६६६, ७०	६, ७५६, ७६५
पद	10	·	पद	टोहर	(हि०) ध्दर
पद	गुणचन्द्र (हि॰) ५५५,५६			६१४, ६२	इ, ७७६, ७७७
			पद	त्रिलोककीर्त्त (हि	০) খ্ৰ০, খ্ৰং
पद	3.4.		पद	झ० द् यात	(हি॰) খ্ৰড
पद	गुमानीराम (हि॰	,	पद	द्यालदास	(हि॰) ৬४৪
पद	गुलावकृष्ण (हि॰) प्र		पद	दरिगह	(हि॰) ७४६
पद	घनश्याम (हि॰	•	पद	दुलजी	(हि॰) ७४६
पद	चतुर्भु ज (हि॰	•	पद	दास	(हि॰) ७४६
पद	चन्द् (हि॰) ५		पद	दिलाराम -	(हি ०) ७ ६३
पद	चन्द्रभान (हि		पद	दीपचन्द	(हि॰) ५ ८३
पद	चैनविजय (हि॰) ५			दापपन्द दुलीचन्द	(हि॰) ६६३ (हि॰) ६६३
पद	चैनसुख (हि		पद	दुवापन्द देवसेन	(हि॰) ५५५ (हि॰) ५५६
पद	छीहल (हि			देवानहा देवानहा	(ছি০) ২৭৭ (ছি০) ৬৭ ২
पद		(०) ५५१	1	द्वामस	
	१५, ५८८, ५८६, ६१५, ६	६६७, ६६६		2.5	७६६, ७९३
७२४, ७५७, ७१			पद	देवीदास केन्स-	(हि०) ६४६
पद	जगराम (हि॰)		1	देवीसिंह	(দি ॰) ६६४
पद		हे०) ५५१	1	देवेन्द्रभूपण	(fp) 150
पद	जयकीत्ति (हि॰)		1	दौततराम	४४३ (ह०) १३७, ३० <i>७</i>
पद		हे०) ४४	६ पद	द्यानतराय	(हि०) ५ ५३
पद	w .	हि०) ४४	y	४८६, ४८७, ४८८, १	• •
पद	•	हि०) ५५	e ' '	६४६, ६४४, ७०४, ७	६, ७१३, ७४६
पद	7	हि०) ५०	' '	धर्मपाल	(हि॰) ५५८, ७१८
५५५,	६१४, ६६८, ७४६, ७६४, १			धनराज	(हि॰) ७६८
पद ः		(हि॰) ५६	1	नथ विमत्त	(हि०) ४८१
े पद ,		` ` '	(५) पद	नन्द्दास	(हि०) ५ ५७৴
पद	जीव ण्राम	(हि॰) ५	50	,	४०७, ७०४

5 ¥•]					£	प्रस्थानुकमिका
प्रम्बनाम	द्वेशक	भाषा प्रष्ठ	u (मम्बनास	संसद	भाषा पृष्ट म
	मा नेमिचन	(m)	٩c	पतीयसम		(d) fax
रंपर्वसहरीया	क्रमितगरि	(4)	3.8	पट्टीयहाक्रोंनी पुश्तक		(fg) 11
प्रवसंबद्धीका	_	(4)	¥	पहुरोतिः	विष्णुमङ्	(f) t11
प वय बहुबुक्ति	दाश्रवमध्	(a)	H	पट्टामसि	-	(fig) that had
र पर्योष	_	(可)	177	पश्चिममञ्जूष		(m.) 484
र्वचस्त्रीम	_	(₹)	194	पस्तर रहा अवसान	-	(बर) १११
पंचरतोत्रदीका	_	(석)	٧ŧ	पत्रपरीक्षा	काजनेगरी	(e) १११
पंचस्ती नसं च्य	_	(d)	v t	१ १९ऐका	विद्यासम्ब	(8) 131
र्वशासान	विष्णुसर्गा	(a)	२१२	क्ष्मारध्यिक्षार	_	(∉) 111
वचाह	चारू		ęκ	44	चलैराम	(魔) まま
रणां यप्रकाम रणां यप्रकाम	_	(d)	१ १	वद	अवद ्यम	(Fg) 1.1
पश्चाक्तावन गर्धर	• (के समयका) —	(4)	२१	पद	व्यवस्थ	(fg.) t.t
		(d) 1=1	285			\$ 150 m37
पंचाधिकार पंचाध्यानी	_		***	वर	धनम्बद्धीर्च	(fig) % %
प्याच्याना प्रवासिका	त्रि <u>भ</u> ुदस ण न्द	, - ,	404	वर	भस्तपम्	(k) t i,
	कुमहत्त्वाचार्व	(m)	¥	पद	च्य्य स	ફિં) અરફ સ્ટ
दं चारितकावटी ने ।	अयुतचन्त्रसूरि	(B)	Υŧ	que	इतकीकी र्चि	(ft) tet
प्रवास्तिकामनाया	बुवज न	(Pg)	¥ŧ			# 4 #42 #42
वेदास्तिकसमापाः -	प शिशनम्ब	(fk:)	٧ŧ	पद	त क्यूरचन्द्र	(fig) III
पंचारितकानवाना	पांडे हेमएन	(fk:)	¥ŧ		_	472, 49V
पंचारतकात्रकात्रकाः पंचारतकात्रकात्रकाः		(NE) wite.	₩9	पर	कवीर (ff) www stt
व ेशन्त्रवेशि	वीष्ट्रम	(P _L)	-10	क्र	क्रमेचम्	(権) まり
द ेवेश्वित्रव ेशि	ठक्कुरसी	(PE)	w 1	qq	किरान्सुधावः	UE) the nex
1 11 2 11 11		w77,	wit	चर	फिरानदास	(M) 445
ंपे ल्यास	_	(fit)	111	पद	किरामसिंह (fξ) ૨ ૨ - ₩-Υ
पंकितमञ्		(∉)	ŧ ¥	पर	कुमुन्यम्द्र ((f.) 50° 64
पंची यीच	चीएस	(fig) 1	#FE	नर	केरारगुकाव	(8f) Aug
ं ऋद्वित्ती	_	(B()	15	पद	शुराक्षणम्	(N() X T
पत्रकी स्वाही बनागे	नी विकि —	(N _E)	MAS	444 444	444 44% W	. t set se

•	- · · · -	
प्रन्थनाम	त्तेलक भाषा पृष्ठ सं०	Ħ
पद	खेमचन्द (हि०/ ५५०	पद
	प्रत्व प्रहर, ६४६	पद
पद	गरीवदास (हि॰) ७६३	
पद	गुणचन्द्र (हि०) ५८१	पव
	प्रत्य, प्रत्रु, प्रत्रु, प्रत्र	
प द	गुनपूरण (हि॰) ७६८	पर
पद	गुमानीराम (हि॰) ६६६	पर
पद	गुलावकृष्ण (हि॰) ५६४, ६१४	पर
पद	घनश्याम (हि॰) ६२३	पर
पद	चतुर्भुंज (हि॰) ७७०	पर
पद	चन्द (हि॰) ५८७, ७६३	पर
पद	चन्द्रभान (हि॰) ५६१	प
पद	चैनविजय (हि॰) ५८८, ७६८	प
पद	चैनमुख (हि॰) ७६३	q
पद	छीहल (हि॰) ७२३	9
पद	जगतराम (हि॰) ५५१	P
•	प्रतथ, प्रतप्र, प्रतत, प्रतह, ६१४, ६६७, ६६६,	
	930, 0£5, 988	1
पद	जगराम (हि॰) ४४४, ७५४	1
पद	जनमल (हि॰) ४८४	
पद	जयकीर्त्ति (हि॰) ४६४, ४८६	- 1
पद	जयचन्द्र छामङा (हि॰) ४४६	- 1 -
पद	जादूराम (हि॰) ४४५	
पद	जानिमोहम्मद् (हि॰) ५८६	
पद	जिनदास (हि॰) ५८१	
`_	प्रतन, ६१४, ६६८, ७४६, ७६४, ७७४, ७६३,	
पद	जिनहर्ष (हि॰) ५६०	- 1
पद पद	, जीवग्रदास (हि॰) ४४५	- 1
44	जीवस्पराम (हि॰) ५८०	'

लेखक पन्थनाम भाषा पृष्ठ स० जीवराम (हि॰) ५६०, ७६१ द जोधराज (हि॰) ४६४ द ६६६, ७०६, ७८६, ७६५ टोहर (हि॰) ५५२ द ६१४, ६२३, ७७६, ७७७ त्रिलोककीर्त्त (हि॰) ४८०, ४८१ द द व० द्याल (हि∘) ४८७ द द्यालदास (हि॰) 380 दरिगह द (हि॰) 380 दलजी द (हि॰) 380 (हि॰) द दास 380 ाद दिलाराम (हि॰) \$3€ दीपचन्द (हि॰) गद ሂሩ३ दुलीचन्द पद (हि॰) ६६३ देवसेन (हि∘) पद ४५६ देवान्रहा (हि॰) पद ৬५५ £30,770 देवीदास पद (हि∘) ६४६ देवीसिंह (f= 。) पद ६६४ देवेन्द्रभूपण पद :(f=) ५५७ दौलतराम (t=0) पद **EXX** ७०६, ७८२, ७९३ (हि०) पद धानतराय ५५३ स्द४, स्दर, स्दर, स्द७, स्दद, स्दर, स्ट०, ह्र्र,

६२४, ६४३, ६४६, ६४४, ७०४, ७०६, ७१३, ७४६

धनराज

नथ विमल

नन्ददास

पद पद

पद

पद

धर्मपाल (हि॰) ५८८, ७९८

(हि॰)

(हि॰)

(हि०)

985

५८१

ሂട७ ७७०, ७०४

₽¥3]				Į	ल्याक्रमीय
धन्यनाम	सेत्रक	माना पृष्ठ सं०	। ग्रम्थनाम	सेवड	मारा दृह व
र र	नयनसूल	(%) x t	च	माह	(ft) to
41	मरपा व	(fg) tec	•ाइ	आगवम्	(T) tr
41	मदल	(টি) ২৬২	नर	मानुकीचि	(fg) tel
देवरे, देवर देश		ALL AND ESS.	1		242, 572
क ६ ७८२, ७ ३	ψξα		पर	जूबरदास	(fg) 2
47	🛪 सायू	(f) १ २१	रका रव्ह रह		AN ESA ELA
पश	निमे स	(धि) ४०१	127 4 2, 428	P3#	
पर	नेयिषम्ब	(fig) te	यर	श्रकसस्याव	(%) 11
		445, 444	चर	सनसम	(4) (1
नर	म्यमव	(fig) we <	1		44. 415. 424
41	पदाविश्वक	(R) 2=1	• रर	वनसाराम	(fg) s
प र	प ग्रननिर	(R) (VI	ĺ		465' 444
पर	परमानन्द	(ft) wa	रर	बनोहर	(f) at1
पर	पारसनास	(\$) \$2¥	}		alk ass
41	पुरुशतस	(ft) x t	नर	शब्दवार्	(4) zy
•ार	वृशा	(ft) w t	नर	बत्बरास	(b) ac)
91	पूरवारेण	(%) 111	नर	सदीचम्द	(\$) 1M
	चर्गह्रचम्य	348 (10)	•रर	सहेग्द्रकीचि	(IF) dd neg
			त्तर	वाद्यिकचन	(A) A13
91	वनगराभ	(fg) tet			yye att
	245, 45	#30 1 0ER	बर	शुक्रम्बस	10 11
41	वनारमीशास	(Nr.) R.R.	41	मेवा	(it) well
		111 120 BES	वर	मेश्रीराम	(A) And
पर	वत्रदेव	(ff) wew	पर	भावीराय	(1) 111
नर	वासकर्	(fg) 1 93	पर	मोहन	(6) .44
41	भुवशम	(f() %we	44	शप्रया	(4) (4)
X:	ot the three	• 4, • 2, • 2	46	राष्ट्रिय	(fr) ter
41	सगरशम	(E) wt	91	राज्ञासम	14.
नर	सगवर्गात्राम	(E) = 1	पर	श्च	***
et	भगोपाइ	(ft) x t l	पर	शमस्यान	(A) (I

प्रन्थनाम	नेखक	भाषा पृष्ठ	स०	प्रन्थनाम	त्तेवक	भाषा ष्ट्र	३ स०
पद	रामचन्द्र	(हि॰)	५८१	पद	सकलकीर्त्त	(हि॰)	755
•		६६८,	337	पद	सन्तदास	(हिं ६५४)	, ७५€
पद	रामदाम	(हि०)	¥=3	पद	सवलसिंह	(हि॰)	६२४
	•	५६८,	६६७	पद	समयप्रुन्दर	(हि∘)	४७६
पद	रामभगत	(हि॰)	प्रदर			४८८, ४८६,	, ७७७
पद	स्वचन्द्र	(度。)	५५५	पद	श्यासदास	(हि॰)	७६४
५८६, ५८७, ५८८,			380	गद	सवाईराम	(हि०)	४६०
७४४, ७६३, ७६४,		(1) 0 (0)		पद	साईदास	(हि॰)	६२०
पद	रैत्रराज	(हि॰)	985	पद	साहकीर्त्ति	(हि॰)	७७७
पद	लदमीसागर	(हि॰)	६द२	पद	साहिबराम	(हि॰)	७६इ
पद	ऋपि लहरी	(हि॰)	५८५	पद	सुखदेव	(हि॰)	¥ ~ ∘
पद	लालचन्द	(féo)	५८२	पद	सुन्दर	(हि॰)	७२४
	_	५५७, ६९६		पद	सुन्दरभूपण	(हि॰)	
पद	बिजयकी ति	(हि॰)	-	पद	सूरजमत	(हि०)	४५१
	Y, 454, 45 5 ,			पद	सूरदास	(हि॰) ७६९,	, ७६३
पद	विने दीलाल	(हि॰)	, 1 20	पद	सुरेन्द्रकीर्त्त	(हि॰)	६२२
•	-	७५७, ७८३	-	पद	सेवग	(居0) 083,	७६५
पद		(हि०) ४६१		पद	हठमलदास	(हि॰)	६२४
पद '	विसनदास	(हि॰) (हि॰)	, 471 450	पद	हरखचन्द	(fzo)	५५३
पर	विद्यारीदास	(हि॰)	४५७	{		र्दर, रदर्	, ७६३
पद	धृन्दावन	(हिo)	Ę¥Ŗ	पद	इ र्षकीर्त्ति	(हिं ०)	४८६
	ऋपि शिवलाल	(हि॰)	\$48 ***	रदर, रदद,	५६०, ६२०, ६२४,	६६३, ७०१,	०४०
पद	शिवमुन्दर	(हि॰)	७५०	७६३, ७६४			
पद	•	(हि० <i>)</i> ७० न		पद	हरिश्चन्द्र	(E .)	६४६
पद	शोभाचन्द	(हि॰)	, ५५३	पद	हरिसिंह	(हि॰)	५६२
पद	श्रीपात	(हि०)	490 400	४८४, ६२०,	६४३, ६४४, ६६३,	६६६, ७७२, ७	३७६
पद	शीभूपण	(हि॰)	रुद३	७६३, ७६६ पद		/ C \	
पद	श्रीरास	(हि॰)	XE0	पद	हरीदास यनि रीयास	(हि॰) (६०)	৩৩০
		/		f 17	मुनि हीराचन्द	(हि॰)	보드?

ন্যথ]				[सम्बानुकमंदिका
श्रम्बद्धाम	联电压	भारा वृद्ध स	। धम्यनाम	हेक्क मा रा इ प्ट व
44	हमगङ	(A) xe	Y-1	to a see the fire
बर		(fit) xx	वयावतीवधनपूत्रा	- (1) 11
to 106, 4 8	443 4A4 41		वयानवीरानीबारावना सम	est (3) spegu
W Y U Z, WIY	# 1 # 1 # 1 # 1 # 1 # 1 # 1 # 1 # 1 # 1	ty we wes	प्रधारतीशांतिक	- (r) 11
च्यरी	यसभीति	(87) KY1	वधावती श्रह्यमा म	- (#) mt
पद्मी	सहस्राध	(सा) ६४।	1 1	tre see see wit
क्यशिय	भाषपैन	(H) 121	वपावनीवहस्यवाबवरूवा	— (#) t t
षयपरितनार	_	(ft) two	वचावदीरश्चनम् दनद्दिन	— (n) Yti
रप्तुका स	 वसकीति 	(d) tyt	वचारती स्तोष	- (i) rol
पंचाुरलं ।	विश्वासाय विश्वासाय	(d , tre	445 A4 A84 A88	r f xie zer (m
षपरुवात (राजपुरान्त)।	भ सोमसम	(H) (YH	Jile for tot 147	uto wit
षधाुक्ताः (बत्तसम्ब)	_	(H) EYE	क्यानदील्डोच समस्	गुन्दर (६) (१
च्यारमञ्जास	मु रा।त्रचम्द	(le) eve	वधावनीरश्चित्रवी वर्षनाध्यक्ति	e - (#) wit
पप्तरुक्तुम्हा	दीक्षतराम	(ft) tas	पर नमनी	— (ft) *!t
यस्त्रदिर्वय श्चितिहा	वद्यनिर	(W) 45	रवर्षस् (देहारी (दि) व र
ब चर्ने श्रिषं बर्गिय विकासी व	n —	(#) %	वसम्बद्	संस (हि) की
क्य रावश्यित्र	वनसम्	(It) 10	वरतबह ब्राधा	१मन (दि) का वार
रचर्न-परकेशाच्या सा	शक्ताम निवृद्धा	(ft) (वरतंत्रः प्र-६९	
रचन दरकामात्राचा	_	(1)	नदर्भवद है।	itim (f() ang
यद्यर्गीःचारकायाः	বস্তানহি	(el.) · C	वस्त्रेवद श्यासा	
विधाय बाह्यपुरः स	वाश्य	(4) Y t		tus (4) mi
ष्यावदी वी हाल	-	(f() Y *	,	1371 (A) AL
पद्मारतीरम्		(4) far	1	सम (हि) प्रश
<u>च्यावतीययथ</u>	- (d) x t ort	वस्त्रस् जिल	
वच्चरतीयर्के हरतीताथ	-	(a) A15	l	प्राप्त (है) अस
क्यावनीर्वं व	वह चर्	(4) (6		,,,,
च्याचनी दण्डन 		t) it tost		104 117
स्वारतीयस्य स्वारतीयुरी	- (f) % % wrf (#) 3	रामदर हैन	-W 1117
4411.11741	-	(-) 4	ı	435.01

प्रन्थनाम	लेखक भाषा प्रष्ठ सं०	
पदसग्रह	दौलतराम (हि॰) ४४४, ४४६	
पदसग्रह	द्यानतराय (हि॰) ४४५, ७७७	
पदसग्रह	नयनमुख (हि॰) ४४४, ७२६	
पदसग्रह	नवल (हि॰) ४४५, ७२६	
पदसग्रह	परमानन्द (हि॰) ६५४	
पदसग्रह	वखतराम (हि॰) ४४५	
पदसग्रह	वनारसीदास (हि॰) ६२२, ७६५	
पद सग्रह	, वुयजन (हि॰) ४४५	
	४४६, ६८२	١
पदसग्रह	भगतराम (हि॰) ७३६	
पदसग्रह	भागचन्द् (हि॰) ४४५, ४४६	١
पदसग्रह	भूधरदास (हि॰) ४४५	١
	६२०, ७७६, ७७७, ७८६	١
पदसग्रह	मगलचन्द (हि॰) ४४७	1
पदसग्रह	मनोहर (हि॰) ४४५, ७८६	
पदसग्रह	लाल (हि॰) ४४५	
पदसग्रह	विश्वभूषण (हि॰) ४४५	
पदसग्रह	शोभाचन्द (हि॰) ७७७	
पदसग्रह	शुभचद (हि∘) ७७७	
पदसग्रह	साहिवराम (हि∘) ४४५	
पदसग्रह	स ुन ्दरदास (हि०) ७१०	
पदसग्रह	सूरदास (हि॰) ६८४	,
पदसग्रह	सेवक (हि॰) ४४७	
पदसग्रह	ह रखचद (हि॰) ६९३	į
पदसग्रह	इ रीसिंह (हि॰) ७७३	2
पदसग्रह	हीराचन्द (हि॰) ४४४, ४४७	9
पद सग्रह	— (हि॰) ४४१	ć
४ ४५,	६७६, ६८०, ६६१, ७०१, ७०८, ७०६, ७१०	
७१६,	७१७, ७१८, ७२१, ७४३, ७४६, ७५६, ७६०	
७४२,	७५६, ७५७, ७६१, ७७४, ७७६, ७८१, ७८०	

लेखक प्रन्थनाम भाषा पृष्ठ स० (हि॰) ७११ पदस्तुति वनारसीदास (हि०) परमज्योति 803 ५६०, ६६४, ७७४ (स०) प्रशृह परमसप्तस्यानकपूजा सुधासागर दीपचन्द (हि॰) परमात्मपुराख 308 योगीन्द्रदेव (भप०) परमात्मप्रकाश ११० ४७४, ६३७, ६६३, ७०७, ७४७ परमात्मप्रकाशटीका आ० अमृतचन्द् (स∘) ११० परमात्मप्रकाशटीका त्रद्वादेव (स∘) १११ परमात्मप्रकाशटीका (स∘) १११ परमात्मप्रकाशवालाववोधनीटीका खानचद् (हि०) १११ दौलतराम (हि०) परमात्मप्रकाशभाषा १०५ (हि॰) परमात्मप्रकाशभाषा नथमल १११ परमात्मप्रकाशभाषा प्रभुदास (हि॰) ७६५ परमात्मप्रकाशमापा सूरजभान ग्रोसवाल (हि॰) ११६ परमात्मप्रकाशभाषा (हि०) ११६ परमानन्दपचिंचाति (स०) 40X पद्मनदि (स०) ४०२, ४३७ परमात्मराजस्तोत्र सकलकीर्त्त परमात्मराजस्तोत्र (म०) ४०३ (स०) ८०४, ४२५ **परमानन्दस्तवन** परमानन्दस्तोत्र कुमुदचद्र (स०) ७२४ परमानन्दस्तोत्र पूज्यपाद (स∘) 208 परमानन्दस्तोत्र (स०) Yoy ४३३, ६०४, ६०६, ६२८, ६३७ वनारसीदास (हि∘) परमानन्दस्तोत्र ५६२ परमानन्दस्तोत्र (हि०) 358 परमार्थगीत व दोहा रूपचद (हि०) ७०६, ७६४ परमारयसुहरी (हि०) ७२४ परमार्थस्तोत्र (स∘) X0X

ן אר [[तन्त्रा तुक् सक्षिम
प्रत्यसम् १९	हेतक नेपारक	माया पृष्ठ स० (वि.) ११	प्रम्बनाम		माचा दृष्ट से
75	# 40.8	(IE) X6		Yet 1 1	FH JEP CLE HE

**	देगराज	(fig)	3.7	YOU I G YED SEE	uз
44	_		TYE		
to tot t t	441, 444 E	131		पणनवीरानीमाराबना समबयुम्बर (व)	
w y w t, uty	wit wat or	tv we	***	च्यावतीवादिक — (ह)	
पतारी ⁴	यसभीचि	(घर)	445		
पहरी	सहयाशक	(घप)	445	1 '	
पद्मकोच	गावधैन	(d)	115	1	
पंचर्वार कार	_	(fix)	{**	पद्मावतीस्तवसमंत्रसहित — (६) १	
শব্যুক্ত হ	पर्मकी चि	(₩)	TYE	1	
रपपुराख ।	र्शवयेखानाम	(d)	₹¥#	445 A5 A55 A55 X & \$15° 454 41	æ
ব্যযুৱক (ব্যবহুটার)	µ• सोबसेन	(4)	\$Ye	THE THE HEE WEE MAN AND	
नपारुष्य (बसरबन्ध)		(च)	(AE	क्यावर्तमतीच समञ्जाला (दि) (41
च्युप्रसंध्या	सुराश्चनम्	(Nr.)	3¥3		m
শ্বস্থাক্তদালা	दीस तराम	(Nt)	1YE	पष्टिकारी (वि.) क	ţţ
१धनदिरं स्टॉनस् टिका	पद्मनिंद्	(₩)	44	पसर्वाह निहारी (दि) व	ŧ
प्यनीदर्गपनिश्चतिकारीय	n —	(4)	₹₩	वसम्बद्ध रोग (दि) क	ŧ
শ্বদাহিব পৰিস্কৃতিকা	अगतराय	(B()	10	पण्डम् सारम्भन (दि) भी भी	79
रयनन्त्रिप न्येशी बात्रा सह	राकाल किंदुका	(NE)	4	वर्वश्व म कपूरचंद (दि) प्रा	n.
रववरिक्योडीला वा	-	(Nr.)	1	क्वर्गवह केमधन (हि) ४४	1
षयनेविमाननन्त्रार	पश्चनिद	(₡)	4	पनकथ्य गगाराम देख (हि) ६१	2
पद्मानतमञ्जूषक त	पाश्यक्षेत्र	(4)	¥ 4	गरबंधह यै शनिवय (वि) ४४	
रपानदी मी बाल	_	(fig.)	¥ ₹ [परर्वधर् चैनसुवा (दि) ४४	
रयाव वीचस्य	_	. ,		प्यवसह सरहाराम (हि) ४४	
ष्यावतीयस्य	— (4) x 5 :		पर्वत्रम् विन्तुप्तः (दि) का	
पधानवी पश्चे स्वरीस्ती व	_	(4)		नसर्वश्रम् जावा (दि) ४४०	
पयानदीर्जन	सङ्ख्य	(q.)	- 1	पदश्रम् कोसूरास (हि) ४८ ^६	
नयानवी स्थल) 8 4 1	- 1	परवर्ष वृक्षाराम (fk) ६१०	
पपानदीसम् प्रापनीयन) % % 4		च्यक्त् देवाआचा (B() ४४९	
षयाश्वीपूर्वा		(4)	¥ 4	र्त्या, कर करी	

भाषा पृष्ठ स०

प्रन्यानुक्रमाणका	3		
प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	सं०
पदसग्रह	दौलतराम	(हि॰) ४४५,	४४६ व
पदसग्रह	द्यानतराय	(हि॰) ४४४,	৩৩৩
पदसग्रह	नयनमुख	(हि॰) ४४४,	७२६
पदसग्रह	नम्ब	(हि॰) ४४५,	७२६ व
पदसग्रह	परमानन्द	(हि॰)	६८४
पदसग्रह	वखतराम	(हि॰)	888
पदसग्रह	वनारसीदास	(हि॰) ६२२,	७६५
पदसग्रह	वुधजन	(हि॰)	888
		४४६,	६८२
पदसग्रह	भगतराम	(हि॰)	3₹ల
पदसग्रह	भागचन्द	(हि॰) ४४५,	४४६
पदसग्रह	भूघरदास	(हि॰)	1
	६२०	, ७७६, ७७७,	370
पदसग्रह	मगलचन्द	(हि॰)	633
पदसग्रह	मनोहर	(हि०) ४४४,	, ७५६
पदसग्रह	नान	(हि॰)	४४४
पदसग्रह	विश्वभूपण्	(हि॰)	४४४
पदसग्रह	शोभाचन्द	(हि॰)	७७७
पदसग्रह	शुभचद	(ছি॰)	७७७
पदसग्रह	साहिबराग	म (हि॰)	888
पदसग्रह	सुन्दरदार	त (हि॰)	७१०
पदसग्रह	सूरदार	स (हि॰)	६५४
प दसग्रह	सेवः	क (हि॰)	880
पदसग्रह	हरखच	द (हि॰)	६९३
पदसग्रह	इरीर्सि	ह (हि॰)	७७२
पदसग्रह	हीराचन	द (हि॰) ४४	ሂ, ४ ४७
पदसग्रह	_		YYY
	६८०, ६६१, ७०१		-
	७१म, ७२१, ७४		
७४२, ७४६,	७५७, ७६१, ७७	४, ७७६, ७५१	, ७९०

(हि०) ७११ पदस्तुति परमज्योति वनारसीदास (हि॰) 802 ४६०, ६६४, ७७४ (स०) ५१६ परमसप्तस्यानकपूजा सुधासागर दीपचन्द (हि॰) 308 परमात्मपुराग् योगीन्द्रदेव (भप०) ११० परमात्मप्रकाश ७४७, ६३३, ७६३, ४७४ परमात्मप्रकादाटीका आ० स्रमृतचन्द् ११० (स०) परमात्मप्रकाशटीका **ब्रह्मदे**व १११ (स∘) **परमात्मप्रकाशटीका** (स०) १११ परमात्मप्रकाशवालाववोधनीटीका सानचद (हि॰) १११ दौलतराम परमात्मप्रकाषाभाषा (हि॰) १०५ नथमत परमात्मप्रकाशभाषा (हि॰) १११ (हि∘) परमात्मप्रकाशभाषा ७६५ प्रमुदास परमात्मप्रकाशभाषा सूरजभान मोसवाल (हि॰) ११६ परमात्मप्रकाशभाषा (हि॰) ११६ परमानन्दपचिंशति (स०) 808 पद्मनदि (स०) ४०२, ४३७ परमात्मराजस्तोत्र सक्तकीित्त परमात्मराजस्तोत्र (स०) ४०३ परमानन्दस्तवन — (स०) ४०४, ४२४ परमानन्दस्तोत्र कुमुद्चद्र (स०) ७२४ परमानन्दस्तोत्र पूज्यपाद (स०) ४७४ परमानन्दस्तोत्र (स०) 808 ४३३, ६०४, ६०६, ६२८, ६३७ वनारसीदास परमानन्दस्तोत्र (हि०) ५६२ परमानन्दस्तोत्र (हि०) 358 परमार्थगीत व दोहा रूपचद (हि०) ७०६, ७६४ (हि०) ७२४ (Ho) Yoy

लेखक

प्रन्थनाम

tot]				r	मेपानुक्वेदिशं
मेम्ब तार्ग	प्रेक्षक	मापा पृष्ठ शि•) tradecente	नेत्रप	भाषा हुई हैं
परवासीहर्यानवा	रूपचेव	(fig) white	पोचपरवेतिवर्धी शवा		(Fr) 1tt
परपै हिजी रे द्वारत ्ववाति		(AI , Fex	वीचर्यातं	affildia	(grost) 11
पर्य पर त्रका	_	(g.) \$\$# (w. 707	धांचयक्ष्मीचीरंत (प्र		(5100) 11
प्यू पछस्तुति	_	(क) ११४	वायवासॉनार्यकांपव		171
गरवरावर वा	_	(4) 5(1	,		(fg) mil
वरिवानापुत्र		(#) 777	वीदेशपुरंतरम्बाय	र्गमपुष्य	(#) Y 1, tW
परिवारित्युकेसर	नागोनीमह	(6,) 445	पाठेलंडाह्	-	(# #) Xel
वर्धिक्ष ष्टर्म	graph and	(d) two	प्रतिसद्ध		(M) tot
परीकाबु ख	माशिक्कतंहि	(4) 614	पाठनवर्ष पाठनवर्ष		(4) JE 7 x z
रपैकादुबनाशा	वनपन् जामश	(B) (90		र्चा बैवसम्बर	
परीयक्ष्यसँग	And all all selections	(N) 1=	11111	- ul - u - u - u - u - u - u - u - u - u	ੋਂ(ਨ੍) ਆ ਵ
पत्सनंडसन्बद्धाः	E LUMPE	(4) 40	বা ন্দৰপু হাত	करान्ध्रीचि	(¥r) ∤t
फ्लिकार	A	(d) 4m2	বাদ্যবস্থুয়াগ্য	शीभूषय	(n/r) १३
क्यविकार	_	(b) 444		प॰ द्यापन	(e) ts
पत्त्वीववातस्या	- 6		राज्यसपुरासमागा प	लासाच नौपर्र	1 (8) 12
पंरद्रशिवालम् यः	(र सुराक्ष्यव		वासक्ष वपूरत संसारत	दुवाधीरामः	It) it and
प्य विक्रमपुर्वाः	समन्त्रकी वि		वाकामभरित	सामगढ् य	(U) fac
रत्यविकारकृता	सम्बद्धाः रह्मनीन्	(d) 2 s	दर्श ानीमधान प्य	परिवासि -	
	Coloring		वानने करीरवी व	-	(4) A z
		2 3, 214	वृक्तवानवचा 1	। नेसिक्च	(E) 838
क्तवीवश ात्र्वाः	स्थितकीति	(#) x 4	पा विक्त र	_	(#) Y Z
क्लाविकानपूर्वा	_	(ff) t w	नर्र्य विश्वसर्थिता नरिष	_	18x) def
गल्बाविवान रील	म ग्रामकर	(Tr) 141		s» क्षेत्रराम	1.4
अ स्पतिकासक्रीतालयाः	त्रका भूतसागर	(4,) , 515	बार्स्वनिम्पीय श्रा	भू सम बद्धान ्	E Bles
परच िति		(4) (4)			V . /
चित्रवीधान केरेक्ट वर्ग	शुग्रेषेम्	(f) to		साद सादर	(, ,
बोची संगी गणीत्वविधि सम्बद्धाः	- Arrentane	(H) k v	प्रमंशिक्तपर्य	शिवषग्र	174.7
	षा दि षण्डाम् रि	(f) Yes	वार्जिनिकारस्टीन	_	
बदेशिकी	पा म र		चार्वनायक्यं यस गामारा		(- /
वाचारंदीरचा	महानेषु	(R) (x)	'शहर्यनोय शिकारणी सुर्वि	ने करकड़ीरिय	(T) net

पार्दनायकीगुणमाल

जेग्वक

लोहर

भाषा पृष्ठ स० [

300

(हि॰)

मन्यनाम

भन्यनाम

007, c

Yo

२५६

७३०

२⊏६

७१३

(fgo)

(हि॰) २८७

पारसनायकोनिसासी (हo) Ę¥ o पार्यनायकीनिशानी जिनहर्ष (हि॰) ४४८, १७६ पार्वनायकीनियानी (हि०) 4300 पारवंनाघवे दर्घन (RO) **घृ**न्दाघन ERY पार्वनाघवरिय रइधू (धरः) १७६ पार्वनायचरित्र वादिराजसूरि (म०) १७६ पारर्वनायचरित्र भ० मकलकीत्त (म०) 30\$ पार्वनायचरित्र विश्वभूपण (fg.) λźż **पार्र्वजिनचैत्यालयचित्र** ६०३ पार्श्वनायजयमाल नोहट (f₹n) **EX**2 पार्वनायजयमाल — (हि॰) ६४४, ६७६ पार्वनायपञ्चावतीस्तोत्र (स०) ४०४ पार्वनायपुराण [पार्वपुराण] भृधरदास — (हिं) १७६, ७४८, ७६१ पार्श्व नायपूजा (सं०) ४२३ ४६०, ६०६, ६४०, ६४४, ७०४, ७३१ पार्चनांधपूजा (विधानसहिन) — (स०) ५१३ पार्श्व नांयपूजा हर्पकीित (हि॰) 443 पार्स्वनायपूजा (居o) 200 ४६६, ६००, ६२३, ६४४, ६४८ पार्भा नायपूजामत्रमहित (स०) XUX पार्श्व महिम्नस्तोत्र महामुनि राममिंह (स∘) 30x पार्श्व नाघलंदमीस्तीत्र पद्मप्रभदेव (n∘) Xax पार्श्वनायम्तयन देवचद्रसृहि **年**年子 (0円) पार्श्व नायस्तान राजसेन (हि∘) ひまひ पार्श्व नायस्तवन जगरुप (हि॰) ६ द १ पार्श्वनायस्तवन [पार्श्वविनती] अ० नायू — (हिं०) ६७०, ६८३

लेवक पार्श्व नापस्तवन (हि॰) समयराज पार्श्व नायस्तयन समयमुन्दरगणि (राज॰) पार्श्व नायम्तवन 一 (度o) YE, पार्थ्य नायस्तुति (feo) 1 पार्ख नायस्तोत्र पद्मप्रभदेव (स∘) ⁴ पार्श्व नायस्तोत्र पद्मनिद् (स०) ५६६, ७ पार्ख नायम्तात्र रघुनाथदास (स०) ४ पार्वनायस्तोत्र राजसेन (म∘) ४ पार्श्व नायस्तोत्र (Ho) Y ४०६, ४२४, ४२४, ४२६, ४३२, ४६६, ५७८ ६४३ ६४७, ६४८, ६४१, ६७०, ७६३ पार्म्य नायस्तोत्र धानतराय (使·) Y ४०६, ५६६, ६१ **पा**र्यनायस्तीत्र (feo) vo ¥ 46, 4 46, 63 पार्वनायस्तोत्रदीका (平。) पार्वनाषाष्ट्रक — (स॰) ४०६ ६७ पादवं ना वाष्ट्रक सकलकीर्त्त पाराविधि 335 पाराशरी (स०) २८१ परागरीसज्जनरजनीटीका (स०) पावागिरीपूजा (हि॰) पाशाकेवली गर्गमुनि (स॰) २=६ ६४७ पाशावेत्वली झानभास्कार (০ দ) पादााकेवली — (स०) २८६, ७०१ पाद्याभेवली

श्रवजद

x 43, 403. 683. 685 650 1000

पाशाकेवली

নধন]			[सन्तातुकप्रदेश
प्रन्यनाम	***	मापा प्रमुख	मन्यनास हेस च माच द्वा र
रिय नक्षेत्रया सन	याक्रन ऋषि	(fig.) MI	पुरवर्णविक्रयुगममारा होक्रसम्ब (६) ध
सिनलदेशकास्य (१	इंद रत्नलगी)—	•	पुण्करास पुणा विश्वसूचम् (वं) ४१३
·	इरिरामशास	(fig) 1829	पुथ्यकतिवयुवा — (वं) धन
रियक्रप्रदेष	मट्ट इस्मीनाच	(d) 1888	पुन्ताक्रविक्ता (प्रर) 🚻
पिवलमा ना	इस्पद्मीय	(fig) w %	पुन्पाञ्जीवययास (छर) शा
रियक्कारण	माग ा च	(वं) भरर	पुष्पाञ्चनिविधानसमा य इतिवास (वर) रार
विवसकार न	_	(थं) वृहह	पुन्ताञ्जीवविद्यानस्था — (व) २४१
पीठरूवा	_	(d) 1	पुण्यक्रमिक्यरका किनकास (वं) २१४
पीठप्रकालय		(₫) ६७१	पुर्मात्वविषयपमा जूतकीर्थि (वं) ११४
रूक से ए	_	(m) 42	पुलाञ्जनिवयकमा समितकीचि (वं) ११६, भर्ग
दुष्यद ्वतीची	समक्षुत्र्र	(fig) 482	पुणाक्रमित्रक्षमा कु रप्रक्रमम् (दि) शा
दुन्यतस्यवर्ग	_	(d) Yt	\$25° 851
<u>पुष्पालस्यगानीय</u>	सुमुद्ध रायचंत्	(8) 411	पुजाक्कविवरीचारम (पुनाककिवस्या) गङ्गाराम
- पुष्पासनकराकोस	देकणंड	(कि) २व४	(dr.) x ≈ x!!
दुष्पासयकातीय	ष्ट्रीवावराम	(कि) २११	पुष्पाञ्चनिष्ठवपुरा स रतवयम् (वं) र ^{हर}
पुष्पसम्बागेव	_	(हि) २३३	दुव्यक्ततिकत्र्या य• द्वासचम्द्र (व) ।
पुन्तकसम्बद्धान	হুৰী —	(B) 34x	<u>वृज्ञात्त्रिक्तपुर्वा</u> → (व) १ व,३स
पुष्यक्षाचन	- 0	E) 2 W 484	पुष्पाद्धातिकत्तिवर्गवरचा — (वं) ११४
पुरुषरचीर्या	यासदेव	(N) 1	gertalhedierer — (d) Er
दुरमस्त्रमा	_	(#) kt4	वृता पद्मतन्ति (वं) ^{द्र1}
पुरुवरविवा नस्या	_	(m) १४१	द्वरा वर्ष क्लातंत्रक् सुराश्वयम् (प्.) ^१ ११
दुरन्दरक्षवीवास	_	(4) 2	₹ (17) x c
पुरश्चरण् विष	-	(4) 3 4	नुवादानद्रा का नुवा (व /
रू क्कार	बीचन्द्रसु नि	(w) txt	पूजा व व्यवसान
र् तक्षात्त्रम्	म सक्सकीर्थ	(d) (xt	नुसा वनस्य — (-) (c.) १११
नुक्तरवीर्ध रा व	_	(ft) w t	नुरासक — (५)
दुक्तर्ता <u>नु</u> यसम	गावि न्य शह्	(d) 90	वुगाराज्यबद्ध (- /
	समृतचग्राचार्थ	(4) 44	the tas ten tee att att att att
दुरवालीक्ष्य ा वाल	रायांचरा भूबर मिश्र	(fg() 48 l	» vi(

प्रन्थानुक्रमणिका]					[585
प्रन्थनाम	लेखक व	भाषा पृष्ठ	स० │	प्रन्थनाम	नेवक	भाषा प्रा	उ स०
रूजापाठसग्रह	_	(हि॰)	५१०	प्रक्रियाकौमुदी		(स०)	२६१
	५११	, €¥0,	YY	पृ च्छावली		(हि॰)	६५७
पूजापाठम्तो त्र	(स	० हि०)	980	प्रत्याख्यान	_	(शा०)	90
			७६४	प्रतिक्रमग्	_	(स∘)	६६
पूजाप्रकरसा	डमाम्वामी	(स०)	प्रश्र			४२६	, ५७१
पूजाप्रतिष्ठापाठसग्रह		(स०)	337	प्रतिक्रमण	_	(গা॰)	६९
पूजामहात्म्यविधि		(स∘)	प्रश्च	प्रतिक्रमण		(प्रा॰ स०)	४२५
पूजावराविधि		(सं∘)	प्र१२				५७३
पूजाविधि	_	(য়া॰)	प्रश्च	प्रतिक्रमगापाठ		(সা৹)	६८
पूर्जाप्टक	विश्वभूषग्	(से 6)	प्रश्च	प्रतिक्रमणसूत्र		(গা॰)	६६
पूजाप्टक	श्रभयचन्द्र	(हि॰)	५१२	प्रतिक्रमरासूत्र [वृतिसहित]] —	(সা৽)	इह
पूजाप्टक	ष्ट्राशानन्द	(हि०)	५१२	प्रतिमाउत्यापककू उपदेश	जगरूप	(हि∘)	90
पूर्जाप्टक	नोहट	(हि॰)	५१२	प्रतिमासातचतुर्दशी [प्रति	मासातचतुर्दः	शीव्रतोद्यापन	रूजा]
पूजाष्टक	विनोदीलाल	(हि॰)	ভওভ		श्रज्यराम	(स∘)	प्रश्
पूजाष्टक	— (f	हे०) ५१२	, ७४५	प्रतिमासात ५ तुर्दशीपूजा			७६१
पूँ जांसग्रह	-	(स ०ॅ	६०३	प्रतिमासातचतुर्दशीव्रतोद्याप		(स०)	५१४,
	६६४, ६६८, ५	३११, ७१२,	, ७२५	3		• •	, 4 ¥0
पूँजीसग्रह	रामचन्द्र	(हि॰)	५२७	 प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्या	पनपूजा राम) ५२०
पू जासग्रह	तालचम्द	(हि॰)	७७७	प्रतिष्ठाकु कु मपत्रिका	_	(स。)	३७३
पूर्जासग्रह	• —	(हि॰)	५६५	1	ोराजकी ति	(स०)	५२०
६०४, ६६२, ६९	६४, ७०७, ७०८, ७	११, ७१४,	, ७२६,		नरेन्द्रसेन	(स∘)	५२१
७३०, ७३१, ७	३३, ७३४, ७३६, ७	۲ 5 ا		प्रतिष्ठापाठ	आशाधर	(स∘)	५२१
पूजासार	_	(स∘)	१२०	प्रतिष्ठापाठ [प्रतिष्ठासार]	वसुनदि	(स०) ५२१	
पूजास्तोत्रसग्रह		(स० हि०)	६९६	प्रतिष्ठापाठ	_		४२२
७०२, ७०८, ७	१८, ७११, ७१३						२ २ २ १, ७५६
७३४, ७४२, ७	१५३, ७५४, ७७ ५ ।			प्रतिष्ठापाठभाषा वाट	. दुत्तीचन्द		५२२
पूर्वमीमासार्घप्रक	रणसग्रह लोगान्तिभा	स्कर (स) १ ३७	प्रतिष्ठानामावलि		(हि॰) ३७	
र्पेसठबोल	_	(हि॰)		1 _		(हि॰)	
पोसहरास	ज्ञानभूपण	(हि॰		1	_	- (स०)	

नक्ष ः]			[अन्यदुक्तिम
प्रन्यसास	सेशक	भाषा प्रष्ट स	्रियम्बनाम क्षेत्रक मा वद्य है।
रिम वर्धस्य क्रम	सामान कवि	(fig) 48	पुष्पार्वविक्रपुराममाया होहरसङ्ग (दि) स
विवन संख्य सम् (।	दंद रामानगी)—		पुष्पराक्ष पूथा विश्व मृत्यु (वं) ग्रीव
	इरिरामश्रास	(fig) 11	पुराक्तविवयुवा — (व) स्त
रिमभग्रदीय	सङ्क्ष्मीनाव	(4) 111	पुराप्रतिकरा - (स्त) सा
विवतश्रमा	¥पशीप	(fig.) w %	पुण्याक्रमित्रकाल — (स्व) कार
विमनदास्य	भागसम	(H) 988	पुलाइकिविकालस्था पक हरिक्षान्त्र (धर) राह
निवसकारक	_	(f) 1tt	पुणाव्यक्तिकागरणा (४) स्त
पीकरूवा	_	(4) 4	पुण्यक्रमिश्चवनमा जिल्दास (ई.) रश
गैठप्रसल न	_	(6) 409	पुन्तक्रमिष्ठतस्या भूतकीर्थि (वं) ३ ^{१४}
पुष्पविक		(NT) 14	पुष्पाक्रमिक्तरमा सक्तितक्षीचि (४) १३३, व्री
पुण्यवतीवी	समयगुन्दर	(fig) tte	द्रभाक्षविष्ठवस्यः सुराजसम्ब (दि) ११४
दुष्पदाच च र्च	_	(g) As	180,225
पुष्पालस्कराकीय	दुसुद्ध रामचेव	(E) 199	कुराह्मविश्वतीद्यास्य (कुराह्म-वश्वदृत्य) गङ्गाद्यम्
पुष्पासस्यातीय	टेश्रमह	(Nr.) 54x	(ef) R =, xt4
दुष्यासम्बद्धानीस	दीखवराम	(हि) १३३	पुरुराक्षातिषवपूरा स स्वतंत्रान् (४) दे ^{त्र}
रुवासस्य सम ावीय	_	(मि:) २३३	पुन्ताक्रक्तिकतपूर्वा स श्चासचन्त्र (ई.) १०४
पुञ्चलवक्ष्याचीयत्	-	(R) 184	কুলাক্সনিয়বসুৰা — (d) হ ^{হ H}
पुष्पञ्चाचन	- 0	1) 2 9 424	पुज्याक्रीनवर्षाच्याच्याः (व) राग
पुरुषस् यो गई	सामध्य	(fg) #8#	पुराक्रमिस्रोक्तान — (वं) १४
ুতৰন্তুৰা	_	(स) ४१६	पुता पद्धवन्ति (वं) ^{हर्}
दुरन्दर्शिक् ल क्ना	_	(a) (a)	पूरा एवं क्याबंतह ब्रु शाक्षणम् (दि) हर्र
पुरन्य प्रातीकार न	_	(#) R u	Telian (ft) :
বুচেধ ংক্তৰিদি		(d) 540	वृत्रश्वामधी नी तुत्री (मि.) ^{६१ १}
Locale	भी चल् यसुनि	(w) txt	दुनान थननाथ — (वं) दूरी
•	म सक्क्षकीर्थि	(दुना वनावः — (d/) (११
दुस्तरवीर्वयस	_	(At) wet	<u>баме</u> — (gl.) _{flg}
<u>বুকাৰব্যিকালৰ</u>	गोविन्दमह	(¥) 46	दुनागरमंत्रद् (स) १
पुरस्तिहरूपुरस		(W) 19	dati d si den desinta nizi nici atc
दुस्पतिविश्वपुत्रसम्	चनिका भूषर शिव	(D() 46]	p 954

प्रन्थनाम	नेवक	भाषा पृष्ठ	Ho	प्रन्यनाम	लेगक	भाषा पृष्ठ	स ०
भनोत्तरस्तोत्र	_	(t, o)	YOE	प्रीत्य क्षरची पई	नेभिचन्द	(हि॰)	४७७
प्रश्नोत्तरोपासका पा र	भ॰ सक्लकीत्ति	(平0)	७१	प्रीत्यद्भग्यदिन	~~~	(हि०)	६६६
प्रश्नोत्तरोद्वार	-	(हि॰)	ξ υ	श्रीपधदापवर्गन	-	(feo)	৬ৼ
प्रगस्ति	घ॰ दामोदर	(स०)	€05	प्रोपधोपवास्त्रतो चा वन		(4∘)	333
प्रदास्ति		(শ০)	200		फ		
प्रवस्तिकादिका	यालकृ प्रग्	(Ħe)	५२		•		
प्रद्वाद चरित्र	-	(£0)	Ę00	फलपांदल [पश्चमेर]	मण्डलिय —		४२५
प्राकृतछन्दनीम		(সা০)	388	फनयधीपारवनायस्तवन	समयभुन्द्रगरि	ग् (स०)	६१६
प्राप्तद्य दनोग	रहागेवर	(সা৹)	३११	पुटररम्थित	-	(हि॰)	७४५
प्राकृतद्वन्दकोश	'अन् <i>ह</i>	(সা৹)	322			७६६,	きゃり
प्राप्टतिविगलशास्त्र		(中0)	३१२	पुटग रज्योतिपव च	-	(स०)	そのス
प्रास्तव्यावरस	चत्र कि	'म॰)	२६२	फुटकर दोहे		(हिं०)	६९५
प्रापृतस्पमाला	श्रीरामभट्ट	(গাং)	२६२			६६६	<u> ৬= १</u>
प्रार् <i>तव्युत्वतिदीपिक</i>	_	(सं∘)	२६२	पुटन रवच	-	(हि॰)	
प्राणप्र ^{ति} ष्ठा		(स∘)	प्र२३	फुटनरपद्य एव वित्त	_	(हि॰)	६४३
प्रागायामद्यास्त्र		(स∘)	2	फुटनरपाठ	_	(स०)	१७३
সাত্যীভাগীর		(हिं•)	७३७	फुटगरपर्णन -	_	(स∘)	108
प्रात क्रिया		(स०)	6 ¥	फुटकरसर्वेया		(हि॰)	५७४
प्रात स्मर्णमन्त्र		(सं∘)	४०६	पूलभीतर्णा वा दूहा	-	(हि०)	१७३
प्रामृतसा र	श्राट कु टकुन्द	(o TR)	240		व		
<u>भायश्चितग्र य</u>	-	(₹;0	UY	वगनूनराग	जयकीर्ति	(हि॰)	३६३
प्रायक्षितविधि	अ कल ङ्कचरित्र	(स∘)	6¥	į.	कमलफलश	(爬。)	48E
प्रायश्चितविधि	भ	(40)	40	•		(हि॰)	७२६
प्रायश्चितविधि	معمي	(年0)	40	n	गुलायराय	(हि॰)	६८४
प्रायश्चितदास्त्र	इन्द्रनन्दि	(সা৹)	40		_	र का है	
प्रायश्चितद्यास्त्र		(যুস০)	\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	1		(०) ३६८ १०) ३६८	
प्रायश्चितसमुद्यटीका	। नहिगुरू	(のほ)	७४	1			, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
प्रीतिद्धरचरित्र	मः नेमिटत्त	(o B)	१८२	4 .		(हि॰)	Ęoo
प्रीतिसूरचरित्र	नोधराज	(हि॰)	१८३	1		(हि॰)	७१०
						1.6.1	- 1 -

=x•]			[क्रमानुकादिय
मन्द्रवास	हैसक	भाषा प्रश्न सं	प्रस्थनाम क्षेत्रक माचा दृर वं
হারিয়ারশ্বশ্বীক শ্ব		\$24	प्रवचनकार चा कुन्युक्त (श.) ११६
प्रदिक्षणार	_	(e) xxx	प्रवचनसारशिका अञ्चलकमू (च) ११३
इतिश्रासार ।	१० शिशकी काफ	(fg) \$83	प्रथमनवारतीया (न) tt1
व्रविद्वाचारीकार		(सं) दरश	वयनसारदीका ~ (हि) १९१
র প্রক্রেলুক্তির্বস্থ	-	(b) 297	
प्रव म्बरुपारयत	[प्रदूष्णसम्	म राजस्का	त्रवचनतारणला कोचराळगाशीका (वे.) 👯
	(fg) 292,	474 774 357	क्ष्यमशास्त्राचा श्रृष्यादनशास (वि) th
प्रयुक्तवरित	सहासताचा र्व	(8 ^f	प्रवचनतारबाय । पाँडे हेमराज (६) १११
प्रयुक्तवरिष	सोमकी चि	(d) t=t	प्रथमशास्त्राचा — (हि) ११४ वर्ष
प्रबुग्नचरित्र	~	(8) (48)	अस्त्राधिवक्कोक (d) ३१३
प्रच स्तवरिव	सिंदक्षि	(वय) १व२	अस्यपुष्टावरित्र — (व) ^{३०)}
इयुम्नवरित्रवासः	मन्त्राक्ष	(%) 1.1	अस्वयमीरनाः गर्मे (म [®]) रेवन
प्रयुक्तपरिवयमा		(R) 1 t	शस्त्रमारः — (म) ^१ ६
प्रय ू म्य एतः	कृष्यराश	(वि) ७१२	जनविद्या (वं) ^{१९७}
त्रच _ु म्न तम		(IE) was	अस्तविशोध — (वं) ^{१६०}
হবীৰক্ তিকা	वैज्ञा म्पवि	(d) it w	प्रणाबाद इवसीय (वं) रहर
प्रकोमचार	क्सकीर्वि	(हें) १११	त्रस्तवार — सं) १६६
प्रभागतीक्षण	****	(Ng) 4.3	अस्तनुपतापनि — (में) देवर
अवाग्यम् -यावनि । व	ालंगाध2ेना [बला	र परवर्गरा)	त्रस्थायमि — (ई.) १८४
	रत्रप्रभसृरि	(#) tto	त्रक्तावति वनितः वैधा मदबाकः (वि) प्रदर्श
সৰক্ষ ি য়াঁৰ	_	: (W) thu	अस्तीचर बारिएस्वनामा 🕫 झामसागर (वं) ^{१६६}
प्रमाणाधिका	भा॰ विधानांत्	(4) (1 b	अरमोशास्त्राता (वं) पृत्ये
बना ण गरी भागाय	লাগ ক্	(ધિ) (ધા	प्रशोशस्त्राधिका [प्रशीसस्यतमा] श्रमावकी ह ३३६ ६०रे
ब्रमान्द्रप्रवेक्य निक		(বি) হভহ	2 (47) 111
श्रमान्द्रभीनीता	विद्यामञ्ज	(वं) ११व	अस्याद्यस्त्यास्याः तुसस्यस्य ५०.७
গ্ৰহাণ্ডনী ন ভিচ		(a) 11	जस्यासस्थापकायसः (५)
ब्रमाग्रहमेगर निक -		(ij) 13m	अस्यातारमावद्याचारमाचा मुलाकादारः ४५८ /
श्रमेष र क्लमा सँगई 	-	(d) १३व (-) १३व	जरनातरकावनावारमाना यमासाल वावरा एवं
प्रमेगरान्त्रान्ता	चनन्तरीर्वे	(E) {}e	त्रस्थोत्तरभाषनाथार — (११) प

भाषा पृप्त स० । लेखक प्रन्थनाम (সা০ हि॰) ৩২ वालाविवोध [रामाकार पाठका धर्य] — (हि॰) वनारसीदाम 940 वावनी (हि॰) ६५७ हेमराज वावनी **X X X** मिण्डलचित्री वासठक्मार विमलकीत्ति (हि॰) 388 वाहबलीसज्माय (हि॰) बाहुवलीसज्भाय समयप्रन्टर 387 (स०) 8XF विम्बनिर्मागुविधि -- (हि॰) ३५४, ६६१ विम्बनिर्माग्विधि (हि॰) विहारीकाल EOX विहारीसतसई (हि॰) विहारीसतसईटीका ७२७ कृष्णदास विहारीसतसईटीका (हि∘) ६८७ हरिचरनदास (हि०) विहारीसतसईटीका 90€ वीजक किोशी (हि∘) २७६ (**स**∘) वीजकोश [मातृका निर्घट] 345 वीसतीर्थन्द्वरजयमाल (हि०) * \$ \$ वीसतीयङ्कुरजिनस्तुति जितसिंह (हि०) 900 बीसतीर्यद्वरपूना (स०) 488 ५१६, ७३० वीसतीर्घसुरपूजा थानजी श्रजमेरा (हि॰) ४२३ बीसतीर्यसुरपूजा — (हि॰) ४२३, ५३७ वीसतीर्य दूरस्तवन (हि॰) वीसतीर्थन्द्वरोनी जयमाल [वीस विरह पूजा] हर्पकीत्ति १६४, ७२२ वीसविद्यमान तीर्थक्द्ररपूजा (स∘) X3X वीसविग्हमानजकडी समयसुन्दर (長。) ६१७ वीसविरहमानजयमाल तथा स्तवनविधि — (हि०) ५०५ बीसविरहमारापूजा (स०) 357 वीसविरहमानपूजा (स० हि०) ७९३ नरेन्द्रकीर्त्त वुषजनविलास व्रधनन (हि॰) **३३**०

लेखक भाषा प्रष्ट स॰ प्रन्थनास वुधजन (हि॰) ३३२, ३३३ वृधजनसतमई वृद्धावतारिवन्न ६०३ वृद्धिवलास (हि॰) वम्बतरामसाह ७४ वृद्धिरास शालिभद्र द्वारा सकलित (हि॰) ६१७ वूलाखीदास स्त्रशीकी वरात (辰。) ५ ४ र वेलि छीहल (信。) ७३८ वैतालपञ्चीसी (म०) २३४ वोधप्राभृत क़ुदक़ुदाचार्य (সা০) ११५ वोघसार (हि०) ७५ व्रह्मचर्याष्ट्रक (सं०) ३३३ **ग्रह्मचर्यवर्**गन (हि॰) ৩४ प्रह्मविलास भैया भगवतीहास (हि॰) ३३३, ७६० भ भक्तामरपञ्जिका (स∘) 80€ भक्तामरस्तोत्र मानतुगाचार्थ (स∘) ४०७, ४२४, ४२८, ४२६, ४३०, ४३१, ४३३. ५६६, ५७२, ५७३, ५६६, ५६७, ६०३, ८०७, ६१६, ६२८, ६३४, ६३७, ६४४, ६४८, 🔧 ६४२, ६६४, ६४८, ६४१, ६४२, ६६८ ६७०, ६७३, ६७४, ६७६, ६७७, ६८०, ६८१, इत्प्र, इत्ह, इहर, इहर, इहर, ७०३, ७०६, ७०७, ७३४, ७३७, ७४४, ७४२, ७४४, ७५५, ७६१, ७८८, ७८६, ७६६, ७६७ भक्तामरस्तोत्र [मन्त्रसहित] — (स०) ६१२ ६३६, ६७०, ६६७, ७०४, ७१४, ७४१ भक्तामरस्तोत्र ऋद्विमन्त्रसद्दित (स०) भक्तामरम्तोत्रकथा पन्नालाल चौधरी (हि॰)

εx≀]				£	u rugasiya
शन्यवाम	सेवफ	भाषा प्रष्ट स	श-वासाम	itau	भाषा दूध सं
बनाया व विनदी	_	(Nr.) 4 x	शास्त्रको	पारवदास	(fg) 111
कश्या वस्त्री	बुग बन	(fit) was	वारम्बद्धी	समज्ज	(ft) ti
शन्दना चकड़ी	विदारीवास (र	efe BEE (3	वायस्वरी	सूरह	(ft) 111
बन्दे तू सूच	_	(भा) ६१६	}	-	ξ υ υ ξξ, αστ
वन्दीनोक्कातीय	-	(vi) 4	वाद्यवडी	_	(A 11
सम्बद्धसम्बद्धाः गौरई	मीकाक	(fig) vt		Wt.	C F SLY H
वंत्रस्य दि	_	(g,) ###	वास्त्रम दवा	रस्यू	
बनारबी/निसंख	वसन्दर्भी दास	(Nr.) EV	वाध्वयावया	च्याहु	(B) 11
444 164, w. 4		NY DET DER	वारहवाववा	च ∗सोमगद्मि	(fg) 11
utu			वास्त्रवाच्या	डिट बम्बस्	((≰) №
वनारबीविश्वास के कु	इंगठ — ()	f) ass ass	वाञ्चनावा	मच्या	
वयागवायिक	_	11	1		665 24
वसरेर यहानुनि दान	-		I ATTURNIS I	भग•वा हास	(B) =1
बच्चमह्ममहा		(TE) were		मूर्थस्य	(n) 10
ৰভাৰণ লৈ জুবাঁননি	_	(8) } %ar	वास्त्रमना	वीसवसम	(fig.) x41 far
वरिषयमीय	चन्नवम्	(fg) wee	शास्त्र मा ना	_	(E(r) 111
बनगराज यपुनावती		(e fe) utt		1 1 488	44X 445, 841
⊀ तत्रम	श्रवीसम		श्राद्यसम्बद्धी श्रीयस	[सन्दर्भाषा] - 40
बङ्गर भाष्ट्रय	_	(f(c) 1 1		गाविन्द	(Per) 12
दार्दसम्बद्धमान्।	वा दुक्तीचम्द	(fit) wt	वार्ध्यका	वृदरक्षि	(At) 40
बार्वस्थारमञ्जून	भूवस्थास	(fit) wx	शास्त्रमात	वसराज	(R) =
		1 v 1, 14	वाध्यमसः		(A) 40
शार्र कपरिषद्	_	(fg) wx	Į.		eya, ali
		ere ene	वारत्माइनी रखनी [ৰঃস্থিম] —	. 171
कार्यायकारी	_	(#) <i>6</i> 89		_	
वास्ट्यपुरेका	_	(मा) ७११	बारहभी भीतीबश्चर	ग जिनेश्वम् यव	(fg) 41
वास्त्रवदुवेता	यावपू	({{e}}} *** ₹	पारतनी श्रीवीतगराः	तः कीमुक्छ	(4) 311
बाज्यपुरेशा	_	(lk) 200	वानाच्युरात वं व	जासास राज्यी	शक्ष (हि.) हर
भाष्यमङ्ग	प्यशास	(D() wax	वस्परागपर्धन	_	(\$\dag{\psi} \) #4

प्रन्थनाम	न्नेयक	भाषा पृष	3 स॰	प्रन्थनाम	लेवक	भाषा वृ	प्र स
भयहरस्तोत्र	***	(हि०)	६१६	भावनाचौतीसी	भ० पद्मनन्दि	(स०)	६३४
भरतेशवैभव		(हि॰)	१८३	भावनाद्वात्रिशिका	श्रा॰ श्रमितगति	(祖の)	५७३
मर्नु हरिदातक	भव् हरि ।	(स०) ३३३	, ७१५	भावनाद्वाविदाकाटी		(स∘)	११प
भववैराग्यशतक		(গ্না৽)	११७	भावनाद्वात्रिशिका		• •	
भवानीवाक्य		(हि॰)	२८८		_		
भवानीसहस्रनाम ए	व कवच	(स०)	७६२	भावपाहुर	कुदकुदाचार्य	(সা৹)	११५
भविप्यदत्तकया ^९	त्र० रायम		३६४	भावनायचीसीव्रतोर	गापन —	(स∘)	५२४
4 5%, 5	४ 5, ७ ४०, ७ <u>५</u> °,			भावनापद्वति	पद्मतन्दि	(स∘)	५७५
भविष्यदत्तचरित्र		(स∘)	१न४	मावनावत्तीसी	_	(स०) ६२=	ः, ६३३
भविष्यदत्तनरित्रभा	पा पन्नाताल चौ।	वरी (हि॰)	१८४	भावन।सारसग्रह	चामुरुहराय	(শ০) ৬৬), ६१५
भविप्यदत्ततिलकास्	पुन्दरीनाटक न्याम त	मिह (हि॰)	३१७	भावनास्तोत्र	द्यानतराय	(हि॰)	६१४
	[सागारधर्मामृतस्व			भावप्रकाश	मानमिश्र	(⊕∘)	३३६
	प० आशाधर	स∘)	<i>ξ3</i>	भावप्रकाश	-	(सo)	335
भागवत		(स०)	६७५	भावशतक	श्री नागराज	(स∘)	३३४
भागवतद्वादशम्मक	षटीका —	(स∘)	१५१	भावसग्रह	देवसेन	(प्रा°)	७७
भागवतपुरागा		(स∘)	१५१	भावसग्रह	श्रुनमुनि	-	৬5
मागवतमहिमा	-	(हि॰)	६७६	भावसम्रह	वामदेव	(स०)	৬=
भागवतमहापुरास	[सप्तमनक्ष] —	(स०)	१५२	भावसग्रह	_	(स॰) ৬ৢৢ	
भाद्रपदपूजा		(हि॰)	४७७	भाषा भूषण	जस वत सिंह	. , , (हि∙)	
माद्रपदपूजासग्रह्	द्यानतराय	(हि॰)	५२४	भाषाभूषरा	धीरजसिं ह	(,6,)	
मावविमङ्गी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा॰) ४२		भाप्यप्रदीप	कैय्यट	(स∘)	२ ३
	जोघराज गांडीका	(हि॰)	. હહ	भाष्यती	पद्मनाभ	(स॰)	२८६
भावदीपक		(हि॰)	६६०	भुवनकोत्ति	वृचराज	-	
मावदीपिका	कृष्ण्यामी	(स∘)	१३६	भुवनदो पक	पद्मश्मसृरि		२८६
भावदीपिकाभाषा	_	(हि॰)	82	युवनदी पिका	नसम्मस्यूर		२८६
भावनाडणतीसी		(দ্বত)	६४२	भुवनेश्वरीस्तोत्र [(स ०)	२८६
भावनाचतुर्विशति	पद्मनन्दि	(स。)	380	8	_		
	के यह नाम श्रीर		- 46	भूगोलनिर्मा ग	पृथ्वीधराचार्य	(स०)	३४
र भविष्यदत्तचीप	र भविष्यदत्तपञ्चमीकर	९. [—] रा भविष्णट र ू	स्राधिकार			(हि॰)	३२३
wh			न्धपारास	' भूतकालचीवीसी	वुधजन	(हि॰)	३६८

ext]				सम्बा द् यक्रमीय
मन्त्रताम	सेवड	भाषा प्रश्न सं	धन्यनाम	संतक माध 🕫 छ
मतान ास्तो शस्या		40 -	भविद्यात	कनक्रकीर्थि (क्रि.) R
नकावरस्तोत्र श्रृहिम	न्दबद्धित संश्वमधा	(fir) *** " "	1	आक्रास चीची (वे) ४।
वस्तावरस्तोवकवा	विनोक्षामा	(वि:) २३४		अत्राह्मात्रकाचा/वस्त्र (वा/स्त्र : (वि:) भा
वकायरस्तीवटीका	१ पकी चिस्			- (4) xi
क्लान धर्ती बटीका				ाचिक सक] — (व) १०
मकान एको प्रदीन?	~	(# ft) y e	व्यक्तवस्थानवि	(₽) — [ebeneri
नक्तानपतीचपुत्रा		(हें) दश्य, दथ	क्यचरीग्राराधका	शिवाचार्थ (वं) व
नकाम रस्तीबपुत्रा		. ,	1	
मत्त्रमरपूर्मा उचापत	शीक्वानभूपर	व (छ) दश्क		
मकस्य रहतीचा रमेथूना		(W) 1793		या स्वराद्धन कासकीनाक (वे)
बकाम क्रतोषपुत्र।	नी भू वक्		चनपर्यःसूत्र	~ (11) v
वकावरस्तीवदुवा	-	(#) keu	व्यवधीरतीय	्रियंचनम्]— (हि) करंभ
		tay 484	44444101 [\$-001	
वत्त्रमदस्तीत्रभाग	भ#बरा श	(वि) अ रद	जनसङ्ग्यातः क कुस्र । जनम	चव ~ (d') fri ~ (दि) पर
मकान स्वापश्रामा	मध्यापा	(g) xs		वसनकवि (दि) ध
	व रम न्य द्यावडा		जनगर म्	— (वि:) १६० वर्ग
नरू स्थानी वज्ञाना		(क्रिय) प्रश	जनगर्यस्य सङ्ग्रीवरेक	— (r) tr
Ł		LC 445 MM+	_	
वक्तमधनाव श्रामा	१२ न मस्त्रा	(6)	जहारक्षिश्रमशीरिया	
चळानस्तीनशाना चळानस्तीनशाना		(वि:) ४११ (वि:) ४११	बहुरक्यहुवस् वदती	- (4) beg - Ut) tax tax
	ter ter w	4 984 90Y	नवता: नप्रदक्षुपरित	रक्षनिक् (वे) १ ह
350 34		1 11 11	अप्रवाहणीय	भंपाराम (वि.) १३
बल्हानसम्बोद (तन्द्रस	विष]	2.4	वासमूचरित	जनसम्बद्धीर (वि.) ? ⁾
मकानरस्त्री पन् ति	म सम्ब	(#) v (य श्चम् यरित	- (R;) 1.1
मत्यागरस्यामीस्यक्तिम्ब		(t) = t		- (m) pol
মডিনাসমর্তন 	- ((बंदि) १७१		~ (m) 21
विशाह		(#) 11		~~ (NI) YES
	*	65,5 6 0 5 1	वन्ध्रदरशिव	~ (≋1 fk) ^{†‡‡}

	-				
पन्थनाम	लेखक	भाषा	वृष्ठ र	तं ०	3
मरुदेवोकी सज्माय ऋ	पि लालचन्द	(हि) Y	ሂ፡	H
मिल्लनायपुरागा	सकलकोर्त्ति	(स	৽) १	५२	म्
मह्मिनाथपुराणभाषा	सेवाराम पाटन	नी (हि	ه) و	प्र२	म
मल्हारचरित्र	_	. (हि	ه) ره	9¥8	म
महर्षिस्तवन	_	. (स	ه (ه	५५५	म
		`	४१ ३, १	४२६	4
महपिस्तवन		- (हि	0)	४१२	Ŧ
महागरापितकवच	_	- (स	(0)	६९२	Ŧ
महादण्डक	_	- (हि	ξο) ·	७३५	1
महापुराएा	जिनसे ना चा	^९ य (स	ĭ•)	{ ¥ 3	1
महापुराएा [सक्षित]	_	- (₹	(° F	१५२	
महापुरास मह	ाक वि पुष्पदन्त	্েদ	ग०)	१५३	;
महाभारतविष्णुसहस्	त्रनाम -	- (;	ਜ•)	६७६	;
महाभिषेकपाठ	_	- (३	∃∘)	६०७	1
महाभिपेन सामग्री	-	— (f	हि॰)	६६८	
महामहर्षिस्तवनटीव	ন -	– (स०)	४१३	
महामहिम्नस्तोत्र	-	- ((स०)	४१३	
महालक्ष्मीस्तोत्र		- ((स०)	¥१ ३	١
महाविद्या [मन्त्रोव	न सग्रह]	((स∘)	३५१	l
महाविद्याविदम्बन		- ((स०)	१३८	
महावीरजीका चौत	डाल्या ऋपि ल	ालचन्द् ((हि०)	४५०	
महावीरछन्द	शुभच	ान्द् ((हि॰)	३८१	
महावीरनिर्वारापूर		- ((म०)	५२६	1
महावीरनिर्वाण व	ल्यारापूजा	_	(स०)	५२६	
महावीरनिर्वाग्तक	ल्यासक्पूजा	((हि॰)	385	
महावीरपूजा	वृन्द्।	वन	(हि०)	५२६	
महावीरस्तवन		वन्द्र			- 1
महावीरस्तवनपूर	ना समयस्	पुन्दर	(हि०)	メデシ	
महावीरस्तोत्र	भ० श्रमरः	र्ह ीर्ति	(4 o)	৩ৼৢ৩	,

प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	स०
महावीरस्तोत्र	स्यरूपचन्द	(हि॰)	५११
महावीराष्ट्रक	भागचन्द	(स∘)	४१३
महाशान्तिकविधान	प० धर्मदेव	(स∘)	६२५
महिम्नस्तवत	जयकी त्ति	(स ▷)	४२५
महिम्नस्तोत्र	_	(स०)	४१३
महीपालचरित्र	चारित्रभूपण	(स∘)	१८६
महीपालचरित्र	भ० रत्ननन्दि	(स॰)	१=६
महीपालचरित्रभापा	नथमल	(हि॰)	१५६
मागीतु गीगिरिमडल	रूजा विश्वभूपण	(स०)	५२६
मारिएक्यमालाग्रन्थप्रश	नोत्तरी	सग्रहकर्त्ता—	-
গ্ৰু গ্ৰ	ानसागर (स ०	प्रा० हि०)	६०४
माताके सोलह स्वप्न	-	(हि॰)	828
माता पद्मावतीछन्द	भ० महीचन्द	(स॰ हि॰)	५६०
माधवनिदान	मावव	(स०)	३००
माधवानलकथा	श्रानन्द	(स∘)	२३५
मानतु गमानवति च	पिई मोहनविज	य (स॰)	२३५
मानकी वही बावनी	मनासाह	(हि॰)	६३८
मानवावनी	मानकवि	(हि॰) ३३४	, ६०१
मानमञ्जरी	नन्दराम	(हि॰)	६३७
मानमञ्जरी	नन्ददास	(हि॰)	२७६
मानलघुवावनी	मनासाह	(हि॰)	६३८
मानविनोद	मानसिंह	(स∘)	300
मानुपोत्तरगिरिपूजा	भ० विश्वभूपण	(स∘)	४६७
मायायहाका विचार	-	(हि∘)	७६७
मार्कण्डेयपुरारा	_	(स०) १५३	, ६ ०७
मार्गेशा व गुगस्या	न वर्णन —	′ (সা∘)	४३
मार्गगावर्णन	-	(সা৽)	७६६
मार्गगाविधान	_	(हि॰)	७६०
। मार्गणासमास	_	(সা৹)	٧ą

⇔]					1	प्रम्यामुक्त्रद्वित
गम्ब नाम	होत्यक	माया द्वर	सं । मन्पना	म	समद	माच पुत्र वं
पूर विषय वर्तमह	र्गावस्त्रुवा पाँके कि	ास (६)	४७ संस्पृतिक	ı		(Ú) th
भूरान बनु विविद्योग	म्याम	(W) 1	२ य ण ्		_	(4) tol
YEE YE	1 45 A14 x	w7 22V 5	ु यम्ब व स	पिविशा पुश्चा	_	(fg.) 1
111 11	ofo e		मन्त्र नही	र्शव प	यशीवर	(4) 111 177
पूराणवर् षुविद्यादिस्त	विशेषा चार्यापर	(4) Y t	४१३ मन्यपार य		_	(#) R
बुरानवर्तु विचलित	प्रदेश विजयमम्	(m) v	१२ वन्धवास्य		_	(ft) ft
मुरालकीकीकीका <u>या</u>	पह साम चौधरी	(ft 1	१३ वापध्य		_	(#) tit
कुरान्त्रशी रीनी बादा	_	(Tr.) w	34	1,1	137	a s'att'ats
मुक्स	_		४६ यन्त्रनीहत	r	_	() (
- भैरवनायम्गीत	_		१६ नग्यप्रकार	Ę	_	(é) tət
मैरपरधावनीयस्	सक्तिचेखमृरि			त्वस्तवन क्राधी।	अनुबि	(E) 11
बैरद १यावडीवरू	_	(d) 41	। निम्मस्थवार	[fee]	_	1.1
मैरवद्यक	- (E) \$12.5	४१ मि दारा गार	र वयगान	_	(मि) रश्य
भोगीरानगी मन्धपूर	हली —	(R) w	श्रापुत्रविष		_	(41) (44)
भौत्रप्रकल	र्व व्यवस	(m) t	१ वरणायम	। धिनदे	रमृरि	(d) 11+
१६ल	_	(T) 3	११ वस्परप्रक	1		(m.) 11
	नर्वभाव	(ft) w	१७ । मस्तरराज्य	. स्वक्	पम्	(ft) II
	ध रज्ञपम	(d) t	२ जग्दनोदन।	क्रवतीमारा सूत्रप	ति जैस	
43 %	_		र वस्तिकार	सर्	रसम	(at) 1
श्रमरमीत	मार्गमह	(fg) wi	शनुरदेशसम	[वा(रागुररम]	_	(d) six
भ्रमरकीत	- (. 4 1	^{त्र} विषुपालकी र	का अधुमु	शम	(C) 111
	म		वण्यनीपपूर्व	1		(8,) xix
474	विश्रापीताल	(fg) w?	क्लोरचनला	ध्यवस	ते कि	(It) ats
सञ्जनसम्बद्धानुनि			वनीरचनामा		-	(14)
	रशिवकाति (दि	सार) र	_१ वर्गाहरपुरार	र वीडियाका चरन्य	_	(f) are
मञ्जूषाङ	_	(#) tt	६ विनेहरमञ्जरी	मनः १र	धिम	(E) all
बञ्चनहरू	- (4		४ ∫ वरपनरिजान	प्रभाग		(ft) ac
संदर्शनीय 	-	(4) ut	र े मस्टावरीक्व	T	- (п (f.) дз

	3		
प्रन्थनाम	नेवक	भाषा पृष्ट	स०।
मेघकुमारगीत	पृतो	(व्हिंग)	७३८
		0×E, 0×0,	७६४
मेघकुमारचौदालिया	क्तकसोम	हि०)	६१७
मेघकुमारचौपई		(हि॰)	800
मेचकुमारवार्सा		(हि॰)	६६४
मेघनुमारसज्काय	समयमुन्दर	हिन।	६१८
मेघदूत	कालिटास	(110)	१८७
मेघदूतटीका पः	सहस्परिवाजन	চ ভাৰ্য—	
मेचमाना	-	(स ०)	२६०
मेघमाताविधि	-	(स०)	४२७
मेघमालायतक्या	श्रुनमागर	(स०)	288
मेघनालायतक्या		(म०) २२६	, २४२
मेघमानाप्रतक्या	खुशालचाद	(हिंग) २३६	,२१४
मेघमालायत [य	गण्ड ₁ चित्र]—	•	१२४
मेघमालायतोद्यापनकय	π	(स०)	४२७
मेघमालाव्रतोद्यापनपूज	π	(0 H)	५२७
मेचमालाग्रनोद्यापन	*******	(म० हि०)	४१७
			अइष्ट
मेदिनीकीश		(० म)	२७६
मेल्पूजा	सोमसेन	(स०)	७६४
मेरुपक्ति तपनी कथा	सुशालचन्द	(हि०)	388
मोक्षपैडी	वनारसीदाम	(हि॰)	٥٦
		६४३,	७४६
माक्षमार्गप्रकाशक	प॰ टोहरमल	(गज०)	4•
मोक्षशास्त्र	उमास्वामी	(स∘)	६६४
मारपिच्छवारी [कृष्ण	ा] के विवत कपे	ोत (हि॰)	६७३
मोर्रापच्छघारी कृप्ए	ा] के कवित्त बर्म		६७३
मोरपिन्द्रधारी [कृष्ए			
मोहम्मदराजाको कय		(हि॰)	६००

प्रन्थनाम	लेयक	भाषा पृष्ठ सञ
मोहिनिवेकयुद्ध	वनारमीदास	(हि॰) ७१४, ७६४
मौनएपादशीक्या	श्रुतमागर	(म०) २२८
मौनएवादशीस्तवन	समयपुन्दर	(हि०) ६२०
मौनियतनथा	गुग्भद्र	(स०) २३६
मीनियतकथा		(स०) २३७
मौनियतिवधान	रत्नकीर्त्त	(स० ग०) २४८
मौनियतोचापन	-	(स०) ४१७
	य	

यन्य [भगे हुए व्यक्तिने वापम मानेना] 803 य यम त्रविधिपल (fe) ३५१ 330, १०७ (०) --यात्रमा त्रसग्रह (स०) ३५२ यत्रसग्रह ६६७, ७६५ यक्षिणीयल्प (स∘) 348 यक्षवीसामग्रीना व्यौरा (हि॰) ५६५ यामहिमा (हि॰) ሂξሂ यतिदिनचर्या देवसूरि (গাণ) 50 यतिभाजनाष्ट्रक श्राव कुन्दकुन्द (সা৽) ¥ 53 यतिभावनाप्टक (₹∘) وچې यतिमाहार के ४६ दोप (हि॰) **६२७** श्रा० वसुनन्दि यःयाचार (स∘) 50 (PO) यमक 478 (यमकाप्टक) यमनाप्टनम्तोत्र भ० श्रमरकीत्ति (स०) ४१३, ४२६ यमवासमातगमी क्या (स०) २३७

सोमदेवसृरि

श्रुतसागर

(स∘)

(₹0)

(स∘)

१५७

१५७

यशस्तिलफचम्पू

यशस्तिलकचम्पूटीका

यशस्तिलकचम्पूटीका

मम्बनाम	सेमह	मापा प्रद	r ef	प ण नाम	gare	मापा इप्र ई
मानी राजी	क्रिनश् स	(fk)	100	युनिपुषत ्र राख	म कृष्यकास	(e) (t)
विष्यापुरसङ इ	मिपदा स	(fir)	4=4	मुनिपुषवदुराल	इन्द्रजीव	(Gr) tri
मित्र निनाम	भासी	(fk)	117	1	रेशमा	(A YE
विष्यासम्बद्धः	वस्तराम	(f)() v	13	तुनीन्परोशी सवनत	-	(A) Air
मिध्य रचवास		(fk:)	*8	1	tet t	per fire bitt
पुट्र दत्ततमी कथा	प भाश्रदेश	(4)	२४४	पुनीचरोंनी श्रवकत		(WT) 184
मुक्कतातामी क्षा	कुरा।सचन	(Tk) 388	180	मुबीश्वरोती श्रमका	त विसदान	18) 11
सुदुरसत्तमीहतोषानन	_	(4)	279	}		११२, धर
बु न्द्राविक्ता		(₩)	111	पुरोध्यराकी व्यवस	· –	(BE) 411
मुक्तानिका	मा सम त	(fk.)	¥3#	तुर्हिकाच वर्गाटि	वासर्थ देशसम्ब	R() 1
युक्तदर्शनिर्वास	सक्त्र श्रीचि	(fk)	1.7	मुक्तिविद्यायसि	_	(SE) EE
युक्तप्रवर्णि (शब्द	व•िक्य]	-	272	नुक्तियोगक -	सहादेण	(4) 11
मूक्तसमिपुता वर	र्डी सुलसागर	(6)	179	बृहर्च बुकारणी	परमङ् सपरिज्ञान	खानार्थ <i>−</i>
बुक्तवनिधुवा		(d) x10	588	गुर्संदुशालसी	राष्ट्रराचार्व	(fig) will
मुखावनिविचलक्या	मृदसागर	(d)	215	बृहर्त्तवुस्त्वा सची	_	(स दि) स
मृत्य निवत्त्वया	सोसप्रम	(4)	785	<u>पुर</u> ्णतंत्र्यः		(#) tt
नवि ।वस्या	-	(44)	224	मुक्तामानां दुव	_	(g.) ats
Ŧ #1	नुशासभाष	(fit)	PYP	बूर्वकेलमा ल	-	(#) ti
	-	(fit)	141	भूस त्रवरी शावनि	_	(g) afs
युक्ताव व नार	-	(flt:)	208	कुत्ताबादधीया	भा वसुत्रमित्	(शंडं) करे
युक्तावनिवन का	_	(#)	1 %	बुशाशास्त्रद्यो प	सहप्रक्रीच	(n) wt
बुन्धा शनशतिश्वान	_	(■)	2.9	ब्रु नावादवादा	द्धपश्चास	(fit)
कुणावनिवनोद्या रमञ्ज	-	(ar)	110	বুনাখালোবা		(%C)
बु कारी हरगीय	_	(fr.)	461	कुपागुन १ उसला		(U.) 444
पु रायमीत्र वर्षाः		(4)	१४४	पुरमुमहोत्त म		#) !!! _\ * [{]
दुविशायका बारहर्वाचा			• •	बृत्पुनशीलक्षणाः।	सर्मभूग शासक्री ः	W
• •	वधापम्	(Y R;)				(ft) tix
बुर्तिनुष्यत्तवस्थ्यः । 	_	(w)	- 1	गुन्तुश्रस्तरमारा		(ij) 413 15# 19)
बुनिनुष् त्रमाना नुहि	_	(धर)	440 J			***

[सम्बद्धमीय

হল]

(सं∘)

Γ

प्रन्थानुकमणिका

नेखक भाषा वृष्ठ स० प्रन्थनाम 838 (स∘) समयसुन्द्र रघुवशटीका 838 (₹0) **सुमतिविजयग**िए रघुवशटीका 838 (स०) कालिदास रघुवशमहाकाव्य (हि॰) 330 रतिरहस्य (स∘) 58 रत्नकरहश्रावकाचार समन्तभद्र ६६१, ७६५ रत्नकर इश्रावकाचार प० सदासुख का सलीवाल (हि० गद्य) **5**₹ (हि०) 도३ नयमल रत्नकरहश्रावकाचार रत्नकरडशावकाचार सघी पन्नालाल (हि॰) 53 (स०) न २ रत्नकरंडश्रावकाचारटीका प्रभाचन्द् **--** (स०) ३३४, ७°€ रत्नकोप (हि॰) ३३५ रत्नकोप (स •) ५२७ रत्नत्रयउद्यापनपूजा (हि॰) रत्नत्रयक्या त्र॰ ज्ञानसागर 980 रत्नत्रयका महार्घ व क्षमावर्गी ब्रह्मसेन (स०) ७५१ प० शिवजीलाल रत्नत्रयगुराकया (स०) २३७ रत्नत्रयजयमाल (সা০) ५२७ रत्नत्रयजयमाल (स∘) ५२८ रत्नत्रयज्यमाल ऋपभदास वुधदास (हि॰) प्र१६ रत्नत्रयजयमाल (भप०) ५२५ रत्नत्रयजयमाल (हि॰) 382 रत्नश्रयजयमालभाषा नथमत (हि॰) ४२५ रत्नश्रयजयमाल तथा विधि (সা০) ६५५ रत्नत्रयपाठविधि (स∘) ५६० रत्नत्रयपूजा प० आशाधर (स०) 352 रत्दत्रयपूजा **केशवसेन** (स∘) ४२६ रत्नन्रयपूजा पद्मनन्दि (स∘) ४२६ ४७४, ६३६

नेखक भाषा वृष्ठ स० प्रन्थन।स प० नरेन्द्रसेन (स∘) रत्नत्रयपूजा X88 (स०) प्रश्६ रत्नत्रयपूजा प्रह, प्रवेष, प्रप्र, प्रष४, ६०६, ६४०, ६४६, ६५२, ६६४, ७०४, ७०५, ७५६, ७६३ (स० हि०) रत्नश्रयपूजा **ሂ**१= रत्नत्रयपूजा (प्रा॰) ६३४, ६४५ (हिं ०) रत्नत्रयपूजा ऋपभदास ५३० रत्नत्रयपूजाजयमाल (भ्रप०) ऋपभदास ५३७ रत्नत्रयपूजा (हि॰) द्यानतराय 895 ५०३, ५२६ खुशालचन्द (हि॰) रत्नत्रयपूजा 382 रत्नत्रयपूना (हि॰) 382 ५३०, ६४४, ७४४ रत्नत्रयपूजाविघान (₹0) ₹00 रत्नत्रयमण्डल [चित्र] ५२५ रत्नत्रयमण्डलविधान (हि∘) 430 रत्नत्रयविघान (स०) 430 रत्नकीत्ति (स०) २२०, २४२ रत्नत्रयविधानकथा रत्नत्रयविधानकथा श्रुतसागर (स०) 236 रत्नत्रयविषानपूजा रव्नक्रीत्ति (सं०) 430 रत्नत्रयविघान टेकचन्द (हि॰) ४३१ रत्नत्रयविधि श्राशाधर (स∘) २४२ रत्नत्रयव्रतकथा [रत्नत्रयकथा] लितकीत्ति (स०) ६४४, ६६४ रत्नत्रयन्नत विधि एव कथा (हि॰) ほより रत्नत्रयव्रतोद्यापन केशवसेन (स०) ४३६ रत्नत्रयव्रतोद्यापन (स∘) ५१३ ४३१, ४३६ ५४० रत्नदीपक गणपति

⊏ 4•]					Į	स्वद्भु कमिक्स
गम्बसास	शेलक	सावा प्रष्ठ	ego	भग्ननाम	है सब	भाषा इप्र सं
दशोगरकना [नदोध	refer l'anne	ur (fir)	181	बोधबव	वरदिव	(8) 11
deliacasi faeta	Carcall Mental		455	योपम्रतक	_	(t) 13
मबोबरवरिव	द्यानकी र्थि		123	योगवातक	-	(At) 13
	कायस्यपद्यनाम		tut	नोक्यवटीका		(4) ११
क्योगरव रेन	पुरस्रदेव		3.5	धोवणसम	ह्रेमचण्डस्री	(4) 111
क्योबरवरिव	वादिराजसूरि		111	वीयसालग	_	(e ²) 185
क्योगरपरिन	गासग्रेन	(ef.)	195	बीयसार	वाराचम्य	(a) sas
क्योथरचरित्र	शवसागर	(4)	१६२	योषश्वार	यागीन्द्रदेष (म	4) \$1 5 a 11
यद्याचरचरित	सक्ककीचि	(▼)	₹	बीचनारकत्या	सन्दर्भ	(fig) 111
बद्धोतरपरित	पुष्पवृत्त	धप) १ वम	486	वोनसारबाया	बुधजन	(UE) ffa
क्यीयरवरिष	गारवदांस	(Fg = 7)	111	वोवसारकावा	नहाकास चौचरी	(fig = g) 188
क्योभरवरिय	प्रमासास	(B()	११	बोवसारमाया	_	(B(+4) {{10
श्व ोबरवरित	_	(fit)	₹₹₹	योवशारतंत्रह	_	(m.) ff#
वक्षीकरमरिष्ठियस	इ. प्रशंचन्त्	(el)	११ २	बीपिगीयम् प	_	(4) 4
ধানসর্ভাগ	_	(Br.)	\$41	बीविवीस्टीव		(4,) A1
यादनमञ्जाभिक	_	(fir)	101	योगीचर्चा	सहारमा इधनवन्त	(घर) ११
युव बनुष्टामन	का समन्त्रमङ्ग	(4.)	385	योगीराची	योगी न्द्रदेष	(44) (48
पुक-प्रमुपासन चिंग		(4.)	292			६८ वस्य
मुवाविश्यम <i>म</i> न्न-	п —	(4)	A\$\$	बीचीमापुचा	_	(m) £#£
बूगाबी चुनवे		(ef)	111		₹	
बोपॉंडचार्नास	मन्सिक	(4)	9.8		•	(fig.) 431
	हपारमाय इवकीर्थि		1.1	रङ्ग बनाने भी नि	TI -	(4) 550
बोर्नाषवामध्य		(A)	1 1	रहार्वजनगर्या	त्र श्रानशायर	(%) 41
मोपविकासिएकी व 		(d)	1 t	रसायमध्यमा राहानेयमध्या	त्र आन्धासर शाबुराम	(A) 4x4
बोमण्डल कोक्टीस्क्राप्टरस्य	भा इरिमइस्रि	(e)	111	रक्षाविकायक्या	- (He sty (h
बोल <i>न</i> िक वोलक्ष		(d) 111		रकुनावविज्ञान	खुनाव	(R) 117
ৰাণকাক বাৰককি	_	(n)	***	रपुरंबदीया	शक्किनतथस्रि	(4) (4)
नीवयस्य	रताबाद चौवरी	(fk)	YX.	रपुर्वकरीया	गुर्कावनकावि	(4) ift,
******		/		•		

११७

७८३

७६३

४३२

४३२

3 6 6

355

388

(स०)

(₹0)

(स∘)

(हि०)

रेखाचित्र [मादिनाथ चन्द्रप्रभ वर्द्धमान एव पार्श्वनाय]---

गगाराम

देवेन्द्रकीित्त

म० जिनसास

रेवानदीवूजा [माहूडकोटियूजा] विश्वसूपरा (स०)

रामचरित्र [कवित्तवध] तुलसीदास

जगनकवि

रामचन्द्र

रामविनोद

रामवत्तीसी ः

रामविनोद

रामविनाद

रामविनोद

रामस्तवन

रामस्तोत्र

रामस्तोत्रकवच

(हिo)

(हि॰)

(हि॰)

(हि०)

(हि∘)

(₩o)

(40)

(₹0)

486

818

३०२

₹¥0

६0 ₹

888

888

€0 ₹

रेखाचित्र

रैदवत

रैदव्रतकया

रैदव्रतकया

रेदवतकया

=€ ₹]					[प्रस् वानुक्यविश्व
प्रम्थनाम	क्षेत्रक	भाषा प्र	प्र स∙	प्रमा नाम	क्षेत्रक	भाषा १३ वे
रत्वदीपक		(4)	48	रसम्बद्ध	_	(2) 11
रत्नरीरक	रामकवि	(R _E)	₹ १4	रंसवकरस्य	_	(fg) 1.1
रत्नमत्वा १	मा सिमकोटि	(a)		रसम्बद्धाः	शासिनाव	(m) 1 t
रावमंद्रश	_	(4)	वृहर	रतनंबरी	राङ्ग भर	(4) 13
चलमञ्जूषिका	_	(ব)	***	1	गानुक्च मित्र	(Nr.) 121
यतसम्बद्धना	गुयननिष्	(Nr.)	144	रस्यक्ररोदीका	गापासमङ्	(a') tat
सनावनिवयक्याः	बोरी रावदास	(4)	719	रवसानर	- Ilaimag	(B) 144
रतासनिश्वविदास	म सम्बद्धाः	(ft)	111	रवाकाविधि		(A) 11
धनामनिवरोद्यास्य	_	(네)	244	रसामकु वरसी चीपह	सरबद्ध कवि	(A) 201
प्रवाचनिवर्गोकी विवि	वेको के बाव	fl()	422	रिक्मिया		(A) the fil
रचवामावर्कत	_	(Nr.)	414	रविक्रिया		(ક્) અના માં
रनवडाल	~~	(विदय)	988	रायमीयसम्बद्धाः	9414	(AF) (At
रस्वसम्ब	र्ष चिवासम्ब	(4)	74	रानमञ्जा	_	(8) 11
रववणास्त्र	_	(権)	84		श्वासमित	(R;) wet
रमञ्जासम	षा अन्दर्भ	(গা)	WY	रायमा		(N;) w
धनियारच्या	कु राक्षपम्	(fig)	***	रापमाला के बी	बीनमी	(R) was
निवारपूजा	_	(4,)	装件	रामगाचा के वीहे रामगामानियों के वान	_	(R) 114
यतसम्बद्धसः [[-		2.52	रम् मतावरी	क्रवम	(सर) धर
स्तरस	नु वसागर	(ftr.)	68.0	रानो के नाम	4144	(A) wal
र्यवेश्वतस्यः	अवश्रीत	(Nr.)	144	रामशीव पश्चित	वेबीशस	(M.) mas
चीरवयकता (चीरवा	रच्या । च्याप्रमू	नयाः (गाः)	980	धानगीविद्यास्य		(4) Ex Ext
-8			• •	राजगीतिकास्य	बहुराम	(fg) 385
र्यम ्भव ना	माप्तकि (वि			राजगीविकसम्भागा	वेबीबाध	(ft) 1H
प्रविश्वतक्षा	मानुकी च	(f)()	ΨX	रायम्बरित		(4) fax
र्शवस्त्रवा	_	(N;)	, कहरू कहरू		* ****	(At) 441
रविश्वतीचाशमञ्जू श	देवेन्द्रकीर्थि	(a)	222	रावारिकम		(d) 1111
रक्षकीक सम्बद्धार	•	(%)	204	राजा जनाशी वसमे कर	ते का करण	
रवरीनुरसम्बद्धारक		(fit)	- 1	रागरलीकम्बन		(R) YE
-						

ના વાસુનાના હાલા	J		
प्रन्थनाम	तेम्बक	भाषा पृष्ठ	स०
लघुसामायिक		(हि॰)	७१८
लघुसामायिकभाषा	महाचन्द	(हि॰)	७१६
लघुसारम्वत प्रनुभूति	रमह्पाचार्य	(स०)	२६३
लघुसिद्धान्सकौमुदी	षरसराज	(स०)	२६३
लघुसिद्धान्तकौम्तुभ		(स०)	२६३
लघुस्तोत्र		(स∘)	868
लघुम्नपन	_	(स०)	५३३
लघुस्नपनटोका	भावशर्मा	(स०)	५३३
लघुम्नपनविधि		(°F)	६५८
लघुस्वयभूस्तो त्र	समन्तभद्र	(स∘)	प्रश्प
लघुम्वयमूस्तोत्र	- ((শ ০) ধ ३७	, ५६४
ल पु शन्देन्दुशेख र		(শ৹)	२६३
लव्यिविधानकथा	प० ख्रुश्नदेव	(स०)	२३६
लव्यिविधानकथा	खुशालचन्द	(हि॰)	२४४
लव्धिविधानचौपई	भीपमकवि	(हि॰)	৬৬৯
लव्यिविधानपूजा	श्रभ्रदेव	(स∘)	प्र१७
ल्यविधानपूजा	हर्पकीर्त्ति	(स∘)	३३३
लब्यिविधानपू ना		(सं ॰)	५१३
		ሂ३४	, ሂሄ۰
लव्धिविधानपूजा	ज्ञानचन्द	(हि॰)	५३४
लव्घिविधानपूजा	-	(हि॰)	५३४
लव्धिविधानमण्डल [५२५
लाँव्वविधानउद्यापन	्जा —	(e #)	५३५
ल व्घिविधानोद्यापन	-	(स∘)	ሂሄ፡
लब्धिविधानव्रतोद्याप	ानपूजा —	(स०)	ሄሄ
लव्यिसार	नेमिचन्द्राचार्य	(সা ॰) ४	१, ७३६
लव्घिसारटीका		(स०)	*\$
लव् षि सारमापा	प० टोस्र्मल	(हि॰)	£З
नाट्यसारक्षपर्गासार	भाषा प० टोहरा	नल (हि०ग	ष) ४३
नान्धसारक्षपगासा	(सह ष्टि प० टोडर	मल (हि॰)	¥₹

1	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ स०
	लहरियाजी की पूजा		(हि॰) ७५२
	लहुरी	नाथू	(हि०) ६६३
	लहुरी नेमीश्वरकी	विश्वभूपण	(हि०) ७२४
	लाटीसहिता	राजमल	(स॰) ८४
	लावस्मी मागीतु गीवी	र हर्पकीत्ति	(हि॰) ६९७
	लिगपाहुड	मा० कुर्कुर	(সা০) ११७
1	निगपुराए।	****	(स०) १५३
1	लिगानु धा सन	, हेमचन्द्र	(स०) २७७
;	लिगानुदाासन	-	(स०) २७६
	नीनावती	भाष्कराचार	(स०) ३६६
′	लीलावतीभाषा ह	यास मथुरादास	(हि॰) ३६६
}	चुह री	नेमिचन्द	(हि॰) ६२२
-	बुह री	सभाचन्द	(हि॰) ७२४
6	लोकप्रत्याख्यानधमिल	क्या —	(स०) २४०
	लो दवर्शन	-	(हि॰) ६२७, ७६३
9		व	, , , , ,
₹	वक्ता श्रोता लक्षण	•	(-1.)
ą	वक्ता श्रोता लक्षण	-	३४६ (०)
D	1		(हि०) ३५६
.	यज्ञदन्तचक्रवत्ति का		हि०) ७२७
8	वजनाभिकक्रवित क्		
ሂ	वज्रपञ्जरस्तोत्र	Y	४८, ६०४, ७३६
Į,	वनस्पतिसत्तरी	गनियानामनि	(स०) ४१४, ४३२
٥ ٧	वन्देतानकीजयमाल	मुनिचन्द्रसूर <u>ि</u>	(সা৹) দ্বধ্
		_	(स०) ५७२
Ę	वरागचरित्र	7777° r.C	६६४, ६४५
3	1	भर्नु हरि प० बद्ध मानदेव	(सं०) १९५ ()
3	वर्द्धभानकथा	पण्यस्य मानद्व जयमित्रहत्त	(स०) १९५
₹		जयामत्रहल ोमुनि पद्मनन्दि	(म्रप०) १९६
	1	ग्छाम पश्चमान्द्	(स०) १९५

-4. 1					٤	44134414
प्रम्बनास	संसद	माना प्र	ए से	प्रम्यनाम	हेराड	भाषा १४
रोहिछीवरिव	देवनस्द	(u 1)	रभ्र	नन्दरिकायमा	~	(∉) ₹
रोद्गुरोदियान	मुनि गुसमङ्	(u1)	478	नम्बरम	बद्ध मानसूरि	(i) t
धेईर्ल्डिवियत्त्रवय	T -	(₹)	¥γ	वसुप्रशतकानुता		(ef.) K
री.हिर्गीतिबल्दय	। देवजन्ति	(धर)	化	त्रमुधनियेत्रविदास	-	(4) 1
रोहिए। विवासस्य	ष्मीश्रम	fig)	9<1	बदुशस्त्रास्	~	(व) ११५,४
रोहिन्द्रीबद्धन्या	षा मानुधीर्ति	(4)	₹₹€	सङ्ग्रहसम्बद्धाः		(fg.) ≠
धेड्ळिंड च्य	सविवयीर्च	(₫)	177	नदुचारास्यरावदीति	খাবিদৰ	(€) ₹
के द्विती बतन का		(घर)	₹¥₹			9 \$ 2, W
धोहिलीववरवा	त्र हानसागर	(G)	₹₹	बदुशतक	सङ्गरपद्	(#) ti
रोहिए प्रवस्या	-	(Nr.)	317	वयुजियब इन्दराम	_	(d) (
र्वेदिलीस्तरका	_	(fig)	490	<u>बचुवत्वर्ल</u> ङ्ग		(k) W F
रीहिछीचन्द्रमा वे	राक्षेन इम्प्यसेन (ह) दश्ह	. 225	शहुनाववस्था	इंदर्कीचिस्रि	(dr) ₹1
रीहिलीवक्युमानव	न [चित्रसरित] - (व) ११२	, 150	धकु न्द्रसङ्गीत	-	(d.) H
धेहिगीक्तवधन	रवाम			বহুগরিচ্চসন্ত	_	(NT) wit
रोहिलीक्यरुमा	_	(Eq.)	11	বৰুহবিক্সক	_	(m w) 10
र्गाहरूदेवतमञ्जय	विव] —		१२१	বৰুণস্থান	स्वयम्	(t)
रीड्गी इंडेक्स्स	_	(₹)	- 1	वपुरञ्जन	_	(fg) st
		112		बबुरायसी	_	(B) 41 (B) 46
- ~-		(F)	XY	-	इ बसागर	(at) (i
संबद्धाः निगः ३	ल _	(4)	. ,	बबुश्रवर्षपृति	_	(d) 28
सदम्यासम्ब	बीजर मया	(4)		समुद्धार्मिरविषयः समुद्धारिककम	_	(4) 44
सहसीयहरू <u>नीय</u>	वश्चनम्ब	(8)	41	वयुद्धांतिक विध्यम्थिक		211
भवनीस्तीय	वस्त्रमदेव	(ar)		अपुर्वादिस्तीन		a) ata asi
	15 A15 24F S			नमुभेर्यवर्षि [भेरोदिया		
try t	r 111 111, 1		139	वर्षस्कान		(d) 10
क्रवीस्तीय	_	(d)	828			17,417
	444 4 4	141, 1	ia	बयुनामानित [गळ] _	_	(₹) ¥
मध्यीस्तीच	चानवध्य	(fit)	,		16 % ¥	2, 456, 111
	स्थाबीराम सोगामी	(Nr)	838	बहुदाल(दिइ	_	(4 (5) ax

- सम्बद्ध**ा**

418]

11 113 11 11 11							
भ्रन्थनाम	नेखक	भाषा ष्ट्रप्ट	स॰	प्रन्थन।म	लेखक	भाषा पृष	
विपाकसूत्र		(গা॰)	४३ │	विष्णुकुमारमुनिकथा	श्रुतसागर	(日の)	२४०
विमलनाथपुराण	त्र० कृष्णुदास	(°F)	१५५	विष्णुकुमारमुनिकथ	_	(स ०)	२४०
_	चन्द्रकीत्ति	(स∘)	प्र३५	विष्णुकुमारमुनिपूजा	वावूनाल	(हि०)	५३६
विमानशुद्धिपूजा	Sp. entrolls	(स∘)	प्र३६	विष्णुपञ्जररक्षा	aprinters.	(सं०)	000
विमानशुद्धिशातिक [मण्डलचित्र] —		५२५	विष्णुसहस्रनाम		(स०)	६७४
विरदावली	_	(° F)	६५८	विशेपसत्तात्रिभङ्गी	श्रा० नेमिचन्द्र	(সা৹)	४३
		७७२,	, ७६५	विश्वप्रकाश	वैद्यराज महेश्वर	(°F)	४३
विरहमानतीर्थ ट्क रजन	नहीं —	(हि∘)	320	विश्वलोचन	धरसेन	(स०)	२७७
विरहमानपूजा		(स)	६०५	विश्वलोचनकोशकी	शब्दानुक्रमिएक। -	— (स॰)	२७७
विरहमञ्जरी	नन्ददास	(स०)	६४७	विहारकाव्य	कालिदास	(स०)	१९७
विरहमझरी	-	(हि॰)	४०१	वीतरागगाथा	_	(গা॰)	६३३
विरहिनो का वर्णन	-	(हि॰)	990	वीतरागस्तीत्र	पद्मनन्दि	(स∘)	४२४
विवाहप्रकरण	-	(स∘)	४३६		४३१,	५७४, ६३४	, ७३७
विवाहपद्धति	_	(स०)	४३६	वीतरागस्तोत्र	श्रा० हेमचन्द्र	(स०) १३६	, ४१६
विवाहविधि	_	(स∘)	४३६	वीतरागस्तोत्र	_	(स∘)	७५८
विवाहशो ध न	_	(स०)	२६१	वीरचरित्र [मनुप्रेक्ष	ना भाग] रइधू	(য়ঀ৽)	६४२
विवेकजकडी		(स∘)	१३६	वीरछत्तीसी	_	(स०)	४१६
विवेकजनडी	जिनदास	(हि०) ७२२	?, ৩ ২০	वीरजिरादगीत	भगौतीदास	(हि०)	४६६
विवेकविलास	_	(हि०)	= Ę	वीरजिएादकी सघाव	ालि		
विपहरनविधि	सतोपकवि	(हि॰)	३०३	मेघकुमारगीत	पूनो	(हि०)	<u>७७</u> ५
विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	(स०)	४०२	वीखानिशतिका	हेमचन्द्रसृरि	(स∘)	388
४१५, ४३	२३, ४२४, ४२=,	४३२, ५६५,	, ५७२,	वीरनायस्तवन	_	(स∘)	४२६
	०५, ६३७, ६४६, ७				न्नालाल चौघरी	(हि०)	ል ሽ o
विषापहारस्तोत्रटी	का नागचन्द्रसूरी	रं (स∘)	४१६	वीरभक्ति तथा निव	ांएमिक —	(हि॰)	ሄሂ १
विपापहार्स्तोत्रभा	पा अचलकीर्त्त	(हि॰)	४१६	वीररस के कवित्त		। हि०)	७४६
E .	६०४, ६५०, ६	७० ५१४,	४७७	वीरस्तवन		(সা <i>০)</i>	४१६
विषापहारभाषा	पन्नालाल	(हि॰)		वृजलालको वारहम	वना —	(हि॰)	६८४
विपापहारस्तोत्रभा	पा	(हि॰)		वृत्तरत्नाकर	कालिदास	(स०)	४१६
विष्णुकुमारपूजा		_	ŧ, ७४७	वृप्तरत्नाकर	भट्ट केटार	(सं०)	३१४
22441		(१६०)	६८६	वृत्तरत्नाकर		(स०)	४१६

≂€€]					Ε	मञ्द्रानुक्रमविद्य
मन्धनाम	होसफ	भाषा प्रा	3 स	घम्यनाम	¥सफ	भाषा इस्र ह
नर्ज माननरित्र	र्व केशरीसिंह (गि	() 127	125	विज्ञुबरको अवसान	_	(Nr.) (1
वय मलद्वर्षितिस्य	सिद्धसेन दिवाकर	(d)	X3Y	विवस्तिरच	इसराव	(fig) tex
बर्ज मानपुराना	सक्क्षशीच	(d)	fx1	विश्वयमुक्तर्यस्य	धर्मशाम	(m) tel
वर्ड मानविद्यानकर	सिद्धिकष	(有)	125	विश्न्यभुवसदगरीया	रिमयाम	(d) (t)
वर्ज मानस्तो व	चा गुयमद्	(8.)	XIX	विद्ययनगीवक	_	(8) 1 Yel
		444	444	विद्वारमधीयक्रमाया	संबी वनासः	r (fit) t
ৰৱ ধানদ্বীৰ	(d) 111	111	विद्वरमनाधवटीका	-	(St) 1
वर्षभीय	_	(₹)	115	रिचमामबीमग्रीर्च द्वार	पुत्रा बरेन्द्रकीर्ति	(#) tit, tu
बबुतन्दि पारकावार	का बसुनन्दि	(nt)	π¥,	विध्यमन्त्रीभरीर्वद्वा		विकास
वनुनन्दियावसामार	प्रशासन्त	(fit)	*			(E) th
बनुवारा संड	_	(g)	YĮK	विचयामधी वरी चें पूर	तमी दुमा 💝	(fg) att
बमुबाराम्सोब	— (d) YEX,	YRE	विश्ववानवीसतीर्व द्वर	स्तरम मुनि दीप	
वस्थानकार	वाग्सङ्	(ef	923	विवानुबालन	_	(d) \$13 (ft) \$3
या क्टूल द्वारदीया	वादिराम	(d)	111	विवरिगाः		(
बाम्बहुलद्वारदीरा	_	#)	111	विनदी		FF 144 (3)
नाजिसकी के समित	गाजिए	(ft)	137	विनदी	वसक्कीर्व	1.6 /
प्रकृष व वदः	ान चामवराय	(fig.)	***	विमती	कुरुद्रविस्व	(.4.)
1	वानराज गारीका	(fk)	20	विनती	व किन्दास	(Mr.) 462 (Mr.) Ada ava
	_	(N;)	4	विनदी	वनारसीदास	436 fff fft. (If) fft
बार्गुला ।	_	(fig.)	225	दिव ा रि	क्रंपरर	(A) Att
बाल्या मा		(4)	2.82	विवनी	धमयमुन्दर	(E) #12
बाल्युपुत्रप्रदिश्च	~	(41)	ĸŧ	विश्वती	-	(ft) A
बाल्युविन्यल	-	(41	124	दिवती प्रदर्शकी	भूधाराम	(fg) 211
रिक्रमचरित्र वाच	नाषार्वे व्यमवसाम	(fg)	235	निवती चीराइपी	मान	(15) 34)
विश्वयाचीची पीर	^१ सम ग्यम् सृरि	(f()	ğΥ	क्षित्रवीशास्त्रपृष	बितपन्द्र	(4) **
विक्रमादिश्वराज्ञाती	क्या —	(fg)	#11	विवनीर्समह	अक्ष है व	(f() art
विचारशावा	_	(m)	•	रिक्तीर्गक्र	क्यास्य (() etr'an
दित्रवरू वारव ण्याम	श्चरि सालपन्द	(fg)	YX	विवर्गीनंत्रह	-	(fg) Yt
दिश्वप ितयन	शुभवाद	(fg)	11			(ft) 1
-	_	(f)	रहर '	विनोदनदर्भा	_	the y ,

प्रन्थानु इसिण्इा]					[≒६७
भन्थनाम	त्तेग्यक	भाषा पृ	ष्ट स॰	ग्रन्थन।म	लेखक	भाषा प्	रुष्ठ स
विपानसूध		(গা৽)	¥۶	विष्णुकुमारमुनिक्या	श्रुतसागर	(२०)	२४०
विमलनाथपुराग्।	त्र० कृष्णुदाम	(015)	१५५	विष्णुकुमारमुनिक्या		(⋴⋼)	२४०
यिमान गुद्धि	चन्द्रमीत्ति	(स०)	ሂ३ሃ	विष्णुकुमारमुनिरूजा	वावृत्राल	(हि॰)	५३६
विमानगुढिरूजा	****	(म०)	५ ३६	विध्युपञ्जरस्का	~	(स∘)	
विमानशुद्धिशातिय [मण्डलचित्र] —		५२५	विष्णुमहस्रनाम		(स∘)	६७४
विरदाव नी		(4 o)	६५६	विशेषसत्तात्रिभङ्गी	श्रा॰ नेमिचन्द्र	(সা৹)	
		৬৩	7, oex	1 .	वैद्यराज महेश्वर	`(∘ <i>₽</i>)	४३
विरहमानतीर्थ द्वरजय	डी —	(हि॰)	380	विश्वलोचन	धरसेन	(स∘)	२७७
वि"त्मानपूजा		(म ८)	६०५	विश्वलीचनकोशकी व	गव्दानुक्रमिग्का -	. ,	२७७
विरहगद्यरी	नन्द्रदास	(শ∘)	६४७	विहारकाव्य	कालिटास	(स०)	१६७
विरहमञ्जरी	-	(हि॰)	५०१	वीतरागगाथा		(সা∘)	Ęąą
विरहिनो ना वर्णन	Balantus.	(हि॰)	000	वीतरागस्तोत्र	पद्मनिद्	(स∘)	४२४
नियाहप्रतरस्म	_	(F o F)	उदृध		•	५७४, ६३४	
निवा हपद्धति		(स०)	४३६	वीतरागम्तोत्र	खा० हेमचन्द्र		
वियाहितिथि	******	(स∘)	५३६	वीतरागस्तोत्र	_	(स∘)	७४=
विराहगोधन		(स०)	388	यीरचरित्र [प्रनुप्रेक्षा	भाग] रङ्घू	(भप०)	६४२
विवेश जव छी		(स∘)	781	बीर छत्तीसी		(₫∘)	13 \
विवयत्राची	जिनशस (वि	₹०) ७२३	, ৩২০	वीरजिएादगीत	भगौतीदास	(टि॰)	448
चिनेपनिलास -	_	(हि॰)		वारजिगादको सघावि		()	
विपहरनविधि	सतोपकवि	(f₹°)	३०३	मेघयुमारगीत	पूनो	(हि॰)	ر وا
विपाग्हासतात्र	धनञ्जय	(स०)		वीरद्वात्रिशतिका	हेमचन्द्रसूरि	(শ৹)	१ ५ c
48X, ¥73	, ४२४, ४२२, ४३	२, ४६४,	४७२,	वीरनापस्तयन		(न ॰)	४२६
१९४, ६०४	, ६३७, ६४६, ७८०	5		नीरमक्ति पन्न	ालाल चौघरी	(हि॰)	270
विपास स्तोत्र है। या	नागचन्द्रमूरि	(ग∘)	¥15	वीरभित तया निर्माण		40 .	¥ 4 \$
विषात्रतारम्तीत्रभाषा	'प्रचनकीर्त्त	(हि॰)	₹१६	गीररन में निवत	-		७४६
fan	६०४, ६४०, ६७०	488 , 1	200	वीरन्यन			८१६
विवारणस्थापा	पनालाल	(Fe)	1	गृज्ञालकी बारहमाय	īi <u> </u>		ery E=y
विकास सम्बोध गाव		(हि०)	1	यृतग्तनार	कालिटास		₹?¥
विष्णुमान्द्रश	_		080	गृ सरत्नात्र र	भट्ट वेदार		₹१४
4 ⋅ 6 ⋅ 7		(110)	६८६ ।	वृत्तरलारर		(40)	

¥\$\$ (0B)

	- ; - st=]					- 1	मन्त्रानुकर्मरुग
•	4-)	_					-
	मन्धनाम	सेत्रक	माचा पू		मम्बनाम	संवद	भाषा 🖫 स
	कृतराताकर क्ष प्रदेशिका				_	11111, (1	
	कृतस्तानस्टिका	पुरदशक्षि		ήţΥ	र्वेषश्चम	_	(4) # A A M
	कृष्यनवर्षे	कृत्युक्कांग			वैव्यविशीय	भट्टरहर	(d) 11
		tot, wit, i	११ भवर	, vtt	नैविधिनाद	_	(\$E) 11
	बृहर् शतिषु च्या	-	(4)	111	€चसार	_	(मं) करन
	बृहर् कस्थान	_	(B()	Int	बैद्यामृत	माम ्बिप ्यमङ्	(≠) 1∈1
	पृहर् कुरत्वतीयांतिय	বলগুৰা খীৰকক্ষ	हुग]		बैप्यक्रास्त्रपुरस्	बौहनगृह	(मं) राग
		त्वक्षपणन	(fig)	IAS	वैम्यान एए द्वराज	_	(m) 251
	कृत्यदाक्षरंत्रस	कृषि मागीकाक	(Út)	७२६		रपीव] स्रीहरू	(fg) 41
	बृह्दवा डिकक्रीटिया			775	वैराध्यवीश	सद्भव	(M) vii
	बृहर्वप्री शक्तामधीरी			99#	र्वसम्बद्धाः	मगवतीदास	(fg) (1
	बुरस्यान	बहोत्पक	(#)	288	वैराम्ययत् क	मद (रि	(m) tt
	बृहर्तवकार	_	(4.)	*ŧŧ	व्याक्रका	_	(m) 548
	बृत्यदिलयस्	_	(#)	i, e	म्बाक्त्स्यांना	_	(a) २१४
	बृहद्कविक्यण	_	(NT)	=4	वाकरलुवत्यादी	_	(4) 544
	बृत्यीवयरायस्य	- (1) 2 4	90	ब श्चनवाचीय	र्व वामावर	(H) M
	प्रतिमातिस् कोष	_	(d)	*44	बदश्यालीय	वेवेन्द्रकर्धित	4) 545
			(4)	42	बयक्कालोध	नृतसामर	(a) 54f
		क्सन्त्रभङ्	(et)	205	वतपनानीम	सक्क्कीचि	(ai) 3x3
			12	139	व नवारीम	_	(a) su
	बृद् स्पवितिकार	-	(취)	188	कानवाकीस	_	(बंबर) रारे
	बृहर-प्रतिविद्यान	_	(ef)	##	वयनकारीय	सुरास्त्रपद	(UE) SA4
	पृष्रिक्षिक्ष । नष्टा	(विष] ←		16X	वर्गनवानीय	_	(A) 514
	वैषरमी विवाह	पमराभ	(B()	88	वत नमार्थश ्	_	(4) 44
	वैश्वनगर		` '	£ 8	वेत्रप् वानस ्	_	(घर) स्ट्रार (क्टि) स्ट्रार
	वैदनकारीकार	इपक्रीविस्रि	(4)		वयक्तालं डह	त्र॰ सङ् विसागर	1.4
	वैद्यमीयम	क्षोतिस्वराज (र			वरश्यमञ्	_	1.4
	वैश्वजीयमञ्ज	_	(4)	* *	स्त्र वयम् । स	सुम्रविसागर	4.4 1
	वैचनीरवरीरा	रह्मह	(4)	# ¥	व तनाम		(/
	मैक्सरीश्यम	नवनपुर्व	(N;)	1 Y [वतशायाच्या	_	(4) **

पद्पाठ

लेखक भाषा प्रय स॰ प्रन्थनाम भाषा पृष्ठ स॰ लेखक प्रन्थनाम न्त्रा० कुन्दमुद् (प्रा०) ११७, ७४५ पट्याहुड [प्रामृत] में।हन (40) प्रवृद् व्रवनिर्शाव पट्पाहुडटीना श्रतसागर (म०) ध३७ **त्रत**्रज्ञासग्रह **(हि०)** पट्याहुइटीका 빗국도 व्रविधान पट्मतचरचा दौलतराम मधी (हि॰) ६३८ ७५६ दत्तविधान रासी (स०) ४३८ पट्रमनया व्रतविवर्ग पट्लेश्यावर्णन (हि॰) व्रतविवरगा コチメ पट्लेस्यावर्शन आ॰ शियकोटि (ন॰) ४३५ व्रतनार हर्पक्रीति पट्लेज्यावैलि (स∘) व्रतसार **=**७ माह लोहट पट्लेश्यावैलि (हि॰) 59 व्रतनस्या पट्महननवर्णन वतोद्यापन्यावकाचार सर्दन्द (स∘) 50 पड्दर्शनवात्री वतोद्यागनमञ्ज् (न०) 보쿠드 पड्दर्शनविचार ष्रतोपवासवर्गान (स∘) 50 पड्दर्शनसमृद्धव हरिभद्रसूरि ष्रतो खासव **र्शन** (हि॰) 50 पड्दर्शनममुच्चयटीका व्रतो के चित्र ७२३ पड्दर्शनमपुच्यवृत्ति गण्रवनस्रि व्रतोकी तिथियोका व्यौरा (हिo) **Ęyy** पट्भितपाठ व्रतो के नाम (हि॰) 50 पड्भक्तिवर्णन ब्रनाना व्योरा (हि॰) €03 प पण्वतिक्षेत्रपालपूजा भक्तिलाल पट्मावश्यक [लघु सामायिक] महाचन्द (हि॰) ५७ पष्टिशतक टिप्पग् पप्टयाधिकशतकटीका राजहसोपाध्याय ^८ट्मावञ्यकविधान (हि॰) 50 पन्नालाल पद्ऋतुवर्णनवारहमासा (हि०) पोटशकारगाउद्यापन जनराज ६५६ पट्कमकथन (Ho) पोडशकारएकया ललितकीत्ति 342 पट्कर्मोपदेशरत्नमाला [छक्त्रमोवएसमाला] पोडशका एाज्यमाल महाकवि श्रमरकीर्त्त (प्रव०) पाडशकारएजयमाल 55 पट्कमॉगदेशरत्नमालाभाषा पाडे लालचन्द्र (हि॰) पन पोडशकारगजयमाल पट्पचासिका वराहमिहर (स०) पोडशना रणजयमाल 737 पट्पञ्चासिका (हि०) ६५६ पोडशकारगजयमाल पट्पञ्चासिकावृत्ति भट्टोत्पल पोडशकारणपूजा [पोडशकारणद्रतोद्यापन] (ন০) 757 पट्पाठ (स∘) ४१७

(हि॰)

888

ट्रचजन

(0 F) 388 (स०) ११= (स०) ७४७ (刊0) ६८३ (ন ১) **675** (हि॰) 48 (Fo) ७७४ (हि०) ३६६ (हि०) 55 (स०) 358 (9F) 3 = 8 3 € 8 (स०) (ন০) १४० (स०) 3=8 (PO) ७५२ (स०) 55 विश्वसेन (छ०) ५१६, ५४१ (ন ০) (स∘) (स०) (₹∘) € 6 1 (সা৽) 488 (সা০ ন ০) 483 रइधू (अर०) ५१७, ५४२ (भ्रमण) 485 (हि॰७०) 482 केशवसेन (स∘) ४३६, ४४२, ६७६ पोडशकारगपूजा श्रुतसागर (स०)

se]	् यभानुकारिक
प्रम्पनाम हेम्बक मात्रा प्रश्न स	्र शस्पनाम संबद्ध मापा पुष्र स
पोडपनारसपूजा [पोडपनारकतातीकारणपूजा]	समुज्ञनतीयरास [समुज्ञनरास]
सुमविमारार (सं) द१७ द४६ ६४७	संसब्धान्त्र (व) इर्रण अन
पौडवनारकारूमा — (मं) दश्द	वनुक्रममास राजसमुत्र (मि.) ११ १
2 4 32 Yek 322 842 543 613	चत्रुक्रमस्तरम राजसमुद्र (दि) धर
1 0 171 12 011	धनिमारवेवणी तथा अपूरासाधान्त्र (वि.) ६३
पोक्सनारणपूजा सुशाक्षणभ् (हि) ४११	स्विकारदेवशीकमा [स्विमसरक्या] — (हि) १११
पोडबराव्हारूवा द्यागतराच (हि.) ७ ६	dan mil mid min mis and met
पोडबकारक्रमावना → (मा) १	धनिसरहष्टिकार — (सं) सः।
पोक्सकारहाजावना प सदासूला (हि.ग.)	विमस्तोष — (त) प्रत
पीवपनारलमलना — (ध्रि) वय	खब्दअनेय व बानुसर्वेद की सहैदवर व) १३३
पोडघवारलमावनास्त्र लक्षम ळ (हि.)	चन्दरल — (वं) २३३
पौडसरारणवानमानर्गमृति ये शिवजीलाक (हि.)	चन्द्रकाराणि — (वं) ^{स्} र
पोडसकारछविकानकवा व बाह्यकेल (सं) २२	बज्जवरियों था वर्डिय (ई.) ^{१६४}
\$45 548 \$8m	ग्रमकोना कविती सक ठ (द <i>)</i> १९४
	चनानुवातन इसवन्त्राचाच (द) ^{१६४}
भोडबसारस्थितानस्या सङ्ग्रक्कोचि (सं) ३१४	कमानुकातगर्गत हेमचन्द्राचाय (वं) १९४
पोक्करारवृद्धनक्या सुराह्मचम्द्र (वि.) १४४	चालुत्वववीतिहा [सच्चवविषालपूत्री]
ाण्यानावरमा — (ग्राम) २४७	सिंध्निसिं (में) १४१
गागायात्तर्वर राजकीर्ण्य (स .) २४६	बहरशरोड की पनी मुलिसहिषक्त (है) प्रार्
श	यालकामनमानस्य शाक्यामन (र्ट) ^{स्था}
यम्बुज्यः स्तत्रस्यनः ससम्मा न्त्रदर्गायाः (त.) १६७	वान्तिनगम — (हि) ११
सहुवविचार — (स) ५६२	साध्यक्तस्याच विद्यासम्बद्धः ()
पपुत्रधसम (मि ६ ७	बाम-सन्दरस्यात विन्दरस्य ()
पंजु नानसी शुर्ग (स.) २६२	स्तान्तवाबनमा (पर)
धपुनावली — (स.) २६२ ६ ३	emetaled (36.)
प्रमुतारनी मानळह (हि.) २६ २	साम्यकानाम अस्तित (-)
यर् शास्त्री — (हि) २६३ ९४३	वाल्यवस्थानाम - (")
मनप्रशत्ते — (fig.) ६ श	वाञ्चवायामानुग्य (१) राष
पत्रक — (त) रेक्क	प्रात्ववस्तुना — (''
समुद्रासीरहरूम स निश्तमृत्या (लं) ११३ १४३	वारियमगण्डम (थिय)

रक्त्र अनाम	777	भाष पुर	म् ग्र	फ ्रांग	के पर	भाषा प्र	g ne
71 107,777	प्रतिसंद्रसमृहि	(70)	12=	514.351.	यनारभीडाम	(fre)	_{છે} છું ફ
भा भागामा	भः मरत्र नि	(;e	रहे≈	स. प्रश्		$(f_{i'}^{\bullet})$	800
r " umīm i	सन्तर्भिक्रशन	(Re,	7111	द्याचीय ।मः य		(r+)	~ U.S
t i hallenter	नुसानवर	(f~+)	111	धार्मधः तत्त	शहर्य वर	(n)	307
· (1 miles)	4101775	(f. 0)	y . y	शार्षिगरियानग	नारगा	(7.	\$00
er ami j j	-	(7e)	35'	न्ति । इ.स.च	जिनसिंह पूर	(50)	ەمق
77	وسعيدي	(H+)	295	न्यति - इसराम् विचय	-	(f, c)	212
**·1	गुणमातर	(Tre)	307	वारिक्ट चीस्ट	मित्राग"	(fr) (E=	, 5°E
•!	सात्रान	(~r)	813	าร์ร สะกับเรื	हिन[पास्ति	(हिन्)	2
***	्सणभद्र	(3)	2 4	ना स्वाप्तिमा	77	(170)	652
J ean	द्ध स्थानी	(10)	355	न्ता-भद्रस्यक्त प	Chaptering	(Fr)	3-6
۲	पुनिसद्र	(7e) (1s	153.7	न, के.च -	Sandin	(7)	o ° e
5 7		(nc)	2 = 2	वारियाप (बन्दीनी	-11]		
	,e=, g>=,	548, 553	, 3€2		पः तर्न	(ne-fe)	308
•	Serve	(4 4)	c t=	ला किए विद्या	विना] —	<i>{₹₁ ← ,</i>	305
	1, 559, 6	13, 376,	¥°₽	e, er-774 3	-	(Rie)	7 (1
					<i>श्वाम्भूगाः</i>	(4, 4)	
t	-	(1-1)	2 67	ना र रतार	Форм	(214)	1
₹*	सासराम	tir i	7 1	2-41	quant	27 ()	
r	gen generic	112-3	* 1"	1		1 8 151	
64	Mayor as	(0)	4	27 71	*****	(Fr.)	
	grise***	•	1 2	3, ~_~0~21 ~	1		
,		(,)	4 #Y	1	-	(10)	10
	***	1 ⁴ 1 →	१रट	7	(# ₃		u p _e
•	proper	14 2 ,	115	{	-	4.3	• < r
	, 5317 °C			T NEFE	÷. •;.1	1" 24	< 2 p
	\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\	t		i mily	31" L. 3	(**c)	Q^{∞}
	4 የሚተሟያ 	(4.4)	+ 11°	,	*****	4. 5	1 - 5
	-	ي. ۵	* *	fat t m	५सम्बर	€ * * + 1	. 3
				met-n			

				{	मधानुकर्म	विका
संग्रह	माया प्रा	ef [धम्भनाम	संसद	मापा 🛚	
	(中)	Tax	श्रु वारचित्त	_		
कृषि सारम्बव	(d)	Que]	श्र यारविशक	काश्विदास	(4)	1
वभा सक्तरभट्ट	(4)	53.0	म्य गारविनक	रहमह	(4)	1
महाकृषि माच	(4)	3.8	भूदाररसरेननित		(Út.)	
सक्रिवायस्ररि	(4)	22	श्रूपारस्य है कुटकर	#(c	,	
कारीवाध	년)	348	भू वारवर्गमा	_		
789 5	3 4 3	307,	श्वामवत्तीची	संख्यास		
धर्ममृषयः (न) tyt	#EX.	स्यामवत्तीची	र्याम	(年)	
श्चिपकासर्चन	(E()	YXE	धवसमूचरा	नखरिमष्ट	(4)	, ,
समयसुन्दरगद्धि	(cm)	117	बाइरविरम्मस् रू	-	(xt)	
	(e)	£Y0	बारक्वरातिवर्शन	_		
माराम् ज्ञ	(R()	53.0	≢तरशीररही	€पकीर्चि	(fk)	
	(市)		ध त्वकवि या	_	(%)	į
भक्तम	(ft)	wξ	शा वकवर्यवर्ण व	_	(4)	
getia	(N)	512	धा न चप्रविक्रमण्	_		
श्रं छ≒सङ्ख्या,	(fit	9YE	রামক্সবিক্ষণত্য	_		
विज्ञवदेषस्रि (हे) ३९१	437	शत्त्र राजिश्वमध्य	_		
_	(ধ	284	शामस्त्रविश्वनयः		•	
_	(ft)	482	शादकप्रविक्रमण			
_			शायमध्येषयस्य			
स्टम्≅रम ख			वासक्यापनियस			
_			वासकाचार			
			भाजकावाद			
			धानवानार			,
			वासकायार			
			धानकानार		`	
भावर					٠.	
			वाक्कावार	4444114	(4)	
	कि सारम्बर प्रका शकरमङ् महाकि माप महाकि माप महाकि माप प्रका (र कारोजाव ११व (र कारोजाव ११व (र कारोजाव मारामक महामक महामक महामक महामक महामक महामक महामक का प्रकाक स्थापराचि स्थापराचि सारमक्ष्रिया स्थापराचि सारमक्ष्रिया सारमक्ष्रिय सारमक्ष्य सारमक्ष्रिय सारमक्ष्रिय सारमक्ष्रिय सारमक्ष्रिय सारमक्ष्रिय सारमक्ष्य सारमक्ष्रिय सारमक्ष्य सारमक्ष्य सारमक्ष्य सारमक्ष्य सारमक्ष्य सारमक्ष्य सारमक्ष्य सारमक्ष्य सारमक्ष्य सारमक्ष्य सारमक्ष्य सारमक्ष्य सारमक्ष्य सारमक्ष्य सारमक्ष्य सारमक्ष्य सारमक्ष्य सारमक्ष्य स्य स्य स्य स्य स्य स्य स्य स्य स्य स	क्षि सारम्बद (थं) पत्र वाष्ट्रसङ्घ (थं) पत्र वाष्ट्रसङ्घ (थं) स्वार्षिय (थं) सारास्त्र (थं) सारास्त्र (थं) सारास्त्र (थं) सारास्त्र (थं) (थं) प्रमुख्य (थं) सारास्त्र (थं) (थं) सारास्त्र (थं)	— (मं) १ वर व्यक्ति सारायव (मं) १ वण प्रवास प्रकार हु (मं) १ रण प्रवास प्रकार हु (मं) १ रण प्रवास प्रकार हु (मं) १ रण प्रवास प्रकार हु १ व १ व १ व १ व १ व १ व १ व १ व १ व १	व्यवि सारावय (वं) १७०० व्यापतियक्ष व्यविकासप्त (वं) १७०० व्यापतियक्ष व्यविकासप्त (वं) १९०० व्यापतियक्ष व्यविकासप्त (वं) १९०० व्यविक	स्वत्रक साया प्राप्त सं प्रकार स्वत्रकार स्वत्यकार स्वत्रकार स्वत	हिब्ब माया प्रमु है पश्चनात सेळा माया प्रमु हो पश्चनात सेळा माया सेळा माया प्रमु हो पश्चनात सेळा माया प्रमु हो पश्चनात सेळा माया सेळा माया प्रमु हो पश्चनात स्थानात सेळा माया सेळा माया प्रमु हो पश्चनात स्थानात स्थानात सेळा माया सेळा

٠,

४२४

	प्रन्थानुक्रमणिका]
--	-------------------	---

प्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ	स०्।	प्रन्थनाम
धा वकाचारदोहा	रामसिंह (१	प्रप०) ६४२,	৬४६	श्रीवतजयस्तोत्र
श्रावकाचारभाषा	प० भागचन्द	(हिंग)	83	श्रीस्तोत्र
श्रावकाचार		(हि॰)	83	श्रुतज्ञानपूजा
श्रावको की उत्पत्ति त	या वश गोत्र —	(हि॰)	७५६	श्रुतज्ञानभक्ति
श्रावका की चौरासी	जातिया —	(हि॰)	३७४	श्रुतज्ञानमण्डलचित्र
श्रावको की वहत्तर	नातिया —	(स०हि०)	३७४	श्रुतज्ञानवर्णन
गावशोद्वादशीउपाल्य		(स∘)	२४७	श्रुतव्रतोद्योतनपूजा
श्रावशीद्वादशीकथा	प० श्रभ्रदेव	(स०) २४२,	२४५	श्रुतज्ञानद्वतोद्यापन
श्रावणीद्वादशीक्या		(स०)	२४८	श्रुतभक्ति
श्रीपतिस्तोत्र	चैनसुबजी	(स∘)	४१म	श्रुतमक्ति
श्रीपालकथा	, –	(हि॰)	२४५	भुतभक्ति
श्रीपालचरित्र	त्र० नेमिद्त्त	(9月)	२००	श्रुतज्ञानद्गतपूजा
श्रीपालचरित्र	भ० सकलकी ति	(स∘)	२०१	श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन
श्रीपालचरित्र		(40)	२००	श्रुतपचमीकया
श्रीपालचरित्र		(भ्रप०)	२०१	श्रुतपूजा
श्रीपालचरित्र	परिभन्न	(हिप) २२	, ७७3	श्रुतपूजा
श्रीपालचरित्र	-	(हि॰)	२०२	3.0.
श्रीयालचरित्र	_	(हि॰)	२०३	श्रुतवोध
श्रीपालदर्शन		(हि॰)	६१५	्र श्रुतबोधटीका
श्रीपालरास	जिनहर्ष गणि	(हि॰)	३६५	श्रुतवोध
श्रीपालरास	त्र० रायमञ्ज	(हि॰)	६३८	श्रुतवोषटीका
	हद∢,	७१२, ७१७	, ७४६	श्रुतबोधवृत्ति
श्रीपालविनती	_	(हि०)	६५१	
श्रीपालस्तवन		(हि॰)	६२३	श्रुतस्कध
थीपालस्तुति		(स∘)	४२३	श्रुतस्कधपूजा
		७४४, ७५२	, ৬৯४,	श्रुतस्कघपूजा
श्रीपालजीकीस्तुति	टीकमर्सिह	(हि०)	६३६	श्रुतस्कषपूजा [ज्ञानपचि
श्रीपालजीकीस्तुति	न भगषतीदास	(हि॰)	६४३	
श्रोपालस्तुति		(हि॰)	६०५	श्रुतस्कघपूजाकया
		£¥.	४, ६५०	श्रुतस्कधमडल [चित्र]
				_

	प्रन्थनाम	सेतक	भाषा	पृष्ठ स॰
9	श्रीवतजयस्तो त्र		(সা৹) ७५४
1	श्रीस्तोत्र		ः (स∘) ४१५
1	श्रुतज्ञानपूजा	_	(स॰) ७	२७, ५४६
1	श्रुतज्ञानभक्ति		(स ०) ६२७
	श्रुतज्ञानमण्डलचित्र		(स ०) ५२५
	श्रुतज्ञानवर्गान		(हि) 87
;	श्रुतव्रतोद्योतनपूजा		(हि॰)
	श्रुतज्ञानवतोद्यापन	*****	(स॰) ሂ १ ३
	श्रुतभक्ति		(स €	६६३ (०
	श्रुतमक्ति		(स •) ४ २५
	धुतभक्ति	पत्रालाल चौ	घरी (हि	०५४ (०
	श्रुतज्ञानद्रतपूजा		(स) ५४६
	श्रुतज्ञान <u>यतो</u> द्यापन	-	(स) ५ ४६
	श्रुतपचमीकया	स्वयभू	् (भ्रप) ६४ २
	श्रुतपूजा	ज्ञानभूष	।ग्ग (स॰) <u>५</u> ३७
	श्रुतपूजा		(स) ५४६
				६४, ६८६
	श्रुतवोध	कालिदास	•	
	श्रुतवोधटीका	मनोहरश	याम (स	५) ३१४
	श्रुतवोध	वररुचि	(स	, ३१ (५
	श्रुतवोघटीका		(स व) ३१ (
	श्रुतबोधवृत्ति	इ पंकी	त्ति (स) ३१५
١	श्रुतस्कघ	व्र० हेमच	न्द्र (प्रा) ३७६
١			५७२, ।	υ <i>ξυ</i> ,3οε
	श्रुतस्कषपूजा	श्रुतसा	गर (स) খ্ৰুড
	श्रुतस्कघपूजा		(स व) ২১০
	श्रुतस्कघपूजा [ज्ञान	ग्चविक्षतिपूजा]		
		सुरेन्द्रकी	र्ति (स) ২ ४७
	श्रुतस्कघपूजाकया) ५ ४७
	श्रतस्क्षधमद्भल जि	₂ 7		

	1.1						
~	con]					£	मग्बादुक र्यन् य
	प्रम्थनाम	होतक	यापा पूर	स ६०	पम्थमाय	संतष	माचा 📆 🥫
	मुक्तकं विवासकता	र्ष कालाहेक	(4)	የሄኚ	नपाराधिध	_	(f) tr
	मुक्तसम्बद्धसमा	म क्रानस मार	(fg)	२२व	नं रष्टि	_	(দ) হণ
	पुतारदार	र्ष भीषर (बं) \$05	₹ e ₹	त्रकृत्वविषद्धा	_	(#) ?!!
	सत्हरक	_ `	(4)	420	वंदीवश्रक्षस्याननी	यामसराव	(fig.) 111
	व्यक्तिल परित्र	म शुप्तकार	(전)	र १	न बोमग पातिरा	गौवयस्थामी	(MT) 11L, 174
	भेजिनवरित्र	म सदसदीचि	(4)	₹ 1	स्थोवपंदर्शतया	_	(M) 148
	मेखिक परि व	_	(m)	₹ ₹			65 a f are
	मेरिक्यरित	विश्ववदीर्थि	(R)	8 8	वंशेवर्ग वर्धवका	धप्	(बर) ११
	पे डिक्नीरई	जूना देश	(fig)	१४व	धबौदर्गवाविका	-	(ঘণ) হয়
	वेत्रिर एजावरमञ्	समक्तुभ्वर	(A)	***	व्या वर्गवातिका	चामदराव	(E) (1
	भेग्यसस्यवय	विश्ववमायस्रि	(FE)	vĸŧ	ĺ	∜ ¥≅	q 2, qea wil
	स्तीरावर्धितक	चा विद्यामन्दि	(v)	44			क्षर (क्ष) ४। क्षर करेंद्र
	ररेवास्यरमञ्जेशीराती	बोस सगरप	(B()	300	संबोदर्गसङ्ख्या	_	(47
	स्वेतम्बरवतकेची रा धी	बोल —	(Nr.)	१व२	दशेगग्रहरू	चामदराद	1.4
	रवेदान्यचे के अवार	. —	(R)	484	र्वबोचस्तरी	 बीरचन्द	(ग्रा) ११४ (ग्री)
		स			र्वनोवस्तालु		(T) YEE
					श्रंप्रपतिमस्योग	हुन्गुक्तन्त् वेबशक	(47) 17
	मन्द्रवीवद्यतस्या	वे वेन्द्रमृपद्य	(fig)	48	सम्बद्धिलल् क्ष्परिव	044	(44) 11
	पिण्या		(N()		संबदनाय स्वाधी	चर्मेचम्ड वर्मेचम्ड	(Nr.) 121
		-	f) ?e ?,		शंदीत्वर्यचनीसमा शंदीमवलीबी	यमपद यानकवि	(%) 111
	वेकिन्द्रवर ्तराभित्रप्र		(E)		चयानवताचा चनत्त्वरनर्शन	यानकार	(tg) 1st
	<i>वर्गातवस्त्रप्रश्रं</i> विगन्तु		(A)	11	<u>र्धवत्त्वचै</u> विभार	_	(fr #) 107
	रथक्त्रमानामीन शि	वामधानगरमः (१		YR.	क्षारबटनी		(If) a43
	तंत्रक् षीतुत	_	(II)	YR	र्थशासम ्बन् यर्णन	_	(fig.) at
	४ व्हर्नु क्टि	_	(현)	tot.	संस्कृतर्गश्री		(4) 44
	ध वरस् टराज	_	(AT)	***	धंह शतनाम	_	(1) (10) (1) th
	श्रंबोर/तिकनव		(Nr.)	191	वक्तीकरस	_	(,
	वनस्थीकी	थानवराव	(fk)	\$#\$	वरवीकरक्ष विवि	_	(#) xix xee
	র্থসামজিলা ভয়সবিধি	(1	†) २९६, (¶t)		त न्त्रीकरस् षिवि	_	EYS, CH
	DOM: GIT		(=)	₹ \$	1		

ź

٢

प्रन्थानुकमणिका

भाषा पृष्ठ स० । लेखक प्रन्थनाम मल्लिपेगा (स०) ३३७, ५७३ ज्जनचित्तवल्लम (स∘) ३३७ शुभचन्द जिनचित्तवल्लम (स०) ३३७ ाज्जनचित्तव**ल्ल**भ (हि॰) मिहरचन्द 330 **ग्जनचित्तव**ल्लभ (हि०) हर्गुलाल ३३७ प्रजनचित्तवल्लभ (हि॰) ४५१ मज्भाय [चौदह बोल] ऋषि रामचन्दर (हि॰) समयप्रन्दर ६१८ सज्काय विहारीलाल (हि॰) ५७६, ७६८ सतसई ऋषिञ्जमलजी (हि॰) सतियो की सज्काय साधुकीित्तं (हि॰) ७३५, ७६० सत्तरभेदपूजा नेमिचन्द्राचार्य (प्रा॰) सत्तात्रिभगी 84 (स०) ¥¥ सत्ताद्वार सकतकीर्त्ति सद्भापितावली (स∘) 335 पन्नालग्ल चौधरी (हि॰) सद्भापितावलीभाषा ३३८ सद्भापितावली (हि॰) 335 सन्निपातकलिका (स∘) ३०७ सन्निपातनिदान (स∘) ३०६ सन्निपातिनदानचिक्तिसा (स∘) **बाह** दहास ३०६ सन्देहसमुच्चय धर्मकलशसूरि (स∘) १३८ सन्मतितर्क सिद्धसेनदिवाकर (स०) १४० सप्तर्पिजनस्तवन (प्रा०) हु ६१६ सप्तपिपूजा **जि**णदास (स∘) ሂሄട सप्तपिपूजा देवेन्द्रकीर्त्त (स∘) ७६६ सप्तरिपूजा लदमीसेन (स∘ ሂሄፍ सप्तपिपूजा विश्वभूपग् (स०) ሂሄፍ सप्तपिपूजा (स०) 38% सप्तऋपिमडल [चित्र] (सं∘) 8.5% सप्तन १ विचारस्तवन (स∘) ४१५ सप्तनयावबोध मुनिनेत्रसिंह (स∘) १४०

लेखक भाषा पृष्ठ स० ग्रन्थनाम (स∘) सप्तपदार्थी शिवादित्य १४० (स∘) सप्तपदार्थी १४० (स०) ५४५ सप्तपदी (हि॰) ७३१ खुशालचन्द सप्तपरमस्थान (स∘) सत्तपरमस्यानकथा आ० चन्द्रकीर्त्ति 388 - (स०) ५१७, ५४८ सप्तपरमस्थानकपूजा २४४ (हि॰) सप्तपरमस्थानव्रतकथा खुशालचद्र (स∘) 352 सप्तपरमस्थानव्रतोद्यापन (हि∘) भगवतीदास सप्तभगीवास्मी ६८८ (हि०) **७०**६ सप्तविधि सप्तव्यसनसनकथा आ० सोमकीर्त्त (स०) २५० (हि॰) २५० सप्तव्यसनकथा भारामल (हि॰) २५० सप्तव्यसनकथा भाषा (हि॰) ७२३ सप्तव्यसनकवित्त वनारसीदास गोवर्धनाचार्य (स∘) ७१५ सप्तशती 53 (स०) सप्तश्लोकीगीता 933 ३६५ (स∘) ७६१ सप्तसूत्रभेद (स०) ३३८ सभातरग (स∘) 378 सभाष्ट्र गार **--- (स० हि०)** ३३५ सभाश्व गार (हि०) रघुराम 3 4 = सभासारनाटक (हि०) 83 समकितदाल श्रासकरगा समकितविणवोधर्म जिनदास (हि॰) ७०१ जोधराज (हि॰) समतभद्रकथा ७५५ समतभद्रस्तुति समतभद्र (स∘) ७७५ समयसार (गाथा) **कुन्द्**कुन्दाचार्य (प्रा॰) 388 ५७४, ७०३, ७६२ समयसारकलशा श्रमृतचन्द्राचार्ये (स०) १२० समयसारकलशाटीका (हि॰) १२५

1 m						
ent]					[मन्यानुबस्यिय
मन्यताम	हेकड	सापा प्र	म्र स	ग्रम् नाम	सेवड	भाषा इष्टर्ध
वेनेनचारमञ्जाला	_	(Nr.)	181	धमावित्ररस	_	(100) (10
चयक्तारटीका	_	(el) १ १ २	122	नमानिमस्त्रमाया यस	बाक्षणीय री	(\$) to
वयवधारवादक	चनारशीवास	(Rc)	888	तवा वगरस्त्राचा	सुरचन	(Se) 170
	1 Y 412 1		Şuu	धमामिनरस्	_	(fr) (z, th
		P\$# F 0	94	Ì		at an
		11 ux1	97.4	वनप्रविक्रकाराठ	चाधवसम	(हि) ११६मा
		944, WE'S	930	समझ्डमरस् स्वरूपकर	π	(t) tts
चनकरारश्राया	संबद्धावडी	(N H)	177	ववावियतक	शृक्षपाद	(ai) the
सनवसारवयनिका	_	(fg)	£ 5.2	समझीक्षकक्टीका अ	मा पम्हापार्व	(#) 11
वनस्वारङ्कति	व्यस्यवन्द्रस्रि	(#) x+x	* £¥	क्षमहींबक्क्यतीका	~	(त) ११न
श्चमसारकृति	-	(NT)		वयुक्तमसोच	विश्वसंस	(d) Ytt
समरकार	शमबाजपेव	(#)	724	वपुर्वातमेव		(d) 89
सम्बद्धाः	स्रक्षिवकी च	(vt)	343	बम्पेदविरिपूर्वा		F) ASCAL
समयस्य	रत्नग्रेकर	(%)	130	इ म्पे रविश्व रपुत्रा	र्शराह्यस	(स.) १४४६ भरे
बयनवरस्त्रुया [बुहर	- इसवम्	(11)	302	सम्बेदिकस्तूना व	ववाहरकाच	(fig) 18
सम्बद्धारसञ्जूषा	- (d) avt,	484	सन्वेचविकालुवा	साग णन ्	(ff.) xx
<i>मन</i> क्षर <i>श्र</i> तीत	वेष्णुसय मुनि	(4)	YEE	इ न्मेरक्थिपरपूरा	राधमन्	(権) ⁽¹⁾
सम्बद्धाः सम्बद्धाः म	विश्वकेन	(4)	YIR	बन्नेव विश्व रपूर्ण	~	(年) 共
में गारकनान	_	(0)	ALL			xix ter
र्वकरियन र १३मा	प न्त्रकीर्ति	(fk)	REY	धम्मदस्तिवर्धनर्थन्त्रस्य	-	(ft) 125
समग्रीव	_	(年7)	144	बन्नेवक्षिधरवद्याच्य ही	बित देवरच	
समाविकन	पूरवराष्	(सं	19%	हरनेपविश्वरगङ्गासम् ।	विद्वसमाम	(FE) ER
श्वभागितंत्र	_	(17)	१२६	वम्मेशविश्वरमहरूम	क्षमाचन्द (हि	
वसाविकनवारा	माषुरामदासी	(flg.)	१२६	धानेपश्चित्रसम्बद्धाः		(A) and
वमाविकवाना	पर्यवस्थानी	(flg)	864	प्रामेनविश्वरनिमाध	केरतीसिंह	(fg) tt
वनाविकत्समानः	संस्कृतम्	(Fig)	111	ब्रामेवविश्वरिकास	-	(r) ti
समामिकनमाना	_	(Eξ च)	85%	सम्बदकीपुरीक्या	ৰু বা	(d) titl
वनाविकरत	_		414	बम्यक्लकीयुरीकरा गु	याकरस् रि	(r) til
संबंधियस्त	-	(m)	224	बागालपीकुरीयातः १	ख्यगर	(mr) 177

ĺ

प्रन्थानुकमिएका

लेखक भाषा पृष्ठ स॰ प्रन्थनाम (स∘) सगन्धदश्रमीव्रतोद्यापन ሂሂሂ जिनदासगोधा (हि॰प॰) ३४०,४४७ सुगुरुशतक **मुगुरूस्तोत्र** (स∘) ४२२ सदयवच्छसावलिंगाकी चौपई मुनिकेशव (हि०) २४४ (हि०) ७३४ दयवच्छसालिगारीवार्ता सुदर्शनचरित्र व्र० नेमिद्त्त (स∘) २०५ मुमुच् विद्यानदि (स∘) सुदर्शनचरित्र 305 भ० सकलकीर्त्त सुदर्शनचरित्र (स∘) २०५ **मुदर्शनचरित्र** (स∘) 308 (हि॰) सुदर्शनचरित्र 305 (हि॰) ३६६ सुदशनरास व्र रायमञ्ज ६३६, ७१२, ७४६ सुदर्शनसेठकीढाल [कया] (हि॰) 288 (हि॰) **मुदामाकीवार**हखडी 300 सुदृष्टितरनिग्गीभापा टेकचन्द (हि॰) **e93** (辰。) सुदृष्टितर गिर्गाभापा *e9* सुन्दरविलास (हि॰) सुन्दरदास 683 महाकिदराय (हि॰) **सुन्दरमृङ्गार** ६८३ सुन्दरदास (हि॰) ७२३, ७६८ **सुन्दरमृ**ङ्गार सुन्दरश्रृङ्गार (हि॰) ६५५ सुपार्श्वनायपूजा (हि॰) रामचन्द ሂሂሂ सुप्पय दोहा ' (भ्रप०) ६२५ सुप्पय दोहा (भप०) ६३७ सुप्पय दोहा (हo) ७६५ सुप्रभातस्तवन (स∘) **808** यति नेमिचन्द्र सुप्रभातापृक (स∘) **६३३** सुप्रभातिकस्तुति भुवनभूपण (स०) ६३३ सुभापित (स∘) XOX सुभापित (हि॰) 900

लेखक भापा ष्ट्रप्त सं० प्रन्थनाम (हि∘) सुभापितपद्य ६२३ (स०हि०) सुभापितपाठसग्रह ६६५ सुभापितमुक्तावली (स०) 388 **सुभा**पितरत्नसदोह श्रमितिगति (स∘) 388 सुभावितरत्नसदोहभाषा पन्नालालचौधरी (हि॰) ३४१ मुभाषितसग्रह — (स०) ३४१, ५७५ सुभापित स्ग्रह (स०प्रा०) 382 सुभाषितसग्रह (स ०हि०) ३४२ **सुभापितार्**शव शुभचन्द्र (स०) ३४१ **सुभा**यितावली सक्तकीर्चि (स ०) 383 **मुमापितावली** -- (स०) ३४३, ७०९ सुभापितावलीभाषा वा० दुलीचन्द (हि॰) सुभाषितावलीभाषा पञ्चालालचौधरी **(हि०)** ३४४ **सुभापितावलीभापा** (हि॰प॰) ३४४ **सुभौम**चरित्र भ० रतनचन्द (स。) व्र० जिनदास **मुमौमचक्रवत्तिरास** (हि॰) ३६७ सूक्तावली — (स०) ३४४, ६७२ सोमप्रभाचार्य (स०) ३४४, ६३५ सूक्तिमुक्तावली सूक्तिमुक्तावलीस्तोत्र (स०) सूतकिनर्शय (₹∘) सूतकवर्णन [यशस्तिलक से] सोमदेव (स∘) 867 सूतकवर्णन (स∘) ሂሂሂ सूतकविधि (स∘) ५७६ सूत्रकृताग (গা∘) ४७ सूर्यकवच (4 o) ६४० सूर्यकेदशनाम (₹∘) ६०५ सूर्यगमनविधि (स∘) 784 सूर्यव्रतोद्यापनपूजा त्र० जयसागर (स∘) ५५७

kus]					ſ	मन्त्रातुकमंदिच
भ्रम्यनाम	हैगड	भाषा चुन्न	€jo	ग्रम्भना म	क्षेत्रफ	सावा १४ 🕫
नुर्वस्तीय	_	(a) das	168	सीसङ्घरि <i>थॅ</i> डिना <i>म</i>	शबसपुर	(ft) 111
कोमानिरि यण् योती	भागीर ण	(fc)	ŧя	कोश हक्त्यीस म्बद्धाम	_	(庫) YE
क्षोतानिरियक्षीती	_	(fit)	933	धीवर्वत्तहरी स्तोप	_	(वं) भार
श्रोबापिरियूका	श्वासा	(d)	222	सौंपर्यसङ्गीस्तोत्र सङ्	एक बगर्भूप्य	(4) x45
श्चोनपित्रुवा	_	(fit)	224	सीक्यक्रवीक्षान	वाध्वराम	(४) सहस्राः
		ter	٧٩	धीरम्बदोच रस्	-	(e) 1H
सीमक्टरसि	-	(₹)	74%	शीबान्तर्गं प्रमीतवा सु	स्टिममायि	(d) 782
द्योगप्रमानग्रीरपेलनना	_	(NT)	रप्र	स्क्युवस्	_	(e) te
दोसहरारक्षमा	रस्मपाण	(4)	SEX	रत्यन	_	(47) 11
दोलह्कारतम्बा त	ज्ञानसागर	(Rc)	WY	स्त्रगां विकास	_	(A) (M)
शोबहुराय्यु बस्त्राल	_	(979)	fu?	स्त्रवाथ	चाराभर	(m) 111
बोलङ्गारणपूजा	न किनदास	(4)	***	स्तुवि		(ar) and
धोबहराराज्युवा	_	(4.)	• •	लुवि	बन्सकीर्य	1111(16)
	\$99.5	\$27, \$ \$Y	* *	स्त्रुपि	टीक्सचम्ब	(A) (H
		180	MKK	ल ुवि	स्तव	(FE) 128
बीवहसारकृत्या	_	(भप)	y .	स्तुवि	बुधवन	(ft) self
शोबहरारस्थ्रवा	द्यानवराव	(fig.)	188	स्तुवि	इरीसिंह	(Rt.) ##
			225	स्तृति	_	m) (11
गरूना	_	(B) 124	40	490		407, 14
क्षान्त्रका रण विस्तित		(A;)			वश्चर्यम्	(N.) Ear
श्रीतह्वारलयानग	_	(fig.)	96	स्तोन		(NT) 18 ⁶
बोलङ्कारश्चनाना ए	र्वं वक्तावास्त्र			स्तोष (. च्यीचन्द्रदेश	
वर्णन-सदासुन्त्र	असमीपाया	(Nr.)		स्तीनश्चमङ्		of the) 44 th
बोलह रारल#डसविव	ল ইছবৰ্	(B()	**5	ŀ	46	# 5' #5A #5s
श्रोलङ्गारस्त्रमेवन [Per J		KRY	1	aff axi	als are as
चौनङ्गारल्डवीयास	केरामधे न	(4)	Rtw	स्तोनसंबद्	-	(4 24) 11
दोलह्यायहरात स्	• ভৰম্বনীয়ি	(fk)	ξξ¥	Į.	mf4,	BAS' AAS' AIA
		110	ş≠¢,	स्थोनपुणस्पाठसम्बद्	_	(E IL) #14'
क्षोलहर्तिविवर्धन	_	(fg)	₹₹Y	J		•••

६३३ ६६४, ६८६.

७२०, ७३१

(हनुमन्तकया)

(हनुमतकथा)

४६४, ४६६, ७१७,

, ३६७,४६७

प्रम्यनाथ	#6 01 to	WI 11 EG .1		
(ধুবুৰত ঘ	त)	MA AAA	हरिषशारुगण्यास	— (U) trestat
(श्चुमंत १		427, 423	इरिनंशवर्णन	— (ft) ni
हतुमान स्तीन	_	(fg) ¥13	इरिहरमानापशिषरः ग	(e ^r) 11
	रहाकदि श्वयंम्	(बर) १११	हमनविधि	— (d) ***t
इनोरकोश्र		(fg) 34x	हारावरित सहामा	(।पाच्याय पुरुषपार हैव
ह्मीरशली	सहराक्षी वि	14,21((₫) ₹!!
इक्तीकस्तार्यक	_	4.4	हिप्योलका	शिववसुनि (वं) ^{६८३}
हरवीरीयंशव	_	(e) (×	द्वितरेष	देवीचाद्र (व) गा
हरमीने बीहे	इरमी	(fg) wx	दिसीगरैय	विच्युरामी (४) धर
ध्येत्त	_	(\$t) t v	द्वितीपदेशवाचा	- (ft) the all
इरिजनस्थ्यक	_	(A) oct	<u>क्षणां वर्षा रही काल को प</u>	साशक्षम् (दि) १ भार
हरिनामन ला	शंकराचार्य	(#) 154	हेमधा ध	दिरमञ् ष्ठ (हि) श्री
हरियोत्सर्वश्री		(ft) 11	देवनोद्यारहरित	— (H) ₹H
हरिस्स इरिस्स	_	(Nr.) 5.2	हेवाब्बाइरण [हेनचा	रर जुर्गत]
हारख हरिबंदपुराख	प्र क्रिमदास	(m) (x4		हेबचन्द्राचाय (४) रेश
श्रीरवंडपुरस्य स्टीरवंडपुरस्य	विनसेनाचार्वे -	(8) (42	होताप क	- (4) ut
शृत्यक्तुत्त्व शृत्यक्तुत्त्व	श्री मृषय	(u) (to	होराजान	- (d) ttt
thicker of com-	सद्भवीच	(n) ttu	होसीयमा	डिवचन्द्रसूरि (f.) सर
-777	वरस	(PR) (XV	होतिकाच्या	- (4) tu
. 7	यश कीर्ति	(17) (10)	होशिकाचीवर्ष	क्रूगर कवि (दिन) ^{हरा}
इरिक्छ ्यम	सराकृषि स्वयम्	(44) (40	होलीचमा ही	बर ठालिका (ग्रे) राष्
हरिक्य द्वाराज्यान	-			822 1et
श्रीरमध्युराजमान			हाशीरेजुशनरिय	अ शिशयास (४) ^{५१}
		1660	1000 m	
		234	78	

क्षेत्रक भाषा प्रश्तम मन्धनाम

्रियम्बुक्यविका क्षेत्रक भाषा इप्रम

ر. [معر

प्रधनाम

प्रन्थनाम	तेसक	भाषा पृष्ठ	स०
सम्यक्त्वकोमुदीकथा	•	(सं∘)	२५१
तम्यवत्वकौमुदीकथामा	षा जगतराम	(हि०)	२५२
सम्यक्त्वकौमुदीकथाभ	ापा जोधराजगोदी		
		(हि०) २५२	,६८६
सम्यक्त्वकौमुदीकथाभ	ापा विनोदीलाल	(हि॰ग०)	२५२
सम्यक्त्वकौमुदी भाषा		(हि॰)	२५३
सम्यक्त्वजयमाल	_	(भप०)	७६४
सम्यक्त्वपच्चीसी	_	(हि॰)	७६०
सम्यग्ज्ञानचिद्रका	प० टोहरमल	(हि॰)	৬
सम्यग्ज्ञानीधमाल	भगौतीदास	(हि॰)	४६६
सम्यग्दर्शनपूजा	_	(स∘)	६५८
सम्यग्दृष्टिकोभावनावः	र्णन —	(हि०)	७५४
सरस्वतीग्रष्टक		(हि॰)	४५२
सरम्वतीकल्प	_	(स०)ू	३५२
सरस्वतीचूर्णकानुसस्	at	(हि∘)	৩১০
सरस्वती जयमाल	त्र० जिनदास	(हि∘)	६ ሂሩ
सरस्वतीपूजा	<u> श्राशाधर</u>	(स०)	६५८
सरस्वतीपूजा [जग	यमाल] ज्ञानभू षर		
		(स०) ४१४	, ५६५
सरस्वतीपूजा	पद्मनिद	(स०) ४४१	, ७१६
सरस्वतीपूजा		(स०)	४४१
सरस्वतीपूजा	नेमीचन्दबख्शी	(हि॰)	५५१
सरस्वलीपूजा	सघी पन्नालाल	(हि॰)	ሂሂ१
सरग्वतीपूजा	प० बुधजन	(हि॰)	પ્રપ્રેશ
सरस्वतीपूजा		(हि ०) ५५१	
सरस्वतीस्तवन	त्तघुकवि	(स ०)	४१६
सरस्वतीस्तुति	ह्यानभूपग्	(₹0)	६४७
सरस्वतीस्तोत्र	श्राशाधर	(स०) ६४७	, ७६१
सरस्वतीस्तोत्र	घृ ह्रपति	(40)	¥ ?•
सरस्वतीस्तोत्र	श्रुतसागर	(o #)	४२०
सरस्वतीस्तोत्र	-	(स०) ४२०	, ২৩২

मन्यनाम लेख क भाषा पृष्ठ मञ् सर्वतीस्तोत्रमाना [झान्झम्तवन] (स ०) 420 सरस्वतीम्तोत्रभाषाः दनारमीदास (हि०) ४४७ सर्वतोभद्रपूजा (स०) ሂሂያ सर्वतोभद्रमय (सं ०) 388 सर्वज्वर समुच्चयदर्पमा (स ०) 90€ सर्वार्थसाघनी भट्टबररुचि (५०) २७५ सर्वार्धसिद्धि पूज्यपाद (स०) ٧X सर्वार्थसिद्धिभाषा न्यचद्धावहा (हि॰) ४६ सर्वार्थसिद्धिसज्काय (हि०) 845 सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र जिनदत्तसूरि (हि०) ६१६ सवैयाएवपद **सुन्दरदाम** (हि०) ६८१ सहस्रकूटजिनानयपूजाः **(**स०) ሂሂያ सहस्रगुरिगतपूजा धर्म की ति (स∘) 445 सहस्रगुग्गितपृ ना (स०) 445 सहस्रनामपूजा धमभूपग् (न०) ५५२, ७४७ सहस्रनामपूजा (₹∘) እሻይ चैनमुख सहस्रनामपूजा (हि०) दंरठ सहस्रनामपूजा (हि॰) ሂሂጋ सँहस्रनामस्तोत्र प० श्राशधर (स∘) y ~ ६३६,5७८ -सहस्रनामस्तोत्र (स०) ६०, ७५३, ७६३ सहस्रनाम [वडा] (स०) ¥3? सहस्रनाम [लघु] आश्र समतभद्र (ন ০) 870 सहस्रनाम [लघु] (4 o B) ४३१ सहेलीगीत सुन्दर (हि०) ७६४ साखीं कवीर (हि०) ७२३ सागरदत्तचरित्र हीरकवि (हि०) २०४

, tet]					L	गन्धानु कमित्रस
प्रम्यनाम	ध्यार	भाषा प्रम	Ħ	दम्धनाम	संगद	भाषा पृष्ठ मं
तानारधर्मामृत	चाशघर	(4)	61	बागुविष राउ	_	(fg) w at
मा त्र भसनस्याऱ्याय	-	(fit)	ξ¥	मायुक्तिम्मक्षण	_	(ef) २६ <i>।</i>
नापुरीमा रती	इसरा≡	(lig)	403	सापुतिषयिषार	_	(कि) सरा
सापुरिनचर्या	_	(41.)	£Y.	सामुद्रिपदाल्य	भी निषसमुद्र	(m.) 101
नायुर्वयना	कानम्बर्म्	(태)	457	नामुर्जियासम	_	(वं) रश्भ रहा
चारुवयना	पुरशमागर (रामीह)	FFE	वमुक्षिपयस्य	_	(লা) †ধা
मा बुर्वदव ा	षमारभीवास	(Pg.)	AA4	सामुद्रिनचलव	_	(हिं) २६१
		122, wit	FYW	ĺ		f # 450 # 7
सायुवद ना	साधिक चरव्	(fr)	YKR	सम्बद्धाराज	_	(d) YR
सम्बद्धना		(%)	SEY	कारवपुरिया छ	_	(¥) ¥?
का मामिकापण्ड	क विश्वविद्यान	(6) \$ Y	ofe	शारचीबीधीबायाः प	त रस् यस्ति भस्य	(g.) x1
नामानिकाराङ	_	(4)	43	चारखी	_	(छप) १६६
	481	35 86	٧¥	चारली	_	(Tg.) (all
	1.6	22.55	480	वारवत्रद	वरवृद्धव	(d) 144
			910	नारश्च्य	_	(8) 1
चामायिक राज	य णमुन्ति	(FT)	43	सारतपुरवय	कुश्रमह	(H) & 8, TOY
सामग्रीसङ्गाट	-	(ЯП) १ .४	194	धारपुत्तमवर्गक्त [ि		(d.) fix
नान दिवपाठ	-	(6 RI)	1	सारस्वत श्वास्थारी		(a) (n
"र रा•6	নঃ ব ব্	(ft)	YRE	वारस्वरीयिका	चन्द्रकीचिस्रि	(a)) str
	_	(fig)	102	बारम्बत्य वश्रवि	-	(- /
		927	***	वारत्ववश्रीस्था च	तुम् _{विस्य} क्षाचाय	(4) 14
मान। क्लियाङ गण	য় ১ ব∵ারলঃ			श्वारस्वध्यक्रियादीला श्वारस्वधर्यमधुना	यदीसङ्ख	(W) 11
नामानिक गळवाचा	विश्वाक्षणम्	(%)	45	वारस्यवयंत्रपुरा		(#) ttt !!!
धानवितपाउनामा	नुषमहात ह	(Te)	2×	, सारस्वती शानुपाठ	_	(4) 10
श्रमधिक गठवास	_	fk ₹)	7.5	वारामणी		ब ं) रहर
सामाधिकनका	_	(d) vtt	4.2	चानोत्तरस	_	(ff() - t+4
सामाधिकसङ्		(4)	358		मुक्ति रागर्निह	(M4) f
		101 T Z	1.6		_	21 (20
सामा विका उपू तम	रेव —	(4)	y ŧ	रववामा ग		(a) 11

9 2			
ग्रन्थना म	लेयक	भाषा पृष्ठ	स॰
सासूबहूकाभगडा	ब्रह्मदे ब	(हि०) ४४१,	६४=
सिद्ध हृटपूजा	विश्वभूपग	(स∘)	५१६ 🚶
सिद्धकूटमहल [चित्र)			५२४
सिद्धक्षेत्र पूजा	स्त्ररपचन्द्	(हि॰) ४६७	५५३
सिद्धक्षेत्रपूजा	-	(हि०)	FYX
सिद्धक्षेत्रपूजाष्टक	द्यानतराय	(हि॰)	७०५
सिद्धशेत्रमहात्म्यपूजा		(स०)	४५३
सिद्ध चक्र कथा	******	(हि॰)	२५३
मिद्धचक <u>्</u> रपूजा	प्रभाचन्द	(स∘)	५१०
		५१४,	र् ४३
सिद्धचक्रयू गा	श्रुतसागर	(स∘)	FXK
सिद्धचक्रपूजा [वृहद्]	भानुकीित्त	(刊 0)	४४३
सिद्धचक्रयूजा [वृहद्]	शुभचन्द्र		५५३
सिद्धचक्रपूजा [वृहद्]	-	(स∘)	218
सिद्धचक्रयूजा		· (শ°)	५१४
	५ ४ ४	८, ६३८, ६४८	, ७३५
सिद्धचक्रपूजा [वृहद्]	सतलाल	(हि॰)	५५३
सिद्धचक्रपूजा	चानतराय	(हि॰)	E KK
सिद्धपूजा	श्राशाधर	(শ০ খখ४	७१६
सिद्धपूजा	पद्मन	दें (स०)	५३७
सिद्धपूजा	रत्नभूपर	ी (स०)	228
सिद्धपूजा	~	- (स०)	४१५
	ሂሃ	४, ४७४, ५६४	, ६०५
	€.0	७, ६ ४६, ६५१	, ६७०
	६७	६, ६७८, ७०१	1
			८, ७६३
सिद्धपूजा		- (स०हि०)	
सिद्धपूजा	धानतराः		
सिद्धपूजा	_	- (हि०)	አ የጸ
सि द ्रूजाप्टक	दौलतराम	र (हिं०)	600

लेखक प्रन्यताम भाषा पृष्ठ सन (म०) सिद्धवदना 120 सिद्धभक्ति (स∘) ६२७ सिद्धमिक्त (पा०) ४७५ सिद्धभक्ति पन्नालाल चौबरी (등이) (귀이) सिद्धस्तवन ४२० सिद्धस्तृति (म॰) 451 सिद्धहेमतन्त्रवृत्ति जिनप्रभगृरि (中の) ३६७ सिद्धान्त ग्रर्थसार प॰ रइघू (য়ঀ৽) 85 भट्टोजीदीित्तत सिद्धान्तमौमुदी (स∘) २६७ सिद्धान्तकौमुदो २६७ (स०) सिद्धान्तकौमुदी टीका (स०) २६८ सिद्धान्तचन्द्रिका (स 0) २६५ रामचन्द्राश्रम लो नेशकर सिद्धान्तचिन्द्रका टीका (स०) 335 सिद्धान्तचन्द्रिका टीवा (स०) 335 334 सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति सदानन्द्रगणि (स०) मिद्धान्तत्रिलोक्**दीप**क वासदेव 303 (स∘) मिद्धा तधर्मो पदेशमाला ⁼(সা০) 85 श्रीमधुमृद्न सरस्वती (स॰) सिद्धान्तविन्दू सिद्धान्तमजरी (40) < ₹ -नागेशभट्ट सिद्धान्तमजूपिना (म०) सिद्धान्तमुक्तावली पचानन सहाचार्य (म०) सिद्धान्तमुक्तावली (स०) सिद्धान्तमूक्तावलिटीवा महादेवभट्ट (म०) 160 सिद्धान्तलेश सग्रह (हि॰) ४६ सिद्धान्तसारदीपक **मक्लकी**त्ति (₹o) ४६ सिद्धान्तसारदीपक (स०) ব ড सिद्धान्तसारभाषा नथमलविज्ञाला (हि०) ४७ सिद्धान्तसारभाषा (हिं०) 85 सिद्धान्तसार सप्रह आं तरेन्द्रदेव (to th) 80

					1	मग्वानुष्ठम्बिय
धग्यनाम	FA.	101 r 91	#-	र्वम्भनाम	सैगक	भाषा पुत्र हैं।
बिबिप्रियरचे। व	द्धनां इ	1 }	¥ F	६ सम्बद्धवाबीट्रका	_	(e) tu
	***	X Y	YB?	र्भ नम्पए वाभीरतवन	_	(1) (1)
	Y#9 ##9	ter su	RER	शोलराच	गुरुचीचि	(%) 11
	160	t t ty	***	्रपूरमालयदिङ अ	• सक्तकीर्च	(8) 11
		£1w	9=1	नुषु ना ग वरि ज	श्रीपर	(84) 11
विदिशिकता घटी गा	_	(tr.)	358	पुरुगलयरिवयामा प		
बिडिविवस्तीवनागा	मध्यक	(fig.)	¥Ŧŧ		हरचंद गंगवाझ	
सिविधिकारीय पाणा	पनाकाश्वरी वरी	(fr)	vet	पुरुवामवरि व	_	(R) (+
বিশ্বিশাৰ	-	(6)	1 0	नुकुवलपु निश्वा		(fg =) ttl
विद्योगभगभग	_	(fg)	ξΨ	<u>पुण्यासस्या</u> भीरा	त्र• जिनदा स	(Q og 4) 111
विन्द् रक्षणस्य	शंसक्रमाचार्यं	(4.)	¥¥	गुजवरी	शंनराज	(fg) 188
सिन्द् रप्रशरा वज्ञाता	बनारसीबाख	(fk)	₹२४	गुथवरी	इपैकीचि	(t) aut
•	W 111,	yex wi	wtt	পুশরিখাগ	कवि वरसाम	(e) t »
		SEW PER	*54	गुवर्सपतिपृता	-	(g) #ia
सिन्द्र राज्यमा या	ध्रम्यस ास	(fir)	ąr.	<i>नु</i> कर्तपति। विकासकार	_	(4) 24
विदिशासभित	र्व झरखेत	(44)	7 R	गुक्कशी तविवासमा	विम शकी चि	(इस) स्वर
रिक् म्बनक्वां कविना	च्चेमंदरमुनि	(₹)	42.8	গুৰুত্ব ভিৰত্ যুক্ত	चप्तवराम	(₹) ***
<u>निजासमङ्ग्रीविशिका</u>	_	(4)	228	गुष्मवर्थातसर्वोचानसङ्ग	m —	(4) zin
न स्वयनीकी	_	(ef)	42.8	तुन न्य स्थ्यमीतयाः	सञ्जितकी चि	(A) ex
1	_	(R;)	۲.	पुरुषम्बद्यारीलमा	नुवसागर	(4,) #1A
सीवालीय क्रिया	ন্ধুদ্য (বা ল্ছ)	(Ng 4)	8.8	<i>नुक</i> न्त्रपद्मतोषमा	-	(4) dra
		##K	2.2	<i>पुण्च</i> न्यगोगचा	_	(FF) 111
वीवायरिश		(ft)	214	<i>पुनम्बदश्रमी प्रशासन</i> ।		
बीताबाल		(B ₍)	4 K 4		इंस्प्यव (१	1) 12% of
शीलानीका वारहना	n –	(Nr.)	470	गुनन्वस्थानी पूचा -	लक्षपनम्	(द्वि) प्रशेष प्रस्थ
सीक्षत्रीरश्रेषिक्यी	((B() 1/4		नुबन्धसमीनस्तत [वि	[4] ~	
ीवामीक्षीत्रसमा	_	(g.)	11	कुण्यस्य गीवस्यक्ताः स्थानस्य गीवस्य	_	(4)
चरशीयवर्श		(%) (%)	£AA.	भुग्न्यदश्वमीश्चयकाः भुग्न्यदश्वमीश्चयकाः	-	(fgr) # ₹ £
বৰদ	ठक्कुरसी	(Pr)	4	Tandadizedal	शुराश पन्द्र	14() 51-

🚤 ग्रंथ एवं ग्रंथकार 🦇

प्राकृत भाषा

म यकार क नाम	घयनाम प्रद	ासूचीकी पत्रसं०	प्रवसार का नाम	प्रथ नाम प्रथ	सूची की
श्रभयचन्द्रगणि—	ऋ ग्गसवध न्या	पत्र स ् २१=	देवसेन-	माराधनामार	पत्र स० ४१
श्रभयदेवस्रि-	जयतिहुवग्सतोन	७४४		४७२, ४७३, ६	
श्रल्ह्—	प्रागृतछदकोप	₹ 0 \$			३७, ७४४
इन्द्रनदि—	छेदपिण्ड	५७		तत्वसार	20, 40X
	प्रायदिचतविधि	66		६३७, ७३७, ७	
कात्तिकेय—	कात्तिकेवानुप्रेक्षा	१०३		दर्गनसार	१ इ३
छ दकुराचार्य—	ग्रष्टपाहुट	33		नयचक	838
0.13	पचास्तिकाय	80		भावसग्रह	७७
	प्रवचनसार	११२	देवेन्द्रसूरे—	व मस्तवसूत्र	y
	नियमसार	देव	धर्मचन्द्र—	धर्मचन्द्रप्रवन्ध	₹8 <i>Ę</i>
	बोधप्रामृत	११५	धर्मदामगिण-	उपदेशरतमाला	५०
	यतिमावनापृक	५७३	नन्दियेण	भ जितगातिस्तवन	३७६
	रयसार	40 t	भडारी नेभिचन्द्र—	उपदेशसिद्धान्त	
	लिंगपाहुड	१ १७		रत्नमाना	y 9
	पट्पाहुड	११७, ७४=	नेमिचन्द्राचार्य—	भाथवित्रमगी	
	समयसार	{ { 8 } 8 ,		व में प्रकृति	
		७३७, ७६२		गोम्मटसारकर्मकाण्ड	
गौतमस्वामी—	गीतमकुलक	१४		गोम्मटसारजीवकाण	٠,
1111/1/11	सवोधपचासिका		}		१६, ७२०
जिनभद्रगणि	मर्थदिपिका	e (चतुरविशतिस्यानक	१८
ढाढसीमुनि	हा दसी गाया	•	l	गीवविचार	७३२
देवसूरि—	यतिदिनचर्या	000		त्रिभगीसार	₹१
1-di/-	यातादनचया जीवविधार	= {		द्रव्यसंग्रह	१ २, ५७५,
	जामापचार	६१६	j	Ę	२५, ७४४

≂ €]		संव एवं मन्त्रकार
धवसर का नाम	मधानाम प्रवास्थीकी पत्रक	गथकारकानाम शवानाम गवास्कीकी पत्रसं∗
	भिनोप् कार १२	ध्यपभ्र ग भाषा
	क्षिमोचसारत्यहिँ ३२९ पंचर्वस् ३ सन्त्रमित्रमी ४२	धामरक्षीचि- वटनवॅरिरेग्रालवाना रा खप्यवास- एक्फ्यूनाव्यवाना राः कनक्कीचि- वन्नोस्वरववनाना राः
	सम्बद्धार ४६ शिमेत्रमस्त्रप्रिकायी ४६ सत्तर्श्वनक्षी ४३	मुनिक्यकायर— वरवणुकरित्र १६६ मुनिशुक्षमङ्ग वक्रमान्त्रवा ६६६ सुनिशुक्षमङ्ग (६६
पद्ममंदि—	मापानदेवसमुधि ६१ विवयरपर्याम ६६ सम्बुद्धीपप्रजाति ६१९	जनमित्रहरू - वर्ड मानस्था ११६ बस्हरू - इस्तवसुरेवा ११६
द्युनियद्यसिंह— संद्रवाहु— सावरामाँ—	লালবাং হ'ছ বালবাহুদ হ'ড বালবাহুদ্যবাহান ৮০ই হ'ড	ज्ञानचर्यः— वायचना तेषणाञ्च— तथाजिल्लाहचरित १४ वैधनीर्यः— चेल्लियमित रा
ग्रुनिषम्ब्रस्रि— ग्रुनीम्ब्रकीचि— रक्तग्रेवरस्रि—	बनस्यक्तिस्यारी ४५ स्रान्त्यभनुर्देशीनमा २१४ प्राप्तवसंबद्धीय १११	धनस— इत्तिबद्धान्त ११० शरसम— विलय्यितसम्बद्धाः ११०
त्रात्मीचन्द्र देव— १ ४ सन— व ु	न्द्रोप १७६ श्रापमानुष्टेया ७४४ वनुगन्दियाययाचार १	वरियमगरित १ र पुरपदम्स वारियुप्स १४६,१४१ महानुतस्त्र १६६ स्थानस्थास
विद्यासिंद- रिजार्च शीराम	पानवरस्ताण ६१ भग तीधाराणमा ७६ प्राकृतदयसामा २६२	महत्त्वसिंह— विद्यादिस्वनस्वीती १९६ बहाः कीचि— वन्त्रमन्तरित्र १६६ पत्रती १४९
मृदगुति— सर्मदगऱ— सिद्धसमस्दि— शुम्बरस्पै—	नायकाम् ७५ यहंगासारः ६ ६ दर्गीस्तरायायणः १ कारिकरस्तराय ४२६	वीतीश्रदेव- वरवहबस्तक ११ १९४४पुरूप ११० वोतीश्रदेव- वरवहबस्तक ११
कविद्यास— व देसवरत्र—	कासमूत्र १११ मुक्तमंत्र १७१ १७१ ७ ७ ७१७	प्रस्यार ११६ अध्यः वर्धः रहपू— सम्बद्धन्तरमा १४१ १६ ११ ११७ १७३ ११७

प्रथकार का नाम	मथनाम मथ	सृचीकी पत्रस०	य यसार का नाम	२ य नाम	प्रथ सूची की पत्र सब
	पार्वनायचरित्र	१७६	संस्य	त भापा	
	वीरचरित्र षोडशकारण जयमा	६४२ ाल ५१७,	श्रक्तकदेव—	धयन्त्रकाष्ट्रक	४७४
	·	485		É	७ २ ७१२
	सबोघपचासिका	१२८		तत्त्रार्घराजव	र्गितक ३२
	सिद्धातार्यसार	४६		न्यायरु मुदच	दोदय १३४
रामिंह—	सावयवम्म दोहा			प्रायदिवतसम्ब	ह ७४
	(श्राववाचार)	८७ २१,७४८	श्रद्वयाम—	रामोपारपैती	सी पूजा
	दोहापाहुड	£0			•५२, ११७
ह्रपचन्द	रागमासावर <u>ी</u>	६४१		प्रतिमामातः	चतुरर्दशी
लदमण—	गोमिगाहचरिउ	१७१		यतोद्यापन पू	जा ५१६, ५२०
लदमीचन्द—	श्राध्यारियन गाया	१०३		मु ग्यसपत्तिव्रत	पूजा ४४४
	उपासकाचार दोहा	• •		मीव्यकास्य ग्र	
		६२=, ६४१			५१६, ५५६
	पत्यागान विधि	६८१	ब्रह्म श्रजित—	हनुमच्च रित्र	780
विनयचन्द्र—	दुघारसविघानकथा	२४५,	श्रजितप्रभसृ रे—	मान्तिनायच	
		६२८	अनन्तभीर्ति—		ाद्यापन पूजा ४६४
	रिर्फर चमीविधा	नकथा			•
		२४४, ६२८	20	पत्रविधान पृ	
विजयसिंह—	म्रजितनायपुराए।	१४२	श्चनन्तवीर्य—	प्रमेयरत्नमाल	Π /-
विमलकीर्त्त—	सुगन्धदशमीकथा	६३२	श्रन्नभट्ट—	तर्कसग्रह	
सह्णपाल—	पद्धडो (भी पनी गरा	m= \	श्रनुभृतिस्वरूपाचार्य-	सारस्वतप्रकृ	
	(कीमुदीमच्य	• •			२६६, उ
सिंद्दकवि—	सम्यक्त्वकौमुदी	६ ४२		ल युमारस्वत	२६३
	प्र श ुम्नचरित्र	१ 5२	श्रपराजितस्रि	भगवतीमारा	धनाटिका ७६
महाकविस्वयभू	रिट्ठिणेमिचरिच		श्रप्यदीत्त्त—	कुवलयानद	३०८
	श्रुतपचमीकथा हनुमतानुप्रेक्षा	६४२ ६३५	श्रभयचन्द्रगिण्-	पचसग्रहवृत्ति	35
श्रीवर—	सुकुमालचरिउ	५२३ २०६	वरभागस्थ	क्षीरोदानीपूज	ξ3υ T
इ रिश्चन्ट—	भ्रगुस्तमितिसि	२४३,	श्रभयनदि—।	जैनेन्द्रमहावृह्	त २६०
		६२५ ६४३	श्रभयनन्दि—	त्रिलोकसार पू	(जा ४६५

/=]				[शंव पद प्रश्व	PHT.
म वकार का नान	स्व नाम श्रम् सूची पश्		भ व झर का गाम	वासास संवर्	वीभी विष्
	वसनकारी पूषा	४८६	यमोश्रदण्य	रवयाच्याचा	twr
	লমু এবৰিখি	232	अस्ववण्ड-	व्याचनार	43
व्यमयस्रोम	विकासवरित	225		र्ववारितकायरीका	*1
य अध्यक्तेच—	विकासभौगीसीयमा ः	१२६		परमास्प्रकाच टीवा	* *
	(रोटडीवक्ना)	१४१		त्रवणनकार बीवा	111
	रक्षाक्षण दुवा	Yes		पुस्तर्मक्षिकपुश्रम	1
	_	२ ४ १		चयपशारकनदा	11
	हारधन्त पूचा	18		इमकार टीक	१२१
		233			L WEY
	सम्बद्धिमालक् या	288	चस्यमिष्-	धविद्युरास	₹¥₹ ¥
		K\$9	व्यक्तिय	ৰ্থকক্ষাত্যক সুনা' অটেকক্ষিমি	277
		₹ ¥%	चराग-	बारिनावपुराध	222
	मृतस्त्रं विवासकाः	348	भराग— भाग्नेयम्बर्धि—	वार्यमम्बद्धः स्टोक्नीयम्	789
	•	444 848	आतम्ब्— धातम्ब—	न्यस्यानसम्ब	111
	445		आधा—	श्रेत्राचिर दुवा	222
चमरकी चि			चाराघर—	र्वकृतारोपखनिवि	vtt.
चसरकान्त-	वित्रवह्सनामदीका	989	- Hulat		χţ
	-	७१२	1	धवयारवर्गमृत	Y4
c	सगक्तकृतस्तीय ४१३			वरदावनावास्त्रृति	44
च मर्रा <i>य</i>	धमरकोच	442		वृष्ट्रीपदेशकी मा	1
ममितिगति	दिकाष्य वैद श्रूणी यस्परी म ा	₹₩		वस्त्रात्त्रमधिरस्वोपयीर	
कामानगाव		111		शस्यासमा	242
	गणसङ्ख्या दीका	46		श्रमकार्विपेत	A4.
	जान का प्रीयस्थित	Kwł	1	श्रमकाध्येपस्त्रीविव	M
	(कामानिक पाक)	\$w		य स्वर्गसम्बर् ग	wet
	थानकाचार -			जलवादाविका	Ase
,	नुभाषिक सल्दाह	1×1	1	जिल्लापर	
धमोजवर्ष	वर्गीरवैषधानकावार	48	1	(अविहासस्)	191
	वस्तीसरस्त्रम्भा	tel	I	Yes (411

। थकार का नाम	ग्रथ नाम प्रथ	सूची की	मंथकार का नाम	प्र'थ नाम प्र	थ सूची की पत्र सं०
	जिनसहस्रनामस्तो	त्र ३६१,		६४४, ६४४, ६४७,	६४८, ६५०,
	५४०, ५६६, ५	i		६४२, ६४६, ६६४,	७००, ७०४,
	६०७, ६३६, ९			७०४, ७०७, ७२७,	95X, 955
	६८३, ६८६, ६	1		पंचनमस्कारस्तो	त्र ५७६
*	७१४, ७२०,	- 1		पूजाप्रकरण	५१२
		- 1		श्रावकाचार	•3
	धर्मामृतसूत्तिमग्रह	1	भ० एकसधि—	प्रायदिचतविधि	७४
	ध्यजारोपल्विधि	४६२	कनककीर्त्त-	गुमोकार पॅतीसी	
	त्रिपष्टिस्मृति	१४६		विधान	४६२, ५ १७
	देवशास्त्रग्रुरूपूजा	130	कनककुशल-	देवागमस्तोत्रवृत्	
	भूगालचतुर्विद्यातिव	1	फनकनदि	गोम्मटसार कर्मः	-
		टीका ४११		कुमारसभवट <u>ी</u> व	
	रत्नत्रयपूजा	४२६	कनकसागर—	जुनारसम्बद्धाः जिनपजरस्तोत्र	
	श्रावकाचार		कमलप्रभाचार्य—	ाजनपजरस्तान	३६०, ३४३०, ६४६
	(सागारधर्मामृत) ६३४	फमलविजयगणि—	चतुर्विशति तीर्थ	
	शातिहोमविधान	ሂሄሂ		_	्र स्तोत्र ३८८
	सरस्वतीस्तुति	ξ γυ,	कालिदास—	कुमारसभव	१६२
		६५ ८, ७६१	and the	ऋतुसंहार	१ ६१
	सिद्धपूजा	४५४, ७१६		मेघदूत	\$ 7 5 \$ 5 0
	स्तवन	£ £ ₹		रघुवश	१ ह ३
				वृतरलाकर	₹१.
इन्द्रनदि—	ग्र कुरारोप ए विधि			श्रुतबोध	६४४
	देवपूजा	860		शाकुन्तल	३ १९
	नीतसार	३२६	कालिदास-	नलोदयकाव्य	१७४
उन्जवतदत्त (सः	•			श्रु गारतिलक	328
	उ गादिसूत्रसपह	२५७	फाशीनाथ —	ज्योतिपसारलग्न	
उमास्वामि—	तत्वार्थसूत्र	२३, ४२५		शीघवोध	२६२, ६०३
	४२७, ४३७, ५३७,	५६२, ५६६,	काशीराज—	भजीर्एमजरी	785
	४७१, ५७३, ५६५,	५६६, ६०१,	कुमुद्चन्द्र—	मल्यागमदिरस्त	
	६०३, ६०४, हु३३	, ६३७, ६३९			४३०, ४३१,

र्मसभर द्यानाम		शी की त्रंस	म बचार का नाम	भथनाम घथस्	्रीदी वर्म•
	251, 107, 202	rgr	गवापति	रामशैपक	રા
	415 511 510			वहदर्शनवयुक्तमानुति	H
	७ २७	47.0	गर्वम	व्यक्तावर	4
कुषसङ् —	सारतपुरस्य १४	194	}	र्वयायबामय	3.3
सहकेशार	वृत्तरलाकर	REY	गर्गेश्वरि	वर्ष संगिता	34
केराच	वातकवारि	4=1	í	रक्षारेको ३ ६	170

हतोतिय वरिश्वमाना २वप कराविक---तर्ग मात्रा 198 केराववर्धी---बोम्बटचारवरित ŧ নুক্ৰীবি--**पंपरसाहर**्गा

माहित्यक्तपुरा *48 गुर्धाचन्द्र---रच दय∄या 298

केरावसेन--चेरिसीयत (या 222

es 1

287 975 <u>बोक्यनारणस्</u>या 117 141

दैव्यट— मान्यकी 212 कीडमभट्ट~ वैम्बान एक इच्छ 988 र गणास बुनिनृष्टनपुराख 123

বিদ্যালয়**ো**ড

बावधीरिका **एक्स्ट्राय**

वंबधेश्यान्रम

414 श्रमेर्धयत्त्रम

क्तांत्रशिवनोद्यास

লিলেশ প্রাণি বিহু**র্ণ** वश्ववागरसपुत्रा

षमेग्रकीशि---

5544 87 --MAGE-श्वम बरस्ति-

रोबा--

र्गगाम--

88 121 24

सम्बन्धनीपुरीनना

227

rep

ų

225

228

922 2, 7

गुजमा --गुख्यशाचान --

७१७ शुस्रमूचनावार्य-

तुक्षचमुद्ध--

गुषावंदि —

वार्वनावस्तोव

विकालकी वी तीत का र्थं वर्षा स्वस्ती व

बहुर्ग द्वित स्वतंत्रका <u>बनुत्वमं स्तराम्य</u> व्यक्तिं उपपूर्वियम र्वद्यायम् स्टब्स् विका

धनन्त्रपानपुरान्त्र

व्यस्तानुभावन

ধনবেকা

विवश्यवदिय

व्ययपुर्वा स्परित

मौतिष्ठत पा

वर्ज शास्त्रीय

<u>थावरावार</u>

ज्ञान**न**ीरका

बहुना श्ली

FIEL

वयन्तकत्तेवास्य 222 RIE EY 117 116 962

ग्रंब एव मन्द्रदार

850

787

315 YE 255 128 Y'E \$80

999 144 ***

ŧ TYY

1 1

215

Ytz

ŧ

3 =

प्रथकार क नाम	प्रथनाम ^उ	। थ सूची की	प्रथकार का नाम	मंथ नाम
त्र प्रसार का नाम	ઝવપામ જ	पत्र स०		
गुण्रत्नसृरि—	तकरहस्यदीपिक	न १३२	चितामणि	रमल
गुणविनयगणि—	रघुवशटीका	888	चूडामणि—	न्यार्थ
गुणाकरसूरि—	सम्यक्त्वकौमुदी	क्या	चोखचन्द—	चन्दना
गोपानदास—	रूपमजरीनाम		छत्रसेन —	चदनप
गोपालभट्ट—	रसमजरीटीका	378	जगतकीर्त्ति—	द्वादश
गोवर्द्धनाचार्य	सप्तशती	७१५	जगद्भूषण	सींदर्य
गोविन्डसट्ट—	<u>पुरुपार्थानुशासः</u>	37 7	जगन्नाथ	गरापा
गौतमस्वामी	ऋपिमडलपूजा			नेमिन
	ऋिपमडलस्तो	त्र ३५२		सुखनि
	88,	४, ६४६, ७३२	जतीदास—	दानकी
घटकर्पर—	घटकपेरकाव्य	158	जयतिलक—	निजस
चढ कवि	प्राकृतव्याकर ग्	१ २६२	जयदेव	गीतग
चन्द्राकीर्त्ति-	चतुर्विशतितोय	किराप्टक ५६४	व्र॰ जयसागर	सूर्यवती
	विमानशुद्धि	५३५	जानकीनाथ	न्य।यसि
	सप्तपरमस्थान	नथा २४६	भ० जियाचन्द्र —	जिनच
षन्द्रकोत्तिस्रि —	सारस्वतदीपिक	र २६६	जिनचद्रसूरि—	दशलक्ष
चाणुक्य-	चाए।क्यराजनी	ति ३२६,	त्र० जिनद्।स—	जम्बूद्वी
	६४०, ६४६	, ६८३, ७१२,		
	७१७	, ७२३, ७ २ ७		जम्बूस्य =====
	लघुचारावयरा	ननीति ३३६		ज्येष्ठजि नेमिना
		७१२, ७२०		पानना पुष्याजन
चामुण्डराय—		ሂሂ		सप्तिपि
	ज्वरतिमिरभार	कर २६५		हरिवदा
24		ह ४४,७७, ६१४		सोलहक
वारकीर्यः—	गीतवीतराग	३८६		जलयात्र
चारित्रभूपगा—	महीपालचरित्र	१८६	प० जिनदास—	होलीरे
चारित्रसिंह —	कातन्त्रविभ्रमस्			अकृत्रिम
		चूरि २५७		

प्रथ सूची की म पत्र सं 350 नशास्त्र सिद्धान्तमअरी १३६ पष्टीव्रतपूजा ¥03 पष्टावतकया ६३१ ात्रतोद्यापनपूजा 838 र्पलहरीस्तोत्र ४२२ २५६ गठ नरेन्द्रस्तोत्र 335 नेघान २०७ **हो**बीनती 483 स्मृत गोविन्द १६३ **ोद्यापनपूजा** ४५७ संद्यान्तमजरी 258 बतुर्विशतिस्तोत्र ७५७ क्षग्वतोद्यापन 3=8 ीपपूजा 855 ४०१, ४३७ वामीचरित्र १६८ जनवरलाहान 130 ाथपुराख 863 लीव्रतक्या 478 ापूजा ሂሄፍ तपुरागु १५६ कारसापूजा ५३७ त्राविधि ६८३ रेणुकाचरित्र २११ मजिनचैत्यालय

पूजा

FX8

e13 }			ि श्रेष एव ग्रम्बद्धार
प्त बचार क्यु माम	मण्जाम समस्यीकी पत्रसंक	र्घश्रकार का शाम	र्शवानाम मंत्र सूचीकी पद्मानं
विवृत्रमस्री	विवर्षेत्रयम्भीतः १६७	वायोदर-	क्लप्रक्वरिक १६१
विवदेवस्रि-	मस्तपराज्य ११७	1	श्वकृतित 🐧
विनुद्धामस्रि-	नगुनिसर्वितिनस्तुतिः 🐧 🗑	1	बत्तवनामीब १४१
जिनमञ्जनस्मि-	संसकारपूर्णि 🗦 थ	वेवचन्त्रसूरि	राज्य गालस्वतंत्रः १३१
किन्सेनाचार्व	माविद्वराणा १४२ १४६	रीविवंदेवदण-	समोरविकाः बहुतस्य 👭
	भाषकोगस्तुति १८१	क्षवदि-	वर्षकारवक १११ ७१७
	निमत्तकृतभागस्योधः १८ए)	वेकेन्द्रमानस्य १६६
	YRE, KOT AVO		नीवाससीर्वेक्टरस्यन्तः ११
	9 9 WY9		विविधिकस्तोत ४११
विनसेनाचार्य —	इरिवयपुराल १४३		४२१, ४२७ ४२६, ४३६
विवस्तवरसरि—	हीलीलचा १६६		१७२, १११, १७४, ११५
म जिलेल्ल्यूक्य-	निर्मेतपुराम १४६।		121611
म॰ हाबकीचि-	क्योगरणरिष १६२		150 £33.
द्यानवात्कर	पाक्षकेनमी १०१	१ वस्रि—	व्यक्तिस्तवम ६१६
बातम् वश्—	रात्रपर्वकोषनकम्मः १	देवसेन-	श्रास्तरप्रवर्षि ११
•	महिनांबनपुता ४९१ ६१६	वेवेन्द्रकीश्च-	करनवडीवक्षपूर्वा 🕬 है
	योगस्यासर्गनस्वदेशः ११		चनप्रसमितपुरा ४४४
	क्ष्मागवर्गमधी १		वयनविज्ञीकाचन ६३ ७६६
	र्वभागमञ्जीयसम्बद्धाः १६		हारकारतीयारामपुर्व। YES
	मन्त्रनापुता ११		वेत्रजीवरापूर्वा ६ ४ वेत्रवेद्यामा ६६६
	भनपुत्रा देवेक मान्यतीपुत्रा देवेद		अविकासीयभूषित्राच्या भी है
	247 332		श्विवत्यका १३७ १११
	शासनकी लाुवि ५१७		रेश्वरूपा 31६
देवकडू दिराध	मासपायरक्ष २.१		शवकात्राच्या १४१
विशुवसर्वद्र	विकासभीवीती ४ ०४		स्थास्त्रिया कर्ष
इवाचेद्र-	क्लार्वसूथवराध्याव्यावद्वाः	वीगसि द	वारान्यकारामानीका १६
	2nt	प्रजाब	विशेषलगान्य १७१
दक्षिपतचन वंशीवर	मनेपाररामसार १		बालवाला १७१, १४४

प्रथनाम अध	य सूची की पत्र सं०	प्र थका
६८६, ६	:६६, ७११,	नरहरि
	७१२, ७१३	नरेन्द्रव
विषापहारम्तोत्र	४१५, ४२५	
४२७, ५६५,	प्र७२, ५६५,	
६०५, ६३३,	६३७, ६४६	
सन्देहसमुच्चय	३३⊏	नरेन्द्र
	२२२	
	8.48	
कथाकोश	२ १६	
गौतमस्वामीर्चा	रित्र १६३	नागः
गोम्मटसारटीक	न १०	नाग
सयोगप चमीक	था २५३	नागे
सहस्रनामपूजा	6 Y9	न ग
श्रभिघानरत्ना	कर २७२	नाढ
विदग्धमुखमड	न १६६	नार
नागकुमारचरि	.স ং १ ७६	
जिनसहस्रनाम	पूजा ४८०, ४४	२
न्यायदीपिका	१३५	कवि
शीतलनाघपूर	ना ५४६	
प्रायदिवत समु	च्चय	। मुनि
चूलिका ट	ीका ७४, ७८०	ं नेसि
नन्दीक्य रय्रती	द्यापन ४६४	•
ग्रहवलक्षागु	৬৯	र े व्र∘
बालिहोत्र	301	₹
		=
	•	
जिन्दातटीव	न ३६	• 1
	दिष्द हर्न हिंद्यापहारम्तीय ४२७, ४६४, ६०५, ६३३, सन्देहसमुच्चय कीमुदीकथा पद्मपुराग्ग सहस्रपुश्गितपूजा कथाकोश गौतमस्व मीचा गोम्मटसारटीक सयोगप चमीक सहस्रनामपूजा श्रीमधानरत्ना विदग्धमुखमड नागकुमारचिर जिनसहस्रनाम न्यायदीपिका शोतलनाधपूज प्रायदिचत समु चूलिका व	पत्र स० ६ द ६ ६ ६ , ७११, ७१२, ७१३, ७१३, ७१३ विपापहारम्तोय ४०५, ४२५ ४२७, ५६५, ५७२, ५६५, ६०५, ६३३, ६३७, ६४६ सन्देहसमुच्चय ३३६ वीमुदीकया २०२ पद्मपुराग्ण १४६ सहस्रपुरिगतपूजा ५५६ गौतमस्व-मीचरित्र १६३ गौनमटसारटीका १० सयोगपचमीकथा २५३ सहस्रनामपूजा ७५७ श्रीक्षानरत्नाकर २७२ विदग्धमुखमडन १६६ नागकुमारचरित्र १७६ जिनसहस्रनामपूजा ४६०, ५५५ न्यायदीपिका १३५ शोतलनाधपूजा ५४६ ग्रायदिचत समुच्चय पूलिका टीका ७५, ७६० नन्दीक्यरस्रतोद्यापन ४६५ सालहोत्र ३०६ नागर्विनयस्य प्रालिहोत्र ३०६ नागर्विनयस्य

प्रथ सूची की र का नाम यथ नाम पेत्र स॰ મદ્ર— **श्रवराभूपरा** 338 कीत्ति— विद्यमानवीसतीर्थंकर पूजा ५३५ ६४५, ७६३ पद्मावती पूजा **६**५५ सेन-प्रमाराप्रमेयक्तिका १३७ ५७५ प्रतिष्ठादीपक ५२१ रत्नत्रय पूजा 488 सिद्धान्तसारसग्रह ४७ चन्द्रसूरि— विपापहारस्तोत्रटीका ४१६ राज— **विगल**शास्त्र ३११ सिद्धान्तमजूपिका शभट्ट— २७० परिभापेन्दुशेखर ोजामह्-२६१ षा'ङ्ग[°]घरसहिताटीका मल्ल--३०६ चद्र— कथारत्नसागर २२० ज्योतियसारसू शटिप्पण 253 नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र २८४ वंनीलकठ— नोलकठताजिक शब्दशोभा तनेत्रसिंह— सप्तनयाववोध प्तेचन्द्र— द्विमधानकाव्यक्रीका सुप्रभातापृक ६३३ नेमिद्त्त-घौपधदानकया 285 **अ**ष्टक्पूजा ५६० कयाकोश (ग्राराधना-कया कोश) २१६ नाग श्री कथा २३१

54.Y]				ि संभ स्थ	श म्बद ार
म बद्धार क्या नाम		ची की १४ से	भवकार का माम	र्मं बनाम र्मभ	सूचीकी पत्रसं
	करितुनार परिष	{wl	1	विवापुत्रा	14.0
	वर्षोपरेक्षमासकावार	ξ¥		্টোৰ	tet
	नि समोजनवद्या	111	वर्षाम	गान्वती	3.6
	वाववानक् या	211	पश्चमामकाकस्य	क्योगरवरिष	
	ब्रीविक्स् चरि च	8 3	प्रशासम्बद	पार्क्य वस्तोत्र	YŁ
	बीपलवरिष	P	1		७ २ ७४६
	सुवर्षेत्र चरिश	₹ =	1		A&A A&#</th></tr><tr><th>पंचायनश्चायां —</th><th>বিৰাদ্যসূত্ৰদানী</th><th>Fu</th><th></th><th>856 A85 ¥</th><th></th></tr><tr><th>पद्मनीदि !</th><th>वधनन्दिर्थ वर्षि समिता</th><th></th><th>ĺ</th><th>KWY KEL,</th><th>(YY {Y</th></tr><tr><th></th><th>वयमन्दिक्षणकाशः व</th><th>-</th><th></th><th>444 442 1</th><th>35 F</th></tr><tr><th>गद्यभदि ।—</th><th>धनन्तक्रिक्ष</th><th>¥8.8.</th><th>वश्चमस्रि-</th><th>धुवनशैएक</th><th>3 9</th></tr><tr><th></th><th>गरसक</th><th>\$wx</th><th>परमईसपरिमा अकाच</th><th>ार्वे~-<u>शहर्त्त द</u>ुस्तादती</th><th>3.9</th></tr><tr><th></th><th>111 (10</th><th></th><th></th><th>वेष्णुकरोका</th><th>two</th></tr><tr><th></th><th>इत्यवस्तीशलनुवा</th><th>YEZ</th><th>पास्त्रिनी</th><th>वाञ्चित्रीम्नाकरस</th><th>848</th></tr><tr><th></th><th>डला पासत -</th><th>8</th><th>पाचकेशरी</th><th>वृषयरीमा</th><th>***</th></tr><tr><th></th><th>धमरेकामन</th><th>40</th><th>पारव हे म</th><th><u>ৰথকক্তৃক্</u>তি</th><th>Y 3</th></tr><tr><th></th><th>गश्चनायस्थोत्र</th><th>REE</th><th>पुरुपाचमदेव</th><th>ग्रमिमान्द्रोग्ड</th><th>1.5</th></tr><tr><th></th><th></th><th>WYY</th><th></th><th>विश्वसम्बद्धेपाधिमान</th><th>707</th></tr><tr><th></th><th>grant</th><th>25</th><th></th><th>हारत नि</th><th>355</th></tr><tr><th></th><th>न प्रकारण सिमुजा</th><th>111</th><th>वृभ्यपार—</th><th>शृहारवेश (स्वयकूत</th><th>तोच)</th></tr><tr><th></th><th>মা বাধীবানা</th><th>ì</th><th>-</th><th>4</th><th>12, 514</th></tr><tr><th></th><th>(चाणवारक्रीत) x ऱ</th><th>11</th><th></th><th>वरमञ्चयक्तीम</th><th>#At.</th></tr><tr><th></th><th>रालम्बर्द्वा</th><th>1 1</th><th></th><th>वानरत्वार</th><th>t.</th></tr><tr><th></th><th>_</th><th>191</th><th></th><th>ৰ বৰ্জনয়স</th><th>191</th></tr><tr><th></th><th>स्टमीस्तोध</th><th>** {</th><th></th><th>सम्बद्धियक</th><th>17</th></tr><tr><th></th><th>शैवयनस्वीन</th><th>16A</th><th></th><th>त्तर्वविदेश</th><th>¥#</th></tr><tr><th></th><th>Ags Ant dit.</th><th>986</th><th>वृक्षेत्र</th><th>नवीन चरित्र</th><th>te</th></tr><tr><th></th><th>कसम्पर्तपूजा १६१</th><th>₽₹₹ [</th><th>ব্ৰৰণ—</th><th>वातर्यह्पतीय</th><th>1.1</th></tr></tbody></table>

			1		
प्रन्थ एव प्रथकार)					ू मह <u>्र</u>
त्रथकार क नाम		रूची की पत्र स०	प्रथकार का नाम	भंथ नाम प्र	य सूची की पत्र सं०
पृथ्वीधराचार्थे—	चामुण्डस्तोत्र मुबनेस्वरीस्तोत्र	३८८	भक्तिनाभ— भट्टशकर—	पष्टिशतकटिप्परा वैद्यविनोद	३३६ ३०५
	(सिद्धमहामय)		भट्टोजीदीच्चित—	सिद्धान्तकौमुदी	२६७
भभाचन्द्र	झात्मानुशासनटीका झाराधनासारप्रवध	१० १ २१६	भट्टोत्पल	लघुजातक बृहज्जातक	२ <i>६</i> १ २ <i>६</i> १
	मादिपुरास्टिप्स्स	१४३		पटप चामिकावृत्ति	२६२
	उत्तरपुरागाटिप्पगा क्रियाकलापटीका	2 3 2 52	भद्रचाहु	नवग्रहपूजाविद्यान भद्रव।हुसहिता	४६४ २५१
	तत्वार्थरत्नप्रभाकर द्रव्यसग्रहवृत्ति	२१ ३४		(निमित्तज्ञान)	
	नागकुमारचरित्रटीका	१७६	मत् हिरि—	नीतिशतक वरागचरित्र	३२५ १ ६५
	न्यायकुमुदचन्द्रिका प्रमेयकमलमार्त्तण्ड	१३४ १३८		वेराग्यशतक भर्तृहरिशतक	09 \$ \$20,88
	रत्नकरण्डथावकाचार- टीक		भागचद—	महावीराष्ट्रक भ	११३, ४२६
	यशोधरचरिश्रटिप्पर्ग समाधिशतकटीका	738	भागुकीत्ति—	रोहिग्गोव्रतकथा सिद्धचक्क्यूजा	२३६ ४५३
}	स्वयभूरतोश्रटीका	१२७ ४३४	भानुजीदीचित—	भ्रमरकोपटी का	२७४
भ० ममाचह्र—	कलिकुण्डपारर्वनाथपूर	मा ४६७	भानुदत्तमिश्र—	रसमजरी	325
	मुनिसु व तछद	ሂሃሁ	तीर्थमुनि—	न्यायमाला	8 3 3
बहुमुनि—	सिद्धचस्रपूजा	ત્ર પ્રવ	प्रमह्मपरिब्राजकाचाः		
वालचानु —	सामायिकपाठ	¥3	तीथमुनी—	न्यायमाला	१३५
महादेव-	तर्कभाषाप्रकाशिका द्रव्यसग्रहवृत्ति	835	मार्षी—	किरातार्जु नीय	\$ & \$
/	द्रव्यसग्रहशृत्त पर् या त्मप्रकाशटीका	३४ १११	भावशर्मा—	लघुस्नपनटी 🕶 ।	キ
महसेन—		}	मास्कराचार्य-	लोलावती स ्र	३६८
	क्षमावर्णीपूजा रत्नत्रयकामहार्घ व	४६४	भूपात्तकवि—	भूगालचतुर्विशतिस्तो	
}	रत्नत्रयकामहाच व क्षमावस्ती	10-5		४२४, ४७	
	दानापसा	७८१।		ξo	£ 8 3 3 . ¥

□(1)				्रिश्च एव म न्यद ्वार
मेवुकार, का नाम	प्रथमाग प्रय	स्वीकी	प्र बद्धार का नाम	मंच रास समाचीकी
		पत्र सं		पेत्र सं
र्पमेगद्धा(समहद्य	•	44	İ	सम्बद्धानुभेषात्रेतः २००
मधित्रम्≭—	क्षेत्रपालपूजा	4.4	माष	धिनुपक्ष रम् १ १
मर्नकीर्चि—	मनैतव दविषान	११४	माणमंति	वतु विभ <i>ने</i> त्तीर्वकर
•	यो डसम् दरश्रविदान	X § Y	ĺ	वस्थाल देवर प्रीर
#स्म ाल —	यदनविनीव		ĺ	x 4
प्राविष्य—	भागप्रभूगत	375	माम्बक्षशंहि—	परीकानुक ११६
म्बुस्इनस्रस्वती—	ভিৰুদ্ধবিদ্দু	٩w	मा ग्रिवचम ह—	विषानृत ११
मन्सिङ्—	वोप विन्हामरित	1.1	मा व्यापन मृदि	नसीरवराज्य १४४
मनोदरस्याम-	क्सबोबटी का	212	गायवचन्द्रजनिसदेव	विकास सारवृति १२१
मस्मिनावसूरि—	रपुर्वसदीना	723		वपस्त्रात्त्रति 🔻
	विमुनालवचटीयः।	122	माधनदेव	715 STEPPEN
प्रविक्रभृपयु-	क्यमञ्जलकातीचाशक	YES	माबतु गाचाप	जन्मवस्त्रीय ४० ०
पश्चिपेदास्रि—	नगङ्गारपरित	tex		ASE ASE ASS FEE
	वैर म नयानतीमस्य	tyr		269 4 1 2, 475
	शुक्रमनविक्तनस्वाम	23		45 415 410 414
		3.1		den des em e s dan ène des es
	स्यक्षकांच री	tvt		4 2 42 + 2 + E
नहारेथ—	सुर्क्तरीयक	RE		9 8 W YE
	विश्व नवसूत्रालिक		सुविसङ्ग	वांतिनासदोब ४१७, ४१४
आश्चित प्राः—	प्रश्न स्थारिक	1	य नेपाची	वहांचोरास्थान २१६
न≰ीक्षपंधाः —	प्रतंता र्वस्मतिम वरी	791		नवर्षक्र्यानकाचार ११
य सदीचम्द−	ं रलाव तित्रवस् ो त्र		श्र शेक्षक्—	यनच्चनुबबोधूना १०४
			मोहन	कवानियाम ४६६
	वक्रमेश्चर्या	4	बरा भीचि —	श्रष्टर्गह्मराज्यां १४३

वरप्रवस्थि —

प्रधानतीस्य

विश्वप्रकास

यक्षश्रीवर्षि

स्व**क्**षिगल्**विव**ल

सारवक्त्रक्रियाटीका

महीघर-

महेरवर-

ननय-गाँग्युचन्द्रीता

पंचवरपेडीयूनार्थित स. २ स्ट्रेस

वयोजसार

वर्ग पण[शा

प्रव एव प्रन्थकार]				[=६७
भथनार ना नाम	घयनाम घयसूचे प	ी की ं त्र सं०	प्रंथकार का नान	ऋथ नाम	ग्रंथ मची की पत्र संट
यरोविजय-	गनिगुण्डपार्श्वनापपूजा	६४८	राजमल्ग—	यण्यात्मकमल	
योगदेव —	तत्त्रार्थयृति	२२		जम्बूम्वामीच	•
रघुनाथ —	तार्गिन दिश्लोमिण	१३३		लाटीसहिता नाटीसहिता	58
,	रचुनाचिवनाम	३१२	राजभेपर—	ग्यू रमजरी	३१६
साधुरणमल्ज	धर्मचद्रयूजा	¥83	राजमिह—	पारर्वमहिम्नस	
रत्नशे वरसृरि-	 खराोघा	308	राजसेन—		त्र ४६६, ७३७
रत्नशीत्त-	रत्यथिषानक्या	२४२	राजहमापाध्याय—	पप्टयाधिकशत	•
	रत्नत्रयविधानपूजा	ofk	मुमुज्ञरामचन्द्र—	पुण्याश्रवकया	
रत्नचन्द्	जिनगुरामगत्तिपूजा	Y 00,	रामचद्राश्रम—	रुपानवन्त्र सिद्धान्तचन्द्रिष	
		280	रामवाजपय—	समरतार	• •
	पचमेरपूजा	20%	1		१९४
	पुष्पाजलियतपूजा	४०५	रायमल्ल-	भैतोवयमोहनव 	
	गुनीमचरित्र		रुड्रभट्ट—	वै ग्रजीवनटीव	
	(भीमचरित्र) १६४	२०६		शृङ्गारतिलक	388
रत्ननदि—	नन्दीस्यरद्वीपपूजा	833	रोमकाचायं—	जन्मप्रदीप	२५१
	पत्यविधानदूजा	४०६,	लकानाय	ग्रर्थप्रकाश	785
		, ५१=	नद्मण (श्रमर्सिद्दार		
	-द्रवाहुचरित्र	१८३	}	लक्ष्मगोत्सव	३०३
	महीपालचरित्र	१८६	लद्मीनाय	जिंगलप्रदीप	३११
रत्नपाल—	सालहकाररावभा	६६५	त्तद्मीसेन-	मभिपेकविधि	አ ጸ =
रत्नभूषण	निद्यपूजा	ሂሂሄ		यमचूरप्रतोद्या	पनपूजा
रत्नशेखर्—	गुण्स्यान ग्रमारीहसूत्र	4			४६४
	समवसरणपूजा	५ ३७		चितामिए। प	ार्स्नाय
रत्नप्रभसृरि	' प्रमाणनयतस्वावलोन			पूजा एव	य स्तोत्र ४२३
	लकार टीका	१३७		चिन्तामशिस्त	
रत्नाकर—	भात्मनिदास्तवन	नेपठ		सप्तिपपूजा	አጸ።
र्षिपेणाचार्य	पद्मपुराग्।	१४५	त्तघुक्रवि—	सरस्वतास्तवन	
राजकीर्त्त—	प्रतिष्ठादर्श	५२०	लितकी ति	मक्षयदश मी कर	
	पोडशकारएप्रतोद्यापन पूजा	ሂሄ३		मन तप्रतकथा	, , ,
	4411	-, • 7	1	क स्राम्यायायाया	६४४, ६९४
Į.					
			[4]		. ` ` \

मध्य]				[मंथ एव	सम्बद्धार
म पद्मर का बाम	मदनाम सदस्	्षी श्री स्थासं	मथकार का माम	९ व नाम र्मच	सूचीधी पत्रसं
	बारावर्णभगीर भा	EYK	वराइमिहर	बट वं बार्डिका	717
	चेनियामधीयापनपुषा	ΥĘ	भ ० वद्ध मानश् य —	वरायवरित	ttr
	चौत्तर्जं धवभूगारका		वश् सावस्ति-	वम्बस्य	721
	शोबी की पूका	χξV	वरशास	वीवश्रवत्य	ţst
	विनयरिश्यया	141	व⊞सम्ब-	वैवायमस्तीवटीवा	181
	ৰ্যদণ্ধতীক্ষা	SEX	1	গতিসাশ্যত	171
	कारविकालपूथा	1.1	l	प्रविज्ञानार संपद्	277
	कृ ण्यं अविश्वत कमा	122	ĺ	वृत्तावारदीका	M.
		MEA	वाग्भकु	नैसिनिर्नाण	ţus
	रालक्ष्मकदनका ६५%	111		वान्बहुलंकार	759
	रीहिलीवदनवा	EYX.	वादिचम्द्रस्रि	कर्मस्तरपूर्वा	1.5
	बीडघरारएक्या	ŧη		ভালনুৰ্বী ধন ৰাত্ৰ	111
	बमक्षरसङ्का	375		पणनदूर्य मा	ţw
	मुर्गवस्थानीयना	ξ¥ξ	शहिराज—	एकी अस्तरको न	1.3
क्षोकसंग	दश्तकसूचना २२७	१ ४२		292, 278 X8	ę, ker
क्षोकेशकर	ভিত্তসভাপিদাধীকা	244		262 6 2 58	1 (1)
कोव्यानगाज	वैश्वजीयम	wtx		in its its	
बोगाविमास्कर—	पूर्वनीनांसार्वप्रकर स्				utt
	वंत्रह	tto		द्ववाद्यक	exe
कोश्चिम्बराध	वैद्यमीयम	1 1		प्रज्ञीतलपरिय	-
वनमाधीमङ्	विकारनाकर	- 1		क्योमस्परिष	23
बरदराज-	वपुणिकात्त्वनीपुरी	243	षारीयस्थि—	वामपुरामस्ति	***
	GLEARE	PY		प परस्थातुर मृता	×
बरद्धि	एकामधीनोवा	₹₩+	गमगुष	निसी त द ीरक	17
	धोनक्य	3.3		वलवंदर्	we
	क्रमण्डी	542		विद्वान्तविशोग यो गम्	121
	भुतनी य	सरम	व्यववस्थय	यदोशरपरिष	tt
	श्वर्शर्वसम्बद्धी	रेक्ट	गाव्यव्यस	चतिप्रविश्वल	* *

प्रथकार का नाम	प्रंथ नाम प्रंथ	सूची भी पत्र स०	्रयंथकार का नाम	म्य नाम १४	सूची र्क पत्र संब
विजयकीत्ति	चन्दनपष्ठिव्रतपूजा	30%		सेरहद्वीपपूजा	ሄፍነ
श्रा० विद्यानन्दि—	धप्रसहस्री १ः	२६, १३०		पद	५६१
	भातपरीक्षा	३२१		पूजाप्टक	५१३
	पत्रपरीक्षा	१ ३६		मागीतु गीगिरिमडल	ī
	पचनमस्कारस्तोत्र	४०१		d.	ना ५२६
	प्रमाणपरीक्षा	१३७		रेवानदीपूजा	५३२
	प्रमाग्गमीमांसा	१३८		शत्रुखयगिरिपूजा	५१३
	युक्त्यनुषासनटीका	359		सप्तर्पिपूजा	ሂሄሩ
	श्लोकवात्तिक	٧٧		सिद्धकूटपूजा	५१६
मुमुज्जविद्यानन्दि—	सुदर्शनचरित्र	२०६	विश्वसेन—	क्षेत्रपालपूजा	४६७
डपाध्यायविद्यापति—	चिवित्साजनम्	२६५		परावितक्षेत्रपालपूजा	५१६
विद्याभूपण्सूरि—	चितामिएपूजा (वृहर			परावितक्षेत्रपूजा	५४१
विनयचन्द्रसूरी	गर्जसिंहकुमारचरित्र	 १६३		समवसरग्रस्तोत्र	४१६
विनयचन्द्रमुनि	चतुर्दशसूत्र	१४	विष्णुभट्ट—	पट्टरीति	१३६
विनयचन्द्र—	द्विसधानका व्यटीका	१७२	विष्णुशर्मा—	पचतःभ	३३०
	भूपालचतुर्विद्यातिका			पचास्यान	२३२
	स्तोत्रटीका	४१२		हितोपदेश	३४४
विनयरत्न—	विदग्धमुखमडनटीका	७३१	विष्णुसेनमुनि—	समवसरणस्तोत्र ४१	
विमलकीन्त-	धर्मप्रश्नोत्तर	६१	वीरनन्दि—	भाचारसार	3¥
	सुखसपत्तिविधानकथ	ा २४५		चन्द्रप्रभचरित्र	958
विवेकनदि	त्रिभगीसारटीका	३२	वीरसेन-	श्रावसप्रायदिचत	2.6
विश्वकी त्ति—	भक्तामरव्रतोद्यापनपूर	ना ५२३	बुपाचार्य—	उससर्गार्थविवर गा	¥ ~
विश्वभूपगा—	मढाईद्वीपपूजा	४४४	वेदव्यास—	नवग्रहस्तोत्र	६४६
	माठकोडमुनिपूजा	४६१	वैजलभूपति —	प्रवोधचद्रिका	₹ १ ७
	इ न्द्रध्वजपूजा	४६२	वृहस्पति	सरस्वतीस्तोत्र	420
	कलशविधि "	४६६	शकरभगति—	वालबोधिनी	१३८
	कुण्डलगिरिपूजा	४६७	शकरभट्ट-	शिवराश्विच वापन	. •
	गिरिनारक्षेत्रपूजा	४६६		विधिकथा	२४७

£00]			[संध एव सम्बद्धार
श्यकार का नाम	क्ष्यनाम क्ष्यसूचीव पत्रस	न बचार का नाम	मेंगनाम गवस्पीधी पत्रसं
शकराचार्य —	यासम्बन्हरी ६		वस्त्रवासमयायाः ११
	धाराबनुदर्गतोत्र ६३	۱,	चन्द्रवपश्चित्रतपूत्रा ४३१
	गोविन्दाएक ७३	ıl .	चन्दरावरिष ११४
	वनप्रावाष्ट्रक १४		अनुविद्यतिजिनसूत १४६
	र अरामूनिस्तोच ६१	1	चनारमणीत १६६
	इरिनायनामा १६	.	पारितश्चितियान ४४१
राचूनायु —	विषयत्तरीमा इह	1	বিদ্যাদভিয়ে গ্ৰ ম
शंभूराम—	वैविनाषरूबाट्ड ४६।	. [द्वमा ६४६
शास्त्रायत—	सास्टानस्थागरमः २५:		क्षेत्रन्यस्वरितः १३०
रप्रक्रियाम —	ধৰ্ণবৰনুষ্ঠীভুতা ৮ছ	i Í	वस्तवर्णन १
	रचस्तक्षक ६५%	, [दीवचीबीबीपूर्वा ३१०
श्चन्त्र भर	सर्वेत्रसे ६ः	:	वैष्ट्रीरह्ना ४६१
	गाञ्ज वरलेहिन। १ :	:	पंत्रसम्बद्धाः १ र
र्वशासी—	वैशिवायरक्षीय ३ १ ७३४		र्यवरायेटीपूजा १ र
शाविनाय	रममञ्जरी १ ।		बन्याकोचास्य ६ ६१
व्या शिक्सदि—	रालमाना ।	1	पांबसपुरास्य ११
द्विश्वीताच—	धनिवासनार १७३		पुरसंज्ञविष्यसङ्ख्याः द
	र्गनगणगणगण्या ४ १	Í	थेलिक्चरिक ११
	रमयसम्द्राचा ११८		धरवनविशासम्बद्धः १११
	न व्यवसारग्रहारवान्ति वर		वाद इरधेसूमा
शिवसमा	बारम्बद्धारसम् ११६	1	(बर्माक्षेत्रुमा) ४६३
रिकारिस —	महरशाची १८		नुवापितकाँच १४६
शुभक्तप्राचार्य	हानार्गर १६		विजयसपूरा १११
गुभव 1-11	महादेशकाच्या ११५	राधममुनि	निवस्पूर्ति १६६
	मरपञ्चरित्र १६१	थीषग्रमुनि	पुरम्ल्यार १६६
	व प्रसूति ४६४, ११३	श्रीपर—	व्यविष्यरत्तवरिष १ ४
	Tra:		बुबबर्सनका १.४
	कार्तिकेयणुरेशारीका १४	1	भू नावदार ३३

•	•					_	•
भंथकार का नाम	प्रंथ नाम	ग्रंथ सूची पत्र	की सं•	प्रंथकार का नाम	प्रंथ नाम	ग्रंथ सूर् प	ची की त्र सं०
नागराज	भावशतक	,	३३४		व्रतकथा		२४१
श्रीनिधिसमुद्र —					पट्पाहुर		११६
श्रीपति —	जातककर्म	ग्र व ति	२८१		श्रुवस्कष्		५४७
	ज्योतिषयट		६७२			. रू नररापूजा	५१०
श्रीभूषण्—		(जा ४५६,	ł		सरस्वत	**	
4.	चारित्रशु	•	४७४		सिद्धचर		850
	पाण्डवपुर		१५०			ण्यूण । शिमीकथा	メメヨ
		 द्यापमपूजा					प्रश्न
		प्र२३,	५४०	सक्तकीर्त्त-		ाम्यग्दर्श न	२१५
	हरीवशपुर		१५७			गयचरित्र	१६०
श्रृतकीर्त्ति—	पुष्पाजली		२३४			राकटीका -	ሂ
भूतसागर—	ग्रनतत्रतः ग्र नतत्रतः		२१४			सारदीपक	23
31/11/1		हिग्गीकथा	२१ ६		द्वादशा		३०१
		चमीव्रतकय <u>ा</u>	784		धन्यकु	मारचरित्र	१७२
		ष्ट्रेव्रतकथा	778		परमात	मराजस्तोत्र	४०३
	मृग्यगपा		, ५१७			सारसग्रह	१५१
	जिनसहर	त्रनामटीका	F3F		प्रश्नोत्त	तरोपासकाचार	७१
		वगद्यटीका	१०७				\$3
	तत्वार्थस्		२६		पार्श्वन	ाथचरित्र	308
		" एाव्रतकथा	२२७		मल्लिः	नाथपुराए	१५२
		गनव्रतोपाख्यान	r		मूलाच	ारप्रदीप	30
		कथा	२३३		यशोध	रचरित्र	२ द
	मुक्ताव	लिव्रतकया	२३६		वद्ध म	ानपुरास	113
	मेघमार	नाव्रतकथा	५१४		व्रतकर	गकोश	२४२
	यशस्ति	लकचम्यूटीका	१ ८७		<u> शाति</u> न	गयचरित्र	285
	यशोधर	चि रित्र	१६२		श्रीपार	नचरित्र	२०१
	रत्नत्रय	विधानकथा	२३७) सङ्ग्रा	पतावलि ३३८	, ३४२
	रविव्रत	क्या	२३७	•		त्तसारदीपक	ΥĘ
	विष्णु	कुमारमुनिकथा	3 ¥¢) l	सुदर्शन	चिरित्र	₹05
							• •

£09]			(मंद्र एक मन	ब ग्रार
प्रैसक्सर का नाम	मगमाम सगस् थी थे पत्रस	में भष्यार का नाम	र्मवानाम स व स्	भी भी त्यसं
मुनिसक्ककीर्त —	नदीस्परपूजा ७६	t l	गमस्य उदमेशकस्यविधि	
सदस्याम्	नीलारमा ६६		ভ ূচিত	lvt.
	वर्षनायोज १७	E	नसपुट	269
स स्य मृ पद्य	उपरेक्षणनमाला १ बीम्बरक्षाण्टीका १	सिक्षचनिवादर-	विनवह्मनास्त्रोध बद्ध मलहर्पेचीवरा सम्पटितर्फ	418 118 118
सक्ततक्रादिः—	धिकल्यचन्त्रिका कृति २६	१ सुजदेव—	बायुन्यमहोन्दवि	720
चानार्यसम्बद्धः—	प्रातकीयांका ६४	• वर्गीमुजसागर	पुश्याननीपुना	1,70
	विनवत्त्वातंकार ११		वयसभाउकपूर्ण	1
	वेगायमस्तीय ६१	-	779	111
	४२६, १७१, ७१)	परमस्तस्यानसपूर्वा	277
	नुसम्बद्धासम् १६ १६	हुन्दरिकक्रमायि-	शीनामारवमीकवा	488
	¶¥.	धुमविश्वीर्षि	<u> वर्षत्रकृतिसीना</u>	- 1
	राणकरण्यसम्बद्धार	सुमविक्य-	चारितपुरिवन्त	Ang
	₹, 4£ ₹ - ₹	Bandlanden al -	रपुरवाधीया	488
	बृह्य्स्वर्गपूर कोच १७९ ६२	धुमविसागर	वैश्वीलवसारपूका	***
	समेवनसर्वि १७	* {	वस्तरकारण्यपूर्वा	YEL
	बहुम नाय बहु ४२	Į.		£¥
	स्वयंद्वायोगः ४२१, ४३१ १७४ १११, ६३१)	पोक्षकारणपूत्रा	file fie
	94	धरेन्द्रकीचि	ঘলতবিক্ষুমা	124
स्माक्तरकाचि	रवर्गकरीमा १६	e	प्रकृतिकार्याच्या	11

बुरा राशाकर बोध्दीका Rtv **इंड**कोयवनिश 225 बालपं परिवरिका र्शनुप्रधा नगार्थण 180 wet समयमुभ्रतेपाच्याय-नक्भानटीका **स्तिका**पन 1Ye (धुवलबर्गा) सर्सभीच---वैतोस्थवार/दिका 131

कविसारस्वतः— वियोजनीय गई नागविज्ञासका सिंहविस रू-सिक्तमि — वर्गोरदेशपीतृपद्मात्रका

125

*व्*पेष्ठविदयस्त्रुवा **पष्टस्यात्तरपूर्**या

211 111 र्वश्रयक्त कर्डु वें बीपूका t Y

ŖΥ

म यकार का नाम	प्रंथ नाम प्रंथ सु प	्चीकी त्रस०	य्र थकार का नाम	म्रथनाम अथर	पूची की पत्र सं०
	नेमिनायपूजा -	888 .		र्छंदोशतक	30€
	सुखसपत्तिव्रतोद्यापन	५५५		प्रमीवतोद्यापन	५०४
सुरेश्वराचार्य	पचिकरणवात्तिक	२६१		भक्तामरस्तोत्रटीवा	308
सुयशकीर्त्ति—	पचकल्यागाकपूजा	Yoo		योगचितामिए।	३०१
सुल्हण कवि	वृत्तरत्नाकरटीका	388		लघुनाममाला	२७६
देवज्ञ प० सूर्य-	रामकृट्याकाव्य	888		लव्धिविधानपूजा	५३३
श्रा॰ सोमकीत्ति—	प्रद्युम्नचरित्र	१८१	•	" श्रुतवोधवृत्ति	३१५
	<i>रु</i> तुब्बसनदया	२५०	महाकविहरिचन्द—	धर्मशर्माम्युदय	१७४
	समवद्यरगपूजा	३४४	हरिभद्रसूरि	क्षेत्रसमासटीका	५४
सोमदत्त—	वर्डासिढपूजा			योगविंदुप्रकरण	११६
	(कर्मदहनपूजा) ६३६		पट्दर्शनसमुच्चय	१३६
सोमदेव	भ्रच्यात्मतर गिरगी	33	हरिरामदास	र्पिगलछदद्यास्त्र	३११
	नीतिवानयामृत	३३०	हरिपेण—	नन्दीश्वरविघानकथा	२२६
	यशस्तिलकचम्यू यशस्तिलकचम्यू	१८७			५१४
सोमदेव—	सूतक वर्णन			क्याकोश	२११
सोमप्रभाचार्य—	मुक्तावलिव्रतकथा	२३६	हेमचन्द्राचार्ये	म्रमिधानचिन्तामणि	
	सिन्दूरप्रकरण	₹ ४०	-	नाममाला	२७१
		, ६३४		ध नेकार्थसग्रह	२७१
सोमसेन	त्रिवणीचार	ሂፍ		श्चन्ययोगव्यवच्छेदकद्वार्टि शिका	
	दशलक्षरगजयमाल	७६५	_	खदानुशासनवृत्त <u>ि</u>	३०६ इ०६
	पद्मपुराग	१४५		द्वाश्रयकाव्य	198
	मेरूपूजा	હ્ર		घातुपाठ	, 6
	वि याह पद्धति	४३६		नेमिनाघचरि य	१७७
सौभाग्यगिष्य	प्राकृतव्युल्यत्तिदीपिका	२६२		योगशास्त्र	१ १६
ह्यमीव—	प्रश्नसार	२८५		लिगानु शासन	२७७
हर्प 	नैपधचरित्र	१७७			४१६
हर्षकल्याण्— हर्षकीत्ति—	पचमीव्रतोद्यापन	४३६		चीरद्वानिशतिका	१३८
६५कात्त—	म नेकार्थशतक	२७१		शब्दानुशासन	२६४

T-8				्धिंव एवं सम्बद्धार
धश्रम्बास्यास्य स	(व नाम समस्् प	ी भी इस	र्मधकार का माम	स्थामा सवस्पीकी पत्रकं∙
	शमनुषायम्	448	भाग्रेद—	वर्षुनियतिहीर्वेक्स्स्वर
	हेवीम्पाधरस	₽e		¥ŧ
	हे बीम्याकरलकृति	٦		लयानुसीबयमान ४११
	•			44 844
हिन्दी	मापा	i	बातम्ब—	कोकसार १६१
शक्तप्र	धीनवसीधी	98	चातम्बर-	यद ४१
चक्रपराज-~	बीवर्षुगस्यान्वर्षा	75	भागन्तसूर-	श्रीवीवनिषमात्रा ^{त्} रता
44	त्रसम्बद्धाः	ψξξ		स्तरम (१६
कक्षराम	वस ३५%,	***	ł	शैतिसञ्ज्ञास्त्रामः ११
बगरदाध	शनिता करण	70	ł	बादुर्गदेश ६१७
	मु रविया	37	साह्यास्—	शरकाकुरेका १.६.६६१
ঘৰৱন্তবি	अधोरचगाचा	a§¥	धारामर—	पूजाकृष ६११
4444114	विधारक्षारस्त्री अन्यका	¥15	थासकरथ-	व्यक्तिकाम हरे
		487	इन्द्रबीच—	रक्षिपतिया १७१, ४४१
	मेक्नवनारस	t tre	इम्ब्रवीय	বুনিকুতত্বাব্যক হয়
	वारमिश्रीकीकृषा	992	क्रमचंद	44 143
भव्यस्तव—	वह १वह		वर्षमानु	गोनरात्रो ४६७
, 	# A & 4	3.2	वर्षराम	eg wat ute
	दिवती ७०६	- 1	धर्वकास—	नावदसम्बदित १६४
	वंबसपूर्या		1	Selection 188
मद्याधात्रित	ईसंक्षित र णव	- 1	1	distancing.
मध्यात्रतः— व्यनस्तर्भात्	44	11	अवस्यास्य —	faretener and
	सपूनाश्ती	167		(44474)
धवजर्~ सभ्यवस्	Janka Janka	232	व्यपमहरी— कनकशीचि~	वृद्धः १५३ सर्वदेशावयीविनही १९१
समयवन्त्रमृरि ─	विक्रमचीयोलीची स्ट	48	design of the second	250
सुविधामवदेष—	चैत्रापुतार्थना गरा गम	186	1	शिवस्त्वयं थवर
धापुरवान्य	पर	1. 6	.1	छरपार्वनूषधीया १ अ१८
धारपू-	वास्वयुक्त	-31	}	नुसर्वनावयोज्ञाती १११

श्रंथकार का नाम	त्र थ नाम	ग्रथ सूर प	वीकी त्र सं०	प्रथकार का नाम	प्रथ नाम	प्रथ मूची की पत्र स०
	भक्तिपाठ		६५१		रात्रिभोजनक	
	पद	६ ६४,	७०२	कुवलयचन्द्—	नेमिनायपूजा	७६३
		७२४,	४७७	कुशललाभगिए—	ढोलामारूवरा	
	विनती		६२१	कुशल विजय—	विनती	७६३
	स्तुति	६०१	, ६५०	वेशरगुलाय-	पद	አ ሉክ
कनकमाम	बादकुमारधम्		६१७	चेशरीसिंह—	सम्मेदशिखर	वेलास १२
	ग्रापाढमूति च		६१७		वर्द्ध मानपुरा	ण १५४
	मेघकुमारचौ		६१७			38 6
कन्हेयालाल	क्वित		950	केशग	कलियुगकीकर	ग ६२२
द्यात—	मोरपिच्छघा	रीक्सम			सदयवच्छसाव	ालिंग <u>।</u>
#1IQ-		राकुण्या क वित्त	६७३		म	चौपई २५४
_		क्।नरा	, ,	केशवदास—।	वैद्यमनीत्सव	585
त्र कपूरचन्द	पद		YYX	केशवदास।।	कवित्त	६४३, ७७०
2			, ६२४		कवित्रिया	१६१
कवीर	दोहा		०, ७५१		नखसिखवर्गाः	
	पद	1919	₹30,0		रसिकांप्रया	७७१, ७६६
	साखी		६२७		रामचन्द्रिका	
कमलक्जश—	वभगावाडी	स्तवन	€8€	केशवसेन-	पचमीव्रतोद्या	
क्मलकीत्ति—	भादिजिनव	रस्तुति		कौरपाल	चौरासीवोल	
	(যুজ	राती)	४३६	कृपाराम—	ज्योतियसारः	भाषा २६२
कर्मचन्द	पद		५५७			185
कल्याग्यकीत्ति-	चारुदत्तर्च	रेत्र	१६७	कृष्णदास—	रत्नावलीवत	विवास १२१
किशन	छहढाला		६७४,	कृष्णदास—	सतसईटोका	و ۶ د
किशनगुलाव—		५५४, ६१		कृष्णराय	प्रयुम्नरास	७२२
किशनदास—	पद		£XE	खजमल—	सतियों की स	, ,
किशनजाल-	कृष्णवाली	वलास	४३७	खङ्गसेन—	त्रिलोकसारद	
किशनसिंह—	क्रियाकोश		¥3	खानचन्द		६८६, ६६०,
	पद		o, Goy		परमात्मप्रकाः =	_
		•		1	वा	घटीका १११

£ \$ }			मेथ एव मन्धरार
मधकारका साम	मवनाम म यस् चीकी पदसं∘	र्भेषकार का माभ	र्मथनाम प्रेंडसूपीकी पत्रस
सुग्रावचन-	धनस्त्रप्रशासः ११४	1	शर १६६४
•	बारक्षांचनीयमा रू४६		(fy ff m)
	बारि पदनस्था	1	34 144
	(चीवाराया) ७३६	रेतिस्य	नेथोरनर ना वास्त्रामा
	बारहोसिडोंगी ७३०		970
	सनरपुरान्यनाका १४४	ł	वैयोववरराद्वनगोसप्टरि
	करनक्ठी दत्तरया १२४		યમ
	TYF TYF	[वेशिविमंद्रस्त्रहरू ११
	विन्यूमानुस्तरका १४४	सेमचन्द्र	भौगीवनियस्तुति ४१०
	क्षेत्र(प्रवस्था १५४		पर ३.१
	स-बनुजारपरित्र १७३ ७२ ६		xet tye
	कानकरायका है ५५ अहे हैं।	गञ्ज	प्यतंत्रह ७१
	वयाुरालावाता १४६	र्गगाशस —	रमर्राष्ट्रक
	वराविद्यानस्य। २१व		राजनबारजन १७६
	नु रतीयनिकट था २१४	र्शगाद्यस—	अप्रीरपुरसन्तिमधी ७१
	98w 49		वारित्यपारक्या ७११
	कुमार्ग्यकालसङ् ४१६		धुनना क्र
	मुद्रास्थ्यमं २८४		विञ्चयनगोदीनती ४३९
	11	गगराम—	नव ११४
	मृत्यादनी बनवचा १४१		श्रन्दानरस्वीयनद्याः ४१
	वैषयानाप्रतरचा ३३६	गारवदास	न्योपरपरित १६६ वर्षात ७३२ ७ ६
	trr	गिरवर— गुपकीचि—	
	वयोषस्परित १११ ७११	शिवस्ताय	वनुविद्यां/स्याप्तः ६ ६ कोर्यानवसम्बरम्यसः ६ ६
	शस्त्रिवयानुक्या ३४४		शीनराम ११
	बार्तिकाशपुरम्य ११६	शुक्तपर्-	धारीरगरनेप्रयमप वरि
	मान्द्रसाराण्डसम्ब १४४	23-2 4-X	91 11151
	बप्तरसम्बागायम् २४४		14
	इ स्थियोसच् ११	गुज्ञानि—	रलारनियमा १४६

प्रथकार का नाम	प्रथनाम प्रथसूच		य्र थकार का नाम		रूची की
	पन	त्र स०			पत्र स॰
गुणपूरण—	पद	७६५	चम्पाताल	चर्चासागर	१६
गुणप्रमसूरि—	नवकारसज्याय	६१८	चतर—	चन्दनमलयागिरिक्था	२२३
गुणसागर—	द्वीपायनढाल	880	चतुभु जदास	पद	৬७=
	शातिनाथस्तवन	७०२		मधुमालतीकया	२३५
गुमानीराम—	पद	333	चरणदास	ज्ञानस्वरोदय	७५६
गुलावचन्द्—	कक्का	६४३	चिमना—	मा रतीपचपरमेष्ठी	७६१
गुलावराय	बडाकक्का	६८५	चैनविजय—	पद १५	5, ७६५
नहा गुलाल—	क्यकावत्तीसी	इ७ह	चैनसुखलुहाडिया—	म कृत्रिमजिनचैत्यालयप्	रूजा४५२
•	कवित्त ६७०,	६=२		जिनसहस्रनामपूजा	¥50
	गुलालपच्चीसी	७१४			५५२
	श्रैपनक्रिया	७४०		पद ४४	६, ७६=
	द्वितीयसमोसररा	५६६		श्रीपतिस्तोत्र	४१=
गोपीकृष्ण—	नेमिराजुलव्याहलो	२३२	छत्रपतिजैसवाल	द्वादशानुप्रेक्षा	308
गोरखनाथ—	गोरखपदावली	७६७		मनमोदनप चशतीभाष	1 338
गोविन्द्—	बारहमासा	६९६	ন্থাজু—	पार्श्वजिनगीत	४६
घनश्याम	पद	६२३	ञ्जीतरठोत्तिया	होलीकीकथा	२५४,
घासी—	मित्रविलास	३३४			६८४
चन्द	चतुर्विशतितीयंकरस्तुति	६८४	 छीह्त	प्चेन्द्रियवेलि	434
		७२०	Sida	पथीगीत	७६५
	पद ५६७	, ७६३	•	पद	७२३
	गुणस्थानचर्चा	5		वैराग्यगीत (उदरगं न	
चद्रकीत्ति—	समस्तद्रतकीजयमाल	५६४	ब्रोटीलालजैसवाल-		
घन्द्रभान-	पद	५६१	छोटेलालभित्तल—	पचक्त्यासाकपूजा	1 3
चन्द्रसागर	द्वादशव्रतकथासग्रह	२२=	जगजीवन-	एकीमावस्तोत्र मा या	٠ ٤
चम्पावाई	चम्पाशतक	४३७	जगतरामगोदीका	पद ४४५, ५८१	ערט
चम्पाराम	धर्मप्रश्नोत्तरश्रावका			ፈቱ ሃ, ६१ሂ,	
	चार	£ 8		६६६, ७२४,	
	भद्रवाहुचरित्र	१५३		५८८, ७५ <i>६</i> , ७ ५३, ७६८,	
	-			477, 666,	330

1.o⊂]			[प्रवास	न्दर्भ
भैषकार का भाग	मंश्रमाम मेथ सूची पत्र		भेंद्रत्युग स्व	स्पीधी पत्र र्व
	जिन्दारशीस्तवन ।	IE	क्रमसंपद्गनामा	п
वगनराय	पद्यम् १ रण्डीसीमाया	to	গটভাগুৰসলা	111
	कम्बराजीनुदीसमा १	* P	भक्तमस्तोशभाषा	¥1.
अगनकरि	रामवत्तीती भ	rty	सम्बतारश्राषा	111
सगराम—	पर ४१,६	4	ভৰ্মিনিয়ালা	71
	•	2	कामानिकपाठकाना	73
व्यवस्य	प्रतिमा स्वत्यपञ्			111
	कार्यस	प्रसम्बद्ध	कुडीलकंडन	11
		र पांड इवर्शत—	स्थार्व तुत्रद्वेता	35
	गरेगानरमधके ४ वीम	अवसागर —	चनुर्विवस्तिविवस्तवस	
बनसङ्		*	(चीबीसीस	त्रम)
वनमञ् वनमाहन—		wt	48	t wit
बमधभ—	वर्षानुवर्शनबाद्यानासा	1	विन <u>षु यत्तन</u> ृरिषी रा	17
		१६ । जनमामगणि —	वास्त्रभाषमा	410
ब न्धिशन—	कविता ६	४३ व्याहरसास	समीर संबस्तुना	21
अवशीचि—	पद १११	बसद्रीचि∕	व्येष्ठविषयरस्या	275
	श्वकुतराग १	६६ जमराज-	वाष्ट्रमासा	91
	महिन्मस्यम ४	२१ जनवर्शसहराठीय-	ধলাপুদত্ত	111
	रविज्ञानकाः ५	६६ असुराम-	खबनीवियसमनता	111
स्वयम्बाग्या —	सम्पन्न रेच	११ जारूगम	चर	W
	ब्रष्ट्रप्रसुद्ध नायाः	११ शिवचंशस्रि—	याचेस्य स्रक्त्य	٠
	धान्तनीमाबागाया १	1	रज़र्वजियस्त्यम	94
	वर्डीतरे बालुक्तिमा वादाः १	Y	बार्य्यावना	•
	र्वेडजनगरितमानः ११	K į	न्यानीरस्वपन	•
	श्रामार्गपशायाः १	C	विश्वतीयात्मपुर्वि	
	•	विवसायसम्ब	वैशिस्तपम	¥
	वेशप्रशासना ४।	1 - ar medial c	चनुर्विचातिविद्यास्य <u>-</u>	
	देशनमस्तोषभाषा १८	EX (ल्युवि	٠

			7
TI 31	ਧਰ	प्रन्थकार	
77	77	41.41.61.4	_

प्रंथकार का नाम	ग्रथनाम ग्रथसूचीकी पत्रसं०	प्रंथकार का नाम	ग्रथनाम प्रथसूचीकी पत्रसं०
	वीसतीर्थंकरस्तुति ७००		धर्मप चर्विशतिका ६१
	शालिभद्रचौपई ७००		निजामिंग ६५
जिनचद्रसूरि—	कयवन्नाचौपई २२१		मिच्छादुक्कड ६८६
-	क्षमावतीसी 战		रैदव्रतकथा २४६
जिनदत्तसूरि—	ग्रुरुपारतत्रप्वसप्तस्मरण ६१६		समकितविरावोधर्म ७०१
	सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र ६१६		सुकुमालस्वामीरास ३६६
प० जिननास—	चेतनगीत ७६२		सुभौमचक्रवित्तरास ३६७
	धर्मतकगीत ७६२	जिनरगस्रि—	कुशलगुरुस्तवन ७७६
	पद ५८१, ५८८, ६६८	जिनराजसूरि—	धन्नाशालिभद्ररास 🔒 ३६२
	७६४, ७७२, ७७४	जिनवङ्गभसूरि—	नवकारमहिमास्तवन ६१८
r	ग्राराधनासार ७४७	1	शालिभद्रधन्नाचौपई २५३
	मुनीइवरोंकीजयमाल ५७१	जिनहर्षे—	घग्धरनिसाएगि ३८७, ७३४
	५७६, ६२२, ६५०		उपदेशछत्तीसी ३२४
	६८३, ७४०,७६१		पद ५६०
	राजुलसज्काय ७५०		नेमिराजुलगीत ६१८
	विनती ७७		पार्श्वनायकीनिशानी ४४८
	विवेक्जकडी ७२२, ७५	जिनहर्षगिण-	श्रीपालरास ३६५
	सरस्वतीजयमाल ६५।		बारहसीचौतीसव्रतकथा ७१५
	७७५	, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	नन्दीश्वरविद्यान ४६४
पागडेजिनदास—	योगीरासा १०५, ६०	जीवणदास—	पद ४४५ पद ४८०
	६०३, ६२२, ६३	े जीवणराम— ६ जीवराम—	पद ५६० ७१/
	६५२, ७०३, ७१		जीवजीससहार ००,1
	69	3144	रागमालाके दोहे उद्
	मालीरासो ५५		दशवैकालिकगीत ७००
जिनदासगोधा	सुगुरुशतक ३४० ४४		चौमाराधनाउद्योतकया २२४
व्र० जिनदास —	मठावीसमूलग <u>ु</u> णरास ७०	· u	गौडीपार्श्वनायस्तवन ६१७
	ग्रनन्तवतरास — ५	60	जिनस्तुति ७७५
	चौरासीन्यातिमाला ७।	X]	धर्मसरोवर ६३
			• •

1				ि ग्रंथ यन परमकार
ite]				-
ध्यशाः चासाम	धयनाय प्रेयम्	ोधी प्रमं	म वकार का मान	र्बयनाम स्थल्पीकी पत्रर्भ
	नैविधिनन्तरम	410	!	स्रोनद्वरातास्या ४
	अक्चन्त्रभार	¥ Į Į	मर्गम्राग—	er ne
	मै निवरपरिष	tel	टीकमचंद	चपुर्रधीस्था ७६४ ७३१
	भारतीरक	99		र्वहरूपया १११
	वारिवेगानुविक्या	ŖΥ		क्षीतम्बरीर्वेशपृष्टिः १३६
	सळक्तरीवृद्दीवादा	223	[स्त्र _{वि} ११६
	*	4.4	टीकाराम	वर करे
	नमन्दर्भक्ष	70	टेक्चंद	रवंध् सारा ४११ ११४
	TE YELLEY	337	1	ats
		γξ⊂	}	सीनमीवपूरा देवी
र्कीटरीवाणविलावा	- विज्ञानवीतनीर्वेदर		[वंदीरवरक्राविवास ४६४
#16(14) (143) 41-	पुत्रा	211	l	tie .
	धालोचनाश ङ	111		र्वतरमाश्चरपुता ६ । र्वतरस्त्रीच्या ६ १ ६१
द्यानगर	शः श्रविधासङ्ख्यः	237	}	
क्षात्रभूगा—	शक्षप [्] रकित्वा	AZA	\	
2,2	धारीवररकाच	15	ł	नुव्यापरश्यारीयः ११४ शक्यप्रतिवासुद्धाः ६११
	धनशनगरम	153	1	सुरक्षितर्देवितीक्षातः ६ १
	शेनहरम	43	i	भोनहशासम्बद्धम्याच्या
ं व ज्ञानमार-	धन ा कपुर्रशीयवा	3.8	ì	134
4	क्ट्रा ⁸ द्विषाच्या	**	2121-	44 444 414 111
	द्वर्गदरायकार्यमा		-1-0	er den mar
	anidst.	48	र्च» शाहरमञ्र	धानमूचाननवासं है है
	इस्मका न्य १ वस्	wtv		शरातासम्बद्धाः 🔻
	के प्रिवरशासूनविकार	633	(वीवस्त्राह्यवैशास्त्रां प्रवे
	का ^{रिनारकस्} रमारं न		J	क्षेत्रक्रकारबीकाकृतनाः १
	श्रामीमरी	1.4	ļ	योग्यटबार्गदिया 👯
	रमनदाना	44	ļ	वीवश्रकारमंडीष्ट ११
	सर्वेश्रास्त्रसम्बद्	100	I	विभोत्रमारमारा १६६

	3						
प्रंथकार का नाम	घ्र थ नाम	ग्रथ सूची पत्र र		म्रंथकार का नाम	प्रथ नाम	प्रथ सूची की पत्र संब	
	पुरुषार्थसिद्धः	ुपायभाषा	६६	थानजीश्रजमेरा—	वीसतीर्थकरपूज	ा ५२३	
	मोक्षमार्गप्रक	_	50	थिरूमल—	ह्नवरामारती	७७=	
	लब्धिसारभा	पा '	४३	दत्तलाल	वारहखडी	6 x x	
	लव्धिसारक्षप		४३	त्रहादयाल	पद	ध्रमध	
	लव्धिसारसद	ਇ '	४३	दयालराम	जकडी	980	
ठक्कुरसी	कृपगाञ्चद		३⊏	दरिगह—	जकडी	६६१, ७५५	
	नेमी श्वरकी वै	लि			पद	3૪છે	
	(नैमोइवर		२२	दलजी—	वारहभावना	४७१	
	प चेन्द्रियवेलि	৩	βo	दलाराम	पद	१ २०	
		७२२, ७	६५	दशरथनिगोस्या—	धर्मपरीक्षाभाषा		
कविठाकुर—	रामोकारपच्य	गेसी ४	35	दास—	पद	७४९	
	सज्जनप्रकार	दोहा २	48	मुनिदीप	विद्यमानवीसतीर्थंकर		
डाल्राम—	म ढाईद्वीपपूज	П Y	ሂሂ	सुनिर्ग -	पूर		
	चतुर्दशीकथा	ঙ	४२	(2	••		
	द्वादशागपूज	. ¥	83	दीपचन्द—	ग्रनुभवप्रकाश	¥ 5	
	पंचपरमेष्ठीग्र	एावर्शन	६६		मा त्मावलोकन	800	
	पं चपरमेष्ठीपृ	जा ४	e 3		चिद्विलास	१०५	
	पचमेरुपूजा	ų	०५		भारती	<i>७७७</i>	
इ गरक्रवि—	होलिकाचीप	₹ ₹	ሂሂ		ज्ञानदर्पग	१०४	
द्व गावैष्—	श्रीसाकचीपई	્ર (સ	85		परमात्मपुराख	११०	
तिपरदास—	श्री रुक्मिशा	कृष्णजी			पद	X = \$	
	मं	ो रासो ७	\$0	दुलीचद्—	ग्रारा घनासारवर	निका ३०	
तिलोकचद	सामायिकवा	ठभाषा	६६		उपदेशरत्ममाला	11	
द्वनसीदास	कवित्तवधरा		७३		जैनसदाचारमात्त	[°] ण्ड	
तुलसीदास— ५_	प्रश्नोत्तरस्त		३२		नामकपत्रकाप्रत्युः	तर २०	
तेजराम—	तीर्थमालास्त		१७		जैनागारप्रक्रियाभ	गपा ५७	
F			७३		द्रव्यसग्रहमापा	₹७	
त्रियुत्रनचद्-	म्मनित्यपचा		ሂሂ		निर्माल्यदोपवर्गाः	न ६५	
	पद	৬	१५	I	पद	६६३	

41

122

YB

23

144

10 T

tat.

42. 546

23

18

172

2 0

शैवनयाम()-

सः सनगर --

wet out out

योगोन्धोर्च वसामृति

and the state of the state of

मार्दर्शतमर्थ मध्य

मू वनुष्ठवर्ग वनी

मानवपुत्र अवस

विशासिकाला

madforfen 111

ज्योतस्थ्याभागाः स

er en

wr

क्रम

र्श्व शास्त्रका

44

delete

fort on the s

113 1

Separt-

देवीशम-

telfferener -

है रेग्यू वर्गीन —

रेकेश्वरत—

क्षेत्र एव सम्बद्धार

111

ett

111

110

110

1:1

τt

\$11 112

114 97

tr itr

117,117

+17

इब्दुएन्डमारः

परमान्यत्रशासकारा

बुक्ताचरर वारोब

विश्वासाहर

हरिसंदारम

क्षां स्थापना गी

धार्य विमान

बारतीय हर

अपरेटम इस

को दी बड़ी वें ब्रह्म ग

कर्या हरू

क्यकाना

वर्षिक्षामा

बहातिकारका च ६, गर्

म प एप भवकार	J					-	
। भेथकार का नाम	म्रंथ नाम	प्रंथ सूची व		प्रथकार का नाम	मंथ नाम	मथ सूर्च	ो की । सं•
		पत्र स	- 1				
		६७४, ७४	- 1		सबोधप्रक्षरव		388
	गुरुप्रपृक	90	- 1		समाधिमरण		१२६
	जकडी	É	(3		सिद्धक्षेत्रपूजा		७०५
	त्तत्वसारभा	या ७	४७		स्वयभूस्तोत्रः	भाषा	४२६
	दशबोलपन	चीसी ४	۶=		भाद्रपदपूजा		458
	दशलशण्	जा ४१६, ७	٥X	द्वारिकादास—	कलियुगकोक	या	६७७
	दानबादनी	१ ६०५, ६	32	धनराज—	तीनमियाकी	जकडी	६२३
	धानतविस	तस ३	२८		पद		७६५
	द्रव्यसंग्रहर	गापा ७	१२		धासर विला	सभाषा	₹30
	धर्मविलास		२८	धर्मचन्द—	<mark>पन</mark> न्तकेछप्प	य	७५७
	धर्मपच्चीः	मी ७१०,७	७४७	धर्मदास—	मोरपिच्छघा	रीकृप्ण के	
	प य मेरुपूज	ता ५०५, ७	०५	-	व्	वित्त	६७३
	पार्श्वनाथ	स्तोत्रभाषा १	33)	धर्मपाल—	पद	५५५,	७६५
		६१४, १	८०६	धर्मभूपण—	धजनाकोरा	स	५६३
	पदसग्रह	¥¥¥, 5	くちき	धर्मसी	दानशीलतप	भावना	६०
	ሂፍነ	X58, X52, 5	(58	धीरजसिंहराठौड—	मापामूपएा		६६८
		५५५, ५५६,	460	नन्ददास—	भनेकार्थनाम	माला	७०६
		६२२, ६२४,			म नेकार्यमज	ारी २७१.	, ७६६
		६४६, ६५४,			पद		, ७०४
		७४६,		\		• • • •	990
	भावनास		६१४		नाममजरी	586.	,
	रत्नत्रय				मानमजरो		
		C · · · · · · ·	<i>છછછ</i>		विरहमजरी		, _ <u> </u>
	पोडधन	तरगापूजा ५१६, ५५६,	५११ ७०५		श्यामबत्तीस		, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,
	संघपन्ध		३७५	नन्द्राम	योगसारभा	षा	११६
		'चा सिका	१२५		पत्र काबत्तीर		७३२
		८, ६४८, ६८४,	६८३	वैद्यनन्द्रलाल—	प्रश्नावित्व		७५२
		७१३, ७१६,		1	रसालकु व	(की चौपई	४७७

etr]			{ प्रैव एव स	ग्यादार
मंबद्धार का नाम	प्रवास संस्कृतीः यक्ष			र्षीधी पत्रश
सयम्बदिकाका-	श्रष्टातीतकात्रका २	12	tet ter ti	११ व्यक्त
	नीर्गवरचरित्र १			1 524
		11	বাজুসাধশা	111
	•		-	£ tot
		15	गानक्षपरित	1.1
	क् रावरस्तीमक्रवा		বিভাগতুক	44*
	माला १३४ ७	शाबुरायदोसी-	समा वितं यमाना	183
t	<u>रत्नकरकशावकावार</u>	अद्याग्	विदायतीयीय	эžя
	দ্বাবা	1 "	वर	445
-	धनगरमधनिकासाः १	ta l	वा र् म् नामस्ययव	483
	वीक्शकाच्छ्यकामा	नाव्यस—	वरभंगपरिचरीय	14
	গ্ৰহাৰ :	tw	गीव	666
	विज्ञान्त्रसारमायाः '	re	वस्तूत्वामीवरिव	\$ 9 E
	विदिशिक्यीवक्या ४	et	जातुन सार	4.1
भ व विसद्ध	•R 1	1	विक शस्त्र ामानस्योग	111
स्पनमूच	वैध्ययोस्तक ३४६	*	रक्षातंत्रवक्षा	440
	122, 41	t*	स्य ानुबन र्यस	7.5
भवव <u>स्थ</u> ाल!}	વર ૧૪૧, દ	१ शासूक्यवदोसी	<u>बुद्धमानवरित्र</u>	6.0
•	व्यवसम्बद्धः Yi		र्वज्ञातंत्रह	177
बरपाइ	et 1	विसंध-	पर	248
सरैन्द्रकीवि	शासमंबनकी ६१	 शिहासचंद्रशमग्रहःः 	वयम्ब्रधानप्रशासिकाः -	
	रामानवीवयाँ नी विभिन्धे	1	रोभा	664
	कैवान ६१	१ मेमीचम्ब	वस्त्री	465
सवसराम	द्वरत्रोनीयीयती ७	- }	धीनकोक्यू बा	And
	विश्वपनीती १११, १४	1	चीबी सकी चैंच पैंची	
	482, 424 84	5	वंपना यद १	७७१ ६१२
	er verte	1	नव १ स्रोतकृत्वाचीराई	***
	248, 28 48X, 63	- 1	**********	

भय एवं भन्यकार]				į.	Clx
भथकार का नाम	प्रंथनाम प्र	थ सूचीकी पत्रस्	मंथकार का नास	श्रंथ नाम ग्रंथ र	मूची की पत्र सं०
	नेमीश्वरगीत	६२१		जीवधरचरित्र	१७१
	लुहरि	६२२		तन्वकौस्तुभ	२०
	विनती	६६३		तत्वार्यसारभापा	२३
नेमीचंदपाटनी—	चतुर्विशतितीर्थंव	ε τ		तत्वसारमाथा	२१
,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	-	जा ४७२	(द्रव्यसग्रहभाषा	३६
	तोनचौवीसोपू र	•		धर्मप्रदीपमापा	६१
नेमीचद्यख्शी—	सरस्यतीपूजा	५५१		न दीश्वरभक्तिभाषा	¥8¥
नेमीदास—	निर्वा गमोदक ि			नवतत्ववचनिका	३=
न्यामतसिंह-	पद	४३७		न्यायदीपिकाभापा	४६१
•	भविष्दत्तदत्तति	लका-		पाडवपुरागा	१५०
	सुन्दरीन	ाटक ३१७		प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	
	पद	७६५		भाग	पा ७०
पड्मभगत	कृप्लारूविमग्ती	मगल २२१		भक्तामरस्तोत्रकया	२३५
पद्मकुमार—	मातमशिक्षास			मक्तिपाठ	348
पद्मतिलक—	पद	X=3		भविष्यदत्तचरित्र	रुव४
पद्मनदि —	देवतास्तुति	₹3€		भूपालचौबीसीमापा	**7
	पद	६४३		मरकतविलास	৬=
	परमात्मराजस्त	वन ४०२		योगसारभाषा	११६
पद्मराजगित्—	नवकारसज्काय	६१=		यशोधरचरित्र	१६२
पद्माकर—	कवित्त	७५६		रत्नकरण्डश्रावकाचार	5 = 3
चौघरीपन्नालालसघी	— माचारसारमा	3¥ m		वसुनदिष्यावकाचारभ	ागा ≂प्र
	भाराधनासार	भाषा ४६		विषापहारस्तोत्रभाषा	
	उत्तरपुरा णमा	पा १४६		पट्गावञ्यकविधान	ر -
	एकीभावस्तोत्र			शावपश्रतिक्रम् रामापा	37
		तोत्रभाषा ३८५	}	सङ्गपितावलीभापा	वेवद
	गीतमस्वामीच		}	समाधिमररगुमापा	१२७
	जम्बूस्वामीर्चा		1	सरस्वतीपूजा	४ ४१
	जिनदत्तचरित्र	१ ७०	1	सिद्धित्रियस्तोत्रभाषा	४२१

ध्र यकार का चाम		ी की इसी	मैनकार का नाम	श्रेंचनाम मेचस् प	री की इ.सं*
पन्ना वास र्नुनीवासे	र्गश्चम्बा स्कृ या विहरमभ्योजस्थाना	177 1	मगुरास— मसम्बद्ध— फ्टोहबंद—	परनाहबंगकाथनामा धारावधिकासरमान पद ३७१, १०	
वत्तासञ्जवाककीयास वरसावद परिश्वका	बारवारकपुरान बातवारपुरान्छ यह ६०५ बीदानबरिव ११		वंशी वशीदास वंशीवर	१४२ कृषस्यक्षेत्रम्य रोडिसोविधिकमा क्ष्मस्यक्षम्यकास्योकस्य	219 200 241 21
पत्रत्वर्मार्थी	डव्यस्था	77.5 77.5	वस्त राय ः	पुर प्रवी प्रवर्ष कर्म जिल्लास्त्रचेटन	

प्रेंब दर्व प्रश्वकार

tet

ш

सारवीबीधी **828** बुद्धिनिमात पद 424 पारसदास---स्तुविवदिदीर्वक्युवा ४०६ वेक्टावरक्षा वास्त्रवास-वारदेखनी 112 पुरस्रहल-**गै**मियाच**यस्** WY वर्षाचल--

2 28 }

धलपूर्वोदश्यस्यवस्य रावपनाचीरन पुरुष स्तागर----धानुबंदमा 888 रनारधीरास-शब्दास्थ वसी ही युवरोत्तमदास--補 140 यसमान च रर्गप्रकृतिविवास 448 यद well मेथकुमारबीट १६१ ७१२ unt un wix well

पृष्टी-क्रमाधार्गीरप्रतोदयाना 142 YEL TE REE F F FYF वीरविशंदवीस्थानकी ७७३ 484 48 448

बुरखदेव--543 445, 44x 4x पेवसम्--वैवरमी/विवर्ध ¥¥

पूर्णीय वस्तीहरू **रूप्एक विकरित**रीत 111

121 Bo विमयद्वसम्बद्धमाना

नद्राराज्ञासनाईप्रवापितः-PY

धनुषसम्बद 735

चंदपुंयरशीयाती 999 w/ L, #42

						•
थरार रा नाम	प्रथ नाम	त्र थ सूची व पत्र स	ी वि । ॰।	प्रंथकार का नाम	प्रच नाम	प्रथ सूची की पत्र स०
	ज्ञानवावनी	१०४, ७४	10	वत्तदेव	पद	७६५
	तेरहकाठिया	४२६, ७५	10	वायूलाल	विष्णुकुमार	मुनिपूजा ५३६
	नवरत्नकवित्त	৬১	₹,	वालचद	पद	६२५
	नाममाला	२७६, ७०	٥٤	विद्यारीदास-	भारती	<i>७७७</i>
	पद	४६२, ५१			कवित्त	०७७
	ሂሩ	<u>५, ५८६, ५८</u>	ε,		पद	५८७
	y 8	६०, ६१५, ६	२१		पद्यसग्रह	७१०
		२२, ६२३ ६	- 1		द दनाजकर्ड	
	पार्श्वनाथस्तु	ति ७	२३	विहारीलाल—	सतसई	५७६, ६७५
,	परमज्योतिस		०२			दद, ७२७, ७६८
		X.	६०	बुव न्न	इप्टछत्तीसी	६६१
	परमान्दस्तो	त्रभाषा ५	६२		छहढाला	<i>র </i>
	वनारसीविल	गस ६	४०		तत्वार्यवोध	२१
•		६८६, ७	٥٤		दर्शनपाठ	358
	मोहविवेकयु	্ত্ত ৩ १४, ৩	६४		पञ्चास्तिक	गयभाषा ४१
	मीक्षपैंजी	50, U			पद ४	४४, ४४६, ५७१
		ঙ	४६			४८, ६५३, ६५४
	शारदाप् क	৬	७६		वदनाजकर्ड	७५५, ७६५
	समयसारना	टक १२३, ६	80		वदनाजन ह वुषजनविल	
	Ę	३६, ६४०, ६	७ ए		_	
r	ę	०, ६८३, ६	,55		बुधजनसत्तर योगमारभा	
		६८६, ६६४ ६	£ 5 5		पटपाठ	4T / 3
	,	७०२, ७१६, ७	७२०		सबोधपचि	संबोधा
		७२१, ७३१,	७४६		सरम्बतीपूर	
		७७८, ।	৩২৩		स्तुति	800 11)
	साधुवदना	Ę 60,	६४२	बुधमहाचद—	सामायिकप	
		,	380	बुलाकीदास —	णण्डवपुरा	-
	तिन्द्रप्रवर	ए। ३४०,	७१०		प्रस्तोत्तरथ	विवाचार ७०
		७१२ ७	_ध ४६	यूचराज—	टटागागीः	

cia			संग पर्व सम्बद्धाः
मध्याः भानाम	गग नास ग गस् ची पत्र		≗घनµम ध्रदस्पी≰ पदसे
	भुगतर्ग सिनीत १	.11	नद १
भगगराम	বৰ্গ 🐷	e }	नेपीकारकोदमा ११
मेपामगर्व शास	धावारके प्रदेशीय	মাধ্যৰ্থ	प ादेशविज्ञानवर्यम
	बर्खन	×	याना ११
	गष्ट विश्व कैत्यालय	1	सल्बर्गीयकासकः ११
	सदमाल १ १ ४ ७	₹ 1	नैमिनाचपुरत्य १४
	वैदनकर्मवरित्र ७	v	जनाम्बरदेशानीया ११
	101121	τ ξ ∫	יון איז איז זיי
		×ē Ì	भा तकावारवा या ध
	निर्वाक्षकाम्बद्याया व्	tt i	वन्त्रेरविषयुग ११
	79t, 244 X1	भागीरथ	र्गामक्रियाच्याची है
	X⊌ 4% %	ध्र मासुकीर्च-	वीवराजासम्बद्धाः ११६
	1 12	१४ नासुकारच	वह दूब दू इ. ११%
	44 4X5 £	x ?)	प्रविश्वतस्था भ र
	445 # A #		वर्मरक्वीची ७६६
	संधानिनास ३	३३ ^{वारामस्} रम	बारमानीरम १६
	मीध्मादना ७	9	दर्शनपूर्वा १०
		π ξ)	दासरका है।
		r9	बुळात्रसिरमा भ्रीत
भगौबीदास—	सप्तर्ववीकाच्ये ६		राजिबोजनस्या १३व
	गीरनिशरणीय १	1	धीलक्षा १४७
धन्यामदाश	षा श्रांतिसामस्यूमा ४ ^०	. 1	क्षणान्यस्तरमा १६
धनोसम् —			सरिपविद्यानगीर ै ७३९
भगासम्	ent st		नेशियाजूनवीय ११
माह्न-	चन्त्रमणबाविधे १२ सर्वाच्यास्त्रमा	भ्यतम्पर्य ः	जवर्रोक्शस्त्रीय १३१
415-	सहस्त्रपारस्या (रविश्वतस्या) १३ १४	1	ल्यीकायस्त्रीमकचा १ र
	4818	}	256 ALM 225
	WYR URT WE	9	FER 25 #1

भथकार का नाम प्रथ नाम पत्र सः नूधरदास-कवित्त 000 गुरुग्रोकीवीनतो 880 ४११, ६१४, ६४२, ६६३ १५, ६०६ चर्चासमाधान 383 चतुर्विशतिस्तोत्र 358 जकडी ६५०, ७१६ ६०५ जिनदर्शन जैनशतक ३२७, ४२६ ६५२, ६७०, ६८६ ६६८, ७०६, ७१० ७१३, ७१६, ७३२ ५६२ दशलक्षराहुजा नरकदुखयर्शन ६५, ७५५ नेमीश्वरकीत्तुति ६५० ७७७ पचमेरपूजा ४०५, ५६६ ७०४, ७५६ पार्श्वपुराए। १७६, ७४४ \$30 पुरु गार्थ सिद्ध यु पाय भाषा 33 पद ४४४, ५५०, ५५६ ५६०, ६१५, ६२० ६४८, ६६४, ६५४ ६६४, ७७६, ७७७ ७८४, ७८६, ७६८ व ईसपरीपहवर्गान ७५, Koy

प्रय सूची की ध्रथ सूची की । प्रथमार का नाम यथ नाम पत्र संध ११४ वारहभावना वज्रनाभिचक्रवितकी 写装 भावना ४४८, ७३६ ६४२, ६६३ विनती 833 स्तुति ७१० भूधरमिश्र~ पुरुपार्य सिद्धच पाय वचनिका 33 भेलीराम-पद ७७६ भैरवदास-पचक्त्याग्वपूजा 708 भोगीलाल-वृहद्घटाकर्णक्रय ७२६ मगलचद--नन्दीइवरद्वीपपूजा 883 पदसग्रह ७४४ मकरदपद्मावतिपुरवाल- पट्सहननवर्शन 55 भक्लकनाटक ३१६ मक्खनलाल-जैनवद्रीदेशकीपत्री मजलसराय-५८१ मतिकुसल-चन्द्रलेहारास 388 मतिशेषर--ज्ञानवावनी ७७२ मतिसागर---शालिभद्रचौपई १६८, ७२६ मथुरादासब्यास-लीलावतीमापा मनर्गलाल-श्रकुत्रिमचैत्यालयपूजा चतुर्विशतितीर्थंकरपूजा 🗸 निर्वाग्पूजापाठ 338 चितामिए।जीकीजयमाल मनरथ---**EXX** मनराम-मक्षरगुगमाला 380 गुगाक्षरमाला ७५०

£22 }			इंध एवं वन्त्रकार
		। संबद्धाः का मान	र्मयनाम प्रदस्पीकी
५ था आर. का नान	मध्याम मध्यसूचीकी पत्रसं	444644	पत्र से
	पर इंड करेड कडेर		da Akwa at
	ten ste viu		तन्त्रियाच्याचा १११
मनमारम—	TT 177, 117	1	नापुर्वदमा ४११
सबसुवजातः—	त्रक्षेत्रशिक्षरवहुल्य १२		हुण्डावसर्थितीयान सो वराव देव
सनदरदेव—	सारिनाचपुरा द११	1 .	
ममानावित्रका-	वारियमारमाया ३६	मानक्रि-	4.1-11.11
##1⊐isia. €a	वसनेदिरक्षेत्रीबारा ६८		1440141444
	हर्मुक्तवरिववारा १<२		संबोधवतीसी ६११ राज्यारराजवरीयीसं ११
	शृह्मरीवडीवाननी ६३	यानसागर—	धारती ४३३
चनामा६—	वानगीलपुरावनी ६३८	यानस्थि —	वह ॥३३
	40,411,311	1	भ्रमराग्रेष ४१
६वप्रर—	42 333 814 ats]	शहरवितीय १
		साह—	वहेरियां १३१
वसाराशम —	श्रमित्रायीत १,७१४		वश्यमवित्तवस्त्रमः ११३
	9160	हुक्त्र्यस्य —	पर ११
	शनराची धरेड	A	व्यक्तियातिस्ययम् ६१६
	क्षान वी कर्षक	3	धीलोरदेवनामा १४३
	धर्मनरेशा ११७ ७१६	मेका—	74 27
सप्दर्भर	44 244	समीशम—	वस्यान्त्रमंदिरायीय 🔻 🕻
वजूदराम-	et sti	महेराकरि—	ह्वीरराहो १६०
माभर-	र्गराव्यक्षेत्र ४१६	मानीराम—	133 77
े महाचार—	लपुरश्रमपुरसोग वर्दर	भारम	वर्षितः ५३१
	वर्ग-वर्गकः दव	shwafter-	भोतापतीबादा १९०
1	मामा वराहा ४२१	ग्राहन समय	क्षत्रवाचरित्र ४११
वर्शवन्त्र स्थि—	er tot		जल्लानु समालग्रां तथी गर्दे रहेर
मरेग्द्रकीशि-	P from	रंगविषय	यारेपस्पीत कर्म
	42 4 5	1	बारेदनम्या व
मास्त्रनदरि—	विकार्यकार है।	रंगवित्रवर्गायः—	वंशतरायग्रापुरि
बाददर्द	वैद्युनेबारकीती ४४०	r	वहुम्सः १३

भंथकार का नाम	प्रथ नाम	-	बीकी त्रसः	त्र थकार का नाम	प्र'थ नाम		ाूची की पत्र स०
₹ ₹ 	वारहभावना	7	११४		च तर्विक।	ततीर्थं सरपूज	
रघुराम—	समासारनाटः	E	३३८		73	४७२, ६८४	
रणजीतदास	स्वरोदय		₹ ४ ४				., ७२७, १, ७७२
रत्नकीर्त्ति	नेमीश्वरकाहि	ensissas.	७२२		पद	४≈१, ६६ः	
/////// (J	नेमीश्वररास	र्ण्डालमा	- 1			•	
	नमास्वररास		६३८		पूजासग्रह		५२०
***	-2-2-20	٠.	७२२			ा तचतुर्दशो 	
रतनचढ—	चीवीसीविनत		६४६			तोद्यापन	५२०
_	देवकीकीढाल		४४०		पुरुपस्त्रीः 		७≂१
रत्नमुक्ति—	नेमीराजमती		६१७		वारहसङ		७१५
रत्नभूषण्—	जिनचैत्याल		४३४		शातिना		ሂሄሂ
रल्हकवि	जिनदत्तचौर्य	\$	६६२		ािंग्वरि व		६३३
रसिकराय—	नेहलीला		437		सम्मेदशि	•	५५०
राजमल—	तत्वार्यसूत्रटी	का	३०		सोताचि	त्र २०६	, ७२५
राजसमुद्र—	कर्मवत्तीसी		६१७				७४६
	जीवकायासः	न्भाय	इ११		सुपार्श्वन		ሂሂሂ
	शत्रुञ्जयभा	Ħ	६१६	ऋपिरामचन्द्र—	उपदेश सः		३८०
	शत्रुङजयस्त	वन	६१६		कल्यागम	दिरस्तोत्रभाष	ग
	सोलहसतिय	किनाम	६१६				३५५
राजसिंह—	पद		ሂട७		नेमिनाथ		३६२
राजसुन्दर—	द्वादशमाला	1973	३, ७७१	रामचन्द्र—	रामविनो		३०२
9.11	सुन्दरश्रृ गाः		१, ७२६	रामदास—	पद		, ४८८
राजाराम—	पद	. ,,,,	, ७. ५ ६ ०	रामभगत—	पद	६६३, ६६७	ټ و پ
राम	पद		६५३	मिश्ररामराय-			= >
	रत्नपरीक्षा		३५५	सिश्रामस्य	वृहद्चारि		
रामकुष्ण्—	ज क् डी		445 835	रामविनोद्-		शस्त्रभाषा	777
• •	पद		६६८	व्र रायमल्ल-	रामविनो		६४०
रामचद्र	भादिनायपू	.ar	६५१	No (14466)-	मादित्यवा		७१२
	भाषनायपू चद्रप्रमणिन		¥98	}	चिताम <u>ि</u>		६५५
	чинцич	2011	-00	1	द्धियाली स	ठाएग	७६५

lee 1					र्था पूर्व प्रकार	π
वंद्यारकामान	ग्रम्भाग ग	च सूर्व प्र	ोकी स्रो	ध षकार का नाम	स्थालाय श्रमसूची पत्रः	ची स
	व्यक्तायीवरिश	r	98		र्णवर्गसम् १ ४१व ४	กท่
	निर्दोपसप्तयीक	TT.	507		11 11x, 1	(90
	ने गीतन रक्तान	111	1.1		£44 £45 £	įχ
	478	६३४	910		48× 448 4	\$Y
	पंचनुस्ती वयम क	W.	***		441 W Y, V	
	प्रचलका	111	382		wit, v	• २
		wtw			र्वेषकलाएकपुरा १	ξ.
	वस्त्रायरस्वोत्रवृ		¥		रोहासत्तव ४४ ५	ηŧ
	विष्यक्तराव		X5Y		प्रदूर १ १, १०० ।	t.
		WY			484 446 4	177
		fee			wyg wit, t	170
	राजाण-प्रकुत्तनी				992, W	141
	शीलरास		370		परमार्जनीय है	¥¥
	শ্বীগলন্ত		11		पैर णार्लंबीम् । १	PΨ
		SWY	with		परनार्नीहंडोकमा प	ŧΥ
		1			संपुर्वनसः ६२४ ४	336
	नुवर्धनराव	111			विनदी प	170
	•	wt?			वनपंतर क्ष ्रमः १	YŁ.
	हुन ुमण्यरित	214		वंडि क्रवचंद	तत्वलंबुबब्दयधीरा	¥
		wtw		क्रांचीय	रियसम्बा प	1
3			61 3	रेखराज-	qq V	H
'		WYY	• 2 9	वर्मण-	कृत्यस्यः	Υĸ
! सावमीमाईरायमस्य	ত্ৰাণানক্যাৰৰ	п		कर्मी वस्ताम	440144710	ţ
	चर		×	व र्गीसागर—	**	*
स्त्रचर्—	सम्भारनगोहा		PYE	व्यक्तिविश्वतम् स्-	श्रामार्खनग्रीनामाना है	
-	वरडी	41	978	पं साधा-	वसर्वनावयीराँ ४	
		177	wxx	काळ-	er m.	á t
	विकस्तु <u>ति</u>		. 1	बाबाधनय	मारती ६	₹₹

प्रंथकार का नाम	पथनाम ग्र	गथ सूचीकी पत्र स०	प्रथकार का नाम	प्रंथ नाम	प्रथ सूची की पत्र सं∘
	चिन्तामिएपाइ	र्वनाय		पार्क्जिनपूजा	४०७
	स्तव	न ६१७		पूजाप्टक	५१२
	धर्मबुद्धिचौपई	३२६	{	पट्लेश्यावेलि	३६६
	नेमिनाषमगल	६०५, ७२२	बल्लभ-	रूक्मिग्गीविवाह	<u>৩২৩</u>
	नेमीश्वरका व्य	गहला ६५१	वाजिद्—	वाजिदकेप्रडिल्स	१७३
	पद ४५३	२, ४८३, ४८७	वादिचन्द्र—	धादित्यवारकय	т ६०७
	पूजासग्रह	७७७	विचित्रदेव-	मोरपिच्छघारी	के
पांडे लालचंद—	पट्च मॉपदेशर	लमाला दद		कवि	त्त ६७३
	सम्मेदशिखरमा	हातम्य ६२	विजयकीर्त्ति—	धनन्तव्रतपूजा	४५७
ऋपि लालचद—	म ठारहनातेनी	वया २१३		जम्बूस्वामीचरि	न १६६
	मरुदेवीसज्भाष	० ५५	1	पद	५५०, ५५२
	महावीरजीची	ढाल्या ४५०		४८३	, ሂፍሄ, ሂፍሂ
	विजयकुमारस	न्भाय ४५०	}		, ४५७, ४५६
	शान्तिनायस्त	वन ४१७		धे रिएकच रित्र	२०४
	घीतलनायस्त	वन ४५१	विजयदेवसूरि—	नेमिनाथरास	३६२
त्राजजीत—	तेरहद्वी रपूजा	¥5¥		शीलरास	३६४, ६१७
त्रस्ताल—	जिनवरव्रतजय	माला ६८४	विजयमानसूरि—	श्रे यासस्तवन	४ ५१
नालवद्दं न	पाण्डवचरित्र	१७५	विद्याभूपेण—	गीत	६०७
मद्यलातसागर—	रामोकारछद	६८३	विनयकीत्ति—	भ प्टाह्मिकान्नत	त्या ६१४
व्यकर्यकासलीवाल-	चौवीसतीर्थंकर	स्तवन ४३८			७८०, ७६४
	देवकीकीढाल	3 <i>5</i> ¥	विनयचद-	वे वलज्ञानसज्का	य ३८५
साहलोहट	मठारहनातेकी	क्या	विनोदीलाललालचद-	कृपग्पच्चीसी	ب و
	(चौद	तल्या) ६२३		घौ बीसोस्तुति	৬७३ , ৬૩-
	७२३, ७७	४, ७८०, ७६५		चौरासीजातिक	
	द्वादशानुप्रेक्षा	७६९		जय	माल ३६६
	पार्श्वनाथकीग्र	रामाला ७७६		नेमिनाथकेनवम	गल ४४०
	प इर्वनायजया	गल ६४२			७२०, ७३४
		७५१		नेमिनाथकाबारह	मासा ७५३

fd8]			्रीय एव मन्त्रकार
र्भयश्चर का नाय	प्रधानाम स्थासूची। पत्रस		श्रंबनाम सथस्पीकी पत्रसं
	नुवास्त्रक क	1 A MARIN	बारहवादवा ६३
	पर १ १, ए	१ पूम्पकवि	कृततत्त्वर्थः १११
	चर्च चवरे, क	1=	f w ffw sep
	वक्षामरम्बोत्रकवा २	ly बुल्यायस	विक्ति ११
	सम्बन्धशेतुदीरथा २	१२	वनुविद्यतितीवैर सूचा ४७१
	राषुनपश्चीती १		ब्रंडस्टक ११३
	131 112	rt	शीसकीनीसीपुरा ४वरे
	488 4		पर ६२६,६४३
	WYW W	***	श्वजनगरभाषा ११४
विमन्नकीर्त्ति —	बाहुबलीचग्रहा व ४	शब्दाचार्य-	बुट्रसंपुत्त्वावनिवादा भ
विमन्नग्द्रकीर्चि	धाराममाप्रतिनोमसार ५	रांविञ्चलक—	धन्त्रमाराख १६
	निवर्धनीतीत्ववस्यर रासः ३।	व शांतिदास-	संबन्धवास्त्रुता ६६ वर्ष
विसङ्ख्याचनाधि	सनलोडाक्वीडाविया १		श्रद्धीरवासपूत्रा ५६%
***************************************	स ्चित्रचीडालियापीतः ४।	शामियद्र	बुद्धिराम १(४
विशासकीचि-		१ शिकरण ५—	तत्वार्वयुग्याचा ६
विरवम्पक्	सप्टबर्जुना 💗		वर्गसार ६१.५६
-	नैनिजीवीयंग्यः ३		वेश्वित्यम ४ क्यांसार १६
	- नेनियोगीसङ्गृद्धि ७४६, ७१	व्यक्तिमास—	******
`	47 YYE, \$1	. {	441411111
*	गार्वनावयरिय ३१		
,	निनवी ६१		वंबद्दीयलाय्योव ४६ व्यक्तिकारकार्याः ५६६
	हिल्लाचे ॥	1.0	41411311411111
विश्वाभित्र—	रागक्षण १।		**
विश्वनदास~	नप्र १	1	सप्टार्मस्थानीय १०६ सारती ७३६
गीरचड्—	वित्रस्य 👣		वेपरातनीत १११
N.O F. N7	धवीयनगालु है।	1	45 A 5 A54
वेधीशस [म वेलू]-		3 31	917
	,	4.1	

प्रथं यकार का नाम	प्र थ्,नाम	ग्रथ सूच प	वीकी त्रस०	त्र थकार का नाम	त्रथ नाम	त्रंथ सूची की पत्र संट
	शिवादेवीम	ाताकोग्राठवो	७२४		भक्लं काष्ट	कभाषा ३७६
शोभाचन्द्—	क्षेत्रपालभैर	वगीत	<i>७७७</i>		ऋपिमहर	नपूजा ७२६
	पद	५८३,	७७७		तत्त्रार्यसू	त्रभाषा २६
श्यामद्रास	तोसचौवीस	ît	৬২ন		दशलशए।	
	पद		७६४		नित्यनियम	म्पूजा ४६६
	इयामवत्ती स	ी	3३७		न्यायदीपिः	**
रयाममिश्र—	रागमाला		७७१		भगवतीम	ारायनाभाषा ७६
श्रीपाल—	त्रिपष्टिशल	ক্ষান্ত ই	६७०		मृत्युमहोतः	तवभाषा ११५
	पद		६७०		रत्न करण्ड	श्रावकाचार ६२
श्रीभूपण्—	भनन्तचतु	र्दशीपूजा	४५६		पोडशका	ररामावना ==, ६=
•	पद	••	४८३	सवलसिंह—	पद	428
श्रीराम—	पद		250	सभाचन्द—	लुहरि	928
श्रीवर्द्ध न—	गुणस्थान	गीत	७६३	सवाईराम—	पद	४६०
मुनिश्रीसार—	स्वार्यवीर्स		६१६	समयराज-	पार्श्वनायस	त्तवन ६६७
सतदास—	पद		६४४	समयमुन्द्र-	घ नायोमु	नेसञ्काय ६१८
सतराम—	कवित्त		६६२		अरहनास	
सवलाल—	सिद्धचक्रपू	জা	ሂሂሄ		मादिनाय	* *
सतीदास—	पद		७५६		कर्मछत्ती सं	116
सतोयकवि—	विपहररा	वेधि	३०३		कुशलग्रुव्स	
मुनिसकलकीर्त्ति—	भाराधनाः	प्ति वो वसार	६८४		क्षमाछती	110
	कर्मचूरव	तवेलि	५६२		गाडापारव	निायस्तवन ६१७
	पद		५५५		*********	
	पार्श्वनाय	गष्टक	<i>७७७</i>		गौतमपून्	
	मुक्तावि	लगीत	६८६			मोनज्काय -
	सोलहक	रगरास	४३४		સાવપ વ મ -ગેર્જ -	ोवृहद्स्तवन 👡
		६३	६, ७५१		तीर्यमाल दा नवपशी	
सदासागर—	पद		५६०			- (10
सदामुखकासलीवाल	— मर्यप्रका	दाका	१		पचयतिस	
3			·	1	ग मपातल	तवन ६१६

६२६				मंत्र एवं मन्त्रकार		
म मध्य रका नाम	ग्रथमास ग्रथस्		श्वकार का नाम	গৰামান গমা	्षी की	
		191 VR	1 .		पत्र सं	
		द्वन	सुवार्नेश—	গ্ৰামকুৰা	t t	
		##/2	सुगनचंद	नपुनिधिववीर्गनर		
	पद्म वती समी यासमना	66.0	(धूवा	104	
	पद्मानसीस्त्रीम	₹ ¥	गुन्दर	कपशयामा ना हुए।	100	
	रामर्वनावस्तवव	37		বর্ত্তবিকাশকত	mx5	
	पुष्पचलीची	\$98	!	पद	451	
	फसक्दोरामर्ववाचस्यक्त	***	Į.	व ्देवीयीच	YJø	
	बाहुबन्धिरस्था	111	सुन्दरभीय	वित्र क्षातुरित ीय	464	
	नीवरिच्यूमास्यरकी	114	मुम्बरकास।	द विद्य	₹¥1	
	नश्रमीरस्वमन	wit	-	44	wt	
	गेरकुनारसञ्चान	48	ì	कुन्दर्गन वा स	wit	
	नीवएकावधीस्तवम	42		कुचरम् शार	*4=	
	च्छ पुत्स्तवम	111	<u>क्षण्यस</u> ⊸‼	कि न्द्रधन रक्षांग	ŧγ	
	वनवेशमहापुनिश्चनकाम	112	सुन्दरमृपण	पद	740	
	रिनदी	***	सुमविक्येचि-	क्षेत्रपाकपूचा	will	
	धकुनमध्यीर्वरास ६१०		~	विनस्पृति	170	
~	चे सिक् रा गसञ्चात	414	स्वविमाग्र	श्चनश्चास्त्रतीयातन	XII	
<u>.</u> 1_1	बग्धा	12	-		vet	
सहस्रद्वीच	मा धैवन्दे च्या	4.4		वर्ष्ण्यममा ः	પ્ર ા	
धार्शिस—	74	48	सुरेन्द्रकीर्चि	वाक्षिकारस्थानसः		
धापुदीर्थि—	सत्तरकेस्पूता क्षेत्र			वैषयप्रीपृषयप्रीपीयापा	339	
•	निगपुधसमीस्तुरि	994		पष	424	
सावम	धारमधिकाराज्यसम	116		सम्मेनविकरपूरा	χX	
सार्कीरत—	44	AAA	स्रचन—	स्थाविमरक्षणा या	160	
साहितसम-	पर ४४१		स्रकास—	प्र	far	
सक्षेत्र	पह	x	7	170	13#	
मुक्सम—	विश्व	99	सुरअमान योश्रवाळ —	पट्यालप्रकासकार्	117	
Easta	प निश	121	1	77	n t	

अंथकार का नाम	मंथ नाम		वीकी त्रसं०	प्रथकार का नाम	ग्र थ नाम		ूची की पत्र सं०
कविसूरत—	द्वादशानुप्रेक्ष	रा	७६४		निर्वागक्षेत्र	म डलपू जा	¥8⊏
•	बारहखडी	८६, ३३२	, ৬१५		पचकुमार	नुजा	3 ४ ७
			ওদদ	•	पूजापाठसः	प्रह	५११
सेवगराम	श्रनन्तनाय ृ	जा	४५६		मदनपराज	ाय	३१८
	म्रादिनाथपू	•	६७४		महावीरस्त	ो त्र	५११
	कवित्त		५७२		्वृहद्गुराव	लीशातिमड	ন
	जिनग्रुगुपन	चीसी	४४७		(चौसठऋद्विपूर	লা) ৮ ৬৭	६, ५११
	जिनयशमग		4 40		सिद्धक्षेत्रींव	ीपूजा ५५	३, ७=६
	पद	४ ४७, ७ ५ 8	१, ७६५		सुगन्धदशम	रीपूजा ।	५११
	निर्वाग्।का	ण्ड	৩দদ	इसराज─	विज्ञितिपत्र		४७६
	नेमिनाथर्क	ोभावना	६७४	हठमन्दास-	पद		६२४
सेवारामपाटनी	मल्लिनायपु	राग	१५२	हरखचद-	पद	धूद	^३ , ५ ५४
सेवारामसाह—	भनन्तव्रतपृ	(जा	४५७				५५५
	चतुर्विशति	तीर्थंकरपूजा	४७०	हरचदश्रमवाल-	सुकुमालच	रित्र	२०७
	धर्मोपदेशस	तग्रह	६४		पचकल्यार	गुकपाठ	800
सोम—	र्वितामगि	पार्श्वनाय					७६६
		जयमाल	७६२	हर्गू जाल	सज्जनचित्	तवल्लभ	३३७
सोमदेवसूरि—	देवराजव	च्छराजची प	ई २२=	हर्पकवि	चद्रहसकर	रा	७१४
सोमसेन—	पचक्षेत्रप	ालपूजा	७६५		पद		४७६
स्यौजीरामसौगाणी-	- लग्नचद्रिव	ন	७५१	ह्र्षकीर्त्ति—	<u> जिए</u> भक्ति	i	४३८
म्बर्पचद्	ऋद्विसिवि	द्वधातक ५	२, ५११		तीर्यंकरजय		६२२
	चमत्कार	जनेश्वरपूज	ा ५११		पद		ران و⊒نا
			₹33			५५ ५, ५६०	
	जयपुरनग	ारसर्वंघी				६२४, ६६	
	_	लयोकीवदन	। ४३५			७५०, ७६३	
			५११		पचमगतिव		६२१
	जिनसहरू	नामपूजा	850			६६१, ६६८	
	त्रिलोकस	ारचौपई	५११			•	७६५

रकासाम प्रवासाम प्रवासूपीकी पत्रसं
44.4
विनवी ६६३
स्त्रीत प्रश्
•
- वावरवत्तवरित १ Y
the meti
पुत्राचीयद्व १११
[— वैद्यक्षितकाश्वयता ¥ॉ
ब — करणायुक्त (Yt
- वद्यिवसार १६७
योज्यदत्तार वर्गकान्य १३
हव्यविद्यासा ४११
र्वस ्त्रीतानावसम ा ४६
478 2.6
श्वनवदारबावा ११३
वक्तकरामा १४४
बल्ली ११०
जन्मनास्तोषनता ४१
188 FYF 188
9 9 997
वलुसेमार्खाः ४५०
कुराज्यस्थ्योजना ११४
wit
ासि ड — यहरपात्रनेत ४३।



»>> शासकों की नामावित »>>>

भकवर	६, १२२, १६७, ४६१, ४६२	चन्द्रगुप्त	६२०
(इकव्दर)	६८१, ७६७, ७७३	चित्रगदमोहीयै	73४
मजैपालपवार	५६२	छत्रसाल	४०१
मणहलगुवाल	४६२	जगतसिंह	१७०, १८१, ३६१, ७७१
प्र नगरालतु [*] वर	प्रहर	जगपाल	ĘĘ
मर् विद	४६८	जयसिंह (सवाई)	४३, ७१, ६३, ६६, १२०
प्र लाउद्दीन	३५६, २५६		१२८, २०४, ३०५, ४८२
(भलावदीन)			४१५, ५२०, ४६१
मलावसंखा	१५७	जर्यासहदेव	१४५, १७६
मलावद्दीनलोदो	3.8	जहागीर	४१, १४४
मह्मदशाह	२१६, ४६१	जै तसी	५ ६२
माल्म	२५१	जैसिंह (सिंघराव)	४ ह२
भौरू गजेब	६७, ४७८, ४४४, ६६८	जीम्रावत	४६१
मौरगसाहि पातसाहि	३१, ३६, ५६२	जोधै	461
इन्द्रजीत	きなの	टोडरमल	७६७
इत्राहीमलोदी	१४२,	हू गरेन्द्र	१७२
इब्राहीम (सुलितान)	१४५	तैतवो	, इडिस
ईसरीसिह	२२६;	देवडो	487
ई श्वरसिंह	२३१	नाहरराव (पवार)	५ ६१
चदम [सह	२०६, २४१, ४६१, ४६२	नीरगजीव	३०५
उमैसिह	२१६	नौरग	४४५
क्झिनसिंह	प्रहर	पूररामझ	835
कीर्त्तिसह	२६४	पेरोजासाह	3 5
गु शलसिंह	४८	पृथ्वीराज	₹ 03
केशरीसिह	ቅ ሄ७	पृथ्वीसिंह	७३, १४४, ६६३, ७६७
स्रेतसी	989	प्रतापसिंह	२७, १४६, १८६ ४४७, ४६१
गयासुद्दीन	५३	फतेसिह	¥50
गजुद्दीहबहादुर	१२४	वस्तावरसिंह	७२६
घडसीराय	१७२	वहलोलशाह	६२
			•

et]			[राज्यों भी रायर्थ
बाबर	163	रामस्यव	771
बीचे	261	रायच्य	w
	1 3	रायमस्य	1.1
दुवसिष्	, `\	रामधिक	tre, 11
मनपर्धिक		राम्बस् नलव	291
बाटीजैसे	रूप रेवव	तिश्वया त्र स्थेष	155
वारायन	733	शासुन (इस्त्य व शासुने प	YIE
नारविद्	90	विश्वनकादि -	250
वानविष् (द्वावा)	H.	विकासमित्व	928, 927 888
भीव	155	(englise	1.5
मोजबेर	\$ 1.	विभववधीरवर	111
नकरमुख	3fY	विकर्णायह	* *
मदत		नार	xet .
महत्रदर्श	१	वीरवारायस्य (राजावीनकसूत्र)	461
महत्त्वद्	225	बीरनदे	187
न्द्रदशाहि	tun	नीरवस	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
बहुत्वेरकान	11	विशिव	1
नाचोतिह	1 × 112 221 416	वाहनहां	1 5 464
वावर्गवह	110	बीपत्व	11
ৰাগতিত্ব	BY EES PRY E. E.	बोमानरे	18
41.114	149, 144, 111	बीराम	1/1
	YME YE	वे ग्रिक	111
राजरे	287 587	विश्वम्	कार ६ सर
नुसराव	993	शंवसदाव	tex
बौद्धानदराज	•	विक्रवर	(vi
रलचेर्चाह	11	सूर्यसम	¥, 78¥ 988
रामविद्	the not see	बू र्यनहा	१६६ १६१
राशवद्व	994	वंदाव्यविद्	zet
सम्बद	W TY	वोलकारै इसीर	tox att 1 t
रावर्षिङ्	to tas, for tos		•
	41 411	් රාර්	

🗡 याम एवं नगरों की नामावलि 🛨

१६३, १६७, १६६, ४५४ प्रक्रवरावाद प्रक्रवर व्रव्ध व्रव्ध व्रव्ध व्यव्ध व्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव	
१६३, १८७, १८६, ४४४ प्रक्वरावाद १, ३६१ प्रक्वरावाद १, ३६९ प्रक्वरावाद १, ३६७ प्रक्वरावाद १, ३६७ प्रक्वरपुर प	५५, ५६१
प्रकवरावाद १, ३६१ प्रकल्वरादाद १, ३६१ प्रकल्वरादाद १, ३६१ प्रकल्वरादाद १, ३६१ प्रकल्वरादाद १, ३६७ प्रकल्वरादाद १८०, ३६७ प्रकल्वर १८०, ३६० प्रकल्वर १८०, १८०, १८०, १८०, १८०, १८०, १८०, १८०,	१७७ , इप्र
प्रकवराबाद	৬४५
प्रकल्वरपुर प्रकार	१६, १२०
मकीर मजिर २१६, ३२१, ३४७, ३७३ ४६६, ४०४, ५६२, ७२६ महीणिनगर प्राटीणिनगर प्राणिहलपान (प्राणिहलपान) १७५, ३४१ प्रमरसर ६१७ प्रमरावती प्रवती प्रवत्ती प्रवती प्रवत्ती प्रवत्ती प्रवत्ती प्रवत्ति प्रवत्तवपुर प्रवास्ति प्रवत्तवपुर प्रव्यपुर प्रविव्यपुर प्रविव्यपुर प्रव्यपुर प्रविव्यपुर प्रविव्य	२, १५४,
भजमेर २१६, ३२१, ३४७, ३७३ ४६६, ४०४, ५६२, ७२६ महोणिनगर १२ प्रमारसर ११७ प्रमारसर ६१७ प्रमारावती ४८७ प्रमारावती ४८७ प्रमारावती १६, २७६, ३६७ प्रमात्वायुर १७ प्रमात्वायुर १७ प्रमातावपुर १७ प्रमातावपुर १७ प्रमातावपुर १४४ प्रमातावपुर १४४ प्रमातावपुर १४४ प्रमातावपुर १४४ प्रमातावपुर १४४ प्रमातावपुर १४० प्रमातावपुर १४४	३३, २६४
भटोणिनगर १२ मालमगज प्रमाहिलपत्तन (प्रमाहिल्लगट) १७५, ३५१ प्रमरसर ६१७ मालमगज प्रमावती ४६७, ३६७ प्रमालपुरवुर्ग (प्रागरा) २०६, ३६७ प्रमालपुरवुर्ग (प्रागरा) २०६, ३४६ प्रमालपुर १७ प्रमालपुर १० ० १०० १०० १०० १०० १०० १०० १०० १०० १	६४, ४२२
प्राविष्णनगर १२ प्राविष्णनगर १२ प्राविष्णनगर १२ प्राविष्णनगर १२ प्राविष्णनगर १४१ प्राविष्णनगर १४१ प्राविष्णनगर १४४ प्राविष्णम १४४ प्राविष्णनगर १४४ प्राविष्णम १४४ प्राविष्ण	५३, ७४९
श्रम्पहिलपत्तन (प्रम्महिल्लपाट) १७५, ३५१ प्रमरसर ६१७ प्रमरावती ४८७ प्रमतावती ४८७ प्रमत्वती ४८०, ३६७ प्रम्मतावती ४८०, ३६७ प्रम्मतावती ४८०, ३६७ प्रम्मतावती १६६, २७६, ३६७ प्रम्मतावर्ष्ण १७ प्रमाञ्चयपुर १० , १०६, १	१ ५१
प्रमरसर प्रमरावती प्रवती प्रवती प्रवती प्रवती प्रवं लपुरदुर्ग (प्रागरा) प्रवं लपुरदुर्ग (प्रागरा) प्रश्न लपुरदुर्ग (प्रागरा) प्रवास्त प्रश्न लपुरद्ग (प्राणवदेश मे) प्रवास्त प्रश्न लपुरद्ग (प्राणवदेश मे) प्रवास्त प्रश्न लपुरद्ग स्वत्य स्थाय ल्या स्थाय ल्या स्थाय	२०१
मनरावती भवती भवती भवती भवती भवती भवती भवता भवता भवता भवता भवता भवता भवता भवता	१५१
भवती ६६, २७६, ३६७ इन्द्रपुरी इ भर्म लपुरदुर्ग (म्रागरा) २०६, ३४६ इ बावतिपुर (मालवदेश मे) मराह्वयपुर १७ इदोखली भलकापुरी ४३५ ईहर भलवर २४, ५६७ इसरदा २७, भलीगढ (उ प्र) ३०, ४३७ चञ्जैन १ भवन्तिकापुरी ६६ चञ्जैन चञ्जैगी (चञ्जैन) महमदावाद २३३, ३०५, ६६१ प्रहर, ७५३	३५
पर्प्र लपुरदुर्ग (म्रागरा) २०६, ३४६ इ वावितपुर (मालवदेश मे) मराह्मयपुर १७ इदोखली मलकापुरी ४३५ ईसरदा २७, मलाउपुर (मलवर) १४४ इसिरदा २७, मलीगढ (उप्र) ३०, ४३७ उज्जैन १ मवन्तिकापुरी ६६० उज्जैगी (उज्जैन) महमदावाद २३३, ३०५, ४६१ उदयपुर ३६, १७६, १	४४७
मराह्मयपुर १७ इदोखली मलकापुरी ४३४ ईहर मलवर २४, ४६७ ईसरदा २७, मलाउपुर (मलवर) १४४ छग्नियावास मलीगढ (उप्र) ३०, ४३७ छज्जेन १ मवन्तिकापुरी ६६^ छज्जेगी (छज्जेन) महमदावाद २३३, ३०४, ४६१ छदयपुर ३६, १७६, १	५५, ३६३
मलकापुरी भलवर २४, ४६७ ईसरदा २७, भलाउपुर (भलवर) १४४ अग्रियावास अजीन १६० भवन्तिकापुरी १६० १६० १४४ उजीन १६० १६० १६० १६० १६० १६० १६० १६० १६० १६०	340
भलवर २४, ४६७ ईसरदा २७, मलाउपुर (मलवर) १४४ छग्नियावास भलीगढ (उ प्र) ३०, ४३७ छज्जेन १ भवन्तिकापुरी ६६^ छज्जेगी (छज्जेन) महमदावाद २३३, ३०४, ४६१ ४६२, ७४३	३७१
मलाउपुर (मलवर) १४४ चित्रयावास मलीगढ (उ प्र) ३ • , ४३७ मवन्तिकापुरी ६६ चळनेग चळनेग । महमदावाद २३३, ३ • ४, ४६१ ४६२, ७५३	३७७
भलीगढ (उ प्र) भवन्तिकापुरी भहमदाबाद २३३, ३०४, ४६१ ४६२, ७४३ रहर, ७४३	३०, ५०३
भवन्तिकापुरी ६६^ छज्जैगी (छज्जैन) भहमदाबाद २३३, ३०४, ४६१ ४६२, ७५३	398
महमदावाद २३३, ३०४, ४६१ ४६२, ७५३	२१, ६८३
प्रहर, ७५३	४६१
There (and)	F 463
	4, 189
m40	44.6
भवावती	१५१
पानी का	.२, ६१७
	386
भावर (मामर) १०७ कछोविदा	४६२

દર]		[मा र	र वर्ष नगरी की नामाकी
रहा .	924	केर्ण	16*
प्रक्री कर्युर	141	केरनायान	***
Arabit	160	र्वतम	141
करीशान	141	कोटपुरस्था	wto
करारा (विमा)	3.6	कीटा	4A 548 Az
कर्णाटक	144	शेष्टा	171
क्यम	160	नीधनी	197
क्रपेसी	1 Y	इन्द पड	8 8 858 R 888
कृत्वन्ता	111	क्ष्मलब्द् (कालावेदरा)	*!
क्रमाचीपुर	859	षचार	Υ×
र्मार	TEV	वर्गली	***
क्रमीक्रम	RYE	विद्यार्थव	wt
कासीता	F##	वेटन	72(
माल्युरकेंद्र	ŧŧv	¹ चं बार	121
पहातु पुर	19	गर्कार	11
कार्यवा	6 A	वडकीया	a
1015	4.6	वागीकावाला	ţY
क्रमादेख (कामोहर्ष)	YIL, RE	विस्तार	40
	1117	विस्पीर	444
Recta	160	धेरतुर	Y
Person	RA AND MES	द्वराध	644
मिन्द्रपेर -	91	पुरुवर (द्वबराय)	150
पु पुरातेष	199	प्रभारतेषु (प्रमरात)	Ast £(1
इ नाइक	nnt.	नुक्यश मपर	twt.
कु करवर	33	पूसर	
पु अ लमेक्युर्व	717	वीपायमनवर (वनामिवर)	1.1
प्र चराप्रेय	160	गोसामिरि जेन्द्रीयक	t×t
Trea.	es#	चोषडीपुरी चोचिन्त्रपट	¥ť
कुरमायसस्य	£AÅ		1.1
केकरी -	*	बीबेर (यंगिर)	

प्राम एवं नगरों की नामावलि ो]		₹ €₹₹
ग्वालियर	१७२, ४५३		५३, ६१, ६६, ७१, ७२
घडसोला	xox \		७४, ७७, ७६, ५४, ५६, ६२
घाटडे	\$0₽		६३, ६६ ६५, १०२, १०४
	४१२		११०, १२१, १२८, १३०
घाटमपुर	२३४		१३४, १४०, १४२, १४५
घाटसल	•3इ		ann ann aire
चऊह	४१, १नम, ५३१		१५२, १५३, १५४, १५५
चन्द्रपुरी	1		१४८, १६२, १६६, १७२
चन्द्रापुरी	१७, ३०३		१७३, १८०, १८२, १८३
च देरीदेश	४३, १७१		१८६, १६४, १६६, १६७
चपनेरी	५६३		१६५, २००, २०१, २०२
चम्पावती (चाकसू)	३०२, ३२८		२०४, २०७, २२०, २२४
चम्पापुर	१६४		२३०, २३१, २३४, २३४
चमत्कार क्षेत्र	F33		२३६, २३६, २४०, २४३
चाक् सू	२२४, २८७, ४३४, ४६७		२४४, २६२, २७४, २०४
	४६८, ४६३, ७८०		२८०, ३०२, ३०४, ३०८
चान्दनपुर	४४६		२०६, २४१, ३५०, ३५७
चावहत्य	३७२		३६२, ३६४, ३७४, ३८६
चावली (मागरा)	780		₹£¥, ¥₹°, ¥₹१, ¥₹१
चितीड	२१३, ४६२		
चित्रकूट	३६, १३६, २०६		888, 880, 885, 850
चीतौडा	१८५, १८६		¥ 1 8 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4
<i>ष्रह</i>	५०२		४८७, ४६४, ४६६, ५०४
घोमू	***		४०४, ४११ ४२०, ४२१
जम्बूद्वी प	78=		४२७, ४३३, ५४६, ४७७
जय <u>द</u> ुर्ग	२७३		488, 400, 484, 648
जयनगर (जयपुर)	१६, ११२, १२४		६८३, ७१४, ७२६ ८८
· (· · · · · · · · · · · · · · · · · ·	१९५, ३०१, ३१६		७६८, ७७४, ७४६
(सवाई) जयनगर (जयपु	र) १६६, १७०, २६८	जलपय (पानीपत)	9 0
	३१८, ३३०	जहानावाद	४१, ७०, ११, १४२
जयपुर (सवाई) जयपुर	७, १६, २५, २७ ३१		४४२, ६६=
	३४, ३६, ४२, ४४, ५२	ं जागरू	३५०

३१७ । गरदरमदर

किनव

माम एवं नगरीं की नामा	वित]		х ғз]
नरवल	२२७	पाली	्र १६३
नरायला	११७, ३५३, ३६२, ४१४	पावटा	६४६, ७८६
नरायणा (वहा)	२५४	पावागिरि	०६७
नलकच्छपुरा	१४५	विपलाइ	३ ६३
नलवर दुर्ग	५२४	पिपलौन	. ३७३
नवलक्षपुर	२१२	पुन्या	አ አያ
नांगल	३७२	पूर्णासानगर	२००
नागरचालदेश	୪ ४ ५	पूरवदेस	92७
नागपुरनगर	३३, ३४, ८८, २८०, २८२	पेरोजकोट	२७५
	३८४, ४७३, ५४३	पेरोजापत्तन	६२
नागपुर (नागीर	७३४, ७६१	पोदनानगर	४६८
नागीर	३७३, ४६६, ४==	फतेहपुर	३७१
	४६०, ७१=, ७६२	फलौधी	५६२
नामादेश	३७	फागपुर	₹४
निमखपुर	¥09	फागी	३१, ६=, १७०
निरासी (नरायसा)	• थई	फौफली	३७१
निवासपुरी (सांगानेर)	२६६	वग	93,6
नीमैहा	७ ६६	र्वगाल	₹ ७€
नेवटा	१६८, २५०, ४८४, ४८७	वधगोपालपुर	£3\$
नै रावा	१७, ३४१	वगरू	६६
पइठतपुर	3,58	वगरू-नगर	७४, २७०
पचेवरनगर	¥ २, ४५०	वराहटा	३४२, ४४५
पद्दन	३८७	वटेरपुर	१ ५३
पनवाहनगर	৩ १	वनारस	४८३
पलाहा	५६२	वरव्वर	e 3 f
पांचीलास	ξυ	वराष्ठ	٦ ٤
, पाटगा	२३०, ३०४, ३६६, ४९२	वसई (वस्सी)	१८६, २६६, ४१५
पाटनपुर	388	वसवानगर	₹ ₹ ४, १७०, ३२०, ४४६
पानीयत	90		४=४, ७२१
पालव	६८२	वहादुरपुर	१६७, १६=
		2500	**** , * ***

		1	माम वर्ष नगरीं भी नामाची
111			· Y×
वानवरेष	६७ १२४, २३४	नपुरा	111
बस्यार	111	নস্কুটা	**
वामनर	3eX	वनीक्ष्युरा	vil
शासदश्री	191	भनारमा	at .
वालादेवी	न् वय	नरत्वस)(t+
श्रमी	* 1	बनुविशापुर	Y
वीर मे र	265 265 fax	थसप्रीड	₹ ¥
इन्दे	* * *	वहारम्	721
for	49 254	ग्रहुवा	62° 568. 355° 203
क्षेपर (वैराठ)	4.4	नहेची	*63
व ८४ (व ८४०) श्रीनीतवर	Ye \$25, 2=3	वाचीपुर	र्शर
	37	वाचीप्रव र्ष	111 AL
मध्येत ब्रह्मयुष	101	शारवाड	44
भगव भगवरदेव	257 3X	भारीक	१६१ १११ १३१
	tvt	}	147 228 XXI
भारतकार्य भारतपुर	1 4	वासपीट	xet.
भूतवह भूतवह	\$49	शलपुरा	\$\$ 559 J\$ 45 F W
बालुमदीन म र	1.1	1	\$ \$ \$75 475 975 375 359
बल्तनर	tto	1	EAS EAS EAR AN TES
Carrel .	928	1	415° a(c
feet.	720	शासकीय	th t th
विनीय	t4=	amege	14
्र वेंडसला	1.1	मिनिनार्दी	271
भीतान	101	धुकरपुर	99
& गुरुका चे	पश	बुनवाग	166 254
मेडीबर	RET		(H
बेधनगर	w t		fex tot xet
वांगीयी	t ut	बेहरशान	
यां बीचड	13	वेशपाद	कृ ४, ३०१ १७१
दु बामवी	•	मे गाव	juț ,
मक्षालम्	411	ो देवामा	101

प्राम एव नगरों की नामावलि
मोहनवाडी
मोहा

मोहासा

मैनपूरी

रणयमभौरगढ

राजपुर नगर

राजगढ

राजग्रह

राडपुरा

राखपुर

रामपुर

रामपुरा

रामसरि

रायदेश

राहेरी

रेवाही

रेण्ट्रा

रावतफलोधी

रामगढ नगर

रामसर (नगर)

रतीय

रणस्तभदुर्ग (रणयभीर)

रूहितगपुर (रोहतक)

840 ११२, ४५७, ५२०

1

१२५ 88

£, 68,80%, 20% **3**¥3

१६२,२६८, २५५, ४११ ४१२, ४१६, ४१७, ५४३ 488

यवनपुर

७१२, ७४३

282

३७१

808

१७६

820

387.

288, 300

५६, ४५१

१८१

६६

१६७

832

३७२

५१२

€२, २५१

१३, ३४६, ३७१

२१७, २४४, ३६३

लाहगा लावा लालसोट ₹00 लाहीर

रणतभवर (रण्यभीर) 308

योगिनीपुर (दिल्ली) यौवनपुर

मौजमाबाद

लश्कर लाखेरी

लखनऊ लल्तिपुर

जू**णाक्**र्णसर

वनपुर

वाम

विक्रमपुर

विदाघ

विमल

वीरमपुर

वृन्दावन

वेसरे ग्राम

वैरागर ग्राम

बैराट (वैराठ)

पेमलासा नगर

धाकमडगपुर

शाकवाटपुर

पाहजहांनाबाद

वृत्दावती नगरी

रेंगवान

रैनवाल

रैवासा

í

२३६, ३८६, ७००

हैं हैं

₹४४, ६६६

8-0

₹00

१२६

205

१६५

१८६

83

₹ 0

B

483

१७६

899

240

٤، 🕻

४७, १०५, ४०२

४. ११०, २७६

₹85, ७७१

२११ २०१ १६४, २२३ १७६

४, ३६, १०१, १७८, २००

- 43 86. 560 805
- वोराव (वोराज) नगर 115

ets]	-		[माय	एवं तगरों की व्यमाव्यक
Park Titl	~	*11	सावासन भवर (बानवामा)	tit
प्रारमपुर			रामबारपुर	į e
ऐ रम ध	4.9	wet	वामपावा	tu, trt
नेपुर	1 989	356	याकी	111
देखुरा		222	चानोव	41
मीपतव		111	धारभग्राम	•
योख	t,	TEX	बारंबपुर	et, 111
संग्राभवड		414	वामबोट	111
संवानपुर	tyt	tty	थ व ीपाड	M
धाँची ख		35	विकरंदुर	***
सनितामर (संबंधिर)		tex.	विकास्त्रवाद	an fas tra gin
संगरिय	17 ET #1 ET	315	श्चिमरिया	111
	the the the	111	निरमहो -	183
	the thy but	₹ ₹	वीकर	ME
	र ७ २२१ व १	¥w?	बिरोन	A 415
	BRY BER W	¥₹	बीवपुर	319 199 ze
	N AME AR	100%	बीलोरननर	48 177
वीपावती (वांत्राश्रद)		TEX.	दुर्गेहर	810
सीवर		tet	Ages.	
वणस्य नवर		9.5	बुचोट	164
चनलब		144	कृष्ट्रेरवाली यांची	Set
समरपुर		Asia	बुरंबपसन	141
वनीरपुर		479	मूचगगर	get
सम्बेदमिक्टर	11	4.0	Aca.	175 375
तालबस्यु र		484	बूर्यपुर	111
धनाई मार्थापुर		\$#A	वेवम् ती	aki incaj
	10	141	श्चीमाणिरि	168
सहारमपुर 		110	श्रोक्षमा (शांतर)	244
विद्यानगर्दर		3=8	सीक्तरेप	11
शाहेत नवरी		·	(girth	• •

हेण्डौन	२४०, २६६, ७०१, ७२६	हाथरस	.Sh artin pap	353
् धिकतपु र		61374		१४३
•	५६७	हिएगैड		२०२
रसौर	१५४	हिमाचल	معلوستر	
गढ) हरसौर	3 ; 3			७३६
रिदुर्ग		हिरगोदा		ERR
	२००, २६६	हिसार	<i>4</i>	६२, २७८
रिपुर	१६७	हीरापुर		
लसूरि	४६७	हुडवतीदेश	* ~~	२३०
ा हौती			ז	१७
///	40%	होलीपुर	•	र्दद

🛨 शुद्धाशाद्धि पत्र 🛨

पत्र एवं पंडि	मगुद्ध चंठ	गुज्ञ पाठ		
Post .	चय प्रश्नित्र	वर्षे मग्रधिक		
EXT	पिकर	क्रियंत्र		
10 73	गोसप्टसार	गीम्मटस्सर		
1DCE	1.08	£68		
tvort &	teta	₹⊏४४		
\$1×11	तत्वार्थं स्व मापा	सरवार्व सूत्र भाषा-बारवत		
₹md*°	वे सं २२१	वे सं १६६२		
100	TC/C	584		
\$50X\$	वप	बर ्गे		
१ ०८२	_	XUL.		
\$6×83	मय ण ग्द्र	মৰক্ ৰি ক্		
£3×1	দাত্ত	दाव		
EXOR §	सद	स्राह		
XXXX	र कास	क्षे॰ काल		
(3×1	म्योपार्जि	म्बाधारा बि व		
foot	मूपरदास	मूपर्यम व		
\$1+39	\$2.05	\$400		
41X1=	मासाविवेध	वासाययोग		
Proce	बाबार	भाषार		
FIXE	मीर्ग ा रण	_		
(ext	सोमग्ति परचीती	मोन्मगिर परची सी		
tou	१४ भी राजापरी	म् वी सन्ता च री		
1 1007	twe			
txtxt	मर्ने पर्व काकारतास्य	मध्यान । योग सप्तर		

शुद्धाशुद्धि पत्र]

पत्र एव पक्ति	श्रगुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ	
१३१×१	त्र	ন	
१४०×२⊏	१७२म	१८२८	
१४६४७		र० कालम० १६६६	
१४६४७	र० काल	ले॰ काल	
१६४×१०	१०४०	२०४०	
१६४×१	स० १७≒४	स॰ १४८४	
१७१से१७६	क्र० स० ३००० से ३०४८	ऋ० स० २१०० से २१४८	
१७६×२८	रङ्गू	कवि तेजपाल	
१ ≒१×१७	ढमल	नाढमञ्ज	
१६२×६	३२१८	२३१८	
१६२×१४	भट्टार	भट्टारक	
२०८×६	१७७५	१७१४	
२१६×११	श्रकाशप चमी कथा	श्राकाशपचमीज्ञथा	
२१६×६	धर्मचन्द्र	देवेन्द्रकीर्त्ति	
२४२×२४	वर्द्ध मानमानस्य	चद्धं मानमानम्य	
२६४×१६	२१२०	३१२०	
३११ १२	३२८	३२८०	
३१६×१०	नेमिचन्द्राचार्य	पद्मनन्दि	
३२०×१४	३६३	३३६ ३	
३३६×१३	भक्तिलाल	भक्तिलाभ	
₹ ६ ×−	<i>₹६⊏~३∞</i> ⊻	३६६–३७६	
₹ ≒ X×१	कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका	कल्याणमाला	
₹ 5€×₹	·	श्रीर	
<i>₹६</i> ५ ४	श्रसुभा	कनकरुशल	
४०१×२१	भूपालचतुर्विंशति	भूपालचतुर्विशतिटीका	
४४६×२४	सस्फृत	हिन्दी	
४६४×१२	भादवापुरी	भादवासुदी	
४०२×=	पञ्चगुरुकल्यणा पूजा	पञ्चगुरुकल्याण पूजा	
<i><u> </u></i>	पाटोंकी	पाटोदी	

ur]		[सुदागुर्वि पत्र
पत्र एवं प्रक्रि	ময়ুৱ গাস	शुक्र पाठ
7.0×15	संस्कृत	माहन
FFXSER	र्मत्तृत	मापूर
245×13	-	संस्कृत
X*XX\$*	मंत्रु ल	অপ্র দ্
745 3	रमकौतुकरायसमा रम्बन	रमञ्जेतुकराजसमा रमजन
tanx+•	द्धमनस्य	वामवय
RIPHE	II .	-
YLVX!E	मोस्रभारक्तम	सोकदकारकरास
\$ wx33	पद्मनीयुन्द	पद्मा व रीदम्द
HER	प डिक म्भग्रम्	प्रिकमार्भ्य
Etions.	2828	RVRE
£2.3%2.5	न्त्रविगराम	न्त्रमिगध्यम
121×28	वारा	वर
इरक्सर्थ	प्रमाप्त	चपमं श
६१⇔८१	वागिवर्षा	<u>योगयर्ग</u>
TREX!	चापभ स	क्ष्म हर्वे
, ×t4	भा सामदेव	शास्त्रम
110/17	भागप्रश	संसदय
Rect	स्वक्रमु <u>स्तोञ्चन्दोपक्</u> रा	इ प्टोप रे स
HEXT	र्यक्रमाण पृक्षा	र्वचनव्यक्तुवा
×R	T	ছব
\$PX\$	राममंन	रामसिंह
ESAXA	n	संस्कृत
4ADG	राक्त	मद्य रायमस्य
EREXTO	क्षत्रमसम्सि	कमतप्रम म् रि
EEPXR	पदावा	त्रवाचा
\$40X\$E	वच्चीसी	जैस पण्णीसी
énixis.	क्वातिस्वतःपाकाः -	क्यां निषप टक्षमाना
(E Xo)	क्षासर्गन् स्वाप	कृत्याखर्मान्द्रर स्तात्र
er6×e	मन् रसम	म न्द् रास

-

शुद्वाशुद्धि पत्र]

पत्र एव पिक	श्रशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
७१६×६	नन्दराम	हिन्दी
७३१×२१	33	
७३२×६	2)	हिन्दी
७३३×३,४	हिन्दी	सस्कृत
७३३xx	"	हिन्दी
७३८×२६	न्रह्मरायवल्ल	नहा रायमल्ल
3X0X8	मनसिंघ	मानसिंह
٥χ8×٤٢	श्रभवदेवसूरि	श्रभयदेवसूरि
७४४×१७	"	श्रपभ्रं श
ω ξ χ χ χ	१८६३	१६६३



